नई किताब

गंगा से गोमती तक

......' मुजीब की कहानियों की विशेषता उनकी शैल भी है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है. सरलता के साथ भाषा में व्यंग और ज़िन्दादिली इस तरह है जिस तरह ऊँचे पाए के लेखकों में मिलती है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी है. कहीं हंसते हंसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं पढ़ते-पढ़ते आप दुःख से स्तंभित रह जाएंगे. मुजीब की कहानियाँ हमारी कोमल भावनाएँ जगाती हैं, हमें अच्छा इनसान बनाती हैं."

—डाक्टर राम बिलास शर्मा

........'वह (मुजीब) मार्ग साफ़ करना चाहते हैं, समाज को सम्भालना चाहते हैं. इसलिये वह कला को कामकाजी चाहते हैं और ऐसी नुकीली कि धार करती चली जाए···यह कहानियां जगह जगह हमारा ध्यान समाज में होने वाले अन्यायों और अत्याचारों की तरफ़ खींचती हैं ·· संग्रह की कहानियों में एक सीधी अकृत्रिमता है, जो अच्छी लगती है."

—जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, तिरंगा सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये.

— मैनेजर नया हिन्द

ناب

گنگا سے گومتی تک

......"مجیب کی کہانیوں کی وشیشتا اُنکی شیلی ہے . معمولی پڑھا لکھا آدمی اِنھیں بنا کسی کی کے سمجھ سکتا ہے. سرلتا کے ساتھ بھاشا میں ویئنگ ندہ‌دلی اس طرح ہے جس طرح اُونچے پائے کے وں میں ملتی ہے .

ن کہانیوں میں ہاسیہ بھی ہے' کرونا بھی ہے. کہیں نے ہنستے پیٹ میں بل پڑینگے' تو کہیں پڑھتے آپ دکھ سے استمبھت رہ جائینگے . مجیب کی ان ہماری کومل بھاونائیں جگاتی ہیں' ہمیں اچھا ن بناتی ہیں."

—ڈاکٹر رام بلاس شرما

.. .." وہ (مجیب) مارگ صاف کرنا چاہتے ہیں' ج کو سنبھالنا چاہتے ہیں. اِس‌لئے وہ کلا کو کام‌کاجی تے ہیں. اور ایسی نوکیلی کہ دھار کرتی چلی جائے . کہانیاں جگہ جگہ ہمارا دھیان سماج میں‌ہونے والے وں اور اتیاچاروں کی طرف کھینچتی ہیں...سنگرہ ہانیوں میں ایک سیدھی اکرترمتا ہے' جو اچھی ہے."

—جینندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے " کو سراہا ہے .

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں' ترنگا ر کور' بڑھیا جلد' دام کیول دو روپیہ . جلدی آرڈر یئے .

—مینیجر نیا ہند

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

کا پتہ—

مینیجر ' نیا ہند ' 145 مٹھی گنج الہ‌آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये -

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ——مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ——ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی جی کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندرلال

سکریٹری' ہندستانی کلچر سوسائٹی'

145' مٹھی گنج' الہ آباد ۔

نوٹ——سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے ۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल.

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आईं उन का दर्दनाक आंखों देखा बयान. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آئتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ .

ھندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذھبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا بیان . اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد

[जिसकी एक राजधानी नागपुर हो और दूसरी बम्बई. हमारा तो ख्याल था कि सर्वोदय समाज जब हिन्दुस्तान में क़ायम होगा तो न बम्बई रहेगा न नागपुर, न नई दिल्ली, न लखनऊ, न कलकत्ता, न मद्रास, बड़े बड़े और गांव चूसक शहर खत्म हो जायेंगे. हमारा यह ख्याल अब भी है. लेकिन श्री शंकर राव जी को अपनी राय देने का पूरा हक़ है और इस राय में दूसरों को भी शरीक करने का पूरा हक़ है. इस तरह बरार का अलग सूबा बने और बम्बई का अलग, इनके लिये श्री ब्रिज लाल जी भाई और श्री एस. के. पाटिल साहब को भी कोशिश करने का पूरा हक़ है. हमारी गुज़ारिश है कि इस भाषा के सवाल पर ठंडे दिल से खूब ग़ौर किया जाना चाहिये और जितने विचार या ख्याल इस मसले पर आयें उनका मंथन होना चाहिये. ध्यान रहे कि हम मंथन चाहते हैं रगड़ नहीं. मंथन से मक्खन पैदा होता है और रगड़ से आग. लेकिन हम यह भी चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के नये नक़्शे के बारे में जो भी फ़ैसले हों वह कसरत राय या मेजारटी वोट से न हो कर सबकी मुश्तरका यानी एक राय से हों.

एक अर्ज़ और है. आखिर यह सूबों के बनने का तमाशा क्या है, इसके लिये इतनी बदगुमानियां फैलाना या वावैला मचाना हमारी समझ में नहीं आता. क्या हम एक ही हिन्दुस्तान की मिट्टी की पैदावार नहीं हैं? अगर हमारा हिन्दुस्तान जीता है तो हममें से कौन मरता है और अगर हिन्दुस्तान खत्म होता है तो हम में से कौन जीता है? इसलिये बुनियादी मसला यह है कि हिन्दुस्तान क़ायम रहे और यहां पर कोई भी नंगा भूका न रहे. ज़रूरत इस बात की है कि हमारे ग़रीब भाई अपनी ग़रीबी छोड़ दें, अमीर भाई अपनी अमीरी छोड़ दें, बाबू लोग अपनी बाबूगीरी छोड़ दें, हम अपनी अपनी हस्ती मिटा दें और सब मिल कर ऐसा समरस या एक रस समाज बनायें जिसका ज़र्रा ज़र्रा हमारा आईना हो.

23. 5. '54 सुरेशराम भाई

ہوں جسکی ایک راجدھانی ناگپور ہو اور دوسری بمبئی۔ ہمارا تو خیال تھا کہ سرودے سماج جب ہندستان میں قائم ہوگا تو نہ بمبئی رہیگا نہ ناگپور، نہ نئی دلی، نہ لکھنؤ، نہ کلکتہ، نہ مدراس، بڑے بڑے اور گاؤں چوسک شہر ختم ہوجائینگے۔ ہمارا یہ خیال اب بھی ہے۔ لیکن شری شنکر راؤ جی کو اپنی رائے دینے کا پورا حق ہے اور اس رائے میں دوسروں کو بھی شریک کرنے کا پورا حق ہے۔ اس طرح برار کا الگ صوبہ بنے اور بمبئی کا الگ، ان کے لیئے شری برج لال جی بھائی اور شری ایس۔ کے۔ پاٹل صاحب کو بھی کوشش کرنے کا پورا حق ہے۔ ہماری گذارش ہے کہ اس بھاشا کے سوال پر ٹھنڈے دل سے خوب غور کیا جانا چاہیئے اور جتنے وچار یا خیال اس مسئلے پر آئیں ان کا منتھن ہونا چاہیئے۔ دھیان رہے کہ ہم منتھن چاہتے ہیں، رگڑ نہیں۔ منتھن سے مکھن پیدا ہوتا ہے اور رگڑ سے آگ۔ لیکن ہم یہ بھی چاہتے ہیں کہ ہندستان کے نئے نقشہ کے بارے میں جو بھی فیصلے ہوں وہ کثرت رائے یا میجارٹی ووٹ سے نہ ہو کر سب کی مشترکہ یعنی ایک رائے سے ہوں۔

ایک عرض اور ہے۔ آخر یہ صوبوں کے بننے بنانے کا تماشہ کیا ہے، اس کے لئے اتنی بدگمانیاں پھیلانا یا واویلا مچانا ہماری سمجھ میں نہیں آتا۔ کیا ہم ایک ہی ہندستان کی مٹی کی پیداوار نہیں ہیں؟ اگر ہمارا ہندستان جیتا ہے تو ہم میں سے کون مرتا ہے اور اگر ہندستان ختم ہوتا ہے تو ہم میں سے کون جیتا ہے؟ اس لئے بنیادی مسئلہ یہ ہے کہ ہندستان قائم رہے اور یہاں پر کوئی بھی ننگا بھوکا نہ رہے۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ ہمارے غریب بھائی اپنی غریبی چھوڑیں، امیر بھائی اپنی امیری چھوڑیں، بابو لوگ اپنی بابوگیری چھوڑیں، ہم اپنی اپنی ہستی مٹادیں اور سب ملکر ایسا سمرس یا ایک رس سماج بنائیں جس کا ذرہ ذرہ ہمارا آئینہ ہو۔

—سریش رام بھائی 23 . 5 . '54

कि यह चीज़ यू. पी. के कुछ मिनिस्टरों और ख़ास कर चीफ़ मिनिस्टर साहब और उनके हम ख़्यालों को पसन्द नहीं आई और उनकी नाराज़गी के डर से कुछ लोगों ने ऊपर वाले मेमोरेन्डम से अपने दस्तख़त वापिस भी लेलिये. हम फिर अर्ज़ कर दें कि हमें नहीं मालूम कि इसके पीछे सचाई क्या है या क्या राज़ है. लेकिन जब हमने पंडित गोविन्द वल्लभ पंत की एक स्पीच की रिपोर्ट सुनी तो हैरत हुई कि उनके जैसा ऊंचा, तजुर्बेकार और दानिशमन्द स्यासतदां किस तरह ऐसी बातें कर सकता है. यह कहा जाता है कि पंतजी ने फ़रमाया कि उत्तर प्रदेश राम और कृश्न का, गंगा व जमना का प्रदेश है और किसी सूरत से भी इसे तक़सीम नहीं पर किया जा सकता. पंडित पंत को निजी और हुक्कामी तौर अपनी राय देने का पूरा हक़ है. लेकिन उनके इन लफ़्ज़ों में एक गर्मी, एक बौखलाहट और एक डांट ऐसी नज़र आती है जो उनके जैसे मुरब्बी और आला हस्ती को शोभा नहीं देती. हम इस वक़्त हिन्दुस्तान के नये नक़्शे के बनने पर अपनी कोई राय नहीं दे रहे हैं और न अपने बुज़ुर्ग चीफ़ मिनिस्टर की बात का ही जवाब देना चाहते हैं लेकिन क्या पिछले सौ बरस का इतिहास यह नहीं बताता कि यूपी का दुईपना—राम और कृश्न, गंगा और जमुना, हिन्दी और उर्दू, हिन्दू और मुसलमान, अलीगढ़ और बनारस, शुद्धी और तबलीग़, लीग और महासभा, इलाहाबाद और लखनऊ, वग़ैरा वग़ैरा ज़िन्दगी के मानो हर महकमे में दुभांति ज़िम्मेदार है. हिन्दुस्तान की स्यासत को बिगाड़ने का और इस मुल्क के दो टुकड़े कर देने का— फिर यूपी कोई क़ुदरती इकाई भी नहीं है बल्कि एक बनावटी गोल गप्पा सा है जिसे अंग्रेज़ों ने अपनी मरज़ी और क़ाबलियत के मुताबिक़ यह आज के जैसी बदनुमा और फ़ील पांव की सी शकल दे डाली. इस सूबे के जुग़राफ़िया को देख कर कोई भी इसके बनाने वालों को दाद नहीं दे सकता. लेकिन अगर पंडित पंत को यह चीज़ पसन्द आती है तो वह उन्हें मुबारक, हज़ार बार मुबारक. मगर इसके यह मानी तो नहीं होते कि उनके आगे किसी की न चले और उनकी बात पत्थर की लकीर मानी जाये. हमें यक़ीन है कि पंत जी जैसे डिमाक्रेसी या लोकशाही के पुजारी को खुद यह बात मुनासिब नहीं महसूस होगी और वह हर ख़्याल की क़दर करेंगे और इस ख़्याल के बाहर निकलने का हर मुमकिन मौक़ा हर किसी को, अपनी ज़ाती और हुक्कामी, दोनों तरफ़ों से देंगे.

एक तरफ़ जहां पंडित पंत यू पी को यू. पी ही रहने देने पर इसरार करते हैं, दूसरी तरफ़ कांग्रेस और सर्वोदय समाज के साबिक़ सेक्रेटरी, श्री शंकर राव जी देव, आठी भाषा भाषी लोगों का एक बड़ा और शानदार सूबा चाहते

یوپی کے کچھ منسٹروں اور خاص کر چیف منسٹر صاحب اور ان کے ہم خیالوں کو پسند نہیں آئی اور انکی ناراضگی کے ڈر سے کچھ لوگوں نے اوپر والے میمورنڈم سے اپنے دستخط واپس بھی لے لیئے۔ ہم پھر عرض کر دیں کہ ہمیں نہیں معلوم کہ اس کے پیچھے سچائی کیا ہے یا کیا راز ہے؟ لیکن جب ہم نے پنڈت گووند بلبھ پنت کی ایک اسپیچ کی رپورٹ سنی تو حیرت ہوئی کہ ان کے جیسا اونچا، تجربہ کار اور دانشمند سیاست داں کس طرح ایسی باتیں کر سکتا ہے۔ یہ کہا جاتا ہے کہ پنت جی نے فرمایا کہ اتر پردیش رام اور کرشن کا، گنگا و جمنا کا پردیش ہے اور کسی صورت سے بھی اسے تقسیم نہیں کیا جا سکتا۔ پنڈت پنت کو نجی اور حکامی طور پر اپنی رائے دینے کا پورا حق ہے۔ لیکن ان کے ان لفظوں میں ایک گرمی، ایک بوکھلاہٹ اور ایک ڈانٹ ایسی نظر آتی ہے جو ان کے جیسے مربی اور اعلی ہستی کو شوبھا نہیں دیتی۔ ہم اس وقت ہندستان کے نئے نقشہ کے بننے پر اپنی کوئی رائے نہیں دے رہے ہیں اور نہ اپنے بزرگ چیف منسٹر کی بات کا ہی جواب دینا چاہتے ہیں۔ لیکن کیا پچھلے سو برس کا اتہاس یہ نہیں بتاتا کہ یوپی کا دوئی پنا—رام اور کرشن، گنگا اور جمنا، ہندی اور اردو، ہندو اور مسلمان، علیگڑھ اور بنارس، شدھی اور تبلیغ، لیگ اور مہاسبھا، الہ آباد اور لکھنؤ، وغیرہ وغیرہ زندگی کے مانو ہر محکمہ میں دو بھانتی ذمہ دار ہے۔ ہندستان کی سیاست کو بگاڑنے کا اور اس ملک کے دل کے دو ٹکڑے کر دینے کا—پھر یوپی کوئی قدرتی اکائی بھی نہیں ہے بلکہ ایک بناوٹی گول گپا سا ہے جسے انگریزوں نے اپنی مرضی اور قابلیت کے مطابق یہ آج کے جیسی بدنما اور فیل پاؤں کی سی شکل دے ڈالی۔ اس صوبہ کے جغرافیہ کو دیکھ کر کوئی بھی اس کے بنانے والوں کو داد نہیں دے سکتا۔ لیکن اگر پنڈت پنت کو یہ چیز پسند آتی ہے تو وہ انہیں مبارک، ہزار بار مبارک۔ مگر اس کے یہ معنی تو نہیں ہوتے کہ ان کے آگے کسی کی نہ چلے اور ان کی بات پتھر کی لکیر مانی جائے۔ ہمیں یقین ہے کہ پنت جی جیسے ڈیماکریسی یا لوک شاہی کے پجاری کو خود یہ بات مناسب نہیں محسوس ہوگی اور وہ ہر خیال کی قدر کرینگے اور اس خیال کے باہر نکلنے کا ہر ممکن موقع ہر کسی کو، اپنی ذاتی اور حکامی، دونوں طرفوں سے دیں گے۔

ایک طرف جہاں پنڈت پنت یو پی کو یوپی ہی رہنے دینے پر اصرار کرتے ہیں، دوسری طرف کانگریس اور سروودے سماج کے سابق سیکریٹری، شری شنکر راؤ جی دیو، مراٹھی بھاشا بھاشی لوگوں کا ایک بڑا اور شاندار صوبہ چاہتے

...था. अंग्रेज़ी हिन्दुस्तान के नक़्शे का भोंडापन कांग्रेस ने शुरू से ही महसूस कर लिया था. यही वजह है कि 1920 के क़रीब जब कांग्रेस का संगठन मुल्क के कोने कोने में फैला तो कांग्रेसी सूबों और सरकारी सूबों में काफ़ी फ़र्क़ हो गया. कांग्रेस का इसरार कि सूबा भाषा या बोली की बिना पर क़ायम किया जाये और मुल्क की भलाई व हिफ़ाज़त के साथ साथ इस सूबे के रहने वालों की ख़्वाहिशों का पूरा पूरा ख़्याल रक्खा जाये.

अंग्रेज़ी राज की बिदाई के बाद भाषावार सूबों की मांग क़ुदरती तौर पर ज़ोर पकड़ने लगी. लेकि भारत का जो नया विधान बना उसमें क़रीब क़रीब वही सूबे (ख़ास कर Part A वाले) रक्खे गये जो अंग्रेज़ छोड़ गये थे. लिहाज़ा जनता में असंतोश फैला और भाषा के सवाल को लेकर जगह जगह शोर ग़ुल मचाया जाने लगा. ज़्यादा बुलन्द आवाज़ दक्खिन से और ख़ास तौर पर आंध्र से उठी आंध्र के लोग जान तक क़ुर्बान करने को तैयार हो गये और एक पाक हस्ती की शहादत के बाद आख़िर आन्ध्र का नया सूबा मद्रास के पुराने सूबे में से काट कर बना दिया गया. आन्ध्र का बनना था कि दूसरे भाषा वाले भी आपे से बाहर होने लगे. नई दिल्ली की हकूमत परेशान हो गई क्योंकि ख़ुद इस हकूमत की पार्टी वाले यानी कांग्रेस के लोग भी उस कोहराम में पूरे जोश के साथ हिस्सा लेते थे. मामले को ज़्यादा बिगड़ता देखकर हकूमत ने भाशाई कमीशन नाम से तीन आदमियों का एक बोर्ड क़ायम कर दिया और उसके सुपुर्द यह काम किया कि मुल्क भर का दौरा करे, मुख़्तलिफ़ जमाअतों और लोगों से मिलकर उनकी राय इस सवाल पर ले और फिर हर पहलू से उस पर ग़ौर करने के बाद हिन्दुस्तान के नये नक़्शे के मुताल्लिक़ अपनी सिफ़ारिश सरकार को पेश करे.

इस कमीशन को बने क़रीब तीन माह हो चुके हैं और आजकल यह मुल्क का दौरा कर रहा है. जगह जगह यह लोगों से मिलता है और लोग भी अपने सुझाव मेमोरैंडम की शक्ल में उसके आगे रख रहे हैं. ख़ामोशी और अहतयात के साथ यह कमीशन काम कर रहे हैं. हाल ही में उत्तर प्रदेश के पच्छिमी ज़िलों के कुछ असरदार लोगों ने भी अपना एक मेमोरैंडम उसके आगे पेश किया जिसमें शायद यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की गई कि पच्छिमी उत्तर प्रदेश को रुहेलखंड या मेरठ और आगरा कमिशनरियों, को देहली व पंजाब के कुछ मशरक़ी ज़िलों को मिलाकर एक नया सूबा खड़ा किया जाये. उसमें यूपी एसेम्बली के भी बहुत से मेम्बरान के दस्तख़त थे. हमें नहीं मालूम कि अन्दर ही अन्दर क्या वाक़या हुए मगर अख़बारों से पता चलता है

سنگٹھن ہو ۔ انگریزی ہندستان کے نقشے کا بھونڈاپن کانگریس نے شروع سے ہی محسوس کرلیا تھا ۔ یہی وجہ ہے کہ 1920 کے قریب جب کانگریس کا سنگٹھن ملک کے کونے کونے میں پھیلا تو کانگریسی صوبوں اور سرکاری صوبوں میں کافی فرق ہوگیا ۔ کانگریس کا اصرار تھا کہ کہ صوبہ بھاشا یا بولی کی بنا پر قایم کیا جائے اور ملک کی بھلائی و حفاظت کے ساتھ ساتھ اس صوبے کے رہنے والوں کی خواہشوں کا پورا خیال رکھا جائے ۔

انگریزی راج کی بدائی کے بعد بھاشاوار صوبوں کی مانگ قدرتی طور پر زور پکڑنے لگی ۔ لیکن بھارت کا جو نیا ودھان بنا اس میں قریب قریب وہی صوبے (خاص کر Part A والے) رکھے گئے جو انگریز چھوڑ گئے تھے ۔ لہذا جنتا میں اسنتوش پھیلا اور بھاشا کے سوال کو لیکر جگہ جگہ شور غل مچایا جانے لگا ۔ زیادہ بلند آواز دکھن سے اور خاص طور پر آندھر سے اٹھی ۔ آندھر کے لوگ جان تک قربان کرنے کو تیار ہوگئے اور ایک پاک ہستی کی شہادت کے بعد آخر آندھر کا نیا صوبہ مدراس کے پرانے صوبہ میں سے کاٹکر بنا دیا گیا ۔ آندھر کا بننا تھا کہ دوسرے بھاشا والے بھی آپے سے باہر ہونے لگے ۔ نئی دلی کی حکومت پریشان ہوگئی کیونکہ خود اس حکومت کی پارٹی والے یعنی کانگریس کے لوگ بھی اس کہرام میں پورے جوش کے ساتھ حصہ لیتے تھے۔ معاملے کو زیادہ بگڑتا دیکھکر حکومت نے بھاشائی کمیشن نام سے تین آدمیوں کا ایک بورڈ قایم کردیا اور اس کے سپرد یہ کام کیا کہ ملک بھر کا دورہ کرے، مختلف جماعتوں اور لوگوں سے ملکر انکی رائے اس سوال پر لے اور پھر ہر پہلو سے اس پر غور کرنے کے بعد ہندستان کے نئے نقشہ کے متعلق اپنی سفارش سرکار کو پیش کرے ۔

اس کمیشن کو بنے قریب تین ماہ ہوچکے ہیں اور آجکل یہ ملک کا دورہ کررہا ہے ۔ جگہ جگہ یہ لوگوں سے ملتا ہے اور لوگ بھی اپنے سجھاؤ میمورنڈم کی شکل میں اس کے آگے رکھ رہے ہیں ۔ خاموشی اور احتیاط کے ساتھ یہ کمیشن کام کر رہا ہے ۔ حال ہی میں اترپردیش کے پچھمی ضلعوں کے کچھ اثردار لوگوں نے بھی اپنا ایک میمورنڈم اس کے آگے پیش کیا جس میں شاید یہ خواہش ظاہر کی گئی کہ پچھمی اترپردیش کو روہیلکھنڈ یا میرٹھ اور آگرہ کمشنریوں کو دہلی و پنجاب کے کچھ مشرقی ضلعوں کو ملاکر ایک نیا صوبہ کھڑا کیا جائے ۔ اس میں یو پی اسمبلی کے بھی بہت سے ممبران کے دستخط تھے ۔ ہمیں نہیں معلوم کہ اندر ہی اندر کیا واقعے ہوئے مگر اخباروں سے پتہ چلتا ہے کہ یہ چیز

मार्च में हुई उसकी एक बड़ी वजह V. I. P. कैम्प का क़ायम करना था और अगर यह कैम्प न होता तो शायद वह हादसा न होता. बौद्ध गया सम्मेलन से पहले कभी किसी सम्मेलन में यह चीज़ नहीं हुई. यह ज़रूरी है कि आगे सम्मेलनों में सरकार से कम से कम मदद ली जाये और सारा बोझ उस सूबे या ज़िले की भूदान कमेटी (जहां सम्मेलन हो) बर्दाश्त करे और इस इलाक़े की जनता का ज़्यादा से ज़्यादा सहयोग हासिल किया जाये.

हमारे प्रेमी पाठक शायद यह जानते हों कि विनोबा जी ने भूदान यज्ञ आन्दोलन को गोतम बुद्ध का काम बताया है और इसे धर्म चक्र परिवर्तन कहा है. यह लफ़्ज़ उन्होंने पहली बार 9 मई 1952 को बौद्ध जयन्ती के दिन लखनऊ में कहे थे. बौद्ध गया सम्मेलन ने यह साबित कर दिया कि विनोबा जी का यह कहना मानो ज़माने की ही आवाज़ है. इस सम्मेलन ने यह दिखा दिया कि हिन्दुस्तान की नैतिक या इख़लाक़ी ताक़त के सोते अभी जानदार हैं और सहज ज़ोर पकड़ सकते हैं. इससे यह भी पता चल गया कि एक नेक और पाक काम के लिये मुल्क के नौजवान क़ुर्बानी के लिये आज भी तैयार हैं. इस से यह भी ज़ाहिर हो गया कि हिन्दुस्तान को आत्मिक बल में गहरा यक़ीन है और इस बल के ज़रिये दुनिया के दूसरे सभी 'ख़ौफ़नाक से ख़ौफ़नाक' बलों का मुक़ाबला किया जा सकता है और सबसे ख़ास बात यह निकली कि भगवान बुद्ध की विश्व आत्मा निराकार रूप में इशारा कर रही है कि वैर की जगह मुहब्बत, ग़ुस्से की जगह शान्ति और झूठ की जगह सच पर चले बिना इन्सान इस धरती पर अब सही सलामत ज़िन्दा नहीं रह सकता.

22. 5. '54 — सुरेशराम भाई

हिन्दुस्तान के नये नक़्शे की तैयारी

प्लासी की लड़ाई के बाद से अंग्रेज़ लोग हिन्दुस्तान के थोड़े थोड़े हिस्से को फ़तह करते गये और अपना राज खड़ा करते गये. अपनी सहूलियत और पालिसी के मुताबिक़ उन्होंने सूबे क़ायम कर दिये. इस बात का कोई लिहाज़ नहीं रक्खा कि इस सूबे में कौन लोग रहते हैं, उनकी आपस की बोली क्या है, उनका रहन सहन पान किस ढंग का है, उनके ख़्याल क्या हैं, वग़ैरा वग़ैरा. नतीजा यह हुआ कि उन्होंने ऐसे ऐसे बेतुके सूबे बना डाले जिन पर ख़ुद अंग्रेज़ को भी शर्म आती थी और धीरे धीरे उन्होंने सूबों को तोड़ कर नये नये सूबे बनाने शुरू कर दिये. लेकिन अपने आख़िरी दम तक हिन्दुस्तान के नक़्शे को वह ऐसी कोई सुन्दर शक्ल न दे सके जिस पर इन्हें नाज़ हो या जनता को

مارچ میں ہوئی اسکی ایک بڑی وجہ V. I. P. کیمپ کا قایم کرنا تھا اور اگر یہ کیمپ نہ ہوتا تو شاید وہ حادثہ نہ ہوتا. بودھ گیا سمیلن سے پہلے کبھی کسی سمیلن میں یہ چیز نہیں ہوئی. یہ ضروری ہے کہ آگے سمیلنوں میں سرکار سے کم سے کم مدد لی جائے اور سارا بوجھ اس صوبہ یا ضلع کی بھودان کمیٹی (جہاں سمیلن ہو) برداشت کرے اور اس علاقہ کی جنتا کا زیادہ سے زیادہ سہیوگ حاصل کیا جائے.

ہمارے پریمی پاٹھک شاید یہ جانتے ہوں کہ ونوبا جی نے بھودان یگیہ آندولن کو گوتم بدھ کا کام بتایا ہے اور اسے دھرم چکر پریورتن کہا ہے. یہ لفظ انہوں نے پہلی بار 9 مئی 1952 کو بدھ جینتی کے دن لکھنؤ میں کہے تھے. بودھ گیا سمیلن نے یہ ثابت کردیا کہ ونوبا جی کا یہ کہنا مانو زمانے کی ہی آواز ہے. اس سمیلن نے یہ دکھا دیا کہ ہندستان کی نیتک یا اخلاقی طاقت کے سوتے ابھی جاندار ہیں اور سہج زور پکڑ سکتے ہیں. اس سے یہ بھی پتہ چل گیا کہ ایک نیک اور پاک کام کے لیئے ملک کے نوجوان قربانی کے لیئے آج بھی تیار ہیں. اس سے یہ بھی ظاہر ہوگیا کہ ہندستان کو آتمک بل میں گہرا یقین ہے اور اس بل کے ذریعے دنیا کے دوسرے سبھی 'خوفناک سے خوفناک' بلوں کا مقابلہ کیا جاسکتا ہے. اور سب سے خاص بات یہ نکلی کہ بھگوان بدھ کی وشو آتما نراکار روپ میں اشارہ کر رہی ہے کہ بیر کی جگہ محبت' غصہ کی جگہ شانتی اور جھوٹ کی جگہ سچ پر چلے بنا انسان اس دھرتی پر اب سہی سلامت زندہ نہیں رہسکتا.

22 . 5 . '54 —سریش رام بھائی

ہندستان کے نئے نقشہ کی تیاری

پلاسی کی لڑائی کے بعد سے انگریز لوگ ہندستان کے تھوڑے تھوڑے حصہ کو فتح کرتے گئے اور اپنا راج کھڑا کرتے گئے. اپنی سہولیت اور پالیسی کے مطابق انہوں نے صوبے قایم کردیئے. اس بات کا کوئی لحاظ نہیں رکھا کہ اس صوبہ میں کون لوگ رہتے ہیں' انکی آپس کی بولی کیا ہے' انکا رہن سہن' کھان پان کس ڈھنگ کا ہے' ان کے خیال کیا ہیں' وغیرہ وغیرہ. نتیجہ یہ ہوا کہ انہوں نے ایسے ایسے بے تکے صوبے بنا ڈالے جن پر خود انگریز کو بھی شرم آتی تھی اور دھیرے دھیرے انہوں نے صوبوں کو توڑ کر نئے نئے صوبے بنانے شروع کردیئے. لیکن اپنے آخری دم تک ہندستان کے نقشہ کو وہ ایسی کوئی سندر شکل نہ دے سکے جس پر انہیں ناز ہو یا جنتا کو

भी, उनकी पार्टी वाले और कांग्रेस वाले भी भूदान यज्ञ के कामों में जोर से लग जावें. इसका नतीजा यह होगा कि राजनीति पर अच्छा असर होगा और राजनीति का लोकनीति में परिवर्तन हो जायगा.

कुल मिला कर इस सम्मेलन से तीन बातें साफ निकलती हैं :—

(1) सन 1957 तक पांच करोड़ एकड़ जमीन भूदान यज्ञ में हासिल करनी है.

(2) जमीन बांटने का काम तेजी के साथ चलाया जावे. जमीन बांटने के साथ नयी जमीन आसानी से मिलती चली जायगी.

(3) जो गांव पूरे पूरे मिल गये हैं या जहां हर दाता ने कुछ जमीन दी है या जहां कोई भी बेजमीन नहीं रहा है वहां गहरा काम होना चाहिये ताकि उन गावों का नया निर्मान किया जावे.

हम यहां इतना और कह दें कि गया जिले के लिये विनोबा जी ने एक निर्मान कमेटी मुक़र्रर की है जो निर्मान काम को सम्भाल लेगी. इसके अलावा गया जिले के कोवाकोल थाना में श्री जैप्रकाश खुद एक आश्रम क़ायम करेंगे जिसमें काम करने वालों की ट्रेनिंग का इन्तज़ाम होगा और कोवाकोल थाना में ग्राम राज्य का गहरा प्रयोग होगा. साथ ही बौद्ध गया में समन्वय आश्रम बनेगा. वेदान्त और अहिंसा के मेल की बिना पर विनोबा जी ने इसे सभी धर्मों, तहज़ीबों का संगम बनाने का तय किया है. खुश-क़िस्मती से बौद्ध गया में बुद्ध मन्दिर के पास ही पांच बीघे जमीन भी उन्हें इस काम के लिये मिल गई है. वहां पर सर्वोदय के सेवकों ने एक कुआं भी खोद कर तैयार कर लिया है. समन्वय आश्रम की अहमियत और प्रोग्राम पर काका साहब कालेलकर ने 18 अप्रैल की सुबह के वक़्त रोशनी भी डाली. इस समन्वय आश्रम में कारकुनों की ट्रेनिंग भी होगी और इस आश्रम की देख रेख में बौद्ध गया थाना में ग्रामोदय का भी काम चलेगा.

जैसा हमने शुरू में ही कहा है इस सम्मेलन में काफी बड़ी तादाद में भूदान के कारकुन और हमदर्द शरीक हुये. सम्मेलन में बेहद सादगी थी और सारा काम खूब अच्छी तरह से चला. मगर इस सम्मेलन में एक चीज़ हमें बहुत खटकी. वह था वहां वी. आई. पी. (V. I. P.) नाम से एक अलग जगह का बनाया जाना. कहने की ज़रूरत नहीं कि वी. आई. पी. (वेरी इम्पारटेन्ट परसनस् यानी बहुत खास आदमी) का डेरा जहां कहीं भी होता है एक कलंक-साबित होता है और इन्सान इन्सान के बीच फ़र्क़ बढ़ जाता है. बहुत से लोगों का यह भी ख्याल है कि कुम्भ मेले पर जो दर्दनाक दुघटना पिछले

جی، ان کی پارٹی والے اور کانگریس والے بھی بھودان یگیہ کے کاموں میں زور سے لگ جائیں اس کا نتیجہ یہ ہوگا کہ راجنیت پر اچھا اثر ہوگا اور راج نیتی کا لوک نیتی میں پریورتن ہوجائیگا۔

کل ملاکر اس سمیلن سے تین باتیں صاف نکلتی ہیں :—

(1) سن 1957 تک پانچ کروڑ ایکڑ زمین بھودان یگیہ میں حاصل کرنی ہے۔

(2) زمین بانٹنے کا کام تیزی کے ساتھ چلایا جائے۔ زمین بانٹنے کے ساتھ نئی زمین آسانی سے ملتی چلی جائیگی۔

(3) جو گاؤں پورے پورے مل گئے ہیں یا جہاں ہر داتا نے کچھ زمین دی ہے یا جہاں کوئی بھی بےزمین نہیں رہا ہے وہاں گہرا کام ہونا چاہیئے تاکہ ان گاؤں کا نیا نرمان کیا جائے۔

ہم یہاں اتنا اور کہدیں کہ گیا ضلع کے لئے ونوبا جی نے ایک نرمان کمیٹی مقرر کی ہے جو نرمان کام کو سنبھال لے گی۔ اس کے علاوہ گیا ضلع کے کواکول تھانہ میں شری جے پرکاش خود ایک آشرم قایم کرینگے جس میں کام کرنے والوں کی ٹریننگ کا انتظام ہوگا اور کواکول تھانے میں گرام راج کا گہرا پریوگ ہوگا۔ ساتھ ہی بودھ گیا میں سمنوے آشرم بنیگا۔ ویدانت اور اہنسا کے میل کی بنا پر ونوبا جی نے اسے سبھی دھرموں، تہذیبوں کا سنگم بنانے کا طے کیا ہے۔ خوش قسمتی سے بودھ گیا میں بودھ مندر کے پاس ہی پانچ بیگھہ زمین بھی انہیں اس کام کے لئے مل گئی ہے۔ وہاں پر سرودے کے سیوکوں نے ایک کنواں بھی کھود کر تیار کرلیا ہے۔ سمنوے آشرم کی اہمیت اور پروگرام پر کاکا صاحب کالیلکر نے 18 اپریل کی صبح کے وقت روشنی بھی ڈالی۔ اس سمنوے آشرم میں کارکنوں کی ٹریننگ بھی ہوگی اور اس آشرم کی دیکھ ریکھ میں بودھ گیا تھانے میں گراموُدے کا بھی کام چلیگا۔

جیسا ہم نے شروع میں ہی کہا ہے اس سمیلن میں کافی بڑی تعداد میں بھودان کے کارکن اور ہمدرد شریک ہوئے۔ سمیلن میں بےحد سادگی تھی اور سارا کام خوب اچھی طرح سے چلا۔ مگر اس سمیلن میں ایک چیز ہمیں بہت کھٹکی۔ وہ تھا وہاں وی۔ آئی۔ پی۔ (V.I.P.) نام سے ایک الگ جگہ کا بنایا جانا۔ کہنے کی ضرورت نہیں کہ وی۔ آئی۔ پی۔ (ویری امپارٹینٹ پرسنس یعنی بہت خاص آدمی) کا ڈیرہ جہاں کہیں بھی ہوتا ہے ایک کلنک ثابت ہوتا ہے اور انسان انسان کے بیچ فرق بڑھاتا ہے۔ بہت سے لوگوں کا یہ بھی خیال ہے کہ کمبھ میلے پر جو دردناک دُرگھٹنا پچھلے

किया कि इसमें काफी नौजवान आवेंगे. उसी वक़्त 500 से ऊपर ख़त आ गये जिन्हें सदर के इसरार पर जैप्रकाश बाबू ने पढ़ कर सुनाया. इस तरह तीसरे दिन का आधा वक़्त इस काम में लगा.

सम्मेलन की आख़री बैठक तीसरे पहर को हुई. इसमें पहले तो पिछले दिन की विभागवार बैठकों की कार्रवाई का निचोड़ सुनाया गया. फिर सम्मेलन का ख़ास ठहराव—और एक ही ठहराव—सर्व सेवा संघ के मन्त्री श्री शंकर राव जी देव ने रक्खा. इस ठहराव में कहा गया कि किसी न किसी तरह ज़मीन का आंकड़ा पूरा करना हमारा मक़सद नहीं है. आज जायदाद और मालिकी के बारे में जो ख़्याल समाज पर हावी है उसे हम जड़ मूल से बदलना चाहते हैं. इस मानी में भूमि दान हमारे आर्थिक इन्क़लाब का पहला क़दम है. हमें उम्मीद है और यक़ीन है कि समाज में नये पैमाने क़ायम करने की तमन्ना रखने वाले सभी भाई बहन इस इन्क़लाबी और आंफ़रोशी के तजुरबे के लिये अपना जीवन दान देंगे और उसे जल्दी ही कामयाब बनाने में अपने आप को खपा देंगे.

ठहराव पेश करने के बाद श्री शंकर राव की तक़रीर हुई जिसमें उन्होंने कहा कि बोद्ध गया सम्मेलन का संदेश यही है कि जीवन ही एक यज्ञ है. इस बीच डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद भी आ गये थे. शंकर राव जी के बाद उनका भाशन हुआ जिसमें उन्होंने पिछले तीन साल में भूदान यज्ञ के कारन देश में जो जागृति पैदा हुई है उस पर सन्तोश ज़ाहिर किया. उन्होंने यक़ीन दिलाया कि इस तरह की मज़बूत बुनियादों पर जो भारत बनेगा वह ख़ुशहाल और पायेदार होगा.

अब सम्मेलन का आख़िरी प्रोग्राम—संत विनोबा का प्रवचन—उन्होंने आचार्य कृपालानी को दी हुई चेतावनी पर सबका ध्यान खींचा और कहा कि जीवन दान करने के मानी हैं जीवन शुद्धि का फ़ैसला. फिर उन्होंने कहा कि हमें 'धर्म' और 'परम धर्म' में तमीज़ करनी चाहिये. धर्म इच्छा होते हुये भी परम धर्म में लगना चाहिये. उन्होंने आचार्य कृपलानी की इस बात पर भी रज़ामन्दी ज़ाहिर की कि राजनीति अपने क़ाबू में होनी चाहिये और मौजूदा स्यासी निज़ाम को बदलना चाहिये. मगर, विनोबा जी बोले, मैं कहता हूं कि ताक़त मेरे हाथ में लेने की कोई ज़रूरत नहीं है, ताक़त मेरे कहने में रहे तो काफ़ी है. फिर हाथ में ताक़त लेने की तकलीफ़ उठाने की ज़रूरत नहीं है. इस तरह ताक़त के बाहर रहकर अगर ताक़त पर अधिकार कर सकते हैं तो ताक़त हाथ में लेने का संकट कौन उठायेगा. इसलिये जो इन्क़लाब या राजक्रान्ती हम चाहते हैं वह बिना तकलीफ़ के ऐसे ही होगी. हम चाहते हैं कि कृपलानी

کہا کہ اسمیں کافی نوجوان آوینگے . اسی وقت 500 سے اوپر خط آگئے جنہیں صدر کے اصرار پر جے پرکاش بابو نے پڑھ کر سنایا . اس طرح تیسرے دن کا آدھا وقت اس کام میں لگا .

سمیلن کی آخری بیٹھک تیسرے پہر کو ہوئی . اس میں پہلے تو پچھلے دن کی وبھاگوار بیٹھکوں کی کارروائی کا نچوڑ سنایا گیا . پھر سمیلن کا خاص ٹھہراؤ— اور ایک ہی ٹھہراؤ—سروسیوا سنگھ کے منتری شری شنکر راؤ جی دیو نے رکھا . اس ٹھہراؤ میں کہا گیا کہ کسی نہ کسی طرح زمین کا آنکڑا پورا کرنا ہمارا مقصد نہیں ہے. آج جائداد اور مالکی کے بارے میں جو خیال سماج پر حاوی ہے اسے ہم جڑ مول سے بدلنا چاہتے ہیں . اس معنی میں بھومی دان ہمارے آرتھک انقلاب کا پہلا قدم ہے . ہمیں امید ہے اور یقین ہے کہ سماج میں نئے پیمانے قائم کرنے کی تمنا رکھنے والے سبھی بھائی بہن اس انقلابی اور جانفروشی کے تجربہ کے لیئے اپنا جیون دان دینگے اور اسے جلدی ہی کامیاب بنانے میں اپنے آپ کو کھپا دینگے۔

ٹھہراؤ پیش کرنے کے بعد شری شنکر راؤ کی تقریر ہوئی جس میں انہوں نے کہا کہ بودھ گیا سمیلن کا سندیش یہی ہے کہ جیون ہی ایک یگیہ ہے . اس بیچ ڈاکٹر راجیندر پرشاد بھی آ گئے تھے . شنکر راؤ جی کے بعد ان کا بھاشن ہوا جس میں انہوں نے پچھلے تین سال میں بھودان یگیہ کے کارن دیش میں جو جاگرتی پیدا ہوئی ہے اس پر سنتوش ظاہر کیا . انہوں نے یقین دکھایا کہ اسطرح کی مضبوط بنیادوں پر جو بھارت بنے گا وہ خوشحال اور پائیدار ہوگا .

اب سمیلن کا آخری پروگرام—سنت ونوبا کا پرووچن— انہوں نے آچاریہ کرپلانی کی دی ہوئی چیتاونی پر سب کا دھیان کھینچا اور کہا کہ جیون دان کرنے کے معنی ہیں جیون شدھی کا فیصلہ . پھر انہوں نے کہا کہ ہمیں 'دھرم' اور 'پرم دھرم' میں تمیز کرنی چاہیئے. دھرم اچھا ہوتے ہوئے بھی پرم دھرم میں لگنا چاہیئے . انہوں نے آچاریہ کرپلانی کی اس بات پر بھی رضامندی ظاہر کی کہ راجنیتی اپنے قابو میں ہونی چاہیئے اور موجودہ سیاسی نظام کو بدلنا چاہیئے . مگر' ونوبا جی بولے' میں کہتا ہوں کہ طاقت میرے ہاتھ میں لینے کی کوئی ضرورت نہیں ہے' طاقت میرے کہنے میں رہے تو کافی ہے . پھر ہاتھ میں طاقت لینے کی تکلیف اٹھانے کی ضرورت نہیں ہے . اس طرح طاقت کے باہر رہ کر ہی اگر طاقت پر ادھیکار کر سکتے ہیں تو طاقت ہاتھ میں لینے کا سنکٹ کون اٹھائیگا . اس لیئے جو انقلاب یا راج کرانتی ہم چاہتے ہیں وہ بنا تکلیف کے ایسے ہی ہوگی . ہم چاہتے ہیں کہ کرپلانی

दूसरे का जीवन सुन्दर व पाक बनेगा और नये नये कारकुन भी उन्हें मिलेंगे. आख़ीर में विनोबा जी ने दुआ की कि हम सब जैप्रकाश बाबू की तरह पक्के फ़ैसला वाले हों.

इन दोनों तक़रीरों से सम्मेलन में नई जान आ गई. वहां की हवा में ही मानो फ़र्क़ आ गया. इस दिन प्रार्थना के बाद आचार्य कृपलानी की स्पीच हुई. उन्होंने कहा कि सिर्फ़ पांच करोड़ एकड़ ज़मीन जमा करने और बांट देने से काम नहीं चलने वाला है, राजनीत को भी अपनाना होगा या अपने क़ाबू में करना होगा, ऐसी चेतावनी उन्होंने दी. श्री जैप्रकाश के फ़ैसले की तारीफ़ करते हुये वह बोले की मुझे भी लालच हुआ मगर मैंने कहा कि प्रोफ़ैसर तेरे अन्दर ग़ुस्सा है, मैल है, उनको ख़त्म करना चाहिये क्योंकि दान अच्छी चीज़ का ही हो सकता है. ऐसा क़दम उठाने के पहले हमको आपसी मन मुटाव, उमंगें वग़ैरा मिटा देना चाहिये.

तीसरे दिन, बीस अप्रैल को वह हो गया जिसका कभी गुमान भी नहीं हो सकता था. सुबह के वक़्त विनोबा जी ने श्री जैप्रकाश जी को एक ख़त भेजा. वह यह था :—

"श्री जै प्रकाश.'

कल आपने जो आवाहन किया था उसके जवाब में भूदान यज्ञ मूलक उद्योग प्रधान अहिम्सात्मक क्रान्ति के लिये मेरा जीवन समर्पित है. —विनोबा"

इस ख़त को पाकर कौन दंग नहीं रह जायेगा और कौन हिम्मत करेगा कि इसे अपने पास रक्खे ? जैप्रकाश बाबू ने सम्मेलन की सदर आशा बहन को एक चिट्ठी लिखी—

'बाबा का एक पत्र आया है जो साथ भेज रहा हूं. जिन्होंने हम सब को प्रेरित किया है वही मुझ जैसे नाचीज़ को जीवन दान करें, इस पर कुछ कहा नहीं जाता. इतना ही कहूंगा कि इस अनमोल दान को स्वीकार कर सकूं इसके एकदम नाक़ाबिल हूं. हमें तो जीवन दान भगवान के नाम पर बाबा को ही करना है"

आशा बहन ने ये दोनों ख़त सम्मेलन में पढ़ कर सुनाये. फिर क्या था. मानो जीवन दान की गंगा बह निकली. भरे गले से आशा बहन ने कहा कि मेरा पूरा जीवन इस काम के लिये समर्पित है. फिर लाउडस्पीकर पर श्री धीरेन्द्र भाई आये. उन्होंने कहा कि कुछ घबराहट के साथ मैं भी अपना जीवन दान करता हूं. घबराहट इसलिये कि जीवन दान का मतलब यह नहीं है कि ज़मीन मांगने का काम तेज़ी से चलेगा बल्कि यह कि हम समाज में नये इन्सानी पैमाने क़ायम करेंगे. उन्होंने यक़ीन ज़ाहिर

دوسرے کا جیون سندر و پاک بنیگا اور نئے نئے کارکن بھی انہیں ملینگے ۔ آخیر میں ونوبا جی نے دعا کی کہ ہم سب جے پرکاش باہو کی طرح پکے فیصلہ والے ہوں ۔

ان دونوں تقریروں سے سمیلن میں نئی جان آگئی ۔ وہاں کی ہوا میں ہی مانو فرق آگیا ۔ اس دن پرارتھنا کے بعد آچاریہ کرپلانی کی اسپیچ ہوئی ۔ انہوں نے کہا کہ صرف پانچ کروڑ ایکڑ زمین جمع کرنے اور بانٹ دینے سے کام نہیں چلنے والا ہے' راجنیت کو بھی اپنانا ہوگا یا اپنے قابو میں کرنا ہوگا' ایسی چیتاونی انہوں نے دی ۔ شری جے پرکاش کے فیصلہ کی تعریف کرتے ہوئے وہ بولے کہ مجھے بھی لالچ ہوا مگر میں نے کہا کہ پروفیسر تیرے اندر غصہ ہے' میل ہے' انکو ختم کرنا چاہیئے کیونکہ دان اچھی چیز کا ہی ہوسکتا ہے ۔ ایسا قدم اٹھانے کے پہلے ہم کو آپسی من مٹاؤ' امنگیں وغیرہ مٹا دینا چاہیئے۔

تیسرے دن' 20 اپریل کو وہ ہوگیا جسکا کبھی گمان بھی نہیں ہوسکتا تھا ۔ صبح کے وقت ونوبا جی نے شری جے پرکاش کو ایک خط بھیجا ۔ وہ یہ تھا :—

"شری جے پرکاش'

کل آپ نے جو آواہن کیا تھا اس کے جواب میں بھودان یگیہ مولک' ادیوگ پردھان اہنساتمک کرانتی کے لئے میرا جیون سمرپت ہے ۔

—ونوبا"

اس خط کو پاکر کون دنگ نہیں رہ جائیگا اور کون ہمت کریگا کہ اسے اپنے پاس رکھے ؟ جے پرکاش باہو نے سمیلن کی صدر آشا بہن کو ایک چٹھی لکھی—

" بابا کا ایک پتر آیا ہے جو ساتھ بھیج رہا ہوں ۔ جنہوں نے ہم سب کو پریرت کیا ہے وہی مجھ جیسے ناچیز کو جیون دان کریں' اس پر کچھ کہا نہیں جاتا ۔ اتنا ہی کہونگا کہ اس انمول دان کو سویکار کر سکوں اس کے ایک دم نااہل ہوں ۔ ہمیں تو جیون دان بھگوان کے نام پر بابا کو ہی کرنا ہے ۔"

آشا بہن نے یہ دونوں خط سمیلن میں پڑھکر سنائے ۔ پھر کیا تھا ۔ مانو جیون دان کی گنگا بہہ نکلی۔ بھرے گلے سے آشا بہن نے کہا کہ میرا پورا جیون اس کام کے لیئے سمرپت ہے ۔ پھر لاؤڈ اسپیکر پر شری دھیریندر بھائی آئے ۔ انہوں نے کہا کہ کچھ گھبراہٹ کے ساتھ میں بھی اپنا جیون دان کرتا ہوں ۔ گھبراہٹ اس لیئے کہ جیون دان کا مطلب یہ نہیں ہے کہ زمین مانگنے کا کام تیزی سے چلیگا بلکہ یہ کہ ہم سماج میں نئے انسانی پیمانے قائم کرینگے ۔ انہوں نے یقین ظاہر

शाम की प्रार्थना के बाद अपने प्रवचन में विनोबा जी ने ऐलान किया कि जो भी भूदान यज्ञ में जमीन का दान नहीं करता "देश द्रोही" (ग़द्दार) है. उन्होंने कहा कि बिहार में जितने भी भूमिदान हैं, छोटे या बड़े, उतने ही दान पत्र मुझे चाहिये.

दूसरे दिन सुबह के वक़्त अलग अलग विभागों में भूदानयज्ञ के मुख़्तलिफ़ पहलुओं पर चर्चा हुई. (1) भूदान तहरीक ज़्यादा व्यापक कैसे बने ? (2) ज़मीन के बटवारे का सवाल (3) काम करने वालों की ट्रेनिंग (4) सम्पत्ति दान यज्ञ और साधन दान, और (5) गांव रचना और नई तालीम. दोपहर के इजलास में कुछ सूबों के भूदान संयोजकों (कनवीनरों) ने अपने अपने यहां के काम पर रोशनी डाली. सबसे दिलचस्प चीज़ थी मंगरौठ गांव की नई ज़िन्दगी की कहानी. याद रहे कि मंगरौठ उत्तर प्रदेश के हमीरपुर ज़िले में है और हिन्दुस्तान का पहला गांव है जिसके रहने वालों ने अपनी सारी ज़मीन सन्त विनोबा को दान में दे दी. आजकल मंगरौठ का काम वहां के 16 आदमियों से बना सर्वोदय मन्डल देख रहा है. इस मन्डल के सभी (16) मेम्बर सम्मेलन के सामने हाज़िर हुए. सूबाजाती हाल के बाद सम्मेलन की सबसे ख़ास घटना हुई श्री जयप्रकाश बाबू की स्पीच.

बिहार सूबे के बाशिन्दा होने के नाते श्री जैप्रकाश जी ने इस बात पर दुख ज़ाहिर किया कि बिहार में अब तक भी बाबा (विनोबा जी) की 32 लाख एकड़ की मांग को पूरा नहीं किया. बिहार यह काम कर सकता था मगर स्यासी पार्टियों के कारकुन कांग्रेस हों या प्रजा समाजवादी—पूरी लगन के साथ इसमें नहीं जुटे. उन्होंने कहा कि इस आन्दोलन में मेरी श्रद्धा दिन दिन बढ़ती जा रही है. क़ानून बिल जोड़ने में एकदम असमर्थ है. मगर फिर कौन ऐसी पार्टी है जो यह क़ानून बना सके कि ज़मीन पर अब निजी मिल्कियत न किसी फ़र्द की रहेगी न सरकार की ? उन्होंने संगीन हो कर कहा कि वक़्त आ गया है जब हम लोगों को इस काम में अपना पूरा जीवन लगा देना चाहिये. अब एक बरस नहीं, पांच बरस नहीं, जीवन दान का सवाल है ! मेरा सौभाग्य है कि इन जीवन दानियों की सूची में पहला नाम मैं अपना लिखा रहा हूं.

बहुत ही गम्भीर और शान्त आवाज़ में विनोबा जी बोले कि अभी जो स्पीच हुई वह मानो एक दिल बोल रहा था. उन्होंने यक़ीन ज़ाहिर किया कि भूदान यज्ञ की तहरीक कामयाब होते होते कितने के ही जीवन में फेर बदल कर उन्हें कामयाब बनायगी. विनोबा जी बोले कि अगर तामीरी काम करने वाले या गांधी वाले प्रेम से, चौड़े दिमाग़ और खुले दिल से काम करें तो एक

شام کو پرارتھنا کے بعد اپنے پروچن میں ونوبا جی نے اعلان کیا کہ جو بھی بھودان یگیہ میں زمین کا دان نہیں کرتا وہ "دیش دروہی" (غدار) ہے۔ انہوں نے کہا کہ بہار میں جتنے بھی بھومی دان ہیں، چھوٹے یا بڑے، اتنے ہی دان پتر مجھے چاہئے۔

دوسرے دن صبح کے وقت الگ الگ وبھاگوں میں بھودان یگیہ کے مختلف پہلوؤں پر چرچہ ہوئی۔ (1) بھودان تحریک زیادہ ویاپک کیسے بنے ؟ (2) زمین کے بٹوارے کا سوال (3) کام کرنے والوں کی ٹریننگ (4) سمپتی دان یگیہ اور سادھن دان، اور (5) گاؤں رچنا اور نئی تعلیم۔ دوپہر کے اجلاس میں کچھ صوبوں کے بھودان سنیوجکوں (کنوینروں) نے اپنے اپنے یہاں کے کام پر روشنی ڈالی۔ سب سے دلچسپ چیز تھی منگروٹھ گاؤں کی نئی زندگی کی کہانی۔ یاد رہے کہ منگروٹھ اترپردیش کے ہمیرپور ضلع میں ہے اور ہندستان کا پہلا گاؤں ہے جس کے رہنے والوں نے اپنی ساری زمین سنت ونوبا کو دان میں دے دی۔ آجکل منگروٹھ کا کام وہاں کے سولہ آدمیوں سے بنا سرودے منڈل دیکھ رہا ہے۔ اس منڈل کے سبھی (16) ممبر سمیلن کے سامنے حاضر ہوئے۔ صوبہ جاتی حال کے بعد سمیلن کی سب سے خاص گھٹنا ہوئی شری جے پرکاش بابو کی اسپیچ۔

بہار صوبہ کے باشندہ ہونے کے ناتے شری جے پرکاش جی نے اس بات پر دکھ ظاہر کیا کہ بہار میں اب تک بھی بابا (ونوبا جی) کی 32 لاکھ ایکڑ کی مانگ کو پورا نہیں کیا۔ بہار یہ کام کرسکتا تھا مگر سیاسی پارٹیوں کے کارکن —کانگریسی ہوں یا پرجا سماج وادی—پوری لگن کے ساتھ اس میں نہیں جٹے۔ انہوں نے کہا کہ اس آندولن میں میری شردھا دن دن بڑھتی جارہی ہے۔ قانون بل جوڑنے میں ایکدم اسمرتھ ہے۔ پھر کون پارٹی ایسی ہے جو یہ قانون بنا سکے کہ زمین پر اب نجی ملکیت نہ کسی فرد کی رہیگی نہ سرکار کی ؟ انہوں نے سنگین ہوکر کہا کہ وقت آگیا ہے جب ہم لوگوں کو اس کام میں اپنا پورا جیون لگا دینا چاہیئے۔ اب ایک برس نہیں، پانچ برس نہیں، جیون دان کا سوال ہے ! میرا سوبھاگیہ ہے کہ اس جیون دانیوں کی سوچی میں پہلا نام میں اپنا لکھا رہا ہوں۔

بہت ہی گمبھیر اور شانت آواز میں ونوبا جی بولے کہ ابھی جو اسپیچ ہوئی وہ مانو ایک دل بول رہا تھا۔ انہوں نے یقین ظاہر کیا کہ بھودان یگیہ کی تحریک کامیاب ہوتے ہوتے کتنوں کے ہی جیون میں پھیر بدل کر انہیں کامیاب بنائیگی۔ ونوباجی بولے کہ اگر تعمیری کام کرنے والے یا گاندھی والے پریم سے، چوڑے دماغ اور کھلے دل سے کام کریں تو ایک

...ल है कि कुछ कम्युनिस्ट भाई भी मौजूद थे मगर ...नें कोई नुमायां हिस्सा न लिया. सम्मेलन की सदारत ...ती आशा देवी आर्यानायिकम ने की.

अपनी पहली तक़रीर में जो तारीख़ 18 को सेपहर ...सस हुई विनोबा जी ने पण्डित नेहरू के आगे मानो ...चंद सवाल पेश किये :

1—क्या मिलकर काम करने के लिये आफ़तें चाहिये क्या मौजूदा हिन्दुस्तान में जो बेशुमार भेद भाव हैं काफ़ी आफ़त नहीं हैं ? चुनाव के कारन जाति भेद ...बूत हो रहे हैं. समझदार लोगों को सोचना चाहिये कि ...में क्या तरमीम की जाय.

2—पिछले तीन बरस में मुल्क के अन्दर एक नई हवा ...र हुई है जिसके अन्दर ज़मीन की मालकी किसी एक ...स की नहीं हो सकती. इसलिये ज़रूरी है कि जो भी ...त हो, चाहे दौलत की शकल में, चाहे किसी शकल में, ...का उपयोग सबके लिये होना चाहिये. जो भी ज़मीन मेहनत करने की तैयारी रखता है उसे ज़मीन मिलनी चाहिये जैसे कि प्यासे को पानी.

3—जिस तरह इङ्गलैंड में हर किसी को तैरना व बोटिंग ...ता है उसी तरह हिन्दुस्तान में हर किसी को सूत कातना ...ना चाहिये. यह सवाल महज़ आर्थिक व सामाजिक नहीं बल्कि देश की रक्षा का सवाल है.

पण्डित जवाहरलाल ने अपने तरीक़े से जवाब देते हुये ... कि हमारे सामने दरअसल 36 करोड़ सवाल हैं. उन्होंने ...रार किया कि जात पात बढ़ रही है मगर चुनाव ...एक पेचीदा सवाल है जिसका वास्ता विधान से है. ...मीन के मसले पर उन्होंने कहा कि भूदान यज्ञ का ...ीक़ा गांधी जी के जैसा एक अजीब व ग़रीब तरीक़ा ...लेकिन अगर सरकार इसमें पड़ती है तो इसका रूप ...ल जाने का डर है क्योंकि सरकार का हाथ ज़रा भारी ...ता है और कताई के बारे में वह बोले कि ज़रूर इससे ...ीबों को मदद पहुंचती है. लेकिन आज के ज़माने में ...ाइन्स की नई खोजों को भी नज़र अन्दाज़ नहीं किया ... सकता.

पण्डित जवाहर लाल के बाद राधा कृश्नन ने कहा ...भूदान से इस मुल्क के देहातों में इन्क़लाब आयेगा ...र साथ ही साथ आपस की छुआछूत और भेद भाव ... होंगे. उन्होंने बताया कि ऊंच नीच या छुआ छूत के फ़क़ ...ने के मानी हैं इन्सान की शान व मान मर्यादा पर ...द करना जो एक पाप है और किसी धर्म में जायज़ ... कहा गया है. धर्म वही है जो समाज को जोड़ता है ...र अधर्म वह जो उसके टुकड़े करे.

خیال ھے کہ کچھ کمیونسٹ بھائی بھی موجود تھے مگر انہوں نے کوئی نمایاں حصہ نہ لیا ۔ سمیلن کی صدارت شریمتی آشا دیوی آریہ نایکم نے کی ۔

اپنی پہلی تقریر میں جو تاریخ 18 کو سہ پہر کے وقت ہوئی ونوبا جی نے پنڈت نہرو کے آگے مانو یہ چند سوال پیش کئے :

1—کیا ملکر کام کرنے کے لئے آفتیں چاھیئے ھیں' کیا موجودہ ھندوستان میں جو بےشمار بھید بھاؤ ھیں وہ کافی آفت نہیں ھیں ؟ چناؤ کے کارن جاتی بھید مضبوط ھو رھے ھیں ۔ سمجھدار لوگوں کو سوچنا چاھیئے کہ اس میں کیا ترمیم کی جائے ۔

2—پچھلے تین برس میں ملک کے اندر ایک نئی ھوا تیار ھوئی ھے جس کے اندر زمین کی مالکی کسی ایک شخص کی نہیں ھو سکتی ۔ اس لئے ضروری ھے کہ جو بھی طاقت ھو' چاھے دولت کی شکل میں' چاھے کسی شکل میں' اسکا اپیوگ سب کے لئے ھونا چاھیئے ۔ جو بھی زمین پر محنت کرنے کی تیاری رکھتا ھے اسے زمین ملنی ھی چاھیئے جیسے کہ پیاسے کو پانی ۔

3—جس طرح انگلینڈ میں ھر کسی کو تیرنا و بوٹنگ آتا ھے اسی طرح ھندستان میں ھر کسی کو سوت کاتنا آنا چاھیئے ۔ یہ سوال محض آرتھک و سماجک ھی نہیں بلکہ دیش کی رکشا کا سوال ھے ۔

پنڈت جواھر لال نے اپنے طریقہ سے جواب دیتے ہوئے کہا کہ ھمارے سامنے دراصل 36 کروڑ سوال ھیں ۔ انہوں نے اقرار کیا کہ جات پات بڑھ رھی ھے مگر چناؤ کا ایک پیچیدہ سوال ھے جس کا واسطہ ودھان سے ھے ۔ زمین کے مسئلہ پر انہوں نے کہا کہ بھودان یگیہ کا طریقہ گاندھی جی کے جیسا ایک عجیب و غریب طریقہ ھے ۔ لیکن اگر سرکار اس میں پڑتی ھے تو اس کا روپ بدل جانے کا ڈر ھے کیونکہ سرکار کا ھاتھ ذرا بھاری پڑتا ھے اور کتائی کے بارے میں وہ بولے کہ ضرور اس سے غریبوں کو مدد پہونچتی ھے ۔ لیکن آج کے زمانہ میں سائنس کی کھوجوں کو بھی نظر انداز نہیں کیا جاسکتا ۔

پنڈت جواھر لال کے بعد ڈاکٹر رادھا کرشنن نے کہا کہ بھودان سے اس ملک کے دیہاتوں میں انقلاب آئیگا اور ساتھ ھی ساتھ آپس کی چھوا چھوت و بھید بھاؤ دور ھونگے ۔ انہوں نے بتایا کہ اونچ نیچ یا چھوا چھوت کے فرق رکھنے کے معنی ھیں انسان کی شان و مان مریادا پر چوٹ کرنا جو ایک پاپ ھے اور کسی دھرم میں جائز نہیں کہا گیا ھے ۔ دھرم وھی ھے جو سماج کو جوڑتا ھے اور ادھرم وہ جو اس کے ٹکڑے کرے ۔

इस सम्मेलन पर नज़र डालने के पहले पिछले दो सम्मेलनों पर कुछ थोड़ी सी रोशनी डालनी ज़रूरी है. भूदान तहरीक की शुरूआत 18 अप्रैल सन 1951 को हुई जब हैदराबाद के रियासत के तिलंगाना नाम के इलाक़े के कोचमपल्ली गांव में विनोबा जी की अस्सी एकड़ की मांग पर सौ एकड़ ज़मीन मिली. क़रीब एक साल तक विनोबा जी अकेले ही इस तहरीक को चलाते रहे और जब लगभग एक लाख एकड़ ज़मीन उन्हें मिल गई तो अप्रैल सन 1952 में सेवापुरी (बनारस) में होने वाले चौथे सर्वोदय सम्मेलन में सर्व सेवा संघ ने इस काम को बाज़ाब्ता अपनाया और सर्वोदय सेवकों ने यह प्रन किया कि दो साल के अन्दर कम से कम 25 लाख एकड़ ज़मीन जमा करेंगे. इसके बाद मार्च सन 1953 में चांडिल (बिहार) में होने वाले पांचवें सम्मेलन में यह चीज़ ज़ाहिर की गई कि भूदान यज्ञ का मक़सद देहात देहात ग्रामराज्य क़ायम करना है जिसके लिये मौजूदा हालत में फेर बदल ज़रूर होगा, यानी आज जो स्यासी व माली ताक़त व दौलत एक एक जगह जमा है इसको बांट बांट कर गांव गांव पहुंचाना होगा. विनोबा जी ने साफ़ साफ़ ऐलान किया कि हमें आज़ाद जन शक्ति (अवाम की ताक़त) मुहय्या करनी होगी जो फ़ौजी या हिंसा शक्ति के ख़िलाफ़ होगी और क़ानूनी या सरकारी शक्ति से अलहदा होगी. इस दो साल के अन्दर भूदान आन्दोलन मुल्क के अन्दर तेज़ी के साथ फैला और 2,37,022 दाताओं से 28,15,101 एकड़ ज़मीन हासिल हुई. इसका मतलब है कि सृजनहार की बरकत से सेवापुरी का संकल्प पूरा हुआ और क़रीब 3 करोड़ लोगों तक भूदान यज्ञ का सन्देश पहुंच गया.

ज़ाहिर है कि बोद्ध गया सम्मेलन पर सर्वोदय समाज को अब आगे क़दम रखना था और मुल्क के सामने नई तामीर का नक़्शा पेश करना था. ख़ुशी की बात है कि इस सम्मेलन में यही काम हुआ और फ़ालतू तक़रीरें या ग़ैर ज़रूरी ठहराव वग़ैरा क़तई न हुये. इस सम्मेलन में पहले दिन, तारीख़ 18 को, पण्डित जवाहरलाल नेहरू और डाक्टर राधाकृश्नन ने शिरकत की. इन दोनों मेहमानों ने सम्मेलन में तक़रीर की और फिर शाम को प्रार्थना के बाद एक बड़े हुजूम के सामने भी विनोबा जी के प्रवचन के बाद पण्डित जी की स्पीच हुई. तारीख़ 19 को आचार्य कृपलानी शरीक हुये और 20 तारीख़ को राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद. इनके अलावा कांग्रेस पार्टी के बहुत से कार्कुन व मिनिस्टर (मरकज़ी व सूबाई) भी तशरीफ़ लाये जिन्होंने मुख़्तलिफ़ चर्चाओं में हिस्सा लिया और इस तरह प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नेताओं ने भी. हमारा

اِس سمیلن پر نظر ڈالنے سے پہلے پچھلے دو سمیلنوں پر کچھ تھوڑی سی روشنی ڈالنا ضروری ہے۔ بھودان تحریک کی شروعات 18 اپریل سن 1951 کو ہوئی جب حیدرآباد ریاست کے تیلنگانہ نام کے علاقہ کے کوچمپلی گاؤں میں ونوبا جی کی 80 ایکڑ کی مانگ پر 100 ایکڑ زمین ملی۔ قریب ایک سال تک ونوبا جی اکیلے ہی اس تحریک کو چلاتے رہے اور جب لگ بھگ ایک لاکھ ایکڑ زمین انہیں مل گئی تو اپریل سن 1952 میں سیوا پوری (بنارس) میں ہونے والے چوتھے سرووِدے سمیلن میں سروسیوا سنگھ نے اس کام کو باضابطہ اپنایا اور سرووِدے سیوکوں نے یہ پرن کیا کہ دو سال کے اندر کم سے کم 25 لاکھ ایکڑ زمین جمع کریں گے۔ اس کے بعد مارچ سن 1953 میں چانڈل (بہار) میں ہونے والے پانچویں سمیلن میں یہ چیز ظاہر کی گئی کہ بھودان یگیہ کا مقصد دیہات دیہات گرام راج قائم کرنا ہے جس کے لیئے موجودہ حالت میں پھیر بدل ضروری ہوگا' یعنی آج جو سیاسی و مالی طاقت و دولت ایک ایک جگہ جمع ہے اِسکو بانٹ بانٹ کر گاؤں گاؤں پہونچانا ہوگا۔ ونوبا جی نے صاف صاف اعلان کیا کہ ہمیں آزاد جن شکتی (عوام کی طاقت) مہیا کرنی ہوگی جو فوجی یا ہنسا شکتی کے خلاف ہوگی اور قانونی یا سرکاری شکتی سے علیحدہ ہوگی۔ اس دو سال کے اندر بھودان آندولن ملک کے اندر تیزی کے ساتھ پھیلا اور 2,37,022 داتاؤں سے 28,15,101 ایکڑ زمین حاصل ہوئی۔ اِسکا مطلب ہے کہ سرجنہار کی برکت سے سیواپوری کا سنکلپ پورا ہوا اور قریب تین کروڑ لوگوں تک بھودان یگیہ کا سندیش پہونچ گیا۔

ظاہر ہے کہ بودھ گیا سمیلن پر سرووِدے سماج کو اب آگے قدم رکھنا تھا اور ملک کے سامنے نئی تعمیر کا نقشہ پیش کرنا تھا۔ خوشی کی بات ہے کہ اس سمیلن میں یہی کام ہوا اور فالتو تقریریں یا غیر ضروری ٹھہراؤ وغیرہ قطعی نہ ہوئے۔ اِس سمیلن میں پہلے دن' تاریخ 18 کو' پنڈت جواہر لال نہرو اور ڈاکٹر رادھا کرشنن نے شرکت کی۔ ان دونوں مہمانوں نے سمیلن میں تقریر کی اور پھر شام کو پراتھنا کے بعد ایک بڑے ہجوم کے سامنے بھی ونوبا جی کے پروچن کے بعد پنڈت جی کی اسپیچ ہوئی۔ تاریخ 19 کو آچاریہ کرپلانی شریک ہوئے اور 20 تاریخ کو راشٹر پتی ڈاکٹر راجیندر پرشاد۔ ان کے علاوہ کانگریس پارٹی کے بہت سے کارکن و منسٹر (مرکزی و صوبائی) بھی تشریف لائے جنھوں نے مختلف چرچاؤں میں حصہ لیا اور اس طرح پرجا سوشلسٹ پارٹی کے نیتاؤں نے بھی۔ ہمارا

कभी भी, किसी क़ीमत पर भी, हिन्दुस्तान को न लुटने देना चाहेंगे और न उसकी लूट में शरीक होंगे.

नई दिल्ली के नक़्क़ारख़ाने में हमारी जैसी तूती की आवाज़ हरगिज़ सुनाई नहीं पड़ सकती. मगर हम यह कहना अपना फ़र्ज़ समझते हैं कि अगर "इण्डिया लिमिटेड" का ख़्याल हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर के दिल में घर कर गया है तो यह बड़े अफ़सोस और दुख और फ़िक्र की बात है. पार्लियामेन्ट के किसी भी मेम्बर को इस ख़्याल में कोई भी तकलीफ़ न पहुंचना और सबका उसे चुप चाप गवारा कर लेना और भी ज़्यादा दर्दनाक बात है. क्या नई दिल्ली की हवा हमें सुम्न बनाती चली जा रही है? किधर ले जाएगा हमारे मुल्क को यह पार्लियामेन्टरी निज़ाम, यह सियासत और यह पारटी-बाज़ी, यह विलायतियों की नक़्ल? बिलाशक, जैसा महात्मा गांधी ने "हिन्द स्वराज्य" में कहा है, ख़ातमा व मौत की तरफ़.

हम नम्रता के साथ चेतावनी देना चाहते हैं कि "इण्डिया लिमिटेड" का कारोबार ज़ोर शोर से जारी है और भारत माता की मिट्टी पलीद की जा रही है. हमारे आला से आला हुक्काम जैसे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर इसमें कंधा लगा रहे हैं. यह ग़द्दारी कब तक चलेगी? हिन्दुस्तान की जनता को यह कभी बरदाश्त न होगा.

23. 5. '54 —सुरेश रामभाई

कبھی بھی، کسی قیمت پر بھی، ہندستان کو نہ لٹنے دینا چاہینگے اور نہ اسکی لوٹ میں شریک ہونگے ۔

نئی دلی کے نقارخانے میں ہماری جیسی طوطی کی آواز ہرگز سنائی نہیں پڑسکتی ۔ مگر ہم یہ کہنا اپنا فرض سمجھتے ہیں کہ اگر ”انڈیا لمیٹیڈ“ کا خیال ہمارے فائیننس منسٹر کے دل میں گھر کر گیا ہے تو یہ بڑے افسوس اور دکھ اور فکر کی بات ہے ۔ پارلیامنٹ کے کسی بھی ممبر کو اس خیال پر کوئی تکلیف نہ پہونچنا اور سب کا اسے چپ چاپ گوارا کرلینا اور بھی زیادہ دردناک بات ہے ۔ کیا نئی دلی کی ہوا ہمیں سن بناتی چلی جارہی ہے؟ کدھر لے جائیگا ہمارے ملک کو یہ پارلیامنٹری نظام، یہ سیاست اور یہ پارٹی بازی، یہ ولایتیوں کی نقل؟ بلاشک، جیسا مہاتما گاندھی نے ”ہند سوراجیہ“ میں کہا ہے، خاتمہ و موت کی طرف ۔

ہم نمرتا کے ساتھ چیتاونی دینا چاہتے ہیں کہ ”انڈیا لمیٹیڈ“ کا کاروبار زور شور سے جاری ہے اور بھارت ماتا کی مٹی پلید کی جا رہی ہے۔ ہمارے اعلیٰ سے اعلیٰ حکام جیسے فائیننس منسٹر اس میں کندھا لگا رہے ہیں ۔ یہ غداری کب تک چلیگی؟ ہندستان کی جنتا کو یہ کبھی برداشت نہ ہوگا ۔

—سریش رام بھائی 23 . 5 . '54

बौद्ध गया सम्मेलन पर एक नज़र

अप्रैल महीने की तारीख़ 18, 19 और 20 को गया ज़िले के सरनाम मुक़ाम बौद्ध गया में सर्वोदय समाज का छटा सालाना जल्सा या सम्मेलन हुआ. यह सम्मेलन पिछले पांचों सम्मेलनों के मुक़ाबले ज़्यादा ज़िन्दा, ज़ोरदार और जानदार था. ऐसा होना क़ुदरती है और हमें उम्मीद है कि आगे के सम्मेलन इससे भी बढ़ चढ़ कर होंगे क्योंकि सन्त विनोबा का भूदान यज्ञ आन्दोलन एक ज़िन्दा आन्दोलन है जो मुल्क की सोई हुई ताक़तों को जगा रहा है, समाज के दबे हुये हिस्सों को उभार रहा है और हर किसी को सोचने और अपनी जगह से हरकत करने के लिये मजबूर कर रहा है. इसलिये इसमें दिन दिन नये नये कारकुन आ रहे हैं और जब तक यह भूदान तहरीक ज़िन्दा तहरीक रहती है तब तक हर सर्वोदय सम्मेलन मुल्क की जनता को अपने मक़सद की तरफ़ बढ़ने की मन्ज़िल में मील के एक एक पत्थर की तरह साबित होगा.

بودھ گیا سمیلن پر ایک نظر

اپریل مہینے کی تاریخ 19,18 اور 20 کو گیا ضلع کے سرنام مقام بودھ گیا میں سرودے سماج کا چھٹا سالانہ جلسہ یا سمیلن ہوا. یہ سمیلن پچھلے پانچوں سمیلنوں کے مقابلہ زیادہ زندہ، زوردار اور جاندار تھا ۔ ایسا ہونا قدرتی ہے اور ہمیں امید ہے کہ آگے کے سمیلن اس سے بھی بڑھ چڑھ کر ہونگے کیونکہ سنت ونوبا کا بھودان یگیہ آندولن ایک زندہ آندولن ہے جو ملک کی سوئی ہوئی طاقتوں کو جگا رہا ہے، سماج کے دبے ہوئے حصوں کو ابھار رہا ہے اور ہر کسی کو سوچنے سمجھنے اور اپنی جگہ سے حرکت کرنے کے لئے مجبور کر رہا ہے ۔ اس لئے اسمیں دن دن نئے کارکن آ رہے ہیں اور جب تک یہ بھودان تحریک زندہ تحریک رہتی ہے تب تک ہر سرودے سمیلن ملک کی جنتا کا اپنے مقصد کی طرف بڑھنے کی منزل میں میل کے ایک ایک پتھر کی طرح ثابت ہوگا ۔

जिससे यहां की ग़रीब जनता यह महसूस कर सकती है कि वह भी इस मुल्क के कारोबार यानी "इन्डिया लिमिटेड" में शरीक है !

हमें दुख और ताज्जुब है कि फ़ाइनेन्स मिनिस्टर के इस लफ़्ज़ पर पार्लियामेंन्ट के किसी भी मेम्बर ने अफ़सोस ज़ाहिर नहीं किया. कौन नहीं जानता कि "इंडिया लिमिटेड" के ख़याल के पीछे हिन्दुस्तान की लूट और तबाही की कहानी भरी पड़ी है. आज भी "इन्डिया लिमिटेड" के नाम से हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों और दूसरी विलायत वालों के अनेकों कारख़ाने और दूकानें हैं जिनकी बदौलत हिन्दुस्तान के रहे सहे उद्योग धन्दे मिट रहे हैं यहां की बची खुची दौलत बाहर चली जा रही है. और जब तक "इन्डिया लिमिटेड" नाम का कारोबार इस मुल्क में चलता है यहां के आदमी का सिर उठाने का मौक़ा नहीं है. हम समझते थे कि आज़ाद सरकार की यह कोशिश होगी कि यह "इन्डिया लिमिटेड" का धन्दा इस मुल्क से उठ जाये. मगर फ़ाइनेन्स मिनिस्टर की बात से ऐसा लगता है कि यह धन्दा और भी गहरी जड़ें पकड़ रहा है और फ़ाइनेन्स मिनिस्टर इस में पूरा ज़ोर लगा रहे हैं. यही वजह है कि हिन्दुस्तान दिन दिन ज़्यादा वीरान होता चला जा रहा है और हमारे यहां के ग़रीब तेज़ी के साथ ज़्यादा ग़रीब और अमीर ज़्यादा अमीर होते जा रहे हैं.

हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर श्री चिन्तामन देशमुख पुराने आई. सी. एस. हैं और अंग्रेज़ी राज में आला जगहों पर रौनक़ पाते थे. क़ुदरती तौर पर उनको नस नस में अंग्रेज़ी हुकूमत यानी "इन्डिया लिमिटेड" की गंध समाई हुई है और वह अंग्रेज़ी आर्थिक ढांचे की एक ज़बरदस्त पैरोकार ही नहीं बल्कि उसकी पुख़्ता पैदावार हैं. लिहाज़ा वह हर चीज़ अंग्रेज़ी चश्मे से देखते हैं और बिला इस लिहाज़ के हिन्दुस्तान की सर ज़मीन क्या चाहती है अंग्रेज़ी तर्ज़ व लूट को वह इस देश में बरक़रार रखना चाहते हैं. क़सूर उनका नहीं है, उस तालीम का है जो उन्होंने पाई है, उस मुलाज़मत का है जिस में वह बरसों रहे और उस चमक का है जिसने उनकी आंखों को चौंधिया दिया है. ख़ुश-क़िस्मती कहें या बद-क़िस्मती, आर्थिक मामलों में हमारे प्रधान मंत्री भी उनके काफ़ी हम-ख़्याल हैं.

लेकिन हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि जो जवाहर लाल हर सभा में "जय हिन्द" की आवाज़ बुलन्द करते हैं या आज़ादी के पहले "भारत माता की जय" से आसमान को गुंजा डालते थे, उन्हें "इन्डिया लिमिटेड" का ख़्याल ज़रा भी बरदाश्त नहीं हो सकता था और वह

جس سے یہاں کی غریب جنتا یہ محسوس کر سکتی ہے کہ وہ بھی اس ملک کے کاروبار یعنی " انڈیا لمیٹڈ " میں شریک ہے !

ہمیں دکھ اور تعجب ہے کہ فائننس منسٹر کے اس لفظ پر پارلیامینٹ کے کسی بھی ممبر نے افسوس ظاہر نہیں کیا. کون نہیں جانتا کہ " انڈیا لمیٹڈ " کے خیال کے پیچھے ہندستان کی لوٹ اور تباہی کی کہانی بھری پڑی ہے . آج بھی " انڈیا لمیٹڈ " کے نام سے ہندستان میں انگریزوں اور دوسری ولایت والوں کے انیکوں کارخانے اور دوکانیں ہیں جن کی بدولت ہندستان کے رہے سہے ادیوگ دھندے مٹ رہے ہیں اور یہاں کی بچی کھچی دولت باہر چلی جا رہی ہے . اور جب تک " انڈیا لمیٹڈ " نام کا کاروبار اس ملک میں چلتا ہے یہاں کے آدمی کو سر اٹھانے کے لیئے موقع نہیں ہے . ہم سمجھتے تھے کہ آزاد سرکار کی یہ کوشش ہوگی کہ یہ " انڈیا لمیٹڈ " کا دھندا اس ملک سے اٹھ جائے . مگر فائننس منسٹر کی بات سے ایسا لگتا ہے کہ یہ دھندا اور بھی گہری جڑیں پکڑ رہا ہے اور فائننس منسٹر اسمیں پورا زور لگا رہے ہیں . یہی وجہ ہے کہ ہندستان دن دن زیادہ ویران ہوتا چلا جا رہا ہے اور ہمارے یہاں کے غریب تیزی کے ساتھ زیادہ غریب اور امیر زیادہ امیر ہوتے جا رہے ہیں .

ہمارے فائننس منسٹر شری چنتامن دیش مکھ پرانے آئی . سی . ایس ہیں اور انگریزی راج میں اعلیٰ جگہوں پر رونق پاتے تھے . قدرتی طور پر ان کی نس نس میں انگریزی حکومت یعنی انڈیا لمیٹڈ کی گندھ سمائی ہوئی ہے اور وہ انگریزی آرتھک ڈھانچہ کی ایک زبردست پیروکار ہی نہیں بلکہ اسکی پختہ پیداوار ہیں . لہذا وہ ہر چیز انگریزی چشمہ سے دیکھتے ہیں اور بلا اس لحاظ کے کہ ہندستان کی سرزمین کیا چاہتی ہے انگریزی طرز و لوٹ کو وہ اس دیش میں برقرار رکھنا چاہتے ہیں . قصور انکا نہیں ہے' اس تعلیم کا ہے جو انہوں نے پائی ہے' اس ملازمت کا ہے جس میں وہ برسوں رہے اور اس چمک کا ہے جس نے انکی آنکھوں کو چوندھیا دیا ہے . خوش قسمتی کہیں یا بدقسمتی' آرتھک معاملوں میں ہمارے پردھان منتری بھی ان کے کافی ہم خیال ہیں .

لیکن ہم یہ اچھی طرح جانتے ہیں کہ جو جواہرلال ہر سبھا میں "جے ہند" کی آواز بلند کرتے ہیں' یا آزادی کے پہلے "بھارت ماتا کی جے" سے آسمان کو گونجا ڈالتے تھے' انہیں "انڈیا لمیٹڈ" کا خیال ذرا بھی برداشت نہیں ہوسکتا تھا اور وہ

नहीं चाहते—हमारे साथ या हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी के साथ क्यों की गई ?

इस घटना से हमें एक और कुछ पुरानी घटना याद आ गई. "बेगम सीता" नाम का जोड़ भी एक बार हिन्दुस्तानी के हिमायतियों के सिर मंढा जा चुका है और भारत भर में गूंज चुका है. हमने खूब पता लगाने की कोशिश की. बहुत से लोगों से पूछा. अपने सब साथियों से भी पूछा. जिस हिन्दुस्तानी कमेटी के सिर "बेगम सीता" मंढा जा रहा था उसके एक एक मेम्बर—बाबू राजेन्द्र प्रसाद, डाक्टर ताराचन्द, काका कालेलकर, डाक्टर सैयद महमूद और सुरज पुरा के राजा राधिका रमन प्रसाद सिंह —सब से पूछा. हमें कहीं भी देश भर में कोई ऐसी किताब न मिली जो किसी भी हिन्दुस्तानी सभा या हिन्दुस्तानी कमेटी की निकाली या मन्ज़ूर की हुई हो और जिसमें "बेगम सीता" आता हो. और उसके बाद तो केवल "बेगम सीता" पर ही कहने वालों ने संतोश नहीं किया. हमने अपने कानों से ज़िम्मेवार हिन्दी प्रेमियों के मुंह से 'बादशाह दशरथ' 'शाहज़ादा लव' और 'मौलवी वशिश्ठ' भी सुना है. दूसरों को चढ़ाने के लिये अपनी नाक काटने वाले अभी दुनिया से मिटे नहीं और इनमें से कई वह लोग हैं जो खुली सभाओं के अन्दर न केवल 'लार्ड कृश्ना' ही कहते हैं बल्कि अपनी धर्म पत्नियों को "लेडी अमुक" और "मिसेज़ अमुक" कह कर परिचय कराते हैं !

हम स्वीकार करते हैं कि हमारे शब्दों में अब गिला और कड़ुआपन आने लगा. इसलिये हम इस नोट को यहीं बन्द करते हैं. भगवान हम सब को सुमति दें कि हम सचाई, ईमानदारी और इन्साफ़ को निगाह में रखते हुए शान्ति और प्रेम के साथ जनता में भाशा के सवाल और देश के और सब सवालों पर विचार कर सकें और मिल कर चल सकें.

14. 5. '54 —सुन्दरलाल

जै हिन्द या "इन्डिया लिमिटेड" ?

हमारी पार्लियामेन्ट के हाल के बजट इजलास में जब सरकार की तरफ़ से लगने वाले नए नए टैक्सों पर चरचा चली तो कुछ मेम्बरान ने यह कहा कि अमीरों पर भी जो टैक्स लगते हैं उनका भार दर असल ग़रीबों पर ही पड़ता है और पान, सुपारी, तम्बाकू जैसी ज़रूरत की चीज़ों पर टैक्स तो सीधे ही ग़रीबों के मत्थे पड़ता है. कहा जाता है कि इस पर हमारे फ़ाइनेन्स मिनिस्टर साहब ने फ़रमाया कि ग़रीबों पर टैक्स लगना ही चाहिये और उन्हें यह चीज़ ख़ुशी मन्ज़ूर करनी चाहिए क्योंकि यही एक ज़रिया है

نہیں چاہتے—ہمارے ساتھ یا ہندستانی کلچر سوسائٹی کے ساتھ کیوں کی گئی ؟

اس گھٹنا سے ہمیں ایک اور کچھ پرانی گھٹنا یاد آ گئی. " بیگم سیتا " نام کا جوڑ بھی ایک بار ہندستانی کے حمایتیوں کے سر منڈھا جا چکا ہے اور بھارت بھر میں گونج چکا ہے . ہم نے خوب پتہ لگانے کی کوشش کی . بہت سے لوگوں سے پوچھا . اپنے سب ساتھیوں سے بھی پوچھا . جس ہندستانی کمیٹی کے سر " بیگم سیتا " منڈھا جا رہا تھا اُس کے ایک ایک ممبر—بابو راجیندر پرشاد' ڈاکٹر تارا چند' کاکا کالیلکر' ڈاکٹر سید محمود' اور سورج پورا کے راجا رادھکارمن پرشادسنگھ—سب سے پوچھا. ہمیں کہیں بھی دیش بھر میں کوئی ایسی کتاب نہ ملی جو کسی بھی ہندستانی سبھا یا ہندستانی کمیٹی کی نکالی یا منظور کی ہوئی ہو اور جس میں " بیگم سیتا " آتا ہو . اور اس کے بعد تو کیول " بیگم سیتا " پر ہی کہنے والوں نے سنتوش نہیں کیا . ہم نے اپنے کانوں سے ذمہ‌وار ہندی پریمیوں کے منہ سے ' بادشاہ دشرتھ ' ' شہزادہ لو ' اور ' مولوی وششٹھ ' بھی سنا ہے . دوسروں کو چڑھانے کے لئے اپنی ناک کاٹنے والے ابھی دنیا سے مٹے نہیں اور ان میں سے کئی وہ لوگ ہیں جو کھلی سبھاؤں کے اندر نہ کیول ' لارڈ کرشنا ' ہی کہتے ہیں بلکہ اپنی دھرم پتنیوں کو " لیڈی امک " اور " مسز امک " کہہ کر پریچے کراتے ہیں !

ہم سویکار کرتے ہیں کہ ہمارے شبدوں میں اب گلہ اور کڑوا پن آنے لگا . اِس لئے ہم اس نوٹ کو یہیں بند کرتے ہیں. بھگوان ہم سب کو سومتی دیں کہ ہم سچائی' ایمانداری اور انصاف کو نگاہ میں رکھتے ہوئے شانتی اور پریم کے ساتھ جنتا کے بیچ میں بھاشا کے سوال اور دیش کے اور سب سوالوں پر وچار کر سکیں اور ملکر چل سکیں .

—سندر لال 14 . 5 . '54

جے ہند یا "انڈیا لیمیٹڈ" ؟

ہماری پارلیامنٹ کے حال کے بجٹ اجلاس میں جب سرکار کی طرف سے لگنے والے نئے نئے ٹیکسوں پر چرچا چلی تو کچھ ممبران نے یہ کہا کہ امیروں پر بھی جو ٹیکس لگتے ہیں اُن کا بھار دراصل غریبوں پر ہی پڑتا ہے اور پان' سپاری' تمباکو جیسی ضرورت کی چیزوں پر ٹیکس تو سیدھے ہی غریبوں کے متھے پڑتا ہے . کہا جاتا ہے کہ اس پر ہمارے فائننس منسٹر صاحب نے فرمایا کہ غریبوں پر ٹیکس لگنا ہی چاہئے' اور انہیں یہ چیز خوشی منظور کرنی چاہئے کیونکہ یہی ایک ذریعہ ہے

से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें इन शब्दों की जगह अधिक खपते हुए शब्द बतायें. अगर उन शब्दों के पीछे भी वही भाव होंगे और उनके बनाने में उन्हीं उसूलों से काम लिया गया होगा जिन से इस शब्दावली में लिया गया है तो हम नये शब्दों को अपना लेंगे. यह भी ध्यान रखना होगा कि केवल हिन्दुस्तानी बोलने वाली जनता के सुभीते को ही नहीं देखना है, बल्कि हिन्दुस्तान भर में उस जनता के सुभीते को भी देखना है जो उसी परम्परा से निकले और बने दूसरे शब्दों को काम में लाती रही है."

हमें याद रखना चाहिये कि यह "शब्दावली" पांच बरस पहले की निकली हुई है. अगर हमारे हिन्दी प्रेमी भाई ऊपर के पैरे में हिन्दुस्तानी की जगह हिन्दी कर लें और सारी शब्दावली को ध्यान से पढ़ जावें तो हमें विश्वास है कि अब भी उसके तीन-चौथाई शब्द उन्हें काफ़ी पसन्द आएंगे. यह "शब्दावली" इस नोट को लिखते समय हमारे सामने रक्खी हुई है. इसमें प्राइम मिनिस्टर (Prime Minister) के लिये केवल एक शब्द दिया गया है और वह शब्द है 'परम वज़ीर' यानी इस शब्दावली के अनुसार भी जवाहरलाल जी को 'पहलुआ' नहीं कहा जा सकता. प्रीमियर (Premier के लिये कई शब्द हैं जिनमें एक शब्द 'पहलुआ' भी है. अंग्रेज़ी शब्द 'प्रीमियर' के कई अर्थ भी होते हैं. 'प्रीमियर' के लिये उसमें दूसरे शब्द हैं—'पहला वज़ीर' और 'बड़ा वज़ीर.' अंग्रेज़ी शब्द केबिनट के भी कई मानी होते हैं. इस "शब्दावली" में (Cabinet) का अर्थ कुटी और खोली भी दिया है और 'काबिना' और 'वज़ीरायत' भी. 'काबिना' शब्द केबिनेट के लिये दुनिया की बहुत सी भाषाओं में काम आता है और 'वज़ीरायत' शब्द पंचायत के वज़न पर बनाया गया है. इस "शब्दावली" के तैयार करने वालों ने मिनिस्टर की जगह वज़ीर शब्द सुझाया है, इसलिये क्योंकि 'मंत्री' शब्द वह 'सेक्रेट्री' के लिये काम में लाये हैं और वज़ीर शब्द का जो सारे भारत में समझा जाता है उन्होंने बाईकाट करना ठीक नहीं समझा. सेन्टर के लिये उन्होंने अवश्य 'बिच बिन्दी' शब्द सुझाया है.

पांच बरस पहले की छपी हुई हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा की निकाली हुई उस "शब्दावली" के कोई शब्द किसी को अच्छे लगें या न लगें—हमें भी उसके कई शब्द अच्छे नहीं लगते—पर हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का निकाला हुआ भारत के विधान का पूरा पूरा हिन्दी अनुवाद बाज़ार में बिक रहा है. उस सारे अनुवाद में न कहीं 'बिचबिन्दी' शब्द है न 'खोली' और न 'पहलुआ'. फिर यह ज़बर्दस्ती—हम अधिक कड़ा शब्द काम में लाना

سے پرارتھنا کرتے ہیں کہ وہ ہمیں ان شبدوں کی جگہ ادھک کھپتے ہوئے شبد بتاویں . اگر اُن شبدوں کے پیچھے وہی بھاؤ ہونگے اور اُن کے بنانے میں انہیں اصولوں سے کام لیا گیا ہوگا جن سے اس شبداولی میں لیا گیا ہے تو ہم نئے شبدوں کو اپنا لیں گے . یہ بھی دھیان رکھنا ہوگا کہ کیول ہندستانی بولنے والی جنتا کے سبھیتے کو ہی نہیں دیکھنا ہے' بلکہ ہندستان بھر میں اُس جنتا کے سبھیتے کو بھی دیکھنا ہے جو اُسی پرمپرا سے نکلے اور بنے دوسرے شبدوں کو کام میں لاتی رہی ہے ."

ہمیں یاد رکھنا چاہیئے کہ یہ " شبداولی " پانچ برس پہلے کی نکلی ہوئی ہے . اگر ہمارے ہندی پریمی بھائی اوپر کے پیرے میں ہندستانی کی جگہ ہندی کر لیں اور ساری شبداولی کو دھیان سے پڑھ جاویں تو ہمیں وشواس ہے کہ اب بھی اُس کے تین چوتھائی شبد انہیں کافی پسند آئینگے . یہ " شبداولی " اِس نوٹ کو لکھتے سمے ہمارے سامنے رکھی ہوئی ہے . اِس میں پرائم منسٹر (Prime Minister) کے لئے کیول ایک شبد دیا گیا ہے اور وہ شبد ہے ' پرم وزیر ' یعنی اس " شبداولی " کے انوسار بھی جواہر لال جی کو ' پہلوا ' نہیں کہا جا سکتا . پریمیر (Premier) کے لیئے کئی شبد ہیں جن میں ایک شبد 'پہلوا' بھی ہے. انگریزی شبد 'پریمیر' کے کئی ارتھ بھی ہوتے ہیں . ' پریمیر ' کے لیئے اسمیں دوسرے شبد ہیں—' پہلا وزیر .' اور ' بڑا وزیر ' انگریزی شبد کیبنٹ کے بھی کئی معنی ہوتے ہیں . اس " شبداولی " میں کیبنٹ (Cabinet) کا ارتھ کٹی اور کھولی بھی دیا ہے اور ' کابینا ' اور ' وزیرایت ' بھی . ' کابینا ' شبد کیبنٹ کے لئے دنیا کی بہت سی بھاشاؤں میں کام آتا ہے اور ' وزیرایت ' شبد پنچایت کے وزن پر بنایا گیا ہے . اس " شبداولی " کے تیار کرنے والوں نے منسٹر کی جگہ وزیر شبد سوجھایا ہے' اس لیئے کیونکہ 'منتری' شبد وہ ' سکریٹری ' کے لئے کام میں لائے ہیں اور وزیر شبد کا جو سارے بھارت میں سمجھا جاتا ہے انہوں نے بائیکاٹ کرنا ٹھیک نہیں سمجھا . سنٹر کے لئے اُنہوں نے اوشیہ ' بیچ بندی ' شبد سوجھایا ہے ..

پانچ برس پہلے کی چھپی ہوئی ہندستانی پرچار سبھا وردھا کی نکالی ہوئی اس " شبداولی " کے کوئی شبد کسی کو اچھے لگیں یا نہ لگیں—ہمیں بھی اس کے کئی شبد اچھے نہیں لگتے—پر ہندستانی کلچر سوسائٹی کا نکلا ہوا بھارت کے ودھان کا پورا پورا ہندی انوواد بازار میں بک رہا ہے . اُس سارے انوواد میں نہ کہیں ' بیچ بندی ' شبد ہے نہ ' کھولی ' اور نہ ' پہلوا '. پھر یہ زبردستی—ہم ادھک کڑا شبد کام میں لا

सोच कर अपनी राय क़ायम करें, इसी लिये "नया हिन्द" के कालम इस सवाल की बहस के लिये खुले हैं, इस शर्त पर कि बहस शान्ति ढंग से और उचित सीमाओं के अन्दर हो.

कुछ और भाइयों ने एक और "अंग्रेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दावली" में से कुछ शब्द चुन कर हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को डिक्शनरी बनाने के अयोग्य साबित करने की कोशिश की है. इनमें से तीन शब्द यानी प्राइम मिनिस्टर (Prime Minister) के लिये 'पहलुआ,' केबिनट (Cabinet) के लिये 'खोली' और सैन्टर (Centre) के लिये 'बिच बिन्दी' लगभग सारे हिन्दी जगत में गूंज गये. पार्लिमेन्ट में भी कई मेम्बरों ने इन्हें खूब उछाला और इनके आधार पर दुनिया को यह साबित करने की कोशिश की कि हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को डिक्शनरी बनाने का काम नहीं मिलना चाहिये था.

पहली बात तो यह कि हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने आज तक कभी इस तरह की कोई "शब्दावली" नहीं निकाली. जिस शब्दावली में से यह शब्द लिये गये हैं उस पर कहीं हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का नाम नहीं. वह शब्दावली निकाली हुई है हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा की और पांच बरस पहले की निकली हुई है. 'शब्दावली' की भूमिका लेखकों में चार नाम हैं, उनमें एक हमारा नाम भी है. चार नाम यह हैं :—काका कालेलकर, रामेश्वरी नेहरू, सत्य नारायन और सुन्दरलाल. भूमिका लेखकों ने उस "शब्दावली" को केवल एक सुझाव के तौर पर हिन्दी जगत के सामने रक्खा है. उसके अधिकतर शब्द चालू और रोज़मर्रा की बोलचाल के शब्द हैं जैसे—सेक्रेट्री के लिये 'मन्त्री,' सिडीशन (Sedition) के लिये 'राजद्रोह', लिबर्टी (Liberty) के लिये 'स्वतंत्रता,' डिमान्ड (Demand) के लिये 'मांग', हाउस (House) के लिये 'सदन' वग़ैरा. जो थोड़े से शब्द नये गढ़े गये हैं उनके बारे में भूमिका लेखकों ने अपनी भूमिका में लिखा है कि :—

"हम यह शब्दावली जनता के सामने यह दिखाने के लिये रख रहे हैं कि ऐसे आसान शब्द बनाये जा सकते हैं जिन्हें आम जनता समझ सके और जिन से बोली को आसान भी किया जा सके और साथ ही साथ मालामाल भी. हम यह दावा नहीं करते कि इन अंग्रेज़ी शब्दों के जोड़ के और हिन्दुस्तानी शब्द नहीं बन सकते, और न यह दावा करते हैं कि इसमें कोई कमी नहीं रही. कई जगह अधिक जपते हुए शब्द मिल सकते हैं या बनाये भी जा सकते हैं. हम सब मित्रों

سے سوچ کر اپنی رائے قایم کریں. اسی لئے "نیا ہند" کے کالم اس سوال کی بحث کے لئے کھلے ہیں' اس شرط پر کہ بحث شانت ڈھنگ سے اور اُچت سیماؤں کے اندر ہو.

کچھ اور بھائیوں نے ایک اور "انگریزی ہندستانی شبداولی" میں سے کچھ شبد چن کر ہندستانی کلچر سوسائٹی کو ڈکشنری بنانے کے ایوگیہ ثابت کرنے کی کوشش کی ہے. ان میں تین شبد یعنی پرائم منسٹر (Prime Minister) کے لئے 'پہلوا' کیبنٹ (Cabinet) کے لئے 'کھولی' اور سنٹر (Centre) کے لئے 'بیچ بندی' لگ بھگ سارے ہندی جگت میں گونج گئے. پارلیمنٹ میں بھی کئی ممبروں نے انہیں خوب اُچھالا اور ان کے آدھار پر دنیا کو یہ ثابت کرنے کی کوشش کی کہ ہندستانی کلچر سوسائٹی کو ڈکشنری بنانے کا کام نہیں ملنا چاہیئے تھا.

پہلی بات تو یہ کہ ہندستانی کلچر سوسائٹی نے آج تک کبھی اس طرح کی کوئی "شبداولی" نہیں نکالی، جس "شبداولی" میں سے یہ شبد لیئے گئے ہیں اس پر کہیں ہندستانی کلچر سوسائٹی کا نام نہیں. وہ "شبداولی" نکالی ہوئی ہے ہندستانی پرچار سبھا وردھا کی اور پانچ برس پہلے کی نکلی ہوئی ہے. 'شبداولی' کی بھومکا لیکھکوں میں چار نام ہیں' ان میں ایک ہمارا نام بھی ہے. چار نام یہ ہیں :—کاکا کالیلکر' رامیشوری نہرو' ستیہ نارائن اور سندر لال. بھومکا لیکھکوں نے اس "شبداولی" کو کیول ایک سوجھاؤ کے طور پر ہندی جگت کے سامنے رکھا ہے. اس کے ادھک تر شبد چالو اور روزمرہ کی بول چال کے شبد ہیں جیسے —سیکریٹری کے لئے 'منتری' سڈیشن (Sedition) کے لئے 'راج دروہ' لبرٹی (Liberty) کے لئے سوتنترتا' ڈیمانڈ (Demand) کے لئے 'مانگ' ہاؤس (House) کے لئے 'سدن' وغیرہ. جو تھوڑے سے شبد نئے گڑھے گئے ہیں ان کے بارے میں بھومکا لیکھکوں نے اپنی بھومکا میں لکھا ہے کہ :—

"ہم یہ شبداولی جنتا کے سامنے یہ دکھانے کے لئے رکھ رہے ہیں کہ ایسے آسان شبد بنائے جا سکتے ہیں جنھیں عام جنتا سمجھ سکے اور جن سے بولی کو آسان بھی کیا جا سکے اور ساتھ ہی ساتھ مالا مال بھی. ہم یہ دعویٰ نہیں کرتے کہ ان انگریزی شبدوں کے جوڑ کے اور ہندستانی شبد نہیں بن سکتے' اور نہ یہ دعویٰ کرتے ہیں کہ اس میں کوئی کمی نہیں رہی. کئی جگہ ادھک کھپتے ہوئے شبد مل سکتے ہیں یا بنائے بھی جا سکتے ہیں. ہم سب مترون

हमारी राय / ہماری رائے

हमारे हिन्दी प्रेमी भाई

जब से पार्लिमेन्ट में हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को अंग्रेज़ी हिन्दी डिक्शनरी बनाने के लिये ग्रान्ट की चर्चा हुई है तब से कई हिन्दी पत्रों में इस विशय पर लेख निकल चुके हैं. हमने उन सबको नहीं पढ़ा. उन लेखों की जिन ख़ास ख़ास बातों की तरफ़ हमारा ध्यान दिलाया गया है वह यह है —

एक भाई ने जो इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में पढ़ाते हैं अपने एक लेख में "नया हिन्द" के कुछ लेखों से बड़े बड़े वाक्य दे कर यह दिखाने की कोशिश की है कि भाशा के बारे में हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की नीति क्या है और उस नीति को बुरा भला कहा है. उन वाक्यों में से एक भी वाक्य सम्पादक के किसी लेख या नोट से नहीं है. हमारे विद्वान भाई को यह तो ज़रूर मालूम होगा कि किसी पत्र या पत्रिका में जितने लेख निकलते हैं यह आवश्यक नहीं होता कि उन लेखों में प्रगट किये हुए विचार सम्पादक के या पत्र या पत्रिका के मालिक के विचार भी हों. उन्होंने जब "नया हिन्द" की फ़ाइल को इतने ध्यान से पढ़ा है तो यह भी नामुमकिन है कि भाशा के प्रश्न पर "नया हिन्द" सम्पादक के लेख न देखे हों. भारत का विधान पास होते ही "नया हिन्द" में हमारा एक लम्बा लेख विधान की भाशा सम्बन्धी नीति पर निकल चुका है. हमारे भाई ने उसी को पढ़ लिया होता तो उनके सब संदेह दूर हो गये होते. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की दर्जन से ऊपर किताबें हिन्दी में निकल चुकी हैं. उन किताबों में कहीं भी वह शब्द काम में नहीं लाए गये जिनकी हमारे भाई ने दूसरे लेखकों के लेख के आधार पर शिकायत की है. फिर उन्होंने हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी या "नया हिन्द" के साथ यह साफ़ ज़बरदस्ती क्यों की यह हम नहीं कह सकते. हां, हम यह ज़रूर चाहते हैं कि कि इस गम्भीर विशय पर हिन्दी प्रेमी सब तरह के विचारों को सुनें और उन पर शान्ति

ہمارے ہندی پریمی بھائی

جب سے پارلیمنٹ میں ہندستانی کلچر سوسائٹی کو انگریزی ہندی ڈکشنری بنانے کے لئے گرانٹ کی چرچا ہوئی ہے تب سے کئی ہندی پتروں میں اس وشے پر لیکھ نکل چکے ہیں۔ ہم نے ان سب کو نہیں پڑھا۔ ان لیکھوں کی جن خاص خاص باتوں کی طرف ہمارا دھیان دلایا گیا ہے وہ یہ ہے—

ایک بھائی نے جو الہ آباد یونیورسٹی میں پڑھاتے ہیں اپنے ایک لیکھ میں "نیا ہند" کے کچھ لیکھوں سے بڑے بڑے واکیہ دےکر یہ دکھانے کی کوشش کی ہے کہ بھاشا کے بارے میں ہندستانی کلچر سوسائٹی کی نیتی کیا ہے اور اس نیتی کو برا بھلا کہا ہے۔ ان واکیوں میں سے ایک بھی واکیہ سمپادک کے کسی لیکھ یا نوٹ سے نہیں ہے۔ ہمارے ودوان بھائی کو یہ تو ضرور معلوم ہوگا کہ کسی پتر یا پتریکا میں جتنے لیکھ نکلتے ہیں یہ آوشیک نہیں ہوتا کہ ان لیکھوں میں پرگٹ کئے ہوئے وچار سمپادک کے یا پتر یا پتریکا کے مالک کے وچار بھی ہوں۔ انہوں نے جب "نیا ہند" کی فائل کو اتنے دھیان سے پڑھا ہے تو یہ بھی ناممکن ہے کہ بھاشا کے پرشن پر "نیا ہند" سمپادک کے لیکھ نہ دیکھے ہوں۔ بھارت کا ودھان پاس ہوتے ہی "نیا ہند" میں ہمارا ایک لمبا لیکھ ودھان کی بھاشا سمبندھی نیتی پر نکل چکا ہے۔ ہمارے بھائی نے اسی کو پڑھ لیا ہوتا تو ان کے سب سندیہ دور ہوگئے ہوتے۔ ہندستانی کلچر سوسائٹی کی درجن سے اوپر کتابیں ہندی میں نکل چکی ہیں۔ ان کتابوں میں کہیں بھی وہ شبد کام میں نہیں لائے گئے جنکی ہمارے بھائی نے دوسرے لیکھکوں کے لیکھ کے آدھار پر شکایت کی ہے۔ پھر انہوں نے ہندستانی کلچر سوسائٹی یا "نیا ہند" کے ساتھ یہ صاف زبردستی کیوں کی یہ ہم نہیں کہہ سکتے۔ ہاں، ہم یہ ضرور چاہتے ہیں کہ اس گمبھیر وشے پر ہندی پریمی سب طرح کے وچاروں کو سنیں اور ان پر شانتی

सहायता प्रदान करेगा लेकिन शर्त यह है कि हमारे बड़े लेखक अपने छोटे छोटे फ़र्क़ों को मिटा कर साहित्य सेवा के भाव से अपना सहयोग प्रदान करें.

ज़्यादातर लोग पाठक को गाली देते हैं कि वह घटिया चीज़ें पढ़ता है और अच्छे साहित्य को नहीं छूता. लेकिन असल कारण माली है, पाठकों को आनन्द अच्छे साहित्य में ही आता है. बहुत दिनों से इस बात की ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि कोई ऐसी पत्रिका निकाला जाये जो सचमुच कहानी साहित्य की प्रतिनिधि हो और उसका दाम भी कम हो. "कहानी" ने यह कमी पूरी कर दी है. अच्छी कहानियों के लिये सम्पादकों को बधाई मिलनी चाहिये लेकिन चार आना दाम रख कर "कहानी" के प्रकाशक कम बधाई के पात्र नहीं हैं.

—मुजीब रिज़वी

खेल-खिलौने

लेखक—राजेन्द्र यादव, निकालने वाले—भारतीय ज्ञानपीठ, काशी; भाषा—हिन्दी, सफ़े - 152, क़ीमत—दो रुपया.

श्री राजेन्द्र यादव नवजवान कहानीकार हैं, उनके विचारों में एक नई शक्ति है, नया जोश है और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने की सच्ची लगन है. 'खेल खिलौने' ऐसी ही कहानियों का एक संग्रह है. इस संग्रह में बारह कहानियां हैं. लेखक ने हमारे आज के समाज की समस्याओं पर जिनका हमें रात दिन क़दम क़दम पर सामना करना पड़ता है, एक अच्छी तस्वीर खींची है. 'खेल खिलौने' की सभी कहानियां पाठक का दिल छूती हुई चलती हैं और अपना एक असर उसके दिल पर छोड़ देती हैं लेखक ने 'आजकल के लड़के' नाम की कहानी में भाभी-देवर, भाई भाई की समस्याओं पर बहुत अच्छी तसवीर खींची है. लेखक कहता है—

"नहीं" मैंने जैसे जैसे मुख का कौर निगला, खाना खा कर जैसे ही उठा, भाभी ने कहा—"नवल, राशन समाप्त हो गया है स्कूल से आके ले आना." इतना ही नहीं आगे फिर कहता है—

"आके फिर गेहूं पनचक्की पर ले जाना." इसी तरह लेखक 'यथार्थवादी कहानी लेखक' नाम की कहानी में आज के समाज की कुरीतियों की ओर जाता हुआ कहता है—

"यहां हमारी सहायता करना सांपों को दूध पिलाना है, हमने धर्म के प्रति विद्रोह किया है, समाज की व्यवस्था के प्रति अविश्वास किया है न ! इसलिये अछूत हैं !"

सभी कहानियों की भाषा सरल और मुहावरेदार है. हिन्दी जगत को भारतीय ज्ञानपीठ की यह एक अनोखी [देन है.]

—चेतन कुमार शर्मा

سہایتا پردان کرے گا لیکن شرط یہ ہے کہ ہمارے لیکھک اپنے چھوٹے موٹے فرقوں کو مٹا کر ساہتیہ سیوا کے بھاؤ سے اپنا سہیوگ پردان کریں۔

زیادہ تر لوگ پاٹھک کو گالی دیتے ہیں کہ وہ گھٹیا چیزیں پڑھتا ہے اور اچھے ساہتیہ کو نہیں چھوتا۔ لیکن اصل کارن مالی ہے، پاٹھکوں کو آنند اچھے ساہتیہ میں ہی آتا ہے۔ بہت دنوں سے اس بات کی ضرورت محسوس کی جا رہی تھی کہ کوئی ایسی پتریکا نکالی جائے جو سچ مچ کہانی ساہتیہ کی پرتیندھی ہو اور اس کا دام بھی کم ہو۔ "کہانی" نے یہ کمی پوری کر دی ہے۔ اچھی کہانیوں کے لئے سمپادکوں کو بدھائی ملنی چاہئے لیکن چار آنہ دام رکھ کر "کہانی" کے پرکاشک کم بدھائی کے پاتر نہیں ہیں۔

—مجیب رضوی

کھیل-کھلونے

لیکھک—راجندر یادو؛ نکالنے والے—بھارتیہ گیان پیٹھ، کاشی؛ بھاشا—ہندی؛ صفحہ 152؛ قیمت—دو روپیہ۔

شری راجندر یادو نوجوان کہانی کار ہیں۔ اُن کے وچاروں میں ایک نئی شکتی ہے، نیا جوش ہے اور سماجک کریتیوں کو دور کرنے کی سچی لگن ہے۔ 'کھیل کھلونے' ایسی ہی کہانیوں کا ایک سنگرہ ہے۔ اس سنگرہ میں بارہ کہانیاں ہیں۔ لیکھک نے ہمارے آج کے سماج کی سمسیاؤں پر جن کا ہمیں رات دن قدم قدم پر سامنا کرنا پڑتا ہے، ایک اچھی تصویر کھینچی ہے۔ 'کھیل کھلونے' کی سبھی کہانیاں پاٹھک کا دل چھوتی ہوئی چلتی ہیں اور اپنا ایک اثر اس کے دل پر چھوڑ دیتی ہیں۔ لیکھک نے 'آجکل کے لڑکے' نام کی کہانی میں بھابھی دیور، بھائی بھائی کی سمسیاؤں پر بہت اچھی تصویر کھینچی ہے۔ لیکھک کہتا ہے—

"نہیں" میں نے جیسے جیسے مکھ کا کور نگلا، کھانا کھا کر جیسے ہی اٹھا، بھابھی نے کہا—"نول، راشن سماپت ہو گیا ہے اسکول سے آکے لے آنا۔" اتنا ہی نہیں آگے پھر کہتا ہے—

"آکے پھر گیہوں پن چکی پر لے جانا۔" اسی طرح لیکھک 'یتھارتھ وادی کہانی لیکھک' نام کی کہانی میں آج کے سماج کی کریتیوں کی اور جاتا ہوا کہتا ہے—

"یہاں ہماری سہایتا کرنا سانپوں کو دودھ پلانا ہے، ہم نے دھرم کے پرتی ودروہ کیا ہے، سماج کی ویوستھا کے پرتی اوشواس کیا ہے نہ! اس لئے اچھوت ہیں!"

سبھی کہانیوں کی بھاشا سرل اور مہاورے دار ہے۔ ہندی جگت کو بھارتیہ گیان پیٹھ کی یہ ایک انوکھی دین ہے۔

—چیتن کمار شرما

कहानी

माहवारी पत्रिका; लिखावट—हिन्दी; सम्पादक—श्रीपत राय श्यामू संयासी, भैरों प्रसाद गुप्त; एक कापी का दाम—चार आना; सालाना चंदा—तीन रुपया; मिलने का पता—सरस्वती प्रेस, 5 सर्दार पटेल मार्ग, इलाहाबाद.

"कहानी" का पुनर्जन्म हुआ है. पहले यह पत्रिका बनारस से निकलती थी. फिर किन्हीं कारनों से बन्द हो गई. बन्द होने पर अच्छी कहानियों के पाठकों को दुख हुआ था. और अब जब कहानी फिर निकल रही है पाठकों को दिली खुशी हुई है इस खुशी का प्रमान यह है कि हर रोज पचास पचास की तादाद में इसके गाहक बन रहे हैं.

"कहानी" में कहानियां ही छपती हैं. इन कहानियों का स्तर बाजारू नहीं होता और न आवारागर्दी बढ़ाने वाले जिन्सी चटखारे इसमें मिलते हैं. "कहानी" के खरीदार को कवर उलट कर देखने की जरूरत नहीं है कि इस अंक में कोई अच्छी कहानी है या नहीं. "कहानी" में कोई घटिया कहानी छपती ही नहीं.

"कहानी" में शुद्ध साहित्य सेवा का भाव मिलता है. संगदिली का नाम इस पत्रिका के पन्नों से गायब है. भारती और विदेशी सभी भाशाओं की अच्छी कहानियां "कहानी" में पढ़ने को मिलती हैं. इसमें मरहटी की कहानियां छपती हैं, उर्दू की कहानियां छपती हैं, रूसी, चीनी, अंग्रेजी सभी भाशाओं की कहानियां जगह पाती हैं.

"कहानी" की एक और विशेशता भी है. दूसरी पत्रिकाएं नाम पर दौड़ती हैं और धन उनका लक्ष होता है. "कहानी" नये लेखकों को प्रोत्साहित करना अपना फर्ज समझती है. इसीलिये कृशनचन्द्र, ख्वाजा अहमद अब्बास, गुरबख्श सिंह और दूसरे बड़े लेखकों के साथ साथ नये लेखकों की कहानियां पढ़ने को मिलती हैं और इस बात का अन्दाजा लगाने में आसानी होती है कि कहानी साहित्य में कैसे-कैसे रुझहान पैदा हो रहे हैं और नये लेखक आगे बढ़ रहे हैं या नहीं ?

"कहानी" सम्पादकों ने "कहानी क्लब" नाम से एक स्तम्भ खोला है. इस स्तम्भ से साहित्यकारों को बहुत सहायता मिलेगी, पाठकों को इस से दिलचस्पी तो होगी ही. आज बहुत सी समस्याएं हैं. लेखक व्यक्तिगत रूप से इन समस्याओं की चर्चा करते हैं लेकिन कोई ऐसा जरिया नहीं है जिसमें सामूहिक चर्चा हो सके और रचनात्मक साहित्य को आगे बढ़ाने वाले नतीजे निकाले जा सकें. दूसरी कुछ पत्रिकाएं कभी कभी ऐसी चर्चा करती हैं लेकिन उनका स्तर तानाबाजी से ऊपर नहीं उठ पाता. "कहानी क्लब" शुद्ध साहित्य को पैदा करने में जबरदस्त

کہانی

ماهواری پتریکا؛ لکھاوٹ—هندی؛ سمپادک—شری پت رائے شیاموسنیاسی، بھیروں پرشاد گپت؛ ایک کاپی کا دام—چار آنا؛ سالانہ چندہ—تین روپیہ؛ ملنے کا پتہ—سرسوتی پریس، 5 سردار پٹیل مارگ، الٰہ آباد .

"کہانی" کا پنرجنم ہوا ہے . پہلے یہ پتریکا بنارس سے نکلتی تھی . پھر کنھیں کارنوں سے بند ہوگئی . بند ہونے پر اچھی کہانی کے پاٹھکوں کو دکھ ہوا تھا . اور اب جب "کہانی" پھر نکل رہی ہے، پاٹھکوں کو دلی خوشی ہوئی ہے. اس خوشی کا پرمان یہ ہے کہ ہر روز پچاس پچاس کی تعداد میں اس کے گاہک بن رہے ہیں .

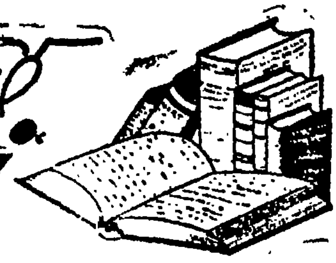
"کہانی" میں کہانیاں ہی چھپتی ہیں. ان کہانیوں کا استر بازارو نہیں ہوتا اور نہ آوارہ گردی بڑھانے والے جنسی چٹخارے اس میں ملتے ہیں . "کہانی" کے خریدار کو کور الٹ کر دیکھنے کی ضرورت نہیں ہے کہ اس انک میں کوئی اچھی کہانی ہے یا نہیں . "کہانی" میں کوئی گھٹیا کہانی چھپتی ہی نہیں .

"کہانی" میں شدھ ساہتیہ سیوا کا بھاؤ ملتا ہے . تنگ دلی کا نام اس پتریکا کے پنّوں سے غائب ہے . بھارتی اور ودیشی سبھی بھاشاؤں کی اچھی کہانیاں "کہانی" میں پڑھنے کو ملتی ہیں . اس میں مرہٹی کی کہانیاں چھپتی ہیں، اردو کی کہانیاں چھپتی ہیں، روسی، چینی، انگریزی سبھی بھاشاؤں کی کہانیاں جگہ پاتی ہیں.

"کہانی" کی ایک وشیشتا اور بھی ہے . دوسری پتریکائیں نام پر دوڑتی ہیں اور دھن ان کا لکش ہوتا ہے . "کہانی" نئے لیکھکوں کو پروتساہت کرنا اپنا فرض سمجھتی ہے . اسی لئے کرشن چندر، خواجہ احمد عباس، گوربخش سنگھ اور دوسرے بڑے لیکھکوں کے ساتھ ساتھ نئے لیکھکوں کی کہانیاں پڑھنے کو ملتی ہیں اور اس بات کا اندازہ لگانے میں آسانی ہوتی ہے کہ کہانی ساہتیہ میں کیسے کیسے رجحان پیدا ہو رہے ہیں اور نئے لیکھک آگے بڑھ رہے ہیں یا نہیں ؟

"کہانی" سمپادکوں نے "کہانی کلب" نام سے ایک استمبھ کھولا ہے . اس استمبھ سے ساہتیہ کاروں کو بہت سہایتا ملے گی، پاٹھکوں کو اس میں دلچسپی تو ہوگی ہی . آج بہت سی سمسیائیں ہیں . لیکھک ویکتی گت روپ سے ان سمسیاؤں کی چرچا کرتے ہیں لیکن کوئی ایسا ذریعہ نہیں ہے جس میں ساموہک چرچا ہوسکے اور رچنا تمک ساہتیہ کو آگے بڑھانے والے نتیجے نکالے جاسکیں. دوسری کچھ پتریکائیں کبھی کبھی ایسی چرچا کرتی ہیں لیکن ان کا استر طعنہ بازی سے اوپر نہیں اٹھ پاتا . "کہانی کلب" شدھ ساہتیہ کو پیدا کرنے میں زبردست

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

दीवान ग़ालिब

सम्पादक—महमूद अहमद 'हुनर', निकालने वाले—लहर प्रकाशन, 2 मिन्टो रोड, इलाहाबाद-2, लिखावट—हिन्दी, सफ़े—126, दाम—ढाई रुपया.

"लहर प्रकाशन" ने अभी हाल में जन्म लिया है. लेकिन इस थोड़े से अर्से में इस संस्था ने इतनी अधिक किताबें छापी हैं और इतना सुन्दर साहित्य निकाला है कि बहुत पुराने प्रकाशनों को भी हार माननी पड़ेगी.

कहते हैं कलाकार जब बनिया बन जाता है तो नतीजा हमेशा ख़राब निकलता है. यह नहीं कि दीवाला निकल जाता है बल्कि ब्योपारी संस्था कोई अच्छा काम नहीं कर पाती. ओंकार शरद ने यह बात झूटी कर दिखाई है, वह अच्छे लेखक भी हैं और अब यह भी सिद्ध हो गया है कि वह अच्छे प्रकाशक भी हैं.

इन्हीं अच्छी किताबों की सूची में से एक किताब "दीवान ग़ालिब" भी है. इस किताब के शुरू में सम्पादक ने कई पन्नों में ग़ालिब की कला पर रोशनी डाली है. उर्दू के मुश्किल शब्दों के हिन्दी अर्थ हर सफ़े पर दिये गये हैं, इससे हिन्दी जानने वालों को ग़ालिब पढ़ने में आसानी होगी. हर सफ़े पर आसान हिन्दी में शेरों का शब्दार्थ रूपी अर्थ भी दिया गया है. पाठक को केवल पढ़ना है और भाव समझना है. इससे पहले ग़ालिब को इतने आसान ढंग से हिन्दी पाठक के सामने कभी नहीं पेश किया गया था.

कवर पर ग़ालिब की एक तस्वीर छपी है. यह तस्वीर ख़ुद एक बहुत बड़ा आकर्षन है.

अगर प्रकाशक महोदय इस किताब का दाम कम रख सकते तो बहुत एहसान होता. मेरी प्रार्थना यही है कि दूसरे संसकरन का दाम वह कम से कम दो तिहाई कम कर दें.

—मुजीब रिज़वी

دیوان غالب

سمپادک—محمود احمد 'ہنر'، نکالنے والے—لہر پرکاشن، 2 منٹو روڈ، الہ آباد 2؛ لکھاوٹ—ہندی؛ صفحے—126؛ دام—ڈھائی روپیہ .

"لہر پرکاشن" نے ابھی حال میں جنم لیا ہے . لیکن اس تھوڑے عرصہ میں اس سنستھا نے اتنی ادھک کتابیں چھاپی ہیں اور اتنا سندر ساہتیہ نکالا ہے کہ بہت پرانے پرکاشنوں کو بھی ہار ماننی پڑے گی .

کہتے ہیں کلاکار جب بنیا بن جاتا ہے تو نتیجہ ہمیشہ خراب نکلتا ہے . یہ نہیں کہ دیوالہ نکل جاتا ہے بلکہ بیوپاری سنستھا کوئی اچھا کام نہیں کر پاتی . اونکار شرد نے یہ بات جھوٹی کر دکھائی ہے. وہ اچھے لیکھک بھی ہیں اور اب یہ بھی سدھ ہوگیا ہے کہ وہ اچھے پرکاشک بھی ہیں .

انہیں اچھی کتابوں کی سوچی میں سے ایک کتاب "دیوان غالب" بھی ہے . اس کتاب کے شروع میں سمپادک نے کئی پنّوں میں غالب کی کلا پر روشنی ڈالی ہے . اردو کے مشکل شبدوں کے ہندی ارتھ ہر صفحے پر دیے گئے ہیں، اس سے ہندی جاننے والوں کو غالب پڑھنے میں آسانی ہوگی . صفحے پر آسان ہندی میں شعروں کا شبدارتھ روپی ارتھ بھی دیا گیا ہے . پاٹھک کو کیول پڑھنا ہے اور بھاؤ سمجھنا ہے . اس سے پہلے غالب کو اتنے آسان ڈھنگ سے ہندی پاٹھک کے سامنے کبھی نہیں پیش کیا گیا تھا .

کور پر غالب کی ایک تصویر چھپی ہے . یہ تصویر خود ایک بہت بڑا آکرشن ہے .

اگر پرکاشک مہودے اس کتاب کا دام کم رکھ سکتے تو بہت احسان ہوتا . میری پرارتھنا یہی ہے کہ دوسرے سنسکرن کا دام وہ کم سے کم دو تہائی کم کر دیں .

—مجیب رضوی

भाग उड़कर सिरे पर चले गये और भारी हिस्से अंदर बैठ गये.

पृथ्वी के अन्दर द्रव्यों के इन उलट फेरों का असर सतह पर भी पड़ा. मूलभूत ताक़तों के प्रभाव के अंदर पहाड़ों के निर्मान और बदलाव हुए. इन सब चीजों की बदौलत उपयोगी खनिज द्रव्यों का ना बराबर रूप में बितरन हुआ.

पृथ्वी के अन्दर जीवन की धारा आज भी बह रही है. हमें इसका पता भूकम्प के धक्कों और ज्वालामुखी के विस्फोटों द्वारा होता है.

समुन्दर और वायुमंडल का निर्मान पृथ्वी की उत्पत्ति और विकास के प्रश्न का अंग है. पानी और गैस थोड़े मिक़दार में ठोस पत्थर के कनों में मौजूद था जिनसे पृथ्वी का निर्मान हुआ. जैसे जैसे पृथ्वी के तत्व गर्म होते गये कनों से पानी की भाप और गैस निकलने लगी और पृथ्वी की सतह के अंदर प्रवेश कर फैलने लगी. जमीन को फोड़ बाहर निकल कर पानी की भाप समुन्दरों और महासमुद्रों की शक्ल में इकट्ठे हो गये और गैसों ने वायुमंडल का निर्मान किया. गैस और पानी पृथ्वी के अन्दर से आज दिन तक बाहर निकलते रहते हैं.

इसके अलावा कभी कभी वह छोटे पिंड पृथ्वी पर गिरे जो सूरज से दूर सौरमन्डल के ठंडे हिस्सों से आये थे. उनमें अधिक पानी था (बर्फ़) और घुल सकने योग्य तत्व मौजूद थे.

शुरू में पृथ्वी के वायुमन्डल की बनावट जो आज है उससे अलग थी लेकिन धीरे धीरे वह बदल गई. शुरू में सूर्य की किरनें इन परिवर्तनों को प्रभावित करती थीं लेकिन बाद में पृथ्वी पर जीवन के प्रकट होने पर बनस्पति और जीव जगत के प्रानी उनमें महत्वपूर्न भूमिका अदा करने लगे. जीवन की उत्पत्ति की व्याख्या करने के लिए यह जानना अत्यन्त महत्वपून है कि पृथ्वी के बनावट के शुरू के दौर में इसका वायुमन्डल पानी था, और पानी में घुलने वाले गैस मौजूद थे (उदाहरन के लिये दलदल गैस—मेथान).

पृथ्वी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सब से अधिक विस्तृत और दिमाग़ में बैठ जाने वाला सिद्धान्त अकदमिशियन ए० आई० ओपारिन का है जिसके अनुसार पृथ्वी पर जीवन का आरम्भ पानी में घुले कार्बन और हाईड्रोजन के रासायनिक मिश्रन के मिल जाने की हालत के दौरान में हुआ. विश्व की उत्पत्ति के नये सिद्धान्त की धारना है कि मेथान और दूसरी आसानी से मिलने वाली हाईड्रोकार्बन शुरू से ही पानी में पाये गये थे जिससे कि पृथ्वी पर जीवन का आरम्भ हो सका.

بھاگ اُڑ کر سطح پر چلے گئے اور بھاری حصے اندر بیٹھ گئے۔

پرتھوی کے اندر دروبوں کے ان اُلٹ پھیروں کا اثر سطح پر بھی پڑا۔ مول بھوت طاقتوں کے پربھاؤ کے اندر پہاڑوں کے نرمان اور بدلاؤ ہوئے۔ ان سب چیزوں کی بدولت اُپیوگی کھنج درابوں کا نا برابر روپ میں وترن ہوا۔

پرتھوی کے اندر جیون کی دھارا آج بھی بہ رہی ہے۔ ہمیں اس کا پتہ بھوکمپ کے دھکوں اور جوالا مکھی کے وسپھوٹوں دوارا ہوتا ہے۔

سمندر اور وایومنڈل کا نرمان پرتھوی کی اُتپتی اور وکاس کے پرشن کا انگ ہے۔ پانی اور گیس تھوڑے مقدار میں ٹھوس پتھر کے کنوں میں موجود تھا جن سے پرتھوی کا نرمان ہوا۔ جیسے جیسے پرتھوی کے تتو گرم ہوتے گئے کنوں سے پانی کی بھاپ اور گیس نکلنے لگی اور پرتھوی کی سطح کے اندر پرویش کر پھیلنے لگی۔ زمین کو پھوڑ باہر نکل کر پانی کی بھاپ سمندروں اور مہا سمندروں کی شکل میں اکٹھے ہو گئے اور گیسوں نے وایومنڈل کا نرمان کیا۔ گیس اور پانی پرتھوی کے اندر سے آج دن تک باہر نکلتے رہتے ہیں۔

اس کے نہ کبھی کبھی وہ چھوٹے چھوٹے پنڈ پرتھوی پر گرے جو سورج سے دور سور منڈل کے ٹھنڈے حصوں سے آئے تھے۔ ان میں ادھک پانی تھا (برف) اور گھل سکنے یوگیہ تتو موجود تھے۔

شروع میں پرتھوی کے وایو منڈل کی بناوٹ جو آج ہے اس سے الگ تھی لیکن دھیرے دھیرے بدل گئی۔ شروع میں سورج کی کرنیں ان پریورتنوں کو پربھاوت کرتی تھیں لیکن بعد میں پرتھوی پر جیون کے پرکٹ ہونے پر بنسپتی اور جیو جگت کے پرانی ان میں مہتوپورن بھومکا ادا کرنے لگے۔ جیون کی اُتپتی کی ویاکھیا کرنے کے لئے یہ جاننا اتیئنت مہتوپورن ہے کہ پرتھوی کے بناوٹ کے شروع کے دور میں اسکا وایو منڈل پانی تھا، اور پانی میں گھلنے والے گیس موجود تھے (اداہرن کے لئے دلدل گیس—میتھان)۔

پرتھوی کے اُتپتی کے سمبندھ میں سب سے ادھک وسترت اور دماغ میں بیٹھ جانے والا سدھانت اکدمیشین اے۔ آئی اوپارن کا ہے جس کے انوسار پرتھوی پر جیون کا آرمبھ پانی میں گھلے کاربن اور ہائڈروجن کے رسائنک مشرن کے مل جانے کی حالت کے دوران میں ہوا۔ وشو کی اُتپتی کے نئے سدھانت کی یہ دھارنا ہے کہ میتھان اور دوسری آسانی سے ملنے والی ہائڈروکاربن شروع سے ہی پانی میں پائے گئے تھے جس سے کہ پرتھوی پر جیون کا آرمبھ ہو سکا۔

पृथ्वी के अन्दर से ज्वालामुखी का विस्फोट होता है और तपा हुआ बहने वाले लावा की धारा निकलने लगती है. इससे बीते ज़माने में लोगों को यह विश्वास हो गया कि चूंकि शुरू शुरू की हालत में पृथ्वी आग और बहने वाले पदार्थ के रूप में थी इसीलिए पृथ्वी के अंदर तापमान इतना ज़्यादा है, ज्वालामुखी हैं और पहाड़ बनते बिगड़ते रहते हैं. ठंडी होने पर पृथ्वी को सुकड़ना पड़ा, ठंडी सतह पर तहें पड़ गईं, दूसरे शब्दों में पहाड़ बन गये. लेकिन विज्ञान की रफ़्तार कभी नहीं रुकती. अब यह पता लगाया गया है कि वह धारनायें ग़लत थीं. यह सिद्ध किया जा चुका है कि हालांकि पृथ्वी के अंदर ऊंचा तापमान है फिर भी पृथ्वी के अन्दर से बहने वाली चीज़ नहीं है. यह भी पता लगाया जा चुका है कि ज्वालामुखी पृथ्वी पर सब जगह नहीं फैले हैं बल्कि उन इलाक़ों में पाये जाते हैं जो ज़्यादा सुकड़े हैं. पर्वतों का निर्मान पृथ्वी के सिकुड़ने के कारन नहीं हुआ है. यह हिसाब लगा कर देखा गया है कि सिकुड़ने से गौरीशंकर जैसी ऊंची चोटी का निर्माण होना तो दूर रहा मास्को के इर्दगिर्द की पहाड़ियों का भी निर्मान नहीं हो सकता.

पृथ्वी की उत्पत्ति के नये सिद्धान्त से इन परिवर्तनों पर कैसे रोशनी पड़ती है ?

पृथ्वी अपने निर्मान की शुरू की अवस्था में ठंडी थी. उन शीतल, ठोस ज़र्रों के झुंड में जिन से इसका निर्मान हुआ था युरेनियम, थोरियम और दूसरे अन्य रेडियो तत्व मौजूद थे इस ढंग से ताप पैदा करते हुए यह तत्व बिखर कर दूसरे तत्वों में बदल गये. जब पृथ्वी छोटी ही थी तो वह ताप सिफ़र से नीचे हो कर सहज ही में समाप्त हो गया. जैसे जैसे पृथ्वी का आकार बढ़ता गया ताप घटता गया पृथ्वी के नीचे में ताप इकट्ठा होने लगा और पृथ्वी धीरे धीरे गर्म होती गई. हिसाब लगाने से पता चलता है कि पृथ्वी के नीचे इसके जीवनकाल में अब तक जितना ताप जमा हुआ है उससे गहरे भूगर्भ का तापमान कई हज़ार डिग्री हो सकता है. लेकिन हम जो पृथ्वी के निवासी हैं इस ताप का क़तई अनुभव नहीं करते. पृथ्वी के सतह का सारा जीवन सूरज द्वारा मिली हुई गर्मी से जुड़ा हुआ है. लेकिन इस अंदरूनी ताप की ही बदौलत ऐसी शक्तियां पैदा हुई हैं जिन्होंने पृथ्वी की शक्ल बदल दी, पर्वत और महासागर बनाये, भूकम्प और ज्वालामुखी के विस्फोट पैदा किये और कर रहे हैं. हमारा विश्वास है कि यह बिल्कुल ठीक ऐसी ही बात है. पृथ्वी का निर्मान विभिन्न आकार प्रकार और तत्व की तह और धातु के ज़र्रों के समूहों से हुआ है. जब पृथ्वी गर्म होने लगी तो इसके कुछ हिस्से पिघल गये और अन्य प्लास्टिक की तरह नर्म हो गये, नये रासायनिक मिश्रन बने. लिहाज़ा इसके हलके

پرتھوی کے اندر سے جوالا مکھی کا وسپھوٹ ہوتا ہے اور تپا ہوا بہنے والے لاوا کی دھارا نکلنے لگتی ہے ۔ اِس سے بیتے زمانے میں لوگوں کو یہ وشواس ہوگیا کہ چونکہ شروع شروع کی حالت میں پرتھوی آگ اور بہنے والے پدارتھ کے روپ میں تھی اِس لئے پرتھوی کے اندر تاپمان اتنا زیادہ ہے، جوالا مکھی ہیں اور پہاڑ بنتے بگڑتے رہتے ہیں ۔ ٹھنڈی ہونے پر پرتھوی کو سکڑنا پڑا، ٹھنڈی سطح پر تہیں پڑ گئیں دوسرے شبدوں میں پہاڑ بن گئے ۔ لیکن وگیان کی رفتار کبھی نہیں رکتی ۔ اب یہ پتہ لگایا گیا ہے کہ وہ دھارنائیں غلط تھیں ۔ یہ سدھ کیا جا چکا ہے کہ حالانکہ پرتھوی کے اندر اونچا تاپمان ہے پھر بھی پرتھوی کے اندر سے بہنے والی چیز نہیں ہے ۔ یہ بھی پتہ لگایا جا چکا ہے کہ جوالا مکھی پرتھوی پر سب جگہ نہیں پھیلے ہیں بلکہ اُن علاقوں میں پائے جاتے ہیں جو زیادہ سکڑے ہیں ۔ پربتوں کا نرمان پرتھوی کے سکڑنے کے کارن نہیں ہوا ہے ۔ یہ حساب لگا کر دیکھا گیا ہے کہ سکڑنے سے گوری شنکر جیسی اونچی چوٹی کا نرمان ہونا تو دور رہا ماسکو کے اِرد گرد کے پہاڑیوں کا بھی نرمان نہیں ہوسکتا ۔

پرتھوی کی اُتپتی کے نئے سدھانت سے اِن پریورتنوں پر کیسے روشنی پڑتی ہے؟

پرتھوی اپنے نرمان کی شروع کی اوستھا میں ٹھنڈی تھی ۔ اُن شیتل، ٹھوس ذرّوں کے جھنڈ میں جس سے اسکا نرمان ہوا تھا یورینیم، تھوریم اور دوسرے ریڈیو تتو موجود تھے ۔ اِس ڈھنگ سے تاپ پیدا کرتے ہوئے یہ تتو بکھر کر دوسرے تتوں میں بدل گئے ۔ جب پرتھوی چھوٹی ہی تھی تو وہ تاپ صفر سے نیچے ہو کر سہج ہی میں سماپت ہوگیا ۔ جیسے جیسے پرتھوی کا آکار بڑھتا گیا تاپ گھٹتا گیا ۔ پرتھوی کے نیچے میں تاپ اکٹھا ہونے لگا اور پرتھوی دھیرے دھیرے گرم ہوتی گئی ۔ حساب لگانے سے پتہ چلتا ہے کہ پرتھوی کے نیچے اِس کے جیون کال میں اب تک جتنا تاپ جمع ہوا ہے اُس سے گہرے بھوگربھ کا تاپمان کئی ہزار ڈگری ہوسکتا ہے ۔ لیکن ہم جو پرتھوی کے نواسی ہیں اِس تاپ کا قطعی انوبھو نہیں کرتے ۔ پرتھوی کے سطح کا سارا جیون سورج دوارا ملی ہوئی گرمی سے جڑا ہوا ہے لیکن اس اندرونی تاپ ہی کی بدولت ایسی شکتیاں پیدا ہوئی ہیں جنھوں نے پرتھوی کی شکل بدل دی، پربت اور مہاساگر بنائے، بھوکمپ اور جوالا مکھی کے وسپھوٹ پیدا کئے اور کر رہے ہیں ۔ ہمارا وشواس ہے کہ یہ بالکل ٹھیک ایسی ہی بات ہے ۔ پرتھوی کا نرمان وبھن آکار پرکار اور تتو کی تہ اور دھات کے ذرّوں کے سموہوں سے ہوا ہے ۔ جب پرتھوی گرم ہونے لگی تو اِس کے کچھ حصے پگھل گئے اور انیہ پلاسٹک کی طرح نرم ہو گئے، نئے رسائنک مشرن بنے ۔ لہذا اِس کے ہلکے

वह न सिर्फ़ सूरज, बल्कि उस ग्रह के आकर्शन के अन्दर भी आ गया, नतीजा यह हुआ कि उसका मंडल टेढ़ा मेढ़ा हो गया और बहुत परिस्थितियों में वह और भी ज्यादा अंडालुमा बन गया.

सबसे पहले बादल में इतने अधिक कन समूह थे कि वह अकसर ग्रहों से, बनाव की शुरूआत की अवस्था में ही टकराते रहते थे और इस तरह ग्रहों की बढ़वारी बहुत तेज़ी से हुई. लेकिन जैसे जैसे ग्रहों का आकार बढ़ता गया कनों की संख्या कम हो गयी और उनका विकास धीमा पड़ गया, और इस समय तो क़रीब क़रीब रुक ही गया है, लेकिन अभी भी पूरे तौर से बंद नहीं हुआ है.

आज भी ग्रहों के अन्दर पदार्थ उल्काकनों (टूटे तारे) के रूप में पृथ्वी पर गिरते हैं. यह हिसाब लगाया गया है कि मोटे तौर पर इस तरह के एक हज़ार टन पदार्थ हर चौबीस घंटे के अन्दर पृथ्वी पर गिरते हैं. लेकिन इसकी मिक़दार इतनी कम है कि पृथ्वी के आकार में एक मिलिमीटर बढ़ने में करोड़ों बरस लग जाएंगे. पहले पृथ्वी के आकार में और भी तेज़ी से वृद्धि हुई है तो पृथ्वी के बनने में कितना समय लगा? मोटे तौर पर हिसाब लगाने से 600 करोड़ बरस से 700 करोड़ बरस होते हैं. यह आंकड़ा एक और विज्ञान यानी भू रसायन विज्ञान द्वारा प्राप्त आंकड़े से मिल जाता है. भू रसायन शास्त्रियों ने पृथ्वी की ऊपरी सतह की उम्र लगभग 300 से 400 करोड़ बरस निश्चित की है. लेकिन कुल मिला कर पृथ्वी की उम्र इसकी तह की बनिस्बत बिला शक ज्यादा है.

जो कुछ भी कहा जा चुका है उससे यह साफ़ है कि विज्ञान ने पृथ्वी की पैदायश के सम्बन्ध में उन तमाम धार्मिक ख्यालों का—कि इस की सृष्टि ईश्वर ने छ दिनों में की थी—पूरी तरह से पर्दा फ़ाश कर दिया है.

और अब हम खुद पृथ्वी पर विचार करें तो मालूम होगा कि यह सदा ऐसी ही नहीं रही है जैसी हम इसे आज जानते हैं और आगे भी ऐसे नहीं रहेगी जैसी आज है. पृथ्वी का चेहरा धीरे धीरे बदला है और इसकी सृष्टि भूतत्व विज्ञान, पदार्थ विज्ञान और भू पदार्थ विज्ञान से होती है जो पृथ्वी की सतह पर और उसके अन्दर होने वाले परिवर्तन का अध्ययन करते हैं. पृथ्वी की सतह पर पैदायश से लेकर अब तक तरह तरह के परिवर्तन हुए हैं. पर्वतमालाएं बनी हैं और खतम हुई हैं, समुद्र निकले हैं और ग़ायब हुए हैं. इन परिवर्तनों का क्या कारन है?

यह सब जानते हैं कि हम भूमि के जितना अन्दर जाते हैं तापमान उतना ही बढ़ता जाता है, यहां तक कि केन्द्र में कई हज़ार डिग्री तक पहुंच जाता है. यह भी मालूम है कि

وہ نہ صرف سورج، بلکہ اُس گرہ کے آکرشن کے اندر بھی آگیا، نتیجہ یہ ہوا کہ اُس کا منڈل ٹیڑھا میڑھا ہوگیا اور بہت پرستھتیوں میں وہ اور بھی زیادہ انڈانما بن گیا .

سب سے پہلے بادل میں اتنے ادھک کن سموہ تھے کہ وہ اکثر گرہوں سے، بناؤ کی شروعات کی اوستھا ہی میں ٹکراتے رہتے تھے اور اِس طرح گرہوں کی بڑھواری بہت تیزی سے ہوئی . لیکن جیسے جیسے گرہوں کا آکار بڑھتا گیا کنوں کی سنکھیا کم ہوگئی اور اُن کا وکاس دھیما پڑگیا، اور اِس سمے تو قریب قریب رک ہی گیا ہے، لیکن ابھی بھی پورے طور سے بند نہیں ہوا ہے .

آج بھی گرہوں کے اندر پدارتھ الکا کنکروں (ٹوٹے تارے) کے روپ میں پرتھوی پر گرتے ہیں . یہ حساب لگایا گیا ہے کہ موٹے طور پر اِس طرح کی ایک ہزار ٹن پدارتھ ہر چوبیس گھنٹے کے اندر پرتھوی پر گرتے ہیں . لیکن اِس کی مقدار اتنی کم ہے کہ پرتھوی کے آکار میں ایک ملیمیٹر بڑھنے میں کروڑوں برس لگ جائیں گے . پہلے پرتھوی کے آکار میں اور بھی تیزی سے وردھی ہوئی ہے . تو پرتھوی کے بننے میں کتنا سمے لگا؟ موٹے طور پر حساب لگانے سے 600 کروڑ برس سے 700 کروڑ برس ہوتے ہیں. یہ آنکڑا ایک اور وگیان یعنی بھو رسائن وگیان دوارا پراپت آنکڑے سے مل جاتا ہے . بھو رسائن شاستریوں نے پرتھوی کی اوپری سطح کی عمر لگ بھگ 300 سے 400 کروڑ برس نشچت کی ہے . لیکن کل ملاکر پرتھوی کی عمر اِسکی تہ کی بہ نسبت بلا شک زیادہ ہے .

جو کچھ بھی کہا جا چکا ہے اُس سے یہ صاف ہے کہ وگیان نے پرتھوی کی پیدائش کے سمبندھ میں اُن تمام دھارمک خیالوں کا — کہ اسکی سرشٹی ایشور نے چھ دنوں میں کی تھی — پوری طرح سے پردہ فاش کردیا ہے .

اور اب ہم خود پرتھوی پر وچار کریں تو معلوم ہوگا کہ یہ سدا ایسی ہی نہیں رہی ہے جیسی ہم اِسے آج جانتے ہیں اور آگے بھی ایسی نہیں رہے گی جیسی آج ہے. پرتھوی کا چہرہ دھیرے دھیرے بدلا ہے، اور اِسکی سرشٹی بھوتتو وگیان، پدارتھ وگیان اور بھو پدارتھ وگیان سے ہوتی ہے جو پرتھوی کی سطح پر اور اُس کے اندر ہونے والے پریورتنوں کا ادھین کرتے ہیں . پرتھوی کی سطح پر پیدائش سے لیکر اب تک طرح طرح کے پریورتن ہوئے ہیں . پربت مالائیں بنی ہیں اور ختم ہوئی ہیں، سمندر نکلے ہیں اور غائب ہوئے ہیں . ان پریورتنوں کا کیا کارن ہے؟

یہ سب جانتے ہیں کہ ہم بھومی کے جتنا اندر جاتے ہیں تاپمان اتنا ہی بڑھتا جاتا ہے، یہاں تک کہ کیندر میں کئی ہزار ڈگری تک پہونچ جاتا ہے. یہ بھی معلوم ہے کہ

ग्रह जो सूरज से दूर हैं जैसे— बृहस्पति, शनि, युरेनस और नेपच्यून बहुत बड़े आकार के हैं लेकिन उनका घनत्व कम है (बृहस्पति का औसत घनत्व पानी के घनत्व का 1.3 है) और वह खास कर हलके चंचल पदार्थों से बने है.

बादल के हर हिस्से में ज़र्रों के झुंड धीरे धीरे एक हो गये. छोटे पिंड एक में मिलते गये और उनमें ज़्यादातर कुछ बड़े पिंडों (ग्रहों) के—जिनके विशय में हमने अभी बताया है—हिस्से बन गये. इन छोटे पिंडों में कुछ जिन्हें ग्रहों से टकराने का मौक़ा नहीं मिला बीच की स्थिति में बने रहे और इस तरह तारे के आकार के पिंडों और पुच्छल तारों का जन्म हुआ.

पुच्छल तारे बादल के ठंडे भाग में यानी बृहस्पति मंडल के क्षेत्र में और उससे भी आगे प्रकट हुए. उनका निर्मान मेथान और अमोनिया जैसे जमे हुए हल्के पदार्थों और चट्टान और धातों के ज़र्रों मिल कर हुआ है. यही कारन है कि आज के वैज्ञानिक तथ्य और आंकड़े के अनुसार पुच्छल तारे का केन्द्र बर्फ़ के एक ऐसे पिंड के समान मालूम होता है जिसमें ज़र्रे लिपटे हुए हैं. जब पुच्छल तारा सूरज के पास से गुज़रता है तो सूरज की किरनों से गरम हो जाता है, इसके जमे हुए कुछ गैस और उनमें चिपके धूल के ज़र्रे खतम हो जाते हैं. भाप की गैस सूरज की किरनों के दबाव के कारन रुक जाती है और इस तरह चमकीले दीखने वाले पुच्छल तारों की सृश्टि करता है जिससे सभी परिचित हैं, जो हमेशा सूरज से दूर रहता है. लेकिन जब अपने मंडल में घूमता हुआ पुच्छल तारा सूरज से दूर चला जाता है तो गैस का भाप होना रुक जाता है और "पूंछ" तब तक नहीं दीख पड़ती जब तक कि पुच्छल तारा फिर सूरज के नज़दीक नहीं आ जाता.

चट्टान और धात के ज़र्रे अलग हो कर छोटे छोटे उल्का पिंडों के अंग बन जाते हैं.

इनका अंडानुमा मंडलों में और सभी गोलाकार मंडलों में क्यों घूमते हैं ?

छोटे छोटे पिंड सूरज के चारों ओर विभिन्न मंडलों में जिसमें अंडानुमा गोले भी शामिल हैं घूम सकते हैं. लेकिन जब बहुत से पिंड मिल कर एक बड़े पिंड बन जाते हैं तो इसका नतीजा यह होता है कि उनकी चाल बीच की, यानी दूसरे शब्दों में गोलाकार हो जाती है और इसमें किसी भी तरह अंडाकार नहीं रहती. वास्तव में इसी तरह ग्रहों के मंडल गोलाकार हो गये. पुच्छल तारे जो असलियत में छोटे पिंड हैं, अंडाकार मंडलों में ही घूमते रहे. इसके सिवाय जब ऐसा पुच्छल तारा बृहस्पति बल्कि और किसी बड़े ग्रह के पास से गुज़रा तो

گرہ جو سورج سے دور ہیں جیسے — برہسپتی، شنی، یورینس اور نیپچیون بہت بڑے آکار کے ہیں لیکن اُن کا گھنتو کم ہے (برہسپتی کا اوسط گھنتو پانی کے گھنتو کا 1.3 ہے) اور وہ خاص کر ہلکے چلچل پدارتھوں سے بنے ہیں .

بادل کے ہر حصے میں ذروں کے جھنڈ دھیرے دھیرے ایک ہوگئے . چھوٹے پنڈ ایک میں ملتے گئے اور اُن میں زیادہ تر کچھ بڑے پنڈوں (گرہوں) کے — جن کے وشے میں ہم نے ابھی بتایا ہے — حصے بن گئے . ان چھوٹے پنڈوں میں کچھ جنھیں گرہوں سے ٹکرانے کا موقع نہیں ملا بیچ کی استھتی میں بنے رہے اور اس طرح تارے کے آکار کے پنڈوں اور پچھل تاروں کا جنم ہوا .

پچھل تارے بادل کے ٹھنڈے بھاگ میں یعنی برہسپتی منڈل کے چھیتر میں اور اُس سے بھی آگے پرکٹ ہوئے . اُن کا نرمان میتھان اور امونیا جیسے جمے ہوئے ہلکے پدارتھوں اور چٹان اور دھاتوں کے ذروں سے ملکر پیدا ہوا ہے . یہی کارن ہے کہ آج کے وگیانک تتھیہ اور آنکڑے کے انوسار پچھل تارے کا کیندر برف کے ایک ایسے پنڈ کے سمان معلوم ہوتا ہے جس میں ذرے لپٹے ہوئے ہیں . جب پچھل تارا سورج کے پاس سے گذرتا ہے تو سورج کی کرنوں سے گرم ہوجاتا ہے، اِس کے جمے ہوئے کچھ گیس اور اُن میں چپکے دھول کے ذرے ختم ہوجاتے ہیں . بھاپ کی گیس سورج کے کرنوں کے دباؤ کے کارن رک جاتی ہے اور اِس طرح چمکیلے دیکھنے والے "پچھل تاروں" کی سرشٹی کرتا ہے جس سے سبھی پریچت ہیں، جو ہمیشہ سورج سے دور رہتا ہے . لیکن جب اپنے منڈل میں گھومتا ہوا پچھل تارا سورج سے دور چلا جاتا ہے تو گیس کا بھاپ ہونا رک جاتا ہے اور "پونچھ" تب تک نہیں دیکھ پڑتی جب تک کی پچھل تارا پھر سورج کے نزدیک نہیں آجاتا .

چٹان اور دھات کے ذرے الگ ہوکر چھوٹے چھوٹے اُلکا پنڈوں کے انگ بن جاتے ہیں .

اُنکا انڈانما منڈلوں میں اور سبھی گولاکار منڈلوں میں کیوں گھومتے ہیں ؟

چھوٹے چھوٹے پنڈ سورج کے چاروں اور وبھن منڈلوں میں جس میں انڈانما گولے بھی شامل ہیں گھوم سکتے ہیں . لیکن جب بہت سے پنڈ ملکر ایک بڑے پنڈ بن جاتے ہیں تو اِس کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ اُن کی چال بیچ کی، یعنی دوسرے شبدوں میں گولاکار ہوجاتی ہے اور اِس میں کسی بھی طرح انڈاکار نہیں رہتی، واستو میں اِسی طرح گرہوں کے منڈل گولاکار ہوگئے . پچھل تارے جو اصلیت میں چھوٹے پنڈ ہیں انڈاکار منڈلوں میں ہی گھومتے رہے . اُس کے سوائے جب ایسا پچھل تارا برہسپتی یا اور کسی بڑے گرہ کے پاس گذرا تو

उसके निर्मान के बाद बच रहे थे—कुछ को पकड़ लिया और धूल और गैस के बादल से घिरा बाहर निकल आया. वह बादल आकर्शन शक्ति के नियम के अनुसार सूरज के चारों ओर चक्कर काटता रहा. धूल और गैस के ज़र्रों के झुंड जिनसे बादल बना था अलग अलग दिशाओं में घूमते रहे. चूंकि उनके रास्ते एक दूसरे के आगे पड़ते थे इसलिये वह टकराये और कभी कभी बिखर गए लेकिन अकसर वह मिल कर एक में हो गये. जब अलग अलग आकार के ज़र्रे टकराते थे तो वह और भी जल्दी जल्दी मिल कर एक हो जाते थे. बड़े आकार के ज़र्रे छोटे को खींचते थे और उसको समेट कर और भी बड़े हो जाते थे. धीरे धीरे वह बड़े से और बड़े होते गये और अन्त में ग्रह बन गये. इस भौतिक पदार्थ का एक हिस्सा उपग्रहों के रूप में प्रगट हुआ.

सूरज द्वारा पकड़ा गया बादल बहुत बड़ा था और इसके अलग अलग भागों में अलग अलग तापमान (Temperature) था. हम सूरज की किरन की ताक़त से अच्छी तरह परिचित हैं. सूरज बादल के ज़र्रों को अपनी किरनों द्वारा असमान में तपाता रहा. आप इसके जितना नज़दीक बैठेंगे उतनी ही ज़्यादा गर्मी महसूस करेंगे और जितना दूर बैठेंगे उतना ही कम. इसी तरह बादल का वह हिस्सा जो सूरज के सबसे नज़दीक था दूर वाले से ज़्यादा गर्म हो गया. जहां सूरज की किरनें पहुंच नहीं सकीं वहां ठंड का राज था. यह सभी जानते हैं कि किसी ठोस पदार्थ का तापमान, इतनी दूरी पर जितनी सूरज और ज़मीन के बीच है, ज़ीरो सेंटीग्रेड के बराबर होता है, लेकिन दूर बृहस्पति के इलाक़े में तापमान ज़ीरो के लगभग 150 डिग्री नीचे है.

बादल में सारे ताप के इस वितरन के कारन सूरज के नज़दीकी इलाक़ों में बारीकी तरीक़े से बंटे हुए ज़र्रों से चंचल पदार्थ भाप हो गये. लेकिन गैस के कन समूह बादल के ऊपर तमाम फैल गये (गर्म होने पर गैस के परमानु तेज़ी से गतिशील हो जाते हैं). सूरज की दूरी के इलाक़ों में पहुंचने पर जहां ठंड का राज है वह ठोस ज़र्रों के ऊपर जम गये. इसका नतीजा यह हुआ कि सूरज के नज़दीक बिल्कुल कम ज़र्रे बच रहे और जो बचे भी वह ख़ास कर चट्टान और धातु के ज़र्रे थे, और सूरज से दूर ज़र्रों की तादाद बढ़ गयी और गैस के यह ज़र्रे नये थे. यही कारन है कि वह ग्रह जो सूरज के ज़्यादा नज़दीक हैं, जैसे बुद्ध, शुक्र, ज़मीन, और मंगल, मुक़ाबले की नज़र से आकार में छोटे पर बहुत घने हैं, (पृथ्वी का घनापन औसत के हिसाब से पानी के मुक़ाबले 5.5 गुना अधिक है) और वह चट्टान और धातु के ज़र्रों से बने हैं. वह

اس کے نرمان کے بعد بچ رہے تھے—کچھ کو پکڑ لیا اور دھول اور گیس کے بادل سے گھرا باہر نکل آیا . وہ بادل آکرشن شکتی کے نیم کے انوسار سورج کے چاروں اور چکر کاٹتا رہا . دھول اور گیس کے ذروں کے جھنڈ جن سے بادل بنا تھا الگ الگ دشاؤں میں گھومتے رہے . چونکہ اُن کے راستے ایک دوسرے کے آگے پڑتے تھے اس لیئے وہ ٹکرائے اور کبھی کبھی بکھر گئے لیکن اکثر وہ ملکر ایک میں ہوگئے . جب الگ الگ آکار کے ذرے ٹکراتے تھے تو وہ اور بھی جلدی جلدی ملکر ایک ہو جاتے تھے. بڑے آکار کے ذرے چھوٹے کو کھینچتے تھے اور اسکو سمیٹ کر اور بھی بڑے ہوجاتے تھے . دھیرے دھیرے وہ بڑے سے اور بڑے ہوتے گئے اور انت میں گرہ بن گئے . اس بھوتک پدارتھ کا ایک حصہ اُپ گرہوں کے روپ میں پرگٹ ہوا .

سورج دوارا پکڑا گیا بادل بہت بڑا تھا اور اس کے الگ الگ بھاگوں میں الگ الگ تاپمان (Temperature) تھا . ہم سورج کی کرن کی طاقت سے اچھی طرح پرچت ہیں . سورج بادل کے ذروں کو اپنی کرنوں دوارا آسمان میں تپاتا رہا . آپ اس کے جتنا نزدیک بیٹھیں گے اتنی ہی زیادہ گرمی محسوس کریں گے اور جتنا دور بیٹھیں گے اتنا ہی کم . اسی طرح بادل کا وہ حصہ جو سورج کے سب سے نزدیک تھا دور والے سے زیادہ گرم ہوگیا . جہاں سورج کی کرنیں پہونچ نہیں سکیں وہاں ٹھنڈ کا راج تھا . یہ سبھی جانتے ہیں کہ کسی ٹھوس پدارتھ کا تاپ مان' اتنی دوری پر جتنی سورج اور زمین کے بیچ ہے' زیرو سنٹیگریڈ کے برابر ہوتا ہے' لیکن دور برہسپتی کے علاقے میں تاپ مان زیرو کے لگ بھگ 150 ڈگری نیچے ہے .

بادل میں سارے تاپ کے اِس وترن کے کارن سورج کے نزدیکی علاقوں میں باریک طریقے سے بٹے ہوئے ذروں سے چنچل پدارتھ بھاپ ہوگئے . لیکن گیس کے کن سموہ بادل کے اوپر تمام پھیل گئے (گرم ہونے پر گیس کے پرمانو تیزی سے گتی شیل ہوجاتے ہیں). سورج کے دوری کے علاقوں میں پہونچنے پر جہاں ٹھنڈ کا راج ہے وہ ٹھوس ذروں کے اوپر جم گئے. اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ سورج کے نزدیک بالکل کم ذرے بچ رہے اور جو بچے بھی وہ خاص کر چٹان اور دھات کے ذرے تھے' اور سورج سے دور ذروں کی تعداد بڑھ گئی اور گیس کے ذرے نئے تھے . یہی کارن ہے کہ وہ گرہ جو سورج کے زیادہ نزدیک ہیں' جیسے بدھ' شکر' زمین اور منگل' مقابلے کی نظر سے آکار میں چھوٹے پر بہت گھنے ہیں (پرتھوی کا گھنا پن اوسط کے حساب سے پانی کے مقابلے 5.5 گنا ادھک ہے) اور وہ چٹان اور دھات کے ذروں سے بنے ہیں . وہ

का घेरा लगभग 800 क्लोमीटर है, और उनमें ज़्यादातर बहुत ही छोटे हैं, यहां तक उनका घेरा एक क्लोमीटर से भी कम है. वह भी सूरज के चारों तरफ़ अधिकता अंडानुमा गोलाई के रास्ते पर घूमते रहते हैं. उसके बाद पुच्छलतारे आते हैं जिनकी चमकीली पूंछें देखकर किसी ज़माने में लोग डर जाते थे. सूरज के चारों तरफ़ उनके रास्ते बिल्कुल अंडानुमा हैं और अंत में कुछ मीटर के आकार से लेकर बालू के कन जैसे चमकीली पिंडों का समूह हैं निर्मल, रात में हमें अकसर तेज़ी के साथ तारे "टूटते" दिखाई देते हैं. 'तारा टूटने'' की घटना चमकीले पिंडों का पृथ्वी से मिलने की घटना है.

पृथ्वी के वायु मंडल में पहुंचते ही वह भाप बन कर उड़ने लगते हैं. उनमें कुछ जो भाप बन कर उड़ नहीं पाये हैं—चट्टान और लोहे के टुकड़ों—उल्का (टूटे तारे) के रूप में पृथ्वी पर गिरते हैं, उनके वज़न कुछ ग्रामों से ले कर बीसियों टन तक होते हैं.

सूरज के चारों तरफ़ सारे पिंड—ग्रह, तारा के आकार के छोटे पिंड और उल्का—उसकी आकर्षन शक्ति के मारे उसके चारों तरफ़ घूमते रहते हैं. चारों ओर के उन पिंडों की सारी अलहदगी के बावजूद वह एक परिवार का निर्मान करते हैं जिसे सौर मंडल (Solar System) कहते हैं.

तब इस उलझन भरी परिपाटी का उदय कैसे हुआ ?

हमारे युग में पदार्थ व नक्षत्र विज्ञान और दूसरे विज्ञानों का इस हद तक विकास हुआ है कि आकाश पिंडों के उत्पत्ति विज्ञान सम्बन्धी कम से कम मुख्य प्रश्नों का वैज्ञानिक ढंग से उत्तर देना सम्भव है.

सोवियत वैज्ञानिकों ने ग्रह मंडल की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सबसे अच्छा विकसित सिद्धान्त निकाला है. दस साल से ऊपर हो रहे हैं जब मैंने इस नये सिद्धान्त पर काम करना शुरू किया था और धीरे धीरे विभिन्न क्षेत्रों में विशेष जानकारी प्राप्त करने वाले बहुत से सोवियत वैज्ञानिक इस कोशिश में भाग लेने लगे.

अपने अनुसंधान के ज़रिये हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि सूरज के चारों तरफ़ सारे ग्रह, उपग्रह एक पदार्थ से—ठंडे ठोस ज़र्रों से—निकले हैं जो कभी सूर्य के चारों ओर थे. और यह ज़र्रे कहां से आये ?

मौजूदा समय के आंकड़ों के अनुसार हमारे चारों तरफ़ महाशून्य में कोहरे से पूरी की पूरी तारा मंडलियों का निर्मान हो रहा है. अनादिकाल में सूरज उस गैस युक्त और बारीकी से बने हुए पदार्थ से गुज़रते हुए—जो

کا گھیرا لگ بھگ 800 کلو میٹر ہے' اور اُن میں زیادہ تر بہت ہی چھوٹے ہیں' یہاں تک کہ اُن کا گھیرا ایک کلومیٹر سے بھی کم ہے. وہ بھی سورج کے چاروں طرف ادھک تر انڈانما گولائی کے راستے پر گھومتے رہتے ہیں . اُس کے بعد پچھل تارے آتے ہیں جن کی چمکیلی پونچھیں دیکھکر کسی زمانے میں لوگ ڈر جاتے تھے . سورج کے چاروں طرف اُن کے راستے بالکل انڈا نما ہیں اور انت میں کچھ میٹر کے آکار سے لیکر بالو کے کن جیسے چمکیلے پنڈوں کا سموہ ہے . نرمل' رات میں ہمیں اکثر تیزی کے ساتھ تارے '' ٹوٹتے '' دکھائی دیتے ہیں . " تارا ٹوٹنے " کی گھٹنا چمکیلے پنڈوں کا پرتھوی سے ملنے کی گھٹنا ہے .

پرتھوی کے وایو منڈل میں پہنچتے ہی وہ بھاپ بن کر اڑنے لگتے ہیں. اُن میں کچھ جو بھاپ بن کر اُڑ نہیں پائے ہیں چٹان اور لوہے کے ٹکڑوں—اُلکا (ٹوٹے تارے) کے روپ میں پرتھوی پر گرتے ہیں . اُن کے وزن کچھ گراموں سے لیکر بیسیوں ٹن تک ہوتے ہیں .

سورج کے چاروں طرف سارے پنڈ—گرہ' تارا کے آکار کے چھوٹے پنڈ اور اُلکا—اُسکی آکرشن شکتی کے مارے اُسکے چاروں طرف گھومتے رہتے ہیں. چاروں اور کے ان پنڈوں کی ساری علیحدگی کے باوجود وہ ایک پریوار کا نرمان کرتے ہیں جسے سور منڈل (Solar System) کہتے ہیں.

تب اِس اُلجھن بھری پری پاٹی کا اُدے کیسے ہوا ؟

ہمارے یگ میں پدارتھ و نچھتر وگیان اور دوسرے وگیانوں کا اِس حد تک وکاس ہوا ہے کہ آکاش پنڈوں کے اُتپتی وگیان سمبندھی کم سے کم مکھیہ پرشنوں کا ویگیانک ڈھنگ سے اُتر دینا سمبھو ہے .

سوویت ویگیانکوں نے گرہ منڈل کی اُتپتی کے سمبندھ میں سب سے اچھا وکست سدھانت نکالا ہے . دس سال سے اوپر ہو رہے ہیں جب میں نے اِس نئے سدھانت پر کام کرنا شروع کیا تھا اور دھیرے دھیرے وبھن چھیتروں میں وشیش جانکاری پراپت کرنے والے بہت سے سوویت ویگیانک اِس کوشش میں بھاگ لینے لگے .

اپنے انوسندھان کے ذریعہ ہم اِس نتیجے پر پہونچے ہیں کہ سورج کے چاروں طرف سارے گرہ' اُپ گرہ ایک پدارتھ سے—ٹھنڈے ٹھوس ذروں سے—نکلے ہیں جو کبھی سوریہ کی چاروں اور تھے . اور یہ ذرے کہاں سے آئے ؟

موجودہ سمے کے آنکڑوں کے انوسار ہمارے چاروں طرف مہاشونیہ میں کہرے سے پوری کی پوری تارامنڈلیوں کا نرمان ہو رہا ہے. آنادی کال میں سورج اس گیس یکت اور باریکی سے بنے ہوئے پدارتھ سے گذرتے ہوئے—جو

पृथ्वी की उत्पत्ति

(अकदमिशियन ओ० वाई० शिमदूत)

पृथ्वी की उत्पत्ति का प्रश्न प्रकृति विज्ञान के बहुत उलझे हुए प्रश्नों में से एक है. अनादिकाल से मानव ने यह पता लगाने के लिए कि पृथ्वी कैसे बनी, इस पर जीवन का विकास कैसे हुआ और मनुष्य की पैदायश कैसे हुई इस रहस्य का पता लगाने की कोशिश की है.

विश्व ब्रह्मांड के विशय में सिद्धांत तय करने में अब तक विज्ञान को जो सफलता मिली है उसकी हम संक्षेप में ही सही जानकारी प्राप्त करें. रात्ति के समय जब आकाश साफ़ हो हम किसी मैदान में खड़े होकर ऊपर नज़र डालें. हम देखेंगे कि आकाश में अनगिनत तारे जगमगा रहे हैं. अब यदि आप सावधानी से देखें तो आकाश मंडल की काली तह में कोहरे के समान एक चौड़ा चमकता रास्ता (आलोकपथ) पायेंगे. इसको आकाश गंगा कहते हैं. वैज्ञानिकों ने यह तय किया है कि आकाशगंगा अरबों-खरबों तारों का, जलती गैस के बने अनगिनत पिंडों का झुंड है. इस तारापुंज में एक है सूरज. यह इतना तेज़ इसलिए चमकता है कि यह हमारा सब से नज़दीकी तारा है. यह पृथ्वी से सिर्फ़ 1500 लाख कीलोमीटर दूर है. इसके बाद जो तारा हमारे सबसे नज़दीक है वह उससे 2,70,000 गुना दूर है.

सूरज आग का एक बहुत बड़ा पिंड है, इसका घेरा पृथ्वी से 109 गुना बड़ा है, इसके इर्दगिर्द नौ ग्रह—शीत पिंड हैं जो इसी से गर्मी और रोशनी प्राप्त करते हैं. हमारी पृथ्वी इन्हीं ग्रहों में से एक है. यह ग्रह सूरज से अलग अलग दूरी पर स्थिर हैं. इसके सबसे निकट बुध है जो सबसे छोटा है, उसके बाद शुक्र, पृथ्वी और मंगल ग्रह हैं. इनसे हटकर दूर बृहस्पति है जो सबसे बड़ा ग्रह है, उसका घेरा पृथ्वी के घेरे से ग्यारह गुना बड़ा है. उसके बाद शनि, युरेनस और नेपच्यून हैं और अन्त में बहुत दूर प्लूटो ग्रह है जिसका पता 1930 में लगाया गया था. वह सब सूरज की चारों तरफ़ क़रीब क़रीब गोलाकार रास्ते में चक्कर लगाते रहते हैं. अगर हम उत्तरी ध्रुव (North pole) के ऊपर उड़ें तो देखेंगे कि सभी ग्रह घड़ी की सुई की चाल के उटला चलते हैं.

सूरज के चारों तरफ़ ग्रहों के सिवाय बहुत से छोटे पिंड घूमते रहते हैं. वह तारे के आकार के बहुत छोटे पिंड हैं जो आंखों से देखे नहीं जा सकते और जो ग्रहों के समान ठंडे हैं. वह क़द में छोटे हैं. इस तरह के बड़े से बड़े पिंड

پرتھوی کی اُتپتی

(اکدمشین او. وائی. شمدت)

پرتھوی کی اتپتی کا پرشن پرکرتی وگیان کے بہت الجھے ہوئے پرشنوں میں سے ایک ہے. انادی کال سے مانو نے یہ پتہ لگانے کے لئے کہ پرتھوی کیسے بنی' اس پر جیون کا وکاس کیسے ہوا اور منشیہ کی پیدایش کیسے ہوئی اس رہسیہ کا پتہ لگانے کی کوشش کی ہے.

وشو برہمانڈ کے وشے میں سدھانت طے کرنے میں اب تک وگیان کو جو سپھلتا ملی ہے اسکی ہم سنکشیپ میں ہی سہی جانکاری پراپت کریں. رات کے سمے جب آکاش صاف ہو ہم کسی میدان میں کھڑے ہو کر اوپر نظر ڈالیں. ہم دیکھیں گے کہ آکاش میں انگنت تارے جگمگا رہے ہیں. اب یدی آپ ساودھانی سے دیکھیں تو آکاش منڈل کی کالی تہ میں کہرے کے سمان ایک چوڑا چمکتا راستہ (آلوک پتھ) پائیں گے. اس کو آکاش گنگا کہتے ہیں. ویگیانکوں نے یہ طے کیا ہے کہ آکاش گنگا اربوں کھربوں تاروں کا' جلتی گیس کے بنے انگنت پنڈوں کا جھنڈ ہے. اس تارا پنج میں ایک ہے سورج. یہ اتنا تیز اس لئے چمکتا ہے کہ یہ ہمارا سب سے نزدیکی تارا ہے. یہ پرتھوی سے صرف 1500 سو لاکھ کلومیٹر دور ہے. اس کے بعد جو تارا ہمارے سب سے نزدیک ہے وہ اس سے 2,70,000 گنا دور ہے.

سورج آگ کا ایک بہت بڑا پنڈ ہے' اسکا گھیرا پرتھوی سے 109 گنا بڑا ہے' اس کے اردگرد نو گرہ—شیت پنڈ ہیں جو اسی سے گرمی اور روشنی پراپت کرتے ہیں. ہماری پرتھوی انہیں گرہوں میں سے ایک ہے. یہ گرہ سورج سے الگ الگ دوری پر استھر ہیں. اس کے سب سے نکٹ بدھ ہے جو سب سے چھوٹا ہے' اس کے بعد شکر' پرتھوی اور منگل گرہ ہیں. ان سے ہٹ کر دور برہسپتی ہے جو سب سے بڑا گرہ ہے' اسکا گھیرا پرتھوی کے گھیرے سے گیارہ گنا بڑا ہے. اس کے بعد شنی' یورینس اور نیپچون ہیں اور انت میں بہت دور پلوٹو گرہ ہے جس کا پتہ سن 1930 میں لگایا گیا تھا. وہ سب سورج کے چاروں طرف قریب قریب گولاکار راستے میں چکر لگاتے رہتے ہیں. اگر ہم اتری دھرو (North Pole) کے اوپر اڑیں تو دیکھیں گے کہ سبھی گرہ گھڑی کی سوئی کی چال کے الٹا چلتے ہیں.

سورج کے چاروں طرف گرہوں کے سوائے بہت سے چھوٹے پنڈ گھومتے رہتے ہیں. وہ تارے کے آکار کے بہت چھوٹے پنڈ ہیں جو آنکھوں سے دیکھے نہیں جا سکتے اور جو گرہوں کے سمان ٹھنڈے ہیں. وہ قد میں چھوٹے ہیں. اسطرح کے بڑے سے بڑے پنڈ

अध्यापक, लेखक और प्रकाशक अपना अपना काम शुरू कर सकेंगे. इसमें अगर कमी रही तो वह लोग अपने काम में ढीले पड़ेंगे, जो क़ुदरती होगा. और यह बात साफ़ है कि इस से काम ही बिगड़ेगा. अब हमें इस महान असूल का पालन शुरू कर देना चाहिये कि भारत की तालीमी, कलचरी और विद्या सम्बन्धी तरक़्क़ी लोकशाही ढंग से करना हो तो समाज के सारे तालीमी ढांचे का माध्यम हमारे राष्ट्र की महान लोक भाषाएं ही हो सकती हैं और देश की अन्तर प्रान्ती भाषा उनकी मदद में रहे. ऐसा होगा तो ही मताधिकार से देश के हर एक नागरिक को जो राजकाजी समानता मिली है वह फ़ायदेमन्द सिद्ध होगी.

"आदमी के रूप"

(स्वामी मारहरवी)

आदमी—आदमी का भाई भी,
भाई के रूप में क़साई भी !
आदमी खोके आदमयती को,
अब तो करने लगा ख़ुदाई भी !

"मेरी ज़मीन तेरा आसमान"

(स्वामी मारहरवी)

तेरी ख़ुदाई हो जिस जहां में,
मैं वह जहां लेके क्या करूंगा ?
तुझे मुबारक यह लामकानी,
मैं लामकां लेके क्या करूंगा ?
मैं रहने वाला हूं इस ज़मीं का,
मुझे ग़रज़ क्या है आसमां से ?
मुझे यह मेरी ज़मीन दे दे,
मैं आसमां ले के क्या करूंगा ?

ادھیاپک، لیکھک اور پرکاشک اپنا اپنا کام شروع کر سکیں گے۔ اِس میں اگر کمی رہی تو وہ لوگ اپنے کام میں ڈھیلے پڑیں گے، جو قدرتی ہوگا۔ اور یہ بات صاف ہے کہ اِس سے کام ہی بگڑے گا۔ اب ہمیں اِس مہان اصول کا پالن شروع کر دینا چاہیئے کہ بھارت کی تعلیمی، کلچری اور ودیا سمبندھی ترقی لوک شاہی ڈھنگ سے کرنا ہو تو سماج کے سارے تعلیمی ڈھانچے کا مادھیم ہمارے راشٹر کی مہان لوک بھاشائیں ہی ہو سکتی ہیں اور دیش کی انتر پرانتی بھاشا اُن کی مدد میں رہے۔ ایسا ہوگا تو ہی مت ادھیکار سے دیش کے ہر ایک ناگرک کو جو راج کاجی سمانتا ملی ہے وہ فایدے مند سدھ ہوگی۔

"آدمی کے روپ"

(سوامی مارہروی)

آدمی—آدمی کا بھائی بھی،
بھائی کے روپ میں قصائی بھی !
آدمی کھوکے آدمیت کو،
اب تو کرنے لگا خدائی بھی !

"میری زمین تیرا آسماں"

(سوامی مارہروی)

تیری خدائی ہو جس جہاں میں،
میں وہ جہاں لے کے کیا کرونگا ؟
تجھے مبارک یہ لامکانی،
میں لامکاں لے کے کیا کرونگا ؟
میں رہنے والا ہوں اس زمیں کا،
مجھے غرض کیا ہے آسماں سے ؟
مجھے یہ میری زمین دیدے،
میں آسماں لے کے کیا کرونگا ؟

और रीत रिवाजों की भिन्नता से निर्मान हुई है. इसलिये सारी प्रादेशिक भाषाओं का विकास जरूरी है.''

(टाइम्स आफ़ इंडिया, बम्बई, तारीख़ 29 अप्रैल सन 54 में छपी रिपोर्ट से)

अगर हम भारत की आज़ादी का इतिहास देखें तो यह कोई नई बात नहीं है. गांधी जी ने जिस हिन्दी को सारे प्रान्तों की अन्तरभाषा मन्ज़ूर करने को कहा, उस के प्रचार की बुनियाद में यही बात थी. हमारे प्रदेशों की महान भाषाओं को बेख़ौफ़ी का वचन देकर ही गांधी जी ने ग़ैर हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी हिन्दुस्तानी नाम से इस अन्तर प्रान्तीय भाषा का प्रचार शुरू किया था इसी कारन वह सफल भी हो सके.

आज अगर उस बुनियादी विचार में गड़बड़ पैदा की जाय तो वह मीठे फल देने वाले पेड़ की जड़ खोदने जैसा ही होगा. उत्तर भारत का हिन्दी साहित्य सम्मेलन और ग़ैर हिन्दी प्रदेशों में काम करने वाली उसकी शाखें हिन्दी माध्यम की बातें करती हैं. कुछ ग़ैर हिन्दी भाषी लोग भी कुल हिन्द अधार पर पहले जैसे अंग्रेज़ी थी वैसे अब हिन्दी हो—ऐसे सरल मालूम होने वाले—हिसाब को मान कर चलते हैं और भारत की एकता के नाम पर उसे भंग करने वाले विचारों में फंसते हैं. कांग्रेस ने जिस नीति का एलान किया है और विधान ने जो रास्ता दिखाया है और इस सम्बन्ध में अब राष्ट्रपति ने ज़रूरतों और परिस्थितियों का ख़याल करके समय पर जो साफ़ साफ़ बातें नागपुर में की हैं उन्हें अच्छी तरह समझकर इस वर्ग को अपने विचारों में तबदीली कर लेना चाहिये.

देश की यूनिवर्सिटियों को इस साफ़ मार्ग दर्शन के आधार पर माध्यम का विचार करने लग जाना चाहिये. गुजरात यूनिवर्सिटी ने इस दिशा में जो पहल की है. उसके लिये वह सारे देश की बधाई की पात्र है—ऐसा करके गुजरात ने अपना गौरव और मान बढ़ाया है. सब से पहले गुजरात ने 1920 में असहकार का नया रास्ता अपनाया था. उस के अनुसार इस सिद्धान्त के अमल के लिये सारी तालीम में अपनी भाषा का ही माध्यम होना चाहिये, उसने गुजरात विद्यापीठ की स्थापना की. अब उस की प्रादेशिक यूनिवर्सिटी ने तीन बरस की बड़ी गहरी और व्यापक चरचा के बाद माध्यम के सम्बन्ध में जो फ़ैसला किया है, वह देश की दूसरी यूनिवर्सिटियों का मार्ग दर्शन करने वाला है, ऐसा नम्रता से कहना चाहिये.

गुजरात को यह का ठोस रूप में में आगे बढ़ाना हो तो अब बड़ी ज़रूरत इस सवाल के बारे में ठंडे दिल से विचार करने का वातावरन पैदा करने की है. तभी

اور ریت رواجوں کی بھنّتا سے نرمان ہوئی ہے۔ اس لئے ساری پرادیشک بھاشاؤں کا وکاس ضروری ہے۔"

(ٹائمس آف انڈیا' بمبئی تاریخ 29 اپریل سن 54 میں چھپی رپورٹ سے)

اگر ہم بھارت کی آزادی کا اتہاس دیکھیں تو یہ کوئی نئی بات نہیں ہے، گاندھی جی نے جس ہندی کو سارے پرانتوں کی انتر بھاشا منظور کرنے کو کہا' اس کے پرچار کی بنیاد میں یہی بات تھی۔ ہمارے پردیشوں کی مہان بھاشاؤں کو بے خوفی کا وچن دے کر ہی گاندھی جی نے غیر ہندی پرانتوں میں ہندی ہندستانی نام سے اس انتر پرانتیہ بھاشا کا پرچار شروع کیا تھا۔ اسی کارن وہ سپھل بھی ہوسکے۔

آج اگر اس بنیادی وچار میں گڑبڑ پیدا کی جائے تو وہ میٹھے پھل دینے والے پیڑ کی جڑ کھودنے جیسا ہی ہوگا۔ اتر بھارت کا ہندی ساہتیہ سمیلن اور غیر ہندی پردیشوں میں کام کرنے والی اس کی شاخیں ہندی مادھیم کی باتیں کرتی ہیں۔ کچھ غیر ہندی بھاشی لوگ بھی کل ہند آدھار پر پہلے جیسے انگریزی تھی ویسے اب ہندی ہو—ایسے سرل معلوم ہونے والے—حساب کو مان کر چلتے ہیں اور بھارت کی ایکتا کے نام پر اسے بھنگ کرنے والے وچاروں میں پھنستے ہیں۔ کانگریس نے جس نیتی کا اعلان کیا ہے اور ودھان نے جو راستہ دکھایا ہے اور اس سمبندھ میں اب راشٹر پتی نے ضرورتوں اور پرستھتیوں کا خیال کر کے سمے پر جو صاف صاف باتیں ناگپور میں کی ہیں انہیں اچھی طرح سمجھکر اس ورگ کو اپنے وچاروں میں تبدیلی کر لینا چاہئیے۔

دیش کی یونیورسٹیوں کو اس صاف مارگ درشن کے آدھار پر مادھیم کا وچار کرنے لگ جانا چاہئیے۔ گجرات یونیورسٹی نے اس دشا میں جو پہل کی ہے' اس کے لئے وہ سارے دیش کی بدھائی کی پاتر ہے۔ ایسا کر کے گجرات نے اپنا گورو اور مان بڑھایا ہے۔ سب سے پہلے گجرات نے 1920 میں اسہکار کا نیا راستہ اپنایا تھا۔ اس کے انوسار اس سدھانت کے عمل کے لیئے ساری تعلیم میں اپنی بھاشا کا ہی مادھیم ہونا چاہئیے' اس نے گجرات ودیاپیٹھ کی استھاپنا کی۔ اب اسکی پرادیشک یونیورسٹی نے تین برس کی بڑی گہری اور ویاپک چرچا کے بعد مادھیم کے سمبندھ میں جو فیصلہ کیا ہے' وہ دیش کی دوسری یونیورسٹیوں کا مارگ درشن کرنے والا ہے' ایسا نمرتا سے کہنا چاہئیے۔

گجرات کو یہ کام ٹھوس روپ میں آگے بڑھانا ہو تو اب بڑی ضرورت اس سوال کے بارے میں ٹھنڈے دل سے وچار کرنے کا واتاورن پیدا کرنے کی ہے۔ تبھی

इसी तरह 'बिल्ली के गले में पहले घंटी कौन बांधे' वाली दशा देखने में आती है.

इस कथन में इतनी बात सच है कि माध्यम का विचार आल इंडिया भूमिका पर और उसके बुनियादी उसूलों को समझ कर किया जाये. इन असूलों में भारत का विधान, उसके अनुसार हमारा विकास और उसमें बताए गये सिद्धान्तों का उचित आदर खास बातें हैं. इसलिये जो भी यूनिवर्सिटी माध्यम बदलने का विचार करे, उसके लिये इन बातों का ध्यान रखना जरूरी माना जायेगा. इन बातों को सभी अपने सामने रख कर चलें तो आल इंडिया भूमिका की अपने आप रक्षा हो जाए. उसकी मर्यादा में रह कर सब अपने अपने खास विचारों पर अमल कर सकते हैं.

हम जानते हैं कि राधाकृश्नन कमीशन ने इस सम्बन्ध में कुल हिन्द भूमिका पर विचार किया है. और कांग्रेस की वर्किंग कमेटी ने देश के मौजूदा संजोगों और परिस्थितियों और विधान का ख्याल रख कर पिछले महीने इस बारे में जो प्रस्ताव पास किया, वह इस तरह की कुल हिन्द भूमिका तैयार करने में क़ीमती मार्ग दर्शन देने वाला कहा जायेगा. उसमें बताया गया है कि यूनिवर्सिटी की तालीम और माध्यम आम तरीक़े से प्रादेशिक भाषाएं (रीजनल भाषाएं) ही रहनी चाहिये, लेकिन उसके साथ ही कहा गया कि अन्तरप्रान्ती व्योहार के सम्बन्ध को ध्यान में रख कर हिन्दी का भी इस्तेमाल किया जा सकता है. यह भी कहा गया है कि माध्यम बदलने के बीच के समय में जरूरत के मुताबिक़ अंग्रेज़ी भी जारी रक्खी जा सकती है, ताकि तालीम के स्तर को नुक़सान न पहुंचे.

विधान को देखते हुए यह प्रस्ताव हर तरह से योग्य मालूम होता है. भारत की अन्तरभाशा (यानी अन्तरप्रान्ती व्योहार की भाशा) हिन्दी है, इस भाशा का भारत की सारी देशी या राष्ट्री भाशाओं की मदद से हमें विकास करना है. यह सब देशी भाशाएं कौन सी हैं, यह विधान की आठवीं सूची में बताया गया है. इन सब भाशाओं के विकास में अन्तरभाशा हिन्दी का विकास है. इन के बीच कोई प्रतियोगिता या होड़ नहीं है, और न हो सकती है. इस बात को कुछ ही दिन पहले हमारे राष्ट्रपति ने नागपुर में एक मौक़े पर बोलते हुए साफ़ शब्दों में समझाया कि :—

"हिन्दी अन्तरप्रान्ती व्यवहार के लिये राष्ट्र भाशा बनाई गई है, प्रदेशों की भाशाओं के विकास के रोकने के लिये नहीं है;.........भारत की एकता भाशाओं, पोशाक

اِس طرح 'بلی کے گلے میں پہلے گھنٹی کون باندھے' والی دشا دیکھنے میں آتی ہے۔

اِس کتھن میں اتنی بات سچ ہے کہ مادھیم کا وچار آل انڈیا بھومکا پر اور اُس کے بنیادی اصولوں کو سمجھکر کیا جائے۔ اِن اصولوں میں بھارت کا ودھان' اُس کے انوسار ہمارا وکاس اور اُس میں بتائے گئے سدھانتوں کا اُچت آدر خاص باتیں ہیں۔ اس لیئے جو بھی یونیورسٹی مادھیم بدلنے کا وچار کرے' اُس کے لیئے ان باتوں کا دھیان رکھنا ضروری مانا جائیگا۔ اِن باتوں کو سبھی اپنے سامنے رکھکر چلیں تو آل انڈیا بھومکا کی اپنے آپ رکشا ہوجائے۔ اُسکی مریادا میں رہ کر سب اپنے اپنے خاص وچاروں پر عمل کرسکتے ہیں۔

ہم جانتے ہیں کہ رادھا کرشنن کمیشن نے اِس سمبندھ میں کل ہند بھومکا پر وچار کیا ہے۔ اور کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے دیش کے موجودہ سنجوگوں اور پرستھتیوں اور ودھان کا خیال رکھکر پچھلے مہینے اِس بارے میں جو پرستاو پاس کیا' وہ اِس طرح کی کل ہند بھومکا تیار کرنے میں قیمتی مارگ درشن دینے والا کہا جائیگا۔ اُس میں بتایا گیا ہے کہ یونیورسٹی کی تعلیم اور مادھیم عام طریقے سے پرادیشک بھاشائیں (ریجنل بھاشائیں) ہی رہنی چاہیئے' لیکن اُس کے ساتھ ہی کہا گیا کہ انتر پرانتی بیوہار کے سمبندھ کو دھیان میں رکھکر ہندی کا بھی استعمال کیا جاسکتا ہے۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ مادھیم بدلنے کے بیچ کے سمے میں ضرورت کے مطابق انگریزی بھی جاری رکھی جاسکتی ہے' تاکہ تعلیم کے استر کو نقصان نہ پہونچے۔

ودھان کو دیکھتے ہوئے یہ پرستاو ہر طرح سے یوگیہ معلوم ہوتا ہے۔ بھارت کی انتر بھاشا (یعنی انتر پرانتی بیوہار کی بھاشا) ہندی ہے' اِس بھاشا کا بھارت کی ساری دیشی یا راشٹری بھاشاؤں کی مدد سے ہمیں وکاس کرنا ہے۔ یہ سب دیشی بھاشائیں کونسی ہیں' یہ ودھان کی آٹھویں سوچی میں بتایا گیا ہے۔ اِن سب بھاشاؤں کے وکاس میں انتر بھاشا ہندی کا وکاس ہے۔ اِن کے بیچ کوئی پرتی یوگتا یا ہوڑ نہیں ہے' اور نہ ہوسکتی ہے۔ اِس بات کو کچھ ہی دن پہلے ہمارے راشٹرپتی نے ناگپور میں ایک موقع پر بولتے ہوئے صاف شبدوں میں سمجھایا کہ :—

"ہندی انتر پرانتی ویوہار کے لئے راشٹر بھاشا بنائی گئی ہے' پردیشوں کی بھاشاؤں کے وکاس کے روکنے کے لئے نہیں ہے.....بھارت کی ایکتا بھاشاؤں' پوشاک

आया. गर्म और गीले कंकरों पर अपने पेट को टेक दिया. उसकी जीवन वृत्ति ने जो कभी धोका नहीं खाती बतलाया कि अब यहां से उठना असम्भव है. सिर घूमने लगा, भाव और विचार की शक्ति मद्धिम और धुंधली पड़ने लगी. दिल में सख़्त दर्द का आभास हुआ. आंखें दुख के अंगारों से चमकने लगीं. ऐंठन से हाथ पांव धीरे धीरे सुन्न होने लगे. ठन्डे पसीने में सारा बदन नहा गया. यह कैसी अनोखी ढंग की मधुर मनोरम ठंडक थी !

❀ ❀ ❀

शाम का समय था. तीन भूके कौवे "पात" के सिर पर उड़ रहे थे. उन्होंने दूर से "पात" की बास को सूंघा था. उनमें से एक संभल संभला कर उसके पास आकर बैठा और ग़ौर से देखने लगा. जब पता चला कि "पात" में कुछ जान अभी बाक़ी है तो फिर उड़ गया—यह तीन कौवे उसकी हरी आसमानी आंखें निकालने के लिये मंडला रहे थे.

—अनुवादक—डाक्टर ताराचन्द

آیا ۔ گرم اور گیلے کنکروں پر اپنے پیٹ کو ٹیک دیا ۔ اسکی جیون ورتی نے جو کبھی دھوکا نہیں کھاتی بتلایا کہ اب یہاں سے اٹھنا اسمبھو ھے۔ سر گھومنے لگا۔ بھاؤ اور وچار کی شکتی مدھم اور دھندلی پڑنے لگی۔ دل میں سخت درد کا آبھاس ہوا ۔ آنکھیں دکھ کے انگاروں سے چمکنے لگیں ۔ اینٹھن سے ہاتھ پاؤں دھیرے دھیرے سن ہونے لگے ۔ ٹھنڈے پسینے میں سارا بدن نہا گیا ۔ یہ کیسی انوکھی ڈھنگ کی مدھر منورم ٹھنڈک تھی !

❀ ❀ ❀

شام کا سمے تھا ۔ تین بھوکے کوے " پات " کے سر پر اڑ رہے تھے ۔ انہوں نے دور سے " پات " کی باس کو سونگھا تھا ۔ ان میں سے ایک سنبھل سنبھلا کر اس کے پاس آکر بیٹھا اور غور سے دیکھنے لگا جب پتہ چلا کہ " پات " میں کچھ جان ابھی باقی ھے تو پھر اڑ گیا—یہ تین کوے اسکی ہری آسمانی آنکھیں نکالنے کے لئے منڈلا رہے تھے ۔

—انوادک—ڈاکٹر تارا چند

ऊंची तालीम का माध्यम

(मगन भाई देसाई, सम्पादक 'हरिजन')

यह चीज़ अब धीरे धीरे साफ़ होती जा रही है कि भारत की यूनिवर्सिटियों में जो सुधार फ़ौरन होना चाहिये वह उनकी पढ़ाई और परीक्षा के माध्यम का है. लेकिन दुख की बात है कि इस सम्बन्ध में यूनिवर्सिटियां एक या दूसरे कारनों से ज़रूरी जागृति दिखा नहीं पातीं. इस विशय में एक यह बात कही जाती है कि सारी यूनिवर्सिटियों को आल इंडिया के स्तर पर विचार कर के एक साथ मिल कर काम करना चाहिये. ऊपर से देखने या सुनने में यह विचार मोहक और आकर्शक लगता है, लेकिन असली नज़र से देखा जाये तो इसमें और कुछ नहीं तो शिथलता ज़रूर मालूम होती है.

आज लगभग सारी यूनिवर्सिटियां अंग्रेज़ी माध्यम से अपना काम चलाती हैं. इस से जो आदत पड़ गई है, वह अनुदारता और दक़्यानूसीपन की तरफ़ ले जाती है. चूंकि नौकरियां अंग्रेज़ी के ज़रिये मिलती हैं, उसमें हेर फेर कब और कैसे होगा यह मालूम नहीं होता, इसलिये माध्यम बदलने में पहल करने का काम कठिन होता है. इसलिये अगर सब साथ में रहें तो कोई कठिनाई नहीं होगी.

اونچی تعلیم کا مادھیم

(مگن بھائی دیسائی، سمپادک 'ہریجن')

یہ چیز اب دھیرے دھیرے صاف ہوتی جا رہی ہے کہ بھارت کی یونیورسٹیوں میں جو سدھار فوراً ہونا چاہیئے وہ انکی پڑھائی اور پریکشا کے مادھیم کا ہے ۔ لیکن دکھ کی بات ہے کہ اس سمبندھ میں یونیورسٹیاں ایک یا دوسرے کارنوں سے ضروری جاگرتی دکھا نہیں پاتیں ۔ اس وشے میں ایک یہ بات کہی جاتی ہے کہ ساری یونیورسٹیوں کو آل انڈیا کے استر پر وچار کرکے ایک ساتھ ملکر کام کرنا چاہیئے ۔ اوپر سے دیکھنے یا سننے میں یہ وچار موہک اور آکرشک لگتا ہے، لیکن عملی نظر سے دیکھا جائے تو اس میں اور کچھ نہیں تو شتھلتا ضرور معلوم ہوتی ہے ۔

آج لگ بھگ ساری یونیورسٹیاں انگریزی مادھیم سے اپنا کام چلاتی ہیں ۔ اس سے جو عادت پڑگئی ہے، وہ انودارتا اور دقیانوسی پن کی طرف لے جاتی ہے چونکہ نوکریاں انگریزی کے ذریعے ملتی ہیں، اس میں ہیر پھیر کب اور کیسے ہوگا یہ معلوم نہیں ہوتا، اس لیئے مادھیم بدلنے میں پہل کرنے کا کام کٹھن ہوتا ہے۔ اس لیئے اگر سب ساتھ میں رہیں تو کوئی کٹھنائی نہیں ہوگی ۔

पहले जल्दी फिर आहिस्ता आहिस्ता "पात" खाता जाता था. उसकी भीरू आंखें जिनमें सुख भरा था अपनी कृतज्ञता दरशाने के लिये उसके चेहरे पर गड़ी थीं. उसकी दुम हिल रही थी. उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि जाग रहा है या स्वप्न देख रहा है. "पात" ने पेट भर कर खाना खाया. उसे खाने के बाद मार भी नहीं सहनी पड़ी. क्या ऐसा हो सकता था कि नया मालिक मिल गया हो?

हवा गर्म हो गई थी पर वह आदमी उठा और उसी मीनार वाले कूचे में आया. थोड़ी देर वहां ठहरा फिर कूचों के मोड़ों को तै करता हुआ आगे बढ़ा. "पात" भी उसके पीछे पीछे था. यहां तक कि दोनों आबादी से बाहर निकल गये और उसी खंडर में पहुंचे जहां कुछ दीवारें थीं. उसका मालिक भी यहां तक आया था. ऐसा तो नहीं कि यह लोग अपनी मादा की बू बास ढूंढने यहां आते हों? "पात" दीवार के साये में किनारे बैठ कर राह देखने लगा. वह आदमी दूसरे रास्ते से मैदान में लौटा.

उसने एक बार फिर "पात" के सिर पर हाथ फेरा. थोड़ी देर इधर उधर मैदान के चारों तरफ घूमा. फिर जाकर एक मोटर में जिसे "पात" पहचानता था बैठ गया. "पात" की हिम्मत नहीं थी कि मोटर पर चढ़ जाये. मोटर के पास बैठा उसकी तरफ देखता रहा.

फिर एक दम मोटर धूल मिट्टी उड़ाती चल पड़ी. "पात" ने भी मोटर के पीछे दौड़ना शुरू किया. नहीं, इस दफ़ा इस आदमी को हाथ से नहीं जाने देगा. हांपता जाता था, सारे बदन में दर्द का अनुभव कर रहा था. फिर भी उसने अपना सारा ज़ोर लगा दिया और मोटर के पीछे छलांगें मारते तेज़ी के साथ दौड़ता रहा. मोटर आबादी से दूर हो गई और जंगल में से गुज़रने लगी. "पात" दो तीन दफ़ा मोटर के बराबर आया लेकिन फिर पीछे रह गया. फिर अपना सारा बल इकट्ठा किया और निराश हो कर कूदा फांदा. पर क्या करता? मोटर उससे तेज़ चलती थी. उसे धोका था. वह नहीं जानता था कि दौड़ कर मोटर को नहीं पकड़ सकता. वह पर थकान का शिकार था, दिल कमज़ोर हो गया था. उसे एक बार जान पड़ा कि उसके सारे अंग उसकी आज्ञा से बाहर हो गए हैं और उसमें तनिक भी हरकत करने का बल नहीं रह गया है. उसका सारा जतन निरफल था. उसे भरम हुआ. वह क्यों दौड़ रहा है, कहां जाता है, न आगे चल सकता था न पीछे. वह खड़ा हो गया वह ज़ोर ज़ोर से सांस लेने लगा. जीभ मुंह से बाहर निकल आई, आंखों के सामने अंधेरा आ गया. सिर झुका मुशकिल से घिसट कर रास्ते के किनारे पहुंचा और खेत के किनारे पानी की नहर तक

پہلے جلدی جلدی پھر آہستہ آہستہ "پات" کھاتا جاتا تھا ۔ اسکی بھیرو آنکھوں جن میں سکھ بھرا تھا اپنی کرتگیتا درشانے کے لئے اس چہرے پر گڑی تھیں ۔ اسکی دم ہل رہی تھی ۔ اسکی سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ جاگ رہا ہے یا سپنا دیکھ رہا ہے ۔ "پات" نے پیٹ بھر کر کھانا کھایا ۔ اسے کھانے کے بعد مار بھی نہیں سہنی پڑی ۔ کیا ایسا ہو سکتا تھا کہ نیا مالک مل گیا ہو ؟

ہوا گرم ہو گئی تھی پر وہ آدمی اٹھا اور اسی مینار والے کوچے میں آیا ۔ تھوڑی دیر وہاں ٹھہرا پھر کوچوں کے موڑوں کو طے کرتا آگے بڑھا ۔ "پات" بھی اس کے پیچھے پیچھے تھا ۔ یہاں تک کہ دونوں آبادی سے باہر نکل گئے اور اسی کھنڈر میں پہونچے جہاں کچھ دیواریں تھیں ۔ اس کا مالک بھی یہاں تک آیا تھا ۔ ایسا تو نہیں کہ یہ لوگ اپنی مادہ کی بوباس ڈھونڈھنے یہاں آتے ہوں ؟ "پات" دیوار کے سایہ میں کنارے بیٹھکر راہ دیکھنے لگا ۔ وہ آدمی دوسرے راستہ سے میدان میں لوٹا ۔

اس نے ایک بار پھر "پات" کے سر پر ہاتھ پھیرا ۔ تھوڑی دیر اِدھر اُدھر میدان کے چاروں طرف گھوما ۔ پھر جا کر ایک موٹر میں جسے "پات" پہچانتا تھا بیٹھ گیا ۔ "پات" کی ہمت نہیں تھی کہ موٹر پر چڑھ جائے ۔ موٹر کے پاس بیٹھا اسکی طرف دیکھتا رہا ۔

پھر ایکدم موٹر دھول مٹی اڑاتی چل پڑی ۔ "پات" نے بھی موٹر کے پیچھے دوڑنا شروع کیا ۔ نہیں، اس دفعہ اس آدمی کو ہاتھ سے نہیں جانے دیگا ۔ ہانپتا جاتا تھا ۔ سارے بدن میں درد کا انوبھو کر رہا تھا ۔ پھر بھی اس نے اپنا سارا زور لگا دیا اور موٹر کے پیچھے چھلانگیں مارتے تیزی کے ساتھ دوڑتا رہا ۔ موٹر آبادی سے دور ہو گئی اور جنگل میں سے گذرنے لگی ۔ "پات" دو تین دفعہ موٹر کے برابر آیا لیکن پھر پیچھے رہ گیا ۔ پھر اپنا سارا بل اکٹھا کیا اور نراش ہو کر کودا پھاندا ۔ پر کیا کرتا ؟ موٹر اس سے تیز چلتی تھی ۔ اسے دھوکا تھا ۔ وہ نہیں جانتا تھا کہ دوڑ کر موٹر کو نہیں پکڑ سکتا ۔ اس پر تھکان کا شکار تھا، دل کمزور ہو گیا تھا ۔ اسے ایک بار جان پڑا کہ اس کے سارے انگ اسکی آگیاں سے باہر ہو گئے ہیں اور اس میں تنک بھی حرکت کرنے کا بل نہیں رہ گیا ہے ۔ اسکا سارا جتن نشپھل تھا ۔ اسے بھرم ہوا کہ وہ کیوں دوڑ رہا ہے، کہاں جاتا ہے، نہ آگے چل سکتا تھا نہ پیچھے ۔ وہ کھڑا ہو گیا اور زور زور سے سانس لینے لگا ۔ جیبھ منہ سے باہر نکل آئی، آنکھوں کے سامنے اندھیرا آ گیا ۔ سر جھکا مشکل سے گھسٹ کر راستہ کے کنارے پہونچا اور کھیت کے کنارے پانی کی نہر تک

लेकिन एक चीज़ जो "पात" के दिल को सबसे ज़्यादा मसोसती थी वह थी प्यार की लालसा. उसकी हालत उस बच्चे की सी थी जिसे सदा गाली और धुतकार सुननी पड़ती हो पर उसके हृदय के कोमल भाव अभी सूखे नहीं थे. ख़ास तौर पर इस नए दुख दर्द भरे सताए जीवन में उसे पहले से कहीं ज़्यादा प्यार की ज़रूरत महसूस होती थी. उसकी आंखें उस प्यार की भीक मांगती थीं और उसकी ख़ातिर वह अपनी जान भी देने को तैयार था. कहीं एक भी कोई ऐसा बिरला पुरुष मिल जाता जो प्रेम दिखाता और उसके सिर पर हाथ फेरता! उसका जी व्याकुल था कि किसी को अपने प्रेम का पात्र बनाए, उस पर जान न्योछावर करे, अपनी भक्ति और आराधना की सूचना दे. पर दिखाई ऐसा देता था कि किसी को उसके भावों की ज़रूरत नहीं थी. कोई उसकी हिमायत के लिये तैयार नहीं था. जिस आंख को देखता था उसमें सिवाय कीने और शरारत के कुछ न पाता था. उन आदमियों के ध्यान को अपनी तरफ़ फेरने की कुछ भी चेश्टा करता था तो ऐसा मालूम होता था कि उनके कोप और क्रोध को बढ़ा रहा है. "पात" उसी हालत में नाली में पड़ा ऊंघता रहा. फिर कई बार चिल्लाया और जागा. जान पड़ा जैसे उसने बुरे सपने देखे हों. फिर उसे भूक ने सताया. उसकी नाक में कबाब की बास आई. दुश्ट भूक की पीड़ा से अन्तड़ियां कुलबुलाने लगीं. फिर दूसरी सारी कमज़ोरियां और दर्द भूल सा गया. कश्ट कर के उठा और सावधानी से मैदान की तरफ़ चल पड़ा.

उसी वक़्त एक मोटर धड़धड़ाती धूल मिट्टी उड़ाती वरामिन के मैदान में आ पहुंची. एक आदमी उसमें से उतरा और "पात" की तरफ़ आया. उसने "पात" के सिर पर हाथ फेरा. पर यह उसका पुराना मालिक नहीं था. "पात" को धोका नहीं हुआ था क्योंकि वह अपने मालिक की गन्ध को ख़ूब पहचानता था. लेकिन यह क्या हुआ? ऐसा आदमी कहां से पैदा हो गया जिसने उसे प्यार किया? "पात" ने दुम हिलाई और हिचकिचाते हुए उसकी तरफ़ आंख उठाई. ऐसा नहीं कि धोका खाया हो? पर उसकी गरदन में पट्टा भी नहीं था फिर कैसे कोई प्यार कर सकता था. वह आदमी लौटा और उसने दोबारा सिर पर हाथ फेरा. 'पात" उसके पीछे हो लिया. उसका अचरज और बढ़ा. उसने उस आदमी को एक ऐसे घर में घुसते देखा जिसे वह अच्छी तरह पहचानता था. वहां से खानों की ख़ुशबू आ रही थी. "पात" दीवार के किनारे चौकी पर बैठ गया. उसके लिये गर्म रोटी, दही, अन्डा और खाने की चीज़ें आईं और वह आदमी रोटी के टुकड़ों को दही में भिगो कर उसके सामने डालने लगा. पहले

لیکن ایک چیز جو "پات" کے دل کو سب سے زیادہ مسوستی تھی وہ تھی پیار کی لالسا. اسکی حالت اس بچہ کی سی تھی جسے سدا گالی اور دھتکار سننی پڑتی ہو پر اس کے ہردے کے کومل بھاؤ ابھی سوکھے نہیں تھے. خاص طور پر اس نئے دکھ درد بھرے ستائے جیون میں اسے پہلے سے کہیں زیادہ پیار کی ضرورت محسوس ہوتی تھی. اسکی آنکھیں اس پیار کی بھیک مانگتی تھیں اور اسکی خاطر وہ اپنی جان بھی دینے کو تیار تھا. کہیں ایک بھی کوئی ایسا برلا پرش مل جاتا جو پریم دکھاتا اور اس کے سر پر ہاتھ پھیرتا! اس کا جی بیاکل تھا کہ کسی کو اپنے پریم کا پاتر بنائے' اس پر جان نیوچھاور کرے' اپنی بھگتی اور آرادھنا کی سوچنا دے. پر دکھائی ایسا دیتا تھا کہ کسی کو اس کے بھاؤں کی ضرورت نہیں تھی. کوئی اسکی حمایت کے لئے تیار نہیں تھا. جس آنکھ کو دیکھتا تھا اس میں سوائے کینہ اور شرارت کے کچھ نہ پاتا تھا. ان آدمیوں کے دھیان کو اپنی طرف پھیرنے کی کچھ بھی چیشٹا کرتا تھا تو ایسا معلوم ہوتا ان کے کوپ اور کرودھ کو بڑھا رہا ہے. "پات" اسی حالت میں نالی میں پڑا اونگھتا رہا. پھر کئی بار چلایا اور جاگا. جان پڑا جیسے اس نے برے سپنے دیکھے ہوں. پھر اسے بھوک نے ستایا. اسکی ناک میں کباب کی باس آئی. دشٹ بھوک کی پیڑا سے انتڑیاں کلبلانے لگیں. پھر دوسری ساری کمزوریاں اور درد بھول سا گیا. کشٹ کر کے اٹھا اور ساودھانی سے میدان کی طرف چل پڑا.

اسی وقت ایک موٹر دھڑ دھڑاتی دھول مٹی اڑاتی ورامین کے میدان میں آ پہونچی. ایک آدمی اس میں سے اترا اور "پات" کی طرف آیا. اس نے "پات" کے سر پر ہاتھ پھیرا. پر یہ اس کا پرانا مالک نہیں تھا. "پات" کو دھوکا نہیں ہوا تھا. کیونکہ وہ اپنے مالک کی گندھ کو خوب پہچانتا تھا. لیکن یہ کیا ہوا؟ ایسا آدمی کہاں سے پیدا ہو گیا جس نے اسے پیار کیا؟ "پات" دم ہلائی اور ہچکچاتے ہوئے اسکی طرف آنکھ اٹھائی. ایسا نہیں کہ دھوکا کھایا ہو؟ پر اسکی گردن میں پٹہ بھی نہیں تھا پھر کیسے کوئی پیار کر سکتا تھا. وہ آدمی لوٹا اور اس نے دوبارہ سر پر ہاتھ پھیرا. "پات" اس کے پیچھے ہو لیا. اسکا اچرج اور بڑھا. اس نے اس آدمی کو ایسے گھر میں گھستے دیکھا جسے وہ اچھی طرح پہچانتا تھا. وہاں سے کھانوں کی خوشبو آ رہی تھی. "پات" دیوار کے کنارے چوکی پر بیٹھ گیا. اس کے لئے گرم روٹی' دہی' انڈا اور کھانے کی چیزیں آئیں اور وہ آدمی روٹی کے ٹکڑوں کو دہی میں بھگو کر اس کے سامنے ڈالنے لگا. پہلے

दे तो धीरे धीरे वहां अपना अधिकार जमा ले. फिर शायद कोई आदमी जिस के पास खाना पीना हो उसकी रक्षा करे.

डरते कांपते, पर संभलते संभलते, नानबाई की दूकान पर पहुंचा. वह अभी खुली थी और पक्की ख़मीरी रोटी की तेज़ ख़ुशबू हवा में फैली थी. एक आदमी जिसके बग़ल में नान थी उससे बोला "इधर आ. इधर आ." उसकी आवाज़ कानों को बहुत अनोखी लगी. उसने एक टुकड़ा गर्म रोटी का सामने डाला. पहले तो "पात" ज़रा झिझका, फिर रोटी खाई और दुम हिलाई. उस आदमी ने नान को दूकान में चौकी पर रख दिया और सावधानी के साथ फिर कुछ डरते डरते एक हाथ "पात" के सर पर फेरा. फिर दोनों हाथों से उसकी गरदन में से रस्सी को खोल दिया. कैसा चैन पड़ा। ऐसा मालूम हुआ किसी ने सारे बोझ, बन्धन, फ़र्ज़, कन्धे पर से उठा लिए. पर जब दोबारा दुम को हिलाते दूकानदार के पास आया तो उसने इस ज़ोर से पहलू में लात लगाई कि चिल्लाते चीख़ते दूर हट गया. दूकानदार उठा और नहर से बहुत सा पानी ले कर रगड़ कर हाथ धोने लगा. रस्सी जो गरदन से खोली थी और जो दूकान के सामने लटकी थी उसकी निगाह में थी. उस दिन से "पात" वहां के आदमियों से रोज़ ठोकर खाता था और कन्कर पत्थरों की मार सहता था. ऐसा मालूम होता था कि सभी उसके लहू के प्यासे हैं और उसके सताने में ख़ास मज़ा लेते हैं.

"पात" को अब मालूम हुआ कि एक नई दुनिया में आ पहुंचा है जिसको न ख़ुद ही पहचानता है और न कोई और ही उसकी प्रकृति और भाव से जानकारी रखता है. पहले पहल तो कुछ दिन बड़े कष्ट से बिताए. लेकिन फिर धीरे धीरे आदत हो गई. कूचे के कोनों और मोड़ों को तो पहले ही जान गया था. दाहने हाथ पर एक जगह का पता मिल गया जहां भंगी अपनी टोकरी और कूड़ा करकट गिराता था. इस ढेर में से उसे मज़ेदार टुकड़े जैसे हड्डी, चरबी, चमड़ा, मछली का सिर और बहुत सी खाने की चीज़ें जिन्हें ठीक ठीक नहीं पहचानता था मिल जाती थीं. बाक़ी सारा दिन क़साई और नानबाई की दूकान के सामने काटता था. आंखें क़साई के हाथ पर जमाए रखता था लेकिन बहुत दफ़ा मज़ेदार टुकड़ों की जगह लात घूंसा खाता था. पर अब इस तरह के जीवन का अभ्यास हो गया था. पुराने जीवन की बातें बहुत कुछ याद से मिट चुकी थीं और मध्यम पड़ गई थीं पर ज़ेहन में कुछ उनकी बू बास बाक़ी थी. जब कभी बहुत कष्ट झेलना पड़ता तो उस भूले बैकुन्ठ की याद ही उसको आसरा बंधाती. उस समय स्मृतियों का समूह उसकी आंखों के सामने मूर्ति बन कर आ खड़ा होता था.

دے تو دھیرے دھیرے یہاں اپنا ادھیکار جما لے۔ پھر شاید کوئی آدمی جس کے پاس کھانا پینا ہو اسکی رکشا کرے ۔

ڈرتے کانپتے، پر سانبھلتے سنبھلتے، نانبائی کی دوکان کے سامنے پہونچا ۔ یہ ابھی کھلی تھی اور پکی خمیری روٹی کی تیز خوشبو ہوا میں پھیلی تھی ۔ ایک آدمی جسکی بغل میں نان تھی اس سے بولا "اِدھر آ اِدھر آ"۔ اسکی آواز کانوں کو بہت انوکھی لگی ۔ اس نے ایک ٹکڑا گرم روٹی کا سامنے ڈالا ۔ پہلے تو "پات" ذرا جھجھکا، پھر روٹی کھائی اور دم ہلائی ۔ اس آدمی نے نان کو دوکان میں چوکی پر رکھدیا اور ساودھانی کے ساتھ پر کچھ ڈرتے ڈرتے ایک ہاتھ "پات" کے سر پر پھیرا ۔ پھر دونوں ہاتھوں سے اسکی گردن میں سے رسی کو کھول دیا ۔ کیسا چین پڑا ! ایسا معلوم ہوا کسی نے سارے بوجھ، بندھن، فرض، کندھے پر سے اٹھا لئے ۔ پر جب دوبارہ دم کو ہلاتے دوکاندار کے پاس آیا تو اس نے اس زور سے پہلو میں لات لگائی کہ چلاتے چیختے دور ہٹ گیا ۔ دوکاندار اٹھا اور نہر سے بہت سا پانی لیکر رگڑکر ہاتھ دھونے لگا ۔ رسی جو گردن سے کھولی تھی اور جو دوکان کے سامنے لٹکی تھی اسکی نگاہ میں تھی ۔ اس دن سے "پات" وہاں کے آدمیوں سے روز ٹھوکریں کھاتا تھا اور کنکر پتھروں کی مار سہتا تھا ۔ ایسا معلوم ہوتا تھا کہ سبھی اس کے لہو کے پیاسے ہیں اور اس کے ستانے میں خاص مزہ لیتے ہیں ۔

"پات" کو اب معلوم ہوا کہ ایک نئی دنیا میں آپہونچا ہے جسکو نہ خود ہی پہچانتا ہے اور نہ کوئی ہی اسکی پرکرتی اور بھاؤ سے جانکاری رکھتا ہے ۔ پہلے پہل تو کچھ دن بڑے کشٹ سے بتائے ۔ لیکن پھر دھیرے دھیرے عادت ہوگئی ۔ کوچہ کے کونوں اور موڑوں کو تو پہلے ہی جان گیا تھا ۔ داہنے ہاتھ پر ایک جگہ کا پتہ مل گیا جہاں بھنگی اپنی ٹوکری اور کوڑا کرکٹ گراتا تھا ۔ اس ڈھیر میں سے اسے مزیدار ٹکڑے جیسے ہڈی، چربی، چمڑا، مچھلی کا سر اور بہت سی کھانے کی چیزیں جنھیں ٹھیک ٹھیک نہیں پہچانتا تھا مل جاتی تھیں۔ باقی سارا دن قصائی اور نانبائی کی دوکان کے سامنے کاٹتا تھا ۔ آنکھیں قصائی کے ہاتھ پر جمائے رکھتا تھا لیکن بہت دفعہ مزیدار ٹکڑوں کی جگہ لات گھونسہ کھاتا تھا ۔ پر اب اسطرح کے جیون کا ابھیاس ہوگیا تھا ۔ پرانے جیون کی باتیں بہت کچھ یاد سے مٹ چکی تھیں اور مدھم پڑگئی تھیں پر ذہن میں کچھ انکی بوباس باقی تھی ۔ جب کبھی بہت کشٹ جھیلنا پڑتا تو اس بھولے بیکنٹھ کی یاد ہی اسکو آسرا بندھاتی ۔ اس سمے اسمرتیوں کا سموہ اسکی آنکھوں کے سامنے مورتی بنکر آ کھڑا ہوتا تھا ۔

कर रहा था कि उसके कान बाहरी दुनिया की आवाजों की तरफ से भारी और बन्द हो गए हों. उसमें तेज भाव जाग उठे थे. मादा की बू बास इतनी तेज और प्रबल थी कि उसका सिर घूमने लगा था.

उसके बदन के सारे रग पट्ठे, उसकी सारी इन्द्रयां उसके बूते से बाहर थीं. ऐसा मालूम होता था कि उसे अपने ऊपर तनिक भी अधिकार नहीं था पर थोड़ी ही देर में लोग लाठी और बेलचे लिये उसके पीछे पड़ गए और उसे नाली में से बाहर निकाल दिया.

"पात" थका मांदा घबराया पर हलका और शान्त जैसे ही अपने आपे में आया अपने मालिक की खोज में चल पड़ा. किसी किसी कूचे में उसकी हलकी हलकी गन्ध रह गई थी. उसने उन सबको नरीक्षन किया और थोड़े थोड़े फ़ासले पर अपनी निशानी छोड़ी. पर आखिर खंडर में आबादी से बाहर पहुंच गया. "पात" फिर लौटा. ऐसा पता लगा कि मालिक मैदान वापस चला गया. पर वहां पहुंचा तो गन्ध बहुत मन्द हो गई और अनेक दूसरी महकों में मिल कर गुम हो गई. जी में धकधकाहट और भय पैदा होने लगा. मालिक चला गया, क्या उसे यहीं छोड़ गया ? पात कैसे बिना मालिक के, बिना रखवाले के रहेगा ? मालिक तो उसके लिए ईश्वर समान था........ इस बात का भी सन्तोश था कि मालिक उसकी खोज में आएगा. यही सोच कर व्याकुल इधर उधर सड़कों पर दौड़ने लगा पर सारी मेहनत अकारथ गई.

आखिर रात हो गई. थका मांदा फिर मैदान में लौट आया. वहां मालिक का कोई निशान नहीं था. आबादी के चारों तरफ़ कई बार उसने चक्कर लगाया. इसके बाद उस नाली की तरफ़ चला जहां मादा मिली थी पर अब नाली का मुंह पत्थरों से बन्द था. उसने बड़ी घमा घमी से पंजों से ज़मीन को खोदना शुरू किया कि शायद बाग़ के अन्दर दाखिल हो सके पर असम्भव था. हताश हो वहीं औंघने लगा.

आधी रात "पात" को अपने कराहने की आवाज़ ने नींद से चौंका दिया. घबरा कर उठ खड़ा हुआ. गली कूचों में टहलने लगा. दीवारों की बास सूंघते घंटों इधर उधर सिर मारता फिरा. आखिर को सख्त भूक ने सताया. मैदान में लौटा तो तरह तरह के खानों की सुगन्ध नाक में पहुंची: रात के रक्खे हुए गोश्त की, ताज़ी रोटी की. पर सब मिली जुली थीं. "पात" ऐसा अनुभव कर रहा था जैसे कोई अपराधी हो और किसी दूसरे देश में से आ गया हो. इसलिये सोचता था कि उन आदमियों से जो देखने में मालिक के रूप रंग के थे भीक मांगे और अगर कोई दूसरा कुत्ता मुक़ाबले में आकर उसे भगा न

کر رہا تھا کہ اُس کے کان باھری دنیا کی آوازوں کی طرف سے بھاری اور بند ہو گئے ھوں . اسمیں تیز بھاؤ جاگ اُٹھے تھے . مادہ کی بوباس اتنی تیز اور پربل تھی کہ اسکا سر گھومنے لگا تھا .

اس کے بدن کے سارے رگ پٹھے' اسکی ساری اندریاں اس کے بوتے سے باھر تھیں. ایسا معلوم ھوتا تھا کہ اسے اپنے اوپر تنک بھی ادھیکار نہیں تھا . پر تھوڑی ھی دیر میں لوگ لاٹھی اور بیلچے لئے اس کے پیچھے پڑ گئے اور اُسے نالی میں سے باھر نکال دیا .

" پات " تھکا ماندا گھبرایا پر ھلکا اور شانت جیسے ھی اپنے آپے میں آیا اپنے مالک کی کھوج میں چل پڑا . کسی کسی کوچہ میں اس کی ھلکی ھلکی گندھ رہ گئی تھی . اس نے ان سب کا نریکشن کیا اور تھوڑے تھوڑے فاصلہ پر اپنی نشانی چھوڑی، پر آخر کھنڈر میں آبادی سے باھر پہونچ گیا . "پات" پھر لوٹا . ایسا پتہ لگا کہ مالک میدان واپس چلا گیا پر وھاں پہونچا تو گندھ بہت مند ھوگئی اور انیک دوسری مہکوں میں ملکر گم ھوگئی . جی میں دھکدھکاھٹ اور بھے پیدا ھونے لگا . مالک چلا گیا' کیا اسے یہیں چھوڑ گیا ؟ پات کیسے بنا مالک کے؟ رکھوالے کے رھیگا ؟ مالک تو اس کےلیئے ایشور سمان تھا......اس بات کا بھی سنتوش تھا کہ مالک اسکی کھوج میں آئیگا . یہی سوچکر بیاکل إدھر اُدھر سڑکوں پر دوڑنے لگا . پر ساری محنت اکارت گئی .

آخر رات ھوگئی . تھکا ماندا پھر میدان میں لوٹ آیا . وھاں مالک کا کوئی نشان نہیں تھا . آبادی کے چاروں طرف کئی بار اُس نے چکر لگایا . اس کے بعد اس نالی کی طرف چلا جہاں مادہ ملی تھی پر اب نالی کا منہ پتھروں سے بند تھا . اس نے بڑی گھما گھمی سے پنجوں سے زمین کو کھودنا شروع کیا کہ شاید باغ کے اندر داخل ھوسکے پر اسمبھو تھا . ھتاش ھو وھیں اونگھنے لگا .

آدھی رات "پات" کو اپنے کراھنے کی آواز نے نیند سے چونکا دیا . گھبرا کر اٹھ کھڑا ھوا . گلی کوچوں میں ٹہلنے لگا . دیواروں کی باس سونگھتے گھنٹوں اِدھر اُدھر سرمارتا پھرا . آخر کو سخت بھوک نے ستایا . میدان میں لوٹا تو طرح طرح کے کھانوں کی سگندھ ناک میں پہونچی : رات کے رکھے ھوئے گوشت کی' تازہ روٹی کی . پر سب ملی جلی تھیں . "پات" ایسا انوبھو کر رھا تھا جیسے کوئی اپرادھی ھو اور کسی دوسرے دیش میں آگیا ھو . اس لیئے سوچتا تھا کہ ان آدمیوں سے جو دیکھنے میں مالک کے روپ رنگ کے تھے بھیک مانگے اور اگر کوئی دوسرا کتا مقابلہ میں آکر اسے بھگا نہ

उसके पीछे भागता था, खिलवाड़ करता था, उसके कपड़ों को दांत से पकड़ता था. कभी भी कैसे भूल सकता था उन सब प्यार की बातों को, मीठे मीठे खानों को जो मालिक के हाथों से मिलते थे. पर मालिक के बच्चे से अधिक प्रेम था क्योंकि वह तो खेल का साथी था और कभी उस पर हाथ नहीं उठाता था.

कुछ दिन पीछे उसकी मां और भाई गुम हो गये, केवल मालिक और उसका बच्चा, मालिक की पत्नी और एक बूढ़ा नौकर रह गये. उसको उन सब की गन्ध ख़ूब अच्छी तरह से मालूम थी. उनके पांव की चाल को दूर से पहचान लेता था. सवेरे और शाम खाने की मेज़ के चारों तरफ़ घूमता रहता था और खानों की सुगन्ध को सूंघता था. कभी मालिक की पत्नी पति के मना करने पर भी बड़े प्रेम से रोटी का कौर दे देती थी. फिर बूढ़ा नौकर आता था, उसे बुलाता था "पात, पात" और लकड़ी के कटहरे के पास एक बर्तन में रातिब डाल देता था.

"पात" की मस्ती ही उसकी दुर्गत का कारन बनी. मालिक का हुक्म था कि "पात" घर से बाहर न जाने पाये और कुत्ते कुतियों के पीछे न फिरे पर भावी बलवान है. एक दिन पतझड़ के दिनों में मालिक दो आदमियों के साथ जिन्हें "पात" पहचानता था और जो पहले भी मालिक के घर आए थे मोटर में बैठा. मालिक ने "पात" को आवाज़ दी और मोटर में अपने पहलू में बिठा लिया. "पात" तो कितनी बार मालिक के साथ मोटर में सैर कर चुका था पर इस दिन उस पर कुछ मस्ती ऐसी छाई थी कि दिल में ख़ासा कोलाहल मचा हुआ था. कुछ घन्टे चलने के बाद मोटर उसी मैदान में ठहरी और सब उतर पड़े. मालिक और वह दोनों आदमी उस कूचे से जो मीनार के पास से निकलता है चल दिये पर उसी वक़्त एक मादा की गन्ध उसकी नाक तक पहुंची. "पात" अपनी ज़ात के जानवर की बू की तलाश में था ही. उसको पाते ही पागल हो गया. बू कभी निकट से कभी दूर से आती थी. अन्त में वह नाली में से एक बाग़ के अन्दर पहुंच गया. सांझ का समय निकट हुआ और उसके कान में दो मरतबता मालिक की आवाज़ सुनाई दी "पात" "पात" पर समझ में नहीं आया कि सचमुच मालिक की आवाज़ थी या आवाज़ की गूंज उसके कान में घूम रही थी.

मालिक की आवाज़ साधारन रूप में सदा उसके दिल पर अजीब असर करती थी. क्योंकि उसे याद दिलाती थी कि वह मालिक का आभारी है और कुछ कर्तव्य हैं, प्रतिज्ञाएं हैं जिन से वह बंधा है. पर एक शक्ति जो बाहरी जगत की सब शक्तियों से ऊपर थी प्रेरणा कर रही थी कि इस मादा के साथ रहे. ऐसा अनुभव

اس کے پیچھے بھاگتا تھا، کھلواڑ کرتا تھا۔ اس کے کپڑوں کو دانت سے پکڑتا تھا۔ کبھی بھی کیسے بھول سکتا تھا ان سب پیار کی باتوں کو، میٹھے میٹھے کھانوں کو جو مالک کے ہاتھوں سے ملتے تھے۔ پر مالک کے بچے سے ادھک پریم تھا۔ کیونکہ وہ تو کھیل کا ساتھی تھا اور کبھی اس پر ہاتھ نہیں اٹھاتا تھا۔

کچھ دن پیچھے اسکی ماں اور بھائی گم ہو گئے، کیول مالک اور اسکا بچہ، مالک کی پتنی اور ایک بوڑھا نوکر رہ گئے۔ اسکو ان سب کی گندھ خوب اچھی طرح سے معلوم تھی۔ ان کے پاؤں کی چال کو دور سے پہچان لیتا تھا۔ سویرے اور شام کھانے کی میز کے چاروں طرف گھومتا رہتا تھا اور کھانوں کی سگندھ کو سونگھتا تھا۔ کبھی مالک کی پتنی پتی کے منع کرنے پر بھی بڑے پریم سے روٹی کا کور دے دیتی تھی۔ پھر بوڑھا نوکر آتا تھا، اسے بلاتا تھا "پات، پات" اور لکڑی کے کٹہرے کے پاس ایک برتن میں راتب ڈال دیتا تھا۔

"پات" کی مستی ہی اسکی درگت کا کارن بنی۔ مالک کا حکم تھا کہ "پات" گھر سے باہر نہ جانے پائے اور کتے کتیوں کے پیچھے نہ پھرے پر بھاوی بلوان ہے۔ ایک دن پت جھڑ کے دنوں میں مالک دو آدمیوں کے ساتھ جنہیں "پات" پہچانتا تھا اور جو پہلے بھی مالک کے گھر آئے تھے موٹر میں بیٹھا۔ مالک نے "پات" کو آواز دی اور موٹر میں اپنے پہلو میں بٹھا لیا۔ "پات" تو کتنی بار مالک کے ساتھ موٹر میں سیر کر چکا تھا پر اس دن اس پر کچھ مستی ایسی چھائی تھی کہ دل میں خاصا کولاہل مچا ہوا تھا۔ کچھ گھنٹے چلنے کے بعد موٹر اسی میدان میں ٹھہری اور سب اتر پڑے۔ مالک اور وہ دونوں آدمی اس کوچہ سے جو مینار کے پاس سے نکلتا ہے چل دیئے۔ پر اسی وقت ایک مادہ کی گندھ اسکی ناک تک پہونچی۔ "پات" اپنی ذات کے جانور کی بو کی تلاش میں تھا ہی۔ اسکو پاتے ہی پاگل ہو گیا۔ بو کبھی نکٹ سے کبھی دور سے آتی تھی۔ انت میں وہ نالی میں سے ایک باغ کے اندر پہونچ گیا۔ سانجھ کا سمے نکٹ ہوا اور اس کے کان میں دو مرتبہ مالک کی آواز سنائی دی "پات، پات"۔ پر سمجھ میں نہیں آیا کہ سچ مچ مالک کی آواز تھی یا آواز کی گونج اس کے کان میں گھوم رہی تھی۔

مالک کی آواز سادھارن روپ میں سدا اس کے دل پر عجیب اثر کرتی تھی کیونکہ اسے یاد دلاتی تھی کہ وہ مالک کا آبھاری ہے اور کچھ کرتب ہیں، کچھ پرتگیائیں ہیں جن سے وہ بندھا ہے۔ پر ایک شکتی جو باہری جگت کی سب شکتیوں سے اوپر تھی پریرنا کر رہی تھی کہ اس مادہ کے ساتھ رہے۔ ایسا انوبھو

थी, इतना भी हौसला नहीं था कि किलेलें पड़ गई थीं उन्हें पकड़े या अपनी जीभ से साफ़ कर दे. ऐसा अनुभव करने लगा था कि वह भी कूड़े के ढेर का अंग है. जैसे उस की जान में से कुछ निकल गया हो, कुछ मर गया हो.

जब से इस नरक कुन्ड में आकर पड़ा था दो सर्दी के मौसम बीत चुके थे पर एक दिन भी पेट भर कर खाना नहीं मिला था, एक रात भी चैन से नहीं सोया था. सारे भाव शिथिल थे, सारी इन्द्रियां थक चुकी थीं. एक आदमी भी ऐसा नहीं मिला जो प्यार से उसके सिर को थपथपाता. किसी ने उसकी आंखों से आंखें नहीं मिलाई थीं. इस देश के आदमी रूप में तो मालिक से मिलते थे पर यह साफ़ था कि उनके और मालिक के भाव और आचार विचार में धरती आकाश का अन्तर है. ऐसा लगता था कि वह आदमी जिनके साथ वह पहले रहा करता था उसकी दुनिया से अधिक निकट थे, उसके दुख दर्द को समझते थे और उसकी रक्षा करते थे. यहां जिन बर्तनों को वह सूंघता था उनमें सब से ज़्यादा व्याकुल करने वाली उस खीर की महक थी जिसे बच्चे के सामने रखते थे. यह सफ़ेद तरल उसकी मां के दूध से कितना मिलता जुलता था. उसके दिल में बचपन की सारी याद ला कर सामने खड़ी कर देता था. अचानक उस पर मूर्छा की दशा छा जाती. ऐसा मालूम होता कि वह कि वही बच्चा है और मा की छातियों से गरम गरम तरल भोजन चूस रहा है. मां की नर्म ठोस जीभ उसके बदन को चाट कर साफ़ कर रही है. वही तेज़ बू जो मां की गोद में और बहन भाइयों की नज़दीकी में सूंघता था, वही तेज़ और भारी बू जो उसकी मां के बदन और दूध में से आती थी उसकी नाक में जिन्दा हो जाती थी.

ज्यों ही दूध पी कर पेट भर जाता, बदन में गरमाहट आती थी और चैन पड़ जाता था. सारी रगों और नाड़ियों में संजीवन रस फैल जाता था. उस का भारी सिर मां की छाती से अलग हो जाता था. वह गहरी नींद में डूब जाता था. उसके सारे बदन में आनन्द की लहर दौड़ जाती थी. इससे बढ़ कर और क्या सुख हो सकता था कि केवल अपने पंजों से मां की छातियों को दबाए और बिना कष्ट उठाए परिश्रम किये दूध निकल आए, भाई का नर्म रोएंदार बदन, मां की पुकार यह सब उसके लिए आनन्द और प्रेम से भरपूर थे. लकड़ी के कटहरे को देख सब पुरानी बातें याद आने लगतीं—इस हरयाले बाग़ में भाइयों के साथ खेल कूद की बातें, उसके टोंटी जैसे कानों को दांतों में दबाना, ज़मीन में लोट जाना फिर उठना और दौड़ लगाना. उनके सिवाय एक और साथी भी था. वह था मालिक का लड़का. नीचे वाले बाग़ में

تھی. اتنا بھی حوصلہ نہیں تھا کہ کلیلیں پڑ گئی تھیں انہیں پکڑے یا اپنی جیبھ سے صاف کر دے . ایسا انوبھو کرنے لگا تھا کہ وہ بھی کوڑے کے ڈھیر کا انگ ہے . جیسے اسکی جان میں سے کچھ نکل گیا ہو' کچھ مر گیا ہو .

جب سے اس نرک کنڈ میں آ کر پڑا تھا دو سردی کے موسم بیت چکے تھے پر ایک دن بھی پیٹ بھر کر کھانا نہیں ملا تھا' ایک رات بھی چین سے نہیں سویا تھا . سارے بھاو شتھل تھے' ساری اندریاں تھک چکی تھیں . ایک آدمی بھی ایسا نہیں ملا جو پیار سے اس کے سر کو تھپتھپاتا . کسی نے اسکی آنکھوں سے آنکھیں نہیں ملائی تھیں . اس دیش کے آدمی روپ میں تو مالک سے ملتے تھے پر یہ صاف تھا کہ ان کے اور مالک کے بھاو اور آچار وچار میں دھرتی آکاش کا انتر ہے . ایسا لگتا تھا کہ وہ آدمی جن کے ساتھ وہ پہلے رہا کرتا تھا اسکی دنیا سے ادھک نکٹ تھے' اس کے دکھ درد کو سمجھتے تھے اور اسکی رکھشا کرتے تھے. یہاں جن برتنوں کو وہ سونگھتا تھا ان میں سب سے زیادہ بیاکل کرنے والی اس کھیر کی مہک تھی جسے بچے کے سامنے رکھتے تھے . یہ سفید ترل اسکی ماں کے دودھ سے کتنا ملتا جلتا تھا . اس کے دل میں بچپن کی ساری یاد لا کر سامنے کھڑی کر دیتا تھا . اچانک اس پر مورچھا کی دشا چھا جاتی . ایسا معلوم ہوتا کہ وہ پھر وہی بچہ ہے اور ماں کی چھاتیوں سے گرم گرم ترل بھوجن چوس رہا ہے . ماں کی نرم ٹھوس جیبھ اس کے بدن کو چاٹ کر صاف کر رہی ہے . وہی تیز بو جو ماں کی گودی میں اور بہن بھائیوں کی نزدیکی میں سونگھتا تھا' وہی تیز اور بھاری بو جو اسکی ماں کے بدن اور دودھ میں سے آتی تھی اسکی ناک میں زندہ ہو جاتی تھی .

جیوں ہی دودھ پی کر پیٹ بھر جاتا' بدن میں گرماہٹ آتی تھی اور چین پڑ جاتا تھا . ساری رگوں اور ناڑیوں میں سنجیون رس پھیل جاتا تھا . اسکا بھاری سر ماں کی چھاتی سے الگ ہو جاتا تھا . وہ گہری نیند میں ڈوب جاتا تھا. اس کے سارے بدن میں آنند کی لہر دوڑ جاتی تھی . اس سے بڑھکر اور کیا سکھ ہوسکتا تھا کہ بے بس اپنے پنجوں سے ماں کی چھاتیوں کو دبائے اور بنا کشٹ اٹھائے یا پریشرم کیئے دودھ نکل آئے . بھائی کا نرم رویں دار بدن' ماں کی پکار یہ سب اس کے لئے آنند اور پریم سے بھرپور تھے . لکڑی کے کٹھرے کو دیکھ سب پرانی باتیں یاد آنے لگتیں—اس ہریالے باغ میں بھائیوں کے ساتھ کھیل کود کی باتیں' اس کے ٹونٹی جیسے کانوں کو دانتوں میں دبانا' زمین میں لوٹ جانا پھر اٹھنا اور دوڑ لگانا . ان کے سوائے ایک اور ساتھی بھی تھا . وہ تھا مالک کا لڑکا . نیچے والے باغ میں

अन्तर जाते हैं फिर क्यों न उसे जला फूंक कर सहज में ही पुन कमाएं. अन्त में खीर बेचने वाले का लड़का उसके ऐसा पीछे पड़ा कि बेचारा जानवर मीनार की तरफ़ जो कूचा जाता था उसी में भाग गया. पेट भूख से अन्दर धंसा था, पर क्या करता. कष्ट सह कीचड़ वाली नाली में जाकर शरन लेनी पड़ी. दोनों पंजों पर सिर रख कर बैठ गया. ज़बान मुंह से बाहर निकाले आधा सोता आधा जागता मैदान की हरयाली को जो उसके सामने लहरें ले रही थी देखने लगा. बदन टूट रहा था और सारी नसों में दर्द था पर नाली की ठंडी हवा में सिर से पैर तक चैन पड़ने लगा. फिर तरह तरह की बूएं दिमाग़ में आने लगीं—सड़ती हरयाली की बू, पुरानी जूती की बू जो पानी में भीग रही थी, मुर्दा जानवर और दूसरी चीज़ों की बू—और उन्होंने पुरानी भूली भटकी स्मृतियों को फिर से जगा दिया. हरयाले मैदान को देख देख उसकी सहज प्रवृति जागने लगीं और पिछले संस्कार दोबारा मन में उभरने लगे. इस दफ़ा चेतना ऐसी बलवान थी जैसे कोई आवाज़ उसके कान में गूंजती हो और उसे भागने दौड़ने, उछलने कूदने, के लिए ललकारती हो. उसके दिल में गहरी अभिलाषा जागृत हुई कि वह उस हरयाले मैदान में दौड़ लगाए और छलांगें मारे. यह भाव तो उसे परम्परा से मिला था. उसके सभी पुरखा स्काटलैंड के हरे भरे मैदानों में आज़ाद जीवन बिताते थे पर उसका बदन ऐसा टूटा था कि उसे तनिक भी हिलने डुलने की आज्ञा नहीं देता था. वह दुख और कमज़ोरी के अनुभव में लीन हो गया पर कुछ देर में फिर एकदम भूले खोए भाव चमक उठे, एक समय वह था जब कितनी आवश्यकताएं थीं, कितने बन्धन थे उसका फ़र्ज़ था मालिक की आवाज़ पर हाज़िर हो जाए, अगर कोई अनजान आदमी या बाहरी कुत्ता आये तो उसे मालिक के घर से निकाल दे, मालिक के बच्चे के साथ खेले. जाने पहचाने आदमियों के साथ ऐसा बरताव करे, जिनसे परिचय नहीं उनके साथ वैसा व्योहार करे, वक़्त से खाना खाये, वक़्त से मालिक की पुचकार प्यार की आशा करे. पर अब उसकी गरदन से यह सब बन्धन टूट चुके थे.

उसका सारा ध्यान इसमें लगा था कि किस तरह डरते कांपते भंगी की टोकरी में से एक टुकड़ा रोटी का निकाल ले और सारे दिन ठोकरें खाए और दर्द से चिल्लाए. यही तो अब बचाव का एक वसीला रह गया था. पहले तो वह बहादुर और निडर था, साफ़ सुथरा था पर अब डरपोक और काहिल हो गया था. कोई आवाज़ सुनी या कोई चीज़ उसके पास हिली डुली तो उसका बदन थरथरा जाता था. यहां तक कि वह अपनी आवाज़ से घबराने लगा था. गन्दगी और कूड़े का आदी हो गया था. बदन में खुजली

سکر جاتیں ہیں پھر کیوں نہ اسے جلا پھونک کر سہج میں ہی پن کمائیں ۔ انت میں کھیر بیچنے والے کا لڑکا اس کے ایسا پیچھے پڑا کہ بیچارہ جانور مینار کی طرف جو کوچہ جاتا تھا اسی میں بھاگ گیا ۔ پیٹ بھوک سے اندر دھنسا تھا، پر کیا کرتا ۔ کشٹ سہ کیچڑ والی نالی میں جاکر شرن لینی پڑی ۔ دونوں پنجوں پر سر رکھکر بیٹھ گیا ۔ زبان منہ سے باہر نکالے آدھا سوتا آدھا جاگتا میدان کی ہریالی کو جو اس کے سامنے لہریں لے رہی تھی دیکھنے لگا ۔ بدن ٹوٹ رہا تھا اور ساری نسوں میں درد تھا ۔ پر نالی کی ٹھنڈی ہوا میں سر سے پیر تک چین پڑنے لگا ۔ پھر طرح طرح کی بوئیں دماغ میں آنے لگیں—سڑتی ہریالی کی بو، پرانی جوتی کی بو جو پانی میں بھیگ رہی تھی، مردہ جانور اور دوسری چیزوں کی بو—اور انہوں نے پرانی بھولی بھٹکی اسمرتیوں کو پھر سے جگا دیا ۔ ہریالے میدان کو دیکھ دیکھ اسکی سہج پرورتی جاگنے لگیں اور پچھلے سنسکار دوبارہ من میں ابھرنے لگے ۔ اس دفعہ چیتنا ایسی بلوان تھی جیسے کوئی آواز اس کے کان میں گونجتی ہو اور اسے بھاگنے دوڑنے، اچھلنے کودنے کے لیئے للکارتی ہو ۔ اس کے دل میں گہری ابھلاشا جاگرت ہوئی کہ وہ اس ہریالے میدان میں دوڑ لگائے اور چھلانگیں مارے ۔ یہ بھاؤ تو اسے پرمپرا سے ملا تھا ۔ اس کے سبھی پرکھا اسکاٹلینڈ میں ہرے بھرے میدانوں میں آزاد جیون بتاتے تھے پر اس کا بدن ایسا ٹوٹا تھا کہ اسے تنک بھی ہلنے ڈولنے کی آگیا نہیں دیتا تھا ۔ وہ دکھ اور کمزوری کے انوبھو میں لین ہو گیا پر کچھ دیر میں پھر ایکدم بھولے کھوئے بھاؤ چمک اٹھے ۔ ایک سمے وہ تھا جب کتنی آوشیکتائیں تھیں، کتنے بندھن تھے ۔ اس کا فرض تھا مالک کی آواز پر حاضر ہوجائے، اگر کوئی انجان آدمی یا باہری کتا آئے تو اسے مالک کے گھر سے نکال دے، مالک کے بچے کے ساتھ کھیلے، جانے پہچانے آدمیوں کے ساتھ ایسا برتاؤ کرے، جن سے پریچے نہیں ان کے ساتھ ویسا بیوہار کرے، وقت سے کھانا کھائے، وقت سے مالک کی پچکار پیار کی آشا کرے ۔ پر اب اسکی گردن سے یہ سب بندھن ٹوٹ چکے تھے ۔

اسکا سارا دھیان اسمیں لگا تھا کہ کس طرح ڈرتے کانپتے بھنگی کی ٹوکری میں سے ایک ٹکڑا روٹی کا نکال لے اور سارے دن ٹھوکریں کھائے اور درد سے چلائے ۔ یہی تو اب بچاؤ کا ایک وسیلہ رہ گیا تھا ۔ پہلے تو وہ بہادر اور نڈر تھا، صاف ستھرا تھا ۔ پر اب ڈرپوک اور کاہل ہوگیا تھا ۔ کوئی آواز سنی یا کوئی چیز اس کے پاس ہلی ڈولی تو اسکا بدن تھرتھرا جاتا تھا ۔ یہاں تک کہ وہ اپنی ہی آواز سے گھبرانے لگا تھا ۔ گندگی اور کوڑے کا عادی ہوگیا تھا ۔ بدن میں کھجلی

चबूतरे पर सुहानी आवाज़ों के साथ मुर्मुरे और कद्दू के बीज बेच रहे थे. क़हवा ख़ाने के सामने नाली थी जिसमें गन्दा मटियाला पानी खिसक खिसक कर बह रहा था.

इस मैदान में एक ही इमारत थी जो आंखों को अपनी तरफ़ खेंचती थी यानी वरामिन का मशहूर मीनार. इसका आधा धड़ जिसकी लहरेदार गोलाई के ऊपर गाजर नुमा बुर्जी थी दूर से दिखाई देता था. बुर्ज की ईंटों के गिर जाने से दराज़ें बन गई थीं और उनमें चिड़ियों ने घोंसले बना रक्खे थे. चिड़ियां भी गरमी की तपन से चुप थीं और ऊँघ रही थीं. केवल एक कुत्ते की दुख भरी आवाज़ इस सन्नाटे को थोड़ी थोड़ी देर बाद चौंका देती थी.

यह कुत्ता स्काटलैंडी नसल का था. इसके होंट और दहाना धुंवारे रंग के थे और पैरों पर काले गुल थे. ऐसा जान पड़ता था कि कीचड़ में दौड़ा हो और गन्दे छींटे खाकर आया हो. उसके कान बधने की टोंटी जैसे, दुम मरकी, बाल चमकीले काले रंग के थे. आंखें आदमियों की सी थीं जो बालदार चेहरे में से चमकती थीं. उसकी आंखों की तह में आदमी की रूह की परछांई थी. उम्र की आधी रात जो उसके जीवन पर छा गई थी उसकी आंखों से एक अनन्त वस्तु की आभा को चमकाती थी. उसमें एक संदेसा था जिसे पा लेना कठिन था क्योंकि यह उसके दीदों के पीछे छिपा था. पर यह आभा न तो चमक ही थी न रंग बल्कि कोई ऐसी वस्तु थी जिसे यक़ीन के साथ नहीं कह सकते क्या थी. उसकी आंखों में कुछ ऐसा दिखाई देता था जैसे किसी घायल हिरन की आंखों में. आंखें न केवल आदमी की आंखों के समान थीं, हूबहू वही जंचती थीं—दो आंखें हरे आस्मानी रंग की जिन में दुख, तरस, आस भरी हो—ऐसी जो एक भूले भटके कुत्ते के चेहरे ही में दिखाई देती हों.

पर ऐसा जान पड़ता था कि कोई भी उसकी आर्त प्रार्थना भरी निगाहों को न देखता है न समझता है. नानबाई की दूकान के सामने नौकर उसके घूंसे लगाता था. क़साई का लड़का पत्थर से मार भगाता था. अगर मोटर के नीचे दुबकता था तो शोफ़र के कीलदार बूट की कड़ी ठोकर उसका स्वागत करती थी और जब सब मार पीट से थक जाते तो खीर बेचने वाले का लड़का उसे सताने में मज़ा लेता था. जब भी दर्द से चिल्लाता एक पत्थर का ढेला उसकी कमर पर पड़ता और लड़के के ठट्ठे की आवाज़ बुलन्द होती और वह कहता "पाजी कहीं का!" देखने वाले भी उसका साथ देते और चुपके चुपके उसे बढ़ावा देते और मुस्कराते जाते. सभी उसे ईश्वर को ख़ुश करने के लिए मारते थे. उनका विश्वास था कि कुत्ता गन्दा जानवर है. धर्म उसका तिरस्कार करता है. उसकी

چبوترے پر سہانی آوازوں کے ساتھ مرمرے اور کدو کے بیج بیچ رہے تھے . قہوہ خانے کے سامنے نالی تھی جس میں گندا مٹیالا پانی کھسک کھسک کر بہ رہا تھا .

اس میدان میں ایک ہی عمارت تھی جو آنکھوں کو اپنی طرف کھینچتی تھی یعنی ورامین کا مشہور مینار . اس کا آدھا دھڑ جسکی لہریےدار گولائی کے اوپر گاجرنما برجی تھی دور سے دکھائی دیتا تھا . برج کی اینٹوں کے گرجانے سے دراڑیں بن گئی تھیں اور ان میں چڑیوں نے گھونسلے بنا رکھے تھے. چڑیاں بھی گرمی کی تپن سے چپ تھیں اور اونگھ رہی تھیں. کیول ایک کتے کی دکھ بھری آواز اس سناٹے کو تھوڑی تھوڑی دیر بعد چونکا دیتی تھی.

یہ کتا سکاٹلینڈی نسل کا تھا . اس کے ہونٹ اور دہانہ دھنوارے رنگ کے تھے اور پیروں پر کالے گل تھے . ایسا جان پڑتا تھا کہ کیچڑ میں دوڑا ہو اور گندے چھینٹے کھاکر آیا ہو . اس کے کان بدھنے کی ٹونٹی جیسے' دم مرکی' بال چمکیلے کالے رنگ کے تھے . آنکھیں آدمیوں کی سی تھیں جو بالدار چہرے میں سے چمکتی تھیں . اسکی آنکھوں کی تہہ میں آدمی کی روح کی پرچھائیں تھی . عمر کی آدھی رات جو اس کے جیون پر چھا گئی تھی اسکی آنکھوں سے ایک اننت وستو کی آبھا کو چمکاتی تھی . اس میں ایک سندیسا تھا جسے پا لینا کٹھن تھا کیونکہ یہ اس کے دیدوں کے پیچھے چھپا تھا . پر یہ آبھا نہ تو چمک ہی تھی نہ رنگ. بلکہ کوئی ایسی وستو تھی جسے یقین کے ساتھ نہیں کہہ سکتے کیا تھی . اسکی آنکھوں میں کچھ ایسا دکھائی دیتا تھا جیسے کسی گھایل ہرن کی آنکھوں میں. آنکھیں نہ کیول آدمی کی آنکھوں کے سمان تھیں بلکہ ہوبہو وہی جنچتی تھیں—دو آنکھیں ہرے آسمانی رنگ کی جن میں دکھ' ترس' آس بھری ہو—ایسی جو ایک بھولے بھٹکے کتے کے چہرے ہی میں دکھائی دیتی ہوں.

پر ایسا جان پڑتا تھا کہ کوئی بھی اسکی آرت پرارتھنا بھری نگاہوں کو نہ دیکھتا ہے نہ سمجھتا ہے . نانبائی کی دوکان کے سامنے نوکر اس کے گھونسے لگاتا تھا . قصائی کا لڑکا پتھر سے مار بھگاتا تھا . اگر موٹر کے نیچے دبکتا تھا تو شوفر کے کیل‌دار بوٹ کی کڑی ٹھوکر اس کا سواگت کرتی تھی اور جب سب مار پیٹ سے تھک جاتے تو کھیر بیچنے والے کا لڑکا اسے ستانے میں مزہ لیتا تھا . جب بھی درد سے چلاتا ایک پتھر کا ڈھیلا اسکی کمر پر پڑتا اور لڑکے کے ٹھٹھے کی آواز بلند ہوتی اور وہ کہتا "پاجی کہیں کا!" دیکھنے والے بھی اس کا ساتھ دیتے اور چپکے چپکے اسے بڑھاوا دیتے اور مسکراتے جاتے. سبھی اسے ایشور کو خوش کرنے کیلئے مارتے تھے . ان کا وشواس تھا کہ کتا گندہ جانور ہے. دھرم اس کا ترسکار کرتا ہے. اسکی

करना होगा. रुपये पर सूद मिलता है. हमें मेहनत के बजाय रुपये के बलबूते पर होने वाली इस कमाई को बन्द करना होगा. रुपये का इस्तेमाल वहीं तक होना चाहिये जहां तक चीज़ों के लेन देन में मदद मिलती है.

बाज़ार :—कच्चे माल और रोज़मर्रा काम आने वाले सामान का बदलाव प्राकृतिक ढंग से होना चाहिये, राजनीत और दूसरे अप्राकृतिक कंटरोल इस तरह के बदलाव में दख़ल न दें.

ऐसे क़दम उठाने पर हथियारबन्दी के लिये कोई गुंजाइश बाक़ी न रह जायेगी. छोटे मोटे झगड़े बात चीत से तय हो जाएंगे. केवल इसी तरह आदमी जानवरों के स्तर से ऊंचा उठ सकता है और दूसरे इन्सानों का वध करना बन्द कर सकता है. सर्वोदय के नियमों के पालन से भी दुनिया में शान्ति हो सकती है और मनुष्य जाति भयंकर रूप से आत्महत्या करने से बच सकती है. परिस्थिति जिस साहस और विश्वास की मांग करती है वह हमको अपने अन्दर पैदा करना चाहिये.

भूला भटका कुत्ता

(सादिक़ हिदायत,)

[सादिक़ हयात फ़ारसी के बहुत प्रसिद्ध लेखक हैं. उनकी कहानियों का संसार की बहुत सी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है. उनकी सबसे अच्छी कहानियों में से एक का हिन्दुस्तानी अनुवाद हम नीचे दे रहे हैं.

—डाक्टर ताराचन्द]

वरामिन के मैदान में कुछ छोटी छोटी दुकानें लगी हुई थीं. उनमें नानबाई, क़साई और अत्तार बैठते थे. उनके अलावा दो क़हवाख़ाने थे और एक नाई की दुकान. यह सब किसी तरह अपना पेट पालते थे और घर की आवश्यकताओं को पूरा करते थे. इनका जीवन सादा था. सूरज की कड़ी धूप में मैदान और उसके निवासी दिन भर जलते भुनते थे और इनकी एक ही इच्छा होती थी कि किसी तरह सांझ की पवन डोले और रात की छाया आए. आज आदमी, दूकानें, पेड़ और जानवर सभी कामकाज से थके थे. गर्म हवा के थपेड़े उनके सिरों पर भार लादे थे और धूल और हलका हलका धुंधलका नीले आकाश पर लहरा रहा था. मोटरों के बराबर आने जाने से ग़ुबार बढ़ता जाता था.

एक तरफ़ एक पुराना चुनार का पेड़ था. उसका तना एक तरफ़ से पोला था और उसमें गहरा खड्ड हो गया था. पर पेड़ ढिठाई के साथ अपनी टेढ़ी टहनियों पर कोढ़िया की मारी शाखों को फैलाए खड़ा था. उसकी धूल से भरी पत्तियों के नीचे एक बड़ा चबूतरा बना था. दो लड़के

ھوگا . روپئے پر سود ملتا ہے . ہمیں محنت کے بجائے روپے کے بل بوتے پر ہونے والی اس کمائی کو بند کرنا ہوگا. روپے کا استعمال وہیں تک ہونا چاہئے جہاں تک چیزوں کے لین دین میں مدد ملتی ہے .

بازار :—کچے مال اور روزمرہ کام آنے والے سامان کا بدلاؤ پراکرتک ڈھنگ سے ہونا چاہئے . راج نیت اور دوسرے اپراکرتک کنٹرول اس طرح کے بدلاؤ میں دخل نہ دیں .

ایسے قدم اٹھانے پر ہتھیار بندی کے لیئے کوئی گنجائش باقی نہ رہ جائے گی . چھوٹے موٹے جھگڑے بات چیت سے طے ہو جائیں گے . کیول اسی طرح آدمی جانوروں کے استر سے اونچا اٹھ سکتا ہے اور دوسرے انسانوں کا بدھ کرنا بند کر سکتا ہے . سروودے کے نیموں کے پالن سے ہی دنیا میں شانتی ہو سکتی ہے اور منشیہ جاتی بھینکر روپ سے آتم ہتھیا کرنے سے بچ سکتی ہے . پرستھتی جس ساہس اور وشواس کی مانگ کرتی ہے وہ ہم کو اپنے اندر پیدا کرنا چاہیئے .

بھولا بھٹکا کتا

(صادق ھدایت)

[صادق حیات فارسی کے بہت پرسدھ لیکھک ہیں. ان کی کہانیوں کا سنسار کی بہت سی بھاشاؤں میں انوواد ہو چکا ہے . اُن کی سب سے اچھی کہانیوں میں سے ایک کا ہندستانی انوواد ہم نیچے دے رہے ہیں .

—ڈاکٹر تاراچند]

وارامین کے میدان میں کچھ چھوٹی چھوٹی دوکانیں لگی ہوئی تھیں . ان میں نانبائی' قصائی اور عطار بیٹھتے تھے . ان کے علاوہ دو قہوہ خانہ تھے اور ایک نائی کی دوکان . یہ سب کسی طرح اپنا پیٹ پالتے تھے اور گھر کی آوشکتاؤں کو پورا کرتے تھے . ان کا جیون سادہ تھا . سورج کی کڑی دھوپ میں میدان اور اس کے نواسی دن بھر جلتے بھنتے تھے اور انکی ایک ہی اچھا ہوتی تھی کہ کسی طرح سانجھ کی پون ڈولے اور رات کی چھایا آئے . آج آدمی' دوکانیں' پیڑ اور جانور سبھی کام کاج سے تھکے تھے . گرم ہوا کے تھپیڑے ان کے سروں پر بھار لادے تھے اور دھول اور ہلکا ہلکا دھندھلکا نیلے آکاش پر لہرا رہا تھا . موٹروں کے برابر آنے جانے سے غبار بڑھتا جاتا تھا .

ایک طرف ایک پرانا چنار کا پیڑ تھا . اس کا تنا ایک طرف سے پولا تھا اور اس میں گہرا کھڈ ہوگیا تھا . پر پیڑ ڈھٹائی کے ساتھ اپنی ٹیڑھی ٹہنیوں اور کوڑھیا کی ماری شاخوں کو پھیلائے کھڑا تھا . اسکی دھول سے بھری پتیوں کے نیچے ایک بڑا چبوترا بنا تھا . دو لڑکے

इद गिर्द पाया जाता हो. इन सामानों के बनाने में ऐसी शक्ति न लगाई जाये जो कम दाम में मिले और आदमियों को बेरोज़गार कर दे. आजकल कोयला, तेल और बिजली अनुचित दाम पर सप्लाई होते हैं. इस से बेकारी, ग़रीबी और असन्तोष बढ़ता है. बिजली आदि की सस्ती सप्लाई की वजह से बड़े बड़े कारख़ाने स्टेन्डर्ड सामान बनाते हैं. इस वजह से अनुचित होड़ कारख़ानों में लगती है.

कारख़ाना चलाने की यह सारी ताक़तें प्रकृति से ली जाती हैं. इनको हासिल करने में इन्सानी शक्ति का उपयोग कम होता है. प्राकृतिक साधनों की कोई क़ीमत नहीं लगाई जाती. केवल इन्सानी शक्ति का दाम आंका जाता है, इसलिए दाम बहुत कम होता है.

प्रकृति से जो साधन मिलते हैं वह सारी जनता की मीरास हैं. इन साधनों को थोड़े से दामों में कुछ लोगों के हाथों इस तरह न बिकना चाहिये. दाम मुक़र्रर करने में इस बात का ज़रूर ख़्याल रखना चाहिये कि मज़दूरों को इतनी रक़म मिल जाये कि वह सुखी जीवन बिता सकें.

जो दाम इन नियमों के अनुसार मुक़र्रर हो उससे ज़्यादा जो मुनाफ़ा हो उसका मालिक राष्ट्र हो और यह मुनाफ़ा सारी जनता के हित के लिये ख़र्च किया जाये. आजकल की प्रथा ख़त्म होनी चाहिये. केवल कारख़ानेदारों को ही सहायता के रूप में मुनाफ़े की रक़म न मिलनी चाहिये. ऐसी पालिसी अपनाने से जो सामान बनाए जाएंगे उनके दाम बढ़ जाएंगे. इस से उन लोगों को फ़ायदा पहुंचेगा जो कारख़ानों में काम करते हैं. इस पालिसी से सामाजिक अन्याय की जड़ पर चोट लगेगी. ऐसा करने से बेरोज़गारी ख़त्म हो जायेगी और ग़रीबी से लोगों को छुटकारा मिल जायेगा.

अगर सिर्फ़ हम इतना ही कर लें तो हमारे आर्थिक ढांचे का रुख़ बदल जाएगा और हम अपने पैरों पर ख़ुद खड़े हो सकेंगे और अपनी मदद ख़ुद कर सकेंगे. लड़ाई का एक बुनियादी कारण आर्थिक मामलों में दूसरे देशों का हस्तक्षेप है. अगर दूसरे देश आर्थिक मामलों में दख़ल न दें तो स्थाई शान्ति की तरफ़ हम तेज़ी से बढ़ सकेंगे. क्या इतना साहस है कि हम इस परिस्थिति का मुक़ाबिला कर सकें? यह क़दम हमारे जीवन की गुत्थियों को सुलझायेगा और लाखों को ख़ुशी प्रदान करेगा. आजकल हमने जीवन की डोर उलझा ली है, अपने ऊपर मुसीबत ओढ़ ली है, परिस्थितियां डगमग होती रहती हैं.

धन :—सामानों का दाम रुपयों में मुक़र्रर होता है. इस से हर क़िस्म की नाबराबरी पैदा होती है. जिसके पास जितने ज़्यादा रुपये हैं वह उतना ही अधिक सामान ख़रीद सकता है. रुपये के इस गुण को उससे अलग

اردگرد پایا جاتا ہو۔ اِن سامانوں کے بنانے میں ایسی شکتی نہ لگائی جائے جو کم دام میں ملے اور آدمیوں کو بیروزگار کردے۔ آجکل کوئلہ، تیل اور بجلی انوچت دام پر سپلائی ہوتے ہیں۔ اس سے بیکاری، غریبی اور اسنتوش بڑھتا ہے۔ بجلی آدی کی سستی سپلائی کی وجہ سے بڑے بڑے کارخانے اسٹینڈرڈ سامان بناتے ہیں۔ اس وجہ سے انوچت ہوڑ کارخانوں میں لگتی ہے۔

کارخانہ چلانے کی یہ ساری طاقتیں پرکرتی سے لی جاتی ہیں، اِن کو حاصل کرنے میں انسانی شکتی کا اُپیوگ کم ہوتا ہے۔ پراکرتک سادھنوں کی کوئی قیمت نہیں لگائی جاتی۔ کیول انسانی شکتی کا دام آنکا جاتا ہے اس لئے دام بہت کم ہوتا ہے۔

پرکرتی سے جو سادھن ملتے ہیں وہ ساری جنتا کی میراث ہیں۔ اِن سادھنوں کو تھوڑے سے داموں میں کچھ لوگوں کے ہاتھوں اس طرح نہ بکنا چاہئیے۔ دام مقرر کرنے میں اِس بات کا ضرور خیال رکھنا چاہئیے کہ مزدوروں کو اتنی رقم مل جائے کہ وہ سکھی جیون بتاسکیں۔

جو دام اِن نیموں کے انوسار مقرر ہو اُس سے زیادہ جو منافع ہو اُس کا مالک راشٹر ہو اور یہ منافع ساری جنتا کے ہت کے لئے خرچ کیا جائے۔ آجکل کی پرتھا ختم ہونی چاہئیے۔ کیول کارخانےداروں کو ہی سہایتا کے روپ میں منافع کی رقم نہ ملنی چاہئیے۔ ایسی پالیسی اپنانے سے جو سامان بنائے جائیں گے اُن کے دام بڑھ جائیں گے۔ اِس سے اُن لوگوں کو فائدہ پہونچے گا جو کارخانوں میں کام کرتے ہیں۔ اس پالیسی سے سماجک انیائے کی جڑ پر چوٹ لگے گی۔ ایسا کرنے سے بے روزگاری ختم ہو جائے گی اور غریبی سے لوگوں کو چھٹکارا مل جائے گا۔

اگر صرف ہم اتنا ہی کر لیں تو ہمارے آرتھک ڈھانچے کا رخ بدل جائے گا اور ہم اپنے پیروں پر خود کھڑے ہو سکیں گے اور اپنی مدد خود کر سکیں گے۔ لڑائی کا ایک بنیادی کارن آرتھک معاملوں میں دوسرے دیشوں کا ہستکشیپ ہے۔ اگر دوسرے دیش آرتھک معاملوں میں دخل نہ دیں تو استھائی شانتی کی طرف ہم تیزی سے بڑھ سکیں گے۔ کیا اتنا ساہس ہے کہ ہم اس پرستھتی کا مقابلہ کر سکیں؟ یہ قدم ہمارے جیون کی گتھیوں کو سلجھائے گا اور لاکھوں کو خوشی پردان کرے گا۔ آجکل ہم نے جیون کی ڈور اُلجھا لی ہے، اپنے اوپر مصیبت اوڑھ لی ہے، پرستھتیاں ڈگ مگ ہوتی رہتی ہیں۔

دھن:—سامانوں کا دام روپئے میں مقرر ہوتا ہے۔ اس سے ہر قسم کی نابرابری پیدا ہوتی ہے۔ جس کے پاس جتنے زیادہ روپئے ہیں وہ اتنا ہی ادھک سامان خرید سکتا ہے۔ ہمیں روپئے کے اس گن کو اس سے الگ کرنا

शान्ती का यक़ीनी रास्ता

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

जब से एटम बम की ईजाद हुई है, हाईड्रोजन बम का विस्फोट हुआ है और कोबाल्ट बम के खतरे की चरचा होने लगी है तब से शान्ती क़ायम करने के बहुत से तरीक़ों पर सोच विचार एक फ़ैशन हो गया है. कहीं जंग विरोधियों की कानफ्रेंस होती है, कहीं पेसिफ़िस्ट लोग सर जोड़ कर बैठते हैं, कहीं शान्ती कौन्सिल की बैठक होती है और कहीं राजकाजियों की सभा होती है. यह कान्फ्रेंस और मीटिंगें शर्तें रखती हैं, प्रस्ताव पास करती हैं और अपीलें जारी करती हैं. लेकिन फिर भी हम वहां ही हैं जहां थे. इस से इन सब तरीक़ों की नाकामयाबी का पता चलता है. इस तरह की सारी कोशिशें बिना किसी चाल के की जाती हैं. लेकिन इनकी नाकामी की वजह यह है कि इलाज ऊपरी निशानियों का किया जाता है और बीमारी की जड़ को नहीं छेड़ा जाता.

हम बार बार कह चुके हैं कि बुनयादी गड़बड़ी हमारे आर्थिक ढांचे में है. इस ढांचे में सब लोगों की ज़रूरी आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पातीं, इस असलियत का सामना करने के लिये बहुत कम लोग तैयार होते हैं.

इनसान ही एक ऐसा जानवर है जो अपना वातावरन खुद तैयार करता है और अपने भाग्य का खुद विधाता है. लड़ाई हमारे आर्थिक ढांचे का नतीजा है. यह ढांचा नाइनसाफ़ी, लालच और ग़ैर ज़रूरी आवश्यकताओं पर खड़ा है. हम अपनी मांगों को पूरा करने के लिए ग़लत रास्ते अख्तियार करते हैं. अगर हम चाहते हैं कि लड़ाई न हो और हमारा जीवन शान्ति से हो तो ज़रूरी है कि हम अपने तरीक़ों और जीवन को जड़ मूल से बदल डालें. यह तरीक़ा सर्वोदय है. सर्वोदय पर अमल करने से अहिंसा पैदा होगी. सर्वोदय क्या है इस की चरचा थोड़े से में हम नीचे करते हैं.

मांग :—हमारे जीवन की आवश्यकताएं क़ुदरती होनी चाहिये. ऐसी आवश्यकताओं की ज़रूरत नहीं जिनसे व्योपार किया जा सके. इन आवश्यकताओं का आधार स्वदेशी की सच्ची भावना होनी चाहिये.

सप्लाई—हमारी ज़रूरतों की पूर्ति में जिन सामानों की आवश्यकता है वह मुक़ामी तौर पर बनाए जाएं. इन में ज़्यादातर कच्चा माल वह इस्तेमाल किया जाय जो

شانتی کا یقینی راستہ

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپا)

جب سے ایٹم بم کی ایجاد ہوئی ہے، ہائڈروجن بم کا وسفوٹ ہوا ہے اور کوبالٹ بم کے خطرے کی چرچا ہونے لگی ہے تب سے شانتی قائم کرنے کے بہت سے طریقوں پر سوچ وچار ایک فیشن ہوگیا ہے . کہیں جنگ ورودھیوں کی کانفرنس ہوتی ہے، کہیں پیسفسٹ لوگ سر جوڑ کر بیٹھتے ہیں، کہیں شانتی کونسل کی بیٹھک ہوتی ہے اور کہیں راج کاجیوں کی سبھا ہوتی ہے . یہ کانفرنس اور میٹنگیں شرطیں رکھتی ہیں، پرستاو پاس کرتی ہیں اور اپیلیں جاری کرتی ہیں . لیکن پھر بھی ہم وہاں ہی ہیں جہاں تھے . اس سے ان سب طریقوں کی ناکامیابی کا پتہ چلتا ہے . اس طرح کی ساری کوششیں بنا کسی چال کے کی جاتی ہیں . لیکن ان کی ناکامی کی وجہ یہ ہے کہ علاج اوپری نشانیوں کا کیا جاتا ہے بیماری کی جڑ کو نہیں چھیڑا جاتا.

ہم بار بار کہہ چکے ہیں کہ بنیادی گڑبڑی ہمارے آرتھک ڈھانچے میں ہے . اس ڈھانچے میں سب لوگوں کی ضروری آوشیکتائیں پوری نہیں ہوپاتیں . اس اصلیت کا سامنا کرنے کے لئے بہت کم لوگ تیار ہوتے ہیں .

انسان ہی ایک ایسا جانور ہے جو اپنا واتاورن خود تیار کرتا ہے اور اپنے بھاگیہ کا خود ودھاتا ہے . لڑائی ہمارے آرتھک ڈھانچے کا نتیجہ ہے . یہ ڈھانچہ، ناانصافی، لالچ اور غیر ضروری آوشیکتاؤں پر کھڑا ہے . ہم اپنی مانگوں کو پورا کرنے کے لئے غلط راستے اختیار کرتے ہیں . اگر ہم چاہتے ہیں کہ لڑائی نہ ہو اور ہمارا جیون شانتی سے ہو تو ضروری ہے کہ ہم اپنے طریقوں اور جیون کو جڑ مول سے بدل ڈالیں . یہ طریقہ سرودے ہے . سرودے پر عمل کرنے سے اہنسا پیدا ہوگی . سرودے کیا ہے اس کی چرچا تھوڑے سے میں ہم نیچے کرتے ہیں .

مانگ :—ہمارے جیون کی آوشیکتائیں قدرتی ہونی چاہئیں. ایسی آوشیکتاؤں کی ضرورت نہیں جن سے بیوپار کیا جاسکے . ان آوشیکتاؤں کا آدھار سودیشی کی سچی بھاونا ہونی چاہئے .

سپلائی :—ہماری ضرورتوں کی پورتی میں جن سامانوں کی آوشیکتا ہے وہ مقامی طور پر بنائے جائیں. ان میں زیادہ کچا مال وہ استعمال کیا جائے جو

वास्तविकता के घेरे से बाहर न कोई कला है और न हो सकती है.

यही नहीं कि सोशलिस्ट समाज में लेखक और जनता का सम्बन्ध होता है बल्कि इस सम्बन्ध की पूरी पूरी जानकारी भी होती है.

किसी समय यह बात "समाज का हुक्म" समझी जाती थी. लेकिन आजकल के कुछ सम्पादक और आलोचक समझते हैं कि "समाज" हट गया है और केवल "हुक्म" बाक़ी है. एक ही शब्द से काम चल जाये यह असली बात है लेकिन लेखक की कला के अनुकूल यह बात नहीं है.

इन्क़लाब से पहले लेखकों को ऐसा अनुभव आसानी से नहीं होता था. चेख़ोफ़ के पत्रों से पता चलता है कि कुछ पत्रिकाओं ने उनसे हुक्मन कहानी मांगी है. लेकिन उस समय के गुस्ताख़ से गुस्ताख़ सम्पादक ने कहानी का विषय समझाने का साहस मुश्किल से किया होगा. क्या कोई कल्पना भी कर सकता है कि एक प्रकाशक साहब टाल्सटाय और गोर्की को हुक्म देते हैं कि "अनाकरीना" और "मां" लिख डालो ?

मुश्किल से कोई ऐसा लेखक होगा जिसका व्यक्तित्व न हो और जो हर चीज़ से इतना उदासीन हो कि उसे बताने की ज़रूरत पड़े कि वह क्या लिखे.

(सिलसिले के लिये अगला अंक देखिये)

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताबका दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

واستوکتا کے گھیرے سے باہر نہ کوئی کلا ہے اور نہ ہو سکتی ہے ۔

یہی نہیں کہ سوشلسٹ سماج میں لیکھک اور جنتا کا سمبندھ ہوتا ہے بلکہ اس سمبندھ کی پوری پوری جانکاری بھی ہوتی ہے ۔

کسی سمے یہ بات "سماج کا حکم" سمجھی جاتی تھی لیکن آج کل کے کچھ سمپادک اور آلوچک سمجھتے ہیں کہ "سماج" ہٹ گیا ہے اور کیول "حکم" باقی ہے ۔ ایک ہی شبد سے کام چل جائے یہ اصلی بات ہے لیکن لیکھک کی کلا کے انوکول یہ بات نہیں ہے ۔

انقلاب سے پہلے لیکھکوں کو ایسا انوبھو آسانی سے نہیں ہوتا تھا ۔ چیخوف کے پتروں سے پتہ چلتا ہے کہ کچھ پتریکاؤں نے ان سے حکماً کہانی مانگی ہے ۔ لیکن اس سمے کے گستاخ سے گستاخ سمپادک نے کہانی کا وشے سمجھانے کا ساہس مشکل سے کیا ہوگا ۔ کیا کوئی کلپنا بھی کر سکتا ہے کہ ایک پرکاشک صاحب ٹالسٹائے اور گورکی کو حکم دیتے ہیں کہ "اناکرینا" اور "ماں" لکھ ڈالو ؟

مشکل سے کوئی ایسا لیکھک ہوگا جس کا ویکتتو نہ ہو اور جو ہر چیز سے اتنا اداسین ہو کہ اسے بتانے کی ضرورت پڑے کہ وہ کیا لکھے ۔

(سلسلہ کے لئے اگلا انک دیکھئے)

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے ۔ سی ۔ کمارپا ۔

انوادک—سریش رام بھائی ۔

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے ۔

مہاتما گاندھی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد ۔

है और वह अनुभव मचलते हैं कि इनका वर्नन किया जाये. इस तरह ही अनुरागपूर्न किताबों का जन्म होता है. ऐसी पुस्तकों में कलात्मक कमजोरियां भी होती हैं फिर भी पाठक के दिल को यह पुस्तकें हिला देती हैं.

यही कारन है कि मैं उन आलोचकों की बात नहीं समझ पाता हूँ जो लेखक को क़ुसूरवार ठहराते हैं क्योंकि उसने वालगा डान नहर, कपड़ा उद्योग या शान्ति आन्दोलन पर रचना नहीं की. क्या यह बेहतर नहीं होगा कि उस लेखक को बुरा भला कहा जाये जिसने ऐसी चीज़ पर क़लम उठाया जिस पर लिखने के लिये उसकी आत्मा ने उसे मजबूर नहीं किया और जिस विशय पर रचना किये बिना वह अच्छी तरह ज़िन्दा रह सकता था. उद्योगी पैदावार सम्बन्धी आंकड़ों से जो काम किया जाता है वह कला के क्षेत्र में नहीं लिया जा सकता है. मुझसे आप लोग सहमत होंगे कि एक अच्छा उपन्यास सौ घटिया उपन्यासों से बेहतर है. नाविल न तो कोयले की तरह इस्तेमाल किए जाते हैं और न वह जूते की तरह घिसते हैं.

एक सुंसान जज़ीरे पर घिरी सलोनी घटाएं किसी लेखक के दिमाग़ में उथल पुथल भले ही मचावें लेकिन कोई ऐसी चीज़ वहां नहीं है जो पुस्तक लिखने पर उसे उत्साहित कर सके. लेखक जनता के सम्बन्ध में लिखता है और जनता के लिये लिखता है.

समाजिक जीवन से शुद्ध साहित्य का सदा से सम्बन्ध है. लेखक के अकेलेपन के बारे में बुरजुवा समाज में चरचा उसी समय से चली है जब से वह ढलने लगा है और जब से उपन्यासकारों ने यह निश्चय कर लिया है कि जो निर्मान दुनिया में होने थे वह सब हो चुके और अब वास्तविकता की जगह सपने को ले लेना चाहिये. मैं यह भी कह दूं कि तमाम सपनों की तरह इन लोगों के सपनों में भी वास्तविकता की झलक मिलती है. केवल इतना अन्तर होता है कि यह झलक तोड़ी मरोड़ी होती है.

कलाकार की कल्पना, घटना, भाव और अमल का अनुपात बदल सकती है लेकिन सारे उपन्यासों यहां तक कि मनमौजी और काल्पनिक उपन्यासों तक का आधार वास्तविक जीवन होता है. विल्स ने 'मार्स' और 'केपिक' के आदमियों के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा है वह इन्सानी समाज की पैरोडी है.

अजीब अजीब मुखड़े वाले काल्पनिक नाइटों का चित्रन करने से पहले सारवंत ने अपने युग के इन्सानों के सम्बन्ध में पूरी पूरी जानकारी हासिल की थी.

ہے اور یہ انوبھو مچلتے ہیں کہ اِن کا ورنن کیا جائے. اس طرح ہی انوارگ پورن کتابوں کا جنم ہوتا ہے . ایسی پستکوں میں کلاتمک کمزوریاں بھی ہوتی ہیں پھر بھی پاٹھک کے دل کو یہ پستکیں ہلا دیتی ہیں .

یہی کارن ہے کہ میں اُن آلوچکوں کی بات نہیں سمجھ پاتا ہوں جو لیکھک کو قصوروار ٹھہراتے ہیں کیونکہ اُس نے والگا ڈان نہر' کپڑا اُدیوگ یا شانتی آندولن پر رچنا نہیں کی . کیا یہ بہتر نہیں ہوگا کہ اُس لیکھک کو برا بھلا کہا جائے جس نے ایسی چیز پر قلم اُٹھایا جس پر لکھنے کے لئے اُسکی آتما نے اُسے مجبور نہیں کیا اور جس وشے پر رچنا کئے بنا وہ اچھی طرح زندہ رہ سکتا تھا . اُدیوگی پیداوار سمبندھی آنکڑوں سے جو کام کیا جاتا ہے وہ کلا کے چھیتر میں نہیں لیا جاسکتا ہے . مجھ سے آپ لوگ سہمت ہوں گے کہ ایک اچھا اُپنیاس سو گھٹیا اُپنیاسوں سے بہتر ہے . ناول نہ تو کوئلے کی طرح استعمال کئے جاتے ہیں اور نہ وہ جوتے کی طرح گھستے ہیں .

ایک سنسان جزیرے پر گھری سلونی گھٹائیں کسی لیکھک کے دماغ میں اُتھل پتھل بھلے ہی مچاویں لیکن کوئی ایسی چیز وہاں نہیں ہے جو پستک لکھنے پر اُسے اُتساہت کرسکے . لیکھک جنتا کے سمبندھ میں لکھتا ہے اور جنتا کے لئے لکھتا ہے .

سماجک جیون سے شدھ ساہتیہ کا سدا سے سمبندھ ہے . لیکھک کے اکیلےپن کے بارے میں بورژوا سماج میں چرچا اُسی سمے سے چلی ہے جب سے وہ ڈھلنے لگا ہے اور جب سے اُپنیاس کاروں نے یہ نشچے کرلیا ہے کہ جو نرمان دنیا میں ہونے تھے وہ سب ہوچکے اور اب واستوکتا کی جگہ سپنے کو لے لینا چاہئے . میں یہ بھی کہدوں کہ تمام سپنوں کی طرح اِن لوگوں کے سپنوں میں بھی واستوکتا کی جھلک ملتی ہے . کیول اتنا انتر ہوتا ہے کہ یہ جھلک توڑی مروڑی ہوتی ہے .

کلاکار کی کلپنا' گھٹنا' بھاؤ اور عمل کا انوپات بدل سکتی ہے لیکن سارے اُپنیاسوں یہاں تک کہ من موجی اور کالپنک اُپنیاسوں تک کا آدھار واستوک جیون ہوتا ہے. ولس نے 'مارس' اور 'کیپک' کے آدمیوں کے سمبندھ میں جو کچھ لکھا ہے وہ انسانی سماج کی پیروڈی ہے .

عجیب عجیب مکھڑے والے کالپنک نائٹوں کا چترن کرنے سے پہلے سارونت نے اپنے یگ کے انسانوں کے سمبندھ میں پوری پوری جانکاری حاصل کی تھی .

छोड़ देती हैं. आलोचक कहते हैं कि इसका कारन रचना में कलात्मक गुनों की कमी है. मेरा ख्याल है कि इसका कारन कुछ और है.

हमारे बीच ऐसे लेखक हैं जो पाठक को झकझोर कर रख देते हैं. लगभग ऐसे सभी लेखकों की रचना में कलात्मक सुन्दरता मिलती है. लेकिन पाठक को जो पुस्तकें उदासीन बनाती हैं, जिन में उसे कोई मजा नहीं आता है उन में सुन्दर कला और अच्छे तकनीक का अभाव हो, यह जरूरी नहीं है. पिछले दस बरस में कला का स्टैन्डर्ड ऊपर उठा है और लड़ाई के समय के उपन्यासों का अस्तर बहुत ऊंचा है.

एक दफ़ा मैं इनक़लाब से पहले की पत्रिकाओं की फ़ाइल देख रहा था. मेरी नजर "रूसी रतन" "सब की पत्रिका" "आधुनिक संसार" नामक पत्रिकाओं पर पड़ी. उस समय चेखोफ़, गोर्की और ब्लाक लिख रहे थे. उन्हीं लोगों के साथ साथ दर्जनों दूसरे औसत दर्जे के लेखकों के लेख भी इन्हीं पत्रिकाओं में छपते थे. इन लेखकों की रचनाएं कमजोर और बेढंगी थीं. अगर आज के औसत दर्जे के लेखकों से उस जमाने के औसत दर्जे के लेखकों का कोई मुक़ाबिला करे तो साफ़ पता चल जाएगा कि आजकल के लेखक उन लोगों से कहीं ज़ियादा अच्छा लिखते हैं.

इस तरह यह बात साफ़ हो जाती है. लेनिनग्राड के मेरे मित्र ने जो अरुचि कुछ किताबों में अनुभव की वह इस कारन से नहीं है कि उनका कला पच्छ कमज़ोर है. अगर यह वजह है भी तो यह केवल एक मात्र कारन नहीं है.

टाल्सटाय से किसी ने पूछा कि अच्छी रचना कैसे की जाये? उन्होंने दो क़ीमती सीखें दीं—उस विशय पर कभी मत लिखो जो तुम्हें खुद दिलचस्प मालूम न हो, अगर दिमाग़ में कोई ऐसा विशय है जिस पर लिखना चाहते हों लेकिन भावना यह नहीं है कि उस विशय पर जरूर लिखो तो क़लम उठाना बेहतर न होगा.

लेखक मशीन नहीं है जो यांत्रिक रूप से घटनाओं को नोट करता जाता है. वह पुस्तक इसलिए नहीं लिखता है क्योंकि उसे किताबें लिखनी आती हैं, वह इसलिए भी नहीं लिखता है क्योंकि वह सोवियत लेखक संघ का मेम्बर है और उससे पूछा जायेगा कि उतने अरसे तक कोई रचना उसने क्यों नहीं छपवाई.

जीविका कमाने के लिये भी लेखक नहीं लिखता. वह लिखता है क्योंकि उसे इस बात की जरूरत अनुभव होती है कि जनता को वह कुछ बताए, वह लिखता है क्योंकि उसकी किताब दिमाग़ में चक्कर काटा करती है, वह लिखता है क्योंकि जनता, वस्तु और भाव को उसने देख

چھوڑ دیتی ہیں۔ آلوچک کہتے ہیں کہ اس کا کارن رچنا میں کلاتمک گنوں کی کمی ہے۔ میرا خیال ہے کہ اسکا کارن کچھ اور ہے۔

ہمارے بیچ ایسے لیکھک ہیں جو پاٹھک کو جھکجھور کر رکھ دیتے ہیں۔ لگ بھگ ایسے سبھی لیکھکوں کی رچنا میں کلاتمک سندرتا ملتی ہے۔ لیکن پاٹھک کو جو پستکیں اداسین بناتی ہیں، جن میں اسے کوئی مزا نہیں آتا ہے ان میں سندر کلا اور اچھی تکنیک کا ابھاؤ ہو، یہ ضروری نہیں ہے۔ پچھلے دس برس میں کلا کا اسٹینڈرڈ اوپر اٹھا ہے اور لڑائی کے سمے کے اپنیاسوں اور کہانیوں کے مقابلے میں آج کل کی کہانیوں اور اپنیاسوں کا استر بہت اونچا ہے۔

ایک دفعہ میں انقلاب سے پہلے کی پتریکاؤں کی فائل دیکھ رہا تھا۔ میری نظر "روسی رتن" "سب کی پتریکا" "آدھنک سنسار" نامک پتریکاؤں پر پڑی۔ اس سمے چیخوف، گورکی اور بلاک لکھ رہے تھے۔ انہیں لوگوں کے ساتھ ساتھ درجنوں دوسرے اوسط درجے کے لیکھکوں کے لیکھ بھی انہیں پتریکاؤں میں چھپتے تھے۔ ان لیکھکوں کی رچنائیں کمزور اور بے ڈھنگی تھیں۔ اگر آج کے اوسط درجے کے لیکھکوں سے اس زمانے کے اوسط درجے کے لیکھکوں کا کوئی مقابلہ کرے تو صاف پتہ چل جائے گا کہ آج کل کے لیکھک ان لوگوں سے کہیں زیادہ اچھا لکھتے ہیں۔

اس طرح یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ لینن گراڈ کے میرے متر نے جو ارچی کچھ کتابوں میں انوبھو کی وہ اس کارن سے نہیں رچی ہے کہ ان کا کلا پکش کمزور ہے۔ اگر یہ وجہ ہے بھی تو کیول ایک ماتر کارن نہیں ہے۔

ٹالسٹائے سے کسی نے پوچھا کہ اچھی رچنا کیسے کی جائے؟ انہوں نے دو قیمتی سیکھیں دیں—اس وشے پر کبھی مت لکھو جو تمہیں خود دلچسپ معلوم نہ ہو؛ اگر دماغ میں کوئی ایسا وشے ہے جس پر لکھنا چاہتے ہو لیکن بھاونا یہ نہیں ہے کہ اس وشے پر ضرور لکھو تو قلم اٹھانا بہتر نہ ہوگا۔

لیکھک مشین نہیں ہے جو یانترک روپ سے گھٹناؤں کو نوٹ کرتا جاتا ہے۔ وہ پستک اس لئے نہیں لکھتا ہے کیونکہ اسے کتابیں لکھنی آتی ہیں، وہ اس لئے بھی نہیں لکھتا ہے کیونکہ وہ سوویت لیکھک سنگھ کا ممبر ہے اور اس سے پوچھا جائے گا کہ اتنے عرصے تک کوئی رچنا اس نے کیوں نہیں چھپوائی۔

جیوکا کمانے کے لئے بھی لیکھک نہیں لکھتا۔ وہ لکھتا ہے کیونکہ اسے اس بات کی ضرورت انوبھو ہوتی ہے کہ جنتا کو وہ کچھ بتلائے، وہ لکھتا ہے کیونکہ اسکی کتاب دماغ میں چکر کاٹا کرتی ہے، وہ لکھتا ہے کیونکہ جنتا، وستو اور بھاؤ کو اس نے دیکھا

लेखक और उसकी कला

(लेखक—इलिया एहरन बर्ग,
अनुवादक—मुजीब रिज़वी)

(गतांक से आगे)

समाज बदलता है

हम ऐसे युग में रह रहे हैं जब हमारी आंखों के सामने समाज तेज़ी से बदल रहा है, जनता तेज़ी से विकास की मंज़िलें तय कर रही है. यह ठीक है कि सब लोग यकसां विकास नहीं करते और सब के विकास में यकरंगी नहीं होती. इसी कारण वह लेखक जो आत्मिक विरोधों के चक्कर में भटकते रहते हैं अपने चरित्रों के व्योहार को ग़लत अर्थ पहनाने लगते हैं. ऐसे लेखक की ग़लती को पाठकों के सामने लाना चाहिये. मार्क्सवादी परमाण्त साहित्य हमें बताता है कि ऐसी आलोचना लिखी जा सकती है जिसे पढ़कर यह अनुभव न हो कि लेखक पर किसी अदालत में मुक़द्दमा चलाया जा रहा है.

साहित्यक आलोचकों को चाहिये कि दूसरे प्रकार के लेखकों की ग़लतियों पर भी वह रोशनी डालें. यह लेखक अपने चित्रों की सही व्याख्या करते हैं. उनके सम्बन्ध में उचित जानकारी रखते हैं, लेकिन फिर भी इनके चरित्रों में जान नहीं होती. जिन किताबों में लेखक पूरी तरह से नहीं समा जाता, जिन पुस्तकों के लिखने में वह जी जान तोड़ कर मेहनत नहीं करता, वह किताबें घटिया होती हैं. लेखक की नीयत चाहे जितनी अच्छी हो पर किताबों का अस्तर वह ऊंचा नहीं उठा पाता. ऐसा लेखक अपने चरित्रों को न जानता है और न उनको समझता है. आलोचक ऐसे लेखक की विफलताओं की व्याख्या कर सकते हैं, नाकामयाबी के कारण उसे बता सकते हैं, अगर वह रचना निर्मान के मनोविज्ञान पर ध्यान दें.

लेखक हर चीज़ के सम्बन्ध में और हर व्यक्ति के बारे में नहीं लिख सकता. विषय, वस्तु और चरित्रों के चुनाव के सम्बन्ध में वह असीम नहीं है, घिरा हुआ है. बड़े से बड़े लेखक के सामने दीवार होती है. एक उपन्यासकार की रचना का मूल्य आंकन उस समाज के आधार पर होता है जिसमें वह रहता है. इस बात की अब सब को जानकारी है. लेकिन लेखक जो साहित्य निर्मान करता है उसका मूल्य आंकन लेखक के जीवन चरित्र, उसके अनुभव और स्वभाव के आधार पर भी होता है.

लेखक किसी के हुक्म पर नहीं लिख सकता

लेनिनग्राड के इन्जीनियर का कहना सही है कि हमारे कुछ उपन्यास और कहानियां पाठक को उदासीन

لیکھک اور اسکی کلا

(لیکھک—ایلیا اہرن برگ،
انوادک—مجیب رضوی)

(گتانک سے آگے)

سماج بدلتا ہے

ہم ایسے یگ میں رہ رہے ہیں جب ہماری آنکھوں کے سامنے سماج تیزی سے بدل رہا ہے' جنتا تیزی سے وکاس کی منزلیں طے کر رہی ہے. یہ ٹھیک ہے کہ سب لوگ یکساں وکاس نہیں کرتے اور سب کے وکاس میں یک رنگی نہیں ہوتی. اسی کارن وہ لیکھک جو آتمک ورودھوں کے چکر میں بھٹکتے رہتے ہیں اپنے چرتروں کے ویوہار کو غلط ارتھ پہنانے لگتے ہیں. ایسے لیکھک کی غلطی کو پاٹھکوں کے سامنے لانا چاہئے. مارکس وادی پرمانت ساہتیہ ہمیں بتاتا ہے کہ ایسی آلوچنا لکھی جا سکتی ہے جسے پڑھکر یہ انوبھو نہ ہو کہ لیکھک پر کسی عدالت میں مقدمہ چلایا جا رہا ہے.

ساہتیک آلوچکوں کو چاہئے کہ دوسرے پرکار کے لیکھکوں کی غلطیوں پر بھی وہ روشنی ڈالیں. یہ لیکھک اپنے چرتروں کی صحیح ویاکھیا کرتے ہیں' اُن کے سمبندھ میں اُچت جانکاری رکھتے ہیں لیکن پھر بھی اِن کے چرتروں میں جان نہیں ہوتی. جن کتابوں میں لیکھک پوری طرح سے نہیں سما جاتا' جن پستکوں کے لکھنے میں وہ جی جان توڑ کر محنت نہیں کرتا' وہ کتابیں گھٹیا ہوتی ہیں. لیکھک کی نیت چاہے جتنی اچھی ہو پر کتابوں کا استر وہ اونچا نہیں اٹھا پاتا. ایسا لیکھک اپنے چرتروں کو نہ جانتا ہے اور نہ اُن کو سمجھتا ہے. آلوچک ایسے لیکھک کی وپھلتاؤں کی ویاکھیا کر سکتے ہیں' ناکامیابی کے کارن اُسے بتا سکتے ہیں' اگر وہ رچنا نرمان کے منووگیان پر دھیان دیں.

لیکھک ہر چیز کے سمبندھ میں اور ہر ویکتی کے بارے میں نہیں لکھ سکتا. وشے' وستو اور چرتروں کے چناؤ کے سمبندھ میں وہ اسیم نہیں ہے' گھرا ہوا ہے. بڑے سے بڑے لیکھک کے سامنے دیوار ہوتی ہے. ایک اپنیاس کار کی رچنا کا مول آنکن اُس سماج کے آدھار پر ہوتا ہے جس میں وہ رہتا ہے. اِس بات کی اب سب کو جانکاری ہے. لیکن لیکھک جو ساہتیہ نرمان کرتا ہے اُس کا مول آنکن لیکھک کے جیون چرتر' اُس کے انوبھو اور سوبھاؤ کے آدھار پر بھی ہوتا ہے.

لیکھک کسی کے حکم پر نہیں لکھ سکتا

لینن گراڈ کے انجینیر کا کہنا صحیح ہے کہ ہمارے کچھ اپنیاس اور کہانیاں پاٹھک کو اداسین

फिर कहा—"तो तुमने काबे का तवाफ़ किया ही नहीं. अब बताओ जब तुम सफ़ा और मरवा की पहाड़ियों के बीच में दौड़े तो तुम्हारे अन्दर सफ़ा यानी पाकी और मुरव्वत यानी दूसरों का लिहाज़ पैदा हुआ या नहीं ?" उसने जवाब दिया—"नहीं !" जुनैद ने फिर कहा—"तब तुम दौड़े ही नहीं. अब बताओ कि जब तुम क़ुर्बानी की जगह पहुंचे तो तुमने अपनी दुनियावी ख़्वाहिशों को क़ुर्बान किया या नहीं ?" उसने जवाब दिया—"नहीं !" जुनैद ने फिर कहा—"तब तुमने क़ुर्बानी की ही नहीं. अब बताओ कि जब तुमने कंकरियां फेंकीं तो जो कुछ शहवत (यानी काम वासना) के विचार तुम्हारे मन में रह गये थे उन्हें भी फेंक दिया या नहीं ?" उसने जवाब दिया—"नहीं !" जुनैद ने कहा—"तब तुमने कंकरियां फेंकी ही नहीं और न तुम ने हज की है."

हिन्दू और मुसलमान सन्तों और फ़कीरों की बानी में इस तरह के विचार भरे पड़े हैं. धर्म या मज़हब के इन ऊपरी रूपों से हट कर धर्म मज़हब के असली मक़सद की तरफ़ यानी अपने अन्दर की तरफ़ रुख़ करना ही सच्चे धर्म और सच्चे दीन की तरफ़ बढ़ना है. यही मज़हब के जिस्म से मज़हब की रूह की तरफ़ जाना है. यही इन्सानी एकता को समझना और अपने और सब के अन्दर के ईश्वर अल्लाह को पहचानना है.

हिदायत

"मैं अपना जीवन बिताने के लिये संसार में जा रहा हूं. मेरे प्रभु ! मुझे कोई हिदायत दीजिये, जिस से मैं वहां सफलता पा सकूं !" मनुश्य ने ईश्वर से कहा.

ईश्वर ने प्रसन्न हो कर कहा—"मेरे बेटे, मैं तुम्हें जीवन की दो विभूतियां दे रहा हूं. संसार में एक को अक़्ल और दूसरी को ईमान कहते हैं. मेरी हिदायत है कि अक़्ल को हमेशा ख़ूब ख़र्च करना और ईमान को हमेशा महफ़ूज़ रखना."

मनुश्य ने सिर झुकाया और दोनो हाथ आगे बढ़ा दिये. ईश्वर ने उसके बाएं हाथ में अक़्ल और दाएं हाथ पर ईमान रख दिया. भूल मनुश्य का स्वभाव है; यहां भी वह भूल गया कि उसने अक़्ल की जेब में ईमान और ईमान की जेब में अक़्ल रख ली.

संसार में अब वह दोनों हाथ ईमान लुटा रहा है और अक़्ल को उंगली नहीं लगाता. उसे अपने ईश्वर की हिदायत याद है कि अक़्ल हमेशा ख़ूब ख़र्च करने और ईमान महफ़ूज़ रखने की चीज़ है !

جواب دیا—"نہیں !" جنید نے پھر کہا—"تو تم نے کعبہ کا طواف کیا ہی نہیں. اب بتاؤ جب تم صفا اور مروا کی پہاڑیوں کے بیچ میں دوڑے تو تمہارے اندر صفا یعنی پاکی اور مروت یعنی دوسروں کا لحاظ پیدا ہوا یا نہیں ؟" اس نے جواب دیا—"نہیں !" جنید نے پھر کہا—"تب تم دوڑے ہی نہیں . اب بتاؤ کہ جب تم قربانی کی جگہ پہونچے تو تم نے اپنی دنیاوی خواہشوں کو قربان کیا یا نہیں ؟" اس نے جواب دیا—"نہیں !" جنید نے پھر کہا—"تب تم نے قربانی کی ہی نہیں . اب بتاؤ کہ جب تم نے کنکریاں پھینکیں تو جو کچھ شہوت (یعنی کام واسنا) کے وچار تمہارے من میں رہ گئے تھے انہیں پھینک دیا یا نہیں ؟" اس نے جواب دیا—"نہیں !" جنید نے کہا—"تب تم نے کنکریاں پھینکیں ہی نہیں اور نہ تم نے حج کی ہے ."

ہندو اور مسلمان سنتوں اور فقیروں کی بانی میں اس طرح کے وچار بھرے پڑے ہیں . دھرم یا مذہب کے ان اوپری روپوں سے ہٹکر دھرم مذہب کے اصلی مقصد کی طرف یعنی اپنے اندر کی طرف رخ کرنا ہی سچے دھرم اور سچے دین کی طرف بڑھنا ہے . یہی مذہب کے جسم سے مذہب کی روح کی طرف جانا ہے . یہی انسانی ایکتا کو سمجھنا اور اپنے اور سب کے اندر کے ایشور اللہ کو پہچاننا ہے .

ہدایت

" میں اپنا جیون بتانے کے لئے سنسار میں جا رہا ہوں. میرے پربھو ! مجھے کوئی ہدایت دیجئے' جس سے میں وہاں سپھلتا پا سکوں !" منشیہ نے ایشور سے کہا .

ایشور نے پرسن ہو کر کہا—" میرے بیٹے' میں تجھے جیون کی دو وبھوتیاں دے رہا ہوں . سنسار میں ایک کو عقل اور دوسرے کو ایمان کہتے ہیں . میری ہدایت ہے کہ عقل کو ہمیشہ خوب خرچ کرنا اور ایمان کو ہمیشہ محفوظ رکھنا ."

منشیہ نے سر جھکایا اور دونوں ہاتھ آگے بڑھا دیئے . ایشور نے اس کے بائیں ہاتھ میں عقل اور دائیں ہاتھ میں ایمان رکھ دیا . بھول منشیہ کا سبھاؤ ہے؛ یہاں بھی وہ بھول گیا کہ اس نے عقل کی جیب میں ایمان اور ایمان کی جیب میں عقل رکھ لی .

سنسار میں اب وہ دونوں ہاتھ ایمان لٹا رہا ہے اور عقل کو انگلی نہیں لگاتا . اسے اپنے ایشور کی ہدایت یاد ہے کہ عقل ہمیشہ خوب خرچ کرنے اور ایمان محفوظ رکھنے کی چیز ہے !

तीर्थों, पाक मुक़ामों, ईंट पत्थर के मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजों, मूर्तियों और बाहरी रीत रिवाजों की कुछ लोगों को उसी तरह ज़रूरत पड़ती ही है जिस तरह शुरू के पढ़ने वाले बच्चों को लकड़ी के टुकड़ों और खिलौनों की ज़रूरत पड़ती है. पर उस हद के बाहर यह चीज़ें लाभ के बजाय हानि पहुंचाने लगती हैं, लोगों के दिलों और दिमाग़ों को ठस कर देती हैं और प्रेम की जगह झगड़े की जड़ें बन जाती हैं. इसीलिये सब धर्मों के समझदार लोगों को चाहिये कि वह अधिक मूर्तियों, मंदिरों, मक़बरों, मस्जिदों वग़ैरा के बनने को रोकें. हिन्दू धर्म में कहा गया है कि कोई नया मन्दिर बनवाने की जगह किसी पुराने मन्दिर की ठीक ठीक मरम्मत कराकर उसे बनाए रखना ज़्यादा अच्छा है. इस्लाम में बताया गया है कि कोई नई मस्जिद ऐसी जगह नहीं बननी चाहिये कि जहां किसी पहली मस्जिद की अज़ान की आवाज़ पहुंच सकती हो.

मशहूर मुसलमान संत हज़रत जुनैद ने अपनी एक कहानी में ऊपरी दीन और भीतरी दीन के इस फ़र्क़ को या धर्म के अन्दर साधन और साध्य के फ़र्क़ को बड़ी सुन्दरता से समझाया है. कहानी यह है:—कोई आदमी काबे की हज करके लौटा और जुनैद से मिला. उसने जुनैद से कहा मैं हज की सारी रसमें ठीक ठीक अदा कर आया हूं. जुनैद ने उससे पूछा—"जिस समय से तुम अपने घर से सफ़र के लिये निकले उस समय से जितना जितना तुम अपने घर से दूर होते गये उतना उतना अपने गुनाहों से भी दूर होते गये या नहीं?" उस आदमी ने जवाब दिया—"नहीं!" जुनैद ने फिर कहा—"तो तुम ने घर से सफ़र किया ही नहीं. अच्छा अब यह बताओ कि हर पड़ाव पर जहां तुम ठहरे तुम एक पड़ाव और अल्लाह की तरफ़ बढ़े या नहीं?" उसने जवाब दिया—"नहीं!" जुनैद ने फिर कहा—"तो तुम ने अभी कोई पड़ाव किया ही नहीं. अब बताओ कि जब तुमने अपने मामूली कपड़े उतार कर अहराम बांधा (यानी हज के कपड़े पहने) तो कपड़ों के साथ साथ तुमने अपनी बुराइयों को फेंक कर उनकी जगह नेकियों को अपने ऊपर ओढ़ा या नहीं?" उसने जवाब दिया—"नहीं!" जुनैद ने फिर कहा—"तो तुम ने अहराम बांधा ही नहीं. अच्छा तो अब बताओ कि जब तुम इर्फ़ात की पहाड़ी पर खड़े हुए तो तुम्हारा दिल अल्लाह के ध्यान में डूबा हुआ था या नहीं?" उसने जवाब दिया—"नहीं!" जुनैद ने फिर कहा—"तो तुम इर्फ़ात पर खड़े ही नहीं हुए. अच्छा तो अब बताओ कि जब तुम ने काबे के चारों तरफ़ चक्कर लगाये तो तुमने ला मकान (यानी निराकार) अल्लाह की अलग अलग सिफ़तों पर ग़ौर किया या नहीं?" उसने जवाब दिया—"नहीं!" जुनैद ने

تیرتھوں، پاک مقاموں، اینٹ پتھر کے مندروں، مسجدوں، گرجوں، مورتیوں اور باہری ریت رواجوں کی کچھ لوگوں کو اسی طرح ضرورت پڑتی ہی ہے جس طرح شروع کے پڑھنے والے بچوں کو لکڑی کے ٹکڑوں اور کھلونوں کی ضرورت پڑتی ہے۔ پر اس حد کے باہر یہ چیزیں لابھ کے بجائے ہانی پہونچانے لگتی ہیں، لوگوں کے دلوں اور دماغوں کو ٹھس کر دیتی ہیں اور پریم کی جگہ جھگڑے کی جڑیں بن جاتی ہیں۔ اسی لئے سب دھرموں کے سمجھدار لوگوں کو چاہیئے کہ وہ ادھک مورتیوں، مندروں، مقبروں، مسجدوں وغیرہ کے بننے کو روکیں۔ ہندو دھرم میں کہا گیا ہے کہ کوئی نیا مندر بنوانے کی جگہ کسی پرانے مندر کی ٹھیک ٹھیک مرمت کرا کر اسے بنائے رکھنا زیادہ اچھا ہے۔ اسلام میں بتایا گیا ہے کہ کوئی نئی مسجد ایسی جگہ نہیں بننی چاہیئے کہ جہاں کسی پہلی مسجد کی اذان کی آواز پہونچ سکتی ہو۔

مشہور مسلمان سنت حضرت جنید نے اپنی ایک کہانی میں اوپری دین اور بھیتری دین کے اس فرق کو یا دھرم کے اندر سادھن اور سادھیہ کے فرق کو بڑی سندرتا سے سمجھایا ہے۔ کہانی یہ ہے:—کوئی آدمی کعبہ کی حج کرکے لوٹا اور جنید سے ملا۔ اس نے جنید سے کہا کہ میں حج کی ساری رسمیں ٹھیک ٹھیک ادا کر آیا ہوں۔ جنید نے اس سے پوچھا—"جس سمے سے تم اپنے گھر سے سفر کے لئے نکلے اس سمے سے جتنا جتنا تم اپنے گھر سے دور ہوتے گئے اتنا اتنا اپنے گناہوں سے بھی دور ہوتے گئے یا نہیں؟" اس آدمی نے جواب دیا—"نہیں!" جنید نے پھر کہا—"تو تم نے گھر سے سفر کیا ہی نہیں۔ اچھا اب یہ بتاؤ کہ ہر پڑاؤ پر جہاں تم ٹھہرے تم ایک پڑاؤ اور اللہ کی طرف بڑھے یا نہیں؟" اس نے جواب دیا—"نہیں!" جنید نے پھر کہا—"تو تم نے ابھی کوئی پڑاؤ کیا ہی نہیں۔ اب بتاؤ کہ جب تم نے اپنے معمولی کپڑے اتار کر احرام باندھا (یعنی حج کے کپڑے پہنے) تو کپڑوں کے ساتھ ساتھ تم نے اپنی برائیوں کو پھینک کر انکی جگہ نیکیوں کو اپنے اوپر اوڑھا یا نہیں؟" اس نے جواب دیا—"نہیں!" جنید نے پھر کہا—"تو تم نے احرام باندھا ہی نہیں۔ اچھا تو اب بتاؤ کہ جب تم عرفات کی پہاڑی پر کھڑے ہوئے تو تمہارا دل اللہ کے دھیان میں ڈوبا ہوا تھا یا نہیں؟" اس نے جواب دیا—"نہیں!" جنید نے پھر کہا—"تو تم عرفات پر کھڑے ہی نہیں ہوئے۔ اچھا تو اب بتاؤ کہ جب تم نے کعبہ کے چاروں طرف چکر لگائے تو تم نے لامکاں (یعنی نراکار) اللہ کی الگ الگ صفتوں پر غور کیا یا نہیں؟" اس نے

बुद्ध ने साफ़ शब्दों में कहा है कि—"आदमी को अपनी मुक्ति यानी नजात अपने अन्दर ही ढूंढनी चाहिये."

बुद्ध का सब से आख़िरी उपदेश यह बताया जाता है :—

"तुम अपनी आत्मा को ही अपने लिये चिराग़ बनाओ, अपनी आत्मा का ही सहारा लो, दूसरे किसी का सहारा न लो. बाहर की सब चीज़ों का सहारा और उनसे पैदा होने वाली इच्छाएं और उम्मीदें सब मिट जायेंगी. केवल आत्मा ही बाक़ी रह जायेगी. इसलिये ध्यान के साथ अपनी आत्मा को खोजने और समझने में लग जाओ."

जैनियों की किताब 'समाधि शतक' में भी यही बात इन्हीं शब्दों में कही गई है. फिर भी जैन मन्दिरों से बढ़ कर रुपया शायद किसी धर्म के मन्दिरों पर ख़र्च नहीं किया जाता. इनमें से कुछ मन्दिर बहुत ही सुन्दर और शानदार हैं. कलावन्तों की राय है कि आबू पहाड़ के जैन मन्दिर शान और सुन्दरता में आगरा के ताज से शायद कुछ ही कम हों.

गुरु नानक ने कहा है :—

काहे रे मन ! बन खोजन जाई !
सरब निवासी सदा अलेखा, तो संग रहत सदाई !
पहुप मांहि जस बास बसतु है, मुकुर मांहि जस छाई !
तैसे ही हरि बसत निरन्तर, घटहिं में खोजो, भाई !
भीतर बाहर एक ही जानो, यह गुरु ज्ञान बताई !
कहे नानक बिनु आपा चीन्हे, मिटे न भ्रम की काई !

यानी—ऐ मेरे दिल तू क्यों जंगलों में खोजने जाता है. वह ईश्वर सब के अन्दर है, सब जगह है. कहीं दिखाई नहीं देता लेकिन सदा तेरे साथ रहता है. जिस तरह फूल में ख़ुशबू रहती है और जिस तरह शीशे में अक्स रहता है वैसे ही ईश्वर हमेशा सब के दिलों में रहता है. ऐ भाई उसे अपने दिल के अन्दर ढूंढो, गुरु ने यह ज्ञान बताया है कि भीतर और बाहर सब एक ही जानो. नानक कहता है कि बिना अपने आपे को पहचाने जिहालत की काई नहीं मिट सकती.

एक और पंजाबी सूफ़ी संत ने कहा है :—

"ऐ भाई ! तू ढूंढने वाले को ढूंढ. तू दूसरे घरों के चक्कर में क्यों पड़ा है ? जिसे तू जंगलों में ढूंढता फिरता है वह सब का दोस्त कहीं ख़ुद तू ही न हो !"

लेकिन सिक्खों में भी ग्रंथ साहब के क़ीमती उपदेशों को समझने और उन पर अमल करने के बजाय ख़ुद ग्रंथ साहब को क़ीमती रेशमी कपड़ों में लपेट लपेटकर ऊंची जगह पर रक्खा जाता है और उन पर चंवर डुलाए जाते हैं.

بدھ نے صاف شبدوں نے کہا ہے کہ—" آدمی کو اپنی مکتی یعنی نجات اپنے اندر ہی ڈھونڈھنی چاہیئے."

بدھ کا سب سے آخری اُپدیش یہ بتایا جاتا ہے :—

" تم اپنی آتما کو ہی اپنے لئے چراغ بناؤ' اپنی آتما کا ہی سہارا لو' دوسرے کسی کا سہارا نہ لو . باہر کی سب چیزوں کا سہارا اور اُن سے پیدا ہونے والی اِچھائیں اور اُمیدیں سب مٹ جائیں گی . کیول آتما ہی باقی رہ جائے گی . اس لئے دھیان کے ساتھ اپنی آتما کو کھوجنے اور سمجھنے میں لگ جاؤ ."

جینیوں کی کتاب 'سمادھی شتک' میں بھی یہی بات اِنہیں شبدوں میں کہی گئی ہے . پھر بھی جین مندروں سے بڑھکر روپیہ شاید کسی دھرم کے مندروں پر خرچ نہیں کیا جاتا . اِن میں سے کچھ مندر بہت ہی سندر اور شاندار ہیں . کلاونتوں کی رائے ہے کہ آبو پہاڑ کے جین مندر شان اور سندرتا میں آگرہ کے تاج سے شاید کچھ ہی کم ہوں .

گرونانک نے کہا ہے :—

کاہے رے من ! بن کھوجن جائی !
سرب نواسی' سدا الیکھا' تو سنگ رہت سدائی !
'پہوپ مانہی جس باس بستو ہے' مکر مانہی جس چھائی !
تیسے ہی ہری بست نرنتر' گھٹہی میں کھوجو بھائی !
بھیتر باہر ایک ہی جانو' یہ گرو گیان بتائی !
کہے نانک بنو آپا چینہے' مٹے نہ بھرم کی کائی !

یعنی—اے میرے دل تو کیوں جنگلوں میں کھوجنے جاتا ہے . وہ ایشور سب کے اندر ہے' سب جگہ ہے . کہیں دکھائی نہیں دیتا لیکن سدا تیرے ساتھ رہتا ہے . جس طرح پھول میں خوشبو رہتی ہے اور جس طرح شیشے میں عکس رہتا ہے ویسے ہی ایشور ہمیشہ سب کے دلوں میں رہتا ہے . اے بھائی اسے اپنے دل کے اندر ڈھونڈھو' گرو نے یہ گیان بتایا ہے کہ بھیتر اور باہر سب ایک ہی جانو . نانک کہتا ہے کہ بنا اپنے آپے کو پہچانے جہالت کی کائی نہیں مٹ سکتی .

ایک اور پنجابی صوفی سنت نے کہا ہے :—

"اے بھائی ! تو ڈھونڈھنے والے کو ڈھونڈھ . تو دوسرے گھروں کے چکر میں کیوں پڑا ہے ؟ جسے تو جنگلوں میں ڈھونڈھتا پھرتا ہے وہ سب کا دوست کہیں خود تو ہی نہ ہو !"

لیکن سکھوں میں بھی گرنتھ صاحب کے قیمتی اُپدیشوں کو سمجھنے اور اُن پر عمل کرنے کے بجائے خود گرنتھ صاحب کو قیمتی ریشمی کپڑوں میں لپیٹ لپیٹ کر اُونچی جگہ پر رکھا جاتا ہے اور اُن پر چنور ڈلائے جاتے ہیں .

[की पूजा की जाती है जिसे 'कान यिन' बुद्ध कहते उसके हाथ में एक बच्चा होता है. उसे दया की देवी ा जाता है जो सारी दुनिया की प्रार्थनाएं सुनती है. ाम में फ़ातिमा और हसन हुसेन, ईसाई धर्म में मरियम उनका बेटा, हिन्दू धर्म में यशोदा और कृष्ण या शल्या और राम, यह सब मिलती जुलती चीज़ें हैं.

लेकिन इस तरह की चीज़ों को आदमी आम तौर वाजिब से अधिक महत्व देने लगता है. वह जल्दी ही से बाहर हो जाता है और उन चीज़ों की अच्छाई ई में बदल जाती है. हिन्दू मन्दिरों की गिरावट और इयां सब को मालूम हैं. मुसलमानों में भी क़ब्रों और रों की पूजा वैसी ही गिरी हुई हालत तक पहुंच गई -घर घर में मन्दिर और गली गली में मज़ार— लिये सब धर्मों के समझदार लोग आदमी को हमेशा ऊपरी चीज़ों से हटा कर अन्दर की चीज़ों और सलियत की तरफ़ लाने की कोशिश करते रहते हैं. सूफ़ी ता है :—

दिला तवाफ़े दिलां कुन की काबा मख़फ़ी अस्त
कि आं ख़लील बिना कर्द व ईं ख़ुदा ख़ुद साख़्त
ता के ज़्यारते मुक़ाबिर, ए अफ़सुरदा !
यक गुर्बए ज़िन्दा बह अज़ हज़ार शेर मुरदा

यानी—ऐ दिल ! दिलों की परिक्रमा कर कि उनके र काबा छिपा हुआ है. उस काबे को तो हज़रत लील ने बनाया था और इस काबे को ख़ुद ख़ुदा ने या है. ऐ बदक़िस्मत ! तू कब तक क़ब्रों की ज़्यारत ता रहेगा ? एक ज़िन्दा बिल्ली हज़ार मरे हुए शेरों से च्छी है.

हिन्दू परापूजा में लिखा है :—

"जो ईश्वर पूर्न यानी सब में है उसे एक मन्दिर के र कैसे बन्द किया जा सकता है, जो सबका आधार ो सहारा है उसे एक जगह ला कर कैसे बिठाया जा ता है, जिसका कोई ओर छोर नहीं उसकी प्रदक्षिना कैसे कर सकता है और जिसके सिवा कोई दूसरा है नहीं उसको कोई नमस्कार कैसे कर सकता है."

योग शास्त्र में लिखा है :—

"ईश्वर न स्वर्ग में रहते हैं न पाताल में, न पहाड़ों की ाओं में, न समुंदर की गहराई में. वह आदमी के की गुफ़ा में रहते हैं और उस गुफ़ा को अपने नूर रोशन किये हुए हैं. उसी नूर में आत्मा यह अनुभव ती है कि मैं कोई अलग वजूद हूं ही नहीं."

ठीक यही बात इन्हीं शब्दों में इंजील में जगह जगह गई है.

بدھ کی پوجا کی جاتی ہے جسے 'کوان ین' بدھ کہتے ہیں۔ اس کے ہاتھ میں ایک بچہ ہوتا ہے۔ اسے دیا کی دیوی مانا جاتا ہے جو ساری دنیا کی پرارتھنائیں سنتی ہے۔ اسلام میں فاطمہ اور حسن حسین، عیسائی دھرم میں مریم اور ان کا بیٹا، ہندو دھرم میں یشودا اور کرشن یا کوشلیا اور رام یہ سب ملتی جلتی چیزیں ہیں۔

لیکن اسطرح کی چیزوں کو آدمی عام طور پر اُچت سے ادھک مہتو دینے لگتا ہے۔ وہ جلدی ہی حد سے باہر ہو جاتا ہے اور ان چیزوں کی اچھائی برائی میں بدل جاتی ہے۔ ہندو مندروں کی گراوٹ اور برائیاں سب کو معلوم ہیں۔ مسلمانوں میں بھی قبروں اور مزاروں کی پوجا ویسی ہی گری ہوئی حالت تک پہنچ گئی ہے— گھر گھر میں مندر اور گلی گلی میں مزار—اسی لئے سب دھرموں کے سمجھدار لوگ آدمی کو ہمیشہ ان اوپری چیزوں سے ہٹا کر اندر کی چیزوں اور اصلیت کی طرف لانے کی کوشش کرتے رہتے ہیں۔

صوفی کہتا ہے :—

دلا طواف دلاں کن کہ کعبہ مخفی است
کہ آں خلیل بنا کرد وایں خدا خود ساخت
تاکے زیارت مقابر، اے افسردہ!
یک گربہ زندہ بہ از ہزار شیر مردہ

یعنی اے دل! دلوں کی پریکرما کر کہ ان کے اندر کعبہ چھپا ہوا ہے۔ اس کعبہ کو تو حضرت خلیل نے بنایا تھا اور اس کعبہ کو خود خدا نے بنایا ہے۔ اے بدقسمت! تو کب تک قبروں کی زیارت کرتا رہے گا؟ ایک زندہ بلی ہزار مرے ہوئے شیروں سے اچھی ہے۔

ہندو پرا پوجا میں لکھا ہے :—

" جو ایشور پورن یعنی سب میں ہے اسے ایک مندر کے اندر کیسے بند کیا جا سکتا ہے، جو سب کا آدھار یعنی سہارا ہے اسے ایک جگہ لا کر کیسے بٹھایا جا سکتا ہے، جس کا کوئی اور چھور نہیں اسکی پردکھشنا کوئی کیسے کر سکتا ہے اور جس کے سوا کوئی دوسرا ہے ہی نہیں اس کو کوئی نمسکار کیسے کر سکتا ہے۔"

یوگ شاستر میں لکھا ہے :—

" ایشور نہ سورگ میں رہتے ہیں نہ پاتال میں، نہ پہاڑوں کی کندراؤں میں، نہ سمندر کی گہرائی میں۔ وہ آدمی کے دل کی گفا میں رہتے ہیں اور اس گفا کو اپنے نور سے روشن کئے ہوئے ہیں۔ اسی نور میں آتما یہ انوبھو کرتی ہے کہ میں کوئی الگ وجود ہوں ہی نہیں۔"

ٹھیک یہی بات انہیں شبدوں میں انجیل میں جگہ جگہ کہی گئی ہے۔

काबे में अब बुत नहीं हैं फिर भी हाजियों का कहना है कि काबे की हज के रीत रिवाजों और हिन्दू तीर्थों के रीत रिवाजों में तरह तरह की समानता है. गंगा जल या मन्दिर के चरनामृत की जगह वहां ज़मज़म के पाक कुएं का पानी पिया जाता है. हाजी लोग ज़मज़म का पानी पीते भी हैं और अपने बदन पर छिड़कते भी हैं. वह उस पानी को बोतलों में भर कर भी अपने अपने देश ले जाते हैं और दूसरों को पिला कर पाक करते हैं. हज के समय केवल दो बेसिले कपड़े पहनते हैं जिन्हें 'अहराम' कहा जाता है. यह दोनों कपड़े बिलकुल हिन्दुओं के धोती और उत्तराय जैसे होते हैं. काबे की परिक्रमा की जाती है जिसे 'तवाफ़' कहते हैं. हज्रुल असवद को बोसा दिया जाता है. हाजी लोग वहां ध्यान जमा कर बैठते हैं. हज के वक़्त मुसलमान पंडे और मंगते इसी तरह उन्हें चारों तरफ़ से घेरते हैं जैसे हिन्दू मन्दिरों में. काबे के दो ख़ास पत्थर हैं हज्रुल असवद और हज्रुल यमान जिन की बाबत कहा जाता है कि यह दोनों आसमान से गिरे हुए टूटे तारे हैं जिन्हें अंग्रेज़ी में मीटियर कहते हैं, यानी आदमियों के गढ़े हुए नहीं हैं. हिन्दुस्तान के कई मशहूर मन्दिरों में जो शिव लिंग स्थापित हैं उनकी बाबत भी यही कहा जाता है. इन्जील के पुराने अहदनामे में भी एक जगह लिखा है :—

"अगर तुम ईश्वर के लिये पत्थर की वेदी बनाओ तो उसे आदमी के हाथ से गढ़े हुए पत्थर से न बनाओ, क्योंकि अगर तुमने औज़ार लेकर उसके ऊपर चलाना तो उसे नापाक कर दोगे."

मुसलमान यात्री यानी ज़ाइर मक्का के अलावा मदीना, नजफ़, करबला, मशहद वग़ैरा और तीर्थों की भी ज़्यारत करते हैं. ज़्यारत और ज़ाइर और यात्रा और यात्री चारों शब्द एक ही असल से निकले हैं और एक हैं.

यहूदी धर्म का सबसे बड़ा तीर्थ येरूसलम है. ईसाई धर्म के भी अनेक तीर्थ हैं जिनमें से कुछ वह हैं जिनका हज़रत ईसा के जीवन के साथ कुछ न कुछ सम्बन्ध रहा है. रोमन कैथलिक गिरजों में मरियम, ईसा और ईसाई सन्तों की मूर्तियां भरी रहती हैं जिस तरह हिन्दू मन्दिरों में हिन्दू देवी देवताओं की और उनकी ठीक उसी तरह पूजा की जाती है, धूप दीप जलाए जाते हैं, जल छिड़का जाता है और घन्टे घड़ियाल बजाये जाते हैं जिस तरह हिन्दू मन्दिरों में.

एक आदर्श मां और उसके गोद के बच्चे की पूजा भी लगभग सब धर्मों में किसी न किसी रूप में मिलती है और एक दर्जे तक क़ुदरती, अच्छी और मुफ़ीद है. यहां तक कि चीन के बौद्ध धर्म में भी एक नारी रूप में

کعبہ میں اب بت نہیں ہیں پھر بھی حاجیوں کا کہنا ہے کہ کعبہ کی حج کے ریت رواجوں اور ہندو تیرتھوں کے ریت رواجوں میں طرح طرح کی سمانتا ہے۔ گنگا جل یا مندر کے چرنامرت کی جگہ وہاں زمزم کے پاک کنویں کا پانی پیا جاتا ہے۔ حاجی لوگ زمزم کا پانی پیتے بھی ہیں اور اپنے بدن پر چھڑکتے بھی ہیں۔ وہ اس پانی کو بوتلوں میں بھر کر بھی اپنے اپنے دیش لے جاتے ہیں اور دوسروں کو پلاکر پاک کرتے ہیں۔ حج کے سمے سب کیول دو بے سلے کپڑے پہنتے ہیں جنہیں 'احرام' کہا جاتا ہے۔ یہ دونوں کپڑے بالکل ہندوؤں کے دھوتی اور اترییہ جیسے ہوتے ہیں۔ کعبہ کی پریکرما کی جاتی ہے جسے 'طواف' کہتے ہیں۔ حجرالاسود کو بوسہ دیا جاتا ہے۔ حاجی لوگ وہاں دھیان جما کر بیٹھتے ہیں۔ حج کے وقت مسلمان پنڈے اور منگتے اسی طرح انہیں چاروں طرف سے گھیرتے ہیں جیسے ہندو مندروں میں۔ کعبہ کے دو خاص پتھر ہیں حجرالاسود اور حجرالیمان جن کی بابت کہا جاتا ہے کہ یہ دونوں آسمان سے گرے ہوئے ٹوٹے تارے ہیں جنہیں انگریزی میں میٹیر کہتے ہیں' یعنی وہ آدمی کے گھڑے ہوئے نہیں ہیں۔ ہندوستان کے کئی مشہور مندروں میں جو شیولنگ استھاپت ہیں ان کی بابت بھی یہی کہا جاتا ہے۔ انجیل کے پرانے عہدنامے میں بھی ایک جگہ لکھا ہے :—

"اگر تم ایشور کے لئے پتھر کی ویدی بناؤ تو اسے آدمی کے ہاتھ سے گھڑے ہوئے پتھر سے نہ بناؤ' کیونکہ اگر تم نے اوزار لیکر اس کے اوپر چلایا تو اسے ناپاک کردوگے۔"

مسلمان یاتری یعنی زائر مکہ کے علاوہ مدینہ' نجف' کربلا' مشہد وغیرہ اور تیرتھوں کی بھی زیارت کرتے ہیں۔ زیارت اور زائر اور یاترا اور یاتری چاروں شبد ایک ہی اصل سے نکلے ہیں اور ایک ہیں۔

یہودی دھرم کا سب سے بڑا تیرتھ یروشلم ہے۔ عیسائی دھرم کے بھی انیک تیرتھ ہیں جن میں سے کچھ وہ ہیں جن کا حضرت عیسیٰ کے جیون کے ساتھ کچھ نہ کچھ سمبندھ رہا ہے۔ رومن کیتھلک گرجوں میں مریم' عیسیٰ اور عیسائی سنتوں کی مورتیاں بھری رہتی ہیں جس طرح ہندو مندروں میں ہندو دیوی دیوتاؤں کی اور ان کی ٹھیک اسی طرح پوجا کی جاتی ہے' دھوپ دیپ جلائے جاتے ہے' جل چھڑکا جاتا ہے اور گھنٹے گھڑیال بجائے جاتے ہیں جسطرح ہندو مندروں میں۔

ایک آدرش ماں اور اس کے گود کے بچے کی پوجا بھی لگ بھگ سب دھرموں میں کسی نہ کسی روپ میں ملتی ہے اور ایک درجہ تک قدرتی' اچھی اور مفید ہے' یہاں تک کہ چین کے بودھ دھرم میں بھی ایک ناری روپ میں

छेड़ने या किसी जानवर की तरफ़ उंगली उठाने तक की इजाज़त नहीं है. सैर करने वालों की मोटरें शेरों और हाथियों के पास तक जा कर खड़ी हो जाती हैं. न कोई किसी से डरता है और न कोई किसी को छेड़ता है. दुनिया भर में जंगली जानवरों की रक्षा के लिये तरह तरह के क़ानून हैं. आदमी अपने को बार बार भूलता है और फिर बार बार धीरे धीरे अपने को पहचानता है.

हम ऊपर कह चुके हैं कि हर मज़हब में आदमी को किसी न किसी ठोस चीज़ की ज़रूरत पड़ती है जिस से वह प्रेम कर सके या जिस पर श्रद्धा दिखा सके. इस तरह की चीज़ों, तीर्थों, मन्दिरों, मस्जिदों या गिरजों से लाखों लोगों के दिल आपस में मिलते हैं, दुनिया भर के लोग आ आ कर इन स्थानों में जमा होते हैं. वहां एक मज़हबी वातावरन पैदा होता है. उन्हीं रास्तों से दुनिया में लेन देन, तिजारत, तरह तरह के विचार, सभ्यता और कलचर फैलते हैं और मानव एकता की कड़ियां मज़बूत होती हैं.

हज़रत मोहम्मद ने मक्का के तीन सौ साठ बुतों को उनकी जगह से हटवा कर फिंकवा दिया क्योंकि उस समय की बुतपरस्ती के बुरे नतीजों को उन्होंने अच्छी तरह देख लिया था. लेकिन वह इन्सान के दिल की ज़रूरतों को जानते थे. उन्होंने हज़रत इब्राहीम के बनाये हुए "अल्लाह के घर" काबा को क़ायम रक्खा, उसमें हज्रुल-असवद को क़ायम रक्खा और बड़ी दूरअंदेशी के साथ उसे दुनिया के करोड़ों ईमान वालों के हर साल मिलने की जगह ठहराई. नमाज़ में काबे की तरफ़ मुंह करना हर मुसलमान का फ़र्ज़ बताया. लेकिन साथ ही उन्होंने इस बात का ख़्याल रक्खा कि इस काबा या पूरब पच्छिम के मामले में कहीं लोग लकीर के फ़क़ीर ही बन कर न रह जावें. क़ुरान में साफ़ लिखा है कि :—

"पूरब और पच्छिम दोनों अल्लाह के हैं, और जिधर भी तुम नमाज़ में मुंह करो उधर ही अल्लाह का मुंह है, अल्लाह सब कुछ जानने वाला और सब जगह है. नेकी इसमें नहीं है कि तुम ने नमाज़ के वक़्त अपना मुंह पूरब की तरफ़ कर लिया या पच्छिम की तरफ़ कर लिया, नेकी इसमें है कि तुम एक अल्लाह को मानो और योमे आख़िरत यानी करमों के फल मिलने को मानो और सब फ़रिश्तों, सब किताबों और सब नबियों को मानो."

नमाज़ या इबादत के वक़्तों के बारे में मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है :—

"अल्लाह के लिये न कोई सुबह है और न कोई शाम."

क़ुरान में लिखा है :—

"तुम जब भी और जहां भी हो अल्लाह तुम्हारे साथ है."

چھیڑنے یا کسی جانور کی طرف انگلی اٹھانے تک کی اجازت نہیں ہے . سیر کرنے والوں کی موٹریں شیروں اور ہاتھیوں کے پاس تک جاکر کھڑی ہو جاتی ہیں . نہ کوئی کسی سے ڈرتا ہے اور نہ کوئی کسی کو چھیڑتا ہے. دنیا بھر میں جنگلی جانوروں کی رکشا کے لئے طرح طرح کے قانون ہیں . آدمی اپنے کو بار بار بھولتا ہے اور پھر بار بار دھیرے دھیرے اپنے کو پہچانتا ہے .

ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ ہر مذہب میں آدمی کو کسی نہ کسی ٹھوس چیز کی ضرورت پڑتی ہے جس سے وہ پریم کرسکے یا جس پر شردھا دکھا سکے . اس طرح کی چیزوں، تیرتھوں، مندروں، مسجدوں یا گرجوں سے لاکھوں لوگوں کے دل آپس میں ملتے ہیں، دنیا بھر کے لوگ آ آکر ان استھانوں میں جمع ہوتے ہیں . وہاں ایک مذہبی واتاورن پیدا ہوتا ہے. انہیں راستوں سے دنیا میں لین دین، تجارت، طرح طرح کے وچار، سبھیتا اور کلچر پھیلتے ہیں اور مانو ایکتا کی کڑیاں مضبوط ہوتی ہیں .

حضرت محمد نے مکہ کے تین سو ساٹھ بتوں کو انکی جگہ سے ہٹوا کر پھنکوا دیا کیونکہ اس سمے کی بت‌پرستی کے برے نتیجوں کو انہوں نے اچھی طرح دیکھ لیا تھا . لیکن وہ انسان کے دل کی ضرورتوں کو جانتے تھے . انہوں نے حضرت ابراہیم کے بنائے ہوئے "اللہ کے گھر" کعبہ کو قائم رکھا، اس میں حجرالاسود کو قائم رکھا اور بڑی دور اندیشی کے ساتھ اسے دنیا کے کروڑوں ایمان والوں کے ہر سال ملنے کی جگہ ٹھہرائی . نماز میں کعبہ کی طرف منہ کرنا ہر مسلمان کا فرض بتایا . لیکن ساتھ ہی انہوں نے اس بات کا خیال رکھا کہ اس کعبہ یا پورب پچھم کے معاملے میں کہیں لوگ لکیر کے فقیر ہی بن کر نہ رہ جاویں .

قرآن میں صاف لکھا ہے کہ :—

"پورب اور پچھم دونوں اللہ کے ہیں، اور جدھر بھی تم نماز میں منہ کرو ادھر ہی اللہ کا منہ ہے، اللہ سب کچھ جاننے والا اور سب جگہ ہے . نیکی اس میں نہیں ہے کہ تم نے نماز کے وقت اپنا منہ پورب کی طرف کرلیا یا پچھم کی طرف کرلیا، نیکی اس میں ہے کہ تم ایک اللہ کو مانو اور یوم آخرت یعنی کرموں کے پھل ملنے کو مانو اور سب فرشتوں، سب کتابوں اور سب نبیوں کو مانو ."

نماز یا عبادت کے وقتوں کے بارے میں محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—

"اللہ کے لئے نہ کوئی صبح ہے اور نہ کوئی شام ."

قرآن میں لکھا ہے :—

"تم جب بھی اور جہاں بھی ہو اللہ تمہارے ساتھ ہے ."

इसी तरह हर मजहब वालों के खास खास तीर्थ स्थान, पाक मुक़ाम, मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, अग्यारी, गुरुद्वारे वग़ैरा होते हैं. इन सब की ग़रज़ यही है कि आदमी का दिल दर्जा बदर्जा ऊंचे धार्मिक विचारों और रूहानी आदर्शों की तरफ़ बढ़ता चला जाये जो लोग निराकार यानी ला-मकान का ख़्याल या उसका ध्यान कर सकने के नाक़ाबिल, हैं उन्हें इन से मदद मिलती है. पारसी 'अग्यारी' वही चीज़ है जो हिन्दू 'अग्नि अगारा' या 'अग्नि होत्र'.

हिन्दुस्तान के उत्तर से दक्खिन तक हिन्दुओं के सात पवित्र शहर मशहूर हैं और हज़ारों बरस से चले आते हैं —माया पुरी जिसे आजकल हरिद्वार कहते हैं, मथुरा, अयोध्या, काशी, अवन्तिका जिसे उज्जैन कहते हैं, कांची जिसे कंजीवरम कहते हैं और द्वारका. किसी ज़माने में यह सातों विद्या के खास स्थान थे. इन सातों को ब्रह्मपुरी या विद्यापीठ भी कहते थे. आजकल इनकी जगह एक दर्जे तक यूनीवर्सिटियों ने ले ली हैं. इनमें काशी अभी तक विद्या की एक बहुत बड़ी जगह है और कम से कम तीन हज़ार बरस से चली आ रही है. इसी तरह हिन्दुओं के चार धाम हैं-- उत्तर में बद्रीनाथ, पूरब में जगन्नाथ, दक्खिन में रामेश्वर और पच्छिम में द्वारका.

बौध धर्म वालों के चार खास तीर्थ हैं—एक लुम्बिनी बन जहां बुद्ध पैदा हुए थे; दूसरा बुद्ध गया, जहां उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था; तीसरा सारनाथ, जहां उन्होंने अपने धर्म का प्रचार शुरू किया और चौथा कुशीनगर जहां उनका विसाल यानी परनिरवान हुआ.

सारनाथ बनारस के पास एक जगह है जिसका पुराना नाम सारंगनाथ था. सारंग संस्कृत में हिरन को कहते हैं. वहां किसी समय शिव जी का एक बहुत बड़ा मन्दिर था जिसके आस पास हिरनों का एक बहुत बड़ा जंगल था. लेकिन किसी को वहां के किसी हिरन को मारने या उस जंगल में शिकार खेलने की इजाज़त नहीं थी. इसीलिये उस मन्दिर के शिव जी को सारंगनाथ और उस जंगल को सारंग बन कहते थे. आदमी के अन्दर जानवरों से प्रेम और उन पर दया का भाव भी हर धर्म के साथ साथ शुरू से चला आता है. हज़रत ईसा अपनी भेड़ों के गड़रिया कहलाते थे, उनकी तसवीरों में भी अकसर मेमना हाथों में रहता है. इंजील में उन्होंने बार बार अपनी भेड़ों का ज़िक्र किया है. आजकल की दुनिया में भी ख़ुद अमरीका के अन्दर यलो स्टोन पार्क (Yellow Stone Park) है जहां हज़ारों जानवर रहते हैं और किसी को शिकार की इजाज़त नहीं. यूरोप भर में हज़ारों चिड़ियाघर हैं. अफ्रीका में हथियों, शेरों और तरह तरह के बड़े बड़े जानवरों के बड़े बड़े जंगल हैं जहां किसी को शिकार

اسی طرح هر مذهب والوں کے خاص خاص تیرتھ استھان' پاک مقام' مندر' مسجد' گرجے' اگیاری' گوردوارے وغیرہ هوتے هیں . ان سب کی غرض یہی ہے کہ آدمی کا دل درجہ بدرجہ اونچے دھارمک وچاروں اور روحانی آدرشوں کی طرف بڑھتا چلا جائے . جو لوگ نراکار یعنی لامکان کا خیال یا اس کا دھیان کرسکنے کے ناقابل هیں انہیں ان سے مدد ملتی هے . پارسی 'اگیاری' وهی چیز هے جو هندو 'اگنی اگارا' یا 'اگنی هوتر'.

هندستان کے اتر سے دکھن تک هندوؤں کے سات پوتر شہر مشہور هیں اور هزاروں برس سے چلے آتے هیں—مایا پوری جسے آجکل هردوار کہتے هیں' متھرا' ایودھیا' کاشی' اونتکا جسے اجین کہتے هیں' کانچی' جسے کنجی ورم کہتے هیں اور دوارکا . کسی زمانے میں یہ ساتوں ودیا کے خاص استھان تھے . ان ساتوں کو برهمه پوری یا ودیاپیٹھ بھی کہتے تھے. آج کل انکی جگہ ایک درجہ تک یونیورسٹیوں نے لے لی هیں . ان میں کاشی ابھی تک ودیا کی ایک بہت بڑی جگہ هے اور کم سے کم تین هزار برس سے چلی آرهی هے . اسی طرح هندوؤں کے چار دھام هیں—اتر میں بدری ناتھ' پورب میں جگناتھ' دکھن میں رامیشور اور پچھم میں دوارکا .

بودھ دھرم والوں کے چار خاص تیرتھ هیں—ایک لمبنی بن' جہاں بدھ پیدا هوئے تھے؛ دوسرا بدھ گیا' جہاں انہیں گیان پراپت هوا تھا؛ تیسرا سارناتھ' جہاں انہوں نے اپنے دھرم کا پرچار شروع کیا اور چوتھا کشی نگر جہاں ان کا وصال یعنی پرنروان هوا .

سارناتھ بنارس کے پاس ایک جگہ هے جس کا پرانا نام سارنگ ناتھ تھا . سارنگ سنسکرت میں هرن کو کہتے هیں . وهاں کسی سمے شیوجی کا ایک بہت بڑا مندر تھا جس کے آس پاس هرنوں کا ایک بہت بڑا جنگل تھا . لیکن کسی کو وهاں کے کسی هرن کو مارنے یا اس جنگل میں شکار کھیلنے کی اجازت نہیں تھی . اسی لئے اس مندر کے شیوجی کو سارنگ ناتھ اور اس جنگل کو سارنگ بن کہتے تھے . آدمی کے اندر جانوروں سے پریم اور ان پر دیا کا بھاؤ بھی هر دھرم کے ساتھ ساتھ شروع سے چلا آتا هے . حضرت عیسی اپنی بھیڑوں کے گڈریے کہلاتے تھے . ان کی تصویروں میں بھی اکثر میمنا هاتھوں میں رهتا هے . انجیل میں انہوں نے بار بار اپنی بھیڑوں کا ذکر کیا هے . آج کل کی دنیا میں بھی خود امریکہ کے اندر یلو اسٹون پارک (Yellow Stone Park) هے جہاں هزاروں جانور رهتے هیں اور کسی کو شکار کی اجازت نہیں . یورپ بھر میں هزاروں چڑیا گھر هیں . افریقہ میں هاتھیوں' شیروں اور طرح طرح کے بڑے بڑے جانوروں کے بڑے بڑے جنگل هیں جہاں کسی کو شکار

ा को बढ़ावा या फैलाना और इस पर जम जाना ग़लत र दीन धर्म के मामले में लोगों की तरक़्क़ी को कना है. लोगों को यह बराबर बताते रहना चाहिये कि र्ति ईश्वर नहीं है, ईश्वर केवल एक और निराकार है र्ति अधिक से अधिक एक बेजान अलामत है जो हमें ईश्वर की याद दिला दे और उसका ध्यान करने में छ मदद दे दे.

सूफ़ी धर्म की एक मशहूर किताब 'गुलशने राज़' के लिम लेखक से किसी ने पूछा कि बुत क्या चीज़ है र जनेऊ क्या चीज़ है? विद्वान मुसलमान लेखक ने वाब दिया :—

बुत ईं जा मज़हरे इश्क़ अस्तो वहदत
बवद ज़ुन्नार बस्तन अक़्दे ख़िदमत
चुं अशया हस्त हस्ती रा मज़ाहिर
अज़ां जुम्ला बुत हम यक बाशिन्द आख़िर
नदीद ओ अज़ बुत इल्ला ख़ल्क़ ज़ाहिर
अज़ीं जह शुद ओ अन्दर शर्आ क़ाफ़िर
तो हम गर ज़ू न बीनी हक़्क़े पिनहां
बबायद कि न गोयन्दत मुसलमां
मुसलमां गर बदानिस्ते कि बुत चीस्त
बिदानिस्ते कि दीं दर बुत परस्तीस्त

यानी—मूर्ति यहां अल्लाह के प्रेम और उसकी एकता ो ज़ाहिर करती है और जनेऊ बांधना ईश्वर की सेवा लिये कमर कसना है. दुनिया की सब चीज़ें उसी एक ल्लाह के ज़हूर यानी रूप हैं. मूर्ति भी इन्हीं सब चीज़ों से एक है. मूर्ति पूजने वाले ने मूर्ति के अन्दर सिवा बाहर ी मिट्टी, पत्थर के और कुछ न देखा इसीलिये इस्लामी रअ के अन्दर वह काफ़िर कहलाया. ऐ मुसलमान! तू भी गर जल्दी से मूर्ति के अन्दर छुपे हुए हक़ यानी अल्लाह नहीं देख सकता तो तू भी मुसलमान कहलाने का दार नहीं है. मुसलमान अगर यह जान जाये कि मूर्ति या चीज़ है तो वह यह भी समझ जाये कि मूर्ति पूजा में न है.

कहते हैं कि हज़रत उमर जब काबा के काले पत्थर हजरुल-सवद को बोसा देने से झिझके तो हज़रत अली ने उनसे हा—"अलहज्र यमीनुल्लाह फ़िलअर्ज़" यानी—यह पत्थर स ज़मीन पर अल्लाह का दायां हाथ है. इसके बाद ज़रत उमर ने हजरुल असवद को यह कह कर बोसा दिया के "ऐ पत्थर! मैं ख़ूब जानता हूं कि तू सिर्फ़ पत्थर है. तू किसी का कोई फ़ायदा नुक़सान नहीं कर सकता. मैं तुझे र्गिज़ बोसा न देता अगर मैंने रसूल के पाक लबों को झे बोसा देते न देखा होता."

پوجا کو بڑھاوا یا پھیلانا اور اس پر جم جانا غلط اور دین دھرم کے معاملے میں لوگوں کی ترقی کو روکنا ہے ۔ لوگوں کو یہ برابر بتاتے رہنا چاہیئے کہ مورتی ایشور نہیں، ایشور کیول ایک اور نراکار ہے ۔ مورتی ادھک سے ادھک ایک بےجان علامت ہے جو ہمیں اس ایشور کی یاد دلا دے اور اسکا دھیان کرنے میں کچھ مدد دے دے ۔

صوفی دھرم کی ایک مشہور کتاب 'گلشن راز' کے عالم لیکھک سے کسی نے پوچھا کہ بت کیا چیز ہے اور جنیو کیا چیز ہے؟ ودوان مسلمان لیکھک نے جواب دیا :—

بت اینجا مظہر عشق است و وحدت
بود زنار بستن عقد خدمت
چوں اشیا ہست ہستی را مظاہر
ازاں جملہ بت ہم یک باشند آخر
نہ دید او از بت إلا خلق ظاہر
ازیں جہ شد او اندر شرع کافر
تو ہم گر زو نہ بینی حق پنہاں
بباید کہ نہ گویندت مسلماں
مسلماں گر بدانستے کہ بت چیست
بدانستے کہ دیں در بت پرستیست

یعنی—مورتی یہاں اللہ کے پریم اور اسکی ایکتا کو ظاہر کرتی ہے اور جنیو باندھنا ایشور کی سیوا کے لئے کمر کسنا ہے ۔ دنیا کی سب چیزیں اسی ایک اللہ کے ظہور یعنی روپ ہیں ۔ مورتی بھی انہیں سب چیزوں میں سے ایک ہے ۔ مورتی پوجنے والے نے مورتی کے اندر سوا باہر کی مٹی، پتھر کے اور کچھ نہ دیکھا اسی لئے اسلامی شرع کے اندر وہ کافر کہلایا ۔ اے مسلمان! تو بھی اگر جلدی سے مورتی کے اندر چھپے ہوئے حق یعنی اللہ کو نہیں دیکھ سکتا تو تو بھی مسلمان کہلانے کا حقدار نہیں ہے ۔ مسلمان اگر یہ جان جائے کہ مورتی کیا چیز ہے تو وہ یہ بھی سمجھ جائے کہ مورتی پوجا میں دین ہے ۔

کہتے ہیں کہ حضرت عمر جب کعبہ کے کالے پتھر حجرالاسود کو بوسہ دینے سے جھجھکے تو حضرت علی نے ان سے کہا—"الحجر یمین اللہ فی الارض ." یعنی—یہ پتھر اس زمین پر اللہ کا دایاں ہاتھ ہے ۔ اس کے بعد حضرت عمر نے حجرالاسود کو یہ کہکر بوسہ دیا کہ "اے پتھر! میں خوب جانتا ہوں کہ تو صرف پتھر ہے ۔ تو کسی کا کوئی فائدہ نقصان نہیں کرسکتا ۔ میں تجھے ہرگز بوسہ نہ دیتا اگر میں نے رسول کے پاک لبوں کو تجھے بوسہ دیتے نہ دیکھا ہوتا ."

का सच्चा और साफ़ था. उसने सोचा कि मैं भी मरियम को ख़ुश करके अपनी जीविका के लिये दुआ मांगूं. वह गिरजा में बैठ गया. जब सब पादरी और दूसरे लोग चले गये तो उसने अन्दर से दरवाज़ा बन्द करके मरियम की मूर्ति के सामने मां मरियम को ख़ुश करने के लिये अपने सब खेल करने शुरू कर दिये. किसी पादरी ने किवाड़ के सन्धों में से देखा कि वह सिर नीचे और पांव ऊपर किये मरियम को अपने तमाशे दिखा रहा है. पादरी को ग़ुस्सा आया. दरवाज़ा खुलवा कर उसने उस बाज़ीगर को मार कर वहां से निकालना चाहा. इतने में पादरी की आंखों के सामने एक रोशनी सी दिखाई दी. उस रोशनी में उसने देखा कि मां मरियम अपनी जगह से हट कर ख़ुद अपने आंचल से उस बाज़ीगर के मुंह का पसीना पोंछ रही हैं. इस बीच कई पादरी वहां और आ पहुंचे. उन सब ने यह चमत्कार देखा. वह बाज़ीगर को छोड़ कर घुटनों के बल गिर पड़े और कहने लगे—"मुबारक हैं वह लोग जो दिल के पाक साफ़ हैं क्योंकि ईश्वर के दर्शन उन्हीं को मिल सकते हैं."

हिन्दू धर्म की भक्ति की किताबों में इस तरह की कहानियां भरी पड़ी हैं. सम्राट अकबर के मशहूर गवैये तानसेन के गुरु हरिदास के बारे में जो कृश्न के भक्त थे और रामायन के लेखक गोस्वामी तुलसीदास के बारे में जो राम के भक्त थे इस तरह की कहानियां मशहूर हैं. कहा जाता है कि सम्राट अकबर ने भी हरिदास की झोंपड़ी में जा कर इस तरह के नज़ारे देखे थे. हरिदास और तुलसीदास का समय एक ही था.

हमें यहां इस तरह की कहानियों के सच्चे या झूटे होने से मतलब नहीं है. मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में बार बार कहा है कि—"मेरी कहानियों के लफ़्ज़ों पर मत जाओ, उनके सच और झूट को मत देखो, केवल यह जानने की कोशिश करो कि मैं इन कहानियों के ज़रिये क्या समझाना चाह रहा हूं." इस तरह की कहानियां सब धर्मों में मिलती हैं. इसका केवल यह मतलब है कि सब धर्मों में दिल की सफ़ाई पर सबसे अधिक ज़ोर दिया गया है और ईश्वर अल्लाह तक पहुंचने के लिये उस विश्वास को ज़रूरी माना गया है जिसकी बाबत कहा जाता है कि विश्वास पहाड़ों को भी उनकी जगह से हटा देता है. दिलों की पाकी और सच्चाई ही भगवान को सब से अधिक प्यारी होती है क्योंकि भगवान प्रेम रूप हैं, प्रेम ही भगवान हैं.

मूर्ति पूजा भी एक ख़ास हालत में ख़ास तरह के लोगों के लिये और एक हद के अन्दर लाभदायक हो सकती है बशर्ते कि उसे उसी हद के अन्दर रक्खा जाये. मूर्ति

کا سچا اور صاف تھا . اُس نے سوچا کہ میں بھی مریم کو خوش کر کے اپنی جیویکا کے لئے دعا مانگوں . وہ گرجا میں بیٹھ گیا . جب سب پادری اور دوسرے لوگ چلے گئے تو اُس نے اندر سے دروازہ بند کر کے مریم کی مورتی کے سامنے ماں مریم کو خوش کرنے کے لئے اپنے سب کھیل کرنے شروع کر دیئے . کسی پادری نے کواڑ کی سندوں میں سے دیکھا کہ وہ سر نیچے اور پاؤں اوپر کئے مریم کو اپنے تماشے دکھا رہا ہے . پادری کو غصہ آیا . دروازہ کھلوا کر اُس نے اُس بازیگر کو مار کر وہاں سے نکالنا چاہا . اتنے میں پادری کی آنکھوں کے سامنے ایک روشنی سی دکھائی دی . اُس روشنی میں اُس نے دیکھا کہ ماں مریم اپنی جگہ سے ہٹ کر خود اپنے آنچل سے اُس بازیگر کے منہ کا پسینہ پونچھ رہی ہیں . اس بیچ کئی پادری وہاں اور آ پہونچے . اُن سب نے یہ چمتکار دیکھا . وہ بازیگر کو چھوڑ کر گھٹنوں کے بل گر پڑے اور کہنے لگے—" مبارک ہیں وہ لوگ جو دل کے پاک صاف ہیں کیونکہ ایشور کے درشن انہیں کو مل سکتے ہیں ."

ہندو دھرم کی بھکتی کی کتابوں میں اِسطرح کی کہانیاں بھری پڑی ہیں . سمراٹ اکبر کے مشہور گویئے تان سین کے گرو ہری داس کے بارے میں جو کرشن کے بھکت تھے اور رامائن کے لیکھک گوسوامی تلسی‌داس کے بارے میں جو رام کے بھکت تھے اِسی طرح کی کہانیاں مشہور ہیں. کہا جاتا ہے کہ سمراٹ اکبر نے بھی ہری‌داس کی جھونپڑی میں جا کر اِسطرح کے نظارے دیکھے تھے . ہری‌داس اور تلسی داس کا سمے ایک ہی تھا .

ہمیں یہاں اِسطرح کی کہانیوں کے سچے یا جھوٹے ہونے سے مطلب نہیں ہے . مولانا روم نے اپنی مثنوی میں بار بار کہا ہے کہ—" میری کہانیوں کے لفظوں پر مت جاؤ' اُن کے سچ اور جھوٹ کو مت دیکھو' کیول یہ جاننے کی کوشش کرو کہ میں اُن کہانیوں کے ذریعہ کیا سمجھانا چاہ رہا ہوں." اِسطرح کی کہانیاں سب دھرموں میں ملتی ہیں . اِس کا کیول یہ مطلب ہے کہ سب دھرموں میں دل کی صفائی پر سب سے ادھک زور دیا گیا ہے اور ایشور اللہ تک پہونچنے کے لئے اُس وشواس کو ضروری مانا گیا ہے جس کی بابت کہا جاتا ہے کہ وشواس پہاڑوں کو بھی اُن کی جگہ سے ہٹا دیتا ہے . دلوں کی پاکی اور سچائی ہی بھگوان کو سب سے ادھک پیاری ہوتی ہے کیونکہ بھگوان پریم روپ ہیں' پریم ہی بھگوان ہیں .

مورتی پوجا بھی ایک خاص حالت میں خاص طرح کے لوگوں کے لئے اور ایک حد کے اندر لابھدایک ہو سکتی ہے بشرطیکہ کہ اِسے اُسی حد کے اندر رکھا جائے . مورتی

पहुंचने का रास्ता दिल है, दिमाग़ नहीं. हमने अलग अलग लोगों के लिये अलग अलग तरीक़े बना रक्खे हैं.

हिन्दियां रा इस्तलाहे दादा अन्द
सिन्धयां रा इस्तलाहे दीगर अन्द

ऐ मूसा ऊपर के आदाब को जानने वाले लोग और होते हैं और वह सच्चे आशिक़ जिनके अन्दर इश्क़ की आग लगी होती है दूसरे होते हैं.

मूसिया आदाब दाना दीगर अन्द
आशिक़ां सोख्ते रूंनां दीगर अन्द

इश्क़ का मज़हब सब दीनों से अलग है. जो सच्चे आशिक़ हैं उनके लिये मज़हब और मिल्लत सब हम ही हम हैं.

मज़हबे इश्क़ अज़ हमा दुनिया जुदा अस्त
आशिक़ां रा मज़हबो मिल्लत ख़ुदा अस्त."

वग़ैरा वग़ैरा.

मूसा ने घबरा कर पूछा—"ऐ अल्लाह ! मुझसे ग़लती हो गई. अब मैं क्या करूं ?"

अल्लाह ने जवाब दिया—'ऐ मूसा ! जा उस गड़रिये को ढूंढ और उसे यह ख़ुशख़बरी दे कि वह ठीक था और तू ग़लत और उसके लिये अल्लाह की तरफ़ से सब माफ़ है."

हज़रत मूसा उस गड़रिये की खोज में निकल पड़े. बरसों की खोज के बाद वह उन्हें कहीं जंगल में अकेला खड़ा हुआ दिखाई दिया. मूसा ने गड़रिये को ख़ुशख़बरी दी कि गड़रिया ठीक था और मूसा ग़लत और गड़रिये के लिये सब माफ़ है. गड़रिये ने अब मुस्कराकर जवाब दिया—"ऐ मूसा ! अब किस से बात कर रहे हो ? अब मैं उस पहली जगह से हज़ारों साल का फ़ासला तै कर चुका. अब गड़रिया रहा ही नहीं. अब तो मैं अपनी ख़ुदी को ख़तम करके उस पुरानी ख़ुदी के ख़ून में लिथड़ा हुआ खड़ा हूं !

मन हज़ारां साल ज़ां सू गश्ता अम
मन कनूं दर ख़ूने दिल आग़ुश्ता अम.

ईश्वर प्रेम या इश्क़े इलाही की इस तरह की कहानियां सब मज़हबों की किताबों में मिलेंगी. रोमन कैथलिक ईसाइयों की किताबों में एक कहानी आती है कि कोई एक बाज़ीगर था. उसे बड़े अच्छे अच्छे खेल आते थे. वह गांव और शहर के लोगों को अपने खेल दिखा दिखा कर ख़ुश किया करता था और उसी से अपनी जीविका चलाता था. पर अपने बच्चों के पेट कठिनाई से भर पाता था. एक दिन वह किसी गिरजा में गया. उसने देखा कि पादरी लोग मरियम की मूर्ति के सामने बैठ कर बड़ी बड़ी दुआएं मांग रहे हैं. वह बहुत भोला और दिल

پہونچنے کا راستہ دل ہے' دماغ نہیں ۔ ہم نے الگ الگ لوگوں کے لئے الگ الگ طریقے بنا رکھے ہیں ۔

ہندیاں را اصطلاحے دادہ اند
سندھیاں را اصطلاحے دیگر اند

اے موسیٰ اوپر کے آداب کو جاننے والے لوگ اور ہوتے ہیں اور وہ سچے عاشق جن کے اندر عشق کی آگ لگی ہوتی ہے دوسرے ہوتے ہیں ۔

موسیا آداب داناں دیگر اند
عشقاں سوز دروناں دیگراند

عشق کا مذہب سب دینوں سے الگ ہے ۔ جو سچے عاشق ہیں ان کے لئے مذہب اور ملت سب ہم ہی ہم ہیں ۔

مذہب عشق از ہمہ دنیا جدا است
عاشقاں را مذہب و ملت خدا است ۔"

وغیرہ وغیرہ ۔

موسیٰ نے گھبرا کر پوچھا—"اے اللہ ! مجھ سے غلطی ہوگئی ۔ اب میں کیا کروں ؟"

اللہ نے جواب دیا—"اے موسیٰ ! جا اس گڈریے کو ڈھونڈھ اور اسے یہ خوش خبری دے کہ وہ ٹھیک تھا اور تو غلط اور اس کے لیئے اللہ کی طرف سے سب معاف ہے ۔"

حضرت موسیٰ اس گڈریے کی کھوج میں نکل پڑے ۔ برسوں کی کھوج کے بعد وہ انہیں کہیں جنگل میں اکیلا کھڑا ہوا دکھائی دیا ۔ موسیٰ نے گڈریے کو خوش خبری دی کہ گڈریا ٹھیک تھا اور موسیٰ غلط اور گڈریے کے لیئے سب معاف ہے ۔ گڈریے نے اب مسکرا کر جواب دیا—"اے موسیٰ ! اب کس سے بات کر رہے ہو ؟ اب میں اس پہلی جگہ سے ہزاروں سال کا فاصلہ طے کر چکا ۔ اب گڈریا رہا ہی نہیں ۔ اب تو میں اپنی خودی کو ختم کر کے اس پرانی خودی کے خون میں لتھڑا ہوا کھڑا ہوں !"

من ہزاراں سال زاں سو گشتہ ام
من کنوں درخون دل آغشتہ ام

ایشور پریم یا عشق الٰہی کی اسطرح کی کہانیاں سب مذہبوں کی کتابوں میں ملیں گی ۔ رومن کیتھلک عیسائیوں کی کتابوں میں ایک کہانی آتی ہے کہ کوئی ایک بازیگر تھا ۔ اسے بڑے اچھے اچھے کھیل آتے تھے ۔ وہ گاؤں اور شہر کے لوگوں کو اپنے کھیل دکھا دکھا کر خوش کیا کرتا تھا اور اسی سے اپنی جیویکا چلاتا تھا ۔ پر اپنے بچوں کا پیٹ کٹھنائی سے بھر پاتا تھا ۔ ایک دن وہ کسی گرجا میں گیا ۔ اس نے دیکھا کہ پادری لوگ مریم کی مورتی کے سامنے بیٹھ کر بڑی بڑی دعائیں مانگ رہے ہیں ۔ وہ بہت بھولا اور دل

थक गये होंगे. मैं अपने हाथों से तेरी खूब मुट्ठी चापी करूं तो तेरी थकान दूर हो जावे. तेरी चप्पल फट गई होगी. तू मुझे मिल जावे तो मैं अपने हाथ से तेरी चप्पल गांठ दूं. तेरे कम्बल में चीलर पड़ गये होंगे. मैं एक एक चीलर बीन कर फेंक दूं. रात को मैं तेरे लिये ऐसा अच्छा बिछौना बिछा दूं कि जिसमें एक सिलवट न रहे. उस पर जंगल से फूल ला कर डाल दूं सुबह को मैं जंगल से ताजा शहद का प्याला ला कर तुझे पिलाऊं ऐ अल्लाह ! तू कहां है ? तू मुझे क्यों नहीं मिलता ?" वग़ैरा वग़ैरा. गड़रिया इसी तरह बक रहा था और अपने प्रीतम के प्रेम में टपाटप आंसू बहा रहा था. हज़रत मूसा यह सुन कर गड़रिये के सामने आ खड़े हुए. उन्होंने गड़रिये से पूछा—"ऐ गड़रिये तू यह बातें किस से कह रहा है ?" गड़रिये ने जवाब दिया—"मूसा ! मैं उस अल्लाह से बातें कर रहा हूं जिसने तुझे पैदा किया और मुझे पैदा किया." मूसा ने फिर कहा—"ऐ गड़रिये तू उस अल्लाह की शान में ऐसी बातें कह रहा है कि वह थक गया होगा, उसके कम्बल में चीलर पड़ गये होंगे वग़ैरा ! अल्लाह की शान में ऐसी बातें कहना इतना बड़ा कुफ़्र और गुनाह है कि अगर उसकी आग बन जाये तो सारी दुनिया उसमें जल कर ख़ाक हो जाये !" गड़रिया ने पूछा—"ऐ मूसा ! क्या मुझसे कोई गुनाह हो गया ?" मूसा ने जवाब दिया—"तुझ से इतना बड़ा गुनाह हो गया जिसका कोई कुफ़्फ़ारा नहीं." गड़रिये ने फिर दुखी हो कर पूछा—"क्या मेरे गुनाह का कोई कुफ़्फ़ारा नहीं ?" मूसा ने जवाब दिया—"कोई नहीं." दुख में डूबा हुआ नसरास गड़रिया उठा. उसने अपना कम्बल कंधे पर डाला, लकड़ी हाथ में ली और भेड़ें पीछे छोड़ दूर जंगल में निकल गया. गड़रिया जब निगाह से ओझल हो गया तो मूसा बड़े अभिमान के साथ पीछे लौटे. उसी समय आसमान से आवाज़ आई, या शायद मूसा को अपने अन्दर के अल्लाह की डांट सुनाई दी. अल्लाह ने मूसा से कहा :—

"ऐ मूसा ! तूने यह क्या किया ? तूने हमारे प्रेमी को हम से अलग कर दिया ! तुझे दुनिया में मिलाने के लिये भेजा गया था, अलग करने के लिये नहीं भेजा गया था !

तो बराए वस्ल करदन आमदी
नै बराए फ़स्ल करदन आमदी,

तू समझता है कि हमारी बाबत तेरा दिमाग़ी ख़्याल उस गड़रिये के मोटे जिस्मानी ख़्याल की निसबत हमारी असलियत के अधिक निकट है ! तेरा यह समझना ग़लत है. हमारी असलियत से दोनों एक से दूर हैं. हम तक

ٹک گئے ہونگے ۔ میں اپنے ہاتھوں سے تیری خوب مٹھی چاپی کروں تو تیری تکان دور ہو جاوے ۔ تیری چپل پھٹ گئی ہوگی ۔ تو مجھے مل جاوے تو میں اپنے ہاتھ سے تیری چپل گانٹھ دوں ۔ تیرے کمبل میں چیلر پڑ گئے ہونگے ۔ میں ایک ایک چیلر بین کر پھینک دوں ۔ رات کو میں تیرے لیئے ایسا اچھا بچھونا بچھا دوں کہ جس میں ایک سلوٹ نہ رہے ۔ اس پر جنگل سے پھول لا کر ڈال دوں ۔ صبح کو میں جنگل سے تازہ شہد کا پیالہ لاکر تجھے پلاؤں ۔ اے اللہ ! تو کہاں ہے ؟ تو مجھے کیوں نہیں ملتا ؟" وغیرہ وغیرہ ۔ گڈریا اسی طرح بک رہا تھا اور اپنے پریتم کے پریم میں ٹپاٹپ آنسو بہا رہا تھا ۔ حضرت موسیٰ یہ سنکر گڈریئے کے سامنے آ کر کھڑے ہوئے ۔ انہوں نے گڈریئے سے پوچھا—" اے گڈریئے ! تو یہ باتیں کس سے کہہ رہا ہے ؟" گڈریئے نے جواب دیا—" موسیٰ ! میں اس اللہ سے باتیں کر رہا ہوں جس نے تجھے پیدا کیا اور مجھے پیدا کیا ۔" موسیٰ نے پھر کہا—" اے گڈریئے تو اس اللہ کی شان میں ایسی باتیں کہہ رہا ہے کہ وہ تھک گیا ہوگا' اس کے کمبل میں چیلر پڑ گئے ہونگے وغیرہ ! اللہ کی شان میں ایسی باتیں کہنا اتنا بڑا کفر اور گناہ ہے کہ گر اس کی آگ بن جائے تو ساری دنیا اس میں جلکر خاک ہو جائے!" گڈریئے نے پھر پوچھا—" اے موسیٰ! کیا مجھ سے کوئی گناہ ہوگیا ؟" موسیٰ نے جواب دیا— " تجھ سے اتنا بڑا گناہ ہوگیا جس کا کوئی کفارہ نہیں ۔" گڈریئے نے پھر دکھی ہو کر پوچھا—" کیا میرے گناہ کا کوئی کفارہ نہیں ؟" موسیٰ نے جواب دیا—"کوئی نہیں" دکھ میں ڈوبا ہوا نسراس گڈریا اٹھا ۔ اس نے اپنا کمبل کندھے پر ڈالا' لکڑی ہاتھ میں لی اور بھیڑیں پیچھے چھوڑ دور جنگل میں نکل گیا ۔ گڈریا جب نگاہ سے اوجھل ہوگیا تو موسیٰ بڑے ابھیمان کے ساتھ پیچھے لوٹے ۔ اسی سمے آسمان سے آواز آئی' یا شاید موسیٰ کو اپنے اندر کے اللہ کی ڈانٹ سنائی دی ۔ اللہ نے موسیٰ سے کہا :—

" اے موسیٰ ! تو نے یہ کیا کیا ؟ تو نے ہمارے پریمی کو ہم سے الگ کر دیا ! تجھے دنیا میں ملانے کے لئے بھیجا گیا تھا' الگ کرنے کے لئے نہیں بھیجا گیا تھا !

تو برائے وصل کردن آمدی
نے برائے فصل کردن آمدی

تو سمجھتا ہے کہ ہماری بابت تیرا دماغی خیال اس گڈریئے کے موٹے جسمانی خیال کی نسبت ہماری اصلیت کے اَدھک نکٹ ہے ! تیرا یہ سمجھنا غلط ہے ۔ ہماری اصلیت سے دونوں ایک سے دور ہیں ۔ ہم تک

आदमी के अगर रूह है तो जिस्म भी है. उसकी अपनी एक सूरत है. इसलिये दीन धर्म के मामले में भी मामूली आदमी का केवल ख़यालों से काम नहीं चलता. वह कोई न कोई सूरत भी चाहता है. निराकार यानी लामकां पर जल्दी से उसके दिल नहीं जमता. इसीलिये सब धर्मों में आदमी को धीरे धीरे ऊपरी रीत रिवाजों में से निकालते हुए अल्लाह तक ले जाने की कोशिश की गई है. यह रीत रिवाज और ईंट पत्थर अगर एक हद तक रहें तो ठीक है. लेकिन जब इनके ज़रिये आदमी क़दम क़दम ऊपर ले जाने के बजाय उसकी अक़्ल पर परदा डालने और इसे डरा डरा कर वहमों और अंध विश्वासों में फंसाये रहने की कोशिश की जाती है तो सारा दीन धर्म पाखंड और छल कपट रह जाता है. पंडे पुरोहित अपनी ख़ुदग़र्ज़ी के लिये इन रीत रिवाजों के ज़रिये आदमी को नीचे घसीट कर इसे सदा के लिये उनमें फंसाये रखना और गिराये रखना चाहते हैं.

अग्नि पुरान में लिखा है :—

"रूहानी निगाह से जो लोग अभी बच्चे हैं उनका ईश्वर लकड़ी पत्थर में रहता है. बीच के आदमियों का ईश्वर नदियों और तालाबों में रहता है, जो ज़रा सोचने लगते हैं उनका ईश्वर आसमान में या आसमान के नक्षत्रों वग़ैरा में रहता है और जो समझदार हैं उन्हें अपना ईश्वर अपनी आत्मा के अन्दर दिखाई देता है."

इंजील में भी लिखा है कि :—

"रूहानी बच्चों को रूहानी दूध दिया जाता है और जो रूहानी निगाह से बालिग़ हैं उन्हें रूहानी खाना दिया जाता है."

श्रीकृष्न ने गीता में कहा है कि :—

जो लोग समझदार हैं इन्हें चाहिये कि जो लोग कम-समझ हैं लेकिन नेक कामों में लगे हुए हैं उनमें बुद्धि भेद पैदा न करें."

मोहम्मद साहब की मशहूर हदीस है कि :—

"लोगों से उनकी समझ के मुताबिक़ बात करो."

मौलाना रूम की मसनवी में एक बड़ी सुन्दर कहानी याद आती है—

लिखा है कि हज़रत मूसा एक दिन किसी पहाड़ पर से उतर रहे थे. उन्होंने देखा कि एक गड़रिया नीचे को मुंह किये पड़ा है. गड़रिये का कम्बल, उसकी चप्पल और उसकी लकड़ी बराबर में पड़ी हुई हैं. उसकी भेड़ें नीचे झाड़ में चर रही हैं. गड़रिया पड़े पड़े कुछ बड़बड़ा रहा है. मूसा चुपचाप दबे पांव गड़रिये के पीछे जा कर खड़े हो गये और सुनने लगे कि वह क्या कह रहा है. वह यह कह रहा था—"ऐ मेरे अल्लाह! तू कहां है? तू मुझे क्यों नहीं मिलता? तू अगर मुझे मिल जाये तो तेरे पांव

آدمی کے اگر روح ہے تو جسم بھی ہے . اس کی اپنی ایک صورت ہے . اس لئے دین دھرم کے معاملے میں بھی معمولی آدمی کا کیول خیالوں سے کام نہیں چلتا وہ کوئی نہ کوئی صورت بھی چاہتا ہے . نراکار یعنی لامکاں پر جلدی سے اس کا دل نہیں جمتا . اسی لئے سب دھرموں میں آدمی کو دھیرے دھیرے اوپری ریت رواجوں میں سے نکالتے ہوئے اللہ تک لے جانے کی کوشش کی گئی ہے . یہ ریت رواج اور اینٹ پتھر اگر ایک حد تک رہیں تو ٹھیک ہے . لیکن جب ان کے ذریعے آدمی کو قدم قدم اوپر لے جانے کے بجائے اسکی عقل پر پردہ ڈالنے اور اسے ڈرا ڈرا کر وہموں اور اندھ وشواسوں میں پھنسائے رکھنے کی کوشش کی جاتی ہے تو سارا دین دھرم پاکھنڈ اور چھل کپٹ رہ جاتا ہے . پنڈے پروہت اپنی خود غرضی کے لئے ان ریت رواجوں کے ذریعے آدمی کو نیچے گھسیٹ کر اسے سدا کے لئے ان میں پھنسائے رکھنا اور گرائے رکھنا چاہتے ہیں .

اگنی پران میں لکھا ہے :—

" روحانی نگاہ سے جو لوگ ابھی بچے ہیں اُن کا ایشور لکڑی پتھر میں رہتا ہے . بیچ کے آدمیوں کا ایشور ندیوں اور تالابوں میں رہتا ہے، جو ذرا سوچنے لگتے ہیں اُن کا ایشور آسمان میں یا آسمان کے نکشتروں وغیرہ میں رہتا ہے اور جو سمجھدار ہیں انہیں اپنا ایشور اپنی آتما کے اندر دکھائی دیتا ہے ."

انجیل میں بھی لکھا ہے کہ :—

" روحانی بچوں کو روحانی دودھ دیا جاتا ہے اور جو روحانی نگاہ سے بالغ ہیں انہیں روحانی کھانا دیا جاتا ہے ."

شری کرشن نے گیتا میں کہا ہے کہ :—

" جو لوگ سمجھدار ہیں انہیں چاہیئے کہ جو لوگ کم سمجھ ہیں لیکن نیک کاموں میں لگے ہوئے ہیں ان میں بدھی بھید پیدا نہ کریں ."

محمد صاحب کی مشہور حدیث ہے کہ :—

" لوگوں سے اُن کی سمجھ کے مطابق بات کرو ."

مولانا روم کی مثنوی میں ایک بڑی سندر کہانی آتی ہے—

لکھا ہے کہ حضرت موسیٰ ایک دن کسی پہاڑ پر سے اتر رہے تھے . انہوں نے دیکھا کہ ایک گڈریا نیچے کو منہ کئے پڑا ہے . گڈریئے کا کمبل، اسکی چپل اور اسکی لکڑی برابر میں پڑی ہوئی ہیں . اسکی بھیڑیں نیچے جھاڑ میں چر رہی ہیں . گڈریا پڑے پڑے کچھ بڑبڑا رہا ہے . موسیٰ چپ چاپ دبے پاؤں گڈریئے کے پیچھے جا کر کھڑے ہو گئے اور سننے لگے کہ وہ کیا کہہ رہا ہے . وہ یہ کہہ رہا تھا—" اے میرے اللہ ! تو کہاں ہے ؟ تو مجھے کیوں نہیں ملتا ؟ تو اگر مجھے مل جائے تو تیرے پاؤں

आदमियों को बुराई से बचाने के नये नये तरीक़े, आदमी के दिल और दिमाग़ पर असर डालने के नये नये ढंग निकाल रही है. इनमें हाल का एक तरीक़ा है जिसे रीएजू-केशन कहते हैं. रीएजूकेशन के मानी हैं आदमी ने जो ग़लत चीज़ें सीख ली हैं उन्हें हटा कर उसे नये सिरे से तालीम देना और सिखाना. इसी काम को पुराने लोग दिल का बदलना कहते थे, पुनर्जन्म या नई ज़िन्दगी भी कहते थे. आजकल की नई दुनिया में मज़हब साइन्टिफ़िक होता जाता है और साइन्स मज़हबी होती जाती है. इस समय के बादल छट जावें तो हमारे आगे के डाक्टर एक साथ जिस्म और रूह, यानी शरीर, और आत्मा दोनों के डाक्टर होंगे. दुनिया के जेलख़ानों में इस तरह की कोशिशें चल पड़ी हैं अगरचे यह कोशिशें अभी बहुत अधूरी हैं.

दुनिया के सब धर्म लोगों को दान या ख़ैरात, धर्मादा या ज़कात देने पर भी ज़ोर देते हैं. पहले लोग मंदिर, मस्जिद या गिरजा बनवाते थे, सब के लिये लंगर या सदा-व्रत खोलते थे, सराय, धर्मशाला और आरामगाह बनवाते थे, कुएं और तालाब खुदवाते थे, सड़कें या अस्पताल बनवाते थे, बाग़ लगवाते थे, आम और दूसरे फलों के दरख़्त लगवाते थे, मकतब और पाठशालाएं क़ाइम करते थे वग़ैरा वग़ैरा. यह सब काम सब के भले के लिये ईश्वर और धर्म नाम पर किये जाते थे. आजकल इनकी जगह स्कूलों, अस्पतालों, लाइब्रेरियों वग़ैरा की कमेटियां और उन के चन्दे रह गये हैं. बात वही है. हर आदमी सब के लिये जो अधिक से अधिक कर सकता है करे.

लगभग सब धर्म वालों की अपनी अपनी किताबें हैं. लगभग सब यह भी मानते हैं कि आम लोगों का मज़हब अलग होता है और ख़ास समझदार लोगों का अलग—एक ज़ाहिरी रीत रिवाज का मज़हब और दूसरा बातिनी दिल का मज़हब. यह अन्दर का यानी दिल का मज़हब सब मज़हबों में बिल्कुल एक है. इस्लाम में कहा गया है कि किसी बात में दीन के ठीक हुक्म का पता लगाना हो तो पहले "क़ुरान" को देखो, फिर "हदीस" को देखो और फिर "इजमा" यानी जानने वालों की मुश्तरिका राय को देखो और फिर आख़ीर में ख़ुद अपने "क़यास" से काम लो. हिन्दू धर्म में इन्हीं चारों को श्रुति, स्मृति, सदाचार और आत्म तुष्टि कहा गया है. इसी तरह के चार नाम इनके ईसाई धर्म में हैं. आजकल की क़ानूनी ज़बान में इन्हें स्टैचूट यानी लिखा क़ानून, कसटम यानी रिवाज, प्रीसीडैन्ट यानी नज़ीर और ऐक्वीटी यानी दिल का इन्साफ़ कहा गया है. सच्चे दीन धर्म का इन चारों कसौटियों पर ठीक उतरना ज़रूरी है.

آدمی کو برائیوں سے بچانے کے نئے نئے طریقے، آدمی کے دل اور دماغ پر اثر ڈالنے کے نئے نئے ڈھنگ نکال رہی ہے۔ ان میں حال کا ایک طریقہ ہے جسے ری ایجوکیشن کہتے ہیں۔ ری ایجوکیشن کے معنی ہیں آدمی نے جو غلط چیزیں سیکھ لی ہیں انہیں ہٹا کر اسے نئے سرے سے تعلیم دینا اور سکھانا۔ اسی کام کو پرانے لوگ دل کا بدلنا کہتے تھے، پنر جنم یا نئی زندگی بھی کہتے تھے۔ آج کل کی نئی دنیا میں مذہب سائنٹفک ہوتا جاتا ہے اور سائنس مذہبی ہوتی جاتی ہے۔ اس سمے کے بادل چھٹ جاویں تو ہمارے آگے کے ڈاکٹر ایک ساتھ جسم اور روح، یعنی شریر اور آتما دونوں کے ڈاکٹر ہونگے۔ دنیا کے جیل خانوں میں اس طرح کی کوششیں چل پڑی ہیں اگرچہ یہ کوششیں ابھی بہت ادھوری ہیں۔

دنیا کے سب دھرم لوگوں کو دان یا خیرات، دھرمادا یا زکات دینے پر بھی زور دیتے ہیں۔ پہلے لوگ مندر، مسجد یا گرجا بنواتے تھے، سب کے لئے لنگر یا سداورت کھولتے تھے، سرائے، دھرم شالا اور آرام گاہ بنواتے تھے، کنویں اور تالاب کھدواتے تھے، سڑکیں یا اسپتال بنواتے تھے، باغ لگواتے تھے، آم اور دوسرے پھلوں کے درخت لگواتے تھے، مکتب اور پاٹھ شالائیں قائم کرتے تھے وغیرہ وغیرہ۔ یہ سب کام سب کے بھلے کے لئے ایشور اور دھرم کے نام پر کئے جاتے تھے۔ آج کل ان کی جگہ اسکولوں، اسپتالوں، لائبریریوں وغیرہ کی کمیٹیاں اور ان کے چندے رہ گئے ہیں۔ بات وہی ہے۔ ہر آدمی سب کے بھلے کے لئے جو ادھک سے ادھک کر سکتا ہے کرے۔

لگ بھگ سب دھرم والوں کی اپنی اپنی کتابیں ہیں۔ لگ بھگ سب یہ بھی مانتے ہیں کہ عام لوگوں کا مذہب الگ ہوتا ہے اور خاص سمجھدار لوگوں کا الگ—ایک ظاہری ریت رواج کا مذہب اور دوسرا باطنی دل کا مذہب۔ یہ اندر کا یعنی دل کا مذہب سب مذہبوں میں بالکل ایک ہے۔ اسلام میں کہا گیا ہے کہ کسی بات میں دین کے ٹھیک حکم کا پتہ لگانا ہو تو پہلے "قرآن" کو دیکھو، پھر "حدیث" کو دیکھو اور پھر "اجمع" یعنی جاننے والوں کی مشترکہ رائے کو دیکھو اور پھر آخر میں خود اپنے "قیاس" سے کام لو۔ ہندو دھرم میں انہیں چاروں کو شروتی، سمرتی، سداچار اور آتم تشٹی کہا گیا ہے۔ اسی طرح کے چار نام ان کے عیسائی دھرم میں ہیں۔ آج کل کی قانونی زبان میں انہیں اسٹیچوٹ یعنی لکھا قانون، کسٹم یعنی رواج، پریسیڈنٹ یعنی نظیر اور ایکویٹی یعنی دل کا انصاف کہا گیا ہے۔ سچے دین دھرم کا ان چاروں کسوٹیوں پر ٹھیک اترنا ضروری ہے۔

चीन के कनफ्युशियस धर्म की एक किताब में लिखा है :—

"जब कभी तुम ग़लती कर जाओ तो अपनी ग़लती को ठीक करने में झिझको मत."

उसी धर्म की एक और किताब में लिखा है :—

"अपनी ग़लतियों पर शर्मा कर उन्हें छिपाओ मत क्योंकि इस तरह तुम्हारी ग़लतियां बढ़ कर जुर्म बन जावेंगी. न अपनी अब तक की ग़लतियों या गुनाहों को ठीक साबित करने की कोशिश करो और न छिपाने की कोशिश करो."

एक और चीनी किताब में लिखा है :—

"आदमी अगर कोई बुरा काम कर जावे लेकिन बाद में पछतावे और अपने को ठीक कर ले और इरादा कर ले कि फिर ऐसा काम नहीं करेगा बल्कि श्रद्धा के साथ नेकी करेगा, तो आगे चल कर उसके दिन ज़रूर फिरेंगे और उसकी ग़लतियां उसके लिये बरकतें हो जायेंगी क्योंकि वह उनसे बहुत कुछ सीख लेगा."

मनोस्मृति में लिखा है कि :—

"जब कोई आदमी पाप कर बैठता है लेकिन उसके दिल में सच्चा अफ़सोस होता है, वह अपने पाप को मान लेता है, अपने रास्ते को बदल देता है, ठीक ठीक प्रायश्चित करता है, अच्छी अच्छी चीज़ें पढ़ता है, नेक और सादा ज़िन्दगी बसर करता है तो उसके पाप उससे इस तरह दूर हो जाते हैं जिस तरह सांप की केंचुल सांप से उतर कर अलग हो जाती है, उसका शरीर और उसकी आत्मा दोनों फिर पाक हो जाते हैं."

इंजील में लिखा है :—

"अगर तुम अपनी ग़लतियों के लिये पश्चाताप न करोगे तो मिट जाओगे. पश्चाताप कर के अपनी राह बदल दो तो तुम्हारे पाप धुल जावेंगे. हम अपनी ग़लतियों को मान लें तो ईश्वर दयावान और माफ़ कर देने वाला है. इसी तरह वह हमारे सब पापों को हम से अलग करता है."

क़ुरान में जगह जगह आया है कि :—

"जो लोग जब कोई गुनाह या ग़लती कर बैठते हैं तो अल्लाह को याद करते हैं और उससे माफ़ी चाहते हैं और फिर अपनी ग़लती या गुनाह को नहीं दुहराते बल्कि उससे अपने दिल को फेर लेते हैं, पछताते हैं और ठीक रास्ता अख़्तियार करते हैं उन्हें बेशक अपने अल्लाह से माफ़ी मिल जावेगी."

आजकल पच्छिम में एक नई साइन्स चली है जिसे (Psycho Analysis) साइको एनालिसिस कहते हैं. ग़लतियां तो बस साइन्स ने बहुत की हैं फिर भी धीरे धीरे यह नई साइन्स

چین کے کنفیوشس دھرم کی ایک کتاب میں لکھا ہے :—

"جب کبھی تم غلطی کر جاؤ تو اپنی غلطی کو ٹھیک کرنے میں جھجکو مت ."

اسی دھرم کی ایک اور کتاب میں لکھا ہے :—

"اپنی غلطیوں پر شرما کر انہیں چھپاؤ مت کیونکہ اس طرح تمہاری غلطیاں بڑھ کر جرم بن جاوینگی . نہ اپنی اب تک کی غلطیوں یا گناہوں کو ٹھیک ثابت کرنے کی کوشش کرو اور نہ چھپانے کی کوشش کرو ."

ایک اور چینی کتاب میں لکھا ہے :—

"آدمی اگر کوئی برا کام کر جاوے لیکن بعد میں پچھتاوے اور اپنے کو ٹھیک کر لے اور ارادہ کر لے کہ پھر ایسا کام نہیں کریگا بلکہ شردھا کے ساتھ نیکی کریگا، تو آگے چلکر اس کے دن ضرور پھرینگے اور اس کی غلطیاں اس کے لئے برکتیں ہو جائینگی کیونکہ وہ ان سے بہت کچھ سیکھ لیگا ."

منوسمرتی میں لکھا ہے کہ :—

"جب کبھی کوئی آدمی پاپ کر بیٹھتا ہے لیکن اس کے دل میں سچا افسوس ہوتا ہے، وہ اپنے پاپ کو مان لیتا ہے، اپنے راستے کو بدل دیتا ہے، ٹھیک ٹھیک پرائشچت کرتا ہے، اچھی اچھی چیزیں پڑھتا ہے، نیک اور سادہ زندگی بسر کرتا ہے تو اس کے پاپ اس سے اس طرح دور ہو جاتے ہیں جس طرح سانپ کی کینچلی سانپ سے اتر کر الگ ہو جاتی ہے، اس کا شریر اور اسکی آتما دونوں پھر پاک ہو جاتے ہیں ."

انجیل میں لکھا ہے :—

"اگر تم لوگ اپنی غلطیوں کے لئے پشچاتاپ نہ کروگے تو تم مٹ جاؤگے . پشچاتاپ کرکے اپنی راہ بدل دو تو تمہارے پاپ دھل جاوینگے . ہم اپنی غلطیوں کو مان لیں تو ایشور دیاوان اور معاف کر دینے والا ہے . اسی طرح وہ ہمارے سب پاپوں کو ہم سے الگ کرتا ہے ."

قرآن میں جگہ جگہ آیا ہے کہ :—

"جو لوگ جب کوئی گناہ یا غلطی کر بیٹھتے ہیں تو اللہ کو یاد کرتے ہیں اور اس سے معافی چاہتے ہیں اور پھر اپنی غلطی یا گناہ کو نہیں دہراتے بلکہ اس سے اپنے دل کو پھیر لیتے ہیں، پچھتاتے ہیں اور ٹھیک راستہ اختیار کرتے ہیں انہیں بیشک اپنے اللہ سے معافی مل جائیگی ."

آج کل پچھم میں ایک نئی سائنس چلی ہے جسے (Psycho Analysis) سائیکو اینالیسس کہتے ہیں . غلطیاں تو اس سائنس نے بہت کی ہیں . پھر بھی دھیرے دھیرے یہ نئی سائنس

धर्म का जिस्म और उसकी रूह

(डाक्टर भगवानदास)

आदमी जब तक आदमी है उससे ग़लतियां होती ही रहती हैं. वह काम, क्रोध, लोभ और मोह को हर बार जीत नहीं पाता. यह कमज़ोरियां उसकी आंखों पर पर्दा डाल देती हैं, उसके दिल और दिमाग़ को भटका देती हैं. वह बार बार पछताता है और फिर बार बार ग़लती करता है. मौलाना रूम ने लिखा है :—

"ग़ुस्सा और शहवत यानी क्रोध और काम आदमी को अन्धा कर देते हैं और उसकी रूह को सीधे रास्ते से भटका देते हैं."

इसके लिये सब धर्मों में कुफ़्फ़ारा यानी प्रायश्चित का रास्ता बताया गया है. पहले आदमी को अपने किये पर दुख और नदामत महसूस होती है. हिन्दू धर्म में इसे पश्चाताप कहते हैं. फिर वह अपनी आत्मा के सामने और किसी बड़े बुज़ुर्ग के सामने अपनी ग़लती का ऐतराफ़ करता है. इसे प्रत्याख्यान कहते हैं. इसके बाद वह अपनी ग़लती के लिये कुफ़्फ़ारा करता है जिसको प्रायश्चित कहते हैं. ईसाई धर्म में भी पापों से बचने की यही तीन सूरतें एक दूसरे के बाद बताई गई हैं. एक मुसलमान सूफ़ी कहता है :—

बाज़ आ, बाज़ आ, आंचे हस्ती बाज़ आ
गर काफ़िरो गिब्रो बुत परस्ती, बाज़ आ
ईं दरगहे मा दरगहे नाउमेदी नेस्त
सद बार अगर तोबा शिकस्ती, बाज़ आ

यानी—वापिस आजा, वापिस आजा, तू जहां कहीं और जो कुछ भी हो वापिस आजा. चाहे तू नास्तिक हो और चाहे पत्थर या आग का पूजने वाला हो, वापिस आजा. हमारा यानी अल्लाह का यह दरबार नाउम्मेदी का दरबार नहीं है. अगर तूने सौ बार भी तोबा करके अपनी तोबा को तोड़ दिया हो तो भी वापिस आजा.

गीता में लिखा है :—

अपि चेत् सुदुराचारो भजतेमाम अनन्य भाक्
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यक् व्यवसितोहिसः

यानी—कोई चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो जो कोई साफ़ और पूरे दिल से ईश्वर की तरफ़ मुड़ता है उसे नेक ही मानना चाहिये क्योंकि वह ठीक तरफ़ लग गया है.

دھرم کا جسم اور اُس کی روح

(ڈاکٹر بھگوان داس)

آدمی جب تک آدمی ہے اس سے غلطیاں ہوتی ہی رہتی ہیں۔ وہ کام، کرودھ، لوبھ اور موہ کو ہر بار جیت نہیں پاتا۔ یہ کمزوریاں اس کی آنکھوں پر پردہ ڈال دیتی ہیں، اس کے دل اور دماغ کو بھٹکا دیتی ہیں۔ وہ بار بار پچھتاتا ہے اور پھر بار بار غلطی کرتا ہے۔ مولانا روم نے لکھا ہے :—

"غصہ اور شہوت یعنی کرودھ اور کام آدمی کو اندھا کر دیتے ہیں اور اس کی روح کو سیدھے راستے سے بھٹکا دیتے ہیں۔"

اس کے لئے سب دھرموں میں کفارہ یعنی پرایشچت کا راستہ بتایا گیا ہے۔ پہلے آدمی کو اپنے کئے پر دکھ اور ندامت محسوس ہوتی ہے۔ ہندو دھرم میں اسے پشچاتاپ کہتے ہیں۔ پھر وہ اپنی آتما کے سامنے اور کسی بڑے بزرگ کے سامنے اپنی غلطی کا اعتراف کرتا ہے۔ اسے پرتیاکھیان کہتے ہیں۔ اس کے بعد وہ اپنی غلطی کے لئے کفارہ کرتا ہے جسے پرایشچت کہتے ہیں۔ عیسائی دھرم میں بھی پاپوں سے بچنے کی یہی تین صورتیں ایک دوسرے کے بعد بتائی گئی ہیں۔ ایک مسلمان صوفی کہتا ہے :—

باز آ، باز آ، آنچہ ہستی باز آ
گر کافر و گبر و بت پرستی، باز آ
ایں درگہ ما درگہ نااُمیدی نیست
صد بار اگر توبہ شکستی، باز آ

یعنی—واپس آ جا، واپس آ جا، تو جہاں کہیں اور جو کچھ بھی ہو واپس آ جا۔ چاہے تو ناستک ہو اور چاہے پتھر یا آگ کا پوجنے والا ہو، واپس آ جا۔ ہمارا یعنی اللہ کا یہ دربار نااُمیدی کا دربار نہیں ہے۔ اگر تو نے سو بار بھی توبہ کر کے اپنی توبہ کو توڑ دیا ہو تو بھی واپس آ جا۔

گیتا میں لکھا ہے :—

اپی چیت سودراچارو بھجتے مام اننیہ بھاک
سادھوریو س منتویہ سمیک ویوسیتوہی سہ

یعنی—کوئی چاہے کتنا بھی برا کیوں نہ ہو جو کوئی صاف اور پورے دل سے ایشور کی طرف مڑتا ہے اسے نیک ہی ماننا چاہئے کیونکہ وہ ٹھیک طرف لگ گیا ہے۔

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द 16 | जून सन '54 | नम्बर 6

نمبر 6 | جون سن '54 | جلد 16

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی ۔

कौन सुलगते आंसू रोके आग के टुकड़े कौन चबाए

(नरेश कुमार 'शाद')

कौन सुलगते आंसू रोके आग के टुकड़े कौन चबाए
ओ हमको समझाने वाले कोई तुझे क्योंकर समझाए

बरखा बरसे, नग़मे गूंजें, शीशे से शीशा टकराए
कौन इस वक़्त अन्जाम की सोचे कौन ख़िरद के फेर में आए

इस दुनिया के रहने वाले अपना अपना ग़म खाते हैं
ऐ फ़र्ज़ानो ! ऐ फ़र्ज़ानो ! होश से कह दो होश में आए

सब्र भी कब तक हो सकता है ज़ब्त की भी हद होती है
कौन पराया रोग ख़रीदे कौन पराया दुख अपनाए

प्रेम की अंधियारी राहों में अक़्ल का दीपक जल न सकेगा
पल भर चैन न पाने वाला कब तक अपना रोग छिपाये

जीवन के अंधियारे पथ पर जिसने तेरा साथ दिया था
देख कहीं यह कोमल आशा आंसू बन कर टूट न जाये

हाये ! मेरी मायूस उमीदें वाय ! मेरे नाकाम इरादे
मरने की तदबीर न सूझी जीने के अन्दाज़ न आए

इस दुनिया के ग़मख़ाने में ग़म से इतनी फ़ुरसत कब है
कौन सितारों का मुंह चूमे कौन बहारों में लहराए

'शाद' वही आवारा शायर जिस ने तुझ से प्यार किया था
नगर नगर में घूम रहा है अरमानों की लाश उठाए

ख़िरद = बुद्धि; फ़र्ज़ानो = होशियारो; वाय = हाय; आह = अफ़सोस.

کون سلگتے آنسو روکے آگ کے ٹکڑے کون چبائے

(نریش کمار 'شاد')

کون سلگتے آنسو روکے آگ کے ٹکڑے کون چبائے
او ہم کو سمجھانے والے کوئی تجھے کیونکر سمجھائے

برکھا برسے' نغمے گونجیں' شیشے سے شیشہ ٹکرائے
کون اس وقت انجام کی سوچے کون خرد کے پھیر میں آئے

اس دنیا کے رہنے والے اپنا اپنا غم کھاتے ہیں
کون پرایا روگ خریدے کون پرایا دکھ اپنائے

پریم کی اندھیاری راہوں میں عقل کا دیپک جل نہ سکےگا
اے فرزانو ! اے فرزانو ! ہوش سے کہ دو ہوش میں آئے

صبر بھی کب تک ہو سکتا ہے ضبط کی بھی حد ہوتی ہے
پل بھر چین نہ پانے والا کب تک اپنا روگ چھپائے

جیون کے اندھیارے پتھ پر جسنے تیرا ساتھ دیا تھا
دیکھ کہیں یہ کومل آشا آنسو بنکر ٹوٹ نہ جائے

ہائے! میری مایوس امیدیں وائے! میرے ناکام ارادے
مرنے کی تدبیر نہ سوجھی جینے کے انداز نہ آئے

اس دنیا کے غمخانے میں غم سے اتنی فرصت کب ہے
کون ستاروں کا منہ چومے کون بہاروں میں لہرائے

'شاد' وہی آوارہ شاعر جس نے تجھ سے پیار کیا تھا
نگر نگر میں گھوم رہا ہے ارمانوں کی لاش اٹھائے ۔

خرد = بدھی ؛ فرزانو = ہوشیارو ؛ وائے = ہائے ؛ آہ =
افسوس ۔

'नया हिन्द'

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

जून 1954

क्या किस से — सफ़ा

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

جون

کیا کس سے — صفحہ

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

नया हिन्द — نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, विशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندر لال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी   نائب ایڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

इस नम्बर के खास लेख — اس نمبر کے خاص لیکھ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद — ہندوستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

जून 1954 جون

क़ीमत दस आना — قیمت دس آنے

नई किताब

गंगा से गोमती तक

......"मुजीब की कहानियों की विशेषता [illegible] भी है. मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है. सरलता के साथ [illegible] और जिन्दादिली इस तरह है जिस तरह [illegible] के लेखकों में मिलती है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा भी [illegible] हंसते हंसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं [illegible] दुःख से स्तंभित रह जायेंगे. मुजीब की कहानियां [illegible] कोमल भावनाएं जगाती हैं, हमें अच्छा इन्सान बनाती हैं."

— डाक्टर राम [illegible]

...... "वह (मुजीब) सारे [illegible] समाज को सम्भालना चाहते हैं [illegible] वह [illegible] चाहते हैं और [illegible] यह कहानियां [illegible] होने वाले अन्यायों और अत्याचारों का [illegible] है. [illegible] कहानियों में एक संतुलन [illegible] है [illegible] अच्छा लगता है."

— जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, [illegible] सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये

— [illegible]

मिलने का पता -

मैनेजर "नया हिन्द" 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

نئی کتاب

گنگا سے گومتی تک

..... "مجیب کی کہانیوں کی [illegible] بھی ہے. معمولی پڑھا لکھا آدمی انہیں بنا [illegible] کی مدد کے سمجھ سکتا ہے. سادگی کے ساتھ [illegible] اس طرح ہے جس طرح اچھے [illegible] میں ملتی ہے.

ان کہانیوں میں [illegible] ہنستے ہنستے پیٹ میں بل پڑ جائیں گے، تو [illegible] آپ دکھ سے [illegible] رہ جائیں گے. مجیب کی [illegible] کومل [illegible] جگاتی ہیں، ہمیں اچھا [illegible] بناتی ہیں."

— [illegible]

"وہ (مجیب) [illegible] کو سمجھنا چاہتے ہیں [illegible] اور [illegible] کہانیاں [illegible] ہونے والے [illegible] اور اتیاچاروں کی طرف [illegible] کہانیوں میں ایک [illegible] آ جاتا ہے، جو اچھا لگتا ہے."

— جینندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے گومتی" کو سراہا ہے.

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں، [illegible] کور، بڑھیا جلد، دام کیول دو روپے. جلدی آرڈر بھیجئے.

— [illegible]

ملنے کا پتہ -

مینیجر "نیا ہند" 145 مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by [illegible], at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना

—: :—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये -

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट - सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़ियादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑھانا٬ پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں٬ اخباروں٬ رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں٬ کتاب گھروں٬ سبھاؤں٬ کانفرنسوں لیکچروں سے سب دھرموں٬ جاتوں٬ برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

: :

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ٬ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس: سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود٬ ڈاکٹر تارا چند٬ مولوی سید سلیمان ندوی٬ مسٹر منظر علی سوختہ٬ شری بی جی کھیر٬ پنڈت بشمبھر ناتھ٬ مہاتما بھگوان دین٬ سیٹھ پونم چند رانکا٬ قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری٬ هندستانی کلچر سوسائٹی٬

145٬ مٹھی گنج٬ الہ آباد ۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے "نیا هند" کے جو گاهک ممبر بننا چاهیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر هی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی هوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی هوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें | ہمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं | نوٹ :—یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1 शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुख़न	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9 पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9 پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14 मेरे बापू	श्री तन्मय बुख़ारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22 हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता— | ملنے کا پتہ

मैनेजर 'नया हिन्द' | مینیجر 'نیا ہند'

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद-3. | 145' مٹھی گنج' الہ آباد-3.

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی۔ ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں۔ اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں۔ بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے۔ ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے۔ اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی۔

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے۔ وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں۔ اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے.....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے۔"

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے۔

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی۔ راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی۔

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चित है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, उम्दा छपाई, दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے ' فراق '

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے. آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے' اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی. غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی.

" اِن کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاو کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں."

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے."

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوتر کے قائل ہیں. وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے. کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے."—' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا. سندر جلد' بڑھیا کاغذ. عمدہ چھپائی. دام صرف تین روپیہ. دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن.

ملنے کا پتہ—

منیجر ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ آباد.

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

गीता और क़ुरान

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइ उन का दर्दनाक आंखों देखा बनन. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

لیکھک—پنڈت سندر لال

گیتا اور قران

اِس کتاب میں ھندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ھیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاھیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ھے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ .

ھندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ھیں جو پنڈت جی نے کنسیلیئٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذھبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اُسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ھمارے بیچ میں نہ رھنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وھاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ھیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949–50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ھے اور ایسے جھگڑوں کو ھمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ھے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ھند' 145 مٹھی گنج' اِلہ آباد

ऐसा करने के लिये पंडित जवाहरलाल नेहरू के लिये यह लाज़मी होगा कि अपनी हुकूमत की नीति में—चाहे वह आर्थिक हो, क़ानूनी हो, तालीमी हो, व्योपारी हो, कारखानेदारी हो, बहर हाल कोई हो—सिर से पैर तक तबदीली करें, अपने मिनिस्ट्रों, गवर्नरों और राजदूतों के होश ठिकाने पर लायें और देश की तामीर के काम को ऊपर की बजाय नीचे से शुरू करें. पंडित जी से हमारी अपील है कि किसी बहकावे और धोके में न आयें, जाते हुए वक़्त को न खोयें और बहादुरी के साथ बेधड़क होकर ऊपर दिया क़दम उठायें. उनसे हमारी प्रार्थना है कि चंद पूंजीपतियों और विशेशज्ञों की बजाये वह देश की करोड़ों जनता पर एतबार करें, कुछ कारखानों में बने माल की बजाय वह घर घर में, झोंपड़ी झोंपड़ी में बने माल पर ऐतबार करें, हथियारों और बमों की बजाय वह चाल चलन और सत्याग्रह पर एतबार करें. बस एक बार एतबार करें और आजमाइश करके देख लें, जनता उन्हें धोखा नहीं देगी. हिन्दुस्तान की हालत इसी बात का इशारा कर रही है. हिन्दुस्तान अमरीका सम्बन्ध की आज यही चुनौती है.

19. 3. '54 — सुरेश रामभाई

ایسا کرنے کے لیئے پنڈت جواہر لال نہرو کے لیئے یہ لازمی ہوگا کہ اپنی حکومت کی نیتی میں—چاہے وہ آرتھک ہو، قانونی ہو، تعلیمی ہو، بیوپاری ہو، کارخانہ داری ہو، بہرحال کوئی ہو—سر سے پیر تک تبدیلی کریں، اپنے منسٹروں، گورنروں اور راجدوتوں کے ہوش ٹھکانے پر لائیں اور دیش کے تعمیر کے کام کو اوپر کی بجائے نیچے سے شروع کریں. پنڈت جی سے ہماری اپیل ہے کہ کسی بہکاوے اور دھوکے میں نہ آئیں، جاتے ہوئے وقت کو نہ کھوئیں اور بہادری کے ساتھ بےدھڑک ہوکر اوپر دیا قدم اٹھائیں. ان سے ہماری پرارتھنا ہے کہ چند پونجی پتیوں اور وششگیوں کی بجائے وہ دیش کی کروڑوں جنتا پر اعتبار کریں، کچھ کارخانوں میں بنے مال کی بجائے وہ گھر گھر میں، جھونپڑی جھونپڑی میں بنے مال پر اعتبار کریں، ہتھیاروں اور بموں کی بجائے وہ چال چلن اور ستیاگرہ پر اعتبار کریں، بس ایک بار اعتبار کریں اور آزمایش کرکے دیکھ لیں. جنتا انہیں دھوکا نہیں دیگی. ہندستان کی حالت اس بات کا اشارہ کر رہی ہے. ہندستان امریکہ سمبندھ کی آج یہی چنوتی ہے.

—سریش رام بھائی 19 . 3 . 54

हमारी राय

हिन्दुस्तान के अन्दर जो बीसियों अमरीकी माहिर हैं क्या वह ग़ैर जानिबदार हैं? मान लीजिये काश्मीर से वह दर्शक हट गये तो क्या उससे काम चल जायेगा? आज हिन्दुस्तान में जो कई हज़ार अमरीकी हैं और घनी तादाद में जो ऐक्सपर्ट सलाहकार वग़ैरा हैं उनको क्या समझा जायेगा? इसलिये हम जवाहरलाल जी की बात को बन्दर-घुड़की चालें भले न कहें लेकिन वह कमज़ोर के ग़ुस्से से बढ़कर कुछ नहीं है.

पिछले दो बरस से हम हिन्दुस्तान के अन्दर अमरीकी फ़ैलाव की तरफ़ सरकार का ध्यान खींच रहे हैं. लेकिन अफ़सोस, हमारी सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगती. मगर बीती बात को रोने से कोई फ़ायदा नहीं; अगर अब भी सरकार सही क़दम उठा ले तो बिगड़ी बात बन सकती है. मगर उठाये भी तो! वह क़दम क्या है और कैसे उठाया जाये—इस पर भी हम बारम्बार चर्चा कर चुके हैं और जनवरी नम्बर वाले अपने लेख में भी की थी. उसे हम नये सिरे से कुछ मुद्दों की शकल में नीचे पेश करते हैं :

(i) हिन्दुस्तान अपनी हिफ़ाज़त हथियार और फ़ौज से नहीं कर सकता.

(ii) बड़े बड़े कारख़ानों और मरकज़ी इन्तेज़ाम से हिन्दुस्तान की दौलत व बरकतों को एक धागे में नहीं पिरोया जा सकता.

(iii) निजी मिलकियत और ज़ाती मुनाफ़े के आधार पर चलकर हिन्दुस्तान की जनता को मज़बूत नहीं बनाया जा सकता.

इसलिये हो क्या? मोटे लफ़्ज़ों में हमारा निवेदन है :

(i) हिन्दुस्तान अपनी हिफ़ाज़त अहिंसात्मक असहयोग या सत्याग्रह के ज़रिये करे.

(ii) आर्थिक और राजनीतिक ताक़त व इन्तज़ाम का विकेन्द्रीकरन होना चाहिये यानी वह गांव-गांव में बंटे.

(iii) पैदावार करने के सभी साधनों (ज़मीन हो चाहे खान, पानी हो या हवा) पर इन्सान की ज़ाती मिल्कियत न हो कर समाज की हो, यानी वह सिरजनहार या भगवान की मानी जायें.

(iv) देश में तनख़ा-मज़दूरी में राजपति और चपरासी के जैसा ज़मीन आसमान का फ़र्क़ न हो बल्कि पांच उंगलियों जैसी छोट-बड़ाई रहे.

ہماری رائے

ہندستان کے اندر جو بیسیوں امریکی ماہر ہیں کیا وہ غیر جانبدار ہیں؟ مان لیجئے کشمیر سے وہ درشک ہٹ گئے تو کیا اس سے کام چل جائیگا؟ آج ہندستان میں جو کئی ہزار امریکی ہیں اور گھنی تعداد میں جو ایکسپرٹ' صلاحکار وغیرہ ہیں انکو کیا سمجھا جائیگا؟ اس لئے ہم جواہر لال جی کی بات کو بندر گھڑکی چالیں بھلے نہ کہیں لیکن وہ کمزور کے غصے سے بڑھکر کچھ نہیں ہے۔

پچھلے دو برس سے ہم ہندستان کے اندر امریکی پھیلاؤ کی طرف سرکار کا دھیان کھینچ رہے ہیں۔ لیکن افسوس ہماری سرکار کے کان پر جوں تک نہیں رینگتی۔ مگر بیتی بات کو رونے سے کوئی فائدہ نہیں، اگر اب بھی سرکار صحیح قدم اٹھالے تو بگڑی بات بن سکتی ہے۔ مگر اٹھالے بھی تو! وہ قدم کیا ہے اور کیسے اٹھایا جائے —اس پر بھی ہم بارمبار چرچا کرچکے ہیں اور جنوری نمبر والے اپنے لیکھ میں بھی کی تھی۔ اسے ہم نئے سرے سے کچھ مدوں کی شکل میں نیچے پیش کرتے ہیں:

(i) ہندستان اپنی حفاظت ہتھیار اور فوج سے نہیں کرسکتا۔

(ii) بڑے بڑے کارخانوں اور مرکزی انتظام سے ہندستان کی دولت و برکتوں کو ایک دھاگے میں نہیں پرویا جاسکتا۔

(iii) نجی ملکیت اور ذاتی منافع کے آدھار پر چلکر ہندستان کی جنتا کو مضبوط نہیں بنایا جاسکتا۔

اس لئے ہو کیا؟ موٹے لفظوں میں ہمارا نویدن ہے:

(i) ہندستان اپنی حفاظت اہنساتمک اسہیوگ یا ستیاگرہ کے ذریعے کرے۔

(ii) آرتھک اور راجنیتک طاقت و انتظام کو وکیندریکرن ہونا چاہیئے یعنی وہ گاؤں گاؤں میں بٹے۔

(iii) پیداوار کرنے کے سبھی سادھنوں (زمین ہو چاہے کھان، پانی ہو یا ہوا) پر انسان کی ذاتی ملکیت نہ ہوکر سماج کی ہو، یعنی وہ سرجنہار یا بھگوان کی مانی جائیں۔

(iv) دیش میں تنخواہ مزدوری میں راجپتی اور چپراسی کے جیسا زمین آسمان کا فرق نہ ہو بلکہ پانچ انگلیوں جیسی چھوٹ بڑائی رہے۔

जानते हैं कि हिन्द सरकार के नये बजट में फ़ौज पर कोई खर्च नहीं बढ़ाये गये हैं लेकिन लड़ाई के इमकान सामने आने पर वैसा होने में कुछ देर नहीं लगेगी. इस सब तैयारी और जवाहरलाल जी के बयान का मतलब है कि हमारी नीति—देश के अन्दर की या बाहर की—अब हमारे हाथ में न रह कर पाकिस्तान के हाथ में रहेगी. वह जिस तरह चाहे हम को नचवा सकता है. दूसरे लफ़्ज़ों में हमारी बागडोर अमरीका के हाथ में रहेगी, वह मन माने तौर पर हमारे यहां की हालत में तबदीली पैदा कर सकेगा.

हम अपनी सरकार का ध्यान इस तरफ़ दिलाना चाहते हैं. दुनिया का दस्तूर है कि अगर आदमी को ठंड लगे तो कपड़ा ओढ़-पहन लेता है, गरमी लगे तो उतार फेंक देता है. लेकिन उसका फेफड़ा ही खराब हो तो उसे न जाड़ों में चैन न गर्मियों में सकून. हमारा देश भी आज इसी दुखदायी हालत में है और हम अर्ज़ करना चाहते हैं कि अगर हमारे अन्दर के फेफड़ों को जल्दी ही ठीक न किया गया तो हम सब बेमौत मरेंगे और ग़ैर की मर्ज़ी का शिकार बनेंगे और कौन जाने हमारे कितने ही मिनिस्टर फ्रांस के मार्शल पेतां जैसा रूप ले लें! पंडित नेहरू की ज़ात को हम इससे बहुत बुलन्द और आला मानते हैं. और इसी वजह से हम यह सब कह भी रहे हैं.

हमें नहीं भूलना चाहिये कि जंग हो या फ़ौजी इमदाद आज के ज़माने में हर राजनीतिक चाल के पीछे आर्थिक दांव-पेच होता है. जिस तरह अगर हिन्दुस्तान के पच्छिमी तट पर मलाबार में मसाले न पैदा होते तो न वास्कोडिगामा कालीकट आता और न एशिया पर योरप वालों का राज होता, उसी तरह अगर मिडिल ईस्ट में मिट्टी का तेल न होता तो न उसमें अमरीका दिलचस्पी लेता और न तुर्की पाकिस्तान फ़ौजी सुलहनामा होता. इसी तरह—हम कई बार कह चुके हैं—अगर अमरीका को हिन्दुस्तान से कच्चा माल न लेना होता और अपना पक्का माल यहां न लादना होता तो 5 जनवरी 1952 को हिन्दुस्तान से वह "समझौता" न होता जो ग़ुलामी के पट्टे को भी मात करता है. हमारा मानना है कि अमरीका के पैसे से हिन्दुस्तान की सरकार ने अन्दर के ख़ास फेफड़ों को ठीक करने की कोशिश की, तो अमरीका से फ़ौजी मदद लेकर पाकिस्तान की सरकार ने अपने को सर्दी से बचाने की कोशिश की है. और अगर दूसरा काम 'दख़ल' है तो पहले वाला भी 'दख़ल' क्यों नहीं है यह हम नहीं समझ पाये हैं.

हम स्वागत करते हैं जवाहरलाल जी के यह लफ़्ज़ कि अमरीकी दर्शकों को अब ग़ैर जानिबदार नहीं माना जा सकता. लेकिन हम अदब के साथ पूछना चाहते हैं कि

جانتے ہیں کہ ہند سرکار کے نئے بجٹ میں فوج پر کوئی خاص خرچ نہیں بڑھائے گئے ہیں لیکن لڑائی کے امکان سامنے آنے پر ویسا ہونے میں کچھ دیر نہیں لگے گی۔ اس سب تیاری اور جواہر لال جی کے بیان کا مطلب ہے کہ ہماری نیتی—دیش کے اندر کی یا باہر کی—اب ہمارے ہاتھ میں نہ رہ کر پاکستان کے ہاتھ میں رہیگی۔ وہ جس طرح چاہے ہم کو نچوا سکتا ہے۔ دوسرے لفظوں میں ہماری باگڈور امریکہ کے ہاتھ میں رہیگی، وہ من مانے طور پر ہمارے یہاں کی حالت میں تبدیلی پیدا کرسکیگا۔

ہم اپنی سرکار کا دھیان اس طرف دلانا چاہتے ہیں۔ دنیا کا دستور ہے کہ اگر آدمی کو ٹھنڈ لگے تو کپڑا اوڑھ پہن لیتا ہے، گرمی لگے تو اتار پھینک دیتا ہے۔ لیکن اس کا پھیپھڑا ہی خراب ہو تو اسے نہ جاڑے میں چین نہ گرمیوں میں سکون۔ ہمارا دیش بھی آج اسی دکھدائی حالت میں ہے اور ہم عرض کرنا چاہتے ہیں کہ اگر ہمارے اندر کے پھیپھڑوں کو جلدی ہی ٹھیک نہ کیا گیا تو ہم سب بےموت مرینگے اور غیر کی مرضی کا شکار بنینگے اور کون جانے ہمارے کتنے ہی منسٹر فرانس کے مارشل پیتاں جیسا روپ لےلیں! پنڈت نہرو کی ذات کو ہم اس سے بہت بلند اور اعلیٰ مانتے ہیں اور اسی وجہ سے ہم یہ سب کہہ بھی رہے ہیں۔

ہمیں نہیں بھولنا چاہیئے کہ جنگ ہو یا فوجی امداد، آج کے زمانے میں ہر راجنیتک چال کے پیچھے آرتھک داؤں پیچ ہوتا ہے۔ جس طرح اگر ہندستان کے پچھمی تٹ پر مالابار میں مسالے نہ پیدا ہوتے تو نہ واسکوڈیگاما کالیکٹ آتا اور نہ ایشیا پر یوروپ والوں کا راج ہوتا، اسی طرح اگر مڈل ایسٹ میں مٹی کا تیل نہ ہوتا تو نہ اس میں امریکہ دلچسپی لیتا اور نہ ترکی پاکستان فوجی صلحنامہ ہوتا۔ اسی طرح—ہم کئی بار کہہ چکے ہیں—اگر امریکہ کو ہندستان سے کچا مال نہ لینا ہوتا اور اپنا پکا مال یہاں نہ لادنا ہوتا تو 5 جنوری 1952 کو ہندستان سے وہ "سمجھوتہ" نہ ہوتا جو غلامی کے پٹے کو بھی مات کرتا ہے۔ ہمارا ماننا ہے کہ امریکہ کے پیسے سے ہندستان کی سرکار نے اندر کے خاص پھیپھڑوں کو ٹھیک کرنے کی کوشش کی، تو امریکہ سے فوجی مدد لیکر پاکستان کی سرکار نے اپنے کو سردی سے بچانے کی کوشش کی ہے۔ اور اگر دوسرا کام 'دخل' ہے تو پہلے والا بھی 'دخل' کیوں نہیں ہے یہ ہم نہیں سمجھ پائے ہیں۔

ہم سواگت کرتے ہیں جواہر لال جی کے یہ لفظ کہ امریکی درشکوں کو اب غیرجانبدار نہیں مانا جاسکتا۔ لیکن ہم ادب کے ساتھ پوچھنا چاہتے ہیں کہ

की नहीं है बल्कि इससे भारत और पाकिस्तान के बीच जो सवाल हैं—जैसे काशमीर का—उनके हल करने में मदद मिलेगी ! इसी सिलसिले में मार्के की एक बात पाकिस्तान के परदेश मिनिस्टर ने कही—वह यह कि अगर हिन्दुस्तान का अमरीका से करोड़ों रुपयों का लेना अमरीका की तरफ़ से दख़ल अन्दाज़ी नहीं है तो पाकिस्तान का थोड़ी सी फ़ौजी मदद लेना दख़ल क्यों है और उस पर प्रधान मंत्री नेहरू क्यों आग बगूला होते और काशमीर में रहने वाले अमरीकी दर्शकों पर ऐतराज़ करते हैं ?

इन सब चीज़ों से यह बात सूरज की तरह साफ़ चमक जाती है कि पाकिस्तानी सरकार ने अपने बारे में फ़ैसला कर लिया है कि अब वह अमरीका की गोद में पलेगी और जिस तरह अमरीका उसे चलायेगी वैसे वह चलेगी. क्या फ़ौजी क्या राज काजी, क्या आर्थिक, क्या समाजी—हर सूरत से अमरीका के क़दम पर क़दम रखेगी. पाकिस्तान के इस राय में तुर्की, ईराक़ वग़ैरा मुल्क उसका साथ देंगे और इंगलैंड से भी उसे पूरा आशीर्वाद प्राप्त है.

अब सवाल यह है कि ऐसी हालत में हिन्दुस्तान क्या करेगा या क्या करे. हमने ऊपर प्रधान मंत्री नेहरू के ख़त व बयान की चर्चा की है. हम साफ़ कह दें कि हम उनसे सहमत हैं पर हमें उन से सन्तोष नहीं मिलता. यही नहीं, हमें थोड़ी-सी घबराहट भी पैदा होती है कि कहीं पाकिस्तान सरकार की तरह हमारी सरकार भी किसी के हाथों न खेल जाये. हम अपने प्रेमी पाठकों का ध्यान ख़ास तौर से उन लफ़्ज़ों की तरफ़ खींचना चाहते हैं जो जवाहरलाल जी ने पहली मार्च को पार्लियामेंट में आख़िर में कहे और जिन्हें हम ऊपर दे चुके हैं. उसकी ख़ास अहमियत की वजह से ही हमने उनके नीचे लकीर खींच दी है. यह वह अल्फ़ाज़ हैं जिनके सहारे सरकारें जनता को बहका कर, उसे लड़ाई के लिये उकसा देती हैं और चारे-दाने की तरह कटवाती गलवाती हैं.

बड़े अदब के साथ हम जानना चाहेंगे कि क्या मानी हैं उन लफ़्ज़ों के जो जवाहरलाल जी ने कहे जैसे—'गम्भीर हालत' 'एक साथ मिल कर खड़े हों' 'राष्ट्रीय सवाल' वग़ैरा ? अगर उनका मतलब यह है कि अब सरकार जो करे उसकी ताबेदारी आम जनता को करना चाहिये, अगर उनका मतलब यह है कि आंखें मूंद कर अपने को लड़ाई के मैदान में कटा देना चाहिये, अगर उनका मतलब यह है कि जंग की तैयारी के लिये मुल्क को लगा देना चाहिये, तो हम नम्रता से कहेंगे कि उसके नतीजे ख़राब होंगे, मुल्क बरबाद होगा, देश के रईस और भी मालामाल बनेंगे, ग़रीब और भी मोहताज बनेंगे और -फिर—हमारी बागडोर तक अपने हाथ से चले जाने का डर है. हम

کی نہیں بلکہ اِس سے بھارت اور پاکستان کے بیچ جو سوال ہیں—جیسے کاشمیر کا—اُن کے حل کرنے میں مدد ملیگی! اِسی سلسلے میں معرکے کی ایک بات پاکستان کے پردیش منسٹر نے کہی—وہ یہ کہ اگر ہندستان کا امریکہ سے کروڑوں روپیوں کا لینا امریکہ کی طرف سے دخل اندازی نہیں ہے تو پاکستان کا تھوڑی سی فوجی مدد لینا دخل کیوں ہے اور اُس پر پردھان منتری نہرو کیوں آگ بگولے ہوتے اور کاشمیر میں رہنے والے امریکی درشکوں پر اعتراض کرتے ہیں ؟

ان سب چیزوں سے یہ بات سورج کی طرح صاف چمک جاتی ہے کہ پاکستانی سرکار نے اپنے بارے میں فیصلہ کرلیا ہے کہ اب وہ امریکہ کی گود میں پلےگی اور جس طرح امریکہ اُسے چلائیگی ویسے وہ چلیگی ۔ کیا فوجی' کیا راجکاجی' کیا آرتھک' کیا سماجی—ہر صورت سے امریکہ کے قدم پر قدم رکھیگی ۔ پاکستان کے اِس کام میں ترکی' عراق وغیرہ ملک اُس کا ساتھ دینگے اور انگلینڈ سے بھی اُسے پورا آشیرواد پراپت ہے ۔

اب سوال یہ ہے کہ ایسی حالت میں ہندستان کیا کریگا یا کیا کرے ۔ ہم نے اوپر پردھان منتری نہرو کے خط و بیان کی چرچا کی ہے ۔ ہم صاف صاف کہدیں کہ ہم اُن سے سہمت ہیں پر ہمیں اُن سے سنتوش نہیں ملتا ۔ یہی نہیں' ہمیں تھوڑی سی گھبراہٹ بھی پیدا ہوتی ہے کہ کہیں پاکستان سرکار کی طرح ہماری سرکار بھی کسی کے ہاتھوں نہ کھیل جائے ۔ ہم اپنے پریمی پاٹھکوں کا دھیان خاص طور سے اُن لفظوں کی طرف کھینچنا چاہتے ہیں جو جواہر لال جی نے پہلی مارچ کو پارلیامینٹ میں آخر میں کہے اور جنہیں ہم اوپر دے چکے ہیں ۔ اسکی خاص اہمیت کی وجہ سے ہی ہم نے اُن کے نیچے لکیر کھینچ دی ہے ۔ یہ وہ الفاظ ہیں جن کے سہارے سرکاریں جنتا کو بہکاکر' اُسے لڑائی کے لیئے اکسا دیتی ہیں اور چارے دانے کی طرح کٹواتی گلواتی ہیں ۔

بڑے ادب کے ساتھ ہم جاننا چاہینگے کہ کیا معنی ہیں اُن لفظوں کے جو جواہرلال جی نے کہے' جیسے—'گمبھیر حالت' 'ایک ساتھ ملکر کھڑے ہوں' 'راشٹریہ سوال' وغیرہ ؟ اگر اُن کا مطلب یہ ہے کہ اب سرکار جو کرے اسکی تابعداری عام جنتا کو کرنا چاہیئے' اگر ان کا مطلب یہ ہے کہ آنکھیں موند کر اپنے کو لڑائی کے میدان میں کٹا دینا چاہیئے' اگر ان کا مطلب یہ ہے کہ جنگ کی تیاری کے لیئے ملک کو لگا دینا چاہیئے تو ہم نمرتا سے کہینگے کہ اُن کے نتیجے خراب ہونگے' ملک برباد ہوگا' دیش کے رئیس اور بھی مالا مال بنیں گے' غریب اور بھی محتاج بنیں گے اور—پھر—ہماری باگڈور تک اپنے ہاتھ سے چلے جانے کا ڈر ہے ۔ ہم

विचार हैं और बहुत ग़ौर समझ के बाद हमने जो नीति इस सिलसिले में अपनाई है उनका एक ही आधार है—वह यह कि दुनिया में शान्ति और आज़ादी फैले, हम इसी नीति पर अमल करते रहेंगे."

पार्लियामेन्ट में दिये अपने बयान में जवाहिर लाल जी ने आइज़न हावर के उस आश्वासन का, जिसके मातहत अमरीका से हिन्दुस्तान को फ़ौजी मदद मिल सकती है, ज़िक्र करते कहा:

"अपने इस काम से उन्होंने क्या हमारे क्या अपने ख़ुद के, दोनों के साथ नाइन्साफ़ी की है. जब हम पाकिस्तान को फ़ौजी मदद दिये जाने पर ऐतराज़ उठाते हैं तो अगर उसको ख़ुद ही मंज़ूर कर लेंगे तो बे-उसूल के मौक़ा परस्त कहलायेंगे."

इसके अलावा उन्होंने एक बड़ी संगीन बात पार्लियामेन्ट में कही :

"जम्मू और काशमीर के प्रदेश में 'लड़ाई-बन्द' लेन के इधर उधर बहुत से अमरीकी दर्शक हैं जो 'यूनो' की तरफ़ से भेजे गये हैं. अब हम इन दर्शकों को इस मामले में neutral (निर्वैरी) नहीं मान सकते और इसलिये उनकी मौजूदगी हमें ग़लत मालूम होती है."

जवाहर लाल जी ने यह भी कहा कि जब जग-शान्ति से सम्बन्ध रखने वाले सवालों पर बड़े बड़े देश पहले ही अपने आप फ़ैसला कर लेंगे तो उससे 'यूनो' नहीं चलेगा और न उसके चार्टर की पाबन्दी हो पायेगी. अपनी स्पीच को अंत करते हुए वह बोले :

"हिन्दुस्तान का यह क़तई इरादा नहीं है कि किसी भी काम के लिये या किसी भी दबाव के अन्दर अपनी आज़ादी को छोड़ दे या बेच दे. अब जो यह गम्भीर हालत पैदा हुई है उसमें क्या पार्लियामेन्ट और क्या यह मुल्क—मुझे यक़ीन है कि सबके सब ही—एक साथ मिल कर खड़े होंगे. यह किसी पार्टी का मसला नहीं है बल्कि एक राष्ट्रीय सवाल है जिस पर कोई विचार भेद हो ही नहीं सकता."

इस स्पीच के बाद से सभी जान गये कि भारत और अमरीका के ताल्लुक़ नई शकल ले रहे हैं. अमरीकी नेताओं और अख़बारों के जो बयान निकल रहे हैं उनसे भी यह साफ़ होता जाता है. उधर इंग्लैण्ड के परदेश मिनिस्टर ने इस पर ख़ुशी ज़ाहिर की कि अंग्रेज़ी कामन-वैल्थ का एक मेम्बर अमरीका से फ़ौजी मदद लेकर अपने को मज़बूत बना रहा है ! इधर पाकिस्तान के प्रधान मंत्री ने भी कहा कि इस मदद की मन्शा भारत पर चढ़ाई करने

وچار ہیں اور بہت غور سمجھ کے بعد ہم نے جو نیتی اِس سلسلے میں اپنائی ہے اُن کا ایک ہی آدھار ہے—وہ یہ کہ دنیا میں شانتی اور آزادی پھیلے، ہم اِسی نیتی پر عمل کرتے رہینگے."

پارلیامینٹ میں دیئے اپنے بیان میں جواہر لال جی نے جنرل آئیزن ہاور کے اس آشواسن کا، جس کے ماتحت امریکہ سے ہندستان کو فوجی مدد مل سکتی ہے، ذکر کرتے ہوئے کہا :

"اپنے اس کام سے انہوں نے کیا ہمارے کیا اپنے خود کے، دونوں کے ساتھ ناانصافی کی ہے. جب ہم پاکستان کو فوجی مدد دیئے جانے پر اعتراض اُٹھاتے ہیں تو اگر اسکو خود بھی منظور کر لینگے تو بے اصول کے موقع پرست کہلائیں گے."

اِسکے علاوہ اُنہوں نے ایک بڑی سنگین بات پارلیامینٹ میں کہی :

"جموں اور کاشمیر کے پردیش میں 'لڑائی بند' لین کے اِدھر اُدھر بہت سے امریکی درشک ہیں جو 'یونو' کی طرف سے بھیجے گئے ہیں. اب ہم اِن درشکوں کو اس معاملے میں neutral (نِربیری) نہیں مان سکتے اور اس لئے اُن کی موجودگی ہمیں غلط معلوم ہوتی ہے."

جواہر لال جی نے یہ بھی کہا کہ جب جگ شانتی سے سمبندھ رکھنے والے سوالوں پر بڑے بڑے دیش پہلے ہی اپنے آپ فیصلہ کر لینگے تو اُس سے 'یونو' نہیں چلیگا اور نہ اس کے چارٹر کی پابندی ہو پائے گی. اپنی اسپیچ کو انت کرتے ہوئے وہ بولے :

"ہندستان کا یہ قطعی ارادہ نہیں ہے کہ کسی بھی کام کے لیئے یا کسی بھی دباؤ کے اندر اپنی آزادی کو چھوڑ دے یا بیچ دے. اب جو یہ گمبھیر حالت پیدا ہوئی ہے اسمیں کیا پارلیامینٹ اور کیا یہ ملک—مجھے یقین ہے کہ سب کے سب ہی—ایک ساتھ مل کر کھڑے ہونگے. یہ کسی پارٹی کا مسئلہ نہیں ہے بلکہ ایک راشٹریہ سوال ہے جس پر کوئی وچار بھید ہو ہی نہیں سکتا."

اِس اسپیچ کے بعد سے سبھی جان گئے کہ بھارت اور امریکہ کے تعلق نئی شکل لے رہے ہیں. امریکی نیتاؤں اور اخباروں کے جو بیان نکل رہے ہیں اُن سے بھی یہ صاف ہوتا جاتا ہے. اُدھر انگلینڈ کے پردیش منسٹر نے اِس پر خوشی ظاہر کی کہ انگریزی کامن ویلتھ کا ایک ممبر امریکہ سے فوجی مدد لیکر اپنے کو مضبوط بنا رہا ہے! اِدھر پاکستان کے پردھان منتری نے بھی کہا کہ اِس مدد کی منشا بھارت پر چڑھائی کرنے

सेक्रेटरी वक़्त वक़्त पर दिया करते थे और हिन्दुस्तान की जनता को यह यक़ीन दिलाया करते थे कि हिन्दुस्तान के अन्दर सिरजनहार की सब से बड़ी रहमत अंग्रेज़ी राज है जिसके अन्दर वह लगातार बढ़ रहा है. जनरल आईज़न हावर के बयान से तो हमारा यह ख़याल और भी पक्का हो गया. उनका कहना है :

"अमरीका दिल से चाहता है कि जिस तरह दुनिया के दूसरे हिस्सों में उसी तरह मिडिल ईस्ट में भी स्थिरता और मज़बूती बढ़े. मेरा विश्वास है कि अगर हमले का मुक़ाबिला करने और हमले का डर कम करने के लिये ताक़त बढ़े तो इस इलाक़े के लोग अपने मन की मुराद पूरी कर सकेंगे. वह यह है कि अपने जीवन का तर्ज़ बेहतर बनायें और अपने दिल की मरज़ी के मुताबिक़ समाजी तरक़्क़ी करें. अमरीका इस कोशिश में मदद करने को तैयार है, बशर्तेकि उसकी मदद मांगी जावे."

अपने बयान में अमरीकी राजपति ने तुर्की और पाकिस्तान के फ़ौजी मुआहिदे की भी—जो 19 फ़रवरी को हुआ—ताईद की और बताया कि सारे मिडिल ईस्ट को हिफ़ाज़त और शान्ति की तरफ़ ले जाने के लिये यह एक 'रचनात्मक क़दम' है. इस सब से अमरीका के इरादे और उसका प्रोग्राम ज़ाहिर हो जाता है.

राजपति आईज़न हावर के ख़त व बयान के जवाब में प्रधान मंत्री नेहरू ने भी एक ख़त लिखा और पहली मार्च को पार्लियामेन्ट में एक बयान दिया. उन्होंने पार्लियामेन्ट में अपना ख़त भी पढ़ कर सुनाया. पंडित जवाहरलाल ने अमरीकी फ़ौजी इमदाद को जग शान्ति के लिये हानिकर और ख़तरनाक बताया. उन्होंने कहा कि एशिया की सरज़मीन पर विदेशी फ़ौजों के आने से बरसों पुराने शक शुबहे फिर से पैदा होने लगेंगे और एशिया के देशों की आज़ादी तक भी जोखिम में पड़ जायेगी जो कि किसी भी क़ीमत पर नहीं छोड़ी जा सकती. दूसरे, जवाहरलाल जी ने कहा कि इमदाद एक तरह का 'दख़ल' है और इससे हिन्दुस्तान पाकिस्तान के ताल्लुक़ ख़राब होने का अंदेशा है और पिछले दिनों जो कुछ अच्छा सम्बन्ध क़ायम हुआ था उस पर पानी फिर जावेगा.

अपने ख़त में पंडित नेहरू ने जनरल आईज़न हावर की भावनाओं की क़द्रदानी की है और उन्होंने जो इत्मीनान दिलाये हैं उन पर ख़ुशी ज़ाहिर की है. उन्होंने यह भी कहा :

"इस मामले में मेरी हुकूमत और हमारी जनता की जो राय है उससे आप वाक़िफ़ हैं ही. हमारे जो

سیکریٹری وقت وقت پر دیا کرتے تھے اور ہندستان کی جنتا کو یہ یقین دلایا کرتے تھے کہ ہندستان کے اندر سرجن ہار کی سب سے بڑی رحمت انگریزی راج ہے جس کے اندر وہ لگاتار آگے بڑھ رہا ہے۔ جنرل آئزن ہاور کے بیان سے تو ہمارا یہ خیال اور بھی پکا ہو گیا۔ اُن کا کہنا ہے :

"امریکہ دل سے چاہتا ہے کہ جس طرح دنیا کے دوسرے حصوں میں اسی طرح مڈل ایسٹ میں بھی استھرتا اور مضبوطی بڑھے۔ میرا وشواس ہے کہ اگر حملے کا مقابلہ کرنے اور حملہ کا ڈر کم کرنے کے لئے طاقت بڑھے تو اس علاقے کے لوگ اپنے من کی مراد پوری کر سکیں گے۔ وہ یہ ہے کہ اپنے جیون کا طرز بہتر بنائیں اور اپنے دل کی مرضی کے مطابق سماجی ترقی کریں۔ امریکہ اس کوشش میں مدد کرنے کو تیار ہے بشرطیکہ اسکی مدد مانگی جائے۔"

اپنے بیان میں امریکی راج پتی نے ترکی اور پاکستان کے فوجی معاہدے کی بھی—جو 19 فروری کو ہوا—تائید کی اور بتایا کہ سارے مڈل ایسٹ کو حفاظت اور شانتی کی طرف لے جانے کے لئے یہ ایک 'رچناتمک قدم' ہے۔ اس سب سے امریکہ کے ارادے اور اسکا پروگرام ظاہر ہو جاتا ہے۔

راج پتی آئزن ہاور کے خط و بیان کے جواب میں پردھان منتری نہرو نے بھی ایک خط لکھا اور پہلی مارچ کو پارلیامنٹ میں ایک بیان دیا۔ انہوں نے پارلیامنٹ میں اپنا خط بھی جا کر سنایا۔ پنڈت جواہر لال نے امریکی فوجی امداد کو جگ شانتی کے لئے ہانیکر اور خطرناک بتایا۔ انہوں نے کہا کہ ایشیا کی سرزمین پر ودیشی فوجوں کے آنے سے برسوں پرانے شک شبہے پھر سے پیدا ہونے لگیں گے اور ایشیا کے دیشوں کی آزادی تک بھی جوکھم میں پڑ جائے گی جو کہ کسی بھی قیمت پر نہیں چھوڑی جا سکتی۔ دوسرے، جواہر لال جی نے کہا کہ امداد ایک طرح کا 'دخل' ہے اور اس سے ہندستان پاکستان کے تعلق خراب ہونے کا اندیشہ ہے اور پچھلے دنوں جو کچھ اچھا سمبندھ قائم ہوا تھا اس پر پانی پھر جائے گا۔

اپنے خط میں پنڈت نہرو نے جنرل آئزن ہاور کی بھاوناؤں کی قدردانی کی ہے اور انہوں نے جو اطمینان دلائے ہیں ان پر خوشی ظاہر کی ہے۔ انہوں نے یہ بھی کہا :

"اس معاملے میں میری حکومت اور ہماری جنتا کی جو رائے ہے اس سے آپ واقف ہیں ہی۔ ہمارے جو

हिन्दुस्तान और अमरीका

पाक-अमरीकी फ़ौजी समझौते पर अपनी राय हम जनवरी के नम्बर में दे चुके हैं. अब यह समझौता सारे आलम में रौशन हो चुका है. फ़रवरी के आख़िरी हफ़्ते में अमरीका के राजपति जनरल ड्वाइट आईज़न हावर ने इस बारे में प्रेस को एक बयान दिया और साथ ही साथ एक ख़त हमारे प्रधान मंत्री, पंडित जवाहर लाल नेहरू को भी लिखा. उस ख़त में अमरीकी राजपति ने कहा :—

"हम जो कुछ करने का इरादा रखते हैं और जिस पर पाकिस्तान भी राज़ी है, उसमें किसी तरह से भी हिन्दुस्तान के ख़िलाफ़ कुछ नहीं किया जायेगा और मैं खुले आम तसदीक़ कर देना चाहता हूं कि हम जो मदद देते हैं—चाहे पाकिस्तान को या किसी और देश को—अगर उनका ग़लत इस्तेमाल किया गया या किसी दूसरे मुल्क के ख़िलाफ़ चढ़ाई में उसे काम में लाया गया तो अपने वैधानिक हक़ के बमूजिब मैं फ़ौरन उस पर क़दम उठाऊंगा और 'यूनो' के अन्दर से और बाहर से इस चढ़ाई को रद करने की कोशिश करूंगा."

आगे चल कर जनरल आईज़न हावर ने लिखा है :

"मैं जानता हूं कि आप और आप की सरकार को इस बात की ज़रूरत का अच्छी तरह अहसास है कि हालत में स्थिरता और मज़बूती लाने के लिये आर्थिक तरक़्क़ी की सख़्त दरकार है. इसी वाक़ये को नज़र में रख कर हमारी सरकार ने हिन्दुस्तान को मदद दी है और इसी वजह से (अमरीकी) कांग्रेस से मैं यही सिफ़ारिश कर रहा हूं कि काफ़ी आर्थिक और तकनीकी मदद जारी रखी जाये. फिर, आज़ाद दुनिया के हक़ में हमारा यह भी यक़ीन है कि हिन्दुस्तान में इतना माद्दा व लायक़ी हो कि मज़बूत फ़ौजियाना ढंग से अपनी हिफ़ाज़त कर सके और जिस असरदार रंग से आप की सरकार ने अपने फ़ौजी बन्दोबस्त की देख रेख की है उसकी हम तारीफ़ करते हैं."

ख़त के आख़िर में अमरीकी राजपति ने भारत के प्रधान मंत्री को यह इतमीनान दिलाया है :

"अगर आपकी सरकार इस नतीजे पर पहुंचे कि हालत ऐसी हो गई है कि हमारे Mutual Security Legislation के दस्तूर के मुताबिक़ मदद की ज़रूरत है तो आपकी अपील पर मैं बहुत ही हमदर्दी के साथ विचार करूंगा."

यह ख़त पढ़ कर हमें उन बयानों की याद हो आई जो हिन्दुस्तान के वाइसराय लॉग या अंगरेज़ी हिन्द

ہندستان اور امریکہ

پاک امریکی فوجی سمجھوتے پر اپنی رائے ہم جنوری کے نمبر میں دے چکے ہیں . اب یہ سمجھوتہ سارے عالم میں روشن ہوچکا ہے . فروری کے آخری ہفتہ میں امریکہ کے راج پتی جنرل ڈوایٹ آئزن ہاور نے اس بارے میں پریس کو ایک بیان دیا اور ساتھ ہی ساتھ ایک خط ہمارے پردھان منتری' جواہر لال نہرو کو بھی لکھا . اس خط میں امریکی راج پتی نے کہا :

" ہم جو کچھ کرنے کا ارادہ رکھتے ہیں اور جس پر پاکستان بھی راضی ہے' اسمیں کسی طرح سے بھی ہندستان کے خلاف کچھ نہیں کیا جائیگا اور میں کھلے عام تصدیق کر دینا چاہتا ہوں کہ ہم جو مدد دیتے ہیں—چاہے پاکستان کو یا کسی اور دیش کو —اگر اسکا غلط استعمال کیا گیا یا کسی دوسرے ملک کے خلاف چڑھائی میں اسے کام میں لایا گیا تو اپنے ویدھانک حق کے بموجب میں فوراً اس پر قدم اٹھاؤنگا اور ' یونو' کے اندر سے اور باہر سے اس چڑھائی کو رد کرنے کی کوشش کرونگا ."

آگے چل کر جنرل آئزن ہاور نے لکھا ہے :

" میں جانتا ہوں کہ آپ اور امریکی سرکار کو اس بات کی ضرورت کا اچھی طرح احساس ہے کہ حالت میں استھرتا اور مضبوطی لانے کے لیئے آرتھک ترقی کی سخت درکار ہے . اسی واقع کو نظر میں رکھکر ہماری سرکار نے ہندستان کو مدد دی ہے اور اسی نظر سے (امریکی) کانگریس سے میں یہی سفارش کر رہا ہوں کہ کافی آرتھک اور تکنیکی مدد جاری رکھی جائے . پھر' آزاد دنیا کے حق میں ہمارا یہ بھی یقین ہے کہ ہندستان میں اتنا مادہ و لیاقت ہوکہ مضبوط فوجیانہ ڈھنگ سے اپنی حفاظت کرسکے. اور جس اثردار رنگ سے آپکی سرکار نے اپنے فوجی بندوبست کی دیکھ ریکھ کی ہے اسکی ہم تعریف کرتے ہیں ."

خط کے آخر میں امریکی راج پتی نے بھارت کے پردھان منتری کو یہ اطمینان دلایا ہے :

" اگر آپکی سرکار اس نتیجہ پر پہونچے کہ حالت ایسی ہوگئی ہے کہ ہمارے Mutual Security Legislation کے دستور کے مطابق مدد کی ضرورت ہے تو آپکی اپیل پر میں بہت ہی ہمدردی کے ساتھ وچار کرونگا ."

یہ خط پڑھکر ہمیں ان بیانوں کی یاد ہو آئی جو ہندستان کے وائسرائے لوگ یا انگریزی ہند

तिस पर—बलिहारी है उनकी—हमारे होम मिनिस्टर यह विश्वास दिलाते हैं कि क़ानूनी व्यवस्था में तबदीली की जायेगी ताकि इनसाफ़ जल्दी और सस्ता हो. हम नहीं मानते कि हमारे होम मिनिस्टर इतने भूले हैं जो यह नहीं जानते कि एयर कन्डीशन अदालतों के चैम्बरों से इनसाफ़ सस्ता नहीं हो जायेगा ! नतीजा केवल यही होगा कि जो व्यवस्था आज क़ायम है वह और भी ज़्यादा मंहगी बन जायेगी, और मामूली आदमी को न्याय मिलना कहीं ज़्यादा मंहगा और दुर्लभ हो जायेगा. शायद वह चीनी जिसने मांस पकाने के लिये अपनी झोंपड़ी जला दी थी हमारी सरकार के मुक़ाबिले ज़्यादा अक़ल-मन्द था.

अकसर ही हमारे प्रधान मंत्री को इस बात पर बड़ा ग़ुस्सा आता है कि दफ़्तरी कारोबार एक जंगल की तरह बढ़ता जा रहा है ! लेकिन हमारा ख़याल है कि उन्हें इस बात का भी इल्म होगा कि देश के अन्दर हुक्कामों और जनता के बीच की खाई बढ़ती चली जा रही है. लाखों-करोड़ों को न खाना मयस्सर है न मकान, लेकिन उनकी ही कमाई पर चंद लोग आराम करते हैं. यह हमारे राष्ट्रपति भवन, राज भवन, हाई कोर्ट, सेक्रेटेरियट वग़ैरा क्या हैं ? हमारी ग़ुलामी को रह रह कर याद दिलाने वाली नोचनहार निशानियां ! भला ऐसी दर्दनाक हालत में जनता कहीं अपने आपे को पा सकती है ? नहीं, हरगिज़ नहीं और वह यह हालत ज़्यादा अरसे तक बर्दाश्त भी नहीं कर सकती.

क़ुदरत का पुराना व ऊंचा क़ानून है कि जिसको जितनी ज़रूरत हो उसे उतना दो और जिसमें जितनी क़ाबलियत हो उतना उससे लो. तब अगर बढ़ई या मेहतर को दिन भर की कमाई में रुपया सवा रुपया मिलता हो तो मिनिस्टरों या जजों को इतना ज़्यादा क्यों मिले ? हां, उसी हालत में ज़्यादा मिल सकता है जब डाक्टर लोग यह साबित कर दें कि बढ़ई मेहतर को भूक उतनी नहीं लगती जितनी मिनिस्टर या जज को ! ज़रूरत है नीचे वालों की मज़दूरी को बहुत बढ़ाने की और ऊपर वालों की तलबों आदि को बहुत कम करने की. यह समझना कि कुछ लोग ऊंची ज़ात के या ग़ैर मामूली नस्ल के हैं, अव्वल दर्जे की ग़लती होगी. इन्साफ़ चाहिये— समाजी और आर्थिक इन्साफ़, काग़ज़ी और अमली इन्साफ़, इन्साफ़ ही नये भारत की आज की पुकार है. जनता इन्साफ़ चाहती है—हर क़ीमत पर इन्साफ़ चाहती है. हुकूमत का फ़र्ज़ है कि वक़्त की अटल मांग को सुन कर उसके अनुसार क़दम बढ़ावे.

19. 2. '54. —सुरेशराम भाई

تس پر—بلہاری ہے انکی—ہمارے ہوم منسٹر یہ وشواس دلاتے ہیں کہ قانونی ویوستھا میں تبدیلی کی جائیگی تاکہ انصاف جلدی اور سستا ہو۔ ہم نہیں جانتے کہ ہمارے ہوم منسٹر اتنے بھولے ہیں جو یہ نہیں جانتے کہ ایئرکنڈیشن عدالتوں کے چیمبروں سے انصاف سستا نہیں ہو جائیگا ! نتیجہ کیول یہی ہوگا کہ جو ویوستھا آج قائم ہے وہ اور بھی زیادہ مہنگی بن جائیگی اور معمولی آدمی کو نیائے ملنا کہیں زیادہ مہنگا اور درلبھ ہو جائیگا ۔ شاید وہ چینی جسنے مانس پکانے کے لیئے اپنی جھونپڑی جلا دی تھی ہماری سرکار کے مقابلہ زیادہ عقلمند تھا ۔

اکثر ہی ہمارے پردھان منتری کو اس بات پر بڑا غصہ آتا ہے کہ دفتری کاروبار ایک جنگل کی طرح بڑھتا جا رہا ہے ! لیکن ہمارا خیال ہے کہ انہیں اس بات کا بھی علم ہوگا کہ دیش کے اندر حکاموں اور جنتا کے بیچ کی کھائی بڑھتی چلی جارہی ہے، لاکھوں کروڑوں کو نہ کھانا میسر ہے نہ مکان، لیکن انکی ہی کمائی پر چند لوگ آرام کرتے ہیں۔ یہ ہمارے راشٹرپتی بھون، ہائی کورٹ، سکریٹیریٹ وغیرہ کیا ہیں؟ ہماری غلامی کی رہ رہ کر یاد دلانے والی نوچن‌ہار نشانیاں ! بھلا ایسی دردناک حالت میں جنتا کہیں اپنے آپ کو پاسکتی ہے؟ نہیں، ہرگز نہیں اور وہ یہ حالت زیادہ عرصے تک برداشت بھی نہیں کرسکتی ۔

قدرت کا پرانا و اونچا قانون ہے کہ جسکو جتنی ضرورت ہو اسے اتنا دو اور جس میں جتنی قابلیت ہو اتنا اس سے لو ۔ تب اگر بڑھئی یا مہتر کو دن بھر کی کمائی میں روپیہ سوا روپیہ ملتا ہو تو منسٹروں یا ججوں کو اتنا زیادہ کیوں ملے ؟ ہاں، اسی حالت میں زیادہ مل سکتا ہے جب ڈاکٹر لوگ یہ ثابت کردیں کہ بڑھئی مہتر کو بھوک اتنی نہیں لگتی جتنی منسٹر یا جج کو ! ضرورت ہے نیچے والوں کی مزدوری کو بہت بڑھانے کی اور اوپر والوں کی تلبوں آدی کو بہت کم کرنے کی۔ یہ سمجھنا کہ کچھ لوگ اونچی ذات کے یا غیر معمولی نسل کے ہیں، اول درجے کی غلطی ہوگی ۔ انصاف چاہیئے—سماجی اور آرتھک انصاف، کاغذی اور عملی انصاف، انصاف ہی نئے بھارت کی آج پکار ہے ۔ جنتا انصاف چاہتی ہے—ہر قیمت پر انصاف چاہتی ہے ۔ حکومت کا فرض ہے کہ وقت کی اٹل مانگ کو سنکر اس کے انوسار قدم بڑھائے ۔

—سریش رام بھائی 19 . 2 . '54

हाई कोर्ट मिनिस्टेरियल स्टाफ असोसिएशन ने दोबारा अपील की कि अगले बजट में हमारी मांगों पर फिर से विचार किया जाये. खर्च की तफ़सील में जा कर असोसिएशन ने अरज़ की कि 1954-55 से 1958-59 तक पांच साल की मुद्दत में केवल Rs. 8,60,616/- का खर्च बेशी बैठता है :

	Rs.
1954-55	1,13,628
1955-56	1,42,920
1956-57	1,72,848
1957-58	2,01,396
1958-59	2,29,824

अब यह आठ-नौ लाख रुपये की रक़म इतनी बड़ी नहीं है जो सरकार मंजूर न कर सके—अगर वह चाहे तो कर सकती है. इसलिये मानना पड़ेगा कि हाई कोर्ट के बाबुओं का दावा सही है. लेकिन 'पैसे की कमी' की वजह से सरकार ने उसे मानने से इन्कार कर दिया. मगर अचम्भा इस बात पर होता है कि पैसे की तंगी की यह तलवार दफ़्तर के बाबुओं को ही दिखाई जाती है न कि उन दूसरे खर्चों पर जिन पर इसी हाई कोर्ट में काफ़ी पैसा खर्च किया जाता है. चीफ़ जस्टिस की अदालत के लिये एक नया, शानदार, लम्बा-चौड़ा कमरा बना है. हाई कोर्ट की इमारत में नई नई तामीरें हो रही हैं जिन पर 28 लाख रुपया खर्च किया जा रहा है. जजों के चैम्बरों को एयर कन्डीशन करने के लिये साढ़े छः लाख रुपया खर्च किया जा रहा है. कैसे ताज्जुब की बात है कि हाई कोर्ट के भारतीय जज वह सुविधाएं चाहते हैं जिनके बिना अंगरेज़ी जजों ने मज़े से काम चला लिया. हमें डर है कि आज तो जजों के चैम्बर को एयर कन्डीशन किया जाता है, कल उनके घरों को भी एयर कन्डीशन करने की ज़रूरत पड़ेगी क्योंकि—ज़ाहिर है—अगर वह छै घंटे एयर कन्डीशन कमरों में रहेंगे और अठारह घन्टे मामूली हवा में तो उनकी सिहत को नुक़सान ज़रूर पहुंचेगा. और जब इलाहाबाद के जजों को यह आराम दिया जायेगा तो दूसरी हाई कोर्ट वाले क्यों पीछे रहेंगे ? और फिर, बेचारे मिनिस्टरों ने कौन क़सूर किया है कि जजों को तो एक सुविधा दी जाये पर उन्हें न दी जाये ? इस तरह करोड़ों रुपया खत्म हो जायगा, सिर्फ़ कुछ बड़े लोगों की एक खुशी पूरी करने के लिये, लेकिन ग़रीब बाबू लोगों को अपने बच्चों के पालन पोशन के लिये ज़रा सी तनख़्वाह भी नहीं दी जायेगी और आम जनता को ठीक से अनाज कपड़ा भी नसीब न हो तो न हो !

ہائی کورٹ منسٹیریل اسٹاف ایسوسی ایشن نے دوبارہ اپیل کی کہ اگلے بجٹ میں ہماری مانگوں پر پھر سے وچار کیا جائے ۔ خرچ کی تفصیل میں جا کر ایسوسی ایشن نے عرض کی کہ 1954-55 سے 1958-59 تک کی پانچ سال کی مدت میں Rs. 8,60,616/- کا خرچ بیشی بیٹھتا ہے :

Rs.	
1,13,628	 1954-55
1,42,920	 1955-56
1,72,848	 1956-57
2,01,396	 1957-58
2,29,824	 1958-59

اب یہ آٹھ نو لاکھ روپئے کی رقم اتنی بڑی نہیں ہے جو سرکار منظور نہ کرسکے—اگر وہ چاہے تو کرسکتی ہے ۔ اسلئے ماننا پڑیگا کہ ہائی کورٹ کے بابوؤں کا دعویٰ صحیح ہے ۔ لیکن 'پیسے کی کمی' کی وجہ سے سرکار نے اسے ماننے سے انکار کردیا ۔ مگر اچنبھا اس بات پر ہوتا ہے کہ پیسے کی تنگی کی یہ تلوار دفتر کے بابوؤں کو ہی دکھائی جاتی ہے نہ کہ ان دوسرے خرچوں پر جن پر اسی ہائی کورٹ میں کافی پیسہ خرچ کیا جاتا ہے ۔ چیف جسٹس کی عدالت کے لئے ایک نیا' شاندار' لمبا چوڑا کمرہ بنا ہے ۔ ہائی کورٹ کی عمارت میں نئی نئی تعمیریں ہو رہی ہیں جن پر 28 لاکھ روپیہ خرچ کیا جا رہا ہے ۔ ججوں کے کمروں کو ایئرکنڈیشن کرنے کے لئے ساڑھے چھ لاکھ روپیہ خرچ کیا جا رہا ہے ۔ کیسے تعجب کی بات ہے کہ ہائی کورٹ کے بھارتیہ جج وہ سویدھائیں چاہتے ہیں جنکے بنا انگریزی ججوں نے مزے سے کام چلا لیا ۔ ہمیں ڈر ہے کہ آج تو ججوں کے چیمبر کو ایئرکنڈیشن کیا جاتا ہے' کل ان کے گھروں کو بھی ایئرکنڈیشن کرنے کی ضرورت پڑیگی—ظاہر ہے—اگر وہ چھ گھنٹے ایئرکنڈیشن کمروں میں رہینگے اور اٹھارہ گھنٹے معمولی ہوا میں تو انکی صحت کو نقصان ضرور پہونچیگا ۔ اور جب الہ آباد کے ججوں کو یہ آرام دیا جائیگا تو دوسری ہائی کورٹ والے کیوں پیچھے رہیں گے؟ اور پھر' بیچارے منسٹروں نے کون قصور کیا ہے کہ ججوں کو تو ایک سویدھا دی جائے پر انہیں نہ دی جائے ؟ اس طرح کروڑوں روپیہ ختم ہو جائیگا' صرف کچھ بڑے لوگوں کی ایک خوشی پوری کرنے کے لیئے' لیکن غریب بابو لوگوں کو اپنے بچوں کے پالن پوشن کے لیئے ذرا سی تنخواہ بھی نہیں دی جائیگی اور عام جنتا کو ٹھیک سے اناج کپڑا بھی نصیب نہ ہو تو نہ ہو !

सच्चाई के साथ पैरवी कर रही है लेकिन उसकी कोई सुनवाई नहीं.

उत्तर प्रदेश के सरकारी बाबुओं को 1947 वाली पे कमिटी की सिफारिशों के अनुसार पैसा मिलता है. बदक़िस्मती से इस कमेटी ने हाई कोर्ट के बाबुओं को सेक्रेटेरियट के बाबुओं से अलग दर्जे में रखा. इसकी वजह यह बताई कि सेक्रेटेरियट में भरती के लिये तो खुला मुक़ाबिला (काम्पेटीशन) किया जाता है लेकिन दूसरे 'मातहत महकमों' में दफ़तरों के मुखिया ही लोगों को नौकरी पर लगा लेते हैं. हाई कोर्ट में भी वहां का मुखिया ही पसंद करके भरती कर लेता है. लेकिन हाई कोर्ट को मातहत महकमा कौन मान लेगा, और यह कौन कह सकता है कि सेक्रेटेरियट या पब्लिक सर्विस कमीशन हाई कोर्ट से बढ़ कर महकमे हैं?

हाई कोर्ट के बाबुओं की तरफ़ से एक मेमोरेन्डम सरकार के पास भेजा गया था. उसमें यह कहा गया था कि हाई कोर्ट के बाबू लोग दफ़्तर के अंदर चिट्ठी-पत्री, टाइप करना, प्रूफ़ देखना आदि का इतना काम करते हैं जो दूसरे दफ़्तर के बाबुओं के काम के आगे कम नहीं ठहराया जा सकता. मेमोरेन्डम में यह भी कहा गया कि सेक्रेटेरियट के अंदर जो बाबू लोग हैं उनमें से लगभग एक तिहाई ऐसे हैं जिनको पब्लिक सर्विस कमीशन ने नहीं रक्खा है. इसके अलावा सेक्रेटेरियट में छे महीने तक के लिये आरज़ी तौर पर लोग रख लिये जाते हैं. इनके बारे में पब्लिक सर्विस कमीशन से कुछ नहीं पूछा जाता. इन लोगों तक को जो तनख़ाह शुरू में दी जाती है वह हाई कोर्ट वालों से ज़्यादा रहती है. फिर जब इन लोगों को मुस्तक़िल करने का सवाल आता है तो इन का इम्तिहान अलग से लिया जाता है. इसलिये मेमोरेन्डम का कहना है, और सही कहना है, कि अगर हाई कोर्ट वालों की नियुक्ति पब्लिक सर्विस कमीशन नहीं करता तो इसके कारन उन्हें पहले ग्रेड के वेतन-भत्तों से वंचित नहीं रखना चाहिये. लेकिन अगर यही उनको पहले ग्रेड तक नहीं पहुंचने देने की एक वजह है तो मेमोरेन्डम में उन्होंने कहा कि हमें यह बता दिया जाय ताकि हम चीफ़ जस्टिस से निवेदन कर सकें कि हम लोगों के हित की ख़ातिर, वह हाई कोर्ट में भी बाबुओं की नियुक्ति पब्लिक सर्विस कमीशन की मारफ़त होने दें.

इससे पता चलता है कि हाई कोर्ट और सेक्रेटेरियट स्टाफ़ में वेतन भेद करने की कोई सही बुनियाद नहीं है. लेकिन मेमोरेन्डम के निवेदन पर एडीशनल डिप्टी सेक्रेट्री, जुडीशल (ए) डिपार्टमेन्ट ने सरकार की तरफ़ से जवाब दिया कि इस समय आर्थिक तंगी के कारन आप का तलब बढ़वाने के प्रस्ताव को नहीं मंज़ूर किया जा सकता.

سچائی کے ساتھ پیروی کر رہی ہے لیکن اسکی کوئی سنوائی نہیں۔

اترپردیش کے سرکاری باہوؤں کو 1947 والی پے کمیٹی کی سفارشوں کے انوسار پیسہ ملتا ہے۔ بدقسمتی سے اس کمیٹی نے ہائی کورٹ کے باہوؤں کو سیکریٹریٹ کے باہوؤں سے الگ درجے میں رکھا۔ اسکی وجہ یہ بتائی کہ سیکریٹریٹ میں بھرتی کے لئے تو کھلا مقابلہ (کامپٹیشن) کیا جاتا ہے لیکن دوسرے 'ماتحت محکموں' میں دفتروں کے مکھیا ہی لوگوں کو نوکری پر لگا لیتے ہیں۔ ہائی کورٹ میں بھی وہاں کا مکھیا ہی پسند کر کے بھرتی کر لیتا ہے۔ لیکن ہائی کورٹ کو ماتحت محکمہ کون مان لے گا، اور یہ کون کہہ سکتا ہے کہ سیکریٹریٹ یا پبلک سروس کمیشن ہائی کورٹ سے بڑھکر محکمے ہیں؟

ہائی کورٹ کے باہوؤں کی طرف سے ایک میمورینڈم سرکار کے پاس بھیجا گیا تھا۔ اس میں یہ کہا گیا تھا کہ ہائی کورٹ کے بابو لوگ دفتر کے اندر چٹھی پتری، ٹائپ کرنا، پروف دیکھنا آدی کا اتنا کام کرتے ہیں جو دوسرے دفتر کے باہوؤں کے کام کے آگے کم نہیں ٹھہرایا جاسکتا۔ میمورینڈم میں یہ بھی کہا گیا کہ سیکریٹریٹ کے اندر جو بابو لوگ ہیں اُن میں سے لگ بھگ ایک تہائی ایسے ہیں جن کو پبلک سروس کمیشن نے نہیں رکھا ہے۔ اس کے علاوہ سکریٹریٹ میں چھ مہینے تک کے عارضی طور پر لوگ رکھ لیئے جاتے ہیں۔ ان کے بارے میں پبلک سروس کمیشن سے کچھ نہیں پوچھا جاتا۔ ان لوگوں تک کو جو تنخواہ شروع میں دی جاتی ہے وہ ہائی کورٹ والوں سے زیادہ رہتی ہے۔ پھر جب ان لوگوں کو مستقل کرنے کا سوال آتا ہے تو ان کا امتحان الگ سے لیا جاتا ہے۔ اس لئے میمورینڈم کا کہنا ہے، اور سہی کہنا ہے، کہ اگر ہائی کورٹ والوں کی نیکتی پبلک سروس کمیشن نہیں کرتا تو اسکے کارن انہیں پہلے گروپ کے طلب بھتوں سے ونچت نہیں رکھنا چاہیئے۔ لیکن یہی ان کو پہلے گروپ تک نہیں پہونچنے دینے کی ایک وجہ ہے تو میمورینڈم میں انہوں نے کہا ہے کہ ہمیں یہ بتا دیا جائے تاکہ ہم چیف جسٹس سے نویدن کر سکیں کہ ہم لوگوں کے ہت کی خاطر، وہ ہائی کورٹ میں بھی باہوؤں کی نیکتی پبلک سروس کمیشن کی معرفت ہونے دیں۔

اس سے پتہ چلتا ہے کہ ہائی کورٹ اور سیکریٹریٹ کے اسٹاف میں ویتن بھید کرنے کی کوئی سہی بنیاد نہیں ہے، لیکن میمورینڈم کے نویدن پر ایڈیشنل ڈپٹی سکریٹری، جوڈیشل (اے) ڈیپارٹمنٹ نے سرکار کی طرف سے جواب دیا کہ اس سمے آرتھک تنگی کے کارن آپ کی طلب کو بڑھوانے کے پرستاؤ کو نہیں منظور کیا جاسکتا۔

हमारी राय

ہماری رائے

हाई कोर्ट के बाबुओं के साथ बेइन्साफ़ी

हर सरकारी बन्दोबस्त में दो महकमे रहते हैं—क़ानूनी (judicial) और हुक्कामी (executive). अंग्रेजी राज में सारे देश में हुक्कामी महकमों की ही अधिक चलती थी जिस पर सारी जनता को ऐतराज़ था. क्योंकि वैसी हालत में प्रजा के साथ ठीक न्याय न हो सकता था. इसलिये सभी की मांग थी कि क़ानूनी महकमों को हुक्कामी से अलग और आज़ाद रखा जाय. स्वराजी सरकारें बन जाने पर इस चीज़ की तरफ़ थोड़ा बहुत ध्यान दिया जाने लगा. कुछ सूबों की सरकारें इस कोशिश में हैं कि क़ानून के महकमों को मुनासिब यानी ऊंची से ऊंची जगह दी जाय.

इस चीज़ को पूरा करने के लिये पहली ज़रूरी बात यह है कि इन दोनों महकमों में जो मुलाज़िम काम करते हैं उनके साथ एकसा बरताव किया जाय. शायद यही कारन है कि हाइकोर्ट के जजों को उतनी ही या उससे भी बढ़ कर तलब और भत्ते दिये जाते हैं जितने मिनिस्टरों या दूसरे ओहदेदारों को—हालांकि हम तो यही चाहेंगे कि आज हमारे करोड़ों भाई बहनों की जो ग़रीबी की हालत है उसके अनुसार सब को तलब वग़ैरा दी जाया करें. फिर भी इससे इन्कार इन्कार करेगा कि अगर क़ानूनी महकमे के चोटी के अफ़सरों को मिनिस्टरों के मुक़ाबिले दिया जाता है तो इन महकमों में जो और दूसरे काम करने वाले हैं इनके साथ भी एकसा बरताव हो. इसलिये दोनों महकमों में काम करने वाले बाबुओं—Ministerial staff—में कोई भेद नहीं होना चाहिये और दोनों को एक सी सुविधाएं होनी चाहियें. यह सूरत बंगाल, बम्बई, पूर्व पंजाब, बिहार और मध्य प्रदेश के सूबों में है, जहां सेक्रेटेरियट और हाई कोर्ट में काम करने वालों की एक सी ही तलब, भत्ता आदि हैं. मगर इलाहाबाद हाई कोर्ट में ऐसा नहीं है वह देश की सबसे बड़ी हाई कोर्ट है. फिर भी वहां के बाबुओं के साथ यह बेइन्साफ़ी हो रही है. काफ़ी अरसे से इन बाबुओं की ऐसोसिएशन (High Court Ministerial Officer's Association) अपने मामले की खूबी और

ہائی کورٹ کے بابوؤں کے ساتھ بے انصافی

ہر سرکاری بندوبست میں دو محکمے رہتے ہیں—قانونی اور حکامی (executive). انگریزی راج میں سارے دیش میں حکامی محکموں کی ہی ادھک چلتی تھی جس پر ساری جنتا کو اعتراض تھا. کیونکہ ویسی حالت میں پرجا کے ساتھ ٹھیک نیائے نہیں ہو سکتا تھا. اس لئے سبھی کی مانگ تھی کہ قانونی محکمے کو حکامی سے الگ اور آزاد رکھا جائے. سوراجی سرکاریں بن جانے پر اس چیز کی طرف تھوڑا بہت دھیان دیا جانے لگا. کچھ صوبوں کی سرکاریں اس کوشش میں ہیں کہ قانون کے محکمے کو مناسب یعنی اونچی سے اونچی جگہ دی جائے.

اس چیز کو پورا کرنے کے لئے پہلی ضروری بات یہ ہے کہ ان دونوں محکموں میں جو ملازم کام کرتے ہیں ان کے ساتھ ایکسا برتاؤ کیا جائے. شاید یہی کارن ہے کہ ہائی کورٹ کے ججوں کو اتنا ہی یا اس سے بھی بڑھکر طلب اور بھتے دیئے جاتے ہیں جتنے منسٹروں یا دوسرے عہدہ داروں کو—حالانکہ ہم تو یہی چاہیں گے کہ آج ہمارے کروڑوں بھائی بہنوں کی جو غریبی کی حالت ہے اسی کے انوسار سب کو طلب وغیرہ دی جایا کریں—پھر بھی اس سے کون انکار کریگا کہ اگر قانونی محکمے کے چوٹی کے افسروں کو منسٹروں کے مقابلے دیا جاتا ہے تو ان محکموں میں جو اور دوسرے کام کرنے والے ہیں ان کے ساتھ بھی ایکسا برتاؤ ہو. اس لئے دونوں محکموں میں کام کرنے والے بابوؤں—Ministerial staff—میں کوئی بھید نہیں ہونا چاہئے اور دونوں کو ایک سی سودھائیں ہونی چاہئیں. یہ صورت بنگال، بمبئی، پوروی پنجاب، بہار اور مدھیہ پردیش کے صوبوں میں ہے، جہاں سیکریٹیریٹ اور ہائی کورٹ میں کام کرنے والوں کی ایک سی ہی طلب، بھتہ آدی ہیں. مگر الہ آباد ہائی کورٹ میں ایسا نہیں ہے. یہ دیش کی سب سے بڑی ہائی کورٹ ہے. پھر بھی وہاں کے بابوؤں کے ساتھ یہ بے انصافی ہو رہی ہے. کافی عرصے سے ان بابوؤں کی ایسوسی ایشن (High Court Ministerial Officer's Association) اپنے معاملے کی خوبی اور

रहते हैं मगर वह यह न जान सका कि वह कौन है. उसके कान में कोई फुसफुसाया—"मार्टिन क्या तुम मुझे नहीं जानते ?"

"कौन है ?" मार्टिन ने मुंह ही मुंह में कहा.

"यह मैं हूं" अंधेरे में से बुड्ढा सिपाही आगे बढ़ा और फिर ग़ायब हो गया.

"और यह मैं हूं" एक और आवाज़ आई और बच्चे को गोद में लिये एक औरत आगे बढ़ी और मुस्कराई. बच्चा हंसा और दोनों आंखों से ओझल हो गये.

"यह मैं हूं" फिर आवाज़ आई और सेब वाली बुढ़िया और लड़का आगे बढ़े, मुस्कराए और ग़ायब हो गये.

मार्टिन को अपने दिल में एक आत्मिक आनन्द का अहसास हुआ. उसने अपने सीने पर क्रास का निशान बनाया और पाठ्य के लिये बाइबिल की तरफ़ आकर्शित हुआ. पहले ही पन्ने पर उसकी नज़र इन लाइनों पर पड़ी—"मैं भूका था, तूने मुझे खाना दिया. मैं प्यासा था, तूने मेरी प्यास बुझाई, मैं अजनबी था, मगर तूने मुझे अपने घर बुलाया" और पन्ने के आख़िर में उसने पढ़ा—"जो कुछ तूने भाइयों के साथ किया वह वास्तव में मेरे साथ किया."

और तब मार्टिन ने समझा कि उसका सपना सच्चा था और मसीह सचमुच उसके यहां पधारे जिसका उसने खुले दिल से स्वागत किया था.

ہوئے ہیں مگر وہ یہ نہ جان سکا کہ وہ کون ہے۔ اس کے کان میں کوئی پھسپھسایا—"مارٹن کیا تم مجھے نہیں جانتے ؟"

"کون ہے ؟" مارٹن نے منہ ہی منہ میں کہا۔

"یہ میں ہوں" اندھیرے میں سے بڈھا سپاہی آگے بڑھا اور پھر غائب ہوگیا۔

"اور یہ میں ہوں" ایک اور آواز آئی اور بچے کو گود میں لئے ایک عورت آگے بڑھی اور مسکرائی۔ بچہ ہنسا اور دونوں آنکھوں سے اوجھل ہوگئے۔

"یہ میں ہوں" پھر آواز آئی اور سیب والی بڑھیا اور لڑکا آگے بڑھے، مسکرائے اور غائب ہوگئے۔

مارٹن کو اپنے دل میں ایک آتمک آنند کا احساس ہوا۔ اس نے اپنے سینے پر کراس کا نشان بنایا اور پاٹھ کے لئے بائبل کی طرف آکرشت ہوا۔ پہلے ہی پنّے پر اس کی نظر ان لائنوں پر پڑی—"میں بھوکا تھا، تو نے مجھے کھانا دیا۔ میں پیاسا تھا، تو نے میری پیاس بجھائی، میں اجنبی تھا مگر تو نے مجھے اپنے گھر بلایا—" اور پنّے کے آخر میں اس نے پڑھا—"جو کچھ تو نے بھائیوں کے ساتھ کیا وہ واستو میں میرے ساتھ کیا۔"

اور تب مارٹن نے سمجھا کہ اس کا سپنا سچا تھا اور مسیح سچ مچ اس کے یہاں پدھارے جس کا اس نے کھلے دل سے سواگت کیا تھا۔

"अरे नानी, हम इन्सानों का यही ढंग है, लेकिन खुदा का यह तरीक़ा नहीं. अगर वह भी ज़रा ज़रा से क़सूरों पर कोड़ों की सज़ा दे तो फिर हमारे बड़े बड़े गुनाहों का क्या कुछ अज़ाब न होगा?" मार्टिन ने जवाब दिया और वह बुढ़िया को मसीह के वह क़िस्से सुनाने लगा जिनमें उनकी दया और क्षमा की चर्चा थी. आख़िर में बोला—"ख़ुदा हम से कहता है कि तुम लोगों को माफ़ करो तब ही मैं तुम्हारे गुनाहों को बख़्शूंगा और फिर इस मासूम बच्चे को तो क्षमा की सब से ज्यादा ज़रूरत है."

"यह तो ठीक है. मगर यह बच्चे बुरी तरह बिगड़ते जाते हैं" बुढ़िया कहने लगी.

"तभी तो बड़ों को अच्छी मिसाल बन कर सामने आना चाहिये." मार्टिन की यह बात सुन कर बुढ़िया बोली—"हां, मैं भी तो यही कहती हूं. मेरे सात बच्चे थे जिनमें से अब सिर्फ़ एक लड़की ज़िन्दा है." और बुढ़िया ने उसे सारा क़िस्सा सुनाया कि वह किस तरह अपनी लड़की के साथ रहती है और इसके कितने बच्चे हैं और वह बच्चे नानी से कितनी मुहब्बत करते हैं. यह बातें करते करते उसके चेहरे पर नरमी और मुहब्बत नज़र आने लगी. आख़िर में बोली—"सचमुच यह इसका बचपन ही तो था. ख़ुदा इसे माफ़ करे." यह कह कर बुढ़िया अपनी लकड़ियों का गट्ठा उठाने लगी तो लड़का बोला—"नानी मैं तुम्हारे बजाय इसे उठाये लेता हूं. मैं भी तो उसी रस्ते जा रहा हूं." बुढ़िया ने अपना सिर हिलाया और हां कह दिया. थोड़ी देर में वह दोनों सड़क पर बातें करते चले जा रहे थे. सेब के पैसे लेने का बुढ़िया ने मार्टिन से कोई ज़िक्र ही नहीं किया.

जब तक वह नज़र आते रहे मार्टिन खड़ा उन्हें देखता रहा. जब घर के दरवाज़े में घुसा तो सीढ़ी पर अपनी टूटी ऐनक मिली. वह अब फिर अपने औज़ार लेकर काम करने बैठ गया. लेकिन अब काफ़ी अंधेरा हो चुका था और मार्टिन के लिये सिलाई करना मुश्किल था. उसने देखा कि सड़क पर लालटेनें जलाने वाला रोशनी कर रहा है तो उसे याद आया कि अब दिया जलाने का समय आ गया है. उसने रोशनी जलाई और मरम्मत का काम पूरा करके देखा तो अब जूता बिल्कुल ठीक था. अब उसने चिराग़ मेज़ पर रक्खा और बाइबिल निकाल कर पढ़ने के लिये बैठ गया. वह उस जगह को निकालना चाहता था जहां से कल उसने पढ़ना छोड़ा था मगर किताब दूसरी जगह से खुल गई. मार्टिन को अब फिर कल का सपना याद आया और ऐसा मालूम हुआ जैसे किसी के पैरों की चाप सुनाई दे रही है. उसने मुड़ कर देखा तो उसे ऐसा लगा कि कुछ लोग कोठरी के अन्दर कोने में

"ارے نانی، ہم انسانوں کا یہی ڈھنگ ہے، لیکن خدا کا یہ طریقہ نہیں۔ اگر وہ بھی ذرا ذرا سے قصوروں پر کوڑوں کی سزا دے تو پھر ہمارے بڑے بڑے گناہوں کا کیا کچھ عذاب نہ ہوگا؟" مارٹن نے جواب دیا اور وہ بڑھیا کو مسیح کے وہ قصے سنانے لگا۔ جن میں اُن کی دیا اور چھما کی چرچا تھی۔ آخر میں بولا—"خدا ہم سے کہتا ہے کہ تم لوگوں کو معاف کرو تب ہی تمہارے گناہوں کو بخشوں گا اور پھر اس معصوم بچہ کو تو چھما کی سب سے زیادہ ضرورت ہے۔"

"یہ تو ٹھیک ہے۔ مگر یہ بچے بہت بری طرح بگڑتے جاتے ہیں" بڑھیا کہنے لگی۔

"تبھی تو بڑوں کو اچھی مثال بن کر سامنے آنا چاہیئے۔" مارٹن کی یہ بات سن کر بڑھیا بولی—"ہاں، میں بھی تو یہی کہتی ہوں۔ میرے سات بچے تھے جن میں سے اب صرف ایک لڑکی زندہ ہے۔" اور پھر بڑھیا نے اُسے سارا قصہ سنایا کہ وہ کس طرح اپنی لڑکی کے ساتھ رہتی ہے اور اس کے کتنے بچے ہیں اور وہ نانی سے کتنی محبت کرتے ہیں۔ یہ باتیں کرتے کرتے اس کے چہرے پر نرمی اور محبت نظر آنے لگی۔ آخر میں بولی—"سچ مچ یہ اس کا بچپن ہی تو تھا۔ خدا اِسے معاف کرے۔" یہ کہہ کر بڑھیا اپنی لکڑیوں کا گٹھا اٹھانے لگی تو لڑکا بولا—"نانی میں تمہارے بجائے اِسے اٹھائے لیتا ہوں۔ میں بھی تو اسی رستے جا رہا ہوں۔" بڑھیا نے اپنا سر ہلایا اور ہاں کہہ دیا۔ تھوڑی دیر میں وہ دونوں سڑک پر باتیں کرتے چلے جا رہے تھے۔ سیب کے پیسے لینے کا بڑھیا نے مارٹن سے کوئی ذکر ہی نہیں کیا۔

جب تک وہ نظر آتے رہے مارٹن کھڑا انہیں دیکھتا رہا۔ جب گھر کے دروازے میں گھسا تو سیڑھی پر اپنی ٹوٹی عینک ملی۔ وہ اب پھر اپنے اوزار لے کر کام کرنے بیٹھ گیا۔ لیکن اب کافی اندھیرا ہو چکا تھا اور مارٹن کے لئے سلائی کرنا مشکل تھا۔ اِس نے دیکھا کہ سڑک پر لالٹینیں جلانے والا روشنی کر رہا ہے تو اُسے یاد آیا کہ اب دیا جلانے کا سمے آ گیا ہے۔ اس نے روشنی جلائی اور مرمت کا کام پورا کر کے دیکھا تو اب جوتا بالکل ٹھیک تھا۔ اب اس نے چراغ میز پر رکھا اور بائبل نکال کر پڑھنے کے لئے بیٹھ گیا۔ وہ اس جگہ کو نکالنا چاہتا تھا جہاں سے کل اس نے پڑھنا چھوڑا تھا مگر کتاب دوسری جگہ سے کھل گئی۔ مارٹن کو اب پھر کل کا سپنا یاد آیا اور ایسا معلوم ہوا جیسے کسی کے پیروں کی چاپ سنائی دے رہی ہے۔ اس نے مڑ کر دیکھا تو اُسے ایسا لگا کہ کچھ لوگ کوٹھری کے اندھیرے کونے میں

वह खिड़की को नहीं भूला था. जब किसी का साया उस पर पड़ता तो वह फौरन देखता कि कौन जा रहा है. उसके जानने वाले भी और अजनबी लोग भी गुज़रते रहे मगर इनमें से कोई भी चर्चा के योग्य नहीं था.

कुछ देर बाद मार्टिन ने देखा कि एक बूढ़ी औरत आई जिसके हाथ में सेबों की एक बड़ी सी मगर क़रीब क़रीब खाली टोकरी थी. शायद वह बहुत से सेब बेच चुकी थी और पीठ पर लकड़ियों का एक गट्ठा था जो वह अपने घर लेजा रही होगी. गट्ठा भारी होने की वजह से वह थक गई थी और चाहती थी कि उसे एक कंधे से दूसरे पर कर ले. उसने टोकरी ज़मीन पर रख दी, गट्ठे को टिकाया कि फिर उसे उठाए. इतने में एक लड़का दौड़ता हुआ आया और उसकी टोकरी में से एक सेब उचक कर भागना चाहता था कि बुढ़िया ने उसे पकड़ लिया. वह छुड़ाने की कोशिश कर रहा था मगर औरत उसे मज़बूती से पकड़े थी. उसने उसकी टोपी उतार कर उसे बालों से पकड़ लिया था और उसे गाली दे रही थी.

मार्टिन का औज़ार उसके हाथ से गिर गया. भागते में में इसकी ऐनक भी गिर कर टूट गई मगर वह इसे उठाने के लिये रुका नहीं. बुढ़िया लड़के के बालों को खींच रही थी और बराबर गालियां दे दे कर धमकी दे रही थी कि वह उसे पुलिस में देगी. लड़का अपने को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था और कहता जाता था—"मैंने सेब लिया तो नहीं, फिर तुम मुझे क्यों मार रही हो. छोड़ दो मुझे."

मार्टिन ने जाकर बच्चे को बुढ़िया से छुड़ाया. "बस नानी बस. खुदा के लिये अब उसे माफ़ कर दो और चला जाने दो."

"मैं ? मैं इसे ऐसा सबक़ दूंगी कि साल भर याद रक्खेगा ! मैं इस बदमाश को पुलिस के हवाले करूंगी !" बुढ़िया बोली.

"जाने दो नानी, जाने दो. अब वह ऐसा नहीं करेगा. मसीह के नाम पर इसे क्षमा कर दो."

बुढ़िया ने लड़के को छोड़ दिया. लड़का भागने लगा मगर मार्टिन ने उसको पकड़ लिया और कहा—"नानी से माफ़ी मांगो और देखो फिर ऐसा काम न करना, मैंने खुद तुम्हें सेब उठाते देखा था."

लड़का रोने और माफ़ी मांगने लगा.

"हां वह ठीक है, और लो यह एक सेब." मार्टिन ने बुढ़िया की टोकरी में से एक सेब उठा कर इसे देते हुए कहा—"नानी, मैं तुम्हें इसके पैसे दे दूंगा."

"इसी तरह तो तुम लोग लड़कों का सत्यानाश करते हो. ऐसे लड़कों के तो इतने कोड़े लगने चाहियें कि याद रक्खें."

وہ کھڑکی کو نہیں بھولا تھا. جب کسی کا سایہ اس پر پڑتا تو وہ فوراً دیکھتا کہ کون جا رہا ہے . اس کے جاننے والے بھی اور اجنبی لوگ بھی گزرتے رہے مگر ان میں سے کوئی بھی چرچا کے یوگیہ نہیں تھا .

کچھ دیر بعد مارٹن نے دیکھا کہ ایک بوڑھی عورت آئی جس کے ہاتھ میں سیبوں کی ایک بڑی سی مگر قریب قریب خالی ٹوکری تھی . شاید وہ بہت سے سیب بیچ چکی تھی اور پیٹھ پر لکڑیوں کا ایک گٹھا تھا جو وہ اپنے گھر لے جا رہی ہوگی . گٹھا بھاری ہونے کی وجہ سے وہ تھک گئی تھی اور چاہتی تھی کہ اسے ایک کندھے سے دوسرے پر کرے . اس نے ٹوکری زمین پر رکھ دی' گٹھے کو ٹکایا کہ پھر اسے اٹھائے . اتنے میں ایک لڑکا دوڑتا ہوا آیا اور اسکی ٹوکری میں سے ایک سیب اچک کر بھاگنا چاہتا تھا کہ بوڑھیا نے اسے پکڑ لیا . وہ چھڑانے کی کوشش کر رہا تھا مگر عورت اسے مضبوطی سے پکڑے تھی . اس نے اسکی ٹوپی اتار کر اسے بالوں سے پکڑ لیا تھا اور اسے گالی دے رہی تھی .

مارٹن کا اوزار اس کے ہاتھ سے گر گیا' بھاگنے میں اسکی عینک بھی گر کر ٹوٹ گئی مگر وہ اسے اٹھانے کے لئے رکا نہیں . بوڑھیا لڑکے کے بالوں کو کھینچ رہی تھی اور برابر گالیاں دے دے کر دھمکی دے رہی تھی کہ وہ اسے پولس میں دے گی . لڑکا اپنے کو چھڑانے کی کوشش کر رہا تھا اور کہتا جاتا تھا—"میں نے سیب لیا تو نہیں' پھر تم مجھے کیوں مار رہی ہو ؟ چھوڑ دو مجھے ."

مارٹن نے جاکر بچے کو بوڑھیا سے چھڑایا " بس نانی بس . خدا کے لئے اب اسے معاف کر دو اور چلے جانے دو ."

"میں؟ میں اسے ایسا سبق دونگی کہ سال بھر یاد رکھیگا ! میں اس بدمعاش کو پولس کے حوالے کرونگی !" بوڑھیا بولی .

"جانے دو نانی' جانے دو . اب یہ ایسا نہیں کریگا . مسیح کے نام پر اسے چھما کردو ."

بوڑھیا نے لڑکے کو چھوڑ دیا . لڑکا بھاگنے لگا مگر مارٹن نے اسکو پکڑ لیا اور کہا—"نانی سے معافی مانگو اور دیکھو پھر کبھی ایسا کام نہ کرنا' میں نے خود تمہیں سیب اٹھاتے دیکھا تھا ."

لڑکا رونے اور معافی مانگنے لگا .

"ہاں یہ ٹھیک ہے' اور لو یہ ایک سیب ." مارٹن نے بوڑھیا کی ٹوکری میں سے ایک سیب اٹھاکر اسے دیتے ہوئے کہا—"نانی' میں تمہیں اس کے پیسے دیدونگا."

"اسی طرح تو تم لوگ لڑکوں کا ستیاناس کرتے ہو . ایسے لڑکوں کے تو اتنے کوڑے لگنے چاہئیں کہ یاد رکھیں."

रखते. अब मैं तीन महीने से बेकार हूं. मैं बराबर कोशिश करती रही कि कहीं मुझे कोई काम मिल जाए मगर आज तक तो मिला नहीं. जो कुछ मेरे पास था सब बेच कर खा गई. मैंने चाहा कि अन्ना की नौकरी ही मिल जाये मगर मुझे कोई नहीं रखता कि ऐसी भूकों मरी औरत हम क्या करेंगे. इस समय मैं एक व्योपारी की बीवी के घर गई थी. उसी के यहां मेरे गांव की एक स्त्री नौकर है जिसने मुझे नौकरी दिलाने का बचन दिया था. मगर वहां से जवाब मिला कि अभी नहीं, हफ्ते भर बाद आना. वह जगह यहां से बहुत दूर है और मैं बिल्कुल थक गई हूं और यह ग़रीब बच्चा अलग भूक से बेचैन है. वह तो कहो हमारी मकानदारनी बिचारी दयालु औरत है जिसने अब तक मुझे कोठरी से निकाल बाहर नहीं किया, नहीं तो मैं कहां जाती ?"

मार्टिन ने एक सर्द आह भर कर कहा—"तुम्हारे पास कोई गरम कपड़ा नहीं है ?"

"गरम कपड़ा कहां से होता ? मेरी आखिरी धरोहर एक गरम चादर थी उसे भी आज मैंने आठ आने में गिरवी रख दिया." औरत ने यह कह कर बच्चे को मार्टिन से ले लिया मार्टिन उठा और अलगनी पर पड़े हुए कपड़ों को टटोल कर एक पुराना लबादा निकाल लाया और कहने लगा—"लो यह अगरचे पुराना है मगर बच्चे को लपेटने के लिये काफ़ी होगा."

औरत ने एक नज़र लबादे पर और एक बुड्ढे पर डाली और रो पड़ी—"तुम पर ख़ुदा की रहमत हो. शायद मसीह ने तुम्हारे दिल में यह डाला कि तुम खिड़की में से मुझे देख लो नहीं तो आज यह बच्चा सर्दी से ठिठुर कर मर ही जाता. सवेरे इतनी कड़ी सर्दी थी कि हाथ पांव गले जा रहे थे."

मार्टिन मुस्कराया और बोला—"बेशक मसीह ही की बदौलत मैंने खिड़की में से देखा था" और इसने औरत को अपना सपना सुनाया कि किस तरह उसने मसीह की आवाज़ सुनी थी कि वह आज उससे मिलने आयेंगे.

"कौन जाने ! दुनिया में सब कुछ सम्भव है." वह उठी, लबादे को अपने बच्चे के गिर्द लपेटा, झुक कर मार्टिन को सलाम किया और उसका शुक्रिया अदा करने लगी.

"लो, मसीह के नाम पर यह लो. इससे अपनी चादर छुड़वा लेना." यह कह कर मार्टिन ने आठ आने पैसे औरत के हाथ पर रख दिये और फिर उसे जाकर दरवाज़े तक छोड़ आया.

उसके जाने के बाद मार्टिन ने कुछ खाया और बरतन साफ़ करके फिर अपने काम को लेकर बैठ गया. अब भी

رکھتے ۔ اب میں تین مہینے سے بیکار ہوں ۔ میں برابر کوشش کرتی رہی کہ کہیں مجھے کوئی کام مل جائے مگر آج تک تو ملا نہیں ۔ جو کچھ میرے پاس تھا سب بیچ کر کھا گئی ۔ میں نے چاہا کہ انا کی نوکری ہی مل جائے مگر مجھے کوئی نہیں رکھتا کہ ایسی بھوکوں مری عورت ہم کیا کریں گے۔ اس سمے میں ایک بیوپاری کی بیوی کے گھر گئی تھی۔ اس کے یہاں میرے گاؤں کی ایک استری نوکر ہے جس نے مجھے نوکری دلانے کا بچن دیا تھا ۔ مگر وہاں سے جواب ملا کہ ابھی نہیں' ہفتے بھر بعد آنا ۔ وہ جگہ یہاں سے بہت دور ہے اور میں بالکل تھک گئی ہوں اور یہ غریب بچہ الگ بھوک سے بےچین ہے ۔ وہ تو کہو ہماری مکان دارنی بچاری دیالو عورت ہے جس نے اب تک مجھے کوٹھری سے نکال باہر نہیں کیا' نہیں تو میں کہاں جاتی ؟"

مارٹن نے ایک سرد آہ بھر کر کہا—" تمہارے پاس کوئی گرم کپڑا نہیں ہے ؟"

" گرم کپڑا کہاں سے ہوتا ؟ میری آخری دھروہر ایک گرم چادر تھی اسے بھی آج میں نے آٹھ آنے میں گروی رکھا دیا ۔" عورت نے یہ کہکر بچے کو مارٹن سے لے لیا ۔ مارٹن اٹھا اور الگنی پر پڑے ہوئے کپڑوں کو ٹٹول کر ایک پرانا لبادہ نکال لیا اور کہنے لگا—" لو' یہ اگرچہ پرانا ہے مگر بچے کو لپیٹنے کے لئے کافی ہوگا ۔"

عورت نے ایک نظر لبادے پر اور ایک بڈھے پر ڈالی اور رو پڑی—" تم پر خدا کی رحمت ہو ۔ شاید مسیح نے تمہارے دل میں یہ ڈالا کہ تم کھڑکی میں سے مجھے دیکھ لو نہیں تو آج یہ بچہ سردی سے ٹھٹھر کر مر ہی جاتا ۔ سویرے اتنی کڑی سردی تھی کہ ہاتھ پاؤں گلے جا رہے ہے ۔"

مارٹن مسکرایا اور بولا—" بیشک مسیح ہی کی بدولت میں نے کھڑکی میں سے دیکھا تھا " اور اس نے عورت کو اپنا سپنا سنایا کہ کس طرح اس نے مسیح کی آواز سنی تھی کہ وہ آج اس سے ملنے آئیں گے ۔

" کون جانے ! دنیا میں سب کچھ سمبھو ہے ۔" وہ اٹھی' لبادے کو اپنے بچے کے گرد لپیٹا' جھک کر مارٹن کو سلام کیا اور اسکا شکریہ ادا کرنے لگی ۔

" لو' مسیح کے نام پر یہ لو ۔ اس سے اپنی چادر چھڑوا لینا " یہ کہکر مارٹن نے آٹھ آنے پیسے عورت کے ہاتھ رکھ دیئے اور پھر اسے جاکر دروازے تک چھوڑ آیا ۔

اس کے جانے کے بعد مارٹن نے کچھ کھایا اور برتن صاف کر کے پھر اپنا کام لے کر بیٹھ گیا ۔ اب بھی

टोकरी लिये हुए आया और गुजर गया. उसके बाद एक औरत आई. उसके पांव में घर के बने हुए पुराने जूते और बिलकुल फटे हुए मोजे थे. खिड़की के क़रीब आकर वह दीवार से टेक लगाकर खड़ी हो गई. मार्टिन ने झुक कर उसे देखा. वह कोई अजनबी औरत थी जिस की गोद में एक नन्हा सा बच्चा था जिसको दीवार से टेक लगा कर वह तेज बरफ़ीली वायु से बचाने का विफल प्रयत्न कर रही थी. मगर वास्तव में उसके पास कोई ऐसी चीज थी ही नहीं जिसमें लपटे कर बच्चे को सर्दी से बचा सके. वह गरमी के ठंडे कपड़े पहने थी और वह भी फटे हुए तार तार ! मार्टिन ने बच्चे के रोने की आवाज सुनी जिसे मां लाख चुप करा रही थी मगर वह रोए चला जाता था.

मार्टिन ने उठ कर दरवाजा खोला और पुकारा—"बेटी, मैंने कहा ऐ बेटी !" औरत ने मुड़ कर देखा.

"तुम वहां सर्दी में क्यों बच्चे को लिये खड़ी हो. यहां अन्दर आजाओ ना. यह सर्दी से बच जायेगा."

औरत ने अचरज से इस बुड्ढे को देखा जो एक ऐपरन पहने और नाक की फुंगी पर ऐनक रखे, खड़ा उसे बुला रहा था. वह उसके साथ कोठरी में चली आई. मार्टिन उसे पलंग के पास ले गया और कहा—"लो बेटी यहां आग के पास बैठ जाओ और बच्चे को दूध पिला दो."

"मैंने सुबह से कुछ खाया ही नहीं तो दूध कहां से उतरेगा ?" यह कह कर उसने बच्चे के मुंह में दूध दे दिया.

मार्टिन ने सिर हिलाया. फिर एक बरतन में गोभी का शोर्बा उंडेला, कुछ रोटी निकाली, दलिया भी निकाला मगर वह अभी तैयार न हुआ था. उसने एक तिपाई पर शोर्बा और रोटी रख दी और कहा—"लो बैठ कर यह रोटी खा लो. मैं इतनी देर बच्चे को संभालता हूं. मेरे भी बच्चे थे बेटी ! मैं जानता हूं इन्हें कैसे बहलाया जाता है."

औरत ने बैठ कर खाना खाना शुरू कर दिया और मार्टिन ने बच्चे को गोद में ले लिया और भांति भांति की तरकीबों से उसे बहलाने लगा. आखिर बच्चा हंस ही पड़ा और मार्टिन खुश हो गया. औरत खाना खाती जाती थी और अपनी बीती सुनाती जाती थी :—

"मैं एक सिपाही की बीवी हूं. आठ महीने हुए मेरे मियां को कहीं बाहर काम पर भेज दिया गया और तब से आज तक मुझे उसके बारे में कुछ पता नहीं चल सका. उस वक़्त तक यह बच्चा पैदा नहीं हुआ था और मैं एक घराने में खाना पकाने का काम करती थी. मगर इसके पैदा होने के बाद उन्होंने मुझे अलग कर दिया कि बच्चे वाली को हम नहीं

ٹوکری لئے ہوئے آیا اور گزر گیا۔ اس کے بعد ایک عورت آئی۔ اس کے پاؤں میں گھر کے بنے ہوئے پرانے جوتے اور بالکل پھٹے ہوئے موزے تھے۔ کھڑکی کے قریب آکر وہ دیوار سے ٹیک لگاکر کھڑی ہو گئی۔ مارٹن نے جھک کر اسے دیکھا۔ وہ کوئی اجنبی عورت تھی جس کی گود میں ایک ننھا سا بچہ تھا جس کو دیوار سے ٹیک لگا کر وہ تیز برفیلی وایو سے بچانے کی وِفل کوشش کر رہی تھی مگر واستو میں اس کے پاس کوئی ایسی چیز تھی ہی نہیں جس میں لپیٹ کر بچے کو سردی سے بچا سکے۔ وہ گرمی کے ٹھنڈے کپڑے پہنے تھی اور وہ بھی پھٹے ہوئے تار تار! مارٹن نے کھڑکی میں سے بچے کے رونے کی آواز سنی، جسے ماں لاکھ چپ کرا رہی تھی مگر وہ روئے چلا جاتا تھا۔

مارٹن نے اٹھکر دروازہ کھولا اور پکارا—"بیٹی، میں نے کہا اے بیٹی!" عورت نے مڑکر دیکھا۔

"تم وہاں سردی میں کیوں بچے کو لئے کھڑی ہو؟ یہاں اندر آجاؤ نا۔ یہ سردی سے بچ جائے گا۔" عورت نے اچرج سے اس بڈھے کو دیکھا جو ایک ایپرن پہنے اور ناک کی پھنگی پر عینک رکھے کھڑا اسے بلا رہا تھا۔ وہ اس کے ساتھ کوٹھری میں چلی آئی۔ مارٹن اسے پلنگ کے پاس لے گیا اور کہا—"لو بیٹی یہاں آگ کے پاس بیٹھ جاؤ اور بچے کو دودھ پلا دو۔"

"میں نے صبح سے کچھ کھایا ہی نہیں تو دودھ کہاں سے اترے گا؟" یہ کہکر اس نے بچے کے منھ میں دودھ دیدیا۔
مارٹن نے سر ہلایا۔ پھر ایک برتن میں گوبھی کا شوربا نکالا، کچھ روٹی نکالی، دلیا بھی نکالا مگر وہ ابھی تیار نہ ہوا تھا۔ اس نے ایک تپائی پر شوربا اور روٹی رکھ دی اور کہا—"لو بیٹھکر یہ روٹی کھالو۔ میں اتنی دیر بچے کو سنبھالتا ہوں۔ میرے بھی بچے تھے بیٹی! میں جانتا ہوں انہیں کیسے بہلایا جاتا ہے۔"

عورت نے بیٹھکر کھانا کھانا شروع کردیا اور مارٹن نے بچے کو گود میں لے لیا اور بھانت بھانت کی ترکیبوں سے بہلانے لگا۔ آخر بچہ ہنس ہی پڑا اور مارٹن خوش ہوگیا۔ عورت کھانا کھاتی جاتی تھی اور اپنی بپتی سناتی جاتی تھی:—

"میں ایک سپاہی کی بیوی ہوں۔ آٹھ مہینے ہوئے میرے میاں کو کہیں کام پر بھیج دیا گیا اور تب سے آج تک مجھے اسکے بارے میں کچھ پتہ نہیں چل سکا۔ اس وقت تک یہ بچہ پیدا نہیں ہوا تھا اور میں ایک گھرانے میں کھانا پکانے کا کام کرتی تھی مگر اس کے پیدا ہونے کے بعد انہوں نے مجھے الگ کر دیا کہ بچے والی کو ہم نہیں

मार्टिन ने कहा—"फ़िक्र न करो. फ़र्श मैं ख़ुद साफ़ कर लूंगा. आओ दोस्त, बैठ जाओ और थोड़ी चाय पी लो.

एक प्याला भर कर उसने अपने मेहमान को दिया और एक ख़ुद पीने लगा. उसने ज़रा देर में अपना प्याला ख़ाली कर दिया और शुक्रिया अदा करने लगा. मालूम होता था कि उसका जी एक प्याला और पीने का चाहता था..

"और पियोगे ?" मार्टिन ने पूछा और उसे और चाय दी. मगर मार्टिन की नज़र बराबर खिड़की की तरफ़ लगी हुई थी.

बुड्ढे ने पूछा—"क्या तुम्हें किसी का इन्तज़ार है ?"

मार्टिन बोला—"क्या बताऊं मित्र, मुझे कहते लज्जा आती है. मैं सचमुच किसी का इन्तज़ार नहीं कर रहा. लेकिन कल रात मैंने एक आवाज़ सुनी थी और उस विचार को अब तक अपने मन से दूर नहीं कर सका हूं. नहीं मालूम कि मैंने जो कुछ सुना वह केवल मेरा भ्रम है या सचमुच ऐसा हुआ था ? मैं बाइबिल में मसीह का एक क़िस्सा पढ़ रहा था कि किस तरह वह एक रईस के घर गये और उसने उनका उचित स्वागत नहीं किया. मैंने सोचा अगर वह मेरे यहां पधारें तो मैं क्या करूंगा ? ठीक उसी समय मुझे अपने कान में एक आवाज़ सुनाई दी "मेरा इन्तज़ार कर. मैं कल आऊंगा." फिर दूसरी बार मैंने यह वाक्य सुना. अगरचे मैं यह कहते झिझकता हूं मगर यह बात सच है कि आज मैं अपने "स्वामी" की प्रतीक्षा कर रहा हूं."

बुड्ढा ख़ामोशी से सुनता रहा और ख़ाली प्याला मेज़ पर रख दिया. मार्टिन ने उसे तीसरी बार चाय से भरा और बोला—"लो और पियो, तुम पर भगवान दया करें !" वह चाय पीता रहा और मार्टिन उसे ईसा मसीह के दया और प्रेम, ग़रीबों, मरीज़ों और मज़दूरों की मुहब्बत और सहानुभूति की कहानियां सुनाता रहा.

चाय समाप्त करके बुड्ढा सिपाही बोला—"बहुत बहुत शुक्रिया मार्टिन. तुमने मुझे आत्मिक भोजन दिया और जिस्मानी भी. बहुत बहुत धन्यवाद !"

"मित्र, फिर आना. यहां हमेशा खुले दिल से तुम्हारा स्वागत किया जायगा" मार्टिन बोला.

जब वह चला गया तो मार्टिन ने आख़िरी प्याली चाय की निकाल कर पी और फिर अपने काम पर बैठ गया. अब भी वह खिड़की से बाहर देखता जाता था और मसीह के आगमन की उम्मीद और उनके वचन और कारनामे उसके दिमाग़ में चक्कर लगा रहे थे.

दो सिपाही गुज़रे. एक के पांव में सरकारी जूते थे दूसरे के पांव में अपने निजी. पड़ोस का एक रईस नये चमकदार बूट पहने हुए आगे बढ़ा चला गया. एक डबल रोटी वाला

مارٹن نے کہا—"فکر نہ کرو، فرش میں خود صاف کرلوں گا ۔ آؤ دوست، بیٹھ جاؤ اور تھوڑی چائے پی لو ۔"

ایک پیالہ بھر کر اس نے اپنے مہمان کو دیا اور ایک خود پینے لگا ۔ اس نے ذرا دیر میں اپنا پیالہ خالی کر دیا اور شکریہ ادا کرنے لگا ۔ معلوم ہوتا تھا کہ اس کا جی ایک پیالہ اور پینے کو چاہتا ہے ۔

"اور پیوگے ؟" مارٹن نے پوچھا اور اسے اور چائے دی۔ مگر مارٹن کی نظر برابر کھڑکی کی طرف لگی ہوئی تھی۔

بڈھے نے پوچھا—"کیا تمہیں کسی کا انتظار ہے ؟"

مارٹن بولا—"کیا بتاؤں مِتر، مجھے کہتے لجا آتی ہے ۔ میں سچ مچ کسی کا انتظار نہیں کر رہا ۔ لیکن کل رات میں نے ایک آواز سنی تھی اور اس وچار کو اب تک اپنے من سے دور نہیں کر سکا ہوں ۔ نہیں معلوم کہ میں نے جو کچھ سنا وہ کیول میرا بھرم ہے یا سچ مچ ایسا ہوا تھا ؟ میں بائبل میں مسیح کا ایک قصہ پڑھ رہا تھا کہ کس طرح وہ ایک رئیس کے گھر گئے اور اس نے ان کا اچت سواگت نہیں کیا ۔ میں نے سوچا اگر وہ میرے ہاں پدھاریں تو میں کیا کروں گا ؟ ٹھیک اس سمے مجھے اپنے کان میں ایک آواز سنائی دی "میرا انتظار کر ۔ میں کل آؤں گا ۔" پھر دوسری بار بھی میں نے یہ واکیہ سنا ۔ اگرچہ یہ کہتے میں جھجھکتا ہوں مگر یہ بات سچ ہے کہ آج میں اپنے "سوامی" کی پرتیکشا کر رہا ہوں ۔"

بڈھا خاموشی سے سنتا رہا اور خالی پیالہ میز پر رکھ دیا ۔ مارٹن نے اسے تیسری بار چائے سے بھرا اور بولا— "لو اور پیو ۔ تم پر بھگوان دیا کریں !" وہ چائے پیتا رہا اور مارٹن اسے عیسیٰ مسیح کے دیا اور پریم، غریبوں، مریضوں اور مزدوروں کی محبت اور سہانبھوتی کی کہانیاں سناتا رہا ۔

چائے سماپت کرکے بڈھا سپاہی بولا—"بہت بہت شکریہ مارٹن ۔ تم نے مجھے آتمک بھوجن بھی دیا اور جسمانی بھی ۔ بہت بہت دھنیہ واد ۔"

"مِتر پھر آنا ۔ یہاں ہمیشہ کھلے دل سے تمہارا سواگت کیا جائے گا" مارٹن بولا ۔

جب وہ چلا گیا تو مارٹن نے آخری پیالی چائے کی نکال کر پی اور پھر اپنے کام پر بیٹھ گیا ۔ اب بھی وہ کھڑکی سے باہر دیکھتا جاتا تھا اور مسیح کے آگمن کی امید اور ان کے وچن اور کارنامے اس کے دماغ میں چکر لگا رہے تھے۔

دو سپاہی گزرے۔ ایک کے پاؤں میں سرکاری جوتے تھے دوسرے کے پاؤں میں اپنے نجی۔ پڑوس کا ایک رئیس نئے چمکدار بوٹ پہنے ہوئے آگے بڑھا چلا گیا۔ ایک ڈبل روٹی والا

मार्टिन ने अपनी आँखें मलीं और उठ खड़ा हुआ. उसकी समझ में न आता था कि वह सपना था या जागते में उसने वह वाक्य सुना था.

अगले दिन सुबह को वह सवेरे उठा, आग जलाई, गोभी का शोरबा और आलू पकाने लगा, केतली में चाय का पानी चढ़ा दिया और खिड़की के क़रीब बैठ कर जूतों की मरम्मत शुरू कर दी.

वह बराबर कल की घटना के सम्बन्ध में सोच रहा था. कभी तो उसे यह ख़याल होता कि यह सपना था और कभी वह यह महसूस करता कि उसने वह आवाज़ जागते में सुनी थी. उसे ख़याल आया कि यह नामुमकिन नहीं. क्या ऐसी बातें पहले नहीं हो चुकी हैं ?

वह काम करते करते बार बार झुक कर खिड़की में से सड़क पर गुज़रने वालों को देख लेता था, इसलिये कि बग़ैर झुके उसे रास्ता चलने वालों के केवल पैर ही दिखाई पड़ते थे.

एक छोकरा नये जूते पहने गुज़र गया. फिर एक भिश्ती आया और चला गया. उसके बाद एक बुड्ढा ग़रीब सिपाही उसकी खिड़की के क़रीब आया, मार्टिन उसके पुराने जूतों को पहचानता था. एक व्योपारी ने रहम खा कर उसे अपने घर के नौकर का हाथ बटाने के लिये अपने यहां रख लिया था. उस समय शायद उसको बर्फ़ हटाने का काम सौंपा गया था. उसने अपना फावड़ा उठाया और मार्टिन की खिड़की के सामने सड़क पर से बर्फ़ हटाने लगा. मार्टिन ने उसे देखा और फिर अपने काम में लग गया. उसने सोचा कि मैं शायद कुछ सठया सा गया हूं. यहां वह बेचारा बर्फ़ हटाने आया और और मैं समझा कि ख़ुद मसीह मुझसे मिलने पधारे हैं.

मार्टिन ने दस बारह टांके लगा कर खिड़की में से फिर झांका. बुड्ढे ने अपना फावड़ा दीवार से लगा दिया था और ख़ुद या तो सुस्ता रहा था या गर्म होने की कोशिश कर रहा था.

मार्टिन ने सोचा—"मैं इसे बुला कर चाय पिला दूं तो क्या हर्ज है. चाय का पानी भी बस होने ही वाला है.'

उसने जूते सीने का सूआ मेज़ पर रख दिया. पहले चाय बनाई और फिर खिड़की के शीशे को जा कर खटखटाने लगा. बुड्ढे ने पलट कर देखा तो मार्टिन ने उससे अन्दर आने को कहा और जा कर दरवाज़ा खोल दिया और कहा—"आओ, अन्दर आकर ज़रा गर्म हो जाओ. मालूम होता है तुम्हें बहुत सर्दी लग रही है.'

"ख़ुदा तुम पर अपनी बरकतें नाज़िल करे !" बुड्ढे ने जवाब दिया और अपने कपड़ों और जूतों पर से बर्फ़ झाड़ने लगा कि मार्टिन की कोठरी ख़राब न हो.

مارٹن نے اپنی آنکھیں ملیں اور اٹھ کھڑا ہوا. اس کی سمجھ میں نہ آتا تھا کہ یہ سپنا تھا یا جاگتے میں اس نے یہ واکیہ سنا تھا.

اگلے دن صبح کو وہ سویرے اٹھا، آگ جلائی، گوبھی کا شوربا اور آلو پکانے لگا، کیتلی میں چائے کا پانی چڑھا دیا اور کھڑکی کے قریب بیٹھ کر جوتوں کی مرمت شروع کردی.

وہ برابر کل کی گھٹنا کے سمبندھ میں سوچ رہا تھا. کبھی تو اسے یہ خیال ہوتا کہ یہ سپنا تھا اور کبھی وہ یہ محسوس کرتا کہ اس نے وہ آواز جاگتے میں سنی تھی. اسے خیال آیا کہ یہ ناممکن نہیں. کیا ایسی باتیں پہلے نہیں ہوچکی ہیں ؟

وہ کام کرتے کرتے بار بار جھک کر کھڑکی میں سے سڑک پر گزرنے والوں کو دیکھ لیتا تھا، اس لئے کہ بغیر جھکے اسے راستہ چلنے والوں کے کیول پیر ہی دکھائی پڑتے تھے.

ایک چھوکرا نئے جوتے پہنے گزر گیا. پھر ایک بھشتی آیا اور چلا گیا. اس کے بعد ایک بڈھا غریب سپاہی اس کی کھڑکی کے قریب آیا. مارٹن اس کے پرانے جوتوں کو پہچانتا تھا. ایک بیوپاری نے رحم کھاکر اسے اپنے گھر کے نوکر کا ہاتھ بٹانے کے لئے اپنے یہاں رکھ لیا تھا. اس سمے شاید اس کو برف ہٹانے کا کام سونپا گیا تھا. اس نے اپنا پھاوڑا اٹھایا اور مارٹن کی کھڑکی کے سامنے سڑک پر سے برف ہٹانے لگا. مارٹن نے اسے دیکھا اور پھر اپنے کام میں لگ گیا. اس نے سوچا کہ میں کچھ سٹھیا سا گیا ہوں. یہاں یہ بیچارا برف ہٹانے آیا اور میں سمجھا کہ خود مسیح مجھ سے ملنے پدھارے ہیں.

مارٹن نے دس بارہ ٹانکے لگاکر کھڑکی میں سے پھر جھانکا. بڈھے نے اپنا پھاوڑا دیوار سے لگا دیا تھا اور خود یا تو سستا رہا تھا یا گرم ہونے کی کوشش کر رہا تھا.

مارٹن نے سوچا—"میں اسے بلاکر چائے پلادوں تو کیا حرج ہے. چائے کا پانی بھی بس ہونے ہی والا ہے."

اس نے جوتے سینے کا سوجا میز پر رکھ دیا. پہلے چائے بنائی اور پھر کھڑکی کے شیشے کو جاکر کھٹکھٹانے لگا. بڈھے نے پلٹ کر دیکھا تو مارٹن نے اس سے اندر آنے کو کہا اور جاکر دروازہ کھول دیا اور کہا—"آؤ اندر آکر ذرا گرم ہو جاؤ. معلوم ہوتا ہے تمہیں بہت سردی لگ رہی ہے."

"خدا تم پر اپنی برکتیں نازل کرے!" بڈھے نے جواب دیا اور اپنے کپڑوں اور جوتوں پر سے برف جھاڑنے لگا کہ مارٹن کی کوٹھری خراب نہ ہو.

कभी कभी तो उसे पढ़ते पढ़ते इतनी देर हो जाती कि चिराग़ का तेल ख़तम हो जाता था. जितना ज़्यादा वह पढ़ता जाता उस पर यह बात साफ़ होती जाती थी कि ख़ुदा उससे क्या चाहता है और उसका दिल पहले से कहीं ज़्यादा हलका और ख़ुश रहता था और दिन भर उसके मुंह से निकलता रहता—"तेरी शान बड़ी है, तेरी शान बड़ी है."

अब मार्टिन की सारी ज़िन्दगी बदल गई. पहले वह छुट्टी के दिन शराब पी लिया करता था और नशे की हालत में राहगीरों को छेड़ता और लोगों का मज़ाक़ उड़ाता मगर अब उसने यह सब बातें छोड़ दी थीं. वह सवेरे से अपने मरम्मत के काम में लग जाता और काम ख़तम करने के बाद दिया जला कर रात गये तक बाइबिल पढ़ता रहता था. वह जितना ज़्यादा उसे पढ़ता उतना ही आसानी से मतलब समझता जाता था. जो जो बातें वह किताब में पढ़ता उन पर फिर ख़ुद बैठ कर सोचता कि उसकी अपनी ज़िन्दगी इस सीख पर कहां तक पूरी उतरती है.

एक दिन वह बैठा देर तक किताब पढ़ता और उसकी सीख पर अपने कार्यों को तोलता रहा. अध्यन समाप्त कर देने का वक़्त आ गया था मगर उसका जी किताब छोड़ने को न चाहता था. आज वह बाइबिल में से वह क़िस्सा पढ़ रहा था जब एक अमीर फ़ियरसी ने मसीह को अपने घर बुलाया मगर उनका स्वागत प्रेम और आदर से न किया. पर एक पापी स्त्री ने उनके पांव अपने आंसुओं से धो डाले. उसने पढ़ा प्रभु मसीह ने रईस से कहा—"तूने मेरा कोई सत्कार नहीं किया, मेरा स्वागत नहीं किया लेकिन इस गुनहगार औरत ने अपने बालों से मेरे पांव को झाड़ा और आंसुओं से उन्हें धो डाला."

मार्टिन ने चश्मा उतार कर हाथ में ले लिया और सोचने लगा—"फ़ियरसी मेरा जैसा ख़ुदग़र्ज़ होगा जिसे बस अपनी ही फ़िक्र रहती है. उसे यह ख़याल न आया कि अपने मेहमान को चाय पिलाये, मुंह हाथ धुलाए और आराम पहुंचाये. और मेहमान भी कौन मेहमान? हमारा नाथ, हमारा मालिक! अगर वह मेरे यहां आ जाए तो क्या मैं भी ऐसा ही करूंगा?" मार्टिन का सिर उसके बाहों पर झुक गया और वह मेज़ पर सिर रख कर निद्रा माता की गोद में सो गया.

"मार्टिन!" सहसा एक आवाज़ उसे अपने कान में सुनाई दी.

"कौन है?" उसने नींद ही की अवस्था में पूछा. उसने सिर घुमा कर देखा मगर कोई नज़र न आया. फिर किसी ने पुकारा और इस बार बिलकुल साफ़ आवाज़ उसे सुनाई दी—"मार्टिन, मार्टिन! कल सड़क पर देखियो. कल मैं आऊंगा."

کبھی تو اسے پڑھتے پڑھتے اتنی دیر ہو جاتی کہ چراغ کا تیل ختم ہوجاتا تھا. جتنا زیادہ وہ پڑھتا جاتا اس پر یہ بات صاف ہوتی جاتی تھی کہ خدا اس سے کیا چاہتا ہے اور اسکا دل پہلے سے کہیں زیادہ ہلکا اور خوش رہتا تھا اور دن بھر اس کے منھ سے نکلتا رہتا —" تیری شان بڑی ہے ' تیری شان بڑی ہے ."

اب مارٹن کی ساری زندگی بدل گئی. پہلے وہ چھٹی کے دن شراب پی لیا کرتا تھا اور نشہ کی حالت میں راہ گیروں کو چھیڑتا اور لوگوں کا مذاق اڑاتا مگر اب اس نے یہ سب باتیں چھوڑ دی تھیں . وہ سویرے سے اپنے مرمت کے کام میں لگ جاتا اور کام ختم کرنے کے بعد دیا جلا کر رات گئے تک بائبل پڑھتا رہتا تھا . وہ جتنا زیادہ اسے پڑھتا اتنا ہی آسانی سے مطلب سمجھتا جاتا تھا . جو جو باتیں وہ کتاب میں پڑھتا ان پر خود بیٹھکر سوچتا کہ اسکی اپنی زندگی اس سیکھ پر کہاں تک پوری اترتی ہے .

ایک دن وہ بیٹھا دیر تک کتاب پڑھتا اور اس کی سیکھ پر اپنے کاریوں کو تولتا رہا . ادھین سماپت کردینے کا وقت آ گیا تھا مگر اس کا جی کتاب چھوڑنے کو نہ چاہتا تھا . آج وہ بائبل میں سے وہ قصہ پڑھ رہا تھا جب ایک امیر فیرسی نے مسیح کو اپنے گھر بلایا مگر ان کا سواگت پریم اور آدر سے نہ کیا . پر ایک پاپی استری نے ان کے پاؤں اپنے آنسوؤں سے دھو ڈالے . اس نے پڑھا—

پربھو مسیح نے رئیس سے کہا—"تو نے میرا کوئی ستکار نہیں کیا' میرا سواگت نہیں کیا لیکن اس گنہگار عورت نے اپنے بالوں سے میرے پاؤں کو جھاڑا ہے اور آنسوؤں سے انہیں دھو ڈالا ."

مارٹن نے چشمہ اتار کر ہاتھ میں لے لیا اور سوچنے لگا—"فیرسی میرا جیسا خود غرض ہوگا جسے بس اپنی ہی فکر رہتی ہے . اسے یہ خیال نہ آیا کہ اپنے مہمان کو چائے پلائے' منھ ہاتھ دھلائے اور آرام پہونچائے . اور پھر مہمان بھی کون مہمان؟ ہمارا ناتھ' ہمارا مالک! اگر وہ میرے یہاں آجائے تو کیا میں بھی ایسا ہی کرونگا؟" مارٹن کا سر اس کے ہاتھوں پر جھک گیا اور وہ میز پر سر رکھکر ندرا ماتا کی گود میں سو گیا. "مارٹن!" سہسا ایک آواز اسے اپنے کان میں سنائی دی .

"کون ہے؟" اس نے نیند ہی کی اوستھا میں پوچھا. اس نے سر گھماکر دیکھا مگر کوئی نظر نہ آیا . پھر کسی نے اسے پکارا اور اس بار بالکل صاف آواز اسے سنائی دی—"مارٹن' مارٹن! کل سڑک پر دیکھیو . کل میں آؤنگا ."

की इन्तहा न थी. यहां तक कि भगवान के खिलाफ़ ऊल जलूल बकने लगा. वह रंज व ग़म की परिस्थिति में बार बार प्रार्थना करता कि वह मर जाए. वह ख़ुदा से शिकायत करता रहता कि तूने मेरे इकलौते बच्चे को तो मार डाला और ख़ुद मुझ बुड्ढे को ज़िन्दा छोड़ दिया. इसी ग़ुस्से में उसने प्रार्थना के लिये गिरजा जाना भी छोड़ दिया.

कुछ दिन बाद उसके गांव का एक साधू पुरुष उससे मिलने आया. आठ साल से वह बराबर पाक स्थानों की तीर्थ यात्रा के लिये जाता रहता था. मार्टिन ने उसे अपना दुख सुनाया और अपना दिल खोल कर उसके सामने रख दिया और कहा—

"मेरे बुज़ुर्ग भाई, मैं ख़ुदा से इसके सिवा और कुछ नहीं मांगता कि वह मुझे मौत दे दे. मेरे लिये अब दुनिया में रक्खा ही क्या है."

बुड्ढे तीर्थ यात्री ने जवाब दिया—

"मार्टिन, ऐसी बात मुंह से न निकालो. हम ख़ुदा के भेद को कैसे समझ सकते हैं? जो हम चाहते हैं वह नहीं, बल्कि जो ख़ुदा की मर्ज़ी होती है वह होता है. अगर ख़ुदा की यही मर्ज़ी थी कि तुम्हारा बच्चा मर जाये और तुम ज़िन्दा रहो तो इसमें कोई अच्छाई होगी. तुम्हारी इस निराशा और बेज़ारी की वजह यह है कि तुम दूसरों के लिये नहीं बल्कि अपनी ख़ुशियों के लिये ज़िन्दा रहना चाहते हो."

'इन्सान और किस के लिये ज़िन्दा रहना चाहता है, अपनी ख़ुशी ही के लिये तो?" मार्टिन ने पूछा.

नहीं, इन्सान को ख़ुदा के लिये ज़िन्दा रहना चाहिये. उसने तुम्हें ज़िन्दगी की पूंजी दी है, तुम्हें इस नेमत को उसी की राह में ख़र्च करना चाहिये. जब तुम ख़ुदा के लिये ज़िन्दा रहना सीख जाओगे तो तुम्हारा यह दुख दर्द दूर हो जाएगा और ज़िन्दगी तुम्हें आसान नज़र आने लगेगी" बूढ़े ने जवाब दिया.

मार्टिन कुछ देर ख़ामोश रहा, फिर पूछा—"ख़ुदा के लिये आदमी कैसे ज़िन्दा रहता है?"

बूढ़े ने जवाब दिया—"हमें ईसा मसीह ने ख़ुदा के लिये ज़िन्दा रहने का रास्ता दिखा दिया है. क्या तुम पढ़ना जानते हो? अच्छा, तो पाक किताब की एक कापी ख़रीद लाओ और उसे पढ़ो, फिर तुम्हें मालूम होगा कि ख़ुदा के लिये कैसे ज़िन्दा रहा जाता है."

बूढ़े की बातें मार्टिन के दिल में उतर गईं. वह उसी दिन बाइबिल की एक प्रति ख़रीद लाया और उसे पढ़ना आरम्भ कर दिया. पहले उसका इरादा था कि वह सिर्फ़ छुट्टी के दिन उसे पढ़ा करेगा लेकिन उसके पाठ से उसे ऐसी शान्ति मिली कि उसने रोज़ पढ़ना शुरू कर दिया.

کی انتہا نہ تھی۔ یہاں تک کہ بھگوان کے خلاف الول جلول بکنے لگا۔ وہ رنج و غم کی پرستھتی میں بار بار پراتھنا کرتا کہ وہ مر جائے۔ وہ خدا سے شکایت کرتا رہتا کہ تونے میرے اکلوتے بچے کو تو مار ڈالا اور خود مجھ بڈھے کو زندہ چھوڑ دیا۔ اسی غصے میں اس نے پرارتھنا کے لئے گرجا جانا بھی چھوڑ دیا۔

کچھ دن بعد ایک دفعہ اس کے گاؤں کا ایک سادھو پرش اس سے ملنے آیا۔ آٹھ سال سے وہ برابر پاک استھانوں کی تیرتھ یاترا کے لئے جاتا رہتا تھا۔ مارٹن نے اپنا دکھ سنایا اور اپنا دل کھول کر اس کے سامنے رکھ دیا اور کہا—

"میرے بزرگ بھائی، میں خدا سے اس کے سوا اور کچھ نہیں مانگتا کہ وہ مجھے موت دے دے۔ میرے لئے اب دنیا میں رکھا ہی کیا ہے۔"

بڈھے تیرتھ یاتری نے جواب دیا—

"مارٹن، ایسی بات منہ سے نہ نکالو۔ ہم خدا کے بھید کو کیسے سمجھ سکتے ہیں؟ جو ہم چاہتے ہیں وہ نہیں، بلکہ جو خدا کی مرضی ہوتی ہے، وہ ہوتا ہے۔ اگر خدا کی یہی مرضی تھی کہ تمہارا بچہ مر جائے اور تم زندہ رہو، تو اس میں کوئی اچھائی ہوگی۔ تمہاری اس نراشا اور بیزاری کی وجہ یہ ہے کہ تم دوسروں کے لئے نہیں بلکہ اپنی خوشیوں کے لئے زندہ رہنا چاہتے ہو۔"

"انسان اور کس لئے زندہ رہنا چاہتا ہے، اپنی خوشی ہی کے لئے تو؟" مارٹن نے پوچھا۔

"نہیں انسان کو خدا کے لئے زندہ رہنا چاہیئے۔ اس نے تمہیں زندگی کی پونجی دی، تمہیں اس نعمت کو اسی کی راہ میں خرچ کرنا چاہیئے۔ جب تم خدا کے لئے زندہ رہنا سیکھ جاؤگے تو تمہارا یہ دکھ درد دور ہو جائے گا اور زندگی تمہیں آسان نظر آنے لگے گی" بوڑھے نے جواب دیا۔

مارٹن کچھ دیر خاموش رہا، پھر پوچھا—"خدا کے لئے آدمی کیسے زندہ رہتا ہے؟"

بوڑھے نے جواب دیا—"ہمیں عیسیٰ مسیح نے خدا کے لئے زندہ رہنے کا راستہ دکھا دیا ہے۔ کیا تم پڑھنا جانتے ہو؟ اچھا، تو پاک کتاب کی ایک کاپی خرید لاؤ اور اسے پڑھو، پھر تمہیں معلوم ہوگا کہ خدا کے لئے کیسے زندہ رہا جاتا ہے۔"

بوڑھے کی باتیں مارٹن کے دل میں اتر گئیں۔ وہ اسی دن بائبل کی ایک پرتی خرید لایا اور اسے پڑھنا آرمبھ کر دیا۔ پہلے اسکا ارادہ تھا کہ وہ صرف چھٹی کے دن اسے پڑھا کرے گا لیکن اس پاٹھ سے اسے ایسی شانتی ملی کہ اس نے روز پڑھنا شروع کر دیا۔

स्वागत

(लेखक—टाल्सटाय,
अनुवादक—बेगम सालेह आबिद हुसेन)

एक बड़ी सी इमारत की सब से निचली मंजिल की छोटी छोटी कोठरियों में से एक में मार्टिन रहता था. उसकी कोठरी में सिर्फ एक खिड़की थी जिसमें से सड़क पर गुजरने वाले राहगीरों के सिर्फ पांव ही नजर आ सकते थे. उसकी गुजर बसर पुराने जूतों की मरम्मत पर थी. वह लोगों के पांव देख कर ही पहचान लिया करता था कि सड़क पर से कौन गुजर रहा है इसलिये कि यहां रहते उसे बहुत दिन हो चुके थे और पास पड़ोस के लोगों में से कोई मुश्किल से ऐसा होगा जिसके जूतों की दो तीन या कम से कम एक बार उसने मरम्मत न की हो. उसके पास काम की कमी कभी न होती थी इसलिये कि वह मसाला अच्छा लगाता, काम ध्यान से करता और मजदूरी वाजिबी लेता था और सब से बड़ी बात यह कि झूठे वादे न करता था और जितना काम उसके बस का होता उतना ही लेता था. आस पास के सब लोग उसे जानते और मानते थे और जूतों की मरम्मत का बहुत सा काम उसके पास आता रहता था.

मार्टिन हमेशा से नेक आदमी था पर अब तो ज्यों ज्यों बुड्ढा होता जाता उस की परहेजगारी और रहमदिली और ज्यादा बढ़ती जा रही थी. उसे हर वक्त अपनी आत्मा की मुक्ति की फ़िक्र रहती और खुदापरस्ती का भाव दिन पर दिन बढ़ता जाता था.

अब से बहुत पहले, अपना निजी काम शुरू करने से पहले वह किसी दूसरे की दूकान पर काम करता था. उस जमाने में उसकी बीवी एक तीन साल का बच्चा छोड़ कर चल बसी. उसके पहले सब बच्चे दूध पीने के जमाने ही में चल बसे थे. बीवी के मरने के बाद पहले तो मार्टिन ने सोचा कि बच्चे को अपनी बहन के पास गांव में भेज दे मगर फिर उसका दिल न माना. उसने सोचा—"मेरे नन्हे कैप्टेन को बाप के बजाय दूसरों के पास रहना पड़ेगा. नहीं, मैं उसे खुद ही पालूंगा."

मार्टिन ने मालिक के साथ काम करना छोड़ दिया और इस कोठरी में आ कर रहने लगा और खुद अपना काम करने लगा. मगर बच्चों के मामले में मार्टिन बड़ा ही बदनसीब था. बच्चा जरा ही बड़ा हुआ था और बड़ी खुशी खुशी बाप का थोड़ा सा हाथ बटाने लगा था कि एक दिन उसे तेज बुखार चढ़ा और हफ्ते भर में अल्लाह को प्यारा हो गया. मार्टिन के दुख और निराशा

سواگت

(لیکھک—ٹالسٹائی
انوادک—بیگم صالحہ عابد حسین)

ایک بڑی سی عمارت کی سب سے نچلی منزل کی چھوٹی چھوٹی کوٹھریوں میں سے ایک میں مارٹن رہتا تھا. اس کی کوٹھری میں صرف ایک کھڑکی تھی جس میں سے سڑک پر گزرنے والے راہ گیروں کے صرف پاؤں ہی نظر آسکتے تھے. اسکی گزر بسر پرانے جوتوں کی مرمت پر تھی۔ وہ لوگوں کے پاؤں دیکھ کر ہی پہچان لیا کرتا تھا کہ سڑک پر سے کون گزر رہا ہے اس لئے کہ یہاں رہتے اسے بہت دن ہو چکے تھے اور پاس پڑوس کے لوگوں میں سے کوئی مشکل سے ایسا ہوگا جس کے جوتوں کی دو تین یا کم سے کم ایک بار اُس نے مرمت نہ کی ہو۔ اس کے پاس کام کی کمی کبھی نہ ہوتی تھی اس لئے کہ وہ مسالہ اچھا لگاتا' کام دھیان سے کرتا اور مزدوری واجبی لیتا تھا۔ اور سب سے بڑی بات یہ کہ جھوٹے وعدے نہ کرتا تھا اور جتنا کام اُس کے بس کا ہوتا اتنا ہی لیتا تھا۔ آس پاس کے سب لوگ اُسے جانتے اور مانتے تھے اور جوتوں کی مرمت کا بہت سا کام اس کے پاس آتا رہتا تھا۔

مارٹن ہمیشہ سے نیک آدمی تھا مگر اب تو جوں جوں بڈھا ہوتا جاتا اُسکی پرہیزگاری اور رحمدلی اور زیادہ بڑھتی جا رہی تھی۔ اُسے ہر وقت اپنی آتما کی مکتی کی فکر رہتی اور خدا پرستی کا بھاؤ دن پر دن بڑھتا جاتا تھا۔

اب سے بہت پہلے' اپنا نجی کام شروع کرنے سے پہلے' وہ کسی دوسرے کی دوکان پر کام کرتا تھا۔ اُس زمانے میں اِسکی بیوی ایک تین سال کا بچہ چھوڑ کر چل بسی۔ اُس کے پہلے سب بچے دودھ پینے کے زمانے ہی میں چل بسے تھے۔ بیوی کے مرنے کے بعد پہلے تو مارٹن نے سوچا کہ بچے کو اپنی بہن کے پاس گاؤں میں بھیج دے مگر پھر اُس کا دل نہ مانا۔ اس نے سوچا "میرے ننھے کیپٹن کو باپ کے بجائے دوسروں کے پاس رہنا پڑیگا۔ نہیں' میں اسے خود ہی پالوں گا۔"

مارٹن نے مالک کے ساتھ کام کرنا چھوڑ دیا اور اُس کوٹھری میں آ کر رہنے لگا اور خود اپنا کام کرنے لگا۔ مگر بچوں کے معاملے میں مارٹن بڑا ہی بدنصیب تھا۔ بچہ ذرا ہی بڑا ہوا تھا اور بڑی خوشی خوشی باپ کا تھوڑا سا ہاتھ بٹانے لگا تھا کہ ایک دن اسے تیز بخار چڑھا اور ہفتے بھر کے اندر اللہ کا پیارا ہوگیا۔ مارٹن کے دکھ اور نراشا

आप एक लेखक को मोज़म्बिया का कूलिया या किसी और विदेश में भेज सकते हैं. पत्र कारिकता की उसमें क्षमता है. वह इस काम को अच्छे ढंग से कर देगा. रेखा चित्र का लिखना मुश्किल है और साहित्य का यह बहुत महत्व पूर्न रूप है. लेकिन जब आप एक लेखक को यात्रा पर भेजते हैं तो यह उम्मीद मत रखिये कि वह सूटकेस में उपन्यास का चर्बा लेकर लौटेगा. यह हो सकता है कि किसी नाविल को लिखते समय कोई लेखक किसी खास शहर की यात्रा कर ले, या किसी कारखाने में चला जाय. लेकिन यह वह तत्व नहीं है जिसने उसके दिल में नाविल लिखने की भावना जगाई है. यह सब तो उस भावना के पूरक रूप हैं.

रोज़मर्रा काम आने वाले सामानों की तरह साहित्यक रचना नहीं होती. लेखक का काम भिन्न है. एक ग्राहक को दूकान पर ऐसा माल मिलता है जो उसे पसन्द नहीं है. वह नाराज़ होता है. अगर उसे अपनी पसन्द की डिज़ाइन के कपड़े नहीं मिलते तो वह नाक भौं सिकोड़ता है. इसी तरह का व्यवहार लोग लेखकों से भी करते हैं. कोई लेखक से नाराज़ है क्योंकि फ़लां फ़लां रचनात्मक काम का वर्नन नहीं किया. कोई इसलिये नाख़ुश है कि लेखक ने फ़लां फ़लां पेशों का चित्रन नहीं किया. चाहे दूसरी भावनाओं का चित्रन लेखक ने स्वयं किया हो पर लोग लेखक से नाराज़ होते हैं क्योंकि उसने किसी ख़ास भावना पर लिखने का साहस नहीं किया.

(सिलसिले के लिये अगला अंक देखिये)

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

آپ ایک لیکھک کو موزمبیق یا کونیا یا کسی اور ودیش میں بھیج سکتے ہیں۔ پترکارتا کی اس میں چھمتا ہے. وہ اس کام کو اچھے ڈھنگ سے کردیگا. ریکھا چتر کا لکھنا مشکل ہے اور ساہتیہ کا یہ بہت مہتوپورن روپ ہے. لیکن جب آپ ایک لیکھک کو یاترا پر بھیجتے ہیں تو یہ امید مت رکھیئے کہ وہ سوٹکیس میں اپنیاس کا چربہ لیکر لوٹے گا. یہ ہوسکتا ہے کہ کسی ناول کو لکھتے سمے کوئی لیکھک کسی خاص شہر کی یاترا کرلے' یا کسی کارخانے میں چلا جائے. لیکن یہ وہ تتو نہیں ہے جس نے اس کے دل میں ناول لکھنے کی بھاونا جگائی ہے. یہ سب تو اس بھاونا کے پورک روپ ہیں.

روزمرہ کام آنے والے سامانوں کی طرح ساہتیک رچنا نہیں ہوتی. لیکھک کا کام بھن ہے. ایک گراہک کو دوکان پر ایسا مال ملتا ہے جو اسے پسند نہیں ہے. وہ ناراض ہوتا ہے. اگر اسے اپنی پسند کی ڈزائن کے کپڑے نہیں ملتے تو وہ ناک بھوں سکوڑتا ہے. اسی طرح کا ویوہار لوگ لیکھکوں سے بھی کرتے ہیں. کوئی لیکھک سے ناراض ہے کیونکہ اس نے فلاں فلاں رچناتمک کاموں کا ورنن نہیں کیا. کوئی اس لئے ناخوش ہے کہ لیکھک نے فلاں فلاں پیشوں کا چترن نہیں کیا. چاہے دوسری بھاوناؤں کا چترن لیکھک نے سوئیم کیا ہو پر لوگ لیکھک سے ناراض ہوتے ہیں کیونکہ اس نے کسی خاص بھاونا پر لکھنے کا ساہس نہیں کیا.

(سلسلہ کے لیئے اگلا انک دیکھیئے)

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے.

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں ان کے لئے یہ کتاب انمول ہے.

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج' الہ آباد

मानने को तैयार नहीं हूं कि हमारे बीच कोई भी ऐसा लेखक है जिसे सैकड़ों पाठक पत्र नहीं लिखते. क्या लेखक पाठकों को यह बताते हैं कि उनकी पुस्तकों का ढांचा कैसे तैयार हुआ था? क्या वह ऐसी सूचना देते समय पूरी तरह से अपना हृदय पाठक के सामने खोल पाते हैं? क्या यह लेखक अपने साथी लेखकों के सम्बन्ध में कुछ लिखते हैं? यह असलियत है कि लेखक अपने अनुभव से यह जानता है कि कला कीर्ति कैसे पैदा होती है और उसको कैसे परवान चढ़ाया जाता है. अपने साथी लेखकों की पुस्तकों के सम्बन्ध में इस दृष्टिकोन से भी लिखा जा सकता है जिसकी मनशा आरोप लगाना न हो. कला के स्रोत पर भी वह रोशनी डाल सकते हैं. लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं होता. हमारी राय जो दूसरी पुस्तकों के सम्बन्ध में है या कला कीर्ति के जन्म देने में हमको जो अनुभव प्राप्त होता है उसकी जानकारी हम लेखक शायद ही पाठक के सामने रखते हैं.

कुछ आलोचक ऐसे हैं जिनके लेखों में आम तरीक़े से गाली गलौज ही पाठकों को पढ़ने को मिलती है. किसी लेखक को गाली इसलिये मिलती है कि उसने बहुत दिनों से कुछ नहीं लिखा. कुछ को खरी खोटी सुनाई जाती है क्योंकि लड़ाई पर आधारित उनके नाविलों में उन नायकों का वर्नन नहीं है जो देश की सीमाओं के अन्दर रह कर लड़ रहे थे. कुछ को डांट पिलाई जाती है क्योंकि उसके चरित्र ज़रूरत से ज़्यादा आशावादी हैं, उनको ज़रूरत से ज़्यादा अपने ऊपर विश्वास है और इसी के साथ साथ पाठकों को लेखकों के अश्वासन पढ़ने को मिलते हैं. कोई कहता है कि फ़लां फ़लां रचनात्मक प्रोजेक्ट पर वह एक नाविल लिखने जा रहा है. कोई कहता है कि वह उद्योग फ़लां फ़लां शाखा पर आधारित उपन्यास लिखेगा. पाठक को यह भी जानकारी मिलती है कि पत्रिकाओं के सम्पादक लेखकों को राष्ट्र की माली व्यवस्था की फ़लां फ़लां शाखा को देखने के लिये भेज रहे हैं कि ताकि वह लोग वापस आकर आंखों देखी जानकारी की बुनियाद पर उपन्यास लिखें.

मैंने ऊपर जो कुछ कहा है उसको साफ़ कर देना चाहता हूं. मुझे इस सत्य में कोई सन्देह नहीं है कि यात्रा करने से बहुत फ़ायदा होता है. जिस चीज़ में मुझे शक है वह यह है *कि कोई लेखक हाथ में* नोट बुक लेकर नाविल के लिये मवाद इकट्ठा कर सकता है, यह बात मैं नहीं मानता. सखालीन घूम आने पर चैकोफ़ ने रेखा चित्र की एक पुस्तक लिखी. यात्रा में जो कुछ उन्हें दिखाई पड़ा उससे उनके अनुभव के भंडार में बढ़ोती हुई, उससे जनता को समझने में मदद मिली. लेकिन अपनी कहानियों में उन्होंने सखालीन को कथावस्तु नहीं बना लिया.

ماننے کو تیار نہیں ہوں کہ ہمارے بیچ کوئی بھی ایسا لیکھک ہے جسے سیکڑوں پاٹھک پتر نہیں لکھتے. کیا لیکھک پاٹھکوں کو یہ بتاتے ہیں کہ انکی پستکوں کا ڈھانچہ کیسے تیار ہوا تھا. کیا وہ ایسی سوچنا دیتے سمے پوری طرح سے اپنا ہردے پاٹھک کے سامنے کھول پاتے ہیں؟ کیا یہ لیکھک اپنے ساتھی لیکھکوں کے سمبندھ میں کچھ لکھتے ہیں؟ یہ اصلیت ہے کہ لیکھک اپنے انوبھو سے یہ جانتا ہے کہ کلا کیرتی کیسے پیدا ہوتی ہے اور اسکو کیسے پروان چڑھایا جاتا ہے. اپنے ساتھی لیکھکوں کی پستکوں کے سمبندھ میں اس درشٹ کون سے بھی لکھا جاسکتا ہے جسکی منشا آروپ لگانا نہ ہو. کلا کے سروت پر بھی وہ روشنی ڈال سکتے ہیں. لیکن ایسا بالکل نہیں ہوتا. ہماری رائے جو دوسری پستکوں کے سمبندھ میں ہے یا کلا کیرتی کے جنم دینے میں ہمکو جو انوبھو پراپت ہوتا ہے اسکی جانکاری ہم لیکھک شاید ہی پاٹھک کے سامنے رکھتے ہیں.

کچھ آلوچک ایسے ہیں جن کے لیکھوں میں عام طریقے سے گالی گلوچ ہی پاٹھکوں کو پڑھنے کو ملتی ہے. کسی لیکھک کو گالی اس لیئے ملتی ہے کہ اس نے بہت دنوں سے کچھ نہیں لکھا. کچھ کو کھری کھوٹی سنائی جاتی ہے کیونکہ لڑائی پر آدھارت ان کے ناولوں میں ان نایکوں کا ورنن نہیں ہے جو دیش کی سیماؤں کے اندر رہ کر لڑ رہے تھے. کچھ کو ڈانٹ پلائی جاتی ہے کیونکہ اس کے چرتر ضرورت سے زیادہ آشاوادی ہیں' انکو ضرورت سے زیادہ اپنے اوپر وشواس ہے. اور اسی کے ساتھ ساتھ پاٹھکوں کو لیکھوں کے اشواسن پڑھنے کو ملتے ہیں. کوئی کہتا ہے کہ فلاں فلاں رچناتمک پروجیکٹ پر وہ ایک ناول لکھنے جا رہا ہے. کوئی کہتا ہے کہ وہ ادیوگ کی فلاں شاکھا پر آدھارت اپنیاس لکھیگا. پاٹھک کو یہ بھی جانکاری ملتی ہیں کہ پتریکاؤں کے سمپادک لیکھکوں کو راشٹر کی مالی ویوستھا کی فلاں فلاں شاکھا کو دیکھنے کے لیئے بھیج رہے ہیں تاکہ وہ لوگ واپس آکر آنکھوں دیکھی جانکاری کی بنیاد پر اپنیاس لکھیں.

میں نے اوپر جو کچھ کہا ہے اسکو صاف کردینا چاہتا ہوں. مجھے اس ستیہ میں کوئی سندیہ نہیں ہے کہ یاترا کرنے سے بہت فائدہ ہوتا ہے. جس چیز میں مجھے شک ہے وہ یہ ہے کہ لیکھک ہاتھ میں نوٹ بک لیکر ناول کے لیئے مواد اکٹھا کرسکتا ہے' یہ بات میں نہیں مانتا. سکھالین گھوم آنے پر چیکوف نے ریکھا چتر کی ایک پستک لکھی' یاترا میں جو کچھ انہیں دکھائی پڑا اس سے ان کے انوبھو کے بھنڈار میں بڑھوتی ہوئی' اس سے جنتا کو سمجھنے میں مدد ملی. لیکن اپنی کہانیوں میں انہوں نے سکھالین کو کتھا وستو نہیں بنا لیا.

किताबों का रिव्यू

जब हमारे आलोचक किसी लेखक की सफलता या असफलता का विश्लेशन करते हैं तो क्या वह उन समस्याओं पर भी रोशनी डालते हैं जिनका सम्बन्ध कला कृति के जन्म से है ? नहीं. बदक़िस्मती से हमारे पास बहुत थोड़े से ऊंचे आलोचक और साहित्यिक विद्वान हैं. पुस्तकों के रिव्यू करने वाले बहुत से ऐसे हैं जिन के लिये पुस्तकें दो तरह की होती हैं. एक वह उपन्यास जिनको पुरस्कार मिला है और और दूसरे वह जिनको घटिया सिद्ध करना है.

पुरस्कार पाने वाले उपन्यासों का रिव्यू करते समय आलोचक सदा पुस्तक की कथावस्तु पर रोशनी डालता है, पूरा विवरन दे देता है. यह काम इस ढंग से किया जाता है जैसे छोटे दर्जे में पढ़ने वाला बच्चा कोई पाठ पढ़ कर उसका सारा अंश सुनाता है और अन्त में आलोचक महोदय अपने को स्वतन्त्र दिखाने और इस आरोप से बचने की, कि ज़रूरत से ज़्यादा तारीफ़ कर दी गई है, पूरी कोशिश करते हैं. इसके लिये आलोचक उपन्यास की कमज़ोरियों की एक लिस्ट गिनवाते हैं और इन कमज़ोरियों के लिये लेखक को दोश देते हैं.

लेकिन जब आलोचक उन पुस्तकों का रिव्यू करते हैं जिनको घटिया सिद्ध करना वह तै कर चुकते हैं तो वह कोर्ट इन्सपेक्टर बन जाते हैं. एक लेखक ने नेक इरादे से पुस्तक लिखी है, उसकी ईमानदारी पर सन्देह नहीं हो सकता है. लेकिन आलोचक उस लेखक की असफल रचना को लगभग इस तरह का रंग देंगे जैसे उसने कोई अपराध किया हो. जब इस तरह की पुस्तकों को चर्चा आलोचक करते हैं तो वह कथावस्तु पर रोशनी नहीं डालते बल्कि मनमानी ढंग से यहां वहां कुछ वाक्य चुन लेते हैं और इन वाक्यों को लेखक के ख़िलाफ़ गवाही के तौर पर इस्तैमाल करते हैं.

किसी नाविल की तारीफ़ करने या उसे घटिया बताते समय वह आलोचक मुश्किल से रुक कर सोचते हैं कि इस पुस्तक का लेखकों की दूसरी पुस्तकों से क्या सम्बन्ध है. वह पुस्तकों पर इम्तहानी कापी जांचने वालों की तरह नम्बर देते हैं. कभी यह लेखक की सफलता या विफलता के कारनों पर रोशनी डालने की कोशिश नहीं करते. उनको इसी चिन्ता नहीं होती कि कला कृति कैसे पैदा होती है. वह कभी यह नहीं बताते हैं कि लेखक की प्रकृति और उसकी रचना से कितना नज़दीकी सम्बन्ध है.

साहित्य और लेखक में जितनी दिलचस्पी लोग सोवियत में लेते हैं उतना किसी और जगह नहीं. मैं यह

لیکھک اور اس کی کلا

کتابوں کا ریویو

جب ہمارے آلوچک کسی لیکھک کی سپھلتا یا اسپھلتا کا وشلیشن کرتے ہیں تو کیا وہ اُن سمسیاؤں پر بھی روشنی ڈالتے ہیں جن کا سمبندھ کلا کرتی کے جنم سے ہے ؟ نہیں . بدقسمتی سے ہمارے پاس بہت تھوڑے سے اونچے آلوچک اور ساہتیک ودوان ہیں . پستکوں کے ریویو کرنے والے بہت سے ایسے ہیں جن کے لئے پستکیں دو طرح کی ہوتی ہیں . ایک وہ اپنیاس جن کو پورسکار ملا ہے اور دوسرے وہ جن کو گھٹیا سدھ کرنا ہے .

پورسکار پانے والے اپنیاسوں کا ریویو کرتے سمے آلوچک سدا پستک کی کتھاوستو پر روشنی ڈالتا ہے، پورا وورن دے دیتا ہے . یہ کام اس ڈھنگ سے کیا جاتا ہے جیسے چھوٹے درجہ میں پڑھنے والا بچہ کوئی پاٹھ پڑھکر اس کا سارا انش سناتا ہے اور انت میں آلوچک مہودے اپنے کو سوتنتر دکھانے اور اس آروپ سے بچنے کی، کہ ضرورت سے زیادہ تعریف کر دی گئی ہے، پوری کوشش کرتے ہیں . اس کے لئے آلوچک اپنیاس کی کمزوریوں کی ایک لسٹ گنواتے ہیں اور ان کمزوریوں کے لئے لیکھک کو دوش دیتے ہیں .

لیکن جب آلوچک اُن پستکوں کا ریویو کرتے ہیں جن کو گھٹیا سدھ کرنا وہ طے کر چکتے ہیں تو وہ کورٹ انسپکٹر بن جاتے ہیں . ایک لیکھک نے نیک ارادے سے پستک لکھی ہے، اسکی ایمانداری پر سندیہ نہیں ہوسکتا ہے لیکن آلوچک اس لیکھک کی اسپھل رچنا کو لگ بھگ اس طرح کا رنگ دینگے جیسے اس نے کوئی اپرادھ کیا ہو . جب اس طرح کی پستکوں کی چرچا آلوچک کرتے ہیں تو وہ کتھاوستو پر روشنی نہیں ڈالتے بلکہ من مانی ڈھنگ سے یہاں وہاں سے کچھ واکیہ چن لیتے ہیں اور ان واکیوں کو لیکھک کے خلاف گواہی کے طور پر استعمال کرتے ہیں .

کسی ناول کی تعریف کرنے یا اُسے گھٹیا بتاتے سمے یہ آلوچک مشکل سے رک کر سوچتے ہیں کہ اس پستک کا لیکھکوں کی دوسری پستکوں سے کیا سمبندھ ہے . وہ پستکوں پر امتحانی کاپی جانچنے والوں کی طرح نمبر دیتے ہیں. کبھی یہ لیکھک کی سپھلتا یا وپھلتا کے کارنوں پر روشنی ڈالنے کی کوشش نہیں کرتے . اِنکو اسکی چنتا نہیں ہوتی کہ کلا کرتی کیسے پیدا ہوتی ہے . وہ کبھی یہ نہیں بتاتے ہیں کہ لیکھک کی پرکرتی اور اسکی رچنا سے کتنا نزدیکی سمبندھ ہے .

ساہتیہ اور لیکھک میں جتنی دلچسپی لوگ سوویت میں لیتے ہیں اتنا کسی اور جگہ نہیں. میں یہ

एक क्षेत्र ऐसा जरूर है जिसकी जानकारी लेखक को दूसरे नागरिकों के मुक़ाबिले अधिक होती है. वह मनुष्य की आत्मा है, वह मानव जीवन का वह भाग है जो बाहर नहीं है. चरित्र की ऊपरी रूप रेखा, वह वातावरन जिसमें वह रहता है, उसका घर या वह स्थान जहां वह काम करता है इन सब का चित्रन जरूरी है. लेकिन इनका वर्नन बहुत मुश्किल नहीं है. ऐसे वर्नन केवल साधन हैं, मन्ज़िल नहीं. आज का पाठक टालस्टाय का उपन्यास इसलिये नहीं पढ़ता है कि वह एक मुर्दा समाज के रीति रिवाज जानना चाहता है बल्कि वह उन मानवी भावनाओं की गुत्थियों को समझना चाहता है, भावनाओं के उलझाव का जो असर व्यक्ति पर पड़ता है, वह उसे जानना चाहता है.

टालस्टाय की रचनाओं में बहुत से समाजी विरोधी तत्व हैं. टालस्टाय इन तत्वों से छुटकारा नहीं पा सके. लेनिन ने टालस्टाय का विरोधी तत्वों का बहुत साफ़ चित्र खींचा है. लैनिन के सामने वह रास्ता साफ़ था जिस पर रूस को चलना था. टालस्टाय भटकावों में फंसे थे, उनके सामने रास्ता साफ़ नहीं था. लैनिन ने टालस्टाय का अध्ययन किया था. उन्होंने टालस्टाय को इसलिये नहीं पढ़ा कि उनके दर्शन का लैनिन खंडन करना चाहते थे. टालस्टाय की रचनाओं से लैनिन को मानव आत्मा को समझने में सहायता मिली.

मुझे एक मिल मजदूर का भाषन याद है वह मजदूर एक नौजवान औरत थी. सौवियत लेखकों के सम्मेलन में बोलते हुये उसने साहित्यकारों को खूब खरी खोटी सुनाई. उसकी शिकायत थी कि कपड़ा मिल मजदूरों के जीवन पर आधारित कहानियां और नाविल नहीं लिखे जाते. यह लगभग 20 बरस पहले की बात है. इस अरसे में बहुत सी ऐसी किताबें लिखी गई हैं जिनके हीरो कपड़ा उद्योग के मजदूर हैं. लेकिन फिर भी इन किताबों की ज्यादा मांग मिल की लाइब्रेरियों में नहीं है क्या इसका यह कारन है कि आजकल के लेखकों से ज्यादा लेविन या विरान्स से औरतों की दिलचस्पी है? नहीं. कारन बिल्कुल साफ़ है. कपड़ा मिल मजदूरों के जीवन पर आधारित उपन्यासों में आदमी की जगह मशीन का वर्नन होता है. इन्सानी भावनाओं की जगह पर उत्पादन के तरीक़ों की चर्चा होती है. लाखों करोड़ों सोवियत वासी यह जानते हैं कि इस्पात कैसे बनता है, बाग़ों में सेबों की नई नई क़िस्में कैसे पैदा की जाती हैं और ऊंची ऊंची इमारतें कैसे खड़ी होती हैं. लेकिन हर पाठक को इसका अन्दाजा नहीं है कि उपन्यासों को कैसे जन्म दिया जाता है. कला को जन्म देने वाले मनोविज्ञान का अध्ययन बहुत कम किया गया है.

ایک چھیتر ایسا ضرور ہے جسکی جانکاری لیکھک کو دوسرے ناگرکوں کے مقابلے ادھک ہوتی ہے . وہ منشیہ کی آتما ہے' وہ مانو جیون کا وہ بھاگ ہے جو باہر نہیں ہے . چرتر کی اوپری روپ ریکھا' وہ واتاورن جس میں وہ رہتا ہے' اس کا گھر یا وہ استھان جہاں وہ کام کرتا ہے ان سب کا چترن ضروری ہے . لیکن ان کا ورنن بہت مشکل نہیں ہے . ایسے ورنن کیول سادھن ہیں' منزل نہیں . آج کا پاٹھک ٹالسٹائے کا اپنیاس اس لیئے نہیں پڑھتا ہے کہ وہ ایک مردہ سماج کے ریت رواج جاننا چاہتا ہے بلکہ وہ ان مانوی بھاوناؤں کی گتھیوں کو سمجھنا چاہتا ہے' بھاوناؤں کے الجھاؤ کا اثر ویکتی پر پڑتا ہے' وہ اسے جاننا چاہتا ہے .

ٹالسٹائے کی رچناؤں میں بہت سے سماجی ورودھی تتو ہیں . ٹالسٹائے ان تتوں سے چھٹکارا نہیں پاسکے . لینن نے ٹالسٹائے کا ورودھی تتوں کا بہت صاف چتر کھینچا ہے . لینن کے سامنے وہ راستہ صاف تھا جس پر روس کو چلنا تھا . ٹالسٹائے بھٹکاؤں میں پھنسے تھے' ان کے سامنے راستہ صاف نہیں تھا . لینن نے ٹالسٹائے کا ادھین کیا تھا . انہوں نے ٹالسٹائے کو اس لئے نہیں پڑھا کہ ان کے درشن کا لینن کھنڈن کرنا چاہتے تھے . ٹالسٹائے کی رچناؤں سے لینن کو مانو آتما کو سمجھنے میں سہایتا ملی .

مجھے ایک مل مزدور کا بھاشن یاد ہے . وہ مزدور ایک نوجوان عورت تھی . سوویت لیکھکوں کے سمیلن میں بولتے ہوئے اس نے ساہتیہ کاروں کو خوب کھری کھوٹی سنائی . اسکی شکایت تھی کہ کپڑا مل مزدوروں کے جیون پر آدھارت کہانیاں اور ناول نہیں لکھے جاتے . لگ بھگ بیس برس پہلے کی بات ہے . اس عرصے میں بہت سی ایسی کتابیں لکھی گئی ہیں جن کے ہیرو کپڑا ادیوگ کے مزدور ہیں . لیکن پھر بھی ان کتابوں کی زیادہ مانگ مل کی لائبریریوں میں نہیں ہے . کیا اس کا یہ کارن ہے کہ آجکل کے لیکھکوں سے زیادہ لیون یا ورانس سے عورتوں کی دلچسپی ہے ؟ نہیں . کارن بالکل صاف ہے . کپڑا مل مزدوروں کے جیون پر آدھارت اپنیاسوں میں آدمی کی جگہ مشین کا ورنن ہوتا ہے . انسانی بھاوناؤں کی جگہ پر اتپادن کے طریقوں کی چرچا ہوتی ہے . لاکھوں کروڑوں سوویت واسی یہ جانتے ہیں کہ اسپات کیسے بنتا ہے' باغوں میں سیبوں کی نئی نئی قسمیں کیسے پیدا کی جاتی ہیں اور اونچی اونچی عمارتیں کیسے کھڑی ہوتی ہیں . لیکن ہر پاٹھک کو اس کا اندازہ نہیں ہے کہ اپنیاسوں کو کیسے جنم دیا جاتا ہے . کلا کو جنم دینے والے منوویگیان کا ادھین بہت کم کیا گیا ہے .

जानता, उसके सामने एक पर्दा सा पड़ा रहता है. पाठक कहां जा रहा है ? पुस्तक से क्या चीज़ वह ढूंढ निकालना चाहता है ?

यह कहने की ज़रूरत नहीं कि इतिहासिक उपन्यास ज्ञान भण्डारों को बढ़ा सकता है और इतिहास के पन्नों में समोया जा सकता है और इतिहास के मुर्दापन को ज़िन्दगी दे सकता है. एलेक्सी टाल्सटाय ने जो 'पीटर दी ग्रेट' के सम्बन्ध में नाविल लिखे हैं उन्हें पढ़ कर पीटर के राज्यकाल का अध्ययन नहीं किया जा सकता. लेकिन यह नाविल उस समय के भावों और विचारों को अवश्य ज़ाहिर करता है.

एक ऐसा नाविल जिसमें ऐसे स्थान का ज़िक्र हो जिससे पाठक परिचित न हों या उस नाविल के वातावरन की जानकारी पाठक को न हो वह उपन्यास भी अपनी क़ीमत रखते हैं. उनसे सीख मिलती है, यही उनकी क़ीमत है. उन्हें पढ़ कर किसी का भौगोलिक ज्ञान ताज़ा हो जाता है, दूसरे तरह के जीवन की उसे जानकारी होती है. कज़ाक लोगों का जीवन चाहे कितने ही रंगीन ढंग से क्यों न लिखा गया हो और चाहे कितने ही सुन्दर और प्राकृतिक दृश्यों का वर्नन "And Quiet Flows The Don" में क्यों न किया गया हो इन रंगीनियों की बहुत क़ीमत नहीं है. इस तरह के वर्नन से शोलो ख़ोफ़ को केवल एक मदद मिलती है. यह सारी चीज़ें साधन मात्र हैं. इन के ज़रिये वह लेखक चरित्रों के अन्दर घुसता है, उनके उस आचरन पर रोशनी डालता है जो साफ़ साफ़ ज़ाहिर नहीं होता. पाठक का ध्यान सदा ग्रीगोरी की कहानी पर केन्द्रित रहता है.

अगर कोई पाठक यह जानना चाहता है कि लोहा कैसे बनता है या वह इस बात की जानकारी चाहता है कि आधुनिक इमारत किस ढंग से बन रही है तो वह शीघ्र ही इन कामों के माहिर से बात करेगा. वह उस लेखक के पास नहीं जायगा जिसने इन विषयों पर मवाद इकट्ठा किया है या दूसरे शब्दों में यों कहिये कि जिस लेखक ने ज़्यादा से ज़्यादा ईमानदारी से उस ज्ञान को अपनी रचना में हज़म कर लिया है जो उसको किसी माहिरों से मिला है. ऐसा तजुरबेकार आदमी जो खेती शास्त्र की जानकारी रखता है खेती के सम्बन्ध में एक उपन्यासकार के मुक़ाबिले बहुत ठीक और अच्छी जानकारी दे सकता है. इसी तरह उस लेखक के मुक़ाबिले में जो अपनी रचनायें बहुत मेहनत कर के लिखता है एक सेना विज्ञान का जानकार स्टैलिनग्राड या कर्स्क या बर्लिन की लड़ाइयों का विश्लेशन ज़्यादा अच्छी तरह कर सकता है.

جانتا' اس کے سامنے ایک پردہ سا پڑا رہتا ہے . پاٹھک کہاں جا رہا ہے ؟ پستک سے کیا چیز وہ ڈھونڈھ نکالنا چاہتا ہے ؟

یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ اتہاسک اپنیاس گیان بھنڈاروں کو بڑھا سکتا ہے اور اتہاس کے پنوں میں سمویا جاسکتا ہے اور اتہاس کے مردہ پن کو زندگی دے سکتا ہے . ایلیکسی ٹالسٹائی نے جو 'پیٹر دی گریٹ' کے سمبندھ میں ناول لکھے ہیں انہیں پڑھکر پیٹر کے راجیہ کال کا ادھین نہیں کیا جاسکتا . لیکن یہ ناول اس سمے کے بھاؤں اور وچاروں کو اوشیہ ظاہر کرتا ہے .

ایک ایسا ناول جس میں ایسے استھان کا ذکر ہو جس سے پاٹھک پریچت نہ ہوں یا اس ناول کے واتاورن کی جانکاری پاٹھک کو نہ ہو وہ اپنیاس بھی اپنی قیمت رکھتے ہیں . ان سے سیکھ ملتی ہے' یہی انکی قیمت ہے . انہیں پڑھکر کسی کا بھوگولک گیان تازہ ہو جاتا ہے' دوسرے طرح کے جیون کی اسے جانکاری ہوتی ہے . کزاک لوگوں کا جیون چاہے کتنے ہی رنگین ڈھنگ سے کیوں نہ لکھا گیا ہو اور چاہے کتنے ہی سندر اور پراکرتک درشیوں کا ورنن "And Quiet Flows The Don' میں کیوں نہ کیا گیا ہو ان رنگینیوں کی بہت قیمت نہیں ہے. اس طرح کے ورنن سے شولو خوف کو کیول ایک مدد ملتی ہے . یہ ساری چیزیں سادھن ماتر ہیں . ان کے ذریعہ لیکھک چرتروں کے اندر گھستا ہے' ان کے اس آچرن پر روشنی ڈالتا ہے جو صاف صاف ظاہر نہیں ہوتا . پاٹھک کا دھیان سدا گری گوری کی کہانی پر کیندرت رہتا ہے .

اگر کوئی پاٹھک یہ جاننا چاہتا ہے کہ لوہا کیسے بنتا ہے یا وہ اس بات کی جانکاری چاہتا ہے کہ آدھونک عمارت کس ڈھنگ سے بن رہی ہے تو وہ شیگھر ہی ان کاموں کے ماہر سے بات کریگا . وہ اس لیکھک کے پاس نہیں جائیگا جسنے ان وشیوں پر مواد اکٹھا کیا ہے یا دوسرے شبدوں میں یوں کہئے کہ جس لیکھک نے زیادہ سے زیادہ ایمانداری سے اس گیان کو اپنی رچنا میں ہضم کرلیا ہے جو اسکو کسی ماہروں سے ملا ہے . ایسا تجربہ کار آدمی جو کھیتی شاستر کی جانکاری رکھتا ہے کھیتی کے سمبندھ میں ایک اپنیاس کار کے مقابلے بہت ٹھیک اور اچھی جانکاری دے سکتا ہے . اسی طرح اس لیکھک کے مقابلہ میں جو اپنی رچنائیں بہت محنت کرکے لکھتا ہے ایک سینا وگیان کا جانکار اسٹالن گراڈ یا کرسک یا برلن کی لڑائیوں کا وشلیشن زیادہ اچھی طرح کرسکتا ہے .

थोड़े दिन हुए जब मैंने एक नौजवान फ्रांसीसी लेखक का एक उपन्यास पढ़ा. यह लेखक पहले से ही बहुत मशहूर है. इस नाविल का हीरो एक नौजवान है जो अपनी कामवासना की तृप्ति के लिये अपने ही जिन्स को ढूंढता है. उसके बाद वह एक बूढ़ी औरत के साथ शादी कर लेता है. वह शादी इसलिये करता है कि उस बूढ़ी औरत की सम्पत्ति पर क़बज़ा कर ले. उपन्यास के लेखक ने शादी की पहली रात का विवरण बहुत लम्बा कर दिया है. इस रात के बाद नाविल का हीरो अपनी छोटी बहन से मिलने जाता है और उसके साथ बलात्कार करता है. यह बात अब समझ में आ जाती है कि ऐसी किताब पढ़ने के बाद फ्रांसीसी पाठक को "The Young Guard' या "Harvey" में एक नई ज़िन्दगी का आभास क्यों होता है, उसे ताज़गी क्यों महसूस होती है.

पश्चिम के आकाश से लालिमा का अन्त हो चुका है. इस लालिमा में धुंधले धुंधले छाये मिले थे. इन छायों से डर और निराशा पैदा हुई और आज रात का चारों तरफ़ राज है.

हर समाज में एक ऐसा समय होता है जब उस समाज की कला का फूल विकसित होता है. जब कला और भावों का सन्तुलन तरह तरह के भटकावों को दबा देता है और जब बहुत से कला के शाहकार पैदा होते हैं. यह समय उस समाज की ऊंचाई कहलाता है. सोवियत समाज अभी अभी पैदा हुआ है. इतिहास में कुछ दशाब्दियां केवल घन्टे आध घन्टे मात्र हैं. हमारे लेखक स्काउटों के समान हैं. यही कारन है कि अभी तक हम पुश्किन या टाल्सटाय नहीं पैदा कर पाये. लेकिन किसी न किसी दिन हम पैदा करेंगे. सोवियत समाज की कलात्मक ऊंचाई हमारे सामने है. उस तक हमें पहुंचना है. अभी तक हम वहां तक पहुंच नहीं पाए.

आज फ्रान्स के पास बालज़िक स्टेन्डहाल, ह्यूगो, फ्लाबर्ट या ज़ोला नहीं हैं. इन्गलैन्ड भी आज डिकेन्स, बाइरन या शैली से ख़ाली है. इससे पहले कि इस बात की उम्मीद पैदा हो कि इन देशों में नये डिकेन्स या नये स्टेन्डहाल पैदा हों यह ज़रूरी है कि इन मुल्कों में बहुत सी तबदीलियां हों. जब तक तबदीलियां नहीं होतीं इन देशों का साहित्य उन महान लेखकों के पीछे ही रहेगा जो कि मर चुके हैं.

जब पाठक पुस्तक खोलता है तो उसे ऐसा लगता है कि जैसे वह एक लम्बे सफ़र पर चल पड़ा हो, उसका सफ़र नया मालूम होता है और रास्ते की हर वस्तु नई जान पड़ती है. पुस्तक के चरित्र चाहे उसी शहर में या उसी सड़क पर रहते हों पर वह उन्हें नहीं

تھوڑے دن ہوئے جب میں نے ایک نوجوان فرانسیسی لیکھک کا ایک اپنیاس پڑھا . یہ لیکھک پہلے ہی سے بہت مشہور ہے . اس ناول کا ہیرو ایک نوجوان ہے جو اپنی کام واسنا کی ترپتی کے لیئے اپنے ہی جنس کو ڈھونڈھتا ہے . اس کے بعد وہ ایک بوڑھی عورت کے ساتھ شادی کرلیتا ہے . وہ شادی اِس لیئے کرتا ہے کہ اِس بوڑھی عورت کی سمپتی پر قبضہ کرلے . اپنیاس کے لیکھک نے شادی کی پہلی رات کا ورنن بہت لمبا کردیا ہے. اِس رات کے بعد ناول کا ہیرو اپنی چھوٹی بہن سے ملنے جاتا ہے اور اس کے ساتھ بلاتکار کرتا ہے . یہ بات اب سمجھ میں آجاتی ہے کہ ایسی کتاب پڑھنے کے بعد فرانسیسی پاٹھک کو "The Young Guard" یا "Harvey" میں ایک نئی زندگی کا آبھاس کیوں ہوتا ہے' اسے تازگی کیوں محسوس ہوتی ہے .

پشچم کے آکاش سے لالیما کا انت ہوچکا ہے . اس لالیما میں دھندھلے دھندھلے چھائے ملے تھے. اِن چھایوں سے ڈر اور نراشا پیدا ہوئی اور آج رات کا چاروں طرف راج ہے .

ہر سماج میں ایک ایسا سمے ہوتا ہے جب اُس سماج کی کلا کا پھول وکسِت ہوتا ہے . جب کلا اور بھاوں کا سنتولن طرح طرح کے بھٹکاؤں کو دبا دیتا ہے اور جب بہت سے کلا کے شاہکار پیدا ہوتے ہیں . یہ سمے اس سماج کی اُونچائی کہلاتا ہے . سوویت سماج ابھی کل پیدا ہوا ہے . اِتہاس میں دشابدیاں کیول گھنٹے آدھ گھنٹے ماتر ہیں' ہمارے لیکھک سکاؤٹوں کے سمان ہیں . یہی کارن ہے کہ ابھی تک ہم پشکن یا ٹالسٹائے نہیں پیدا کرپائے . لیکن کسی نہ کسی دن ہم پیدا کرینگے . سوویت سماج کی کلاتمک اُونچائی ہمارے سامنے ہے . اُس تک ہمیں پہونچنا ہے . ابھی تک ہم وہاں تک پہونچ نہیں پائے .

آج فرانس کے پاس بالزک اسٹینڈھال' ہیوگو' پلاہرٹ یا زولا نہیں ہیں . انگلینڈ بھی آج ڈکنس بائرن یا شیلی سے خالی ہے . اس سے پہلے کہ اس بات کی اُمید پیدا ہو کہ اِن دیشوں میں نئے ڈکنس یا نئے سٹینڈ ہال پیدا ہوں یہ ضروری ہے کہ اُن ملکوں میں بہت سی تبدیلیاں ہوں . جب تک تبدیلیاں نہیں ہوتیں اِن دیشوں کا ساہتیہ اُن مہان لیکھکوں کے پیچھے ہی رہیگا جو کہ مرچکے ہیں .

جب پاٹھک پستک کھولتا ہے تو اُسے ایسا لگتا ہے کہ جیسے وہ ایک لمبے سفر پر چل پڑا ہو . اس کا سفر نیا معلوم ہوتا ہے اور راستے کی ہر وستو نئی جان پڑتی ہے . پستک کے چرتر' چاہے کسی شہر میں یا کسی سڑک پر رہتے ہوں پر وہ اُنہیں نہیں

आत्मा ऐसी वस्तु है जो पश्चिम के अमीर और ग़रीब किसी देश में नहीं मिलती. नई पुस्तकों के नये पाठक पैदा हो गये हैं.

क्या यह अचरज की बात नहीं है कि लैटिन अमरीका की आम जनता आज पहली बार नाविलें और कवितायें पढ़ रही है और आज पहली बार लैटिन अमरीकी लेखकों की पुस्तकें दुनिया के दूसरे कोनों में पहुंच रही हैं. आज योरप में बहुत थोड़े से लोग हैं जो रूबेन डारियो की कविता के सम्बन्ध में जानते हों लेकिन कोई भी ऐसा योरपी नहीं है जो साहित्य से प्रेम रखता हो और नरूदा, अमादू और गुइलिन की पुस्तकें दिलचस्पी से न पढ़ता हो.

क्या तुर्की में एक ऐसा लेखक था जिस की रचनाओं की चर्चा किसानों, खदान मजदूरों और मल्लाहों के बीच होती थी ? क्या कोई ऐसा तुर्की लेखक था जो कि विदेशों में भी मशहूर हो ? लेकिन आज नाज़िम हिकमत की कविता ने लाखों दिलों में अपना घर कर लिया है. क्या रानाल्ट के मज़दूर वालेरी की कवितायें पढ़ते थे ? लेकिन आज वही मज़दूर इलवर्ड और अरागोन की कवितायें पढ़ते हैं हालांकि इनको समझना बहुत आसान नहीं है फिर भी यह कवितायें पढ़ी जाती हैं. जब फ़्रांस के सत्ताधीशों के प्रतिनिधि फ़्रांस का नाम विदेशों में चमकाना चाहते हैं तो इन महान लेखकों के नाम की चर्चा करने पर वह मजबूर होते हैं.

अमरीका में जो साहित्यक "दूसरी पीढ़ी के लेखक" कहे जाते थे दूसरी लड़ाई के बाद से उनकी कला की चमक धुन्धली पड़ गई है लेकिन हावर्डफास्ट की कला ने प्रगति की है और उसमें मज़बूती आई है. जिन लेखकों का मैंने ज़िक्र किया है वह बुर्जुआ समाज से अलग हो गये हैं. क्या यह कारन है जिस से मैं उनको पसन्द करता हूं और उनको सबसे अच्छे लेखक मानता हूं ? नहीं, वह सचमुच सब से अच्छे लेखक हैं. उन्होंने भविष्य से अपना नाता जोड़ लिया है क्योंकि उनकी आत्मा दूसरों से ऊंची है.

पश्चिम के पाठक उन जासूसी, मादकता उत्पन्न करने वाली, ख़राब करने वाली, कहानियों को पढ़ कर सन्तुष्ट कर लेते हैं जो "रीडर डाइजेस्ट" ऐसी घटियल पत्रिकाओं में निकलती रहती हैं. बहुत से देशों में ऐसे पाठक हैं. पर उनका अपने राष्ट्र का हृदय, अन्तः करण या भविष्य नहीं कहा जा सकता. जो पाठक काम करते हैं, जो उत्पत्ति करते हैं, जो सोचते विचारते हैं वह अच्छी किताबें चाहते हैं, नए विचार ढूंढते हैं.

रूसी उपन्यासों के अनुवाद फ़्रांस, नारवे, स्वेडन, फ़िनलैण्ड और लैटिन अमरीका में ख़ूब बिकते हैं. इन नाविलों की सफलता इस बात पर नहीं है कि वह किस तरह लिखे गये हैं बल्कि इस बात पर कि उनमें क्या लिखा है.

ایسی وستو ہے جو پچھم کے امیر اور غریب کسی دیش میں نہیں ملتی . نئی پستکوں کے نئے پاٹھک پیدا ہو گئے ہیں .

کیا یہ اچرج کی بات نہیں ہے کہ لیٹن امریکہ کی عام جنتا آج پہلی بار ناولیں اور کویتائیں پڑھ رہی ہے اور آج پہلی بار لیٹن امریکی لیکھکوں کی پستکیں دنیا کے دوسرے کونوں میں پہونچ رہی ہیں . آج یورپ میں بہت تھوڑے سے لوگ ہیں جو روبین ڈاریو کی کویتا کے سمبندھ میں جانتے ہیں لیکن کوئی بھی ایسا یورپی نہیں ہے جو ساہتیہ سے پریم رکھتا ہو اور نرودا' اماڈو اور گیلن کی پستکیں دلچسپی سے نہ پڑھتا ہو .

کیا ترکی میں ایک ایسا لیکھک تھا جس کی رچناؤں کی چرچا کسانوں' کھدان مزدوروں اور ملاحوں کے بیچ ہوتی تھی؟ کیا کوئی ایسا ترکی لیکھک تھا جو کہ ودیشوں میں بھی مشہور ہو ؟ لیکن آج ناظم حکمت کی کویتا نے لاکھوں دلوں میں اپنا گھر کر لیا ہے . کیا رانالٹ کے مزدور والیری کی کویتائیں پڑھتے تھے؟ لیکن آج وہی مزدور الورڈ اور اراگون کی کویتائیں پڑھتے ہیں حالانکہ ان کو سمجھنا بہت آسان نہیں ہے پھر بھی یہ کویتائیں پڑھی جاتی ہیں . جب فرانس کے ستّا دھیشوں کے پرتیندھی فرانس کا نام ودیشوں میں چمکانا چاہتے ہیں تو ان مہان لیکھکوں کے نام کی چرچا کرنے پر وہ مجبور ہوتے ہیں .

امریکہ میں جو ساہتیک "دوسری پیڑھی کے لیکھک" کہے جاتے تھے دوسری لڑائی کے بعد سے ان کی کلا کی چمک دھندھلی پڑ گئی ہے لیکن ہاورڈ فاسٹ کی کلا نے پرگتی کی ہے اور اس میں مضبوطی آئی ہے . جن لیکھکوں کا میں نے ذکر کیا ہے وہ بورجوا سماج سے الگ ہوگئے ہیں . کیا یہ کارن ہے جس سے میں ان کو پسند کرتا ہوں اور ان کو سب سے اچھے لیکھک مانتا ہوں ؟ نہیں' وہ سچ مچ سب سے اچھے لیکھک ہیں. انہوں نے بھوشیہ سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے کیونکہ ان کی آتما دوسروں سے اونچی ہے .

پچھم کے پاٹھک ان جاسوسی' مادکتا اتپن کرنے والی' خراب کرنے والی' کہانیوں کو پڑھکر سنتشٹ کرلیتے ہیں جو ریڈرز ڈائجسٹ' ایسی گھٹیل پترکاؤں میں نکلتی رہتی ہیں' بہت سے دیشوں میں ایسے پاٹھک ہیں' پر انکو اپنے راشٹر کا ہردے' انتہ کرن یا بھوشیہ نہیں کہا جاسکتا' جو پاٹھک کام کرتے ہیں' جو اتپتی کرتے ہیں' جو سوچتے وچارتے ہیں وہ اچھی کتابیں چاہتے ہیں' نئے وچار ڈھونڈھتے ہیں .

روسی اپنیاسوں کے انوواد فرانس' ناروے' سویڈن' فنلینڈ اور لیٹن امریکہ میں خوب بکتے ہیں . ان ناولوں کی سپھلتا اس بات پر نہیں ہے کہ وہ کس طرح لکھے گئے ہیں بلکہ اس بات پر ہے کہ انمیں کیا لکھا ہے .

असर किया क्योंकि इन रचनाओं में दिल दिमाग की सचाई थी और पन्नों से घोर निराशा के बादल उमंड रहे थे जो पाठक के दिल को हिला देते थे. इसलिये कुछ आलोचकों ने इन लेखकों पर निराशावादी होने का आरोप लगाया. यह कहने की जरूरत नहीं कि उस समय भी अमरीका में ऐसे लेखक थे जिन्होंने उस संघर्ष का वर्नन किया जो वहां की प्रगतिशील जनता, नसली भेदभाव, नफाखोरी, जुल्म ज्यादती और मानव गऊगरिमा के ईमान के खिलाफ चला रही थी. लेकिन अमरीका के प्रगतिशील लेखक अब भी कमजोर थे. जिन लेखकों पर निराशा का आरोप है उन्होंने वह लिखा जो उन्होंने देखा, जो उनका समाज था.

मोरियक, डोयबलिन, जूलेसरोमैन, मोरैविया, ज्वायस, राट जैसे बुर्जुआ योरप के लेखकों ने दो बड़ी लड़ाइयों के दरमियान बहुत से अच्छे नाविल्स लिखे. इन नाविलों में उस पूंजीवादी समाज का चित्रन है जो धीरे धीरे मिट रही है, जिसकी प्रगति बिल्कुल रुक गई है. अब इस तरह की किताबें पश्चिम में नहीं लिखी जा रही हैं. जिन लेखकों का मैंने ऊपर जिक्र किया है उनमें से बहुत से मर चुके हैं, कुछ ने मौन धारन कर लिया है. जो बाक़ी बचे हैं वह अपने ऊंचाई से नीचे आ गिरे हैं.

दोनों लड़ाइयों के बीच के समय बुर्जुआ संसार के लेखकों ने इस बात का अन्दाजा लगा लिया था कि उनका समाज मिट कर रहेगा. फिर भी उनमें इतना साहस बाक़ी रहा कि वह इस समाज पर रो सकें. उनकी निराशा अभी सीमा के अन्दर थी और उसको कला का रूप दिया जा सकता था. लेकिन पश्चिम के बुर्जुआ लेखक को आज इस बात का पता नहीं है कि उनके चरित्रों का हाल कल क्या होगा या खुद उन पर कल क्या गुज़रेगी. ऐसी परिस्थिति में एक नाविल का ढांचा तैयार करना बहुत ही मुश्किल है. जब कि आप का दोस्त कहता है कि एक साल के अन्दर अन्दर आप के ऊपर ऐटम बम गिरेगा. नाविल लिखना कितना कठिन है जबकि एक सड़क से अमरीकी सिपाही मार्च करते जा रहे हैं और दूसरी सड़क पर हड़ताली मजदूरों का जलूस जा रहा है. कुछ लेखक ऐसे हैं जो अखबारों की सनसनी फैलाने वाली रचनाएं करते हैं. कुछ ऐसे भी हैं जो दिल से नहीं चाहते फिर भी जो असाधारण घटनाओं का वर्नन करते हैं जिनमें मनोवैज्ञानिक या अपराध शास्त्रियों को ही दिलचस्पी होती है.

इस छिन्न भिन्न होने वाले समाज में लेखकों की ऐसी ही दुर्दशा है लेकिन बुर्जुआ देशों में अच्छे लेखक भी मौजूद हैं जिनकी किताबें पाठकों के दिलों को हिला देती हैं और उनके अन्दर आशा का दीप जलाती हैं.

اثر کیا کیونکہ ان رچناؤں میں دل دماغ کی سچائی تھی اور پنّوں سے گھور نراشا کے بادل امنڈ رہے تھے، جو پاٹھک کے دل کو ہلا دیتے تھے۔ اسی لئے کچھ آلوچکوں نے ان لیکھکوں پر نراشا وادی ہونے کا آروپ لگایا۔ یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ اس سمے بھی امریکہ میں ایسے لیکھک تھے جنہوں نے اس سنگھرش کا ورنن کیا جو وہاں کی پرگتی شیل جنتا، نسلی بھید بھاؤ، نفع خوری، ظلم زیادتی اور مانو گورو گریما کے ایمان کے خلاف چلا رہی تھی۔ لیکن امریکہ کے پرگتی شیل لیکھک اب بھی کمزور تھے۔ جن لیکھکوں پر نراشا کا آروپ ہے انہوں نے وہ لکھا جو انہوں نے دیکھا، جو ان کا سماج تھا۔

موریک، ڈوبلن، جولس رومین، موریویا، جوائس، راٹ جیسے برجوا کے یورپ لیکھکوں نے دو بڑی لڑائیوں کے درمیان بہت سے اچھے ناولس لکھے۔ ان ناولوں میں اس پونجی وادی سماج کا چترن ہے، جو دھیرے دھیرے مٹ رہا ہے، جس کی پرگتی بالکل رک گئی ہے۔ اب اس طرح کی کتابیں پشچم میں نہیں لکھی جا رہی ہیں۔ جن لیکھکوں کا میں نے اوپر ذکر کیا ہے ان میں سے بہت سے مر چکے ہیں، کچھ نے مون دھارن کر لیا ہے۔ جو باقی بچے ہیں وہ اپنی اونچائی سے نیچے آ گرے ہیں۔

دونوں لڑائیوں کے سمے برجوا سنسار کے لیکھکوں نے اس بات کا اندازہ لگا لیا تھا کہ ان کا سماج مٹ کر رہے گا۔ پھر بھی ان میں اتنا سا ہس باقی رہا کہ وہ اس سماج پر رو سکیں۔ ان کی نراشا ابھی سیما کے اندر تھی اور اسکو کلا کا روپ دیا جا سکتا تھا۔ لیکن پشچم کے برجوا لیکھک کو آج اس بات کا پتہ نہیں ہے کہ ان کے چرتروں کا حال کل کیا ہوگا یا خود ان پر کل کیا گزرے گی۔ ایسی پرستھتی میں ایک ناول کا ڈھانچہ تیار کرنا بہت ہی مشکل ہے جبکہ آپ کا دوست کہتا ہے کہ ایک سال کے اندر اندر آپ کے اوپر ایٹم بم گرے گا۔ ناول لکھنا کتنا کٹھن ہے جبکہ ایک سڑک سے امریکی سپاہی مارچ کرتے جا رہے ہیں اور دوسری سڑک پر ہڑتالی مزدوروں کا جلوس جا رہا ہے۔ کچھ لیکھک ایسے ہیں جو اخباروں کی سنسنی پھیلانے والی رچنائیں کرتے ہیں۔ کچھ ایسے بھی ہیں جو دل سے نہیں چاہتے پھر بھی جو اسادھارن گھٹناؤں کا ورنن کرتے ہیں جن سے منووگیانک یا اپرادھ شاستریوں کو ہی دلچسپی ہوتی ہے۔

اس چھن بھن ہونے والے سماج میں لیکھکوں کی ایسی ہی درگتا ہے لیکن برجوا دیشوں میں اچھے لیکھک بھی موجود ہیں جن کی کتابیں پاٹھکوں کے دلوں کو ہلا دیتی ہیں اور ان کے اندر آشا کا دیپ جلاتی ہیں۔

"दी नाइनटीन" और "दी स्वायल अपटर्न्ड" सब से अच्छे उदाहरन हैं. जनसाधारन, उसके आपसी व्योहार और उनके मनोविज्ञान बदल रहे हैं. पिछली लड़ाई के जो हीरो हैं वह उन चरित्रों की तरह नहीं है जो "चैपेफ़" या "दी आइरन फ़ील्ड" में पाये जाते हैं. हमारे ज़माने के कालेज विद्यार्थी उन की पुरुषों से भिन्न हैं जो 1925 में मज़दूर हाई स्कूल में पढ़ा करते थे. यहां तक कि भावनाएं जो पहले अटल समझी जाती थीं वह भी आज अचरज भरी तेज़ी से बदल रही हैं. दो प्रेमी आज बिल्कुल ही दूसरी तरह से प्रेम करते हैं, बिल्कुल दूसरी ही तरह से सोचते हैं, उनके भाव भंगिमा, प्रेमानुभव बिलकुल भिन्न है. पहली पंचवर्षीय योजना के समय के दो प्रेमियों की भावनाएं आज के प्रेमियों से बिल्कुल अलग हैं.

टाल्सटाय, तुर्गनिफ़, गोन्चारोफ़ और चैकोफ़ हर परिस्थिति में अपने चरित्रों की भावनाओं और आचरनको अच्छी तरह से जानते थे. लेकिन आज के सोवियत लेखक के लिये अपने इर्द गिर्द बसने वालों के विचार और एहसास को पूरी तरह से जानना बहुत ही मुश्किल है. एक स्थापित समाज का चित्रन आसान है. लेखक या उस समाज की बुराइयों पर से पर्दा हटाता है और या उसका रंगीन विवरण देता चला जाता है. लेकिन इस चित्रन का मुक़ाबिला उस समाज के चित्रन से नहीं किया जा सकता जो इतिहास में नई चीज़ है, जो अभी बन रहा है और जिसको बनाने में लेखक ख़ुद हिस्सा ले रहा है।

ख़ुद बख़ुद यह सवाल उठ खड़ा होता है कि आजकल के बुरजुवा लेखकों का क्या हाल है? ऐसा लगता है कि उनका काम आसान है. उन्हें एक ऐसे समाज का चित्रन करना है जो मिट रहा है पर फिर भी अभी क़ायम है. फिर भी पश्चिम में जो साहित्य आजकल लिखा जा रहा है वह निर्धन है. यह देख कर बहुत अचरज होता है. ऐसे साहित्य की सराहना करने वाले आलोचक भी फ़्रान्स, इंगलैंड और अमरीका में यह बात कहने लगे हैं.

रोमां रोलां, डरसीफ्ड, बर्नार्ड शा, हाम्सन (उन्होंने आत्महत्या कर ली थी. ज़िन्दगी के इस तरह के अन्त से उनके नाविलों के गुनों को नहीं भुलाया जा सकता) विल्सेज, रोजरमार्टिन डोगार्ड, ग्लासवर्धी, हाप्टमैन, हैनरिचमैन और सुपरैन्डलो जैसे पिछले सदी के महान लेखक पहली और दूसरी लड़ाई के बीच मौजूद थे और वह सब महान साहित्य लिख रहे थे. इसी अर्से में अमरीका में बहुत अच्छे नाविल लिखे गये. इन नाविलों में एक तरफ़ भयानक निर्दयता का ज़िक्र था तो दूसरी तरफ़ मानव प्रेम इनके पन्नों पर अंकित था. हैमिंगवे, कालडवेल, स्टेन बक और नाक्सथ की पहली किताबों ने पाठकों पर बहुत

"دی نائنٹین" اور "دی سوائل اپٹرنڈ" سب سے اچھے اداہرن ھیں۔ جن سادھارن، اُس کے آپسی بیوہار اور اُن کے منووگیان بدل رہے ھیں۔ پچھلی لڑائی کے جو ھیرو ھیں وہ اُن چرتروں کی طرح نہیں ھیں جو "چیپیف" یا "دی آئرن فیلڈ" میں پائے جاتے ھیں۔ ھمارے زمانے کے کالج ودیارتھی اُن استری پرشوں سے بھن ھیں جو 1925 میں مزدور ھائی اسکول میں پڑھا کرتے تھے۔ یہاں تک کہ بھاونائیں جو پہلے اٹل سمجھی جاتی تھیں وہ بھی آج اچرج بھری تیزی سے بدل رہی ھیں۔ دو پریمی آج بالکل ھی دوسری طرح سے پریم کرتے ھیں، بالکل دوسری ھی طرح سے سوچتے ھیں، اُن کے بھاوبھنگما، پریمانوبھو بالکل بھن ھیں۔ پہلی پنچ ورشیہ یوجنا کے سمے کے دو پریمیوں کی بھاونائیں آج کے پریمیوں سے بالکل الگ ھیں۔

ٹالسٹائی، ترگنیف، گونچاروف اور چیکوف ھر پرستھتی میں اپنے چرتروں کی بھاوناؤں اور آچرن کو اچھی طرح سے جانتے تھے۔ لیکن آج کے سوویت لیکھک کے لیئے اپنے اردگرد بسنے والوں کے وچار اور احساس کو پوری طرح سے جاننا بہت ھی مشکل ھے۔ ایک استھاپت سماج کا چترن آسان ھے۔ لیکھک یا اس سماج کی برائیوں پر سے پردہ ھٹاتا ھے اور یا اس کا رنگین ورن دیتا چلا جاتا ھے۔ لیکن اس چترن کا مقابلہ اُس سماج کے چترن سے نہیں کیا جاسکتا جو اتہاس میں نئی چیز ھے، جو ابھی بن رہا ھے اور جس کو بنانے میں لیکھک خود حصہ لے رہا ھے۔

خود بخود یہ سوال اُٹھ کھڑا ھوتا ھے کہ آجکل کے برجوا لیکھکوں کا کیا حال ھے؟ ایسا لگتا ھے کہ انکا کام آسان ھے۔ انہیں ایک ایسے سماج کا چترن کرنا ھے جو مٹ رہا ھے پر پھر بھی ابھی قایم ھے۔ پھر بھی پچھم میں جو ساھتیہ آجکل لکھا جا رہا ھے وہ نردھن ھے۔ یہ دیکھکر بہت اچرج ھوتا ھے۔ ایسے ساھتیہ کی سراھنا کرنے والے آلوچک بھی فرانس، انگلینڈ اور امریکہ میں یہ بات کہنے لگے ھیں۔

رومان رولاں، ڈرسیفڈ، برنارڈ شا، ھامسن (انہوں نے آتم ھتیا کر لی تھی۔ زندگی کے اسی طرح کے انت سے اُن کے ناولوں کے گنوں کو نہیں بھلایا جا سکتا) ولسز، روجرمارٹن ڈوگارڈ، گلاسورردھی، ھاپٹمن، ھینرچ مین اور سپرینڈلو جیسے پچھلی صدی کے مہان لیکھک پہلی اور دوسری لڑائی کے بیچ موجود تھے اور وہ سب مہان ساھتیہ لکھ رہے تھے۔ اسی عرصے میں امریکہ میں بہت اچھے ناول لکھے گئے۔ ان ناولوں میں ایک طرف بھیانک نردیتا کا ذکر تھا تو دوسری طرف مانو پریم ان کے پنوں پر انکت تھا۔ ھیمنگ وے، کالڈول، اسٹین بک اور ناکسو کی پہلی کتابوں نے پاٹھکوں پر بہت

पत्र 'लेखक ने बिल्कुल सही कहा है कि हमारी ज़िन्दगी में ज़्यादा उमंग है और वह हमारे साहित्य के मुक़ाबिले में अधिक रंगीन और अधिक जोशीली है. आज हमारे बीच में लियो टालस्टाय, साल्टीकोफ़ शैद्रीन, चैकोफ़, गोरकी' नहीं हैं. (इसका यह मतलब नहीं है कि आज हमारे बीच अच्छे लेखक नहीं हैं, या अच्छे नाविल नहीं लिखे गये हैं.) इसका यह कारन नहीं है कि प्रकृति या "क़िस्मत" किसी ख़ास युग में महान कलाकारों की ख़ास तादाद पैदा करती है और दूसरे युग को बिल्कुल वंचित रखती है. लैनिनग्राड के नौजवान इन्जीनियर ने जो प्रश्न उठाया है इस पर विचार करने के लिये ज़रूरी है कि लेखक और उसकी कला पर रोशनी डाली जाये.

शौक़िया तस्वीर खींचने वाले कैमरे का बटन दबाते हैं. सेकेन्ड के सवें हिस्से में ही उस आदमी की तस्वीर फ़िल्म पर आ जाती है जो सड़क पर चल रहा है या दौड़ रहा है. चित्रकार अपने नमूने को सामने रखता है और उस पर बहुत देर तक आंखें गड़ाये रहता है, इस तरह वह कोशिश करता है कि उस आदमी के चेहरे मोहरे में उसके चरित्र और उसके अन्तःकरन की छाप मिल जाय. लेखक का काम भी चित्रकार से मिलता जुलता है. वह ग़ौर से अपने चरित्रों को अध्यन करता है.

हमारे महान पूर्वजों के लिये लिखना हमारे मुक़ाबिले में कहीं ज़्यादा आसान था क्योंकि उन्होंने उस समाज का चित्रन किया जो बहुत ही धीरे धीरे बदल रहा था.

यह सच है कि साल्टीकोफ़, शैचड्रीन, उस युग में थे जब ग़ुलामी की प्रथा ख़तम हो गई थी और इस तबदीली से जो असर समाज पर पड़ा था उसका चित्रन इनकी रचनाओं में मिलता है. लेकिन कोई बहुत गहरी आत्मिक तबदीली पाम्बेडरस् के राज्य में नहीं हुई थी और न ही गोलो फ़लियोफ़स् के ख़ानदान पर इसका असर पड़ा था. चैकोफ़ की शुरू की कहानियों में जिस तरह के मर्द और औरत हैं उसी तरह के व्यक्ति उनकी बाद की रचनाओं में भी मिलते हैं. लेखक की शैली ज़रूर बदल गई पर चरित्र वही के वही रहे.

हमारा समाज हमारी आंखों के सामने बन रहा है. देखते देखते तबदीलियां हो रही हैं. कुछ ऐसे ऊंचे पाए के नाविल हैं जो आज इतिहास की चीज़ बन गए हैं. इन पुस्तकों के लेखक जीवित हैं. अभी यह किताबें कोई पुरानी भी नहीं हुई. इन उपन्यासों का आधार जनता के जीवन से सम्बन्धित सबसे बड़े सवालों पर है. यह भी नहीं है कि साहित्यिक मूल्य इन का घट गया है. पर इन की जगह इतिहास के पन्नों में रह गई है.

پتر لیکھک نے بالکل سہی کہا ہے کہ ہماری زندگی میں زیادہ امنگ ہے اور وہ ہمارے ساہتیہ کے مقابلے میں ادھک رنگین اور ادھک جوشیلی ہے . آج ہمارے بیچ میں لیو ٹالسٹائی ' سالٹیکوف شیدرین' چیکوف' گورکی نہیں ہیں . (اس کا یہ مطلب نہیں ہے کہ آج ہمارے بیچ اچھے لیکھک نہیں ہیں یا اچھے ناول نہیں لکھے گئے ہیں .) اس کا یہ کارن نہیں ہے کہ پرکرتی یا " قسمت " کسی خاص یگ میں مہان کلا کاروں کی خاص تعداد پیدا کرتی ہے اور دوسرے یگ کو بالکل ونچت رکھتی ہے . لینن گراڈ کے نوجوان انجینیر نے جو پرشن اٹھایا ہے اس پر وچار کرنے کے لئے ضروری ہے کہ لیکھک اور اس کی کلا پر روشنی ڈالی جائے .

شوقیہ تصویر کھینچنے والے کیمرے کا بٹن دباتے ہیں. سیکنڈ کے سویں حصے میں ہی اس آدمی کی تصویر فلم پر آ جاتی ہے جو سڑک پر چل رہا یا دوڑ رہا ہے . چترکار اپنے نمونے کو سامنے رکھتا ہے اور اس پر بہت دیر تک آنکھیں گڑائے رہتا ہے' اس طرح وہ کوشش کرتا ہے کہ اس آدمی کے چہرے مہرے میں اس کے چرتر اور اس کے انتہ کرن کی چھاپ مل جائے . لیکھک کا کام بھی چترکار سے ملتا جلتا ہے. وہ غور سے اپنے چرتروں کا ادھین کرتا ہے .

ہمارے مہان پوروجوں کے لئے لکھنا ہمارے مقابلے میں کہیں زیادہ آسان تھا کیونکہ انہوں نے اس سماج کا چترن کیا جو بہت ہی دھیرے دھیرے بدل رہا تھا .

یہ سچ ہے کہ سالٹیکوف' شیچڈرین' اس یگ میں تھے جب غلامی کی پرتھا ختم ہوگئی تھی اور اس تبدیلی سے جو اثر سماج پر پڑا تھا اسکا چترن ان کی رچناؤں میں ملتا ہے . لیکن کوئی بہت گہری آتمک تبدیلی پامبیڈرس کے راجیہ میں نہیں ہوئی تھی اور نہ ہی گولا فلیوفس کے خاندان پر اس کا اثر پڑا تھا . چیکوف کی شروع کی کہانیوں میں جس طرح کے مرد اور عورت ہیں اسی طرح کے ویکتی ان کی بعد کی رچناؤں میں بھی ملتے ہیں . لیکھک کی شیلی ضرور بدل گئی پر چرتر وہی کے وہی رہے .

ہمارا سماج ہماری آنکھوں کے سامنے بن رہا ہے . دیکھتے دیکھتے تبدیلیاں ہو رہی ہیں . کچھ ایسے اونچے پائے کے ناول ہیں جو آج اتہاس کی چیز بن گئے ہیں . ان پستکوں کے لیکھک جیوت ہیں . ابھی یہ کتابیں کوئی پرانی بھی نہیں ہوئیں . ان اپنیاسوں کا آدھار جنتا کے جیون سے سمبندھت سب سے بڑے سوالوں پر ہے . یہ بھی نہیں ہے کہ ساہتیک مولیہ انکا گھٹ گیا ہے . پر ان کی جگہ اتہاس کے پنوں میں رہ گئی ہے .

लेखक और उसकी कला

(एलिया एहरन बर्ग)

[एलिया एहरन बर्ग रूस के बहुत बड़े लेखक हैं. उनका यह लेख रूसी लेखकों के फ़ायदे का ही नहीं है बल्कि हम भी इस से काफ़ी फ़ायदा उठा सकते हैं. इस लेख में दुनिया के साहित्य का रिव्यू किया गया है.
—मुजीब रिज़वी]

× × ×

थोड़े दिन हुए कि लैनिनग्राड के एक नवजवान इन्जीनियर ने मुझे पत्र लिखा. उसने पूछा—"इस सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं कि जीवन के मुक़ाबिले में हमारा साहित्य कमज़ोर और बेरंग है? हाल में हम लोग इस बात की चर्चा कर रहे थे पर किसी से कोई जवाब नहीं बन पड़ा. आप आज के सोवियत समाज का मुक़ाबिला ज़ार के रूसी समाज से नहीं कर सकते, फिर भी उस समय महान पुस्तकें लिखी गई थीं. हां, कुछ किताबें आज भी हैं जो दिलचस्पी से पढ़ी जाती हैं. लेकिन किताबों की बहुत बड़ी तादाद ऐसी है जिन पर अचरज होता है कि वह क्यों लिखी गई हैं. इन पुस्तकों में हर चीज़ मौजूद होती है, फिर भी किसी चीज़ की कमी खलती है. यह साहित्य आप पर पूरी तरह से हावी नहीं हो पाता, आपके दिल में नहीं उतर पाता और जिस तरह के लोगों का इस साहित्य में वर्नन है वैसे लोग वास्तविक जीवन में नहीं मिलते."

यह पहली बार नहीं है कि मुझे इस तरह की आवाज़ सुनाई पड़ी है. पर इस ख़त ने मुझ में यह इच्छा पैदा की है कि लेखक की कला के सम्बन्ध में मैं अपने कुछ विचार पाठकों के सामने रक्खूं.

यह कहने की ज़रूरत नहीं कि जो कुछ इस सम्बन्ध में मैं कहूंगा वह ख़ालिस मेरे विचार होंगे और उनका आधार मेरा व्यक्तिगत अनुभव है. सोवियत लेखक अपने सोवियत समाज से प्रेम करते हैं. हमें इस समाज के भविष्य पर अटूट विश्वास है. यही प्रेम और विश्वास हमें एक सूत्र में बांधे हुये है. हम लोग अलग अलग विषयों पर लिखते हैं और हर एक का लिखने का अपना अलग तरीक़ा है, हममें से हर एक का अनुभव भिन्न है

इसमें कोई शक नहीं कि मेरे कुछ विचारों से सारे लेखक सहमत होंगे. लेकिन उनमें से कई दूसरे बहुत से विचारों से असहमत भी होंगे.

لیکھک اور اس کی کلا

(ایلیا اهرن برگ)

[ایلیا اهرن برگ روس کے بہت بڑے لیکھک هیں . اُن کا یہ لیکھ روسی لیکھکوں کے فایدے کا هی نہیں ہے بلکہ هم بھی اس سے کافی فایدہ اُٹھا سکتے هیں. اس لیکھ میں دنیا کے ساهتیہ کا ریویو کیا گیا ہے.
—مجیب رضوی]

× × ×

تھوڑے دن هوئے کہ لینن گراڈ کے ایک نوجوان انجینیر نے مجھے پتر لکھا . اس نے پوچھا—"اِس سمبندھ میں آپ کے کیا وچار هیں کہ جیون کے مقابلہ میں همارا ساهتیہ کمزور اور بے رنگ ہے؟" حال میں هم لوگ اِس بات کی چرچا کر رہے تھے پر کسی سے کوئی جواب نہیں بن پڑا. آپ آج کے سوویت سماج کا مقابلہ زار کے روسی سماج سے نہیں کر سکتے، پھر بھی اس سمے مہان پستکیں لکھی گئی تھیں . هاں، کچھ کتابیں آج بھی هیں جو دلچسپی سے پڑھی جاتی هیں . لیکن کتابوں کی بہت بڑی تعداد ایسی ہے جن پر اچرج هوتا ہے کہ وہ کیوں لکھی گئی هیں . اِن پستکوں میں هر چیز موجود هوتی ہے پھر بھی کسی چیز کی کمی کھلتی ہے . یہ ساهتیہ آپ پر پوری طرح سے حاوی نہیں هو پاتا، آپ کے دل میں نہیں اتر پاتا اور جس طرح کے لوگوں کا اس ساهتیہ میں ورنن ہے ویسے لوگ واستوک جیون میں نہیں ملتے."

یہ پہلی بار نہیں ہے کہ مجھے اس طرح کی آواز سنائی پڑی ہے . پر اس خط نے مجھ میں یہ اِچھا پیدا کی ہے کہ لیکھک کی کلا کے سمبندھ میں میں اپنے کچھ وچار پاٹھکوں کے سامنے رکھوں .

یہ کہنے کی ضرورت نہیں کہ جو کچھ اس سمبندھ میں میں کہونگا وہ خالص میرے وچار هونگے اور اِن کا آدهار میرا ویکتی گت انوبھو ہے . سوویت لیکھک اپنے سوویت سماج سے پریم کرتے هیں . همیں اس سماج کے بھوشیہ پر اٹوٹ وشواس ہے . یہی پریم اور وشواس همیں ایک سوتر میں باندھے هوئے ہے . هم لوگ الگ الگ وشیوں پر لکھتے هیں اور هر ایک کا لکھنے کا اپنا الگ طریقہ ہے، هم میں سے هر ایک کا انوبھو بھن ہے .

اس میں کوئی شک نہیں کہ میرے کچھ وچاروں سے سارے لیکھک سہمت هونگے . لیکن اُن میں سے کئی دوسرے بہت سے وچاروں سے اسہمت بھی هونگے .

हो ? कितने फुर्तीले हो तुम ! सुन-लिन-को तुम्हारा मुंह सांप के मुंह जैसा विषैला है, तुम्हारी जीभ तलवार जैसी तेज़ है और हृदय भेड़िये जैसा धोखे बाज़ ! मंचूको राज्य में तेरा व्योहार कितना भयानक था ! पिछली सभा में हम लोगों ने बेकार ही तुम पर दया दिखलाई थी. न तो तुमने जानवर सौंपे हैं और न दस्तावेज़. अध्यक्ष लियू के खिलाफ़ तुमने षड़यंत्र रचा था और किसान सभा पर क़ब्ज़ा करना चाहते थे. तुमने स्वयं सेवक सेना को अपने अधिकार में करना चाहा और अपनी ज़मीन को वापस लेना चाहते थे. तुम प्रतिगामी संघर्ष शुरू करना चाहते थे ताकि लोगों का शोषण फिर से कर सको. मेरी कितनी इच्छा है कि मैं तुम को मारता, यदि मेरी अवस्था बीस साल कम रही होती.

[वह सुन को मारता है]

एकत्रित भीड़—इसी प्रकार महाराजाओं की लुटिया डूबती है.

चेन—अब साफ़ साफ़ कहो कि तुम राजा बनकर हम लोगों से निबटना चाहते थे.

एकत्रित भीड़—तुम बतलाओ तो कि हम लोगों के विरुद्ध कैसा षड़यंत्र रच रहे थे ?

सुन—मेरी योजना थी कि 'कुमिन्तांग फ़ौज के जनरल और कमांडर-इन-चीफ़ चांग फिर वापस आ जायं ताकि मैं गांव का प्रधान बन जाता वैसे ही जैसे मंचूको राज में था.

लियू—कमांडर से चियांग-काई-शेक,......सुन-लिन-को वग़ैरा सभी बदमाश हैं. यह सब देश द्रोही हैं.

एकत्रित भीड़—ऐसे सब बदमाशों को हम लोगों को ख़तम करना है.

लियू—हम लोग सुन-लिन-को और मा-क्वी-वू को क्या सज़ा दें ?

चेन—हम लोगों को सुन के घर जाकर उसकी तालाशी लेनी चाहिये कि कितने हथियार हैं. फिर कल किसान सभा के सदस्यों को इकट्ठा कर एक सभा की जायेगी. मा-क्वी-वू को सब लोगों के आगे सुन-लिन-को की कथा कहनी पड़ेगी. हम लोगों को सुन-लिन-को और उसकी प्रतिगामी संघर्ष की योजना ख़तम करना है. हम सड़ी हुई जड़ें खोद कर निकाल देंगे.

एकत्रित भीड़—यही ठीक है.

चाओ—कामरेड फ़ैंग, आज हमारे घर में सोइये.

फ़ैंग—अच्छा, इस बार मैं गांव में कुछ दिन ज़्यादा रुकूंगा. सारे गांव को ठीक किया जायेगा. जब तक एक मज़बूत किसान सभा नहीं बन जायेगी मैं वापस नहीं जाऊंगा.

एकत्रित भीड़—यही ठीक है, यही ठीक है.

[परदा गिरता है]

समाप्त

کتنے پھرتیلے ہو تم ! سن - لن - کو تمہارا منہ سانپ کے منہ جیسا وشیلا ہے، تمہاری جیبھ تلوار جیسی تیز ہے اور ہردے بھیڑیے جیسا دھوکے باز ! منچوکو راجیہ میں تیرا بیوہار کتنا بھیانک تھا ! پچھلی سبھا میں ہم لوگوں نے بیکار ہی تم پر دیا دکھلائی تھی . نہ تو تم نے جانور سونپے ہیں اور نہ دستاویز . ادھیکش لیو کے خلاف تم نے شڑینتر رچا تھا اور کسان سبھا پر قبضہ کرنا چاہتے تھے . تم نے سویم سیوک سینا کو اپنے ادھیکار میں کرنا چاہا اور اپنی زمین کو واپس لینا چاہتے تھے . تم پرتیگامی سنگھرش شروع کرنا چاہتے تھے تاکہ لوگوں کا شوشن پھر سے کرسکو . میری کتنی اچھا ہے کہ میں تمکو مارتا، یدی میری اوستھا بیس سال کم رہی ہوتی .

[وہ سن کو مارتا ہے]

ایکترت بھیڑ—اسی پرکار مہاراجاؤں کی لوٹیا ڈوبتی ہے.

چین—اب صاف صاف کہو کہ تم راجہ بنکر ہم لوگوں سے نبٹنا چاہتے تھے .

ایکترت بھیڑ—تم بتلاؤ کہ ہم لوگوں کے وردھ کیسا شڑینتر رچ رہے تھے ؟

سن—میری یوجنا تھی کہ کومنتانگ فوج کے جنرل اور کمانڈر - ان - چیف چانگ پھر واپس آجائیں تاکہ میں گاؤں کا پردھان بن جاتا ویسے ہی جیسے منچوکو راج میں تھا.

لیو—کمانڈر سے چیانگ - کائی - شیک......سن - لن - کو وغیرہ سبھی بدمعاش ہیں . یہ سب دیش دروہی ہیں.

ایکترت بھیڑ—ایسے سب بدمعاشوں کو ہم لوگوں کو ختم کرنا ہے .

لیو—ہم لوگ سن - لن - کو اور ما - کوئی - وو کو کیا سزا دیں ؟

چین—ہم لوگوں کو سن کے گھر چلکر اسکی تلاشی لینی چاہیئے کہ کتنے ہتھیار ہیں . پھر کل کسان سبھا کے سدسیوں کو اکٹھا کر ایک سبھا کی جائیگی . ما - کوئی - وو کو سب لوگوں کے آگے سن - لن - کو کی کتھا کہنی پڑیگی . ہم لوگوں کو سن - لن - کو اور اسکی پرتیگامی سنگھرش کی یوجنا ختم کرنا ہے . ہم سڑی ہوئی جڑیں کھود کر نکال پھینکینگے .

ایکترت بھیڑ—یہی ٹھیک ہے..

چاؤ—کامریڈ فینگ، آج ہمارے گھر میں سوئیے .

فینگ—اچھا، اس بار میں گاؤں میں کچھ دن زیادہ رکونگا . سارے گاؤں کو ٹھیک کیا جائیگا . جب تک ایک مضبوط کسان سبھا نہیں بن جائیگی میں واپس نہیں جاؤنگا.

ایکترت بھیڑ—یہی ٹھیک ہے، یہی ٹھیک ہے .

[پردہ گرتا ہے]

سماپت

उसने दोनों चालों को मिलाया तो दस की जगह नौ ही रह गया. उसके भगवान की हार हुई.

फैंग—क्यों, इनकी बातें समझ में आ रही हैं न? सच सच बताओ और अपने अपराध क़बूल करो. यदि अपराध स्वीकार कर लोगे तो दंड कम दिया जायेगा. तुम इन्कार नहीं कर सकते. हम लोग सब बातें जान गये हैं.

एकत्रित भीड़—यदि तुम कम दंड के भागी होना चाहते हो तो अपना अपराध स्वीकार कर लो.

मा—(लियू से) लाओ मैं खोल दूं. मैंने तुम्हारे साथ ज़्यादती की है. तुम मुझे क्षमा करो.

लियू—ज़रा देर रुको. मुख्य बात यह नहीं है कि तुमने मेरे संग ज़्यादती की है. तुमने किसान सभा को धोखा दिया है. तुमने सारे गांव वालों को हानि पहुंचाई है. पहले यह बतलाओ कि सुन ने क्या क्या किया है?

मा—उसी ने लकड़ी में गोलियां छुपाई थीं. वह चाहता था कि आपसे छुटकारा पा जाय और आप के स्थान पर वांग-चान-क्वी आ जाय. वह स्वयं सेवक सेना पर अधिकार प्राप्त करना चाहता था और उसकी इच्छा यह थी कि सब ज़मीन फिर वापस ले ले. वह स्वयं गांव का प्रधान बनना चाहता था.

चेन—छठवें पत्ते का असली मतलब क्या है?

मा—मैं स्वयं नहीं जानता. यदि आप मुझे मार भी डालें तब भी नहीं बतला सकता. पर आपको खोल तो दूं.

[वह लियू को बन्धन मुक्त करता है]

लियू-मा—(मा से) तुमने मेरे पिता को भी इस मामले में फांस दिया है.

[वह मा को मारती है]

एकत्रित भीड़—ठीक है. ज़ोर से मारो.

मा—सुन-खिन-को ने मुझे बुद्धू बनाया था.

लियू—उसे और मत मारो. मुझे प्रश्न करने दो. तुमने सुन-खिन-को से क्या लाभ उठाया था?

मा—उसने मुझे घड़ी दी थी. उसने यह भी कहा था कि मैं उसकी सम्पत्ति में साझा भी कर सकता हूं. हम दोनों मिल कर किसान सभा चलायेंगे.

[फ़ान और एक किसान अन्दर आते हैं. उनके साथ सुन-खिन-को है जो बंधा हुआ है]

फ़ान—तुम कहीं भी जाओ मैं पकड़ कर लाऊंगा.

चेन—(सुन को देख कर कुछ झुकते हुये) मिस्टर सुन, मेरी सद्भावनायें आपके साथ हों. क्या अपने फ़र कोट से ऊब गये हो? इसे अपने सूती कोट से क्यों बदल डाला है? और तुम्हारे कोट में डोरियां क्यों लगी हुई हैं? क्या यह बहुत बड़ा है और तुम इसे टाइट पहनना चाहते

اس نے دونوں چالوں کو ملایا تو دس کی جگہ نو ہی رہ گیا. اس کے بھگوان کی ہار ہوئی.

فینگ—کیوں، انکی باتیں سمجھ میں آرہی ہیں نہ؟ سچ سچ بتاؤ اور اپنے اپرادھ قبول کرو. یدی اپرادھ سویکار کر لوگے تو ڈنڈ کم دیا جائیگا. تم انکار نہیں کرسکتے. ہم لوگ سب باتیں جان گئے ہیں.

ایکترت بھیڑ—یدی تم کم ڈنڈ کے بھاگی ہونا چاہتے ہو تو اپنا اپرادھ سویکار کرلو.

ما—(لیو سے) لاؤ میں کھول دوں. میں نے تمہارے ساتھ زیادتی کی ہے. تم مجھے چھما کرو.

لیو—ذرا دیر رکو. مکھیہ بات یہ نہیں ہے کہ تم نے میرے سنگ زیادتی کی ہے. تم نے کسان سبھا کو دھوکا دیا ہے. تم نے سارے گاؤں والوں کو ہانی پہونچائی ہے. پہلے یہ بتلاؤ کہ سن نے کیا کیا کیا ہے؟

ما—اس نے لکڑی میں گولیاں چھپائی تھیں. وہ چاہتا تھا کہ آپ سے چھٹکارا پا جائے اور آپ کے استھان پر وانگ-چان-کوئی آجائے. وہ سویم سیوک سینا پر ادھیکار پراپت کرنا چاہتا تھا اور اسکی اچھا یہ تھی کہ سب زمین پھر واپس لے لے. وہ سویم گاؤں کا پردھان بننا چاہتا تھا.

چین—چھٹویں پتے کا اصلی مطلب کیا ہے؟

ما—میں سویم نہیں جانتا. یدی آپ مجھے مار بھی ڈالیں تب بھی نہیں بتلا سکتا. پر آپ کو کھول تو دوں.

[وہ لیو کو بندھن مکت کرتا ہے]

لیو-ما—(ما سے) تم نے میرے پتا کو بھی اس معاملہ میں پھانس دیا ہے.

[وہ ما کو مارتی ہے]

ایکترت بھیڑ—ٹھیک ہے. زور سے مارو.

ما—سن-ان-کو نے مجھے بدھو بنایا تھا.

لیو—اسے اور مت مارو. مجھے پرشن کرنے دو. تم نے سن-ان-کو سے کیا لابھ اٹھایا تھا؟

ما—اس نے مجھے گھڑی دی تھی. اس نے یہ بھی کہا تھا کہ اسکی سمپتی میں ساجھا بھی کرسکتا ہوں. ہم دونوں ملکر کسان سبھا چلائیں گے.

[فان اور ایک کسان اندر آتے ہیں. ان کے ساتھ سن-ان-کو ہے جو بندھا ہوا ہے]

فان—تم کہیں بھی جاؤ میں پکڑ کر لاؤنگا.

چین—(سن کو دیکھکر کچھ جھکتے ہوئے) مسٹر سن، میری سدبھاونائیں آپ کے ساتھ ہوں. کیا اپنے فرکوٹ سے اوب گئے ہو؟ اسے اپنے سوتی کوٹ سے کیوں بدل ڈالا ہے اور تمہارے کوٹ میں ڈوریاں کیوں لگی ہوئی ہیں؟ کیا یہ بہت بڑا ہے اور تم اسے ٹائٹ پہننا چاہتے ہو؟

वांग—मैं तो गांव में रहने के लिये थोड़े ही दिन हुए आया हूं. मैं किसी बात का पता नहीं लगा सका हूं. मा से पूछो.

मा—सुन ने जो कुछ कहा था वह मैं सुन नहीं पाया था.

वांग—तुमने नहीं सुना था ? तुम तो सुन के बगल में खड़े मुझे धमकियां देने के लिये उकसा रहे थे.

एकत्रित भीड़—वांग तुम कहां थे. तुम्हीं बताओ.

वांग—हां, अध्यक्ष मा ने कहा था.

मा—तुम भी मेरे खिलाफ़ शड़यंत्र रच रहे हो.

वांग—मैंने तुमसे कहा था कि मैं अध्यक्ष पद नहीं स्वीकार करता. तुमने कहा था कि मैं तुम पर विश्वास कर सकता हूं. लेकिन अब तुम सारा दोश मेरे मत्थे मढ़ रहे हो. क्या तुम मुझे बुद्धू नहीं बनाते रहे हो ?

एकत्रित भीड़—तो अब तुम इनकी चाल समझ गये हो. बतलाओ तो इन्होंने तुमसे क्या काम लिया था ?

वांग—सुन-लिन-को चाहता था कि किसान सभा का दफ्तर इनके घर में रक्खा जाये. वह चौकीदारों को कुछ अच्छी राइफलें देने वाले थे. चौकीदार इसके आंगन में रक्खे जाते. मा ने सुझाव दिया था कि यह सभा के लिये एक अच्छा सा साइनबोर्ड भी दे देंगे.

चेन—मा-क्वी-यू हम लोगों को धोखा देना चाहता था.

एक किसान—उसका मतलब था कि स्वयं सेवक सेना की टुकड़ी को अपने घर में रक्खे और उसका इस्तैमाल हम लोगों को दबाने के लिये करे.

चाओ—सुन हम लोगों को लुटेरों के हाथ उपहार के समान सौंप देने वाला था. वह प्रतिगामी संघर्ष शुरू करने वाला था. मा-क्वी-यू ने लियू-चेन-तुंग के खिलाफ़ शड़यंत्र करने में उसकी सहायता की थी.

मा—तुम मेरे बारे में ग़लत कह रहे हो. मैं ऐसा करता ही क्यों ?

[एक किसान आता है]

एक किसान—सुन-लिन-को गांव के बाहर भाग गया था पर हम लोग उसे पकड़ लाये हैं. जब हम लोगों ने उससे पूछा कि गोलियां कहां से आई तो उसने सारा दोश मा-क्वी-यू के मत्थे मढ़ दिया.

मा—तो वह मुझे बलि का बकरा बना रहा है !

एक किसान—तो मा तुम उसे छोड़ दोगे ?

चेन—मा, इस बार तो तुम्हारे राम टें टें हो गये हैं. सच सच कहो न.

चाओ—सुन-लिन-को ने ग़लत क़दम उठाया था. उसने तीसरी चाल की जगह चौथी चाल चल दी थी और जब

وانگ—میں تو گاؤں میں رہنے کے لئے تھوڑے ہی دن ہوئے آیا ہوں . میں کسی بات کا پتہ نہیں لگا سکا ہوں . ما سے پوچھو .

ما—سن نے جو کچھ کہا تھا وہ میں سن نہیں پایا تھا .

وانگ—تم نے نہیں سنا تھا ؟ تم تو سن کے بغل میں کھڑے مجھے دھمکیاں دینے کے لئے اکسا رہے تھے.

ایکترت بھیڑ—وانگ تم وہاں تھے . تمہیں بتاؤ .

وانگ—ہاں' ادھیکش ما نے کہا تھا .

ما—تم بھی میرے خلاف شڑینتر رچ رہے ہو .

وانگ—میں نے تم سے کہا تھا کہ میں ادھیکش پد نہیں سویکار کر سکتا. تم نے کہا تھا کہ میں تم پر وشواس کر سکتا ہوں . لیکن اب تم سارا دوش میرے متھے مڑھ رہے ہو . کیا تم مجھے بدھو نہیں بناتے رہے ہو ؟

ایکترت بھیڑ—تو اب تم ان کی چال سمجھ گئے ہو . بتاؤ تو انہوں نے تم سے کیا کام لیا تھا ؟

وانگ—سن - لن - کو چاہتا تھا کہ کسان سبھا کا دفتر اِن کے گھر میں رکھا جائے . وہ چوکیداروں کو کچھ اچھی رائفلیں دینے والے تھے . چوکیدار اِس کے آنگن میں رکھے جاتے . ما نے سجھاؤ دیا تھا کہ یہ سبھا کے لئے ایک اچھا سا سائن بورڈ بھی دے دینگے .

چین—ما - کوئی - وو ہم لوگوں کو دھوکا دینا چاہتا تھا .

ایک کسان—اُس کا مطلب تھا کہ سویم سیوک سینا کی ٹکڑی کو اپنے گھر میں رکھے اور اُس کا استعمال ہم لوگوں کو دبانے کے لئے کرے .

چاؤ—سن ہم لوگوں کو لٹیروں کے ہاتھ اُپہار کے سمان سونپ دینے والا تھا . وہ پرتگامی سنگھرش شروع کرنے والا تھا. ما - کوئی - وو نے لیو - چین - تنگ کے خلاف شڑینتر کرنے میں اسکی سہایتا کی تھی .

ما—تم میرے بارے میں غلط کہہ رہے ہو . میں ایسا کرتا ہی کیوں ؟

[ایک کسان آتا ہے]

ایک کسان—سن - لن - کو گاؤں سے باہر بھاگ گیا تھا پر ہم لوگ اسے پکڑ لائے ہیں . جب ہم لوگوں نے اس سے پوچھا کہ گولیاں کہاں سے آئیں تو اس نے سارا دوش ما - کوئی - وو کے متھے مڑھ دیا .

ما—تو وہ مجھے بلی کا بکرا بنا رہا ہے !

ایک کسان—تو ما تم اسے چھوڑ دوگے ؟

چین—ما' اس بار تو تمہارے رام ٹیں ٹیں ہوگئے ہیں . سچ سچ کہو نہ .

چاؤ—سن - لن - کو نے غلط قدم اُٹھایا تھا . اس نے تیسری چال کی جگہ چوتھی چال چل دی تھی اور جب

चेन—अरे ! सुन-लिन-को कहां है ?

फँग—उसके बारे में मत चिन्ता करो. फान और कई दूसरे साथी उसका पता लगाने गये हुये हैं. (चैंग की ओर मुड़ कर) बताइये हमको.

चांग—मैं अपने रिश्तेदारों के यहां गया था जब राजनैतिक कार्यकर्ता पिछली बार आये थे. अपनी शिकायतें रखने का मौक़ा ही नहीं मिला था.

फँग—आप अब कह सकते हैं.

चांग—कुछ साल पहले मुझे खेत मज़दूर की तरह काम करने के लिये बुलाया गया था. काम से लौटने के बाद मैं बीमार पड़ गया था. मेरी बीवी सुन-लिन-को के यहां गल्ला उधार लेने गई थी. उसे गल्ला देने की जगह सुन-लिन-को ने उससे कहा कि वह मुझे "आठ चाकू" दे. सुन ने कहा—"तेरा पति मर जायेगा. तुम बीमार आदमी के साथ रह भी कैसे सकती हो ? अदालत में जाओ और उसे तलाक़ दे दो. खर्च मैं बरदाश्त कर लूंगा.

फँग—इस आठ चाकू का क्या मतलब होता है ?

चेन—तिलाक़.

चांग—मेरी पत्नी ने कहा—"हम लोग बचपन से ही पति पत्नी के समान रहे हैं. जब वह बीमार हैं तो हम उन्हें कैसे तिलाक़ दे सकते हैं ?" सुन चाहता था कि मेरी पत्नी उसकी रखैल हो जाये. जब मेरी पत्नी ने इन्कार कर दिया तो सुन ने दरवाज़ा बन्द कर लिया और उसे जाने ही नहीं दिया. उसने मेरी पत्नी के साथ बलात्कार किया. मेरी पत्नी इतनी दुखी हो गई कि सुन के फाटक के पास वाले कुएं में डूब कर आत्महत्या करने का प्रयत्न किया, भाग्यवश उसे किसी ने देख लिया और वह बच गई. यद्यपि वह मरी नहीं पर उसका दाहिना पैर टूट गया और वह लंगड़ी हो गई. सच को कोई छुपा नहीं सकता. जब सुन-लिन-को ने लोगों को इस बात की चर्चा करते हुए सुना तो उसने अफ़वाह उड़ानी शुरू कर दी कि मैं अपनी पत्नी से दुर्व्योहार करता था, इसीलिये उसने आत्महत्या करने का प्रयत्न किया था. उसने मुझे दो महीने तक जेल में भी रक्खा. मुझे 6 साल तक अपनी ज़बान बन्द रखनी पड़ी. लेकिन अब मैंने सब कुछ कह दिया है और मुझे सज़ा की भी परवाह नहीं है.

एकत्रित भीड़—यह सज़ा क्या है ?

चांग—सुन-लिन-को ने मुझसे कहा था कि यदि मैं उसके खिलाफ़ शिकायत करूंगा तो जब दूसरी बार लुटेरे आयेंगे तो वह मुझे उनके हवाले कर देगा. वह मुझे ऐसी सख्त सज़ा देंगे कि मैं अन्दाज़ा नहीं कर सकता. चैंग और मा दोनों ही ने यह बातें सुनी थीं.

چین—ارے ! سن - لن - کو کہاں ہے ؟

فینگ—اس کے بارے میں مت چنتا کرو . فان اور کئی دوسرے ساتھی اسکا پتہ لگانے گئے ہوئے ہیں . (چانگ کی اور مڑ کر) بتائیے ہم کو .

چانگ—میں اپنے رشتہ داروں کے یہاں گیا تھا جب راجنیتک کاریہ کرتا پچھلی بار آئے تھے . اپنی شکایتیں رکھنے کا موقع ہی نہیں ملا تھا .

فینگ—آپ اب کہہ سکتے ہیں .

چانگ—کچھ سال پہلے مجھے کھیت مزدور کی طرح کام کرنے کے لئے بلایا گیا تھا . کام سے لوٹنے کے بعد میں بیمار پڑ گیا تھا . میری بی بی سن - لن - کو کے یہاں غلہ ادھار لینے گئی تھی . اسے غلہ دینے کی جگہ سن - لن - کو نے اس سے کہا وہ مجھے " آٹھ چاقو " دے . سن نے کہا—" تیرا پتی مر جائے گا . تم بیمار آدمی کے ساتھ رہ بھی کیسے سکتی ہو ؟ عدالت میں جاؤ اور اسے طلاق دے دو . خرچ میں برداشت کر لونگا .

فینگ—اس آٹھ چاقو کا کیا مطلب ہوتا ہے ؟

چین—طلاق .

چانگ—میری پتنی نے کہا—" ہم لوگ بچپن سے ہی پتی پتنی کے سمان رہے ہیں . جب وہ بیمار ہیں تو ہم انہیں کیسے طلاق دے سکتے ہیں ؟" سن چاہتا تھا کہ میری پتنی اس کی رکھیل ہو جائے . جب میری پتنی نے انکار کر دیا تو سن نے دروازہ بند کر لیا اور اسے جانے ہی نہیں دیا . اس نے میری پتنی کے ساتھ بلاتکار کیا . میری پتنی اتنی دکھی ہو گئی کہ سن کے پھاٹک کے پاس والے کنوئیں میں ڈوب کر آتم ہتھیا کرنے کا پریتن کیا . بھاگیہ وش اسے کسی نے دیکھ لیا اور وہ بچ گئی . یدیپی وہ مری نہیں پر اسکا داہنا پیر ٹوٹ گیا اور وہ لنگڑی ہو گئی . سچ کو کوئی چھپا نہیں سکتا . جب سن - لن - کو نے لوگوں کو اس بات کی چرچا کرتے ہوئے سنا تو اس نے افواہ اڑانی شروع کر دی کہ میں اپنی پتنی سے دروویوہار کرتا تھا ' اسی لئے اس نے آتم ہتھیا کرنے کا پریتن کیا تھا . اس نے مجھے دو مہینے تک جیل میں بھی رکھا . مجھے چھ سال تک اپنی زبان بند رکھنی پڑی . لیکن اب میں نے سب کچھ کہہ دیا ہے اور مجھے سزا کی بھی پرواہ نہیں ہے .

ایکترت بھیڑ—یہ سزا کیا ہے ؟

چانگ—سن - لن - کو نے مجھ سے کہا تھا کہ یدی میں اس کے خلاف شکایت کرونگا تو جب دوسری بار لٹیرے آئیں گے تو وہ مجھے ان کے حوالے کر دے گا . وہ مجھے ایسی سخت سزا دیں گے کہ میں اندازہ نہیں کر سکتا . چینگ اور ما دونوں ہی نے یہ باتیں سنی تھیں .

वांग की आवाज़—मैं निश्चित नहीं कर सकता. तुमको मेरे साथ अध्यक्ष मा के पास चलना होगा.

चैंग की आवाज़—यदि तुम नहीं निश्चित कर सकते तो चलो मा के पास ही चलो. मैं उससे डरता तो हूं नहीं.

मा—(परेशान होकर) मैं जा कर देखता हूं कि क्या हो रहा है.

फ़ैंग—नहीं, यहीं खड़े रहो.

वैंग की आवाज़—मुझे गालियां क्यों देते हो ?

चैंग की आवाज़—तुम बदमाश जो हो.

मा—कामरेड फ़ैंग, मुझे वहां जा कर उन्हें शान्त कर आने दो.

वांग की आवाज़—यह सरकारी काम है. मैं तुम्हें इसमें नहीं आने दूंगा.

चैंग की आवाज़—तो देख लेंगे कि तुम मेरा क्या कर लेते हो. मैं सज़ा* के लिये तैयार हूं. जा कर कह दो.

लियू—जल्दी जाओ और उन्हें रोको. यह सज़ा देने की बात कैसी है ?

[भीड़ में कुछ बेचैनी फैलती है. इस अवसर का लाभ उठा कर सुन-लिन-को भागता है]

फ़ैंग—(दो किसानों से) जाओ और उसे ढूंढ निकालो ।

[फ़ान और दो किसान सुन को ढूंढने जाते हैं. वांग और चैंग अन्दर आते हैं]

वांग—मा को ढूंढने जाने की ज़रूरत नहीं है. वह यहीं हैं. हैलो, कामरेड फ़ैंग !

फ़ैंग—यह झगड़ा किस बात का हो रहा था?

मा—मुझे मालूम है. कोई विशेष बात तो नहीं थी. (वांग की ओर मुड़ कर) भाई वांग आप जैसा कहेंगे वैसा ही होगा. परेशान होने की ज़रूरत नहीं है. आप लोग घर जाइये.

फ़ैंग—यह क्या बात है ?

मा—इसे बताने में काफ़ी समय लगेगा. बेहतर है इसके बारे में हम लोग कल बातें कर लेंगे. आप तो इस समय व्यस्त हैं.

एकत्रित भीड़—(वांग से) इनकी बातें मत सुनो. जो मामला हो साफ़ साफ़ कहो. अपनी शिकायतें सुनाने के लिये बहुत दिन बाद मौक़ा मिला है, आज या फिर कभी नहीं.

---

* ज़मींदार द्वारा किसानों को सज़ा देने का एक तरीक़ा, जिसमें किसान को एक लम्बे बांस में बांध देते हैं ताकि वह हिल न सके, पर उससे कहा जाता है कि वह करवट ले पर न ले, पाने पर मारा जाता है.

وانگ کی آواز—میں نشچت نہیں کر سکتا . تم کو میرے ساتھ ادھیکش ما کے پاس چلنا ہوگا .

چینگ کی آواز—یدی تم نہیں نشچت کر سکتے تو چلو ما کے پاس ہی چلو. میں اس سے ڈرتا تو ہوں نہیں.

ما—(پریشان ہو کر) میں جا کر دیکھتا ہوں کہ کیا ہو رہا ہے .

فینگ—نہیں، یہیں کھڑے رہو .

وینگ کی آواز—مجھے گالیاں کیوں دیتے ہو ؟

چینگ کی آواز—تم بدمعاش جو ہو .

ما—کامریڈ فینگ، مجھے وہاں جا کر انہیں شانت کر آنے دو .

وانگ کی آواز—یہ سرکاری کام ہے . میں تمہیں اسمیں نہیں آنے دونگا .

چینگ کی آواز—تو دیکھ لینگے کہ تم میرا کیا کر لیتے ہو . میں سزاء کے لئے تیار ہوں . جا کر کہہ دو .

لیو—جلدی جاؤ اور انہیں روکو. یہ سزا دینے کی بات کیسی ہے ؟

[بھیڑ میں کچھ بے چینی پھیلتی ہے . اس اوسر کا لابھ اٹھا کر سن - لن - کو بھاگتا ہے]

فینگ—(دو کسانوں سے) جاؤ اور اسے ڈھونڈھ نکالو .

[فان اور دو کسان سن کو ڈھونڈھنے جاتے ہیں . وانگ اور چینگ اندر آتے ہیں]

وانگ—ما کو ڈھونڈھنے جانے کی ضرورت نہیں ہے . وہ یہیں ہیں . ہیلو، کامریڈ فینگ !

فینگ—یہ جھگڑا کس بات کا ہو رہا تھا ؟

ما—مجھے معلوم ہے . کوئی وشیش بات نہیں تھی . (وانگ کی اور مڑ کر) بھائی وانگ آپ جیسا کہیں گے ویسا ہی ہوگا . پریشان ہونے کی ضرورت نہیں ہے . آپ لوگ گھر جائیے .

فینگ—یہ کیا بات ہے ؟

ما—اسے بتانے میں کافی سمے لگے گا . بہتر ہے اس کے بارے میں کل باتیں کر لینگے . آپ تو اس سمے ویست ہیں .

ایکترت بھیڑ—ان کی باتیں مت سنو . جو معاملہ ہو صاف صاف کہو . اپنی شکایتیں سنانے کے لئے بہت دن بعد موقع ملا ہے، آج یا پھر کبھی نہیں .

• زمیندار دوارا کسانوں کو سزا دینے کا ایک طریقہ، جس میں کسان کو ایک لمبے بانس میں باندھ دیتے ہیں تاکہ وہ ہل نہ سکے، پر اس سے کہا جاتا ہے کہ وہ کروٹیں لے، پر نہ لینے پر مارا جاتا ہے .

लियू-मा—कामरेड फ़ैंग हम लोगों के साथ वास्तव में ज्यादती हुई है.

लियू—कामरेड फ़ैंग, यद्यपि बलि का बकरा मुझी को बनाया गया है पर हमला अकेले मेरे ऊपर नहीं था.

फ़ैंग—इस बार हम लोग मामले की तह तक पहुंच जायेंगे.

चाओ—(लियू-मा से) मैं एक सवाल पूछूं ? जब तुम अनाज फटकने के बाद यहां आई थीं तो यहां पर किसको घूमते देखा था ?

लियू मा—सुन-लिन-को को.

सुन—जब तक मैं यहां था इनकी नजरों से एक क्षन के लिये भी ओझल नहीं हुआ था. यदि मुझ पर विश्वास न हो तो इन्हीं से पूछिये ? हम लोगों को ठीक से बातें करनी चाहिये. मा-की-यू , यह सब आप की ग़ल्ती है. जैसे ही तुम को यह आवेदनपत्र मिला था, उसी समय जांच पड़ताल क्यों नहीं की थी ? तुम्हारे देर करने के कारन ही मुझे भी इस मामले में साना जा रहा है.

मा—मैं इसे महत्वपूर्न समझता ही नहीं था.

सुन—सचमुच में यह महत्वपूर्न नहीं था. लियू ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो इस तरह का काम कर के अपनी रोजी कमाएं. कामरेड फ़ैंग के आगे हम सभी गांव वाले क़सम खाकर कह सकते हैं कि लियू ऐसा काम नहीं कर सकते. लियू ग़रीब आदमी हैं. इस बार उन्हें क्षमा कर कामरेड फ़ैंग गांव भर का भला कीजिये.

फ़ैंग—क्या जो कुछ आपने कहा उस से सब लोग सहमत होंगे ?

सुन—इसमें पूछना की क्या है ? कोई इन्कार नहीं करेगा.

लियू—आप बड़े होशियार हैं, पर मैं सहमत नहीं हूं. आप चाहें तो मुझे क्षमा कर दें पर मैं तो क्षमा नहीं करूंगा.

एकत्रित भीड़—इस पूछ ताछ और क़सम खाने की कोई आवश्यकता नहीं है. हम लोग तो केवल यही जानना चाहते हैं कि यह गोलियां आई कहां से और इन्हें लाया कौन ?

फ़ैंग—आप सभी साथी ठीक ही बात पूछ रहे हैं. आप दूध का दूध और पानी का पानी करना चाहते हैं. आप लोग ऐसी आसानी से बुद्धू नहीं बनाये जा सकते हैं.

[एकायक झगड़ा करने की आवाज स्टेज से थोड़ी दूर पर सुनाई देती है. सबों का ध्यान इसी ओर चला आता है]

चैंग की आवाज—मैं अपने लिये लकड़ी वाली तख़्ती नहीं तैयार कराऊंगा.

لیو‌ما—کامریڈ فینگ ہم لوگوں کے ساتھ واستو میں زیادتی ہوئی ہے .

لیو—کامریڈ فینگ، بدی بلی کا بکرا مجھی کو بنایا گیا ہے پر حملہ اکیلے میرے اوپر نہیں تھا .

فینگ—اس بار ہم لوگ معاملہ کی تہ تک پہونچ جائیں گے .

چاؤ—(لیو-ما سے) میں ایک سوال پوچھوں ؟ جب تم اناج پھٹکنے کے بعد یہاں آئیں تھیں تو یہاں پر کس کو گھومتے دیکھا تھا ؟

لیو-ما—سن-لن-کو کو .

سن—جب تک میں یہاں تھا اِنکی نظروں سے ایک چھن کے لیئے بھی اوجھل نہیں ہوا تھا . یدی مجھ پر وشواس نہ ہو تو انہیں سے پوچھیئے ؟ ہم لوگوں کو ٹھیک سے باتیں کرنی چاہیئے . ما-کی-یو، یہ سب آپ کی غلطی ہے . جیسے ہی تم کو یہ آویدن پتر ملا تھا اسی سمے جانچ پڑتال کیوں نہیں کی تھی ؟ تمہارے دیر کرنے کے کارن ہی مجھے بھی اس معاملے میں سانا جا رہا ہے .

ما—میں اسے مہتوپورن سمجھتا ہی نہیں تھا .

سن—سچ مچ میں یہ مہتوپورن نہیں تھا . لیو ایسے ویکتی نہیں ہیں جو اس طرح کا کام کرکے اپنی روزی کمائیں . کامریڈ فینگ کے آگے ہم سبھی گاؤں والے قسم کھاکر کہہ سکتے ہیں کہ لیو ایسا کام نہیں کرسکتے . لیو غریب آدمی ہیں . اس بار انہیں چھما کر کامریڈ فینگ گاؤں بھر کا بھلا کیجیئے .

فینگ—کیا جو کچھ آپ نے کہا اس سے سب لوگ سہمت ہونگے ؟

سن—اس میں پوچھنے کی کیا بات ہے ؟ کوئی انکار نہیں کریگا .

لیو—آپ بڑے ہوشیار ہیں . پر میں سہمت نہیں ہوں . آپ چاہیں تو مجھے چھما کردیں پر میں تو چھما نہیں کرونگا .

ایکترت بھیڑ—اس پوچھ تاچھ اور قسم کھانے کی کوئی آوشیکتا نہیں ہے . ہم لوگ تو کیول یہی جاننا چاہتے ہیں کہ یہ گولیاں آئیں کہاں سے اور انہیں لایا کون ؟

فینگ—آپ سبھی ساتھی ٹھیک ہی بات پوچھ رہے ہیں . آپ دودھ کا دودھ اور پانی کا پانی کرنا چاہتے ہیں . آپ لوگ ایسی آسانی سے بدھو نہیں بنائے جا سکتے ہیں .

[یکایک جھگڑا کرنے کی آواز اسٹیج سے تھوڑی دور پر سنائی دیتی ہے . سبوں کا دھیان اسی اور چلا جاتا ہے]

چینگ کی آواز—میں اپنے لیئے لکڑی والی تختی نہیں تیار کرواؤنگا .

चेन—वह आवेदन पत्र मुझे दिखलाओ तो.

मा—मैं इस सम्बन्ध में झूट क्यों बोलने लगा ?

[वह आवेदन पत्र को चेन के हाथों में देता है]

चेन—यह तो गुमनाम चिट्ठी है. इससे तो गोलियों के बारे में कुछ भी नहीं पता लगता. कोई न कोई तो लियू-चेन-तुंग का दुश्मन अवश्य रहा होगा जिसके कारन उसने यह षडयंत्र रचा है. लकड़ी का ढेर तो घर के बाहर कूड़े करकट जैसा पड़ा हुआ था. उसमें तो कोई भी, आने जाने वाला तक, इसे छुपा सकता था.

मा—आप ऐसी बातें ही क्यों करते हैं ? लकड़ी का ढेर ठीक उसकी खिड़की के नीचे था. यदि किसी ने एक भी लकड़ी हठाई होती तो लियू जान जाता.

चाओ—लियू किसान सभा के कामों में व्यस्त था. उसकी पत्नी भी बहुधा घर पर नहीं रहती थी.

चेन—किसी बदमाश ने ऐसा किया होगा.

एक किसान—सम्भव है ऐसी ही बात रही हो.

फान—मा-क्वी-चू को सब बातें विस्तार से मालूम हैं.

मा—क्या ! हमको अटकल पच्चू करने की क्या आवश्यकता ? हमें अपने से तो सच कहना ही चाहिये. यह रही गोलियां. यदि मैंने अपनी आत्मा से कोई बात छुपा कर की या कही हो तो कल सुबह तक इन्हीं गोलियों की सहायता से मेरे प्रान ले लीजिये.

एकत्रित भीड़—इस प्रकार क़समें खाने से क्या लाभ ? क़सम खाने से कोई बात साबित तो नहीं हो जाती.

मा—मैं चांद की क़सम खाता हूं, यदि मैं झूठ कहता होऊं तो मेरा नाम मा नहीं.

फ़ैंग—बेवकूफ़ी की बातें मत करो. हम लोगों को यह मामला तय करना है.

[लियू-चेन-तुंग, लियू-मा और दो किसान भी अन्दर आते हैं. भीड़ लियू का स्वागत करती है]

लियू—कामरेड फ़ैंग, आप कैसे हैं ?

फ़ैंग—(देखता है कि लियू के हाथ बंधे हुये हैं) क्या मामला है ? तुम्हारे हाथ अभी तक क्यों बंधे हैं ? खोलो इन्हें.

एक किसान—ये हमें खोलने नहीं देते.

[इसी बीच सुन-लिन-को भीड़ में से भागने का प्रयत्न करता है]

चेन—सुन-लिन-को, भागो नहीं.

सुन—नहीं मैं भाग नहीं रहा हूं. मैं भाग भी कैसे सकता हूं ?......मैं अभ्यस्त लियू के बन्धन खोलूंगा. हथकड़ी पड़े हाथों में वह अच्छे नहीं दिखते.

लियू—आप परेशान न हों.

چین—وہ آویدن پتر مجھے دکھاؤ تو.

ما—میں اس سمبندھ میں جھوٹ کیوں بولنے لگا؟

[وہ آویدن پتر کو چین کے ہاتھوں میں دیتا ہے]

چین—یہ تو گمنام چٹھی ہے. اس سے تو گولیوں کے بارے میں کچھ بھی نہیں پتہ لگتا. کوئی نہ کوئی تو لیو-چین-تنگ کا دشمن اوشیہ رہا ہوگا جس کے کارن اس نے یہ شڑینتر رچا ہے. لکڑی کا ڈھیر تو گھر کے باہر کوڑے کرکٹ جیسا پڑا ہوا تھا. اس میں تو کوئی بھی، آنے جانے والا تک، اسے چھپا سکتا تھا.

ما—آپ ایسی باتیں ہی کیوں کرتے ہیں؟ لکڑی کا ڈھیر ٹھیک اسکی کھڑکی کے نیچے تھا. یدی کسی نے ایک بھی لکڑی ہٹائی ہوتی تو لیو جان جاتا.

چاؤ—لیو کسان سبھا کے کاموں میں ویست تھا. اسکی پتنی بھی بہودھا گھر پر نہیں رہتی تھی.

چین—کسی بدمعاش نے ایسا کیا ہوگا.

ایک کسان—سمبھو ہے ایسی ہی بات رہی ہو.

فان—ما-کوئی-چو کو سب باتیں وستار سے معلوم ہیں.

ما—کیا! ہم کو اٹکل پچو کرنے کی کیا آوشیکتا؟ ہمیں اپنے سے تو سچ کہنا چاہیئے. یہ رہی گولیاں. یدی میں نے اپنی آتما سے کوئی بات چھپا کر کی یا کہی ہو تو کل صبح تک انہیں گولیوں کی سہایتا سے میرے پران لے لیجیئے.

ایکترت بھیڑ—اس پرکار قسمیں کھانے سے کیا لابھ! قسم کھانے سے کوئی بات ثابت تو نہیں ہو جاتی.

ما—میں چاند کی قسم کھاتا ہوں. یدی میں جھوٹھ کہتا ہوؤں تو میرا نام ما نہیں.

فینگ—بیوقوفی کی باتیں مت کرو. ہم لوگوں کو یہ معاملہ طے کرنا ہے.

[چین-تنگ، لیو-ما اور دو کسان بھی اندر آتے ہیں. بھیڑ لیو کا سواگت کرتی ہے]

لیو—کامریڈ فینگ، آپ کیسے ہیں؟

فینگ—(دیکھتا ہے کہ لیو کے ہاتھ بندھے ہوئے ہیں) کیا معاملہ ہے؟ تمہارے ہاتھ ابھی تک کیوں بندھے ہیں؟ کھولو انہیں.

ایک کسان—یہ ہمیں کھولنے نہیں دیتے.

[اسی بیچ سن-لن-کو بھیڑ میں سے بھاگنے کا پریتن کرتا ہے]

چین—سن-لن-کو، بھاگو نہیں.

سن—نہیں میں بھاگ نہیں رہا ہوں. میں بھاگ بھی کیسے سکتا ہوں؟......میں ادھیکش لیو کے بندھن کھولونگا. ہتھکڑی پڑے ہاتھوں میں وہ اچھے نہیں دکھتے.

لیو—آپ پریشان نہ ہوں.

फैंग—मा-क्वी-शू, बेकार की बातें मत करो. इसको फौरन उतार कर चौकीदारों को दे दो.

मा—ठीक है, ठीक है.

[वह ओवरकोट उतारता है]

फैंग—आप के पास घड़ी भी है ?

मा—क्या मेरे हाथ में बंधी घड़ी के बारे में पूछ रहे हैं ?

फैंग—यह कहां से पाई ?

मा—किसी ने मुझे उपहार में दी थी, हमने इसका दाम नहीं चुकाया है. यदि आप को पसन्द नहीं है तो मैं इसे लौटा दूंगा. यह अभी भी अच्छी हालत में है. देखिये तो, टिक टिक कर रही है.

फैंग—आप घड़ी और ओवरकोट के बारे में अत्याधिक सोचते हैं. क्या सभा के उपाध्यक्ष की जिम्मेदारियों भूल गये हैं ?

मा—कामरेड फैंग, यदि आप कहें कि मैंने गलती की है तो मैं पूर्ण रूप से सहमत हूं. गल्ती जान जाने के बाद अब मैं बदल जाऊंगा. पर यदि आप यह कहें कि मैं अपने काम नहीं जानता और उन्हें पूरा नहीं करता तो यह आपकी ज्यादती होगी. आप काफी दिनों से यहां आये नहीं हैं. कमेटी के दो सदस्य तो कोई काम करते भी नहीं हैं और गांव की स्वयं सेवक सेना के कैप्टेन जिम्मेदारियां लेने से घबराते हैं. फिर गांव में एक गम्भीर परिस्थिति भी पैदा हो गई है. अभी तक इसे बताने का कोई मौका ही नहीं मिला मुझे. मैं बड़ी मुश्किल से इस पर स्वयं विश्वास कर सका. लेकिन सच तो छिप नहीं सकता. कौन विश्वास करेगा कि अध्यक्ष शिवु और उनके ससुर लुटेरों से सम्बन्ध रखते हैं. (वह फैंग को गोलियां दिखाता है) यह काफी बड़ा सबूत है. सबों ने इसे देखा था.

फैंग—बताइये, यदि आप लोगों ने इसे देखा था ?

मा—हां, कामरेड फैंग, आप पूरे मामले की जांच पड़ताल कर लें. (भीड़ की ओर मुड़ कर) कामरेड फैंग से सब बातें बतला दो. न कुछ ज्यादा कहो, न कम. सच्ची बात कहो तो शैतान भी शर्मा जायेगा.

एक किसान—मैं एक प्रश्न करूंगा. यह आपने जाना कैसे कि गोलियां लकड़ी के नीचे छुपी हैं ?

मा—मैं तो पहले से जानता नहीं था.

एक किसान—आपने मुझे घर में अन्दर जा कर ढूंढने क्यों नहीं दिया, बाहर खोजने के लिये क्यों कहा ? मेरे ख्याल में आप सब जानते थे.

मा—हम लोग यहां पर चांदनी रात में हैं. हम लोगों को कोई भी बात झूट नहीं कहनी चाहिये. मैं इस बात को तब तक नहीं जानता था जब तक मुझे शिकायत नहीं मिली थी.

فینگ—ما-کوئی-شو، بیکار کی باتیں مت کرو. اس کو فوراً اتارکر چوکیداروں کو دے دو.

ما—ٹھیک ہے، ٹھیک ہے.

[وہ اوورکوٹ اتارتا ہے]

فینگ—آپ کے پاس گھڑی بھی ہے ؟

ما—کیا میرے ہاتھ میں بندھی گھڑی کے بارے میں پوچھ رہے ہیں ؟

فینگ—یہ کہاں سے پائی ؟

ما—کسی نے مجھے اپہار میں دی تھی. ہم نے اس کا دام نہیں چکایا ہے. یدی آپکو پسند نہیں ہے تو میں اسے لوٹا دونگا. یہ ابھی بھی اچھی حالت میں ہے. دیکھئے تو، ٹک ٹک کر رہی ہے.

فینگ—آپ گھڑی اور اوورکوٹ کے بارے میں اتیادھک سوچتے ہیں. کیا سبھا کے اپادھیکش کی ذمہ داریاں بھول گئے ہیں ؟

ما—کامریڈ فینگ، یدی آپ کہیں کہ میں نے غلطی کی ہے تو میں پورن روپ سے سہمت ہوں. غلطی جان جانے کے بعد اب میں بدل جاؤنگا. پر یدی آپ یہ کہیں کہ میں اپنے کام نہیں جانتا اور انہیں پورا نہیں کرتا تو یہ آپکی زیادتی ہوگی. آپ کافی دنوں سے یہاں آئے نہیں ہیں. کمیٹی کے دو سدسیہ تو کوئی کام کرتے بھی نہیں ہیں اور گاؤں کی سویم سیوک سینا کے کیپٹن ذمہ داریاں لینے سے گھبراتے ہیں. پھر گاؤں میں ایک گمبھیر پرستھتی بھی پیدا ہوگئی ہے. ابھی تک اسے بتانے کا کوئی موقع ہی نہیں ملا مجھے. میں بڑی مشکل سے اس پر وشواس کرسکا. لیکن سچ تو چھپ نہیں سکتا. کون وشواس کریگا کہ ادھیکش شیو اور ان کے سسر لٹیروں سے سمبندھ رکھتے ہیں. (وہ فینگ کو گولیاں دکھاتا ہے) یہ کافی بڑا ثبوت ہے. سبھوں نے اسے دیکھا تھا.

فینگ—بتائیے یدی آپ لوگوں نے اسے دیکھا تھا ؟

ما—ہاں، کامریڈ فینگ آپ پورے معاملہ کی جانچ پڑتال کرلیں. (بھیڑ کی اور مڑکر) کامریڈ فینگ سے سب باتیں بتلا دو. نہ کچھ زیادہ کہو، نہ کم. سچی بات کہو تو شیطان بھی شرما جائیگا.

ایک کسان—میں ایک پرشن کرونگا. یہ آپ نے جانا کیسے کہ گولیاں لکڑی کے نیچے چھپی ہیں ؟

ما—میں تو پہلے سے جانتا نہیں تھا.

ایک کسان—آپ نے مجھے گھر میں اندر جاکر ڈھونڈھنے کیوں نہیں دیا، باہر کھوجنے کے لئے کیوں کہا؟ میرے خیال میں آپ سب جانتے تھے.

ما—ہم لوگ یہاں چاندنی رات میں ہیں. ہم لوگوں کو کوئی بھی بات جھوٹ نہیں کہنی چاہیئے. میں اس بات کو تب تک نہیں جانتا تھا جب تک مجھے شکایت نہیں ملی تھی!

फ़ैंग—मैं गोश्त नहीं खाता.

सुन—आप शाकाहारी हैं ? मैं भी पिछले पांच साल से ऐसा ही रहा हूं. मैं न तो शराब पीता हूं, न बीड़ी सिगरेट. मैं तो केवल शुद्ध आचरन पसन्द करता हूं.

फ़ैंग—शुद्ध आचरन ?

सुन—हां, प्राचीन युग का शुद्ध आचरन. मैं मानववादियों की बातें कर रहा हूं. इसके बग़ैर मेरे दिमाग़ में नये नये विचार आ भी कैसे सकते थे ?

फ़ैंग—मेरे विचार में तो तुम्हें अपने दिमाग़ को बन्द ही रखना चाहिये.

सुन—कैप्टेन, आप को मेरा विश्वास करना चाहिये. एक बार मेरे हृदय का दरवाज़ा खुल जाता है तो बराबर खुला ही रहता है. फिर कोई उसे जबरन भी नहीं बन्द करा सकता. कैप्टेन, आप व्यर्थ ही शंका न करें.

फ़ैंग—नहीं मेरा मस्तिस्क कभी स्थिर नहीं रहता. यही कारन है कि मैं यहां आया. यदि आप अपना मस्तिस्क शांति नहीं रखते तो हम लोगों को करना पड़ेगा. ऐसा न हो कि कुछ ऊंच नीच हो जाय. समझे ?

सुन—हां महोदय.

मा—(सुन से) कितने बुद्धू हैं आप ! राजनैतिक कार्यकर्त्ता मंडल के सदस्य धनी आदमियों का भोजन नहीं ग्रहण करते. वह ग़रीबों के संग खिचड़ी ही खाना ज़्यादा अच्छा समझते हैं. क्या तुम्हें यह भी नहीं मालूम ?

सुन—मैं भी ग़रीब आदमी हूं. आप यह कैसे कहते हैं कि मैं धनी हूं ?

मा—यहां से निकल जाओ. हम लोगों को तुम्हारी ज़रूरत नहीं है.

[सुन भीड़ में पीछे हो कर खो जाता है]

फ़ैंग—(मा से) बड़ा अच्छा ओवर कोट है तुम्हारा ! कब बनवाया ?

मा—किसान सभा ने ख़रीदवा दिया था. रात में ठंड काफ़ी पड़ती है और चौकीदारों को इसकी आवश्यकता पड़ती है.

फ़ान—तुम स्वयं इसे क्यों पहनते हो ?

मा—मैंने आज यों ही पहिन लिया था.

फ़ैंग—(सबों से) क्या यह सही है ?

एकत्रित भीड़—नहीं, जब से यह ख़रीदा गया था, उन्होंने इसका इस्तैमाल ही नहीं किया है. किसी चौकीदार ने तो इसे छुआ भी नहीं है.

मा—आप यह कैसे कहते हैं ? चार चौकीदारों के बीच में केवल एक ओवरकोट है, मैं इसे किसको दूं ? यदि मैं किसी एक को देता तो दूसरों ने पसन्द न किया होता.

فینگ—میں گوشت نہیں کھاتا :

سن—آپ شاکا ھاری ھیں ؟ میں بھی پچھلے پانچ سال سے ایسا ہی رہا ہوں . میں نہ تو شراب پیتا ہوں، نہ بیڑی سگریٹ . میں تو کیول شدھ آچرن پسند کرتا ہوں .

فینگ—شدھ آچرن؟

سن—ہاں، پراچین یگ کا شدھ آچرن . میں مانو وادیوں کی باتیں کر رہا ہوں . اس کے بغیر میرے دماغ میں نئے نئے وچار آ بھی کیسے سکتے تھے ؟

فینگ—میرے وچار میں تو تمہیں اپنے دماغ کو بند ہی رکھنا چاہیئے .

سن—کیپٹن، آپ کو میرا وشواس کرنا چاہیئے . ایک بار میرے ھردے کا دروازہ کھل جاتا ھے تو برابر کھلا ہی رہتا ھے . پھر کوئی اسے جبراً بھی نہیں بند کرا سکتا . کیپٹن آپ ویرتھ ہی شنکا نہ کریں .

فینگ—نہیں میرا مستشک کبھی استھر نہیں رہتا . یہی کارن ھے کہ میں یہاں آیا . یدی آپ اپنا مستشک شانتی نہیں رکھتے تو ہم لوگوں کو کرنا پڑیگا . ایسا نہ ہو کہ کچھ اونچ نیچ ہو جائے . سمجھے ؟

سن—ہاں مہودے .

ما—(سن سے) کتنے بدھو ہیں آپ ! راجنیتک کاریہ کرتا منڈل کے سدسیہ دھنی آدمیوں کا بھوجن نہیں گرہن کرتے . وہ غریبوں کے سنگ کھچڑی ہی کھانا زیادہ اچھا سمجھتے ہیں . کیا تمہیں یہ بھی نہیں معلوم ؟

سن—میں بھی غریب آدمی ہوں . آپ یہ کیسے کہتے ہیں کہ میں دھنی ہوں ؟

ما—یہاں سے نکل جاؤ . ہم لوگوں کو تمہاری ضرورت نہیں ھے .

[سن بھیڑ میں پیچھے ہو کر کھو جاتا ہے]

فینگ—(ما سے) بڑا اچھا اوورکوٹ ھے تمہارا ! کب بنوایا ؟

ما—کسان سبھا نے خریدوا دیا تھا . رات میں ٹھنڈ کافی پڑتی ھے اور چوکیداروں کو اسکی آوشیکتا پڑتی ھے .

فینگ—تم سویم اسے کیوں پہنتے ہو ؟

ما—میں نے آج یوں ہی پہن لیا تھا .

فینگ—(سبھوں سے) کیا یہ سہی ھے ؟

ایکترت بھیڑ—نہیں، جب سے یہ خریدا گیا تھا، انہوں نے اس کا استعمال ہی نہیں کیا ھے . کسی چوکیدار نے تو اسے چھوا بھی نہیں ھے .

ما—آپ یہ کیسے کہتے ہیں ؟ چار چوکیداروں کے بیچ میں کیول ایک اوورکوٹ ھے، میں اسے کس کو دوں؟ یدی میں کسی ایک کو دے دیتا تو دوسروں نے پسند نہ کیا ہوتا .

बहाना करें कि उनके शड्यंत्र के बारे में कुछ भी नहीं जानते. देखा जाय कि वह कहते क्या हैं ? क्या आप में से कोई जा कर अध्यक्ष लियू को ले आयेंगे ?

दूसरा किसान—हां, मैं जाऊंगा.

[वह बाहर जाता है]

एकत्रित भीड़—वह आ रहे हैं.

मा—(दूर से मा आवाज़ देता है) "फ़ान-युंग-हो, आप अभी तक यहीं हैं ? (मा कामरेड फ़ैंग को देखता है) हैलो, कामरेड फ़ैंग, आप ?.........ठीक. मैं आप के पास जाने ही वाला था. मेरे घर आइये. बहुत दिनों से आप से भेंट नहीं हुई थी. हम लोगों को बहुत सी बातें करनी हैं.

फ़ैंग—आप बहुत ही मशग़ूल दिखाई देते हैं.

मा—हम ग़रीब आदमी अब स्वतंत्र हो गये हैं. मैं तो दिन रात काम ही करना चाहता हूं.

फ़ैंग—(सुन की ओर इशारा करके) वह कौन हैं ?

मा—ओह, सुन-लिन-को हैं. याद नहीं ? पिछली बार इन्हीं की ज़मीन ज़ब्त की गई थी.

फ़ैंग—हां हां ! मुझे याद है.

सुन—(आगे आ कर) हैलो कमांडर !

[हैट उतार कर झुकता है]

फ़ैंग—मैं कमांडर नहीं हूं.

सुन—हां हां, कैप्टेन.

फ़ैंग—मैं कैप्टेन भी नहीं हूं.

सुन—तो फिर आप अध्यक्ष हैं ?

फ़ैंग—मेरा नाम फ़ांग है. मैं अध्यक्ष भी नहीं हूं मैंने सुना है कि आप दो सौ माऊ ज़मीन और देने जा रहे हैं ?

सुन—हां.........ठीक ही है. राजनैतिक कार्यकर्ता मंडल के पिछली बार आने के बाद से मेरे दिमाग़ में नये नये विचार आते रहे हैं. मुझे अपनी मंचूको राज में की गई ग़लतियां अच्छी तरह याद हैं.........किसी प्रधान के लिये कुछ ग़लती न करना असम्भव है. क्या यह ठीक नहीं है ? मैंने अपने अपराध खुले दिल से स्वीकृत कर लिये हैं और अब मैं नया जीवन व्यतीत करने जा रहा हूं. अब मैं भी ग़रीब आदमी हो गया हूं. हम सब लोग अब एक समान हैं. ठीक है न ? ....कैप्टेन, खाना खा लिया है ?

फ़ैंग—बहुत पहले.

सुन—इतनी जल्दी ? नहीं नहीं. मेरे घर चलिये और वहीं भोजन कीजिये. और कल कैप्टेन.........हां, यह तो बतलाइये कि आप को बकरी का गोश्त अच्छा लगता है या मुर्ग़े का ? मेरे घर पर हर चीज़ है. जो आप कहें वह कल तैयार रहेगा.

بہانہ کریں کہ ان کے شڑینتر کے بارے میں کچھ بھی نہیں جانتے. دیکھا جائے کہ وہ کہتے کیا ہیں ؟ کیا آپ میں کوئی جا کر ادھیکش لیو کو لے آئیں گے ؟

دوسرا کسان—ہاں، میں جاؤنگا .

[وہ باہر جاتا ہے]

ایکترت بھیڑ—وہ آ رہے ہیں .

ما—(دور سے ما آواز دیتا ہے) فان - یونگ - ہو، آپ ابھی تک یہیں ہیں ؟ (ما کامریڈ فینگ کو دیکھتا ہے) ہیلو، کامریڈ فینگ، آپ ؟.....ٹھیک . میں آپ کے پاس جانے ہی والا تھا . میرے گھر آیئے . بہت دنوں سے آپ سے ملاقات نہیں ہوئی تھی . ہم لوگوں کو بہت سی باتیں کرنی ہیں .

فینگ—آپ بہت ہی مشغول دکھائی دیتے ہیں .

ما—ہم غریب آدمی اب سوتنتر ہوگئے ہیں . میں تو دن رات کام ہی کرنا چاہتا ہوں .

فینگ—(سن کی اور اشارہ کر کے) وہ کون ہیں ؟

ما—اوہ، سن - لن - کو ہیں. یاد نہیں ؟ پچھلی بار انہیں کی زمین ضبط کی گئی تھی .

فینگ—ہاں ہاں ! مجھے یاد ہے .

سن—(آگے آکر) ہیلو کمانڈر !

[ہیٹ اتار کر جھکتا ہے]

فینگ—میں کمانڈر نہیں ہوں .

سن—ہاں ہاں، کیپٹن .

فینگ—میں کیپٹن بھی نہیں ہوں .

سن—تو پھر آپ ادھیکش ہیں ؟

فینگ—میرا نام فینگ ہے . میں ادھیکش بھی نہیں ہوں. میں نے سنا ہے کہ آپ دو سو ماؤ زمین اور دینے جا رہے ہیں .

سن—ہاں.....ٹھیک ہی ہے . راجنیتک کاریہ کرتا منڈل کے پچھلی بار آنے کے بعد سے میرے دماغ میں نئے نئے وچار آتے رہے ہیں . مجھے اپنی منچوکو راج میں کی گئی غلطیاں اچھی طرح یاد ہیں.....کسی پردھان کے لیے کچھ غلطی نہ کرنا اسمبھو ہے . کیا یہ ٹھیک نہیں ہے ؟ میں نے اپنے اپرادھ کھلے دل سے سویکرت کر لیے ہیں اور اب میں نیا جیون ویتیت کرنے جا رہا ہوں . اب میں بھی غریب آدمی ہوگیا ہوں . ہم سب لوگ اب ایک سمان ہیں . ٹھیک ہے نہ ؟.....کیپٹن، کھانا کھا لیا ہے ؟

فانگ—بہت پہلے .

سن—اتنی جلدی ؟ نہیں نہیں . میرے گھر چلئے اور وہاں بھوجن کیجئے . اور کل کیپٹن.....ہاں، یہ تو بتلایئے کہ آپ کو بکری کا گوشت اچھا لگتا ہے یا مرغے کا ؟ میرے گھر پر ہر چیز ہے . جو آپ کہیں وہ کل تیار رہے گا .

एकत्रित भीड़—इस बेईमान ने सचमुच में अध्यक्ष लियू के विरुद्ध षड़यंत्र रचा था. मा-की-यू ने उसके दलाल का काम किया है.

फ़ान—वह छठवीं चाल में कैसे सफल हो जायेगा ?

चेन—यह उन लोगों ने नहीं कहा. उन्होंने शराब पीना बन्द कर चलने की तैयारी कर दी थी. मेरा ख़्याल था कि वह चौकीदारों को देखने के लिये आवेंगे मैं जल्दी जल्दी आप लोगों से कहने के लिये दौड़ा आया. हम लोगों को जल्दी तय करना चाहिये कि क्या किया जाये ?

एकत्रित भीड़—वही हमारे गांव में सब गड़बड़ियों की जड़ है. हम लोगों को उसे दफ़ना देना चाहिये.

फ़ान—कामरेड फ़ैंग, उनको यदि पकड़ लिया जाये तो कैसा हो ?

फ़ैंग—न पकड़ने की तो कोई ख़ास वजह नहीं है. बेहतर तो यही होगा कि आप लोग इस सवाल पर बहस कर लें और फिर हम लोग कोई फ़ैसला कर लें.

चेन—तो फिर चल कर उन्हें पकड़ा जाये. मैं आप लोगों को रास्ता दिखा दूंगा.

फ़ान—मैं नहीं जाऊंगा.

येन—नहीं क्यों ? हम लोग तो समझते हैं कि तुम बहुत ही निडर व्यक्ति हो. ऐसे मौक़े पर पीछे क्यों हटते हो ? परेशान होने का कोई कारन नहीं है, तुम्हारा बूढ़ा चच्चा तुम्हारे पीछे रहेगा.

एक किसान—उनको गिरफ़्तार किया जाये. मैं साथ दूंगा.

दूसरा किसान—मैं भी.

फ़ान—इसकी कोई आवश्यकता नहीं है. मैं बिना किसी की मदद के उसे यहां ला सकता हूं.

चेन—फिर तुमने यह क्यों कहा था कि तुम नहीं जाओगे ?

फ़ैंन—उनको यहां लाने से क्या लाभ, यदि आप सब अपना मुंह बराबर बन्द रखेंगे ?

फ़ाग—उनके कथन में कुछ तो सच्चाई है.

एकत्रित भीड़—हम वादा करते हैं कि हम सब बातें कह देंगे. परेशान मत होइये. जाइये उसे पकड़ लाइये.

फ़ान—कामरेड फ़ैंग, अपनी राइफ़ल थोड़ी देर के लिये मुझे तो दीजिये. मैं तुरन्त जाऊंगा.

चेन—केवल एक मिनट, मेरा ख़्याल है कि वही दोनों इस ओर आ रहे हैं.

चाओ—सचमुच ?

फ़ान—हां, यह वही हैं.

फ़ैंग—वह इसी तरफ़ आ रहे हैं. (सबों की ओर मुड़ कर) उन्हें फ़ौरन गिरफ़्तार न किया जाय. हम लोग

ایکترت بھیڑ—اِس بےایمان نے سچ مچ میں ادھیکش لیو کے وِرودھ شڑینتر رچا تھا ۔ ما - کی - یو نے اس کے دلال کا کام کیا ہے ۔

فان—وہ چھٹویں چال میں کیسے سپھل ہو جائیگا ؟

چین—یہ اُن لوگوں نے نہیں کہا ۔ اُنہوں نے شراب پینا بند کر چلنے کی تیاری کر دی تھی ۔ میرا خیال تھا کہ وہ چوکیداروں کو دیکھنے کے لئے آویں گے ۔ میں جلدی جلدی آپ لوگوں سے کہنے کے لئے دوڑا آیا ۔ ہم لوگوں کو جلدی طے کرنا چاہئیے کہ کیا کیا جائے ؟

ایکترت بھیڑ—وہی ہمارے گاؤں میں سب گڑبڑیوں کی جڑ ہے ۔ ہم لوگوں کو اُسے دفنا دینا چاہئیے ۔

فان—کامریڈ فینگ، اُن کو یدی پکڑ لیا جائے تو کیسا ہو ؟

فینگ—نہ پکڑنے کی تو کوئی خاص وجہ نہیں ہے، بہتر تو یہی ہوگا کہ آپ لوگ اِس سوال پر بحث کر لیں اور پھر ہم لوگ کوئی فیصلہ کر لیں ۔

چین—تو پھر چل کر اُنہیں پکڑا جائے ۔ میں آپ لوگوں کو راستہ دکھا دوں گا ۔

فان—میں نہیں جاؤنگا ۔

چین—نہیں کیوں ؟ ہم لوگ تو سمجھتے ہیں کہ تم بہت ہی نڈر ویکتی ہو ۔ ایسے موقع پر پیچھے کیوں ہٹتے ہو ؟ پریشان ہونے کا کوئی کارن نہیں ہے، تمہارا بوڑھا چچا تمہارے پیچھے رہیگا ۔

ایک کسان—اُن کو گرفتار کیا جائے ۔ میں ساتھ دوں گا ۔

دوسرا کسان—میں بھی ۔

فان—اِسکی کوئی آوشیکتا نہیں ہے ۔ میں بنا کسی کی مدد کے اُسے یہاں لا سکتا ہوں ۔

چین—پھر تم نے یہ کیوں کہا تھا کہ تم نہیں جاؤگے ؟

فان—اُن کو یہاں لانے سے کیا لابھ، یدی آپ سب لوگ اپنا منھ برابر بند رکھیں گے ؟

فینگ—اُن کے کتھن میں کچھ تو سچائی ہے ۔

ایکترت بھیڑ—ہم وعدہ کرتے ہیں کہ سب باتیں کہہ دینگے ۔ پریشان مت ہوئیے ۔ جائیے اُسے پکڑ لائیے ۔

فان—کامریڈ فینگ، اپنی رائفل تھوڑی دیر کے لئے مجھے تو دیجئے ۔ میں ترنت جاؤنگا ۔

چین—کیول ایک منٹ، میرا خیال ہے کہ وہی دونوں اِس اور آ رہے ہیں ۔

چاؤ—سچ مچ ؟

فان—ہاں، یہ وہی ہیں ۔

فینگ—وہ اِسی طرف آ رہے ہیں (سبھوں کی اور مڑ کر) انہیں فوراً گرفتار نہ کیا جائے ۔ ہم لوگ

चाओ—वह तो सड़े गोबर में पलने वाला कीड़ा है. देखने में तो दुबला पतला है पर है वह बड़ा ही मजबूत. जब वह छोटा था, उसका परिवार बड़ा ही धनी था. लेकिन उसके बाप ने अफ़ीम खा खा कर सब कुछ फूंक ताप डाला.

फ़ैंग—वह वास्तविक किसान नहीं था. हम लोगों को उसे किसान सभा का उपाध्यक्ष नहीं चुनना चाहिये था. तीसरी बात यह है कि गांव की स्वयं सेवक सेना अभी पूर्न रूप से संगठित नहीं है और उसके पास बन्दूक़ें भी काफ़ी नहीं हैं. हम लोगों ने उनकी भी कोई फ़िक्र नहीं की है. जिनके पास सौ माऊ से ज़्यादा ज़मीन है उन्हें पिछली बार भी कुछ ज़मीन नहीं मिली थी. हम लोगों को इस बार वैसी ग़ल्तियां नहीं करनी चाहियें.

फ़ान—हम लोगों को कमेटी के इन दो मेम्बरों को निकाल देना चाहिये. यह लोग सभा का कोई काम करते ही नहीं हैं.

चाओ—सब ग़ल्तियों की जड़ तो एक ही है.

फ़ैंग—और वह है कौन ?

एकत्रित भीड़—अरे, यह भी कोई छिपी बात है ? वह सुन-लिन-को है.

फ़ैंग—अध्यक्ष लियू का क्या होगा ? क्या इस मामले में सुन का भी हाथ है ?

एकत्रित भीड़—मुमकिन है. (चेन-तेह-फ़ु अन्दर आता है) क्यों, मा को नहीं लाये ? क्या कहीं छुप गया है ?

चेन—नहीं नहीं, देखिये मैं बतलाता हूं. वह घर में नहीं था. मेरे ख़्याल से वह सुन के ही घर गया होगा. मैं सुन के घर के पिछवाड़े गया और वहां रोशनी आते देखी. अन्दर लोग बात भी कर रहे थे. मैंने खिड़की से झांक कर देखा. कैंग पर एक छोटी टेबिल रक्खी थी. सुन-लिन-को एक ओर बैठा था और मा-की-वू दूसरी ओर, टेबिल पर शराब रखी थी और खाने पीने का कुछ सामान भी था. वह दोनों खा रहे थे सुन ने कहा—"भाई मा, लियू-चेन-तुंग से तो केवल कुछ गोलियों की मदद से ही पीछा छूट गया. सभा अब हम लोगों के हाथ में आ गई है. यह मेरी पहली चाल थी. मेरे पास अभी भी कई चालें हैं. जब समय आयेगा तो मैं दूसी चालें भी चलूंगा. और फिर दोनों की मदद से शहन्शाह बन जाऊंगा. यह बहुत ही बढ़िया चाल होगी. फिर मैं इन सबों से वैसे ही निबटूंगा जैसे मैं मंचूको राज्य में निबटता था." मा ने कहा—"भाई सुन, यदि तुम चौथी की जगह तीसरी चाल चलो तो दस पाइंट मिलेंगे. इसका मतलब होगा कि तुम्हें सभी चीज़ों से हाथ धोना पड़ जायेगा." सुन ने कहा—"यह असम्भव है. तुम बेकार ही परेशान हो."

چاؤ—وہ تو سڑے گوبر میں پلنے والا کیڑا ہے ۔ دیکھنے میں تو دبلا پتلا ہے پر ہے وہ بڑا ہی مضبوط۔ جب وہ چھوٹا تھا' اسکا پریوار بڑا ہی دھنی تھا ۔ لیکن اس کے باپ نے افیم کھا کھا کر سب کچھ پھونک تاپ ڈالا ۔

فینگ—وہ واستوک کسان نہیں تھا ۔ ہم لوگوں کو اسے کسان سبھا کا اُدھیکش نہیں چننا چاہیئے تھا ۔ تیسری بات یہ ہے کہ گاؤں کی سویم سیوک سینا ابھی پورن روپ سے سنگٹھت نہیں ہے اور اس کے پاس بندوقیں بھی کافی نہیں ہیں ۔ ہم لوگوں نے اُن کی بھی کوئی فکر نہیں کی ہے ۔ جن کے پاس سو ماؤ سے زیادہ زمین ہے انہیں پچھلی بار بھی کچھ زمین نہیں ملی تھی ۔ ہم لوگوں کو اس بار ویسی غلطیاں نہیں کرنا چاہیئں ۔

فان—ہم لوگوں کو کمیٹی کے ان دو ممبروں کو نکال دینا چاہیئے ۔ یہ لوگ سبھا کا کوئی کام کرتے ہی نہیں ہیں ۔

چاؤ—سب غلطیوں کی جڑ تو ایک ہی ہے ۔

فینگ—اور وہ ہے کون ؟

ایکترت بھیڑ—ارے' یہ بھی کوئی چھپی بات ہے ؟ وہ سن - لن - کو ہے ۔

فینگ—ادھیکش لیو کا کیا ہوگا؟ کیا اس معاملے میں سن کا بھی ہاتھ ہے ؟

ایکترت بھیڑ—ممکن ہے ۔ (چین - تہ - فو اندر آتا ہے) کیوں' ما کو نہیں لائے ؟ کیا کہیں چھپ گیا ہے ؟

چین—نہیں نہیں' دیکھیئے میں بتلاتا ہوں ۔ وہ گھر میں نہیں تھا ۔ میرے خیال سے وہ سن کے ہی گھر گیا ہوگا ۔ میں سن کے گھر کے پچھواڑے گیا اور وہاں روشنی آتے دیکھی ۔ اندر لوگ بات بھی کر رہے تھے ۔ میں نے کھڑکی سے جھانک کر دیکھا ۔ کینگ پر ایک چھوٹی ٹیبل رکھی تھی ۔ سن - لن - کو ایک اور بیٹھا تھا اور ما - کی - وو دوسری اور ۔ ٹیبل پر شراب رکھی تھی اور کھانے پینے کا کچھ سامان بھی تھا ۔ وہ دونوں کھا رہے تھے ۔ سن نے کہا—" بھائی ما' لیو - چین - تنگ سے تو کیول کچھ گولیوں کی مدد سے ہی پیچھا چھوٹ گیا ۔ سبھا اب ہم لوگوں کے ہاتھ میں آ گئی ہے ۔ یہ میری پہلی چال تھی ۔ میرے پاس ابھی بھی کئی چالیں ہیں ۔ جب سمے آئیگا تو میں دوسری چالیں بھی چلونگا ۔ یہ بہت ہی بڑھیا چال ہوگی ۔ پھر میں ان سبوں سے ویسے ہی نپٹونگا جیسے میں منچوکو راجیہ میں نپٹتا تھا ۔" ما نے کہا—" بھائی سن' یدی تم چوتھی کی جگہ تیسری چال چلو تو دس پائنٹ ملیں گے ۔ اس کا مطلب ہوگا کہ تمہیں سبھی چیزوں سے ہاتھ دھونا پڑ جائیگا ۔" سن نے کہا—" یہ اسمبھو ہے ۔ تم بیکار ہی پریشان ہو ۔"

यैंग—लेकिन यदि हम लगान न दें तब ? जब हमारे पास हमारी किसान सभा है तो डर किसका है ?

फान—किसान सभा के होने से लाभ ही क्या है यदि आप लोग फिर भी मा को ही चुन लेंगे ?

यैंग—आप का मतलब ?

फान—क्या आप सब लोग अन्धे ही हैं ? क्या आप लोग नहीं जान पाये हैं कि यह सब षड्यंत्र मा और सुन का मिल कर बनाया हुआ है ? कौन जानता है कि वह सब क्या क्या षड्यंत्र रच रहे हैं ?

चाओ—कोई शुभ बात कहने को तो है नहीं. सुन ने अपनी गाड़ियां बाहर भेज दी हैं और उसे अभी तक मंगवाया नहीं है. वह अपने जानवर भी नहीं दे रहा है और न जमीन के दस्तावेज ही दे रहा है. वह अभी भी जमीन का मालिक बना रहना चाहता है. मेरे ख्याल में वह प्रतिगामी संघर्ष करना चाहता है.

एकत्रित भीड़—ठीक कह रहे हैं. वह वास्तव में प्रतिगामी संघर्ष करना चाहता है.

फान—कामरेड फैंग, सभा के सब सदस्य एक ही विचार से तो सोचते भी नहीं हैं. हम लोग करें भी क्या ?

फैंग—परेशान मत हो ! हम लोग जम कर बातें करेंगे. जब तक सब कुछ तय नहीं हो जायेगा तब तक मैं गांव छोड़ कर कहीं जाऊंगा नहीं.

एकत्रित भीड़—ठीक, बहुत ठीक.

फैंग—कितने ही काम पिछली सभा में ठीक नहीं हुये थे. पहली बात तो यही है कि हम लोगों ने सुन को पूरी तौर से वश में नहीं किया है.

एकत्रित भीड़—हां, वह पूर्न-समपूर्न नहीं था.

फैंग—दूसरी बात तो यह है कि मा-की-वू को हम लोगों ने पहचाना ही नहीं था. हम लोगों ने यह देखा कि उसने केवल उत्साहित हो कर हम लोगों की मदद चाऊ-वान-फैंग की जमीन बटवाने में ही की थी.

एक किसान—हां, उस समय तो वह सबसे प्रगतिशील था. वह दूसरों के बीच सबसे आगे बढ़ कर रहना चाहता था.

दूसरा किसान—हां, वह दिन भर चिल्लाता ही रहता था—"सारी दुनिया तो अब हमारी ही है, ग़रीबों की ही है."

मिन—हम लोग तो यही समझते थे कि वह हमीं लोगों जैसा है.

यैंग—और वह पढ़ना लिखना भी तो जानता था.

फैंग—लेकिन वह इतना बदमाश और झूठा होगा, यह हम लोग नहीं जानते थे.

یینگ—لیکن یدی ہم لگان نہ دیں تب ؟ جب ہمارے پاس ہماری کسان سبھا ہے تو پھر ڈر کس کا ہے ؟

فان—کسان سبھا کے ہونے سے لابھ ہی کیا ہے یدی آپ لوگ پھر بھی ما کو ہی چن لیں گے ؟

یینگ—آپ کا مطلب ؟

فان—کیا آپ سب لوگ اندھے ہیں ؟ کیا آپ لوگ نہیں جان پائے ہیں کہ یہ سب شڑینتر ما اور سن کا ملکر بنایا ہوا ہے ؟ کون جانتا ہے کہ وہ سب کیا کیا شڑینتر رچ رہے ہیں ؟

چاؤ—کوئی شبھ بات کہنے کو تو ہے نہیں ۔ سن نے اپنی گاڑیاں باہر بھیج دی ہیں اور اُسے ابھی تک منگوایا نہیں ہے ۔ وہ اپنے جانور بھی نہیں دے رہا ہے اور نہ زمین کے دستاویز ہی دے رہا ہے ۔ وہ ابھی بھی زمین کا مالک بنا رہنا چاہتا ہے۔ میرے خیال میں وہ پرتیگامی سنگھرش کرنا چاہتا ہے ۔

ایکترت بھیڑ—ٹھیک کہہ رہے ہیں ۔ وہ واستو میں پرتیگامی سنگھرش کرنا چاہتا ہے ۔

فان—کامریڈ فینگ، سبھا کے سب سدسیہ ایک ہی وچار سے تو سوچتے بھی نہیں ہیں ۔ ہم لوگ کریں بھی کیا ؟

فینگ—پریشان مت ہو ۔ ہم لوگ جم کر باتیں کریں گے ۔ جب تک سب کچھ طے نہیں ہو جائیگا تب تک میں گاؤں چھوڑ کر کہیں جاؤنگا نہیں ۔

ایکترت بھیڑ—ٹھیک، بہت ٹھیک ۔

فینگ—کتنے ہی کام پچھلی سبھا میں ٹھیک نہیں ہوئے تھے ۔ پہلی بات تو یہی ہے کہ ہم لوگوں نے سن کو پوری طور سے وش میں نہیں کیا ہے ۔

ایکترت بھیڑ—ہاں، وہ پورن سمپورن نہیں تھا ۔

فینگ—دوسری بات تو یہ ہے کہ ما - کی - وو کو ہم لوگوں نے پہچانا ہی نہیں تھا ۔ ہم لوگوں نے یہ دیکھا کہ اس نے کیول اتساہت ہوکر ہم لوگوں کی مدد چاؤ - وان - فینگ کی زمین بٹوانے میں ہی کی تھی ۔

ایک کسان—ہاں، اُس سمے تو وہ سب سے پرگتی شیل تھا ۔ وہ دوسروں کے بیچ سب سے آگے بڑھکر رہنا چاہتا تھا ۔

دوسرا کسان—ہاں، وہ دن بھر چلاتا ہی رہتا تھا—"ساری دنیا تو اب ہماری ہی ہے، غریبوں کی ہی ہے۔"

مِن—ہم لوگ تو یہی سمجھتے تھے کہ وہ ہمیں جیسا ہے ۔

یینگ—اور وہ پڑھنا لکھنا بھی تو جانتا تھا ۔

فینگ—لیکن وہ اتنا بدمعاش اور جھوٹا ہوگا، یہ ہم لوگ نہیں جانتے تھے ۔

को मेरे ही जैसे दूसरे लोगों ने जोता बोया था. याद रखना कि कुल जमीन को जोतने बोने वाले हमीं ग़रीब आदमी थे. पिछली तीन पुश्त से तुम्हारे ख़ान्दान में किसी ने हल छुआ नहीं है. जमीन में ग़ल्ला तभी पैदा किया जा सकता है जब उसे ख़ून से सींचा जाय. साल भर तक धरती पड़ी रहने से ही इसमें घास उग आयेगी. तुम जमीन्दार खाने के अलावा और करते क्या हो ? तुम सब मुफ़्तख़ोरे हो. यदि हम लोगों ने जोतना बोना छोड़ दिया होता तो अब तक यहां जंगल नज़र आते ! अब जब हम ग़रीब शोषित और पीड़ित जनता स्वतंत्र हो गये हैं तो अपनी जमीन का स्वामित्व भी प्राप्त करना चाहते हैं. जमीन जोतने वालों की होनी चाहिये. मांस हड्डी में चिपका रहना चाहिये. आप सब क्या कहते हैं ? क्या मैं ठीक नहीं कह रहा हूं ?

एकत्रित भीड़—ठीक है, बिल्कुल ठीक. सुन-लिन को, कुछ और तो नहीं कहना है ?

फ़ैंग—(भीड़ को उत्तेजित देख कर पहले ही जैसी नाटकीय मुद्रा में) लेकिन मेरे बाप के दो मोटे सूअर तो मेरे पास छोड़ोगे या वह भी नहीं ?

एकत्रित भीड़—उनको रख लो पर जमीन तो देना ही होगा.

फ़ैंग—ह......ह......हा......! बूढ़े दादा चाओ ने सब ठीक ही कहा है. सब जमीन्दार मुफ़्तख़ोरे होते हैं. उन्हें जमीन देने का हक़ ही क्या है ?

यिन—अब मैं समझा. हम लोगों ने ही मेहनत करके जमीन को उपजाऊ बनाया है. जमीन हमी लोगों की है.

यैंग—हां, देखने का यही तरीक़ा होना चाहिये. अब मेरा दिमाग़ भी ठीक से सब समझ गया है.

फ़ैंग—चाओ दादा ने ठीक ही कहा है. यही वास्तविक सत्य भी है. जिन से भेंट हो उनसे यही बातें कहो. सब किसानों को यह बातें अच्छी तरह समझनी चाहियें ताकि वह आपस में खुल कर बातें कर सकें.

चाओ—अब यही होगा. लेकिन पहिले तो सुन से निपटना ज़रूरी है. उसे अब ज़मीन के दस्तावेज़ दे देना चाहिये.

यिन—तब तो फिर मेरे लिये इस ज़मीन का लेना ग़लत नहीं है—मेरा मतलब है......

फ़ान—नहीं, किसी को भी नहीं लेना चाहिये.

यिन—क्यों ?

फ़ान—क्यों ? वह अब भी लगान लेने की आशा करता है और इसका मतलब है कि वह अब भी अपने को ज़मीन का मालिक समझता है ? पर वह ज़मीन देने का बहाना जो करता है ?

کو میرے ہی جیسے دوسرے لوگوں نے جوتا بویا تھا. یاد رکھنا کہ کل زمین کو جوتنے بونے والے ہمیں غریب آدمی تھے. پچھلی تین پشت سے تمہارے خاندان میں کسی نے ہل چھوا بھی نہیں ہے. زمین میں غلہ تبھی پیدا کیا جاسکتا ہے جب اسے خون سے سینچا جائے. سال بھر تک پرتی پڑے رہنے سے ہی اسمیں گھاس اگ آئیگی. تم زمیندار کھانے کے علاوہ اور کرتے کیا ہو ؟ تم سب مفت خورے ہو. یدی ہم لوگوں نے جوتنا بونا چھوڑ دیا ہوتا تو اب تک یہاں جنگل نظر آتے ! اب جب ہم غریب شوشت اور پیڑت جنتا سوتنتر ہوگئے ہیں تو اپنی زمین کا سوامتو بھی پراپت کرنا چاہتے ہیں. زمین جوتنے والوں کی ہونی چاہیئے. مانس ہڈی میں چپکا رہنا چاہیئے. آپ سب کیا کہتے ہیں ؟ کیا میں ٹھیک نہیں کہ رہا ہوں ؟

ایکترت بھیڑ—ٹھیک ہے، بالکل ٹھیک. سن-لن-کو، کچھ اور تو نہیں کہنا ہے ؟

فینگ—(بھیڑ کو اتیجت دیکھکر پہلے ہی جیسی ناٹکیہ مدرا میں) لیکن میرے باپ کے دو موٹے سور تو میرے پاس چھوڑوگے یا وہ بھی نہیں ؟

ایکترت بھیڑ—ان کو رکھ لو پر زمین تو دینا ہی ہوگا.

فینگ—ہ......ہ......ہا ! بوڑھے دادا چاؤ نے سب ٹھیک ہی کہا ہے. سب زمیندار مفت خورے ہوتے ہیں. انہیں زمین دینے کا حق ہی کیا ہے ؟

ین—اب میں سمجھا. ہم لوگوں نے ہی محنت کر کے زمین کو اپجاؤ بنایا ہے. زمین ہمیں لوگوں کی ہے.

ینگ—ہاں، دیکھنے کا یہی طریقہ ہونا چاہیئے. اب میرا دماغ بھی ٹھیک سے سب سمجھ گیا ہے.

فینگ—چاؤ دادا نے ٹھیک ہی کہا ہے. یہی واستوک ستیہ بھی ہے. جن سے بھینٹ ہو ان سے یہی باتیں کہو. سب کسانوں کو یہ باتیں اچھی طرح سمجھنی چاہئیں تاکہ وہ آپس میں کھل کر باتیں کرسکیں.

چاؤ—اب یہی ہوگا. لیکن پہلے تو سن سے نپٹنا ضروری ہے. اسے اب زمین کے دستاویز دے دینا چاہیئے.

ین—تب تو پھر میرے لئے اس زمین کا لینا غلط نہیں ہے......میرا مطلب ہے......

فان—نہیں، کسی کو بھی نہیں لینا چاہیئے.

ین—کیوں ؟

فان—کیوں ؟ وہ اب بھی لگان لینے کی آشا کرتا ہے. اور اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ اب بھی اپنے کو زمین کا مالک سمجھتا ہے. پر وہ زمین دینے کا بہانہ جو کرتا ہے ؟

थिन—वह तो अच्छी ज़मीन है. थोड़ा लगान देने में कुछ बुरा नहीं है.

फ़ैंग—हां, उसने पिछली मीटिंग में हम लोगों को वह ज़मीन भी दे देने का वादा किया था. क्या हम लोगों को ज़मीन न लेकर उसके वादे को ठुकराना उचित है ?

यैंग—मैं कुछ कह नहीं सकता।

फ़ैंग—फिर कौन जानेगा ? जल्दी बोलो कोई परवाह नहीं यदि कुछ ग़लत भी कह दोगे. हम तो सबों की राय जानना चाहते हैं.

फ़ान—जब वह गांव का प्रधान था तो इतने बेहिसाब कर वसूला था कि हम लोगों के पास खाने के लिये कुछ भी नहीं बचता था. उसे अब वह सब अदा करना चाहिये.

फैंग—हां, हम लोगों को यही करना भी चाहिये. पर अभी तक कुछ तय तो हुआ नहीं है. यदि मैं सुन-लिन-को होता तो कहता—(सुन की बोली की नक़ल करते हुये) "मुझे कुछ भी नहीं कहना है, यदि आप लोग यही मांग करें कि जितनी ज़मीन मैंने आप लोगों से ख़रीदी है वही वापस करना होगा. लेकिन बाक़ी 600 माऊ तो मेरी पैतृक सम्पति है. यदि तुम वह सब भी ले लोगे तो यह ज़्यादती होगी.

चाओ—(जैसे सुन से बातें कर रहा हो) यदि आप इस प्रकार बातें करेंगे तो मैं भी गड़े मुर्दे उखाड़ूंगा और तनिक भी ज़मीन आपके पास नहीं छोड़ूंगा. शाहिन्शाह कुआंग-शू के राज में मेरा बाबा मुझे दखिन से यहां लाया था. तब आस पास की सारी जगह जंगल ही जंगल थी. तुम्हारा बाप तो लुटेरा था. मैंने सुन रखा है कि उसने सरकार को रिश्वत में दो सूअर दिये थे और इस प्रकार आप पास की कुल ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर बैठा था. अपने बाबा के साथ इसी ज़मीन पर हम लोग मेहनत करते थे. मेहनत करते करते हमारा ख़ून पसीना एक होजाता था. हम लोगों ने ज़मीन को उपजाऊ बनाया और अपनी मेहनत से उसमें ग़ल्ला उगाया. लेकिन तुम्हारे बाप को हमें मालिक मानना पड़ता था और लगान देनी पड़ती थी. अच्छा अब एक सवाल पूंछूगा. क्या आप यह चाहते हैं कि मेरे बाल बच्चे, जिन्हें मैंने पाल पोस कर बड़ा किया है, आप को अपना बाप मान कर आप की आज्ञा का पालन करें ? आपने तो उन बच्चों को पैदा नहीं किया था और न पाला पोसा था. उनसे आप फिर यह उम्मीद ही कैसे कर सकते हैं कि वह आप की आज्ञा मानें ? मुझे उत्तर दो.

एकत्रित भीड़—ठीक है, ठीक है. सुन-लिन-को, अब तुम जवाब दो.

चाऊ—मैंने और मेरे बाबा ने तुम्हारी इस पैतृक सम्पति की क़रीब 200 माऊ ज़मीन जोती बोई थी. बाक़ी

ین—وہ تو اچھی زمین ہے ۔ تھوڑا لگان دینے میں کچھ برا نہیں ہے ۔

فینگ—ہاں، اس نے پچھلی میٹنگ میں ہم لوگوں کو وہ زمین بھی دے دینے کا وعدہ کیا تھا ۔ کیا ہم لوگوں کو زمین نہ لیکر اس کے وعدہ کو ٹھکرانا اُچت ہے ؟

ینگ—میں کچھ کہہ نہیں سکتا ۔

فینگ—پھر کون جانیگا ؟ جلدی بولو ۔ کوئی پرواہ نہیں یدی کچھ غلط بھی کہہ دو گے ۔ ہم تو سبھی کی رائے جاننا چاہتے ہیں ۔

فان—جب وہ گاؤں کا پردھان تھا اتنے بے حساب کر وصولا تھا کہ ہم لوگوں کے پاس کھانے کے لئے کچھ بھی نہیں بچتا تھا ۔ اُسے اب وہ سب ادا کرنا چاہیئے ۔

فینگ—ہاں، ہم لوگوں کو یہی کرنا چاہیئے ۔ پر ابھی تک کچھ طے تو ہوا نہیں ہے ۔ یدی میں سن - لن - کو ہوتا تو کہتا—(سن کی بولی کی نقل کرتے ہوئے) مجھے کچھ بھی نہیں کہنا ہے، یدی آپ لوگ یہی مانگ کریں کہ جتنی زمین میں نے آپ لوگوں سے خریدی وہی واپس کرنا ہوگا ۔ لیکن باقی 600 ماؤ تو میری پترک سمپتی ہے ۔ یدی تم وہ سب لے لوگے تو یہ زیادتی ہوگی ۔

چاؤ—(جیسے سن سے باتیں کر رہا ہو) یدی آپ اس پرکار باتیں کرینگے تو میں بھی گڑے مردے اکھاڑونگا اور تنک بھی زمین آپ کے پاس نہیں چھوڑونگا ۔ شہنشاہ کوانگ - شو کے راج میں میرا بابا مجھے دکشن سے یہاں لایا تھا ۔ تب آس پاس کی ساری جگہ جنگل ہی جنگل تھی ۔ تمہارا باپ تو لٹیرا تھا ۔ میں نے سن رکھا ہے کہ اس نے سرکار کو رشوت میں دو سور دیئے تھے اور اس پرکار آس پاس کی کل زمین پر قبضہ کر بیٹھا تھا ۔ اپنے بابا کے ساتھ اسی زمین پر ہم لوگ محنت کرتے تھے ۔ محنت کرتے کرتے ہمارا خون پسینہ ایک ہو جاتا تھا ۔ ہم لوگوں نے زمین کو اپجاؤ بنایا اور اپنی محنت سے اس میں غلہ اگایا ۔ لیکن تمہارے باپ کو ہمیں مالک ماننا پڑتا تھا اور لگان دینی پڑتی تھی ۔ اچھا اب ایک سوال پوچھونگا ۔ کیا آپ یہ چاہتے ہیں کہ میرے بال بچے، جنہیں میں نے پال پوس کر بڑا کیا ہے آپ کو اپنا باپ مان کر آپ کی آگیا کا پالن کریں ؟ آپ نے تو ان بچوں کو پیدا نہیں کیا تھا اور نہ پالا پوسا تھا ۔ ان سے آپ پھر یہ اُمید ہی کیسے کرسکتے ہیں کہ وہ آپکی آگیا مانیں ؟ مجھے اُتر دو ۔

ایکترت بھیڑ—ٹھیک ہے، ٹھیک ہے ۔ سن - لن - کو، اب تم جواب دو ۔

چاؤ—میں نے اور میرے بابا نے تمہاری اس پترک سمپتی کی قریب 200 ماؤ زمین جوتی بوئی تھی ۔ باقی

एक किसान—यदि एक दिन भी वह हल चलावे तो इतना थक जावेगा कि दूसरे दिन से महीनों उठ नहीं सकेगा.

दूसरा किसान—उसने पूरब की पहाड़ी पर बड़ी तिकड़म से 300 माऊ ज़मीन हासिल की थी.

फ़ान—उसने दूसरों से ज़मीन हड़पने के लिये हर प्रकार की तिकड़में की हैं.

फ़ैंग—यह तिकड़में उसने कैसे की हैं ?

फ़ान—कामरेड फ़ैंग, यदि किसी के पास थोड़ी भी ज़मीन होती थी तो वह मंचूकों सरकार की मदद से उसे बेदख़ल करवा कर क़ुली गीरी करने के लिये भेज देता था.

एक किसान—यदि कोई क़ुली बन कर जाने से इन्कार करले तो वह उसको अपने यहां खेत मज़ूर बना लेता था.

फ़ान—ठीक कह रहे हो. वह किसी को अपनी ज़मीन पर काम करने के लिये समय तो देता ही नहीं था. फिर ज़मीन को वह शिकमी पर भी तो नहीं उठाने देता था. आख़िर में ज़मीन उसी को सौंप देनी पड़ती थी.

चाओ—हमारे गांव में एक आम कहावत है—दूर पहाड़ी पर ज़मीन लेना सुन की ज़मीन के नज़दीक ज़मीन लेने से कहीं ज़्यादा अच्छा है.

फ़ान—उसने सारी ज़मीन दूसरों का शोशन करके इकट्ठा की थी.

एक किसान—उसकी कोई भी ज़मीन ईमानदारी से इकट्ठा नहीं हुई है.

दूसरा किसान—ठीक ही तो कह रहे हो. उसने कुल ज़मीन हम लोगों को लूट लूट कर ही ली है.

फ़ैंग—(यिन से) क्या यह ठीक कह रहे हैं ?

यिन—गांव के बाहर वाली 600 माऊ ज़मीन उसने कैसे इकट्ठा की थी ? वह सब उसने अपने पुरखों से पाई थी. वह सब ज़मीन उसने हम लोगों को लूट लूट कर तो इकट्ठा नहीं की थी ? क्यों कामरेड फ़ैंग, ठीक है न ?

फ़ैंग—(दूसरों की ओर मुड़कर) आप सब इसके बारे में क्या कहते हैं ?

एक किसान—यह सब उसने अपने बाप से पाई थी.

दूसरा किसान—हां, उसने वास्तव में यह ज़मीन अपने बाप से पाई थी. इसमें उसने कोई भी बदमाशी नहीं की थी. हम लोगों को सच्चाई नहीं छुपानी चाहिये.

पहिला किसान—उसने अभी तक उस 600 माऊ ज़मीन के दस्तावेज़ हम लोगों को नहीं दिये हैं.

दूसरा किसान—उसने यह कह कर कि यह सब उसकी पैतृक सम्पति है, साफ़ साफ़ इन्कार कर दिया था.

फ़ैंग—मेरे ख़याल में हम लोगों को उसकी ज़मीन के लिये कुछ लगान देनी चाहिये.

ایک کسان—یدی ایک دن بھی وہ ہل چلائے تو اتنا تھک جائے گا کہ دوسرے دن سے مہینوں اٹھ نہیں سکے گا۔

دوسرا کسان—اس نے پورب کی پہاڑی پر بڑی تکڑم سے 300 ماؤ زمین حاصل کی تھی۔

فان—اس نے دوسروں سے زمین ہڑپنے کے لئے ہر پرکار کی تکڑمیں کی ہیں۔

فینگ—یہ تکڑمیں اس نے کیسے کی ہیں ؟

فان—کامریڈ فینگ، یدی کسی کے پاس تھوڑی بھی زمین ہوتی تھی تو وہ منچوکو سرکار کی مدد سے اسے بے دخل کروا کر قلی گیری کرنے کے لئے بھیج دیتا تھا۔

ایک کسان—یدی کوئی قلی بن کر جانے سے انکار کرے تو وہ اسکو اپنے یہاں کھیت مزور بنا لیتا تھا۔

فان—ٹھیک کہہ رہے ہو۔ وہ کسی کو اپنی زمین پر کام کرنے کے لئے سمے دیتا ہی نہیں تھا۔ پھر زمین کو وہ شکمی پر بھی تو نہیں اٹھانے دیتا تھا۔ آخر میں زمین اسی کو سونپ دینی پڑتی تھی۔

چاؤ—ہمارے گاؤں میں ایک عام کہاوت ہے—دور پہاڑی پر زمین لینا سن کی زمین کے نزدیک زمین لینے سے کہیں زیادہ اچھا ہے۔

فان—اس نے ساری زمین دوسروں کا شوشن کرکے اکٹھا کی تھی۔

ایک کسان—اسکی کوئی بھی زمین ایمانداری سے اکٹھا نہیں ہوئی ہے۔

دوسرا کسان—ٹھیک ہی تو کہہ رہے ہو۔ اس نے کل زمین ہم لوگوں کو لوٹ لوٹ کر ہی لی ہے۔

فینگ—(ین سے) کیا یہ ٹھیک کہہ رہے ہیں ؟

ین—گاؤں کے باہر والی 600 ماؤ زمین اس نے کیسے اکٹھا کی تھی؟ وہ سب اس نے اپنے پرکھوں سے پائی تھی۔ وہ سب زمین اس نے ہم لوگوں کو لوٹ لوٹ کر تو اکٹھا نہیں کی تھی ؟ کیوں کامریڈ فینگ، ٹھیک ہے نہ ؟

فینگ—(دوسروں کی اور مڑ کر) آپ سب اس کے بارے میں کیا کہتے ہیں ؟

ایک کسان—یہ سب اس نے اپنے باپ سے پائی تھی۔

دوسرا کسان—ہاں، اس نے واستو میں یہ سب زمین اپنے باپ سے پائی تھی۔ اس میں اس نے کوئی بھی بدمعاشی نہیں کی تھی۔ ہم لوگوں کو سچائی نہیں چھپانی چاہئے۔

پہلا کسان—اس نے ابھی تک اس 600 ماؤ زمین کے دستاویز ہم لوگوں کو نہیں دیئے ہیں۔

دوسرا کسان—اس نے یہ کہکر کہ سب اسکی پیترک سمپتی ہے، صاف صاف انکار کر دیا تھا۔

فینگ—میرے خیال میں ہم لوگوں کو اسکی زمین کے لئے کچھ لگان دینی چاہئے۔

फ़ान—हैलो, कामरेड फ़ैंग ! आप ठीक समय पर आ गये हैं.

यिन और यैंग—हैलो, कामरेड फ़ैंग !

फ़ैंग—अच्छा तो आप सब यहां हैं. फ़ान-युंग-हो, तुम दिन में तो खेती करते हो और रात में पहरेदारी. क्या तुम्हें थकावट नहीं आती ?

फ़ान—नहीं, मैं थकता तो नहीं, पर आजकल नाराज़ अवश्य जल्दी ही हो जाता हूं.

चाओ—कामरेड फ़ैंग, यहां आइये. देखिये गोली इसी जगह लकड़ी के नीचे मिली थी.

चेन—जब अभी हम लोग मीटिंग कर रहे थे सुन यहां पर खड़ा था और मा-की-वू यहां पर.

फ़ान—कामरेड फ़ैंग यदि वह सब दृश्य आपने देखा होता तो आप अवश्य नाराज़ हुए होते.

फ़ैंग—आप सब मुझे यही बतलाने का प्रयत्न कर रहे हैं कि मीटिंग में क्या हुआ. लेकिन कोई जा कर मा-कुई-वू को क्यों नहीं बुला लाता ?

चेन—मैं जाऊंगा. मैं उसे अवश्य बुला लाऊंगा.

[illegible] क्या है ? मेरी बात तो सुनो.

चेन—क्या ?

चाओ—उससे मत कहना कि कामरेड फ़ैंग को लाने मैं गया था.

फ़ैंग—उससे डरते क्यों हो बूढ़े चच्चा ?

चाओ—नहीं, मैं उससे डरता नहीं हूं. मेरा मतलब [illegible]......क्या अभी थोड़ी ही देर पहले मैंने आपको कारन नहीं बतलाया ?

फ़ैंग—ठीक है. उनसे कह देना कि मैं यों ही चला आया. मुझे देख कर उसे आश्चर्य अवश्य होगा.

चेन—बहुत अच्छा.

[वह बाहर जाता है]

फ़ैंग—(यिन और यैंग के हाथों में लकड़ी की तख़्ती देखकर) तो क्या तुम लोगों को और ज़मीन मिलने वाली है ?

यैंग—थोड़ी ही देर पहले सुन ने हम लोगों को अधिक ज़मीन देने का वादा किया है.

फ़ांग—ज़मीन देगा ? क्या उसके पास अभी ज़मीन है ? वह कैसे ज़मीन देगा ?

यिन—वह हमें अपनी ज़मीन देने जा रहा है.

फ़ांग—तुम लोग यह क्यों कह रहे हो कि वह ज़मीन देगा ? मेरी समझ में नहीं आता. आप ही लोग बताइये क्या उसने कभी भी ज़मीन जोती है ?

चाओ—उसने ज़िन्दगी भर कभी हल को छुआ भी नहीं है.

فان—ہیلو، کامریڈ فینگ ! آپ ٹھیک سمے پر آگئے ہیں .

ین اور ینگ—ہیلو، کامریڈ فینگ !

فینگ—اچھا تو آپ سب یہاں ہیں. فان - یونگ - ہو، تم دن میں تو کھیتی کرتے ہو اور رات میں پہرہ‌داری . کیا تمہیں تھکاوٹ نہیں آتی ؟

فان—نہیں، میں تھکتا تو نہیں ہوں، پر آجکل ناراض اوشیہ جلدی ہی ہو جاتا ہوں .

چاؤ—کامریڈ فینگ، یہاں آئیے . دیکھیئے گولی اسی جگہ لکڑی کے نیچے ملی تھی .

چین—جب ابھی ہم لوگ میٹنگ کر رہے تھے سن یہاں پر کھڑا تھا اور ما - کوئی - وو یہاں پر .

فان—کامریڈ فینگ یدی وہ سب درشیہ آپ نے دیکھا ہوتا تو آپ اوشیہ ناراض ہوئے ہوتے .

فینگ—آپ سب مجھے یہی بتلانے کا پریتن کر رہے ہیں کہ میٹنگ میں کیا ہوا . لیکن کوئی جاکر ما - کوئی - وو کو کیوں نہیں بلا لاتا ؟

چاؤ—جلدی کیا ہے ؟ میری بات تو سنو .

چین—کیا ؟

چاؤ—اس سے مت کہنا کہ کامریڈ فینگ کو لانے میں گیا تھا .

فینگ—اس سے ڈرتے کیوں ہو بوڑھے چچا ؟

چاؤ—نہیں، میں اس سے ڈرتا نہیں ہوں . میرا مطلب ہے......کیا ابھی تھوڑی ہی دیر پہلے میں نے آپ کو کارن نہیں بتلایا ؟

فینگ—ٹھیک ہے . ان سے کہہ دینا کہ میں یوں ہی چلا آیا . مجھے دیکھکر اسے آشچریہ اوشیہ ہوگا .

چین—بہت اچھا .

[وہ باہر جاتا ہے]

فینگ—(ین اور ینگ کے ہاتھوں میں لکڑی کی تختی دیکھکر) تو کیا تم لوگوں کو اور زمین ملنے والی ہے ؟

ینگ—تھوڑی ہی دیر پہلے سن نے ہم لوگوں کو ادھک زمین دینے کا وعدہ کیا ہے .

فانگ—زمین دیگا ؟ کیا اس کے پاس ابھی زمین ہے ؟ وہ کیسے زمین دے گا ؟

ین—وہ ہمیں اپنی زمین دینے جا رہا ہے .

فانگ—تم لوگ یہ کیوں کہہ رہے ہو کہ وہ زمین دے گا ؟ میری سمجھ میں نہیں آتا . آپ ہی لوگ بتائیے کیا اس نے کبھی بھی زمین جوتی ہے ؟

چاؤ—اس نے زندگی بھر کبھی ہل کو چھوا بھی نہیں ہے .

किसान—शायद वह आजकल सियाओ में है. जितनी जल्दी उन्हें संदेश भेजा जा सके उतना ही अच्छा.

फ़ान—जाओ नहीं. तुम्हीं इस संदेश को जा कर क्यों नहीं दे आते? तुम मेरी मेहनत बचा दोगे. जल्दी जाओ, नहीं तो समय व्यर्थ ही बरबाद होगा.

किसान—मैं मीटिंग में नहीं था. मैं नहीं जानता कि कामरेड फ़ैंग से क्या क्या कहना होगा और आज दफ़्तर में मेरी ड्यूटी भी है. दूसरों से जाने के लिये कहो.

[वह बाहर जाता है]

यैंग—पर मैं तो जा नहीं सकूंगा.

यिन—और मैं भी नहीं.

फ़ान—तो तुमसे जाने को कहा किसने है? यदि तुम जाओ भी तो मैं तुम पर विश्वास नहीं करूंगा.

[चाओ-कुआंग-मिंग अन्दर आता है]

फ़ान—बूढ़े दादा, क्या आप मेरा एक संदेश पहुंचाने की कृपा करेंगे?

चाओ—कहां?

फ़ान—अच्छा! तो आप को आज की सभा के बारे में भी कुछ मालूम नहीं है? जाने दो, मैं खुद ही चला जाऊंगा.

चाओ—एक मिनट रुको. कहां जाओगे?

फ़ान—मुझे फ़ैंग के पास एक संदेश भेजना है.

चाओ—बेकार ही परेशान हो. मैं तो उन्हें यहीं लिवा लाया हूं.

यिन—आप मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हैं?

यैंग—क्या वह वास्तव में गांव में हैं?

फ़ान—आप सचमुच हंसी तो नहीं कर रहे हैं? आप जानते हैं यह हंसी करने का समय नहीं है.

चाओ—मैं बूढ़ा आदमी हूं, दाढ़ी बिल्कुल सफ़ेद हो चुकी है, मज़ाक़ करने की अब मेरी उम्र ही कहां रही है? मैं झूठ भी कैसे बोल सकता हूं? मा-क्वी-यू ने मुझसे घर जा कर सोने के लिये कहा था. लेकिन मैं परेशान था. घर जाने की जगह मैंने वैंग-चुआन से दो घोड़े उधार लिये. फिर मैं सियाओ गया. यही कारन है कि मैं उन्हें यहां इतनी जल्दी ले आया.

फ़ान—अब वह हैं कहां? मुझे उनसे मिलना है.

चाओ—कोई ख़ास ज़रूरत तो नहीं है? इस समय तो वह चेन-तेह-फ़ू से बातें कर रहे हैं. वह जल्दी ही यहां आवेंगे भी.

यिन—वह देखो, आ भी रहे हैं.

[कामरेड फ़ैंग, चेन-तेह-फ़ू और कई किसान आते हैं]

کسان—شاید وہ آجکل سیاؤ میں ہیں۔ جتنی جلدی انہیں سندیش بھیجا جاسکے اتنا ہی اچھا۔

فان—جاؤ نہیں، تمہیں اس سندیش کو جاکر کیوں نہیں دے آتے؟ تم میری محنت بچا دوگے۔ جلدی جاؤ، نہیں تو سمے ویرتھ ہی برباد ہوگا۔

کسان—میں میٹنگ میں نہیں تھا۔ میں نہیں جانتا کہ کامریڈ فینگ سے کیا کیا کہنا ہوگا اور آج دفتر میں میری ڈیوٹی بھی ہے۔ دوسروں سے جانے کے لئے کہو۔

[وہ باہر جاتا ہے]

ینگ—پر میں تو جا نہیں سکونگا۔

ین—اور میں بھی نہیں۔

فان—تو تجھ سے جانے کو کہا کس نے ہے؟ یدی تم جاؤ بھی تو میں تم پر وشواس نہیں کرونگا۔

[چاؤ-کوانگ-منگ اندر آتا ہے]

فان—بوڑھے دادا، کیا آپ میرا ایک سندیش پہونچانے کی کرپا کرینگے؟

چاؤ—کہاں؟

فان—اچھا! تو آپکو آج کی سبھا کے بارے میں بھی کچھ معلوم نہیں ہے؟ جانے دو، میں خود ہی چلا جاؤنگا۔

چاؤ—ایک منٹ رکو۔ کہاں جاؤگے؟

فان—مجھے فینگ کے پاس ایک سندیش بھیجنا ہے۔

چاؤ—بیکار ہی پریشان ہو۔ میں تو انہیں یہیں لوا لیا ہوں۔

ین—آپ مذاق تو نہیں کر رہے ہیں؟

ینگ—کیا وہ واستو میں گاؤں میں ہیں؟

فان—آپ سچ مچ ہنسی تو نہیں کر رہے ہیں؟ آپ جانتے ہیں یہ ہنسی کرنے کا سمے نہیں ہے۔

چاؤ—میں بوڑھا آدمی ہوں، داڑھی بالکل سفید ہوچکی ہے۔ مذاق کرنے کی اب میری عمر ہی کہاں رہی ہے؟ میں جھوٹھ بھی کیسے بول سکتا ہوں؟ ما-کوئی-وو نے مجھے گھر جاکر سونے کے لئے کہا تھا۔ لیکن میں پریشان تھا۔ گھر جانے کی جگہ میں نے وینگ-چوان سے دو گھوڑے ادھار لئے۔ پھر میں سیاؤ گیا۔ یہی کارن ہے کہ میں انہیں یہاں اتنی جلدی لے آیا۔

فان—اب وہ ہیں کہاں؟ مجھے ان سے ملنا ہے۔

چاؤ—کوئی خاص ضرورت تو نہیں ہے؟ اس سمے تو وہ چین-تہ-فو سے باتیں کر رہے ہیں۔ وہ جلدی ہی یہاں آجائینگے بھی۔

ین—وہ دیکھو، آ بھی رہے ہیں۔

[کامریڈ فینگ، چین-تہ-فو اور کئی کسان آتے ہیں]

पर है. जब भी रूह को प्रार्थना की जरूरत महसूस हो तभी प्रार्थना का समय है. सब वक़्त भगवान के वक़्त हैं, सब वक़्त अच्छे हैं. जो दिल ईश्वर के प्रेम से उसी तरह भरे हुये हैं जिस तरह बच्चे का दिल मां के प्रेम से वह हर समय अपने प्यारे की नज़दीकी चाहते हैं. फिर भी मामूली इन्सानों के लिये और दिन भर का प्रोग्राम ठीक करने के लिये कुछ न कुछ वक़्त तय करने ही पड़ते हैं. इसके लिये अधिकतर धर्मों ने बहुत सुबह का वक़्त जब क़ुदरत नई रोशनी के साथ चमकती है और आदमी दिन भर के काम शुरू करने के लिये निकलता है और शाम का वक़्त जब इन्सान अपने दिन भर के अच्छे और बुरे कामों पर निगाह डालता है और क़ुदरत के साथ साथ आराम करने जाता है, उन दोनों वक़्तों की प्रार्थना पर सबसे ज्यादा जोर दिया है. सुबह के वक़्त इन्सान को अपने अन्दर के अल्लाह और उसकी क़ुदरत से बल की जरूरत होती है और शाम को अपने दिन भर के कामों पर निगाह डाल कर उसी अन्दर के ईश्वर से दुरुस्ती, माफ़ी, दया और रहबरी की फिर जरूरत होती है. यह दोनों वक़्त ही आदमी के अन्दर शान्ति और प्रेम के उभरने के खास वक़्त होते हैं.

ओ३म ! आमीन ! ऐमन !

پر ہے ۔ جب بھی روح کو پرارتھنا کی ضرورت محسوس ہو تبھی پرارتھنا کا سمے ہے ۔ سب وقت بھگوان کے وقت ہیں، سب وقت اچھے ہیں ۔ جو دل ایشور کے پریم سے اسی طرح بھرے ہوئے ہیں جس طرح بچے کا دل ماں کے پریم سے وہ ہر سمے اپنے پیارے کی نزدیکی چاہتے ہیں ۔ پھر بھی معمولی انسانوں کے لئے اور دن بھر کا پروگرام ٹھیک کرنے کے لئے کچھ نہ کچھ وقت طے کرنے ہی پڑتے ہیں ۔ اس کے لئے ادھک تر دھرموں نے بہت صبح کا وقت جب قدرت نئی روشنی کے ساتھ چمکتی ہے اور آدمی دن بھر کے کام شروع کرنے کے لئے نکلتا ہے اور شام کا وقت جب انسان اپنے دن بھر کے اچھے اور برے کاموں پر نگاہ ڈالتا ہے اور قدرت کے ساتھ ساتھ آرام کرنے جاتا ہے ان دونوں وقتوں کی پرارتھنا پر سب سے زیادہ زور دیا ہے ۔ صبح کے وقت انسان کو اپنے اندر کے اللہ اور اسکی قدرت سے بل کی ضرورت ہوتی ہے اور شام کو اپنے دن بھر کے کاموں پر نگاہ ڈال کر اسی اندر کے ایشور سے درستی، معافی، دیا اور رہبری کی پھر ضرورت ہوتی ہے ۔ یہ دونوں وقت ہی آدمی کے دل کے اندر شانتی اور پریم کے ابھارنے کے خاص وقت ہوتے ہیں ۔

اوم ! آمین ! ایمن !

धरती के मालिक

(गतांक से आगे)

फ़ान—(पूरी बात सुने बग़ैर) तो फिर तुम्हारे साथ अभी चलूं ?

किसान—इतनी जल्दबाजी मत करो. वह चाहते हैं कि आप किसी को भेज कर कामरेड फ़ैंग को बुलवायें. उनका ख्याल है कि यह षड्यंत्र केवल उनके खिलाफ़ नहीं बल्कि किसान सभा के खिलाफ़ है. उनका कहना है कि उन्हें अपनी चिन्ता ज्यादा नहीं है. लेकिन हम लोगों को अपनी किसान सभा की रक्षा करनी ही चाहिये. यदि हम लोग फ़ौरन काम नहीं करेंगे तो चौपट हो जायेंगे.

[वह जाने के लिये उठता है]

फ़ान—एक मिनट और रुको. मैं फ़ैंग के पास एक संदेस भेजना चाहता था. लेकिन मुझे यह नहीं मालूम कि आजकल वह किस गांव में हैं ?

دھرتی کے مالک

(گتانک سے آگے)

فان—(پوری بات سنے بغیر) تو پھر تمہارے ساتھ ابھی چلوں ؟

کسان—اتنی جلد بازی مت کرو ۔ وہ چاہتے ہیں کہ آپ کسی کو بھیجکر کامریڈ فینگ کو بلوائیں ۔ ان کا خیال ہے کہ یہ شڑینتر کیول ان کے خلاف نہیں بلکہ کسان سبھا کے خلاف ہے ۔ ان کا کہنا ہے کہ انہیں اپنی چنتا زیادہ نہیں ہے لیکن ہم لوگوں کو اپنی کسان سبھا کی رکشا کرنی ہی چاہیئے ۔ یدی ہم لوگ فوراً کام نہیں کرینگے تو چوپٹ ہو جائینگے ۔

[وہ جانے کے لئے اٹھتا ہے]

فان—ایک منٹ اور رکو ۔ میں فینگ کے پاس ایک سندیش بھیجنا چاہتا تھا ۔ لیکن مجھے یہ نہیں معلوم کہ آجکل وہ کس گاؤں میں ہیں ۔

"ऐ दया भरी रोशनी ! चारों तरफ़ के इस अंधियारे में मुझे आगे आगे ले चल ! रात अंधियारी है. मैं अपने घर से बहुत दूर हूं. तू मुझे आगे आगे ले चल !"

पुराने यूनानियों में 'मिनरवा' बुद्धि की देवी मानी जाती थी. कहा जाता था कि यह देवी 'जुपिटर' यानी द्योपितर ईश्वर के सिर से निकली है जिसका मतलब यह है कि 'मिनरवा' ईश्वर की अक़्लेकुल यानी मार्फ़त का नाम है. पुराने यूनानी लोग "मिनरवा" से इन शब्दों में दुआ मांगते थे :—

"ऐ ईश्वरी शक्ति ! मेरे अंधेरे मन के ऊपर अपनी बेअन्त और पाक रोशनी को बरसाओ. वह पाक रोशनी जो हमेशा से हमेशा तक तुम्हारे पास है. तुम्हारी यह रोशनी सब से पहले थी और सब के बाद रहेगी. मेरी रूह जब तक इस धरती पर फिरती रहे तब तक तुम्हारी यह रोशनी, तुम्हारी यह जोत उसे हिम्मत दिलाती और राह दिखाती रहे !"

दुनिया के सब नये और पुराने, छोटे और बड़े धर्मों में इसी तरह की रोशनी के लिये प्रार्थनाएं की गई हैं और 'ठीक रास्ते' और 'सीधे रास्ते' के लिये दुआएं मांगी गई हैं और सब के ईश्वर अल्लाह से उस रास्ते पर चलने की शक्ति मांगी गई है.

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि इस तरह की जितनी दुआएं या प्रार्थनाएं अलग अलग धर्मों में मिलती हैं उनमें 'मैं' या 'मुझे' की जगह 'हम' और 'हमें' ही इस्तैमाल किया गया है और जहां कहीं 'मैं' या 'मुझे' कहा गया है वहां भी सबके साथ प्रेम और नेकी के सम्बन्ध की दुआ मांगी गई है. सच यह है कि सब इन्सान भाइयों के साथ प्रेम ही ईश्वर प्रेम की असली बुनियाद है. जिस दुआ या प्राथना में सब इन्सानों के साथ प्रेम और ईश्वर के साथ प्रेम दोनों बराबर बराबर न झलकते हों वह प्रार्थना थोथी, बेजान और बेमानी है. कोई भी प्रार्थना, प्रार्थना करने वाले को उतनी ही और उसी दर्जे तक मदद दे सकती है जितना और जिस दर्जे तक प्रार्थना करने वाले का दिल प्रेम से भरा हो.

दुआ, प्रार्थना या प्रेयर (prayer) आदमी के लिये बहुत बड़े फ़ायदे की चीज़ है. प्रार्थना आत्मा का सिंगार है. प्रार्थना करना रूहानी जज़्बे के पवित्र जल में नहाना है. प्रार्थना करना अपने आप को अपने दिल के शीशे में देखना है, अन्दर की कसौटी पर कसना है प्रार्थना का मतलब यह है कि हम अपने मालिक के सामने जाने से पहले यह देख लें कि हमारे अन्दर या बाहर कोई दाग़, कोई बुराई न रह जाय. प्रार्थना कितनी बार कब कब की जाये यह बात हर आदमी के लिये अपने अन्दर की ज़रूरत

" اے دیا بھری روشنی ! چاروں طرف کے اِس اندھیارے میں مجھے آگے آگے لے چل ! رات اندھیاری ہے . میں اپنے گھر سے بہت دور ہوں . تو مجھے آگے آگے لے چل !"

پرانے یونانیوں میں 'منروا' بدھی کی دیوی مانی جاتی تھی . کہا جاتا تھا کہ یہ دیوی جوپیٹر یعنی دیوپتر ایشور کے سر سے نکلی ہے . جس کا مطلب یہ ہے کہ منروا ایشور کی عقل کل یا معرفت کا نام ہے . پرانے یونانی لوگ منروا سے اِن شبدوں میں دعا مانگا کرتے تھے :—

" اے ایشوری شکتی ! میرے اندھیرے من کے اوپر اپنی بے انت اور پاک روشنی کو برساؤ . وہ پاک روشنی جو ہمیشہ سے ہمیشہ تک تمہارے پاس ہے . تمہاری یہ روشنی سب سے پہلے تھی اور سب کے بعد رہے گی . میری روح جب تک اِس دھرتی پر پھرتی رہے تب تک تمہاری یہ روشنی' تمہاری یہ جوت اُسے ہمت دلاتی اور راہ دکھاتی رہے !"

دنیا کے سب نئے اور پرانے' چھوٹے اور بڑے دھرموں میں اِسی طرح کی روشنی کے لئے پرارتھنائیں کی گئی ہیں اور ' ٹھیک راستے ' اور ' سیدھے راستے ' کے لئے دعائیں مانگی گئی ہیں اور سب کے ایشور اللہ سے اُس راستے پر چلنے کی شکتی مانگی گئی ہے .

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہیئے کہ اِس طرح کی جتنی دعائیں یا پرارتھنائیں الگ الگ دھرموں میں ملتی ہیں اُن میں ' میں ' یا ' مجھے ' کی جگہ 'ہم' اور ' ہمیں ' ہی استعمال کیا گیا ہے اور جہاں کہیں ' میں ' یا ' مجھے ' کہا گیا ہے وہاں بھی سب کے ساتھ پریم اور نیکی کے سمبندھ کی دعا مانگی گئی ہے . سچ یہ ہے کہ سب انسان بھائیوں کے ساتھ پریم ہی ایشور پریم کی اصلی بنیاد ہے . جس دعا یا پرارتھنا میں سب انسانوں کے ساتھ پریم اور ایشور کے ساتھ پریم دونوں برابر برابر نہ جھلکتے ہوں وہ پرارتھنا تھوتھی' بے جان اور بے معنی ہے . کوئی بھی پرارتھنا' کرنے والے کو اتنی ہی اور اسی درجہ تک مدد دے سکتی ہے جتنا اور جس درجہ تک پرارتھنا کرنے والے کا دل پریم سے بھرا ہو .

دعا' پرارتھنا پریر (Prayer) آدمی کے لئے بہت بڑے فائدے کی چیز ہے . پرارتھنا آتما کا سنگار ہے . پرارتھنا کرنا روحانی جذبے کے پوتر جل میں نہانا ہے . پرارتھنا کرنا اپنے آپ کو اپنے دل کے شیشے میں دیکھنا ہے' اندر کی کسوٹی پر کسنا ہے . پرارتھنا کا مطلب یہ ہے کہ ہم اپنے مالک کے سامنے جانے کے پہلے یہ دیکھ لیں کہ ہمارے اندر یا باہر کوئی داغ' کوئی برائی نہ رہ جائے . پرارتھنا کتنی بار اور کب کب کی جائے یہ بات ہر آدمی کے لئے اپنے اندر کی ضرورت

न डरौं अरिसे जब जाय लराई, निश्चय करि अपनी जीत करूं
ठाढ़ भये कर जोर कर बचन कहा शिर नाय
पंथ चले तो जगत में जब तुम करो सहाय

यानी—हमारा पिता प्रमेश्वर बेअन्त है, वह हर समय मौजूद था, है और रहेगा, यह अनन्त ही हमारी माता है. मेरे अन्दर का मन मेरा गुरु है. उसकी शक्ति मन्सा मेरी पालने वाली है, इन्होंने ने ही मुझे नेक काम करने की तालीम दी है. ऐ प्रमेश्वर ! तेरी शक्ति मुझे यह वर्दान दे कि मैं नेक कामों के करने से कभी पीछे न हटूं और जब बुराई से लड़ने का मौक़ा आये तो कभी दुश्मन से न डरूं. हमेशा जीतूं. मैं हाथ जोड़ कर खड़ा हूं और सिर झुका कर कहता हूं कि दुनिया में लोग तुम्हारे ही रास्ते पर चलें. तुम मदद करो तभी यह हो सकता है.

एक और मशहूर प्रार्थना है जो कई धर्मों में एक सी पाई जाती है. यह इसलिये सब में मिलती है क्योंकि यह अपने आप हर सीधे साधे भले आदमी के दिल से निकलती है. आदमी आदमी सब दुनिया में एक से हैं. सब भले लोगों का दुश्मन एक ही है. हमारे अन्दर और बाहर का अंधेरा और सब का सबसे बड़ा दोस्त भी एक ही है यानी रोशनी. वेद में यह प्रार्थना इन शब्दों में की गई है :—

ओ३म तमसो मा ज्योतिर्गमय
असतो मा सद् गमय
मृत्यांर् अमृतम् ! ओ३म

यानी—मुझे अंधेरे से रोशनी में ले चल. झूठ से सच की तरफ़ ले चल. मौत से अमर जीवन की तरफ़ ले चल.

क़ुरान में लिखा है :—

"जो लोग ईमान लाये हैं उन्हें अल्लाह अंधेरे से निकाल कर नूर यानी रोशनी की तरफ़ ले जाता है !"

एक दूसरी जगह क़ुरान में लिखा है :—

'अल्लाह नूरों पर नूर है और जिस पर दया करता है उसे अपने नूर की तरफ़ ले जाता है.' भगवत गीता में ईश्वर को 'जोत के ऊपर जोत" कहा गया है.

सिक्खों के धर्म ग्रन्थ 'ग्रन्थ साहब' में यह प्रार्थना की गई है :—

"ऐ दया के सागर ! हमारे दिलों के अन्दर सदा रहो और हमारे मन को वह रोशनी दो कि जिससे हम तुम से प्यार करें, तुम्हारी सेवा करें और तुम्हारी ही पूजा करें. ऐ ईश्वर ! हम हमेशा तुम्हें अपने पास पावें और महसूस करें. तुम्हीं हमारे बाप, मां, मालिक और सब कुछ हो !"

ईसाई धर्म की एक मशहूर दुआ है :—

نہ ڈروں اری سے جب آئے لڑائی نشچے کری اپنی جیت کروں
ٹھاڑ بھئے کر جوڑ کر وچن کہا سر نائے
پنتھ چلے تو جگت میں جب تم کرو سہائے

یعنی—ہمارا پتا پرمیشور بے انت ہے، وہ ہر سمے موجود تھا، ہے اور رہے گا. یہ اننت ہی ہماری ماتا ہے. میرے اندر کا من میرا گرو ہے. اسکی شکتی منسا میری پالنے والی ہے، انہوں نے ہی مجھے نیک کام کرنے کی تعلیم دی ہے. اے پرمیشور! تیری شکتی مجھے یہ وردان دے کہ میں نیک کاموں کے کرنے سے کبھی پیچھے نہ ہٹوں اور جب برائی سے لڑنے کا موقع آئے تو کبھی دشمن سے نہ ڈروں. ہمیشہ جیتوں. میں ہاتھ جوڑ کر کھڑا ہوں اور سر جھکا کر کہتا ہوں کہ دنیا میں لوگ تمہارے ہی راستے پر چلیں. تم مدد کرو تب ہی یہ ہوسکتا ہے.

ایک اور مشہور پرارتھنا ہے جو کئی دھرموں میں ایک سی پائی جاتی ہے. یہ اس لئے سب میں ملتی ہے کیونکہ یہ اپنے آپ ہر سیدھے سادے بھلے آدمی کے دل سے نکلتی ہے. آدمی آدمی سب دنیا میں ایک سے ہیں. سب بھلے لوگوں کا دشمن ایک ہی ہے. ہمارے اندر اور باہر کا اندھیرا اور سب کا سب سے بڑا دوست بھی ایک ہی ہے یعنی روشنی. وید میں یہ پرارتھنا ان شبدوں میں کی گئی ہے :—

اوم! تمسو ما جیوترگمے
استو ما سد گمے
مرتیور امرتم! اوم!

یعنی—مجھے اندھیرے سے روشنی میں لے چل. جھوٹ سے سچ کی طرف لے چل. موت سے امر جیون کی طرف لے چل!

قرآن میں لکھا ہے :—

" جو لوگ ایمان لائے ہیں انہیں اللہ اندھیرے سے نکال کر نور یعنی روشنی کی طرف لے جاتا ہے!"

ایک دوسری جگہ قرآن میں لکھا ہے :—

" اللہ نوروں پر نور ہے اور جس پر دیا کرتا ہے اسے اپنے نور کی طرف لے جاتا ہے."

بھگوت گیتا میں ایشور کو " جوت کے اوپر جوت" کہا گیا ہے.

سکھوں کے دھرم گرنتھ ' گرنتھ صاحب ' میں یہ پرارتھنا کی گئی ہے :—

" اے دیا کے ساگر! ہمارے دلوں کے اندر سدا رہو اور ہمارے من کو وہ روشنی دو کہ جس سے ہم تم سے پیار کریں، تمہاری سیوا کریں اور تمہاری ہی پوجا کریں. اے ایشور! ہم ہمیشہ تمہیں اپنے پاس پاویں اور محسوس کریں. تم ہی ہمارے باپ، ماں، مالک اور سب کچھ ہو!"

عیسائی دھرم کی ایک مشہور دعا ہے :—

करता है. उसने हमें वह 'सीधा रास्ता' बताया है जिससे हम कभी इधर उधर न भटकें."

"ऐ अहुरमज़्द ! मेरा यह मन तेरी सच्चाई, तेरी आत्मा और सब के भले और ऊंचे से ऊंचे आदर्शों से भरा हो, और मुझे सदा नेकी का ठीक ठीक रास्ता दिखलाता रहे. जब मैं उस मन्ज़िल तक पहुंच जाऊंगा तो और सब छोटी छोटी बातें जो मेरी रूह चाहती है मुझे अपने आप मिल जावेंगी."

"ऐ अहुरमज़्द ! हमें ज्ञान और धर्म का वह रास्ता दिखला जिस पर चल कर आदमी की आत्मा को पूरा सुकून और सन्तोश मिलता है."

जैन धर्म की एक प्रार्थना यह है :—

"ऐ तू जो सब तारीफ़ों का हक़दार है, जो हर ऐश्वर्य यानी क़ुदरत का मालिक है, तुझे हमारा नमस्कार हो. ऐ सबके बादशाह तुझे हमारा नमस्कार हो, तू प्रभु यानी मालिक है, तू सब जगह है, तू सबसे बड़ा है, तू बेदाग़ है, हमेशा से है, हमेशा तक रहेगा, तू कभी मिट नहीं सकता, तुझ में कोई कमी या बुराई नहीं, तू अनोखा ख़ज़ाना है, सब प्रार्थनायें तुझी तक पहुंचती हैं, तू केवल ज्ञान (यानी मार्फ़त) के शीशे में आत्मा के अन्दर ही दिखाई दे सकता है. केवल वही तुझे देख सकता है जिसका अन्दर का यह शीशा बेदाग़ हो, जिसे दुनिया की किसी चीज़ से लगाव न हो. तुझे हमारा नमस्कार हो ! तू शान्त और पाक है ! तू बे आसरों का आसरा है, तेरी कोई सूरत नहीं, तुझमें कोई हरकत नहीं ! तू अचल है ! सब दुनियाओं का मालिक है ! हम तेरी ही पूजा करते हैं, तू सबसे बड़ा दाता है, हमें सबसे बड़ा दान यह दे कि हमारी बुद्धि रोशन हो जाय और हम तेरा ज्ञान यानी असली ज्ञान या मार्फ़त हासिल करें ! तुझे हमारा नमस्कार हो !"

बौद्ध धर्म की सबसे मशहूर प्रार्थना यह है :—

"ऐ मेरे मालिक ! मेरे गुरु ! मेरे त्राता ! मेरे प्यारे ! मेरे भाई ! मेरे रहबर ! मुझे रोशनी देने वाले ! ऐ सारे ज्ञान के भंडार और सब जोतों की जोत ! मैं तेरे नाम का सहारा लेता हूं ! मैं तेरे धर्म का आसरा लेता हूं ! मैं तेरे संघ की शरन में आता हूं ! ओ३म ! मेरी छोटी सी आत्मा जो कमल के पत्ते के ऊपर शबनम की बूंद बनी हुई हीरे की कनी सी चमक रही है, उस खिले हुये कमल में समा जावे जो तेरे बेअन्त वजूद के सागर पर तैर रहा हो !"

"गुरु गोविन्द सिंह की एक प्रार्थना यह है :—

सरब काल है पिता अपारा, देवी कालिका मात हमारा,
मनुआ गुरु मोहि मनसा माई, जिन मोहू सत क्रिया पढ़ाई,
देवी शिवा ! वर मोहि यहै, शुभ कर्मों ते कबहुं न टरौं,

کرتا ہے ۔ اس نے ہمیں وہ 'سیدھا راستہ' بتایا ہے جس سے ہم کبھی اِدھر اُدھر نہ بھٹکیں ۔"

"اے اہرمزد ! میرا یہ من تیری سچائی' تیری آتما اور سب کے بھلے اور اونچے سے اونچے آدرشوں سے بھرا ہو اور مجھے سدا نیکی کا ٹھیک ٹھیک راستہ دکھلاتا رہے۔ جب میں اس منزل تک پہنچ جاؤنگا تو اور سب چھوٹی چھوٹی باتیں جو میری روح چاہتی ہے مجھے اپنے آپ مل جاوینگی۔"

"اے اہرمزد ! ہمیں گیان اور دھرم کا وہ راستہ دکھلا جس پر چل کر آدمی کی آتما کو پورا سکون اور سنتوش ملتا ہے ۔"

جین دھرم کی ایک پرارتھنا یہ ہے :—

"اے تو جو سب تعریفوں کا حقدار ہے' جو ہر ایشور یہ یعنی قدرت کا مالک ہے' تجھے ہمارا نمسکار ہو ۔ اے سب کے بادشاہ تجھے ہمارا نمسکار ہو' تو پربھو یعنی مالک ہے' تو سب جگہ ہے' تو سب سے بڑا ہے' تو بے داغ ہے' ہمیشہ سے ہے' ہمیشہ تک رہیگا' تو کبھی مٹ نہیں سکتا' تجھ میں کوئی کمی یا برائی نہیں' تو انوکھا خزانہ ہے' سب پرارتھنائیں تجھی تک پہونچتی ہیں' تو کیول گیان (یعنی معرفت) کے شیشے میں آتما کے اندر ہی دکھائی دے سکتا ہے ۔ کیول وہی تجھے دیکھ سکتا ہے جس کا یہ اندر کا شیشہ بے داغ ہو' جسے دنیا کی کسی چیز سے لگاؤ نہ ہو ۔ تجھے ہمارا نمسکار ہو' تو شانت اور پاک ہے ! تو بے آسروں کا آسرا ہے' تیری کوئی صورت نہیں' تجھ میں کوئی حرکت نہیں ! تو اچل ہے ! سب دنیاؤں کا مالک ہے ! ہم تیری ہی پوجا کرتے ہیں' تو سب سے بڑا داتا ہے' ہمیں سب سے بڑا دان یہ دے کہ ہماری بدھی روشن ہو جائے اور ہم تیرا گیان یعنی اصلی گیان یا معرفت حاصل کریں ! تجھے ہمارا نمسکار ہو !"

بودھ دھرم کی سب سے مشہور پرارتھنا یہ ہے :—

" اے میرے مالک ! میرے گرو ! میرے تراتا ! میرے پیارے ! میرے بھائی ! میرے رہبر ! مجھے روشنی دینے والے ! اے سارے گیان کے بھنڈار اور سب جوتوں کی جوت ! میں تیرے نام کا سہارا لیتا ہوں ! میں تیرے دھرم کا آسرا لیتا ہوں ! میں تیرے سنگھ کی شرن میں آتا ہوں ! اوم ! میری چھوٹی سی آتما جو کمل کے پتے کے اوپر شبنم کی بوند بنی ہوئی ہیرے کی کنی سی چمک رہی ہے' اس کھلے ہوئے کمل میں سما جائے جو تیرے بے انت وجود کے ساگر پر تیر رہا ہو !"

گرو گوبند سنگھ کی ایک پرارتھنا یہ ہے :—

سرب کال ہے پتا اپارا ‌‌ دیوی کالکا مات ہمارا
منوا گرو موہی منسامائی ‌‌ جن موکو سبھ کریا پڑھائی
دیوی شوا ! ور موہی یہہ ‌‌ شبھ کرموں تے کبھوں نہ ٹروں

ऊपर की प्रार्थना के इब्रानी शब्दों से मालूम होता है कि इब्रानी भाषा और दूसरी भाषाओं के शब्दों में कितना मेल है. इस्राईल शब्द दो शब्दों से बना है—इस्र और ईल. इस्र के मानी हैं नेकी या धर्म और ईल के मानी हैं क़ादिरे मुतलक़ यानी अल्लाह. इस्राईल के मानी हुए वह लोग जो उस सर्व शक्तिमान ईश्वर की बताई राह पर चलें. इब्रानी 'अदोनाई', अरबी 'आदम' और संस्कृत 'आदि मनु' या आदिनाथ तीनों एक हैं. संस्कृत ओ३म्! अरबी आमीन! और इब्रानी ऐमन! भी मिलते हैं और तीनों के शुरू के मानी बिल्कुल एक हैं यानी यह कि "ऐसा ही हो." इस प्रार्थना में इब्रानी शब्द 'शीमा' आता है जिस के मानी हैं सुनो. 'एहद' आता है जिसके मानी हैं अहद यानी एक. 'नु' आता है जिसके मानी हैं 'यह' 'नु' के मानी हैं हमको. अरबी अना और संस्कृत न:, थुरा के मानी हैं धर्म वग़ैरा.

पार्सियों की एक प्रार्थना है जिसे 'होनोवर' या 'अहोवैराय' कहते हैं. पार्सी इसे उतना ही पाक समझते हैं जितना हिन्दू गायत्री को या मुसलमान सूरए फ़ातहा को. वह प्रार्थना यह है :—

"हमारे मन उस ईश्वर की पूजा में लग जावें जो नेकी और शक्ति का, बुद्धि का और बल का मालिक है, जिसने हमें वह अन्तरात्मा यानी ज़मीर दी है जिस से हम उसके जैसे यानी नेक काम कर सकें और अपने भाई इन्सानों की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत कर सकें. उसने हमें दुनिया से वैराग दिया है और वह सब्र और धीरज दिया है जिस से हम दुख, दर्द और कमज़ोरी के समय ढारस रख सकें और दूसरे दुखियों और कमज़ोरों को ढारस बंधा सकें."

पार्सी धर्म की किताब गाथा की कुछ और प्रार्थनाएं यह हैं :—

"ऐ अहुरमज़्द यानी ईश्वर! मुझे बड़ी उम्र दे, धीरज दे और नेक समझ दे. मुझे 'सीधा रास्ता' दिखला. वह रास्ता जो तेरा रास्ता है और जो तुझ तक पहुंचाता है."

"ऐ अहुरमज़्द! मुझे ऐसी बुद्धि दे जिससे मैं सोच समझ कर काम करूं और अपने फ़र्ज़ों को पूरा करूं! मुझे नेकी की दौलत दे जिस से और सब दौलतें अपने आप पैदा होती हैं. मुझे इन्साफ़ पर चलने वाली अन्तरात्मा (ज़मीर) दे, सब्र और धीरज दे और नेक काम करने की ताक़त दे!"

"ऐ अहुरमज़्द! मुझे दर्शन दे. इस तरह कि तेरे हाथ मेरे उन फ़र्ज़ों, नेक कामों और अच्छे शब्दों से भरे हों जिन से रूहानी ज़िन्दगी मिलती है, जिनसे आदमी दुनिया से बेलाग रहता है और जिनसे निजात मिलती है."

"नेक विचारों, नेक शब्दों और नेक कामों से ही हम अहुरमज़्द को जान सकते हैं. अहुरमज़्द, हम से प्यार

اوپر کی پرارتھنا کے عبرانی شبدوں سے معلوم ہوتا ہے کہ عبرانی بھاشا اور دوسری بھاشاؤں کے شبدوں میں کتنا میل ہے. اسرائیل شبد دو شبدوں سے بنا ہے—اسر اور ایل . اسر کے معنی ہیں نیکی یا دھرم اور ایل کے معنی ہیں قادر مطلق یعنی اللہ . اسرائیل کے معنی ہوئے وہ لوگ جو اس سرو شکتی مان ایشور کی بتائی راہ پر چلیں . عبرانی 'ادونائی' عربی آدم اور سنسکرت آدی منو یا آدی ناتھ تینوں ایک ہیں . سنسکرت اوم! عربی آمین! اور عبرانی ایمن! بھی ملتے ہیں اور تینوں کے شروع کے معنی بالکل ایک ہیں یعنی یہ کہ "ایسا ہی ہو." اس پرارتھنا میں عبرانی شبد 'شیما' آتا ہے جس کے معنی ہیں سنو . ایہد آتا ہے جس کے معنی ہیں 'احد' یعنی ایک . 'نو' آتا ہے جس کے معنی ہیں 'یہ' 'نو' کے معنی ہیں ہمکو . عربی انا اور سنسکرت نہ' 'تھورا' کے معنی ہیں دھرم وغیرہ .

پارسیوں کی ایک پرارتھنا ہے جسے 'ہونوور' یا 'اہوویرائے' کہتے ہیں . پارسی اسے اتنا ہی پاک سمجھتے ہیں جتنا ہندو گایتری کو یا مسلمان سورۂ فاتحہ کو . وہ پرارتھنا یہ ہے :—

"ہمارے من اس ایشور کی پوجا میں لگ جاویں جو نیکی اور شکتی کا' بدھی کا اور بل کا مالک ہے' جس نے ہمیں وہ انتر آتما یعنی ضمیر دی ہے جس سے ہم اس کے جیسے یعنی نیک کام کرسکیں اور اپنے بھائی انسانوں کی زیادہ سے زیادہ خدمت کرسکیں . اس نے ہمیں دنیا سے ویراگ دیا ہے اور وہ صبر اور دھیرج دیا ہے جس سے ہم دکھ' درد اور کمزوری کے سمے ڈھارس رکھ سکیں اور دوسرے دکھیوں اور کمزوروں کو ڈھارس بندھا سکیں."

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا کی کچھ اور پرارتھنائیں یہ ہیں :—

"اے اہرمزد یعنی ایشور! مجھے بڑی عمر دے' دھیرج دے اور نیک سمجھ دے . مجھے 'سیدھا راستہ' دکھلا . وہ راستہ جو تیرا راستہ ہے اور جو تجھ تک پہونچاتا ہے."

"اے اہرمزد! مجھے ایسی بدھی دے جس سے میں سوچ سمجھ کر کام کروں اور اپنے فرضوں کو پورا کروں! مجھے نیکی کی دولت دے جس سے اور سب دولتیں اپنے آپ پیدا ہوتی ہیں . مجھے انصاف پر چلنے والی انتر آتما (ضمیر) دے' صبر اور دھیرج دے اور نیک کام کرنے کی طاقت دے!"

"اے اہرمزد! مجھے درشن دے . اس طرح کہ تیرے ہاتھ میرے ان فرضوں' نیک کاموں اور اچھے شبدوں سے بھرے ہوں جن سے روحانی زندگی ملتی ہے' جن سے آدمی دنیا سے بےلاگ رہتا ہے اور جن سے نجات ملتی ہے."

"نیک وچاروں' نیک شبدوں اور نیک کاموں سے ہی ہم اہرمزد کو جان سکتے ہیں . اہرمزد ہم سے پیار

किया जावे तो जो दो अरब आदमी इस धरती पर रहते हैं, जिन में सोवियत रूस के बीस करोड़ आदमी भी शामिल हैं, उनमें से ज़बरदस्त कसरत राय यही कहेगी कि इसके बाद की दुनिया भी है. इसलिये यह ठीक ही है कि हम इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में दोनों में अपनी भलाई और बहबूदी के लिये दुआ मांगें और उसकी कोशिश करें.''

हिन्दुओं के विशेशिक सूत्र में लिखा है :—

जिस चीज़ से इस दुनिया में और अगली दुनिया में दोनों में आदमी का भला हो वही असली धर्म है.'':

इंजील के पुराने अहदनामे में ईश्वर से प्रार्थना की गई है :—

"ऐ मेरे मालिक ! मुझे अपनी नेकी की तरफ़ ले जा. मेरी आंखों के सामने अपने 'रास्ते को सीधा' कर दे. मुझे मेरे अन्दर छिपी हुई बुराइयों से पाक कर. मैं तेरा सेवक हूं. मुझे मेरे अन्दर उभरते हुए गुनाहों से बचा. वह मुझ पर क़ाबू न पा सके. मेरे अन्दर की बुराई और बेइंसाफ़ी से मुझे अच्छी तरह धो दे और मेरे अन्दर के पाप से मुझे पाक कर. ऐमन !

"ऐ ख़ुदा ! मेरे दिल की तलाशी ले मेरे दिल के अन्दर जो कुछ है उसे देख. मुझे आज़मा और मेरे विचारों को जान और देख कि मेरे अन्दर कोई भी बुरी राह तो नहीं है. मुझे उस रास्ते पर ले चल जो अमर जीवन का रास्ता है. ऐ मेरे मालिक ! मुझे अपनी राहें दिखा ! मुझे अपने रास्तों की तालीम दे. मुझे अपनी सच्चाई की तरफ़ ले चल. तू ही मेरी निजात का मालिक है. मेरी आंखें खोल ताकि मैं तेरे बताए हुए धर्म की सब अच्छी अच्छी बातें देख सकूं. अपना शब्द सुना कर मुझ में जान डाल. झूट के रास्ते से मुझे अलग कर. ऐमन !"

यहूदियों की एक मशहूर प्रार्थना है :—

"सुनो, ऐ इस्राईल क़ौम के लोगो ! एक ख़ुदा ही हमारा अल्लाह है, ख़ुदा एक है. ऐ हमारे ख़ुदा और हमारे पुरखों के ख़ुदा तेरा यह आशिर्वाद हो कि हम तेरे क़ानून पर चलें और तेरी आज्ञाओं को ठीक ठीक मानें. हमें पाप, ज़्यादती, लालच और अपमान से बचा. बुराई की तरफ़ हर झुकाव को हम से दूर रख और ऐसा कर कि हम नेकी की राह पर चलते रहें. ऐ ख़ुदा ! हमें अपनी निगाह में और उन सब की निगाह में जो हमें देखते हैं दया, मेहर और रहम अता कर और हम पर अपनी नेक बरकतें उतार. ऐ ख़ुदा ! तेरी जय ही जय हो ! तू अपनी क़ौम इस्राईल को अपनी नेक बरकतें अता करता है. ऐमन !"

جاوے تو جو دو ارب آدمی اس دھرتی پر رہتے ہیں، ن میں سوویت روس کے بیس کروڑ آدمی بھی شامل ں، اُن میں سے زبردست کثرت رائے یہی کہے گی کہ اس بعد کی دنیا بھی ہے. اس لئے یہ ٹھیک ہی ہے کہ ہم دنیا میں اور دوسری دنیا میں دونوں میں اپنی ئی اور بہبودی کے لئے دعا مانگیں اور اسکی کوشش ں."

ہندؤں کے ویشیشک سوتر میں لکھا ہے :—

"جس چیز سے اس دنیا میں اور اگلی دنیا میں نوں میں آدمی کا بھلا ہو وہی اصلی دھرم ہے."

انجیل کے پرانے عہدنامے میں ایشور سے پرارتھنا کی ی ہے :—

"اے میرے مالک مجھے اپنی نیکی کی طرف لے ا. میری آنکھوں کے سامنے اپنے 'راستے کو سیدھا' کر دے. مجھے میرے اندر چھپی ہوئی برائیوں سے پاک کر. میں را سیوک ہوں. مجھے میرے اندر ابھرتے ہوئے گناہوں بچا. وہ مجھ پر قابو نہ پا سکیں. میرے اندر کی ائی اور بےانصافی سے مجھے اچھی طرح دھو دے اور رے اندر کے پاپ سے مجھے پاک کر. ایمن !"

"اے خدا ! میرے دل کی تلاشی لے. میرے دل کے در جو کچھ ہے اسے دیکھ. مجھے آزما اور میرے وچاروں جان اور دیکھ کہ میرے اندر کوئی بھی بری راہ تو ہیں ہے. مجھے اس راستے پر لے چل جو امر جیون کا ستہ ہے. اے میرے مالک ! مجھے اپنی راہیں دکھا ! مجھے اپنے راستوں کی تعلیم دے. مجھے اپنی سچائی طرف لے چل. تو ہی میری نجات کا مالک ہے. ری آنکھیں کھول تاکہ میں تیرے بتائے ہوئے دھرم سب اچھی اچھی باتیں دیکھ سکوں. اپنا شبد نا کر مجھ میں جان ڈال. جھوٹ کے راستے سے مجھے گ کر. ایمن !"

یہودیوں کی ایک مشہور پرارتھنا ہے :—

"سنو، اے اسرائیل قوم کے لوگو ! ایک خدا ہی ہمارا لہ ہے، خدا ایک ہے. اے ہمارے خدا اور ہمارے پرکھوں خدا تیرا یہ آشیرباد ہو کہ ہم تیرے قانون پر چلیں تیری آگیاؤں کو ٹھیک ٹھیک مانیں. ہمیں پاپ یادتی، لالچ اور اپمان سے بچا. برائی کی طرف ہر جھکاؤ کو ہم سے دور رکھ اور ایسا کر کہ ہم نیکی کی راہ چلتے رہیں. اے خدا ! ہمیں اپنی نگاہ میں اور ن سب کی نگاہ میں جو ہمیں دیکھتے ہیں دیا، مہر، ور رحم عطا کر، اور ہم پر اپنی نیک برکتیں اتار. اے خدا ! تیری جے ہی جے ہو ! تو اپنی قوم اسرائیل کو پنی نیک برکتیں عطا کرتا ہے. ایمن !"

ही हम ज़िन्दा रहें. हमारी सारी उम्र उसी सब के अन्दर रहने वाले ईश्वर के लिये हो."

"हम सौ बरस तक और इस से भी अधिक इस तरह जियें कि हमें किसी का सहारा न ढूंढना पड़े!"

"हम सौ बरस तक देखते रहें. सौ बरस तक हमारा बल और तन्दुरुस्ती बढ़ती रहे, सौ बरस तक हम सुन्दर रहें और सौ बरस से ऊपर भी हम इसी तरह जियें!"

क़ुरान की मशहूर दुआ है :—

"साथ नाम उस अल्लाह के जो रहमान और रहीम है! तारीफ़ उस अल्लाह की जो सब दुनियाओं का पालने वाला है! जो दयावान और मेहरबान है! जो उस दिन का मालिक है जिस दिन सब को अपने अच्छे बुरे कामों का फल मिलेगा! ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ से ही मदद चाहते हैं! हमें 'सीधा रास्ता' दिखला, उन लोगों का रास्ता जिन पर तेरी नैमतें और बरकतें उतरती हैं. उनका रास्ता नहीं जिन से तू नाराज़ है और जो गुमराह हैं. आमीन!

क़ुरान में एक और दुआ आती है :—

"ऐ हमारे और सबके रब! हमें इस दुनिया की सब अच्छी चीज़ें अता कर और दूसरी दुनिया की सब अच्छी चीज़ें भी, और हमें पाप से और नर्क की आग से बचा.

इंजील के नये अहदनामे में ईश्वर से इन शब्दों में दुआ मांगी गई है :—

"ऐ हमारे आसमानी बाप! तेरा नाम उजागर हो! तेरा राज क़ायम हो! इस धरती पर और आसमान पर सब जगह तेरी इच्छा पूरी हो! हमें आज हमारा रोज़ का खाना दे. हमें शक्ति दे कि हम अपने क़र्ज़दारों को माफ़ कर दें. तू हमारे क़र्ज़े माफ़ कर दे. हमें लालच में मत डाल. हमें बुराई से बचा. तेरी ही हुकूमत हो! तेरी ही शक्ति हो! तेरी ही जय हो! हमेशा हमेशा के लिये. ऐमन!"

वेदों के रिशी, इंजील के मसीह और क़ुरान के नबी बल्कि कहना चाहिये कि वेदों के मसीह, इंजील के नबी और क़ुरान के रिशी सब ने ईश्वर अल्लाह से अपना रोज़ का दुनियावी खाना मांगा है. क़ुरान की ऊपर की आयत में भी यही बात है. ऊपर जो वेद मंत्र नक़ल किये गये हैं जिनमें सौ बरस तक की ज़िन्दगी और दुनिया की सब अच्छी अच्छी चीज़ें मांगी गई हैं उनका भी यही मतलब है. किसी मज़हब ने भी इस दुनिया की भलाई की तरफ़ से बेपरवाही नहीं की. सब मज़हबों के मुताबिक़ दूसरी दुनिया में भलाई मिलने के लिये भी इस दुनिया में ठीक रहना ज़रूरी है. सब मज़हब यह भी मानते हैं कि दूसरी यानी आगे की दुनिया भी है. अगर दुनिया भर के लोगों की वोट ले कर आजकल के राजकाजी तरीक़े से तै

ہی ہم زندہ رہیں. ہماری ساری عمر اُسی سب کے اندر رہنے والے ایشور کے لئے ہو."

"ہم سو برس تک اور اِس سے بھی ادھک اِس طرح جئیں کہ ہمیں کسی کا سہارا نہ ڈھونڈھنا پڑے!"

"ہم سو برس تک دیکھتے رہیں. سو برس تک ہمارا بل اور تندرستی بڑھتی رہے، سو برس تک ہم سندر رہیں اور سو برس سے اوپر بھی ہم اِسی طرح جئیں!"

قرآن کی مشہور دعا ہے :—

"ساتھ نام اُس اللہ کے جو رحمان اور رحیم ہے! تعریف اُس اللہ کی جو سب دنیاؤں کا پالنے والا ہے! جو دیاوان اور مہربان ہے! جو اُس دن کا مالک ہے جس دن سب کو اپنے اچھے برے کاموں کا پھل ملے گا! اے اللہ ہم تیری ہی عبادت کرتے ہیں اور تجھ سے ہی مدد چاہتے ہیں! ہمیں 'سیدھا راستہ' دکھلا، اُن لوگوں کا راستہ جن پر تیری نعمتیں اور برکتیں اُترتی ہیں، اُن کا راستہ نہیں جن سے تو ناراض ہے اور جو گمراہ ہیں. آمین!"

قرآن میں ایک اور دعا آتی ہے :—

"اے ہمارے اور سب کے رب! ہمیں اِس دنیا کی سب اچھی چیزیں عطا کر اور دوسری دنیا کی سب اچھی چیزیں بھی، اور ہمیں پاپ سے اور نرک کی آگ سے بچا."

انجیل کے نئے عہدنامے میں ایشور سے اِن شبدوں میں دعا مانگی گئی ہے :—

"اے ہمارے آسمانی باپ! تیرا نام اُجاگر ہو! تیرا راج قائم ہو! اِس دھرتی پر اور آسمان پر سب جگہ تیری اِچھا پوری ہو! ہمیں آج ہمارا روز کا کھانا دے. ہمیں شکتی دے کہ ہم اپنے قرضداروں کو معاف کردیں. تو ہمارے قرضے معاف کردے. ہمیں لالچ میں مت ڈال. ہمیں برائی سے بچا. تیری ہی حکومت ہو! تیری ہی شکتی ہو! تیری ہی جے ہو! ہمیشہ ہمیشہ کے لئے. ایمن!"

ویدوں کے رشی، انجیل کے مسیح اور قرآن کے نبی بلکہ کہنا چاہیئے کہ ویدوں کے مسیح، انجیل کے نبی اور قرآن کے رشی سب نے ایشور اللہ سے اپنا روز کا دنیاوی کھانا مانگا ہے. قرآن کی اوپر کی آیت میں بھی یہی بات ہے. اوپر جو وید منتر نقل کئے گئے ہیں جن میں سو برس تک کی زندگی اور دنیا کی سب اچھی اچھی چیزیں مانگی گئی ہیں اُن کا بھی یہی مطلب ہے. کسی مذہب نے بھی اِس دنیا کی بھلائی کی طرف سے بےپرواہی نہیں کی. سب مذہبوں کے مطابق دوسری دنیا میں بھلائی ملنے کے لئے بھی اِس دنیا میں ٹھیک رہنا ضروری ہے. سب مذہب یہ بھی مانتے ہیں کہ دوسری یعنی آگے کی دنیا بھی ہے. اگر دنیا بھر کے لوگوں کی ووٹ لیکر آجکل کے راج کاجی طریقے سے طے

देखें, बल्कि जब कभी दुआ मांगो तो अपने घर के अन्दर दरवाज़ा बन्द करके अकेले में भगवान से दुआ मांगो."

अब हम अलग अलग मज़हबों की कुछ ख़ास ख़ास प्रार्थनाएं नीचे देते हैं.

हिन्दुओं के गायत्री मन्त्र का ठीक ठीक अनुवाद यह है :—

"ओ३म् ! जागते हुए, सपना देखते हुए और गहरी नींद सोते हुए तीनों हालतों में ऐ सब के मालिक तेरी रूहानी जोत (तेरा नूर) हमारी बुद्धि को रोशन करती और राह दिखाती रहे. हम अपनी अक़्लों को तेरे उस आसमानी नूर के लिये हमेशा खुला रखते हैं. ओ३म् !"

वेदों की कुछ और प्रार्थनाएं यह हैं :—

ओ३म् ! ऐ सब से बड़े राह दिखाने वाले ! ऐ नूर ही नूर और जान ही जान ! ऐ सब कुछ जानने वाले ! हमें 'सीधे रास्ते' से कल्यान (यानी बहबूदी) की तरफ़ ले जा ! हमें शक्ति दे कि हम उन बुराइयों से लड़ सकें जो हमारे अन्दर पैदा होती रहती हैं और हमें ग़लत रास्ते पर डालती रहती हैं ! हम तुझ से ही दुआ मांगते हैं और तेरा ही ध्यान करते हैं ! ओ३म् !"

"ओ३म् ! ऐ सब के मालिक सब पापों को हम से हटा और सब अच्छी बातों और नेकियों की तरफ़ हमें लगा ! ओ३म् !"

"ओ३म् ! ऐ रोशनियों की रोशनी ! मेरा यह मन जो जागते में दूर दूर घूमता रहता है और गहरी नींद में फिर लौट कर अपने में आ जाता है, जो दूर तक जाता है, वह मेरा मन नेक इरादे करने वाला बने."

"मेरा यह मन, मेरी यह बुद्धि, जिसके अन्दर सारा ज्ञान छिपा है, जो जानदार और चेतन है, जिसके अन्दर धीरज है, जो मेरे अन्दर की रोशनी है, जिस के बिना मैं कुछ नहीं, वह मेरा मन नेक इरादे करने वाला बने !"

"मेरा यह मन जिस के अन्दर भूत, भविष्य और वर्तमान (माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल) सब हमेशा के लिये जकड़े हुए हैं, जिस के साथ बाक़ी सारे मन ताने बाने की तरह बुने हुए हैं, वह मेरा मन हमेशा नेक इरादे करने वाला हो ! ओ३म् !"

"ओ३म् ! वह जिस ने सब को बनाया, जो सबका मालिक है, जो सबका बीज है और सब जानने वाला है, जिस से सबकी पैदाइश है, जिससे यह सृष्टि पैदा हुई है और जिस के अन्दर यह समाई हुई है वह परम आत्मा हमें हमेशा अच्छी वाली नेक अक़्ल दे ! ओ३म् !"

"हम अपने कानों से अच्छी बातें ही सुनें, अपनी आंखों से अच्छी चीज़ें ही देखें, हमारे हाथ पांव मज़बूत हों और जब तक हम दूसरों की भलाई कर सकें तब तक

ہیں ۔ بلکہ تو جو
بلکہ کبھی سوریہ جب کبھی دعا مانگو تو اپنے گھر کے اندر
دروازہ بند کر کے اکیلے میں بھگوان سے دعا مانگو ۔"

اب ہم الگ الگ مذہبوں کی کچھ خاص خاص
پرارتھنائیں نیچے دیتے ہیں ۔

ہندوؤں کے گائتری منتر کا ٹھیک ٹھیک انوواد یہ ہے:—

"اوم ! جاگتے ہوئے' سپنا دیکھتے ہوئے اور گہری نیند سوتے ہوئے تینوں حالتوں میں اے سب کے مالک تیری روحانی جوت (تیرا نور) ہماری بدھی کو روشن کرتی اور راہ دکھاتی رہے ۔ ہم اپنی عقلوں کو تیرے اس آسمانی نور کے لئے ہمیشہ کھلا رکھتے ہیں ۔ اوم !"

ویدوں کی کچھ اور پرارتھنائیں یہ ہیں :—

"اوم ! اے سب سے بڑے راہ دکھانے والے ! اے نور ہی نور اور جان ہی جان ! اے سب کچھ جاننے والے ! ہمیں 'سیدھے راستے' سے کلیان (یعنی بہبودی) کی طرف لے جا ! ہمیں شکتی دے کہ ہم ان برائیوں سے لڑ سکیں جو ہمارے اندر پیدا ہوتی رہتی ہیں اور ہمیں غلط راستے پر ڈالتی رہتی ہیں ! ہم تجھ سے ہی دعا مانگتے ہیں اور تیرا ہی دھیان کرتے ہیں ! اوم !"

"اوم ! اے سب کے مالک ! سب پاپوں کو ہم سے ہٹا اور سب اچھی باتوں اور نیکیوں کی طرف ہمیں لگا ! اوم !"

"اوم ! اے روشنیوں کی روشنی ! میرا یہ من جو جاگتے میں دور دور گھومتا رہتا ہے اور گہری نیند میں پھر لوٹ کر اپنے میں آجاتا ہے' جو دور تک جاتا ہے' وہ میرا من نیک ارادے کرنے والا بنے۔"

"میرا یہ من' میری یہ بدھی' جس کے اندر سارا گیان چھپا ہے' جو جاندار اور چیتن ہے' جس کے اندر دھیرج ہے' جو میرے اندر کی روشنی ہے' جس کے بنا میں کچھ نہیں' وہ میرا من نیک ارادے کرنے والا بنے !"

"یہ میرا من جس کے اندر بھوت' بھوشیہ اور ورتمان (ماضی' حال اور مستقبل) سب ہمیشہ کے لئے جکڑے ہوئے ہیں' جس کے ساتھ باقی سارے من تانے بانے کی طرح بنے ہوئے ہیں' وہ میرا من ہمیشہ نیک ارادے کرنے والا ہو ! اوم !"

اوم ! وہ جس نے سب کو بنایا' جو سب کا مالک ہے' جو سب کا بیج ہے اور سب جاننے والا ہے' جس سے سب کی پیدائش ہے' جس سے یہ سرشٹی پیدا ہوئی اور جس کے اندر یہ سمائی ہوئی ہے وہ پرم آتما ہمیں ہمیشہ اچھی والی نیک عقل دے ! اوم !"

"ہم اپنے کانوں سے اچھی باتیں ہی سنیں' اپنی آنکھوں سے اچھی چیزیں ہی دیکھیں' ہمارے ہاتھ پاؤں مضبوط ہوں اور جب تک ہم دوسروں کی بھلائی کرسکیں تب تک

छोटी खुदी से ऊपर और अपने हक़ीक़ी वजूद से बाख़बर हो जाए. जो साइन्सदां या कोई बड़ी ईजाद करने वाला किसी सवाल पर अपना पूरा ध्यान जमाता है वह भी असल में दुआ करता है, योग करता है, कोशिश करता है कि वह सब कुछ जानने वाली शक्ति उस साइन्सदां या ईजाद करने वाले के अन्दर अपनी जानकारी का वह हिस्सा दे दे जिसकी उसे ज़रूरत है.

जो रूहें अभी बचपन की हालत में हैं वह बाहर के ख़ुदा से दुआ मांगती हैं. ज्यों ज्यों समझ आती जाती वह अपने अन्दर के ख़ुदा से दुआ मांगने लगती हैं. जैसे बच्चे हर चीज़ मां बाप या बड़ों से मांगते हैं. जब बड़े हो जाते हैं तो अपने से मांगने लगते हैं. तब हम दूसरों को तकलीफ़ देना पसन्द नहीं करते और जहां तक हो सकता है अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश करते हैं. ज़ाहिर है यह बात हमेशा मुमकिन नहीं होती. सबको कभी कभी अपने से बड़ों से मदद लेनी पड़ती है. अन्त में जा कर फिर सब ख़ुद करना पड़ता है. मां बाप खाना दे सकते हैं, गुरु या पीर जानकारी करा सकता है. पर खाना, चबाना, हज़म करना, समझना, जानना सब हमें ख़ुद ही करना पड़ता है.

सब दुआओं के पीछे एक लगातार दुआ रहती है जो सुनाई नहीं देती. यह सांस की तरह बराबर चलती रहती है. हिन्दू धर्म में इसी को अजपा गायत्री कहते हैं. यह न हो तो कोई जी नहीं सकता. शेख़ सादी ने कहा है :—

'हर सांस जो अन्दर जाता है ज़िन्दगी को शक्ति देता है. हर सांस जो बाहर आता है ख़ून को पाक साफ़ करता है. दोनों तरह के सांस हमारे लिये दो नैमतें हैं. हमें हर नैमत पर शुक्र करना चाहिये.''

जो दुआ या प्रार्थना दिखावे के लिये की जाये वह केवल बेकार ही नहीं हानिकर भी है. आम तौर पर जो दुआ, पूजा या नमाज़ अकेले में बैठ कर की जावे वही सच्ची और अच्छी होती है. बड़ी बड़ी मुसीबतों में और ख़ास मौक़ों पर मिल कर दुआ करने की भी ज़रूरत होती है. जमाअत की नमाज़ अगर ख़ुलूस और सच्चाई के साथ की जावे तो उसका भी असर होता है. अकेले बैठ कर अपना पढ़ने का फ़ायदा है और क्लास में सबके साथ मिल कर पढ़ने का अपना फ़ायदा है. यह सब आदमी की अपनी अपनी हालत, अपनी अपनी तबियत और हालात पर निर्भर है.

दुआ या प्रार्थना से आदमी की रूहानी आंख खुलती है. हज़रत ईसा ने कहा है :—

"जब तुम दुआ करो तो पाखंडियों की तरह मंदिरों या गलियों में खड़े होकर दुआ न मांगो जहां लोग तुम्हें

چھوٹی خودی سے اوپر اور اپنے حقیقی وجود سے باخبر ہوجائے . جو سائنس داں یا کوئی بڑی ایجاد کرنے والا کسی سوال پر اپنا پورا دھیان جماتا ہے وہ بھی اصل میں دعا کرتا ہے یوگ کرتا ہے' کوشش کرتا ہے کہ وہ سب کچھ جاننے والی شکتی اس سائنس‌داں یا ایجاد کرنے والے کے اندر اپنی جانکاری کا وہ حصہ دے دے جس کی اسے ضرورت ہے .

جو روحیں ابھی بچپن کی حالت میں ہیں وہ باہر کے خدا سے دعا مانگتی ہیں . جیوں جیوں سمجھ آتی جاتی ہے وہ اپنے اندر کے خدا سے دعا مانگنے لگتی ہیں . جیسے بچے ہر چیز ماں باپ یا بڑوں سے مانگتے ہیں، جب بڑے ہوجاتے ہیں تو اپنے سے مانگنے لگتے ہیں. تب ہم دوسروں کو تکلیف دینا پسند نہیں کرتے اور جہاں تک ہوسکتا ہے اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کی کوشش کرتے ہیں. ظاہر ہے یہ بات ہمیشہ ممکن نہیں ہوتی . سب کو کبھی کبھی اپنے سے بڑوں سے مدد لینی پڑتی ہے . انت میں جاکر پھر سب خود کرنا پڑتا ہے . ماں باپ کھانا دے سکتے ہیں . گرو یا پیر جانکاری کرا سکتا ہے . پر کھانا' چبانا' ہضم کرنا' سمجھنا' جاننا سب ہمیں خود ہی کرنا پڑتا ہے .

سب دعاؤں کے پیچھے ایک لگاتار دعا رہتی ہے جو سنائی نہیں دیتی . یہ سانس کی طرح برابر چلتی رہتی ہے . ہندو دھرم میں اسی کو اجپا گایتری کہتے ہیں . یہ نہ ہو تو کوئی جی نہیں سکتا . شیخ سعدی نے کہا ہے :—

"ہر سانس جو اندر جاتا ہے زندگی کو شکتی دیتا ہے. ہر سانس جو باہر آتا ہے خون کو پاک صاف کرتا ہے. دونوں طرح کے سانس ہمارے لئے دو نعمتیں ہیں . ہمیں ہر نعمت پر شکر کرنا چاہیئے ."

جو دعا یا پرارتھنا دکھاوے کے لئے کی جائے وہ کیول بےکار ہی نہیں ہانی‌کر بھی ہے . عام طور پر جو دعا پوجا یا نماز اکیلے میں بیٹھکر کی جاوے وہی سچی اور اچھی ہوتی ہے . بڑی بڑی مصیبتوں میں اور خاص موقعوں پر ملکر دعا کرنے کی بھی ضرورت ہوتی ہے . جماعت کی نماز اگر خلوص اور سچائی کے ساتھ کی جائے تو اس کا بھی اثر ہوتا ہے . اکیلے بیٹھکر پڑھنے کا اپنا فائدہ ہے اور کلاس میں سب کے ساتھ ملکر پڑھنے کا اپنا فائدہ ہے . یہ سب آدمی کی اپنی اپنی حالت' اپنی اپنی طبیعت اور حالات پر نربھر ہے .

دعا یا پرارتھنا سے آدمی کی روحانی آنکھ کھلتی ہے . حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—

"جب تم دعا کرو تو پاکھنڈیوں کی طرح مندروں یا گلیوں میں کھڑے ہوکر دعا نہ مانگو جہاں لوگ تمہیں

...कर्म मार्ग ...

... दुनिया ... ज्यादा साफ़ ...

ख्याल होने लगता है. ... मिलने की ज्यादा ज़ोर की ... मुक़ाम भगती मार्ग यानी तरीक़त' का मुक़ाम ... ख़ास तरह की प्यास, जोश, लगन, और जज़बात ... करते हैं. इसी में आदमी के दिल के अन्दर से दुआएं निकलती हैं. इस हालत से निकल कर तीसरी हालत ध्यान, मनन, ग़ौर व ख़ोज की हालत है. उसमें तलाश और खोज का मादा बढ़ता है यह मुक़ाम ज्ञान मार्ग यानी 'हक़ीक़त' का मुक़ाम है जिस से और आगे चल कर मार्फ़त का मुक़ाम आता है. इस हालत पर पहुंच कर आदमी में सब की ख़िदमत और सब के भले की इच्छा जागती है. यह केवल एक बच्चे की सी भोली नेकी की हालत नहीं होती बल्कि अपने फ़र्ज़, अपने कर्तव्य की समझ बूझ के साथ एक ऊंचे दर्जे का ख़्वाहिश, सब की बहतरी और सब के ही ख़्वाहिश, की हालत होती है. यह तीनों हालतें ...

सब दुआओं के पीछे एक लगातार दुआ रहती है जो सुनाई नहीं देती. यह सांस की तरह बराबर चलती रहती है. हिन्दू धर्म में इसी को अजपा गायत्री कहते हैं. यह न हो तो कोई जी नहीं सकता. शेख़ सादी ने कहा है :—

'हर सांस जो अन्दर जाता है ज़िन्दगी को शक्ति देता है. हर सांस जो बाहर आता है ख़ून को पाक साफ़ करता है. दोनों तरह के सांस हमारे लिये दो नेमतें हैं. हमें हर नेमत पर शुक्र करना चाहिये.''

जो दुआ या प्रार्थना दिखावे के लिये की जाये वह केवल बेकार ही नहीं हानिकर भी है. आम तौर पर जो दुआ, पूजा या नमाज़ अकेले में बैठ कर की जावे वही सच्ची और अच्छी होती है. बड़ी बड़ी मुसीबतों में और ख़ास मौक़ों पर मिल कर दुआ करने की भी ज़रूरत होती है. जमाअत की नमाज़ अगर ख़ुलूस और सच्चाई के साथ की जावे तो ... [illegible]

दुआ या प्रार्थना से आदमी की रूहानी ... हालात पर निर्भर है. हज़रत ईसा ने कहा है :—

"जब तुम दुआ करो तो पाखंडियों की तरह ... मंदिरों या मस्जिदों में खड़े होकर दुआ न मांगो जहां लोग तुम्हें ...

है—कर ... बाहर और का ... बच्चे की हालत में हैं, जिनमें ... है, उनके लिये कर्म योग यानी रीत रिवाज ... रास्ता है. जो दुनिया को इतने चिपटे हुए नहीं ... अभी अघाए भी नहीं हैं, जिन्होंने मेरी बाबत कुछ सुन लिया है और जिनके दिल उधर को चल पड़े हैं उनके लिये भगती योग यानी इश्क़ का रास्ता है. जो इस से आगे बढ़कर इल्म हासिल कर चुके हैं और इस माया से ऊपर

سب ہماں خود ہی کرنا ہوتا ہے۔

سب دعاؤں کے پیچھے ایک لگاتار دعا رہتی ہے جو سنائی نہیں دیتی۔ یہ سانس کی طرح برابر چلتی رہتی ہے۔ ہندو دھرم میں اسی کو اجپا گایتری کہتے ہیں۔ یہ نہ ہو تو کوئی جی نہیں سکتا۔ شیخ سعدی نے کہا ہے :—

"ہر سانس جو اندر جاتا ہے زندگی کو شکتی دیتا ہے، ہر سانس جو باہر آتا ہے خون کو پاک صاف کرتا ہے۔ دونوں طرح کے سانس ہمارے لئے دو نعمتیں ہیں۔ ہمیں ہر نعمت پر شکر کرنا چاہئے۔"

جو دعا یا پرارتھنا دکھاوے کے لئے کی جائے وہ کیول بیکار ہی نہیں ہانی کر بھی ہے۔ عام طور پر جو دعا ... [illegible]

चुके हैं और दुनिया के फ़र्ज़ों को केवल फ़र्ज़ समझ कर पूरा करते हैं उनके लिये ज्ञान योग का रास्ता है."

जो रूह इन तीनों मंज़िलों को तय कर लेती है उसके लिये यह तीनों रास्ते आगे चल कर एक दूसरे में मिल जाते हैं. शुरू में यह अलग अलग रहते हैं. शुरू की हालत में ऊपर के रीत रिवाज ज़्यादा चमकते हैं. अन्दर की इच्छा और अन्दर की जानकारी दबी रहती है. यह इच्छा और जानकारी अगर ऊपर दिखाई देती है तो भी रस्मों और रीत रिवाजों में ही दिखाई देती है. इसी से धर्म मज़हब के बारे में तरह तरह के मतभेद और झगड़े खड़े होते हैं, उसी तरह जिस तरह नासमझ बच्चे छोटी छोटी ऊपरी बातों में लड़ते झगड़ते रहते हैं.

अलग अलग धर्मों में जितने झगड़े दिखाई देते हैं अधिकतर रीत रिवाज यानी शरीयत या मामलात में ही होते हैं. लेकिन यहां पर भी यह फ़र्क़ सिर्फ़ ऊपर का फ़र्क़ होता है. इनमें भी सतह के नीचे यानी दिलों के अन्दर बहुत बड़ी एकता और समानता होती है. मुल्क मुल्क और जगह जगह के आदमियों की पोशाकें अलग अलग दिखाई देती है. लेकिन चूंकि कपड़ों के अन्दर का आदमी एक ही सी बनावट का होता है इसलिये सब पोशाकों को उसी बनावट के मुताबिक़ अपने को ढालना पड़ता है.

वेदों की संध्या उपासना, ईसाइयों की दुआ और मुसलमानों की नमाज़ तीनों हक़ीक़त में एक हैं. तीनों के ख़ास हिस्से भी एक दूसरे से इतने मिलते हुए हैं कि एक दूसरे का तर्जुमा मालूम होते हैं. सब उसी एक सर्व शक्तिमान क़ादिरे मुतलक़ से दुआ मांगते हैं जो सारी दुनिया और हमारी सब जिस्मानी, दिमाग़ी और रूहानी शक्तियों का सरचश्मा हैं. सब यही दुआ मांगते हैं कि हमें ठीक ठीक अक़्ल और ठीक ठीक इरादा, अन्दर की रोशनी और हिदायत अता कर ताकि हम बुराइयों से बच सकें और अपने फ़र्ज़ ठीक ठीक अदा कर सकें. ज़ाहिर है कि अगर आदमी की बुद्धि यानी अक़्ल ठीक और नेक है और अगर इरादा यानी संकल्प शक्ति मज़बूत है और बुद्धि के क़ाबू में है तो आदमी के सब काम ठीक होंगे.

यह दुआ या प्रार्थना क्या चीज़ है ? असलियत में प्रार्थना किसी बाहर की शक्ति से नहीं की जाती बल्कि अपने अन्दर के अल्लाह से की जाती है—उसी अल्लाह ईश्वर से जो सबके घट घट में मौजूद है, जो सब जगह है, सब कुछ कर सकता है और सब जानता है. पुराने लोग उसे अव्यक्त या बातिन कहते थे. नई साइन्स उसे 'टोटल अनकानशस' (Total Unconscious) यानी ख़ुद अपने वजूद से बालातर कहती है. दुआ या प्रार्थना का अक्सर यह मतलब होता है कि दुआ करने वाला अपनी

اٹھ چکے ہیں اور دنیا کے فرضوں کو سمجھکر پورا کرتے ہیں اُن کے لئے گیان یوگ کا راستہ ہے "

جو روح اِن تینوں منزلوں کو طے کر لیتی ہے اس کے لئے یہ تینوں راستے آگے چل کر ایک دوسرے میں مل جاتے ہیں ۔ شروع میں یہ الگ الگ رہتے ہیں ۔ شروع کی حالت میں اوپر کے ریت رواج زیادہ چمکتے ہیں ۔ اندر کی اچھا اور اندر کی جانکاری دبی رہتی ہے ۔ یہ اچھا اور جانکاری اگر اوپر دکھائی دیتی ہے تو بھی رسموں اور ریت رواجوں میں ہی دکھائی دیتی ہے ۔ اسی سے دھرم مذہب کے بارے میں طرح طرح کے مت بھید اور جھگڑے کھڑے ہوتے ہیں، اسی طرح جس طرح ناسمجھ بچے چھوٹی چھوٹی اوپری باتوں میں لڑتے جھگڑتے رہتے ہیں۔

الگ الگ دھرموں میں جتنے جھگڑے دکھائی دیتے ہیں وہ اَدھِک تر ریت رواج یعنی شریعت یا معاملات میں ہی ہوتے ہیں ۔ لیکن یہاں پر بھی یہ فرق صرف اوپر کا فرق ہوتا ہے ۔ ان میں بھی سطح کے نیچے یعنی دلوں کے اندر بہت بڑی ایکتا اور سمانتا ہوتی ہے۔ ملک ملک اور جگہ جگہ کے آدمیوں کی پوشاکیں الگ الگ دکھائی دیتی ہیں ۔ لیکن چونکہ کپڑوں کے اندر کا آدمی ایک ہی سی بناوٹ کا ہوتا ہے اس لئے سب پوشاکوں کو اسی بناوٹ کے مطابق اپنے کو ڈھالنا پڑتا ہے ۔

ویدوں کی سندھیا اپاسنا، عیسائیوں کی دعا اور مسلمانوں کی نماز تینوں حقیقت میں ایک ہیں ۔ تینوں کے خاص حصے بھی ایک دوسرے سے اتنے ملتے ہوئے ہیں کہ ایک دوسرے کا ترجمہ معلوم ہوتے ہیں ۔ سب اسی ایک سرو شکتی مان قادر مطلق سے دعا مانگتے ہیں جو ساری دنیا اور ہماری سب جسمانی، دماغی اور روحانی شکتیوں کا سرچشمہ ہے ۔ سب یہی دعا مانگتے ہیں کہ ہمیں ٹھیک ٹھیک عقل اور ٹھیک ٹھیک ارادہ، اندر کی روشنی اور ہدایت عطا کر تاکہ ہم برائیوں سے بچ سکیں اور اپنے فرض ٹھیک ٹھیک ادا کر سکیں ۔ ظاہر ہے کہ اگر آدمی کی بدھی یعنی عقل ٹھیک اور نیک ہے اور اگر ارادہ یعنی سنکلپ شکتی مضبوط ہے اور بدھی کے قابو میں ہے تو آدمی کے سب کام ٹھیک ہونگے ۔

یہ دعا یا پرارتھنا کیا چیز ہے؟ اصلیت میں پرارتھنا کسی باہر کی شکتی سے نہیں کی جاتی بلکہ اپنے اندر کے اللہ سے کی جاتی ہے—اسی اللہ ایشور سے جو سب کے گھٹ گھٹ میں موجود ہے، جو سب جگہ ہے، سب کچھ کر سکتا ہے اور سب جانتا ہے۔ پرانے لوگ اسے اویکت یا باطن کہتے تھے۔ نئی سائنس اسے 'ٹوٹل ان کانشس' (Total Unconscious) یعنی خود اپنے وجود سے بالاتر کہتی ہے۔ دعا یا پرارتھنا کا اکثر یہ مطلب ہوتا ہے کہ دعا کرنے والا اپنی

लिये कुछ जतन या कोशिश करता है. हिन्दू धर्म में इस हालत को कर्म मार्ग और इस्लाम में 'शरीअत' कहते हैं. यह रसम परस्ती का ज़माना होता है उसके बाद आदमी को दूसरी दुनिया का और ईश्वर अल्लाह का कुछ कुछ ज़्यादा साफ़ ख़्याल होने लगता है. उसमें ईश्वर को जानने या उस से मिलने की ज़्यादा ज़ोर की इच्छा पैदा होती है. यह मुक़ाम भगती मार्ग यानी तरीक़त' का मुक़ाम है. इसमें ख़ास तरह की प्यास, जोश, लगन, और जज़बात ज़ोर करते हैं. इसी में आदमी के दिल के अन्दर से दुआएं निकलती हैं. इस हालत से निकल कर तीसरी हालत ध्यान, मनन, ग़ौर व ख़ोज की हालत है. उसमें तलाश और ख़ोज का मादृदा बढ़ता है यह मुक़ाम ज्ञान मार्ग यानी 'हक़ीक़त' का मुक़ाम है जिस से और आगे चल कर मार्फ़त का मुक़ाम आता है. इस हालत पर पहुंच कर आदमी में सब की ख़िदमत और सब के भले की इच्छा जागती है. यह केवल एक बच्चे की सी भोली नेकी की हालत नहीं होती बल्कि अपने फ़र्ज़, अपने कर्तव्य की समझ बूझ के साथ एक ऊंचे दर्जे का ख़्वाहिश, सब की बहतरी और सब के भले की ख़्वाहिश, की हालत होती है. यह तीनों हालतें अकसर एक दूसरे में मिलती जुलती और आदमी के के अन्दर एक तरह की त्रिबेनी भी बनाती रहती हैं. यह हालत तब होती है जब आदमी सब के अन्दर एक ही जान और सब के अन्दर अपने को, अपने अन्दर सब को और सब के अन्दर ख़ुदा को महसूस करने लगता है. उसी वक़्त आदमी महसूस करता है कि :—

शक्ले इन्सां में ख़ुदा था मुझे मालूम न था
चांद बादल में छिपा था मुझे मालूम न था

इन तीनों हालतों की तरफ़ इशारा करते हुए ही मौलाना रूम ने कहा है :—

"पानी मत ढूंढ़, पहले अपने अन्दर प्यास पैदा कर, तो पानी अपने आप तेरे ऊपर से और पीछे से उबलने लगेगा."

भागवत में ईश्वर ने कहा है :—

"लोगों के भले के लिये मैंने तीन तरह का योग बताया है—कर्म योग, भगती योग और ज्ञान योग. इन तीनों से बाहर और कोई रास्ता नहीं है. जिन की आत्माएं अभी बच्चे की हालत में हैं, जिनमें दुनियावी चीज़ों की इच्छा है, उनके लिये कर्म योग यानी रीत रिवाज और रस्मों का रास्ता है. जो दुनिया को इतने चिपटे हुए नहीं हैं लेकिन अभी अघाए भी नहीं हैं, जिन्होंने मेरी बाबत कुछ सुन लिया है और जिनके दिल उधर को चल पड़े हैं उनके लिये भगती योग यानी इल्म का रास्ता है. जो इस से आगे बढ़कर सुकून हासिल कर चुके हैं और इस माया से ऊपर

لئے کچھ جتن یا کوشش کرتا ہے ۔ ہندو دھرم میں اس حالت کو کرم مارگ اور اسلام میں 'شریعت' کہتے ہیں ۔ یہ رسم پرستی کا زمانہ ہوتا ہے ۔ اس کے بعد آدمی کو دوسری دنیا کا اور ایشور اللہ کا کچھ کچھ زیادہ صاف خیال ہونے لگتا ہے ۔ اس میں ایشور کو جاننے یا اس سے ملنے کی زیادہ زور کی اچھا پیدا ہوتی ہے ۔ یہ مقام بھگتی مارگ یعنی ' طریقت ' کا مقام ہے ۔ اس میں خاص طرح کی پیاس، جوش، لگن اور جذبات زور کرتے ہیں۔ اسی میں آدمی کے دل کے اندر سے دعائیں نکلتی ہیں ۔ اس حالت سے نکل کر تیسری حالت دھیان، منن، غور و خوض کی حالت ہے ۔ اس میں تلاش اور کھوج کا مادہ بڑھتا ہے ۔ یہ مقام گیان مارگ یعنی ' حقیقت ' کا مقام ہے جس سے اور آگے چلکر معرفت کا مقام آتا ہے ۔ اس حالت پر پہونچکر آدمی میں سب کی خدمت اور سب کے بھلے کی اچھا جاگتی ہے ۔ یہ کیول ایک بچے کی سی بھولی نیکی کی حالت نہیں ہوتی بلکہ اپنے فرض، اپنے کرتویہ کی سمجھ بوجھ کے ساتھ ایک اونچے درجے کی خواہش، سب کی بہتری اور سب کے بھلے کی خواہش، کی حالت ہوتی ہے ۔ یہ تینوں حالتیں اکثر ایک دوسرے میں ملتی جلتی اور آدمی کے اندر ایک طرح کی تریبنی بھی بناتی رہتی ہیں ۔ یہ حالت تب ہوتی ہے جب آدمی سب کے اندر ایک ہی جان اور سب کے اندر اپنے کو، اپنے اندر سب کو اور سب کے اندر خدا کو محسوس کرنے لگتا ہے ۔ اسی وقت آدمی محسوس کرتا ہے کہ :—

شکل انسان میں خدا تھا مجھے معلوم نہ تھا
چاند بادل میں چھپا تھا مجھے معلوم نہ تھا

ان تینوں حالتوں کی طرف اشارہ کرتے ہوئے ہی مولانا روم نے کہا ہے :—

" پانی مت ڈھونڈھ، پہلے اپنے اندر پیاس پیدا کر، تو پانی اپنے آپ تیرے اوپر سے اور پیچھے سے ابلنے لگیگا ۔"

بھاگوت میں ایشور نے کہا ہے :—

"لوگوں کے بھلے کے لئے میں نے تین طرح کا یوگ بتایا ہے—کرم یوگ، بھگتی یوگ اور گیان یوگ ۔ ان تینوں سے باہر اور کوئی راستہ نہیں ہے ۔ جن کی آتمائیں ابھی بچے کی حالت میں ہیں، جن میں دنیاوی چیزوں کی اچھا ہے، ان کے لئے کرم یوگ یعنی ریت رواج اور رسموں کا راستہ ہے ۔ جو دنیا کو اتنے چپٹے ہوئے نہیں ہیں لیکن ابھی اگھائے بھی نہیں ہیں، جنہوں نے میری بابت کچھ سن لیا ہے اور جن کے دل ادھر کو چل پڑے ہیں ان کے لئے بھگتی یوگ یعنی علم کا راستہ ہے ۔ جو اس سے آگے بڑھکر سکون حاصل کر چکے ہیں اور اس مایا سے اوپر

न्सानी ज़िन्दगी में दुआ यानी प्रार्थना की जगह

(डाक्टर भगवानदास)

आदमी की चेतना यानी उसके होश की तीन हालतें ती हैं. एक हालत भावना या जज़बे की हालत है. इच्छा : ख्वाहिश, सुख या दुख का महसूस करना, क्रोध, दया, ., नफ़रत, जोश, डर सब इसी हालत के अलग अलग प हैं. दूसरी हालत कोई इरादा करने या काम करने की लत है. तीसरी हालत सोचने या विचार करने ी हालत होती है. अंग्रेजी में इन ही तीनों को फ़ीलिंग, ालिंग और थिंकिंग कहते हैं. संस्कृत में इन्हें इच्छा, क्रिया ार ज्ञान भी कह सकते हैं. फ़ारसी में इन्हें ख्वाहिश, फ़ेल ोर इल्म कहा जा सकता है. आदमी हर वक़्त जब होश में ता है इन तीनों में से किसी न किसी एक हालत में ज़रूर ता है. यह हालतें बदलती रहती हैं. कभी कभी इन में से ' दो हालतें साथ साथ चलती हुई भी मालूम होती हैं. र भी हम हमेशा इन्हें एक दूसरे से अलग करके समझ कते हैं. किसी चीज़ को पाने की या अपने से अलग करने ी इच्छा करते है. कभी इस के लिये इरादा, हरकत या काम ते हैं. कभी कुछ देखते, सुनते या समझते हैं. हमारे हर म और हर हरकत से हमें नई जानकारी मिलती है. से फिर नई ख्वाहिशें पैदा होती हैं. ख्वाहिशों से फिर इरादे और नई हरकतें होती हैं. यह चक्कर इसी तरह मेशा चलता रहता है.

बच्चा जब पैदा होता है तो उसमें पहले इच्छा का ज़ोर ता है. वह दूध चाहता है, खाना मांगता है. जब ज़रा ा होता है तो खूब चलता, फिरता, कूदता, फांदता खाई देता है. यहां तक कि कभी कभी उसकी हरकतें मानी मालूम होती हैं. फिर धीरे धीरे उसमें जानकारी ौर समझ पैदा होती है. वह इल्म जमा करता है. धीरे ारे वह अपनी जानकारी को एक तरतीब देता है, इक रूप ता है. उस से उसकी इच्छाएं और बढ़ती हैं. उसमें बड़ी ी इच्छाएं पैदा होती हैं, उन्हें पूरा करने के लिये फिर और बड़े बड़े इरादे और बड़े बड़े काम करता है. यों दिमाग़ी तौर पर बड़ा या बालिग़ होता है.

ठीक यही तीनों हालतें एक तरह से मज़हब में होती . सब से पहली हालत में जाने या अनजाने आदमी पनी आत्मा के लिये कुछ खुराक चाहता है. इस दुनिया उसे जो कुछ दिखता या मिलता है उससे वह कुछ और यादा चाहता है. कुछ तसल्ली चाहता है. फिर वह इसके

انسانی زندگی میں دعا یعنی پرارتھنا کی جگہ

(ڈاکٹر بھگوان داس)

آدمی کی چیتنا یعنی اس کے ہوش کی تین حالتیں ہوتی ہیں ۔ ایک حالت بھاونا یا جذبے کی حالت ہے ۔ اچھا یا خواہش، سکھ یا دکھ کا محسوس کرنا، کرودھ، دیا، پریم، نفرت، جوش، ڈر سب اسی حالت کے الگ الگ روپ ہیں ۔ دوسری حالت کوئی ارادہ کرنے یا کام کرنے کی حالت ہے ۔ تیسری حالت سوچنے یا وچار کرنے کی حالت ہوتی ہے ۔ انگریزی میں ان ہی تینوں کو فیلنگ، ولنگ اور تھنکنگ کہتے ہیں۔ سنسکرت میں انہیں اچھا، کریا اور گیان بھی کہہ سکتے ہیں۔ فارسی میں انہیں خواہش، فعل اور علم کہا جا سکتا ہے ۔ آدمی ہر وقت جب ہوش میں ہوتا ہے ان تینوں میں سے کسی نہ کسی ایک حالت میں ضرور ہوتا ہے ۔ یہ حالتیں بدلتی رہتی ہیں ۔ کبھی کبھی ان میں سے دو دو حالتیں ساتھ ساتھ چلتی ہوئی معلوم ہوتی ہیں ۔ پھر بھی ہم ہمیشہ انہیں ایک دوسرے سے الگ کر کے سمجھ سکتے ہیں ۔ ہم کبھی کسی چیز کو پانے کی یا اپنے سے الگ کرنے کی اچھا کرتے ہیں ۔ کبھی اس کے لئے ارادہ، حرکت یا کام کرتے ہیں ۔ کبھی کچھ دیکھتے، سنتے یا سمجھتے ہیں ۔ ہمارے ہر کام سے اور ہر حرکت سے ہمیں نئی جانکاری ملتی ہے ۔ اس سے پھر نئی خواہشیں پیدا ہوتی ہیں ۔ خواہشوں سے پھر نئے ارادے اور نئی حرکتیں ہوتی ہیں ۔ یہ چکر اسی طرح ہمیشہ چلتا رہتا ہے ۔

بچہ جب پیدا ہوتا ہے تو اس میں پہلے اچھا کا زور ہوتا ہے ۔ وہ دودھ چاہتا ہے، کھانا مانگتا ہے ۔ جب ذرا بڑا ہوتا ہے تو خوب چلتا، پھرتا، کودتا، پھاندتا دکھائی دیتا ہے۔ یہاں تک کہ کبھی کبھی اسکی حرکتیں بےمعنی معلوم ہوتی ہیں ۔ پھر دھیرے دھیرے اس میں جانکاری اور سمجھ پیدا ہوتی ہے ۔ وہ علم جمع کرتا ہے ۔ دھیرے دھیرے وہ اپنی جانکاری کو اِک ترتیب دیتا ہے، اِک روپ دیتا ہے ۔ اس سے اسکی اچھائیں اور بڑھتی ہیں ۔ اس میں بڑی بڑی اچھائیں پیدا ہوتی ہیں ۔ انہیں پورا کرنے کے لئے پھر وہ اور بڑے بڑے ارادے اور بڑے بڑے کام کرتا ہے ۔ یوں وہ دماغی طور پر بڑا یا بالغ ہوتا ہے ۔

ٹھیک یہی تینوں حالتیں ایک طرح سے مذہب میں ہوتی ہیں ۔ سب سے پہلی حالت میں جانے یا انجانے آدمی اپنی آتما کے لئے کچھ خوراک چاہتا ہے ۔ اس دنیا میں اسے جو کچھ دکھتا یا ملتا ہے اس سے وہ کچھ اور زیادہ چاہتا ہے۔ کچھ تسلی چاہتا ہے۔ پھر وہ اس کے

वह पनघट, वह नहरें, वह ज़ीनत के सामां
तमद्दुन के फ़ानूस हरसू फ़रोज़ां

वह आबाद शह्र और ऊंचे शिवाले
वह सरसब्ज़ गुलशन, वह फूलों के थाले
बताओ, तुम्हें उनसे उलफ़त नहीं है ?
सकूं-सोज़ शोलों से नफ़रत नहीं है ?

तुम्हें अपनी धरती की चाहत नहीं है ?
वतन की भी क्या दिल में इज़्ज़त नहीं है ?

मेरे हम-नशीनो ! मेरे हम-ज़बानो !
ज़माने की तारीख़ के पासबानो !

ख़ुदा के लिये रामो सीता की ख़ातिर
कलामे ख़ुदा और गीता की ख़ातिर

हक़ीक़त पसन्दों के ईमां की ख़ातिर
वफ़ाकेश माओं के अरमां की ख़ातिर

मुहब्बत की दिलदादा बहनों की ख़ातिर
दुल्हन के सुहाग और गहनों की ख़ातिर

ठुमकते हुए नन्हे बच्चों की ख़ातिर
महकते हुए खिलते गुंचों की ख़ातिर

तरक़्क़ीए इबनाये दौरां की ख़ातिर
हयात और तहज़ीबे इन्सां की ख़ातिर

क़सम अम्ने आलम की सब मिल के खाएं
चमन की तरह बज़्मे गेती सजाएं

कभी तीसरी जंग होने न दें हम
तमद्दुन का बेड़ा डुबोने न दें हम

अटामिक इनरजी को हम क़ैद कर दें
जहां-सोज़ अन्सर को नापैद कर दें

लड़ाई के हथियार बर्बाद कर दें
ज़माने को ख़तरे से आज़ाद कर दें

फ़रोज़ां = जगमगाते; सुकूं-सोज़ = इतमीनान को भस्म कर देने वाले; इबनाए दौरां = मनुश जाति; बज़्मे गेती = दुनिया; अंसर = तत्व.

وہ آباد شہر اور اونچے شوالے
وہ سرسبز گلشن، وہ پھولوں کے تھالے

وہ پنگھٹ، وہ نہریں، وہ زینت کے ساماں
تمدن کے فانوس ہر سو فروزاں
بتاؤ، تمہیں ان سے الفت نہیں ہے ؟
سکوں‌سوز شعلوں سے نفرت نہیں ہے ؟

تمہیں اپنی دھرتی کی چاہت نہیں ہے ؟
وطن کی بھی کیا دل میں عزت نہیں ہے ؟

مرے ہم نشینو! مرے ہم زبانو!
زمانے کی تاریخ کے پاسبانو!

خدا کے لئے، رام و سیتا کی خاطر
کلام خدا اور گیتا کی خاطر

حقیقت پسندوں کے ایماں کی خاطر
وفاکیش ماؤں کے ارماں کی خاطر

محبت کی دلدادہ بہنوں کی خاطر
دلہن کے سہاگ اور گہنوں کی خاطر

ٹھمکتے ہوئے ننھے بچوں کی خاطر
مہکتے ہوئے کھلتے غنچوں کی خاطر

ترقئی ابنائے دوراں کی خاطر
حیات اور تہذیب انساں کی خاطر

قسم امن عالم کی سب مل کے کھائیں
چمن کی طرح بزم گیتی سجائیں

کبھی تیسری جنگ ہونے نہ دیں ہم
تمدن کا بیڑا ڈبونے نہ دیں ہم

اٹامک انرجی کو ہم قید کر دیں
جہاں‌سوز عنصر کو ناپید کر دیں

لڑائی کے ہتھیار برباد کر دیں
زمانے کو خطرے سے آزاد کر دیں

فروزاں = جگمگاتے؛ سکوں سوز = اطمینان کو بھسم کرنے والے؛ ابنائے دوراں = منش جاتی؛ بزم گیتی = دنیا؛ عنصر = تتو ۔

वह "ताज" "आगरे" का कि ख्वाबे हसीं है
सनाअत में सानी ही जिसका नहीं है

वह दीवारे चीं जो है सद्दे सिकन्दर
वह "अहरामे मिस्री" अज़ीम और बरतर

अलुलअज़्मयों के वह आसारे दिलकश !
जवां हौसलों के वह शहकारे दिलकश !

वह तख़लीक़ की क़ूवते कामरानी !
कि हर नक़्श में ज़िन्दगी जाविदानी

वह जांबख़्श नग़मे ! वह शीरीं नवाई !
वह दरयाये गंगा, वह उसकी तराई !

वह गाते हुए आबशारों का आलम !
वह जंगल के फ़ितरी नज़ारों का आलम !

फ़लक बोस कोहे हिमालय की रफ़अत !
वह उसकी जलालत, वह शौकत, वह हैबत !

वह खेतों में जो ख़ुशनुमा बालियां हैं
लचकती हुई फूलों की डालियां हैं

वह सहरा के वहशी ग़ज़ालों का आलम
परी-चहरा रंगीं-जमालों का आलम

वह देहात, वह कोहसारों का आलम
लहकते हुए मर्ग़ज़ारों का आलम

हवाई जहाज़ों की वह तेज़ परवाज़
वह बेदार-कुन रेलगाड़ी की आवाज़

मिलों, कारख़ानों की मशग़ूल दुनिया
वह अहले तजारत की मक़बूल दुनिया

सनाअत = कारीगरी; सानी = दूसरा जोड़; अज़ीम = महान; अलुलअज़्मयों = साहस; आसार = निशानियां; तख़लीक़ = उत्पन्न करना; क़ूवते कामरानी = सफलता की शक्ति; जाविदानी = हमेशा रहने वाली; जां-बख़्श नग़मे = प्रान-दायक गीत; शीरीं नवाई = सुरीली आवाज़; फ़ितरी = प्राकृतिक; फ़लक-बोस = गगन चुम्बी; रफ़अत = ऊंचाई; जलालत = महानता; शौकत = शान; हैबत = रोब; सहरा = जंगल; वहशी = जंगली यानी चंचल; ग़ज़ालों = हिरन; आलम = आनन्द; रंगीं जमालों = रूपवानों; कोहसारों = पहाड़ों; मर्ग़ज़ारों = खेतों; परवाज़ = उड़ान; बेदार-कुन = जगाने वाली; अहले तजारत = व्योपारियों.

وہ "تاج" "آگرے" کا کہ خواب حسیں ہے
صناعت میں ثانی ہی جسکا نہیں ہے

وہ دیوار چیں جو ہے سد سکندر
وہ "اہرام مصری" عظیم اور برتر

اولوالعزموں کے وہ آثار دلکش !
جواں حوصلوں کے وہ شہکار دلکش !

وہ تخلیق کی قوت کامرانی !
کہ ہر نقش میں زندگی جاودانی

وہ جاں بخش نغمے ! وہ شیریں نوائی !
وہ دریائے گنگا، وہ اس کی ترائی !

وہ گاتے ہوئے آبشاروں کا عالم !
وہ جنگل کے فطری نظاروں کا عالم !

فلک بوس کوہ ہمالہ کی رفعت !
وہ اس کی جلالت، وہ شوکت، وہ ہیبت !

وہ کھیتوں میں جو خوشنما بالیاں ہیں
لچکتی ہوئی پھولوں کی ڈالیاں ہیں

وہ صحرا کے وحشی غزالوں کا عالم
پری چہرہ رنگیں جمالوں کا عالم

وہ دیہات، وہ کوہساروں کا عالم
لہکتے ہوئے مرغزاروں کا عالم

ہوائی جہازوں کی وہ تیز پرواز
وہ بیدارکن ریل گاڑی کی آواز

ملوں، کارخانوں کی مشغول دنیا
وہ اہل تجارت کی مقبول دنیا

صناعت = کاریگری؛ ثانی = دوسرا جوڑ؛ عظیم = مہان؛ اولوالعزموں = ساہس؛ آثار = نشانیاں؛ تخلیق = اتپن کرنا؛ قوت کامرانی = سپھلتا کی شکتی؛ جاودانی = ہمیشہ رہنے والی؛ جاں بخش نغمے = پران دایک گیت؛ شیریں نوائی = سریلی آواز؛ فطری = پراکرتک؛ فلک بوس = گگن چمبی؛ رفعت = اونچائی؛ جلالت = مہانتا؛ شوکت = شان؛ ہیبت = رعب؛ صحرا = جنگل؛ وحشی = جنگلی یعنی چنچل؛ غزالوں = ہرن؛ عالم = آنند؛ رنگیں جمالوں = روپوانوں؛ کوہساروں = پہاڑوں؛ مرغزاروں = کھیتوں؛ پرواز = اڑان؛ بیدارکن = جگانے والی؛ اہل تجارت = بیوپاریوں۔

हज़ारों जफ़ाओं के पंजे में हम हैं
अभी साम्राजी शिकंजे में हम हैं
जो बरपा था हंगामा दबने न पाया
कि ग़म्माज़ों ने ताज़ा फ़ितना उठाया
हवा "कोरिया" से कुछ ऐसी चली है
जहां देखिये "शोर है, खलबली है"

मेरे साथियो ! हां ! मेरे हम-ख़यालो !
क़दामत की ज़ंजीर को तोड़ डालो

समाजी बखेड़ों से आज़ाद हो कर
घुलो और मिलो जिस तरह शीरो-शक्कर
हलाकत का तूफ़ान ऐसा उठेगा
न आला बचेगा न अदना बचेगा
छिड़ी जंग अब तो पड़ेगा वह बिपता
बजुज़ मर्ग जिसका नहीं कोई चारा
ग़लत है कि हम लोग बच कर रहेंगे
बमों और फ़ौलाद की गोलियों से
लहू के समुंदर में बहना पड़ेगा
न हंसते बनेगा न रोते बनेगा

मेरे हम-नवाओ, अदीबो, किसानो !
तमद्दुन के, तहज़ीब के, पासबानो !

तुम्हीं ने कंवल ज़िन्दगी के खिलाये
अंधेरे से सब को उजाले में लाये
तुम्हारी शुजाअत के आगे जो देखा
निगूं सर हुआ जिसने भी सर उठाया
यह इमरोज़—"फ़र्दा का जो आसरा है"
तुम्हें अपने माज़ी से तोहफ़ा मिला है
यह तोहफ़ा तुम्हारे लिये बेबहा है
इसी से तो नस्ले बशर की बक़ा है
"अलोरा" "अजनता" की सब यादगारें
तुम्हारे चमन की हैं रंगीं बहारें

शिकंजे = पंजे, ग़म्माज़ों = चालबाज़ों, क़दामत = प्राचीनता, आला = ऊंचा, अदना = नीचा, बजुज़ = सिवा, हम-नवाओ = साथियो, शुजाअत = बहादुरी, सर नगूं होना = मात खाना, इमरोज़ = आज, फ़र्दा = कल, बशर = आदमी, बक़ा = जीवन.

ہزاروں جفاؤں کے پنجے میں ہم ہیں
ابھی سامراجی شکنجے میں ہم ہیں
جو برپا تھا ہنگامہ دبنے نہ پایا
کہ غمازوں نے تازہ فتنہ اٹھایا
ہوا "کوریا" سے کچھ ایسی چلی ہے
جہاں دیکھئے، "شور ہے، کھلبلی ہے"

میرے ساتھیو! ہاں! میرے ہم خیالو!
قدامت کی زنجیر کو توڑ ڈالو

سماجی بکھیڑوں سے آزاد ہوکر
گھلو اور ملو جس طرح شیر و شکر
ہلاکت کا طوفان ایسا اٹھے گا
نہ اعلیٰ بچے گا، نہ ادنیٰ بچے گا
چھڑی جنگ اب تو پڑے گی وہ بپتا
بجز مرگ جس کا نہیں کوئی چارا
غلط ہے کہ ہم لوگ بچ کر رہیں گے
بموں اور فولاد کی گولیوں سے
لہو کے سمندر میں بہنا پڑے گا
نہ ہنستے بنے گا نہ روتے بنے گا

میرے ہم نواؤ، ادیبو، کسانو!
تمدن کے، تہذیب کے، پاسبانو!

تمہیں نے کنول زندگی کے جلائے
اندھیرے سے سب کو اجالے میں لائے
تمہاری شجاعت کے آگے جو دیکھا
نگوں سر ہوا جس نے بھی سر اٹھایا
یہ امروز—"فردا کا جو آسرا ہے"
تمہیں اپنے ماضی سے تحفہ ملا ہے
یہ تحفہ تمہارے لئے بے بہا ہے
اسی سے تو نسل بشر کی بقا ہے
"الورہ" "اجنتا" کی سب یادگاریں
تمہارے چمن کی ہیں رنگیں بہاریں

شکنجے = پنجے؛ غمازوں = چالبازوں؛ قدامت = پراچینتا؛ اعلیٰ = اونچا؛ ادنیٰ = نیچا؛ بجز = سوا؛ ہم نواؤ = ساتھیو؛ شجاعت = بہادری؛ سرنگوں ہونا = مات کھانا؛ امروز = آج؛ فردا = کل؛ بشر = آدمی؛ بقا = جیون۔

12 MAY 1954

नया हिन्द | نیا ہند

जिल्द 16 | मई सन '54 | नम्बर 5

نمبر 5 | مئی سن '54 | جلد 16

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

कभी तीसरी जंग होने न दें हम

(सआदत नज़ीर)

वह तोपें वह जंगी जहाज़ों के बेड़े!
वह सैलाबे जंग और उसके थपेड़े!
वह ख़ूंख़्वार रातें, भयानक सवेरा!
हर इक सिम्त छाया हुआ घुप अंधेरा

गुज़िश्ता लड़ाई ने वह दिन दिखाए
कि दिल कांप उट्ठा, जहां याद आए
कहीं उसने कुश्तों के पुश्ते लगाये
कहीं उसने दरया लहू के बहाये

कहीं हीरोशीमा पै ऐटम गिराये
कि सौ साल तक भी पनपने न पाये
उड़े होश आलम के, वह ज़ुल्म ढाये
क़यामत से भी बढ़के फ़ितने जगाये

अभी तक बिलखती हुई आत्माएं
फ़क़त अम्न की मांगती हैं दुआएं
तड़पते दिलों की हैं यह इल्तजाएं
कि हो दूर दुख, चैन के दिन फिर आएं

अंधेरे में वे और अंधेरे में हम हैं
हज़ारों बलाओं के घेरे में हम हैं

सैलाब = बाढ़; गुज़िश्ता = पिछली; कुश्तों = मरने वाले; पुश्ते = ढेर; आलम = जग.

کبھی تیسری جنگ ہونے نہ دیں ہم

(سعادت نظیر)

وہ توپیں، وہ جنگی جہازوں کے بیڑے!
وہ سیلاب جنگ اور اس کے تھپیڑے!
وہ خونخوار راتیں، بھیانک سویرا!
ہر اک سمت چھایا ہوا گھپ اندھیرا

گزشتہ لڑائی نے وہ دن دکھائے
کہ دل کانپ اٹھا، جہاں یاد آئے
کہیں اس نے کشتوں کے پشتے لگائے
کہیں اس نے دریا لہو کے بہائے

کہیں "ہیروشیما" پہ ایٹم گرائے
کہ سو سال تک بھی پنپنے نہ پائے
اڑے ہوش عالم کے، وہ ظلم ڈھائے
قیامت سے بھی بڑھکے فتنے جگائے

ابھی تک بلکھتی ہوئی آتمائیں
فقط امن کی مانگتی ہیں دعائیں
تڑپتے دلوں کی ہیں یہ التجائیں
کہ ہو دور دکھ، چین کے دن پھر آئیں

اندھیرے میں وے اور اندھیرے میں ہم ہیں
ہزاروں بلاؤں کے گھیرے میں ہم ہیں

سیلاب = باڑھ؛ گزشتہ = پچھلی؛ کشتوں = مرنے والے؛ پشتے = ڈھیر؛ عالم = جگ۔

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

मई 1954

क्या किस से	सफ़ा

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

مئی

کیا کس سے	صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال' باہر دس روپیہ سال' ایک پرچہ—دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'
145' مٹھی گنج' الہ آباد3

नया हिन्द

एडीटर— ताराचंद, भगवानदास, सैयद महमूद, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल
ایڈیٹر — تاراچند، بھگوان داس، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर सुरेश रामभाई, मुर्तज़ा रिज़वी
نائب ایڈیٹر — سریش رام بھائی، مرتضیٰ رضوی

* * * * *

मई 1954 مئی

नई किताब

गंगा से गोमती तक

"......मुजीब की कहानियों की विशेषता [illegible] भी है, मामूली पढ़ा लिखा आदमी इन्हें बिना किसी की मदद के समझ सकता है. सरलता के साथ भाषा में [illegible] और ज़िन्दादिली इस तरह है जिस तरह ऊँचे [illegible] लेखकों में झलकती है.

इन कहानियों में हास्य भी है, करुणा [illegible] कहीं हँसते हँसते पेट में बल पड़ेंगे, तो कहीं पढ़ते-पढ़ते [illegible] दुःख से [illegible] हो जाएंगे. मुजीब की कहानियाँ [illegible] कोमल भावनाएँ जगाती हैं, हमें अच्छा इनसान बनाती हैं."

—डाक्टर राम विलास शर्मा

"......वह (मुजीब) समाज साफ़ करना चाहते हैं, समाज को सम्भालना चाहते हैं. इसलिये वह [illegible] कामकाजी चाहते हैं और ऐसा नुकीला कि [illegible] चला जाए..." यह कहानियाँ जगह जगह हमारा ध्यान समाज में होने वाले अन्यायों और अत्याचारों की तरफ़ खींचती हैं. संग्रह की कहानियों में एक सीधी अकृत्रिमता है, जो अच्छी लगती है."

—जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में १८० सफ़े हैं, तिरंगा [illegible] कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. [illegible] मंगा लीजिये.

—मैनेजर नया हिन्द

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

گنگا سے گومتی تک

"......مجیب کی کہانیوں کی خصوصیت ان کی سادگی بھی ہے۔ معمولی پڑھا لکھا آدمی انہیں بنا کسی کی مدد کے سمجھ سکتا ہے۔ سادگی کے ساتھ بھاشا میں [illegible] زندہ دلی اس طرح ہے جس طرح اونچے پائے کے لیکھکوں میں ملتی ہے۔

ان کہانیوں میں ہاسیہ بھی ہے، درد بھی ہے۔ کہیں ہنستے ہنستے پیٹ میں بل پڑینگے، تو کہیں پڑھتے پڑھتے آپ دکھ سے [illegible] ہو جائینگے۔ مجیب کی کہانیاں کومل بھاؤنائیں جگاتی ہیں، ہمیں اچھا انسان بناتی ہیں۔"

—ڈاکٹر رام بلاس شرما

"......وہ (مجیب) سماج صاف کرنا چاہتے ہیں [illegible] چاہتے ہیں اور ایسی نوکیلی کہ [illegible] چلی جائے... یہ کہانیاں جگہ جگہ ہمارا دھیان سماج میں ہونے والے انیایوں اور اتیاچاروں کی طرف کھینچتی ہیں... سنگرہ کی کہانیوں میں ایک سیدھی اکرترمتا ہے، جو اچھی لگتی ہے۔"

—جینندر کمار

لگ بھگ ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے "گنگا سے گومتی" کو سراہا ہے۔

"گنگا سے گومتی تک" میں 180 صفحے ہیں، ترنگا [illegible] کور، بڑھیا جلد، دام کیول دو روپیہ۔ جلدی [illegible] منگائیے۔

—مینیجر نیا ہند

ملنے کا پتا—

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabhai at the Naya Hind Press, 145 Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी

मक़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

: : :

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट - मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा. वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट डा० भगवानदास; सेक्रेटरी - पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम प्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

115, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

: : :

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندرلال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی،

115 مٹھی گنج، الہ آباد

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کر دی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے

लिये बरकत हो सकता है अगर हम सोच समझ कर अपना रास्ता तय करें.

हाईड्रोजन बम मालिक की तरफ़ से संदेशा है जो कह रहा है कि होश में आओ, अपने दिल को टटोलो और अपनी असली ताक़त पर, अपने आत्मबल पर भरोसा करो. वह हम से इंसान बनने की अपील कर रहा है और हैवानियत छोड़ कर इंसानियत का रास्ता अख़्तियार करने को इशारा कर रहा है.

9. 4. '54 —सुरेश रामभाई

لئے برکت ہو سکتا ہے اگر ہم سوچ سمجھکر اپنا راستہ طے کریں۔

ہائڈروجن بم مالک کی طرف سے سندیشہ ہے جو کہہ رہا ہے کہ ہوش میں آؤ، اپنے دل کو ٹٹولو اور اپنی اصلی طاقت پر، اپنے آتم بل پر بھروسہ کرو۔ وہ ہم سے انسان بننے کی اپیل کر رہا ہے اور حیوانیت چھوڑ کر انسانیت کا راستہ اختیار کرنے کو اشارہ کر رہا ہے۔

9. 4. '54 —سریش رامبھائی

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है." 8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, उम्दा छपाई, दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے، اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی۔

" ان کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی، تازگی اور سوتر کے قائل ہیں۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے۔ کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے۔" 8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ سندر جلد، بڑھیا کاغذ۔ عمدہ چھپائی، دام صرف تین روپیہ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن۔

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج الہ آباد۔

बीमारी को जड़ से पकड़ें और फिर उसके इलाज की कोशिश करें. अगर सर दर्द है तो इसप्रीन की गोली खाने से वह दर्द भले कम हो जाये लेकिन जड़ नहीं जायेगी. इसके लिये हाज़मा ठीक करना होगा. दूसरे लफ़्ज़ों में दुनिया के हर मुल्क के लोगों को और जहां तक हो सके हर गांव को खाने पीने व कपड़े लत्ते जैसी बुनियादी ज़रूरतों के मामले में अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिये. जब तक ऐसा नहीं होता तब तक एक दूसरे के कच्चे या पक्के माल के लिये लालच बना रहेगा और झगड़े होते रहेंगे. यानी ज़रूरत है कि यह पूंजीवादी तहज़ीब खतम हो. न कोई मुल्क अपनी ज़रूरत से ज्यादा माल बनावें और न कोई मुल्क ऐसा हो जो अपनी ज़रूरतों के लिये अपने पैरों पर खड़ा न हो. इसी का नाम आर्थिक बराबरी या स्वावलम्बन है. आदमी आदमी सब बराबर. पुराने आर्थिक निज़ाम को बदल कर इस नये निज़ाम के ज़रिये ही हम हाईड्रोजन बम या मौत बम का मुक़ाबला कर सकेंगे.

लेकिन दुनिया के सामने इस वक़्त हिन्दुस्तान का ऐसी बात कहना छोटे मुंह बड़ी बात जैसा होगा. पहले अपने घर में अमल चाहिये और फिर बाहर वाले मुल्क आप से आप उसे ग्रहन करेंगे. लिहाज़ा पंडित जवाहरलाल नेहरू और हुकूमत हिन्द से हमारी गुज़ारिश है कि हायड्रोजन बम पर पाबंदी का मुआहदा हो या न हो, इन्हें हिन्दुस्तान में हाइड्रोजन बम की चुनौती का अमली जवाब पेश करने की कोशिश करनी चाहिये. इसलिये यह लाज़मी है कि हमारा हर गांव बुनियादी ज़रूरतों पर अपने पैरों पर खड़ा हो और गांव का इंतज़ाम गांव वालों के ही सुपुर्द हो. सवाल होगा कि इस के लिये गांव कहां तैयार हैं? बड़े अदब के साथ हम अर्ज़ करना चाहते हैं कि हमारे गांव तो तैयार हैं, लेकिन हमारे बड़े बड़े हुक्काम और इनके हमख्याल शहराती तैयार नहीं हैं. भूदान के सिलसिले में हमें हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ़ हिस्सों में घूम घूम कर जनता जनार्दन के दर्शन करने का इत्तफ़ाक़ हुआ है. हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि जनता बेज़ार है और हुक्कामों से, मौजूदा निज़ाम से तंग आ गई है और अपने बलखड़े होने का मौक़ा चाहती है.

अगर हमारी सरकार जनता के इस जज़बों की क़द्र करती है तो उसे अपने रंग ढंग में शुरू से आखीर तक, ऊपर से नीचे तक तबदीली करना होगी और अपनी रफ़तार को बदलना होगा. हमें अमरीका और इंगलैंड की नक़ल करने के बजाय महात्मा गांधी के उपदेशों और एक दर्जे तक पड़ोसी चीन की तरफ़ देखना होगा. सरकार ऐसा नहीं करती है तो हाईड्रोजन बम के डर से मुल्क को चंद देशी और चंद विदेशी व्यापारियों के सुपुर्द कर देगी और हम नंगे भूके दूसरों की गोलियों या बमों का शिकार बनेंगे. पूरे ज़ोर के साथ हम कहना चाहते हैं कि हाईड्रोजन बम हमारे

بیماری کو جڑ سے پکڑیں اور پھر اس کے علاج کی کوشش کریں۔ اگر سر میں درد ہے تو اسپرین کی گولی کھانے سے وہ درد بھلے کم ہوجائے لیکن جڑ نہیں جائے گی۔ اس کے لئے ہاضمہ ٹھیک کرنا ہوگا۔ دوسرے لفظوں میں دنیا کے ہر ملک کے لوگوں کو اور جہاں تک ہو سکے ہر گاؤں کو کھانے پینے و کپڑے لتے جیسی بنیادی ضرورتوں کے معاملے میں اپنے پیروں پر کھڑا ہونا چاہیئے۔ جب تک ایسا نہیں ہوتا تب تک ایک دوسرے کے کچے یا پکے مال کے لئے لالچ بنا رہے گا اور جھگڑے ہوتے رہیں گے۔ یعنی ضرورت ہے کہ یہ پونجی وادی تہذیب ختم ہو۔ نہ کوئی ملک اپنی ضرورت سے زیادہ مال بناوے اور نہ کوئی ملک ایسا ہو جو اپنی ضرورتوں کے لیئے اپنے پیروں پر کھڑا نہ ہو۔ اسی کا نام آرتھک برابری یا سواولمبن ہے۔ آدمی آدمی سب برابر۔ پرانے آرتھک نظام کو بدل کر اس نئے نظام کے ذریعہ ہی ہم ہائیڈروجن بم یا موت بم کا مقابلہ کر سکیں گے۔

لیکن دنیا کے سامنے اس وقت ہندستان کا ایسی بات کہنا چھوٹے منہ بڑی بات جیسا ہوگا۔ پہلے اپنے گھر میں عمل چاہیئے اور پھر باہر والے ملک آپ سے آپ اسے گرہن کریں گے۔ لہذا پنڈت جواہر لال نہرو اور حکومت ہند سے ہماری گذارش ہے کہ ہائیڈروجن بم پر پابندی کا معاہدہ ہو یا نہ ہو، انہیں ہندستان میں ہائیڈروجن بم کی چنوتی کا عملی جواب پیش کرنے کی کوشش کرنی چاہیئے۔ اس کے لئے یہ لازمی ہے کہ ہمارا ہر گاؤں بنیادی ضرورتوں پر اپنے پیروں پر کھڑا ہو اور گاؤں کا انتظام گاؤں والوں کے ہی سپرد ہو۔ سوال ہوگا کہ اس کے لئے گاؤں کہاں تیار ہیں؟ بڑے ادب کے ساتھ ہم عرض کرنا چاہتے ہیں کہ ہمارے گاؤں تو تیار ہیں، لیکن ہمارے بڑے بڑے حکام اور ان کے ہم خیال شہراتی تیار نہیں ہیں۔ بھودان کے سلسلہ میں ہمیں ہندستان کے مختلف حصوں میں گھوم گھوم کر جنتا جناردن کے درشن کرنے کا اتفاق ہوا ہے۔ ہم اس نتیجے پر پہنچے ہیں کہ جنتا بیزار ہے اور حکاموں سے، موجودہ نظام سے تنگ آ گئی ہے اور اپنے بل پر کھڑے ہونے کا موقع چاہتی ہے۔

اگر ہماری سرکار جنتا کے اس جذبہ کی قدر کرتی ہے تو اسے اپنے رنگ ڈھنگ میں شروع سے آخیر تک، اوپر سے نیچے تک تبدیلی کرنا ہوگی اور اپنی رفتار کو بدلنا ہوگا۔ ہمیں امریکہ اور انگلینڈ کی نقل کرنے کے بجائے مہاتما گاندھی کے اپدیشوں اور ایک درجہ تک پڑوسی چین کی طرف دیکھنا ہوگا۔ سرکار ایسا نہیں کرتی ہے تو ہائیڈروجن بم کے ڈر سے ملک کو چند دیشی اور چند ودیشی بیوپاریوں کے سپرد کر دیگی اور ہم ننگے بھوکے دوسروں کی گولیوں یا بموں کا شکار بنیں گے۔ پورے زور کے [illegible] کہ ہائیڈروجن بم ہمارے

पागल हैं ? यह सवाल काफ़ी गहरे हैं जिन पर तफ़सील से ग़ौर करना तो मुश्किल होगा. लेकिन एक सरसरी निगाह से हम ज़रूर ग़ौर करेंगे. आजकल बड़े बड़े मुल्क या सरकारें यही समझती हैं कि दुनिया की भलाई व बेहतरी जिस अच्छे तरीक़े से वह कर सकती हैं कोई दूसरा नहीं कर सकता. वह अपने ही तरीक़े से दुनिया की भलाई करना चाहती हैं. लेकिन जब भलाई करने पर आती हैं तो देखती हैं कि दूसरे मुल्कों में बंदोबस्त या इन्तज़ाम ऐसा है जो इन्हें ठीक से भलाई करने का मौक़ा नहीं देता. इसलिये वह चाहती हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा मुल्कों में इन्तज़ाम उनकी अपनी मंशा के मुताबिक़ हो, यानी वहां की हुकूमत में उनका हाथ रहे, दूसरे लफ़्ज़ों में वह हर जगह अपनी हुकूमत चाहती हैं. इस तरह भलाई या ख़िदमत के नाम पर दूसरे देशों पर अपना असर या हुकूमत क़ायम करने की ज़रूरत पड़ती है ! जो अपनी हुकूमत में हो, वही सभ्य और बाक़ी सब जंगली. इसलिये बड़ी हुकूमतें यह कहा करती हैं कि तहज़ीब का तक़ाज़ह है कि हम आपकी ज़बरदस्ती मरम्मत करें ! अगर उनसे कहिये कि हम अपने घर ख़ुश हैं, और हमारी फ़िक्र न करें, तो यह बात उन्हें जंचती नहीं और वह कहती हैं कि आप यह बात ग़ैर जानकारी की वजह से कह रहे हैं, हमारा साबक़ा पड़ने दीजिये तब आपको मज़ा आयेगा.

लेकिन बड़ी सरकारों की इस दलील की एक और भी गहरी वजह है. वह यह कि सिरजनहार की तरफ़ से न कोई मुल्क मुकम्मल है न कोई सरकार. हमेशा किसी न किसी चीज़ की दरकार हर आदमी या सरकार को बनी ही रहती है. इसी तरह जो बड़ी सरकारें हैं उन्हें या तो अपने कारख़ानों के लिये कच्चा माल चाहिये या अपने यहां तैयार पक्के माल के लिये बाज़ार चाहिये. दुनिया में कोई बड़ा मुल्क आज उस हालत में नहीं है जो यह कह सके कि हमें न बाहर के कच्चे माल की ज़रूरत है न अपने पक्के माल के लिये बाज़ार चाहिये. इसी कच्चे माल या बाज़ार की ख़ातिर "भलाई या ख़िदमत" की ज़रूरत पड़ती है. यही बुनियादी वजह है जो इस बीसवीं सदी में एक जंग के बाद दूसरी करा रही है. आज अमरीका में क्या इंगलैंड में क्या, बेरोज़गारी है, इसलिये लोगों को रोज़गार देने के लिये ज़्यादा से ज़्यादा पक्का माल तैयार करने की ज़रूरत और इसके लिये एक तरफ़ से कच्चा माल चाहिये तो दूसरी तरफ़ से बाज़ार चाहिये. मतलब यह कि हर किसी को हथियार चाहिये ताकि अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ फल फूल सके. इसलिये जब तक इस संसार में आर्थिक ऊंच नीच और एक दूसरे का डर रहता है तब तक लड़ाइयां जारी रहेंगी और हथियारों का ज़ोर रहेगा.

پاگل ہیں؟ یہ سوال کافی گہرے ہیں جن پر تفصیل سے غور کرنا تو مشکل ہوگا. لیکن ایک سرسری نگاہ سے ہم ضرور غور کرینگے . آجکل بڑے بڑے ملک یا سرکاریں یہی سمجھتی ہیں کہ دنیا کی بھلائی و بہتری جس اچھے طریقے سے وہ کر سکتی ہیں کوئی دوسرا نہیں کر سکتا . وہ اپنے ہی طریقے سے دنیا کی بھلائی کرنا چاہتی ہیں . لیکن جب بھلائی کرنے پر آتی ہیں تو دیکھتی ہیں کہ دوسرے ملکوں میں بندوبست یا انتظام ایسا ہے جو انہیں ٹھیک سے بھلائی کرنے کا موقع نہیں دیتا . اس لئے وہ چاہتی ہیں کہ زیادہ سے زیادہ ملکوں میں انتظام ان کی اپنی منشا کے مطابق ہو، یعنی وہاں کی حکومت میں ان کا ہاتھ رہے، دوسرے لفظوں میں وہ ہر جگہ اپنی حکومت چاہتی ہیں . اس طرح بھلائی یا خدمت کے نام پر دوسرے دیشوں پر اپنا اثر یا حکومت قائم کرنے کی ضرورت پڑتی ہے ! جو اپنی حکومت میں ہو، وہی سبھیہ اور باقی سب جنگلی . اس لئے بڑی حکومتیں یہ کہا کرتی ہیں کہ تہذیب کا تقاضہ ہے کہ ہم آپ کی زبردستی مرمت کریں! اگر ان سے کہئے کہ ہم اپنے گھر خوش ہیں اور ہماری فکر نہ کریں تو یہ بات انہیں جنچتی نہیں اور وہ کہتی ہیں کہ آپ یہ بات غیر جانکاری کی وجہ سے کہہ رہے ہیں، ہمارے سابقہ پڑنے دیجیئے تب آپ کو مزہ آئیگا .

لیکن بڑی سرکاروں کی اس دلیل کی ایک اور بھی گہری وجہ ہے . وہ یہ کہ سرجنہار کی طرف سے نہ کوئی ملک مکمل ہے نہ کوئی سرکار . ہمیشہ کسی نہ کسی چیز کی درکار ہر آدمی یا سرکار کو بنی ہی رہتی ہے . اسی طرح جو بڑی سرکاریں ہیں انہیں یا تو اپنے کارخانوں کے لئے کچا مال چاہیئے یا اپنے یہاں تیار پکے مال کے لئے بازار چاہیئے . دنیا میں کوئی بڑا ملک آج اس حالت میں نہیں ہے جو یہ کہہ سکے کہ ہمیں نہ باہر کے کچے مال کی ضرورت ہے نہ اپنے پکے مال کے لئے بازار چاہیئے . اسی کچے مال یا بازار کی خاطر " بھلائی " یا " خدمت " کی ضرورت پڑتی ہے . یہی بنیادی وجہ ہے جو اس بیسویں صدی میں ایک جنگ کے بعد دوسری کرا رہی ہے . آج امریکہ میں کیا، انگلینڈ میں کیا بیروزگاری ہے، اس لئے لوگوں کو روزگار دینے کے لئے زیادہ سے زیادہ پکا مال تیار کرنے کی ضرورت اور اس کے لئے ایک طرف سے کچا مال چاہیئے تو دوسری طرف سے بازار چاہیئے. مطلب یہ کہ ہر کسی کو ہتھیار چاہیئے تاکہ اپنی مرضی کے مطابق پھل پھول سکے . اس لئے جب تک اس سنسار میں آرتھک اونچ نیچ اور ایک دوسرے کا ڈر رہتا ہے تب تک لڑائیاں جاری رہینگی اور ہتھیاروں کا زور رہیگا .

पर खर्च करने जा रहा है. हाल ही में अमरीका के ऐटोमिक ईनरजी कमीशन (Atomic Energy Commission) के सदर मिस्टर लियूस स्ट्राउस ने कहा है कि अमरीका कि प्रेसीडेन्ट आइजन हावर साहब ने उन्हें हुक्म दिया है कि ऐटमिक हथियार और हाईड्रोजन बम ज्यादा तेज़ी के साथ तैयार किये जायें. इस रोशनी में जब हम पंडित जवाहरलाल के सुझाओं को देखते हैं तो डर लगता है कि क्या उनका कोई असर दुनिया और खास कर अमरीकापर पड़ने वाला है. इधर ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर चर्चिल और फ़ारेन मिनिस्टर एडन दोनों ने ही मजबूरी बताई है और कहा है कि अमरीका को हाईड्रोजन बम बनाने या उसके इस्तेमाल से नहीं रोका जा सकता.

अंग्रेज़ मिनिस्टरों की बात हमारी समझ में आती है. अगर कोई मुल्क अपनी हिफ़ाज़त के लिये कोई क़दम उठाता है तो उसे कोई दूसरा क्योंकर रोक सकता है. आजकल के ज़माने में हिफ़ाज़त के हथियार और हमले के हथियार एक से हो जाते हैं और हमला ही हिफ़ाज़त का बेहतरीन रास्ता माना जाता है !! सारी दुनिया के अन्दर जब हवाई हथियार लड़ाई के लिये जायज़ माने जाते हों तो एक हथियार को रोकना और दूसरे की इजाज़त देना कहां तक मुमकिन है. लड़ाई के अन्दर हथियारों पर रोक रखने की कोशिश पुराने ज़मानों में भी की गई थी— मसलन, 'सूरज डूबने के बाद हथियार न चलाये जायें' कमर के नीचे किसी पर वार न किया जाये, निहत्थे आदमी पर हमला न किया जाये, वग़ैरा वग़ैरा. लेकिन क्या रामायन, क्या महाभारत, क्या किसी दूसरी लड़ाई में इस चीज़ पर पाबन्दी नहीं हो सकी. तो पुराने ज़मानों में जब साइन्स का इतना ज़ोर और फैलाव नहीं था और तिस पर भी हथियारों पर रोक नहीं रखी जा सकी तो आजकल के ज़माने में जब साइन्स बहुत तेज़ रफ़्तार से बढ़ रही है किस तरह से हथियारों पर रोक रखी जा सकेगी हम नहीं कह सकते.

सच यह है कि हथियार तो हिंसा के विकास के नुमाइन्दे हैं लेकिन हिंसा एक शक्ति है और शक्ति किसी के रोके रुकने वाली नहीं है—इस पर न कोई रोक लगा सकता है और न कोई रोक कारगर ही होने वाली है. यह भले अपने को आप ही ख़तम कर ले लेकिन किसी दूसरे के रोके नहीं रुक सकती. इसलिये हाईड्रोजन बम पर पाबन्दी लगाने की कोशिश करना और दूसरे हथियारों को छूट दिए रहना ज़रूरी और बहुत अच्छा होते हुए भी ज़्यादा कामयाब नहीं हो सकता.

मगर इन हथियारों की रगड़ के पीछे राज़ किया है ? आख़िर क्यों इनके लिये दुनिया की सरकारें इस तरह

پر خرچ کرنے جارہا ہے ۔ حال ہی میں امریکہ ایٹومک انرجی کمیشن (Atomic Energy Commission) کے صدر مسٹر لیوس اسٹراوس نے کہا ہے کہ امریکہ کے پریسیڈنٹ آئزن ہاور صاحب نے انہیں حکم دیا ہے کہ ایٹامک ہتھیار اور ہائیڈروجن بم زیادہ تیزی کے ساتھ تیار کیئے جائیں۔ اس میں روشنی جب ہم پنڈت جواہر لال کے سجھاؤں کو دیکھتے ہیں تو ڈر لگتا ہے کہ کیا ان کا کوئی اثر دنیا اور خاصکر امریکہ پر پڑنے والا ہے ۔ ادھر برٹش پرائم منسٹر چرچل اور فارین منسٹر ایڈن دونوں نے ہی مجبوری بتائی ہے اور کہا ہے کہ امریکہ کو ہائیڈروجن بم بنانے یا اس کے استعمال سے نہیں روکا جاسکتا ۔

انگریز منسٹروں کی بات ہماری سمجھ میں آتی ہے۔ اگر کوئی ملک اپنی حفاظت کے لئے کوئی قدم اٹھاتا ہے تو اسے کوئی دوسرا کیونکر روک سکتا ہے۔ آجکل کے زمانہ میں حفاظت کے ہتھیار اور حملے کے ہتھیار ایک سے ہی ہوتے ہیں اور حملہ ہی حفاظت کا بہترین راستہ مانا جاتا ہے !! ساری دنیا کے اندر جب ہوائی ہتھیار لڑائی کے لئے جائز مانے جاتے ہیں تو ایک ہتھیار کو روکنا اور دوسرے کی اجازت دینا کہاں تک ممکن ہے ۔ لڑائی کے اندر ہتھیاروں پر روک رکھنے کی کوشش پرانے زمانوں میں بھی کی گئی تھی—مثلاً' سورج ڈوبنے کے بعد ہتھیار نہ چلائے جائیں' کمر کے نیچے کسی پر وار نہ کیا جائے' نہتے آدمی پر حملہ نہ کیا جائے' وغیرہ وغیرہ ۔ لیکن کیا رامائن' کیا مہا بھارت' کیا کسی دوسری لڑائی میں اس چیز پر پابندی نہیں ہوسکی ۔ پرانے زمانوں میں جب سائنس کا اتنا زور اور پھیلاؤ نہیں تھا اور تس پر بھی ہتھیاروں پر روک نہیں رکھی جاسکی تو آجکل کے زمانہ میں جب سائنس بہت تیز رفتار سے بڑھ رہی ہے کس طرح سے ہتھیاروں پر روک رکھی جاسکیگی ہم نہیں کہ سکتے ۔

سچ یہ ہے کہ ہتھیار تو ہنسا کے وکاس کے نمائندے ہیں۔ لیکن ہنسا ایک شکتی ہے اور شکتی کسی کے روکے رکنے والی نہیں ہے ۔ اس پر نہ کوئی روک لگا سکتا ہے اور نہ کوئی روک کارگر ہی ہونے والی ہے ۔ یہ بھلے اپنے کو آپ ہی ختم کر لے لیکن کسی دوسرے کے روکے نہیں رک سکتی۔ اس لئے ہائیڈروجن بم پر پابندی لگانے کی کوشش کرنا اور دوسرے ہتھیاروں کو چھوٹ دیئے رہنا ضروری اور بہت اچھا ہوتے ہوئے بھی زیادہ کامیاب نہیں ہوسکتا ۔

مگر ان ہتھیاروں کی رگڑ کے پیچھے راز کیا ہے ؟ آخر کیوں ان کے لئے دنیا کی سرکاریں اس طرح

कहा कि आंख बन्द कर के हम लोग ऐटामिक औज़ारों की खोज में लगे हैं और कोई नहीं कह सकता कि यह अंधी हरकतें हमें कहां ले जायेंगी.

ऐसी तबाहकुन और ख़तरनाक चीज़ के ख़िलाफ़ कौन अपनी आवाज़ नहीं उठाएगा ? पंडित जवाहरलाल ने दूसरी अप्रैल को पार्लियामेन्ट में स्पीच देते हुए कहा कि ऐसे हथियारों का इस्तेमाल बन्द होना चाहिये. उन्होंने नीचे दिये चार सुझाव पेश किए :—

(1) इन बमों को आगे न गिराने के बारे में कम से कम एक, 'बम रोको मुआहदा (Stand-still Agreement) बड़े मुल्कों के बीच हो जाए. इन बमों को तैयार करने और जमा रखने के बारे में अगर कोई फ़ैसला फ़ौरन न किया जाये तो उनके न गिराने का तो फ़ैसला हो ही जाये.

(2) इन बमों की तबाह कुन क़ुवत के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा प्रचार वह मुल्क करें जिनका उनकी तैयारी से ज़्यादा वास्ता है और यह प्रचार U. N. O. की तरफ़ से हो ताकि सारे आलम को उनकी भयानकता का अन्दाज़ा हो जाये.

(3) U. N. O. की जनरल असेम्बली की तरफ़ से जो डिस आर्मामेन्ट कमीशन (Disarmament Commission) मुक़र्रर किया गया है उसकी ख़ास बैठकें फ़ौरन हों और लगातार जारी रहें और बम रोको मुआहदा पर विचार करें.

(4) जिन मुल्कों में यह बम गिराये जाने या उनके ज़रिये तजुरबे करने का अन्देशा है वहां की सरकारें और परजा ज़्यादा से ज़्यादा ज़ोर के साथ उनके ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करें और इस बढ़ते हुए तूफ़ान को रोकें.

पंडित जवाहरलाल की उन तजवीज़ों से हम दिल से इत्तफ़ाक़ करते हैं. हमें यक़ीन है कि मुल्क का बच्चा बच्चा उनसे इत्तफ़ाक़ करेगा और हिन्दुस्तान की यह आवाज़ सारे जहान में गूंजेगी और U. N. O. की जनरल असेम्बली कोई कारगर क़दम उठा कर हाईड्रोजन बम के डर व ख़तरा से दुनिया को छुड़ाएगी.

मालूम हुआ है कि अमरीका ने पहली मार्च के अलावा इस बम के दो तजुरबे और करके देखे और "कामयाबी" हासिल हुई ! साथ ही साथ अमरीका की पार्लियामेन्ट ने 31 मार्च को एक बिल पास किया कि ज़्यादा बेहतरीन हाईड्रोजन व ऐटम बम ज़्यादा तेज़ी के साथ बनाये जाएं इस बिल में इस काम के लिये 5,566,118,676 डालर यानी क़रीब दो हज़ार करोड़ रुपये. अमरीका इन बमों

کہاکہ آنکھ بند کرکے ہم لوگ ایٹامک اوزاروں کی کھوج میں لگے ہیں اور کوئی نہیں کہہ سکتا کہ یہ اندھی حرکتیں ہمیں کہاں لے جائینگی ۔

ایسی تباہ کن اور خطرناک چیز کے خلاف کون اپنی آواز نہیں اٹھائیگا؟ پنڈت جواہر لال نے دوسری اپریل کو پارلیامنٹ میں اسپیچ دیتے ہوئے کہا کہ ایسے ہتھیاروں کا استعمال بند ہونا چاہئے ۔ انہوں نے نیچے دیئے چار سجھاؤ پیش کئے :—

(1) ان بموں کو آگے نہ گرانے کے بارے میں کم سے کم ایک 'بم روکو' معاہدہ (Stand-stillAgreement) بڑے ملکوں کے بیچ ہو جائے ۔ ان بموں کو تیار کرنے اور جمع رکھنے کے بارے میں اگر کوئی فیصلہ فوراً نہ کیا جائے تو اُن کے نہ گرانے کا تو فیصلہ ہو ہی جائے ۔

(2) ان بموں کی تباہ کن قوت کے بارے میں زیادہ سے زیادہ پرچار وہ ملک کریں جن کا انکی تیاری سے زیادہ واسطہ ہے اور یہ پرچار .U. N. O کی طرف سے ہو تاکہ سارے عالم کو انکی بھیانکتا کا اندازہ ہو جائے ۔

(3) .U.N.O کی جنرل اسمبلی کی طرف سے جو ڈس آرمامنٹ کمیشن (Disarmament Commission) مقرر کیا گیا ہے اُسکی خاص بیٹھکیں فوراً ہوں اور لگاتار جاری رہیں اور بم روکو معاہدہ پر وچار کریں ۔

(5) جن ملکوں میں یہ بم گرائے جانے یا اُن کے ذریعہ تجربے کرنے کا اندیشہ ہے وہاں کی سرکاریں اور پرجا زیادہ سے زیادہ اور زور کے ساتھ اُن کے خلاف آواز بلند کریں اور اس بڑھتے ہوئے طوفان کو روکیں ۔

پنڈت جواہر لال کی ان تجویزوں سے ہم دل سے اتفاق کرتے ہیں. ہمیں یقین ہے کہ ملک کا بچہ بچہ اُن سے اتفاق کریگا اور ہندستان کی یہ آواز سارے جہاں میں گونجیگی اور .U. N. O کی جنرل اسمبلی کوئی کارگر قدم اُٹھاکر ہائیڈروجن بم کے ڈر و خطرہ سے دنیا کو چھڑائیگی ۔

معلوم ہوا ہے کہ امریکہ نے پہلی مارچ کے علاوہ اس بم کے دو تجربے اور کرکے دیکھے اور "کامیابی" حاصل ہوئی ! ساتھ ہی ساتھ امریکہ کی پارلیامنٹ نے 31 مارچ کو ایک بل پاس کیا کہ زیادہ بہترین ہائیڈروجن و ایٹم بم زیادہ تیزی کے ساتھ بنائے جائیں ۔ اس بل میں اس کام کے لئے 676' 118' 566' 5 ڈالر یعنی ... دو ہزار کروڑ روپئے ۔ امریکہ ان بموں

हाईड्रोजन बम की चुनौती

पिछले मार्च की पहली तारीख़ को अमरीका सरकार के फ़ौजियों ने एक ज़बरदस्त बम जापान के नज़दीक एक जज़ीरा पर गिराया. ऐसा काम अमरीका ने किसी दुश्मनी की वजह से नहीं किया बल्कि यह जानने के लिये किया कि इस बम की तासीर क्या है और इसका असर कितनी दूर तक और कितनी देर तक होता है और इसका अन्जाम क्या होता है. इस बम का नाम हाईड्रोजन बम है. ख़्याल रहे कि 16 जुलाई 1945 को जापान के शहर नागासाकी व हीरोशीमा पर भी अमरीका ने एक बम गिराया था जिसमें हज़ारों आदमी मर गए थे, लाखों घायल व निकम्मे हो गये थे और करोड़ों का माल सामान बरबाद हुआ था. इस बम का नाम ऐटम बम था. लेकिन नये बम के बारे में कहा जाता है कि पुराने वाले के मुक़ाबिले कई गुना ज़्यादा ख़तरनाक है—कहा जाता है. कि अगर एक सौ टन वज़न वाले चार, सिर्फ़ चार! बम इस ज़मीन पर गिरा दिये जायें तो पांच साल तक इनका असर रहेगा और इस बीच सारी जानदार चीज़ें ख़तम हो जायेंगी. धरती पर न इन्सान बचेगा न हैवान और न कोई पेड़ पौधा.

ज़ाहिर है कि इस बम के कारन दुनिया के सब समझदार आदमी चिन्ता व फ़िक्र में पड़ गये हैं. ब्रिटेन के मज़दूरों लीडर मिस्टर एटेली ने अंग्रेज़ी पार्लियामेन्ट में कहा कि इसकी वजह से हमारी सारी तरक़्क़ी व तहज़ीब ही ख़तरा में है. पंडित जवाहरलाल ने हिन्द की पार्लियामेन्ट में कहा कि वक़्त मानो चुनौती दे रहा है, तबाही के काले बादल आस्मान में छाए हुए हैं और अगर उनकी कोई रोक थाम न की गई तो यह हमें ख़तम ही कर के छोड़ेंगे. दूसरे सियासत दानों ने भी इसी तरह के डर ज़ाहर किये हैं. कनेडा के विदेशी मुहकमा मिनिस्टर का कहना है कि अगर इन बमों के साथ तीसरी जंग आई तो दुनिया में कोई चीज़ न बचेगी. रूस के बड़े वज़ीर मिस्टर मालनकोव ने भी यही कहा कि जो जंग इन हथियारों के बल पर चलेगी दुनिया को मुकम्मल तौर पर नेस्त नाबूद करके ही छोड़ेगी.

साइन्सदां लोग तो अर्से से इस ख़तरे की तरफ़ दुनिया का ध्यान खींच रहे हैं. कुछ अर्सा पहले जब इस बम का पहले पहल ज़िक्र आया तो दुनिया के सब से बड़े साइंसदां प्रोफ़ेसर अलबर्ट आइन्स टाइन ने कहा था कि अब हाईड्रोजन बम बनता दीखता है. उसके ज़रिये से दुनिया में किसी को भी आसानी से ख़तम किया जा सकेगा. अमरीका के एक प्रोफ़ेसर डाक्टर प्रीन हेन्ड ने

ہائڈروجن بم کی چنوتی

پچھلے مارچ کی پہلی تاریخ کو امریکہ سرکار کے فوجیوں نے ایک زبردست بم جاپان کے نزدیک ایک جزیرہ پر گرایا. ایسا کام امریکہ نے کسی دشمنی کی وجہ سے نہیں کیا بلکہ یہ جاننے کے لئے کیا کہ اِس بم کی تاثیر کیا ہے اور اِس کا اثر کتنی دور تک اور کتنی دیر تک ہوتا ہے اور اِس کا انجام کیا ہوتا ہے. اِس بم کا نام ہائڈروجن بم ہے. یہ خیال ہے کہ 16 جولائی 1945 کو جاپان کے شہر ناگاساکی و ہیروشیما پر بھی امریکہ نے ایک بم گرایا تھا جس میں ہزاروں آدمی مر گئے تھے، لاکھوں گھائل و نکمے ہوگئے تھے اور کروڑوں کا مال سامان برباد ہوا تھا. اُس بم کا نام ایٹم بم تھا. لیکن نئے بم کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ کہ پرانے والے کے مقابلہ کئی گنا زیادہ خطرناک ہے. کہا جاتا ہے کہ اگر ایک سو ٹن وزن والے چار، صرف چار! بم اس زمین پر گرادئے جائیں تو پانچ سال تک ان کا اثر رہےگا اور اس بیچ ساری جاندار چیزیں ختم ہوجائیںگی. دھرتی پر نہ اِنسان بچےگا نہ حیوان اور نہ کوئی پیڑ پودھا.

ظاہر ہے کہ اس بم کے کارن دنیا کے سب سمجھدار آدمی چنتا و فکر میں پڑگئے ہیں. برٹین کے مزدور لیڈر مسٹر ایٹلی نے انگریزی پارلیامنٹ میں کہا کہ اِس کی وجہ سے ہماری ساری ترقی و تہذیب ہی خطرہ میں ہے. پنڈت جواہر لال نے ہند کی پارلیامنٹ میں کہا کہ وقت مانو چنوتی دے رہا ہے' تباہی کے کالے بادل آسمان میں چھائے ہوئے ہیں اور اگر اُنکی کوئی روک تھام نہ کی گئی تو یہ ہمیں ختم ہی کرکے چھوڑیںگے. دوسرے سیاست دانوں نے بھی اس طرح کے ڈر ظاہر کئے ہیں. کنیڈا کے ودیشی محکمہ منسٹر کا کہنا ہے کہ اگر ان بموں کے ساتھ تیسری جنگ آئی تو دنیا میں کوئی چیز نہ بچےگی. روس کے بڑے وزیر مسٹر مالینکوو نے بھی یہی کہا کہ جو جنگ اِن ہتھیاروں کے بل پر چلےگی وہ دنیا کو مکمل طور پر نیست نابود کرکے ہی چھوڑیگی.

سائنس‌داں لوگ تو عرصہ سے اُس خطرہ کی طرف دنیا کا دھیان کھینچ رہے ہیں. کچھ عرصہ پہلے جب اِس بم کا پہلے پہل ذکر آیا تو دنیا کے سب سے بڑے سائنس‌داں پروفیسر آلبرٹ آئنس ٹائن نے کہا تھا کہ اب ہائڈروجن بم بنتا دیکھتا ہے. اُس کے ذریعہ تو دنیا میں کس کو بھی آسانی سے ختم کیا جا سکےگا. امریکہ کی ایک پروفیسر ڈاکٹر گرین ہیوڈ نے

(ii) गवर्नर की तनख्वाह भत्तों और मजदूर की मजदूरी में इतना फ़र्क़ है जैसे हाथी और च्युंटी में.

(iii) सरकार पैसे की इतनी जबरदस्त पुजारी है कि घर के पैसे से काम नहीं बनता तो बाहर से, अमरीका वगैरा से उनसुनी शर्तों पर क़र्ज़ लिया जाता है, पैसे के ही लिहाज़ से हर चीज़ व काम की क़ीमत लगाती है और पैसे की उम्मीद में बड़ी बड़ी मिलों व कारखानों की इमदाद करती है जिस की वजह से छोटे छोटे देहाती धन्दे खत्म होते जाते हैं और बेकारी बढ़ती जाती है.

जिस सरकार की यह हालत हो वह सच्चा श्रमदान कैसे ले सकती या करा सकती है. वह तो बेगार ही करा सकती है. इसी वजह से हमने शुरू में ही कहा कि श्रमदान भी सरकार की आमदनी का एक ज़रिया बन गया. हर लगे फिटकीरी पर रंग चोखा! सरकार को तो महज़ ताक़त चाहिये, हुकूमत चाहिये और पैसे चाहियें. यह तीनों ही श्रमदान से नहीं मिल सकते. इसी वजह से ऊपर के या बड़े कहलाने वाले लोग श्रमदान में शरीक नहीं होते. और जब बड़े लोग इस से अलग रहेंगे तो यह श्रमदान ग़रीबों को चूसने के अलावा दूसरा क्या काम कर सकता है?

एक बात और भी है. सन्त विनोबा की तहरीक की खास मुराद यह है कि जनता के अन्दर अपनी एक ताक़त पैदा हो जो तलवार व बम की ताक़त को मुखालिफ़ हो और डंडे या क़ानून की ताक़त से अलग हो. वह चाहते हैं कि जनता में एक ऐसी ताक़त पैदा हो, और प्रेम व मुहब्बत के बल से पैदा हो, जिस की मदद से वह हुकूमत को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ चला सके और अपनी बेहतरी आप कर सके. इसके खिलाफ़ सरकारी श्रमदान का मतलब यह है कि हुकूमत की, यानी अपनी पार्टी की, जड़ें मज़बूत हों. दूसरे लफ़्ज़ों में सरकारी श्रमदान की मन्शा यह है कि कांग्रेस हमेशा हुकूमत की गद्दी पर जमी रहे और अवाम इसके चंगुल से बाहर न निकल सकें. इस से पता चलता है कि सन्त विनोबा से श्रमदान यज्ञ और सरकार के श्रमदान में बड़ा और बुनियादी फ़र्क़ है. अगर एक को मलाई कहें तो दूसरे को फटा दूध.

यही वजह है कि लोग सरकारी श्रमदान को बेगार या इस से भी गई गुज़री चीज़ समझते हैं. जैसा हम ऊपर कह चुके हैं मौजूदा सरकार इस लायक़ नहीं है कि श्रमदान जैसी चीज़ पर हाथ लगा सके. पर अगर लगाती है तो उसे ईमानदारी के साथ पहले अपना घर ठीक करना चाहिये और हुकूमत का तर्ज़ ऊपर से नीचे तक बदलना चाहिये. अगर यू. पी. सरकार ऐसा नहीं करती है तो उसका श्रमदान एक धोका है और इंसानियत के नाम हर बट्टा है.

28. 3. '54 —सुरेश रामभाई

(ii) گورنر کی تنخواہ و بھتوں اور مزدور کی مزدوری میں اِتنا فرق ہے جیسے ہاتھی اور چیونٹی میں ۔

(iii) سرکار پیسے کی اِتنی زبردست پجاری ہے کہ گھر کے پیسے سے کام نہیں بنتا تو باہر سے' امریکہ وغیرہ سے اَن سنی شرطوں پر قرض لیا جاتا ہے' پیسے کے ہی لحاظ سے ہر چیز و کام کی قیمت لگاتی ہے اور پیسے کی ہی اُمید میں بڑی بڑی ملوں و کارخانوں کی امداد کرتی ہے جسکی وجہ سے چھوٹے چھوٹے دیہاتی دھندے ختم ہوتے جاتے ہیں اور بیکاری بڑھتی جاتی ہے ۔

جس سرکار کی یہ حالت ہو وہ سچا شرم‌دان کیسے لے سکتی یا کراسکتی ہے ۔ وہ تو بیگار ہی کراسکتی ہے ۔ اِس وجہ سے ہم نے شروع میں‌ہی کہا کہ شرم‌دان بھی‌سرکار کی آمدنی کا ایک ذریعہ بن گیا ۔ ہر لگے نہ پھٹکری پر رنگ چوکھا ! سرکار کو تو محض‌طاقت چاہیئے' حکومت چاہیئے اور پیسے چاہیئے ۔ یہ تینوں ہی شرم‌دان سے نہیں مل سکتیں ۔ اسی وجہ سے اُوپر کے یا بڑے کہلانے والے لوگ شرم‌دان میں شریک نہیں ہوتے ۔ اور جب بڑے لوگ اس سے الگ رہینگے تو یہ شرم‌دان غریبوں کو چوسنے کے علاوہ دوسرا کیا کام کرسکتا ہے ؟

ایک بات اور بھی ہے ۔ سنت ونوبا کی تحریک کی خاص مراد یہ ہے کہ جنتا کے اندر اپنی ایک طاقت پیدا ہو جو تلوار و بم کی طاقت کی مخالف ہو اور ڈنڈے یا قانون کی طاقت سے الگ ہو ۔ وہ چاہتے ہیں کہ جنتا میں ایک ایسی طاقت پیدا ہو' اور پریم و محبت کے بل سے پیدا ہو' جسکی مدد سے وہ حکومت کو اپنی مرضی کے مطابق چلا سکے اور اپنی بہتری آپ کرسکے ۔ اس کے خلاف سرکاری شرم‌دان کا مطلب یہ ہے کہ حکومت کی' یعنی اپنی پارٹی کی' جڑیں مضبوط ہوں ۔ دوسرے لفظوں میں سرکاری شرم‌دان کی منشا یہ ہے کہ کانگریس ہمیشہ حکومت کی گدی پر جمی رہے اور عوام اس کے چنگل کے باہر نہ نکل سکیں ۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ سنت ونوبا کے شرم‌دان یگیہ اور سرکار کے شرم‌دان میں بڑا اور بنیادی فرق ہے ۔ اگر ایک کو ملائی کہیں تو دوسرے کو پھٹا دودھ ۔

یہی وجہ ہے کہ لوگ سرکاری شرم‌دان کو بیگار یا اس سے بھی گئی گذری چیز سمجھتے ہیں ۔ جیسا ہم اُوپر کہ چکے ہیں موجودہ سرکار اس لائق نہیں ہے کہ شرم‌دان جیسی چیز پر ہاتھ لگاسکے ۔ پر اگر لگاتی ہے تو ے ایمانداری کے ساتھ پہلے اپنا گھر ٹھیک کرنا چاہیئے اور حکومت کا طرز اُوپر سے نیچے تک بدلنا چاہیئے ۔ اگر یو ۔ پی ۔ سرکار ایسا نہیں کرتی ہے تو اُس کا شرم‌دن ایک دھوکا ہے اور انسانیت کے نام پر بٹہ ہے ۔

24 . 3 . '54 —سریش رامبھائی

के मुंह से सुनी—"जमींदार ने भी जो बेगार नहीं ली. वह सरकार पुलिस के बल पर अब लिया करेगी." हमने दलील भी दी कि इसमें हर्ज ही किया है कुछ फ़ायदा ही होगा. लेकिन हमें नाकामयाबी मिली (शुक्र है कि गाली नहीं मिली) और हमारे मन में भी यह बात कुछ बैठ गई कि यह श्रमदान विनोबा जी का श्रमदान यज्ञ नहीं सरकारी बेगार ही है. असूली तौर पर हमने जब विचार किया तो यह बात और भी साफ़ हो गई.

पहले हम देखें कि श्रमदान यज्ञ का मतलब क्या है ? चन्द लफ़्ज़ों में कहें तो उसकी मुराद है:

(i) हर आदमी कुछ न कुछ जिस्मानी मेहनत का काम करे.

(ii) एक आदमी की मेहनत की जो मज़दूरी हो वही या इस से मिलती जुलती दूसरे आदमी की मेहनत की मज़दूरी हो.

(iii) समाज के अन्दर इन्सान की मेहनत की क़दर सब चीज़ों से ऊपर हो.

यह भी साफ़ है कि श्रमदान यज्ञ का काम वही आदमी या मजलिस या हुकूमत उठा सकती है जिसके अन्दरः

(i) हर आदमी अपना कुछ वक़्त मेहनत करने में ख़र्च करता हो, और वह कुश्ती या डंड बैठक की शक्ल में न होकर खाने पीने या इस्तेमाल में आने की कोई दूसरी चीज़ पैदा करने वाली मेहनत हो.

(ii) उस हुकूमत के अन्दर भंगी की मज़दूरी और गवर्नर या चीफ़ जसटिस या चीफ़ मनिस्टर की तनख़्वाह में बस इतना फ़र्क़ हो जितना एक हाथ की उंगलियों में.

(iii) वह हुकूमत पैसे की बजाय इंसान की मेहनत के बल पर चलती हो और इसके मातहत जनता पैसे वग़ैरा की मोहताज न हो बल्कि अपनी ज़रूरतें ख़ुद पूरी कर ले.

मगर हमारे सूबे में क्या, हमारे मुल्क में क्या, हक़ीक़त कुछ और ही है. जो जितना कम जिस्मानी काम करता है उसे उतनी ही ज़्यादा तलब दी जाती है और वह उतना ही अक़्लमन्द व आला समझा जाता है. और जो उतना ज़्यादा जिस्मानी काम करता है उसे उतनी ही कम मज़दूरी दी जाती है और वह उतना ही ज़्यादा निकम्मा "बेचारा" समझा जाता है. मोटे तौर पर हालत यह है.

(i) बड़े हुक्काम या उमरा लोग कोई काम अपने हाथ से नहीं करते, यहां तक कि पचास क़दम पैदल भी नहीं चलते और अपने को जनता से इस तरह अलग रखते हैं जैसे आसमान अपने को धरती से.

کے منھ سے سنی—" زمیندار نے بھی جو بیگار نہیں لی وہ سرکار پولیس کے بل پر اب لیا کریگی ." ہم نے دلیل بھی دی کہ اس میں حرج ہی کیا ہے کچھ فائدہ ہی ہی ہوگا لیکن ہمیں ناکامیابی ملی (شکر ہے کہ گالی نہیں ملی) اور ہمارے من میں بھی یہ بات کچھ بیٹھ گئی کہ یہ شرم دان ونوبا جی کا شرم دان یگیہ نہیں سرکاری بیگار ہی ہے . اصولی طور پر پر ہم نے جب وچار کیا تو یہ بات اور بھی صاف ہوگئی .

پہلے ہم دیکھیں کہ شرمدان یگیہ کا مطلب کیا ہے؟ چند لفظوں میں کہیں تو اسکی مراد ہے :

(i) ہر آدمی کچھ نہ کچھ جسمانی محنت کا کام کرے .

(ii) ایک آدمی کی محنت کی جو مزدوری ہو وہی یا اس سے ملتی جلتی دوسرے آدمی کی محنت کی مزدوری ہو .

(iii) سماج کے اندر انسان کی محنت کی قدر سب چیزوں سے اوپر ہو .

یہ بھی صاف ہے کہ شرمدان یگیہ کا کام وہی آدمی یا مجلس یا حکومت اٹھا سکتی ہے جس کے اندر :

(i) ہر آدمی اپنا کچھ وقت محنت کرنے میں خرچ کرتا ہو' اور وہ کشتی یا ڈنڈ بیٹھک کی شکل میں نہ ہوکر کھانے پینے یا استعمال میں آنے کی کوئی دوسری چیز پیدا کرنے والی محنت ہو .

(ii) اس حکومت کے اندر بھنگی کی مزدوری اور گورنر یا چیف جسٹس یا چیف منسٹر کی تنخواہ میں بس اتنا فرق ہو جتنا ایک ہاتھ کی انگلیوں میں.

(iii) وہ حکومت پیسے کی بجائے انسان کی محنت کے بل پر چلتی ہو اور اس کے ماتحت جنتا پیسہ وغیرہ کی محتاج نہ ہو بلکہ اپنی ضرورتیں خود پوری کرلے .

مگر ہمارے صوبہ میں کیا' ہمارے ملک میں کیا' حقیقت کچھ اور ہی ہے . جو جتنا کم جسمانی کام کرتا ہے اسے اتنی ہی زیادہ طلب دی جاتی ہے اور وہ اتنا ہی عقلمند عالی سمجھا جاتا ہے . اور جو جتنا زیادہ جسمانی کام کرتا ہے اسے اتنی ہی کم مزدوری دی جاتی ہے اور وہ اتنا ہی زیادہ نکما یا "بیچارہ" سمجھا جاتا ہے. موٹے طور پر حالت یہ ہے :

(i) بڑے حکام یا امرا لوگ کوئی کام اپنے ہاتھ سے نہیں کرتے' یہاں تک کہ پچاس قدم پیدل بھی نہیں چلتے اور اپنے کو جنتا سے اس طرح الگ رکھتے ہیں جیسے آسمان اپنے کو دھرتی سے .

वह न छू सकती है और न उसने छूआ. क्योंकि तब तो उसे अपने राज के हर महकमे में ग़रीब दुखी जनता के साथ सत्ता, माल व दौलत व अक़ल सब की बरकत करनी पड़ती—जिसके मानी हैं कि उसे अपने पास से कुछ उसे देना ही पड़ता. प्रेम दान के भी नज़दीक वह नहीं जा सकती क्योंकि फ़ौज व पुलिस, और ख़ुफ़िया जासूसों के सहारे रह कर वह किस मुंह से प्रेम का नाम लेती. इसलिये अब एक ही बचा—श्रम दान. उसे उसने अपना लिया. इसमें सरकार को तो कुछ करना था ही नहीं. क्योंकि वह बेचारी तो जनता के नाम पर मेहनत या श्रम करती करती रात दिन घुली सी जाती है ! इसमें—श्रम दान में—तो मिलना ही मिलना था, जनता का श्रम, उसकी मेहनत, उसकी देह और एक बहाना भी ख़ासा मिल गया—विकास के वास्ते. यानी जनता अपने विकास या बढ़ाव की ख़ातिर सरकार को श्रम दान करे ! इसको कहते हैं आम के आम और गुठलियों दाम !

उत्तर प्रदेश की सरकार इस सूझ बूझ पर कौन उस पर बलिहारी न होगा ? ख़याल रहे कि अक्तूबर 1951 में संत विनोबा उत्तर प्रदेश में घुसे और सितम्बर 1952 में वहां से बिहार के लिये रवाना हुए. उनके जाने के बाद नवम्बर 1952 में सरकार की तरफ़ से श्रम दान का काम कराया गया. जनवरी 1953 में इसका पहला जशन (Drive) मनाया गया, मई 1953 में दूसरा और गत जनवरी में तीसरा.

जनवरी 1954 वाले जशन के लिये सरकार ने बड़ी भारी तैयारियां की थीं. यह बताया गया कि 58 लाख रुपया ख़र्च किया जायेगा, एक करोड़ आदमियों को इसमें जोता जायेगा, देश के एक लाख गांवों को एक दूसरे के साथ सड़कों से मिला दिया जायेगा, वग़ैरा वग़ैरा. इस सिलसिले में सारे ज़िला मजिस्ट्रेटों, प्लानिंग, अफ़सरों और सूबा की 36,000 पंचायतों को हिदायतें भी भेजी गई थीं. हमें ठीक ठीक नहीं मालूम कि इन सबका नतीजा क्या हुआ और कितना काम अनजाम दिया गया, लेकिन कुछ न कुछ तो हुआ ही होगा. शायद इस बल पर यू० पी० सरकार ने असेम्बली में एक बिल इस इजलास में पेश किया है. इस बिल का मसविदा हमारे सामने नहीं है. लेकिन इसकी मनशा शायद यह है कि देहात के अन्दर जो पंचायतें हैं वह हर आदमी से साल में कम से कम 28 दिन श्रम दान में काम लें, यानी हफ़्ता में क़रीब आधा रोज़.

पिछले तीन चार महीनों में उत्तर प्रदेश में हमारा रहना कम हो पाया. लेकिन रेल में सफ़र से आते जाते जब लोगों से मिलने का इत्तफ़ाक़ हुआ तो एक बात सब

وہ نہ چھو سکتی تھی اور نہ اس نے چھوا. کیونکہ تب تو اسے اپنے راج کے ہر محکمے میں غریب دکھی جنتا کے ساتھ ستا، مال و دولت و عقل سب کی برکت کرنی پڑتی—جس کے معنی یہ ہیں کہ اسے اپنے پاس سے کچھ دینا ہی پڑتا. پریم دان کے بھی نزدیک وہ نہیں جا سکتی کیونکہ فوج و پولس، اور خفیہ جاسوسوں کے سہارے رہ کر وہ کس منہ سے پریم کا نام لیتی. اس لئے اب ایک ہی بچا—شرم دان. اسے اس نے اپنا لیا. اس میں سرکار کو تو کچھ کرنا تھا ہی نہیں. کیونکہ وہ بیچاری تو جنتا کے نام پر محنت یا شرم کرتی کرتی رات دن گھلی سی جاتی ہے! اس میں—شرم دان میں—تو ملنا ہی ملنا تھا، جنتا کا شرم، اس کی محنت، اس کی دیہہ اور ایک بہانا بھی خاصہ مل گیا—وکاس کے واسطے. یعنی جنتا اپنے وکاس یا بڑھاو کی خاطر سرکار کو شرم دان کرے! اس کو کہتے ہیں آم کے آم اور گٹھلیوں کے دام!

اتر پردیش کی سرکار کی اس سوجھ بوجھ پر کون اس پر بلیہاری نہ ہوگا ؟ خیال رہے کہ اکتوبر 1951 میں سنت ونوبا اتر پردیش میں گھسے اور ستمبر 1952 میں وہاں سے بہار کے لئے روانہ ہوئے. ان کے جانے کے بعد نومبر 1952 میں سرکار کی طرف سے شرم دان کا کام کرایا گیا. جنوری 1953 میں اس کا پہلا جشن (Drive) منایا گیا، مئی 1953 میں دوسرا اور گت جنوری میں تیسرا.

جنوری 1954 والے جشن کے لئے سرکار نے بڑی بھاری تیاریاں کی تھیں. یہ بتایا گیا کہ 58 لاکھ روپیہ خرچ کیا جائیگا، ایک کروڑ آدمیوں کو اس میں جوتا جائیگا، دیش کے ایک لاکھ گاؤں کو ایک دوسرے کے ساتھ سڑکوں سے ملا دیا جائیگا، وغیرہ وغیرہ. اس سلسلہ میں سارے ضلع مجسٹریٹوں، پلاننگ افسروں اور صوبہ کی 36,000 پنچایتوں کو ہدایتیں بھی بھیجی گئی تھیں. ہمیں ٹھیک ٹھیک نہیں معلوم کہ ان سب کا نتیجہ کیا ہوا اور کتنا کام انجام دیا گیا، لیکن کچھ نہ کچھ تو ہوا ہی ہوگا. شاید اس بل پر یو. پی. سرکار نے اسمبلی میں ایک بل اس اجلاس میں پیش کیا ہے. اس بل کا مسودہ ہمارے سامنے نہیں ہے. لیکن اس کی منشا شاید یہ ہے کہ دیہات کے اندر جو پنچایتیں ہیں وہ ہر آدمی سے سال میں کم سے کم 28 دن شرم دان میں کام لیں، یعنی ہفتہ میں قریب آدھا روز.

پچھلے تین چار مہینوں میں اتر پردیش میں ہمارا رہنا کم ہو پایا. لیکن ریل میں سفر سے آتے جاتے جب لوگوں سے ملنے کا اتفاق ہوا تو ایک بات سب

कहना पड़ता है—वह जनता के सामने मुंह दिखाने से बचती है. पर जैसा फ़ाइनैन्स मिनिस्टर ने क़बूल किया उस से पता चलता है कि वह सोती रही. ऐसी हालत में वह सरकार किस सवाल पर कब तक सोती रहे कोई नहीं कह सकता.

सरकार का आर्डिनैन्स जारी करना उसकी कमज़ोरी और लापरवाही ज़ाहिर करता है. कुछ अर्सा हुआ मद्रास में तालीम के सिलसिले में एक आर्डिनैन्स जारी किया गया. लेकिन यह आर्डिनैन्स कितने निकम्मे साबित होते हैं इसका अन्दाज़ा इस बात से किया जा सकता है कि जनवरी के शुरू में हरिजनों को हर मन्दिर में जाने के लिये आर्डिनैन्स बना, मगर फ़रवरी के दूसरे हफ़्ते में जब काशी के विश्वनाथ मन्दिर में कुछ हरिजन भाईयों के साथ एक हरिजन एम. एल. ए. जाता है तो नहीं जा पाता और दुखी लौट आता है. हां, आर्डिनैन्स-से टैक्स ज़रूर सरकार वसूल कर सकती है—सो भी कुछ समय तक ही.

हमें नहीं मालूम कि आर्डिनैन्सों द्वारा राज करना प्रधान मंत्री को कहां तक पसन्द है. पर हमें इतना यक़ीन ज़रूर है कि अगर पंडित जवाहरलाल नेहरू आज एक आज़ाद, खुद मुख़्तार नागरिक होते तो वह ज़रूर इन आर्डिनैन्सों के खिलाफ़ आवाज़ उठाते. शायद राजेन्द्र बाबू भी निजी हैसियत से ऐसा ही करते. मगर ज़माने की रफ़्तार निराली है—हुकूमत की शान अनोखी है.

आर्डिनैन्सों द्वारा राजकाज चलाने से पता चलता है कि सरकार को जनता पर भरोसा नहीं है, अपने पर विश्वास नहीं है.

20. 2. '54 —सुरेश रामभाई

श्रमदान या बेगार

जैसे जैसे संत विनोबा का आन्दोलन देश के अन्दर घुसता जाता है, वैसे वैसे वह और नई नई कल्पनायें मुल्क के सामने रखते जाते हैं. आजकल भूदान के अलावह वह प्रेम दान, बुद्धि दान, सम्पत्ति दान और श्रम (मेहनत) दान यज्ञ के लिये भी अपील करते हैं और कहते हैं कि इन चारों के बिना भूदान अधूरा ही रहेगा. उनका मतलब है बहुत चीज़ों का बराबर बराबर बंटवारा.

मसल मशहूर है चलती का नाम गाड़ी है. संत विनोबा के विचारों और शब्दों को फैलते देख कर हमारे प्रदेश की सरकार के मुंह में भी पानी भर आया और विनोबा जी की चीज़ें अपनाने को वह बेचैन नज़र आने लगी. सवाल था कि इन पांच चीज़ों में से वह किसे अपनावे. ज़ाहिर है कि भूदान, सम्पत्ति दान और बुद्धि दान को

کہنا پڑتا ہے—وہ جنتا کے سامنے منھ دکھانے سے بچتی ہے. پر جیسا فائینینس منسٹر نے قبول کیا اُس سے پتہ چلتا ہے کہ وہ سوتی رہی. ایسی حالت میں یہ سرکار کس سوال پر کب تک سوتی رہے کوئی نہیں کہہ سکتا.

سرکار کا آرڈیننس جاری کرنا اُسکی کمزوری اور لاپرواہی ظاہر کرتا ہے. کچھ عرصہ ہوا مدراس میں تعلیم کے سلسلے میں ایک آرڈیننس جاری کیا گیا. لیکن یہ آرڈیننس کتنے نکمے ثابت ہوتے ہیں اِس کا اندازہ اِس بات سے کیا جاسکتا ہے کہ جنوری کے شروع میں ہریجنوں کو ہر مندر میں جانے کے لئے آرڈیننس بنا، مگر فروری کے دوسرے ہفتے میں جب کاشی کے وشوناتھ مندر میں کچھ ہریجن بھائیوں کے ساتھ ایک ہریجن ایم. ایل. اے. جاتا ہے تو نہیں جا پاتا اور دکھی لوٹ آتا ہے. ہاں، آرڈیننس سے ٹیکس ضرور سرکار وصول کرسکتی ہے—سو بھی کچھ سمے تک ہی.

ہمیں نہیں معلوم کہ آرڈیننسوں دوارا راج کرنا پردھان منتری کو کہاں تک پسند ہے. پر ہمیں اتنا یقین ضرور ہے کہ اگر پنڈت جواہر لال نہرو آج ایک آزاد، خودمختار ناگرک ہوتے تو وہ ضرور اِن آرڈیننسوں کے خلاف آواز اُٹھاتے. شاید راجندر بابو نجی حیثیت سے ایسا ہی کرتے مگر زمانے کی رفتار نرالی ہے—حکومت کی شان انوکھی ہے.

آرڈیننسوں دوارا راج کاج چلانے سے پتہ چلتا ہے کہ سرکار کو جنتا پر بھروسہ نہیں ہے، اپنے پر وشواس نہیں ہے.

20. 2. '54 —سریش رام بھائی

شرم دان یا بیگار؟

جیسے جیسے سنت ونوبا کا آندولن دیش کے اندر گھستا جاتا ہے، ویسے ویسے وہ اور نئی نئی کلپنائیں ملک کے سامنے رکھتے جاتے ہیں. آجکل بھودان کے علاوہ وہ پریم دان، بدھی دان، سمپتی دان اور شرم (محنت) دان یگیہ کے لئے بھی اپیل کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ اِن چاروں کے بنا بھودان ادھورا ہی رہے گا. اسکا مطلب ہے بہت چیزوں کا برابر برابر بٹوارا.

مثل مشہور ہے چلتی کا نام گاڑی ہے. سنت ونوبا کے وچاروں اور شبدوں کو پھیلتے دیکھکر ہمارے پردیش کی سرکار کے منہ میں بھی پانی بھر آیا اور ونوبا جی کی چیزیں اپنانے کو وہ بے چین نظر آنے لگی. سوال تھا کہ اِن پانچ چیزوں میں سے وہ کسے اپنائے. ظاہر ہے کہ بھودان، سمپتی دان اور بدھی دان کو

सकती हैं, जारी कर तो सकती है मगर ऐसा करना तभी चाहिये जब कोई दूसरा चारा न हो. इसलिये मेरा विचार है कि इस पर बहस करना अच्छा होगा और इस सवाल को, जैसा मैंने समझा है, किसी पार्टी की निगाह से नहीं बल्कि एक आम निगाह से देखना चाहिये ताकि पार्लियामेन्ट अच्छी परम्परायें क़ायम कर सके."

पार्लियामेन्ट में बहस के दौरान में श्री ठाकुरदास भार्गव, एक कांगरेसी मेम्बर, ने सरकार की सब में ज्यादा टीका की और इस बात पर बड़ी तकलीफ़ दिखाई कि रोज़मर्रा के काम काज के लिये आर्डिनैन्स निकाले जाते हैं. फ़ाइनैन्स मिनिस्टर भी बहस में शरीक हुए और उन्होंने इक़रार किया कि आर्डिनैन्स द्वारा टैक्स लगा देना बहुत मुनासिब बात नहीं है, लेकिन कम से कम इस मामले में देरी का कारन थी दफ़्तर की सुस्ती. मगर होम मिस्टर तो एकदम आपे से बाहर हो बैठे—ज़ाहिर है कि आर्डिनेन्स जारी कराने में होम मिनिस्ट्री का सब में ज़ियादा हाथ रहता है—और प्रेस आर्डिनैन्स को दुरुस्त ठहराते हुए कहा कि "मुझे इसका कोई अफ़सोस नहीं है और इसकी वजह से 'आसमान नहीं टूट पड़ा'." हुकूमत के लोग अगर अपनी ग़लती को ग़लती मान लें और उस पर अफ़सोस ज़ाहिर करने लग जायें तो तारीफ़ ही क्या रही!—यह उसूल जिस तरह अंगरेज़ी राज का था उससे कहीं ज़ियादा स्वदेशी राज का है. लेकिन इसे कौन मान सकता है कि हुकूमतें ग़लती नहीं करतीं? इतनी ज़्यादा ग़लती करती हैं कि निजी तौर पर कोई इन्सान ख़ुद नहीं कर सकता. और आसमान टूटना किसने देखा है? जब मुग़ल बादशाह ने अंगरेज़ों को सूरत में कोठी बनाने की इजाज़त दे दी थी तब कौन कह सकता था कि आसमान टूटा? जब गांधी जी ने मुट्ठी भर नमक बना लिया तब कौन कह सकता है कि आसमान टूटा? और जब भारत के प्रधान मंत्री ने अमरीकी सरकार से "समझौता" या ग़ुलामी का पट्टा कर लिया तब कौन कह सकता है कि आसमान टूटा? लेकिन तीनों ही हालत में टूटा और डाक्टर कैलाशनाथ काटजू जैसे ज़िम्मेदार आदमी समझ सकते हैं कि आसमान टूटने के क्या नतीजे हुए. भले ही हुकूमत के नशे में आज उनकी निगाह असलियत देखने से इन्कार कर दे लेकिन हमें यक़ीन है कि उनके अन्दर की इन्सानियत और उनका गीताप्रेम उनको कभी न कभी तो चेतायेगा ही.

मगर असली सवाल यह है कि क्या हमारी सरकार एक क़दम की दूरी तक नहीं देख सकती? जनवरी के महीने में कुम्भ के लिये आने वाले यात्रियों पर टैक्स लगाने के मानी हैं कि सरकार सोती रही थी—हमें दुख के साथ

تو سکتی ہے مگر ایسا کرنا تبھی چاہئے جب کوئی دوسرا نہ ہو . اس لئے میرا وچار ہے کہ اس پر بحث کرنا اچھا ہوگا اور اس سوال کو' جیسا میں نے سمجھا ہے' کسی پارٹی کی نگاہ سے نہیں بلکہ ایک عام نگاہ سے دیکھنا چاہئے تاکہ پارلیامنٹ اچھی پرمپرائیں قائم کرسکے ."

پارلیامنٹ میں بحث کے دوران میں شری ٹھاکر داس بھارگو' ایک کانگریسی میمبر نے سرکار کی سب میں زیادہ ٹیکا کی اور اس بات پر بڑی تکلیف دکھائی کہ روزمرہ کے کام کاج کے لئے آرڈیننس نکالے جاتے ہیں . فائننس منسٹر بھی بحث میں شریک ہوئے اور انہوں نے اقرار کیا کہ آرڈیننس دوارا ٹیکس لگا دینا بہت مناسب بات نہیں ہے' لیکن کم سے کم اس معاملے میں دیری کا کارن تھی دفتر کی سستی . مگر ہوم منسٹر تو ایک دم آپے سے باہر ہو بیٹھے—ظاہر ہے کہ آرڈیننس جاری کرانے میں ہوم منسٹری کا سب میں زیادہ ہاتھ رہتا ہے—اور پریس آرڈیننس کو درست ٹھہراتے ہوئے کہا کہ "مجھے اس کا کوئی افسوس نہیں ہے اور اسکی وجہ سے 'آسمان نہیں ٹوٹ پڑا'." حکومت کے لوگ اگر اپنی غلطی کو غلطی مان لیں اور اس پر افسوس ظاہر کرنے لگ جائیں تو تعریف ہی کیا رہی!—یہ اصول جس طرح انگریزی راج کا تھا اس سے کہیں زیادہ سودیشی راج کا ہے . لیکن اسے کون مان سکتا ہے کہ حکومتیں غلطی نہیں کرتیں؟ اتنی زیادہ غلطی کرتی ہیں کہ نجی طور پر کوئی انسان خود نہیں کرسکتا . اور آسمان ٹوٹنا کس نے دیکھا ہے؟ جب مغل بادشاہ نے انگریزوں کو سورت میں کوٹھی بنانے کی اجازت دے دی تھی تب کون کہہ سکتا تھا کہ آسمان ٹوٹا؟ جب گاندھی جی نے مٹھی بھر نمک بنا لیا تب کون کہہ سکتا ہے کہ آسمان ٹوٹا؟ اور جب بھارت کے پردھان منتری نے امریکی سرکار سے "سمجھوتہ" یا غلامی کا پٹہ کرلیا تب کون کہہ سکتا ہے کہ آسمان ٹوٹا؟ لیکن تینوں ہی حالت میں ٹوٹا اور ڈاکٹر کیلاش ناتھ کاٹجو جیسے ذمہ دار آدمی سمجھ سکتے ہیں کہ آسمان ٹوٹنے کے کیا نتیجے ہوئے . بھلے ہی حکومت کے نشے میں آج انکی نگاہ اصلیت دیکھنے سے انکار کردے لیکن ہمیں یقین ہے کہ ان کے اندر کی انسانیت اور ان کا گیتا پریم انکو کبھی نہ کبھی تو چیتائیگا ہی .

مگر اصلی سوال یہ ہے کہ کیا ہماری سرکار ایک قدم کی دوری تک نہیں دیکھ سکتی؟ جنوری کے مہینے میں کمبھ کے لئے آنے والے یاتریوں پر ٹیکس لگانے کے معنی ہیں کہ سرکار سوتی رہی تھی—ہمیں دکھ کے ساتھ

इस राष्ट्रभाषा को रूप देने में हिन्दी हिन्दुस्तानी के चालू बोल चाल के शब्दों से जितनी मदद ले सकते हैं और उनके द्वारा राष्ट्रभाषा को जितना जानदार और सर्व प्रिय बना सकते हैं उतना नए संस्कृत शब्दों से नहीं.

10. 4. '54 —सुन्दरलाल

आर्डिनैन्सों का राज

पिछले दिसम्बर और जनवरी के महीनों में छै हफ्ते के अन्दर भारत के राष्ट्रपति ने सात आर्डिनैन्स जारी किये जिनमें से तीन ख़ास की ग़रज़ यह थी—

(1) आम जगहों में छुआछूत का जो व्यवहार करे उसे छै महीने की सज़ा या जुर्माना या दोनों;

(2) प्रेस ऐक्ट की मुद्दत बढ़ा देना;

(3) कुम्भ के मौक़े पर यात्रियों पर नया टैक्स लगाना.

भारत के विधान में लिखा है कि देश की हालत अगर ऐसी नाज़ुक या अनोखी हो जिससे राष्ट्रपति को आर्डिनैन्स की ज़रूरत का इतमीनान हो जाये तो वह आर्डिनैन्स जारी कर सकता है. इसलिये उन आर्डिनैन्सों को विधान के लिहाज़ से जाइज़ ठहराया जा सकता है. पर अगर आर्डिनैन्स चला चला कर ही राज करना है तो फिर पार्लियामैन्ट या असेम्बलियों की क्या ज़रूरत?

यह सवाल एक अहम और बुनियादी सवाल है जिसने देश के विचारवान लोगों को भी परेशान कर दिया है. ख़ुशी की बात है कि पार्लियामेन्ट के स्पीकर श्री गनेश वासुदेव मावलंकर को भी इन आर्डिनैन्सों से तकलीफ़ हुई और पार्लियामेन्ट में जब यह सवाल उठा तो फ़ाइनेन्स मिनिस्टर के यह कहने पर भी कि पहले से आम चर्चा करने के पेशतर बेहतर यह हो कि हर आर्डिनैन्स सम्बन्धी जो बिल आयें उन पर बहस हों—स्पीकर ने बहस की इजाज़त दे दी. उन्होंने कहा—

"मैं नहीं समझता कि कोई आदमी यह कहेगा कि वैधानिक रूप से सरकार जब चाहे आर्डिनैन्स नहीं जारी कर सकती. अगर मुझे ठीक ठीक याद है तो विधान में कहा गया है कि ज़रूरी मौक़ों पर ऐसा किया जाये. यह हक़ होने पर भी हर कोई चाहेगा कि अगर हस्ब मामूल क़ानून बन सके तो आर्डिनैन्सों का सहारा न लिया जाये." उन्होंने यह भी कहा—

"मेरा ख़याल है कि यह सवाल जो उठाया गया है उससे आर्डिनैन्स जारी करने की सरकारी ताक़त के बारे में भी वैधानिक सवाल पैदा हो जाता है. यह मानना पड़ेगा कि काम करने का यह प्रजातंत्री तरीक़ा नहीं है. सिर्फ़ अपवाद की सूरत में सरकार आर्डिनैन्स जारी कर

ہم راشٹر بھاشا کو روپ دینے میں ہندی ہندستانی کے چالو بول چال کے شبدوں سے جتنی مدد لے سکتے ہیں اور اُن کے دوارا راشٹر بھاشا کو جتنا جاندار اور سرو پریہ بنا سکتے ہیں اُتنا نئے سنسکرت شبدوں سے نہیں۔

10. 4. '54 — سندر لال

آرڈینینسوں کا راج

پچھلے دسمبر اور جنوری کے مہینوں میں چھ ہفتے کے اندر بھارت کے راشٹر پتی نے سات آرڈینینس جاری کئے جن میں سے تین خاص کی غرض یہ تھی—

1—عام جگہوں میں چھوا چھوت کا جو ویوہار کرے اُسے چھ مہینے کی سزا یا جرمانہ یا دونوں؛

2—پریس ایکٹ کی مدت بڑھا دینا؛

3—کمبھ کے موقع پر یاتریوں پر نیا ٹیکس لگانا۔

بھارت کے ودھان میں لکھا ہے کہ دیش کی حالت اگر ایسی نازک یا انوکھی ہو جس سے راشٹر پتی کو آرڈینینس کی ضرورت کا اطمینان ہو جائے تو وہ آرڈینینس جاری کر سکتا ہے۔ اس لئے اِن آرڈینینسوں کو ودھان کے لحاظ سے جائز ٹھہرایا جا سکتا ہے۔ پر اگر آرڈینینس چلا چلا کر ہی راج کرنا ہے تو پھر پارلیامینٹ یا اسمبلیوں کی کیا ضرورت؟

یہ سوال ایک اہم اور بنیادی سوال ہے جس نے دیش کے وچاروان لوگوں کو بھی پریشان کر دیا ہے۔ خوشی کی بات ہے کہ پارلیامینٹ کے اسپیکر شری گنیش واسودیو ماولنکر کو بھی اِن آرڈینینسوں سے تکلیف ہوئی اور پارلیامینٹ میں جب یہ سوال اُٹھا تو فائنینس منسٹر کے یہ کہنے پر بھی کہ پہلے سے عام چرچا کرنے کے بجائے بہتر یہ ہو کہ ہر آرڈینینس سمبندھی جو بل آئیں اُن پر بحث ہوں—اسپیکر نے بحث کی اجازت دے دی۔ انہوں نے کہا—

"میں نہیں سمجھتا کہ کوئی آدمی یہ کہے گا کہ ویدھانک روپ سے سرکار جب چاہے آرڈینینس نہیں جاری کر سکتی۔ اگر مجھے ٹھیک ٹھیک یاد ہے تو ودھان میں کہا گیا ہے کہ ضروری موقعوں پر ایسا کیا جائے۔ یہ حق ہونے پر بھی ہر کوئی چاہے گا کہ اگر حسب معمول قانون بن سکے تو آرڈینینسوں کا سہارا نہ لیا جائے۔" انہوں نے یہ بھی کہا—

"میرا خیال ہے کہ یہ سوال جو اُٹھایا گیا ہے اس سے آرڈینینس جاری کرنے کی سرکاری طاقت کے بارے میں ویدھانک سوال پیدا ہو جاتا ہے۔ یہ ماننا پڑے گا کہ کام کرنے کا یہ پرجا تنتری طریقہ نہیں ہے۔ صرف اپواد کی صورت میں سرکار آرڈینینس جاری کر سکتی ہے، جاری کر

नं०	उत्तर भारत	तेलुगु	तमिल	कन्नड़
156.	संदूक़	संदुका	चन्दु	संदूक
157.	सनद	सन्नदु	सनद	सनद
158.	सरकार	सरकारु	चरकार	सरकार
159.	सरासर	सरासरी	चराचररि	सरासरी
160.	सरदार	सर्दारुडु	सरदार	सरदार
161.	सलीस	सलीसु	सल्लीसु	सलीसु
162	सवारी	सवारि	चवारि	सवारि
163.	सवाल	सवालु	चवाल	सवालु
164.	सामान	सामानु	चामान	समानु
165.	सालाना	सालीयाना	सालिवाकनम्	सालेयाना
166.	सिपाही	सिफायि	सिप्पायि	सिपाइ
167.	सिफ़ारिश	सिफारसु	सिफारिसु	सिफारसु
168.	हक़	हक्कु	अक्कु	हक्कु
169.	हद	हदु	अत्तु	हद्दु
170.	हरामज़ादा	हरामजाद	अरामजाति	हरामजादा
171.	हल्क़ा	हल्का	अलाका	हल्का
172.	हलाक	हल्लाकु	अलाक	हलाक
173.	हवालात	हवालती	अवालत्तु	हवाला
174.	हिस्सा	हिस्सा	इस्सा	हिस्सा
175.	हुज़ूर	हजूरु	उजूरु	हुजूरु

ऊपर की दोनों फ़ेहरिस्तें केवल नमूने के तौर पर हैं. दक्खिन के एक भाई ने, जो दक्खिन की भाशाओं के साथ साथ हिन्दी के भी पूरे विद्वान हैं, हमें एक लम्बी फ़ेहरिस्त भेजी है, जिस में हिन्दुस्तानी और दो दक्खिनी भाशाओं में मिलने वाले एक ही से शब्दों की गिनती लगभग पांच सौ, और हिन्दुस्तानी और एक दक्खिनी भाशा में इसी तरह के मिलते हुए शब्दों की गिनती डेढ़ हज़ार से ऊपर है. हिन्दी इस तरह के बोल चाल के शब्द भी जैसे : अकारथ, अटकाव, आगे पीछे, आसरा, उड़ान, कमाई, कसर, कार बार, किनारा, किराया, कोठरी, ख़ुलासा, खेत, गड़बड़ गली गँवार, गारा, गैर, चक्कर, चटनी, चमक, चाँदनी, चूल्हा, चौक, चौथाई, चौधरी, जुलाहा, ज़िद, जिल्द, जेब, झंडा, झनझट, टुकड़ा, टोली, ठेका, ठिकाना, डांवाडोल, तितर बितर, तरजुमा, तालाब, तारीख़, तिहाई, दवात, दिलासा दुकान, दुबला, दुहाई, धूमधाम, नक़द, नफ़ा, नादार, नौकर, पंखा, पकौड़ी, पत्ती, पानदान, फ़ेहरिस्त, बंजर, बंटवारा, बदनामी, बराबर, बाजा, बिछौना, बेकार, बेडौल, बेमानी, भरोसा, मनमाना, मसाला, मिठाई, मुफ़्त, मुहताज, लड़ाई, लड़का, वास्ता, शरम, शिकार, सड़क, सर्दी, साल, सुनवाई, सुस्ती, सौदागर, हिम्मत, हुण्डी, दक्खिन की भाशाओं में भरे पड़े हैं, जिनसे मालूम होता है कि

نمبر	اُتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ
156.	صندوق	سندوکا	چندو	سندوک
157.	سند	سننددو	سند	سنددو
158.	سرکار	سرکارو	چرکار	سرکار
159.	سراسر	سراسری	چراچرری	سراسری
160.	سردار	سرداروڑو	سردار	سردار
161.	سلیس	سلیسو	سللیسو	سلیسو
162.	سواری	سواری	چواری	سواری
163.	سوال	سوالو	چوال	سوالو
164.	سامان	سامانو	چامان	سمانو
165.	سالانہ	سالیانا	سالیواکلم	سالےیانا
166.	سپاہی	سپھائی	سپھائی	سپائی
167.	سفارش	سپھارسو	سپارسو	سپھارسو
168.	حق	ہککو	اککو	ہککو
169.	حد	ہدو	اتو	ہددو
170.	حرام‌زادہ	ہرامجاد	ارامجاتی	ہرامجادا
171.	حلقہ	ہلکا	الاکا	ہلکا
172.	ہلاک	ہلاکو	الاک	ہلاک
173.	حوالات	ہوالتی	اوالتو	ہوالا
174.	حصہ	ہسا	اِسا	ہسا
175.	حضور	ہجورو	اجورو	ہجورو

اوپر کی دونوں فہرستیں کیول نمونے کے طور پر ہیں. دکھن کے ایک بھائی نے، جو دکھن کی بھاشاؤں کے ساتھ ساتھ ہندی کے بھی پورے ودوان ہیں، ہمیں ایک لمبی فہرست بھیجی ہے، جس میں ہندستانی اور دو دکھنی بھاشاؤں میں ملنے والے ایک ہی سے شبدوں کی گنتی لگ بھگ پانچ سو، اور ہندستانی اور ایک دکھنی بھاشا میں اسی طرح کے ملتے ہوئے شبدوں کی گنتی ڈیڑھ ہزار سے اوپر ہے. ہندی کے اس طرح کے بول چال کے شبد بھی جیسے : اکارتھ، اٹکاؤ، آگے پیچھے، آسرا، اڑان، کمائی، کسر، کاربار، کنارہ، کرایہ، کوٹھری، خلاصہ، کھیت، گڑبڑ، گلی، گنوار، گارا، غیر، چکر، چٹنی، چمک، چاندنی، چولہا، چوک، چوتھائی، چودھری، جلاہا، ضد، جلد، جیب، جھنڈا، جھنجھٹ، ٹکڑا، ٹولی، ٹھیکا، ٹھکانا، ڈانواڈول، تتربتر، ترجمہ، تالاب، تاریخ، تہائی، دوات، دلاسہ، دکان، دبلا، دہائی، دھوم‌دھام، نقد، نفع، نادار، نوکر، پنکھا، پکوڑی، پتی، پاندان، فہرست، بنجر، بٹوارا، بدنامی، برابر، باجا، بچھونا، بیکار، بیڈول، بےمعنی، بھروسہ، من‌مانا، مسالا، مٹھائی، مفت، محتاج، لڑائی، لڑکا، واسطہ، شرم، شکار، سڑک، سردی، سال، سنوائی، سستی، سوداگر، ہمت، ہنڈی، دکھن کی بھاشاؤں میں بھرے پڑے ہیں، جن سے معلوم ہوتا ہے کہ

हमारी राय

नं०	उत्तर भारत	तेलुगु	तमिल	कन्नड़
114.	बिसात	बिसातु	बिसात	बिसातु
115.	बुलाक़	बुलाकी	बुलाकु	बुलाकु
116.	बेज़ार	बेजारु	बेजारा	बेजारु
117.	बेपरवाह	बेपरवा	परवाइल्लै	बेपरवा
118.	बेबाक	बेबाकी	बेबाकि	बेबाक
119.	बेवारिस	बेवारसु	वारिसइल्लावे	बेवार्सा
120.	बेशक	बेषकु	बेशा	बेशक
121.	बेसर	बेसरि	बेसरि	बेसरि
122.	मनसबदार	मंनसबदार	मंसबदार	मनसबदार
123.	मुक़ाम	मकां	मुकाम	मुकाम
124.	मख़मल	मखमल	मखमल	मखमल
125.	मज़ाक़	मजाखा	मजाक	मजाक
126.	महताबी	मताबु	मत्तापु	मतापु
127.	मदद	मद्दतु	मदद	मद्दत्तु
128.	माफ़ी	माफी	मन्निप्पु	माफु
129.	मरम्मत	मरम्मतु	मराम्मत्तु	मरम्मत्तु
130.	मरहम	मलामु	मुलाम	मुलामु
131.	मस्त	मस्तु	मस्त्	मस्ती
132.	महज़रनामा	महजरनामा	महजरनामा	महजरनामे
133.	महल	महलु	महल	महलु
134.	महसूल	महसूलु	मासूल	महसूलु
135.	मामूल	मामूलु	मामूल	मामूलु
1?6.	मारफ़त	माफ़ंत	मारबत्तु	माफ़त्तु
137.	मालिश	मीलीषु	मालिस	मालीशु
1?8	मुन्शी	मुंशी	मुंशि	मुन्शी
139.	मुन्सिफ़	मुनसबु	मुनिसिफु	मुन्सफु
140.	मेज़	मेजा	मेजै	मेज
141.	मैदान	मैदानमु	मैदानम्	मैदान
142.	मौज	मोजु	मोजा	मजा
143.	लगाम,	लगामु	लगाम	लगाम
144.	लाचार	लाचारु	लाचार	लाचार
145.	लायक़	लायखु	लायक	लायक
146.	वग़ैरह	वगैरा	वगैयरा	वगैरह
147.	वसूल	वसूल	वसूल	वसूलु
148.	उस्ताद	वस्तादु	वस्तादी	वस्तादी
149.	वापस करना	वापसुचेय	वापीस	वापसमाडु
150.	वादा	वायिदा	वायिदा	वायिदे
151.	वारिस	वारसु	वारिसु	वारसु
152.	शाबाश	षबाष	सबाष	शाबास
153.	शर्त	षरतु	सरत्तु	शरत्तु
154.	शहर	षहरु	सहर	शहर
155.	शुमार	शुमारु	चुमार	सुमारु

ہماری رائے

نمبر	اتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ
114.	بساط	بساتو	بسات	بساتو
115.	بلاق	بلاکی	بلاکو	بلاکو
116.	بیزار	بیجارو	بیجارا	بیجارو
117.	بیپرواہ	بیپروا	پروا اِللے	بیپروا
118.	بیباک	بیباکی	بیباکہ	بیباک
119.	بیوارث	بیوارسو	وارس اِلاد	بیوارسا
120.	بیشک	بیشکو	بیشا	بیشک
121.	بیسر	بیسری	بیسری	بیسری
123.	منصبدار	منسبدار	منسبدار	منسبدار
123.	مقام	مکاں	مکام	مکام
124	مخمل	مکھمل	مکھمل	مکھمل
125.	مذاق	مجاکھا	مجاک	مجاک
126.	مہتابی	متابو	[illegible]ابو	متاپو
127.	مدد	مددو	مدد	مددتو
128.	معافی	مافی	مننپو	ماپھو
129.	مرمت	مرمتو	مرامتو	مرمتو
130.	مرہم	ملامو	مولام	ملامو
131.	مست	مستو	مست	مستی
132.	محضرناما	محضرناما	محضرناما	محضرنامے
133.	محل	مہلو	مہل	مہلو
134.	محصول	مہسولو	ماسول	مہسولو
135.	معمول	مامولو	مامول	مامولو
136.	معرفت	مارفتو	مارکتو	مارفتو
137.	مالش	مولیشو	مالس	مالیشو
138.	منشی	منشی	منشی	منشی
139.	منصف	منسبو	منیسپھو	منسپھو
140.	میز	میجا	میجھے	میج
141.	میدان	میدانمو	میدانم	میدان
142.	موج	موجو	موجا	مجا
143.	لگام	لگامو	لگام	لگام
144.	لاچار	لاچارو	لاچار	لاچار
145.	لائق	لایکو	لایک	لایک
146.	وغیرہ	وگیرا	وگیرا	وگیرا
147.	وصول	وسول	وسول	وسولو
148.	اُستاد	وستادو	وستادی	وستادی
149.	واپس کرنا	واپسوچیہ	واپیس	واپس مارو
150.	وعدہ	وایدا	وایدا	وایدے
151.	وارث	واریسو	وارسو	وارسو
152.	شاباش	شباش	سباش	شاباس
153.	شرط	شرتو	سرتو	شرتو
154.	شہر	شہرو	سہر	شہر
155.	شمار	شمارو	چمار	سمارو

नं०	उत्तर भारत	तेलुगु	तमिल	कन्नड़
72.	तआल्लुक़ा	तालूका	तालूका	तालुकु
73.	दख़ल	दखलु	दाक्कल	दखलायिसु
74.	दग़ाबाज़ी	दगलबाजी	दगलबाजी	डगलबाजी
75.	दग़ा	दगा	दगा	दगा
76.	दफ़ा	दफा	दबा	दफे
77.	दरबान	दरबान	दरबान	दरबान
78.	दरबार	दरबारु	दरबार	दरबार
79.	दरख़्वास्त	दर्खास्त	तरकास्त	दर्खास्तु
80.	दस्तावेज़	दस्तावेजु	दस्तावेज	दस्तावेजु
81.	दावा	दावा	दावा	दावा
82.	दीवान	दिवानु	तिवान	दिवान
83.	दिवाला	दिवाला	तिवाल	दिवालि
84.	दुपट्टा	दुप्पटि	तुपट्टि	दुप्पटि
85.	दुरुस्त	दुरुस्तु	तुरु	दुरुस्तु
86.	नक़ल	नकलु	नकल	नकलु
87.	नमूद	नमोदु	नमोदु	नमूद
88.	नमूना	नमूना	नमूना	नमूना
89	नाज़र	नाजर	नाजर	नाजर
90.	नाज़ुक	नाजूकु	नाचुक	नाजूकु
91.	नाश्ता	नास्ता	नास्ता	नाश्ता
92.	परगना	परगणा	परगाणम्	परगणे
93.	परवाह	पर्वा	परवा	परवा
94.	पूरा	पूरा	पूरा	पूरा
95.	पेशकार	पेषकारु	पेषक्कार	पेष्कार
96.	पैमाइश	पैमायिशि	पैमाश	पैमायिशि
97.	पायजामा	पैजामा	पाइजामा	पाइजामा
98.	पहलवान	पैलुमानु	पयिल्वान	पैलमान
99.	फ़क़त	फ़क्तु	पोतुम्	फकत
100.	फ़ख़्र	फ़ख्र	पांक्किरि	पोकरी
101.	फ़सल	फसल	फसल	फसल
102.	फ़रारी	परार	परारि	परारि
103.	फ़िक्र	फिख्र	पिक्कु	पिकिरि
104.	फ़रियाद	फिर्यादु	पिरादु	फिर्यादु
105.	बग़ल	बगलु	बगल	बगल
106.	बदमाश	बदमाष	बदमाश	बदमाश
107.	बदलना	बदलायिंचु	बदिल	बदलायिसु
108.	बरात	बरातमु	बरातम्	बराता
109.	बहादुर	बहदुरु	बहादुर	बहादुर
110.	बाक़ी	बाकी	बाकि	बाकी
111.	बाज़ूबंद	बाजूबंदी	बंकि	बाजूबन्दी
112.	बाज़ार	बाजारु	बाज़ार	बाजारु
113.	बाबत	बापतु	बापत	बाबतु

نمبر	اُتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ
.72	تعلقہ	تالوکا	تالوکا	تاللوکو
.73	دخل	دکھلو	داکل	دکھلایسو
.74	دغابازی	دگلباجی	دگلباجی	ڈھگلباجی
75	دغا	دگا	دگا	دگا
.76	دفعہ	دپھا	دپا	دفے
.77	دربان	دربانو	دربان	دربان
.78	دربار	دربارو	دربار	دربار
.79	درخواست	درکھاست	ترکاست	درکھاستو
.80	دستاویز	دستاویجو	دستاویج	دستاویجو
.81	دعوہ	داوا	داوا	داوا
.82	دیوان	دوانو	توان	دیوان
.83	دوالہ	دوالا	توال	دیوالہ
.84	دپٹہ	دپٹی	توپٹی	دوپٹہ
.85	درست	درستو	ترو	درستو
.86	نقل	نکلو	نکل	نکلو
.87	نمود	نمودو	نمودو	نمود
.88	نمونہ	نمونا	نمونا	نمونا
.89	ناظر	ناجر	ناجر	ناجر
.90	نازک	ناجوکو	ناچک	ناجوکو
.91	ناشتہ	ناستا	ناستا	ناشتا
.92	پرگنہ	پرگوان	پرگانم	پرگون
.93	پرواہ	پروا	پروا	پروا
.94	پورا	پورا	پورا	پورا
.95	پیشکار	پشکارو	پیشکار	پیشکار
.96	پیمائش	پیمایش	پیماش	پیمایشی
.97	پایجامہ	پیجاما	پائیجاما	پائیجاما
.98	پہلوان	پہلومانو	پولوان	پیلمان
.99	فقط	فقطو	پوتم	پھکت
.100	فخر	فکھر	پونکری	پوکری
.101	فصل	پھسل	پھسل	پھسل
.102	فراری	پرار	پراری	پراری
.103	فکر	پھکھر	پککو	پکھری
.104	فریاد	پھریادو	پرادو	پھریادو
.105	بغل	بگلو	بگل	بگل
.106	بدمعاش	بدماش	بدماش	بدماش
.107	بدلنا	بدلائچو	بدل	بدلایسو
.108	برات	براتمو	براتم	براتا
.109	بہادر	بہدورو	بہادر	بہادر
.110	باقی	باکی	باکہ	باکی
.111	بازوبند	باجوبندی	بنکہ	باجوبندی
.112	بازار	باجارو	باجار	باجارو
.113	بابت	باپتو	باپت	باپتو

सं०	उत्तर भारत	तेलुगु	तमिल	कन्नड
30.	गरज	गरजु	गरज	गरजु
31.	गलबा	गलबा	कलबा	गलबे
32.	गल्ला	गल्ला	कल्ला	गल्ला
33.	गाड़ीखाना	गाडीखाना	गाडिखाना	गाँडीखाना
34.	गुमाश्ता	गुमास्ता	कुमास्ता	गुमास्ते
35.	गुलाम	गुलाम	कुलाम	गुलाम
36.	चकनामा	चकुनामा	चकबन्दी	चेकनामा
37.	चाबुक	चबुकु	चबुक्कु	चाबूकु
38.	चालाक	चालाकी	चालाक	चालाकु
39.	जब्त	जप्ति	जप्ति	जप्तु
40.	जबर्दस्ती	जबरु	जबरदस्त	जबर्दस्तु
41.	जवाबु	जवाबु	जवाब	जवाबु
42.	जमा	जमा	जमै	जमा
43.	जमाखर्च	जमाखर्चु	जमाबंदी	जमाखर्चु
44.	जमादार	जमादारु	जमेदार	जमादार
45.	जमाबन्दी	जमाबंदि	जमाबंदि	जमाबंदि
46.	जमीन्दार	जमीन्दारु	जमीन्दार	जमीन्दार
47.	जमीन	जमीनु	जमीन	जमीनु
48.	जरी	जरी	जरिगै	जरी
49.	जलसा	जल्सा	जल्सा	जल्सा
50.	जवान	जवानु	जवान	जवान
51.	जवाबदेही	जवाबदारी	जवाबदारि	जवाबदारि
52.	जगह	जागा	जागै	जाग
53.	जागीर	जागीरु	जागीर	जागीरु
54.	जाब्ता	जाबिता	जाबिता	जाबिता
55.	जामिन	जामीनु	जामीन	जामीनु
56.	जारी	जारी	जारि	जारि
57.	ज़ियादा	जास्ती	जास्ति	जास्ति
58.	ज़िला	जिल्ला	जिल्ला	जिल्हा
59.	ज़ुल्म	जुलुमु	जुलम्	जुलुं
60.	ज़ोर	जोरु	जोर	जोरु
61.	टेक्सा	डेक्सा	ढेक्सा	टेग्सा
62.	तकरार	तकरारु	तकरार	तकरारु
63.	ताकीद	ताकीदु	ताकीद्	ताकीदु
64.	तनक़ीह	तनिखी	तनिक्कै	तनखि
65.	तमाशा	तमाषा	तमासा	तमाशे
66.	तैयार	तयारु	तयार	तयारु
67.	तरफ़	तरफ़ु	तरप्पु	तरफ़ु
68.	तराज़ू	तराजु	तरासु	त्रासु
69.	तलाक़	तलाकु	तलमारि	तिलाक
70.	तहसीलदार	तहसीलुदारु	तासीलदार	तहसीलुदार
71.	ताज़ा	ताजा	ताजा(चेक्कु)	ताजा

نمبر	اتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ
.30	غرض	گرجو	گرج	گرجو
.31	غلبہ	گلبا	کلبا	گلبے
.32	غلہ	گلہ	کلا	گلہ
.33	گاڑی خانہ	گاڈی کھانہ	گاڈی کھانہ	گاڈی کھانا
.34	گماشتہ	گماستہ	کوماستہ	گوماستے
.35	غلام	گلام	کلام	گولام
.36	چکنامہ	چکونامہ	چکبندی	چیکناما
.37	چابک	چبکو	چبکو	چابوکو
.38	چالاک	چالاکی	چالاک	چالاکو
.39	ضبط	جپتی	جپتی	جپتو
.40	زبردستی	جبرو	جبردست	جبردستو
.41	جواب	جبابو	جباب	جبابو
.42	جمع	جما	جمے	جما
.43	جمع خرچ	جماکھرچو	جمابندی	جماکھرچو
.44	جمعدار	جمادارو	جمےدار	جمادار
.45	جمعبندی	جمابندی	جمابندی	جمابندی
.46	زمیندار	جمیندارو	جمیندار	جمیندار
.47	زمین	جمینو	جمین	جمینو
.48	زری	جری	جریگے	جری
.49	جلسہ	جلسا	جلسا	جلسا
.50	جوان	جوانو	جوان	جوان
.51	جوابدہی	جوابداری	جوابداریہ	جوابداریہ
.52	جگہ	جاگا	جاگے	جاگ
.53	جاگیر	جاگیرو	جاگیر	جاگیرو
.54	ضابطہ	جابتا	جابتہ	جابتا
.55	ضامن	جامینو	جامین	جامینو
.56	جاری	جاری	جاری	جاری
.57	زیادہ	جاستی	جاستہ	جاستہ
.58	ضلع	جللا	جلا	جلہا
.59	ظلم	جولوم	جولم	جولوم
.60	زور	جورو	جور	جورو
.61	ٹیکسا	ڈیکسا	ڈھیکسا	ٹیکسا
.62	تکرار	تکرارو	تکرار	تکرارو
.63	تاکید	تاکیدو	تاکید	تاکیدو
64	تنقیح	تنکھی	تنکیے	تنکھہ
.65	تماشہ	تماشا	تماسا	تماشے
.66	تیار	تیارو	تیار	تیارو
.67	طرف	ترپھو	ترپو	ترپھو
.68	ترازو	تراجو	تراسو	تراسو
.69	طلاق	تلاکو	تلماریہ	تلاکو
.70	تحصیلدار	تہصیلودارو	تاسیلدار	تہسیلودار
.71	تازہ	تاجا	تاجا(چیکو)	تاجا

नं०	उत्तर भारत	तेलुगु	तमिल	कन्नड़	मलयालम
6.	इत्र	इत्तर	अत्तर	अत्तर	अत्तर
7.	इनाम	इनाम	इनाम	इनामु	इनाम्
8.	इरसाल	इरसालु	इरसाल	इरसालु	इरसाल
9.	इस्तरी	इस्तिरि	इस्तिरि	इस्त्री	इस्त्री
10.	इक़रारनामा	इकरारु	करारनामा	इकरारनामा	करारु पत्रम्
11.	कचहरी	कचेरी	कच्चेरि	कचेरी	कचेरी
12.	बंदोबस्त	बंदोबस्तु	बंदोपस्तु	बंदोबस्तु	बंदोबस्तु

फ़ारसी अरबी के कुछ ऐसे शब्दों की मिसालें जो उत्तर भारत की आम बोल चाल के साथ साथ दक्खिन की कम से कम तीन भाषाओं में थोड़े से बदले हुए रूप में और उन्हीं अर्थों में चालू हैं :—

नं०	उत्तर भारत	तेलुगु	तमिल	कन्नड़
1.	अमानत	अनामतु	अनामत्तु	अमानतु
2.	अमल	अमलु	अमल	अमलु
3.	अमीन	अमीना	अमीना	अमीन
4.	अलहदा	अलायिदा	अलाति	अलायिदा
5.	आख़िर	आख़रु	आकिर	आख़ीरु
6.	आशना	आष्णा	आश्ना	आष्णा
7.	इलाक़ा	इलाका	इलाका	इलाक़े
8.	ओहदा	होदा	ओदा	ओहदे
9.	कमतरीन	कंतरीन	कंदरी	कंतरी
10.	कमान	कमानु	कमान	कमानु
11.	क़ैद	कायिदु	कैदी	कैदु
12.	क़रार	करारु	करार	करारु
13.	क़लई	कलायि	कलाय	कलाय्
14.	क़वायद	कवातु	कवातु	कवातु
15.	कसरत	कसरतु	कसरत्	कसरत्तु
16.	क़ायम	कायमु	कायम्	कायम्
17.	क़ायदा	कायिदा	कायिदा	कायिदे
18.	काहिल	कायिला	कायला	कायिले
19.	किराया	किरायि	किराम्	किराय
20.	क़िस्तबंदी	किस्तीबन्दी	किस्ती	किस्तु
21.	कुश्ती	कुस्ती	कुस्ती	कुस्ती
22.	कूज़ा	कूजा	कूजा	कूजा
23.	कोतवाल	कोत्वालु	कोत्तवाल	कोतवाल
24.	ख़ज़ाना	खजाना	कजाना	खजाने
25.	ख़बरदार	खबर्दारु	कबरदार	खबरदार
26.	ख़लल	खलल्	कलल	खललु
27.	ख़ाली	खाली।	कालि	खालि
28.	ख़ास	खासा	खासा	खासा
29.	ख़िताब	खिताबु	किताब	किताबु

نمبر	اتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ	ملیالم
6.	عطر	اتر	اتر	اتر	اتر
7.	انعام	انام	انام	انامو	انام
8.	ارسال	اروسالو	اروسال	ارسالو	اروسال
9.	استری	امتری	اسٹیری	استری	استری
10.	اقرارنامہ	اکرارو	کرارناما	اکرارنامہ	کرارو پترم
11.	کچہری	کچیری	کچچیری	کچیری	کچیرو
12.	بندوبست	بندوبستو	بندوپستو	بندوبستو	بندوبستو

فارسی عربی کے کچھ ایسے شبدوں کی مثالیں جو اتر بھارت کی عام بول چال کے ساتھ ساتھ دکھن کی کم سے کم تین بھاشاؤں میں تھوڑے سے بدلے ہوئے روپ میں اور انہیں ارتھوں میں چالو ہیں :—

نمبر	اتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ
1.	امانت	انامتو	انامتتو	امانتو
2.	عمل	املو	امل	املو
3.	امین	امینا	امینا	امین
4	علیحدہ	الائدہ	الاتی	الائدا
5.	آخر	آکھرو	آکر	آکھیرو
6.	آشنا	آشکراں	آشنا	آشراں
7.	علاقہ	الاکا	الاکا	الاکے
8.	عہدہ	ہودا	اودا	اوہدے
9.	کمترین	کنترین	کندری	کنتری
10	کمان	کمانو	کمان	کمانو
11.	قید	کائدو	کیدی	کیدو
12.	قرار	کرارو	کرار	کرارو
13.	قلعی	کلائی	کلائے	کلایہ
14.	قواعد	کواتو	کواتو	کواتو
15.	کثرت	کسرتو	کسرت	کسرتتو
16.	قایم	کایم	کائم	کایم
17.	قایدا	کائدا	کائدا	کائدے
18	کاہل	کائلا	کائلا	کائلے
19.	کرایا	کرایی	کرام	کرایہ
20.	قسطبندی	کشتی بندی	کشتی	کھستو
21.	کشتی	کستی	کستی	کستی
22.	کوزا	کوجا	کوجا	کوجا
23.	کوتوال	کوتوالو	کوتتوال	کوتوال
24.	خزانہ	کھجانہ	کجانہ	کھجانے
25.	خبردار	کھبردارو	کبردار	کھبردار
26.	خلل	کھللو	کلل	کھللو
27.	خالی	کھالی	کالی	کھالیہ
28.	خاص	کھاسا	کھاسا	کھاسا
29.	خطاب	کھتابو	کتاب	کتابو

से आसान और मिलती जुलती चीज़ें लेकर वह राष्ट्रभाषा बना ली और एक साल के अन्दर बना ली जिसका ढांचा तो अभी तक पीकिंग के आसपास की बोली ही है पर जिस में लिखी हुई किताबें आज दस दस बीस बीस लाख की गिनती में छपती और खपती हैं. और जिन्हें किसी प्रांत के भी बेपढ़े चीनियों के सामने पढ़ कर सुनाओ तो एक बच्चा भी समझ लेगा.

भारत की राष्ट्र भाषा वही भाषा होगी जो हर तरह की हठधर्मी, कट्टरता और तंगनज़री से ऊपर होगी, और जो पूरी तरह जनता की भाषा को अपनाये हुये जनता ही की भाषा होगी. आख़िर में हम एक हिन्दी अख़बार से लेकर मौलाना अबुलकलाम आज़ाद के कुछ साल पहले के इन शब्दों से इसे नोट को ख़तम करते हैं—

"मुझे यह देख कर बड़ी ही मायूसी (निराशा) हुई कि एक तरफ़ से लेकर दूसरी तरफ़ तक हर तरफ़ तंगख़्याली छाई हुई है. तंगख़्याली आप समझें नेरोमाइन्डिडनेस, दिमाग़ का छोटा और सिमटा हुआ होना और हर तरह के फैलाव और ऊंचाई से इन्कार करना. मैं आप से कहूंगा कि हम ऐसा तंग दिमाग़ लेकर बड़ी क़ौम नहीं हो सकते. हिन्दुस्तान की क़दीमी बड़ाई और तरक्क़ी को इसी तंगख़्याली ने तारीकी (अंधकार) में डाल दिया था और यह बड़ी ही ख़तरनाक बात है कि हम फिर इसी तरफ़ झुक रहे हैं."

हम पचास बरस से अपने प्यारे देश की नब्ज़ को देख रहे हैं. हमें विश्वास है कि वह तंगख़्याली जिसकी मौलाना शिकायत करते हैं शाम की ढलती हुई धूप की तरह जा रही है. देश आगे बढ़ेगा. हिन्दी भी बढ़ेगी. केवल भारत में नहीं दुनिया में हिन्दी अपनी जगह लेगी, हमें यह भी यकीन है कि टंडन जी अगर एक बार इरादा कर लें तो इस नेक और ज़रूरी काम में जितनी मदद वह दे सकते हैं कोई दूसरा नहीं दे सकता.

10. 4. '54 —सुन्दरलाल

फ़ारसी, अरबी शब्दों की फ़ेहरिस्त

फ़ारसी अरबी के कुछ ऐसे शब्दों की मिसालें जो उत्तर भारत की आम बोल चाल के साथ साथ दक्खिन की चारों भाषाओं में भी थोड़े से बदले हुए रूप में और उन्हीं अर्थों में चालू हैं :—

नं०	उत्तर भारत	तेलगु	तमिल	कनड़	मलयालम
1.	अरज़ी	अर्ज़ी	अर्ज़ी	अर्ज़ी	हर्ज़ी
2.	असल	असलु	असल	असल	अस्सल
3.	आबकारी	आब्कारी	आब्कारी	आब्कारी	आब्कारी
4.	अलमारी	अल्मारी	अलमारी	अलमारा	अलुमारी
5.	आसामी	आसामी	आसामि	आसामी	आसामी

سے آسان اور ملتی جلتی چیزیں لے کر وہ راشٹر بھاشا بنا لی اور ایک سال کے اندر بنا لی جس کا ڈھانچہ تو ابھی تک پیکنگ کے آس پاس کی بولی ہی ہے پر جس میں لکھی ہوئی کتابیں آج دس دس بیس بیس لاکھ کی گنتی میں چھپتی اور کھپتی ہیں اور جنہیں کسی پرانت کے بھی بے پڑھے چینیوں کے سامنے پڑھ کر سناؤ تو ایک بچہ بھی سمجھ لیگا۔

بھارت کی راشٹر بھاشا وہی بھاشا ہوگی جو ہر طرح کی ہٹ دھرمی، کٹرتا اور تنگ نظری سے اوپر ہوگی اور جو پوری طرح جنتا کی بھاشا کو اپنائے ہوئے جنتا ہی کی بھاشا ہوگی۔ آخر میں ہم ایک ہندی اخبار سے لے کر مولانا ابوالکلام آزاد کے کچھ سال پہلے کے ان شبدوں سے اس نوٹ کو ختم کرتے ہیں :—

" مجھے یہ دیکھ کر بڑی ہی مایوسی (نراشا) ہوئی کہ ایک طرف سے لیکر دوسری طرف تک ہر طرف تنگ خیالی چھائی ہوئی ہے۔ تنگ خیالی آپ سمجھیں نیرومائنڈڈنس، دماغ کا چھوٹا اور سمٹا ہوا ہونا اور ہر طرح کے پھیلاؤ اور اونچائی سے انکار کرنا۔ میں آپ سے کہوں گا کہ ہم ایسا تنگ دماغ لیکر بڑی قوم نہیں ہو سکتے۔ ہندستان کی قدیمی بڑائی اور ترقی کو اسی تنگ خیالی نے تاریکی (اندھکار) میں ڈال دیا تھا اور یہ بڑی ہی خطرناک بات ہے کہ ہم پھر اسی طرف جھک رہے ہیں۔"

ہم پچاس برس سے اپنے پیارے دیش کی نبض کو دیکھ رہے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ وہ تنگ خیالی جسکی مولانا شکایت کرتے ہیں شام کی ڈھلتی ہوئی دھوپ کی طرح جا رہی ہے۔ دیش آگے بڑھے گا۔ ہندی بھی بڑھے گی۔ کیول بھارت میں نہیں دنیا میں ہندی اپنی جگہ لے گی۔ ہمیں یہ بھی یقین ہے کہ ٹنڈن جی اگر ایک بار ارادہ کر لیں تو اس نیک اور ضروری کام میں جتنی مدد وہ دے سکتے ہیں کوئی دوسرا نہیں دے سکتا۔

—سندرلال 10-4-'54

فارسی، عربی شبدوں کی فہرست

فارسی عربی کے کچھ ایسے شبدوں کی مثالیں جو اتر بھارت کی عام بول چال کے ساتھ ساتھ دکھن کی چاروں بھاشاؤں میں بھی تھوڑے سے بدلے ہوئے روپ میں اور انہیں ارتھوں میں چالو ہیں :—

نمبر	اتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ	ملیالم
1.	عرضی	عرجی	عرجی	عرجی	ھرجی
2.	اصل	اصلو	اصل	اصل	اسسل
3.	آبکاری	آبکاری	آبکاری	آبکاری	آبکاری
4.	الماری	المارا	الماری	المارا	الوماری
5.	آسامی	اسامی	آسامی	اسامی	آسامی

फ़हरिस्त* हम दूसरी जगह दे रहे हैं. हमने मद्रास प्रांत के धुर दक्खिन तक लगभग हर ज़िले का दौरा किया है और हम पूरी ज़िम्मेदारी के साथ कह सकते हैं कि वहां के आम लोगों में हमारी मिली जुली बोली जितनी अच्छी तरह और आसानी से समझी जाती है उतनी आजकल की संस्कृत भरी हिन्दी नहीं समझी जाती.

10. 4. '54 —सुन्दरलाल

हमारी अपील

अंत में हम अपने प्यारे और आदरनीय भाई टंडन जी से अपील करते हैं कि वह राष्ट्रभाषा हिन्दी के हित में इन ग़लत और कट्टर प्रवृत्तियों को रोकें. हिन्दी को बढ़ने और फैलने का मौक़ा दें. उर्दू हिन्दी के झगड़े को ख़तम करने के लिये लगभग सारे उर्दू साहित्य को हिन्दी साहित्य मान लें, उसे नागरी लिपि में छपवा कर हमारी स्कूली और कालिजी किताबों में शामिल करा दें. ग़ालिब ने अपनी बोली को "हिन्दी" कहा है. हम भी उसकी बोली को हिन्दी और अच्छी हिन्दी मानें और उसे वैसे ही अपनावें जैसे प्रेमचंद या भारतेन्दु की भाषा को. भारत की दूसरी भाषाओं के उन सब शब्दों को जो, चाहे कहीं से आये हों, हिन्दी में आसानी से खप सकते हैं, खपा लें. इस तरह राष्ट्रभाषा हिन्दी को हम भारत की सारी भाषाओं का संगम बना लें. हमें विश्वास है कि हिन्दी के मामले में देश ने अगर महात्मा गांधी की बुनियादी बातों को मान लिया होता, नाम भले ही हिन्दी ही रहता, तो हिन्दी का जो विरोध देश के कई हिस्सों में हुआ उसका एक हिस्सा भी न होता और अंग्रेज़ी को शायद यह पंद्रह बरस भी न मिले होते. अब भी हमारे लिये रास्ता वही है.

भाषा के मामले में चीन की मिसाल भी हमारे लिये कुछ काम की हो सकती है. वहां भी अलग अलग प्रांतों की अलग अलग भाषायें हैं. डाक्टर सुन-यात-सेन ने प्रांत प्रांत के बीच काम के लिये एक राष्ट्रभाषा की ज़रूरत महसूस की. पीकिंग और उसके आस पास की बोली पर उसकी बुनियाद डाली गई. बड़े बड़े विद्वानों की कमेटियां बनीं. उन्होंने बड़ी बड़ी डिक्शनरियां बनाईं और ग्रामरें लिखीं. नई राष्ट्रभाषा को सब प्रांतों के अपनाने योग्य बनाने की कोशिश की गई. पर वह भाषा इस क़ाबिल भी न बनी कि उसकी किताबें दस दस हज़ार भी बिक सकें. उसकी हालत उस बच्चे की सी हुई जो मां के पेट से मरा हुआ पैदा हुआ हो. एक पीढ़ी यूँ ही गुज़र गई. देश में बड़े बड़े इन्क़लाब आये. आख़िर जनता के सच्चे सेवकों और माओत्सेतुंग का बोलबाला हुआ. उन्होंने वह सब डिक्शनरियां और ग्रामरें फाड़ कर फेंक दीं और लगभग सब प्रांतों की भाषाओं

* देखिये सफ़ा नं० 273

فہرست* ہم دوسری جگہ دے رہے ہیں—ہم نے مدراس پرانت کے دھر دکھن تک لگ بھگ ہر ضلع کا دورہ کیا ہے اور ہم پوری ذمہ داری کے ساتھ کہ سکتے ہیں کہ وہاں کے عام لوگوں میں ہماری ملی جلی بولی جتنی اچھی طرح اور آسانی سے سمجھی جاتی ہے اتنی آجکل کی سنسکرت بھری ہندی نہیں سمجھی جاتی ۔

—سندر لال 10 . 4 . '54

ہماری اپیل

انت میں ہم اپنے پیارے اور آدرنیہ بھائی ٹنڈن جی سے اپیل کرتے ہیں کہ وہ راشٹر بھاشا ہندی کے ہت میں ان غلط اور کٹر پرورتیوں کو روکیں۔ ہندی کو بڑھنے اور پھیلنے کا موقع دیں ۔ اردو ہندی کے جھگڑے کو ختم کرنے کے لئے لگ بھگ سارے اردو ساہتیہ کو ہندی ساہتیہ مان لیں ۔ اسے ناگری لپی میں چھپوا کر ہماری اسکولی اور کالجی کتابوں میں شامل کرا دیں ۔ غالب نے اپنی بولی کو 'ہندی' کہا ہے ۔ ہم بھی اُن کی بولی کو ہندی اور اچھی ہندی مانیں اور اسے ویسے ہی اپنائیں جیسے پریم چند یا بھارتیندو کی بھاشا کو۔ بھارت کی دوسری بھاشاؤں کے اُن سب شبدوں کو' جو چاہے کہیں سے آئے ہوں' ہندی میں آسانی سے کھپ سکتے ہوں' کھپا لیں ۔ اس طرح راشٹر بھاشا ہندی کو ہم بھارت کی ساری بھاشاؤں کا سنگم بنا لیں ۔ ہمیں وشواس ہے کہ ہندی کے معاملے میں دیش نے اگر مہاتما گاندھی کی بنیادی باتوں کو مان لیا ہوتا' نام بھلے ہی ہندی ہی رہتا' تو ہندی کا جو ورودھ دیش کے کئی حصوں میں ہوا اُس کا ایک حصہ بھی نہ ہوتا اور انگریزی کو شاید یہ پندرہ برس بھی نہ ملے ہوتے ۔ اب بھی ہمارے لئے راستہ وہی ہے ۔

بھاشا کے معاملے میں چین کی مثال بھی ہمارے لئے کچھ کام کی ہوسکتی ہے ۔ وہاں بھی الگ الگ پرانتوں کی الگ الگ بھاشائیں ہیں ۔ ڈاکٹر سن-یات-سین نے پرانت پرانت کے بیچ کام کے لئے ایک راشٹر بھاشا کی ضرورت محسوس کی ۔ پیکنگ اور اس کے آس پاس کی بولی پر اسکی بنیاد ڈالی گئی۔ بڑے بڑے ودوانوں کی کمیٹیاں بنیں۔ انہوں نے بڑی بڑی ڈکشنریاں بنائیں اور گرامریں لکھیں۔ نئی راشٹر بھاشا کو سب پرانتوں کے اپنانے یوگیہ بنانے کی کوشش کی گئی ۔ پر وہ بھاشا اس قابل بھی نہ بنی کہ اسکی کتابیں دس دس ہزار بھی بک سکیں ۔ اسکی حالت اس بچے کی سی ہوئی جو ماں کے پیٹ سے مرا ہوا پیدا ہوا ہو ۔ ایک پیڑھی یونہی گذر گئی ۔ دیش میں بڑے بڑے انقلاب آئے ۔ آخر جنتا کے سچے سیوکوں اور ماؤتسے-تنگ کا بول بالا ہوا ۔ انہوں نے وہ سب ڈکشنریاں اور گرامریں پھاڑ کر پھینک دیں اور لگ بھگ سب پرانتوں کی بھاشاؤں

* دیکھئے صفحہ نمبر 273

आसान और मिलती जुलती चीजें लेकर वह राष्ट्रभाषा बना ली और एक साल के अन्दर बना ली जिसका ढांचा तो अभी तक पीकिंग के आसपास की बोली ही है पर जिस में लिखी हुई किताबें आज दस दस बीस बीस लाख की गिनती में छपती और खपती हैं. और जिन्हें किसी प्रांत के भी बेपढ़े चीनियों के सामने पढ़ कर सुनाओ तो एक बच्चा भी समझ लेगा.

भारत की राष्ट्रभाषा वही भाषा होगी जो हर तरह की हठधर्मी, कट्टरता और तंगनज़री से ऊपर होगी, और जो पूरी तरह जनता की भाषा को अपनाये हुये जनता ही की भाषा होगी. आख़िर में हम एक हिन्दी अख़बार से लेकर मौलाना अबुलकलाम आज़ाद के कुछ साल पहले के इन शब्दों से इस नोट को ख़तम करते हैं—

"मुझे यह देख कर बड़ी ही मायूसी (निराशा) हुई कि एक तरफ़ से लेकर दूसरी तरफ़ तक हर तरफ़ तंगख्याली छाई हुई है. तंगख्याली आप समझें नेरोमाइन्डेडनेस, दिमाग़ का छोटा और सिमटा हुआ होना और हर तरह के फैलाव और ऊंचाई से इन्कार करना. मैं आप से कहूंगा कि हम ऐसा तंग दिमाग़ लेकर बड़ी क़ौम नहीं हो सकते. हिन्दुस्तान की क़दीमी बड़ाई और तरक़्क़ी को इसी तंगख्याली ने तारीकी (अंधकार) में डाल दिया था और यह बड़ी ही ख़तरनाक बात है कि हम फिर इसी तरफ़ झुक रहे हैं."

हम पचास बरस से अपने प्यारे देश की नब्ज़ को देख रहे हैं. हमें विश्वास है कि वह तंगख्याली जिसकी मौलाना शिकायत करते हैं शाम की उड़ती हुई धूप की तरह जा रही है. देश आगे बढ़ेगा. हिन्दी भी बढ़ेगी. केवल भारत में नहीं दुनिया में हिन्दी अपनी जगह लेगी, हमें यह भी यक़ीन है कि टंडन जी अगर एक बार इरादा कर लें तो इस नेक और ज़रूरी काम में जितनी मदद वह दे सकते हैं कोई दूसरा नहीं दे सकता.

10. 4. '54 —सुन्दरलाल

फ़ारसी, अरबी शब्दों की फ़ेहरिस्त

फ़ारसी अरबी के कुछ ऐसे शब्दों की मिसालें जो उत्तर भारत की आम बोल चाल के साथ साथ दक्खिन की चारों भाषाओं में भी थोड़े से बदले हुए रूप में और उन्हीं अर्थों में चालू हैं :—

क्रम	उत्तर भारत	तेलगु	तमिल	कन्नड़	मलयालम
1.	अर्ज़ी	अर्ज़ी	अर्ज़ी	अर्ज़ी	हर्ज़ी
2.	असल	असलु	असल	असल	अस्सल
3.	आबकारी	आब्कारी	आब्कारी	आब्कारी	आब्कारी
4.	अलमारी	अल्मारी	अलमारी	अलमारा	अलुमारी
5.	आसामी	आसामी	आसामि	आसामी	आसामी

سے آسان اور ملتی جلتی چیزیں لے کر وہ راشٹر بھاشا بنا لی اور ایک سال کے اندر بنا لی جس کا ڈھانچہ تو ابھی تک پیکنگ کے آس پاس کی بولی ہی ہے پر جس میں لکھی ہوئی کتابیں آج دس دس بیس بیس لاکھ کی گنتی میں چھپتی اور کھپتی ہیں اور جنہیں کسی پرانت کے بھی بے پڑھے چینیوں کے سامنے پڑھ کر سناؤ تو ایک بچہ بھی سمجھ لیگا۔

بھارت کی راشٹر بھاشا وہی بھاشا ہوگی جو ہر طرح کی ہٹ دھرمی، کٹرتا اور تنگ نظری سے اوپر ہوگی اور جو پوری طرح جنتا کی بھاشا کو اپنائے ہوئے جنتا ہی کی بھاشا ہوگی۔ آخر میں ہم ایک ہندی اخبار سے لے کر مولانا ابوالکلام آزاد کے کچھ سال پہلے کے ان شبدوں سے اس نوٹ کو ختم کرتے ہیں :—

" مجھے یہ دیکھ کر بڑی ہی مایوسی (نراشا) ہوئی کہ ایک طرف سے لیکر دوسری طرف تک ہر طرف تنگ خیالی چھائی ہوئی ہے۔ تنگ خیالی آپ سمجھیں نیرومائنڈڈنیس، دماغ کا چھوٹا اور سمٹا ہوا ہونا اور ہر طرح کے پھیلاؤ اور اونچائی سے انکار کرنا۔ میں آپ سے کہوں گا کہ ہم ایسا تنگ دماغ لیکر بڑی قوم نہیں ہو سکتے۔ ہندستان کی قدیمی بڑائی اور ترقی کو اسی تنگ خیالی نے تاریکی (اندھکار) میں ڈال دیا تھا اور یہ بڑی ہی خطرناک بات ہے کہ ہم پھر اسی طرف جھک رہے ہیں۔"

ہم پچاس برس سے اپنے پیارے دیش کی نبض کو دیکھ رہے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ وہ تنگ خیالی جسکی مولانا شکایت کرتے ہیں شام کی اڑتی ہوئی دھوپ کی طرح جا رہی ہے۔ دیش آگے بڑھے گا۔ ہندی بھی بڑھے گی۔ کیول بھارت میں نہیں دنیا میں ہندی اپنی جگہ لے گی۔ ہمیں یہ بھی یقین ہے کہ ٹنڈن جی اگر ایک بار ارادہ کر لیں تو اس نیک اور ضروری کام میں جتنی مدد وہ دے سکتے ہیں کوئی دوسرا نہیں دے سکتا۔

—سندرلال 10-4-'54

فارسی، عربی شبدوں کی فہرست

فارسی عربی کے کچھ ایسے شبدوں کی مثالیں جو اتر بھارت کی عام بول چال کے ساتھ ساتھ دکھن کی چاروں بھاشاؤں میں بھی تھوڑے سے بدلے ہوئے روپ میں اور انہیں ارتھوں میں چالو ہیں :—

نمبر	اتر بھارت	تیلگو	تمل	کنڑ	ملیالم
1.	عرضی	عرضی	عرضی	عرضی	ہرجی
2.	اصل	اصلو	اصل	اصل	اسسل
3.	آبکاری	آبکاری	آبکاری	آبکاری	آبکاری
4.	الماری	المارا	الماری	المارا	الوماری
5.	آسامی	آسامی	آسامی	اسامی	اسامی

फ़हरिस्त* हम दूसरी जगह दे रहे हैं. हमने मद्रास प्रांत के धुर दक्खिन तक लगभग हर ज़िले का दौरा किया है और हम पूरी ज़िम्मेदारी के साथ कह सकते हैं कि वहां के आम लोगों में हमारी मिली जुली बोली जितनी अच्छी तरह और आसानी से समझी जाती है उतनी आजकल की संस्कृत भरी हिन्दी नहीं समझी जाती.

10. 4. '54 —सुन्दरलाल

हमारी अपील

अंत में हम अपने प्यारे और आदरनीय भाई टंडन जी से अपील करते हैं कि वह राष्ट्रभाषा हिन्दी के हित में इन ग़लत और कट्टर प्रवृत्तियों को रोकें. हिन्दी को बढ़ने और फैलने का मौक़ा दें. उर्दू हिन्दी के झगड़े को ख़तम करने के लिये लगभग सारे उर्दू साहित्य को हिन्दी साहित्य मान लें, उसे नागरी लिपि में छपवा कर हमारी स्कूली और कालिजी किताबों में शामिल करा दें. ग़ालिब ने अपनी बोली को "हिन्दी" कहा है. हम भी उनकी बोली को हिन्दी और अच्छी हिन्दी मानें और उसे वैसे ही अपनावें जैसे प्रेमचंद या भारतेन्दु की भाषा को. भारत की दूसरी भाषाओं के उन सब शब्दों को जो, चाहे कहीं से आये हों, हिन्दी में आसानी से खप सकते हैं, खपा लें. इस तरह राष्ट्रभाषा हिन्दी को हम भारत की सारी भाषाओं का संगम बना लें. हमें विश्वास है कि हिन्दी के मामले में देश ने अगर महात्मा गांधी की बुनियादी बातों को मान लिया होता, नाम भले ही हिन्दी ही रहता, तो हिन्दी का जो विरोध देश के कई हिस्सों में हुआ उसका एक हिस्सा भी न होता और अंग्रेज़ी को शायद यह पंद्रह बरस भी न मिले होते. अब भी हमारे लिये रास्ता वही है.

भाषा के मामले में चीन की मिसाल भी हमारे लिये कुछ काम की हो सकती है. वहां भी अलग अलग प्रांतों की अलग अलग भाषायें हैं. डाक्टर सुन-यात-सेन ने प्रांत प्रांत के बीच काम के लिये एक राष्ट्रभाषा की ज़रूरत महसूस की. पीकिंग और उसके आस पास की बोली पर उसकी बुनियाद डाली गई. बड़े बड़े विद्वानों की कमेटियां बनीं. उन्होंने बड़ी बड़ी डिक्शनरियां बनाईं और ग्रामरें लिखीं. नई राष्ट्रभाषा को सब प्रांतों के अपनाने योग्य बनाने की कोशिश की गई. पर वह भाषा इस क़ाबिल भी न बनी कि उसकी किताबें दस दस हज़ार भी बिक सकें. उसकी हालत उस बच्चे की सी हुई जो मां के पेट से मरा हुआ पैदा हुआ हो. एक पीढ़ी यूँ ही गुज़र गई. देश में बड़े बड़े इन्क़लाब आये. आख़िर जनता के सच्चे सेवकों और माओत्सेतुंग का बोलबाला हुआ. उन्होंने वह सब डिक्शनरियां और ग्रामरें फाड़ कर फेंक दीं और लगभग सब प्रांतों की भाषाओं

* देखिये सफ़ा नं० 273

فہرست* ہم دوسری جگہ دے رہے ہیں—ہم نے مدراس پرانت کے دھر دکھن تک لگ بھگ ہر ضلع کا دورہ کیا ہے اور ہم پوری ذمہ داری کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ وہاں کے عام لوگوں میں ہماری ملی جلی بولی جتنی اچھی طرح اور آسانی سے سمجھی جاتی ہے اتنی آجکل کی سنسکرت بھری ہندی نہیں سمجھی جاتی .

10 . 4 . '54 —سندر لال

ہماری اپیل

انت میں ہم اپنے پیارے اور آدرنیہ بھائی ٹنڈن جی سے اپیل کرتے ہیں کہ وہ راشٹر بھاشا ہندی کے ہت میں ان غلط اور کٹر پرورتیوں کو روکیں۔ ہندی کو بڑھنے اور پھیلنے کا موقع دیں . اردو ہندی کے جھگڑے کو ختم کرنے کے لئے لگ بھگ سارے اردو ساہتیہ کو ہندی ساہتیہ مان لیں . اسے ناگری لپی میں چھپوا کر ہماری اسکولی اور کالجی کتابوں میں شامل کرا دیں . غالب نے اپنی بولی کو 'ہندی' کہا ہے . ہم بھی ان کی بولی کو ہندی اور اچھی ہندی مانیں اور اسے ویسے ہی اپناویں جیسے پریم چند یا بھارتیندو کی بھاشا کو۔ بھارت کی دوسری بھاشاؤں کے ان سب شبدوں کو' جو چاہے کہیں سے آئے ہوں' ہندی میں آسانی سے کھپ سکتے ہیں' کھپا لیں . اس طرح راشٹر بھاشا ہندی کو ہم بھارت کی ساری بھاشاؤں کا سنگم بنا لیں . ہمیں وشواس ہے کہ ہندی کے معاملے میں دیش نے اگر مہاتما گاندھی کی بنیادی باتوں کو مان لیا ہوتا' نام بھلے ہی ہندی ہی رہتا' تو ہندی کا جو ورودھ دیش کے کئی حصوں میں ہوا اس کا ایک حصہ بھی نہ ہوتا اور انگریزی کو شاید یہ پندرہ برس بھی نہ ملے ہوتے . اب بھی ہمارے لئے راستہ وہی ہے .

بھاشا کے معاملے میں چین کی مثال بھی ہمارے لئے کچھ کام کی ہو سکتی ہے . وہاں بھی الگ الگ پرانتوں کی الگ الگ بھاشائیں ہیں . ڈاکٹر سن-یات-سین نے پرانت پرانت کے بیچ کام کے لئے ایک راشٹر بھاشا کی ضرورت محسوس کی . پیکنگ اور اس کے آس پاس کی بولی پر اسکی بنیاد ڈالی گئی۔ بڑے بڑے ودوانوں کی کمیٹیاں بنیں۔ انہوں نے بڑی بڑی ڈکشنریاں بنائیں اور گرامریں لکھیں۔ نئی راشٹر بھاشا کو سب پرانتوں کے اپنانے یوگیہ بنانے کی کوشش کی گئی . پر وہ بھاشا اس قابل بھی نہ بنی کہ اسکی کتابیں دس دس ہزار بھی بک سکیں . اسکی حالت اس بچے کی سی ہوئی جو ماں کے پیٹ سے مرا ہوا پیدا ہوا ہو . ایک پیڑھی یونہی گذر گئی . دیش میں بڑے بڑے انقلاب آئے . آخر جنتا کے سچے سیوکوں اور ماؤتسے-تنگ کا بول بالا ہوا . انہوں نے وہ سب ڈکشنریاں اور گرامریں پھاڑ کر پھینک دیں اور لگ بھگ سب پرانتوں کی بھاشاؤں

* دیکھئے صفحہ نمبر 273

ग़लती इस तरह के अदीब से उस ज़माने में क़ुदरती ग़लती थी. पर मौलाना ने उन्हीं दिनों बहुत जल्दी अपनी ग़लती को महसूस कर लिया और तब से अब तक वह उसका काफ़ी प्रायश्चित भी कर चुके हैं. इस निगाह से हम उर्दू और हिन्दी को दो भाषायें मानते ही नहीं. हम महात्मा गांधी के इस असूल के पूरी तरह क़ायल हैं कि उर्दू और हिन्दी दोनों को हमारी राष्ट्रभाषा में इस तरह मिल कर एक हो जाना चाहिये जिस तरह इलाहाबाद के संगम में गंगा और जमना.

अपने हिन्दी प्रेमी भाइयों से हमारी प्रार्थना है कि वह शान्ति के साथ इस बात पर विचार करें कि क्या कारन है कि जब कि हम हिन्दी को बाईस करोड़ लोगों की भाषा और देश की राष्ट्रभाषा कहते हैं तो हिन्दी दैनिक अख़बारों की बिक्री दूसरी भाषाओं के अख़बारों की बिक्री से इतनी कम है. बंगला, मरहटी, गुजराती, तामिल, और तेलगू के अव्वल दर्जे के दैनिक अख़बारों की बिक्री पच्चास हज़ार से एक लाख तक मिलेगी, और हिन्दी के अच्छे से अच्छे दैनिक की बिक्री शायद पंद्रह हज़ार. उर्दू के अख़बारों की बिक्री भी इस समय हिन्दी के अख़बारों से अधिक है. कारन साफ़ है. हमारी आजकल की किताबी या अख़बारी हिन्दी जनता की बोली नहीं है. हम किसी तारीख़ के किसी हिन्दी अख़बार को उठा लें. 'भेजने' की जगह 'प्रेशित करना', 'बांटने' की जगह 'वितरन करना' और 'देखने वालों' को 'प्रत्यक्षदर्शी' लिखना राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा करना नहीं उसका गला घोटना है. हमें इस बारे में अपने दिलों को बड़ा करना और अपनी चाल को बदलना होगा.

संस्कृत के शब्द और तत्सम शब्द भी जो हमारी बोली में रचपच गये हैं या जो नये संस्कृत शब्द हमारे लिये आसान और उपयोगी हों उनका राष्ट्रभाषा हिन्दी में स्वागत करने के लिये हम दिल से तैयार हैं. पर इस बारे में भी कई तरह के ग़लत विचार हिन्दी प्रेमियों में फैले हुए हैं. अकसर कहा जाता है कि हिन्दी को भारत की दूसरी भाषाओं से अधिक निकट लाने के लिये उसमें अधिक संस्कृत शब्दों का लेना आवश्यक है. यह बात अगर बिल्कुल ग़लत नहीं तो आधी से ज़्यादा ग़लत ज़रूर है. एक तो बहुत सी दूसरी भाषाओं में संस्कृत के जो शब्द चालू हैं वह अधिकतर तत्सम रूप में नहीं तद्भव रूप में हैं. श्री राजगोपालाचारी को आप राजगोपालाचार्य कहने लगेंगे तो वह आप से लड़ पड़ेंगे. दूसरे उर्दू, फ़ारसी और अरबी के हज़ारों शब्द ऐसे हैं जिन्हें हिन्दी से आजकल निकालने की कोशिश की जा रही है और जो तामिल और तेलगू जैसी दूर की भाषाओं में भी उसी रूप में या उससे मिलते जुलते रूप में और उन्हीं अर्थों में चालू हैं. इस तरह के कुछ शब्दों की

غلطی اس طرح کے ادیب سے اس زمانے میں قدرتی غلطی تھی۔ پر مولانا نے انہیں دنوں بہت جلدی اپنی غلطی کو محسوس کر لیا اور تب سے اب تک وہ اس کا کافی پرایشچت بھی کر چکے ہیں۔ اس نگاہ سے ہم اردو اور ہندی کو دو بھاشائیں مانتے ہی نہیں۔ ہم مہاتما گاندھی کے اس اصول کے پوری طرح قائل ہیں کہ اردو اور ہندی دونوں کو ہماری راشٹر بھاشا میں اس طرح ملکر ایک ہوجانا چاہیئے جس طرح الٰہ آباد کے سنگم میں گنگا اور جمنا۔

اپنے ہندی پریمی بھائیوں سے ہماری پرارتھنا ہے کہ وہ شانتی کے ساتھ اس بات پر وچار کریں کہ کیا کارن ہے کہ جب کہ ہم ہندی کو بائیس کروڑ لوگوں کی بھاشا اور دیش کی راشٹر بھاشا کہتے ہیں تو ہندی دینک اخباروں کی بکری دوسری بھاشاؤں کے اخباروں کی بکری سے اتنی کم ہے۔ بنگلہ، مرہٹی، گجراتی، تمل اور تیلگو کے اول درجے کی دینک اخباروں کی بکری پچاس ہزار سے ایک لاکھ تک ملے گی، اور ہندی کے اچھے سے اچھے دینک کی بکری شاید پندرہ ہزار۔ اردو کے اخباروں کی بکری بھی اس سمے ہندی کے اخباروں سے ادھک ہے۔ کارن صاف ہے۔ ہماری آجکل کی کتابی یا اخباری ہندی جنتا کی بولی نہیں ہے۔ ہم کسی تاریخ کے کسی ہندی اخبار کو اٹھا لیں۔ 'بھیجنے' کی جگہ 'پریشت کرنا'، 'بانٹنے' کی جگہ 'وترن کرنا' اور 'دیکھنے والوں' کو 'پرتیکش درشی' لکھنا راشٹر بھاشا ہندی کی سیوا کرنا نہیں اس کا گلا گھونٹنا ہے۔ ہمیں اس بارے میں اپنے دلوں کو بڑا کرنا اور اپنی چال کو بدلنا ہوگا۔

سنسکرت کے شبد اور تتسم شبد بھی جو ہماری بولی میں رچ بچ گئے ہیں یا جو نئے سنسکرت شبد ہمارے لئے آسان اور اپیوگی ہوں ان کا راشٹر بھاشا ہندی میں سواگت کرنے کے لئے ہم دل سے تیار ہیں۔ پر اس بارے میں بھی کئی طرح کے غلط وچار ہندی پریمیوں میں پھیلے ہوئے ہیں۔ اکثر کہا جاتا ہے کہ ہندی کو دوسری بھاشاؤں کے ادھک نکٹ لانے کے لئے اس میں ادھک سنسکرت شبدوں کا لینا آوشیک ہے۔ یہ بات اگر بالکل غلط نہیں تو آدھی سے زیادہ غلط ضرور ہے۔ ایک تو بہت سی دوسری بھاشاؤں میں سنسکرت کے جو شبد چالو ہیں وہ ادھک تر تتسم روپ میں نہیں تدبھو روپ میں ہیں۔ شری راج گوپال آچاری کو آپ راج گوپال آچاریہ کہنے لگیں گے تو وہ آپ سے لڑ پڑیں گے۔ دوسرے اردو، فارسی اور عربی کے ہزاروں شبد ایسے ہیں جنہیں ہندی سے آجکل نکالنے کی کوشش کی جا رہی ہے اور جو تامل اور تیلگو جیسی دور کی بھاشاؤں میں بھی اسی روپ میں یا اس سے ملتے جلتے روپ میں اور انہیں ارتھوں میں چالو ہیں۔ اس طرح کے کچھ شبدوں کی

अंदाज़ा भी नहीं हो सकता. पीकिंग के शहर में चेकोस्लोवाकिया के राजदूत के साथ संस्कृत में बातें करके हमें ऐसा लगा कि जैसे किसी कुएं के मेंढक को कुएं से बाहर लाकर उसकी आंखें खोल दी जायं. पर हम दुनिया की किसी भाषा को किसी दूसरी भाषा से अधिक पवित्र नहीं मानते. भाषा न कोई पाक है और न कोई नापाक. न संस्कृत अरबी से ज्यादा पाक है और न अरबी संस्कृत से ज्यादा पाक और न इन दोनों में से कोई चीनी, जापानी, रूसी, पंजाबी, सिंधी, या दुनिया की किसी भी भाषा से ज्यादा पाक है. भाषाएं सब भाषाएं हैं और हमारे दुनिया के कामकाज के लिये केवल साधन मात्र हैं. हिन्दी एक जीवित भाषा है. उसके अपने नियम हैं, अपने क़ायदे हैं, अपनी ग्रामर है, अपना शब्द भंडार है. वह सबसे मेल जोल और लेनदेन रखना चाहती है. पर वह किसी की ग़ुलाम नहीं बनना चाहती और न है. इस निगाह से कबीर साहब की इस बात को हम फिर दोहराते हैं—:संसकिरत है कूप जल भाषा बहता नीर. अगर हम भूलते नहीं तो ठीक यही विचार कहीं तुलसीदास जी ने भी प्रगट किया है. डाकख़ाने या डाकघर को 'पत्रालय' कहना, क़ुली को 'भारवाहक' कहना. इनक्वायरी आफ़िस को, पूछताछ दफ़्तर न कह कर 'प्रश्नालय' या 'अन्वेशनालय' कहना हम न राष्ट्रभाषा का भला करना मानते हैं और न देश की सेवा.

चालू हिन्दी हिन्दुस्तानी शब्दों के मूल संस्कृत रूपों की तरफ़ जाने के रुजहान को भी हम बहुत दर्जे ग़लत मानते हैं. हमें एक घटना याद आ गई. दिल्ली में हमारे कमरे में कुछ मित्र बैठे हुए थे. उन में हमारे परम मित्र पंडित विश्वबंधु डायरेक्टर वैदिक रिसर्च इनस्टीट्यूट लाहौर भी थे. तत्सम और तद्भव शब्दों के उपयोग पर बहस चल रही थी. पंडित विश्वबंधु देर तक चुपचाप सुनते रहे. आख़िर में उन्होंने बड़ी शान्ति के साथ कहा, उनके शब्द हमें अभी तक याद हैं—"भई ! मूल शब्दों पर जाओगे तो बड़ी कठिनाई पड़ जायगी. ऋग्वेद के अनुसार मूल शब्द केवल दो ही हैं. उन्हीं से दुनिया के सब शब्द और सब भाषायें निकली हैं. कुत्ते की 'भौं' और बन्दर की 'चीं'." पंडित विश्वबंधु यह कह कर चुप हो गये और हम सब हंस पड़े. पर बात बड़े मार्के की और सच्ची थी.

जो ग़लती आज राष्ट्रभाषा हिन्दी के जोशीले पर नासमझ प्रेमी कर रहे हैं यही ग़लती उर्दू वाले भी कर चुके हैं और इसमें सबसे बड़ा गुनाह शायद मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद ने ही किया है. उन्होंने किसी ज़माने में उर्दू में अरबी के कठिन कठिन शब्दों और अरबी तरकीबों से भरा हुआ एक नया स्टाइल ही ईजाद कर दिया था. मौलाना आज़ाद एक बहुत ऊंचे दर्जे के अदीब हैं. यह

ازہ بھی نہیں ہوسکتا. پیکنگ کے شہر میں چیکوسلواکیہ کے راجدوت کے ساتھ سنسکرت میں باتیں کرکے ہمیں ایسا لگا جیسے کسی کنویں کے مینڈھک کو کنویں سے باہر لاکر اسکی آنکھیں کھول دی جائیں. پر ہم دنیا کی کسی بھاشا کو کسی دوسری بھاشا سے ادھک پوتر نہیں مانتے . بھاشا نہ کوئی پاک ہے اور نہ کوئی ناپاک . نہ سنسکرت عربی سے زیادہ پاک ہے اور نہ عربی سنسکرت سے زیادہ پاک اور نہ ان دونوں میں سے کوئی چینی' جاپانی' روسی' پنجابی' سندھی یا دنیا کی کسی بھی بھاشا سے زیادہ پاک ہے . بھاشائیں سب بھاشائیں ہیں اور ہمارے دنیا کے کام کاج کے لئے کیول سادھن ماتر ہیں . ہندی ایک جیوت بھاشا ہے . اس کے اپنے نیم ہیں' اپنے قاعدے ہیں' اپنی گرامر ہے' اپنا شبد بھنڈار ہے' وہ سب سے میل جول اور لین دین رکھنا چاہتی ہے . پر وہ کسی کی غلام نہیں بننا چاہتی اور نہ ہے . اس نگاہ سے کبیر صاحب کی اس بات کو ہم پھر دہراتے ہیں :—سنسکرت ہے کوپ جل بھاشا بہتا نیر . اگر ہم بھولتے نہیں تو ٹھیک یہی وچار کہیں تلسی داس جی نے بھی پرگٹ کیا ہے . ڈاکخانہ یا ڈاک گھر' کو پترالیہ کہنا' قلی کو بھارواہک کہنا انکوائری آفس کو پوچھ تاچھ دفتر نہ کہکر ' پرشنالیہ' یا انویشنالیہ کہنا ہم نہ راشٹر بھاشا کا بھلا کرنا مانتے ہیں اور نہ دیش کی سیوا .

چالو ہندی ہندستانی شبدوں کے مول سنسکرت روپوں کی طرف جانے کے رجحان کو بھی ہم بہت درجے غلط مانتے ہیں . ہمیں ایک گھٹنا یاد آ گئی . دلی میں ہمارے کمرے میں کچھ متر بیٹھے ہوئے تھے . ان میں ہمارے پرم متر پنڈت وشو بندھو ڈائرکٹر ویدک ریسرچ انسٹیٹیوٹ لاہور بھی تھے . تتسم اور تدبھو شبدوں کے اپیوگ پر بحث چل رہی تھی . پنڈت وشوبندھو دیر تک چپ چاپ سنتے رہے . آخر میں انہوں نے بڑی شانتی کے ساتھ کہا' ان کے شبد ہمیں ابھی تک یاد ہیں :—" بھئی ! مول شبدوں پر جاؤ گے تو بڑی کٹھنائی پڑ جائے گی . رگ وید کے انوسار مول شبد کیول دو ہی ہیں . انہیں سے دنیا کے سب شبد اور سب بھاشائیں نکلی ہیں . کتے کی بھوں اور بندر کی چی ." پنڈت وشوبندھو یہ کہکر چپ ہو گئے اور ہم سب ہنس پڑے . پر بات بڑے معرکے کی اور سچی تھی .

جو غلطی آج راشٹر بھاشا ہندی کے جوشیلے پر ناسمجھ پریمی کر رہے ہیں وہی غلطی اردو والے بھی کر چکے ہیں اور اس میں سب سے بڑا گناہ شاید مولانا ابوالکلام آزاد نے ہی کیا ہے . انہوں نے کسی زمانے میں اردو میں عربی کے کٹھن کٹھن شبدوں اور عربی ترکیبوں سے بھرا ہوا ایک نیا سٹائل ہی ایجاد کر دیا تھا . مولانا آزاد ایک بہت اونچے درجے کے ادیب ہیں . یہ

उन्नति में रोड़े अटकाना समझते हैं. दुनिया की हर भाषा दूसरी भाषाओं से शब्द ले लेकर अपने को मालामाल करती रहती है. इसी में भाषाओं की उन्नति है और यही मानव एकता की अनेक पगडंडियों में से एक बड़े मार्के की पगडंडी है. मिसाल के लिये अंग्रेजी भाषा की इंगलैंड या अमरीका की छपी हुई किसी भी अच्छी डिक्शनरी को हम उठा लें उस में दस बीस नहीं सैकड़ों नहीं शायद कई हजार शब्द हिन्दुस्तानी भाषाओं के मिलेंगे. इंगलैंड के छपे हुए उन लेखकों के अंगरेजी नाविलों में भी जो कभी भारत नहीं आये सैकड़ों हिन्दुस्तानी शब्द मिलेंगे. अंग्रेजों ने आम और कटहल भारत आकर पहले पहल खाए. आज तक वह उन्हें 'मैन्गो' और 'जैक' फ्रूट कहते हैं. उन्होंने इन फलों के लिये नये नाम नहीं गढ़े. यह दोनों नाम हिन्दुस्तानी हैं. रेल को 'वाश्पयान' या 'दुखानी सवारी' और टिकट को 'प्रवेश पत्र' या 'दाखिलानामा' कहने की कोशिश को हम देश और मानवता दोनों के साथ दुश्मनी करना और नासमझी मानते हैं. ऐसे ही हजारों और फ़ारसी, अरबी, तुर्की, चीनी, मिस्री, और अंगरेजी से आये हुए शब्द हैं जो हमारी जनता की बोली में रचपच गये हैं और जिन्हें राष्ट्र भाषा 'हिन्दी' से निकालने की कोशिश करना भाषा की सेवा करना नहीं है, उसे मिटाना है. जो अध्यापक हमारे बच्चों को यह बताते रहते हैं कि 'मजदूर' उर्दू है और 'श्रमिक' हिन्दी, 'जहालत' उर्दू है और 'मूर्खता' हिन्दी और 'मजदूर' या 'जहालत' लिखने पर भाषा की विशुद्धता के नाम पर लड़कों के नम्बर काट लेते हैं वह बेचारे अनजाने में राष्ट्र भाषा हिन्दी की सेवा करने के बजाय उसे मिटा रहे हैं.

तीसरी बात यह कि राष्ट्रभाषा हिन्दी को मौक़े बेमौक़े संस्कृत के कठिन शब्दों और वाक्यों से भरने की कोशिश को भी हम ग़लत और राष्ट्रभाषा के लिये अहितकर मानते हैं. हम यहां उन लोगों से बात नहीं कर रहे हैं जो संस्कृत ही को इस देश की राष्ट्रभाषा बनाने के सपने देख रहे हैं और संस्कृत भरी हिन्दी को अपने लक्ष्य तक पहुंचने की केवल पहली सीढ़ी समझते हैं. हमें संस्कृत से प्रेम है. वह इस देश की एक पुरानी बोली है. हमारे पुरखों के ऊंचे से ऊंचे विचार संस्कृत ग्रंथों में बंद हैं. उसमें वह दार्शनिक, नैतिक और आध्यात्मिक ख़ज़ाना भरा हुआ है जो दुनिया को अभी सैकड़ों और हजारों बरस काम दे सकता है. हम चाहते हैं लोग संस्कृत पढ़ें. और हम चाहें न चाहें दुनिया पढ़ेगी. आज भी अफ़गा-निस्तान और रूस जैसे देशों में और अनेक योरुपीय देशों में भी संस्कृत की पढ़ाई जिस तरह बढ़ रही है और जितना ध्यान उसकी तरफ़ दिया जा रहा है उसका हमें

اُنّتی میں روڑے اٹکانا سمجھتے ہیں. دنیا کی ہر بھاشا دوسری بھاشاؤں سے شبد لے لے کر اپنے کو مالامال کرتی رہتی ہے. اسی میں بھاشاؤں کی اُنّتی ہے اور یہی مانو ایکتا کی انیک پگڈنڈیوں میں سے ایک بڑے معرکے کی پگڈنڈی ہے. مثال کے لئے انگریزی بھاشا کی انگلینڈ یا امریکہ کی چھپی ہوئی کسی بھی اچھی سے اچھی ڈکشنری کو ہم اٹھا لیں اس میں دس بیس نہیں سیکڑوں نہیں شاید کئی ہزار شبد ہندستانی بھاشاؤں کے ملیں گے. انگلینڈ کے چھپے ہوئے اُن لیکھکوں کے انگریزی ناولوں میں بھی جو کبھی بھارت نہیں آئے سیکڑوں ہندستانی شبد ملیں گے. انگریزوں نے آم اور کٹھل بھارت آ کر پہلے پہل کھائے. آج تک وہ اُنھیں 'مینگو' اور 'جیک' فروٹ کہتے ہیں. اُنھوں نے ان پھلوں کے لئے نئے نام نہیں گڑھے یہ دونوں نام ہندستانی ہیں. ریل کو 'واشپیان' یا 'دخانی سواری' اور ٹکٹ کو 'پرویش پتر' یا 'داخلہ نامہ' کہنے کی کوشش کو ہم دیش اور مانوتا دونوں کے ساتھ دشمنی کرنا اور نا سمجھی مانتے ہیں. ایسے ہی ہزاروں اور فارسی، عربی، ترکی، چینی، مصری، اور انگریزی سے آئے ہوئے شبد ہیں جو ہماری جنتا کی بولی میں رچ بچ گئے ہیں اور جنھیں راشٹر بھاشا ہندی سے نکالنے کی کوشش کرنا بھاشا کی سیوا کرنا نہیں ہے، اُسے مٹانا ہے. جو ادھیاپک ہمارے بچوں کو یہ بتاتے رہتے ہیں کہ 'مزدور' اُردو ہے اور 'شرمک' ہندی، 'جہالت' اُردو ہے اور 'مورکھتا' ہندی اور 'مزدور' یا 'جہالت' لکھنے پر بھاشا کی وشُدھتا کے نام پر لڑکوں کے نمبر کاٹ لیتے ہیں وہ بیچارے انجانے میں راشٹر بھاشا ہندی کی سیوا کرنے کے بجائے اُسے مٹا رہے ہیں.

تیسری بات یہ کہ راشٹر بھاشا ہندی کو موقع بے موقع سنسکرت کے کٹھن شبدوں اور واکیوں سے بھرنے کی کوشش کو بھی ہم غلط اور راشٹر بھاشا کے لئے اہتکر مانتے ہیں. ہم یہاں اُن لوگوں سے بات نہیں کر رہے ہیں جو سنسکرت ہی کو اِس دیش کی راشٹر بھاشا بنانے کے سپنے دیکھ رہے ہیں اور سنسکرت بھری ہندی کو اپنے لکش تک پہونچنے کی کیول پہلی سیڑھی سمجھتے ہیں. ہمیں سنسکرت سے پریم ہے. وہ اِس دیش کی ایک پرانی بولی ہے. ہمارے پرکھوں کے اونچے سے اونچے وچار سنسکرت گرنتھوں میں بند ہیں. اس میں وہ دارشنک، نیتک اور ادھیاتمک خزانہ بھرا ہوا ہے جو دنیا کو ابھی سیکڑوں اور ہزاروں برس کام دے سکتا ہے. ہم چاہتے ہیں لوگ سنسکرت پڑھیں. اور ہم چاہیں نہ چاہیں دنیا پڑھے گی. آج بھی افغانستان اور روس جیسے دیشوں میں اور انیک یورپی دیشوں میں بھی سنسکرت کی پڑھائی جس طرح بڑھ رہی ہے اور جتنا دھیان اُسکی طرف دیا جا رہا ہے اُس کا ہمیں

भला कर सकती है. हम खुद अपने को राष्ट्रभाषा हिन्दी के तुच्छ सेवकों में गिनते हैं. समाचार पत्रों के लेखों या पुस्तकों के रूप में हिन्दी लिखना हमने आज से लगभग पचास बरस पहले शुरू किया था और इन पचास बरस के अंदर अच्छे या बुरे कम से कम हजारों ही रिम काग़ज़ हिन्दी में रंग डाले होंगे. देश ने, हिन्दी प्रेमियों ने, यहां तक कि हिन्दी के बड़े से बड़े विद्वानों ने समय समय पर हमारी सेवा की क़द्र भी की है. उन्हें याद हो या न याद हो हमें इस चीज़ का अभिमान है कि खुद हमारे बड़े भाई टंडन जी ने हमारी भाषा और भाषा सेवा को अनेक बार सराहा है. हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी क्या होनी चाहिये और उसका रूप क्या होना चाहिये इस पर हमारे अपने विचार हैं जिन्हें हम अनेक बार साफ़ साफ़ कह चुके हैं. यहां हम फिर एक दो बातें दोहरा देना चाहते हैं.

पहली यह कि हमें अपनी भाषा के लिये 'हिन्दी' नाम प्यारा है. इन पचास बरस में और अपनी ज़िन्दगी भर हमने हज़ारों बार उसे 'हिन्दी' कहा है और प्यार के साथ कहा है. पर हमें 'हिन्दुस्तानी' नाम भी प्यारा है. 'हिन्दी' और 'हिन्दुस्तानी' दोनों नाम विदेशियों के रखे हुए हैं. हिन्दी इस भाषा के लिये अरबों का दिया हुआ नाम है और अरबी रंग लिये हुए है. 'हिन्दुस्तानी' नाम हमारे गुरु और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को बहुत प्यारा था. चिह हमें दोनों में से किसी नाम से नहीं. पर जैसा हम कह चुके हिन्दुस्तानी नाम भी हमें प्यारा है. इसका एक और कारन है. हम जिस रूप में अपनी राष्ट्रभाषा को बढ़ता और फलता फूलता देखना चाहते हैं उसके लिये हम हिन्दी और हिन्दुस्तानी को दो भाषाएं नहीं मानते. जो हम लिख रहे हैं यही हमारी हिन्दी है और यही हमारी हिन्दुस्तानी. हम भाषा के फैलाव को अधिक से अधिक बड़ा रखना चाहते हैं. इसी में हमें देश की भलाई और भाषा की उन्नति दिखाई देती है. आम तौर पर किताबी हिन्दी को हिन्दी कहा जाता है और बोलचाल की भाषा को हिन्दुस्तानी. हम इस विचार को ग़लत और हानिकर मानते हैं कि किताबी भाषा और बोलचाल की भाषा बिल्कुल एक दूसरे से अलग अलग होनी चाहियें. ऊंचे से ऊंचे साहित्य में भाषा वही जीवित भाषा रह सकेगी जो आम लोगों की बोलचाल की भाषा के अधिक से अधिक पास हो. जनता की भाषा से दूर भाषा न राष्ट्रभाषा बन सकती है और न बहुत दिनों जी सकती है. इसीलिये हम हिन्दी और हिन्दुस्तानी को एक देखना चाहते हैं और एक देखते हैं.

दूसरी बात हम अपनी भाषा के अंदर से ऐसे शब्दों को निकाल देना, जो चाहे कहीं से और किसी भाषा से आये हों आम लोगों की भाषा में रचपच गये हैं, भाषा के साथ और जनता के साथ दुश्मनी करना और देश की

بھلا کر سکتی ھے . ہم خود اپنے کو راشٹر بھاشا ھندی کے تچھ سیوکوں میں گنتے ھیں . سماچار پتروں کے لیکھوں یا پستکوں کے روپ میں ھندی لکھنا ہم نے آج سے لگ بھگ پچاس برس پہلے شروع کیا تھا اور ان پچاس برس کے اندر اچھے یا برے کم سے کم ھزاروں ھی رم کاغذ ھندی میں رنگ ڈالے ھونگے . دیش نے ' ھندی پریمیوں نے یہاں تک کہ ھندی کے بڑے سے بڑے ودوانوں نے سمے سمے پر ھماری سیوا کی قدر بھی کی ھے . انھیں یاد ھو یا نہ یاد ھو ھمیں اس چیز کا ابھیمان ھے کہ خود ھمارے بڑے بھائی ٹنڈن جی نے ھماری بھاشا اور بھاشا سیوا کو انیک بار سراھا ھے . ھماری راشٹر بھاشا ھندی کیا ھونی چاھیئے اور اس کا روپ کیا ھونا چاھیئے اس پر ھمارے اپنے وچار ھیں جنھیں ہم انیک بار صاف صاف کہہ چکے ھیں . یہاں ہم پھر ایک دو باتیں دھرا دینا چاھتے ھیں .

پہلی یہ کہ ھمیں اپنی بھاشا کے لئے 'ھندی' نام پیارا ھے . ان پچاس برس میں اور اپنی زندگی بھر ہم نے ھزاروں بار اسے 'ھندی' کہا ھے اور پیار کے ساتھ کہا ھے . پر ھمیں 'ھندستانی' نام بھی پیارا ھے . 'ھندی' اور 'ھندستانی' دونوں نام ودیشیوں کے رکھے ھوئے ھیں . ھندی اس بھاشا کے لیئے عربوں کا دیا ھوا نام ھے اور عربی رنگ لئے ھوئے ھے اور ھندستانی ایرانیوں کا دیا ھوا نام ھے اور فارسی رنگ لئے ھوئے ھے . 'ھندستانی' نام ھمارے گرو اور راشٹر پتا مہاتما گاندھی کو بہت پیارا تھا . چڑھ ھمیں دونوں میں سے کسی نام سے نہیں ' پر جیسا ہم کہہ چکے ھندستانی نام بھی ھمیں پیارا ھے . اس کا ایک اور کارن ھے . ہم جس روپ میں اپنی راشٹر بھاشا کو بڑھتا اور پھلتا پھولتا دیکھنا چاھتے ھیں اس کے لئے ہم ھندی اور ھندستانی کو دو بھاشائیں نہیں مانتے . جو ہم لکھ رہے ھیں یہی ھماری ھندی ھے اور یہی ھماری ھندستانی . ہم بھاشا کے پھیلاؤ کو ادھک سے ادھک بڑا رکھنا چاھتے ھیں . اسی میں ھمیں دیش کی بھلائی اور بھاشا کی انتی دکھائی دیتی ھے . عام طور پر کتابی ھندی کو ھندی کہا جاتا ھے اور بول چال کی بھاشا کو ھندستانی . ہم اس وچار کو غلط اور ھانیکر مانتے ھیں کہ کتابی بھاشا اور بول چال کی بھاشا بالکل ایک دوسرے سے الگ الگ ھونی چاھیئں . اونچے سے اونچے ساھتیہ میں بھاشا وھی جیوت بھاشا رہ سکے گی جو عام لوگوں کی بول چال کی بھاشا کے ادھک سے ادھک پاس ھو . جنتا کی بھاشا سے دور بھاشا نہ راشٹر بھاشا بن سکتی ھے اور نہ بہت دنوں جی سکتی ھے . اسی لئے ہم ھندی اور ھندستانی کو ایک دیکھنا چاھتے ھیں اور ایک دیکھتے ھیں .

دوسری بات ہم اپنی بھاشا کے اندر سے ایسے شبدوں کو نکال دینا' جو چاھے کہیں سے اور کسی بھاشا سے بھی آئے ھوں عام لوگوں کی بھاشا میں رچ پچ گئے ھیں' بھاشا کے ساتھ اور جنتا کے ساتھ دشمنی کرنا اور دیش کی

मौलाना की बड़ी इज़्ज़त है और उन्हें मौलाना से प्रेम भी है. उन्होंने अपनी तक़रीर में यह कहा भी था. हम मानते हैं कि भारत सरकार में भी बहुत सी कमी हैं. हमारी ऐजुकेशन मिनिस्ट्री में भी कई तरह की कमी हैं. बहुत सी चीज़ें जो ऐजुकेशन मिनिस्ट्री को करनी चाहिये थीं वह अभी तक नहीं कर पाई. शायद इन हालात में कर भी नहीं सकती थी. मौलाना अबुलकलाम आज़ाद के भी हर विचार से हम सहमत नहीं हैं. पर यह सब कह चुकने के बाद हम बड़ी नम्रता के साथ कहना चाहते हैं कि मौलाना अबुलकलाम आज़ाद कांग्रेस में और भारत सरकार में जिस जगह पर हैं उनका वहां होना देश के और बाहर के उन लोगों के लिये जो तरह तरह से हमारी कमज़ोरियां देखने और उछालने की ही कोशिश करते रहते हैं मुंह तोड़ जवाब हैं. मौलाना का उस जगह होना हमारे राज के सेक्यूलर राज होने का ज़बरदस्त और खुला सबूत है. जब तक महात्मा गांधी ज़िन्दा रहे तब तक ख़ासकर उस असूल को ध्यान में रखते हुए जिसके लिये महात्मा गांधी ने अपनी जान दी, मौलाना अबुलकलाम आज़ाद गांधी जी का बहुत बड़ा और शायद सबसे बड़ा सहारा रहे. आज भी मौलाना आज़ाद का वजूद वह बारीक लेकिन मज़बूत रेशमी धागा है जो करोड़ों मुसलमानों और करोड़ों हिन्दुओं के दिलों को एक दूसरे से बांधे हुए है. किसी से छिपा नहीं कि देशवासियों के एक हिस्से में जो मौलाना आज़ाद के शिक्षा मंत्री होने के ख़िलाफ़ भावना है उसकी जड़ में रुपये में पन्द्रह आने साम्प्रदायिकता है. टंडन जी से हम यह आशा करते हैं कि वह लोगों को समझा बुझा कर इस ग़लत भावना को दूर करने की कोशिश करें. रहा राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसकी ठीक जगह दिलवाने के लिये एजुकेशन मिनिस्ट्री की कोशिशों का सवाल सो चाहिये था कि इस पर कुछ भी कहने से पहले टंडन जी उन कोशिशों और सरकारी योजना को पहले अच्छी तरह मालूम कर लेते और फिर प्रेम के साथ उसे ज़्यादा बहतर बनाने में मदद देते.

10. 4. '54 सुन्दरलाल

राष्ट्र भाषा हिन्दी

अब हम राष्ट्र भाषा हिन्दी के बारे में कुछ बातें कह देना चाहते हैं. हम कह चुके हैं कि भाषा के सवाल पर देश में अलग अलग विचार हैं. ऐसे मामलों में सच्चाई शायद आगे चल कर कई तरह के विचारों के मेल और उनकी टक्करों से ही पैदा होती है. इसीलिये हमारे दिलों और दिमाग़ों में एक दूसरे के विचारों के लिये आदर और सहनशीलता भी होनी चाहिये. कट्टरता और असहनशीलता न हमें कभी सच्चाई तक पहुंचा सकती है और न देश का

مولانا کی بڑی عزت ہے اور انہیں مولانا سے پریم بھی ہے ۔ انہوں نے اپنی تقریر میں یہ کہا بھی تھا۔ ہم مانتے ہیں کہ بھارت سرکار میں بھی بہت سی کمی ہے ۔ ہماری ایجوکیشن منسٹری میں بھی کئی طرح کی کمی ہیں۔ بہت سی چیزیں جو ایجوکیشن منسٹری کو کرنی چاہیئے تھیں وہ ابھی تک نہیں کر پائی۔ شاید ان حالات میں کر بھی نہیں سکتی تھی۔ مولانا ابوالکلام آزاد کے بھی ہر وچار سے ہم سہمت نہیں ہیں ۔ پر یہ سب کہہ چکنے کے بعد ہم بڑی نمرتا کے ساتھ کہنا چاہتے ہیں کہ مولانا ابوالکلام آزاد آج کانگریس میں اور بھارت سرکار میں جس جگہ پر ہیں ان کا وہاں ہونا دیش کے اور باہر کے ان لوگوں کے لئے جو طرح طرح سے ہماری کمزوریاں دیکھنے اور اُچھالنے کی ہی کوشش کرتے رہتے ہیں منہ توڑ جواب ہے ۔ مولانا کا اس جگہ ہونا ہمارے راج کے سیکولر راج ہونے کا زبردست اور کھلا ثبوت ہے ۔ جب تک مہاتما گاندھی زندہ رہے تب تک خاصکر اُس اصول کو دھیان میں رکھتے ہوئے جس کے لئے مہاتما گاندھی نے اپنی جان دی، مولانا ابوالکلام آزاد گاندھی جی کا بہت بڑا اور شاید سب سے بڑا سہارا رہے ۔ آج بھی مولانا آزاد کا وجود وہ باریک لیکن مضبوط ریشمی دھاگا ہے جو کروڑوں مسلمانوں اور کروڑوں ہندوؤں کے دلوں کو ایک دوسرے سے باندھے ہوئے ہے ۔ کسی سے چھپا نہیں کہ دیش واسیوں کے ایک حصے میں جو مولانا آزاد کے شکشا منتری ہونے کے خلاف بھاونا ہے اسکی جڑ میں روپیہ میں پندرہ آنے سامپردائکتا ہے ۔ ٹنڈن جی سے ہم یہ آشا کرتے ہیں کہ وہ لوگوں کو سمجھا بجھا کر اِس غلط بھاونا کو دور کرنے کی کوشش کریں ۔ رہا راشٹر بھاشا ہندی کو اسکی ٹھیک جگہ دلوانے کے لئے ایجوکیشن منسٹری کی کوششوں کا سوال سو چاہیئے تھا کہ اُس پر کچھ بھی کہنے سے پہلے ٹنڈن جی اُن کوششوں اور سرکاری یوجنا کو پہلے اچھی طرح معلوم کر لیتے اور پھر پریم کے ساتھ اُسے زیادہ بہتر بنانے میں مدد دیتے ۔

10-4-54 ——سندر لال

راشٹر بھاشا ہندی

اب ہم راشٹر بھاشا ہندی کے بارے میں کچھ باتیں کہہ دینا چاہتے ہیں ۔ ہم کہہ چکے ہیں کہ بھاشا کے سوال پر دیش میں الگ الگ وچار ہیں ۔ ایسے معاملوں میں سچائی شاید آگے چل کر کئی طرح کے وچاروں کے میل اور اُن کی ٹکروں سے ہی پیدا ہوتی ہے ۔ اِسی لئے ہمارے دلوں اور دماغوں میں ایک دوسرے کے وچاروں کے لئے آدر اور سہنشیلتا بھی ہونی چاہیئے ۔ کٹرتا اور اسہنشیلتا نہ ہمیں کبھی سچائی تک پہونچا سکتی ہے اور نہ دیش کا

अबुलकलाम आज़ाद पर भी छींटें फेंके जो बहुत से लोगों को अच्छा नहीं लगा, न टंडन जी की शोभा को बढ़ाता हुआ मालूम हुआ. यहां हम उन बातों को दोहराना नहीं चाहते. हमें मालूम है और हमें इसका दुख है कि देश में काफ़ी तादाद ऐसे लोगों की है जिन्हें मौलाना अबुलकलाम आज़ाद का शिक्षा मंत्री होना किसी तरह नहीं भाता. बहुत सों को यह भी अच्छा नहीं लगता कि भारत का शिक्षा मंत्री कोई ग़ैर हिन्दू हो जब कि यहां की आबादी में बड़ी गिनती हिन्दुओं की है. इस तरह के बहुत से लोग सेक्यूलर राज की कल्पना के भी विरोधी हैं और यहां के राज को उसी तरह हिन्दू राज बना हुआ देखना चाहते हैं जिस तरह पाकिस्तान के बहुत से लोग अपने वहां की हुकूमत को मुस्लिम हुकूमत. पर टंडन जी को हम ऐसे लोगों में नहीं गिनते. जहां तक हम जानते हैं धर्म मज़हब के मामले में टंडन जी काफ़ी आज़ाद ख़याल हैं. वह हिन्दू मुस्लिम एकता के विश्वासी हैं और हिन्दू, मुस्लिम या ईसाई या सिक्ख सब रूढ़ियों के विरोधी हैं. वह दुनिया की किसी किताब या किसी शास्त्र को निर्भ्रान्त और सदा-प्रमान नहीं मानते. वह जात पात और छुआछूत के दुश्मन हैं. हिन्दू ब्याह शादियों में जो संस्कृत के मंत्र पढ़े जाते हैं टंडन जी उसके भी ख़िलाफ़ हैं. टंडन जी की राय है कि हमारे संस्कारों में सारा काम हिन्दी में या देशी भाषाओं में होना चाहिये, संस्कृत में नहीं. टंडन जी कबीर साहब के भक्त हैं और उनके इस कहने को ठीक मानते हैं—संसकिरत है कूप जल भाशा बहता नीर, यानी संस्कृत कुंए का रुका हुआ पानी है और बोल चाल की भाशा बहता हुआ दरिया. कोई तंग नज़र साम्प्रदायिक हिन्दू मौलाना अबुलकलाम आज़ाद के ख़िलाफ़ इस तरह की बातें करता तो हमें दुख न होता लेकिन टंडन जी के मुंह से हमें यह अच्छा नहीं लगा. मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने पिछली एक पीढ़ी के अन्दर जिस तरह आज़ादी की तहरीक में हिस्सा लिया और हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये काम किया, जिस तरह उन्होंने डट कर मुस्लिम फ़िरक़ा परस्ती का विरोध किया और जिस तरह इस विरोध के कारन उन्हें लगातार ज़िल्लतें और बेइज़्ज़ती बरदाश्त करनी पड़ीं, जो क़ुरबानियां उन्होंने कीं और जिस तरह वह इन सब आज़माइशों में से सोने की तरह चमकते हुए बाहर निकले, जिस तरह गहरे संकट के समय में होशियारी और असाधारन बुर्दबारी के साथ उन्होंने कांग्रेस के सभापति की हैसियत से कांग्रेस की नाव को खेया, यह चीज़ें टंडन जी से छिपी नहीं हैं. हम किसी से तुलना करना नहीं चाहते, पर हमारे बड़े से बड़े नेताओं में इनेगिने ही हैं जो इस तरह की परीक्षाओं में से निकले हों. हम यह भी जानते हैं कि ख़ुद टंडन जी के दिल में

ابوالکلام آزاد پر بھی چھینٹے پھینکے جو بہت سے لوگوں کو اچھا نہیں لگا' نہ ٹنڈن جی کی شوبھا کو بڑھاتا ہوا معلوم ہوا . یہاں ہم اُن باتوں کو دہرانا نہیں چاہتے . ہمیں معلوم ہے اور ہمیں اِس کا دکھ ہے کہ دیش میں کافی تعداد ایسے لوگوں کی ہے جنہیں مولانا ابوالکلام آزاد کا شکشا منتری ہونا کسی طرح نہیں بھاتا . بہت سوں کو یہ بھی اچھا نہیں لگتا کہ بھارت کا شکشا منتری کوئی غیر ہندو ہو جبکہ یہاں کی آبادی میں بڑی گنتی ہندوؤں کی ہے . اِس طرح کے بہت سے لوگ سیکولر راج کی کلپنا کے بھی ورودھی ہیں اور یہاں کے راج کو اُسی طرح ہندو راج بنا ہوا دیکھنا چاہتے ہیں جس طرح پاکستان کے بہت سے لوگ اپنے یہاں کی حکومت کو مسلم حکومت . پر ٹنڈن جی کو ہم ایسے لوگوں میں نہیں گنتے . جہاں تک ہم جانتے ہیں دھرم مذہب کے معاملے میں ٹنڈن جی کافی آزاد خیال ہیں. وہ ہندو مسلم ایکتا کے وشواسی ہیں اور ہندو' مسلم یا عیسائی یا سکھ سب رووھیوں کے ورودھی ہیں. وہ دنیا کی کسی کتاب یا کسی شاستر کو نربھرانت اور سدا پرمان نہیں مانتے. وہ جات پات اور چھوا چھوت کے دشمن ہیں . ہندو بیاہ شادیوں میں جو سنسکرت کے منتر پڑھے جاتے ہیں ٹنڈن جی اُس کے بھی خلاف ہیں . ٹنڈن جی کی رائے ہے کہ ہمارے سنسکاروں میں سارا کام ہندی میں یا دیسی بھاشاؤں میں ہونا چاہیئے' سنسکرت میں نہیں. ٹنڈن جی کبیر صاحب کے بھگت ہیں اور اُن کے اِس کہنے کو ٹھیک مانتے ہیں :—سنسکرت ہے کوپ جل بھاشا بہتا نیر' یعنی سنسکرت کنوئیں کا رکا ہوا پانی ہے اور بول چال کی بھاشا بہتا ہوا دریا . کوئی تنگ نظر سامپردائک ہندو مولانا ابوالکلام آزاد کے خلاف اِس طرح کی باتیں کرتا تو ہمیں دکھ نہ ہوتا لیکن ٹنڈن جی کے منہ سے ہمیں یہ اچھا نہیں لگا . مولانا ابوالکلام آزاد نے پچھلی ایک پیڑھی کے اندر جس طرح آزادی کی تحریک میں حصہ لیا اور ہندو مسلم ایکتا کے لئے کام کیا' جس طرح اُنہوں نے ڈٹ کر مسلم فرقہ پرستی کا ورودھ کیا اور جس طرح اِس ورودھ کے کارن انہیں لگاتار ذلتیں اور بےعزتی برداشت کرنی پڑی' جو قربانیاں انہوں نے کیں اور جس طرح وہ اِن سب آزمائشوں میں سے سونے کی طرح چمکتے ہوئے باہر نکلے' جس طرح گہرے سنکٹ کے سمے میں ہوشیاری اور اسادھارن بردباری کے ساتھ اُنہوں نے کانگریس کے سبھاپتی کی حیثیت سے کانگریس کی ناؤ کو کھیا' یہ چیزیں ٹنڈن جی سے چھپی نہیں ہیں .' ہم کسی سے تلنا کرنا نہیں چاہتے' پر ہمارے بڑے سے بڑے نیتاؤں میں اِنے گنے ہی ہیں جو اِس طرح کی پریکشاؤں میں سے نکلے ہیں . ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ خود ٹنڈن جی کے دل میں

है. लेकिन टंडन जी उन लोगों में से नहीं हैं जो किसी के छोटा या ग़रीब होने की वजह से उसे नीची निगाह से देखें.

10. 4. '54 —सुन्दरलाल

भारत सरकार और हिन्दी की संस्थायें

अपनी पार्लिमेन्ट की तक़रीर में टंडन जी ने और जो बातें कहीं उनमें से कुछ हमें इससे भी अधिक अजीब लगीं. कहा जाता है उन्होंने यह भी कहा कि भारत सरकार ने जब कि हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा, शिब्ली एकेडमी आज़मगढ़ और हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी इलाहाबाद को बड़ी बड़ी रक़में दी हैं उसने हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद और नागरी प्रचारिनी सभा बनारस जैसी हिन्दी की पुरानी संस्थाओं को कुछ नहीं दिया. हम इस बात को पढ़ कर दंग रह गये. मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने अपने जवाब में बतलाया और हममें से बहुत सों ने सुन रखा था कि पिछले चंद साल के अन्दर मौजूदा भारत सरकार और उसकी ऐजूकेशन मिनिस्ट्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन को पूरे पांच लाख रुपये ग्रांट दे चुकी है. नागरी प्रचारिनी सभा बनारस के लिये अभी सन 1954 ई० के शुरू में भारत सरकार की हिन्दी शिक्षा समिति ने जिसके हम भी एक मेम्बर हैं सवा लाख रुपये की ग्रांट की सिफ़ारिश की है. नागरी प्रचारिनी सभा की दरख़्वास्त पर इस ग्रांट की तजवीज़ हमने ख़ुद समिति में की थी. जिन संस्थाओं को ग्रांट दिये जाने की टंडन जी ने शिकायत की है उनकी छोटी छोटी ग्रांटें ऊपर की दोनों ग्रांटों के सामने ऐसी ही हैं जैसी हिन्दी साहित्य सम्मेलन की इमारतों के सामने हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के किराये के मकान.

हमें विश्वास है टंडन जी कभी भी जान बूझ कर ग़लत बात नहीं कह सकते. न उन्हें देश के किसी आदमी या संस्था से द्वेश हो सकता है. वह एक साफ़ दिल और ऊंचे आदर्शों के इन्सान हैं. पर अनजाने में ही किसी तरह ग़लत बयानी तो हो गई और उससे दूसरों के साथ बेइन्साफ़ी भी हो गई और लोगों पर ग़लत असर भी पड़ गया. यह क्यों और कैसे हुआ. हमारी समझ में सिर्फ़ एक बात आ सकती है. हम ख़ुद अड़सठ साल की उमर में कई बार दुख के साथ अनुभव कर चुके हैं कि कभी कभी हम अपने रात दिन साथ रहने वाले लोगों के नाम भी भूल जाते हैं. उम्र का असर हमारे दिमाग़ और ख़ास कर हमारी याद पर पड़ता ही है. टंडन जी तो हम से कई बरस बड़े हैं. कोई दूसरा कारन हमारी समझ में नहीं आ सकता.

10. 4. '54 —सुन्दरलाल

मौलाना अबुलकलाम आज़ाद

अपनी तक़रीर में टंडन जी ने शिक्षा मंत्री मौलाना

ہے۔ لیکن ٹنڈن جی اُن لوگوں میں سے نہیں ہیں جو کسی کے چھوٹا یا غریب ہونے کی وجہ سے اُسے نیچی نگاہ سے دیکھیں۔

10. 4. '54 —سندر لال

بھارت سرکار اور ہندی کی سنستھائیں

اپنی پارلیمنٹ کی تقریر میں ٹنڈن جی نے اور جو باتیں کہیں اُن میں سے کچھ ہمیں اِس سے بھی ادھک عجیب لگیں۔ کہا جاتا ہے اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ بھارت سرکار نے جب کہ ہندستانی پرچار سبھا وردھا، شبلی اکیڈمی اعظم گڈھ اور ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد کو بڑی بڑی رقمیں دی ہیں اُس نے ہندی ساہتیہ سمیلن الہ آباد اور ناگری پرچارنی سبھا بنارس جیسی ہندی کی پرانی سنستھاؤں کو کچھ نہیں دیا۔ ہم اِس بات کو پڑھکر دنگ رہ گئے۔ مولانا ابوالکلام آزاد نے اپنے جواب میں بتلایا اور ہم میں سے بہت سوں نے سن رکھا تھا کہ پچھلے چند سال کے اندر موجودہ بھارت سرکار اور اُسکی ایجوکیشن منسٹری ہندی ساہتیہ سمیلن کو پورے پانچ لاکھ روپئے گرانٹ دے چکی ہے۔ ناگری پرچارنی سبھا بنارس کے لئے ابھی سن 1954ء کے شروع میں بھارت سرکار کی ہندی شکشا سمتی نے جس کے ہم بھی ایک ممبر ہیں سوا لاکھ روپئے کی گرانٹ کی سفارش کی ہے۔ ناگری پرچارنی سبھا کی درخواست پر اِس گرانٹ کی تجویز ہم نے خود سمتی میں کی تھی۔ جن سنستھاؤں کو گرانٹ دیئے جانے کی ٹنڈن جی نے شکایت کی ہے اُنکی چھوٹی چھوٹی گرانٹیں اوپر کی دونوں گرانٹوں کے سامنے ایسی ہی ہیں جیسی ہندی ساہتیہ سمیلن کی عمارتوں کے سامنے ہندستانی کلچر سوسائٹی کے کرائے کے مکان۔

ہمیں وشواس ہے ٹنڈن جی کبھی بھی جان بوجھکر غلط بات نہیں کہہ سکتے۔ نہ اُنہیں دیش کے کسی آدمی یا سنستھا سے دویش ہوسکتا ہے۔ وہ ایک صاف دل اور اونچے آدرشوں کے انسان ہیں۔ پر انجانے میں ہی کسی طرح غلط بیانی تو ہوگئی اور اُس سے دوسروں کے ساتھ بےانصافی بھی ہوگئی اور لوگوں پر غلط اثر بھی پڑگیا۔ یہ کیوں اور کیسے ہوا۔ ہماری سمجھ میں صرف ایک بات آسکتی ہے۔ ہم خود اڑسٹھ سال کی عمر میں کئی بار دکھ کے ساتھ انوبھو کرچکے ہیں کہ کبھی کبھی ہم اپنے رات دن ساتھ رہنے والے لوگوں کے نام بھی بھول جاتے ہیں۔ عمر کا اثر ہمارے دماغ اور خاصکر ہماری یاد پر پڑتا ہی ہے۔ ٹنڈن جی تو ہم سے کئی برس بڑے ہیں۔ کوئی دوسرا کارن ہماری سمجھ میں نہیں آسکتا۔

10. 4. '54 —سندر لال

مولانا ابوالکلام آزاد

اپنی تقریر میں ٹنڈن جی نے شکشا منتری مولانا

भोजवियों को बैठा कर एक साथ भोजन कराया. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी अलग अलग मज़हबों और अलग अलग जातों के लोगों की एक दूसरे के साथ शादियों में भी काफ़ी और अमली हिस्सा लेती रही है. इस सोसाइटी के सीखे हुए काम करने वालों में से पांच इस वक़्त चीन में काम कर रहे हैं. इनमें से तीन पीकिंग यूनिवर्सिटी में चीनी नौजवानों को हिन्दी पढ़ा रहे हैं और दो उसी यूनिवर्सिटी में चीनियों को उर्दू पढ़ा रहे हैं. सोसाइटी की किताबों का स्टाक इस वक़्त भी एक लाख रुपये से ऊपर का है सोसाइटी की शाख़ें देश के कई सूबों और बड़े बड़े शहरों में अपनी शक्ति के अनुसार मेल मुहब्बत के इसी नेक काम में लगी हुई हैं. अभी हाल में सुसाइटी ने हिन्दुस्तानी कलचर के ऊपर सारे भारत से निबन्ध लिखवा कर मंगवाए थे और अच्छे निबन्धों के लिये इनाम का ऐलान किया था. कलकत्ता, मद्रास, पूना, बम्बई, पटना, अमृतसर और दूर दूर के हिस्सों से योग्य विद्वानों ने निबन्ध लिख कर भेजे जिनमें से सोसाइटी ने दो निबन्धों पर पांच पांच सौ रुपए, दो पर ढाई ढाई सौ रुपए और दो पर सवा सवा सौ रुपए लिखने वालों को इनाम दिये.

हमें हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का इस तरह गुनगान करते हुए कुछ अच्छा नहीं लग रहा है. हम इस गुनगान को आगे बढ़ाना नहीं चाहते. हम समझते हैं इनमें से बहुत सी चीज़ें टंडन जी को मालूम हैं. बाक़ी बातें भी और इनके अलावा और बहुत सी बातें अगर टंडन जी पार्लिमेन्ट में चर्चा करने से पहले जानना चाहते तो उन्हें बहुत आसानी से मालूम हो सकती थीं.

हम यह मानते हैं कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कारनामों के मुक़ाबिले में हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की यह सब चीज़ें बहुत ही कम हैं. हिन्दी साहित्य सम्मेलन की शानदार इमारतों के मुक़ाबिले में हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के किराये के मकान झोंपड़ी की भी हैसियत नहीं रखते. साहित्य सम्मेलन के प्रेस के सामने हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का प्रेस एक बहुत छोटी चीज़ है. "नया हिन्द" की हज़ार दो हज़ार की गाहक संख्या से सम्मेलन पत्रिका की गाहक संख्या कई गुनी होगी. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी कोई इम्तहान भी नहीं लेती. यह दूसरी बात है कि सम्मेलन की किसी किसी बात से हम सहमत न हों, लेकिन कुल मिला कर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आज तक देश की जो सेवा की है उसकी हमारे दिल में बड़ी क़दर है. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सामने एक छोटी सी ग़रीबामऊ चीज़

مولویوں کو بیٹھاکر ایک ساتھ بھوجن کرایا. ہندستانی کلچر سوسائٹی الگ الگ مذہبوں اور الگ الگ جاتوں کے لوگوں کی ایک دوسرے کے ساتھ شادیوں میں بھی کافی اور عملی حصہ لیتی رہی ہے ۔ اس سوسائٹی کے سیکھے ہوئے کام کرنے والوں میں سے پانچ اس وقت چین میں کام کر رہے ہیں. ان میں سے تین پیکنگ یونیورسٹی میں چینی نوجوانوں کو ہندی پڑھا رہے ہیں اور دو اسی یونیورسٹی میں چینیوں کو اردو پڑھا رہے ہیں. سوسائٹی کی کتابوں کا اسٹاک اس وقت بھی ایک لاکھ روپیہ سے اوپر کا ہے ۔ سوسائٹی کی شاخیں دیش کے کئی صوبوں اور بڑے بڑے شہروں میں اپنی شکتی کے انوسار میل محبت کے اسی نیک کام میں لگی ہوئی ہیں ۔ ابھی حال میں سوسائٹی نے ہندستانی کلچر کے اوپر سارے بھارت سے نبندھ لکھواکر منگوائے تھے اور اچھے نبندھوں کے لئے انعام کا اعلان کیا تھا ۔ کلکتہ' مدراس' پونا' بمبئی' پٹنہ' امرتسر اور دور دور کے حصوں سے یوگیہ ودوانوں نے نبندھ لکھکر بھیجے جن میں سے سوسائٹی نے دو نبندھوں پر پانچ پانچ سو روپیہ' دو پر ڈھائی ڈھائی سو روپئے اور دو پر سوا سوا سو روپیہ لکھنے والوں کو انعام دیئے ۔

ہمیں ہندستانی کلچر سوسائٹی کا اس طرح گن گان کرتے ہوئے کچھ اچھا نہیں لگ رہا ہے ۔ ہم اس گن گان کو آگے بڑھانا نہیں چاہتے ۔ ہم سمجھتے ہیں ان میں سے بہت سی چیزیں ٹنڈن جی کو معلوم ہیں. باقی باتیں بھی اور ان کے علاوہ اور بہت سی باتیں اگر ٹنڈن جی پارلیمنٹ میں چرچا کرنے سے پہلے جاننا چاہتے تو انہیں بہت آسانی سے معلوم ہوسکتی تھیں ۔

ہم یہ مانتے ہیں کہ ہندی ساہتیہ سمیلن کے کارناموں کے مقابلے میں ہندستانی کلچر سوسائٹی کی یہ سب چیزیں بہت ہی کم ہیں ۔ ہندی ساہتیہ سمیلن کی شاندار عمارتوں کے مقابلے میں ہندستانی کلچر سوسائٹی کے کرائے کے مکان جھونپڑی کی بھی حیثیت نہیں رکھتے. ساہتیہ سمیلن کے پریس کے سامنے ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پریس ایک بہت چھوٹی چیز ہے ۔ "نیا ہند" کی ہزار دو ہزار کی گاہک سنکھیا سے سمیلن پترکا کی گاہک سنکھیا کئی گنی ہوگی ۔ ہندستانی کلچر سوسائٹی کوئی امتحان بھی نہیں لیتی. یہ دوسری بات ہے کہ سمیلن کی کسی کسی بات سے ہم سہمت نہ ہوں' لیکن کل ملاکر ہندی ساہتیہ سمیلن نے آج تک دیش کی جو سیوا کی ہے اسکی ہمارے دل میں بڑی قدر ہے ۔ ہندستانی کلچر سوسائٹی ہندی ساہتیہ سمیلن کے سامنے ایک چھوٹی سی غریبامؤ چیز

नहीं. उसने कभी कोई जलसा या कानफ़रेन्स नहीं की. वग़ैरा वग़ैरा.''

टंडन जी जान बूझ कर ग़लत बात कहने वाले आदमी नहीं हैं. फिर यह बातें उनके मुंह से कैसे निकलीं. हम दोनों इलाहाबाद में रहते हैं. अक्सर उनसे मिलना होता है.

सोसाइटी की बातें भी उनसे बहुत बार हो चुकी हैं. सर तेजबहादुर सप्रू सोसाइटी के बानियों में से और उसके पहले सदर थे. डाक्टर ताराचंद बरसों उसके ख़ज़ांची रहे. सर सप्रू, डाक्टर ताराचंद, टंडन जी और हम अक्सर मिलते रहे हैं और तरह तरह की बातें और बहसें होती रही हैं. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की मासिक पत्रिका ''नया हिन्द' की भाशा, उसके हिज्जों और उसकी पालिसी के बारे में ख़ुद मेरी टंडन जी से अनेक बार बात चीत हुई है. एक बार मुझे याद है वह मेरी इस राय पर बहुत ख़ुश हुए थे कि उर्दू लिखावट में से ज़े, ज़ाल, ज़्वाद, ज़ो, से, तो, बड़ी हे और ऐन को निकाल दिया जावे और इन हरफ़ों की जगह सब लफ़्ज़ों में सिर्फ़ ज़े, सीन, ते, छोटी हे और अलिफ़ से काम लिया जाये. हमारे लायक़ दोस्त उस्मानिया यूनिवर्सिटी के डाक्टर जाफ़र हुसैन की भी यही राय है. उनके लेख ''नया हिन्द'' में इसी तरह छपते भी हैं. ''नया हिन्द'' नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अपने ढंग का अकेला पर्चा है और आज लगभग दस बरस से बराबर निकल रहा है. नया हिन्द का अपना प्रेस है. इस प्रेस के लिये, सोसाइटी के दफ़्तर के लिये और सोसाइटी में काम करने वालों के रहने के लिये हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी ने चार अलग अलग मकान साढ़े तीन सौ रुपये माहवार किराये पर ले रखे हैं. हिन्दी, उर्दू और अंग्रेज़ी में सोसाइटी की पच्चीस से ऊपर किताबें इन दस साल में निकल चुकी हैं. जिनमें से अधिकतर हिन्दी में हैं और कई कई ऐडिशनें हो चुकी हैं. सोसाइटी की किताब 'गीता और क़ुरान'' को दोनों धर्मों के विद्वानों ने सराहा है. उसके एक हिस्से का अरबी तरजुमा अरब मुल्कों में भी पसन्द किया गया है. उससे भगवत गीता के बारे में उनकी जानकारी बढ़ी है. हम यहां हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबों का विज्ञापन करने नहीं बैठे. हमारी लगभग सारी किताबों का एक ही फ़र्ज़ है, वह है राष्ट्र भाशा की सेवा और अलग अलग धर्मों के लोगों में एक दूसरे के धर्मों की जानकारी और एक दूसरे से प्रेम पैदा करने की कोशिश. शायद हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी मुल्क की अकेली संस्था है जिसने कम से कम एक कानफ़रेन्स में मेहतर बहनों के हाथ से दाल रोटी पकवा कर और उन्हीं से परसवा कर सैकड़ों ऊंची जाति के हिन्दुओं और कट्टर मुसलमान

نہیں ۔ اس نے کبھی کوئی جلسہ یا کانفرنس نہیں کی وغیرہ وغیرہ ۔"

ٹنڈن جی جان بوجھکر غلط بات کہنے والے آدمی نہیں ہیں ۔ پھر یہ باتیں ان کے منھ سے کیسے نکلیں ۔ ہم دونوں الہ آباد میں رہتے ہیں ۔ اکثر ان سے ملنا ہوتا ہے ۔

سوسائٹی کی باتیں بھی ان سے بہت بار ہو چکی ہیں ۔ سر تیج بہادر سپرو سوسائٹی کے بانیوں میں سے اور اس کے پہلے صدر تھے ۔ ڈاکٹر تارا چند برسوں اس کے خزانچی رہے ۔ سر سپرو، ڈاکٹر تارا چند، ٹنڈن جی اور ہم اکثر ملتے رہے ہیں اور طرح طرح کی باتیں اور بحثیں ہوتی رہی ہیں ۔ ہندستانی کلچر سوسائٹی کی ماسک پترکا "نیا ہند" کی بھاشا، اس کے ہجے اور اسکی پالیسی کے بارے میں خود میری ٹنڈن جی سے انیک بار بات چیت ہوئی ہے ۔ ایک بار مجھے یاد ہے وہ میری اس رائے پر بہت خوش ہوئے تھے کہ اردو لکھاوٹ میں سے ز، ذ، ض، ظ، ث، ط، ح اور ع کو نکال دیا جائے اور ان حرفوں کی جگہ سب لفظوں میں صرف ز، س، ت، ہ اور ا سے کام لیا جائے ۔ ہمارے لائق دوست عثمانیہ یونیورسٹی کے ڈاکٹر جعفر حسین کی بھی یہی رائے ہے ۔ ان کے لیکھ نیا ہند میں اسی طرح چھپتے بھی ہیں ۔ "نیا ہند" ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں اپنے ڈھنگ کا اکیلا پرچہ ہے اور آج لگ بھگ دس برس سے برابر نکل رہا ہے ۔ نیا ہند کا اپنا پریس ہے ۔ اس پریس کے لئے، سوسائٹی کے دفتر کے لئے اور سوسائٹی میں کام کرنے والوں کے رہنے کے لئے ہندستانی کلچر سوسائٹی نے چار الگ الگ مکان ساڑھے تین سو روپئے ماہوار کرایہ پر لے رکھے ہیں ۔ ہندی، اردو اور انگریزی میں سوسائٹی کی پچیس سے اوپر کتابیں ان دس سال میں نکل چکی ہیں جن میں سے ادھک تر ہندی میں ہیں اور کئی کئی ایڈیشن ہو چکی ہیں ۔ سوسائٹی کی کتاب "گیتا اور قرآن" کو دونوں دھرموں کے ودوانوں نے سراہا ہے ۔ اس کے ایک حصے کا عربی ترجمہ عرب ملکوں میں بھی پسند کیا گیا ہے ۔ اس سے بھگوت گیتا کے بارے میں انکی جانکاری بڑھی ہے ۔ ہم یہاں ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابوں کا وگیاپن کرنے نہیں بیٹھے ۔ ہماری لگ بھگ ساری کتابوں کا ایک ہی فرض ہے، وہ ہے راشٹر بھاشا کی سیوا اور الگ الگ دھرموں کے لوگوں میں ایک دوسرے کے دھرموں کی جانکاری اور ایک دوسرے سے پریم پیدا کرنے کی کوشش ۔ شاید ہندستانی کلچر سوسائٹی ملک کی اکیلی سنستھا ہے جس نے کم سے کم ایک کانفرنس میں مہتر بہنوں کے ہاتھ سے دال روٹی پکوا کر اور انہیں سے پرسوا کر سیکڑوں اونچی جات کے ہندوؤں اور کٹر مسلمان

जिस दिन सचमुच जागेगी और अपने भले बुरे को समझेगी उस दिन वनस्पति घी के कारखानों का चलना देश में नामुमकिन हो जायगा. और भी बहुत सी बातें हैं जिनमें हमारी राय टंडन जी की राय से मिलती है. एक बहुत बड़ी बात यह है कि टंडन जी राजनीति को गांधी जी के उपदेशों के अनुसार शुद्ध सदाचार के असूलों पर क़ायम रखना चाहते हैं, जब कि हमारे आज के बहुत से हाकिमों को राजनीति और सदाचार के असूलों में कोई सम्बन्ध ही दिखाई नहीं देता. देश के एक बहुत बड़े नेता के, जिनका नाम हम इस वक़्त लेना नहीं चाहते और जिनके दूसरे अनेक गुनों के लिये हमारे दिल में बड़ी इज़्ज़त है, एक मौक़े के यह साफ़ शब्द हैं :--What has politics to do with morals ! यानी राजनीति का सदाचार से क्या वास्ता ! टंडन जी और हम दोनों इस निगाह को ग़लत और मानव उन्नति के लिये घातक मानते हैं. यह सब बातें हमने केवल यह बताने के लिये कहीं हैं कि हमारे दिल में टंडन जी के लिये काफ़ी प्रेम और आदर है.

भाशा का सवाल उन सवालों में से है जिनमें टंडन जी की और हमारी राय कुछ अलग अलग हैं. इस सवाल पर पिछले दिनों पालिमेंट के अन्दर काफ़ी गरमा गरमी रही. हम वहां की बहस में पड़ना नहीं चाहते. पर उस बहस के अन्दर हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का नाम भी लिया गया. बात यह थी. भारत सरकार ने पिछले दिनों एक अंग्रेज़ी हिन्दी कोश तैयार करने का काम हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को सौंपा और उसके लिये सोसाइटी को धन की मदद भी दी. हमारी राष्ट्र-भाशा हिन्दी क्या और कैसी होनी चाहिये इस पर अलग अलग राय होना एक क़ुदरती बात है. देश में किसी भी सवाल पर अलग अलग तरह के विचार एक दर्जे तक जीवन का चिन्ह हैं. पर पार्लिमेंट में इस सवाल पर बोलते हुए टंडन जी ने हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के बारे में कुछ ऐसी बातें कहीं जिन्हें अख़बारों में पढ़ कर हमें थोड़ा सा दुख हुआ. कोई और इस तरह की बातें करता तो शायद हम उस पर ध्यान भी न देते. लेकिन टंडन जी के लिये हमारे दिल में जो जगह है उसने हमें यह नोट लिखने पर मजबूर किया. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी के बारे में उनके कहने का सार यह बताया जाता है—"हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी कहां और क्या चीज़ है किसी को नहीं मालूम. उसका कहीं कोई दफ़्तर नहीं. सुना है किसी आदमी के रहने के मकान में उसका नाम का दफ़्तर है. इस सोसाइटी ने आज तक हिन्दी में कोई किताब नहीं निकाली. इसका कोई साहित्य

جس دن سچ مچ جاگیگی اور اپنے بھلے برے کو سمجھیگی اُس دن بنسپتی گھی کے کارخانوں کا چلنا دیش میں ناممکن ہوجائیگا . اور بھی بہت سی باتیں ہیں جن میں ہماری رائے ٹنڈن جی کی رائے سے ملتی ہے . ایک بہت بڑی بات یہ ہے کہ ٹنڈن جی راج نیتی کو گاندھی جی کے اُپدیشوں کے انوسار شدھ سداچار کے اصولوں پر قائم رکھنا چاہتے ہیں' جبکہ ہمارے آج کے بہت سے حاکموں کو راج نیتی اور سداچار کے اصولوں میں کوئی سمبندھ ہی دکھائی نہیں دیتا . دیش کے ایک بہت بڑے نیتا کے' جن کا نام ہم اِس وقت لینا نہیں چاہتے اور جن کے دوسرے انیک گنوں کے لئے ہمارے دل میں بڑی عزت ہے' ایک موقع کے یہ صاف شبد ہیں What has politics to do with morals! یعنی راج نیتی کا سداچار سے کیا واسطہ ! ٹنڈن جی اور ہم دونوں اِس نگاہ کو غلط اور مانو اُنتی کے لئے گھاتک مانتے ہیں . یہ سب باتیں ہم نے کیول یہ بتانے کے لئے کہی ہیں کہ ہمارے دل میں ٹنڈن جی کے لئے کافی پریم اور آدر ہے .

بھاشا کا سوال ان سوالوں میں سے ہے جن میں ٹنڈن جی کی اور ہماری رائے کچھ الگ الگ ہیں . اس سوال پر پچھلے دنوں پارلیمنٹ کے اندر کافی گرما گرمی رہی . ہم وہاں کی بحث میں پڑنا نہیں چاہتے . پر اُس بحث کے اندر ہندستانی کلچر سوسائٹی کا نام بھی لیا گیا . بات یہ تھی . بھارت سرکار نے پچھلے دنوں ایک انگریزی ہندی کوش تیار کرنے کا کام ہندستانی کلچر سوسائٹی کو سونپا اور اُس کے لئے سوسائٹی کو دھن کی مدد بھی دی . ہماری راشٹر بھاشا ہندی کیا اور کیسی ہونی چاہیئے اِس پر الگ الگ رائے ہونا ایک قدرتی بات ہے . دیش میں کسی بھی سوال پر الگ الگ طرح کے وچار ایک درجے تک جیون کا چنہ ہیں . پر پارلیمنٹ میں اِس سوال پر بولتے ہوئے ٹنڈن جی نے ہندستانی کلچر سوسائٹی کے بارے میں کچھ ایسی باتیں کہیں جنہیں اخباروں میں پڑھکر ہمیں تھوڑا سا دکھ ہوا . کوئی اور اِس طرح کی باتیں کرتا تو شاید ہم اُس پر دھیان بھی نہ دیتے . لیکن ٹنڈن جی کے لئے ہمارے دل میں جو جگہ ہے اُس نے ہمیں یہ نوٹ لکھنے پر مجبور کیا . ہندستانی کلچر سوسائٹی کے بارے میں اُن کے کہنے کا سار یہ بتایا جاتا ہے :—"ہندستانی کلچر سوسائٹی کہاں اور کیا چیز ہے کسی کو نہیں معلوم . اُس کا کہیں کوئی دفتر نہیں . سنا ہے کسی آدمی کے رہنے کے مکان میں اُس کا نام کا دفتر ہے . اِس سوسائٹی نے آج تک ہندی میں کوئی کتاب نہیں نکالی . اِس کا کوئی ساہتیہ

रे साल एल०, एल०, बी० में और हम पहले साल में.
चार एक साथ होते थे. रोज़ एक दूसरे से मिलना
था. टंडन जी हम से चार साल बड़े हैं. उस दिन
आज तक हम दोनों में प्रेम बराबर बढ़ता गया.
उन्हें हमेशा अपना बड़ा भाई समझते रहे और समझते
हमारे दिल में उनके लिये बड़ी मुहब्बत है, बड़ी
त है. हमें विश्वास है कि उनके दिल में भी हमारे
उतनी ही मुहब्बत है.

राजनीतिक जीवन में प्रवेश करने के साथ साथ यह
और अधिक बढ़ता गया. मुद्दतों हमने मिलकर
किया. कई बातों में हमारा उनका मतभेद भी रहा
और अब भी है. इस तरह का मतभेद किसी भी दो
यों में होना एक मामूली बात है. लेकिन इस मतभेद
मारे आपस के प्रेम में आज तक न कभी फ़रक़ पड़ा
न आइन्दा पड़ सकता है.

कुछ बातों में टंडन जी में और हम में मतभेद रहा
तो बहुत सी बातों में हमारी उनकी राय हमेशा मिलती
रही है. आज भी कई बातों में, जिनमें टंडन जी की
आजकल के सरकारी लोगों की राय से नहीं मिलती,
ारी राय टंडन जी से मिलती है. मिसाल के लिये
ारे अधिकतर हाकिम खद्दर और गांव के धन्धों में
तरह का विश्वास नहीं रखते जैसा टंडन जी और हम.
न जी इस देश के लाखों गांवों को ज़िन्दा रखने और
ावलम्बी बनाने के हक़ में हैं. हमारे बहुत से आजके
केम, उनसे बन पड़े तो, गांव को खतम कर के शहरों
खपा लेना चाहते हैं. हमारी राय इस बारे में पूरी
टंडन जी की राय से मिलती है. टंडन जी मिल की
नी और बनस्पति घी को देश की तन्दुरुस्ती और आम
गों की माली बहबूदी के लिये नाशकर समझते हैं.
ारे बड़े बड़े हाकिम इस बारे में उनका मज़ाक़ उड़ाते
उन्हें यक़ीन है कि लाल गुड़ के मुक़ाबिले में मिल की
ेद चीनी तरक़्क़ी की पहचान है. उनके विद्वान साइन-
टस्ट उन्हें बताते हैं कि बनस्पति घी तन्दुरुस्ती के लिये
त मुफ़ीद चीज़ है. उन्हें दया आती है टंडन जी जैसे उन
ों पर जो घंटों असली घी और बनस्पति घी की बहसों
बिता देते हैं. हम इन बातों में सोलह आने टंडन जी
साथ हैं. मिलों की सफ़ेद चीनी और बनस्पति घी
ों को हम देशवासियों की तन्दुरुस्ती के लिये नाशकर
नते हैं हमें अपने उन हाकिमों पर दया आती है जिन्हें
नी आंखों और गली गली के आये दिन के तजुरबों
उतना भरोसा नहीं है जितना अपने खास साइन्टिस्टों
. हम इन बातों पर योरप और अमरीका के उन बेलाग
न्स दानों की राय से भी वाक़िफ़ हैं जो पूरी तरह
से सहमत हैं. हमें यक़ीन है कि भारत की आम जनता

ں سال ایل۔ ایل۔ بی۔ میں اور ہم پہلے سال میں،
ایک ساتھ ہوتے تھے۔ روز ایک دوسرے سے ملنا ہوتا تھا۔
ن جی ہم سے چار سال بڑے ہیں۔ اس دن سے آج
تک ہم دونوں میں پریم برابر بڑھتا گیا۔ ہم انہیں
ہمیشہ اپنا بڑا بھائی سمجھتے رہے اور سمجھتے ہیں۔
ہمارے دل میں ان کے لئے بڑی محبت ہے، بڑی عزت
ہے۔ ہمیں وشواس ہے کہ ان کے دل میں بھی ہمارے لئے
اتنی ہی محبت ہے۔

راجنیتک جیون میں پرویش کرنے کے ساتھ ساتھ یہ
پریم اور ادھک بڑھتا گیا۔ مدتوں ہم نے ملکر کام کیا۔
کئی باتوں میں ہمارا ان کا مت بھید بھی رہا ہے اور
اب بھی ہے۔ اس طرح کا مت بھید کسی بھی دو
بھائیوں میں ہونا ایک معمولی بات ہے۔ لیکن اس
مت بھید سے ہمارے آپس کے پریم میں آج تک نہ کبھی
فرق پڑا اور نہ آئندہ پڑسکتا ہے۔

کچھ باتوں میں ٹنڈن جی میں اور ہم میں مت
بھید رہا ہے تو بہت سی باتوں میں ہماری انکی رائے
ہمیشہ ملتی بھی رہی ہے۔ آج بھی کئی باتوں میں،
جن میں ٹنڈن جی کی رائے آجکل کے سرکاری لوگوں کی
رائے سے نہیں ملتی، ہماری رائے ٹنڈن جی سے ملتی ہے
مثال کے لئے ہمارے ادھکتر حاکم کھدر اور گاؤں کے
دھندوں میں اس طرح کا وشواس نہیں رکھتے جیسا
ٹنڈن جی اور ہم۔ ٹنڈن جی اس دیش کے لاکھوں گاؤں
کو زندہ رکھنے اور سوالمبی بنانے کے حق میں ہیں۔
ہمارے بہت سے آج کے حاکم، ان سے بن پڑے تو، گاؤں کو
ختم کرکے شہروں میں کھپا لینا چاہتے ہیں۔ ہماری
رائے اس بارے میں پوری طرح ٹنڈن جی کی رائے سے
ملتی ہے۔ ٹنڈن جی مل کی چینی اور بنسپتی گھی
کو دیش کی تندرستی اور عام لوگوں کی مالی بہبودی
کے لئے ناشکر سمجھتے ہیں۔ ہمارے بڑے بڑے حاکم
اس بارے میں ان کا مذاق اڑاتے ہیں۔ انہیں یقین ہے
کہ لال گڑ کے مقابلے میں مل کی سفید چینی ترقی کی
پہچان ہے۔ ان کے ودوان سائنٹسٹ انہیں بتاتے ہیں
کہ بنسپتی گھی تندرستی کے لئے بہت مفید چیز ہے۔
انہیں دیا آتی ہے ٹنڈن جی جیسے ان لوگوں پر جو
گھنٹوں اصلی گھی اور بنسپتی گھی کی بحثوں میں
بتا دیتے ہیں۔ ہم ان باتوں میں سولہ آنے ٹنڈن جی
کے ساتھ ہیں۔ ملوں کی سفید چینی اور بنسپتی گھی
دونوں کو ہم دیش واسیوں کی تندرستی کے لئے ناشکر
مانتے ہیں۔ ہمیں اپنے ان حاکموں پر دیا آتی ہے جنہیں
اپنی آنکھوں اور گلی گلی کے آئے دن کے تجربوں پر اتنا
بھروسہ نہیں ہے جتنا اپنے خاص سائنٹسٹوں پر۔ ہم ان
باتوں پر یورپ اور امریکہ کے ان بے لاگ سائنس دانوں کی
رائے سے بھی واقف ہیں جو پوری طرح ہم سے سہمت
ہیں۔ ہمیں یقین ہے کہ بھارت کی عام جنتا

कों दूसरे हिन्दू और मुसलमान सूफ़ियों और भगतों ने इस ज़माने में उस प्रेम धर्म की बुनियादें रक्खीं जो अपने पहले के कट्टर हिन्दू धर्म और कट्टर इस्लाम दोनों से बढ़ कर और ऊंचा था. बुराइयां कुछ न कुछ हर देश और हर ज़माने में होती हैं. उस ज़माने में भी थीं. लेकिन अगर उस ज़माने के इतिहास को पूरी तरह ठीक ठीक और सच्चाई के साथ पढ़ा जाये तो मालूम होगा कि वह ज़माना ऐसा ज़माना था जिस पर हिन्दू और मुसलमान दोनों का जाइज़ फ़ख़्र हो सकता है और जिस को पढ़ कर हम में आपस में नफ़रतें बढ़ने के बजाय मुहब्बत और एक दूसरे की क़दर बढ़ेगी. इतिहास के कुछ नये लिखने वालों ने इस बात को देखा और अपनी नई किताबों में पुरानी किताबों के इस दोष को कम करने की कोशिश की.

क़ुदरती तौर पर देश के जो पढ़े लिखे लोग इतिहास की उन पुरानी किताबों पर पले थे उन्हीं को सच्चा मानते हैं और जिन के विचार इन बातों में पक गये थे उन्हें यह नया रुझान अच्छा नहीं लग सकता था. हम अपने पहले नोट में भी कह चुके हैं और फिर कहते हैं कि देश के ऐसे भाइयों की ईमान्दारी में हम संदेह नहीं करते. ऐसे लोगों का यह चाहना भी क़ुदरती है कि हमारे बच्चों के लिये इतिहास की पुस्तकें उसी मामले में उसी ढंग की हों जैसी अंग्रेज़ों के वक़्तों से चली आ रही हैं. लेकिन जब यह चाह या ऐसे विचार ख़ास मौक़े पर किसी तालीमी संस्था या उस के आदमियों के सामने किसी ज़िम्मेदार तरफ़ से ज़ाहिर किये जायें तो उन का असर बहुत ग़लत हो सकता है और हमारे इतिहास लेखकों की आज़ादी और देश की उन्नति दोनों में रुकावट डाल सकता है. हमारी क़तई राय है कि इतिहास के लेखक पूरी तरह और उतने ही आज़ाद और बेलाग होने चाहियें जितने अदालतों के जज.

श्री के० एम० मुन्शी के विचारों और हमारे विचारों में इतिहास पर, धर्म पर, सैकूलर राज और हिन्दू राज पर या साम्प्रदायक सवाल पर काफ़ी मतभेद है. पर हमें उनकी ईमान्दारी पर इतना भरोसा है कि हम यह नहीं मान सकते कि वह किसी से इतिहास को जान बूझ कर तोड़ने मोड़ने के लिये कहेंगे.

1. 4. '54 —सुन्दरलाल

टंडन जी और हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

टंडन जी का और हमारा सम्बन्ध आज कम से कम 48 बरस पुराना सम्बन्ध है. बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन और हम दोनों इलाहाबाद की क्लास में पढ़ते थे. वह

سیکڑوں دوسرے ہندو اور مسلمان صوفیوں اور بھگتوں نے اس زمانہ میں اس پریم دھرم کی بنیادیں رکھیں جو اپنے سے پہلے کے کٹر ہندو دھرم اور کٹر اسلام دونوں سے بڑھکر اور اونچا تھا۔ برائیاں کچھ نہ کچھ ہر دیش اور ہر زمانے میں ہوتی ہیں۔ اس زمانے میں بھی تھیں۔ لیکن اگر اس زمانے کے اتہاس کو پوری طرح ٹھیک ٹھیک اور سچائی کے ساتھ پڑھا جائے تو معلوم ہوگا کہ وہ زمانہ ایسا زمانہ تھا جس پر ہندو اور مسلمان دونوں کو جائز فخر ہوسکتا ہے اور جسکو پڑھکر ہم میں آپس میں نفرتیں بڑھنے کے بجائے محبت اور ایک دوسرے کی قدر بڑھیگی۔ اتہاس کے کچھ نئے لکھنے والوں نے اس بات کو دیکھا اور اپنی نئی کتابوں میں پرانی کتابوں کے اس دوش کو کم کرنے کی کوشش کی۔

قدرتی طور پر دیش کے جو پڑھے لکھے لوگ اتہاس کی ان پرانی کتابوں پر پلے تھے انہیں کو سچا مانتے تھے اور جن کے وچار ان باتوں میں پک گئے تھے انہیں یہ نیا رجحان اچھا نہیں لگ سکتا تھا۔ ہم اپنے پہلے نوٹ میں بھی کہہ چکے ہیں اور پھر کہتے ہیں کہ دیش کے ایسے بھائیوں کی ایمانداری میں ہم سندیہہ نہیں کرتے۔ ایسے لوگوں کا یہ چاہنا بھی قدرتی ہے کہ ہمارے بچوں کے لئے اتہاس کی پستکیں اس معاملے میں اسی ڈھنگ کی ہوں جیسی انگریزوں کے وقتوں سے چلی آرہی ہیں۔ لیکن جب یہ چاہ ایسے وچار خاص موقع پر کسی تعلیمی سنستھا یا اس کے آدمیوں کے سامنے کسی ذمہ دار طرف سے ظاہر کئے جائیں تو ان کا اثر بہت غلط ہوسکتا ہے اور ہمارے اتہاس لیکھکوں کی آزادی اور دیش کی انتی دونوں میں رکاوٹ ڈال سکتا ہے۔ ہماری قطعی رائے ہے کہ اتہاس کے لیکھک پوری طرح اور اتنے ہی آزاد اور بےلاگ ہونے چاہئیں جتنے عدالتوں کے جج۔

شری کے۔ ایم۔ منشی کے وچاروں اور ہمارے وچاروں میں، اتہاس پر، دھرم پر، سیکولر راج اور ہندو راج پر یا سامپردائک سوال پر کافی مت بھید ہے۔ پر ہمیں انکی ایمانداری پر اتنا بھروسہ ہے کہ ہم یہ نہیں مان سکتے کہ وہ کسی سے اتہاس کو جان بوجھکر توڑنے موڑنے کے لئے کہیں گے۔

—سندر لال 1. 4. '54

ٹنڈن جی اور ہندستانی کلچر سوسائٹی

ٹنڈن جی کا اور ہمارا سمبندھ آج کم سے کم 48 برس پرانا سمبندھ ہے۔ بابو پرشوتم داس ٹنڈن اور ہم دونوں الہ آباد کی کلاس میں پڑھتے تھے۔ وہ

हमारी राय

ہماری رائے

"विद्यार्थी आन्दोलन और श्री के० एम० मुंशी"

ऊपर के सरबन्ध से दिसम्बर के नया हिन्द में हमारा एक नोट निकला है. हम से कहा गया है कि उससे कुछ भाइयों ने यह समझा कि श्री के० एम० मुंशी ने चाहा था कि मुस्लिम बादशाहों के अच्छे कामों को कम करके दिखाया जावे और उनकी बुराइयों को बढ़ा कर दिखाया जावे यानी यह कि उन्होंने जान बूझ कर हिस्ट्री को मोड़ना तोड़ना चाहा. हमारे उस नोट में यह बात नहीं थी. हमारी बात साफ़ थी और साफ़ है. वह यह कि अंग्रेज़ हाकिमों ने हमें एक दूसरे से लड़ाने और अपनी पोलिटिकल ग़रज़ पुरी करने के लिये जान बूझ कर हमारे इतिहास को तोड़ा मोड़ा. उस ग़लत और एक तरफ़ा इतिहास का हमारे हज़ारों देश वासियों पर बुरा असर पड़ा जो बदक़िस्मती से अब तक मौजूद है. नफ़रतें बढ़ीं और जो न होना था हुआ. धीरे धीरे इतिहास के कुछ लिखने वालों की आंखें खुलीं. उन्होंने साफ़ देखा कि मुस्लिम बादशाहों के ज़माने में इस देश ने जीवन के लगभग हर पहलू में असाधारन उन्नति की थी. शाहजहां से औरंगज़ेब तक का ज़माना इस देश के इतिहास का वह ज़माना था जब सचमुच सारा देश धनधान्य से लहलहाता था और जैसा कहा जाता है दूध और घी की इस देश में नदियां बहती थीं. हमारी दस्तकारियां और तिजारत उस ज़माने में इस दर्जे बढ़ी हुई थीं कि अठारहवीं सदी तक हम बाहर की आधी दुनिया को ज़िन्दगी की सैकड़ों ज़रूरतें मुहय्या करते थे. धर्म के मामले में भी भारत के बड़े से बड़े मुसलमान बादशाहों की अगर हम उस ज़माने के यूरोप के और दुनिया के दूसरे बड़े देशों के बादशाहों से तुलना करें तो भारत के मुसलमान बादशाह उनके मुक़ाबिले में उदारता, रवादारी और इन्साफ़ की मूर्ति दिखाई देंगे. इस्लाम और हिन्दू धर्म के मेल से कबीर और नानक, दादू और चिश्ती, तुकाराम और नामदेव और

"ودیارتھی آندولن اور شری کے. ایم. منشی"

اوپر کے سربندھ سے دسمبر کے نیا ہند میں ہمارا ایک نوٹ نکلا ہے. ہم سے کہا گیا ہے کہ اس سے کچھ بھائیوں نے یہ سمجھا کہ شری کے. ایم. منشی نے چاہا تھا کہ مسلم بادشاہوں کے اچھے کاموں کو کم کر کے دکھایا جاوے اور اُن کی برائیوں کو بڑھا کر دکھایا جاوے یعنی یہ کہ انہوں نے جان بوجھکر ہسٹری کو موڑنا توڑنا چاہا. ہمارے اس نوٹ میں یہ بات نہیں تھی. ہماری بات صاف تھی اور صاف ہے. وہ یہ کہ انگریز حاکموں نے ہمیں ایک دوسرے سے لڑانے اور اپنی پولیٹکل غرض پوری کرنے کے لئے جان بوجھکر ہمارے اتہاس کو توڑا موڑا. اس غلط اور ایک طرفہ اتہاس کا ہمارے ہزاروں دیش واسیوں پر برا اثر پڑا جو بدقسمتی سے اب تک موجود ہے. نفرتیں بڑھیں اور جو نہ ہونا تھا ہوا. دھیرے دھیرے اتہاس کے کچھ لکھنے والوں کی آنکھیں کھلیں. انہوں نے صاف دیکھا کہ مسلم بادشاہوں کے زمانے میں اس دیش نے جیون کے لگ بھگ ہر پہلو میں اسادھارن انتی کی تھی. شاہ جہاں سے اورنگ زیب تک کا زمانہ اس دیش کے اتہاس کا وہ زمانہ تھا جب سچ مچ سارا دیش دھن دھانیہ سے لہلہاتا تھا اور جیسا کہا جاتا ہے دودھ اور گھی کی اس دیش میں ندیاں بہتی تھیں. ہماری دستکاریاں اور تجارت اس زمانے میں اس درجے بڑھی ہوئی تھیں کہ اٹھارھویں صدی تک ہم باہر کی آدھی دنیا کو زندگی کی سیکڑوں ضرورتیں مہیا کرتے تھے. دھرم کے معاملے میں بھی بھارت کے بڑے سے بڑے مسلمان بادشاہوں کی اگر ہم اس زمانے کے یورپ کے اور دنیا کے دوسرے بڑے دیشوں کے بادشاہوں سے تلنا کریں تو بھارت کے مسلمان بادشاہ ان کے مقابلہ میں اُدارتا، رواداری اور انصاف کی مورتی دکھائی دینگے. اسلام اور ہندو دھرم کے میل سے کبیر اور نانک، دادو اور چشتی، تکارام اور نام دیو اور

चीनी बच्चों ने जतन किया और साठ हज़ार येन इकट्ठा करके कोरिया के अनाथ बच्चों को भेजा, इस सब का वर्नन बहुत ही मनमोहक है.

देशप्रेम का भाव तो इस किताब के लगभग हर लेख में पाया जाता है. पब्लिक की मिल्कियत का विचार किस तरह से बच्चों में कूट कूट कर भरा है इसकी एक मिसाल सफ़ा 48 के लेख में देखियेः—

"पी-येंग दौड़ता हुआ मेरे पास आया उसने कहा गेंद मत खेलो बल्कि स्कूल लाइब्रेरी के पढ़ने वाले कमरे की तरफ़ चलो वहां अभी नई तस्वीरों की किताबें आई हैं. जब मैं अपना नाम लिखने लगा तो मेरी नज़र अपने हाथों पर पड़ी. मेरे हाथ गंदे और पसीने में तर थे. मैं हाथ धुलाने वाले की तरफ़ लपका. पी-येंग ने पूछा कहां जा रहे हो? मैंने जवाब दिया तुम जानते हो कि मैं गेंद खेल रहा था, मेरे हाथ गन्दे हैं, ऐसी सूरत में किताब पढ़ कर उस के पन्नों को मैला नहीं करना चाहता. क्या हम को पब्लिक जाइदाद की देख भाल करने की सीख नहीं दी गई?" आज हिन्दुस्तान में यह भाव कितने बड़ों के दिलों में है—क्यों? ख़ुद समाज ही इस का जवाब दे सकता है.

एक दूसरा बच्चा स्कूल मास्टर बनना चाहता है. उस के भावों का ज़रा अन्दाज़ा लगाइये :—

"कुछ दिनों की पढ़ाई के बाद मेरे शागिर्द लिखना सीखेंगे. वह लिखेंगे—एक, दो, तीन, चार .....कुत्ता, बिल्ली और कुछ दिनों के बाद वह यह जुम्ला जान जायंगे—ऐ मेरे प्यारे वतन मैं तुमसे मुहब्बत करता हूं. इसके बाद वह लिखेंगे—मैं इन्जीनियर बनना चाहता हूं. उस बीज की तरह जो माली बोता है वह जल्दी जल्दी बढ़ने लगेंगे और फिर अपने सारे गुनों के साथ हमारे देश की उपजाऊ ज़मीन में फूलेंगे. मेरे कुछ शागिर्द हवाबाज़ बन कर मातृ भूमि की सीमाओं की रक्षा करेंगे......कुछ डाक्टर बन कर जनता की तन्दुरुस्ती की रखवाली करेंगे और उनकी ज़िन्दगी को बढ़ाने की कोशिश करेंगे. मुझे उम्मीद है कि मेरे सारे शागिर्द अच्छे शहरी बनेंगे और वतन की बहादुरी से सेवा करेंगे

इन लेखों और नज़्मों को पढ़ कर चीन के इन्क़िलाब के असर का अन्दाज़ा होता है.

—अज़हर अन्सारी

چینی بچوں نے جتن کیا اور ساٹھ ہزار ین اکٹھا کر کے کوریا کے اناتھ بچوں کو بھیجا' اس سب کا ورنن بہت ہی منموہک ہے ۔

دیش پریم کا بھاؤ تو اس کتاب کے لگ بھگ ہر لیکھ میں پایا جاتا ہے۔ پبلک کی ملکیت کا وچار کس طرح سے بچوں میں کوٹ کوٹ کر بھرا ہے اسکی ایک مثال صفحہ 42 کے لیکھ میں دیکھئے:—

' پی-اینگ دوڑتا ہوا میرے پاس آیا ۔ اس نے کہا گیند مت کھیلو بلکہ اسکول لائبریری کے پڑھنے والے کمرے کی طرف چلو ۔ وہاں ابھی نئی تصویروں کی کتابیں آئی ہیں۔ جب میں اپنا نام لکھنے لگا تو میری نظر اپنے ہاتھوں پر پڑی ۔ میرے ہاتھ گندے اور پسینے میں تر تھے ۔ میں ہاتھ دھلانے والے کی طرف لپکا ۔ پی-ینگ نے پوچھا کہاں جا رہے ہو؟ میں نے جواب دیا تم جانتے ہو کہ میں گیند کھیل رہا تھا' میرے ہاتھ گندے ہیں' ایسی صورت میں کتاب پڑھکر اس کے پنوں کو میلا نہیں کرنا چاہتا ۔ کیا ہمکو پبلک جائداد کی دیکھ بھال کرنے کی سیکھ نہیں دی گئی ؟" آج ہندستان میں یہ بھاؤ کتنے بڑوں کے دلوں میں ہے—کیوں ؟ خود سماج ہی اس کا جواب دے سکتا ہے ۔

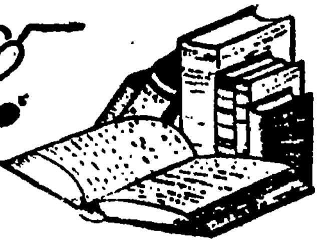
ایک دوسرا بچہ اسکول ماسٹر بننا چاہتا ہے ۔ اس کے بھاؤں کا ذرا اندازہ لگائیے :—

"کچھ دنوں کی پڑھائی کے بعد میرے شاگرد لکھنا سیکھیں گے۔ وہ لکھیں گے—ایک' دو' تین' چار...کتا—بلی اور کچھ دنوں بعد وہ یہ جملہ جان جائیں گے—اے میرے پیارے وطن میں تجھ سے محبت کرتا ہوں ۔ اس کے بعد وہ لکھیں گے—میں انجینئر بننا چاہتا ہوں ۔ اس بیج کی طرح جو مالی بوتا ہے وہ جلدی جلدی بڑھنے لگیں گے اور پھر اپنے سارے گنوں کے ساتھ ہمارے دیش کی اپجاؤ زمین میں پھولیں گے ۔ میرے کچھ شاگرد ہوا باز بنکر ماتربھومی کی سیماؤں کی رکشا کریں گے......کچھ ڈاکٹر بنکر جنتا کی تندرستی کی رکھوالی کریں گے اور انکی زندگی کو بڑھانے کی کوشش کریں گے۔ مجھے امید ہے کہ میرے سارے شاگرد اچھے شہری بنیں گے اور وطن کی بہادری سے سیوا کریں گے۔

ان لیکھوں اور نظموں کو پڑھکر چین کے انقلاب کے اثر کا اندازہ ہوتا ہے ۔

—اظہر انصاری

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

"नया चीन चीनी बच्चों की नज़र में"

लिखने वाले—बहुत से चीनी लड़के और लड़कियां जिनकी उम्र 12 साल से ले कर 16 साल है; निकालने वाले—फ़ॉरेन लैंग्वेजेज़ प्रेस, पेकिंग; लिखावट अंग्रेज़ी; सफ़े—73.

यह किताब चीनी बच्चों के लेखों और नज़्मों का संग्रह है. किताब को दो भागों में बांटा गया है—नसर और नज़्म (कविता). इस में 19 लेख हैं और छः कवितायें. लेखों में तरह तरह के विषयों पर लेख लिखे गये हैं—चेयरमैन माओ को फूलों का उपहार, मामा सैंग के नाम एक ख़त, पौधों का लगाना, तार में गने का आला, मज़दूरी का फल, माओत्से तुंग का दर्शन, तेन लिंग की पहाड़ियों की सैर, नया मकान, शहर को नये जीवन की देन, अपनी पसंद की किताबें, स्कूल को फुलवाड़ी बनाना, अपने हाथों अपने दोस्त, ठीक अमल, जन सेवी इंजीनियर, माओत्से तुंग का होनहार चेला.

नज़्मों का शीर्षक है—सुन्दर जीवन का तराना, पेकिंग लायब्रेरी का स्वागत, एक इच्छा, जन सेवी मास्टर बनना, धरती के ख़ज़ानों की खोज, कीमिया में माहिर बनने की उमंग, चीन की आज़ाद फ़ौज और सेना.

चीन के बच्चों के इस शाहकार में चार बातें बहुत साफ़ दिखाई पड़ती हैं—देशभक्ति, ज्ञान की अनथक खोज, तन्दुरुस्ती की देख-भाल और चेयरमैन माओ से प्रेम. इस किताब में देश प्रेम के साथ साथ अन्तर्राष्ट्रीय भाव, मेल और मुहब्बत के भाव भी कूट कूट कर भरे हैं. अन्तर्राष्ट्रीय बच्चों का दिल-बहलाने का जिस तरह से

"نیا چین چینی بچوں کی نظر میں"

لکھنے والے—بہت سے چینی لڑکے اور لڑکیاں جن کی عمر 12 سال سے لے کر 16 سال ہے؛ نکالنے والے—فارین لینگویج پریس، پیکنگ؛ لکھاوٹ انگریزی؛ صفحے 73 .

یہ کتاب چینی بچوں کے لیکھوں اور نظموں کا سنگرہ ہے . کتاب کو دو بھاگوں میں بانٹا گیا ہے—نثر اور نظم (کویتا) . اس میں 19 لیکھ ہیں اور چھ کویتائیں . لیکھوں میں طرح طرح کے وشیوں پر لیکھ لکھے گئے ہیں، چیرمین ماؤ کو پھولوں کا اپہار، ماما سینگ کے نام ایک خط، پودوں کا لگانا، تار میں گنے کا آلہ، مزدوری کا پھل، ماؤزے تنگ کا درشن، تین لنگ کی پہاڑیوں کی سیر، نیا مکان، شہر کو نئے جیون کی دین، اپنی پسند کی کتابیں، اسکول کو پھلواڑی بنانا، اپنے ہاتھ اپنے دوست، ٹھیک عمل، جن سیوی انجینیر، ماؤزے تنگ کا ہونہار چیلا .

نظموں کا شیرشک ہے—سندر جیون کا ترانہ، پیکنگ لائبریری کا سواگت، ایک اچھا، جن سیوی ماسٹر بننا، دھرتی کے خزانوں کی کھوج، کیمیا میں ماہر بننے کی امنگ، چین کی آزاد فوج اور سینا .

چین کے بچوں کے اس شاہکار میں چار باتیں بہت صاف دکھائی پڑتی ہیں—دیش بھکتی، گیان کی انتھک کھوج، تندرستی کی دیکھ بھال اور چیرمین ماؤ سے پریم . اس کتاب میں دیش پریم کے ساتھ ساتھ انتر راشٹریہ بھاؤ، میل اور محبت کے بھاؤ بھی کوٹ کوٹ کر بھرے ہیں . انتر راشٹریہ بچوں [illegible] ملانے کا جس طرح سے

चेकोस्लोवाक ओरियेन्टल इन्सटीट्यूट "आरक्यो ओरियेन्तालनी" नाम की एक पत्रिका निकालती है जिसमें वहां के उन लोगों को जो भारत की भाषाएं जानते हैं हिन्दी, बंगला और पंजाबी की बहुत ऊंचे दर्जे की जानकारी कराई जाती है और उसका प्रचार किया जाता है. दूसरे लोगों की ज़बानों की जानकारी से केवल यही फ़ायदा नहीं है कि उनसे हमारा अपना साहित्य मालामाल होता है बल्कि अलग अलग क़ौमों को एक दूसरे के नज़दीक लाने और उन्हें मित्रता के बंधनों में बांधने में भी इससे बहुत बड़ी मदद मिलती है. इस अन्तरक़ौमी मित्रता के लिये एक दूसरे की भाषाओं को सीखना और जानना ज़रूरी है. हिन्दुस्तान के लिये अब ज़रूरी है कि वह इस बात की तरफ़ ध्यान दे और दूसरे देशों के साथ कंधे से कंधा मिला कर इन्सानी बराबरी और एकता के इस मैदान में क़दम बढ़ाये.

हमें यह भी चाहिये कि होली, दीवाली और ईद जैसे मौक़े पर देश के अलग अलग हिस्सों में अलग अलग हिस्सों की कलचर और वहां की कला के एक साथ प्रदर्शन करें जिससे एक दूसरे की टिकनीक और तरीक़ों को समझ कर सब उन्नति कर सकें और मिल कर एक क़ौमी कलचर और क़ौमी कला को उभार कर सकें. इस तरह के प्रदर्शनों से आम लोगों का शौक़ बढ़ेगा. देश की कला फैलेगी और तरक़्क़ी करेगी, हमारे क़ौमी त्योहार में नई जान पड़ेगी और उनकी क़दर बढ़ेगी.

چیکوسلوواک اورینٹل انسٹیٹیوٹ "آرچیو اورینٹالنی" نام کی ایک پترکا نکالتی ہے جس میں وہاں کے ان لوگوں کو جو بھارت کی بھاشائیں سیکھتے ہیں ہندی، بانگلا اور پنجابی کی بہت اونچے درجے کی جانکاری کرائی جاتی ہے اور اس کا پرچار کیا جاتا ہے۔ دوسرے لوگوں کی زبانوں کی جانکاری سے کیول یہی فائدہ نہیں ہے کہ اس سے ہمارا اپنا ساہتیہ مالا مال ہوتا ہے بلکہ الگ الگ قوموں کو ایک دوسرے کے نزدیک لانے اور انہیں مترتا کے بندھنوں میں باندھنے میں اس سے بہت بڑی مدد ملتی ہے۔ اس انتر قومی مترتا کے لئے ایک دوسرے کی بھاشاؤں کو سیکھنا اور جاننا ضروری ہے۔ ہندوستان کے لئے اب ضروری ہے کہ وہ اس چیز کی طرف دھیان دے اور دوسرے دیشوں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر انسانی برابری اور ایکتا کے اس میدان میں قدم بڑھائے۔

ہمیں یہ بھی چاہیئے کہ ہولی، دیوالی اور عید جیسے موقعہ پر دیش کے الگ الگ حصوں میں الگ الگ حصوں کی کلچر اور وہاں کی کلا کے ایک ساتھ پردرشن کریں جس سے ایک دوسرے کی تکنیک اور طریقوں کو سمجھ کر سب انتی کر سکیں اور ملکر ایک قومی کلچر اور قومی کلا کو ابھار سکیں۔ اس طرح کے پردرشنوں سے عام لوگوں کا شوق بڑھے گا۔ دیش کی کلا پھیلے گی اور ترقی کریگی، ہمارے قومی تیوہاروں میں نئی جان پڑیگی اور انکی قدر بڑھیگی۔

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिन्सा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि—

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द', 1:6 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک—ڈاکٹر جے۔ سی۔ کمارپا۔

انوادک—سریش رام بھائی۔

اس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابری بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے۔

مہاتما گاندھی نے اس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ—

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد۔

हमारे यहां की कला थोड़े से लोगों की बपौती न रह जाए. वह केवल पेशावरों की चीज़ ही न रह जाए. ज़रूरत पड़ने पर वह पुराने ढांचों और पुराने सांचों को तोड़ कर ज़्यादा आज़ादी से उन्नत कर सके ताकि आगे आने वाली नसलों के दिल और दिमाग़ जिन नए आदर्शों को पसन्द करते हैं वह आदर्श हमारी कला के अंग बन सकें. हमारी कला अब उन बड़े दिल के और उन्नत शील लोगों के हाथों में जानी चाहिये जिनकी पसन्द ऊंची हो और जो आजकल की दुनिया की ऊंची से ऊंची कलचर को समझ सकें और अपने यहां की कलचर से उसका ताल मेल बैठा सकें. इस तरह हमारी कलचर और हमारी कला सच्चे मानों में क़ौमी और जानदार बन सकेगी और दुनिया के कलावन्तों और समझदार लोगों की निगाहों में चढ़ सकेगी.

देश की तरक़्क़ी के लिये कलचर और कला इतनी ज़रूरी चीज़ें हैं और दूसरे मुल्कों से एकता और मोहब्बत पैदा करने में उनसे इतनी बड़ी मदद मिल सकती है कि हमारी यूनिवर्सिटियों, स्कूलों और कालिजों की पढ़ाई में संस्कृति और कला को ख़ास जगह मिलनी चाहिये.

दूसरे देशों में तरक़्क़ी !

अपने यहां की कला को तरक़्क़ी देने के लिये हमें दूसरे देशों के कलचरी डेलीगेशन और अधिक जल्दी जल्दी अपने देश में बुलाने चाहियें और अपने यहां के डेलीगेशन दूसरे सभ्य देशों में भेजने चाहियें. हमें कितनी ख़ुशी हुई और इन्सानी भाई चारे की भावना ने हमारे अन्दर कितना ज़ोर किया जब सोवियत आज़र बाई जान के चोटी के कलावन्त रशीद बे-ऊतूब ने हमारे क़ौमी गीत गा कर सुनाए और मुकर्रम तुरगुन बेवा ने हमें उज़बक क़ौम का नाच, नाच कर दिखाया जो हमारे अपने यहां की कला से टेकनीक और मुद्राओं में बेहद मिलता जुलता था. हंगरी जैसे यूरोपी देशों की पोशाकें, उनके नाच और उनके शादी ब्याह के रीत रिवाज जो हमें कलचरी फ़िल्मों में देखने को मिलते हैं उनसे मालूम होता है कि हमारे यहां की कला और फ़ैशनों में और उनमें कितनी समानता है. उन्हें देख कर हमारी यह आम नासमझी दूर हो जाती है कि यूरोप वालों का समाजी जीवन हमारे समाजी जीवन से बिल्कुल एक अलग चीज़ है. हमारे बहुत से देशवासियों को यह ख़बर नहीं है कि हमारी ज़बान, हमारी कला और हमारी संस्कृति को सीखने के लिये दूसरे देश कितनी कितनी कोशिशें कर रहे हैं. अफ़ग़ानिस्तान, चीन, जरमनी, चेकोस्लोवाकिया और सोवियत रूस की यूनिवर्सिटियों में संस्कृत, हिन्दी, बंगला और पंजाबी पढ़ाई जा रही है. प्राग (Prague) की

ہمارے یہاں کی کلا تھوڑے سے لوگوں کی بپوتی نہ رہ جائے۔ وہ کیول پیشہ وروں کی چیز ہی نہ رہ جائے۔ ضرورت پڑنے پر وہ پرانے ڈھانچوں اور پرانے سانچوں کو توڑ کر زیادہ آزادی سے اُنتی کر سکے تاکہ آگے آنے والی نسلوں کے دل اور دماغ جن نئے آدرشوں کو پسند کرتے ہیں وہ آدرش ہماری کلا کے انگ بن سکیں۔ ہماری کلا اب اُن بڑے دل کے اور اُنتی شیل لوگوں کے ہاتھوں میں جانی چاہئے جنکی پسند اونچی ہو اور جو آجکل کی دنیا کی اونچی سے اونچی کلچر کو سمجھ سکیں اور اپنے یہاں کی کلچر سے اس کا تال میل بٹھا سکیں۔ اس طرح ہماری کلچر اور ہماری کلا سچے معنی میں قومی اور جاندار بن سکے گی اور دنیا کے کلاونتوں اور سمجھدار لوگوں کی نگاہوں میں چڑھ سکے گی۔

دیش کی ترقی کے لئے کلچر اور کلا اتنی ضروری چیزیں ہیں اور دوسرے ملکوں سے ایکتا اور محبت پیدا کرنے میں ان سے اتنی بڑی مدد مل سکتی ہے کہ ہماری یونیورسٹیوں، اسکولوں اور کالجوں کی پڑھائی میں سنسکرتی اور کلا کو خاص جگہ ملنی چاہئے۔

دوسرے دیشوں میں ترقی!

اپنے یہاں کی کلا کو ترقی دینے کے لئے ہمیں دوسرے دیشوں کے کلچری ڈیلیگیشن اور ادھک جلدی جلدی اپنے دیش میں بلانے چاہئیں اور اپنے یہاں کے ڈیلیگیشن دوسرے سبھیہ دیشوں میں بھیجنے چاہئیں۔ ہمیں کتنی خوشی ہوئی اور انسانی بھائی چارے کی بھاؤنا نے ہمارے اندر کتنا زور کیا جب سوویت آزر بائی جان کے چوٹی کے کلاونت رشید بہبودوف نے ہمارے قومی گیت گا کر سنائے اور مکرم ترگن بیوہ نے ہمیں ازبک قوم کا ناچ، ناچ کر دکھایا جو ہمارے اپنے یہاں کی کلا سے ٹکنیک اور مدراؤں میں بے حد ملتا جلتا تھا۔ ہنگری جیسے یورپی دیشوں کی پوشاکیں، ان کے ناچ اور ان کے شادی بیاہ کے ریت رواج جو ہمیں کلچری فلموں میں دیکھنے کو ملتے ہیں ان سے معلوم ہوتا ہے کہ ہمارے یہاں کی کلا اور فیشنوں میں اور ان میں کتنی سمانتا ہے۔ انہیں دیکھکر ہماری یہ عام ناسمجھی دور ہو جاتی ہے کہ یورپ والوں کا سماجی جیون ہمارے سماجی جیون سے بالکل ایک الگ چیز ہے۔ ہمارے بہت سے دیش واسیوں کو یہ خبر نہیں ہے کہ ہماری زبان، ہماری کلا اور ہماری سنسکرتی کو سیکھنے کے لئے دوسرے دیش کتنی کتنی کوششیں کر رہے ہیں۔ افغانستان، چین، جرمنی، چیکوسلوواکیا اور سوویت روس کی یونیورسٹیوں میں سنسکرت، ہندی، بنگلہ اور پنجابی پڑھائی جا رہی ہیں۔ پراگ (Prague) کی

ज़माने में बराबर बदलते और तरक़्क़ी करते हुए हमारी कला ने पहले की कला के साथ अपना नाता टूटने नहीं दिया. इसलिये उसकी उन्नति में शुरू से आख़ीर तक एक साफ़ सिलसिला दिखाई देता है. इसी से उसका क़ौमी रूप और उसकी अपनी विशेषता क़ायम रही है. अपनी कला की आगे की उन्नति में हमें इसी असूल और इसी सिलसिले को क़ायम रखना है. आजकल की साइन्स की नई ईजादों ने समय और जगह की दूरियों को बहुत दर्जे तक कम कर दिया है जिसकी वजह से दूर दूर के लोगों से मिलना जुलना अब बहुत आसान और आये दिन की बात हो गया है इसकी वजह से दुनिया भर के लोगों की समाजी निगाह में और सोचने के तरीक़ों में बहुत बड़ी तबदीली हो गई है. ख़ुद नेशनैलिज़्म या राष्ट्रीयता की कल्पना भी अब वह नहीं रही जो एक दो पीढ़ी पहले थी. बहुत सी ऐसी चीज़ें जिन्हें लोग पहले बड़ी क़ौमी अहमियत की समझते थे अब उतनी अहम नहीं समझी जातीं. दूसरे मुल्कों के लोगों और चीज़ों की तरफ़ लोगों के दिल अब पहले से बहुत उदार हो गये हैं. कल्चर और कला पर भी इसका गहरा असर पड़ा है. हर चीज़ में तबदीली ज़रूरी है और तबदीली का होना अच्छा भी है. भारत की सभ्यता इस बात के लिये सदा मशहूर रही है कि उसमें बाहर के लोगों और बाहर की चीज़ों को अपने में मिला लेने और समा लेने की ग़ज़ब की शक्ति है. इसलिये न हम ख़ुद नई नई चीज़ें खोजने और बनाने से बचते हैं और न नई अच्छी चीज़ें दूसरों से लेने में डरते हैं. हमारी अपनी कला और कल्चर की तरक़्क़ी में जो चीज़ भी मदद दे सकती हो उसे हम अपनाने को तैयार हैं, चाहे वह कहीं से भी आई हो. इसके यह मानी नहीं कि हम अपनी पुरानी कल्चर से नाता तोड़ लें. इसके मानी सिर्फ़ यह हैं कि हम अपना कल्चर और कला को तरक़्क़ी देने के लिये दूसरी क़ौमों की कल्चर और कला से फ़ायदा उठाने से कभी इन्कार नहीं करेंगे.

इस ज़माने की सब से बड़ी आवाज़ और सब से ज़बरदस्त मांग यह है कि सब इन्सानों की बराबरी के असूल को माना जावे और सब के लिये अमन चैन और इन्साफ़ की राहें खोली जायें. इन्सानी समाज जिस तरफ़ आगे को बढ़ रहा है उसमें पैदाइश, नसल, ख़ानदान, धर्म या धन दौलत के कारन किसी को किसी तरह के ख़ास अधिकार नहीं दिये जा सकते. अच्छी से अच्छी तालीम और जीवन के दूसरे सुख अब थोड़े से लोगों की बपौती या उनके इजारे की चीज़ नहीं रह गये हैं. हमारे देश को भी सब से पहली चीज़ यह करना है कि

زمانے میں برابر بدلتے اور ترقی کرتے ہوئے ہماری کلا نے پہلے کی کلا کے ساتھ اپنا ناتا ٹوٹنے نہیں دیا۔ اس لئے اسکی اُنّتی میں شروع سے آخیر تک ایک صاف سلسلہ دکھائی دیتا ہے۔ اسی سے اُس کا قومی روپ اور اسکی اپنی وشیشتا قائم رہی ہے۔ اپنی کلا کی آگے کی اُنّتی میں ہمیں اسی اصول اور اسی سلسلے کو قائم رکھنا ہے۔ آج کل کی سائنس کی نئی ایجادوں نے سمے اور جگہ کی دوریوں کو بہت درجے تک کم کردیا ہے جس کی وجہ سے دور دور کے لوگوں سے ملنا جلنا اب بہت آسان اور آئے دن کی چیز ہوگیا ہے۔ اسکی وجہ سے دنیا بھر کے لوگوں کی سماجی نگاہ میں اور سوچنے کے طریقوں میں بہت بڑی تبدیلی ہوگئی ہے۔ خود نیشنلزم یا راشٹریتا کی کلپنا بھی اب وہ نہیں رہی جو ایک دو پیڑھی پہلے تھی۔ بہت سی ایسی چیزیں جنہیں لوگ پہلے بڑی قومی اہمیت کی سمجھتے تھے اب اُتنی اہم نہیں سمجھی جاتیں۔ دوسرے ملکوں کے لوگوں اور چیزوں کی طرف لوگوں کے دل اب پہلے سے بہت ادار ہوگئے ہیں۔ کلچر اور کلا پر بھی اس کا گہرا اثر پڑا ہے۔ ہر چیز میں تبدیلی ضروری ہے اور تبدیلی کا ہونا اچھا بھی ہے۔ بھارت کی سبھیتا اس بات کے لئے سدا مشہور رہی ہے کہ اس میں باہر کی چیزوں کو اپنے میں ملا لینے اور سما لینے کی غضب کی شکتی ہے۔ اس لئے نہ ہم خود نئی نئی چیزیں کھوجنے اور بنانے سے بچتے ہیں اور نہ نئی اچھی چیزیں دوسروں سے لینے میں ڈرتے ہیں۔ ہماری اپنی کلا اور کلچر کی ترقی میں جو چیز بھی مدد دے سکتی ہو اسے ہم اپنانے کو تیار ہیں' چاہے وہ کہیں سے بھی آئی ہو۔ اس کے یہ معنی نہیں کہ ہم اپنی پرانی کلچر سے ناتا توڑ لیں۔ اس کے معنی صرف یہ ہیں کہ ہم اپنی کلچر اور کلا کو ترقی دینے کے لئے دوسری قوموں کی کلچر اور کلا سے فائدہ اٹھانے سے کبھی انکار نہیں کرینگے۔

اس زمانے کی سب سے بڑی آواز اور سب سے زبردست مانگ یہ ہے کہ سب انسانوں کی برابری کے اصول کو مانا جاوے اور سب کے لئے امن چین اور انصاف کی راہیں کھولی جائیں۔ انسانی سماج جس طرف آگے کو بڑھ رہا ہے اس میں پیدائش' نسل' خاندان' دھرم' یا دھن دولت کے کارن کسی کو کسی طرح کے خاص ادھیکار نہیں دیئے جاسکتے۔ اچھی سے اچھی تعلیم اور جیون کے دوسرے سکھ اب تھوڑے سے لوگوں کی بپوتی یا ان کے اجارے کی چیز نہیں رہ گئے ہیں۔ ہمارے دیش کو بھی سب سے پہلی چیز یہ کرنی ہے کہ

कलचर और आर्ट किसी एक क़ौम या मुल्क की बपौती नहीं होते. वह चाहे किसी मुल्क के हों सारी दुनिया की चीज़ हैं. इसमें भी शक नहीं कि दुनिया अलग अलग मुल्कों और अलग अलग क़ौमों की कलचर से ऊपर उठकर एक जग कलचर यानी इन्सानी कलचर की तरफ़ जा रही है. फिर भी इसमें भी संदेह नहीं कि हर मुल्क की कलचर अपना एक अलग रंग रखती है. हिन्दुस्तान की कलचर को और हिन्दुस्तान की कला को अगर सच्चा, अच्छा, सुन्दर और काम का बनना है तो उन्हें क़ौमी यानी हिन्दुस्तानी होना होगा. हम अपनी कलचर और कला को अपने प्राचीन आदर्शों से अलग नहीं कर सकते हमारे आजकल के कलावन्तों को यह समझ लेना चाहिये कि अगर उन का देश के पुराने कला आदर्शों से कोई सम्बन्ध नहीं रहता तो उनका कोई भविष्य भी नहीं बन सकता. कलावन्त जिस घटना को अपनी कला में दिखाना चाहता है उसकी सच्ची तस्वीर पहले कलावन्त की आंखों के सामने होनी चाहिये और फिर उसकी कला में ज़ाहिर होनी चाहिये यह सच्चाई और हक़ीक़त पसन्दी ही कला की जान होती है. हमारी कला न केवल ऐसी होनी चाहिये जिसे हिन्दुस्तानी दिमाग़ अच्छी तरह समझ सके बल्कि ऐसी भी होनी चाहिये जो हमारे अन्दर और सब देखने वालों के अन्दर ऊंचे से ऊंचे और पाक से पाक इख़लाक़ी और रूहानी जज़्बों को पैदा करे और उभारे. जिस कला में यह गुन नहीं है वह कला हिन्दुस्तानी कला आदर्श को नहीं पहुंचती. कला से दिल का ख़ुश होना, आदमी को आनन्द आना ज़रूरी और क़ुदरती है. लेकिन ख़ुशी या आनन्द का मतलब गिरी हुई काम वासनाओं का उभरना नहीं होता. इस तरह की वासनाएं कला को क़ुदरती रूप देने के बजाय उसे बिगाड़ती हैं और सुन्दर करने के बजाय भौंडा बनाती हैं. जो सीन आंखों को झेंपा दे या जो आवाज़ कानों में पड़ कर आदमी को शर्मा दे वह न सुन्दर है और न आकर्षक. कला में सब से बड़ा गुन यही होना चाहिये कि वह आदमी के अन्दर के ऊंचे से ऊंचे और पाक से पाक जज़्बों को उभारे और इस तरह आत्मा को सच्चा सुख और सच्ची सुन्दरता प्रदान करे.

हमारी कला की उन्नति कैसे हो!

दुनिया के दूसरे देशों की कला की तरह हमारे देश की कला में भी बढ़ने और उन्नति करने की अनन्त शक्ति [illegible]. बहुत प्राचीन ज़माने से ले कर मुग़ल ज़माने तक [illegible]मारे यहां की कला बराबर उन्नति करती रही है. उसके [illegible]स विकास की अलग अलग सूरतें अलग अलग ज़मानों में हमें साफ़ देखने को मिलती हैं. साथ ही इस सारे

کلچر اور آرٹ کسی ایک قوم یا ملک کی بپوتی نہیں ہوتے . وہ چاہے کسی ملک کے ہوں ساری دنیا کی چیز ہیں . اِس میں بھی شک نہیں کہ دنیا الگ الگ ملکوں اور الگ الگ قوموں کی کلچر سے اوپر اٹھکر ایک جگ کلچر یعنی اِنسانی کلچر کی طرف جا رہی ہے . پھر بھی اس میں بھی سندیہ نہیں کہ ہر ملک کی کلچر اپنا ایک الگ رنگ رکھتی ہے . ہندوستان کی کلچر کو اور ہندوستان کی کلا کو اگر سچا، اچھا، سندر اور کام کا بننا ہے تو اُنہیں قومی یعنی ہندوستانی ہونا ہوگا . ہم اپنی کلچر اور کلا کو اپنے پراچین اِتہاس اور پراچین آدرشوں سے الگ نہیں کر سکتے. ہمارے آجکل کے کلاونتوں کو یہ سمجھ لینا چاہئیے کہ اگر ان کا دیش کے پرانے کلا آدرشوں سے کوئی سمبندھ نہیں رہتا تو اُن کا کوئی بھوشیہ بھی نہیں بن سکتا. کلاونت جس گھٹنا کو اپنی کلا میں دکھانا چاہتا ہے اُس کی سچی تصویر پہلے کلاونت کی آنکھوں کے سامنے ہونی چاہیئے اور پھر اُس کی کلا میں ظاہر ہونی چاہیئے . یہ سچائی اور حقیقت پسندی ہی کلا کی جان ہوتی ہے . ہماری کلا نہ کیول ایسی ہونی چاہیئے جسے ہندوستانی دماغ اچھی طرح سمجھ سکے بلکہ ایسی بھی ہونی چاہیئے جو ہمارے اندر اور سب دیکھنے والوں کے اندر اونچے سے اونچے اور پاک سے پاک اخلاقی اور روحانی جذبوں کو پیدا کرے اور اُبھارے . جس کلا میں یہ گن نہیں ہے وہ کلا ہندوستانی کلا آدرش کو نہیں پہونچتی. کلا سے دل کا خوش ہونا، آدمی کو آنند آنا ضروری اور قدرتی ہے. لیکن خوشی یا آنند کا مطلب گری ہوئی کام واسناؤں کو اُبھارنا نہیں ہوتا . اِس طرح کی واسنائیں کلا کو قدرتی روپ دینے کے بجائے اُسے بگاڑتی ہیں اور سندر کرنے کے بجائے بھونڈا بناتی ہیں . جو سین آنکھوں کو جھینپوا دے یا جو آواز کانوں میں پڑ کر آدمی کو شرما دے وہ نہ سندر ہے اور نہ آکرشک . کلا میں سب سے بڑا گن یہی ہونا چاہیئے کہ وہ آدمی کے اندر کے اونچے سے اونچے اور پاک سے پاک جذبوں کو اُبھارے اور اِس طرح آتما کو سچا سکھ اور سچی سندرتا پردان کرے .

ہماری کلا کی اُنتی کیسے ہو!

دنیا کے دوسرے دیشوں کی کلا کی طرح ہمارے دیش کی کلا میں بھی بڑھنے اور اُنتی کرنے کی اننت شکتی ہے. بہت پراچین زمانے سے لیکر مغل زمانے تک ہمارے یہاں کی کلا برابر اُنتی کرتی رہی ہے . اس کے اِس وکاس کی الگ الگ صورتیں الگ الگ زمانوں میں ہمیں صاف دیکھنے کو ملتی ہیں . ساتھ ہی اِس سارے

कृष्ण का नाच बहुत ही कमाल का था. बांसुरी की सुरीली आवाज नाचने वाली सखियों पर जो गहरा और पवित्र असर डालती हुई मालूम होती थी उस से देखने वालों को भी कृष्ण के बचपन की सारी कहानी याद आ जाती थी. कृष्ण भगती और फिर कृष्ण भगतनें सब पर उस कला का एक गहरा असर था. हमें इस बात पर अभिमान होना चाहिये कि इस तरह की कला और इस तरह के कलावन्त हमारे देश में अभी तक मौजूद हैं. मनीपुर की कला में केवल बहैसियत कला के वह शक्ति है जिसके जरिये हम दुनिया के दूसरे देशों के साथ अपनी दोस्ती को गहरा, सच्चा और सब के लिये सुख और बरकत की चीज बना सकते हैं.

आजकल के आर्ट की गिरावट !

लेकिन जब इस से हट कर उस संगीत और उन नाच गानों की तरफ निगाह डालते हैं जो आजकल के फिल्मों और ड्रामों में देखने को मिलता है और जो अधिकतर ग्रामोफोन रेकार्ड्स में सुनाई देता है तो दिल को सख्त तकलीफ होती है. पीतल के बैन्ड बाजों की करख्त और चीखती हुई आवाजें सारंगी के नरम सुरों और तबले की तान के साथ मिल कर हिन्दुस्तानी रागों में ढलने की कोशिश करती हुई इतनी बेसुरी और भौंडी लगती हैं कि मालूम होता है कि हम अपने पिछले जमाने के कला आदर्शों से कितने दूर चले गये और कितने नीचे गिर गए. फिल्मी नाचों में इन्सान के गन्दे से गन्दे जजबों को उभारने वाली हरकतें, बेसुरे राग और चारों तरफ का साज सामान देख कर कोई भी आदमी, जिसे देश की कला से थोड़ी बहुत भी मोहब्बत हो, कांप उठता है और महसूस करता है कि इस तरह की कला इन्सानी कलचर के लिये बजाय अभिमान की चीज होने के एक कलंक है.

चित्रकला यानी मुसव्वरी में भी हमारा आजकल का बाजारी आर्ट बराबर गिरता और बिगड़ता जा रहा है. आजकल की फ़ैशनएबिल साड़ी पहने हुए शकुन्तला फर्श पर लम्बी लेटी हुई और पत्तों पर प्रेम पत्र लिखती हुई, सीने उभरे हुए अपटुडेट फ़ैशन में जवान औरतें पूरे जवान बालिग और पहलवान दिखाई देने वाले कृष्ण के साथ गाती और नाचती हुईं, गुरु नानक और गुरु गोविन्द सिंह की तस्वीरें किसी विदेशी यहूदी सन्त की शकल में, देख के तबियत घबराने लगती है. जिस किसी के दिल में अपने इन महापुरुषों के लिये सच्ची श्रद्धा और भगती है उसके दिल को इन तस्वीरों से चोट लगती है. इस तरह की तस्वीरें न असलियत के मुताबिक होती हैं और न उस जमाने के रहन सहन को हमारे सामने पेश करती हैं.

کرشن کا ناچ بہت ہی کمال کا تھا ۔ بانسری کی سریلی آواز ناچنے والی سکھیوں پر جو گہرا اور پوتر اثر ڈالتی ہوئی معلوم ہوتی تھی اُس سے دیکھنے والوں کو بھی کرشن کے بچپن کی ساری کہانی یاد آ جاتی تھی۔ کرشن بھگتی اور پھر کرشن بھگتیں سب پر اُس کلا کا ایک گہرا اثر تھا ۔ ہمیں اِس بات پر ابھیمان ہونا چاہیئے کہ اِس طرح کی کلا اور اِس طرح کے کلاونت ہمارے دیش میں ابھی تک موجود ہیں ۔ منی پور کی کلا میں کیول حیثیت کلا کے وہ شکتی ہے جس کے ذریعہ ہم دنیا کے دوسرے دیشوں کے ساتھ اپنی دوستی کو گہرا، سچا اور سب کے لئے سکھ اور برکت کی چیز بنا سکتے ہیں ۔

آجکل کے آرٹ کی گراوٹ!

لیکن جب ہم اس سے ہٹ کر سنگیت اور اُن ناچ گانوں کی طرف نگاہ ڈالتے ہیں جو آجکل کے فلموں اور ڈراموں میں دیکھنے کو ملتا ہے اور جو ادھکتر گراموفون ریکارڈس میں سنائی دیتا ہے تو دل کو سخت تکلیف ہوتی ہے ۔ پیتل کے بینڈ باجوں کی کرخت اور چیختی ہوئی آوازیں سارنگی کے نرم سروں اور تبلے کی تان کے ساتھ مل کر ہندوستانی راگوں میں ڈھلنے کی کوشش کرتی ہوئی اتنی بےسری اور بھونڈی لگتی ہیں کہ معلوم ہوتا ہے کہ ہم اپنے پچھلے زمانے کے کلا آدرشوں سے کتنے دور چلے گئے اور کتنے نیچے گر گئے ۔ فلمی ناچوں میں انسان کے گندے سے گندے جذبوں کو اُبھارنے والی حرکتیں، بےسرے راگ اور چاروں طرف کا ساز سامان دیکھکر کوئی بھی آدمی، جسے دیش کی کلا سے تھوڑی بہت بھی محبت ہو کانپ اُٹھتا ہے اور محسوس کرتا ہے کہ اس طرح کی کلا انسانی کلچر کے لئے بجائے ابھیمان کی چیز ہونے کے ایک کلنک ہے ۔

چترکلا یعنی مصوری میں بھی ہمارا آجکل کا بازاری آرٹ برابر گرتا اور بگڑتا جا رہا ہے ۔ آجکل کی فیشن ایبل ساری پہنے ہوئے شکنتلا فرش پر لمبی لیٹی ہوئی اور پتوں پر پریم پتر لکھتی ہوئی، سینے اُبھرے ہوئے اپٹوڈیٹ فیشن میں جوان عورتیں پورے جوان بالغ اور پہلوان دکھائی دینے والے کرشن کے ساتھ گاتی اور ناچتی ہوئیں، گرو نانک اور گرو گوبند سنگھ کی تصویریں کسی ودیشی یہودی سنت کی شکل میں، دیکھ کے طبیعت گھبرانے لگتی ہے۔ جس کسی کے دل میں اپنے ان مہاپرشوں کے لئے سچی شردھا اور بھگتی ہے اُس کے دل کو ان تصویروں سے چوٹ لگتی ہے ۔ اس طرح کی تصویریں نہ اصلیت کے مطابق ہوتی ہیں اور نہ اُس زمانے کے رہن سہن کو ہمارے سامنے پیش کرتی ہیں ۔

कोई चीज़ थी और न कोई ऐसा पहलू था जिसकी वजह से कोई बाप अपनी जवान औलाद को वहां भेजने से झिझके. मालूम होता है यूरोप और अमरीका के आर्ट में भी अब कुछ तब्दीली हो रही है वहां के मुल्कों की जो कलचरी फ़िल्में हमें पिछले साल देखने को मिलीं वह काफ़ी अच्छी और ऊंचे दर्जे की थीं.

दुनिया के दूसरे देशों के साथ कलचरी मेल जोल बढ़ाने के लिये हमारे देश में जो कुछ किया जा रहा है उससे यह पता चलता है कि इस तरह के दोस्ताना संबंध से धरती की अलग अलग क़ौमों के बीच प्रेम और एकता बढ़ाने में कितनी बड़ी मदद मिल सकती है. आर्ट, कला या कलचर एक बहुत बड़ी तामीरी शक्ति है जिसके ज़रिये हम बहुत सी उन पेचीदा गुत्थियों को सुलझा सकते हैं जिन्होंने आज क़ौमों क़ौमों के बीच नफ़रतों की दीवारें खड़ी कर रक्खी हैं. अच्छी फ़िल्म की तस्वीरें, अच्छा संगीत और ऊंचा साहित्य हमारे दिलों और दिमाग़ों पर गहरा असर पैदा करते हैं और आपसी मोहब्बत, इन्सानी हमदर्दी और इन्सानी एकता के उन ऊंचे जज़्बों को हमारे अन्दर जगाते हैं जो मामूली तौर पर सोये रहते हैं. आर्ट और कलचर को अगर ठीक ठीक तरक़्क़ी दी जाए और जीवन के साथ उसका ताल मेल पैदा किया जाये तो उससे आदमी आदमी और क़ौम क़ौम के बीच एकता और प्रेम, दोस्ती और भाईचारा बढ़ेंगे और वह सब दीवारें टूटेंगी जो लालच, नफ़रत, झूटे घमन्ड और तास्सुबों ने हमारे बीच में खड़ी कर दी हैं.

मनीपुरी नाच और संगीत !

इन जल्सों में ही यह बात भी देखने में आई कि हिन्दुस्तान आर्ट और कला में दूसरों से बहुत पीछे नहीं है. जिन लोगों ने मनीपुर के कलावन्तों का नाच देखा और उनके तरह तरह के बाजों को सुना उन्हें यह देख कर अचरज हुआ कि इस देश के उस पुराने और दूर के कोने में आर्ट कितनी ज़बरदस्त तरक़्क़ी कर चुका है. मनीपुरी नाच की फुर्ती, नाचने वालों के भाव भाव, आदमी के दिल के तरह तरह के जज़्बों को ज़ाहिर करने के उनके ढंग और अपने सुन्दर और मुश्किल बाजों के ऊपर उनकी उंगलियों की बिजली की सी चाल यह बता रही थी कि मनीपुर की यह कलाएं किसी देश की कलाओं से पीछे नहीं हैं. कई बातों में मनीपुर का यह आर्ट यूरोप के अपने मुक़ाबिले के आर्ट से ऊंचा दिखाई दिया. उनके मृदंग बजाने को देख कर तो लोगों पर एक सक्ते का आलम तारी था. मृदंग पर चलने वाली बारीक बारीक उंगलियों, नाचने वालों के पैरों और बाक़ी संगीत में जो ताल मेल था वह देखते ही बनता था. देखने वालों पर उसका असर था. ख़ासकर राधा

کوئی چیز تھی اور نہ کوئی ایسا پہلو تھا جس کی وجہ سے کوئی باپ اپنی جوان اولاد کو وہاں بھیجنے سے جھجکے۔ معلوم ہوتا ہے یورپ اور امریکہ کے آرٹ میں بھی اب کچھ تبدیلی ہو رہی ہے۔ وہاں کے ملکوں کی جو کلچری فلمیں ہمیں پچھلے سال دیکھنے کو ملیں وہ کافی اچھی اور اونچے درجے کی تھیں۔

دنیا کے دوسرے دیشوں کے ساتھ کلچری میل جول بڑھانے کے لئے ہمارے دیش میں جو کچھ کیا جا رہا ہے اس سے یہ پتہ چلتا ہے کہ اس طرح کے دوستانہ سمبندھ سے دھرتی کی الگ الگ قوموں کے بیچ پریم اور ایکتا بڑھانے میں کتنی بڑی مدد مل سکتی ہے۔ آرٹ، کلا یا کلچر ایک بہت بڑی تعمیری شکتی ہے جس کے ذریعہ ہم بہت سی ان پیچیدہ گتھیوں کو سلجھا سکتے ہیں جنہوں نے آج قوموں قوموں کے بیچ نفرتوں کی دیواریں کھڑی کر رکھی ہیں۔ اچھی قسم کی تصویریں، اچھا سنگیت اور اونچا ساہتیہ ہمارے دلوں اور دماغوں پر گہرا اثر پیدا کرتے ہیں اور آپسی محبت، انسانی ہمدردی اور انسانی ایکتا کے ان اونچے جذبوں کو ہمارے اندر جگاتے ہیں جو معمولی طور پر سوئے رہتے ہیں۔ آرٹ اور کلچر کو اگر ٹھیک ٹھیک ترقی دی جائے اور جیون کے ساتھ اس کا تال میل پیدا کیا جائے تو اس سے آدمی آدمی اور قوم قوم کے بیچ ایکتا اور پریم، دوستی اور بھائی چارا بڑھینگے اور وہ سب دیواریں ٹوٹینگی جو لالچ، نفرت، جھوٹے گھمنڈ اور تعصبوں نے ہمارے بیچ میں کھڑی کر دی ہیں۔

منی پوری ناچ اور سنگیت!

ان جلسوں میں ہی یہ بات بھی دیکھنے میں آئی کہ ہندوستان آرٹ اور کلا میں دوسروں سے بہت پیچھے نہیں ہے۔ جن لوگوں نے منی پور کے کلاونتوں کا ناچ دیکھا اور ان کے طرح طرح کے باجوں کو سنا انہیں یہ دیکھکر اچرج ہوا کہ اس دیش کے اس پرانے اور دور کے کونے میں آرٹ کتنی زبردست ترقی کر چکا ہے۔ منی پوری ناچ کی پھرتی، ناچنے والوں کے ہاو بھاو، آدمی کے دل کے طرح طرح کے جذبوں کو ظاہر کرنے کے ان کے ڈھنگ اور اپنے سندر اور مشکل باجوں کے اوپر ان کی انگلیوں کی بجلی کی سی چال یہ بتا رہی تھی کہ منی پور کی یہ کلائیں کسی دیش کی کلاؤں سے پیچھے نہیں ہیں۔ کئی باتوں میں منی پور کا یہ آرٹ یورپ کے اپنے مقابلے کے آرٹ سے اونچا دکھائی دیا۔ ان کے مردنگ بجانے کو دیکھکر تو لوگوں پر ایک سکتے کا عالم طاری تھا۔ مردنگ پر چلنے والی باریک باریک انگلیوں، ناچنے والوں کے پیروں اور باقی سنگیت میں جو تال میل تھا وہ دیکھتے ہی بنتا تھا۔ سب دیکھنے والوں پر اس کا اثر تھا۔ خاص کر رادھا

तख्तियां संभालो. मैं तुम जैसे लोगों के कारन किसान सभा को मिट्टी में मिलते नहीं देख सकता.

यिन—आज इन्हें हो क्या गया है ? बिना झगड़ा किये जबान ही नहीं खोलते हैं. यह अकेले में भी खुद अपने ही से झगड़ सकते हैं. चलो मा से कहें कि हमारी तख्तियां लिख दें.

[एक किसान आता है]

किसान—कमान फ़ान, मेरा ख्याल था कि आप जा चुके हैं. मैं बड़ी देर से आप को खोज रहा था.

फ़ान—क्यों ? क्या काम है ?

किसान—यह काम अध्यक्ष लियू के बारे में है.

फ़ान—उनके बारे में क्या है ?

किसान—लियू-मा ने उन्हें खाना भेजा था और अभी की सभा के बारे में सब कुछ बताया था. यह सुन कर उन्होंने अपनी तीलियां और कटोरा उठा कर फेंक दिया. उन्होंने एक प्याला खिचड़ी भी नहीं खाई वह चाहते थे कि आप को ढूंढ निकालूं.

(सिलसिले के लिये अगला अंक देखिये)

تختیاں سنبھالو . میں تم لوگوں کے کارن کسان سبھا کو مٹی میں ملتے نہیں دیکھ سکتا .

ایں—آج انہیں ہو کیا گیا ہے ؟ بنا جھگڑا کئے زبان ہی نہیں کھولتے ہیں . یہ اکیلے میں بھی خود اپنے ہی سے جھگڑ سکتے ہیں . چلو ما سے کہیں کہ ہماری تختیاں لکھ دیں .

[ایک کسان آتا ہے]

کسان—کمان فان ، میرا خیال تھا کہ آپ جا چکے ہیں . میں بڑی دیر سے آپکو کھوج رہا تھا .

فان—کیوں ؟ کیا کام ہے ؟

کسان—یہ کام ادھیکش لیو کے بارے میں ہے .

فان—اُن کے بارے میں کیا ہے ؟

کسان—لیو ما نے اُنہیں کھانا بھیجا تھا اور ابھی کی سبھا کے بارے میں سب کچھ بتایا تھا . یہ سنکر اُنہوں نے اپنی تیلیاں اور کٹورا اُٹھاکر پھینک دیا . اُنہوں نے ایک پیالہ کھچڑی بھی نہیں کھائی . وہ چاہتے تھے کہ آپ کو ڈھونڈھ نکالوں .

(سلسلے کے لئے اگلا انک دیکھیئے)

आर्ट और कल्चर—देसी और विदेसी

(लाला हनुवंत सहाय—देहली)

इस साल आज़ादी के दिन दिल्ली में जो जलसे हुए उन में हिन्दुस्तान और रूस के कलाकारों का गाना बजाना सुनने और दोनों देशों के नाच देखने का लोगों को बहुत अच्छा मौक़ा मिला. सोवियत रूस की उन कलाओं में पूरबी और पच्छिमी कला का एक बड़ा सुन्दर संगम दिखाई देता था. मालूम होता था कि रूस के अन्दर एशिया और यूरोप के कला आदर्श किस तरह एक दूसरे के नज़दीक आ रहे हैं और एक दूसरे में समाते जा रहे हैं. जिन लोगों ने नए रूस के उस कला प्रदर्शन को देखा उन सब ने यह भी महसूस किया कि आजकल का रूसी आर्ट उन सब गिरावटों, गन्दगियों और उस भोंडेपन से पाक है जो अंगरेज़ी राज के ज़माने में हमें अधिकतर यूरोपी और अमरीकी फ़िल्मों और थियेटरों में देखने को मिलता था. न उस में देखने वालों की काम वासनाओं को उभारने और उन्हें तरह तरह के जुर्म करने के तरीक़े सिखाने वाली

آرٹ اور کلچر—دیسی اور ودیسی

(لالہ ہنونت سہائے—دہلی)

اِس سال آزادی کے دن دلی میں جو جلسے ہوئے اُن میں ہندستان اور روس کے کلا کاروں کا گانا بجانا سننے اور دونوں دیشوں کے ناچ دیکھنے کا لوگوں کو بہت اچھا موقع ملا . سوویت روس کی ان کلاؤں میں پوربی اور پچھمی کلا کا ایک بڑا سندر سنگم دکھائی دیتا تھا . معلوم ہوتا تھا کہ روس کے اندر ایشیا اور یورپ کے کلا آدرش کس طرح ایک دوسرے کے نزدیک آ رہے ہیں اور ایک دوسرے میں سماتے جا رہے ہیں . جن لوگوں نے نئے روس کے اُس کلا پردرشن کو دیکھا اُن سب نے یہ بھی محسوس کیا کہ آج کل کا روسی آرٹ اُن سب گراوٹوں گندگیوں اور اُس بھونڈے پن سے پاک ہے جو انگریزی راج کے زمانے میں ہمیں ادھکتر یورپی اور امریکی فلمیں اور تھیٹروں میں دیکھنے کو ملتا تھا . نہ اُس میں دیکھنے والوں کی کام واسناؤں کو اُبھارنے اور اُنہیں طرح طرح کے جرم کرنے کے طریقے سکھانے والی

वांग—अपनी तख्तियों पर नाम लिखाने के लिये.

फ़ान—ज़रा मुझे भी तो दिखाओ.

चिन—(तख्ती को फ़ान के हाथ में देते हुये) क्या ठीक बनी है ?

फ़ान—इसे तुमने किस काम के लिये बनवाया है ? कर पहरा दो. एक आदमी पूरब के फाटक पर और सरा पच्छिम के.

वांग और चिंग—आज रात हमारी ड्यूटी नहीं है.

फ़ान—तो बेहतर होगा कि घर जा कर सो रहो. तुम गों ने यह तख्तियां क्यों बनवाई हैं ?

चिन—हम लोगों से सभा में यही कहा गया था.

येंग—अध्यक्ष वांग ने ही तो कहा था.

फ़ान—कौन अध्यक्ष वांग ? हमारी किसान सभा 76 मेम्बर हैं. मीटिंग में दस से ज्यादा नहीं उपस्थित और उनमें से आधे से ज्यादा ने वोट भी नहीं दिया I. फिर वह कैसे अध्यक्ष हो गया ?

चिन—लेकिन लियू-चेन-तुंग तो दोषी साबित हुआ :.

फ़ान—होशियार रहना. कहीं कोई चाल न खेली जा ा हो.

चिन—चाल कौन खेलना चाहेगा ?

फ़ान—भूके शेर की तरह शिकार देखते ही तुम टूट ते हो और इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करते कि ई जाल तो नहीं बिछा है.

येंग—यदि सुन ज़मीन देगा तो हम लोग ले लेंगे, ों तो कोई बात नहीं है. हम लोग कुछ खोते तो हैं नहीं. र इसे जाल और फरेब कह भी कैसे सकते हो ?

फ़ान—(नाराज़ होते हुये) मुझे बताओ, सुन कैसा ादमी है ? क्या वह बेइमान और चालबाज़ नहीं है ?

चिन—हम उसे अच्छा आदमी तो कह नहीं सकते. केन चाऊ-वान-कैंग से तो ज्यादा ही अच्छा है.

फ़ान—(येंग से) मेरी बातों का उत्तर दो.

येंग—ऐसा लगता है जैसे वह नये विचार अपना ा है.

फ़ान—तो तुम भी अब सुन के ही आदमी हो गये ? यदि तुम्हारे जैसे आदमी किसान सभा में रहे तो र वह चल चुकी. तुम लोगों को निकाल बाहर करना री हो गया है.

येंग और चिन—आप को इतना कठोर नहीं होना हिये.

फ़ान—यदि तुम लोगों को निकाला नहीं जाता तो र भर का नुकसान होगा. (तख्तियां लौटाते हुये) अपनी

وانگ—اپنی تختیوں پر نام لکھانے کے لئے .

فان—ذرا مجھے بھی تو دکھاؤ .

چن—(تختی کو فان کے ہاتھ میں دیتے ہوئے) کیا یہ ٹھیک بنی ہے ؟

فان—اسے تم نے کس کام کے لئے بنوایا ہے ؟ جاکر پہرا دو . ایک آدمی پورب کے پھاٹک پر اور دوسرا پچھم کے .

وانگ اور ینگ—آج رات ہماری ڈیوٹی نہیں ہے .

فان—تو بہتر ہوگا کہ جاکر سو رہو . تم لوگوں نے یہ تختیاں کیوں بنوائی ہیں ؟

چن—ہم لوگوں سے سبھا میں یہی کہا گیا تھا .

ینگ—ادھیکش وانگ نے ہی تو کہا تھا .

فان—کون ادھیکش وانگ ؟ ہماری کسان سبھا میں 76 ممبر ہیں . میٹنگ میں دس سے زیادہ نہیں اپستھت تھے اور ان میں سے آدھے سے زیادہ نے ووٹ بھی نہیں دیا تھا . پھر وہ کیسے ادھیکش ہوگیا ؟

چن—لیکن لیو - چین - تنگ تو دوشی ثابت ہوا تھا .

فان—ہوشیار رہنا . کہیں کوئی چال نہ کھیلی جا رہی ہو .

چن—چال کون کھیلنا چاہے گا ؟

فان—بھوکے شیر کی طرح شکار دیکھتے ہی تم ٹوٹ پڑتے ہو اور اس کی تنک بھی چنتا نہیں کرتے کہ کوئی جال تو نہیں بچھا ہے .

ینگ—یدی سن زمین دے گا تو ہم لوگ لے لیں گے نہیں تو کوئی بات نہیں ہے . ہم لوگ کچھ کھوتے تو ہیں نہیں . تم اسے جال اور فریب کہہ بھی کیسے سکتے ہو ؟

فان—(ناراض ہوتے ہوئے) مجھے بتاؤ سن کیسا آدمی ہے ؟ کیا وہ بےایمان اور چالباز نہیں ہے ؟

چن—ہم اسے اچھا آدمی تو کہہ نہیں سکتے لیکن چاؤ - وان - کینگ سے تو زیادہ ہی اچھا ہے .

فان—(ینگ سے) میری باتوں کا اتر دو .

ینگ—ایسا لگتا ہے جیسے وہ نئے وچار اپنا رہا ہے .

فان—تو تم بھی اب سن کے ہی آدمی ہوگئے ہو ؟ یدی تمہارے جیسے آدمی کسان سبھا میں رہے تو پھر وہ چل چکی . تم لوگوں کو نکال باہر کرنا ضروری ہوگیا ہے .

ینگ اور چن—آپ کو اتنا کٹھور نہیں ہونا چاہیئے .

فان—یدی تم لوگوں کو نکالا نہیں جاتا تو گاؤں بھر کا نقصان ہوگا (تختیاں لوٹاتے ہوئے) اپنی

सुन—कोई आ रहा है ! कौन हो सकता है ?

[चिमनी के पीछे छुप जाता है]

मा—यह तो फ़ान-यंग जैसा दीख रहा है. तुम जल्दी ही चले जाओ तो अच्छा रहेगा.

सुन—इससे कह कर कुछ ज़्यादा सन्त्री बिठलवा लो और इशारे वाला शब्द भी बदल दो. हम यह नहीं चाहते कि तुम्हारे जाने के पहले कोई दूसरा व्यक्ति राजनैतिक कार्यकर्ता मंडल वालों के पास पहुंच जाये.

मा—ठीक है, लेकिन अभी तो तुम ज़रा जल्दी ही चले जाओ.

सुन—हम लोग फ़ान-युंग-हो को तुम्हारे जाने के बाद पैदा करेंगे.

मा—यही ठीक होगा. क्या तुम इशारे वाला शब्द नहीं जानना चाहते ? (वह सुन के कान में कुछ कहता है) अच्छा अब जल्दी जाओ.

[सुन चला जाता है]

मा—फ़ान-युंग हो ! फ़ान-युंग हो ! (दूर से फ़ान की आवाज़ आती है—क्या है ?) जल्दी आओ. मुझे कुछ महत्वपूर्ण बातें बतलानी हैं.

[फ़ान आता है]

फ़ान—क्या बात है ?

मा—चार सन्तरी और बैठा दो, रात में कोई भी गांव से बाहर न जाने पाये.

फ़ान—जैसा आप कहेंगे वैसा ही होगा.

मा—हां, जैसा मैं कहूं वैसा ही हो. याद रहे कि तुम गांव की स्वयं सेवक फ़ौज के कप्तान हो और मैं किसान सभा का उपाध्यक्ष. तुम मेरे मातहत हो. देखो मैं इशारे का नया शब्द बतलाता हूं (फ़ान के कान में कुछ कहता है) गांव से आज रात किसी के बाहर जाने के लिये तुम्हीं ज़िम्मेदार होगे. यदि लियू का ससुर भाग निकला तो उसकी भी ज़िम्मेदारी तुम्हारी ही होगी

[वह बाहर जाता है]

फ़ान—(जाते हुये मा को देखते हुये) वाह, मालूम नहीं अपने को क्या समझता है ? (ज़मीन पर बैठ कर) इस सब का आख़िर मतलब क्या है ? यदि ऐसे ही होता रहा तो मैं इस्तीफ़ा दे दूंगा

[वह भी जाने के लिये उठता है. चिन-कुआन और यैंग-कू आते हैं. वह आते हुये अपनी लकड़ी की तख़्ती हिलाते रहते हैं]

फ़ान—तुम लोग कहां जा रहे हो ?

यैंग-कू—मेरे ख़्याल में मा-कुई-यू तुम्हें पुकार रहा है.

चिन-कुआन—वह है कहां ?

फ़ान—आप मा को क्यों ढूंढ रहे हैं ?

سن—کوئی آرہا ہے . کون ہوسکتا ہے ؟

[چمنی کے پیچھے چھپ جاتا ہے]

ما—یہ تو فان - ینگ جیسا دیکھ رہا ہے . تم جلدی ہی چلے جاؤ تو اچھا رہے گا .

سن—اس سے کہکر کچھ زیادہ سنتری بٹھلوا دو . اور اشارے والا شبد بھی بدل دو . ہم یہ نہیں چاہتے کہ تمہارے جانے کے پہلے کوئی دوسرا ویکتی راجنیتک کاریہ کرتا منڈل والوں کے پاس پہونچ جائے .

ما—ٹھیک ہے ، لیکن ابھی تو تم ذرا جلدی ہی چلے جاؤ .

سن—ہم لوگ فان - ینگ - ہو کو تمہارے جانے کے بعد پیدا کریں گے .

ما—یہی ٹھیک ہوگا . کیا تم اشارے والا شبد نہیں جاننا چاہتے ؟ وہ سن کے کان میں کچھ کہتا ہے) اچھا اب جلدی جاؤ .

[سن چلا جاتا ہے]

ما—فان - ینگ - ہو ! فان - ینگ - ہو ! (دور سے فان کی آواز آتی ہے . کیا ہے ؟) جلدی آؤ . مجھے کچھ مہتوپورن باتیں بتلانی ہیں .

[فان آتا ہے]

فان—کیا بات ہے ؟

ما—چار سنتری اور بٹھا دو . رات میں کوئی بھی گاؤں سے باہر نہ جانے پائے .

فان—جیسا آپ کہیں گے ویسا ہی ہوگا .

ما—ہاں ، جیسا میں کہوں ویسا ہی ہو . یاد رہے کہ تم گاؤں کی سویم سیوک فوج کے کپتان ہو اور میں کسان سبھا کا اپادھیکش . تم میرے ماتحت ہو . دیکھو میں اشارے کا نیا شبد بتلاتا ہوں (فان کے کان میں کچھ کہتا ہے) گاؤں سے آج رات کسی کے باہر جانے کے لئے تمہیں ذمہ دار ہوگے . اگر لیو کا سسر بھاگ نکلا تو اسکی بھی ذمہ داری تمہاری ہی ہوگی .

[وہ باہر جاتا ہے]

فان—(جاتے ہوئے ما کو دیکھتے ہوئے) واہ ، معلوم نہیں اپنے کو کیا سمجھتا ہے ؟ (زمین پر بیٹھکر) اس سب کا آخر مطلب کیا ہے ؟ یدی ایسے ہی ہوتا رہا تو میں استعفیٰ دے دونگا .

[وہ بھی جانے کے لئے اٹھتا ہے . ان - کوان اور ینگ - کو آتے ہیں . وہ جاتے ہوئے اپنی لکڑی کی تختی ہلاتے رہتے ہیں]

فان—تم لوگ کہاں جا رہے ہو ؟

ینگ - کو—میرے خیال میں ما - کوئی - یو تمہیں پکار رہا ہے .

ان - کوان—وہ ہے کہاں ؟

فان—آپ ما کو کیوں ڈھونڈھ رہے ہیں ؟

सुन—वह पूरब के किसी गांव में काम कर रहे हैं और वह जगह यहां से ज्यादा दूर नहीं है. वह दौड़े दौड़े यहां जांच परताल के लिये आ पहुंचेगे.

मा—कैंग के दखल देने से घबरा जाने का कोई कारन मुझे तो नहीं नजर आता. पहले यह तो सुनो कि सारी बातें हुईं कैसे? मैंने चाओ को यहां पर बराबर अपने साथ रक्खा और यह दिखलाया कि मैं उससे तनिक भी नाराज़ नहीं हूं. जब तक भीड़ इकट्ठा नहीं हो गई थी मैंने किसी से जांच परताल करने के लिये भी नहीं कहा. इस बात के तो बहुत से गवाह हैं. अब राजनैतिक कार्यकर्ता मंडल से घबराने की तनिक भी जरूरत नहीं है

सुन—मेरे ख़याल में और दिनों की अपेक्षा तुम कल सुबह कुछ जल्दी उठ जाओ. क़रीब दस मील तक आस पास की जगहों में चक्कर लगा लो और लियू को हिरासत में राजनैतिक कार्यकर्ता मंडल के दफ़्तर में पहुंचा दो. वहां उसे जेल में डलवा दो. तुम्हारे लौटने पर हम लोग इस समस्या पर फिर विचार करेंगे. वह सब तनिक भी मीन मेख न निकाल पाय

मा—ठीक है.

सुन—एक और बात महत्व की है. आज रात जब घर जाओ तो लेट कर कल के अपने भाषन की तैयारी करना. तुमको उन्हें विश्वास दिलाना होगा, क्योंकि यदि तुम विश्वास न दिला पाए तो वह लियू के स्थान पर तुम्हीं को बन्द कर देंगे.

मा—आप तो नाहक़ ही परेशान हैं. मैंने एक देश-द्रोही को गिरफ़्तार किया है जो घर में गोलियां छुपाये था. मेरी सेवाओं के पुरस्कार में उन्हें एक जापानी पिस्तौल भेंट करना चाहिये. इसके बाद तो वह मुझे किसान सभा की देख भाल के लिये नियुक्त कर ही देंगे. और शायद तब वह यहां आने की जरूरत ही नहीं समझेंगे.

सुन—तुमने काम तो आज अच्छा ही किया है. तुम्हारी कलाई पर बंधी मेरी घड़ी अब तुम्हारी हो गई! अगर तुमने अभी जैसे कहा है, वैसा ही किया भी तो मैं अपना वादा पूरा करने में तनिक भी पीछे नहीं हटूंगा. हम एक ही घर के भाइयों की तरह रहेंगे और हर चीज़ में आधा साझा रहेगा. चाहे तुम अध्यक्ष हो या मैं, इससे ज्यादा अन्तर नहीं पड़ने का. मैं अपने वादों को पूरा करूंगा, मुकर नहीं जाऊंगा. और मुझे विश्वास है तुम भी अपने विचार नहीं बदलोगे.

मा—यह हो भी कैसे सकता है? आप मुझे इतना छोटा आदमी क्यों समझते हैं? अपने भाई का विरोध करने की जगह सवेरा होते होते मर जाना मैं ज्यादा पसन्द करूंगा.

سن—وہ پورب کے کسی گاؤں میں کام کر رہے ہیں اور وہ جگہ یہاں سے زیادہ دور نہیں ہے۔ وہ دوڑے دوڑے یہاں جانچ پڑتال کے لئے آ پہونچیں گے۔

ما—کینگ کے دخل دینے سے گھبرا جانے کا کوئی کارن مجھے تو نہیں نظر آتا۔ پہلے یہ تو سنو کہ ساری باتیں ہوئیں کیسے؟ میں نے چاؤ کو یہاں پر برابر اپنے ساتھ رکھا اور یہ دکھلایا کہ میں اس سے تنک بھی ناراض نہیں ہوں۔ جب تک بھیڑ اکٹھا نہیں ہو گئی تھی میں نے کسی سے جانچ پڑتال کرنے کے لئے بھی نہیں کہا۔ اس بات کے تو بہت سے گواہ ہیں۔ راجنیتک کاریہ کرتا منڈل سے گھبرانے کی تنک بھی ضرورت نہیں ہے۔

سن—میرے خیال میں اور دنوں کی اپیکشا تم کل صبح کچھ جلدی اٹھ جاؤ۔ قریب دس میل تک آس پاس کی جگہوں میں چکر لگا لو اور لیو کو حراست میں راجنیتک کاریہ کرتا منڈل کے دفتر میں پہونچا دو۔ وہاں اسے جیل میں ڈلوا دو۔ تمہارے لوٹنے پر ہم لوگ اس سمسیا پر پھر وچار کریں گے۔ وہ سب تنک بھی مین میخ نہ نکال پائیں۔

ما—ٹھیک ہے۔

سن—ایک اور بات مہتو کی ہے۔ آج رات جب گھر جاؤ تو لیٹ کر کل کے اپنے بھاشن کی تیاری کرنا۔ تمکو انہیں وشواس دلانا ہوگا، کیونکہ یدی تم وشواس نہ دلا پائے تو وہ لیو کے ستھان پر تمہیں کو بند کر دیں گے۔

ما—آپ تو ناحق ہی پریشان ہیں۔ میں نے ایک دیش دروہی کو گرفتار کیا ہے جو گھر میں گولیاں چھپائے تھا۔ میری سیواؤں کے پرسکار میں انہیں ایک جاپانی پستول بھینٹ کرنا چاہئے۔ اس کے بعد تو وہ مجھے کسان سبھا کی دیکھ بھال کے لئے نیُکت ہی کر دیں گے۔ اور شاید تب وہ یہاں آنے کی ضرورت ہی نہیں سمجھیں گے۔

سن—تم نے کام تو آج اچھا ہی کیا ہے۔ تمہاری کلائی پر بندھی میری گھڑی اب تمہاری ہو گئی۔ اگر تم نے ابھی جیسے کہا ہے ویسے ہی کیا تو میں اپنا وعدہ پورا کرنے میں تنک بھی پیچھے نہیں ہٹونگا۔ ہم ایک ہی گھر کے بھائیوں کی طرح رہیں گے اور ہر چیز میں آدھا ساجھا رہے گا۔ چاہے تم ادھیکش ہو یا میں، اس سے زیادہ انتر نہیں پڑنے کا۔ میں اپنے وعدوں کو پورا کرونگا، مکر نہیں جاؤں گا۔ اور مجھے وشواس ہے تم بھی اپنے وچار نہیں بدلوگے۔

ما—یہ ہو بھی کیسے سکتا ہے؟ آپ مجھے اتنا چھوٹا آدمی کیوں سمجھتے ہیں؟ اپنے بھائی کا ورودھ کرنے کی جگہ سویرا ہوتے ہوتے مر جانا میں زیادہ پسند کرونگا۔

सुन—मैं यक़ीन दिलाता हूं कि आप सफल होंगे. हमारे घर के तीन बड़े कमरे ख़ाली हैं. उसमें रोशनी भी अच्छी आती है. किसान सभा के दफ़्तर के लिये वह जगह बहुत अच्छी रहेगी. मैं दफ़्तर के सन्तरियों के लिये कुछ अच्छी बन्दूक़ों का भी प्रबन्ध कर दूंगा. अपनी टुकड़ी को बीच वाले कमरे में रखना. सारी चीज़ें ऐसी शानदार होंगी कि बस देखते ही बनेगा.

मा—हां, यही ठीक भी है. सुन के फाटक पर ही किसान सभा का साइनबोर्ड लगवा देना. जब दूसरे शहरों के यात्री हमारे गांव में आयेंगे तो वह हमारे गांव की किसान सभा और उसके अध्यक्ष वांग-चान कुई की सफलता देख कर दंग रह जायेंगे.

वांग—ठीक है. आप के कहने के मुताबिक़ ही काम होगा.

मा—जाकर उन लोगों को इत्तिला कर दो जिन्हें पिछली बार ज़मीन नहीं मिली थी कि अगर वे ज़मीन पाने के उत्सुक हैं तो कल आयें. देखो, चांग-फेंग-शान को मत भूलना. वह ऐसे आदमियों में से एक है जो सुन से हमेशा नाराज़ रहते हैं. ऐसे आदमियों से कह दो कि अगर वह बुद्धिमान हैं तो उन्हें पिछली बातें भूल जाना चाहिये.

वांग—और अगर वह मेरी बातें न सुनें ?

मा—तो उन्हें यहां ले आइये.

वांग—अच्छी बात है.

[वह दाहिनी तरफ़ से बाहर जाता है]

मा—भाई सुन आप ने एक काम ग़लत कर डाला है.

सुन—ग़लती ? कैसी ?

मा—इस बुद्धू को किसान सभा का अध्यक्ष बनाने से क्या लाभ जब यह कुछ जानता ही नहीं ?

सुन—ऐसे ही अध्यक्ष की तो हमें आवश्यकता है. मेरे भाई कितने बुद्धू हो तुम ! उसे हर काम के लिये हम पर भरोसा रखना पड़ेगा. हम उसे आमदनी का कुछ हिस्सा बाद में दे दिया करेंगे और तब वह भी हममें से एक हो जायेगा.

मा—भाई मेरे, उन गोलियों को तुम कहां से लाये थे ?

सुन—इसके लिये क्यों परेशान हो ? हमारे हाथों में अब भी ज़रूरी काम है. सब से पहले तुम जाकर राजनैतिक कार्यकर्ता मंडल को ख़बर कर दो. पहले दोश लगाने वाला हमेशा क़ायदे में रहता है.

मा—कामरेड फ़ैंग से मिलने मैं कल जाऊंगा. मैं तो उनसे ज़्यादा बातें भी कर सकता हूं.

सुन—नहीं, उनके पास मत जाना.

मा—क्यों ?

سن—میں یقین دلاتا ہوں کہ آپ سپھل ہونگے۔ ہمارے گھر کے تین بڑے کمرے خالی ہیں۔ اُس میں روشنی بھی اچھی آتی ہے۔ کسان سبھا کے دفتر کے لئے وہ جگہ بہت اچھی رہے گی۔ میں دفتر کے سنتریوں کے لئے کچھ اچھی بندوقوں کا بھی پربندھ کر دونگا۔ اپنی ٹکڑی کو بیچ والے کمرے میں رکھنا۔ ساری چیز ایسی شاندار ہونگی کہ بس دیکھتے ہی بنے گا۔

ما—ہاں، یہی ٹھیک بھی ہے۔ سن کے پھاٹک پر ہی کسان سبھا کا سائن بورڈ لگوا دینا۔ جب دوسرے شہروں کے یاتری ہمارے گاؤں میں آئیں گے تو وہ ہمارے گاؤں کی کسان سبھا اور اُس کے ادھیکش وانگ-چان-کوی کی سپھلتا دیکھکر دنگ رہ جائینگے۔

وانگ—ٹھیک ہے۔ آپ کے کہنے کے مطابق ہی کام ہوگا۔

ما—جا کر اُن لوگوں کو اطلاع دو جنھیں پچھلی بار زمین نہیں ملی تھی کہ اگر وہ زمین پانے کے اچھک ہیں تو کل آئیں۔ دیکھو چانگ-فینگ-شان کو مت بھولنا وہ ایسے آدمیوں میں سے ایک ہیں جو سن سے ہمیشہ ناراض رہتے ہیں۔ ایسے آدمیوں سے کہ دو کہ اگر وہ بدھیمان ہیں تو انھیں پچھلی باتیں بھول جانا چاہئے۔

وانگ—اور اگر وہ میری باتیں نہ سنیں؟

ما—تو انھیں یہاں لے آئیے۔

وانگ—اچھی بات ہے۔

[وہ داہنی طرف سے باہر جاتا ہے]

ما—بھائی سن آپ نے ایک کام غلط کر ڈالا ہے۔

سن—غلطی ؟ کیسی ؟

ما—اِس بدھو کو کسان سبھا کا ادھیکش بنانے سے کیا لابھ جب یہ کچھ جانتا ہی نہیں؟

سن—ایسے ہی ادھیکش کی تو ہمیں آوشیکتا ہے۔ میرے بھائی کتنے بدھو ہو تم! اسے ہر کام کے لئے ہم پر بھروسہ رکھنا پڑے گا۔ ہم اسے آمدنی کا کچھ حصہ بعد میں دے دیا کریں گے اور تب وہ بھی ہم میں سے ایک ہوجائیگا۔

ما—بھائی میرے، اُن گولیوں کو تم کہاں سے لائے تھے؟

سن—اِس کے لئے کیوں پریشان ہو؟ ہمارے ہاتھوں میں اب بھی ضروری کام ہے۔ سب سے پہلے تم جاکر راجنیتک کاریہ کرتا منڈل کو خبر کردو۔ پہلے دوش لگانے والا ہمیشہ قاعدے میں رہتا ہے۔

ما—کامریڈ فینگ سے ملنے میں کل جاؤنگا۔ میں تو اُن سے زیادہ باتیں بھی کرسکتا ہوں۔

سن—نہیں، اُن کے پاس مت جانا۔

ما—کیوں؟

[लियू-मा अन्दर जाती है]

वांग—अध्यक्ष मा, मैं अध्यक्ष पद स्वीकार नहीं करूंगा. मैं अपने गांव के बारे में कोई भी जानकारी नहीं रखता.

मा—कोई बात नहीं है. (धीमी आवाज में) मैं तुम्हारी सहायता करूंगा.

[लियू मा प्याले में खिचड़ी जैसा खाना और लकड़ी की दो तीलियां लिये बाहर आती है, दरवाजे में ताला बन्द करती है. उसकी आंखों में आंसू हैं]

मा—अपने पति को समझा देना कि कुछ ज्यादा गड़बड़ न करें. सुनती हो ?

लियू मा—हां......हां......

[वह बाहर जाती है]

मा—(चांग से) तुम मीटिंग में क्यों नहीं बोले ?

चांग-फॅंग शान—हां......हां......

मा—तुम जमीन लेना चाहते हो या नहीं ?

चांग—आप सुन की जमीन के बारे में बात कर रहे हैं न ?

मा—हां......हां मत करो. मुझे मालूम है तुम अपनी पत्नी का कुयें में कूदना भुला नहीं सकते हो. क्या अब भी उसका बदला लेना चाहते हो ?

चांग—इससे तुम्हें क्या मतलब ? लेकिन क्या मैं जमीन लेने से इन्कार करूं ?

सुन—(चिमनी के पीछे से)—वह अपने को प्रसन्न रख सकते हैं. यदि वह अपनी पत्नी के बारे में जरा भी जबान हिलाने की हिम्मत करेंगे तो अगली बार जब लुटेरे आएंगे तो मैं इनके होश दुरुस्त करवा दूंगा. मैं इनके साथ किसी भी तरह का निर्दयता पूर्ण व्योहार करने से चूकूंगा नहीं.

मा—अच्छा जाओ, अपने लिये लकड़ी की तख्ती का प्रबन्ध करो. पिछले दिनों में जो कुछ भी किया उसे भूल जाने का जतन करो.

[वह चांग को स्टेज पर से धकेल कर बाहर कर देता है]

सुन—(चिमनी के पीछे से) वांग-चान-कुई !

मा—चान-कुई, श्रीमान सुन तुमसे कुछ बातें करना चाहते हैं.

सुन—(चिमनी के पीछे से निकल कर) भाई वांग-चान-कुई, हम लोग एक दूसरे के दोस्त तो नहीं कहे जा सकते लेकिन यह मैं जानता हूं कि आप बड़े ही ईमानदार और सज्जन व्यक्ति हैं. आप की अध्यक्षता में किसान सभा सुचारु-रूप से चलती रहेगी.

वांग—इस तरह का कोई काम मैंने पहले नहीं किया. मुझे डर है कि शायद इस पद के लिये योग्य न साबित हो सकूं.

[لیوما اندر جاتی ہے]

وانگ— ادھیکش ما، میں ادھیکش پد سویکار نہیں کرونگا. میں اپنے گاؤں کے بارے میں کوئی بھی جانکاری نہیں رکھتا.

ما—کوئی بات نہیں ہے. (دھیمی آواز میں) میں تمہاری سہائتا کرونگا.

[لیو ما پیالے میں کھچڑی جیسا کھانا اور لکڑی کی دو تیلیاں لیئے باہر آتی ہے. دروازے میں تالا بند کرتی ہے. اس کی آنکھوں میں آنسو ہیں]

ما—اپنے پتی کو سمجھا دینا کہ کچھ زیادہ گڑبڑ نہ کریں. سنتی ہو ؟

لیوما— ہاں...... ہاں......

[وہ باہر جاتی ہے]

ما—(چانگ سے) تم میٹنگ میں کیوں نہیں بولے.

چانگ- فانگ- شان—ہاں... ...ہاں......

ما—تم زمین لینا چاہتے ہو یا نہیں ؟

چانگ—آپ سن کی زمین کے بارے میں بات کر رہے ہیں نہ ؟

ما—ہاں.... ہاں .... مت کرو. مجھے معلوم ہے تم اپنی پتنی کا کنوئیں میں کودنا بھلا نہیں سکتے ہو. کیا اب بھی اس کا بدلا لینا چاہتے ہو ؟

چانگ—اس سے تمہیں کیا مطلب ؟ لیکن کیا میں زمین لینے سے انکار کروں ؟

سن—(چمنی کے پیچھے سے)—یہ اپنے کو پرسن رکھ سکتے ہیں. یدی یہ اپنی پتنی کے بارے میں ذرا بھی زبان ہلانے کی ہمت کریں گے تو اگلی بار جب لٹیرے آئیں گے تو میں ان کے ہوش درست کروا دونگا. میں ان کے ساتھ کسی طرح کا بھی نردیتا پورن ویوہار کرنے سے چوکونگا نہیں.

ما—اچھا جاؤ، اپنے لئے لکڑی کی تختی کا پربندھ کرو. پچھلے دنوں میں جو کچھ بھی کیا اسے بھول جانے کا جتن کرو.

[وہ چانگ کو اسٹیج پر سے دھکیل کر باہر کر دیتا ہے]

سن—(چمنی کے پیچھے سے) وانگ - چان - کوئی!

ما—چان کوئی—شریمان سن تم سے کچھ باتیں کرنا چاہتے ہیں.

سن—(چمنی کے پیچھے سے نکل کر) بھائی وانگ - چان - کوئی، ہم لوگ ایک دوسرے کے دوست تو نہیں کہے جا سکتے لیکن یہ میں جانتا ہوں کہ آپ بڑے ہی ایماندار اور سجن ویکتی ہیں. آپ کی ادھیکشتا میں سبھا سچارو روپ سے چلتی رہے گی.

وانگ—اس طرح کا کوئی کام میں نے پہلے نہیں کیا ہے. مجھے ڈر ہے کہ شاید اس پد کے لئے یوگیہ نہ ثابت ہو سکوں.

वांग-चान-कुई—मुझे भी तो जमीन नहीं मिली थी.

मां—इस बार तुम्हें अवश्य मिलेगी. अब तो अध्यक्ष बनने से इन्कार न करो.

वांग—अच्छा तो यही है कि आप सबों से पूछ लीजिये कि मेरी आवश्यकता है या नहीं ?

मा—वांग-चान-कुई को गांव की किसान सभा का अध्यक्ष बनना है. उसे अपने हिस्से की जमीन सब से पहले मिलेगी. दूसरों को उसके बाद. क्या सब सहमत हैं ?

[यिन-कुआन, यैंग फ्यू और दूसरे कई किसान चिल्ला उठते हैं—ठीक है, ठीक है]

सुन—अब तक मैं आप लोगों को लगभग तेरह माऊ जमीन दे चुका हूं. यही इतना मेरे पास था. लेकिन मुझे यक़ीन है आप लोग मुझे भूखों भी नहीं मारना चाहते क्योंकि एक समय मैं भी गांव का प्रधान रह चुका हूं. अब मैं कैसे ज़िन्दा रहूंगा जब मैंने अपनी कुल जमीन बांट दी है. मुझे विश्वास है आप सब गांव के भाई बन्धु मेरी सहायता करेंगे. मैं अपनी जमीन के लिये कोई लगान नहीं चाहता, पर हां, यह ज़रूर चाहता हूं कि सब लोग मुझे थोड़ा अनाज दे दिया करें ताकि मेरा गुज़र बसर हो जाया करे.

मा—इसके कहने की क्या ज़रूरत है ? अब दुनिया हमारी यानी ग़रीबों की है. एक ऐसे आदमी को जो हमारी तरह का ही अब हो गया है, हम लोग भूखे कैसे मरने दे सकते हैं ? अच्छा अब मुझे सभा के फ़ैसले सुनाने दो: लियू-चेन-तुंग को अध्यक्ष पद से निकाला जाता है और उसकी जगह वांग-चान-कुई को नियुक्त किया जाता है. ज़मींदार सुन हमारे जैसे बन गए हैं. गांव के सब आदमी एक जैसे और एक परिवार के हैं. अच्छा अब सभा ख़तम होती है. (भीड़ जाती है. वांग-चान-कुई पीछे छूट जाते हैं. सुन मा के कान में फुसफुसाते हैं और फिर चिमनी के पीछे चले जाते हैं.) चांग-फ़ेंग-शान, अभी मत जाओ (जाते हुये आदमियों की तरफ़ मुड़ कर) जिन आदमियों को ज़मीन मिलने वाली है उन्हें अपनी तख़्तियों का प्रबंध कर लेना चाहिये. आप लोगों ने सुना ?

[दूर से यिन-कुआन, यैंग फू और दूसरों की आवाज़ सुनाई देती है 'ठीक है. हम देर नहीं करेंगे. परेशान मत हो, परेशान मत हो. लियू मा मकान से बाहर आती है.]

लियू-मा—(मा से) अध्यक्ष मा, मेरे पति ने खाना भी नहीं खाया था. आप उसे घर जा कर खाना खाने की आज्ञा दे दें.

मा—वह तो क़ैदख़ाने पहुंच चुका है.

लियू-मा—तो मैं वहीं खाना भेज दूं ?

मा—यदि तुम चाहो, लेकिन जल्दी ही करना होगा.

وانگ - چان - کوئی—مجھے بھی تو زمین نہیں ملی تھی .

ما—اِس بار تمہیں اوشیہ ملے گی . اب تو ادھیکش بننے سے انکار نہ کرو .

وانگ—اچھا تو یہی ہے کہ آپ سبوں سے پوچھ لیجیئے کہ میری آوشیکتا ہے یا نہیں ؟

ما—وان - چانگ - کوئی کو گاؤں کی کسان سبھا کا ادھیکش بننا ہے . اسے اپنے حصے کی زمین سب سے پہلے ملے گی . دوسروں کو اس کے بعد. کیا آپ سب سہمت ہیں؟

[ین-کوان' یینگ-فیو اور دوسرے کئی کسان چلا اُٹھتے ہیں—ٹھیک ہے' ٹھیک ہے]

سن—اب تک میں آپ لوگوں کو لگ بھگ تیرہ ماؤ زمین دے چکا ہوں . یہی اتنا میرے پاس تھا . لیکن مجھے یقین ہے آپ لوگ مجھے بھوکوں بھی نہیں مارنا چاہتے کیونکہ ایک سمے میں بھی گاؤں کا پردھان رہ چکا ہوں . اب میں کیسے زندہ رہونگا جب میں نے اپنی کل زمین بانٹ دی ہے . مجھے وشواس ہے آپ سب گاؤں کے بھائی بندھو میری سہائتا کرینگے . میں اپنی زمین کے لئے کوئی لگان نہیں چاہتا' پر ہاں' یہ ضرور چاہتا ہوں کہ سب لوگ مجھے تھوڑا اناج دے دیا کریں تاکہ میرا گزر بسر ہوجایا کرے .

ما—اس کے کہنے کی کیا ضرورت ہے ؟ اب دنیا ہماری یعنی غریبوں کی ہے . ایک ایسے آدمی کو جو ہماری طرح کا ہی اب ہوگیا ہے' ہم لوگ بھوکے کیسے مرنے دے سکتے ہیں ؟ اچھا اب مجھے سبھا کے فیصلے سنانے دو : لیو- چین- تنگ کو ادھیکش پد سے نکالا جاتا ہے اور اس کی جگہ وانگ - چان - کوئی کو نیُکت کیا جاتا ہے . زمیندار سن ہمارے جیسے بن گئے ہیں. گاؤں کے سب آدمی ایک جیسے اور ایک پریوار کے ہیں . اچھا اب سبھا ختم ہوتی ہے (بھیڑ جاتی ہے. وانگ- چان- کوئی پیچھے چھوٹ جاتے ہیں . سن ما کے کان میں پھسپھساتے ہیں اور پھر چمنی کے پیچھے چلے جاتے ہیں) چانگ- فینگ- شان' ابھی مت جاؤ (جاتے ہوئے آدمیوں کی طرف مڑ کر) جن آدمیوں کو زمین ملنے والی ہے انہیں اپنی تختیوں کا پربندھ کر لینا چاہیئے . آپ لوگوں نے سنا ؟

[دور سے ین- کوان' یینگ- فو اور دوسروں کی آواز سنائی دیتی ہے—" ٹھیک ہے . ہم دیر نہیں کریں گے. پریشان مت ہو. لیو-ما مکان سے باہر آتی ہے]

لیوما—(ما سے) ادھیکش ما' میرے پتی نے کھانا بھی نہیں کھایا تھا . آپ اسے گھر جا کر کھانا کھانے کی آگیاں دے دیں .

ما—وہ تو قید خانے پہونچ چکا ہے .

لیوما—تو میں وہیں کھانا بھیج دوں ؟

ما—یدی تم چاہو' لیکن جلدی ہی کرنا ہوگا .

सवाल भरे पड़े हैं? अच्छा सुन-चिन-को, आप भी कुछ कहेंगे? जब आप मीटिंग में आये हैं तो कोई कारन नहीं है कि आप स्वयं क्यों न बोलें? (सब लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं. वह भीड़ की ओर मुड़ता है.) आप सब लोग ध्यानपूर्वक सुनियेगा.

सुन—(ऐसे स्थान पर खड़ा हो कर जहां से सब लोग दिखाई पड़ते हैं) मेरे प्यारे पड़ोसियों, मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुनो. आप सब जानते हैं कि राजनैतिक कार्य कर्ता मंडल के आने के बाद मेरी सत्ता छीन थी उसके बाद से मेरे दिमाग़ में कुछ नये विचार आते रहे हैं. आप लोगों ने किसान सभा का संगठन किया है और मेरे विचार से यह बहुत ही अच्छा है. यह भी ठीक है कि मंचूकों राज में मैं ही गांव का मुखिया था. यद्यपि मैंने किसी को बहुत नुक़सान तो नहीं पहुंचाया फिर भी काम-काज के बीच में कुछ लोगों को तो नुक़सान उठाना ही पड़ा है. कृषि सुधार वाली सभा में आप लोगों ने मुझ पर कितने दोष लगाये यह कहने की तो आवश्यकता नहीं है. केवल राजनैतिक कार्यकर्ताओं की ही बातें मत सुनिये. वह गांव में हमेशा तो रहते नहीं हैं. लेकिन हम लोगों को तो हमेशा एक ही गांव में रहना है. कौन कहता है कि उसे दूसरों की सहायता की ज़रूरत नहीं पड़ेगी. मेरे पास अब भी दो सौ माऊ ज़मीन है लेकिन उसे जोतने बोने के लिये मवेशी नहीं हैं क्योंकि क़रीब क़रीब सभी को बेच दिया था जब मैं खेती कर ही नहीं सकता तो क्यों न ज़मीन को ही बांट दूं? मैं भी ग़रीब हो जाऊंगा. हम सब लोग एक ही परिवार के सदस्य हो जायेंगे. कितना अच्छा होगा! हम सब भाई बहन बन जायेंगे.

मा—(ज़ोर से चिल्ला कर) इस प्रस्ताव के बारे में आप लोग क्या कहते हैं?

[सब चुप हैं. लोगों के खांसने तक की आवाज़ नहीं आती है]

सुन—अच्छा एक बार फिर समझा दूं. पिछली कृषि सुधार वाली सभा में सौ माऊ या उससे अधिक ज़मीन वालों को अतिरिक्त ज़मीन नहीं मिली थी. मैं यह दो सौ माऊ ऐसे ही लोगों के बीच बांट दूंगा. बाक़ी भी मैं दूसरों को ही दे दूंगा.

मा—(ज़ोर से) क्या यह अच्छा प्रस्ताव नहीं है?

थिन-कुआन—है.

यैंग-कू—मैं भी कहता हूं अच्छा है.

एक किसान—पिछली बार मुझे ज़रा भी ज़मीन नहीं मिली थी.

एक दूसरा किसान—मुझे भी नहीं मिली थी.

मा—और भी कोई ज़मीन चाहता है? (कोई उत्तर नहीं देता) वांग-चान-कुई, तुम क्या चाहते हो?

خیال بھرے پڑے ہیں؟ اچھا سن لی-کو، آپ بھی کچھ کہیں گے؟ جب آپ میٹنگ میں آئے ہیں تو کوئی کارن نہیں ہے کہ آپ سویم کیوں نہ بولیں؟ (سب لوگ آشچریہ چکت ہو جاتے ہیں. وہ بھیڑ کی اور مڑتا ہے) آپ لوگ دھیان پوروک سنیئے گا.

سن—(ایسے استھان پر کھڑا ہو کر جہاں سے سب لوگ دکھائی پڑتے ہیں) میرے پیارے پڑوسیو، میری باتوں کو دھیان پوروک سنو. آپ سب جانتے ہیں کہ راجنیتک کاریہ کرتا منڈل کے آنے کے بعد میری ستّا چھین تھی. اس کے بعد سے میرے دماغ میں کچھ نئے وچار آتے رہے ہیں. آپ لوگوں نے کسان سبھا کا سنگٹھن کیا ہے اور میرے وچار سے یہ بہت ہی اچھا ہے. یہ بھی ٹھیک ہے کہ منچوکو راج میں میں ہی گاؤں کا مکھیا تھا. یدیپی میں نے کسی کو بہت نقصان تو نہیں پہونچایا پھر بھی کام کاج کے بیچ میں کچھ لوگوں کو تو نقصان اٹھانا ہی پڑا ہے. کرشی سدھار والی سبھا میں آپ لوگوں نے مجھ پر کتنے دوش لگائے یہ کہنے کی تو آوشیکتا نہیں ہے. کیول راجنیتک کاریہ کرتاؤں کی ہی باتیں مت سنیئے. وہ گاؤں میں ہمیشہ تو رہتے نہیں ہیں. لیکن ہم لوگوں کو تو ہمیشہ ایک ہی گاؤں میں رہنا ہے. کون کہتا ہے کہ اسے دوسروں کی سہائتا کی ضرورت نہیں پڑیگی. میرے پاس اب بھی دو سو ماؤ زمین ہے لیکن اسے جوتنے بونے کے لئے مویشی نہیں ہیں کیونکہ قریب قریب سبھی کو بیچ دیا تھا. جب میں کھیتی کر ہی نہیں سکتا تو کیوں نہ زمین کو ہی بانٹ دوں؟ میں بھی غریب ہو جاؤنگا. ہم سب لوگ ایک ہی پریوار کے سدسیہ ہو جائینگے. کتنا اچھا ہوگا! ہم سب بھائی بہن بن جائینگے.

ما—(زور سے چلا کر) اس پرستاؤ کے بارے میں آپ لوگ کیا کہتے ہیں؟

[سب چپ ہیں. لوگوں کے کھانسنے تک کی آواز نہیں آتی ہے]

سن—اچھا ایک بار پھر سمجھا دوں. پچھلی کرشی سدھار والی سبھا میں سو ماؤ یا اس سے ادھک زمین والوں کو اترکت زمین نہیں ملی تھی. میں یہ دو سو ماؤ ایسے ہی لوگوں کے بیچ بانٹ دوں گا. باقی بھی میں دوسروں کو ہی دے دونگا.

ما—(زور سے) کیا یہ اچھا پرستاؤ نہیں ہے؟

تھن-کوان—ہے.

ینگ-کو—میں بھی کہتا ہوں اچھا ہے.

ایک کسان—پچھلی بار مجھے ذرا بھی زمین نہیں ملی تھی.

ایک دوسرا کسان—مجھے بھی نہیں ملی تھی.

ما—اور بھی کوئی زمین چاہتا ہے؟ (کوئی اتر نہیں دیتا) وانگ-چان-کوئی، تم کیا چاہتے ہو؟

लोगों को मेरे शिक्षक का नाम नहीं मालूम है ? यदि आप कुछ मंत्र पढ़ सकते हैं तो जादूगरनी बनने में कितनी देर लगती है ? कुछ मसाले अपने मुंह में रख लो और मंत्र पढ़ने का बहाना करते रहो. फिर मसाले को हाथ में थूक कर उसको गोल कर लो. यही दवा हो जायेगी जिसे प्रेतात्मायें देती हैं. मुझे यह किसने सिखाया ? जानते हैं आप लोग ?

मा—(घबरा कर) मू-तान-चियांग से लौटने के बाद से ही मैंने जादूगरी छोड़ रक्खी है. तुम अब तक इसका हवाला क्यों देती हो ?

वांग की पत्नी—खुद अपने से पूछो.

वांग-शिह-साई—घर क्यों नहीं जाती ?

वांग की पत्नी—हां, मैं घर जा रही हूं और तुम मेरे साथ चलोगे. घर में कई जरूरी काम देखने हैं. (मा की ओर मुड़ कर) यदि नहीं, तो मैं सारा भांडा फोड़ दूंगी, मैं देख लूंगी कि तुम कैसे किसान सभा के अध्यक्ष बने रह सकते हो ?

[दोनों पति पत्नी जाते हैं. मां बहुत घबरा गया है और बराबर दोनों ही को घूरता है. वांग की पत्नी की आवाज सुनाई देती है—"कितना बहुरूपिया है. यह आदमी !]

मा—(गुस्से में भर कर) इस औरत को मजा चखाना चाहिये.

[वह वांग की पत्नी के पीछे पीछे दौड़ता है. सब लोग हंसने लगते हैं]

फान—दुनिया में सेर को सवा सेर मिल ही जाते हैं. मा-क्वी-यू के होश बड़ी लाल-नाशपाती ही ठिकाने लगा सकती है.

चेन—उसका नाम उसके लिये बड़ा उपयुक्त है. उसने मा-क्वी-यू को मजा चखा दिया. वह मीठा भी रहा होगा और तीखा भी.

एक किसान—दोस्त तुम तो ऐसी बातें करते हो जैसे मजा चखने के लिये तुम्हारा जी भी मचल रहा हो !

चेन—नहीं भाई, वह नाशपाती मेरे दांतों से नहीं कटने की. बुढ़ापे में जो दो-चार दांत बचे हैं, उन्हें भी तुड़वाने की कोई इच्छा नहीं है. बेहतर यही है कि वह खुद अपना खाना खाने के लिये सही सलामत बने रहें !

[सब फिर हंस पड़ते हैं. मा वापस आता है]

मा—हंसना बन्द करो ! (साफ था कि वह वांग की पत्नी का कुछ भी नहीं कर सका. वह अपनी शर्म छुपाने की कोशिश करता है) मुझे औरतों के मुंह लगना बिल्कुल पसन्द नहीं है. (चबूतरे पर बैठ कर) हम लोग अपनी सभा जारी रक्खेंगे. आप लोगों में से कोई बोलता क्यों नहीं है ? क्या आप लोगों के दिमाग में अभी भी मंचूको

کہ لوگوں کو میرے شکشک کا نام نہیں معلوم ہے؟ یدی آپ کچھ منتر پڑھ سکتے ہیں تو جادوگرنی بننے میں کتنی دیر لگتی ہے ! کچھ مسالے اپنے منہ میں رکھ لو اور منتر پڑھنے کا بہانہ کرتے رہو۔ پھر مسالے کو ہاتھ میں تھوک کر اس کو گول کر لو۔ یہی دوا ہو جائے گی جسے پریتماتیں دیتی ہیں۔ مجھے یہ سب کس نے سکھایا ؟ جانتے ہیں آپ لوگ ؟

ما—(گھبرا کر) مو-تان-چیانگ کے لوٹنے کے بعد سے ہی میں نے جادوگری چھوڑ رکھی ہے۔ تم اب تک اس کا حوالہ کیوں دیتی ہو ؟

وانگ کی پتنی—خود اپنے سے پوچھو۔

وانگ-شیہ-سائی—گھر کیوں نہیں جاتیں ؟

وانگ کی پتنی—ہاں میں گھر جا رہی ہوں اور تم میرے ساتھ چلو گے۔ گھر میں کئی ضروری کام دیکھنے ہیں۔ (ما کی اور مڑ کر) یدی نہیں، تو میں سارا بھانڈا پھوڑ دوں گی۔ میں دیکھ لوں گی کہ تم کیسے کسان سبھا کے ادھیکش بنے رہ سکتے ہو ؟

[دونوں پتی پتنی جاتے ہیں۔ ما بہت گھبرا گیا ہے اور برابر دونوں کو ہی گھورتا ہے۔ وانگ کی پتنی کی آواز سنائی دیتی ہے—' کتنا بہروپیہ ہے' یہ آدمی !]

[وہ وانگ کی پتنی کے پیچھے دوڑتا ہے۔ سب لوگ ہنسنے لگتے ہیں]

فان—دنیا میں سیر کو سوا سیر مل ہی جاتے ہیں ما-کوئی-یو کے ہوش بڑی لال-ناشپاتی ہی ٹھکانے لگا سکتی ہے۔

چین—اس کا نام اس کے لئے بڑا اُپیکت ہے۔ اس نے ما-کوئی-یو کو مزا چکھا دیا۔ یہ میٹھا بھی رہا ہوگا اور تیکھا بھی۔

ایک کسان—دوست تم تو ایسی باتیں کرتے ہو جیسے مزا چکھنے کے لئے تمہارا جی بھی مچل رہا ہو؟

چین—نہیں بھائی' وہ ناشپاتی میرے دانتوں سے نہیں کٹنے کی۔ بڑھاپے میں جو دو چار دانت بچے ہیں انہیں بھی تڑوا دینے کی کوئی اچھا نہیں ہے۔ بہتر یہی ہے کہ وہ خود اپنا غلہ کھانے کے لئے سہی سلامت بنے رہیں !

[سب پھر ہنس پڑتے ہیں۔ ما واپس آتا ہے]

ما—ہنسنا بند کرو ! (صاف تھا کہ وہ وانگ کی پتنی کا کچھ بھی نہیں کر سکا۔ وہ اپنی شرم چھپانے کی کوشش کرتا ہے) مجھے عورتوں کے منہ لگنا بالکل پسند نہیں ہے۔ (چبوترے پر بیٹھ کر) ہم لوگ اپنی سبھا جاری رکھیں گے۔ آپ لوگوں میں سے کوئی بولتا کیوں نہیں ہے؟ کیا آپ لوگوں کے دماغ میں ابھی بھی منچوکو

[वांग-शिह साई की पत्नी अन्दर आती है]

वांग की पत्नी—(पति को देख कर) तो, तुम यहां हो ! मैं तुमसे निपटूंगी जब तुम घर आओगे. चलो, मेरे साथ चलो.

मा—तुम क्या बक रही हो ?

वांग की पत्नी—मैं अपने पति से घर चलने के लिये कह रही हूं.

मा—वह मीटिंग को अधूरी छोड़ कर नहीं जा सकता.

वांग की पत्नी—कैसी मीटिंग ?

मा—एक महत्वपूर्न मीटिंग ! लिबू चेन तुंग ने अपने घर में गोलियां छिपा रक्खी थीं. उसे अध्यक्ष पद से अलग करना आवश्यक हो गया है.

वांग की पत्नी—मैं ऐसी बातों में यक़ीन नहीं करती. (पति को पकड़ कर) चलो घर चलें.

मा—नहीं, वह नहीं जा सकते.

वांग की पत्नी—क्यों ?

वांग-शिह-साई—(पत्नी से) अच्छा यही होगा कि तुम घर वापस चली जाओ. ज़्यादा बातें करना अच्छा नहीं है.

मा—तुम इस प्रकार हमारी मीटिंग को नहीं तोड़ सकती हो.

वांग की पत्नी—अच्छा, तो आप क्या करने वाले हैं ? आप होते कौन हैं ? ओवरकोट पहन कर अपने को बड़ा आदमी समझने लग गये हो ? यदि तुम यह जान पाते कि तुम कितने बुद्धू दिखाई पड़ रहे हो ! ....जैसे जहाज़ में कोयला ढोने वाली औरत हो !

मा—तेरी यह हिम्मत ! मैं तेरी धृश्टता के लिये तुझे सज़ा दूंगा.

वांग की पत्नी—क्यां कहा ?

वांग-शिह-साई—(पत्नी से) तुम घर जाओ.

वांग की पत्नी—मैं नहीं जाऊंगी. (मा की ओर मुड़ कर) किस बात के लिये दंड दोगे ?

मा—तुम.........तुम.........जादूगरनी हो.

वांग-शिह-साई—ओह ! कैसी आफ़त है ! मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई है. मैंने कितने पहले सब बातें कह दी थीं. हर एक जानता है कि अब मैं प्रेतात्माओं की पूजा नहीं करता. क्या आप नहीं जानते कि मैंने अपना नगाड़ा और हवन कुंड दोनों ही तोड़ डाले हैं ?

मा—गांव में अपना अपराध स्वीकार कर लेना ही काफ़ी नहीं है. तुमको ज़िले में आ कर अपराध को स्वीकार करना पड़ेगा.

वांग की पत्नी—तो आप का ख़्याल है कि हमने अभी काफ़ी प्रायश्चित नहीं किया है ? क्या इसका यह कारन है

[وانگ - شہ - سائی کی پتنی اندر آتی ہے]

وانگ کی پتنی—(پتی کو دیکھکر) تو، تم یہاں ہو ! میں تم سے نپٹونگی جب تم گھر آؤگے . چلو، میرے ساتھ چلو .

ما—تم کیا بک رہی ہو ؟

وانگ کی پتنی—میں اپنے پتی سے گھر چلنے کے لئے کہہ رہی ہوں .

ما—وہ میٹنگ کو ادھوری چھوڑ کر نہیں جاسکتا .

وانگ کی پتنی—کیسی میٹنگ ؟

ما—ایک مہتوپورن میٹنگ ! لیو - چین - تنگ نے اپنے گھر میں گولیاں چھپا رکھی تھیں . اُسے ادھیکش پد سے الگ کرنا آوشیک ہوگیا ہے .

وانگ کی پتنی—میں ایسی باتوں میں یقین نہیں کرتی . (پتی کو پکڑ کر) چلو گھر چلیں .

ما—نہیں وہ نہیں جاسکتے .

وانگ کی پتنی—کیوں ؟

وانگ - شہ - سائی—(پتنی سے) اچھا یہی ہوگا کہ تم گھر واپس چلی جاؤ . زیادہ باتیں کرنا اچھا نہیں ہے .

ما—تم اس پرکار ہماری میٹنگ کو نہیں توڑ سکتی ہو .

وانگ کی پتنی—اچھا، تو آپ کیا کرنے والے ہیں ؟ آپ ہوتے کون ہیں ؟ اوور کوٹ پہن کر اپنے کو بڑا آدمی سمجھنے لگ گئے ہو ؟ یدی تم یہ جان پاتے کہ تم کتنے بدھو دکھائی پڑ رہے ہو !......جیسے جہاز میں کوئلہ ڈھونے والی عورت ہو !

ما—تمہاری یہ ہمت ! میں تیری دھرشٹتا کے لئے تجھے سزا دونگا .

وانگ کی پتنی—کیا کہا ؟

وانگ - شہ - سائی—(پتنی سے) تم گھر جاؤ .

وانگ کی پتنی—میں نہیں جاؤنگی . (ما کی اور مڑ کر) کس بات کے لئے ڈنڈ دوگے ؟

ما—تم......تم......جادوگرنی ہو .

وانگ - شہ - سائی—اوہ ! کیسی آفت ہے . میرے دل کی دھڑکن بڑھ گئی ہے . میں نے کتنے پہلے سب باتیں کہہ دی تھیں . ہر ایک جانتا ہے کہ اب میں پریتآتماؤں کی پوجا نہیں کرتا . کیا آپ نہیں جانتے کہ میں نے اپنا نگاڑا اور ہون کنڈ دونوں ہی توڑ ڈالے ہیں ؟

ما—گاؤں میں اپنا اپرادھ سویکار کرلینا ہی کافی نہیں ہے . تمکو ضلع میں جاکر اپرادھ کو سویکار کرنا پڑیگا .

وانگ کی پتنی—تو آپ کا خیال ہے کہ ہم نے ابھی کافی پرائشچت نہیں کیا ہے ؟ کیا اِس کا یہ کارن ہے

मा—तुम्हारा क्या मतलब है? गोलियां उसी की लकड़ियों में मिली थीं. उसकी नहीं हैं तो फिर किस की हैं? तुम गांव की स्वयं सेवक सेना के कप्तान हो. तुम स्वयं मामले की शुरू से जांच परताल न करने के अपराधी हो. यदि तुम भी इस समय अपना अपराध छिपाने का प्रयत्न करोगे तो आगे तुम्हीं दोशी होगे. तुम्हें भी और कुछ तो नहीं कहना है? (वह देखता है कि लोग उसकी बात सुनने की जगह आपस में ज्यादा बातें कर रहे हैं और लियू के अपराधी होने पर शक कर रहे हैं.) गप्प मत लड़ाओ. यदि आप लोग वांग-चान-कुई को नहीं चाहते तो मैं एक दूसरे व्यक्ति की नियुक्ति करूंगा. आप लोग दोनों में से एक को चुन सकते हैं. वांग शिह-साई के बारे में आप लोगों को क्या कहना है?

वांग-शिह-साई—अध्यक्ष मा, मैं एक जादूगर का सहयोगी भी था. आप सब जानते हैं कि राजनैतिक कार्यकर्त्ता मंडल के आने पर मैंने अपना अपराध स्वीकार किया था. मेरी नियुक्त न कीजिये. यदि मैं वास्तव में अध्यक्ष चुन लिया गया तो न केवल मैं बल्कि तमाम गांव वाले हंसेंगे.

मा—आप को बोलने की जरूरत नहीं पड़ेगी. (भीड़ की ओर मुड़ कर) दो में से एक को चुन लीजिये. किसको ज्यादा पसन्द करते हैं?

वांग-शिह-साई—अध्यक्ष मा, मुझे और ज्यादा शर्मिन्दा मत कीजिये. मैं घुटने टेक कर प्रार्थना करता हूं.

मा—आप को जनता की इच्छा के आगे घुटने टेकने चाहिये न कि मेरे. मैं कोई जोर जबरदस्ती तो कर नहीं रहा हूं. दो में से एक को चुन लीजिये. जल्दी बोलिये.

[वांग-शिह-साई की पत्नी जिसका नाम बड़ी-लाल-नाशपाती था, वांग-शिह-साई की मालिक जादूगरनी थी. वह अब अपने पति के लिये हल्ला मचाती है. वह आकर कहती है—"अपने हिस्से का खाना खा कर वह शैतान न मालूम कहां चला गया. उसे मैं गांव भर में ढूंढ आई हूं. उसे पा जाने पर मैं उसे अच्छी शिक्षा दूंगी]

एकत्रित भीड़—जादूगरनी वांग आ रही है. उसका चिल्लाना सुनाई दे रहा है. वह अपने सहायक को खोज रही है.

फान—(वांग-शिह-साई से) बेहतर है कि बाहर जा कर देखो तुम्हारी पत्नी तुम्हें खोज रही है.

वांग-शिह साई—अध्यक्ष मा, मेरी पत्नी मुझे बुलाने आई है. शायद कोई आवश्यक काम है. मुझे घर जाना है.

[वह जाने के लिये उठता है]

मा—वाह आप जा ही कैसे सकते हैं जब मीटिंग चल रही है?

ما—تمہارا کیا مطلب ھے؟ گولیاں اسی کی لکڑیوں میں ملی تھیں. اسکی نہیں ھیں تو پھر کسکی ھیں؟ تم گاؤں کی سویم سیوک سینا کے کپتان ھو. تم سویم معاملے کی شروع سے جانچ پرتال نہ کرنے کے اپرادھی ھو. یدی تم بھی اِس سمے اپنا اپرادھ چھپانے کا پریتن کروگے تو آگے تمھیں دوشی ھوگے. تمھیں بھی اور کچھ تو نہیں کہنا ھے؟ (وہ دیکھتا ھے کہ لوگ اُسکی بات سننے کی جگہ آپس میں زیادہ باتیں کر رھے ھیں اور لیو کے اپرادھی ہونے پر شک کر رھے ھیں) گپ مت لڑاؤ. یدی آپ لوگ وانگ-چان-کوی کو نہیں چاھتے تو میں ایک دوسرے ویکتی کی نیوکتی کرونگا. آپ لوگ دونوں میں سے ایک کو چن سکتے ھیں. وانگ-شہ-سائی کے بارے میں آپ لوگوں کو کیا کہنا ھے؟

وانگ-شہ-سائی—ادھیکش ما، میں ایک جادوگر کا سہیوگی بھی تھا. آپ سب جانتے ھیں کہ راجنیتک کاریہ کرتا منڈل کے آنے پر میں نے اپنا اپرادھ سویکار کیا تھا. میری نیوکتی نہ کیجئے. یدی میں واستو میں ادھیکش چن لیا گیا تو نہ کیول میں بلکہ تمام گاؤں والے ھنسینگے.

ما—آپ کو بولنے کی ضرورت نہیں پڑیگی. (بھیڑ کی اور مڑ کر) دو میں سے ایک کو چن لیجئے. کس کو زیادہ پسند کرتے ھیں؟

وانگ-شہ-سائی—ادھیکش ما، مجھے اور زیادہ شرمندہ مت کیجئے. میں گھٹنے ٹیک کر پرارتھنا کرتا ھوں.

ما—آپ کو جنتا کی اچھا کے آگے گھٹنے ٹیکنے چاھیئے نہ کہ میرے. میں کوئی زور زبردستی تو کر نہیں رھا ھوں. دو میں سے ایک کو چن لیجئے. جلدی بولیئے.

[وانگ-شہ-سائی کی پتنی جس کا نام بڑی-لال-ناشپاتی تھا شہ-سائی کی مالک جادوگرنی تھی. وہ اب اپنے پتی کے لئے ھلہ مچاتی ھے. وہ آکر کہتی ھے "اپنے حصے کا کھانا کھاکر وہ شیطان نہ معلوم کہاں چلا گیا. اُسے میں گاؤں بھر میں ڈھونڈھ آئی ھوں. اُسے پاجانے پر میں اسے اچھی شکشا دونگی]

ایکترت بھیڑ—جادوگرنی وانگ آ رھی ھے. اس کا چلانا سنائی دے رھا ھے. وہ اپنے سہایک کو کھوج رھی ھے.

فان—(وانگ-شہ-سائی سے) بہتر ھے کہ باھر جاکر دیکھو. تمہاری پتنی تمہیں کھوج رھی ھے.

وانگ-شہ-سائی—ادھیکش ما' میری پتنی مجھے بلانے آئی ھے. شاید کوئی آوشیک کام ھے. مجھے گھر جانا ھے.

[وہ جانے کے لئے اٹھتا ھے]

ما—واہ آپ جا ھی کیسے سکتے ھیں جب میٹنگ چل رھی ھے؟

मुझे यह राय नहीं दी थी कि सभा में सब लोगों के सामने सुन-लिन-को को समझाया जाय ?

मा—अध्यक्ष लियू से तुम्हारा क्या मतलब है ? क्या तुम नहीं जानते हो कि वह अपराधी है ? जितने ही बुड्ढे होते जाते हो उतना ही भुलक्कड़ होते जाते हो. अब ज्यादा बातें करने की जरूरत नहीं है.

चाओ—(असंतुष्ट और रुष्ट हो कर) मौसम कभी भी बदल सकता है और बरफ़ पड़ने लग जायेगी तब कुल फ़सल बरबाद हो जायेगी.

मा—और ज्यादा भुनभुनाने की जरूरत नहीं है. और कुछ कहना चाहते हो ?

चाओ—नहीं और कुछ नहीं.

मा—तो फिर घर जा कर सो रहो.

[चाओ भुनभुनाता हुआ घर वापस जाता है]

मा—लियू-वेन-सुंग अपराधी है. उसे अध्यक्ष पद से हटा कर किसी अन्य व्यक्ति को चुनना अत्यन्त आवश्यक हो गया है. आप लोग किस का नाम पेश करते हैं ? मेरी तो राय है वांग-चान-कुई को चुना जाये. क्या आप लोग सहमत हैं ?

[सब लोग चुप हैं]

वांग-चान-कुई—अध्यक्ष मा, पहले तो मुझे इस गांव में आये हुए कुल दो बरस हुए हैं. गांव के बारे में मैं शायद कुछ भी नहीं जानता. यदि आप लोग मुझे किसान सभा का अध्यक्ष बना देंगे तो यह वैसा ही होगा जैसे यह उम्मीद की जाये कि मुर्गा अंडे देगा !

मा—जब हमीं लोग आप को चुन रहे हैं तो आप इन्कार भी कैसे कर सकते हैं ?

वांग—मेरा मतलब है......

मा—(उसे रोक कर) आप को कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है. (भीड़ की ओर मुड़ कर) आप सब लोग एक स्वर से बोलिये—"हम वांग को चाहते हैं." उसी तरह जैसे आप लोग थियेटर में कहा करते हैं, तब फिर यह अध्यक्ष बनने से इन्कार नहीं कर सकते.

वांग—नहीं, मैं नहीं हो सकता. मैं उपयुक्त नहीं हूं.

मा—(भीड़ से) आप लोग चिल्लाते क्यों नहीं "हम वैंग को चाहते हैं." आप लोग डरते क्यों हैं ? क्या आप लोगों को नहीं मालूम कि अब मंचूओं का राज्य नहीं रहा है.

फान—ठीक है मैं कुछ कहूंगा. हम लोगों को पूरा विश्वास नहीं है कि वह गोलियां लियू-वेन-सुंग की थीं. पूरे मामले के तय होने तक हम लोगों को नये अध्यक्ष के चुनाव के प्रश्न को स्थगित कर देना चाहिये.

مجھے یہ رائے نہیں دی تھی کہ سبھا میں سب لوگوں کے سامنے سن۔لن۔کو کو سمجھایا جائے ؟

ما—ادھیکش لیو سے تمہارا کیا مطلب ہے ؟ کیا تم نہیں جانتے ہو کہ وہ اپرادھی ہے ؟ جتنے ہی بڈھے ہوتے جاتے ہو اتنا ہی بھلکڑ ہوتے جاتے ہو۔ اب زیادہ باتیں کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔

چاؤ—(اسنتشٹ اور رشٹ ہوکر) موسم کبھی بھی بدل سکتا ہے اور برف پڑنے لگ جائیگی۔ تب کل فصل برباد ہوجائیگی۔

ما—اور زیادہ بھنبھنانے کی ضرورت نہیں ہے۔ اور کچھ کہنا چاہتے ہو ؟

چاؤ—نہیں اور کچھ نہیں۔

ما—تو پھر گھر جاکر سو رہو۔

[چاؤ بھنبھناتا ہوا گھر واپس جاتا ہے]

ما—لیو۔چن۔تنگ اپرادھی ہے۔ اسے ادھیکش پد سے ہٹاکر کسی انیہ ویکتی کو چننا اتینت آوشیک ہوگیا ہے۔ آپ لوگ کس کا نام پیش کرتے ہیں ؟ میری تو رائے ہے وانگ۔چان۔کوئی کو چنا جائے۔ کیا آپ لوگ سہمت ہیں ؟

[سب لوگ چپ ہیں]

وانگ۔چان۔کوئی—ادھیکش ما، پہلے تو مجھے اس گاؤں میں آئے ہوئے کل دو برس ہوئے ہیں۔ گاؤں کے بارے میں میں شاید کچھ بھی نہیں جانتا۔ یدی آپ لوگ مجھے کسان سبھا کا ادھیکش بنا دینگے تو یہ ویسا ہی ہوگا جیسے یہ امید کی جائے کہ مرغا انڈے دیگا !

ما—جب ہمیں لوگ آپ کو چن رہے ہیں تو آپ انکار بھی کیسے کرسکتے ہیں ؟

وانگ—میرا مطلب ہے......

ما—(اسے روک کر) آپ کو کچھ بھی کہنے کی ضرورت نہیں ہے۔ (بھیڑ کی اور مڑکر) آپ سب لوگ ایک سور سے بولئے—"ہم وانگ کو چاہتے ہیں !" اسی طرح جیسے آپ لوگ تھیٹر میں کہا کرتے ہیں۔ تب پھر یہ ادھیکش بننے سے انکار نہیں کرسکتے۔

وانگ—نہیں، میں نہیں ہوسکتا۔ میں اپیکت نہیں ہوں۔

ما—(بھیڑ سے) آپ لوگ چلاتے کیوں نہیں "ہم وانگ کو چاہتے ہیں۔" آپ لوگ ڈرتے کیوں ہیں ؟ کیا آپ لوگوں کو نہیں معلوم کہ اب منچوؤں کا راجیہ نہیں رہا ہے۔

فان—ٹھیک ہے۔ میں کچھ کہونگا۔ ہم لوگوں کو پورا وشواس نہیں ہے کہ وہ گولیاں لیو۔چن۔تنگ کی تھیں۔ پورے معاملے کے طے ہونے تک ہم لوگوں کو نئے ادھیکش کے چناؤ کے پرشن کو استھگت کردینا چاہئے۔

[कई किसान फिर वापस आते हैं. फान भी रोशनी लेकर वापस आता है]

एक किसान—ज़्यादातर लोग सो रहे हैं और आने से इन्कार कर रहे हैं.

मा—दो मिनट का समय व्यतीत हो गया है. हम लोग और ज़्यादा देर रुक नहीं सकते, अब मीटिंग शुरू कर देनी चाहिये.

[फान क्रोधित हो कर रोशनी ज़मीन पर फेंक देता है और उसे बुझा देता है.]

मा—सब लोग शान्त हो जाइये और मेरी बातें सुनिये. लियू-चन-तुंग किसान सभा का अध्यक्ष था लेकिन वह लुटेरों से गुप्त सम्बन्ध भी रखता था और घर में गोलियां भी छिपाये था. यह क़ानून के विरुद्ध है. अब वह हमारा नेता नहीं रह सकता. उसे अध्यक्ष पद से अब हटा देना चाहिये. मैं नारा लगाऊंगा—"लियू-चेन-तुंग को अध्यक्ष पद से हटाया जाय" और आप लोग जवाब देंगे—"हम सहमत हैं." (वह चिल्लाता है) "लियू-चेन-तुंग को निकाला जाय" (सब लोग चुप रहते हैं) कोई नहीं बोलता ! तुम सब अब भी 'मंचूको' के गुलाम हो. मीटिंग में कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं पड़ती. कुछ कहो, कुछ बोलो.

[चाओ लाओ-लु-ताओ के घर से वापस आ जाता है]

चाओ—अध्यक्ष मा, मैं कुछ कहना चाहता हूं, यदि बोलने वाले और नहीं हैं.

मा—कहो कहो, बूढ़े चाचा.

चाओ—मैंने सुन-लिन-को से एक समझौता किया था. हम लोगों के बीच तय हुआ था कि यदि मैं उसके खेत में काम करूंगा तो वह मुझे अपनी गाड़ियां और जानवर इस्तेमाल करने देगा. फ़सल हम लोगों के बीच बराबर बंटेगी. लेकिन वह अब मुझे फ़सल उठवाने के लिये गाड़ी और मवेशी नहीं देता है. कृपया बताओ मैं क्या करूं ?

एकत्रित भीड़—उसे फ़सल पहुंचाने के लिये मजबूर किया जाना चाहिये. जब उसने समझौता किया था तो अब क्यों मुकर रहा है ?

मा—हल्ला मत मचाओ.........चुप रहो. (भीड़ की ओर मुंह करके) इसके बारे में तुम सब को चिल्लाने की क्या ज़रूरत है ? अब क्यों हल्ला मचा रहे हो ? जब मैंने बोलने के लिये कहा था तब तो सबों के मुंह में ताले जड़ गये थे. (चाओ की ओर देख कर) मैं जो कुछ कह रहा था वह तो तुमने सुना नहीं और अब दूसरी बातें करने लग गये हो.

चाओ—क्या कुछ ही देर पहले अध्यक्ष लियू ने आप से इस सम्बन्ध में बातें नहीं की थीं ? क्या आप ने

[کئی کسان پھر واپس آتے ہیں . فان بھی روشنی لے کر واپس آتا ہے]

ایک کسان—زیادہ تر لوگ سو رہے ہیں اور آنے سے انکار کر رہے ہیں .

ما—دو منٹ کا سمے ویتیت ہوگیا ہے . ہم لوگ اور زیادہ دیر رک نہیں سکتے' اب میٹنگ شروع کر دینی چاہیئے .

[فان کرودھت ہو کر روشنی زمین پر پھینک دیتا ہے اور اسے بجھا دیتا ہے]

ما—سب لوگ' شانت ہو جایئے اور میری باتیں سنیئے. لیو- چین- تنگ کسان سبھا کا ادھیکش تھا لیکن وہ لٹیروں سے گپت سمبندھ بھی رکھتا تھا اور گھر میں گولیاں بھی چھپائے تھا . یہ قانون کے ورودھ ہے . اب وہ ہمارا نیتا نہیں رہ سکتا . اُسے ادھیکش پد سے اب ہٹا دینا چاہیئے . میں نعرہ لگاؤنگا—" لیو- چین- تنگ کو ادھیکش پد سے ہٹایا جائے " اور آپ جواب دینگے— " ہم سہمت ہیں ." (وہ چلاتا ہے) " لیو- چین- تنگ کو نکالا جائے ." (سب لوگ چپ رہتے ہیں) کوئی نہیں بولتا ! تم سب اب بھی ' منچوکو ' کے غلام ہو . میٹنگ میں کچھ بھی کہنے کی ہمت نہیں پڑتی . کچھ کہو' کچھ بولو !

[چاؤ لاؤ- لو- تاؤ کے گھر سے واپس آجاتا ہے]

چاؤ—ادھیکش ما' میں کچھ کہنا چاہتا ہوں' یدی بولنے والے اور نہیں ہیں .

ما—کہو کہو' بوڑھے چچا .

چاؤ—میں نے سن- لن- کو سے ایک سمجھوتہ کیا تھا . ہم لوگوں کے بیچ طے ہوا تھا کہ یدی میں اس کے کھیت میں کام کرونگا تو وہ مجھے اپنی گاڑیاں اور جانور استعمال کرنے دیگا . فصل ہم لوگوں کے بیچ برابر برابر بٹے گی. لیکن وہ اب مجھے فصل اٹھوانے کے لئے گاڑی اور مویشی نہیں دیتا ہے. کرپیا بتاؤ میں کیا کروں ؟

ایکترت بھیڑ—اُسے فصل پہونچانے کے لئے مجبور کیا جانا چاہیئے . جب اس نے سمجھوتہ کیا تھا . تو وہ اب کیوں مکر رہا ہے ؟

ما—ہلہ مت مچاؤ.....چپ رہو. (بھیڑ کی اور منھ کرکے) اس کے بارے میں تم سب کو چلانے کی کیا ضرورت ہے ؟ اب کیوں ہلہ مچا رہے ہو ؟ جب میں نے بولنے کے لئے کہا تھا تب تو سبوں کے منھ میں تالے جڑ گئے تھے . (چاؤ کی اور دیکھکر) میں جو کچھ کہ رہا تھا وہ تو تم نے سنا نہیں اور اب دوسری باتیں کرنے لگ گئے ہو .

چاؤ—کیا کچھ ہی دیر پہلے ادھیکش لیو نے آپ سے اس سمبندھ میں باتیں نہیں کی تھیں ؟ کیا آپ نے

वह किसान—(जाते हुये) किसान सभा के सदस्य फ़ौरन इकट्ठा हो जायं.

फ़ान—हमारी किसान सभा के क़रीब सत्तर सदस्य हैं और सभी इकट्ठा कैसे हो सकते हैं, वह अकेला कैसे सबों को बुला सकता है ? किसी और को भी भेजो.

मा—वह काफ़ी ज़ोर से चिल्ला रहा है. यदि वह आते हैं तो भी ठीक है. यदि नहीं आते तो भी ठीक है. जो लोग नहीं आयेंगे उनसे कल निपटेंगे.

[फ़ान जाता है. मा आंगन में आ जाता है. चिन-कुआन यांग-फू, चांग-फ़ेंग-शान, वांग-चान-क्वी, उसका अनुकरन करते हैं.]

मा—(लियू-मा से) तुम यहां क्या कर रही हो ? तुम्हारे जैसी स्त्रियों को इस सभा से क्या मतलब ?

[लियू मा जाती है. फ़ान जलता हुआ जूट लेकर वापस लौटता है और इसकी रोशनी में सबों का चेहरा देखता है]

चिन-कुआन—मेरी ओर ठीक से देख लो. देश द्रोही नहीं हूं.

यांग-फू—क्या मैं दिखाई नहीं पड़ रहा था ? शत्रु का गुप्तचर तो हूं नहीं.

चांग-फ़ेंग-शान—मेरी ओर देखने की ज़रूरत नहीं. ज़मींदार का पालतू कुत्ता तो हूं नहीं.

मा—(फ़ान-सुन के पास जा कर) तुम क्या कर रहे हो ?

फ़ान—मैं देख रहा हूं कोई ऐसा तो नहीं है जो किसान सभा का सदस्य न हो, जासूस हो, ग़द्दार हो या मालिकों का दलाल हो. मैं उन्हें मक्खियों जैसा भगा दूंगा.

मा—(दौड़ कर आता है और रोशनी बुझा देता है) क्या चांदनी काफ़ी नहीं है ? वह सुन-लिन-को है. क्या तुम उसे नहीं जानते ? आज शाम को हमें उसकी ज़रूरत पड़ेगी.

फ़ान—वह हमारी किसान सभा का सदस्य नहीं है. किसान सभा का नियम है......

मा—वह नियम अब बदल गये हैं.

फ़ान—यह तो तुम कहते हो.

मा—(फिर नज़दीक आकर) क्या समय है ? (घड़ी को देख कर फ़ान से कहता है) अपनी मशाल फिर जला लो.

फ़ान—तुम्हीं ने तो बुझा दी थी. अब फिर क्यों जलाने को कहते हो ?

[वह क्रोधित हो कर अन्दर जाता है]

मा—चांदनी में इतनी रोशनी नहीं है कि मैं घड़ी में देख सकूं कि क्या बजा है. ठीक समय जानने के लिये ज़्यादा रोशनी की ज़रूरत है. दो मिनट से ज़्यादा हम लोग रुकेंगे भी नहीं.

وہ کسان—(جاتے ہوئے) کسان سبھا کے سدسیہ فوراً اکٹھا ہو جائیں ۔

فان—ہماری کسان سبھا کے قریب ستر سدسیہ ہیں اور سبھی اکٹھا کیسے ہوسکتے ہیں' وہ اکیلا کیسے سبوں کو بلا سکتا ہے ؟ کسی اور کو بھی بھیجو ۔

ما—وہ کافی زور سے چلا رہا ہے ۔ یدی وہ آتے ہیں تو اچھا ہے' یدی نہیں آتے تو بھی ٹھیک ہے ۔ جو لوگ نہیں آئینگے ان سے کل نپٹیں گے ۔

[فان جاتا ہے ۔ ما آنگن میں آ جاتا ہے ۔ چن- کوان' یانگ فو' چانگ-فینگ- شان' وان- چان- کوی اُس کا انوکرن کرتے ہیں]

ما—(لیو-ما سے) تم یہاں کیا کر رہی ہو ؟ تمہارے جیسی استریوں کو اس سبھا سے کیا مطلب ؟

[لیو-ما جاتی ہے ۔ فان جلتا ہوا جوٹ لے کر واپس لوٹتا ہے اور اِسکی روشنی میں سبوں کا چہرہ دیکھتا ہے]

چن- کوان—میری اور ٹھیک سے دیکھ لو ۔ دیش دروہی نہیں ہوں ۔

یانگ- فو—کیا میں دکھائی نہیں پڑ رہا تھا ؟ شترو کا گپت چر تو ہوں نہیں ۔

چانگ- فینگ- شان—میری اور دیکھنے کی ضرورت نہیں ۔ زمیندار کا پالتو کتا تو ہوں نہیں ۔

ما—(فان- سن کے پاس جا کر) تم کیا کر رہے ہو ؟

فان—میں دیکھ رہا ہوں کہ کوئی ایسا تو نہیں ہے جو کسان سبھا کا سدسیہ نہ ہو' جاسوس ہو' غدار ہو یا مالکوں کا دلال ہو ۔ میں انہیں مکھیوں جیسا بھگا دوں گا ۔

ما—(دوڑ کر آتا ہے اور روشنی بجھا دیتا ہے) کیا چاندنی کافی نہیں ہے ؟ وہ سن - لن - کو ہے ۔ کیا تم اُسے نہیں جانتے ؟ آج شام کو ہمیں اُس کی ضرورت پڑے گی ۔

فان—وہ ہماری کسان سبھا کا سدسیہ نہیں ہے۔ کسان سبھا کا نیم ہے......

ما—وہ نیم اب بدل گئے ہیں ۔

فان—یہ تو تم کہتے ہو ۔

ما—(پھر نزدیک آ کر) کیا سمے ہے ؟ گھڑی کو دیکھ کر فان کو کہتا ہے) اپنی مشعل پھر جلا لو ۔

فان—تمہیں نے تو بجھا دی تھی۔ اب پھر کیوں جلانے کو کہتے ہو ؟

[وہ کرودھت ہو کر اندر جاتا ہے]

ما—چاندنی میں اتنی روشنی نہیں ہے کہ میں گھڑی میں دیکھ سکوں کیا بجا ہے۔ ٹھیک سمے جاننے کے لئے زیادہ روشنی کی ضرورت ہے ۔ دو منٹ سے زیادہ ہم لوگ رکیں گے بھی نہیں ۔

लियू—कोई जरूरत नहीं है. मैं भागूंगा नहीं यदि तुम चाहो तब भी.

एकत्रित भीड़—नहीं यह आवश्यक नहीं है. हम यक़ीन दिलाते हैं वह भागेंगे नहीं.

मा—इनकी बातें कौन जान सकता है ? तुम्हीं सब लोगों ने तो कहा था कि यह गोलियां नहीं छुपा सकते. लेकिन ये सब हैं क्या ?

लियू—ठीक है. फान-युंग-हो, मुझे बांध दो. (वह एक रस्सी ले लेता है जो तरकारी टांगने के काम में आती थी और उसे फ़ान को दे देता है) जो कोई मुझे बांधने की आज्ञा देता है, उसे स्वयं ही मुझे बांधना होगा.

मा (फ़ान से)—जल्दी बांधो. डरो नहीं. ज़िम्मेदारी मेरी है. (फ़ान लियू को बांधता है. मा एक किसान से कहता है) इन्हें किसान सभा के दफ़्तर के छोटे वाले कमरे में रक्खो और पहरा लगा दो. इनके भागने की ज़िम्मेदारी तुम्हारी होगी. हम राजनैतिक कार्यकर्त्ता मंडल से कहेंगे कि इन से कल निपट लें.

लियू—मेरे दोस्तो, राजनैतिक कार्यकर्ता मंडल मुझे अवश्य निरपराध घोषित कर देगा. लेकिन मुझे कल ही गांव से जाना होगा और मालूम नहीं कब तक लौटूं. अतः मेरे बीबी बच्चों का ध्यान रखियेगा.

एकत्रित भीड़—इसकी ओर से निश्चिन्त रहिये. हमें आशा है कि आप शीघ्र ही लौटेंगे.

लियू—अब उस ग़ल्ले का क्या होगा जो मैं बुड्ढे लू को देना चाहता था ? उसे कल ही ज़रूरत है.

चाओ—उसे मैं पहुंचा दूंगा. कोई ज़्यादा दूर तो है नहीं.

[लियू की पत्नी अन्दर से आती है]

लियू मा—तुमने अभी खाना नहीं खाया है. जाने के पहले कुछ तो खा लो.

लियू—मुझे भूक नहीं है.

[लियू और पहरेदार किसान साथ जाते हैं. चाओ पीठ पर ग़ल्ले का थैला रख कर दूसरी ओर जाता है. दूसरे सभी लोग जाने लगते हैं.]

मा—(जाते हुये आदमियों से) आप लोग जाइये नहीं. आप लोगों से जाने के लिये किसने कहा ? वापस आइये.

चेन—अब क्या है ?

मा—अभी एक मीटिंग करना है.

फ़ान—कैसी मीटिंग ?

मा—किसान सभा की मीटिंग. (एक किसान की ओर मुड़ कर) जाओ और हर परिवार को ख़बर कर दो कि कम से कम एक व्यक्ति को यहां भेजें.

لیو—کوئی ضرورت نہیں ہے . میں بھاگونگا نہیں یدی تم چاہو تب بھی .

ایکترت بھیڑ—نہیں یہ آوشیک نہیں ہے. ہم یقین دلاتے ہیں وہ بھاگینگے نہیں .

ما—ان کی باتیں کون جان سکتا ہے ؟ تمہیں سب لوگوں نے تو کہا تھا کہ یہ گولیاں نہیں چھپا سکتے. لیکن یہ سب ہیں کیا ؟

لیو—ٹھیک ہے . فان- یونگ- ہو' مجھے باندھ دو . (وہ ایک رسی لے لیتا ہے جو ترکاری ٹانگنے کے کام میں آتی تھی اور اسے فان کو دے دیتا ہے) جو کوئی مجھے باندھنے کی آگیاں دیتا ہے اسے سویم ہی مجھے باندھنا ہوگا .

ما—(فان سے) جلدی باندھو . ڈرو نہیں. ذمہ داری میری ہے . (فان لیو کو باندھتا ہے . ما ایک کسان سے کہتا ہے) انہیں کسان سبھا کے دفتر کے چھوٹے والے کمرے میں رکھو اور پہرہ لگا دو . اُن کے بھاگنے کی ذمہ داری تمہاری ہوگی . ہم راجنیتک کاریہ کرتا منڈل سے کہیں گے کہ اِن سے کل نپٹ لیں .

لیو—میرے دوستو' راجنیتک کاریہ کرتا منڈل مجھے اوشیہ نرپرادھ گھوشت کر دے گا . لیکن مجھے کل ہی گاؤں سے جانا ہوگا اور معلوم نہیں کب تک لوٹوں . اتہ میرے بی بی بچوں کا دھیان رکھیئے گا .

ایکترت بھیڑ—اِس کی اور سے نشچنت رہیئے . ہمیں آشا ہے کہ آپ شیگھرہ ہی لوٹینگے .

لیو—اب اُس غلہ کا کیا ہوگا جو میں بڈھے لو کو دینا چاہتا تھا ؟ اسے کل ہی ضرورت ہے .

چاؤ—اُسے میں پہونچا دوں گا . کوئی زیادہ دور تو ہے نہیں .

[لیو کی پتنی اندر سے آتی ہے]

لیو ما—تم نے ابھی کھانا نہیں کھایا ہے . جانے کے پہلے کچھ تو کھا لو .

لیو—مجھے بھوک نہیں ہے .

[لیو اور پہرہ دار کسان جاتے ہیں. چاؤ پیٹھ پر غلہ کا تھیلا رکھکر دوسری اور جاتا ہے. دوسرے سبھی لوگ جانے لگتے ہیں]

ما—(جاتے ہوئے آدمیوں سے) آپ لوگ جائیے نہیں. آپ لوگوں سے جانے کے لئے کسنے کہا ؟ واپس آئیے .

چین—اب کیا ہے ؟

ما—ابھی ایک میٹنگ کرنا ہے .

فان—کیسی میٹنگ ؟

ما—کسان سبھا کی میٹنگ . (ایک کسان کی اور مڑ کر) جاؤ اور ہر پریوار کو خبر کر دو کہ کم سے کم ایک ویکتی کو یہاں بھیجے .

नहीं रहता. उन्हें अपनी आंखों पर विश्वास नहीं होता. वह सब गोलियां देखने के लिये ज्यादा नजदीक हो जाते हैं. कान और दूसरा किसान अन्दर से वापस आते हैं. वह भी गोलियां देखते हैं. मा कान की ओर मुड़ता है) देख रहे हो यह क्या चीजें हैं ? (फिर सबों से) आप सब ज्यादा ठीक तरह देख लें.

[वह सब गोलियों को हाथ में ले कर देखते हैं. यह गोलियां सच्ची ही थीं. सुन-लिन-को भी आता है.]

सुन—(एक गोली हाथ में ले कर) यह जापानी गोलियां हैं. आज कल तो इनको पा सकना बड़ा मुश्किल है.

[वह गोलियों को मा के हाथों में वापस दे देता है]

कान—यह लकड़ी में मिली थीं, क्यों ?......

पहला किसान—हां.

मा—(लिऊ से) तुम किसान सभा के अध्यक्ष हो और फिर भी गुप्त रूप से लुटेरों से सम्बन्ध रखते हो. अपने घर में गोलियां छुपा कर रखते हो. कहावत मशहूर है—"क़ानून जानने वाले का अपराध दूसरों से दुगना होता है." यदि मैंने अर्जी पर फ़ौरन ध्यान न दिया होता और जांच पड़ताल न की होती तो तुम लोग मुझे भी इसमें फांस देते. (भीड़ की ओर मुड़ कर) साथियो, इन्हें क्या सजा मिलनी चाहिये ?

एक किसान—इतना घृणित अपराध मैंने अन्य किसी को करते नहीं देखा. समझ में नहीं आता क्या सजा दी जावे ? चलो नेताओं से पूछें.

दूसरा किसान—मेरी भी समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय ? चलो नेताओं से पूछें.

लिऊ-मा—भाई मा हमारे साथ ज्यादती हुई है. यद्यपि सभी लोग यही बात कहते हैं कि गोली मैंने छुपाई हैं पर हम लोगों के साथ ज्यादती हो रही है.

मा—ये तुम्हारी लकड़ियों में मिली थीं. इससे तुम इनकार कैसे कर सकती हो ?

लिऊ मा—भाई मा तुम हमारी मदद करो. हम लोगों के साथ ज्यादती हो रही है. भाई मा तुम्हें हमारी मदद करनी ही चाहिये. मैं तुम से भीख मांगती हूं.

[वह क़रीब क़रीब रोने लगती है. मा के आगे घुटने टेक देती है. बच्चा अन्दर फिर रोने लगता है.]

लिऊ—(पत्नी से) यहां से जाओ. तुम बेशर्म हो. अन्दर जाओ नहीं तो मैं तुम्हें मारूंगा. (वह मुट्ठी बांध कर उसका पीछा करता है) जाओ ! जाओ !

[लिऊ मा अन्दर जाती है.]

मा—आप भी इतने अकड़े हो ? (कान की ओर मुड़ कर) इन्हें बांध लो.

نہیں رہتا ۔ انہیں اپنی آنکھوں پر وشواس نہیں ہوتا ۔ وہ سب گولیاں دیکھنے کے لئے زیادہ نزدیک ہو جاتے ہیں ۔ کان اور دوسرا کسان اندر سے واپس آتے ہیں ۔ وہ بھی گولیاں دیکھتے ہیں ۔ ما کان کی اور مڑتا ہے) دیکھ رہے ہو یہ کیا چیزیں ہیں ؟ (پھر سبوں سے) آپ سب زیادہ ٹھیک طرح دیکھ لیں ۔

[وہ سب گولیوں کو ہاتھ میں لیکر دیکھتے ہیں ۔ یہ گولیاں سچی ہی تھیں ۔ سن - لن - کو بھی آتا ہے]

سن—(ایک گولی ہاتھ میں لیکر) یہ جاپانی گولیاں ہیں ۔ آجکل تو ان کو پا سکنا بڑا مشکل ہے ۔

[وہ گولیوں کو ما کے ہاتھوں میں واپس دے دیتا ہے]

کان—یہ لکڑی میں ملی تھیں، کیوں ؟......

پہلا کسان—ہاں ۔

ما—(لیو سے) تم کسان سبھا کے ادھیکش ہو اور پھر بھی گپت روپ سے لٹیروں سے سمبندھ رکھتے ہو ۔ اپنے گھر میں گولیاں چھپا کر رکھتے ہو ۔ کہاوت مشہور ہے— " قانون جاننے والے کا اپرادھ دوسروں سے دوگنا ہوتا ہے ۔" یدی میں نے عرضی پر فوراً دھیان نہ دیا ہوتا اور جانچ پڑتال نہ کی ہوتی تو تم لوگ مجھے بھی اس میں پھانس دیتے ۔ (بھیڑ کی اور مڑ کر) ساتھیو! انہیں کیا سزا ملنی چاہیئے ؟

ایک کسان—اتنا گھرنت اپرادھ میں نے انیہ کسی کو کرتے نہیں دیکھا ۔ سمجھ میں نہیں آتا کیا سزا دی جائے ۔

دوسرا کسان—میری بھی سمجھ میں نہیں آتا کہ کیا کیا جائے ؟ چلو نیتاؤں سے پوچھیں ۔

لیو-ما—بھائی ما ہمارے ساتھ زیادتی ہوئی ہے ۔ یدیپی سبھی لوگ یہی بات کہتے ہیں کہ گولی میں نے چھپائی ہیں پر ہم لوگوں کے ساتھ زیادتی ہو رہی ہے ۔

ما—یہ تمہاری لکڑیوں میں ملی تھیں ۔ اس سے تم انکار کیسے کر سکتی ہو ؟

لیو ما—بھائی ما تم ہماری مدد کرو ۔ ہم لوگوں کے ساتھ زیادتی ہو رہی ہے ۔ بھائی ما تمہیں ہماری مدد کرنی ہی چاہیئے ۔ میں تم سے بھیک مانگتی ہوں ۔

[وہ قریب قریب رونے لگتی ہے ۔ ما کے آگے گھٹنے ٹیک دیتی ہے ۔ بچہ اندر پھر رونے لگتا ہے ۔]

لیو—(پتنی سے) یہاں سے جاؤ ۔ تم بے شرم ہو! اندر جاؤ نہیں تو میں تمہیں ماروں گا ۔ (وہ مٹھی باندھ کر اسکا پیچھا کرتا ہے) جاؤ! جاؤ!

[لیو ما اندر جاتی ہے]

ما—آپ بھی اتنے اکڑے ہو؟ (کان کی اور مڑ کر) انہیں باندھ لو ۔

इनके ससुर भी ऐसा कभी नहीं कर सकते. इस झूट के लिये ज़िम्मेदार कौन है ?

मा—चूंकि अब बात बढ़ चुकी है इसलिये मैं कुछ और भी कहना चाहूंगा. दुनिया अब ग़रीबों की है. 'मंचूको' के तरीक़ों के बिल्कुल विपरीत हम लोगों को ईमान्दारी से काम करना चाहिये. किसी व्यक्ति ने मेरे पास अर्ज़ी भेजी है और मुझे क़ानूनी ढंग से ही तय भी करना चाहिये. हम सच्चाई जान नहीं सकेंगे जब तक......

लियू—हां, हां, तलाशी ले लो. मुझे निरपराध साबित करने का यही एक तरीक़ा है.

लियू मा—तुम तलाशी ले लो. हम लोग निरपराध हैं. तलाशी में कुछ भी नहीं मिलेगा.

मा—(ग़ुस्से की मुद्रा बना कर) यह सरकारी काम है. यह मत कहो कि मैं तुम्हारा मित्र नहीं हूं. जहां तक हमारी व्यक्तिगत मैत्री का प्रश्न है, हम लोगों ने कभी भी एक दूसरे को बुरा भला नहीं कहा है.

लियू—कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है आप लोग तलाशी लीजिये. मुझे आशा है कि जिन लोगों को मुझ पर विश्वास है वह यहां रुकेंगे.

एकत्रित भीड़—अवश्य, अवश्य ! हम लोग आप को ऐसे ही अकेला कैसे छोड़ दें ?

मा—(अपने भाव बदल कर) अच्छी बात है. हम लोग फ़ौरन तलाशी लेंगे. आगे आओ (जैसे वह औरों को आज्ञा दे रहा हो लेकिन उसकी बात पर कोई भी अमल नहीं करता) कमान फ़ान यह आपका काम है. आप मेरी आज्ञा क्यों नहीं मानते ? या तुम्हारा भी उन गोलियों से कोई सम्पर्क था ?

फ़ान—इस एक कमरे के मकान को तोड़ डालो और ज़मीन को भी तीन फ़ुट खोद डालो तब भी कोई चीज़ मिलेगी नहीं. मेरा उन गोलियों से क्या सम्बन्ध हो सकता है ?

[वह तलाशी लेने के लिये कमरे में जाता है]

मा—तुम सब तलाशी लो ! (दो किसान फ़ांग के पीछे पीछे जाते हैं) सबको अन्दर जाने की ज़रूरत नहीं है. (एक किसान को रोक कर) तुम बाहर तलाशी लो. (दूसरा किसान कमरे में जाता है. पहिला किसान बाहर बिना किसी उत्साह के लकड़ियां उलटने पलटने लगता है. सफ़ेद कपड़े का बंडल दिखाई पड़ता है. मा इसी की आशा लगाये था.) यह क्या है ? मुझे देखने दो. (पहला किसान बंडल मा को दे देता है जो उसे खोलता है) देखो यह क्या है ! (लियू के मुंह पर यह करारा तमांचा है. वह स्तब्ध हो कर गोलियों की ओर देखने लगता है. एकत्रित भीड़ के भी आश्चर्य का ठिकाना

نہیں کرینگے . اِن کے سسر بھی ایسا کبھی نہیں کر سکتے . اِس جھوٹ کے لئے ذمہ دار کون ہے ؟

ما—چونکہ اب بات بڑھ چکی ہے اِسلیئے میں کچھ اور بھی کہنا چاہوں گا . دنیا اب غریبوں کی ہے . ' منچوکو ' کے طریقوں کے بالکل وپریت ہم لوگوں کو ایمانداری سے کام کرنا چاہیئے . کسی ویکتی نے میرے پاس عرضی بھیجی ہے اور مجھے قانونی ڈھنگ سے ہی طے بھی کرنا چاہیئے . ہم سچائی جان نہیں سکینگے جب تک......

لیو—ہاں ' ہاں ' تلاشی لے لو . مجھے نرپرادھ ثابت کرنے کا یہی ایک طریقہ ہے .

لیو ما—تم تلاشی لے لو. ہم لوگ نرپرادھ ہیں . تلاشی میں کچھ بھی نہیں ملیگا .

ما—(غصہ کی مدرا بنا کر) یہ سرکاری کام ہے . یہ مت کہو کہ میں تمہارا متر نہیں ہوں . جہاں تک ہماری ویکتی گت میتری کا پرشن ہے ' ہم لوگوں نے کبھی ایک دوسرے کو برا بھلا نہیں کہا ہے .

لیو—کچھ اور کہنے کی آوشیکتا نہیں ہے . آپ لوگ تلاشی لیجیئے . مجھے آشا ہے کہ جن لوگوں کو مجھ پر وشواس ہے وہ یہاں رکیں گے .

ایکترت بھیڑ—اوشیہ ' اوشیہ ! ہم لوگ آپ کو ایسے ہی اکیلا کیسے چھوڑ دیں ؟

ما—(اپنے بھاؤ بدلکر) اچھی بات ہے . ہم لوگ فوراً تلاشی لینگے . آگے آؤ (جیسے وہ اوروں کو آگیاں دے رہا ہو لیکن اُسکی پر کوئی بھی عمل نہیں کرتا) کپتان فان یہ آپ کا کام ہے . آپ میری آگیاں کیوں نہیں مانتے یا تمہارا بھی اُن گولیاں سے کوئی سمپرک تھا ؟

فان—اِس ایک کمرے کے مکان کو توڑ ڈالو اور زمین کو بھی تین فٹ کھود ڈالو تب بھی کوئی چیز ملیگی نہیں . میرا اُن گولیوں سے کیا سمبندھ ہو سکتا ہے ؟

[وہ تلاشی لینے کے لئے کمرے میں جاتا ہے]

ما—تم سب تلاشی لو ! (دو کسان فانگ کے پیچھے پیچھے جاتے ہیں) سب کو اندر جانے کی ضرورت نہیں ہے . (ایک کسان کو روک کر) تم باہر تلاشی لو . (دوسرا کسان کمرے میں جاتا ہے . پہلا کسان باہر بنا کسی اُتساہ کے لکڑیاں الٹنے پلٹنے لگتا ہے . سفید کپڑے کا بنڈل دکھائی پڑتا ہے . ما اسی کی آشا لگائے تھا) یہ کیا ہے ؟ مجھے دیکھنے دو . (پہلا کسان بنڈل ما کو دے دیتا ہے جو اسے کھولتا ہے) دیکھو یہ کیا ہیں ! (لیو کے منہ پر یہ کرارا طمانچہ ہے . وہ اِستبدھ ہو کر گولیوں کی اور دیکھنے لگتا ہے. ایکترت بھیڑ کے بھی آشچریہ کا ٹھکانا

किसान सभा के नेता हैं. ऐसी कौन सी गम्भीर बात उठ खड़ी हुई है जिसे आप दोनों शान्ति पूर्वक हल नहीं कर सकते ?

फ़ान-युंग-हो—आप दोनों ही किसान सभा के नेता हैं. आप लोगों को इस प्रकार झगड़ा करना शोभा नहीं देता है.

चेन-तेह-कू—जवान आदमी गुस्सा भी जल्दी हो जाते हैं. (चाओ की ओर मुड़ कर) हमारी तुम्हारी उम्र के आदमी झगड़ा नहीं करते. हम लोगों में झगड़ा करने के लिये ताक़त रह ही नहीं गई है.

एकत्रित भीड़—आख़िर मामला क्या है ? यह झगड़ा क्यों हो रहा है ? क्या कोई ख़ास बात हो गई है ?

मा—अच्छा ही हुआ कि आप सब लोग आ गये हैं नहीं तो शायद मुझी को बुलवाना पड़ता. अब मैं आप लोगों को बतलाऊंगा कि झगड़ा है किस बात का. (लियू की ओर मुड़ कर) मैंने कभी तुमसे शत्रुता नहीं की है. चूंकि मैं बड़ा हूं इसलिये मुझे छूट देनी पड़ती है, चूंकि तुम छोटे हो, इसलिये मैं न मालूम तुम्हारे कितने अपराधों को नज़रअन्दाज़ कर देता हूं.

लियू—यह सब कहने से क्या लाभ ? हमारे पड़ोसी जानना चाहते हैं कि आख़िर मामला क्या है ?

एकत्रित भीड़—यही ठीक है, यही ठीक है ! (लियू की ओर मुड़ कर) अध्यक्ष जी, आप ही बतलाइये मामला है क्या ?

लियू—इसका कहना है कि इस के पास एक गुमनाम चिट्ठी आई है जिसमें मुझ पर और मेरे ससुर पर दोश लगाया गया है कि हम लोग लुटेरों को गोलियां सप्लाई करते हैं. इसका यह भी कहना है कि मेरे ससुर कल भी कुछ गोलियां लाये थे. क्या आप लोगों को विश्वास है कि मैं ऐसा कर सकता हूं ?

लियू मा—(जल्दी से) मेरे बाप ज़िन्दगी भर ईमान्दार रहे हैं. वह ऐसा कर ही कैसे सकते हैं ?

लियू—(उसे रोक कर) बोलना बन्द करो दूसरों को कहने दो.

फ़ान—मैं विश्वास के साथ कहता हूं कि लियू-चेंग-तुंग ऐसा कभी नहीं कर सकता. (लियू की ओर मुड़ कर) मैं गांव की स्वयं सेवक सेना का कप्तान हूं. यदि तुम ऐसा करना भी चाहते तो मैं नहीं होने देता.

चेन—मैं इनके ससुर को जानता हूं. एक साथ उनके गांव में रहा भी हूं. मेरी उनसे बातें भी हुई हैं. वह सज्जन व्यक्ति हैं.

एकत्रित भीड़—हम लियू-चेन-तुंग को प्रतिदिन देखते हैं. इन्हें कौन नहीं जानता ? यह ऐसा कभी नहीं करेंगे.

کسان سبھا کے نیتا ھیں . ایسی کون سی گمبھیر بات اٹھ کھڑی ھوئی ہے جسے آپ دونوں شانتی پوروک حل نہیں کرسکتے ؟

فان - یُنگ - ھو—آپ دونوں ھی کسان سبھا کے نیتا ھیں . آپ لوگوں کو اِس پرکار جھگڑا کرنا شوبھا نہیں دیتا ہے .

چین - تہ - کو—جوان آدمی غصہ بھی جلدی ھو جاتے ھیں (چاؤ کی اور مڑ کر) ھماری تمہاری عمر کے آدمی جھگڑا نہیں کرتے . ھم لوگوں میں جھگڑا کرنے کے لئے طاقت رہ ھی نہیں گئی ہے .

ایکترت بھیڑ—آخر معاملہ کیا ہے ؟ یہ جھگڑا کیوں ھو رھا ہے ؟ کیا کوئی خاص بات ھو گئی ہے ؟

ما—اچھا ھی ھوا کہ آپ سب لوگ آ گئے ھیں نہیں تو شاید مجھی کو بلانا پڑتا . اب میں آپ لوگوں کو بتلاؤں گا کہ جھگڑا ہے کس بات کا . (لیو کی اور مڑ کر) میں نے کبھی تم سے شترتا نہیں کی ہے . چونکہ میں بڑا ھوں اِسلئے مجھے چھوٹ دینی پڑتی ہے ' چونکہ تم چھوٹے ھو ' اِس لئے میں نہ معلوم تمہارے کتنے اپرادھوں کو نظرانداز کر دیتا ھوں .

لیو—یہ سب کہنے سے کیا لابھ ؟ ھمارے پڑوسی جاننا چاھتے ھیں کہ آخر معاملہ کیا ہے ؟

ایکترت بھیڑ—یہی ٹھیک ہے ' یہی ٹھیک ہے ! (لیو کی اور مڑ کر) ادھیکش جی ' آپ ھی بتلائیے معاملہ ہے کیا ؟

لیو—اِس کا کہنا ہے کہ اِس کے پاس ایک گمنام چٹھی آئی ہے جس میں مجھ پر اور میرے سسر پر دوش لگایا گیا ہے کہ ھم لوگ لٹیروں کو گولیاں سپلائی کرتے ھیں . اِس کا یہ بھی کہنا ہے کہ میرے سسر کل بھی کچھ گولیاں لائے تھے . کیا آپ لوگوں کو وشواس ہے کہ میں ایسا کر سکتا ھوں ؟

لیو ما—(جلدی سے) میرے باپ زندگی بھر ایماندار رہے ھیں . وہ ایسا کر ھی کیسے سکتے ھیں ؟

لیو—(اسے روک کر) بولنا بند کرو دوسروں کو کہنے دو .

فان—میں وشواس کے ساتھ کہتا ھوں کہ لیو- چینگ- تنگ ایسا کبھی نہیں کر سکتا . (لیو کی اور مڑ کر) میں گاؤں کی سویم سیوک سینا کا کپتان ھوں . یدی تم ایسا کرنا بھی چاھتے تو میں نہیں ھونے دیتا .

چین—میں اِن کے سسر کو جانتا ھوں . ایک ساتھ اُن کے گاؤں میں رھا بھی ھوں . میری اُن سے باتیں بھی ھوئی ھیں . وہ سجن ویکتی ھیں .

ایکترت بھیڑ—ھم لیو - چین - تنگ کو پرتی دن دیکھتے ھیں اِنہیں کون نہیں جانتا ؟ یہ ایسا کبھی

मा—क्यों बूढ़े चरखा, क्या जिस व्यक्ति ने इतना बड़ा अपराध किया है वह देखने भी देगा ?

लियू—अब मेरी बारी है. क्या तुम मेरा विश्वास करते हो ? इस गांव मे मैं बहुत दिनों से रह रहा हूं. मैं यहीं बड़ा हुआ हूं. बचपन मैं सूअर चराया करता था. मैं पहले आधी तनख्वाह और बाद में पूरी तनख्वाह पर काम करता था. मैंने अपनी आत्मा के विरुद्ध कोई काम नहीं किया है. गांव का हर आदमी मुझे जानता है. हाल ही में ग़रीबों ने मुझे किसान सभा का अध्यक्ष चुना है. वह सब मेरे माता पिता के समान हैं और मैं उनकी संतान की भांति बढ़ रहा हूं. ग़रीबों के हितों के विरुद्ध काम करना उनकी पीठ में छुरा भोंकने के समान है. अपनी आत्मा की पुकार के विरुद्ध काम करने की अपेक्षा मैं मर जाना अधिक उचित समझूंगा.

लियू-मा—मेरा बाप बूढ़ा और दमा का मरीज़ है. बिना छड़ी के तो वह एक क़दम चल भी नहीं सकता और क़दम क़दम पर रुक कर सुस्ताना पड़ता है. जो तुमने कहा है वह कर ही कैसे सकता है ? वह बहरा है और क़रीब क़रीब अन्धा भी. अपने हिलते हाथों से वह गोली गिन भी तो नहीं सकता. वह यह काम कर कैसे सकता है ?

[लियू और उसकी पत्नी के उत्तेजित हो कर ज़ोर ज़ोर से बातें करने के कारन बहुत से लोग इकट्ठा हो जाते हैं. फ़ान-यंग-हो, चेन-तेह-फ़ू और कई किसान एक के बाद दूसरे आ जाते हैं. येही मा की इच्छा भी थी.]

मा—मैंने तो अभी कुछ भी नहीं कहा है और तुम बिगड़ खड़े हुये हो. मेरी तुम से कोई दुश्मनी तो है नहीं और मुझे इससे मतलब ही क्या है ? इस तरह से मुझे बेवक़ूफ़ बनाने के चक्कर में क्यों हो ?

[सुन भी पीछे से आकर चिमनी के पास खड़ा हो तमाम बातें सुनने लगता है.]

लियू—मैं तुम्हें क्यों बेवक़ूफ़ बनाने लगा ? क्या मैं ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकता यदि कोई मुझे नुक़सान पहुंचाने लग जाये ?

चाओ—ठीक है अच्छा अब झगड़ा मत करो (लियू की ओर मुड़कर) उत्तेजित मत हो.

लियू—मैं कहां उत्तेजित हो रहा हूं ?

चाओ—(मा से) तुम भी मत उत्तेजित हो.

मा—मैं कहां उत्तेजित हो रहा हूं ?

चाओ—अपने सभी पड़ोसियों के आगे हम लोग शान्त हो कर सभी मामले सुलझा सकते हैं.

एक किसान—(जिसे वांग-शि-साई कहते हैं और जो एक जादूगर का सहयोगी रह चुका है) आप दोनों ही

ما—کیوں بوڑھے چرخا' کیا جس ویکتی نے اتنا بڑا اپرادھ کیا ھے وہ دیکھنے بھی دیگا ؟

لیو—اب میری باری ھے . کیا تم میرا وشواس کرتے ھو ؟ اس گاؤں میں میں بہت دنوں سے رہ رھا ھوں . میں یہیں بڑا ھوا ھوں . بچپن میں میں سور چرایا کرتا تھا . میں پہلے آدھی تنخواہ اور بعد میں پوری تنخواہ پر کام کرتا تھا . میں نے اپنی آتما کے ورودھ کوئی کام نہیں کیا ھے . گاؤں کا ھر آدمی مجھے جانتا ھے . حال ھی میں غریبوں نے مجھے کسان سبھا کا ادھیکش چنا ھے . وہ سب میرے ماتا پتا کے سمان ھیں اور میں اُنکی سنتان کی بھانتی بڑھ رھا ھوں . غریبوں کے ھتوں کے ورودھ کام کرنا اُنکی پیٹھ میں چھرا بھونکنے کے سمان ھے . اپنی آتما کی پکار کے ورودھ کام کرنے کی اپیکشا میں مرجانا ادھک اُچت سمجھونگا .

لیوما—میرا باپ بوڑھا اور دمہ کا مریض ھے . بنا چھڑی کے تو وہ ایک قدم چل بھی نہیں سکتا اور قدم قدم پر رک کر سستانا پڑتا ھے . جو تم نے کہا ھے وہ کرھی کیسے سکتا ھے ؟ وہ بہرا ھے اور قریب قریب اندھا بھی . اپنے ھلتے ھوئے ھاتھوں سے وہ گولی گن بھی تو نہیں سکتا . وہ یہ کام کر کیسے سکتا ھے ؟

[لیو اور اسکی پتنی کے اُتیجت ھوکر زور زور سے باتیں کرنے کے کارن بہت سے لوگ اکٹھا ھو جاتے ھیں . فان - ینگ - ھو' چین - تہ - فو اور کئی کسان ایک کے بعد دوسرے آجاتے ھیں . یہی ما کی اِچھا بھی تھی]

ما—میں نے تو ابھی کچھ بھی نہیں کہا ھے اور تم بگڑ کھڑے ھوئے ھو . میری تم سے کوئی دشمنی تو ھے نہیں اور مجھے اِس سے مطلب ھی کیا ھے ؟ اِس طرح سے مجھے بیوقوف بنانے کے چکر میں کیوں ھو ؟

[سن بھی پیچھے سے آکر چمنی کے پاس کھڑا ھوکر تمام باتیں سننے لگتا ھے]

لیو—میں تمہیں کیوں بیوقوف بنانے لگا ؟ کیا میں خود اپنی حفاظت نہیں کرسکتا یدی کوئی مجھے نقصان پہنچانے لگ جائے ؟

چاؤ—ٹھیک ھے . اچھا اب جھگڑا مت کرو . (لیو کی اور مڑکر) اُتیجت مت ھو .

لیو—میں کہاں اُتیجت ھو رھا ھوں ؟

چاؤ—(ما سے) تم بھی مت اُتیجت ھو .

ما—میں کہاں اُتیجت ھو رھا ھوں ؟

چاؤ—اپنے سبھی پڑوسیوں کے آگے ھم لوگ شانت ھوکر سبھی معاملے سلجھا سکتے ھیں .

ایک کسان—(جسے وانگ - شی - سائی کہتے ھیں اور جو ایک جادوگر کا سہیوگی رہ چکا ھے) آپ دونوں ھی

धरती के मालिक

(गितांक से आगे)

मा—मेरी बात काटो नहीं बूढ़े बच्चा. मुझे स्वयं पूछने दो. (लियू की ओर मुड़ कर) क्या कल तुम्हारे ससुर तुमसे मिलने आये थे ?

लियू—हां, आये तो थे लेकिन रुके नहीं. पर तुम्हें इससे क्या ?

मा—तुम्हारे ससुर कितनी ही बार लुटेरों के पास गोलियों के लिये जा चुके हैं. तुम उनके दलाल हो और उन्हें बेचते हो. वह कल कुछ गोलियां लाये थे जिन्हें तुमने छुपा रक्खा है.

लियू—कितना बड़ा झूट है !

लियूमा—मेरा बाप ऐसा आदमी नहीं है. वह ऐसा कर ही कैसे सकता है ? वह……

लियू—(उसे रोक कर) चुप रहो. (मा की ओर मुड़ कर) मुझ पर किसने दोषारोपन किया है ? मैं उसके विरुद्ध अदालत जाऊंगा.

मा—यह एक गुमनाम चिट्ठी पर आधारित है. मैं नहीं जानता कि वह कौन है.

लियू—ज़रा मुझे दिखलाओ तो.

मा—(जेब से अर्ज़ी निकाल कर) यह रही. सभी बातें साफ़ साफ़ लिखी हैं. (वह इसे लियू को देता है)

लियू—(अर्ज़ी लेकर) तुम्हें यह किसने दी ?

मा—मैं नहीं जानता.

लियू—तुम यह भी नहीं जानते कि इसे तुमने कहां से पाया ?

मा—तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते ?……क्यों ? दोपहर में मेरा कोट किसान सभा के दफ़्तर में रह गया था. बहुत से लोग वहां इकट्ठा थे। जब मैंने कोट फिर पहना तो यह चिट्ठी जेब में पड़ी मिली.

लियू—तुमने पहले क्यों नहीं कहा था ?

मा—(परेशान हो कर)……मैं……हां……हां पर क्या अब ज़्यादा देर हो गई है ?

लियू—क्या तुम्हें अर्ज़ी पर विश्वास है ?

मा—मैं कुछ कह नहीं सकता. मैंने खुद तो गोलियां देखी नहीं थीं. मैं इन्कार भी नहीं कर सकता 'क्योंकि अर्ज़ी में यही लिखा हुआ है. किसी ने अकारन ही तो लिखा न होगा.

चाओ—सुनी हुई बातों पर विश्वास मत किया करो. देखी हुई बातों में विश्वास रक्खा करो.

دھرتی کے مالک

(گتانک سے آگے)

ما—میری بات کاٹو نہیں بوڑھے بچا . مجھے سوئم پوچھنے دو . (لیو کی اور مڑ کر) کیا کل تمہارے سسر تم سے ملنے آئے تھے ؟

لیو—ہاں' آئے تو تھے لیکن رکے نہیں . پر تمہیں اس سے کیا ؟

ما—تمہارے سسر کتنی ہی بار لٹیروں کے پاس گولیوں کے لئے جا چکے ہیں . تم اُن کے دلال ہو اور اُنہیں بیچتے ہو . وہ کل کچھ گولیاں لائے تھے جنہیں تم نے چھپا رکھا ہے .

لیو—کتنا بڑا جھوٹ ہے !

لیوما—میرا باپ ایسا آدمی نہیں ہے . وہ ایسا کر ہی کیسے سکتا ہے ؟ وہ……

لیو—(اُسے روک کر) چپ رہو . (ما کی اور مڑکر) مجھ پر کس نے دوشاروپن کیا ہے ؟ میں اُس کے وردھ عدالت جاؤنگا .

ما—یہ ایک گمنام چٹھی پر آدھارت ہے . میں نہیں جانتا کہ وہ کون ہے .

لیو—ذرا مجھے دکھلاؤ تو .

ما—(جیب سے عرضی نکالکر) یہ رہی . سبھی باتیں صاف صاف لکھی ہیں . (وہ اسے لیو کو دیتا ہے)

لیو—(عرضی لیکر) تمہیں یہ کس نے دی ؟

ما—میں نہیں جانتا .

لیو—تم یہ بھی نہیں جانتے کہ اِسے تم نے کہاں سے پایا ؟

ما—تم مجھ پر وشواس نہیں کرتے ؟……کیوں ؟ دوپہر میں میرا کوٹ کسان سبھا کے دفتر میں رہ گیا تھا . بہت سے لوگ وہاں اکٹھا تھے . جب میں نے کوٹ پھر پہنا تو یہ چٹھی جیب میں پڑی ملی .

لیو—تم نے پہلے کیوں نہیں کہا تھا ؟

ما—(پریشان ہوکر)……میں……ہاں……ہاں پر کیا اب زیادہ دیر ہوگئی ہے ؟

لیو—کیا تمہیں عرضی پر وشواس ہے ؟

ما—میں کچھ کہہ نہیں سکتا . میں نے خود تو گولیاں دیکھی نہیں تھیں . میں انکار بھی نہیں کر سکتا کیونکہ عرضی میں یہی لکھا ہوا ہے . کسی نے اکارن ہی تو لکھا نہ ہوگا .

چاؤ—سنی ہوئی باتوں پر وشواس مت کرو . دیکھی ہوئی باتوں میں وشواس رکھا کرو .

रियासतों से क्यों न घिरा हो. मार्क्स ने अपनी ज़िन्दगी में उस विचार को कभी नहीं माना. हां, लेनिन मार्क्स की यह बात ज़रूर मानता रहा कि सोशलिज़्म यानी समाजवाद साम्यवाद का रूप कभी नहीं ले सकता जब तक वह सारी दुनिया के बड़े पैमाने पर न मान लिया जाय. आगे जो उन्नति और हुई उसके प्रकाश में स्टालिन ने बढ़ कर यह बात कही कि कई सूरतों में अकेले एक देश में अब यह सम्भव है कि समाजवाद साम्यवाद का रूप ले ले. लेनिन ने अपने जीते जी यह बात कभी स्वीकार नहीं की.

मार्क्स के सिद्धान्त की यह उन्नति संशोधनवाद नहीं समझी जा सकती. संशोधन का अर्थ है किन्हीं विश्वासों को विचारों के आधार पर रद्द कर देना. लेनिन, स्टालिन ने ऐसा नहीं किया. दोनों ने मार्क्स के सिद्धान्त में कोई संशोधन नहीं किया. दोनों के सामने समय ने वह हालत ला रखी जिसकी वजह से उन्हें मार्क्स के सिद्धान्तों के असली नियमों में कुछ हेर फेर करना पड़ा. नये अनुभवों के आधार पर सिद्धान्त में हेर फेर करना संशोधन नहीं कहलाता. दर्शन की एक छोटी सी रूसी डिक्शनरी में "डागमा—डागमेटिज़्म" यानी कट्टरता और कट्टरवाद का यह अर्थ दिया है—एक फ़ैसला या सिद्धान्त जो अपने आप में सही हो अगर अनेकांत रूप से नहीं सोचा गया है यानी जिससे बदलती हुई परिस्थितियों और आस पास की हालतों का ध्यान नहीं रखा गया है वह कट्टरता बन सकता है. बस इसी अर्थ में मार्क्स और एंजिल सदा ज़ोर देते रहे कि उनकी सीख कट्टरता नहीं है. काम करने के लिये मांझी है. लेनिन और स्टालिन ने उन विरोधियों की एक बात मान कर नहीं दी जो मार्क्सवाद को कट्टरतावाद का भोंडा रूप देना चाहते थे. सचमुच क्रांतकारी मार्क्सवाद रचनात्मक मार्क्सवाद है. नई नई सामग्री लेता हुआ दिनों दिन मालदार होता जा रहा है. समाजिक बढ़वारी का सिद्धांत और जनता की क्रांतिकारी क्रियाएं उसमें जगह लेती जा रही हैं. सोवियत विचार पर खूब टिकाएं होती जा रही हैं. उस विचार में जवाब देने की ताक़त है. जब तक मार्क्स की मूल जगह उसके भक्त लोग नहीं छोड़ते तब तक यह रीति उन आदमियों को अभियुक्त समझती रहेगी जो मार्क्स के सिद्धांत को अंधे हो कर कट्टर-पने से चिपके रहेंगे. उधर यह भी कर पीछ, कि अगर कोई मार्क्स की जगह से हटेगा या ने ऐसा रूप पढ़त करेगा तो उसकी बदनामी करने में न में और उन विश्व वह शास्त्रीय संस्थापकों के मूल सिद्धान्त इस मामले में दूर बेतुकीवाद को सिद्धान्त में शामिल

ریاستوں سے کیوں نہ گھرا ہو ۔ مارکس نے اپنی زندگی میں اس وچار کو کبھی نہیں مانا ۔ ہاں، لینن مارکس کی یہ بات ضرور مانتا رہا کہ سوشلزم یعنی سماج واد سامیہ واد کا روپ کبھی نہیں لے سکتا جب تک وہ ساری دنیا کے بڑے پیمانے پر نہ مان لیا جائے ۔ آگے جو اُنتی اور ہوئی اُس کے پرکاش میں اسٹالن نے بڑھکر یہ بات کہی کہ کئی صورتوں میں اکیلے ایک دیش میں اب یہ سمبھو ہے کہ سماج واد سامیہ واد کا روپ لے لے۔ لینن نے اپنے جیتے جی یہ بات کبھی سویکار نہیں کی ۔

مارکس کے سدھانت کی یہ اُنتی سنشودھن واد نہیں سمجھی جا سکتی ۔ سنشودھن کا ارتھ ہے کنہیں وشواسوں کو وچاروں کے آدھار پر رد کر دینا ۔ لینن، اسٹالن نے ایسا نہیں کیا ۔ دونوں نے مارکس کے سدھانت میں کوئی سنشودھن نہیں کیا ۔ دونوں کے سامنے سمے نے وہ حالت لا رکھی جس کی وجہ سے انہیں مارکس کے سدھانتوں کے اصلی نیموں میں کچھ ہیر پھیر کرنا پڑا ۔ نئے انوبھوں کے آدھار پر سدھانت میں ہیر پھیر کرنا سنشودھن نہیں کہلاتا ۔ درشن کی ایک چھوٹی سی ڈکشنری میں "ڈاگما—ڈاگمیٹیسزم" یعنی کٹرتا اور کٹرواد کا یہ ارتھ دیا ہے—ایک فیصلہ یا سدھانت جو اپنے آپ میں صحیح ہو اگر انیکانت روپ سے نہیں سوچا گیا ہے یعنی جس میں بدلتی ہوئی پرستھتیوں اور آس پاس کی حالتوں کا دھیان نہیں رکھا گیا ہے وہ کٹرتا بن سکتا ہے ۔ بس اِسی ارتھ میں مارکس اور اینجل سدا زور دیتے رہے کہ ان کی سیکھ کٹرتا نہیں ہے ۔ کام کرنے کے لئے مانجھی ہے ۔ لینن اور اسٹالن نے اُن ورودھیوں کی ایک بات مان کر نہیں دی جو مارکس واد کو کٹرتا واد کا بھونڈا روپ دینا چاہتے تھے ۔ سچ مچ کرانتی کاری مارکس واد، رچناتمک مارکس واد ہے ۔ نئی نئی سامگری لیتا ہوا دنوں دن مالدار ہوتا جا رہا ہے ۔ سماجک بڑھواری کا سدھانت اور جنتا کی کرانتکاری کریائیں اس میں جگہ لیتی جا رہی ہیں ۔ سوویت وچار پر خوب ٹیکائیں ہوتی جا رہی ہیں ۔ اس وچار میں جواب دینے کی طاقت ہے ۔ جب تک مارکس کی مول جگہ اس کے بھکت لوگ نہیں چھوڑتے تب تک یہ ریتی ان آدمیوں کو ابھیکت سمجھتی رہے گی جو مارکس کے سدھانت کو اندھے ہو کر کٹرپنے سے چپکے رہیں گے ۔ اِدھر یہ بھی بات ہے کہ اگر کوئی مارکس کی جگہ سے ہٹے گا یا اس میں کمی بڑھتی کرے گا تو اُسکی بدنامی کرنے میں نہ چوکیں گے کیونکہ وہ شاستریہ سنستھاپکوں کے مول سدھانت سے ہٹتا ہے اور بےتکی واد کو سدھانت میں شامل کرتا ہے ۔

मानो एकदम उलटे हो गये हैं. अभिप्राय कुछ का कुछ हो गया है. बीसवी सदी का जनवादी सत्रहवीं सदी के लाक से बहुत आगे बढ़ गया. अगर तुम ऐसे ही अच्छे जनवादी हो जैसा लाक अपने समय में था तो तुम लाक की तरह ही आज सबसे आगे दिखाई दोगे. लाक जैसे विचार रख कर यानी वही क़ानून को अपना कर (आ आ है, और अन आ नहीं हो सकता) तुम लोकशाही के दुश्मन बन जावोगे और लाक लोकशाही का दोस्त ही बना रहेगा. जितना लाक अपने समय में आगे बढ़ा हुआ था तुम अपने समय में उतने ही पीछे हो जाओगे.

माटीवादी अनेकांती की नजर में कम ज्यादा यही दलील शुरू के विचारकों और दार्शनिकों के लिये काम में लाई जा सकती है. क्या कोई आदमी सच्चा अरस्तूवादी समझा जा सकता है? नहीं अगर बीसवीं सदी में वह वही विश्वास और विचार रखता है जो अरस्तु चौथी सदी में रखता था, अगर वह अरस्तू जैसे काम आज करता है, अगर वह अरस्तू के विश्वासों का वही अर्थ लगाता है जो अरस्तू ने अपने समय लगाए थे. यह साफ़ है कि अगर तुम दूसरे के विश्वासों को शब्द सह अपनाते हो तो तुम्हें उस आत्मा को भी अपनाना पड़ेगा, उस उत्साह को अपनाना पड़ेगा, उस स्पिरिट से काम करना होगा जो इन विचारों के पीछे थी. हां यह देख लेना चाहिये कि आज भी वह ही हालत मौजूद है जो इन विश्वासों के समय थी या नहीं. सोवियत विचारकों का कहना है कि बीसवीं सदी की पांचवीं दशाब्दि में मार्क्सवादी बनना सिर्फ यह नहीं है कि वह करना जो मार्क्स ने 75 या 100 बरस पहले किया था. नई अवस्थाएं पैदा हो गई हैं. इस लिहाज से मार्क्स के कुछ विश्वास अब ठीक नहीं रह गये. कुछ का यह हाल है कि वह रद्दोबदल चाहते हैं. मार्क्स खुद भी जीते जी समय समय पर कहा करते थे--

"Jeg he suis pas marks xiate."

मार्क्स ने अपने कई पुराने विचारों को कुछ दिनों के बाद बदल दिया था. वह अपने भक्तों पर जोर दिया करता था कि मेरे पहले विचारों को छोड़ दो. उनसे न चिपको, मेरे नये विश्वासों पर विश्वास करो.

यह हम जान ही चुके हैं कि लेनिन ने जब अपने सामने साम्राज्यवाद का वह रूप देखा जो मार्क्स के सामने न था सो उसने पूंजीवाद को बढ़ते हुए देख कर और उसके राजनैतिक परिनामों को सोच कर मार्क्स के सिद्धान्तों में घटत बढ़त की. लेनिन ने "पूंजीवाद की असम बढ़वारी" के क़ानून में काफी घटत बढ़त की जिसका एक परिनाम यह निकला कि एक देश में भी समाजवाद की विजय हो सकती है चाहे वह कितना ही पूंजीवादी

معنی ایک دم اُلٹے ہوگئے ہوں ۔ ابھیپرائے کچھ کا کچھ ہوگیا ہے ۔ بیسویں صدی کا جن‌وادی سترھویں صدی کے لاک سے بہت آگے بڑھ گیا. اگر تم ایسے ہی اچھے جن‌وادی ہو جیسا لاک اپنے سمے میں تھا تو تم لاک کی طرح ہی آج سب سے آگے دکھائی دوگے ۔ لاک جیسے وچار رکھکر یعنی وہی قانون کو اپناکر (آ آ ہے اور ان آ نہیں ہوسکتا) تم لوک شاہی کے دشمن بن جاؤگے اور لاک لوک شاہی کا دوست ہی بنا رہیگا ۔ جتنا لاک اپنے سمے میں آگے بڑھا ہوا تھا تم اپنے سمے میں اتنے ہی پیچھے ہو جاؤگے ۔

ماٹی وادی انیکانتی کی نظر میں کم زیادہ یہی دلیل شروع کے وچارکوں اور دارشنکوں کے لئے کام میں لائی جا سکتی ہے ۔ کیا کوئی آدمی سچا ارسطو وادی سمجھا جا سکتا ہے ؟ نہیں ۔ اگر بیسویں صدی میں وہ وہی وشواس اور وچار رکھتا ہے جو ارسطو چوتھی صدی میں رکھتا تھا' اگر وہ ارسطو جیسے کام آج کرتا ہے' اگر وہ ارسطو کے وشواسوں کا وہی ارتھ لگاتا ہے' جو ارسطو نے اپنے سمے لگائے تھے ۔ یہ صاف ہے کہ اگر تم دوسرے کے وشواسوں کو شبد سہہ اپناتے ہو تو تمہیں اس آتما کو بھی اپنانا پڑے گا' اس اُتساہ کو اپنانا پڑے گا' اس اسپرٹ سے کام کرنا ہوگا جو ان وچاروں کے پیچھے تھی ۔ ہاں یہ دیکھ لینا چاہیئے کہ آج بھی وہی حالت موجود ہے جو ان وشواسوں کے سمے تھی یا نہیں ۔ سوویت وچارکوں کا کہنا ہے کہ بیسویں صدی کی پانچویں دشابدی میں مارکس‌وادی بننا صرف یہ نہیں ہے کہ وہ کرنا جو مارکس نے 75 یا 100 برس پہلے کیا تھا ۔ نئی اوستھائیں پیدا ہوگئی ہیں اس لحاظ سے مارکس کے کچھ وشواس اب ٹھیک نہیں رہ گئے کچھ کا یہ حال ہے کہ وہ رد و بدل چاہتے ہیں ۔ مارکس خود بھی جیتے جی سمے سمے پر کہا کرتے تھے—

"Jeg he suis pas marks xiate"

مارکس نے اپنے کئی پرانے وچاروں کو کچھ دنوں کے بعد بدل دیا تھا ۔ وہ اپنے بھکتوں پر زور دیا کرتا تھا کہ میرے پہلے وچاروں کو چھوڑ دو ۔ اُن سے نہ چپکو' میرے نئے وشواسوں پر وشواس کرو ۔

یہ ہم جان ہی چکے ہیں کہ لینن نے جب اپنے سامنے سامراجیہ‌واد کا وہ روپ دیکھا جو مارکس کے سامنے نہ تھا تو اس نے پونجی واد کو بڑھتے ہوئے دیکھکر اور اس کے راجنیتک پریناموں کو سوچکر مارکس کے سدھانتوں میں گھٹت بڑھت کی ۔ لینن نے " پونجی واد کی اسم بڑھواری " کے قانون میں کافی گھٹت بڑھت کی جس کا ایک پرینام یہ نکلا کہ ایک دیش میں بھی سماج واد کی وجے ہو سکتی ہے چاہے وہ کتنا ہی پونجی وادی

समय की सरकार अपने आप को इस बात की ज़िम्मेदार समझती थी कि वह उस धर्म की रक्षा करे और उसकी स्थापना करे जो धर्म उसे ठीक लगता हो और जनता को झूठे धर्म के ख़तरों से बचाये. यह उन दिनों बड़ा भारी कर्तव्य समझा जाता था. जो बुद्धि उन दिनों यूरोप पर छाई हुई थी उसके हिसाब से झूठे धर्मों को प्लेग से भी ज़्यादा बुरा समझ कर नष्ट कर डालने की ज़रूरत थी. आख़िर प्लेग तो सिर्फ़ इस जीवन में नाश होने वाली देह को धमकाता है, झूठे विश्वास तो हमारी अमर आत्माओं को अनन्त काल तक डराते धमकाते रहते हैं.

उस समय इन परिस्थितियों के बीच जो यह बात कहता था कि माने हुए धर्म के अतिरिक्त और धर्मों के विश्वास समाज में न फैलाये जायें और यह कि नये धर्म वालों के धार्मिक सहिष्णुता के विचारों की रक्षा की जाय वह ज़रूर बड़ा बहादुर समझा जाना चाहिये. एक तरह उसके बाद जितने हुए वह उन सबसे बड़ा था, और बड़ा है. बाद के सिद्धांतों से उसके शुरू के विश्वास बहुत बड़े महत्व के हैं. पहला क़दम उठाना ही महत्व का होता है. बर्फ़ उसी ने तोड़ा, असहिष्णुता के सिद्धांत को उसी ने चुनौती दी. बढ़कर क़दम रखना बहुत मुश्किल काम था. एकबार सहिष्णुता का सिद्धांत किसी रूप में मान लिया गया तो फिर आगे का काम बहुत आसान हो जाता है. उस सहिष्णुता में तरह तरह की सहिष्णुताएं आसानी से जोड़ी जा सकतीं हैं. इसलिये लाक को धर्म सहिष्णुता का लोकशाही बहादुर मानना ठीक ही है. ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो इस बात की पूरी पूरी तारीफ़ न कर सकें लेकिन वह करें क्या? वह अनेकांत दृष्टि से सोचते ही नहीं. वैसी नज़र उनके पास रहती ही नहीं. अनेकांत के बिना कोई भी ऐसे मामले का ग़लत नतीजा निकालेगा ही.

आइये! अब इसी उदाहरन को दूसरे दृष्टिकोन से देखें. मान लिजिये आज एक आदमी आता है और अपने को जनवादी कहता है. वह धार्मिक सहिष्णुता का विश्वासी है जान लाक के विचारों से सहमत है. उस जन लाक के विचारों से जिसको इस क्षेत्र में सबसे ऊंची जगह मिली है. हमें ज़रूर मजबूर हो कर उस के दावे को झूठा समझना होगा. हमें उसे समझाना पड़ेगा कि वह सब विचार जो एक समय लोकशाही को बढ़वारी देते थे, आज अपना दूसरा रूप ले चुके हैं. इतिहास का चक्र इतना घूम गया है कि वह विचार अलोकशाही हो गये हैं. वह आगे न बढ़ा कर पीछे घसीटते हैं या यों समझिये कि सामाजिक जीवन ने ऐसा रूप ले लिया है कि आज के लिहाज़ से उन विचारों में और उन विश्वासों में न कोई अर्थ रह गया है न महत्व. इस मामले में बदलाव इतने ज़ोर का हुआ है कि पुराने

سمے کی سرکار اپنے آپکو اس بات کی ذمعدار سمجھتی تھی کہ وہ اُس دھرم کی رکشا کرے اور اُسکی استھاپنا کرے جو دھرم اُسے ٹھیک لگتا ہو اور جنتا کو جھوٹے دھرم کے خطروں سے بچائے. یہ اُن دنوں بڑا بھاری کرتویہ سمجھا جاتا تھا. جو بدھی اُن دنوں یوروپ پر چھائی ہوئی تھی اس کے حساب سے جھوٹے دھرموں کو پلیگ سے بھی زیادہ برا سمجھکر نشٹ کر ڈالنے کی ضرورت تھی. آخر پلیگ تو صرف اِس جیون میں ناش ہونے والی دیہہ کو دھمکاتی ہے' جھوٹے وشواس تو ہماری امر آتماؤں کو اننت کال تک ڈراتے دھمکاتے رہتے ہیں.

اُس سمے اِن پرستھتیوں کے بیچ جو یہ بات کہتا تھا کہ مانے ہوئے دھرم کے اترکت اور دھرموں کے وشواس سماج میں نہ پھیلائے جائیں اور یہ کہ نئے دھرم والوں کے دھارمک سہی شنتا کے وچاروں کی رکشا کی جائے وہ ضرور بڑا بہادر سمجھا جانا چاہیئے. ایک طرح اُس کے بعد جتنے ہوئے وہ اُن سب سے بڑا تھا اور بڑا ہے. بعد کے سدھانتوں سے اُس کے شروع کے وشواس بہت بڑے مہتو کے ہیں. پہلا قدم اُٹھانا ہی مہتو کا ہوتا ہے. برف اُسی نے توڑا' اسہی شنتا کے سدھانت کو اُسی نے چنوتی دی. بڑھکر قدم رکھنا بہت مشکل کام تھا. ایک بار سہی شنتا کا سدھانت کسی روپ میں مان لیا گیا تو پھر آگے کا کام بہت آسان ہوجاتا ہے. اُس سہی شنتا میں طرح طرح کی سہی شنتائیں آسانی سے جوڑی جا سکتی ہیں. اس لئے لاک کو دھرم سہی شنتا کا لوک شاہی بہادر ماننا ٹھیک ہی ہے. ایسے لوگ بھی ہوسکتے ہیں جو اس بات کی پوری پوری تعریف نہ کرسکیں لیکن وہ کریں کیا؟ وہ انیکانت درشٹی سے سوچتے ہی نہیں. ویسی نظر اُن کے پاس رہتی ہی نہیں. انیکانت کے بنا کوئی بھی ایسے معاملے کا غلط نتیجہ نکالیگا ہی.

آئیے! اب اِس اداہرن کو دوسرے درشٹی کون سے دیکھیں. مان لیجئے آج ایک آدمی آتا ہے' اور اپنے کو جنوادی کہتا ہے. وہ دھارمک سہی شنتا کا وشواسی ہے جان لاک کے وچاروں سے سہمت ہے. اُس جان لاک کے وچاروں سے جسکو اِس چھیتر میں سب سے اونچی جگہ ملی ہے. ہمیں ضرور مجبور ہوکر اُس کے دعوے کو جھوٹا سمجھنا ہوگا. ہمیں اسے سمجھانا پڑیگا کہ وہ سب وچار جو ایک سمے لوک شاہی کو بڑھواری دیتے تھے آج اپنا دوسرا روپ لے چکے ہیں. اتہاس کا چکر اتنا گھوم گیا ہے کہ وہ وچار الوک شاہی ہوگئے ہیں. وہ آگے نہ بڑھا کر پیچھے گھسیٹتے ہیں یا یوں سمجھیئے کہ سماجک جیون نے ایسا روپ لے لیا ہے کہ آج کے لحاظ سے ان وچاروں میں اور ان وشواسوں میں نہ کوئی ارتھ رہ گیا ہے نہ مہتو. اس معاملے میں بدلاؤ اتنے زور کا ہوا ہے کہ پرانے

प्रदेश वासी इन सबको सरकार की तरफ से कोई सहिष्णुता नहीं मिलनी चाहिये और न किसी अधार्मिक संघ को ऐसी सहिष्णुता मिलनी चाहिये. हां, सिर्फ प्रोटेस्टेन्ट ईसाइयों को सहिष्णुता मिलना चाहिये और वह भी सिर्फ इतनी कि वह लोग आपस में एक दूसरे के विचार सहन कर लिया करें. अब बताइये क्या आप ऐसे आदमी को यह मानेंगे कि वह धार्मिक सहिष्णुता का पक्षपाती है या यह कि वह लोकशाही का पक्षपाती है या यह कि वह ऐसा कर के लोकशाही काम में कुछ मदद कर रहा है? मामूली हालतों में आप इन सब बातों से इन्कार ही करेंगे. इसमें अब शक नहीं कि बहुत से आदमी जिनमें पढ़े लिखे भी शामिल हैं हर तरह जवाब में ना ही कहेंगे. शायद वह यह कहेंगे कि ऐसा आदमी फ़ासिस्ट होना चाहिये या कुक्लेक्सक्लान वाला होना चाहिये. अगर यह सब नहीं है तो लोकशाही का दुश्मन तो है ही. पर हक़ीक़त यह है कि वह सब लोग हर मामले में ग़लत ही होंगे और कारन यह है कि वह सब कूटस्थ रीति से सोच रहे होंगे या रूपी तर्क उनके दिमाग़ में होगा. वह कभी अनेकांत रूप से नहीं सोच रहे होंगे. उन्होंने बदलाव और इतिहास पर नज़र ही न डाली होगी. वह इस तरह सोचते होंगे कि लोकशाही लोकशाही है (आ आ है) :—लोकशाही इन विचारों में नहीं है (आ अनआ नहीं है) और इस सबसे मामले का फ़ैसला हो जाता है.

हम देखेंगे कि अगर हम इस की आगे जांच करते हैं तो यह सब काफ़ी नहीं है. यह दूसरी बात है कि रूपी रीति हमें आगे सोचने की हिम्मत न देगी. जिन विश्वासों का हमने सवाल उठाया, यह उस आदमी के हैं जो दार्शनिक था. उसका नाम था जान लाक. सत्रहवीं सदी में वह इंगलैंड में रहता था. जान लाक पक्का लोकशाहीवादी था. लोकशाही की उसी ने बुनियाद डाली. धार्मिक सहिष्णुता के विचार का वह पिता था. जिन विश्वासों की हमने ऊपर बात कही वह उसके थे. पर उसके साथ कोई अन्याय नहीं किया जा सकता. वह अपने समय के लिये बिलकुल ठीक था. उसके विश्वास हमेशा के लिये चाहे पूरे पूरे ठीक न हों, फिर भी अपने समय के लिये हर तरह ठीक थे.

हम इस मामले को ठीक ठीक जब ही समझ सकते हैं जब हम धार्मिक सहिष्णुता, लोकशाही और जान लाक के विचारों पर अनेकांत की नज़र डालें, इतिहास को निगाह में रख कर इन सब को समझें और यह देखें कि उस समय जान लाक किन परिस्थितियों में घिरा हुआ था और इंगलैंड की क्या हालत थी. जब हम ऐसा करेंगे तब हमें पता लगेगा कि सत्रहवीं सदी के यूरोप या ईसाई समय का यूरोप में सब जगह एक ही रिवाज चल रहा था. उस

سے کوئی سہی شنتا نہیں ملنی چاہئے اور نہ کسی ادھارمک سنگھ کو ایسی سہیشنتا ملنی چاہئے. ہاں، صرف پروٹیسٹینٹ عیسائیوں کو سہی شنتا ملنا چاہئے اور وہ بھی صرف اتنی کہ وہ لوگ آپس میں ایک دوسرے کے وچار سہن کرلیا کریں. اب بتائیے کیا آپ ایسے آدمی کو یہ مانیں گے کہ وہ دھارمک سہی شنتا کا پکشپاتی ہے یا یہ کہ وہ لوک شاہی کا پکشپاتی ہے یا یہ کہ وہ ایسا کرکے لوک شاہی کام میں کچھ مدد کر رہا ہے. معمولی حالتوں میں آپ اِن سب باتوں سے اِنکار ہی کرینگے. اِس میں اب شک نہیں کہ بہت سے آدمی جن میں پڑھے لکھے بھی شامل ہیں ہر طرح جواب میں نا ہی کہینگے. شاید وہ یہ کہینگے کہ ایسا آدمی فاسسٹ ہونا چاہئے یا کو کلیکس کلین والا ہونا چاہئے. اگر یہ سب نہیں ہے تو لوک شاہی کا دشمن تو ہے ہی. پر حقیقت یہ ہے کہ وہ سب لوگ ہر معاملہ میں غلط ہی ہونگے اور کارن یہ ہے کہ وہ سب کوٹستھ ریتی سے سوچ رہے ہونگے یا روپی ترک اُن کے دماغ میں ہوگا. وہ کبھی انیکانت روپ سے نہیں سوچ رہے ہونگے. اُنہوں نے بدلاؤ اور اِتہاس پر نظر ہی نہ ڈالی ہوگی. وہ اِس طرح سوچتے ہونگے کہ لوک شاہی لوک شاہی ہے (آ آ ہے) :—لوک شاہی اِن وچاروں میں نہیں ہے (آ ان آ نہیں ہے) اور اِس سب سے معاملے کا فیصلہ ہوجاتا ہے.

ہم دیکھیں گے کہ اگر ہم اِسکی آگے جانچ کرتے ہیں تو یہ سب کافی نہیں ہے. یہ دوسری بات ہے کہ روپی ریتی ہمیں آگے سوچنے کی ہمت نہ دیگی. جن وشواسوں کا ہم نے سوال اُٹھایا، یہ اُس آدمی کے ہیں جو دارشنک تھا. اُس کا نام تھا جان لاک. سترھویں صدی میں وہ اِنگلینڈ میں رہتا تھا. جان لاک پکا لوک شاہی وادی تھا. لوک شاہی کی اُسی نے بنیاد ڈالی. دھارمک سہی شنتا کے وچار کا وہ پتا تھا. جن وشواسوں کی ہم نے اوپر بات کہی وہ اُس کے تھے. پر اُس کے ساتھ کوئی انیائے نہیں کیا جاسکتا. وہ اپنے سمے کے لئے بالکل ٹھیک تھا. اُس کے وشواس ہمیشہ کے لئے چاہے پورے پورے ٹھیک نہ ہوں، پھر بھی اپنے سمے کے لئے ہر طرح ٹھیک تھے.

ہم اس معاملے کو ٹھیک ٹھیک جب ہی سمجھ سکتے ہیں جب ہم دھارمک سہی شنتا، لوک شاہی اور جان لاک کے وچاروں پر انیکانت کی نظر ڈالیں، اِتہاس کو نگاہ میں رکھکر اِن سب کو سمجھیں اور یہ دیکھیں کہ اُس سمے جان لاک کن پرستھتیوں میں گھرا ہوا تھا اور اِنگلینڈ کی کیا حالت تھی. جب ہم ایسا کرینگے تب ہمیں پتہ لگیگا کہ سترھویں صدی کے یورپ یا عیسائی سمے کے یورپ میں سب جگہ ایک ہی رواج چل رہا تھا. اُس

कर चल रही है. यानी एक का दूसरे पर असर पड़ता है. अगर विशय पदार्थ जिसके बारे में हम सोचना चाहते हैं स्थिर यानी कूटस्थ नहीं है तब हमें उन लकीरों से काम लेना होगा जो हमें इसके लिये तैयार कर दें कि हमारा विचार उन बदलावों को ध्यान में रखे जो पदार्थ में हो रहे हैं. अनेकांती ढंग से सोचने में ऐसी तैयारी पहले से रहती है. वह पदार्थ को सोचने से पहले यह मानता है और जानता है कि पदार्थ परिवर्तन शील है, वह उस हालत में एक छन भी नहीं रहेगा जिसमें वह दिखाई दे रहा है. अनेकांती इसलिये इसका पहले हिसाब लगाता है कि पदार्थ में जो बदलाव हो रहे हैं वह किस हिसाब से हो रहे हैं और किस तरफ़ से हो रहे हैं.

हम इस सिद्धांत का पूरी तरह ख़याल रखते हैं जब हम किसी आदमी के विश्वासों को पूरा महत्त्व देते हैं. अगर हम तत्ववादी हैं तो हमें यह मानना ही होगा कि बुनियादी महत्त्व इस बात में नहीं है कि किसी ख़ास विश्वास का ख़ास कलेवर क्या है, और उस छन क्या है जब हम सोच रहे हैं. इन विश्वासों की ख़ासियत जानना या उनका महत्त्व समझ लेना हमारे लिये काफ़ी नहीं है, क्योंकि हम यह मानते हैं कि कोई चीज़ एक छन भी स्थिर नहीं रहती, तब यह करना तो ऐसा हुआ कि हम विश्वासों को स्थिर मान कर उनका विश्लेषण कर रहे हैं. हमें तो आदमी के विचारों को यह भी मानना होगा कि वह बहुत ज़ोरदार हैं और तेज़ी से बदल रहे हैं. सब से पहले हमें यह सोचना होगा कि व्यक्ति ख़ुद जो बदलते और बढ़ते हुए विश्वास रखता है वह ख़ुद क्या है यानी उसकी उम्र क्या है, वह जीवन के किस भाग में है. वह कहां है, कहां का रहने वाला है, उसका अपना क्या इतिहास है. फिर यह भी जानना होगा कि उसके विचार और उसके विश्वास, उसकी मान्यताएं किस दिशा में सरक रही हैं. विश्वासों को जानने भर से कोई फ़ायदा नहीं. यह जानना सब से ज़रूरी है कि उन विचारों का झुकाव किस तरफ़ है (वह वहीं है इस क़ानून से शायद हम विश्वास जान कर रह जाते हैं) हमें यह जानना ही चाहिये कि यह विश्वास कहां से आये.

हमने जो बात कही उसे साफ़ करने के लिये एक ठोस उदाहरन लिजिये. मान लिजिये आपसे एक आदमी कहता है कि आप मुझे यह बताइये कि आप की उस आदमी के बारे में क्या राय है जो धार्मिक सहिष्णुता में विश्वास रखता है और लोकशाही से उसका सम्बन्ध जोड़ता है. बताइये, ऐसे आदमी के विश्वासों की क्या ख़ासियत होगी और उनका क्या अर्थ होगा? ऐसा आदमी यह राय रखता है कि कैथालिक, यहूदी, नास्तिक और

کر چل رہی ہے. یعنی ایک کا دوسرے پر اثر پڑتا ہے. اگر وشے پدارتھ جس کے بارے میں ہم سوچنا چاہتے ہیں استھر یعنی کوٹستھ نہیں ہے تب ہمیں ان طریقوں سے کام لینا ہوگا جو ہمیں اس کے لئے تیار کردیں کہ ہمارا وچار ان بدلاؤں کو دھیان میں رکھے جو پدارتھ میں ہو رہے ہیں. انیکانتی ڈھنگ سے سوچنے میں ایسی تیاری پہلے سے رہتی ہے. وہ پدارتھ کو سوچنے سے پہلے یہ مانتا ہے اور جانتا ہے کہ پدارتھ پریورتن شیل ہے' وہ اس حالت میں ایک چھن بھی نہیں رہیگا جس میں وہ دکھائی دے رہا ہے. انیکانتی اس لئے اس کا پہلے حساب لگاتا ہے کہ پدارتھ میں جو بدلاؤ ہو رہے ہیں وہ کس حساب سے ہو رہے ہیں اور کس طرف سے ہو رہے ہیں.

ہم سب اس سدھانت کا پوری طرح خیال رکھتے ہیں جب ہم کسی آدمی کے وشواسوں کو پورا مہتو دیتے ہیں. اگر ہم تتووادی ہیں تو ہمیں یہ ماننا ہی ہوگا کہ بنیادی مہتو اس بات میں نہیں ہے کہ کسی خاص وشواس کا خاص کلیور کیا ہے' اور اس چھن کیا ہے جب ہم سوچ رہے ہیں. ان وشواسوں کی خاصیت جاننا یا انکا مہتو سمجھ لینا ہمارے لئے کافی نہیں ہے' کیونکہ ہم یہ مانتے ہیں کہ کوئی چیز ایک چھن بھی استھر نہیں رہتی' تب یہ کرنا تو ایسا ہوا کہ ہم وشواسوں کو استھر مانکر ان کا وشلیشن کر رہے ہیں. ہمیں تو آدمی کے وچاروں کو یہ بھی ماننا ہوگا کہ وہ بہت زوردار ہیں اور تیزی سے بدل رہے ہیں. سب سے پہلے ہمیں یہ سوچنا ہوگا کہ ویکتی خود جو بدلتے اور بڑھتے ہوئے وشواس رکھتا ہے' وہ خود کیا ہے یعنی اسکی عمر کیا ہے' وہ جیون کے کس بھاگ میں ہے. وہ کہاں ہے' کہاں کا رہنے والا ہے' اس کا اپنا کیا اتہاس ہے؟ پھر یہ بھی جاننا ہوگا کہ اس کے وچار اور اس کے وشواس' اسکی مانیتائیں کس دشا میں سرک رہی ہیں. وشواسوں کو جاننے بھر سے کوئی فائدہ نہیں' یہ جاننا سب سے ضروری ہے کہ ان وچاروں کا جھکاؤ کس طرف ہے (وہ وہیں ہے' اس قانون سے شاید ہم وشواس جانکر رہ جاتے ہیں) ہمیں یہ جاننا ہی چاہیئے کہ یہ وشواس کہاں سے آئے.

ہم نے جو بات کہی اسے صاف کرنے کے لئے ایک ٹھوس اداہرن لیجیئے. مان لیجیئے آپ سے ایک آدمی کہتا ہے کہ آپ مجھے یہ بتایئے کہ آپکی اس آدمی کے بارے میں کیا رائے ہے جو دھارمک سہشنتا میں وشواس رکھتا ہے اور لوک شاہی سے اس کا سمبندھ جوڑتا ہے. بتایئے' ایسے آدمی کے وشواسوں کی کیا خاصیت ہوگی اور ان کا کیا ارتھ ہوگا؟ ایسا آدمی یہ رائے رکھتا ہے کہ کیتھالک' یہودی' ناستک اور اپنیو پاسی ان سب کو سرکار کی طرف

अरस्तू ने अपने तर्क सिद्धांतों को उससे पूरा पूरा ठीक बैठा दिया जो उसके समय ने उसे दे रक्खा था. इसलिये उसमें सारे अनेकांत तत्व मौजूद हैं और वह बीज भी मौजूद हैं जो आगे चल कर अनेकांत सिद्धांत के अंकुर फोड़ सकते हैं. (हिगल ने इसी वास्ते अरस्तू की बड़ी प्रशंसा की और उसके सिद्धांत को अपनाया) अरस्तू की सिद्धांत रचना साफ़ साफ़ स्थिर अध्यात्मक सिद्धांत की तरफ़ झुकी हुई थी. ये सिद्धांत था ही ऐसा जो वास्तविकता को शुरू में निरपेक्ष से जोड़ता था. उन दिनों बदलाव के विचार ने जन्म ही नहीं लिया था. उदाहरन के लिये मेज़ की असलियत उसके जोरदार शारीरिक कलेवर में नहीं थी. वह थी मेज़ के उस विचार में जिस का रूप तर्क ने लिया था. मेज़ की परिभाषा इस तर्क के रूप से की जाती थी और उसी रूप से यह सिद्ध किया जाता था कि मेज़ असल में है क्या चीज़? यहां रूप शब्द आकार के अर्थों में नहीं है. यहां इसका अर्थ है अनुरूप या मेज़ की असलियत जिसकी वजह से मेज़ बनती है (अरस्तू की परिभाषा के अनुसार असली कारन) वह चीज़ है जो परिभाषा बनाने के लिये ज़रूरी है, मेज़ बनने के लिये उसको उसके अनुरूप होना ही चाहिये. यह कितने अचरज की बात है कि कोई एक विचारक तर्क के सिद्धांत को फ़ारमल कहे और उसका यह मतलब समझा जाय कि वह असलियत को छोड़कर फ़ार्म यानी रूप की बात कर रहा है.

"अनेकांत विचार किसे कहते हैं"

अब तक जो बात कही गई अगर उसमें उस बात का जवाब हो गया जो सवाल हमने उठाया था तो हम यह कोशिश करेंगे कि हम उस दावे को भी छोड़ दें जो दावा हमने पहले किया था. वह दावा यह था कि तर्क की रूपी और अनेकांती सिद्धांत के बीच जो झगड़ा है वह कोरा पंडिताई झगड़ा नहीं है. उस झगड़े का सम्बन्ध हमारे रोज़ के विचारों से है और आये दिन के व्यवहार से है. दूसरे शब्दों में काम के लिये इसमें हर्ज ही क्या अगर सोवियत दर्शन के रुख़ से अनेकांत तरीक़े से सोचा जाये यानी चलताऊ तरीक़ा रूप को ध्यान में रख कर सोचा जाये. देखना यह है कि ठोस सवालों का हल किस रीति से ठीक होता है. ठीक ठीक सोचने में रूपी तर्क और उसके सिद्धांत कहां तक साथ देंगे. रास्ते में कोई ख़तरा तो नहीं है, कहीं विचारक टोटे में तो न रहेगा?

अनेकांत रूप से सोचने का अर्थ होता है यह बातें ध्यान में रखना कि हर चीज़ में गति हो रही है, बदलाव हो रहा है, बढ़वारी हो रही है, रूप पर रूप बदल रहे हैं, नया इतिहास बनता चला जा रहा है. इसी सिलसिले में यह भी शामिल है कि हर चीज़ और चीज़ों से मिलजुल

ارسطو نے اپنے ترک سدھانتوں کو اس سے پورا پورا ٹھیک بیٹھا دیا جو اس کے سمے نے اسے دے رکھا تھا۔ اس لئے اس میں سارے انیکانت تتو موجود ہیں اور وہ بیج بھی موجود ہیں جو آگے چل کر انیکانت سدھانت کے انکر پھوڑ سکتے ہیں۔ (ہیگل نے اسی واسطے ارسطو کی بڑی پرشنسا کی اور اس کے سدھانت کو اپنایا۔) ارسطو کی سدھانت رچنا صاف صاف استھر ادھیاتمک سدھانت کی طرف جھکی ہوئی تھی۔ یہ سدھانت تھا ہی ایسا جو واستوکتا کو شروع میں نرپیکش سے جوڑتا تھا۔ ان دنوں بدلاؤ کے وچار نے جنم ہی نہیں لیا تھا۔ اداہرن کے لئے میز کی اصلیت اس کے زوردار شاریرک کلیور میں نہیں تھی۔ وہ تھی میز کے اس وچار میں جس کا روپ ترک نے لیا تھا۔ میز کی پریبھاشا اس ترک کے روپ سے کی جاتی تھی اور اسی روپ سے یہ سدھ کیا جاتا تھا کہ میز اصل میں ہے کیا چیز؟ یہاں روپ شبد آکار کے ارتھوں میں نہیں ہے۔ یہاں اسکا ارتھ ہے۔ انوروپ یا میز کی اصلیت جسکی وجہ سے میز بنتی ہے (ارسطو کی پریبھاشا کے انوسار اصلی کارن) وہ چیز ہے جو پریبھاشا بنانے کے لئے ضروری ہے، میز بننے کے لئے اسکو اس کے انوروپ ہونا ہی چاہئے۔ یہ کتنے اچرج کی بات ہے کہ کوئی ایک وچارک ترک کے سدھانت کو فارمل کہے اور اس کا یہ مطلب سمجھا جائے کہ وہ اصلیت کو چھوڑ کر فارم یعنی روپ کی بات کر رہا ہے۔

"انیکانت وچار کسے کہتے ہیں"

اب تک جو بات کہی گئی ہے اگر اس میں اس بات کا جواب ہوگیا جو سوال ہم نے اٹھایا تھا تو ہم یہ کوشش کرینگے کہ ہم اس کو بھی چھوڑ دیں جو دعویٰ ہم نے پہلے کیا تھا۔ وہ دعویٰ یہ تھا کہ ترک کی روپی اور انیکانتی سدھانت کے بیچ جو جھگڑا ہے وہ کورا پنڈتائی جھگڑا نہیں ہے۔ اس جھگڑے کا سمبندھ ہمارے روز کے وچاروں سے ہے اور آئے دن کے ویوہار سے ہے۔ دوسرے شبدوں میں کام کے لئے اس میں ہرج ہی کیا اگر سوویت درشن کے رخ سے انیکانت طریقہ سے سوچا جائے یعنی چلتاؤ طریقہ روپ کو دھیان میں رکھکر سوچا جائے۔ دیکھنا یہ ہے کہ ٹھوس سوالوں کا حل کس ریتی سے ٹھیک ہوتا ہے۔ ٹھیک ٹھیک سوچنے میں روپی ترک اور اس کے سدھانت کہاں تک ساتھ دینگے۔ راستے میں کوئی خطرہ تو نہیں ہے، کہیں وچارک ٹوٹے میں تو نہیں رہیگا؟

انیکانت روپ سے سوچنے کا ارتھ ہوتا ہے یہ باتیں دھیان میں رکھنا کہ ہر چیز میں گتی ہو رہی ہے، بدلاؤ ہو رہا ہے، بڑھواری ہو رہی ہے، روپ پر روپ بدل رہے ہیں، نیا اتہاس بنتا چلا جا رہا ہے۔ اسی سلسلے میں یہ بھی شامل ہے کہ ہر چیز اور چیزوں سے مل جل

अरस्तू की महानता

यहां यह बताना ठीक होगा कि अनेकांती मार्टीवादी जितने सवाल खड़े करता है उनका संबंध ज्ञान की आज की बढ़ी हुई अवस्था से है. उसका ज़ोर इस बात पर है कि अरस्तू के समय में समय ही ऐसा था जब तर्क शास्त्र की शैली समय के लिये ठीक थी. विज्ञान ख़ुद भी इतना बढ़ा हुआ नहीं था जितना आज है. जिस तल पर विज्ञान था उसी तल पर अरस्तू का दर्शन था. अरस्तू से पहले हेराक्लिटस और दूसरे विचारक हो चुके हैं. अनेकांत उस वक़्त भी था पर बहुत ढीली हालत में था. अरस्तू ने उसे नुकीला बनाया, उसको साफ़ किया, उसे पहले से ज़्यादा उपयोगी बनाया. अरस्तू ने उन अपने समय के सब तत्वों पर ध्यान दिया. उसके समय तक जो अलग अलग तर्क शास्त्र की शैलियां मौजूद थीं उन सब का मेल बिठाया. अरस्तू का कोई दोश नहीं, और न वह तर्क शैली दूषित है जो समय के लिये तैयार की गई. दोश तो उनका है जो 22 सदी के बाद उन्हीं चीज़ों को आज की हालत से जोड़ना चाहते हैं. दर्शन की पुरानी शैली आज विज्ञान को बढ़ावा नहीं दे सकती. उस समय वह बढ़ावा देती थी, आज वही विज्ञान को पीछे ढकेलेगी.

इससे भी ज़्यादा बुरी बात यह है कि आज जो फ़ारमल लाजिक के नाम से चल रहा है वह इतना अरस्तू का नहीं है जितना उनका जो उसको अरस्तू का मानते हैं. आज के पंडित अरस्तू की टीका करके उसे अरस्तू कहां रहने देते हैं ? उसे आज का अरस्तू भी बना लेते तो भी कुछ ठीक होता. वह तो उसे अपने कपड़े पहना कर पुराना अरस्तू बनाए रखना चाहते हैं. लेनिन का कहना ठीक है कि अरस्तू की शिक्षाओं में जो अंश मर चुका है उसकी तो आज के पंडित पूजा करते हैं और जो अंश जिवित है उसका दम घोट कर दम ले रहे हैं. आज का सोवियत विचारक अलैग्ज़ेंडरोव अरस्तू का अध्ययन करते हुए कहता है—अरस्तू का तर्क अपने समय के विज्ञान की उन्नति में जड़ जमाये रहने के कारन और अपने समय के ज्ञान से पूरी तरह संबंध रखने के कारन उन अर्थों में फ़ारमल लाजिक नहीं कहा जा सकता जिन अर्थों में आज के मालदार तारकिक उसके तर्क के पीछे फ़ारमल शब्द जोड़ते हैं. इसके विपरीत अरस्तू ने सत्ता के बुनियादी गुनों से तारकिक रूपों और संबंधों को निकाल फेंकने की कोशिश की. यह बात इस बात का सबूत है कि उसका विश्लेशन और बारीकी कितनी गहरी और जानदार थी. यह सब उस समय के शस्त्रों की हालत पर अनेकांत दृष्टि के सिवाय और क्या कही जा सकती है.

ارسطو کی مہانتا

یہاں یہ بتانا ٹھیک ہوگا کہ انیکانتی ماٹی وادی جتنے سوال کھڑے کرتا ہے اُن کا سمبندھ گیان کی آجکی بڑھی ہوئی اوستھا سے ہے . اُسکا زور اس بات پر ہے کہ ارسطو کے سمے میں سمے ہی ایسا تھا جب ترک شاستر کی اُس طرح کی شیلی سمے کے لئے ٹھیک تھی. وگیان خود بھی اتنا بڑھا ہوا نہیں تھا جتنا آج ہے . جس تل پر وگیان تھا اسی تل پر ارسطو کا درشن تھا . ارسطو سے پہلے ہیراکلٹس اور دوسرے وچارک ہو چکے ہیں . انیکانت اُس وقت بھی تھا پر بہت ڈھیلی حالت میں تھا . ارسطو نے اُسے نکیلا بنایا، اُسکو صاف کیا، اُسے پہلے سے زیادہ اُپیوگی بنایا . ارسطو نے اُن اپنے سمے کے سب تتوں پر دھیان دیا . اُس کے سمے تک جو الگ الگ ترک شاستر کی شیلیاں موجود تھیں اُن سب کا میل بٹھایا . ارسطو کا کوئی دوش نہیں، اور نہ وہ ترک شیلی دوشت ہے جو سمے کے لئے تیار کی گئی . دوش تو اُن کا ہے جو 22 صدی کے بعد انہیں چیزوں کو آج کی حالت سے جوڑنا چاہتے ہیں . درشن کی پرانی شیلی آج وگیان کو بڑھاوا نہیں دے سکتی . اُس سمے وہ بڑھاوا دیتی تھی، آج وہی وگیان کو پیچھے ڈھکیلے گی.

اس سے بھی زیادہ بری بات یہ ہے کہ آج جو فارمل لاجک کے نام سے چل رہا ہے وہ اتنا ارسطو کا نہیں ہے جتنا اُن کا جو اُسکو ارسطو کا مانتے ہیں . آج کے پنڈت ارسطو کی ٹیکا کر کے اُسے ارسطو کہاں رہنے دیتے ہیں ؟ اُسے آج کا ارسطو بھی بنا لیتے تو بھی کچھ ٹھیک ہوتا . وہ تو اُسے اپنے کپڑے پہنا کر پرانا ارسطو بنائے رکھنا چاہتے ہیں . لینن کا کہنا ٹھیک ہے کہ ارسطو کی شکشاؤں میں جو انش مر چکا ہے اُسکی تو آج کے پنڈت پوجا کرتے ہیں اور جو انش جیوت ہے اُسکا دم گھونٹ کر دم لے رہے ہیں . آج کا سوویت وچارک الیگزینڈروو ارسطو کا ادھین کرتے ہوئے کہتا ہے—ارسطو کا ترک اپنے سمے کے وگیان کی اُنتی میں جڑ جمائے رہنے کے کارن اور اپنے سمے کے گیان سے پوری طرح سمبندھ رکھنے کے کارن اُن ارتھوں میں فارمل لاجک نہیں کہا جا سکتا جن ارتھوں میں آج کے مالدار تارکک اُس کے ترک کے پیچھے فارمل شبد جوڑتے ہیں . اس کے وپریت ارسطو نے ستا کے بنیادی گنوں سے تارکک روپوں اور سمبندھوں کو نکال پھینکنے کی کوشش کی . یہ بات اِس بات کا ثبوت ہے کہ اس کا وشلیشن اور باریکی کتنی گہری اور جاندار تھی . یہ سب اُس سمے کے پرشنوں کی حالت پر انیکانت درشٹی کے سوائے اور کیا کہی جا سکتی ہے .

आया और ज़मीन में आ बसा और वतन बना बैठा. गायें बैल जिस जगह बैठ जाते हैं वह उनका वतन हो जाता है. उस वक़्त उसकी रक्षा के लिये उनका बल दस गुना बढ़ जाता है. और कोई दूसरा जानवर उनके मुक़ाबिले में ठैहर नहीं सकता. लोगों को इस की शिकायत थी मुराद भी जानता था कि उसके साथ फ़रेब हुआ इसलिये चाहता था माज़िन्दरान छोड़ कर कहीं और चला जाये. है भी यही. अगर रुस्तम के सांड ने वतन न बना लिया होता तो मुराद का सांड पहले ही हमले में रुस्तम के सांड के पेट को चाक कर देता. रुस्तम सीधी राह नहीं चला उस का फल है कि लैला ने अपना दिल मुराद के हवाले कर दिया."

मेरे कहने से उसी रात ब्याह रचाया गया. सवेरे तक बाजे बजे. गाने हुए और फिर निकाह पढ़ा गया. मैं भी आनन्द में डूब रहा था और उस सुख चैन की घड़ी में सुनता और देखता था कि चांद और सितारों के निवासी, आकाश के देवता, पृथ्वी के चराचर जगत के सारे कन वतन के प्रेम में सिर धुन रहे हैं और अपने पैरों पर थिरक रहे हैं. यों कहिये उनके लिये जीवन की अंधियारी घट रही है और उजाला फैलता जा रहा है. मैंने भी दुविधा और भ्रम से छुटकारा पा लिया. समझ गया क्यों वतन इतना प्यारा है? क्यों धरती माता ने अपनी छाती के दूध में उस प्रेम को घोल दिया है? पढ़ा तो पहले भी था पर आज अपनी आंखों से देखा वतन के प्रेम का घर और भूमि और देश के साथ जो लगाव है वह सदा फैलने वाला है. वह कूचे, मोहल्ले, नगर और सारे देश पर छा जाता है.

अब अच्छी तरह समझा क्यों अफ़लातून कहता है "जीवन का सब से बलवान सम्बन्ध वतन का प्रेम है." यही कारन है आज दुनिया भर के लोग वतन की ख़ातिर जान पर खेलने को तैयार हैं.

रमेश वालिया

गाए जा, गाए जा, गाए जा
जीवन का गीत गाए जा
धीरे धीरे, मधुर मधुर, गाए जा जीवन का गीत
जंगी हैं जिनके इरादे, दुश्मन हैं इन्सानियत के
इनसे बढ़ाना न प्रीत, गाए जा जीवन का गीत
जंगबाज़ों की मज़बूत टोली सही
उनके क़ब्ज़े में बारूद गोली सही
ग़म न कर गुनगुनाता गुज़र जा
मौत पर मुस्कराता गुज़र जा
अम्न के गीत गाता गुज़र जा
मुजाहिद! आख़िर में तेरी है जीत
गाए जा जीवन का गीत

آیا اور زمین میں آ وطن بنا بیٹھا. گائیں بیل جس جگہ بیٹھ جاتے ہیں وہ ان کا وطن ہوجاتا ہے. اس وقت اسکی رکشا کے لئے ان کا بل دس گنا بڑھ جاتا ہے. اور کوئی دوسرا جانور ان کے مقابلہ میں ٹھہر نہیں سکتا. لوگوں کو اسکی شکایت تھی. مراد بھی جانتا تھا کہ اس کے ساتھ فریب ہوا اس لئے چاہتا تھا مازندران چھوڑ کر کہیں اور چلا جائے. ہے بھی یہی. اگر رستم کے سانڈ نے وطن نہ بنا لیا ہوتا تو مراد کا سانڈ پہلے ہی حملہ میں رستم کے سانڈ کے پیٹ کو چاک کردیتا. رستم سیدھی راہ نہیں چلا' اسی کا پھل ہے کہ لیلیٰ نے اپنا دل مراد کے حوالہ کردیا."

میرے کہنے سے اسی رات بیاہ رچایا گیا. سویرے تک باجے بجے' گانے ہوئے اور پھر نکاح پڑھا گیا. میں بھی آنند میں ڈوب رہا تھا اور اس سکھ چین کی گھڑی میں سنتا اور دیکھتا تھا کہ چاند اور ستاروں کے نواسی' آکاش کے دیوتا' پرتھوی کے چراچر جگت کے سارے کن وطن کے پریم میں سر دھن رہے ہیں اور اپنے پیروں پر تھرک رہے ہیں. یوں کہئے ان کے لئے جیون کی اندھیاری گھٹ رہی ہے اور اجالا پھیلتا جاتا ہے. میں نے بھی دبدھا اور بھرم سے چھٹکارا پا لیا. سمجھ گیا کیوں وطن اتنا پیارا ہے؟ کیوں دھرتی ماتا نے اپنی چھاتی کے دودھ میں اس پریم کو گھول دیا ہے؟ پڑھا تو پہلے بھی تھا پر آج اپنی آنکھوں سے دیکھا وطن کے پریم کا گھر اور بھومی اور دیش کے ساتھ جو لگاؤ ہے وہ سدا پھیلنے والا ہے. وہ کوچے' محلے' نگر اور سارے دیش پر چھا جاتا ہے.

اب اچھی طرح سمجھا ہوں افلاطون کہتا ہے "جیون کا سب سے بلوان سمبندھ وطن کا پریم ہے." یہی کارن ہے آج دنیا بھر کے لوگ وطن کی خاطر جان پر کھیلنے کو تیار ہیں.

رمیش والیہ

گائے جا گائے جا گائے جا
جیون کا گیت گائے جا
دھیرے دھیرے' مدھر مدھر' گائے جا جیون کا گیت
جنگی ہیں جن کے ارادے' دشمن ہیں انسانیت کے
ان سے بڑھانا نہ پریت' گائے جا جیون کا گیت
جنگ بازوں کی مضبوط ٹولی سہی
ان کے قبضے میں بارود گولی سہی
غم نہ کر گنگناتا گزر جا
موت پر مسکراتا گزر جا
امن کے گیت گاتا گزر جا
مجاہد! آخر میں تیری ہے جیت
گائے جا جیون کا گیت

सांडों की हरकतों के साथ साथ सब बेअख़्तयार झुकते और उचकते थे. पर लैला मूरत बनी खड़ी थी. न उसके बदन में जुम्बिश थी और न चेहरे पर परेशानी की झलक. सांड कभी सिर लड़ाते थे कभी एक दूसरे को पीछे हटाते थे. इतने में रुस्तम का सांड पीछे को हटा और हटते हटते मैदान के किनारे पहुंच गया. फिर उसने अचानक सख़्त हमला किया और मुराद के सांड को उतार तक दौड़ा लाया.

मेरी समझ में नहीं आया क्या हुआ. मुराद का सांड ज़मीन पर गिरा और लोट गया और उसके पेट से लहू का फुव्वारा छूटा. तमाशा देखने वालों ने चीख़ना चिल्लाना शुरू कर दिया और फिर वही "वतन" "वतन" का घोर शब्द सुनाई देने लगा.

आहिस्ता आहिस्ता मुराद मैदान के बीच में पहुंचा. उसकी पीठ मां की तरफ़ और मुंह लैला की तरफ़ था. ऊंची आवाज़ में देर तक कुछ कहता रहा. कई बार "वतन" के शब्द को दोहराया फिर आहिस्ता से लौटा और चला गया

उसके मां और बाप उसके पीछे दौड़े और उसके हाथ पैर पकड़ लिये. दोनों को झटक, बदन छुड़ा, चलता हुआ. लोगों में हुगामा हो गया. फिर वही बातें, वही जुम्ले जिनमें वही 'वतन" का शब्द समझ में आता था सुनाई देने लगे. ऐसा मालूम होता था सब की इच्छा है कि जायें और मुराद को वापिस ले आयें. पर सब समझते थे कि इसका कोई नतीजा नहीं होना है. मुराद ने तो प्रन कर लिया था कि गांव, मां, बाप को छोड़ माज़िन्दरान से चला जावे.

एक दम "मुराद जान, मुराद जान" की आवाज़ दुखी भर्राए गलों से रोने की पुकार के साथ मिली जुली सुनाई दी. लैला दौड़ी और मुराद की गर्दन से लिपट गई. उसके बदन के हलचल से मालूम होता था कि फूट फूट कर रो रही है. थोड़ी देर तक यह ही दशा रही. फिर लैला और मुराद साथ लौटे और हमारे सामने आ कर खड़े हो गये. मुराद ने चौधरी से कोई बात कही. चौधरी ने जवाब दिया. फिर हमारी ख़ातिर कि हम भी समझ सकें किताबी फ़ार्सी में बोला "हक़ तो तुम्हारा है. तुम्हारे साथ छल हुआ है पर उसके बदले में ईश्वर ने तुम्हें लैला को दे दिया है लैला सैकड़ों बैलों से ज़्यादा क़ीमती है." लोगों की ज़बान से ख़ुशी और इतमीनान के नारे निकलने लगे.

मैंने चौधरी से कहा "ईश्वर के लिये ज़रा झट पट बताओ तो यह सब क्या बात है ?"

उसने कहा—"रुस्तम ने जान बूझ कर या अनजाने मुराद के साथ छल किया. चाहिये यह था कि दोनों सांड गायों के साथ एक ही वक़्त में दोनों तरफ़ से मैदान में आते. पर हुआ यह कि रुस्तम का सांड आध घंटा पहले

سانڈوں کی حرکتوں کے ساتھ ساتھ سب بےاختیار جھکتے اور اچکتے تھے ۔ پر لیلی مورت بنی کھڑی تھی ۔ نہ اس کے بدن میں جنبش تھی اور نہ چہرہ پر پریشانی کی جھلک ۔ سانڈ کبھی سر لڑاتے تھے کبھی ایک دوسرے کو پیچھے ہٹاتے تھے ۔ اتنے میں رستم کا سانڈ پیچھے کو ہٹا اور ہٹتے ہٹتے میدان کے کنارے پہونچ گیا ۔ پھر اسنے اچانک سخت حملہ کیا اور مراد کے سانڈ کو اتار تک دوڑا لیا ۔

میری سمجھ میں نہیں آیا کیا ہوا ۔ مراد کا سانڈ زمین پر گرا اور لوٹ گیا اور اس کے پیٹ سے لہو کا فوارہ چھوٹا ۔ تماشا دیکھنے والوں نے چیخنا چلانا شروع کردیا اور پھر وہی "وطن" "وطن" کا گھور شبد سنائی دینے لگا ۔

آہستہ آہستہ مراد میدان کے بیچ میں پہونچا ۔ اسکی پیٹھ ماں کی طرف اور منھ لیلی کی طرف تھا ۔ اونچی آواز میں دیر تک کچھ کہتا رہا ۔ کئی بار "وطن" کے شبد کو دہرایا پھر آہستہ سے لوٹا اور چلا گیا ۔

اس کے ماں اور باپ اس کے پیچھے دوڑے اور اس کے ہاتھ پیر پکڑ لیئے ۔ دونوں کو جھٹک، بدن چھڑا، چلتا ہوا ۔ لوگوں میں ہنگامہ ہوگیا ۔ پھر وہی باتیں، وہی جملے جن میں وہی "وطن" کا شبد سمجھ میں آتا تھا سنائی دینے لگے ۔ ایسا معلوم ہوتا تھا سب کی اچھا ہے کہ جائیں اور مراد کو واپس لے آئیں ۔ پر سب سمجھتے تھے کہ اس کا کوئی نتیجہ نہیں ہونا ہے ۔ مراد نے تو پرن کرلیا تھا کہ گاؤں، ماں، باپ کو چھوڑ، مازندران سے چلا جائے ۔

ایک دم "مراد جان، مراد جان" کی آواز دکھی بھرائے گلوں سے رونے کی پکار کے ساتھ ملی جلی سنائی دی ۔ لیلی دوڑی اور مراد کی گردن سے لپٹ گئی ۔ اس کے بدن کے ہلچل سے معلوم ہوتا تھا کہ پھوٹ پھوٹ کر رو رہی ہے ۔ تھوڑی دیر تک یہی دشا رہی ۔ پھر لیلی اور مراد ساتھ لوٹے اور ہمارے سامنے آکر کھڑے ہوگئے ۔ مراد نے چودھری سے کوئی بات کہی ۔ چودھری نے جواب دیا ۔ پھر ہماری خاطر کہ ہم بھی سمجھ سکیں کتابی فارسی میں بولا "حق تو تمہارا ہے' تمہارے ساتھ چھل ہوا ہے پر اس کے بدلہ میں ایشور نے تمہیں لیلی کو دیدیا ہے ۔ لیلی سیکڑوں بیلوں سے زیادہ قیمتی ہے ۔" لوگوں کی زبان سے خوشی اور اطمینان کے نعرے نکلنے لگے ۔

میں نے چودھری سے کہا "ایشور کے لئے ذرا جھٹ پٹ بتاؤ تو یہ سب کیا بات ہے ؟"

اس نے کہا—"رستم نے جان بوجھکر یا انجانے مراد کے ساتھ چھل کیا ۔ چاہیئے یہ تھا کہ دونوں سانڈ گایوں کے ساتھ ایک ہی وقت میں دونوں طرف سے میدان میں آتے ۔ پر ہوا یہ کہ رستم کا سانڈ آدھ گھنٹہ پہلے

पर अब आग्रह किया कि जहां तक हो सके जल्दी करनी चाहिये.

सोचा सांडों को पता ही है, प्रेम की राह में जान से खेल जावेंगे. न दया करेंगे न भय. दोपहर से दो घन्टा बाद इत्तला मिली कि मैदान तैयार है. चौधरी के घर के पास चौड़ी सपाट ज़मीन है. कोई सत्तर गज़ होगी. एक तरफ़ नदी है. दूसरी तरफ़ छोटा हरयाला टप्पा. मैदान की लम्बाई जहां से ज़मीन का उतार है सौ गज़ होगी. गांव वाले टप्पे के ऊपर और मैदान के दोनों तरफ़ भीड़ लगाए खड़े थे.

हम भी टप्पे के ऊपर ज़मीन से दो गज़ ऊंचे खड़े हो गये. कुछ मिनट गुज़रे होंगे कि शोर उठने लगा. रुस्तम एक बड़े भारी भरकम सांड को लिये मैदान में आ पहुंचा. गायों का गल्ला उसके पीछे पीछे था. मैदान की एक तिहाई में खड़ा हुआ और थोड़ी देर सांड के सिर और कानों पर हाथ फेरता रहा. सांड बैठ गया और गायें भी सो गईं.

गांव वाले सिर उठा कर देख रहे थे कि मुराद का सांड उतार की तरफ़ से आये और मैदान में पहुंचे पर समय बीत रहा था और मुराद की ख़बर नहीं थी. आहिस्ता आहिस्ता आदमियों में बातचीत होने लगी और लहजों में तुन्दी आने लगी. मेरी समझ में उन की बात तो नहीं आई पर रह रह कर माज़न्दरानी लहजे में "वतन" का शब्द सुनाई देता था पर येही सोचकर रह जाता था कि यहां "वतन" के शब्द का तो कोई मौक़ा नहीं है. फिर मेरी आंखें और ध्यान लैला की तरफ़ लगी हुई थीं. सब से लांबी, सब के सिरों से सिर ऊंचा उठाए मूर्ति के समान औरतों के झुंड में खड़ी थी और सारी शक्ति से अपने भीतरी भावों को छिपाने की कोशिश कर रही थी. मुझ से न बन पड़ा, कि किसी से पूछूं कि क्या बातें हो रही हैं और "वतन" से क्या वास्ता है.

अचानक मुराद का सिर और छाती और बदन उतार से ऊपर आता दिखाई दिया. उसके साथ एक सांड और पीछे पीछे गायों का गल्ला था. रुस्तम का सांड ज़मीन से उठा और हुंकार भरने लगा. गायें भी सब उठ खड़ी हुईं. मुराद के सांड ने लम्बी हुंकार ली. कुछ क़दम आगे की तरफ़ दौड़ा और खड़ा हो गया. खुरों को दायें बायें रख, सिर को झुकाया. रुस्तम के सांड ने एक दम हमला किया और अपने शत्रु के ऊपर जा पहुंचा. दोनों के सिर इस ज़ोर से लड़े कि मैंने समझा टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे. फिर पीछे हटे और दोबारा पिल पड़े और सींग से सींग लड़ा दिया. लेकिन इस दफ़ा एक दूसरे से अलग नहीं हुए और एक दूसरे को दबाने लगे. कभी यह कभी वह बारी बारी एक दूसरे को एक या दो क़दम पीछे ढकेल देते थे.

सारे आदमियों का, औरतों, मर्दों, बच्चों सभी का कलेजा धड़क रहा था. सब के हाथ, पांव, चेहरे परेशान थे.

پر اب آگرہ کیا کہ جہاں تک ہو سکے جلدی کرنی چاہئے۔

سوچا سانڈوں کو پتہ ہی ہے، پریم کی راہ میں جان سے کھیل جائینگے۔ نہ دیا کرینگے نہ بھے۔ دوپہر سے دو گھنٹہ بعد اطلاع ملی کہ میدان تیار ہے۔ چودھری کے گھر کے پاس چوڑی سپاٹ زمین ہے۔ کوئی ستر گز ہوگی۔ ایک طرف ندی ہے۔ دوسری طرف چھوٹا ہریالا ٹپہ۔ میدان کی لمبائی جہاں سے زمین کا اُتار ہے سو گز ہوگی۔ گاؤں والے ٹپہ کے اوپر اور میدان کے دونوں طرف بھیڑ لگائے کھڑے تھے۔

ہم بھی ٹپہ کے اوپر زمین سے دو گز اونچے کھڑے ہوگئے۔ کچھ منٹ گذرے ہونگے کہ شور اٹھنے لگا۔ رستم ایک بھاری بھرکم سانڈ کو لئے میدان میں آ پہونچا۔ گیوں کا گلہ اس کے پیچھے پیچھے تھا۔ میدان کی ایک تہائی میں کھڑا ہوا اور تھوڑی دیر سانڈ کے سر اور کانوں پر ہاتھ پھیرتا رہا۔ سانڈ بیٹھ گیا اور گائیں بھی سو گئیں۔

گاؤں والے سر اٹھا کر دیکھ رہے تھے کہ مراد کا سانڈ اتار کی طرف آئے اور میدان میں پہونچے پر سمے بیت رہا تھا اور مراد کی خبر نہیں تھی۔ آہستہ آہستہ آدمیوں میں بات چیت ہونے لگی اور لہجوں میں تندی آنے لگی۔ میری سمجھ میں ان کی بات تو نہیں آئی پر رہ رہ کر مازندرانی لہجہ میں " وطن " کا شبد سنائی دیتا تھا پر یہی سوچکر رہ جاتا تھا کہ یہاں " وطن " کے شبد کا تو کوئی موقعہ نہیں ہے۔ پھر میری آنکھیں اور دھیان لیلیٰ کی طرف لگی ہوئی تھیں۔ سب سے لانبی، سب کے سروں سے سر اونچا اٹھائے مورتی کے سمان عورتوں کے جھنڈ میں کھڑی تھی اور ساری شکتی سے اپنے بھیتری بھاوں کو چھپانے کی کوشش کر رہی تھی۔ مجھ سے نہ بن پڑا کہ کسی سے پوچھوں کہ کیا باتیں ہو رہی ہیں اور " وطن " سے کیا واسطہ ہے۔

اچانک مراد کا سر اور چھاتی اور بدن اتار سے اوپر آتا دکھائی دیا۔ اس کے ساتھ ایک سانڈ اور پیچھے پیچھے گیوں کا گلہ تھا۔ رستم کا سانڈ زمین سے اٹھا اور ہنکار بھرنے لگا۔ گائیں بھی سب اٹھ کھڑی ہوئیں۔ مراد کے سانڈ نے لمبی ہنکار لی۔ کچھ قدم آگے کی طرف دوڑا اور کھڑا ہوگیا۔ کھروں کو دائیں بائیں رکھ، سر کو جھکایا۔ رستم کے سانڈ نے ایک دم حملہ کیا اور اپنے شترو کے اوپر جا پہونچا۔ دونوں کے سر اس زور سے لڑے کہ میں نے سمجھا ٹکڑے ٹکڑے ہوجائینگے۔ پھر پیچھے ہٹے اور دوبارہ پل پڑے اور سینگ سے سینگ لڑا دیا۔ لیکن اس دفعہ ایک دوسرے سے الگ نہیں ہوئے اور ایک دوسرے کو دبانے لگے۔ کبھی یہ کبھی وہ باری باری ایک دوسرے کو ایک یا دو قدم پیچھے ڈھکیل دیتے تھے۔

سارے آدمیوں کا، عورتوں، مردوں، بچوں سبھی کا کلیجہ دھڑک رہا تھا۔ سب کے ہاتھ، پاؤں، چہرے پریشان تھے۔

कुछ मिन्टों के बाद रुस्तम आया. शाहनामा के रुस्तम के समान उसकी दाढ़ी दोशाखी नहीं थी और न ही उसकी सी नोकदार टोपी पहने था. पर ठाठ उसी जवान रुस्तम के थे जिस ने मस्त हाथी को मार गिराया था और सफ़ेद क़िले पर चढ़ाई की थी. उसका क़द सर्व का सा, सीना चौड़ा, कमर पतली बिल्कुल जैसे शाहनामे में लिखा है. लेकिन मैं नहीं कह सकता कि फ़िर्दौसी का रुस्तम भी उतना ही सुन्दर था जितना यह. क्या उसकी आंखें, भवें, होंट, दांत, नाक, कान ऐसे ही सलोने थे ? मूछों की हरयाली उग ही रही थी. अभी उम्र के बीस बरस बीते होंगे.

पहले तो इधर उधर की बातें हुई और ऊल जलूल बकवास होती रही. फिर मैंने पूछा "कहो तो, क्या विचार है ? किस से ब्याह करोगे ? अब तो तुम्हारी उम्र काफ़ी हुई, अब क्यों देर कर रहे हो ?"

बोला—"अगर मेरे बस की बात होती तो दो बरस पहले ही लैला को ब्याह लाता. पर करूं क्या, वह तो मुराद को मुझ से ज़्यादा चाहती है."

मैंने कहा—"मेरे ख़्याल में ऐसा नहीं है. मैं तो समझता हूं तुम्हें उस से ज़्यादा नहीं तो उसी के बराबर चाहती है."

कहने लगा—"आज मालूम हो जायेगा क्या करना है."

मैंने पूछा—"ईश्वर न करे ! तुम्हारे मन में क्या है ?"

कहा—"आज मैं और मुराद सांडों की लड़ाई कराएंगे. हमने आपस में क़रार कर लिया है कि अगर मेरे सांड ने उसके सांड को हरा दिया तो लैला मुझ से ब्याह करेगी और अगर उसके सांड ने मेरे सांड को पीट दिया तो वह लैला से ब्याह करेगा. मेरा विश्वास है मेरा सांड जीतेगा."

इतने में ख़बर आई कि मुराद आया है. हमने रुस्तम को रवाना कर दिया और मुराद को बुलाया. पर जान पड़ा कि रुस्तम फिर लौट आया है. दोनों के चेहरे मोहरे में तनिक ही फ़र्क़ होगा. सचमुच मुराद भी रुस्तम ही दीख पड़ता था. पता चला कि उसने रुस्तम से एक दो ही महीने पहले संसार में पग रक्खे होंगे. दोनों की माएं, बहनें और बाप भाई हैं. इतने एक दूसरे से मिलते थे और दोनों ऐसे भले लगते थे, हज़ार कोशिश की लैला की आंखों से उनके फ़र्क़ को देखूं और एक को पसन्द करूं नतीजा येही निकला न्याय नहीं हो सकेगा.

मुराद की भी यही आशा थी कि उसका सांड रुस्तम के सांड को मार भगाएगा और उसे लैला मिल जायेगी. मैंने तो अपने दोस्त से कहा था सांडों के युद्ध को नहीं देखूंगा

کچھ منٹوں کے بعد رستم آیا . شاہنامہ کے رستم کے سمان اس کی ڈاڑھی دو شاخی نہیں تھی اور نہ ہی اسکی سی نوکدار ٹوپی پہنے تھا . پر ٹھاٹھ اسی جوان رستم کے تھے جس نے مست ہاتھی کو مار گرایا تھا اور سفید قلعہ پر چڑھائی کی تھی . اس کا قد سرو کا سا‘ سینہ چوڑا‘ کمر پتلی بالکل جیسے شاہنامہ میں لکھا ہے . لیکن میں نہیں کہہ سکتا کہ فردوسی کا رستم بھی اتنا ہی سندر تھا جتنا یہ . کیا اسکی آنکھیں‘ بھویں‘ ہونٹ‘ دانت‘ ناک‘ کان ایسے ہی سلونے تھے ؟ مونچھوں کی ہریالی اگ ہی رہی تھی . ابھی عمر کے بیس برس بیتے ہوں گے .

پہلے تو ادھر ادھر کی باتیں ہوئیں اور اول جلول بکواس ہوتی رہی . پھر میں نے پوچھا " کہو تو کیا وچار ہے ؟ کس سے بیاہ کروگے ؟ اب تو تمہاری عمر کافی ہوئی‘ اب کیوں دیر کر رہے ہو ؟"

بولا—" اگر میرے بس کی بات ہوتی تو دو برس پہلے ہی لیلی کو بیاہ لاتا . پر کروں کیا‘ وہ تو مراد کو مجھ سے زیادہ چاہتی ہے ."

میں نے کہا—" میرے خیال میں ایسا نہیں ہے . میں تو سمجھتا ہوں تمہیں اس سے زیادہ نہیں تو اسی کے برابر چاہتی ہے ."

کہنے لگا—" آج معلوم ہوجائے گا کیا کرنا ہے"

میں نے پوچھا—" ایشور نہ کرے ! تمہارے من میں کیا ہے ؟"

کہا— ' آج میں اور مراد سانڈوں کی لڑائی کرائیں گے . ہم نے آپس میں قرار کر لیا ہے کہ اگر میرے سانڈ نے اس کے سانڈ کو ہرا دیا تو لیلی مجھ سے بیاہ کرے گی اور اگر اس کے سانڈ نے میرے سانڈ کو پیٹ دیا تو وہ لیلی سے بیاہ کریگا . میرا وشواس ہے میرا سانڈ جیتے گا ."

اتنے میں خبر آئی کہ مراد آیا ہے . ہم نے رستم کو روانہ کر دیا اور مراد کو بلایا . پر جان پڑا کہ رستم پھر لوٹ آیا ہے . دونوں کے چہرے مہرے میں تنک ہی فرق ہوگا . سچ مچ مراد بھی رستم ہی دکھائی پڑتا تھا . پتہ چلا کہ اس نے رستم سے ایک دو ہی مہینے پہلے سنسار میں پگ رکھے ہونگے . دونوں کی مائیں‘ بہنیں اور باپ بھائی ہیں . اتنے ایک دوسرے سے ملتے تھے اور دونوں ایسے بھلے لگتے تھے‘ ہزار کوشش کی لیلی کی آنکھوں سے ان کے فرق کو دیکھوں اور ایک کو پسند کروں ، نتیجہ یہی نکلا نیائے نہ ہوسکے گا .

مراد کی بھی یہی آشا تھی کہ اس کا سانڈ رستم کے سانڈ کو مار بھگائے گا اور اسے لیلی مل جائے گی . میں نے تو اپنے دوست سے کہا تھا سانڈوں کے یدھ کو نہیں دیکھونگا

उसने कहा—"मैं क्या किसी के दिल में बैठी हूं कि जान लूं ? मैं तो दोनों को यकसां दोस्त मानती हूं. हम सब एक साथ रहे और बढ़े हैं. वह दोनों मेरी चची के लड़के हैं. उसने दोनों को बड़ा किया है. कैसे किसी एक को दूसरे से अलग करूं ? न मुझे किसी में कोई बदी दिखाई देती है."

मैंने कहा—"आखिर यह है क्या ? जवान होने पर मर्द शादी करता है. तुम्हें चाहिये किसी एक को ब्याह के लिये चुन लो. इसके सिवाय चारा भी तो नहीं है."

कहने लगी—"वह चाहें जिससे ब्याह करें. मुझे पति की चाह नहीं. बिना पति ही जीवन निर्वाह करूंगी."

उसके चेहरे पर कोई परछाइयां नहीं दिखाई दीं पर गालों पर आंसू की बूंदें टपकने लगीं. मुझे ऐसा मालूम हुआ कि दिल का लहू आंखों में से बह रहा हो. मैंने कहा "मैं तो हंसी कर रहा था, वह भी नहीं चाहते ब्याह करें." कहने को तो कह दिया पर मेरा बुरा हाल था. और बात चीत कैसे बढ़ाता, घर लौट आया.

शीरीं कला का चौधरी आया, बोला "आज मालिक की खातिर बैलों की लड़ाई का प्रबंध किया है." मैंने बिगड़ कर कहा "इन निर्दई बरबर काल के तमाशों को अलग छोड़ना चाहिये. लज्जा की बात है इस तरह बेगुनाह जानवरों की जानों के साथ खेलना. यह भी कोई आदमी हैं जिनके मन लालसा और क्रोध से भरे हैं जो झूठे भ्रमों से पागल अकारण एक दूसरे की जान के पीछे पड़े रहते हैं. यह जानवर हम से कहीं ज्यादा बुद्धिमान हैं. जानते हैं सब के लिये काफी से ज्यादा चारा और पानी है. खा पी कर शुक्र करते हैं और आपस में शान्ति और सफाई का व्योहार करते हैं. इसकी क्या जरूरत है कि हम अपनी दानवी आत्मा उनमें फूंकें ? मैं तो हरगिज नहीं चाहता कि लड़ाई रचाई जावे."

चौधरी हंसा, बोला "यह तो जाहिर है श्रीमान लड़ाई से डरते हैं, पर हमारे मालिक तो बहादुर आदमी हैं. उनको यह सब वहम नहीं सताते."

मालिक बोले—"मेरे दोस्त मजाक कर रहे थे. जरूर जरूर सांडों के युद्ध का सामान करो. हम तमाशा देखेंगे. मुझे बहुत पसन्द है." फिर मेरा हाथ पकड़ कर कमरे में ले गये. कहने लगे—"भाई जान, मैं तुम से कहीं ज्यादा इन निर्दई खेलों से नफरत करता हूं. पर चारा क्या है ? जाना ही होगा और देखना पड़ेगा. अगर यह चौधरी और इस गांव के लोग यह जानें कि हम कायर और भीरू हैं तो टोपी उछल जायेगी."

मैंने कहा—"अच्छा तो हुक्म दो रुस्तम और मुराद को ले आयें, जरा उनके चितवन भी तो देखें."

اس نے کہا—"میں کیا کسی کے دل میں بیٹھی ہوں کہ جان لوں؟ میں تو دونوں کو یکساں دوست مانتی ہوں. ہم سب ایک ساتھ رہے اور بڑھے ہیں. یہ دونوں میری چچی کے لڑکے ہیں. اس نے دونوں کو بڑا کیا ہے. کیسے کسی ایک کو دوسرے سے الگ کروں؟ نہ مجھے کسی میں کوئی بدی دکھائی دیتی ہے."

میں نے کہا—"آخر یہ ہے کیا؟ جوان ہونے پر مرد شادی کرتا ہے. تمہیں چاہیئے کسی ایک کو بیاہ کے لئے چن لو. اس کے سوائے چارہ بھی تو نہیں ہے."

کہنے لگی—"وہ چاہیں جس سے بیاہ کریں. مجھے پتی کی چاہ نہیں. بنا پتی ہی جیون نرواہ کرونگی."

اس کے چہرہ پر کوئی پرچھائیاں نہیں دکھائی دیں پر گالوں پر آنسو کی بوندیں ٹپکنے لگیں. مجھے ایسا معلوم ہوا کہ دل کا لہو آنکھوں میں سے بہہ رہا ہو. میں نے کہا "میں تو ہنسی کر رہا تھا' وہ بھی نہیں چاہتے بیاہ کریں." کہنے کو تو کہہ دیا پر میرا برا حال تھا. اور بات چیت کیسے بڑھاتا' گھر لوٹ آیا.

شیریں کلا کا چودھری آیا' بولا "آج مالک کی خاطر بیلوں کی لڑائی کا پربندھ کیا ہے." میں نے بگڑ کر کہا "ان نردئی بربر کال کے تماشوں کو الگ چھوڑنا چاہیئے. لجا کی بات ہے اس طرح بے گناہ جانوروں کی جانوں کے ساتھ کھیلنا. یہ بھی کوئی آدمی ہیں جن کے من لالسا اور کرودھ سے بھرے ہیں جو جھوٹے بھرموں سے پاگل اکارن ایک دوسرے کی جان کے پیچھے پڑے رہتے ہیں. یہ جانور ہم سے کہیں زیادہ بدھیمان ہیں. جانتے ہیں سب کے لئے کافی سے زیادہ چارہ اور پانی ہے. کھا پی کر شکر کرتے ہیں اور آپس میں شانتی اور صفائی کا بیوہار کرتے ہیں. اس کی کیا ضرورت ہے کہ ہم اپنی دانوی آتما ان میں پھونکیں؟ میں تو ہرگز نہیں چاہتا کہ یہ لڑائی رچائی جائے."

چودھری ہنسا. بولا "یہ تو ظاہر ہے شریمان لڑائی سے ڈرتے ہیں' پر ہمارے مالک تو بہادر آدمی ہیں. ان کو یہ سب وہم نہیں ستاتے."

مالک بولے—"میرے دوست مذاق کر رہے تھے. ضرور ضرور سانڈوں کے یدھ کا سامان کرو. ہم تماشا دیکھیں گے. مجھے بہت پسند ہے. پھر میرا ہاتھ پکڑ کر کمرہ میں لے گئے. کہنے لگے—"بھائی' میں تم سے کہیں زیادہ ان نردئی کھیلوں سے نفرت کرتا ہوں. پر چارہ کیا ہے؟ جانا ہی ہوگا اور دیکھنا پڑے گا. اگر یہ چودھری اور اس گاؤں کے لوگ یہ جانیں کہ ہم کایر اور بھیرو ہیں تو ٹوپی اچھل جائے گی."

میں نے کہا—"اچھا تو حکم دو رستم اور مراد کو لے آئیں' ذرا ان کے چتون بھی تو دیکھیں."

दोनों को चाहती है. पर मुश्किल यह है किसे दूसरे पर तरजीह दे ? अभी तक किसी से यह समस्या हल नहीं हो सकी. तीन आदमी हैं, आग में जल रहे हैं, पर कैसे फ़ैसला करें ?"

"अब यह दोनों चचेरे भाई ऐसे एक दूसरे के दुश्मन हो गये हैं कि कई बार मारने मरने के इरादे से कुश्ती लड़े और घायल हुए. दो महीना हुए मैंने इन दोनों से और उनके बापों से जमानत ली कि अब कभी कुश्ती न लड़ेंगे. यह लड़के लड़की असल में कुर्द हैं जो माज़न्द्रान आ कर बस गए हैं."

मैं बोला—"लैला को बुलाओ, हम उस से बातें करें. समझें तो सही इन दोनों प्रीतमों में से किस को ज्यादा चाहती है. कम से कम किसको बहतर जानती है. यह पता चल जाये तो फिर इसकी ज़रूरत नहीं कि वह दूसरे से भी लगाव रखती है या प्रेम भाव रखती है. जिसे भी ज्यादा दोस्त मानती है उस से ब्याह रचा देना चाहिये और इन तीन दुखियों को इस जान लेवा कष्ट से छुटकारा दिलाना चाहिये."

लैला आई. उसके चेहरे से घमन्ड टपकता था. वह मेरे सामने आकर खड़ी हो गई. उसका लम्बा क़द, गर्दन, सीना, बांहें, टांगें और बदन के सारे अंग ऐसा बताते थे कि उसने सालों वर्जिश की हो. ख़राद पर से उतरा सिडौल बदन था, चेहरा लमछुआं, आंखें बड़ी बड़ी काली, नाक खड़ी सुतवां, होंट कुछ मोटे, गालों की लाली कह रही थी कि उसकी रगों में साफ़ और भरपूर ख़ून बहता है. अपने गुंजान बिखरे बालों को पीले रेशमी रूमाल के फेंटे से सिर से बांधे थी और नीला फरन जो बदन से चिपका था पहने थी.

मैंने कहा—"मैंने यहीं नज़दीक एक गांव ख़रीदा है. मैं चाहता हूं रुस्तम या मुराद को उस गांव का चौधरी बनाऊं. तुम्हारी समझ में उनमें से किस को पसन्द करूं ?"

ऐसा जान पड़ा मेरे हीले को समझ गई. मुस्काई और कहने लगी—"मैं दोनों को बिल्कुल एक सा दोस्त समझती हूं."

मैंने पूछा—"उनमें से कौन ज्यादा बलवान है ?"

कहने लगी—"दोनों पूरे पहलवान हैं."

मैंने पूछा—"किस में अधिक दया और प्रेम है ?"

बोली—'दोनों एक स्वभाव के हैं."

मैंने पूछा—"कौन सा देखने में ज्यादा अच्छा लगता है ?"

जवाब दिया—"तुम्हारे भी तो आंखें हैं. आप ही देख लो. मेरे लिये तो कोई फ़र्क़ नहीं."

फिर मैंने पूछा—"तुम्हारे साथ कौन ज्यादा प्रेम करता है ?"

دونوں کو چاہتی ہے۔ پر مشکل یہ ہے کسے دوسرے پر ترجیح دے۔ ابھی تک کسی سے یہ سمسیا حل نہیں ہو سکی۔ تین آدمی ہیں، آگ میں جل رہے ہیں، پر کیسے فیصلہ کریں ؟"

"اب یہ دونوں چچیرے بھائی ایسے ایک دوسرے کے دشمن ہو گئے ہیں کہ کئی بار مارنے مرنے کے ارادہ سے کشتی لڑے اور گھائل ہوئے۔ دو مہینہ ہوئے میں نے ان دونوں سے اور ان کے باپوں سے ضمانت لی کہ اب کبھی کشتی نہ لڑینگے۔ یہ لڑکے لڑکی اصل میں کرد ہیں جو مازندران آکر بس گئے ہیں۔"

میں بولا—"لیلیٰ کو بلاؤ، ہم اس سے باتیں کریں۔ سمجھیں تو سہی ان دونوں پریتموں میں سے کس کو زیادہ چاہتی ہے۔ کم سے کم کس کو بہتر جانتی ہے۔ یہ پتہ چل جائے تو پھر اسکی ضرورت نہیں کہ وہ دوسرے سے بھی لگاؤ رکھتی ہے یا پریم بھاؤ رکھتی ہے۔ جسے بھی زیادہ دوست مانتی ہے اس سے بیاہ رچا دینا چاہیئے اور ان تین دکھیوں کو اس جان لیوا کشٹ سے چھٹکارا دلانا چاہیئے۔"

لیلیٰ آئی۔ اس کے چہرے سے گھمنڈ ٹپکتا تھا۔ وہ میرے سامنے آکر کھڑی ہو گئی۔ اس کا لمبا قد، گردن، سینہ، باہیں، ٹانگیں اور بدن کے سارے انگ ایسا بتاتے تھے کہ اسنے سالوں ورزش کی ہو۔ خراد پر سے اترا سڈول بدن تھا۔ چہرا لمچھواں، آنکھیں بڑی بڑی کالی، ناک کھڑی ستواں، ہونٹ کچھ کچھ موٹے، گالوں کی لالی کہ رہی تھی کہ اسکی رگوں میں صاف اور بھرپور خون بہتا ہے۔ اپنے گنجان بکھرے بالوں کو پیلے ریشمی رومال کے پھینٹے سے سر سے باندھے تھی۔ اور نیلا پھرن جو بدن سے چپکا تھا پہنے تھی۔

میں نے کہا—"میں نے یہیں نزدیک ایک گاؤں خریدا ہے۔ میں چاہتا ہوں رستم یا مراد کو اس گاؤں کا چودھری بناؤں۔ تمہاری سمجھ میں ان میں سے کس کو پسند کروں ؟"

ایسا جان پڑا کہ میرے حیلے کو سمجھ گئی۔ مسکرائی اور کہنے لگی—"میں تو دونوں کو بالکل ایک سا دوست سمجھتی ہوں۔"

میں نے پوچھا—"ان میں سے کون زیادہ بلوان ہے ؟"

کہنے لگی—"دونوں پورے پہلوان ہیں۔"

میں نے پوچھا—"کس میں ادھک دیا اور پریم ہے؟"

بولی—"دونوں ایک سبھاؤ کے ہیں۔"

میں نے پوچھا—"کونسا دیکھنے میں زیادہ اچھا لگتا ہے ؟"

جواب دیا—"تمہارے بھی تو آنکھیں ہیں۔ آپ ہی دیکھ لو۔ میرے لئے تو کوئی فرق نہیں۔"

پھر میں نے پوچھا—"تمہارے ساتھ کون زیادہ پریم کرتا ہے ؟"

शोर की तकरार होने लगी. मैंने अपने दोस्त से अचंभे में पूछा "यह क्या कह रहे हैं!" उसने अचरज से जवाब दिया "क्या सचमुच नहीं जानते. तुम तो अपने को बड़ा भावुक समझते हो !" मैं ने कहा "यह तो सम्भव है कि किसी तरह अर्थ निकल आये पर चाहता हूं कि जानं तत्व क्या है."

मेरे दोस्त ने जवाब देने के लिये मुंह खोला. बिना कुछ बोले उंगली होंटों पर रख कर इशारे से कहा, चुप रहो और सुनो. फिर एक मधुर शब्द सुनाई दिया जिसकी लय हवा के झोंकों से ऊंची नीची होती थी. बात तो मेरी समझ में आई नहीं लेकिन दोस्त के सिर के हिलने और मुस्काने से पता लगता था कि वह उस गीत को—जानता है फिर उसने धीरे से उस लाल शल्वार वाली लड़की की तरफ़ उंगली उठाई और बोला "यह लैला है जो प्रीत के गाने गा रही है. गाय बैलों की चाह भरी हुंकारों ने उसके जी में भी अपने प्रेम की याद जगा दी है. मैं इस गाने को जानता हूं."

जैसे ही लैला का गाना खत्म हुआ एक नरम नरम शब्द से वातावरन भर गया. मेरे दोस्त ने बतलाया यह मुराद है जो लैला का प्रीतम है और जवाब दे रहा है.

मैं बोला, "चुप रहो, बोलो मत, सुनने दो."

मुराद गाता और बारी बारी से और कभी मिल कर गायें और बैल हुंकारते और पहाड़ और घाटियां और शायद फूल पत्ते उनकी आवाज़ों का जवाब देते. लैला भी चुप नहीं थी.

आज मैं समझा आरकैस्ट्रा किसे कहते हैं और रागों में सवाल और जवाब कैसे बंधते हैं. इसलिये कि आज मेरे होश गोश खुले थे और मैं प्रेम की पुकार और उलझन का अनुभव कर रहा था. मैंने प्रन किया कि आज के बाद हर आरकैस्ट्रा के हर बाजे को अलग अलग ठीक ठीक सुनूंगा और उसके अर्थ और सुर को समझूंगा. बाजों के बोल और सवाल जवाब को बिना जाने न छोड़ूंगा. जब शोर था तो मैंने कहा "ज़रा मुराद और लैला की कहानी खोल कर सुनाओ."

उसने कहा—"यह दोनों एक दूसरे के प्रीतम हैं और एक दूसरे पर जान देते हैं." मैंने पूछा—"तुम्हें ईश्वर की सौगंद बताओ तो रुकावट क्या है? पर चाहे कुछ ही रुकावट क्यों न हो आज ही उसे हटाने का जतन करना चाहिये और उनके ब्याह की तैयारी करनी चाहिये."

कहने लगा—"अफ़सोस है उनकी प्रीत का रास्ता ऐसा आसान नहीं. एक तीसरा प्रीतम भी है." मैंने पूछा—"इसके क्या मानी?"

उसने बताया—"मुराद और रुस्तम दो चचेरे भाई हैं और वह दोनों लैला से ब्याह करना चाहते हैं. लैला भी

شور کی تکرار ہونے لگی ۔ میں نے اپنے دوست سے اچنبھے میں پوچھا "یہ کیا کہ رہے ہیں"! اس نے اچرج سے جواب دیا" کیا سچ مچ نہیں جانتے ؟ تم تو اپنے کو بڑا بھاوک سمجھتے ہو ! میں نے کہا "یہ تو ممکن ہے کہ کسی طرح ارتھ نکل آنے پر چاہتا ہوں کہ جانوں تتو کیا ہے ۔

میرے دوست نے جواب دینے کے لئے منہ کھولا ۔ بنا کچھ بولے انگلی ہونٹوں پر رکھکر اشارہ سے کہا' چپ رہو اور سنو ۔ پھر ایک مدھر شبد سنائی دیا جس کی لے ہوا کے جھونکوں سے اونچی نیچی ہوتی تھی ۔ بات تو مری سمجھ میں آئی نہیں لیکن دوست کے سر کے ہلنے اور مسکرانے سے پتہ لگتا تھا کہ وہ اس گیت کو جانتا ہے ۔ پھر اس نے دھیرے سے اس لال شلوار والی لڑکی کی طرف انگلی اٹھائی اور بولا "یہ لیلیٰ ہے جو پریت کے گانے گا رہی ہے ۔ گائے بیلوں کی چاہ بھری ہنکاروں نے اس کے جی میں بھی اپنے پریم کی یاد جگا دی ہے ۔ میں اس گانے کو جانتا ہوں ۔"

جیسے ہی لیلیٰ کا گانا ختم ہوا ایک نرم نرم شبد سے واتاورن بھر گیا ۔ میرے دوست نے بتلایا یہ مراد ہے جو لیلیٰ کا پریتم ہے اور جواب دے رہا ہے ۔

میں بولا "چپ رہو' بولو مت' سننے دو ۔"

مراد گاتا اور باری باری سے اور کبھی مل کر گائیں اور بیل ہنکارتے اور پہاڑ اور گھاٹیاں اور شاید پھول پتے انکی آوازوں کا جواب دیتے ۔ لیلیٰ بھی چپ نہیں تھی ۔

آج میں سمجھا آرکسٹرا کسے کہتے ہیں اور راگوں میں سوال اور جواب کیسے بندھتے ہیں ۔ اس لئے کہ آج میرے ہوش گوش کھلے تھے اور میں پریم کی پکار اور الجھن کا انوبھو کر رہا تھا ۔ میں نے پرن کیا کہ آج کے بعد ہر آرکسٹرا کے ہر باجے کو الگ الگ ٹھیک ٹھیک سنونگا اور اس کے ارتھ اور سر کو سمجھونگا ۔ باجوں کے بول اور سوال جواب کو بنا جانے نہ چھوڑونگا ۔ جب شور تھا تو میں نے کہا "ذرا مراد اور لیلیٰ کی کہانی کھول کر سناؤ ۔"

اس نے کہا—"یہ دونوں ایک دوسرے کے پریتم ہیں اور ایک دوسرے پر جان دیتے ہیں ۔" میں نے پوچھا—"تمہیں ایشور کی سوگند بتلاؤ تو رکاوٹ کیا ہے ؟ پر چاہے کچھ ہی رکاوٹ کیوں نہ ہو آج ہی اسے ہٹانے کا جتن کرنا چاہئے اور ان کے بیاہ کی تیاری کرنی چاہئے ۔"

کہنے لگا—"افسوس ہے انکی پریت کا راستہ ایسا آسان نہیں ۔ ایک تیسرا پریتم بھی ہے ۔" میں نے پوچھا—"اس کے کیا معنی ؟"

اس نے بتایا—"مراد اور رستم دو چچیرے بھائی ہیں اور یہ دونوں لیلیٰ سے بیاہ کرنا چاہتے ہیں ۔ لیلیٰ بھی

इठलाती हैं. पानी के ऊपर जो काली चादर पड़ी थी और जिसने नदी की कलकल को सहमा रक्खा था झीनी होने लगी और फट गई. वह सब देव दानव जिन के क़िस्से शाहनामे में पढ़े थे विशाल पहाड़ों, ऊंचे दरख़्तों और गहरी घाटियों के रूप में सामने आकर खड़े होने लगे.

घबरा कर जी चाहा आंखें बन्द करूं पर धुंधलाई आंखों से देखता जाता था कहीं ऐसा न हो यह जादू भरे चित्र ओझल हो जाये. मिले जुले रंग चारों तरफ़ छिटके थे. चित्रों की रेखाएं रंगों से भरी थीं. मैं इस रंगीली बाढ़ में ग़ोते खा रहा था और पल पल में एक नई दुनिया में पहुंच रहा था.

इतने ही में सूरज निकल आया और धरती का निखरा चमकीला मुखड़ा दिखाई दिया. पहाड़ों के सिर पर गहरी हरी मख़मल बिछी थी. जब हवा चलती तो मख़मल धूप छांव हो जाती और हरयाली निंदयाकर जाग उठती. घने दरख़्त ऐसे एक दूसरे से सिर मिलाए जुटे खड़े थे मालूम होता है अपने रात के रहस्यों को दबाये रखना चाहते हैं. नदी के दोनों तरफ़ जहां तक निगाह जाती थी ऊंची नीची ज़मीन पर हज़ारों फूलों के फ़र्श फैले हुए थे. एक तरफ़ लाल फूलों से आंगन भरा था पर हवा के डर से फूल एक दूसरे को गोदी में खींच रहे थे. उनके बीच में एक बड़ा आग भभूका लाल फूल दिखाई दिया जो कभी उस फूल के मुंह पर कभी उस पर अपना पल्ला डाल देता था और हर बार हाथ बढ़ाता था और पल्ला नीचे खिंच आता था. मुझ से इतना दूर था कि साफ़ दिखाई नहीं देता था. पता नहीं फूल था या लाल लाल शलवार पहने एक लड़की. पर सवेरे सवेरे वह उस हरयाली फुलवाड़ी में क्या कर रही थी ?

हमारे दोस्त भी एक टक बातें करते जाते थे, कभी चरागाह की, कभी धान के खेत की, कभी घर बार की. सवाल करने का भी अवसर नहीं देते थे. मैं भी अनसुना बन गया था. तमाशा देखने में रत हो गया और अपने विचारों में डूब गया. चुपके चुपके आहें भरता था. हाय ! कोई रसिक मित्र होता ! दिल तड़प रहा था गीत के लिये, कविता के लिये. दिल की बात कहने के लिये बेचैन था.

अचानक एक सांड की दर्द भरी फुंकार सुनाई दी. उसकी लम्बी गंज पहाड़ों और घाटियों में चक्कर लगाने लगी. उसके सुरों का उतार चढ़ाव चारों तरफ़ फैलने लगा. ऐसा जान पड़ा आकाश के मंदिर में संख बज रहा है.

दिल खिंचने लगा, जी भर आया, व्याकुल हो गया. आंखें बन्द कर लीं. चाहा उस जी को उथल पुथल करने वाले सुर को फिर सुनूं. इस बार दूसरी तरफ़ से बड़ा ऊंचा और भारी निनाद सुनाई दिया. ऐसा मालूम हुआ जैसे कोई सवाल का जवाब दे रहा हो. फिर तो दोनों तरफ़ से

اٹھلاتی ہیں۔ پانی کے اوپر جو کالی چادر پڑی تھی، اور جس نے ندی کی کلکل کو سہما رکھا تھا جھینی ہونے لگی اور پھٹ گئی۔ وہ سب دیو دانو جن کے قصے شاہنامہ میں پڑھے تھے وشال پہاڑوں، اونچے درختوں اور گہری گھاٹیوں کے روپ میں سامنے آ کر کھڑے ہونے لگے۔

گھبرا کر جی چاہا آنکھیں بند کروں پر دھندھلائی آنکھوں سے دیکھتا جاتا تھا کہیں ایسا نہ ہو یہ جادو بھرے چتر اوجھل ہو جائیں۔ ملے جلے رنگ چاروں طرف چھٹکے تھے۔ چتروں کی ریکھائیں رنگوں سے بھری تھیں۔ میں اس رنگیلی باڑھ میں غوطے کھا رہا تھا اور پل پل میں ایک نئی دنیا میں پہونچ رہا تھا۔

اتنے ہی میں سورج نکل آیا اور دھرتی کا نکھرا چمکیلا مکھڑا دکھائی دیا۔ پہاڑوں کے سر پر گہری ہری مخمل بچھی تھی۔ جب ہوا چلتی تو مخمل دھوپ چھاؤں ہو جاتی اور ہریالی نندیا کر جاگ اٹھتی۔ گھنے درخت ایسے ایک دوسرے سے سر ملائے جٹے کھڑے تھے معلوم ہوتا ہے اپنے رات کے رہسیوں کو دبائے رکھنا چاہتے ہیں۔ ندی کے دونوں طرف جہاں تک نگاہ جاتی تھی اونچی نیچی زمین پر ہزاروں پھولوں کے فرش پھیلے ہوئے تھے۔ ایک طرف لال پھولوں سے آنگن بھرا تھا پر ہوا کے ڈر سے پھول ایک دوسرے کو گودی میں کھینچ رہے تھے۔ ان کے بیچ میں ایک بڑا آگ بھبھوکا لال پھول دکھائی دیا جو کبھی اس پھول کے منہ پر کبھی اس پر اپنا پلہ ڈال دیتا تھا اور ہر بار ہاتھ بڑھاتا تھا اور پلہ نیچے کھنچ آتا تھا۔ مجھ سے اتنا دور تھا کہ صاف دکھائی نہیں دیتا تھا۔ پتہ نہیں پھول تھا یا لال لال شلوار پہنے ایک لڑکی۔ پر سویرے سویرے وہ اس ہریالی پھلواری میں کیا کر رہی تھی؟

ہمارے دوست بھی ایک ٹک باتیں کرتے جاتے تھے کبھی چراگاہ کی کبھی دھان کے کھیت کی، کبھی گھر بار کی۔ سوال کرنے کا بھی اوسر نہیں دیتے تھے۔ میں بھی ان سنا بن گیا تھا۔ تماشا دیکھنے میں رت ہوگیا اور اپنے وچاروں میں ڈوب گیا۔ چپکے چپکے آہیں بھرتا تھا۔ ہائے! کوئی رسک متر ہوتا! دل تڑپ رہا تھا گیت کے لئے، کویتا کے لئے۔ دل کی بات کہنے کے لئے بے چین تھا۔

اچانک ایک سانڈ کی دکھ درد بھری پھنکار سنائی دی۔ اس کی لمبی گونج پہاڑوں اور گھاٹیوں میں چکر لگانے لگی۔ اس کے سروں کا اتار چڑھاؤ چاروں طرف پھیلنے لگا۔ ایسا جان پڑا آکاش کے مندر میں سنکھ بج رہا ہے۔

دل کھنچنے لگا، جی بھر آیا، بیاکل ہوگیا۔ آنکھیں بند کر لیں۔ چاہا اس جی کو اتھل پتھل کرنے والے سر کو پھر سنوں۔ اس بار دوسری طرف سے بڑا اونچا اور بھاری نناد سنائی دیا۔ ایسا معلوم ہوا جیسے کوئی سوال کا جواب دے رہا ہو۔ پھر تو دونوں طرف سے

शीरीं कला

[मोतीउद्दोला मोहम्मद हिजाजी ईरान के बहुत ही मशहूर कहानीकार हैं. ईरान के बड़े से बड़े लेखकों में इनकी गिन्ती होती है और उन्होंने बहुत सी किताबें लिखी हैं. मोहम्मद हिजाजी उन लेखकों में से नहीं हैं जो प्रगतिशील हैं या हर चीज़ में जड़ मूल से तबदीली चाहते हैं. वह पुराने विचारों के हैं और रूमानी लेखकों में गिने जाते हैं. इनकी कहानियों के चरित्र ऊंचे घरानों से आते हैं. उनके मेल जोल और व्योहार से जो मनोविज्ञान जन्म लेता है उसी के विश्लेशन को वह अपनी कहानियों का आधार बनाते हैं. श्री हिजाजी किसी प्रगतिशील समाजी दर्शन में विश्वास नहीं रखते लेकिन उनमें राष्ट्रीयता की भावना कूट कूट कर भरी है. वह उदार तबियत के समाज सुधारक हैं. जो चीज़ इन को दूसरे लेखकों से अलग खड़ा कर देती है वह है इनकी सुन्दर शैली. इनकी भाषा संगीतमय होती है जो कानों को बहुत भली लगती है. जो कहानी मैं नीचे अनुवाद कर रहा हूं वह उनकी सब से ज्यादा मशहूर कहानियों में से एक है. —ताराचन्द]

❋ ❋ ❋

एक मेरे मित्र हैं जिन्होंने हाल ही में माज़न्दरान में ज़मीन खरीदी है. कुछ दिनों से उनका आग्रह था कि दो तीन दिन गांव में चल कर रहें. वहां ठैहरें और आराम से समय बितायें. कहने लगे अगर तड़के ही चल पड़ें तो दोपहर तक शीरीं कला पहुंच जायेंगे. फिर उस दिन और दो दिन और वहां आराम करें और फिर जिस वक़्त जी चाहे लौट आएंगे. वहां के हवा पानी, सफ़ाई सुथराई की तारीफ़ करते रहे और वादा किया कि गांव पहुंच कर मलाई और तीतर खिलवाएंगे. मैं आजकल कुछ सफ़र से घबराता हूं. मुझे दुनिया में अपने घर की कोठरी से और कोई जगह अच्छी नहीं लगती. पर क्या करूं मेरे दोस्त की येही ख्वाहिश थी. चाहते थे उनकी दिल्लगी के सामान पर मेरी मुहर लग जाये. उन्हें हक़ भी था. मैं भी तो अपने बहुत से लेखों को उन्हें सुनाता रहता था और वह बिचारे सह लेते थे.

फिर एक दिन चल ही पड़े. पर रास्ते में मोटर बिगड़ गई. पहुंचते पहुंचते सांझ हो गई. थके तो थे ही, जल्दी से सो गये. दूसरे दिन अभी सूरज निकला नहीं था कि दरिया के किनारे पहुंचे. नींद में मतवाले थे. दिल में उमंगें भरी थीं. देखा अंधियारी आहिस्ता आहिस्ता पर शोर मचाती आसमान से भाग रही है. सितारे झिलमिलाते हैं और ओझल होते जाते हैं. पहाड़ की चोटियां सर उठाती हैं और

شیریں کلا

[معطوم الدولہ محمد حجازی ایران کے بہت ہی مشہور کہانی کار ہیں. ایران کے بڑے سے بڑے لیکھکوں میں ان کی گنتی ہوتی ہے اور انہوں نے بہت سی کتابیں لکھی ہیں. محمد حجازی اُن لیکھکوں میں سے نہیں ہیں جو پرگتی شیل ہیں یا ہر چیز میں جڑ مول سے تبدیلی چاہتے ہیں. یہ پرانے وچاروں کے ہیں اور رومانی لیکھکوں میں گنے جاتے ہیں. ان کی کہانیوں کے چتر اونچے گھرانوں سے آتے ہیں. اُن کے میل جول اور بیوہار سے جو منوگیان جنم لیتا ہے اسی کے وشلیشن کو یہ اپنی کہانیوں کا آدھار بناتے ہیں. شری حجازی کسی پرگتی شیل سماجی درشن میں وشواس نہیں رکھتے لیکن اُن میں راشٹریتا کی بھاونا کوٹ کوٹ کر بھری ہے. وہ اُدار طبیعت کے سماج سدھارک ہیں. جو چیز ان کو دوسرے لیکھکوں سے الگ کھڑا کر دیتی ہے وہ ہے ان کی سندر شیلی. ان کی بھاشا سنگیت مے ہوتی ہے جو کانوں کو بہت بھلی لگتی ہے. جو کہانی میں نیچے انواد کر رہا ہوں وہ اُن کی سب سے زیادہ مشہور کہانیوں میں سے ایک ہے.—تارا چند]

❋ ❋ ❋

ایک میرے متر ہیں جنہوں نے حال ہی میں مازندران میں زمین خریدی ہے. کچھ دنوں سے ان کا آگرہ تھا کہ دو تین دن گاؤں میں چل کر رہیں. وہاں ٹھہریں اور آرام سے سمے بتائیں. کہنے لگے اگر تڑکے ہی چل پڑیں تو دوپہر تک شیریں کلا پہونچ جائینگے. پھر اس دن اور دو دن اور وہاں آرام کریں اور پھر جس وقت جی چاہے لوٹ آئیں گے. وہاں کے ہوا پانی، صفائی ستھرائی کی تعریف کرتے رہے اور وعدہ کیا کہ گاؤں پہونچ کر ملائی اور تیتر کھلوائیں گے. میں آج کل کچھ سفر سے گھبراتا ہوں. مجھے دنیا میں اپنے گھر کی کوٹھری سے اور کوئی جگہ اچھی نہیں لگتی. پر کیا کروں میرے دوست کی یہی خواہش تھی. چاہتے تھے ان کی دل لگی کے سامان پر میری بھی مہر لگ جائے. انہیں حق بھی تھا. میں بھی تو اپنے بہت سے لیکھوں کو انہیں سناتا رہتا تھا اور وہ بیچارے سہہ لیتے تھے.

پھر ایک دن چل ہی پڑے. پر راستے میں موٹر بگڑ گئی. پہونچتے پہونچتے سانجھ ہو گئی. تھکے تو تھے ہی جلدی سے سو گئے. دوسرے دن ابھی سورج نکلا نہیں تھا کہ دریا کے کنارے پہونچے. نیند میں متوالے تھے. دل میں امنگیں بھری تھیں. دیکھا اندھیاری آہستہ آہستہ پر شور مچاتی آسمان سے بھاگ رہی ہے. ستارے جھلملاتے ہیں اور اوجھل ہوتے جاتے ہیں. پہاڑ کی چوٹیاں سر اٹھاتی ہیں اور

जिस शराब का सूफ़ी ने ज़िक्र किया है उसे योग की किताबों में अमर वारुनी यानी इश्क़े इलाही की शराब कहा गया है. जब अनाहत नाद सुनाई देने लगता है तब ही आदमी के अन्दर यह अमर वारुनी तैयार होनी शुरू होती है. जिन सूफ़ियों, सन्तों, योगियों, फ़क़ीरों और सालिकों ने इस रास्ते को तै किया है उन्होंने इसका पूरा पूरा हाल बताया है.

इस मज़मून को ख़त्म करते हुए मशहूर सूफ़ी, संत और सच्चे ईश्वर भक्त सरमद की कुछ बानी देना ठीक मालूम होता है. सरमद उस मन्सूर का रूहानी वारिस था जिसे सन 920 ई० में बग़दाद के ख़लीफ़ा ने इसलिये सूली पर चढ़वा दिया था चूंकि मन्सूर गली गली में "अनलहक़ ! अनलहक़ !" कहता फिरता था. अनलहक़ के मानी हैं अहम ब्रह्म. अल्लाह की खोज में पच्छिम के एशियाई देशों में घूमने के बाद सरमद दिल्ली आया. उन दिनों औरंगज़ेब दिल्ली की गद्दी पर था. सरमद दिल्ली में एक सूफ़ी वेदान्ती की हैसियत से रहता था. इश्क़े इलाही के नशे में चूर वह दिल्ली की गलियों में "अनलहक़ अनलहक़" कहता हुआ घूमता था. उसे अपने तन बदन का होश न था. बदन पर अकसर कोई कपड़ा न होता था. औरंगज़ेब ने उसको फांसी का हुक्म दिया. सरमद शहीद हो गया. आख़ीर वक़्त तक उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी और उन लोगों के लिये दया थी जो "बेचारे यह नहीं जानते कि वह क्या कर रहे हैं." वह मौत को जीत चुका था. मरते वक़्त सरमद के मुंह से निकला :—

उम्रेस्त कि आवाज़ए मन्सूर कोहन शुद
मन अज़ सरे नौ जल्वा देहम दारो रसन रा

यानी बहुत दिन हो गये जब मन्सूर ने अपनी आवाज़ दुनिया को सुनाई थी. उसी आवाज़ को लेकर अब मैं फिर से फांसी की लकड़ी और रस्सी के टुकड़े को रौनक़ दे रहा हूं.

सरमद ईश्वर के सच्चे भक्तों और इन्सानी क़ौम के सच्चे प्रेमियों में से था. उसके कुछ मशहूर शेरों का तर्जुमा यह है.

"सरमद ने कभी किसी का गिला नहीं किया. अच्छा किया कि नहीं किया. सरमद के लबों से कभी कोई बेहूदा बात नहीं निकली. अच्छा हुआ कि नहीं निकली. सरमद ने आख़ीर वक़्त तक आसमान की भी मिन्नत ख़ुशामद नहीं की. जो काम कि अच्छा नहीं था नहीं किया. अच्छा किया कि नहीं किया. सरमद इश्क़ के कूचे में बदनाम हुआ ! यहूदी मज़हब से वह इस्लाम की तरफ़ गया. मालूम नहीं कब ख़ुदा और मोहम्मद से लछमन और राम की तरफ़ गया ! ऐ सरमद इश्क़ का ग़म दुनिया की हविस रखने वालों को नहीं मिलता ! पर्वाने के दिल का सोज़ मक्खी को नहीं मिलता ! यार के पास पहुंचने तक एक उम्र लग गई ! यह हमेशा रहने वाली दौलत हर किसी को नहीं मिलती !

جس شراب کا صوفی نے ذکر کیا ہے اُسے یوگ کی کتابوں میں امر وارونی یعنی عشقِ الٰہی کی شراب کہا گیا ہے۔ جب اناہت ناد سنائی دینے لگتا ہے تب ہی آدمی کے اندر یہ امر وارونی تیار ہونی شروع ہوتی ہے۔ جن صوفیوں، سنتوں، یوگیوں، فقیروں اور سالکوں نے اس راستے کو طے کیا ہے انہوں نے اسکا پورا پورا حال بتایا ہے۔

اس مضمون کو ختم کرتے ہوئے مشہور صوفی، سنت اور سچے ایشور بھگت سرمد کی کچھ بانی دینا ٹھیک معلوم ہوتا ہے۔ سرمد اس منصور کا روحانی وارث تھا جسے سن 920ع میں بغداد کے خلیفہ نے اس لئے سولی پر چڑھوا دیا تھا چونکہ منصور گلی گلی میں "اناالحق ! اناالحق!" کہتا پھرتا تھا۔ اناالحق کے معنی ہیں اہم برہم۔ اللہ کی کھوج میں پچھم کے ایشیائی دیشوں میں گھومنے کے بعد سرمد دلی آیا۔ ان دنوں اورنگ زیب دلی کی گدی پر تھا۔ سرمد دلی میں ایک صوفی ویدانتی کی حیثیت سے رہتا تھا۔ عشقِ الٰہی کے نشے میں چور وہ دلی کی گلیوں میں "اناالحق اناالحق" کہتا ہوا گھومتا تھا۔ اُسے اپنے تن بدن کا ہوش نہ تھا۔ بدن پر اکثر کوئی کپڑا نہ ہوتا تھا۔ اورنگ زیب نے اسکو پھانسی کا حکم دیا۔ سرمد شہید ہوگیا۔ آخیر وقت تک اس کے چہرے پر مسکراہٹ تھی اور ان لوگوں کے لئے دیا تھی جو "بیچارے یہ نہیں جانتے کہ وہ کیا کر رہے۔" وہ موت کو جیت چکا تھا۔ مرتے وقت سرمد کے منہ سے نکلا :—

عمریست کہ آوازۂ منصور کہن شد
من جلوہ دہم بار دگر دار و رسن را

یعنی بہت دن ہوگئے جب منصور نے اپنی آواز دنیا کو سنائی تھی۔ اسی آواز کو لے کر اب میں پھر سے پھانسی کی لکڑی اور رسی کے ٹکڑے کو رونق دے رہا ہوں۔

سرمد ایشور کے سچے بھگتوں اور انسانی قوم کے سچے پریمیوں میں سے تھا۔ اس کے کچھ مشہور شعروں کا ترجمہ یہ ہے :—

"سرمد نے کبھی کسی کا گلہ نہیں کیا۔ اچھا کیا کہ نہیں کیا۔ سرمد کے لبوں سے کبھی کوئی بیہودہ بات نہیں نکلی۔ اچھا ہوا کہ نہیں نکلی۔ سرمد نے آخیر وقت تک آسمان کی بھی منت خوشامد نہیں کی۔ جو کام کہ اچھا نہیں تھا نہیں کیا۔ اچھا کیا کہ نہیں کیا۔ سرمد عشق کے کوچے میں بدنام ہوا ! یہودی مذہب سے وہ اسلام کی طرف گیا۔ معلوم نہیں کب خدا اور محمد سے لچھمن اور رام کی طرف گیا ! اے سرمد عشق کا غم دنیا کی ہوس رکھنے والوں کو نہیں ملتا ! پروانہ کے دل کا سوز مکھی کو نہیں ملتا ! یار کے پاس پہونچنے تک ایک عمر لگ گئی ! یہ ہمیشہ رہنے والی دولت ہر کسی کو نہیں ملتی !

मशहूर सूफी संत मुईनुद्दीन चिश्ती ने कहा है :—

"मैंने अपने प्रीतम अल्लाह से कहा कि तू कब तक अपने आप को मुझ से पर्दे में छिपाये रक्खेगा. अब वक़्त आ गया है कि तू इस पर्दे से बाहर मुझे अपने दीदार का दर्शन दे. प्रीतम ने जवाब दिया मेरे दीदार पर कोई पर्दा नहीं है. अगर तुझे पर्दा दिखाई देता है तो वह पर्दा खुद तू ही है. जब तक तू है तब तक ही तू मुझ से हज़ारों पर्दों में छिपा हुआ है. तेरी खुदी ही मेरे बीच का पर्दा है."

एक और फ़क़ीर ने कहा है :—

न कोई पर्दा है उसके दर पै न रूये रोशन नक़ाब में है
तू आप अपनी खुदी से ग़ाफ़िल हिजाब में है हिजाब में है

शम्स तबरेज़ ने लिखा है :—

चह तदबीर ऐ मुसलमानां ! कि मन खुद रा नमी दानम
न तरसा न यहूदी अम न गिब्रम न मुसलमानम

यानी ऐ मुसलमानो ! मैं क्या करूं. मैं खुद अपने को नहीं जानता. मैं न ईसाई हूं न यहूदी, न पारसी हूं, न मुसलमान.

एक और सूफी कहता है :—

"सूफी की खुदी जब मिट गई तो फिर उसका कोई मज़हब नहीं रह जाता. जो अपने यार तक पहुंच गया उसे फिर किसी दूसरी चीज़ से मतलब नहीं रहता. रब तक पहुंचा हुआ रब हो जाता है, जो रब ही रब है उसके लिये कोई अलग रब नहीं रहता. जहां सूरज ही सूरज है वहां रात नहीं रहती."

एक और सूफी ने कहा है :—

शौक़ है जब तक पसे पर्दा जमाले यार है
हट गया पर्दा तो फिर दीदार ही दीदार है

एक सूफी कहता है :—

"ज़माने के राज़ यानी रहस्य को जानने की कोशिश मत कर. सारंगी और शराब की बात कर. इस पहेली को किसी ने आज तक हिकमत यानी दिमाग़ से नहीं हल किया और न यह पहेली इस तरह खुल सकती है. अज़ल यानी अनन्त के भेदों को न तू जानता है और न मैं, इस पहेली को न तू पढ़ सकता है और न मैं. मैं और तू की बातचीत ही पर्दे के इस तरफ़ है, जब यह पर्दा उठ गया तो न तू है और न मैं.

ऊपर के कलाम में सारंगी और शराब का ज़िक्र आया है. यह वही सारंगी है जिसे हिन्दू योग की किताबों में दैवी वीना यानी ईश्वर की बीन कहा गया है. जो राग इस सारंगी पर बजता है और सुनाई देता है उसे योग की किताबों में अनाहत नाद कहा गया है. यह आवाज़ उस राह पर चलने वाले को अपने अन्दर सुनाई देती है. यह एक अजीब ख़ामोशी की आवाज़ है. बाहर से आंख, नाक, कान बन्द किये जावें तब यह अन्दर सुनने में आती है.

مشہور صوفی سنت معین الدین چشتی نے کہا ہے :—

" میں نے اپنے پریتم اللہ سے کہا ہے کہ تو کب تک اپنے آپ کو مجھ سے پردے میں چھپائے رکھے گا . اب وقت آگیا ہے کہ تو اس پردے سے باہر مجھے اپنے دیدار کا درشن دے . پریتم نے جواب دیا میرے دیدار پر کوئی پردہ نہیں ہے . اگر تجھے پردہ دکھائی دیتا ہے تو وہ پردہ خود تو ہی ہے . جب تک تو ہے تب تک ہی تو مجھ سے ہزاروں پردوں میں چھپا ہوا ہے . تیری خودی ہی میرے اور تیرے بیچ کا پردہ ہے ."

ایک اور فقیر نے کہا ہے :—

نہ کوئی پردہ ہے اُس کے در پہ نہ روئے روشن نقاب میں ہے
تو آپ اپنی خودی سے غافل حجاب میں ہے حجاب میں ہے

شمس تبریز نے کہا ہے :—

چہ تدبیر اے مسلماناں ! کہ من خود را نمی دانم
نہ ترسا نہ یہودی ام نہ گبرم نہ مسلمانم

یعنی اے مسلمانو ! میں کیا کروں . میں خود اپنے کو نہیں جانتا . میں نہ عیسائی ہوں، نہ یہودی، نہ پارسی ہوں، نہ مسلمان .

ایک اور صوفی کہتا ہے :—

" صوفی کی خودی جب مٹ گئی تو پھر اس کا کوئی مذہب نہیں رہ جاتا . جو اپنے یار تک پہونچ گیا اسے پھر کسی دوسری چیز سے مطلب نہیں رہتا . رب تک پہونچا ہوا رب ہو جاتا ہے، جو رب ہی رب ہے اس کے لئے کوئی الگ رب نہیں رہتا . جہاں سورج ہی سورج ہے وہاں رات نہیں رہتی ."

ایک اور صوفی نے کہا ہے :—

شوق ہے جب تک پس پردہ جمال یار ہے
ہٹ گیا پردہ تو پھر دیدار ہی دیدار ہے

ایک صوفی کہتا ہے :—

" زمانے کے راز یعنی رہسیہ کو جاننے کی کوشش مت کر . سارنگی اور شراب کی بات کر . اس پہیلی کو کسی نے آج تک حکمت یعنی دماغ سے نہیں حل کیا اور نہ یہ پہیلی اس طرح کھل سکتی ہے . ازل یعنی اننت کے بھیدوں کو نہ تو جانتا ہے اور نہ میں، اس پہیلی کو نہ تو پڑھ سکتا ہے اور نہ میں . میں اور تو کی بات چیت ہی پردے کے اس طرف ہے . جب یہ پردہ اٹھ گیا تو نہ تو ہے اور نہ میں .

اوپر کے کلام میں سارنگی اور شراب کا ذکر آیا ہے . یہ وہی سارنگی ہے جسے ہندو یوگ کی کتابوں میں دیوی وینا یعنی ایشور کی بین کہا گیا ہے . جو راگ اس سارنگی پر بجتا اور سنائی دیتا ہے اسے یوگ کی کتابوں میں اناہت ناد کہا گیا ہے . یہ آواز اس راہ پر چلنے والے کو اپنے اندر سنائی دیتی ہے . یہ ایک عجیب خاموشی کی آواز ہے . باہر سے آنکھ، ناک، کان بند کئے جاویں تب یہ اندر سننے میں آتی ہے .

अन्दर अपने को और अपने अन्दर सब को देख लिया है उसके लिये फिर अपना और पराया, मैं और तू बहुत ही कम रह जाते हैं. ऐसे आदमी के लिये फिर बहुवचन में यानी जमा के सीग़े में 'मज़ाहिब' मिट जाते हैं. उसके लिये फिर केवल एक वचन में यानी वाहिद के सीग़े में 'एक मज़हब' या धर्म रह जाता है.

सूफ़ी कहता है :—

गुफ़्तो गू कुफ़्रो दीं आख़िर बयक जा मी कशद
ख़्वाब यक ख़्वाब अस्त अम्मा मुख़्तलिफ़ ताबीरहा

यानी कुफ़्र और दीन दोनों का चर्चा आख़िर आदमी को एक जगह जा पहुंचाता है. सपना एक सपना है सिर्फ़ उसके मानी अलग अलग तरह किये जाते हैं.

एक दूसरा सूफ़ी कहता है :—

हमा कस तालिबे यार अन्द चह हुशयारो चह मस्त
हमा जा ख़ानये इश्क़ अस्त चह मस्जिद चह कनिश्त

यानी सब लोग एक अल्लाह के खोजी हैं क्या होशयार और क्या मस्त, सब जगह प्रेम ही का घर है क्या मस्जिद और क्या गिर्जा.

गीता में लिखा है :—

येपि अन्य देवता भक्ताः यजन्ते श्रद्धयान्विताः
तेपि मामेव कौन्तेय यजन्ते अविधि पूर्वकम्
ये यथा माम प्रपद्यन्ते तान्सतथैव भजाम्यहम्
मम वर्त्मनुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः

यानी जो लोग दूसरे देवताओं के भगत हैं और श्रद्धा के साथ उन देवताओं की पूजा करते हैं वह भी मेरी ही पूजा करते हैं. सिर्फ़ उनके तरीक़े में कुछ फ़र्क़ है. ऐ अर्जुन ! जो जिस तरीक़े से भी और जिस राह से भी मुझ तक पहुंचना चाहते हैं मैं उस राह से ही उन्हें मिलता हूं. लोग सब तरफ़ से चलकर आख़िर मुझ तक ही पहुंचते हैं.

स्वामी शंकाचार्या ने लिखा है :—

"वेदों के रीत रिवाजों में आदमियों के अलग अलग विचारों, उनकी इच्छाओं और उनके इरादों के पूरा होने के ढंग बताये गये हैं. समझदार आदमी को चाहिये कि इन सब रीत रिवाजों से ऊपर उठ कर एक भगवान में अपने दिल को लगाये. जो आदमी इस तरह ऊपर उठ जाता है उसके लिये फिर न किसी रीत रिवाज की ज़रूरत रहती है और न उसे कोई यह कह सकता है कि यह करो और वह न करो. उसके लिये न कोई जात पात, न वरन, न आश्रम, न उसके लिये धार्ना, न ध्यान, न योग, न सुख, न दुख, न बन्धन, न मोक्ष, उसके लिये इनमें से कोई चीज़ नहीं रह जाती. वह फिर अपनी आत्मा के अन्दर पूरी शान्ति अनुभव करके सब में अपने को देखने लगता है, सब को अपना पाता है और महसूस करता है कि मैं ही शिव यानी प्रमात्मा हूं."

اندر اپنے کو اور اپنے اندر سب کو دیکھ لیا ہے اُس کے لئے پھر اپنا اور پرایا' میں اور تو بہت ہی کم رہ جاتے ہیں. ایسے آدمی کے لئے پھر بہو بچن میں یعنی جمع کے صیغے میں 'مذاہب' مٹ جاتے ہیں. اس کے لئے پھر کیول ایک بچن میں یعنی واحد کے صیغے میں 'ایک مذہب' یا دھرم رہ جاتا ہے.

صوفی کہتا ہے :—

گفت و گو کفر و دیں آخر بیک جا می کشد
خواب یک خواب است اما مختلف تعبیرہا

یعنی کفر اور دین دونوں کا چرچا آخر آدمی کو ایک ہی جگہ جا پہونچاتا ہے . سپنا ایک سپنا ہے صرف اُس کے معنی الگ الگ طرح کیئے جاتے ہیں .

اِک دوسرا صوفی کہتا ہے :—

"همه کس طالب یار اند چه هشیار و چه مست
همه جا خانهٔ عشق است چه مسجد چه کنشت"

یعنی سب لوگ ایک اللہ کے کھوجی ہیں کیا ہوشیار اور کیا مست' سب جگہ پریم ہی کا گھر ہے کیا مسجد اور کیا گرجا.

گیتا میں لکھا ہے :—

یے پی آنیہ دیوتا بھکتاہ یجنتے شردھیا نوتاہ
تے پی مامیو کونتیہ یجنتے اودھی پورو کم
یے یتھا مام پرپدینتے تانس تتھیو بھجامیہم
مم ورتم انو ورتنتے منشیاہ پارتھ سروشہ

یعنی جو لوگ دوسرے دیوتاؤں کے بھگت ہیں اور شردھا کے ساتھ اُن دیوتاؤں کی پوجا کرتے ہیں وہ بھی میری ہی پوجا کرتے ہیں . صرف اُن کے طریقے میں کچھ فرق ہے . اے ارجن ! جو جس طریقے سے بھی اور جس راہ سے بھی مجھ تک پہونچنا چاہتے ہیں میں اس راہ سے ہی اُنہیں ملتا ہوں . لوگ سب طرف سے چل کر آخر مجھ تک ہی پہونچتے ہیں .

سوامی شنکراچاریہ نے لکھا ہے :—

" ویدوں کے ریت رواجوں میں آدمیوں کے الگ الگ وچاروں' اُن کی اچھاؤں اور اُن کے ارادوں کے پورا ہونے کے ڈھنگ بتائے گئے ہیں . سمجھدار آدمی کو چاہیئے کہ اِن سب ریت رواجوں سے اُوپر اُٹھ کر ایک بھگوان میں اپنے دل کو لگائے . جو آدمی اس طرح اوپر اُٹھ جاتا ہے اس کے لئے پھر نہ کسی ریت رواج کی ضرورت رہتی ہے اور نہ اُسے کوئی یہ کہہ سکتا ہے کہ یہ کرو اور وہ نہ کرو . اس کے لئے نہ کوئی جات پات' نہ ورن' نہ آشرم' نہ اس کے لئے دھارنا' نہ دھیان' نہ یوگ' نہ سکھ' نہ دکھ' نہ بندھن' نہ موکش . اس کے لئے ان میں سے کوئی چیز نہیں رہ جاتی . وہ پھر اپنی آتما کے اندر پوری شانتی انوبھو کر کے سب میں اپنے کو دیکھنے لگتا ہے' سب کو اپنا پاتا ہے اور محسوس کرتا ہے کہ میں ہی شو یعنی پرماتما ہوں."

हैं. हम जोश, गर्मा गर्मी, जल्दी और घबराहट में एक दूसरे को समझ नहीं पाते. ज़रा से ठंडे दिल और शान्ति से काम लें तो हम एक दूसरे को आसानी से समझ सकते हैं. तब हम दूसरे धर्मों के क़ायम करने वालों और महापुरुषों से नफ़रत करने के बजाय उनकी इज़्ज़त करने लगेंगे. बाप और चचा का फ़र्क़ फिर भी रहे तो रहे पर फिर हमें कोई दुश्मन या ग़ैर दिखाई न देगा. इस तरह हम सब का सुख बढ़ेगा. हम सब एक दूसरे के दुख दर्द के साथी होंगे, ख़ास ख़ास मौक़ों पर; हर धर्म के त्योहारों पर एक दूसरे को बधाई देंगे. आज हम दंगे, लूट मार, खूंरेज़ी और बर्बादी करके एक दूसरे के त्योहारों और ख़ुद अपने त्योहारों और अपनी ज़िन्दगी के सुख को मिटा रहे हैं. ज़रा सी समझ और ज़रा सी मोहब्बत की ज़रूरत है और हम इस तस्वीर को उलट सकते हैं.

युरोप के एक ईसाई पादरी डाक्टर विस्ट काट ने बहुत अच्छा कहा है कि :—

"सच्ची और अमली हमदर्दी के साथ किसी दूसरे आदमी या दूसरी जमाअत या दूसरी तरह के विचारों को ठीक ठीक गहराई में जाकर समझ सकना बहुत मुश्किल है. इस के लिये बड़ी कोशिश करनी पड़ती है. हमें अपने बड़प्पन के घमन्ड में दूसरे पर दया करके नहीं बल्कि श्रद्धा और शुक्रगुज़ारी के साथ यह महसूस करना चाहिये कि दुनिया में जगह जगह वह सामान जमा है जो हम दुनिया को नहीं दे सकते थे, हमें यह मानना पड़ता है कि अलग अलग गिरोहों के ख़ास हालात या उनके ख़ास गुनों या उनकी ज़बरदस्त कोशिशों या ख़ास तरह की शिक्षा दीक्षा और तालीम व तरबियत की वजह से दूसरे लोग वह वह चीज़ें देख सके जो हम नहीं देख सके."

बात बहुत ही अच्छी और सच्ची है. अगर दुनिया के लोगों की शुरू से तालीम ठीक हो तो इस के लिये बहुत बड़ी कोशिश की ज़रूरत नहीं होनी चाहिये. दूसरों की अच्छी बातों को समझ सकना और उनकी क़दर करना हमारे सब के लिये क़ुदरती बात होनी चाहिये. हमारी तालीम ऐसी होनी चाहिये जिस से आदमी अपने को दूसरों की आंखों से देख सके. अगर बचपन ही से हम सब को यह सिखाया जाये कि हम जिस तरह अपने को ख़ुद देखते हैं उसी तरह दूसरों की आंखों से भी अपने को देख सकें तो हम बहुत ज़्यादा देख सकें और हमारा जीवन उतना ही अधिक मालामाल हो जाये. अपने तजुर्बे और अपनी नेकियां और अपनी समझ जिस तरह हमारी हैं उसी तरह दूसरों के तजुर्बे, दूसरों की नेकियां और दूसरों की समझ भी हमारे जीवन का एक हिस्सा हो जायें.

जब तक रूह इस जिस्म के अन्दर है तब तक मैं और तू बिल्कुल मिल तो नहीं सकते, पर जिस किसी ने सब के

ہیں. ہم جوش، گرما گرمی، جلدی اور گھبراہٹ میں ایک دوسرے کو سمجھ نہیں پاتے. ذرا سے ٹھنڈے دل اور شانتی سے ہم کام لیں تو ہم ایک دوسرے کو آسانی سے سمجھ سکتے ہیں. تب ہم دوسرے دھرموں کے قائم کرنے والوں اور مہاپرشوں سے نفرت کرنے کے بجائے ان کی عزت کرنے لگیں گے. باپ اور چچا کا فرق پھر بھی رہے تو رہے پر پھر ہمیں کوئی دشمن یا غیر دکھائی نہ دے گا. اس طرح ہم سب کا سکھ بڑھے گا. ہم سب ایک دوسرے کے دکھ درد کے ساتھی ہوں گے، خاص خاص موقعوں پر، ہر دھرم کے تہواروں پر ایک دوسرے کو بدھائی دیں گے. آج ہم دنگے، لوٹ مار، خونریزی اور بربادی کر کے ایک دوسرے کے تہواروں اور خود اپنے تہواروں اور اپنی زندگی کے سکھ کو مٹا رہے ہیں. ذرا سی سمجھ اور ذرا سی محبت کی ضرورت ہے اور ہم اس تصویر کو الٹ سکتے ہیں.

یورپ کے ایک عیسائی پادری ڈاکٹر وسٹ کاٹ نے بہت اچھا کہا ہے کہ :—

"سچی اور عملی ہمدردی کے ساتھ کسی دوسرے آدمی یا دوسری جماعت یا دوسری طرح کے وچاروں کو ٹھیک ٹھیک گہرائی میں جا کر سمجھ سکنا بہت مشکل ہے. اس کے لئے بڑی کوشش کرنی پڑتی ہے. ہمیں اپنے بڑپن کے گھمنڈ میں دوسرے پر دیا کر کے نہیں بلکہ شردھا اور شکرگذاری کے ساتھ یہ محسوس کرنا چاہئے کہ دنیا میں جگہ جگہ وہ سامان جمع ہے جو ہم دنیا کو نہیں دے سکتے تھے، ہمیں یہ ماننا پڑتا ہے کہ الگ الگ جگہوں اور الگ الگ گروہوں کے خاص حالات یا ان کے خاص گنوں یا ان کی زبردست کوششوں یا خاص طرح کی شکشا دیکشا اور تعلیم و تربیت کی وجہ سے دوسرے لوگ وہ وہ چیزیں دیکھ سکے جو ہم نہیں دیکھ سکے."

بات بہت ہی اچھی اور سچی ہے. اگر دنیا کے لوگوں کی شروع سے تعلیم ٹھیک ہو تو اس کے لئے بہت بڑی کوشش کی ضرورت نہیں ہونی چاہئے. دوسروں کی اچھی باتوں کو سمجھ سکنا اور ان کی قدر کرنا ہمارے سب کے لئے قدرتی بات ہونی چاہئے. ہماری تعلیم ایسی ہونی چاہئے جس سے آدمی اپنے کو دوسروں کی آنکھوں سے دیکھ سکے. اگر بچپن ہی سے ہم سب کو یہ سکھایا جائے کہ ہم جس طرح اپنے کو خود دیکھتے ہیں اسی طرح دوسروں کی آنکھوں سے بھی اپنے کو دیکھ سکیں تو ہم بہت زیادہ دیکھ سکیں اور ہمارا جیون اتنا ہی ادھک مالا مال ہو جائے. اپنے تجربے اور اپنی نیکیاں اور اپنی سمجھ جس طرح ہماری ہیں اسی طرح دوسروں کے تجربے، دوسروں کی نیکیاں اور دوسروں کی سمجھ بھی ہمارے جیون کا ایک حصہ ہو جائیں.

جب تک روح اس جسم کے اندر ہے تب تک میں اور تو بالکل مل تو نہیں سکتے پر جس کسی نے سب کے

कि जिस तरह उन्होंने तुम्हारी खबरगीरी की है और तुम्हें मदद दी है उसी तरह अब तुम खुद अपने पैरों पर खड़े हो कर दूसरों की खबरगीरी कर सकते हो और दूसरों को मदद दे सकते हो. इसलिये जिस तरह मेरा पहला फ़र्ज़ मेरे मां बाप की तरफ़ है उसी तरह तुम्हारा पहला फ़र्ज़ तुम्हारे मां बाप की तरफ़ है.

दुनिया के जितने बड़े बड़े राह दिखाने वाले हुए हैं उन सब ने भी हमें ऐसी ही हिदायत की है. वह हमें ऐसा ही हुक्म दे गये हैं कि हम उनकी तरफ़ ध्यान न दें बल्कि उनकी तालीम की तरफ़ ध्यान दें.

हज़रत अली ने कहा है :—

"यह मत देखो कि कौन कहता है, देखो यह कि क्या कहता है."

मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"सब अच्छी बातों को जमा करते जाओ और सब बुरी बातों को फेंकते रहो चाहे वह कहीं से आई हो."

योगवासिष्ठ में लिखा है :—

"जो बात दलील से ठीक मालूम हो उसे फ़ौरन मान लेना चाहिये चाहे वह किसी बच्चे ही के मुंह से क्यों न निकली हो."

मनोस्मृति में लिखा है :—

"सच्ची बात दुश्मन की भी मान लेनी चाहिये और ठीक बात बच्चे की भी सुननी चाहिये."

संस्कृत की एक कहावत है :—

"यह दुनिया ही दुनिया की गुरू है."

मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"ज़माना सबसे बड़ा सिखाने वाला है."

अगर अलग अलग मज़हबों के मानने वाले यानी उन सब महापुरुषों के नाम लेवा जिन्होंने अपने अपने ज़माने, अपने अपने देश और अपनी अपनी ज़बान में उसी एक सत्य सनातन धर्म, उसी एक इस्लामे हक़ीक़ी का बार बार ऐलान किया है. इस तरह सीधे, सच्चे प्रेमी दिल के साफ़ और थोड़े से समझदार बन जावें तो वह अपने घरों को और सारी दुनिया के सब घरों को प्यार और ख़ुशी से भर देंगे. सब एक दूसरे की ख़िदमत करेंगे और धर्म मज़हब की बरकत सब पर बरसने लगेगी. बजाय इसके सदियों से उन्होंने अपने घरों को और दूसरों के घरों को नफ़रतों और लड़ाइयों, खूंरेज़ियों और मुसीबतों से भर रक्खा है, जिसकी बदौलत धर्म मज़हब आज दुनिया के लिये सब से बड़ी बरकत होने की जगह सब से बड़ी लानत बना हुआ है.

सब से अधिक दुख की बात यह है कि यह सब झगड़े केवल शब्दों और नामों पर होते हैं, केवल ऊपर के रीत रिवाजों और ग़ैर ज़रूरी और छोटी छोटी बातों पर होते

کہ جس طرح انھوں نے تمہاری خبرگیری کی ہے اور تمہیں مدد دی ہے اسی طرح اب تم خود اپنے پیروں پر کھڑے ہوکر دوسروں کی خبرگیری کرسکتے ہو اور دوسروں کو مدد دے سکتے ہو۔ اس لئے جس طرح میرا پہلا فرض میرے ماں باپ کی طرف ہے اسی طرح تمہارا پہلا فرض تمہارے ماں باپ کی طرف ہے۔

دنیا کے جتنے بڑے بڑے راہ دکھانے والے ہوئے ہیں ان سب نے بھی ہمیں ایسی ہی ہدایت کی ہے۔ وہ ہمیں ایسا ہی حکم دے گئے ہیں کہ ہم انکی طرف دھیان نہ دیں بلکہ انکی تعلیم کی طرف دھیان دیں۔

حضرت علی نے کہا ہے :—

"یہ مت دیکھو کہ کون کہتا ہے، دیکھو یہ کہ کیا کہتا ہے۔"

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

"سب اچھی باتوں کو جمع کرتے جاؤ اور سب بری باتوں کو پھینکتے رہو چاہے وہ کہیں سے آئی ہو۔"

یوگ واسشٹھ میں لکھا ہے :—

"جو بات دلیل سے ٹھیک معلوم ہو اسے فوراً مان لینا چاہئے چاہے وہ کسی بچے ہی کے منھ سے کیوں نہ نکلی ہو۔"

منو سمرتی میں لکھا ہے :—

"سچی بات دشمن کی بھی مان لینی چاہئے اور ٹھیک بات بچے کی بھی سننی چاہئے۔"

سنسکرت میں ایک کہاوت ہے :—

"یہ دنیا ہی دنیا کی گرو ہے۔"

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

"زمانہ سب سے بڑا سکھانے والا ہے۔"

اگر الگ الگ مذہبوں کے ماننے والے یعنی ان سب مہاپرشوں کے نام لیوا جنھوں نے اپنے اپنے زمانے، اپنے اپنے دیش اور اپنی اپنی زبان میں اسی ایک ستیہ سناتن دھرم، اسی ایک اسلام حقیقی کا بار بار اعلان کیا ہے۔ اس طرح سیدھے، سچے پریمی، دل کے صاف اور تھوڑے سے سمجھدار بنجاویں تو وہ اپنے گھروں کو اور ساری دنیا کے سب گھروں کو پیار اور خوشی سے بھر دینگے۔ سب ایک دوسرے کی خدمت کریں گے اور دھرم مذہب کی برکت سب پر برسنے لگے گی۔ بجائے اس کے صدیوں سے انھوں نے اپنے گھروں کو اور دوسروں کے گھروں کو نفرتوں اور لڑائیوں، خونریزیوں اور مصیبتوں سے بھر رکھا ہے، جسکی بدولت دھرم مذہب آج دنیا کے لئے سب سے بڑی برکت ہونے کی جگہ سب سے بڑی لعنت بنا ہوا ہے۔

سب سے ادھک دکھ کی بات یہ ہے کہ یہ سب جھگڑے کیول شبدوں اور ناموں پر ہوتے ہیں، کیول اوپر کے ریت رواجوں اور غیر ضروری چھوٹی چھوٹی باتوں پر ہوتے

और अपने मज़हब का उन्हें एक झूठा ख्याल हो जाता है जिसे वह अनजाने अपने मज़हबी रहनुमा की आड़ में पालना और पोसना चाहते हैं. अपने छोटेपन से वह अपने गुरु, पैग़म्बर, तीर्थंकर या औतार की सच्ची बड़ाई और उसकी सच्ची महानता को भी कीचड़ में घसीटते हैं. पर धीरे धीरे इस तरह की सब रूहों को भी समझ आएगी. वक़्त आने पर वह भी जागेंगे, समझेंगे और अल्लाह की सच्ची राह पर चलेंगे.

दूसरी तरफ़ इन्हीं महापुरुषों, तीर्थंकरों, पैग़म्बरों और औतारों के नाम पर उन्हीं के लिये और उनकी मिसाल से सबक़ लेकर दुनिया में बार बार और जगह जगह ऐसे मर्द, औरत और बच्चे तक हुए हैं और होते रहते हैं जो अपने दुनिया के भाई इन्सानों और दूसरे प्राणियों के लिये हद दर्जे की तकलीफ़ों और मौत तक का प्याला पीकर आत्म त्याग और क़ुर्बानी की बड़ी से बड़ी ऊंचाइयों तक पहुंच चुके हैं और पहुंचते रहते हैं. येही लोग सच्चे ईमान वाले होते हैं. येही धर्मशूर और शहीद कहलाते हैं. इस तरह के शूरों, शहीदों और सच्चे आशिक़ों को देख कर फ़रिश्ते भी शरमा जाते हैं.

क़ुदरती तौर पर मैं ख़ुद अपने मां बाप से जितना प्यार करता हूं और उनकी जितनी इज़्ज़त करता हूं उतनी दूसरों के मां बाप की नहीं करता. इसका यह मतलब नहीं कि मैं दूसरों से भी यह चाहूं और ज़िद करूं कि वह भी मेरे मां बाप की उतनी ही इज़्ज़त करें जितनी मैं करता हूं और अपने मां बाप से मेरे मां बाप की ज़्यादा इज़्ज़त करें. मैं अगर समझ से काम लेता हूं और मेरा दिमाग़ अगर ठीक है तो मुझे ख़ुद अपने पड़ोसी से यह कहना चाहिये कि जिस तरह मैं अपने मां बाप की सबसे ज़्यादा इज़्ज़त करता हूं उसी तरह तुम्हें अपने मां बाप की सब से ज़्यादा इज़्ज़त करनी चाहिये. लेकिन चूंकि मैं तुम्हें अपना भाई समझता हूं और तुम से प्यार करता हूं इसलिये अपने मां बाप की इज़्ज़त से उतर कर मैं तुम्हारे मां बाप की इज़्ज़त करूंगा चूंकि मैं तुम्हारे मां बाप को अपने मां बाप के बहन और भाई समझता हूं और इस रिश्ते से वह मेरे चचा और चची हैं. इसी तरह मेरे मां बाप तुम्हारे चचा और चची हैं. मेरे मां बाप ने मेरे लिये जो कुछ किया है वही सब कुछ तुम्हारे मां बाप ने तुम्हारे लिये किया है. उन्होंने तुम्हारी गन्दगी और बुराइयों को धोया है, तुम्हें दूध पिलाया है, खिला खिला कर पाला है, रातों और दिनों तुम्हारी देख रेख की है, तुम्हें ख़तरों, बीमारियों और गुनाहों से बचाया है और बड़ी मेहनत से तुम्हें वही रूहानी मार्फ़त, वही आत्म ज्ञान सिखाया है जो मेरे मां बाप ने मुझे सिखाया है. उन्होंने पाल पोस कर तुम्हें बड़ा किया है और रूहानी मानी में बालिग़ बनाया है यहां तक

اور اپنے مذہب کا انہیں ایک جھوٹا خیال ہو جاتا ہے جسے وہ انجانے اپنے مذہبی رہنما کی آڑ میں پالنا اور پوسنا چاہتے ہیں. اپنے چھوٹےپن سے وہ اپنے گرو، پیغمبر، تیرتھنکر یا اوتار کی سچی بڑائی اور اسکی سچی مہانتا کو بھی کیچڑ میں گھسیٹتے ہیں. پر دھیرے دھیرے اس طرح کی سب روحوں کو بھی سمجھ آئیگی. وقت آنے پر وہ بھی جاگینگے، سمجھینگے اور اللہ کی سچی راہ پر چلینگے.

دوسری طرف انہیں مہاپرشوں، تیرتھنکروں، پیغمبروں اور اوتاروں کے نام پر انہیں کے لئے اور انکی مثال سے سبق لیکر دنیا میں بار بار اور جگہ جگہ ایسے مرد، عورت اور بچے تک ہوئے ہیں اور ہوتے رہتے ہیں جو اپنے دنیا کے بھائی انسانوں اور دوسرے پرانیوں کے لئے حد درجہ کی تکلیفوں اور موت تک کا پیالہ پیکر آتم تیاگ اور قربانی کی بڑی سے بڑی اونچائیوں تک پہونچ چکے ہیں اور پہونچتے رہتے ہیں. یہی لوگ سچے ایمان والے ہوتے ہیں. یہی دھرم شور اور شہید کہلاتے ہیں. اس طرح کے شوروں، شہیدوں اور سچے عاشقوں کو دیکھکر فرشتے بھی شرما جاتے ہیں.

قدرتی طور پر میں خود اپنے ماں باپ سے جتنا پیار کرتا ہوں اور انکی جتنی عزت کرتا ہوں اتنی دوسروں کے ماں باپ کی نہیں کرتا. اس کا یہ مطلب نہیں کہ میں دوسروں سے بھی یہ چاہوں اور ضد کروں کہ وہ بھی میرے ماں باپ کی اتنی ہی عزت کریں جتنی میں کرتا ہوں اور اپنے ماں باپ سے میرے ماں باپ کی زیادہ عزت کریں. میں اگر سمجھ سے کام لیتا ہوں اور میرا دماغ اگر ٹھیک ہے تو مجھے خود اپنے پڑوسی سے یہ کہنا چاہیئے کہ جس طرح میں اپنے ماں باپ کی سب سے زیادہ عزت کرتا ہوں اسی طرح تمہیں اپنے ماں باپ کی سب سے زیادہ عزت کرنی چاہیئے. لیکن چونکہ میں تمہیں اپنا بھائی سمجھتا ہوں اور تم سے پیار کرتا ہوں اس لئے اپنے ماں باپ کی عزت سے اتر کر میں تمہارے ماں باپ کی عزت کرونگا چونکہ میں تمہارے ماں باپ کو اپنے ماں باپ کے بہن اور بھائی سمجھتا ہوں اور اس رشتہ سے وہ میرے چچا اور چچی ہیں. اسی طرح میرے ماں باپ تمہارے چچا اور چچی ہیں. میرے ماں باپ نے میرے لئے جو کچھ کیا ہے وہی سب کچھ تمہارے ماں باپ نے تمہارے لئے کیا ہے. انہوں نے تمہاری گندگی اور برائیوں کو دھویا ہے، تمہیں دودھ پلایا ہے، کھلا کھلا کر پالا ہے، راتوں اور دنوں تمہاری دیکھ ریکھ کی ہے، تمہیں خطروں، بیماریوں اور گناہوں سے بچایا ہے اور محنت سے تمہیں وہی روحانی معرفت، وہی آتم گیان سکھایا ہے جو میرے ماں باپ نے مجھے سکھایا ہے. انہوں نے پال پوس کر تمہیں بڑا کیا ہے اور روحانی معنی میں بالغ بنایا ہے یہاں تک

सेवक नहीं कहता क्योंकि सेवक नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है. मैं तुम्हें अपने प्यारे कह रहा हूं."

जब तक कोई रूह अपनी छोटी ख़ुदी अपने इस आपे, इस जिस्म से ऊपर नहीं उठ सकती और अपनी इस दुनियावी ज़िन्दगी को बनाए रखने के लिये बेचैन रहती है तब तक उसे किसी न किसी अपने से बड़ी और पाक रूह के साथ अपने को जोड़े रखना ज़रूरी होता है. ठीक उसी तरह जिस तरह बच्चे जब तक बालिग़ नहीं हो जाते तब तक मां बाप की उंगली पकड़े रहना और उनका सहारा लिये रहना ज़रूरी समझते हैं. उनके लिये यह ज़रूरी भी होता है. उन्हें दूसरों की यह मदद, प्रेम, भगती, सेवा और पूरे दिल से दुआ, प्रार्थना करके हासिल करनी पड़ती है. इसके बाद जब उस अव्यक्ति ईश्वर यानी उस लामकां और लाज़मां, निरंकार की थोड़ी बहुत झलक उन्हें अपने अन्दर मिल जाती है, और वह भी उस मदद की बदौलत मिलती है, तब अपने गुरु या पीर, पैग़म्बर या औतार के लिये भगती और अक़ीदत उनके अन्दर और भी गहरी हो जाती है. इस तरह जागी हुई रूह शुक्रगुज़ारी से भर जाती है. ठीक उसी तरह जिस तरह एक नेक लड़का या लड़की जिसे मां बाप ने प्रेम से पाला पोसा हो बालिग़ होकर अपने मां बाप की ओर भी ज़्यादा इज़्ज़त करने लगता है और शुक्रगुज़ारी से भर जाता है. तब वह उनकी पूरी क़दर कर सकता है. दुनिया की सब सच्ची आत्माओं को मज़हब से यह तसल्ली मिलती है. यहां दिल और दिमाग़ का कोई फ़र्क़ नहीं रहता. इस मुक़ाम पर पहुंच कर ही वह ख़ुशी वह आनन्द हासिल होता है जो रूह की आगे की तरक़्क़ी का रास्ता साफ़ करता है.

अगर मुख़्तलिफ़ मज़हबों के मानने वाले एक दूसरे से झगड़ते हैं—एक कहता है कि केवल कृष्ण जी का ही कहा करना चाहिये और केवल उन्हीं की इज़्ज़त करनी चाहिये, दूसरा कहता है कि केवल ज़रतुश्त ही के पीछे चलना चाहिये और कोई तीसरा, चौथा, पांचवां, छटा या सातवां कहता है कि सिर्फ़ हज़रत मूसा या हज़रत बुद्ध या हज़रत जिन या हज़रत ईसा या हज़रत मोहम्मद का ही सहारा लेकर आदमी बच सकता है—तब उनके ऐसा समझने और कहने की वजह यह होती है कि वह सच्चे आशिक़, सच्चे भगत या अल्लाह वाले नहीं होते बल्कि जाने या अनजाने अपनी ख़ुदी में डूबे हुए और बहके हुए होते हैं. वह जिस महापुरुश या इन्साने कामिल का नाम लेते हैं और जिसके नाम लेवा होने का दावा करते हैं उसकी वह सच्ची इज़्ज़त नहीं करते और न उसे समझते ही हैं. वह अपनी छोटी सी ख़ुदी में फंसे होते हैं और वही अपनी ख़ुदी और संगनज़री सारी दुनिया पर लादना चाहते हैं. अपनी रास्ती

سیوک نہیں کہتا کیونکہ سیوک نہیں جانتا کہ اس کا مالک کیا کرتا ہے. میں تمہیں اپنے پیارے کہہ رہا ہوں."

جب تک کوئی روح اپنی چھوٹی خودی اپنے اس آپے، اس جسم سے اوپر نہیں اٹھ سکتی اور اپنی اس دنیوی زندگی کو بنائے رکھنے کے لئے بےچین رہتی ہے تب تک اسے کسی نہ کسی اپنے سے بڑی اور پاک روح کے ساتھ اپنے کو جوڑے رکھنا ضروری ہوتا ہے. ٹھیک اسی طرح جس طرح بچے جب تک بالغ نہیں ہو جاتے تب تک ماں باپ کی انگلی پکڑے رہنا اور ان کا سہارا لئے رہنا ضروری سمجھتے ہیں. ان کے لئے یہ ضروری بھی ہوتا ہے. انہیں دوسروں کی یہ مدد، پریم، بھگتی، سیوا اور پورے دل سے دعا، پرارتھنا کرکے حاصل کرنی پڑتی ہے. اس کے بعد جب اس اویکت ایشور یعنی اس لامکاں اور لازماں، نرنکار کی تھوڑی بہت جھلک انہیں اپنے اندر مل جاتی ہے، اور وہ بھی اسی مدد کی بدولت ملتی ہے، تب اپنے گرو یا پیر، پیغمبر یا اوتار کے لئے بھگتی اور عقیدت ان کے اندر اور بھی گہری ہو جاتی ہے. اس طرح جاگی ہوئی روح شکرگذاری سے بھر جاتی ہے. ٹھیک اسی طرح جس طرح ایک نیک لڑکا یا لڑکی جسے ماں باپ نے پریم سے پالا پوسا ہو بالغ ہوکر اپنے ماں باپ کی اور بھی زیادہ عزت کرنے لگتا ہے اور شکرگذاری سے بھر جاتا ہے. تب وہ ان کی پوری قدر کرسکتا ہے. دنیا کی سب سچی آتماؤں کو مذہب سے ہی یہ تسلی ملتی ہے. یہاں دل اور دماغ کا کوئی فرق نہیں رہتا. اس مقام پر پہنچکر ہی وہ خوشی وہ آنند حاصل ہوتا ہے جو روح کی آگے کی ترقی کا راستہ صاف کرتا ہے.

اگر مختلف مذہبوں کے ماننے والے ایک دوسرے سے جھگڑتے ہیں—ایک کہتا ہے کہ کیول کرشن جی کا ہی کہا کرنا چاہئے اور کیول انہیں کی عزت کرنی چاہئے، دوسرا کہتا ہے کہ کیول زرتشت ہی کے پیچھے چلنا چاہئے اور کوئی تیسرا، چوتھا، پانچواں، چھٹا یا ساتواں کہتا ہے کہ صرف حضرت موسیٰ یا حضرت بدھ یا حضرت جن یا حضرت عیسیٰ یا حضرت محمد کا ہی سہارا لیکر آدمی بچ سکتا ہے—تب ان کے ایسا سمجھنے اور کہنے کی وجہ یہ ہوتی ہے کہ وہ سچے عاشق، سچے بھگت یا اللہ والے نہیں ہوتے، بلکہ جانے یا انجانے اپنی خودی میں ڈوبے ہوئے اور بہکے ہوئے ہوتے ہیں. وہ جس مہاپرش یا انسان کامل کا نام لیتے ہیں اور جس کے نام لیوا ہونے کا دعویٰ کرتے ہیں اسکی وہ سچی عزت نہیں کرتے اور نہ اسے سمجھتے ہی ہیں. وہ اپنی چھوٹی سی خودی میں پھنسے ہوتے ہیں اور وہی اپنی خودی اور تنگ نظری ساری دنیا پر لادنا چاہتے ہیں. اپنی راستی

धोखा देने वाले की ज़मीर या आत्मा भी आखिर किसी न किसी दिन जागती है. उसे भी पछतावा होता है. इस तरह समय पाकर उसमें भी वही नम्रता आती है और अपने गुनाह का कफ्फारा करके वह भी पाक होता है.

अल्लाह की यह क़ुदरत बड़ी निशठुर लेकिन बड़ी सुन्दर और सच्ची है. श्रद्धा, विश्वास, प्रेम कितने सुन्दर हैं. धोखा, दग़ा, बेगुनाहों का क़त्ल कितने निशठुर हैं. फिर भी क़ुरान में लिखा है :—

"हम अल्लाह से आए हैं और दर्जे दर्जे मेहनत और तकलीफ़ों के साथ अल्लाह ही के पास लौट के जायेंगे."

गीता में लिखा है :—

"अनेक जन्मों में धीरे धीरे सिद्धि हासिल करता हुआ आदमी परम गति को प्राप्त होता है."

आत्मा के जागने, खुलने और खुद अपने रूप को पहचानने का येही रास्ता है.

आदमी पहले अपने घर के अन्दर प्रेम और दूसरों के लिये त्याग यानी ईसार का सबक़ सीखता है. घर उसके लिये शुरू का मदरसा होता है. फिर बढ़ते बढ़ते वह किसी गुरु, पीर, पैग़म्बर, नबी, रसूल, बुज़ुर्ग या औतार, इन्साने कामिल या इष्ट देव में अक़ीदत और उससे प्रेम पैदा करता है. यह सब अल्लाह के मज़ाहिर हैं. इनके ज़रिये आदमी ईश्वर अल्लाह तक पहुंचने की कोशिश करता है. यह अल्लाह वाले यानी ईश्वर भगत सचमुच अल्लाह के बहुत पास होते हैं चाहे वह किसी भी मज़हब के क्यों न हों. सूफ़ी ने कहा है :—

खासाने ख़ुदा ख़ुदा न बाशन्द
लेकिन ज़ ख़ुदा जुदा न बाशन्द

यानी ख़ुदा के ख़ास भगत ख़ुदा नहीं होते लेकिन वह ख़ुदा से जुदा भी नहीं होते.

भागवत में कहा गया है :—

दासानुदासोहम

यानी ईश्वर कहता है कि मैं अपने सेवकों का सेवक हूं.

इंजील में हज़रत ईसा ने कहा है :—

"जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह वह सब काम कर सकेगा जो मैं करता हूं. वह उनसे भी बड़े काम कर सकेगा क्योंकि मैं पिता प्रमेश्वर के पास जा रहा हूं. मेरे नाम पर तुम जो कुछ मांगोगे वह मैं दूंगा ताकि मेरा पिता प्रमेश्वर अपने पुत्र के अन्दर जाग उठे. पिता की जय हो ! मेरी येही इच्छा है कि तुम सब एक दूसरे के साथ वैसा ही प्रेम करो जैसा मैं तुम्हारे साथ करता हूं. इससे बढ़ कर प्रेम कोई आदमी नहीं कर सकता कि अपने प्यारों के लिये जान देदे. तुम मेरे प्यारे हो. मैं तुम्हें अपने

دھوکا دینے والے کی ضمیر یا آتما بھی آخر کسی نہ کسی دن جاگتی ہے . اسے بھی پچھتاوا ہوتا ہے . اس طرح سمے پاکر اس میں بھی وہی نمرتا آتی ہے اور اپنے گناہ کا کفارہ کرکے وہ بھی پاک ہوتا ہے .

اللہ کی یہ قدرت بڑی نشٹھر لیکن بڑی سندر اور سچی ہے . شردھا' وشواس' پریم کتنے سندر ہیں . دھوکا' دغا' بےگناہوں کا قتل کتنے نشٹھر ہیں . پھر بھی قرآن میں لکھا ہے :—

"ہم اللہ سے آئے ہیں اور درجے درجے محنت اور تکلیفوں کے ساتھ اللہ ہی کے پاس لوٹ کے جائینگے."

گیتا میں لکھا ہے :—

"انیک جنموں میں دھیرے دھیرے سدھی حاصل کرتا ہوا آدمی پرم گتی کو پراپت ہوتا ہے ."

آتما کے جاگنے' کھلنے اور خود اپنے روپ کو پہچاننے کا یہی راستہ ہے .

آدمی پہلے اپنے گھر کے اندر پریم اور دوسروں کے لئے تیاگ یعنی ایثار کا سبق سیکھتا ہے . گھر اس کے لئے شروع کا مدرسہ ہوتا ہے . پھر بڑھتے بڑھتے وہ کسی گرو' پیر' پیغمبر' نبی' رسول' بزرگ یا اوتار' انسان کامل یا اشٹ دیو میں عقیدت اور اس سے پریم پیدا کرتا ہے . یہ سب اللہ کے مظاہر ہیں . ان کے ذریعہ آدمی ایشور اللہ تک پہونچنے کی کوشش کرتا ہے . یہ اللہ والے یعنی ایشور بھگت سچ مچ اللہ کے بہت پاس ہوتے ہیں چاہے وہ کسی بھی مذہب کے کیوں نہ ہوں . صوفی نے کہا ہے :—

خاصان خدا خدا نہ باشند
لیکن ز خدا جدا نہ باشند

یعنی خدا کے خاص بھگت خدا نہیں ہوتے لیکن وہ خدا سے جدا بھی نہیں ہوتے .

بھاگوت میں کہا گیا ہے :—

داسا نام انودا سوہم

یعنی ایشور کہتا ہے کہ میں اپنے سیوکوں کا سیوک ہوں .

انجیل میں حضرت عیسیٰ نے کہا ہے :—

"جو کوئی مجھ پر وشواس کرتا ہے وہ وہ سب کام کر سکے گا جو میں کرتا ہوں . وہ ان سے بھی بڑے کام کر سکے گا کیونکہ میں پتا پرمیشور کے پاس جارہا ہوں . میرے نام پر تم جو کچھ مانگوگے وہ میں دونگا تاکہ میرا پتا پرمیشور اپنے پتر کے اندر جاگ اٹھے . پتا کی جے ہو ! میری یہی اچھا ہے کہ تم سب ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ہی پریم کرو جیسا میں تمہارے ساتھ کرتا ہوں . اس سے بڑھکر پریم کوئی آدمی نہیں کرسکتا کہ اپنے پیاروں کے لئے جان دیدے . تم میرے پیارے ہو . میں تمہیں اپنے

हमारी खुदी ही हमारे और अल्लाह के बीच का पर्दा है

(डाक्टर भगवानदास)

सब धर्म मजहब आदमी को आगाह करते हैं कि भूटे मसीहों, भूटे नबियों और भूटे गुरुओं से बचना चाहिये. सवाल होता है कि कौन पहचाने कि कौन भूटा है और कौन सच्चा ? इस सवाल का एक ही जवाब हो सकता है, वह यह कि हर आदमी खुद अपने लिये पहचाने. भूटे और सच्चे को कसौटी आदमी खुद ही है.

एक सूफ़ी ने कहा है :—

"चूंकि हक़ीक़त यानी सच्चाई को पहचानने वाला तू ही है इसलिये असल सच्चाई भी यही है कि तू ही सच्चाई की असल है, तू ही सब किताबों की मां यानी वह असल किताब है जो अल्लाह के पास है."

एक और सूफ़ी ने कहा है :—

"है अपने सीने में उस से ज़ाइद
जो बात वाइज़ किताब में है."

कौन मजहब सच्चा है और कौन भूटा इसका आखिरी फ़ैसला भी इन्सान का अपना दिल ही करता है, वही कर सकता है. वही जिस को चाहे माने जिस को चाहे न माने. ईश्वर तक पहुंचने के लिये कौन उसे सच्ची राह दिखा सकता है और कौन उसे बहका कर शैतान के पंजे में फंसाने वाला है इस का फ़ैसला आखीर में हर आदमी, हर छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा आदमी, अपने लिये खुद ही कर सकता है. किसी एक आदमी में बहुत अधिक श्रद्धा रखने से जो धोका होता है और मुसीबतें आती हैं वही आदमी की उस सोई हुई अक़्लेकुल को जगाती हैं जिस के जागने के बाद वह उपनिशदों की उस सच्चाई को पूरी तरह समझ जाता है :—

"जो कोई अपने सिवा किसी दूसरे को, फिर वह दूसरा चाहे ब्राह्मन हो चाहे क्षत्री, चाहे दुनिया हो, चाहे कोई देवता या फ़रिश्ता, चाहे दूसरे प्रानी हों और चाहे यह सब हों, किसी पर भी आंख बन्द कर के भरोसा करता है उसे वह दूसरा कभी न कभी धोका ज़रूर देगा, उसके साथ दग़ा करेगा, जब तक कि वह भरोसा करने वाला यह न समझ ले कि यह सब उसी के अन्दर हैं, उसी का रूप हैं और वह खुद ही यह सब कुछ है."

(उपनिषद)

ہماری خودی ہی ہمارے اور اللہ کے بیچ کا پردہ ہے

(ڈاکٹر بھگوان داس)

سب دھرم مذہب آدمی کو آگاہ کرتے ہیں کہ جھوٹے مسیحوں، جھوٹے نبیوں اور جھوٹے گروؤں سے بچنا چاہئے. سوال ہوتا ہے کہ کون پہچانے کہ کون جھوٹا ہے اور کون سچا ؟ اس سوال کا ایک ہی جواب ہو سکتا ہے، وہ یہ کہ ہر آدمی خود اپنے لئے پہچانے. جھوٹے اور سچے کی کسوٹی آدمی خود ہی ہے.

ایک صوفی نے کہا ہے :—

"چونکہ حقیقت یعنی سچائی کو پہچاننے والا تو ہی ہے اس لئے اصل سچائی بھی یہی ہے کہ تو ہی سچائی کی اصل ہے، تو ہی سب کتابوں کی ماں یعنی وہ اصل کتاب ہے جو اللہ کے پاس ہے."

ایک اور صوفی نے کہا ہے :—

"ہے اپنے سینے میں اس سے زائد
جو بات واعظ کتاب میں ہے."

کون مذہب سچا ہے اور کون جھوٹا اس کا آخری فیصلہ بھی انسان کا اپنا دل ہی کرتا ہے، وہی کر سکتا ہے. وہی جس کو چاہے مانے جس کو چاہے نہ مانے. ایشور تک پہنچنے کے لئے کون اسے سچی راہ دکھا سکتا ہے اور کون اسے بہکا کر شیطان کے پنجے میں پھنسانے والا ہے اس کا فیصلہ آخیر میں ہر آدمی، ہر چھوٹے سے چھوٹا اور بڑے سے بڑا آدمی، اپنے لئے خود ہی کر سکتا ہے. کسی ایک آدمی میں بہت ادھک شردھا رکھنے سے جو دھوکا ہوتا ہے اور مصیبتیں آتی ہیں وہی آدمی کی اس سوئی ہوئی عقل کل کو جگاتی ہیں جس کے جاگنے کے بعد وہ اپنشدوں کی اس سچائی کو پوری طرح سمجھ جاتا ہے :—

"جو کوئی اپنے سوا کسی دوسرے کو، پھر وہ دوسرا چاہے براہمن ہو چاہے چھتری، چاہے دنیا ہو، چاہے کوئی دیوتا یا فرشتہ، چاہے دوسرے پرانی ہوں اور چاہے یہ سب ہوں، کسی پر بھی آنکھ بند کر کے بھروسہ کرتا ہے اسے وہ دوسرا کبھی نہ کبھی دھوکا ضرور دیگا، اس کے ساتھ دغا کریگا، جب تک کہ وہ بھروسہ کرنے والا یہ نہ سمجھ لے کہ یہ سب اسی کے اندر ہیں، اسی کا روپ ہیں اور وہ خود ہی یہ سب کچھ ہے." (اپنشد)

बेनज़ीर नज़ीर

बचपन के मज़े और जवानी की रंगतें
हालत ज़ईफ़ तन की, बुढ़ापे की दुर्गतें
वह सफ़रे आख़िरत का सँदेसा सुना गया
ग़फ़लत में पड़े मुर्दा जनों को जगा गया
सादिक़ था, नुक्तेदां था, ज़हीरो बशीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

बन्दर पै, रीछ, भालू पै नज़्में बना गया
कौए, हिरन के, हंस के क़िस्से सुना गया
हालत या जहालत जो भी उसको दिखा गया
जो कुछ समझ में आया वह लिक्खा, सुना गया
सुलझा दिमाग़ और वह रौशन-ज़मीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

दुनिया में तेरी शाइरी का शोर मचा है
तू चल बसा कलाम मगर तेरा बचा है
पुतला न सही, रूह पै सब को गुमान है
तुझ से अदब की शान, तू लफ़्ज़ों की जान है
तू चल दिया अदम को गोया राहगीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

राहे हक़ = सच्चाई का रास्ता; तफ़रीक़ = अन्तर; मुफ़लिस = ग़रीब; बेनज़ीर = जिसकी कोई मिसाल न हो; ख़ैरख़्वाह = शुभचिन्तक; ख़ल्क़ = जग; तमा = लालच; हक़ीर = छोटा; मुर्शिद = गुरु, ख़ुदातरस = ख़ुदा से डरने वाला; अज़मत = महत्व; पिन्द = सलाह; आक़िबत-अन्देश = दूरदर्शी; उन्स = प्यार; शमशीर = तलवार; ज़ईफ़ = बूढ़े; सादिक़ = सच्चा; नुक्तेदां = समझदार; ज़हीर = सहायक; बशीर = शुभ संदेश देने वाले; अदम = दूसरी दुनिया.

بے نظیر نظیر

بچپن کے مزے اور جوانی کی رنگتیں
حالت ضعیف تن کی، بڑھاپے کی درگتیں
وہ سفرِ آخرت کا سندیسہ سنا گیا
غفلت میں پڑے مردہ جنوں کو جگا گیا
صادق تھا، نکتہ داں تھا، ظہیر و بشیر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

بندر پہ، ریچھ، بھالو پہ نظمیں بنا گیا
کوے، ہرن کے، ہنس کے قصے سنا گیا
حالت یا جہالت جو بھی اسکو دکھا گیا
جو کچھ سمجھ میں آیا وہ لکھا سنا گیا
سلجھا دماغ اور وہ روشن ضمیر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

دنیا میں تیری شاعری کا شور مچا ہے
تو چل بسا کلام مگر تیرا بچا ہے
پتلا نہ سہی، روح پہ سب کو گمان ہے
تجھ سے ادب کی شان، تو لفظوں کی جان ہے
تو چل دیا عدم کو گویا راہگیر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

راہِ حق = سچائی کا راستہ؛ تفریق = انتر؛ مفلس = غریب؛ بے نظیر = جسکی کوئی مثال نہ ہو؛ خیرخواہ = شبھ چنتک؛ خلق = جگ؛ طمع = لالچ؛ حقیر = چھوٹا؛ مرشد = گرو؛ خداترس = خدا سے ڈرنے والا؛ عظمت = مہتو؛ پند = صلاح؛ عاقبت اندیش = دور درشی؛ اُنس = پیار؛ شمشیر = تلوار؛ ضعیف = بوڑھے؛ صادق = سچا؛ نکتہ داں = سمجھدار؛ ظہیر = سہایک؛ بشیر = شبھ سندیش دینے والے؛ عدم = دوسری دنیا۔

शाइर था बड़ी शान की नज़्में सुना गया
गुमराह राहियों को रहे हक़ दिखा गया
हिन्दू की मुसलमान की तफ़रीक़ ढा गया
फिर मेल मुहब्बत का वह दरिया बहा गया
लफ़्ज़ों का बादशाह, यों मुफ़लिस फ़क़ीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

होली को फाग खेला दिवाली को दिल दिया
त्यौहार, तीज, पर्व को अपना बना लिया
वह खैरख्वाहे खल्क़ था तकलीफ़ खुद सही
खुदगर्ज़ी ओ तमा कभी दिल में नहीं रही
सब दोस्त, न उसके लिये कोई हक़ीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

इस ज़िन्दगी का ऐसा न मसला कोई रहा
जिस पर न लिखा उसने, या जिस पर न कुछ कहा
फल फूल बोलने लगे, मौसम को जान दी
पत्थर पिघल उठे; ज़मीं को ज़बान दी
मुर्शिद, खुदातरस था, प्यारा था, पीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

जै बोल कन्हैया की हरी-गीत गा गया
शिवजी के अजब ब्याह की अज़मत दिखा गया
रोटी, चपाती, पैसे की तारीफ़ कर गया
हर झोंपड़े को पिन्द नसीहत से भर गया
दिल का अमीर और वह शोअरा में मीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

उसने बताया दुनिया को दो दिन की सरा है
नेकी करो, बदी का तो सुनना भी बुरा है
बंजारा लाद चल दिया सब ठाठ रह गया
इस दौरे रवानी में वह तिनका सा बह गया
क्या आक़बत अन्देश! क्या सच्चा महीर था!
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

टट्टू पे चढ़ के गलियों, मुहल्लों में घूमता
जो मिलता वही उसकी हथेली को चूमता
इन्सानियत से उन्स, ज़माने का यार था
पाखंड, ढोंग के लिये शमशीर, तीर था
गो नाम था नज़ीर मगर बेनज़ीर था

شاعر تھا بڑی شان کی نظمیں سنا گیا
گمراہ راہیوں کو رہِ حق دکھا گیا
ہندو کی مسلمان کی تفریق ڈھا گیا
پھر میل محبت کا وہ دریا بہا گیا
لفظوں کا بادشاہ، یوں مفلس فقیر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

ہولی کو پھاگ کھیلا دیوالی کو دل دیا
تیوہار، تیج، پرو کو اپنا بنا لیا
وہ خیر خواہِ خلق تھا تکلیف خود سہی
خودغرضی و طمع کبھی دل میں نہیں رہی
سب دوست، نہ اسکے لئے کوئی حقیر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

اس زندگی کا ایسا نہ مسئلہ کوئی رہا
جس پر نہ لکھا اس نے یا جس پر نہ کچھ کہا
پھل پھول بولنے لگے، موسم کو جان دی
پتھر پگھل اٹھے؛ زمیں کو زبان دی
مرشد، خدا ترس تھا، پیارا تھا، پیر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

جے بول کنہیا کی ہری گیت گا گیا
شیو جی کے عجب بیاہ کی عظمت دکھا گیا
روٹی، چپاتی، پیسے کی تعریف کر گیا
ہر جھونپڑے کو پند نصیحت سے بھر گیا
دل کا امیر اور وہ شعرا میں میر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

اس نے بتایا دنیا کو دو دن کی سرا ہے
نیکی کرو، بدی کا تو سننا بھی برا ہے
بنجارا لاد چل دیا سب ٹھاٹ رہ گیا
اس دورِ روانی میں وہ تنکا سا بہہ گیا
کیا عاقبت اندیش! کیا سچا مہیر تھا!
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

ٹٹو پہ چڑھ کے گلیوں، محلوں میں گھومتا
جو ملتا وہی اسکی ہتھیلی کو چومتا
انسانیت سے انس، زمانے کا یار تھا
پاکھنڈ، ڈھونگ کے لئے شمشیر، تیر تھا
گو نام تھا نظیر مگر بے نظیر تھا

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 16 अप्रैल सन '54 नम्बर 4

جلد 16 اپریل سن '54 نمبر 4

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

बेनज़ीर नज़ीर

(हरिशंकर शर्मा)

[नज़ीर अकबराबादी आगरे में 1735 में पैदा हुए. उर्दू कविता के इतिहास में नज़ीर पहले यथार्थवादी कवि हैं. उनकी कुल की कुल रचनाएं खड़ी बोली में हैं. नज़ीर का क़लम सावन की घटा है जो सैकड़ों विषयों पर बरसता रहा है. उनको लिखने की प्रेरना अपने इर्द गिर्द बसने वाले लोगों से मिलती थी, वह दूर की कौड़ी लाने के चक्कर में नहीं थे. वह इस जगत की बात करते थे, जीवन और उसकी रंग रलियों की चर्चा करते थे, आसमान की खबरें दुनिया को नहीं सुनाते थे. वह जनता से प्रेम करते थे और जनता उनको मानती थी. नज़ीर घोड़ी पर सवार जिधर से निकल जाते थे उधर ही लोगों की भीड़ लग जाती थी. औरतें, बच्चे, बूढ़े, जवान, हर हर पेशे वाले उन्हें आकर घेरते थे और अपनी अपनी मनशा के अनुसार कविता करने की इच्छा प्रकट करते थे. नज़ीर सबका मन रखना अपना धर्म समझते थे. वह सचमुच जनता के कवि थे. कुछ दिन हुए आगरे में उनकी यादगार मनाई गई थी. इस अवसर पर हिन्दी, उर्दू के बड़े बड़े कवियों और लेखकों ने उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की. इसी मौक़े पर नीचे दी हुई कविता पढ़ी गई थी.—एडीटर]

بےنظیر نظیر

(ہری شنکر شرما)

[نظیر اکبرآبادی آگرے میں 1735 میں پیدا ہوئے۔ اردو کویتا کے اتہاس میں نظیر پہلے یتھارتھ وادی کوی ہیں۔ انکی کل کی کل رچنائیں کھڑی بولی میں ہیں۔ نظیر کا قلم ساون کی گھٹا ہے جو سیکڑوں وشیوں پر برستا رہا ہے۔ انکو لکھنے کی پریرنا اپنے ارد گرد بسنے والے لوگوں سے ملتی تھی، وہ دور کی کوڑی لانے کے چکر میں نہیں تھے۔ وہ اس جگت کی بات کرتے تھے، جیون اور اسکی رنگ رلیوں کی چرچا کرتے تھے، آسمان کی خبریں دنیا کو نہیں سناتے تھے۔ وہ جنتا سے پریم کرتے تھے اور جنتا انکو مانتی تھی۔ نظیر گھوڑی پر سوار جدھر سے نکل جاتے تھے ادھر ہی لوگوں کی بھیڑ لگ جاتی تھی۔ عورتیں، بچے، بوڑھے، جوان، ہر ہر پیشے والے انہیں آکر گھیرتے تھے اور اپنی اپنی منشا کے انوسار کویتا کرنے کی اچھا پرکٹ کرتے تھے۔ نظیر سب کا من رکھنا اپنا دھرم سمجھتے تھے۔ وہ سچ مچ جنتا کے کوی تھے۔ کچھ دن ہوئے آگرے میں انکی یادگار منائی گئی تھی۔ اس اوسر پر ہندی، اردو کے بڑے بڑے کویوں اور لیکھکوں نے انہیں اپنی شردھانجلی ارپت کی۔ اسی موقع پر نیچے دی ہوئی کویتا پڑھی گئی تھی۔ —ایڈیٹر]

"नया हिन्द"   "نیا ہند"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी — ہندستانی کلچر سوسائٹی

का — کا

माहवारी परचा — ماهواری پرچا

अप्रैल 1954 اپریل

कीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الٰہ آباد-3

नया हिन्द

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, सैयद महमूद, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند، بھگوان دین، سید محمود، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی، مجیب رضوی

* * * * *

अप्रैल 1954 اپریل

नई किताब

गंगा से गोमती तक

...... [illegible] शैली [illegible] किसी की मदद के समझ सकता है [illegible] और [illegible] है [illegible] में [illegible] है.

[illegible]

[illegible]

...... [illegible] है [illegible] समाज [illegible] अच्छा लगता है."

जैनेन्द्र कुमार

लगभग हिन्दी के सभी बड़े लेखकों ने "गंगा से गोमती" को सराहा है.

"गंगा से गोमती तक" में [illegible] सफ़े हैं, तिरंगा सुन्दर कवर, बढ़िया जिल्द, दाम केवल दो रुपया. जल्दी आर्डर भेजिये

मैनेजर नया हिन्द

मिलने का पता

मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

گنگا سے گومتی تک

...... [illegible] کی کہانیوں کی خصوصیت ایک شیلی [illegible] ہے۔ معمولی پڑھا لکھا آدمی انہیں بنا کسی کی مدد کے سمجھ سکتا ہے [illegible] اسی طرح ہے جس طرح [illegible] میں ملتی ہے۔

[illegible]

[illegible]

...... وہ [illegible] سماج کو [illegible] چاہتے ہیں اور [illegible] کہانیاں جگہ جگہ ہمارا دھیان سماج میں ہونے والے [illegible] اور اتیاچاروں کی طرف [illegible] ہیں... [illegible] کی کہانیوں میں ایک [illegible] لگتی ہے۔"

—جینندر کمار

[illegible] ہندی کے سبھی بڑے لیکھکوں نے [illegible] گومتی [illegible] سراہا ہے۔

'گنگا سے گومتی تک' میں 160 صفحے ہیں، ترنگا سندر کور، بڑھیا جلد، دام کیول دو روپیہ [illegible] جلدی آرڈر بھیجئے۔

—مینیجر نیا ہند

ملنے کا پتہ—

مینیجر ' نیا ہند ' 145 مٹھی گنج الہ آباد۔

Printed and Published by Suresh Ramabha[illegible] the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

द

1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों । का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, ग्ररों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में ग्रस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; इस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल 5. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; क्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद ,लेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० र, पं० बिशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम न्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम काश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ज़्यादा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम करा सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق ۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

نوٹ—سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے ۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں ان کو صرف چھہ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا ۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکینگے

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताब — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ़ हिन्दी में हैं

نوٹ :- یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1 शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हज़ार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودیہ ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گدادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ

مینیجر 'نیا ہند'

145' مٹھی گنج' الہ آباد-3.

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक श्री गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित्र कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे खुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اِس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں . بیگم قدسیہ زیدی نے' جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں' اپنی اِس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ' اہنسا' پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری' سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے . ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے . اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی .

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے . وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں . اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے....مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے ."

موٹے کاغذ پر' موٹے ٹائپ میں' بہت سی رنگین تصویریں' آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے .

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی . راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی' جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی .

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب' دام ڈیڑھ روپیہ .

ملنے کا پتہ—

مینیجر' 'نیا ہند'

145 مٹھی گنج' الہ آباد .

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख़्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख़्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لیا جا سکتا ہے .

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے .

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنہوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنہوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج' الہ آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ. 'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामुहावरा भाषा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

…چر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی ۔ پوری جانکاری کے لئے لکھئے ۔

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا ۔

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا ۔ 'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انوَوادت ۔

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اِس سمے چل رہا ہے اُسے اچھی طرح سمجھے ۔ بھارت کے ہر گھر میں اُس پستک کا رہنا ضروری ہے ۔

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز ۔ لگ بھگ چار سو پنّے ۔ کپڑے کی سندر جلد ۔ قیمت کیول ساڑھے سات روپئے ۔

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اِس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا ۔

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اِس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے ۔

سندر جلد ۔ اچھا کاغذ ۔ دو سو صفحے ۔ قیمت دو روپیہ ۔

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے ۔ اِس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اِس کا مقصد کیا ہے ۔

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا ۔ یہ دوسرا ایڈیشن ہے ۔ صفحے 25، دام کیول دو آنے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'، 145، مٹھی گنج، الٰہ آباد

उस दिन हुई. राजेन्द्र बाबू, श्री मुन्शी जी और पंत जी हुकूमती निगाह से राष्ट्रपति, गवर्नर और चीफ मिनिस्टर भले ही हों निजी रूप से उनके अपने संस्कार हैं और अपने दिल की कमज़ोरियां हैं जिन की वजह से यह पंडों के पैर धोते, इनसे मानपत्र लेते या मन्दिरों में गोबरधन पूजा करते हैं.

समाजी निगाह से हम में से बहुत से कमोबेश छुआ छूत का शिकार हैं, जात पांत के पाबन्द हैं और ढकोसलों के मुरीद है. यही वजह है कि क़ानून बन जाने के बाद भी छुआछूत चल रही है. इसके मिटाने के लिये और अधिक त्याग, तपस्या और क़ुरबानी की ज़रूरत है. जब जनता की तरफ़ से सच्चा अमल होगा, आवाज़ बुलन्द होगी, तो सरकार भी कुछ क़दम रखेगी और तब ही यह कलंक हमारे समाज से मिटेगा.

हरिजनों का मसला पुराना है. अपनी अपनी जगह पर हम सब इस पर गम्भीरता से विचार करें और अपनी निजी ज़िन्दगी से छुआछूत, जात पांत और ऊंच नीच के कीड़े निकाल फेंकें तब ही हरिजनों का, देश का और सब का भला हो सकता है.

26. 2. '54 —सुरेश रामभाई

اس دن ہوئی ۔ راجیندر بابو، شری منشی جی اور پنت جی حکومتی نگاہ سے راشٹرپتی، گورنر اور چیف منسٹر بھلے ہی ہوں نجی روپ سے اُن کے اپنے سنسکار ہیں اور اپنے دل کی کمزوریاں ہیں جن کی وجہ سے یہ پنڈوں کے پیر دھوتے، اُن سے مان پتر لیتے یا مندروں میں گوبر دھن پوجا کرتے ہیں ۔

سماجی نگاہ سے ہم میں سے بہت سے کم و بیش چھوا چھوت کا شکار ہیں، جات پانت کے پابند ہیں اور ڈھکوسلوں کے مرید ہیں ۔ یہی وجہ ہے کہ قانون بن جانے کے بعد بھی چھوا چھوت چل رہی ہے ۔ اس کے مٹانے کے لئے اور ادھک تیاگ، تپسیا اور قربانی کی ضرورت ہے ۔ جب جنتا کی طرف سے سچا عمل ہوگا، آواز بلند ہوگی تو سرکار بھی کچھ قدم رکھے گی اور تب ہی یہ کلنک ہمارے سماج سے مٹیگا ۔

ہریجنوں کا مسئلہ پرانا ہے ۔ اپنی اپنی جگہ پر ہم سب اس پر گمبھیرتا سے وچار کریں اور اپنی نجی زندگی سے چھوا چھوت، جات پانت اور اونچ نیچ کے کیڑے نکال پھینکیں تب ہی ہریجنوں کا، دیش کا اور سب کا بھلا ہو سکتا ہے ۔

26. 2. '54 —سریش رام بھائی

गीता और क़ुरान

लेखक–पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इस्लाम दोनों के मेल की बातें है. गीता का बड़प्पन, गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اس کتاب میں ہندو دھرم اور اسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں۔ گیتا کا بڑپن، گیتا کے ایک ایک ادھیائے کا نچوڑ، قرآن کا بڑپن، لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے ۔

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے ۔

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ، ڈاک خرچ الگ ۔

ملنے کا پتہ--

مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج، الہ آباد

भाव और समाज की दूसरी ऊंच-नीच का वह खुद सामना कर सकेंगे.

इलाहाबाद और काशी और गया सब का हाल देख कर हम इस नतीजे पर पहुंचे कि चाहे काशी के विश्वनाथ मंदिर में हरिजनों के जाने की बात हो, चाहे प्रयागराज पर त्रिवेनी स्नान की बात हो, चाहे गया में श्राद्ध करने की बात हो या वैद्यनाथ धाम में आचार्य विनोबा के साथ ज्यादती की बात हो, इसकी तह में बुनियादी कारण तीन हैं :—

1—कुछ पंडे धर्म की पुरानी लकीर के फ़क़ीर हैं और नई हालत में भी अपने अमल में फ़र्क़ करना नहीं चाहते.

2—इन थोड़े से पंडों के पास पैसा है, गुन्डे-बदमाशों की ताक़त है जिससे वह दूसरों को डराते धमकाते हैं.

3—इन पंडों का हुकूमत के बड़े लोगों और अधिकारियों पर असर है जिसकी वजह से इन्हें किसी का डर है न लिहाज़.

डेढ़ दो साल पहले की बात है कि महाराष्ट्र का एक मालदार परिवार काशी में दर्शन को आया तो उसके कुल आदमियों की लाशें गंगा में पाई गईं. कहा जाता है कि उनमें जो औरतें थीं उनके पास कई लाख रुपये का जेवर था जिसके लालच में कुछ पंडों और कुछ पुलिस वालों या दूसरे अधिकारियों की साज़िश में यह हरकत हुई. कहा तो यहां तक जाता है कि उत्तर प्रदेश के कुछ ऊंचे से ऊंचे अफ़सर इस में शरीक किये गये और मामला दबा दिया गया.

समाजी निगाह से हम में से ज्यादातर छुआछूत के रोग के रोगी हैं. भंगी व चमारों को हम नीच समझते हैं और नफ़रत की निगाह से देखते हैं. यहां तक कि हम अपने बदन से निकले मैले पर बालू या मिट्टी डालना भी अपने लिये हतक का काम समझते हैं ! पंडों का रोब भी जाने अनजाने हम पर सवार रहता है. शायद यही वजह है कि राष्ट्रपति ने उनके पैर धोए और गवर्नर ने उनसे ऐडरैस लिया ! अजीब इन लोगों के विचार हैं धर्म के बारे में ! लाख पढ़ लिख जायें फिर भी समझ से काम नहीं लेते. नहीं तो क्या ज़रूरत है कि राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, गवर्नर मुन्शी, मुख्य मंत्री पन्त वग़ैरा सब अमावस्या के दिन नहाएं ही ? एक तरफ़ तो कहते हैं कि विज्ञान का ज़माना है और उसकी रोशनी में देश को बढ़ना चाहिये, दूसरी तरफ़ अमावस्या के दिन ही जाकर गंगा में नहाना क्या यही विज्ञान का तक़ाज़ा है ? हमारा यह भी ख़्याल है कि अगर राजेन्द्र बाबू, श्री मुन्शी और पन्त जी 3 फ़रवरी को कुम्भनगर में न रहे होते तो न रास्ते बंद होते, न पुलिस उनकी ख़ुशामदी में लगती और शायद न वह दुर्घटना हुई होती जो

بھاؤ اور سماج کی دوسری اونچ نیچ کا وہ خود سامنا کر سکیں گے ۔

الٰہ آباد اور کاشی اور گیا سب کا حال دیکھکر ہم اس نتیجے پر پہنچے کہ چاہے کاشی کے وشوناتھ مندر میں ہریجنوں کے جانے کی بات ہو، چاہے پریاگ راج پر تریبنی اسنان کی بات ہو، چاہے گیا میں شرادھ کرنے کی بات ہو یا بیدناتھ دھام میں آچاریہ ونوبا کے ساتھ زیادتی کی بات ہو، اس کی تہ میں بنیادی کارن تین ہیں :—

1—کچھ پنڈے دھرم کی پرانی لکیر کے فقیر ہیں اور نئی حالت میں بھی اپنے عمل میں فرق کرنا نہیں چاہتے ۔

2—ان تھوڑے سے پنڈوں کے پاس پیسہ ہے، غنڈے بدمعاشوں کی طاقت ہے، جس سے وہ دوسروں کو ڈراتے دھمکاتے ہیں ۔

3—ان پنڈوں کا حکومت کے بڑے لوگوں اور ادھیکاریوں پر اثر ہے جس کی وجہ سے انہیں کسی کا ڈر ہے نہ لحاظ ۔

ڈیڑھ دو سال پہلے کی بات ہے کہ مہاراشٹر کا ایک مالدار پریوار کاشی میں درشن کو گیا تو اس کے کل آدمیوں کی لاشیں گنگا میں پائی گئیں ۔ کہا جاتا ہے کہ اس میں جو عورتیں تھیں ان کے پاس کئی لاکھ روپے کا زیور تھا جس کے لالچ میں کچھ پنڈوں اور کچھ پولس والوں یا دوسرے ادھیکاریوں کی سازش میں یہ حرکت ہوئی ۔ کہا تو یہاں تک جاتا ہے کہ اتر پردیش کے کچھ اونچے سے اونچے افسر اس میں شریک کئے گئے اور معاملہ دبا دیا گیا ۔

سماجی نگاہ سے ہم میں سے زیادہ تر چھوا چھوت کے روگ کے روگی ہیں ۔ بھنگی و چماروں کو ہم نیچ سمجھتے ہیں اور نفرت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں یہاں تک کہ ہم اپنے بدن سے نکلے میلے پر بالو یا مٹی ڈالنا بھی اپنے لئے ہتک کا کام سمجھتے ہیں ! پنڈوں کا رعب بھی جانے انجانے ہم پر سوار رہتا ہے ۔ شاید یہی وجہ ہے کہ راشٹرپتی نے ان کے پیر دھوئے اور گورنر نے ان سے ایڈریس لیا ! عجیب ان لوگوں کے وچار ہیں دھرم کے بارے میں ! لاکھ پڑھ لکھ جائیں پھر بھی سمجھ سے کام نہیں لیتے ۔ نہیں تو کیا ضرورت ہے کہ راشٹرپتی راجیندر بابو، گورنر منشی، مکھیہ منتری پنت وغیرہ سب اماوسیا کے دن نہائیں ہی ؟ ایک طرف تو کہتے ہیں کہ وگیان کا زمانہ ہے اور اس کی روشنی میں دیش کو بڑھنا چاہئے، دوسری طرف اماوسیا کے دن ہی جا کر گنگا میں نہانا کیا یہی وگیان کا تقاضہ ہے ؟ ہمارا یہ بھی خیال ہے کہ اگر راجیندر بابو، شری منشی اور پنت جی 3 فروری کو کمبھ نگر میں نہ رہے ہوتے تو نہ راستے بند ہوتے نہ پولس ان کی خوشامد میں لگتی اور شاید نہ وہ دُرگھٹنا ہوئی ہوتی جو

आर्थिक चलन से है जिसमें कोई राजा है तो कोई रंक, कोई अपच से दुखी है तो कोई फ़ाक़े से. देश का दुर्भाग्य है कि अंगरेज़ों के जाने के बाद भी इसी आर्थिक व्यवस्था को बढ़ावा मिल रहा है और दुखी का दुख बढ़ रहा है. आज बाजार में बाटा व फ़्लैक्स के जूते चलते हैं—जो दोनों ही बड़े पूंजीपतियों की कम्पनियां हैं—जिन्होंने देश के लाखों चमारों और मोचियों को तबाह कर डाला. अकसर गांवों से तो खाल पकाने या चमड़ा गांठने का पेशा ही उठ गया. इसके कारन हज़ारों लाखों हरिजन बेकार और नादार हो गए. हरिजन का देहातों में दूसरा ख़ास काम था—खेतियों में पानी देना, सिंचाई करना, निराई करना और कटाई करना. इस काम से भी इनको मुक्ति मिलती जा रही है. तरह तरह की "सुधरी हुई" (?) मशीनें देहातों में आ रही हैं जिनमें मज़दूरों की ज़रूरत ही नहीं रह जाती. ख़ासकर ट्यूब वैल और पानी के नल आदि जो नये नये साधन चल पड़े हैं उन्होंने—और कुछ किया हो या न किया हो—लाखों ग़रीबों की तो रोज़ी छीन ही ली है. देहात का बाशिन्दा हरिजन आज—आज़ाद भारत के सातवें साल में—जितना बेरोज़गार और रोटी का मोहताज है उतना कभी नहीं था. वह अपनी चोटी का पसीना एड़ी तक बहाता है लेकिन उसके पास अपनी न ज़मीन है न खेती के और साधन. यह सब हो रहा है सरकार के ऐलानिया कहने पर कि देश में विकास के लिये करोड़ों रुपया ख़र्च हो रहा है. मोटे तौर पर 'विकास' के माने हैं ग़रीब का और ख़ास कर हरिजन का विनाश. पर हम ने ख़ुद हरिजनों की हालत संभालने लिये क्या किया? मुल्क के सामने की अब कम से कम एक प्रोग्राम मौजूद है जिस से न सिर्फ़ हरिजनों का भला होगा बल्कि अमीर ग़रीब के बीच की जो मोटी मोटी दीवारें हैं वह कुछ ढह जायंगी—यह प्रोग्राम है भूदान यज्ञ और सम्पत्तिदान यज्ञ. आज हमारे लाखों हरिजन भाई बेज़मीन, बेमकान हैं. उनको ज़मीन मिलनी चाहिये और खेती के सारे साधन मिलने चाहिये. इस काम में पहला क़दम जनता को ही बढ़ाना है. सरकार भी चाहे तो बहुत कुछ कर सकती है. सरकार के करने का जो ख़ास काम है वह है देहाती धन्दों को बढ़ावा देना और उनको तबाह करने वाले मिल व दूसरे बड़े धन्धों पर उचित पाबन्दी लगाना. अगर सरकार सिर्फ़ चमड़े व वनस्पति के कारख़ानों, ट्रैक्टर व हानिकर विलायती खाद पर ही पाबन्दियां लगा दे—जिसकी इस वक़्त सख़्त ज़रूरत है—तो लाखों हरिजन जी जायें और क़ौम की क़ौम ऊपर उठ जाये.

हरिजनों की आर्थिक हालत सुधरने पर उनके अन्दर काफ़ी ताक़त आप से आप आ जायगी. मन्दिरों के भेद

آرتھک چلن سے ہے جس میں کوئی راجا ہے تو کوئی رنک، کوئی اپچ سے دکھی ہے تو کوئی فاقے سے. دیش کا دربھاگیہ ہے کہ انگریزوں کے جانے کے بعد بھی اسی آرتھک ویوستھا کو بڑھاوا مل رہا ہے اور دکھی کا دکھ بڑھ رہا ہے. آج بازار میں باٹا فلیکس کے جوتے چلتے ہیں—جو دونوں ہی بڑے بڑے پونجی پتیوں کی کمپنیاں ہیں—جنہوں نے لاکھوں چماروں اور موچیوں کو تباہ کر ڈالا. اکثر گاؤں سے تو کھال پکانے اور چمڑا گانٹھنے کا پیشہ ہی اٹھ گیا. اس کے کارن ہزاروں لاکھوں ہریجن بیکار اور نادار ہوگئے. ہریجنوں کا دیہاتوں میں دوسرا خاص کام تھا—کھیتوں میں پانی دینا، سنچائی کرنا، نرائی کرنا اور کٹائی کرنا. اس کام سے بھی انکو مکتی ملتی جارہی ہے. طرح طرح کی "سدھری ہوئی" (؟) مشینیں دیہاتوں میں آ رہی ہیں جن میں مزدوروں کی ضرورت ہی نہیں رہ جاتی. خاصکر ٹیوب ویل اور پانی کے نل آدی جو نئے نئے سادھن چل پڑے ہیں انہوں نے—اور کچھ کیا ہو یا نہ کیا ہو—لاکھوں غریبوں کی تو روزی چھین لی ہے. دیہات کا باشندہ ہریجن آج—آزاد بھارت کے ساتویں سال میں—جتنا بے روزگار اور روٹی کا محتاج ہے اتنا کبھی نہیں تھا. وہ اپنی چوٹی کا پسینہ ایڑی تک بہاتا ہے لیکن اس کے پاس اپنی نہ زمین ہے نہ کھیتی کے اور سادھن. یہ سب ہو رہا ہے سرکار کے اعلانیہ کہنے پر کہ دیش میں وکاس کے لئے کروڑوں روپیہ خرچ ہو رہا ہے. موٹے طور پر 'وکاس' کے معنی ہیں غریب کا اور خاصکر ہریجن کا وناش. پر ہم نے ہریجنوں کی حالت سنبھالنے کے لئے کیا کیا؟ ملک کے سامنے اب کم سے کم ایک پروگرام موجود ہے جس سے نہ صرف ہریجنوں کا بھلا ہوگا بلکہ امیر غریب کے بیچ کی جو موٹی دیواریں ہیں وہ کچھ ڈھ جائینگی—یہ پروگرام ہے بھودان یگیہ اور سمپتی دان یگیہ. آج ہزاروں لاکھوں ہریجن بھائی بے زمین، بے مکان ہیں" ان کو زمین ملنی چاہئے اور کھیتوں کے سارے سادھن ملنے چاہئے. اس کام میں پہلا قدم جنتا کو ہی بڑھانا ہے. سرکار بھی چاہے تو بہت کچھ کر سکتی ہے. سرکار کے کرنے کا جو خاص کام ہے وہ ہے دیہاتی دھندوں کو بڑھاوا دینا اور ان کو تباہ کرنے والے مل و دوسرے بڑے دھندوں پر اچت پابندی لگانا. اگر سرکار صرف چمڑے و بناسپتی کے کارخانوں، ٹریکٹر و ہانیکر ولایتی کھاد پر ہی پابندیاں لگا دے—جس کی اس وقت سخت ضرورت ہے—تو لاکھوں ہریجن جی جائیں اور قوم کی قوم اوپر اٹھ جائے.

ہریجنوں کی آرتھک حالت سدھرنے پر ان کے اندر کافی طاقت آپ سے آپ آجائے گی. مندروں کے بھید

...जनों के लिये हर मंदिर खुला है तो असलियत में भी खुला है. पर पिछले सितम्बर में बिहार के बैद्यनाथ धाम देवघर नाम के शिवाले पर जब हरिजनों के साथ संत विनोबा को रोका गया और धर्म के नाम पर उनपर व उनके साथियों पर वार किया गया तो पता चला कि यह कोढ़ अभी बहुत कुछ बना है. इसके बाद देश के मुख़्तलिफ़ मंदिरों को हरिजनों के लिये खुलने की कुछ कोशिश होने लगी.

काशी के विश्वनाथ मंदिर में हरिजन जा सकें इसके लिये बाबा राघवदास ने कुछ चरचा चलाई. मंदिर वालों से और दूसरों से भी यह चरचा शुरू में काफ़ी अच्छी रही फिर वह ख़त्म ही हो गई या क्या हुआ कुछ पता नहीं चला. अब भाई बेचनराम जब कुछ भाइयों के साथ वहां गए तो जो शर्मनाक बरताव उनके साथ किया गया वह हमने ऊपर दिया है. यह सब उसी मंदिर का हाल है जहां के पंडों के पैर—पारसाल की ही बात है—राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने ख़ुद जाकर धोये थे. जब राष्ट्रपति पंडों के पैर धोयें तो फिर उन पंडों का शेर हो जाना या हरिजनों के साथ हैवानी बरताव करना कोई अचरज की बात नहीं है. हमें नहीं मालूम कि हाल में कुम्भ के मौक़े पर जिन पंडों, साधुओं वग़ैरा से सूबे के गवर्नर ने मानपत्र लिया उनमें से कितने काशी के थे. इसमें कोई शक नहीं कि हरिजनों के मामले में उनमें से अधिकतर वही राय रखते होंगे जो काशी के पंडों की है. इस तरह जब देश का सबसे ऊंचा पदाधिकारी और सूबे का सिरमौर उन पंडों की आवभगत करेंगे जो क़ानून को ताक़ पर रख कर मनमाना करते हैं तो वह किस तरह से उस क़ानून के सच्चे रक्षक साबित होंगे जिसकी देख रेख उनके सुपुर्द की गई है—यह एक बड़ा सवाल है.

ज़रूरत है कि हम कुछ गहराई के साथ मन्दिरों और हरिजनों के मसले पर ग़ौर करें. यह मसला जितना धार्मिक है, हमारे ख़याल में उतना ही समाजी और आर्थिक भी, और राजकाजी भी है.

आर्थिक निगाह से देखें तो पता चलता है कि अगर कोई हरिजन किसी मंदिर में कुछ ज़्यादा पैसा चढ़ाने के इरादे से जाता है तो अक्सर मंदिरवाले उसका स्वागत करते हैं और कहते हैं कि हरिजन का नहीं, लक्ष्मी का आगमन हो रहा है! पर इस तरह ज़्यादा पैसा ख़र्च करसकने वाले कितने हैं? इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज जो हमारे हरिजन कहलाने वाले भाइयों को नीची निगाह से देखा जाता है वह काफ़ी कम हो जाय अगर उनकी आर्थिक हालत अच्छी हो—यानी समाज में जो आर्थिक ऊंच नीच की चौड़ी खाई है वह कम हो जाय. इसका सीधा सम्बन्ध आज की आर्थिक व्यवस्था और

...ـا کے لیے ہر مندر کھلا ہے تو اصلیت میں بھی کھلا ہے ۔ پر پچھلے ستمبر میں بہار کے بیدیہ ناتھ دھام میں دیوگھر نام کے شوالے پر جب ہریجنوں کے ساتھ سنت ونوبا کو روکا گیا اور دھرم کے نام پر ان پر و ان کے ساتھیوں پر وار کیا گیا تو پتہ چلا کہ یہ کوڑھ ابھی بہت کچھ بنا ہے ۔ اس کے بعد دیش کے مختلف مندروں کو ہریجنوں کے لئے کھلنے کی کچھ کوشش ہونے لگی ۔

کاشی کے وشوناتھ مندر میں ہریجن جاسکیں اس کے لئے بابا راگھوداس نے چرچا چلائی ۔ مندر والوں سے اور دوسروں سے بھی وہ چرچا شروع میں کافی اچھی رہی پھر وہ ختم ہی ہوگئی یا کیا ہوا کچھ پتہ نہیں چلا ۔ اب بھائی بیچن رام جب کچھ بھائیوں کے ساتھ وہاں گئے تو جو شرمناک برتاؤ ان کے ساتھ کیا گیا وہ ہم نے اوپر دیا ہے ۔ یہ سب اسی مندر کا حال ہے جہاں پنڈوں کے پیر— پار سال کی ہی بات ہے—راشٹر پتی ڈاکٹر راجیندر پرشاد نے خود جاکر دھوئے تھے ۔ جب راشٹر پتی پنڈوں کے پیر دھوئیں ۔ تو پھر ان پنڈوں کا شیر ہوجانا یا ہریجنوں کے ساتھ حیوانی برتاؤ کرنا کوئی اچرج کی بات نہیں ہے ۔ ہمیں نہیں معلوم کہ حال میں کمبھ کے موقع پر جن پنڈوں، سادھوؤں وغیرہ سے صوبے کے گورنر نے مان پتر لیا ان میں سے کتنے کاشی کے تھے ۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ ہریجنوں کے معاملہ میں وہی ادھکتر رائے رکھتے ہونگے جو کاشی کے پنڈوں کی ہے ۔ اس طرح جب دیش کا سب سے اونچا ادھیکاری اور صوبہ کا سرمور ان پنڈوں کی آؤبھگت کرینگے جو قانون کو طاق پر رکھکر من مانا کرتے ہیں تو وہ کس طرح سے اس قانون کے سچے رکشک ثابت ہونگے جسکی دیکھ ریکھ ان کے سپرد کی گئی ہے ؟ یہ ایک بڑا سوال ہے ۔

ضرورت ہے کہ ہم کچھ گہرائی کے ساتھ مندروں اور ہریجنوں کے مسلے پر غور کریں ۔ یہ مسلہ جتنا دھارمک ہے ہمارے خیال میں اتنا ہی سماجی اور آرتھک بھی اور راجکاجی بھی ہے ۔

آرتھک نگاہ سے دیکھیں تو پتہ چلتا ہے کہ اگر کوئی ہریجن کسی مندر میں کچھ زیادہ پیسہ چڑھانے کے ارادہ سے جاتا ہے تو اکثر مندر والے اس کا سواگت کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ہریجن کا نہیں لکشمی کا آگمن ہو رہا ہے ! پر اس طرح زیادہ پیسہ خرچ کرسکنے والے کتنے ہیں؟ اس سے انکار نہیں کیا جاسکتا کہ آج جو ہمارے ہریجن کہلانے والے بھائیوں کو نیچی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے یہ کافی کم ہو جائے اگر انکی آرتھک حالت اچھی ہو—یعنی سماج میں جو آج آرتھک اونچ نیچ کی چوڑی کھائی ہے وہ کم ہوجائے ۔ اس کا سیدھا سمبندھ آج کی آرتھک ویوستھا اور

कि सरकार की यह चाह कौन पूरा करते हैं ? जवाब है— आप और हम, वही जो अपने को सरकार से तंग आ गए कहते हैं. इस सरकार की ऐसी ग़लत नीति के साथ जब तक हम साथ देते हैं तब ही वह इस तरह बढ़ती जाती है. अगर हम ही अपने दुश्मन बन जावें तो दूसरा क्या कर सकता है ? सरकार मुलाज़िम है और जनता मालिक, मालिक का फ़र्ज़ है कि नौकर से ठीक तरह से काम ले और अगर वह ठीक से काम न करे तो उसकी जगह दूसरे नौकर को तैनात करे. अगर मालिक अपने फ़र्ज़ में चूकेगा तो मुलाज़िम ख़ुद डूबने के साथ मालिक को भी डुबाये बिना न रहेगा. शराब की छूट सरकार की तरफ़ से जनता के लिये एक चुनौती है.

25. 2. '54 —सुरेश रामभाई

काशी के विश्वनाथ मंदिर में हरिजनों पर रोक

फ़रवरी की 17 तारीख़ को कुछ हरिजन भाई काशी के विश्वनाथ मंदिर में दर्शन के लिये गए, दरवाज़े पर उन्हें रोका गया. रोकने वालों में रामराज परिशद के नेता स्वामी करपात्री जी भी थे. पुलिस ने करपात्री जी और उनके कुछ साथियों को गिरफ़्तार कर लिया. हरिजनों ने दोबारा कोशिश की. इस बार मन्दिर के अन्दर बहुत से आदमी लेटे हुए धरना दे रहे थे और एक क़दम भी आगे बढ़ना नामुमकिन था. मजबूर हो कर वह बिना दर्शन किये लौट आये. उनके साथ एक हरिजन एम. एल. ए. भाई बेचनराम थे. उन्होंने प्रेस के अपने एक बयान में कहा है कि जिन भाइयों ने धरना दे रखा था वह ऐसे तेज़ मिज़ाज मालूम पड़ रहे थे कि हमने अन्दर जाना ठीक नहीं समझा और मौक़े पर शहर के मजिस्ट्रेट व कोतवाल मौजूद थे लेकिन धरना देने वालों के ख़िलाफ़ उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की ! इस तरह विश्वनाथ मंदिर के ठेकेदारों और उनके कुछ हमख़्याल लोगों ने पुलिस की ख़ामोशी की मदद से हरिजन भाइयों को विश्नाथ मन्दिर में जाने से रोक दिया.

विश्वनाथ मंदिर में हरिजनों का न जा पाना बताता है कि आज़ादी के सात बरस बाद भी हिन्दुस्तान के बासी और ख़ास कर वह जो अपने को ऊंची ज़ात के हिन्दू कहते हैं, कितने बहके हुए हैं. यह कोढ़ बहुत पुराना है. महात्मा गांधी ने जान की बाज़ी लगा कर इसे जड़ से उखाड़ने की कोशिश की और उनकी इस कोशिश का कुछ नतीजा भी हुआ. फिर इस सवाल की तरफ़ से हम सब सो से गए. हमने यह समझ लिया कि जब विधान की किताब में

سرکار کی یہ چاہ کون پورا کرتے ہیں ؟ جواب ہے — آپ اور ہم، وہی جو اپنے کو سرکار سے تنگ آگئے کہتے ہیں. اس سرکار کی ایسی غلط نیتی کے ساتھ جب ہم ساتھ دیتے ہیں تب ہی وہ اس طرح بڑھتی جاتی ہے. اگر ہم ہی اپنے دشمن بن جائیں تو دوسرا کیا کرسکتا ہے . سرکار ملازم ہے اور جنتا مالک، مالک کا فرض ہے کہ نوکر سے ٹھیک طرح سے کام لے اور اگر وہ ٹھیک سے کام نہ کرے تو اسکی جگہ دوسرے نوکر کو تعینات کرے . اگر مالک اپنے فرض میں چوکے گا تو ملازم خود ڈوبنے کے ساتھ مالک کو بھی ڈبائے بنا نہ رہے گا. شراب کی چھوٹ سرکار کی طرف سے جنتا کے لئے ایک چنوتی ہے .

25 . 2 . '54 — سریش رام بھائی

کاشی کے وشوناتھ مندر میں ہریجنوں پر روک

فروری کی 17 تاریخ کو کچھ ہریجن بھائی کاشی کے وشوناتھ مندر میں درشن کے لئے گئے . دروازے پر انہیں روکا گیا. روکنے والوں میں رامراج پریشد کے نیتا سوامی کرپاتری جی بھی تھے . پولس نے کرپاتری جی اور ان کے کچھ ساتھیوں کو گرفتار کرلیا. ہریجنوں نے دوبارہ کوشش کی . اس بار مندر کے اندر بہت سے آدمی لیٹے ہوئے دھرنا دے رہے تھے اور ایک قدم بھی آگے بڑھنا ناممکن تھا. مجبور ہوکر وہ بنا درشن کئے لوٹ آئے . ان کے ساتھ ایک ہریجن ایم. ایل. اے. بھائی بیچن رام تھے . انہوں نے پریس کے اپنے ایک بیان میں کہا ہے کہ جن بھائیوں نے دھرنا دے رکھا تھا وہ ایسے تیز مزاج معلوم پڑ رہے تھے کہ ہم نے اندر جانا ٹھیک نہیں سمجھا . موقع پر شہر کے مجسٹریٹ و کوتوال موجود تھے لیکن دھرنا دینے والوں کے خلاف انہوں نے کوئی کارروائی نہیں کی. اس طرح وشوناتھ مندر کے ٹھیکیداروں اور ان کے کچھ ہم خیال لوگوں نے پولس کی خاموشی کی مدد سے ہریجن بھائیوں کو وشوناتھ مندر میں جانے سے روک دیا.

وشوناتھ مندر میں ہریجنوں کا نہ جا پانا بتاتا ہے کہ آزادی کے سات برس بعد بھی ہندستان کے باسی اور خاصکر وہ جو اپنے کو اونچی ذات کے ہندو کہتے ہیں، کتنے بہکے ہوئے ہیں. یہ کوڑھ بہت پرانا ہے. مہاتما گاندھی نے جان کی بازی لگاکر اسے جڑ سے اکھاڑنے کی کوشش کی اور انکی اس کوشش کا کچھ نتیجہ بھی ہوا . پھر اس سوال کی طرف سے ہم سب سو سے گئے . ہم نے یہ سمجھ لیا کہ جب ودھان کی کتاب میں

भी स्वार्थ की खातिर क़ानून तोड़ते हैं." पर मद्रास "हिन्दू" कहता है कि जो हालत आंध्र में है वही बहुत कुछ बाक़ी मद्रास सूबे में है. इसी सम्बन्ध में "हिन्दू" यह भी कहता है कि शराबबन्दी विधान में भले ही हो लेकिन "क़ानून के बल से लोगों को 'चरित्रवान' नहीं बनाया जा सकता और एक प्रजातंत्री राज को जनता की सतह से बहुत दूर नहीं उठ जाना चाहिये." उसने मद्रास राज से अपील की है कि खुले दिल से राममूर्ति कमेटी रिपोर्ट को पढ़े व देखे !

आम तौर से सरकारें जुदा जुदा कामों के लिये जो कमेटियां बिठाती हैं वह ऐसे ही आदमियों की जो उनके समझे बूझे हों. ऐसा भी अकसर होता है कि कमेटियों की रिपोर्टें छापा होने के पहले सरकारें देख लिया करती हैं और अकसर तो उनमें दखल भी देती हैं. इसलिये हो सकता है कि आंध्र की पहली सरकार ने शराबबन्दी की जांच के लिये जो कमेटी बिठाई वह सोच समझ कर बैठाई और जो राय राममूर्ति कमेटी ने दी वह आंध्र सरकार की भी राय है.

हमारे तेलंगी भाई बहन अब खूब शराब पियें और अपने को तबाह बरबाद करें—मज़े आयेंगे आंध्र के बड़े व्यापारियों व पूंजीपतियों को और नई सरकार के नये मिनिस्टरों या उनके जीहुज़ूरों को जो उद्घाटन आदि के प्रोग्रामों पर आया जाया करेंगे, दौरे लगायेंगे, राष्ट्रपिता के नाम पर स्पीचें झाड़ेंगे. सुना जाता है कि हिन्द सरकार के भी ज़्यादातर मिनिस्टर शराबबन्दी के खिलाफ़ हैं और फ़ाइनेन्स मिनिस्टर ने तो एक दिन ऐलानिया कहा था कि बम्बई सरकार जो खर्चे बढ़ाती जाती है तो उसे अपनी शराब नीति पर फिर से ग़ौर करना मुनासिब होगा.

शराब को इस तरह चलन देना या उसको छूट कर देना, जैसा हमने शुरू में कहा, आज़ाद भारत की एक महत्व पूर्ण और तकलीफ़देह घटना है. तिस पर सूबाई सरकारों का शह देना तो जले पर नमक छिड़कने जैसा है. इससे यह भी पता चलता है कि हिन्द सरकार कितनी कमज़ोर है जो विधान की लकीरों तक पर, जनता से तो दरकिनार, अपनी मातहत सरकारों से भी, अमल नहीं करा सकती. वही हालत हरिजनों के मन्दिर प्रवेश के मामले में है.

हमारा ख्याल है कि हमारी सरकारें सिर्फ़ एक चीज़ चाहती हैं—पैसा. नासमझदार बनिये की तरह, चाहे चमड़ी चली जावे दमड़ी न जावे, उसका भी उसूल है. चाहे लोगों का चालचलन बर्बाद हो, चाहे गांव के बच्चे तबाह हों—सरकार के लिये तो शराब चलनी चाहिये, सिनेमा चलने चाहियें, मिलें चलनी चाहियें—ताकि सरकार को पैसा मिले. पर हम बड़े अदब के साथ पूछते हैं

نجی سوارتھ کے خاطر قانون توڑتے ہیں۔" پر مدراس "ہندو" کہتا ہے کہ جو حالت آندھر میں ہے وہی بہت کچھ باقی مدراس صوبے میں ہے۔ اس سمبندھ میں "ہندو" یہ بھی کہتا ہے کہ شراب بندی ودھان میں بھلے ہی ہو لیکن "قانون کے بل سے لوگوں کو 'چرتروان' نہیں بنایا جاسکتا اور ایک پرجاتنتری راج کو جنتا کی سطح سے بہت دور نہیں اٹھ جانا چاہئے۔" اس نے مدراس راج سے اپیل کی ہے کہ کھلے دل سے رام مورتی کمیٹی رپورٹ کو پڑھے و دیکھے !

عام طور سے سرکاریں جدا جدا کاموں کے لئے جو کمیٹیاں بٹھاتی ہیں وہ ایسے ہی آدمیوں کی جو ان کے سمجھے بوجھے ہوں۔ ایسا بھی اکثر ہوتا ہے کہ کمیٹیوں کی رپورٹیں شائع ہونے کے پہلے سرکاریں دیکھ لیا کرتی ہیں اور اکثر تو ان میں دخل بھی دیتی ہیں ۔ اس لئے ہوسکتا ہے کہ آندھر کی پہلی سرکار نے شراب بندی کی جانچ کے لئے جو کمیٹی بٹھائی وہ سوچ سمجھ کر بٹھائی اور جو رائے رام مورتی کمیٹی نے دی وہ آندھر سرکار کی بھی رائے ہے ۔

ہمارے تیلنگی بھائی بہن اب خوب شراب پئیں اور اپنے کو تباہ برباد کریں۔ مزے آئیں گے آندھر کے بڑے بیوپاریوں و پونجی پتیوں کو اور نئی سرکار کے نئے منسٹروں یا ان کے جی حضوروں کو جو ادگھاٹن آدی کے پروگراموں پر آیا جایا کریں گے، دورے لگائیں گے، راشٹر پتا کے نام پر اسپیچیں جھاڑیں گے ۔ سنا جاتا ہے کہ ہند سرکار کے بھی زیادہ منسٹر شراب بندی کے خلاف ہیں اور فائیننس منسٹر نے تو ایک دن اعلانیہ کہا تھا کہ بمبئی سرکار جو خرچے بڑھاتی جاتی ہے تو اسے اپنی شراب نیتی پر پھر سے غور کرنا مناسب ہوگا ۔

شراب کو اس طرح چلن دینا یا اسکی چھوٹ کردینا، جیسا ہم نے شروع میں کہا، آزاد بھارت کی ایک مہتوپورن اور تکلیف دہ گھٹنا ہے ۔ اس پر صوبائی سرکاروں کا شہ دینا تو جلے پر نمک چھڑکنا جیسا ہے ۔ اس سے یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ ہند سرکار کتنی کمزور ہے جو ودھان کی لکیروں تک پر، جنتا سے تو درکنار، اپنی ماتحت سرکاروں سے بھی، عمل نہیں کراسکتی ۔ وہی حالت ہریجنوں کے مندر پرویش کے معاملے میں ہے۔

ہمارا خیال ہے کہ ہماری سرکاریں صرف ایک چیز چاہتی ہیں—پیسہ۔ ناسمجھدار بنئے کی طرح، چاہے چمڑی چلی جائے دمڑی نہ جائے، اسکا بھی اصول ہے ۔ چاہے لوگوں کا چال چلن برباد ہو، چاہے گاؤں کے بچے تباہ ہوں ۔ سرکار کے لئے تو شراب چلنی چاہئے، سنیما چلنے چاہئیں، ملیں چلنی چاہئیں—تاکہ سرکار کو پیسہ ملے ۔ پر ہم بڑے ادب کے ساتھ پوچھتے ہیں

और यह सब तब हो रहा है जब भारत के विधान की दफ़ा 41 में साफ़ लिखा है कि शराब का चलन क़ानून जुर्म है.

नये आंध्र सूबे की सरकार ने शराब के इस्तेमाल की जांच के बारे में एक कमेटी--जिस के सदर सर एस. वी. राममूर्ति थे--बिठाई थी. उस कमेटी ने अपनी रिपोर्ट हाल में ही पेश की है. कमेटी ने पांच ज़िलों का दौरा किया और बीसियों लोगों से मिली. वह इस नतीजे पर पहुंची है कि मद्रास सरकार की शराबबन्दी नीति सोलह आना नाकामयाब रही है. कमेटी का कहना है कि नशीली चीज़ों का सेवन करने वालों में से 50 से 100 फ़ी सदी तक लोग शराब पीते हैं और मामूली रहन सहन वाले निचले दर्जे के लोगों में भी यह फैल रही है. कमेटी को एक भी गांववाला ऐसा नहीं मिला जो शराबबन्दी चाहता हो ! यही नहीं, कमेटी ने देखा कि पुलिस, शराबबन्दी और सहयोगी समिति के मोहकमों में खूब भ्रष्टाचार चल रहा है और ताड़ के पेड़ से ली हुई नीरा की जब लोग ताड़ी बनाते हैं तो अधिकारी लोग आंख बचा जाते हैं. कमाल यह है कि शराबबन्दी की नीति शुरू होने से पहले सरकार शराब के मोहकमे पर जहां 19 लाख रुपया खर्च कर रही थी वहां अब 31 लाख कर रही है. कमेटी का कहना है कि जनमत शराबबन्दी के खिलाफ़ है.

इन सब चीज़ों की रोशनी में राममूर्ति कमेटी ने सिफ़ारिश की है कि पूर्ण शराबबन्दी हटा ली जाय, ताड़ी बिना परमिट या इजाज़त के सब को पीने दी जाय, अरक़ (एक खास तरह की शराब) का राशनिंग कर दिया जाये. विदेशी शराब के लिये डाक्टरी सर्टीफ़िकेट की ज़रूरत नहीं पड़नी चाहिये, और ताड़ी और अरक़ की दूकानों का खुले नीलाम किया जाय वग़ैरा वग़ैरा. ज़ाहिर है कि कमेटी ने महसूस किया कि इससे सरकार की आमदनी बढ़ेगी और नये आंध्र राज का खर्चा निकलने में सुभीता होगा. आंध्र के डिप्टी चीफ़ मिनिस्टर, श्री संजीव रेड्डी ने कहा है कि क्योंकि शराबबन्दी का कुल-हिन्द व्यापी मसला है, कांगरेस वालों पर जनता की श्रद्धा का एक हिस्सा है और विधान में इसकी ताक़ीद है, इसलिये आंध्र असेम्बली की कांगरेस पार्टी अपनी मर्ज़ी से इस रिपोर्ट पर कोई क़दम नहीं उठा सकती. इसी वजह से पंडित नेहरू की सलाह मांगी गई है.

बम्बई सरकार की तरह मद्रास सरकार भी शराबबन्दी की योजना चलाती है. अभी अभी मद्रास असेम्बली व कौन्सिल के जुड़वां इजलास के सामने बोलते हुए वहां के गवर्नर श्री श्री प्रकाश ने कहा कि शराबबन्दी ठीक चल रही है, सिर्फ़ "चन्द लोग ऐसे हैं जो

اور یہ سب تب ہو رہا ہے جب بھارت کے ودھان کی دفع 41 میں صاف لکھا ہے کہ شراب کا چلن قانوناً جرم ہے.

نئے آندھر صوبے کی سرکار نے شراب کے استعمال کی جانچ کے بارے میں ایک کمیٹی—جس کے صدر سر ایس. بی. رام مورتی تھے—بٹھائی تھی. اس کمیٹی نے اپنی رپورٹ حال میں ہی پیش کی ہے. کمیٹی نے پانچ ضلعوں کا دورہ کیا اور بیسیوں لوگوں سے ملی. وہ اس نتیجے پر پہونچی ہے کہ مدراس سرکار کی شراب بندی نیتی سولہ آنہ ناکامیاب رہی ہے. کمیٹی کا کہنا ہے کہ نشیلی چیزوں کا سیون کرنے والوں میں سے 50 سے 100 فی صدی تک لوگ شراب پیتے ہیں اور معمولی رہن سہن والے نچلے درجہ کے لوگوں میں بھی یہ پھیل رہی ہے. کمیٹی کو ایک بھی گاؤں والا ایسا نہیں ملا جو شراب بندی چاہتا ہو! یہی نہیں' کمیٹی نے دیکھا کہ پولس' شراب بندی اور سہیوگی سمتی کے محکموں میں خوب بھرشٹاچار چل رہا ہے اور تاڑ کے پیڑ سے لی ہوئی نیرا کی جب لوگ تاڑی بناتے ہیں تو ادھیکاری لوگ آنکھ بچا جاتے ہیں. کمال یہ ہے کہ شراب بندی کی نیتی شروع ہونے سے پہلے شراب کے محکمے پر جہاں 19 لاکھ روپیہ خرچ کر رہی تھی وہاں اب 31 لاکھ کر رہی ہے. کمیٹی کا کہنا ہے کہ جن مت شراب بندی کے خلاف ہے.

ان سب چیزوں کی روشنی میں رام مورتی کمیٹی نے سفارش کی ہے کہ پورن شراب بندی ہٹالی جائے' تاڑی بنا پرمٹ یا اجازت کے سب کو پینے دی جائے' عرق (ایک خاص طرح کی شراب) کا راشننگ کر دیا جائے. ودیشی شراب کے لئے ڈاکٹری سرٹیفیکٹ کی ضرورت نہیں پڑنی چاہئے اور تاڑی اور عرق کی دوکانوں کا کھلے نیلام کیا جائے وغیرہ وغیرہ. ظاہر ہے کہ کمیٹی نے محسوس کیا کہ اس سے سرکار کی آمدنی بڑھے گی اور نئے آندھر راج کا خرچہ نکلنے میں سوبھیتا ہوگا. آندھر کے ڈپٹی چیف منسٹر شری سنجیوریڈی نے کہا ہے کہ کیونکہ شراب بندی کا کل ہند ویاپی مسئلہ ہے' کانگریس والوں پر جنتا کی شردھا کا ایک حصہ ہے اور ودھان میں اسکی تاکید ہے' اس لئے آندھر اسمبلی کی کانگریس پارٹی اپنی مرضی سے اس رپورٹ پر کوئی قدم نہیں اٹھا سکتی. اسی وجہ سے پنڈت نہرو کی صلاح مانگی گئی ہے.

بمبئی سرکار کی طرح مدراس سرکار بھی شراب کی یوجنا چلاتی ہے. ابھی ابھی مدراس اسمبلی و کاؤنسل کے جڑواں اجلاس کے سامنے بولتے ہوئے وہاں کے گورنر شری شری پرکاش نے کہا کہ شراب بندی ٹھیک چل رہی ہے' صرف "چند لوگ ایسے ہیں جو

हमारी राय / ہماری رائے

शराब की छूट

आज़ादी के बाद पिछले सात बरस में हिन्दुस्तान के अन्दर शराब की खपत जितनी बढ़ी है उतनी अंग्रेज़ी राज के किन्हीं चौदह बरस में भी नहीं बढ़ी थी. शराब या ताड़ी वग़ैरा की छूट अंग्रेज़ों ने दी क्योंकि उनके चालू मज़हब में या उनके देश में शराब कोई बुरी चीज़ नहीं समझी जाती थी. पर दुख की बात है कि शराब को जो बढ़ावा आजकल मिल रहा है वह पहले कभी भी नहीं मिला. हम इलाहाबाद की ही मिसाल लें. यहां बहादुरगंज मुहल्ले में ताड़ीख़ाना है. पहले उस पर कोई साइनबोर्ड नहीं था. बहुत कम लोग जानते थे कि वहां क्या होता है. लेकिन आजकल वहां एक बड़ा भारी, रंग बिरंगा साइनबोर्ड लगा हुआ है जो लोगों को खुले आम दावत देता है. दूसरे मुट्ठीगंज के मुहल्ले में ख़ास चौराहे पर—जहां सिपाही खड़ा होता है—नुक्कड़ के ऊपर गांजा-भांग की दूकान है. वहां अन्दर बैठ कर लोग पीते थे और कोई जानता था कोई नहीं जानता था. मगर आज उस दूकान पर एक नहीं तीन तीन साइनबोर्ड हैं जो सरेबाज़ार ऐलान करते बुलाते हैं, ऐसे ही दारागंज में. यह रही इलाहाबाद की हालत.

नई दिल्ली या आस पास के शहरों की जैसे मेरठ, अम्बाला की तो कुछ पूछिये मत. नई दिल्ली तो इस फ़न में वाशिंगटन, लन्दन और पैरिस को मात करने की तैयारी में दीखती है. ऐसे ऐसे हाकिम और कांगरेसी भाई बहन तक शराब पीना शान समझने लगे हैं जो कुछ बरसे पहले उस से दूर भागते थे. जब यह हालत नई दिल्ली की हो तो बम्बई कब पिछड़ने वाला था. क़ानून से वहां शराब बन्द है, पर बीसियों दरारें उसमें ऐसी हैं जिन से शराब सहज मिल जाती है और अगर किसी को गुंजाइश कम दीखी तो वह बराबर में दामन या गोआ (जो पुर्तगाल राज में हैं) जाकर मुराद पूरी कर आता है. बम्बई के बहुत से अस्पताल व डाक्टर भी इस बात के गवाह हैं कि शराब-ख़ोरी किस तेज़ी के साथ उस नगरी में बढ़ रही है. मदरास भी इस रोग का वैसा ही शिकार है और कलकत्ता तो मानो सब पर ही बाज़ी ले गया.

شراب کی چھوٹ

آزادی کے بعد پچھلے سات برس میں ہندستان کے اندر شراب کی کھپت جتنی بڑھی ہے اتنی انگریزی راج کے کنہیں چودہ برس میں بھی نہیں بڑھی تھی ۔ شراب یا تاڑی وغیرہ کی چھوٹ انگریزوں نے دی کیونکہ ان کے چالو مذہب میں یا اُن کے دیش میں شراب کوئی بری چیز نہیں سمجھی جاتی تھی ۔ پر دکھ کی بات ہے کہ شراب کو جو بڑھاوا آج کل مل رہا ہے وہ پہلے کبھی بھی نہیں ملا ۔ ہم الہ‌آباد کی ہی مثال لیں ۔ یہاں بہادر گنج محلے میں تاڑی خانہ ہے ۔ پہلے اُس پر کوئی سائن بورڈ نہیں تھا ۔ بہت کم لوگ جانتے تھے کہ وہاں کیا ہوتا ہے ۔ لیکن آج کل وہاں ایک بڑا بھاری، رنگ برنگا سائن بورڈ لگا ہوا ہے جو لوگوں کو کھلے عام دعوت دیتا ہے ۔ دوسرے مٹھی گنج کے محلے میں خاص چوراہے پر—جہاں سپاہی کھڑا ہوتا ہے—نکڑ کے اوپر گانجا بھانگ کی دوکان ہے ۔ وہاں اندر بیٹھکر لوگ پیتے تھے اور کوئی جانتا تھا کوئی نہیں جانتا تھا ۔ مگر آج اِس دوکان پر ایک نہیں تین تین سائن بورڈ ہیں جو سربازار اعلان کرتے بلاتے ہیں، ایسے ہی دارا گنج میں ۔ یہ رہی الہ‌آباد کی حالت ۔

نئی دلی یا آس پاس کے شہروں کی جیسے میرٹھ، انبالہ کی تو کچھ پوچھئے مت ۔ نئی دلی تو اِس فن میں واشنگٹن اور پیرس کو مات کرنے کی تیاری میں دیکھتی ہے ۔ ایسے ایسے حاکم اور کانگریسی بھائی بہن تک شراب پینا شان سمجھنے لگے ہیں جو کچھ عرصے پہلے اس سے شرماتے تھے ۔ جب یہ حالت نئی دلی کی ہو تو بمبئی کب پچھڑنے والا تھا ۔ قانون سے وہاں شراب بند ہے، پر بیسیوں درازیں اسمیں ایسی ہیں جن سے شراب سہج مل جاتی ہے اور اگر کسی کو گنجایش کم دیکھی تو وہ برابر میں دامن یا گوا (جو پرتگال راج میں ہے) جا کر مراد پوری کر آتا ہے۔ بمبئی کے بہت سے اسپتال و ڈاکٹر بھی اس بات کے گواہ ہیں کہ شراب خوری کس تیزی کے ساتھ اس نگری میں بڑھ رہی ہے۔ مدراس بھی اس روگ کا ویسا ہی شکار ہے اور کلکتہ تو مانو سب پر ہی بازی لے گیا۔

बेटी, बहू, बहन, बीबी न हो. हर तबक़े की ज़ुबान अलग है लेकिन सारे कैरैक्टर यही एक बात कहते हैं—

इस ड्रामे के कैरैक्टर नहीं बोलते बल्कि वह अपने अपने तबक़े की नुमाइन्दगी करते हैं. कोई औरत या मर्द एक दूसरे से प्रेम नहीं करते, झगड़ा नहीं करते, सीधी सादी बात करते हैं, कोई हीरो नहीं है, कोई वलन नहीं है. फिर भी सारे कैरैक्टर बराबर झगड़ते हैं, उन में खिंचाव है, उन के आचरन में चाल छिपी हुई है. इतनी सी बात थी जिस से अफ़साना कर दिया. बात कुछ नहीं है. एक ड्रामा लिखा गया है. उस के लिये. हीरोइन की ज़रूरत है. हीरोइन की तलाश शुरू होती है. बहुत सी औरतें तैयार हो जाती हैं पर उन के पति उन का स्टेज पर जाना पसन्द नहीं करते. इतनी सी बात पर ड्रामे का ढांचा खड़ा कर देना मुजीब साहब का ही हक़ है.

ऐसे ड्रामा सीधा सपाट है. लेकिन दो कैरैक्टर शुरू से ही कुछ कैरैक्टर ट्रैजिडी करते दिखाई पड़ते हैं. एक हैं मिसेज़ मेहरा और दूसरी उनकी भान्जी कमला. मिसेज़ मेहरा ख़ुद हीरोइन बनना चाहती हैं और लगता है कि कमला भी. पर दोनों चाहती हैं कि कोई दूसरा सुझाव रख कर उनकी ख़्वाहिश पूरी कर दे. कमला तो ख़ामोश है लेकिन मिसेज़ मेहरा के सब्र का प्याला छलक उठता है और उनका बरज़ुवा कैरैक्टर ड्रामे में ड्रामाइयत पैदा करता है. असल में इस ड्रामे का हीरो 'आर्ट' है. आर्ट को हीरोइन की ज़रूरत है. आर्ट और कलचर के दावेदारों के यहां तलाश की जाती है, पर हीरोइन नहीं मिलती. आख़िर में हीरोइन मिलती है एक उस्तानी के रूप में !

मुजीब साहब भी पढ़ाने का पेशा करते हैं. शायद इसी लिये उनकी जियादा हमदर्दी कैरैक्टर से दिखाई पड़ती है—एक कालिज के लेक्चरार से और दूसरे कमला नामी उस्तानी से. हो सकता है उनका यह भी ख़्याल हो कि कालिज के अन्दर ही कलचर और आर्ट पनप सकता है और आर्ट को सिर्फ़ वहीं अपनी हीरोइन मिल सकती है.

'हीरोइन की तलाश' दिलचस्प भी है और कला के आजकल के सरपरस्तों का भंडाफोड़ भी. ऐसे ऐकांकियों को हिन्दी में भी ज्यों का त्यों छपना चाहये. इस से राज भाशा का साहित्यक भंडार बढ़ेगा.

—मुजीब रिज़वी

بیٹی، بہو، بہن، بیوی نہ ہو. ہر طبقے کی زبان الگ ہے لیکن سارے کیریکٹر یہی ایک بات کہتے ہیں.

اس ڈرامے کے کیریکٹر نہیں بولتے بلکہ وہ اپنے اپنے طبقے کی نمائندگی کرتے ہیں. کوئی عورت یا مرد ایک دوسرے سے پریم نہیں کرتے، جھگڑا نہیں کرتے، سیدھی سادی بات کرتے ہیں، کوئی ہیرو نہیں ہے، کوئی ولن نہیں ہے. پھر بھی سارے کیریکٹر برابر جھگڑتے ہیں، ان میں کھنچاؤ ہے، ان کے آچرن میں چال چھپی ہوئی ہے. اتنی سی بات تھی جسے افسانہ کردیا. بات کچھ نہیں ہے. ایک ڈرامہ لکھا گیا ہے. اس کے لئے ہیروئن کی ضرورت ہیروئن کی تلاش شروع ہوتی ہے. بہت سی عورتیں تیار ہوجاتی ہیں پر ان کے پتی ان کا اسٹیج پر جانا پسند نہیں کرتے. اتنی سی بات پر ڈرامے کا ڈھانچہ کھڑا کر دینا مجیب صاحب کا ہی حق ہے.

ایسے ڈرامہ سیدھا سپاٹ ہے. لیکن دو کیریکٹر شروع سے ہی کچھ کیریکٹر ٹریجڈی کرتے دکھائی پڑتے ہیں. ایک ہیں مسز مہرا اور دوسری ان کی بھانجی کملا. مسز مہرا خود ہیروئن بننا چاہتی ہیں اور لگتا ہے کہ کملا بھی. پر دونوں چاہتی ہیں کہ کوئی دوسرا سجھاؤ رکھکر ان کی خواہش پوری کر دے. کملا تو خاموش ہے لیکن مسز مہرا کے صبر کا پیالہ چھلک اٹھتا ہے اور ان کا بورژوا کیریکٹر ڈرامے میں ڈرامائیت پیدا کرتا ہے. اصل میں اس ڈرامے کا ہیرو 'آرٹ' ہے. آرٹ کو ہیروئن کی ضرورت ہے. آرٹ اور کلچر کے دعویداروں کے یہاں تلاش کی جاتی ہے، پر ہیروئن نہیں ملتی. آخر میں ہیروئن ملتی ہے ایک استانی کے روپ میں !

مجیب صاحب بھی پڑھانے کا پیشہ کرتے ہیں. شاید اسی لئے ان کی زیادہ ہمدردی کیریکٹروں سے دکھائی پڑتی ہے—ایک کالج کے لکچرار سے اور دوسرے کملا نامی استانی سے. ہو سکتا ہے ان کا یہ بھی خیال ہو کہ کالج کے اندر ہی کلچر اور آرٹ پنپ سکتا ہے اور آرٹ کو صرف وہیں اپنی ہیروئن مل سکتی ہے.

'ہیروئن کی تلاش' دلچسپ بھی ہے اور کلا کے آج کل کے سرپرستوں کا بھنڈا پھوڑ بھی. ایسے ایکانکیوں کو ہندی میں بھی جوں کا توں چھپنا چاہئے. اس سے راج بھاشا کا ساہتیک بھنڈار بڑھے گا.

—مجیب رضوی

इस किताब में आठ पूरे सफ़े की तसवीरें हैं. इसमें इमारतों की तसवीरों के साथ साथ मिस्री किसानों और किसान औरतों की भी तसवीरें हैं.

अरूसे नील उन सब को ज़रूर पढ़ना चाहिये जो मिस्र से हमदर्दी रखते हैं और मिस्रियों के जीवन को समझना चाहते हैं. यह किताब सफ़रनामा है और इस ढंग से लिखी गई है कि नाविल का मज़ा आता है.

—मुजीब रिज़वी

اس کتاب میں آٹھ پورے صفحے کی تصویریں ہیں۔ اس میں عمارتوں کی تصویروں کے ساتھ ساتھ مصری کسانوں اور کسان عورتوں کی بھی تصویریں ہیں۔

عروس نیل اُن سب کو ضرور پڑھنا چاہئے جو مصر سے ہمدردی رکھتے ہیں اور مصریوں کے جیون کو سمجھنا چاہتے ہیں۔ یہ کتاب سفر نامہ ہے اور اس ڈھنگ سے لکھی گئی ہے کہ ناول کا مزا آتا ہے۔

—مجیب رضوی

महात्मा गांधी

लिखने वाले—मुहम्मद हफ़ीज़ उद्दीन; निकालने वाले—मकतबा जामिया लिमिटेड, जामा नगर देहली; लिखावट—उर्दू; सफ़्हे—63; दाम—बारह आना.

महात्मा गांधी पर बहुत सी किताबें लिखी गई हैं. ज़्यादातर विद्वानों के लिये हैं और कुछ बच्चों के लिये. जो किताबें बच्चों के लिये हैं उनमें से ज़्यादातर बच्चों के लिये नहीं हैं. न उनकी ज़बान बच्चों के लिये है और न उन लेखकों की शैली ही बच्चों के लिये है. उन किताबों को पढ़ कर ऐसा लगता है कि वह सिर्फ़ इसलिये लिखी गई हैं क्योंकि लेखक को बच्चों के लिये लिखने पर मजबूर होना पड़ा.

लेकिन हफ़ीज़ उद्दीन साहब ने 'महात्मा गांधी' सचमुच बच्चों के लिये लिखी है. उन्होंने गांधी जी की कहानी चालू शब्दों में दोहराई है और वह शब्द भी इतने हैं जितने एक आठ-नौ साल का बच्चा आसानी से सीख सकता है. शैली ऐसी है जैसे नानी अम्मां बच्चों को परियों की कहानी सुना रही हों. 'महात्मा गांधी' बच्चों के लिये बहुत फ़ायदेमन्द किताब है.

—मुजीब रिज़वी

مہاتما گاندھی

لکھنے والے—محمد حفیظ الدین؛ نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ، جامعہ نگر دہلی؛ لکھاوٹ—اردو؛ صفحے—63؛ دام—بارہ آنہ۔

مہاتما گاندھی پر بہت سی کتابیں لکھی گئی ہیں۔ زیادہ تر ودوانوں کے لئے ہیں اور کچھ بچوں کے لئے۔ جو کتابیں بچوں کے لئے ہیں اُن میں سے زیادہ تر بچوں کے لئے نہیں ہیں۔ نہ اُنکی زبان بچوں کے لئے ہے اور نہ اُن لیکھکوں کی شیلی ہی بچوں کے لئے ہے۔ اُن کتابوں کو پڑھکر ایسا لگتا ہے کہ وہ صرف اس لئے لکھی گئی ہیں کیونکہ لیکھک کو بچوں کے لئے لکھنے پر مجبور ہونا پڑا۔

لیکن حفیظ الدین صاحب نے 'مہاتما گاندھی' سچ مچ بچوں کے لئے لکھی ہے۔ اُنہوں نے گاندھی کی کہانی چالو شبدوں میں دہرائی ہے اور وہ شبد بھی اتنے ہیں جتنے ایک آٹھ-نو سال کا بچہ آسانی سے سیکھ سکتا ہے۔ شیلی ایسی ہے جیسے نانی اماں بچوں کو پریوں کی کہانی سنا رہی ہوں۔ مہاتما گاندھی بچوں کے لئے بہت فائدے مند کتاب ہے۔

—مجیب رضوی

हीरोइन की तलाश

लिखने वाले—मुहम्मद मुजीब; निकालने वाले—मकतबा जामा लिमिटेड देहली; लिखावट—उर्दू; सफ़्हे—63; दाम—दस आने.

'हीरोइन की तलाश' एक एक्ट ड्रामा है. इस में पांच सीन हैं. तेरह कैरैक्टरों में से छे औरतें हैं. सात मर्दों में से ज़्यादातर ब्योपारी हैं और आर्ट की सरपरस्ती करते हैं, एक आई. ए. एस. है एक कालिज का लिकचरार, और एक ताल्लुक़ेदार. ज़ाहिर में सब एक बात चाहते हैं. वह यह है कि कोई ख़ूबसूरत औरत उन के सामने नाचे, गाये लेकिन शर्त यह है कि वह औरत पराई हो, उनकी

ہیروئن کی تلاش

لکھنے والے—محمد مجیب؛ نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹڈ دہلی؛ لکھاوٹ—اردو؛ صفحے—63؛ دام—دس آنے۔

'ہیروئن کی تلاش' ایک ایکٹ ڈرامہ ہے۔ اس میں پانچ سین ہیں۔ تیرہ کیریکٹروں میں سے چھ عورتیں ہیں۔ سات مردوں میں سے زیادہ تر بیوپاری ہیں اور آرٹ کی سرپرستی کرتے ہیں، ایک آئی. اے. ایس. ہے، ایک کالج کا لیکچرار، اور ایک تعلقہ دار۔ ظاہر میں سب ایک بات چاہتے ہیں۔ وہ یہ ہے کہ کوئی خوبصورت عورت اُن کے سامنے ناچے، گائے لیکن شرط یہ ہے کہ وہ عورت پرائی ہو، اُنکی

फ़हीमा नामी अध्याय में लेखिका ने मामूली मस्रियों का ज़िक्र किया है. मामूली लोगों की मामूली मामूली आदतों, उनके भावों और उनके जीवन का वर्नन बहुत रोचक ढंग से किया गया है—इस अध्याय में मिस्री औरतों पर रोशनी पड़ती है. फ़हीमा असल में उन तमाम नौकरों का सामूहिक नाम है जिन से सुल्ताना बेगम को पाला पड़ा है. इसी अध्याय में सुल्ताना बेगम अपनी एक नौकरानी के घर भी गई हैं जिसके घर बच्चा पैदा हुआ था. ऐसे अवसर पर होने वाली रीति रिवाजों का वर्नन बहुत सुन्दर है. एक बात खटकती है. वह यह कि उन रीत-रिवाजों से सुल्ताना बेगम हमदर्दी नहीं दिखा सकतीं. उनकी चिढ़ इतनी गहरी है कि वह किताब के सफ़्हों से ख़ुद बख़ुद फूट पड़ती है.

फ़रह अरबी में शादी को कहते हैं. इस अध्याय में एक शादी का ज़िक्र है. शादी के साथ साथ मिस्र के ताल्लुक़ेदारों, रईसों और अमीरों के कैरेक्टर, उनके रहन सहन, उनके शौक़ और उनके कलचरी पहलुओं पर रोशनी डाली गई है.

'क़ाहिरा में रमज़ान उल्मुबारक' में मिस्र की सोशल और मज़हबी ज़िन्दगी पर रोशनी डाली गई है. मुझे यह अध्याय सबसे ज़्यादा पसन्द आया. मिस्र एक मुस्लिम देश है, हम लोग समझते हैं कि मुस्लिम देश में रमज़ान की अहमियत बहुत होगी. लेकिन इस वर्नन को पढ़कर ऐसा लगता है कि रमज़ान को जिस चश्मे से हम देखते हैं उस चश्मे से मिस्री नहीं देखते. हिन्दुस्तानी मुसलमान शायद रमज़ान में ज़िन्दगी को पाक बनाने की कोशिश करते हैं. लेकिन मिस्र में रमज़ान में रंगरलियां मनाई जाती हैं. नाचघरों में अच्छे प्रोग्राम रक्खे जाते हैं. ज़ियादा से ज़ियादा लोग सनीमा देखते हैं. बाज़ीगर इस महीने में दूर दूर से यहां आ जाते हैं. रेडियो पर क़ुरान की तिलावत होती रहती है और होटलों में बैठे लोग रक़्क़ासों की चर्चा किया करते हैं, क़हवा पिया करते हैं. जो लोग सोशल जीवन को मज़हबी ढांचे के अनुसार बनाये रखना चाहते हैं उनको यह वर्नन पढ़ कर और असलियत जान कर बहुत दुख होगा और साथ में निराशा भी.

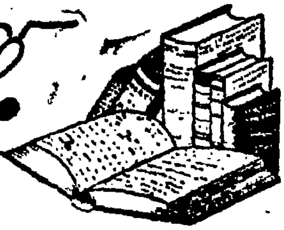
'हरम शेख़ रजब' नामी अध्याय में एक बद्दू सरदार के हरम का ज़िक्र है, उसकी बीवियों, बेटियों, बहनों का सुन्दर वर्नन है. यहां सुल्ताना बेगम की सारी की ख़ूब ख़ूब नुमाइश हुई. उन्हीं सारी खोल कर सब के सामने पहनना पड़ा. सारी उन औरतों को बहुत पसन्द आई. चलते वक़्त सरदार साहब ने एक ऊंट, चार बकरियां, पचास अंडे और छै तरबूज़ तोहफ़े के तौर पर दिये. भला इन तोहफ़ों को कौन उठा कर लाता.

فہیمہ نامی ادھیائے میں لیکھک نے معمولی مصریوں کا ذکر کیا ہے . معمولی لوگوں کی معمولی معمولی عادتوں' اُن کے بھاؤوں اور ان کے جیون کا ورنن بہت روچک ڈھنگ سے کیا گیا ہے—اِس ادھیائے میں مصری عورتوں پر روشنی پڑتی ہے . فہیمہ اصل میں اُن تمام نوکروں کا سامُوہک نام ہے جن سے سلطانہ بیگم کو پالا پڑا ہے . اسی ادھیائے میں سلطانہ بیگم اپنی ایک نوکرانی کے گھر بھی گئی ہیں جس کے گھر بچہ پیدا ہوا تھا . ایسے اوسر پر ہونے والی ریت رواجوں کا ورنن بہت سندر ہے . ایک بات کھٹکتی ہے . وہ یہ کہ ان ریت رواجوں سے سلطانہ بیگم ہمدردی نہیں دکھا سکیں . اُن کی چڑھ اتنی گہری ہے کہ وہ کتاب کے صفحوں سے خود بخود پھوٹ پڑتی ہے .

فرح عربی میں شادی کو کہتے ہیں . اس ادھیائے میں ایک شادی کا ذکر ہے . شادی کے ساتھ ساتھ مصر کے تعلقہ داروں' رئیسوں اور امیروں کے کیریکٹر' اُن کے رہن سہن' اُن کے شوق اور اُن کے کلچری پہلو پر روشنی ڈالی گئی ہے .

' قاہرہ میں رمضان المبارک' میں مصر کی سوشل اور مذہبی زندگی پر روشنی ڈالی گئی ہے . مجھے یہ ادھیائے سب سے زیادہ پسند آیا . مصر ایک مسلم دیش ہے ہم لوگ سمجھتے ہیں کہ مسلم دیش میں رمضان کی اہمیت بہت ہوگی . لیکن اس ورنن کو پڑھکر ایسا لگتا ہے کہ رمضان کو جس چشمے سے ہم دیکھتے ہیں اس چشمے سے مصری نہیں دیکھتے . ہندستانی مسلمان شاید رمضان میں زندگی کو پاک بنانے کی کوشش کرتے ہیں . لیکن مصر میں رمضان میں رنگ رلیاں منائی جاتی ہیں . ناچ گھروں میں اچھے پروگرام رکھے جاتے ہیں . زیادہ سے زیادہ لوگ سنیما دیکھتے ہیں . بازیگر اِس مہینے میں دور دور سے یہاں آ جاتے ہیں . ریڈیو پر قرآن کی تلاوت ہوتی رہتی ہے اور ہوٹلوں میں بیٹھے لوگ رقاصوں کی چرچا کیا کرتے ہیں' قہوہ پیا کرتے ہیں . جو لوگ سوشل جیون کو مذہبی ڈھانچے کے انوسار بنائے رکھنا چاہتے ہیں اُن کو یہ ورنن پڑھ کر اور اصلیت جان کر بہت دکھ ہوگا اور ساتھ میں نراشا بھی .

'حرم شیخ رجب' نامی ادھیائے میں ایک بدو سردار کے حرم کا ذکر ہے اُسکی بیویوں' بیٹیوں' بہنوں کا سندر ورنن ہے . یہاں سلطانہ بیگم کی ساری کی خوب خوب نمائش ہوئی . انہیں ساری کھول کر سب کے سامنے پہننا پڑا . ساری اُن عورتوں کو بہت پسند آئی . چلتے وقت سردار صاحب نے ایک اونٹ' چار بکریاں' پچاس انڈے اور چھ تربوز تحفے کے طور پر دیئے . بھلا اِن تحفوں کو کون اُٹھا کر لاتا .

कुछ किताबें  کچھ کتابیں

उरूसेनील

लिखनेवाली—सुल्ताना आसफ़ फ़ैज़ी; निकालने वाले—मकतबा जामा लिमिटेड, देहली; लिखावट—उर्दू; सफ़्हे—194; दाम—दो रुपये आठ आने.

'49 से लेकर '51 तक श्री आसफ़ फ़ैज़ी मिस्र में भारत के राजदूत रहे हैं. सुल्ताना बेगम उनकी पत्नी हैं. वह भी पति के साथ दो साल तक मिस्र में रही हैं. राजदूतों की पत्नियों का अधिक समय पार्टियों की रौनक़ बनने और अपने को पार्टियों के लिये तैयार करने में ख़र्च होता है. लेकिन सुल्ताना बेगम को मिस्री जीवन देखने का भी शौक़ था, और इतना गहरा शौक़ कि तमाम झमेलों के होते हुए भी वह मिस्रियों की ज़िन्दगी के बहुत से पहलुओं को देख सकीं.

'अरूसेनील' सुल्ताना बेगम के अनुभवों का निचोड़ है. 'जो कुछ' है, उसका ज़िक्र इस किताब में मिलता है. 'क्यों ऐसा है' इस पर सुल्ताना बेगम ने कोई रोशनी नहीं डाली. कुछ लोग कहेंगे कि किताब की यह बहुत बड़ी कमज़ोरी है. लेकिन मेरे विचार में किताब की यह बहुत बड़ी ख़ूबी है.

इस किताब को पढ़ने के बाद हमें मिस्र को समझने में काफ़ी मदद मिलती है. अरूसेनील के छै अध्याय हैं—(1) उरूसे नील (2) फ़हीमा (3) फ़रह (4) क़ाहिरा में रमज़ान-उल-मुबारक (5) हरम शेख़ रजब (6) अक़्साए क़स्र की सैर. उरूसेनील नामी अध्याय में उस बड़े मेले की चरचा है जो नील नदी के किनारे हज़ारहा बरस से लगता आ रहा है. लेखिका ने उन सब रूपों का ज़िक्र किया है जो यह मेला समय समय पर धारन करता रहा है. यह मेला आज भी होता है, लेकिन बिल्कुल दूसरी शान से, बिल्कुल दूसरे रूप में. मुसलमान आम तरीक़े से दरियाओं और पहाड़ों के सम्बन्ध के मेले पसन्द नहीं करते. लेकिन मिस्री आज भी नील के किनारे लगने वाले मेले को बहुत उत्साह से मनाते हैं. यह मेला उन का राष्ट्री पर्व है.

عروس نیل

لکھنے والی—سلطانہ آصف فیضی؛ نکالنے والے—مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ، دھلی؛ لکھاوٹ—اُردو؛ صفحے—194؛ دام—دو روپیہ آٹھ آنے .

'49 سے لیکر '51 تک شری آصف فیضی مصر میں بھارت کے راجدوت رہے ھیں . سلطانہ بیگم ان کی پتنی ھیں، وہ بھی پتی کے ساتھ دو سال تک مصر میں رھی ھیں . راجدوتوں کی پتنیوں کا ادھک سمے پارٹیوں کی رونق بننے اور اپنے کو پارٹیوں کے لئے تیار کرنے میں خرچ ھوتا ھے . لیکن سلطانہ بیگم کو مصری جیون دیکھنے کا بھی شوق تھا، اور اتنا گہرا شوق کہ تمام جھمیلوں کے ھوتے ھوئے بھی وہ مصریوں کی زندگی کے بہت سے پہلوؤں کو دیکھ سکیں .

'عروس نیل' سلطانہ بیگم کے انوبھووں کا نچوڑ ھے . 'جو کچھ' ھے' اس کا ذکر اس کتاب میں ملتا ھے . 'کیوں ایسا ھے' اس پر سلطانہ بیگم نے کوئی روشنی نہیں ڈالی . کچھ لوگ کہیں گے کہ کتاب کی یہ بہت بڑی کمزوری ھے . لیکن میرے وچار میں کتاب کی یہ بہت بڑی خوبی ھے .

اس کتاب کو پڑھنے کے بعد ھمیں مصر کو سمجھنے میں کافی مدد ملتی ھے . عروس نیل کے چھ ادھیائے ھیں—(1) عروس نیل (2) فہیمہ (3) فرح (4) قاھرہ میں رمضان المبارک (5) حرم شیخ رجب (6) اقصائے قصر کی سیر . عروس نیل نامی ادھیائے میں اس بڑے میلے کی چرچا ھے جو نیل ندی کے کنارے ھزارھا برس سے لگتا آرھا ھے . لیکھکا نے ان سب روپوں کا ذکر کیا جو یہ میلہ سمے سمے پر دھارن کرتا رھا ھے . یہ میلہ آج بھی ھوتا ھے' لیکن بالکل دوسری شان سے' بالکل دوسرے روپ میں . مسلمان عام طریقے سے دریاؤں اور پہاڑوں کے سمبندھ کے میلے پسند نہیں کرتے . لیکن مصری آج بھی نیل کے کنارے لگنے والے میلے کو بہت اتساہ سے مناتے ھیں . یہ میلہ ان کا راشٹری پرو ھے .

कोतवाल बोला—"यह कैसी बेअदबी है !"

उसी दम शिक्षामहल में धौंकनी, हथौड़ी और आग लेकर लोहार आ खड़ा हुआ. कैसी दमादम पिटाई हुई ! लोहे की सांकल तैयार हुई, पक्षी के पर भी काट डाले गए.

राजा के संबंधी मुंह बना कर सिर हिलाकर बोले—'इस राज में पक्षी में सिर्फ़ अक़्ल की ही कमी नहीं है, भलमंसी भी नहीं है.'

तब पंडितों ने एक हाथ में क़लम और एक हाथ में बल्लम लेकर वह काम शुरू किया जिसे कहते हैं शिक्षा !

लोहार का रोज़गार बढ़ गया और लोहारिन के अंग पर सोना चढ़ गया. कोतवाल की होशियारी देख कर राजा ने उसे 'ख़िताब' दिया.

पक्षी मर गया. कब मरा यह कोई तय नहीं कर सका. सत्यानाशी चुग़लख़ोर बड़बड़ करने लगा—"पक्षी मर गया, पक्षी मर गया."

भान्जे को बुलाकर राजा बोले—"यह क्या सुन रहा हूं ?"

भान्जा बोला—"महाराज ! पक्षी की शिक्षा पूरी हो गई."

राजा ने पूछा—"क्या वह अब फुदकता है ?"

भान्जा बोला—"अरे राम कहो !"

"और क्या उड़ता है ?"

"नहीं."

"तो क्या गाता है ?"

"नहीं."

"दाना न पाने पर क्या चीख़ता है ?"

"नहीं."

राजा बोला—"एक बार पक्षी को लाओ तो, देखूं."

पक्षी आया. उसके साथ कोतवाल आया, प्यादा आया, घुड़सवार आया. राजा ने पक्षी को टटोला. उसने 'हां' की और न 'हूं.' सिर्फ़ उसके पेट में भरे पोथियों के सूखे पन्ने खसर खसर करने लगे.

बाहर नए बसंत की दक्खिनी हवा में नई कोंपलों की लंबी सांसों से शांत बन का आकाश व्याकुल हो उठा.

کوتوال بولا—"یہ کیسی بےادبی ہے !"

اسی دم شکشا محل میں دھونکنی، ہتھوڑی اور آگ لے کر لوہار آ کھڑا ہوا . کیسی دمادم پٹائی ہوئی ! لوہے کی سانکل تیار ہوئی، پکشی کے پر بھی کاٹ ڈالے گئے .

راجہ کے سمبندھی منھ بنا کر سر ہلا کر بولے—' اس راج میں پکشی میں صرف عقل کی ہی کمی نہیں ہے، بھلمنسی بھی نہیں ہے .'

تب پنڈتوں نے ایک ہاتھ میں قلم اور ایک ہاتھ میں بلم لے کر وہ کام شروع کیا جسے یہ کہتے ہیں شکشا!

لوہار کا روزگار بڑھ گیا اور لوہارن کے انگ پر سونا چڑھ گیا . کوتوال کی ہوشیاری دیکھکر راجہ نے اسے ' خطاب ' دیا .

پکشی مر گیا . کب مرا یہ کوئی طے نہیں کر سکا . ستیاناشی چغل خور بڑ بڑ کرنے لگا—" پکشی مر گیا، پکشی مر گیا ."

بھانجے کو بلا کر راجہ بولے—"یہ کیا سن رہا ہوں؟"

بھانجا بولا—" مہاراج ! پکشی کی شکشا پوری ہو گئی ."

راجہ نے پوچھا—"کیا وہ اب پھدکتا ہے ؟"

بھانجا بولا—"ارے رام کہو !"

" اور کیا اڑتا ہے ؟"

" نہیں ."

" تو کیا گاتا ہے ؟"

" نہیں ."

" دانا نہ پانے پر کیا چیختا ہے ؟"

" نہیں ."

راجا بولے—" ایک بار پکشی کو لاؤ تو، دیکھوں ."

پکشی آیا . اس کے ساتھ کوتوال آیا، پیادہ آیا گھڑسوار آیا . راجہ نے پکشی کو ٹٹولا . اس نے ' ہاں ' کی اور نہ ' ہوں ' صرف اس کے پیٹ میں بھرے پوتھیوں کے سوکھے پنّے کھسر کھسر کرنے لگے .

باہر نئے بسنت کی دکھنی ہوا میں نئی کونپلوں کی لمبی سانسوں سے شانت بن کا آکاش ویاکل ہو اٹھا .

जवाब सुन कर राजा अच्छी तरह बात समझ गए
उसी दम उन्होंने भान्जे के गले में सोने का हार
ना दिया.

(5)

शिक्षा किस भयानक रफ़्तार से चल रही है यह
खने की राजा की इच्छा हुई. एक दिन इसीलिये अमीर
मरा, वज़ीर वुज़रा को ले कर शिक्षा भवन में ख़ुद पहुंचे.

ड्योढ़ी के पास शंख, घंटा, ढोल, नगाड़ा, तुरही, भेरी,
मामा, झांझ, बंसी, करताल मृदंग आदि बज उठे. पंडित
ोग ऊंचे स्वर से चोटी हिला हिला कर मंत्र पाठ करने
गे. मिस्त्री, मज़दूर, सुनार, नक़लनवीस, मरम्मत करने
ले और ममेरे, फुफेरे, चचेरे और मौसेरे भाई जयजयकार
रने लगे.

भान्जा बोला—"महाराज ! आप काम देख रहे हैं?"

महाराज बोले—"अचरज ! शोर तो कम नहीं है."

भान्जा बोला—"सिर्फ़ शोर ही नहीं, ख़र्च भी कम
नहीं है."

राजा ख़ुश हुए और जाने के लिये ड्योढ़ी पार करके
हाथी पर बैठने ही वाले थे कि झाड़ी में छिपा चुग़लख़ोर
बोल उठा—"महाराज ! पक्षी को भी देखा या नहीं ?"

राजा चौंक उठे, बोले—"अरे हां, याद ही नहीं रही.
पक्षी को तो देखा ही नहीं !"

लौट कर पंडित जी से पूछा—"पक्षी को तुम लोग किस
क़ायदे से शिक्षा दे रहे हो, वह देखना चाहता हूं."

दिखावा हुआ. देखकर राजा को बड़ी ख़ुशी हुई.
क़ायदा पक्षी से इतना ज़ियादा बढ़ा था कि पक्षी दिखाई ही
नहीं देता था; ऐसा लगा कि उसे न देखने से भी काम चल
जायगा. राजा ने समझ लिया कि काम में कोई कमी नहीं
है. पिंजरे में न तो दाना है, न पानी; सिर्फ़ ढेर की ढेर
पोथियों से पन्नों पर पन्ने क़लम की नोक से पक्षी के मुंह
में ठूंसे जा रहे हैं ! गाना तो बंद ही है, चिल्ला सकने का
दरवाज़ा भी बंद है ! देख कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं !

इस बार राजा हाथी पर चढ़ते समय सरदार से कह
गए कि चुग़लख़ोर के कान अच्छी तरह मल दिए जायें.

(6)

पक्षी दिन दिन बाक़ायदा अधमरा होता गया. सर-
परस्तों ने समझा अच्छी आशा है. फिर भी पिछली आदत
के कारन सुबह सुबह पक्षी उजाले की तरफ़ देखता और
बुरी तरह से पंख फड़फड़ाता. इतना ही नहीं एक दिन देखा
गया कि वह अपनी मरियल चोंच से पिंजरे की सलाखें
तोड़ने की कोशिश कर रहा है.

جواب سنکر راجہ اچھی طرح بات سمجھ گئے اور
اسی دم انہوں نے بھانجے کے گلے میں سونے کا ہار پہنادیا۔

(5)

شکشا کس بھیانک رفتار سے چل رہی ہے یہ دیکھنے
کی راجہ کی اچھا ہوئی ۔ ایک دن اسی لئے امیر امرا،
وزیر وزرا کو لیکر شکشا بھون میں خود پہونچے ۔

ڈیوڑھی کے پاس شنکھ، گھنٹہ، ڈھول، نگاڑا، ترہی،
بھیری، دمامہ، جھانجھ، بنسی، کرتال مردنگ آدی بج
اٹھے ۔ پنڈت لوگ اونچے سور سے چوٹی ہلا ہلا کر منتر پاٹھ
کرنے لگے۔ مستری، مزدور، سنار، نقلنویس، مرمت کرنے والے
اور ممیرے، پھپھیرے، چچیرے اور موسیرے بھائی جےجےکار
کرنے لگے ۔

بھانجا بولا—"مہاراج آپ کام دیکھ رہے ہیں ۔"

مہاراج بولے—"اچرج ! شور تو کم نہیں ہے ۔"

بھانجا بولا—" صرف شور ہی نہیں، خرچ بھی کم
نہیں ہے ۔"

راجہ خوش ہوئے اور جانے کے لئے ڈیوڑھی پار کر کے ہاتھی
پر بیٹھنے ہی والے تھے کہ جھاڑی میں چھپا چغل‌خور
بول اٹھا—" مہاراجہ ! پکشی کو بھی دیکھا یا نہیں ؟"

راجہ چونک اٹھے، بولے—" ارے ہاں ۔ یاد ہی نہیں
رہی۔ پکشی کو تو دیکھا ہی نہیں ۔"

لوٹ کر پنڈت جی سے پوچھا—" پکشی کو تم لوگ
کس قاعدے سے شکشا دے رہے ہو، وہ دیکھنا چاہتا
ہوں ۔"

دکھاوا ہوا ۔ دیکھکر راجہ کو بڑی خوشی ہوئی ۔
قاعدہ پکشی سے اتنا زیادہ بڑا تھا کہ پکشی دکھائی ہی
نہیں دیتا تھا؛ ایسا لگا کہ اسے نہ دیکھنے سے بھی کام
چل جائے گا ۔ راجہ نے سمجھ لیا کہ کام میں کوئی کمی
نہیں ہے ۔ پنجرے میں نہ دانہ ہے نہ پانی؛ صرف
ڈھیر کی ڈھیر پوتھیوں سے پنوں پر پنے قلم کی نوک
سے پکشی کے منہ میں ٹھونسے جا رہے ہیں ! گانا تو بند
ہی ہے، چلا سکنے کا دروازہ بھی بند ہے ! دیکھکر رونگٹے
کھڑے ہو جاتے ہیں !

اس بار راجہ ہاتھی پر چڑھتے سمے سردار سے کہہ گئے
کہ چغل‌خور کے کان اچھی طرح مل دیئے جائیں ۔

(6)

پکشی دن دن باقاعدہ ادھمرا ہوتا گیا ۔ سرپرستوں
نے سمجھا اچھی آشا ہے ۔ پھر بھی پچھلی عادت کے کارن
صبح صبح پکشی اجالے کی طرف دیکھتا اور بری طرح
سے پنکھ پھڑپھڑاتا ۔ اتنا ہی نہیں ایک دن دیکھا گیا
کہ وہ اپنی مریل چونچ سے پنجرے کی سلاخیں توڑنے کی
کوشش کر رہا ہے ۔

हल निकला कि मामूली तिनकों से पक्षी जो घोंसला बनाता है उस घोंसले में ज्यादा विद्या नहीं अंट सकती. इसलिये सब से पहले ज़रूरत यह है कि एक अच्छा सा पिंजरा बनवाया जाय.

राजपंडित दक्षिना ले कर ख़ुश ख़ुश घर लौटे.

(3)

सुनार बैठा सोने का पिंजरा बनाने. पिंजरा ऐसा अनोखा बना कि देखने के लिये दूर दूर से लोग आने लगे. कोई कहता—'शिक्षा की हद ही कर दी है.' कोई कहता—'शिक्षा न भी हो, लेकिन पिंजरा तो बन गया. पक्षी की भी तक़दीर सिकन्दर है ?'

सुनार को थैली भर कर इनाम मिला. ख़ुश हो कर वह तो रवाना हुआ अपने घर की तरफ़.

पंडित लोग बैठे पक्षी को विद्या सिखाने.

सुंघनी सूंघ कर बोले—'छोटी पुस्तक से काम नहीं चलेगा.'

भान्जे ने उसी दम पुस्तक लिखने वालों को तलब किया. उन्होंने पुस्तक की नक़ल कर के और नक़ल की नक़ल करके पहाड़ खड़ा कर दिया. जिसने देखा वही कहने लगा—'शाबाश ! अब और विद्या कहां समायेगी ?'

नक़लनवीसों के दल ने बैल लदवा कर इनाम पाया और उसी दम घर की तरफ़ भाग खड़े हुए. उनकी दुनिया में अब ग़रीबी नहीं रही.

क़ीमती पिंजरे की रखवाली के लिये भान्जे की ख़बरदारी की हद न थी. मरम्मत करने वाले तो लगे ही थे, झाड़ने, पोंछने, पालिश करने वालों की भीड़ देख कर सभी कहते—'ख़ूब तरक़्क़ी हो रही है.'

लोग जुट गए बेशुमार, और उस पर निगरानी रखने वाले लोग लग गए और भी ज्यादा. उन्होंने महीने महीने भर भर मुट्ठी तनख़्वाह लेकर संदूकें भर लीं.

वह और उनके ममेरे, चचेरे और मौसेरे भाई ख़ुश हो कर अपनी अपनी कोठियों में गद्दी तकिये लगा कर बैठने लगे.

(4)

दुनिया में और सबकी कमी है सिर्फ़ चुग़लख़ोरों की नहीं. वह बोले—'पिंजरे की तो तरक़्क़ी हो रही है, लेकिन पक्षी की कोई ख़बर ही नहीं लेता !'

बात राजा के कान तक पहुंची. उन्होंने भान्जे को बुला कर पूछा—"यह क्या सुन रहा हूं ?"

भान्जा बोला—"महाराज, सच्ची बात अगर सुननी हो तो बुलाइये सुनारों को, पंडितों को, नक़लनवीसों को, उन्हें बुलाइये जो मरम्मत करते हैं और मरम्मत की खोज ख़बर लेते रहते हैं. चुग़लख़ोरों को कुछ खाने को नहीं मिलता इसीलिये बुरी भली कहते हैं."

حل نکلا کہ معمولی تنکوں سے پکھشی جو گھونسلہ بناتا ہے اُس گھونسلے میں زیادہ ودیا نہیں اَٹ سکتی، اِس لئے سب سے پہلے ضرورت یہ ہے کہ ایک اچھا سا پنجرا بنوایا جائے ۔

راج پنڈت دکشنا لیکر خوش خوش گھر لوٹے ۔

(3)

سنار بیٹھا سونے کا پنجرا بنانے ۔ پنجرا ایسا انوکھا بنا کہ دیکھنے کے لئے دور دور سے لوگ آنے لگے ۔ کوئی کہتا—'شکشا کی حد ہی کردی ہے۔' کوئی کہتا—'شکشا نہ بھی ہو' لیکن پنجرا تو بن گیا ۔ پکھشی کی بھی تقدیر سکندر ہے ۔'

سنار کو تھیلی بھرکر اِنعام ملا. خوش ہوکر وہ تو روانہ ہوا اپنے گھر کی طرف ۔

پنڈت لوگ بیٹھے پکھشی کو ودیا سکھانے ۔ سونگھنی سونگھ کر بولے—'چھوٹی پستک سے کام نہیں چلیگا ۔'

بھانجے نے اُسی دم پستک لکھنے والوں کو طلب کیا. انہوں نے پستک کی نقل کرکے اور نقل کی نقل کرکے پہاڑ کھڑا کر دیا. جس نے دیکھا وہی کہنے لگا—'شاباش! اب اور ودیا کہاں سمائیگی ؟'

نقلنویسوں کے دل نے بیل لدوا کر اِنعام پایا اور اُسی دم گھر کی طرف بھاگ کھڑے ہوئے ۔ اُنکی دنیا میں اب غریبی نہیں رہی ۔

قیمتی پنجرے کی رکھوالی کے لئے بھانجے کی خبرداری کی حد نہ تھی. مرمت کرنے والے تو لگے ہی تھے' جھاڑنے' پونچھنے' پالش کرنے والوں کی بھیڑ دیکھکر سبھی کہتے—'خوب ترقی ہو رہی ہے ۔'

لوگ جٹ گئے بےشمار' اور اس پر نگرانی رکھنے والے لوگ لگ گئے اور بھی زیادہ ۔ انہوں نے مہینے مہینے بھر بھر مٹھی تنخواہ لیکر صندوقیں بھر لیں ۔

وے اور ان کے ممیرے' چچیرے اور موسیرے بھائی خوش ہوکر اپنی اپنی کوٹھیوں میں گدی تکیہ لگاکر بیٹھنے لگے ۔

(4)

دنیا میں اور سبکی کمی ہے صرف چغلخوروں کی نہیں۔ وے بولے—'پنجرے کی تو ترقی ہو رہی ہے' لیکن پکھشی کی کوئی خبر ہی نہیں لیتا !'

بات راجہ کے کان تک پہونچی ۔ انہوں نے بھانجے کو بلاکر پوچھا—"یہ کیا سن رہا ہوں ؟"

بھانجا بولا—"مہاراج' سچی بات اگر سننی ہو تو بلائیے سناروں کو' پنڈتوں کو' نقلنویسوں کو' انہیں بلائیے جو مرمت کرتے ہیں اور مرمت کی کھوج خبر لیتے رہتے ہیں۔ چغلخوروں کو کچھ کھانے کو نہیں ملتا اِس لئے بری بھلی کہتے ہیں ۔"

[अकस्मात] तुम्हारी इज्जत की दीवारें ढह जायेंगी यदि मैं तुम्हारा अपराध प्रगट कर दूं. मैं चाहता हूं कि तुम स्वीकार कर लो.

लियू—तुम मुझसे क्या मनवाना चाहते हो? बूढ़े चच्चा! मैंने जो कुछ भी किया है उसकी सारी जिम्मेदारी हमेशा मेरे ऊपर रहेगी. तुम्हें मेरे मामलों में सनने की नौबत न आयेगी.

मा—बूढ़े चच्चा, आपने सुना यह क्या कह रहे हैं? यह मुझे मुंह पर ही सारी बातें कहने के लिये मजबूर कर रहे हैं. मैं बताये देता हूं किसी ने बिना नाम बताये हुए तुम्हारे ऊपर दोषारोपन किया है.

[लियू-मा दाखिल होती है]

लियू—किस लिये?

मा—तुम गुप्त रूप से लुटेरों के साथ सम्बन्ध रखते हो. तुम्हारे घर में गोलियां छुपा कर रक्खी हुई हैं.

लियू—कहां की बातें करते हो! मैं गोलियां कहां से पा सकता हूं? पिछली बार इतना प्रयत्न करने पर भी गांव की स्वरक्षा सेना के लिये हम गोलियां नहीं पा सके.

चाओ—लियू-चेंग-तुंग ऐसा व्यक्ति नहीं है. मैं गारंटी दे सकता हूं कि उसने ऐसा नहीं किया होगा.

(सिलसिले के लिये अगला अंक देखिये)

तोते की कहानी

आजकल की तालीम पर एक व्यंग

(लेखक—रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनुवादक—मदनलाल जैन)

एक पक्षी था. वह था मूर्ख. वह गाना गाता पर शास्त्र न पढ़ता. फुदकता, उड़ता, लेकिन क़ायदा क़ानून न जानता था.

राजा बोला—"ऐसा पक्षी तो काम पर लगेगा नहीं, वन के फल खा कर राजहाट में फल के बाज़ार को नुकसान ही पहुंचाएगा."

वज़ीर को बुला कर कहा—"पक्षी को शिक्षा दो."

(2)

राजा के भान्जे को पक्षी को शिक्षा देने का भार सौंपा गया.

पंडितों ने बैठ कर बहुत विचार किया. सवाल यह था कि—'इस जीव की अविद्या का कारन क्या है?'

[اکسمات] تمہاری عزت کی دیواریں ڈھ جائیں گی یدی میں تمہارا اپرادھ پرکٹ کر دوں ۔ میں چاہتا ہوں کہ تم سویکار کر لو ۔

لیو—تم مجھ سے کیا منوانا چاہتے ہو؟ بوڑھے چچا' میں نے جو کچھ بھی کیا ہے اسکی ساری ذمہداری ہمیشہ میرے اوپر رہے گی ۔ تمہیں میرے معاملوں میں سلنے کی نوبت نہ آئے گی ۔

ما—بوڑھے چچا' آپ نے سنا یہ کیا کہہ رہے ہیں؟ یہ مجھے مکھ پر ہی ساری باتیں کہنے کے لئے مجبور کر رہے ہیں۔ میں بتائے دیتا ہوں کسی نے بنا نام بتائے ہوئے تمہارے اوپر دوشاروپن کیا ہے ۔

[لیو ما داخل ہوتی ہے]

لیو—کس لئے؟

ما—تم گپت روپ سے لٹیروں کے ساتھ سمبندھ رکھتے ہو ۔ تمہارے گھر میں گولیاں چھپا کر رکھی ہوئی ہیں ۔

لیو—کہاں کی باتیں کرتے ہو! میں گولیاں کہاں سے پا سکتا ہوں؟ پچھلی بار اتنا پریتن کرنے پر بھی گاؤں کی سورکشا سینا کے لئے ہم گولیاں نہیں پا سکے ۔

چاؤ—لیو ۔ چینگ ۔ تنگ ایسا ویکتی نہیں ہے ۔ میں گارنٹی دے سکتا ہوں کہ اس نے ایسا نہیں کیا ہوگا ۔

(سلسلہ کے لئے اگلا انک دیکھئے)

طوطے کی کہانی

آجکل کی تعلیم پر ایک ویَنگ

لیکھک—رویندر ناتھ ٹھاکر؛ انوواَدک—مدن لال جین)

ایک پکشی تھا ۔ وہ تھا مورکھ ۔ وہ گانا گاتا' پر شاستر پڑھتا ۔ پھدکتا اُڑتا' لیکن قاعدہ قانون نہ جانتا تھا ۔

راجہ بولا— ' ایسا پکشی تو کام پر لگیگا نہیں' بن پھل کھاکر راجہاٹ میں پھل کے بازار کو نقصان ہی پہنچائیگا ۔"

وزیر کو بلاکر کہا—"پکشی کو شکشا دو ۔"

(2)

راجہ کے بھانجے کو پکشی کو شکشا دینے کا بھار سونپا گیا ۔

پنڈتوں نے بیٹھکر بہت وچار کیا ۔ سوال یہ تھا کہ—جیو کی اودیا کا کارن کیا ہے؟"

मंडल यहां आया हुआ था और कृषि सुधार कर रहा था तो ज़मींदार चाऊ पर सब से आगे बढ़ कर मैंने ही दोशारोपन किया था. उसके बाद हम लोग सुन से निबटे थे. आप किसान सभा के अध्यक्ष हैं और मैं उपाध्यक्ष. यद्यपि हमारी सभा आदर्श सभा नहीं है फिर भी बुरी नहीं है.

लियू—इसका कारन यही है कि हमें सबों का सहयोग प्राप्त है. हम लोग जनता के सहयोग के बग़ैर कर ही क्या सकते हैं ?

मा—अच्छा, सुनो तो. आप योग्यता में मुझ से ऊंचे अवश्य हैं पर अवस्था में छोटे ही हैं. चूंकि मैं आप से अवस्था में ज़ियादा हूं अतः अपने दिल की कुछ बातें कहना चाहता हूं. हम कार्यकर्ता हमेशा समाज में प्रगतिशील और अगुआ दस्ते समझे जाते हैं, इसलिये हम लोग जो कुछ सोचते हैं वह कहना भी चाहिये. यदि हम ग़रीबों की सहायता करने की केवल बातें करते रहे और असलियत में किया उसका उल्टा तो हम लोग जान बूझ कर अपराध कर रहे हैं. [चाऊ की ओर मुड़ कर] क्या ग़लत कह रहा हूं ? कहावत है कि क़ानून को जानते हुए भी जो अपराध करे उसका दोश दुगना हो जाता है.

चाओ—हां, हां, बिल्कुल ठीक कह रहे हैं.

लियू—तुम आख़िर यह सब कह क्यों रहे हो ?

मा—आपकी अवस्था शायद तीस बरस के लगभग है, मुझसे काफ़ी छोटे हैं. आप की ज़बान से शायद कुछ ग़लत बात निकल गई है. लेकिन यदि आप इसी बात पर अड़े रहे तो कुछ ज़्यादा ख़तरा ही है. [चाओ की ओर मुड़ कर] क्या ग़लत कह रहा हूं ?

लियू—घुमा फिरा कर बातें मत करो. मैं सीधा सादा आदमी हूं, साफ़ साफ़ बताओ.

मा—इतनी जल्दबाज़ी क्यों कर रहे हो ? मैं बूढ़े चच्चा के आगे ही सारी बातें साफ़ साफ़ कह दूंगा लेकिन आप पहिले बतलाइये तो कि आप से ग़लती हुई या नहीं ? शायद मैं उस ग़लती को छुपाने का रास्ता बता सकूं. शायद है आपका अपराध दो-तिहाई रह जाय, घट कर आधा रह जाय या बिल्कुल ख़तम हो जाय. जब तक वह प्रकट न हो जाय रुकने की ज़रूरत नहीं है. फिर तो बहुत देर हो जायेगी. मैं यह नहीं चाहता कि आप किसी ऐसी परेशानी में फंस जायें और उस समय बच निकलने का भी कोई रास्ता नहीं रह जाय.

लियू—कहो न मतलब क्या है ? कुछ मालूम भी तो हो. क्यों चच्चा कुछ समझ में आ रहा है ?

चाओ—नहीं, कुछ भी नहीं.

मा—[लियू से] अनजान बनने की चेश्टा मत करो. जो कुछ तुमने किया है वह तुम्हें मालूम भी अवश्य होगा.

منڈل یہاں آیا ہوا تھا اور کرشی سدھار کر رہا تھا تو زمیندار چاؤ پر سب سے آگے بڑھ کر میں نے ہی دوشاروپن کیا تھا ؟ اس کے بعد ہم لوگ سن سے نپٹے تھے . آپ کسان سبھا کے ادھیکش ہیں اور میں اپادھیکش . یدپی ہماری سبھا آدرش سبھا نہیں ہے پھر بھی بری نہیں ہے.

لیو—اسکا کارن یہی ہے کہ ہمیں سبوں کا سہیوگ پراپت ہے . ہم لوگ جنتا کے سہیوگ کے بغیر کر ہی کیا سکتے ہیں ؟

ما—اچھا، سنو تو . آپ یوگتا میں مجھ سے اونچے اوشیہ ہیں پر اوستھا میں چھوٹے ہی ہیں . چونکہ میں آپ سے اوستھا میں زیادہ ہوں اتہ اپنے دل کی کچھ باتیں کہنا چاہتا ہوں . ہم کاریہ کرتا ہمیشہ سماج میں پرگتی شیل اور اگوا دستے سمجھے جاتے ہیں، اس لیے ہم لوگ جو کچھ سوچتے ہیں وہ کہنا بھی چاہئے . یدی ہم غریبوں کی سہائتا کرنے کی کیول باتیں کرتے رہے اور اصلیت میں کیا اسکا الٹا تو ہم لوگ جان بوجھ کر اپرادھ کر رہے ہیں . [چاؤ کی اور مڑ کر] کیا غلط کہ رہا ہوں ؟ کہاوت ہے کہ قانون کو جانتے ہوئے بھی جو اپرادھ کرے اسکا دوش دگنا ہو جاتا ہے .

چاؤ—ہاں، ہاں، بالکل ٹھیک کہ رہے ہیں .

لیو—تم آخر یہ سب کہ کیوں رہے ہو ؟

ما—آپ کی اوستھا شاید 30 برس کے لگ بھگ ہے، مجھسے کافی چھوٹے ہیں . آپ کی زبان سے شاید کچھ غلط بات نکل گئی ہے . لیکن یدی آپ اسی بات پر اڑے رہو تو کچھ زیادہ خطرہ ہی ہے . [چاؤ کی اور مڑ کر] کیا غلط کہ رہا ہوں ؟

لیو—گھما پھرا کر باتیں مت کرو . میں سیدھا سادا آدمی ہوں . صاف صاف بتاؤ .

ما—اتنی جلد بازی کیوں کر رہے ہو ؟ میں بوڑھے چچا کے آگے ہی ساری باتیں صاف صاف کہ دونگا . لیکن آپ پہلے بتلائیے تو کہ آپ سے غلطی ہوئی یا نہیں؟ شاید میں اس غلطی کو چھپانے کا راستہ بتا سکوں . شاید ہے آپ کا اپرادھ دو-تہائی رہ جائے، گھٹ کر آدھا رہ جائے یا بالکل ختم ہو جائے . جب تک وہ پرکٹ نہ ہو جائے رکنے کی ضرورت نہیں ہے . پھر تو بہت دیر ہو جائے گی . میں یہ نہیں چاہتا کہ آپ کسی ایسی پریشانی میں پھنس جائیں اور اس سمے بچ نکلنے کا بھی کوئی راستہ نہیں رہ جائے .

لیو—کہو نہ مطلب کیا ہے ؟ کچھ معلوم بھی تو ہو . کیوں چچا کچھ سمجھ میں آ رہا ہے ؟

چاؤ—نہیں، کچھ بھی نہیں .

ما—[لیو سے] انجان بننے کی چیشٹا مت کرو . جو کچھ تم نے کیا ہے وہ تمہیں معلوم بھی اوشیہ ہوگا .

मा—[लियू की ओर मुड़ कर] ये किस के बारे में कह रहे हैं ?

लियू—अन्दाज लगाओ. इस गांव में सुन-जिन-को को छोड़ कर ऐसा अत्याचार और कौन कर सकता है ?

मा—[समझने का बहाना करते हुए] ओ हो, वह ! वह तो खुद भी अभी अपनी फ़सल नहीं उठा पाया है. इतनी जल्दी क्या है ?

चाओ—मुझे डर है कि कहीं बरफ़ न गिरने लग जाय.

मा—अपने दस माऊ ज़मीन के लिये व्यर्थ ही इतना ज़ियादा परेशान मत हो. सुन के पास इतनी ज़मीन है फिर भी वह परेशान नहीं है.

लियू—[मा से] तुम किसान सभा के उपाध्यक्ष हो. सुन का पक्ष क्यों लेते हो ? पिछली बार सुन के घर में शराब पीने के बाद से क्या अभी तक तुम्हारा दिमाग़ ठीक नहीं हुआ है ?

मा—उसी अकेली बार मैंने सुन के घर में शराब पी थी. बार बार उसी का ज़िक्र करने से क्या लाभ ?

लियू—क्या तुम्हारी बस्ती के ग़रीब आदमी फ़सल उठा ले गए जिसे सुन ने देने का वादा किया था ?

मा—यह उनका काम है. तुम्हें क्यों इतनी परेशानी है ? फ़सल के पंख तो जम नहीं आये हैं कि उड़ कर ग़ायब हो जायेगी.

चाओ—[मा की बातों की अवहेलना करते हुए] तो क्या हम लोग उससे ऐसे ही निबटेंगे जैसे तुम कह रहे हो ?

लियू—अवश्य. जाओ अपने ग्रुप के सदस्यों को इकट्ठा करो.

मा—बूढ़े चच्चा, ज़रा रुको.

लियू—वैसे ही काफ़ी देर हो चुकी है. उन्हें जा कर लोगों को इकट्ठा करने दो. हम लोग चल कर सुन को ले आयेंगे. मैं तुम्हें सभी चीज़ें विस्तार पूर्वक बतलाता हूं.

मा—मुझ को भी कई विषयों पर बातें करनी हैं.

लियू—अच्छा ठीक है. जो कुछ भी बातें करनी हैं बूढ़े चच्चा से कर लो, लेकिन मीटिंग के लिये देर न होने पाए. मैं लाओ-लू-ताओ को रास्ता देता आऊं. जल्दी ही लौट आऊंगा.

मा—नहीं, अभी मत जाइये.

लियू—क्यों ? आखिर बात क्या है ?

मा—अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय पर बातें करनी हैं.

लियू—कितनी महत्वपूर्ण ?

मा—[गम्भीर मुद्रा बना कर] मैं बूढ़े चच्चा के आगे अपनी बड़ाई नहीं करूंगा. जब राजनीतिक कार्यकर्ता

ما—[لیو کی اور مڑ کر] یہ کس کے بارے میں کہہ رہے ہیں ؟

لیو—اندازہ لگاؤ . اِس گاؤں میں سن-جن-کو کو چھوڑ کر ایسا اتیاچار اور کون کر سکتا ہے ؟

ما—[سمجھنے کا بہانا کرتے ہوئے] او ہو' وہ ! وہ تو خود بھی ابھی اپنی فصل نہیں اُٹھا پایا ہے . اِتنی جلدی کیا ہے ؟

چاؤ—مجھے ڈر ہے کہ کہیں برف نہ گرنے لگ جائے .

ما—اپنے دس ماؤ زمین کے لئے ویرتھ ہی اتنا زیادہ پریشان مت ہو . سن کے پاس اتنی زمین ہے پھر بھی وہ پریشان نہیں ہے .

لیو—[ما سے] تم کسان سبھا کے اُپادھیکش ہو . سن کا پکش کیوں لیتے ہو ؟ پچھلی بار سن کے گھر میں شراب پینے کے بعد سے کیا ابھی تک تمہارا دماغ ٹھیک نہیں ہوا ہے !

ما—اُسی اکیلی بار میں نے سن کے گھر میں شراب پی تھی . بار بار اُسی کا ذکر کرنے سے کیا لابھ ؟

لیو—کیا تمہاری بستی کے غریب آدمی فصل اُٹھا لے گئے جسے سن نے دینے کا وعدہ کیا تھا ؟

ما—یہ اُن کا کام ہے . تمہیں کیوں اتنی پریشانی ہے ؟ فصل کے پنکھ تو جم نہیں آئے ہیں کہ اُڑ کر غائب ہو جائے گی .

چاؤ—[ماں کی باتوں کی اوہیلنا کرتے ہوئے] تو کیا ہم لوگ اُس سے ایسے ہی نپٹینگے جیسے تم کہہ رہے ہو ؟

لیو—اوشیہ . جاؤ اپنے گٹ کے سدسیوں کو اِکٹھا کرو .

ما—بوڑھے چچا' ذرا رکو .

لیو—ویسے ہی کافی دیر ہو چکی ہے . اُنہیں جا کر لوگوں کو اکٹھا کرنے دو. ہم لوگ چل کر سن کو لے آئینگے. میں تمہیں سبھی چیزیں وستار پوروک بتلاتا ہوں .

ما—مجھکو بھی کئی وشیوں پر باتیں کرنی ہیں .

لیو—اچھا ٹھیک ہے . جو کچھ بھی باتیں کرنی ہیں بوڑھے چچا سے کر لو' لیکن میٹنگ کے لئے دیر نہ ہونے پائے . میں لؤ. لو. تاؤ کو رستہ دیتا آؤں. جلدی ہی لوٹ آؤنگا .

ما—نہیں' ابھی مت جائیے .

لیو—کیوں ؟ آخر بات کیا ہے ؟

ما—اتیَنت مہتو پورن وشے پر باتیں کرنی ہیں.

لیو—کتنی مہتو پورن ؟

ما—[گمبھیر مدرا بنا کر] میں بوڑھے چچا کے آگے اپنی بڑائی نہیں کرونگا . جب راجنیتک کاریکرتا

[मा-कुई-यू ओवरकोट ओढ़े अन्दर आता है]

मा-कुई-यू—तुम क्या कह रहे थे ? पढ़ना सीखोगे ? यह तो बड़ा आसान है. पढ़ाई लिखाई को छोड़ कर बाक़ी सभी कामों में तुम मुझसे अच्छे हो. जब मैं छोटा था कई साल तक स्कूल गया था. इसका कारन यही था कि बाप दादों की थोड़ी सी जायदाद मेरे पास तब भी थी. मैं स्कूल में पढ़ाने योग्य तो नहीं हूं पर तुम्हें तो पढ़ा ही सकता हूं.

लियू—बड़ा अच्छा है. पर तुम हंसी तो नहीं कर रहे हो ? मैं दर असल पढ़ना चाहता हूं. मैं तुम से अगले जाड़ों में पढ़ना शुरू करूंगा.

मा—मैं तुम्हें अवश्य पढ़ाऊंगा यदि तुम कुछ मेहनत करने कहो.

लियू-मा—इतनी कम शिक्षा के बावजूद तुम किसी को कैसे पढ़ा सकते हो ?

मा—मेरी पढ़ाई से नफ़रत मत करो. जब मैं नक़ल करने का काम करता था तो मैंने एक हज़ार माऊ ज़मीन का दस्तावेज़ लिखा था. मुझे बेचने वाले और ख़रीदने वाले दोनों ने दावत दी थी. जब 'मंचूको' मुझसे क़ुलीगीरी करवाना चाहता था, तो मैं मा-तून नदी के किनारे भाग गया था और वहां अपनी पढ़ाई ही के बल पर जीवित रहा था. मैं बड़ा आदमी तो नहीं बन गया था पर भूकों भी नहीं मरा था.

चाओ—नीम हकीम ख़तरए जां. थोड़ी पढ़ाई बड़ी ख़तरनाक बात भी हो सकती है.

मा—बूढ़े चच्चा ऐसी बातें मत कहो. मैंने कोई तलाक़ का दस्तावेज़ अभी तक नहीं लिखा है.

लियू—बूढ़े चच्चा, हम लोगों को फिर कुछ काम की बातें करना चाहिये. अपनी टुकड़ी के सभी सदस्यों को अपने पड़ोसी वांग के घर इकट्ठा करो. मा और मैं, सुन को ले आयेंगे और वहीं मिलेंगे. सभी सदस्यों के सामने हम लोग सुन को समझायेंगे. उसे अपनी गाड़ियां वापस मंगवा कर हम लोगों की फ़सलें ढुलवानी चाहिये.

चाओ—ठीक है. [जाने के लिये कुछ भुनभुनाता हुआ मुड़ता है.] उसका खेत जोतना अभाग्य की निशानी है. मैंने और मेरे बेटे ने उस पर पूरा एक साल बर्बाद किया है. इससे तो कहीं अच्छा दूसरों के यहां मज़दूरी करना है. हम ग़रीबों के साथ वह बड़ी सख़्ती से पेश आता है.

मा—बूढ़े चच्चा, टोकने के लिये माफ़ करना, अभी जाने की भी ऐसी क्या जल्दी है ? किस के बारे में भुनभुना रहे हो ?

चाओ—अपने ज़मींदार के बारे में और किसके ?

[ماکوئی‌یو اوورکوٹ اوڑھے اندر آتا ہے .]

ماکوئی‌یو—تم کیا کہہ رہے تھے ؟ پڑھنا سیکھو گے ؟ یہ تو بڑا آسان ہے . پڑھائی لکھائی کو چھوڑ کر باقی سبھی کاموں میں تم مجھ سے اچھے ہو . جب میں چھوٹا تھا کئی سال تک اسکول گیا تھا . اسکا کارن یہی تھا کہ باپ دادوں کی تھوڑی سی جائداد میرے پاس تب بھی تھی . میں اسکول میں پڑھانے یوگیہ تو نہیں ہوں پر تمہیں تو پڑھا ہی سکتا ہوں .

لیو—بڑا اچھا ہے . پر تم ہنسی تو نہیں کر رہے ہو ؟ میں دراصل پڑھنا چاہتا ہوں . میں تم سے اگلے جاڑوں میں پڑھنا شروع کرونگا .

ما—میں تمہیں اوشیہ پڑھاؤنگا یدی تم کچھ محنت کرنے کہو .

لیو ما—اتنی کم شکشا کے باوجود تم کسی کو کیسے پڑھا سکتے ہو ؟

ما—میری پڑھائی سے نفرت مت کرو . جب میں نقل کرنے کا کام کرتا تھا تو میں نے ایک ہزار ماؤ زمین کا دستاویز لکھا تھا . مجھے بیچنے والے اور خریدنے والے دونوں نے دعوت دی تھی . جب 'منچوکو' مجھ سے قلی گیری کروانا چاہتا تھا' تو میں ما-تون ندی کے کنارے بھاگ گیا تھا اور وہاں اپنی پڑھائی کے بل پر ہی جیوت رہا تھا . میں بڑا آدمی تو نہیں بن گیا تھا پر بھوکوں بھی نہیں مرا تھا .

چاؤ—نیم حکیم خطرۂ جاں . تھوڑی پڑھائی بڑی خطرناک بات بھی ہو سکتی ہے .

ما—بوڑھے چچا ایسی باتیں مت کہو . میں نے کوئی طلاق کا دستاویز ابھی تک نہیں لکھا ہے . .

لیو—بوڑھے چچا' ہم لوگوں کو پھر کچھ کام کی باتیں کرنی چاہئے . اپنی ٹکڑی کے سبھی سدسیوں کو اپنے پڑوسی وانگ کے گھر اکٹھا کرو . ما اور میں' سن کو لے آئینگے اور وہیں ملینگے . سبھی سدسیوں کے سامنے ہم لوگ سن کو سمجھائینگے . اسے اپنی گاڑیاں واپس منگوا کر ہم لوگوں کی فصلیں ڈھلوانی چاہئے .

چاؤ—ٹھیک ہے . [جانے کے لئے کچھ بھن بھناتا ہوا مڑتا ہے] اسکا کھیت جوتنا بھاگیہ کی نشانی ہے . میں نے اور میرے بیٹے نے اس پر پورا ایک سال برباد کیا ہے . اس سے تو کہیں اچھا دوسروں کے یہاں مزدوری کرنا ہے . ہم غریبوں کے ساتھ وہ بڑی سختی سے پیش آتا ہے .

ما—بوڑھے چچا ٹوکنے کے لئے معاف کرنا' ابھی جانے کی بھی ایسی کیا جلدی ہے ؟ کس کے بارے میں بھنبھنا رہے ہو ؟

چاؤ—اپنے زمیندار کے بارے میں اور کس کے ؟

[लिंयू मा तराजू बटखरे ले कर आती है]

लिंयू मा—मैं तो गल्ला फटकते फटकते थक जाती हूं. हमारे खाने से पहिले कोई दूसरा इसे क्यों ले जाय ?

चाओ—भाई यह तो घर में अंधेरा रहने पर भी मसजिद में दिया जलाने के लिये दौड़ता है. यही कारन है कि लोग तुम्हें चाहते हैं. परोपकारी प्रवृत्ति के हो न !

लियू—बूढ़े चच्चा, आप बेकार ही मेरी इतनी तारीफ़ करते हैं. इसका कारन यह नहीं है कि मैं अपनी ज़रूरतों को भुला देता हूं. कारन यह है कि मेरे पास फटका-बना हुआ गल्ला जो है. यदि ऐसा न होता तो मुझे किसी से उधार लेना पड़ता.

लियू मा—तुम्हें दूसरों को देना है तो खुद क्यों नहीं फटकते ?

लियू—कल से मैं यह भी करूंगा.

लियू-मा—तो फिर एक दिन रुक जाओ, अपना ही फटका बनाया गल्ला दे देना.

लियू—कल तो बहुत देर हो जायगी. लाओ-सू-ताओ के पास जितना गल्ला था सब ख़तम हो चुका है और उसकी फ़सल अभी खेत ही में पड़ी है. कल तो उसके पास खाने के लिये कुछ भी नहीं होगा. उसके दूसरे लड़के ने फ़ौज में नाम लिखा लिया है और बड़ा वाला बीमार है. बाप काम करने लायक़ है नहीं. तुम उससे क्या आशा करती हो ? किसान सभा फिर किस दिन काम आयेगी ? क्या हम अब भी ग़रीबों को भूकों मरने दें ?

लियू-मा—देखो, तुमने गल्ला गिरा दिया. लाओ मैं तौलूं. चाओ तुम खाना खाओ, बर्तन में अभी भी थोड़ा भात है और अभी गरम भी है.

लियू—ज़रा रुको. यह थैला फटा हुआ है. सुई डोरा ले कर ज़रा सी तो डालो.

[लियू मा अन्दर जाती है]

चाओ—मैंने सुना है कि लाओ-सू-ताओ के लड़के लू-कुई ने फ़ौज से चिट्ठी भेजी है.

लियू—उसने चिट्ठी ख़ुद लिखी थी. जब उसके बाप को चिट्ठी पढ़ कर सुनाई गई तो वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसका वर्नन करना कठिन है. वह बराबर अपनी दाढ़ी सहलाता रहा. लू-कुई बिलकुल मेरे जैसा था.........लिखना पढ़ना कुछ भी नहीं जानता था लेकिन अब.........

[लियू-मा सुई डोरा ले कर आती है और थैला सीने लगती है.]

लियू मा—तुम्हारी हालत तो लू-कुई से कहीं ज़ियादा गई बीती थी. तुम्हारा उसका कोई मुक़ाबिला ही नहीं है.

लियू—फ़ौज में लोगों को अच्छी शिक्षा मिलती है. मेरा मज़ाक़ मत बनाओ. अगले जाड़ों में मैं भी पढ़ना सीखूंगा. हम ग़रीब लोग भी शिक्षा प्राप्त करेंगे.

[لیو ما ترازو بٹکھرے لے کر آتی ھے]

لیو ماں—میں تو غلہ پھٹکتے پھٹکتے تھک جاتی ھوں ۔ ھمارے کھانے سے پہلے کوئی دوسرا اِسے کیوں لے جائے ؟

چاؤ—بھائی یہ تو گھر میں اندھیرا رھنے پر بھی مسجد میں دیا جلانے کے لئے دوڑتا ھے ۔ یہی کارن ھے کہ لوگ تمہیں چاھتے ھیں ۔ پروپکاری پرورتی کے ھو نہ !

لیو—بوڑھے چچا، آپ بیکار ھی میری اِتنی تعریف کرتے ھیں ۔ اِسکا کارن یہ نہیں ھے کہ میں اپنی ضرورتوں کو بھلا دیتا ھوں ۔ کارن یہ ھے کہ میرے پاس پھٹکا-بنا ھوا غلہ جو ھے ۔ یدی ایسا نہ ھوتا تو مجھے کسی سے اُدھار لینا پڑتا ۔

لیو ما—تمہیں دوسروں کو دینا ھے تو خود کیوں نہیں پھٹکتے ؟

لیو—کل سے میں یہ بھی کرونگا ۔

لیو ما—تو پھر ایک دن رک جاؤ، اپنا ھی پھٹکا بنایا غلہ دے دینا ۔

لیو—کل تو بہت دیر ھو جائے گی ۔ لاؤ-سو-تاؤ کے پاس جتنا غلہ تھا سب ختم ھو چکا ھے اور اُسکی فصل ابھی کھیت ھی میں پڑی ھوئی ھے ۔ کل تو اس کے پاس کھانے کے لئے کچھ بھی نہیں ھوگا ۔ اُسکے دوسرے لڑکے نے فوج میں نام لکھا لیا ھے اور بڑا والا بیمار ھے ۔ باپ کام کرنے لایق ھے نہیں ۔ تم اس سے کیا آشا کرتی ھو ؟ کسان سبھا پھر کس دن کام آئے گی ؟ کیا ھم اب بھی غریبوں کو بھوکوں مرنے دیں ؟

لیو ما—دیکھو، تم نے غلہ گرا دیا ۔ لاؤ میں تولوں ۔ چاؤ تم کھانا کھاؤ، برتن میں ابھی بھی تھوڑا بھات ھے اور ابھی گرم بھی ھے ۔

لیو—ذرا رکو ۔ یہ تھیلا پھٹا ھوا ھے ۔ سوئی ڈورا لے کر ذرا سی تو ڈالو ۔

[لیو ما اندر جاتی ھے]

چاؤ—میں نے سنا ھے کہ لاؤ-سو-تاؤ کے لڑکے لو-کوئی نے فوج سے چٹھی بھیجی ھے ۔

لیو—اُسنے چٹھی خود لکھی تھی ۔ جب اُس کے باپ کو چٹھی پڑھکر سنائی گئی تو وہ اِتنا پرسن ھوا کہ اُسکا ورنن کرنا کٹھن ھے ۔ وہ برابر اپنی داڑھی سہلاتا رھا ۔ لو-کوئی بالکل میرے جیسا تھا......لکھنا پڑھنا کچھ بھی نہیں جانتا تھا لیکن اب.........

[لیو ما سوئی ڈورا لے کر آتی ھے اور تھیلا سلنے لگتی ھے ۔]

لیو ما—تمہاری حالت تو لو-کوئی سے کہیں زیادہ گئی بیتی تھی ۔ تمہارا اُسکا کوئی مقابلہ ھی نہیں ھے ۔

لیو—فوج میں لوگوں کو اچھی شکشا ملتی ھے ۔ میرا مذاق مت بناؤ ۔ اگلے جاڑوں میں میں بھی پڑھنا سیکھوں گا ۔ ھم غریب لوگ بھی شکشا پراپت کرینگے ۔

सुन से मांग करनी चाहिये कि वह उन दस्तावेजों को फ़ौरन लौटाये.

चाओ—इस शैतान से मैं अकेले तो निपट नहीं सकता.

[लियू-मां फिर आती है. उसकी पीठ पर एक थैला है और हाथ में एक झाड़ू और सूप है]

लियू—[पत्नी से] अभी तक क्या कर रही थीं? इतनी देर कहां लगा दी?

लियू-मा—अगर तुम्हारे आखें हैं तो देख ही सकते हो. पूछने की क्या ज़रूरत है? (चाओ से) क्यों बुड्ढे चच्चा खाना खा चुके हो?

चाओ—हां, खाना खा चुका हूं.

लियू-मा—अच्छा, आप क्या कह रहे थे? किस आदमी से अकेले नहीं निपट सकते?

लियू—[चाओ की जगह उत्तर देता है] ज़मींदार सुन-लिन-को.

लियू मा—चिल्लाते क्यों हो? अभी थोड़े देर पहिले जब मैं इस ओर आई थी मैंने सुन को उस ओर टहलते देखा था. यदि वह कहीं पास में हुआ तो सोचेगा कि हम लोग उसकी पीठ पीछे बुराई करते हैं.

लियू—तो क्या हुआ अगर वह सुन ही ले. हमें अब उसका क्या डर है?

लियू-मा—कुछ ही देर पहिले उसने मुझे बताने की कोशिश की थी कि वह बड़ा इमान्दार और न्याय संगत है. उसने बताया था कि उसकी दो गाड़ियां राजधानी में चली गई हैं नहीं तो वह हमारी फ़सल भी पहुंचा देता.

लियू—कितना बदमाश है वह! सत्तर चूहे खा कर बिल्ली हज करने चली है. इसके पीछे कोई न कोई भेद अवश्य होगा. हां, क्या तुम थैले में ग़ल्ला लाई हो? अच्छा अच्छा, यहीं रख दो. इसमें कितना है?

लियू-मा—बस, अभी के इस्तेमाल के लिये काफ़ी है. मैंने तौला नहीं है.

चाओ—मेरे ख़्याल से क़रीब चार शेंग है. अच्छा तौल कर देखो मेरा अन्दाज़ा ठीक है या नहीं?

लियू—जाओ अन्दर जा कर तौल आओ.

लियू मा—अरे, यह क्या तौलने लायक़ है. ऐसे ही ठीक है.

लियू—नहीं, जाओ तौल डालो.

[लियू मां अन्दर जाती है]

चाओ—क्या सचमुच में तुम्हारा तौलने का इरादा है? तुम अपने बुड्ढे चच्चा की इज़्ज़त उतारोगे?

लियू—नहीं नहीं, यह कैसे हो सकता है? मैं दो शेंग चाओ-सू-चाओ को भेजना चाहता हूं. देख नहीं रहे हैं आप कि मैं उसका थैला लाया हूं?

سن سے مانگ کرنی چاہئے کہ وہ اُن دستاویزوں کو فوراً لوٹائے .

چاؤ—اِس شیطان سے میں اکیلے تو نپٹ نہیں سکتا.

[لیو ماں پھر آتی ہے . اسکی پیٹھ پر ایک تھیلا ہے اور ہاتھ میں ایک جھاڑو اور سوپ ہے]

لیو—[پتنی سے] ابھی تک کیا کر رہی تھیں؟ اتنی دیر کہاں لگا دی ؟

لیوما—اگر تمہارے آنکھیں ہیں تو دیکھ ہی سکتے ہو . پوچھنے کیا ضرورت ہے ؟ [چاؤ سے] کیوں بڈھے چچا کھانا کھا چکے ہو ؟

چاؤ—ہاں، کھانا کھا چکا ہوں .

لیو ما—اچھا، آپ کیا کہہ رہے تھے؟ کس آدمی سے اکیلے نہیں نپٹ سکتے ؟

لیو—[چاؤ کی جگہ اُتر دیتا ہے] زمیندار سن لن کو.

لیو ما—چلاتے کیوں ہو؟ ابھی تھوڑی دیر پہلے جب میں اِس اور آئی تھی میں نے سن کو اُس اور ٹہلتے دیکھا تھا . یدی وہ کہیں پاس میں ہوا تو سوچیگا کہ ہم لوگ اسکی پیٹھ پیچھے برائی کرتے ہیں .

لیو—تو کیا ہوا اگر وہ سن ہی لے . ہمیں اب اُسکا کیا ڈر ہے ؟

لیو ما—کچھ ہی دیر پہلے اُس نے مجھے بتانے کی کوشش کی تھی کہ وہ بڑا ایماندار اور نیائے سنگت ہے . اُس نے بتایا تھا کہ اُسکی دو گاڑیاں راجدھانی میں چلی گئی ہیں نہیں تو وہ ہماری فصل بھی پہونچا دیتا .

لیو—کتنا بدمعاش ہے وہ ! ستر چوہے کھا کر بلی حج کرنے چلی ہے . اِسکے پیچھے کوئی نہ کوئی بھید اوشیہ ہوگا . ہاں، کیا تم تھیلے میں غلہ لائی ہو؟ اچھا اچھا، یہیں رکھ دو . اِس میں کتنا ہے ؟

لیو ما—بس، ابھی کے استعمال کے لئے کافی ہے . میں نے تولا نہیں ہے .

چاؤ—میرے خیال سے قریب چار شینگ ہے . اچھا تول کر دیکھو میرا اندازہ ٹھیک ہے یا نہیں ؟

لیو—جاؤ اندر جا کر تول آؤ .

لیو ما—ارے، یہ کیا تولنے لائق ہے . ایسے ہی ٹھیک ہے .

لیو—نہیں، جاؤ تول ڈالو .

[لیو ما اندر جاتی ہے]

چاؤ—کیا سچ مچ میں تمہارا تولنے کا ارادہ ہے ؟ تم اپنے بڈھے چچا کی عزت اُتاروگے ؟

لیو—نہیں نہیں، یہ کیسے ہو سکتا ہے ؟ میں دو شینگ چاؤ سو چاؤ کو بھیجنا چاہتا ہوں . دیکھ نہیں رہے ہیں آپ کہ میں اُسکا تھیلا لایا ہوں ؟

उठाया और भरपूर वार उसी पर पड़ा. यही कारन है कि आज तक मेरा वह हाथ कमजोर है.

चाओ—तो फिर आप झुके या नहीं ?

लियू—नहीं. तुम विश्वास करो मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं. मेरे साथ काम करने वाले किसी भी व्यक्ति से पूछ सकते हो.

चाओ—हां, जब मेरा लड़का कृषि सुधार वाली सभा से लौट रहा था तो उसने मुझे बतलाया था कि सुन-लिन-को ने अपने मजदूरों को कटाई के समय सजा दी थी. तो यह बात थी !

लियू—तुम्हारे लड़के ने सभा में सुन के खिलाफ कुछ नहीं कहा नहीं तो फिर सुन तुम्हें उल्लू बनाने की हिम्मत न करता.

चाओ—तो फिर मैं सुन के मामले में क्या करूं ?

लियू—गरीब किसानों के लिये मेरे पास कुछ गाड़ियां हैं. सुन ने उन्हें देने का वादा किया था. यदि कोई काम शुरू करने की हिम्मत करे तो इस प्रकार समस्या हल हो सकती है.

चाओ—मेरी बस्ती में तो कोई भी सुन को नाराज करने की हिम्मत नहीं करेगा. लेकिन जब हम सब साथ बैठते हैं तो उसे कोसने के अलावा और कोई काम ही नहीं होता.

लियू—वास्तव में यदि तुम सब एक हो जाओ तो फिर सभी मामले ठीक हो जायं.

चाओ—ठीक है. लेकिन उसने तो अपनी गाड़ियां गांव के बाहर भेज रक्खी हैं और उन्हें वह मंगायेगा ही नहीं.

लियू—नहीं, उसने उन्हें बहुत दूर नहीं भेजा है. उसकी दो गाड़ियां—एक अच्छी पहियों वाली और दूसरी साधारन—उसके तीन खच्चर और चार घोड़े और उसका बछेड़ा सभी उसके बहनोई के यहां हैं. उन सब को वापस लाने के लिये हम लोगों को उसे मजबूर करना चाहिये. उसे तुम्हारी फसल को तुम्हारे घर तो पहुंचाना ही होगा साथ ही उसे अपने तीन जानवर भी देने पड़ जायेंगे.

चाओ—मैंने सुन रक्खा है कि वह हम लोगों को धोखे में रखना चाहता है. वह इस चक्कर में है कि न तो हम लोगों को जानवर ही दे और न जमीन.

लियू—उसने अब तक केवल 500 'माऊ' जमीन के दस्तावेज दिये हैं लेकिन 600 'माऊ' अभी तक रक्खे हुये है. सियाओ गांव में कल मैं कामरेड चैंग से मिला था. उनका कहना था कि हम लोगों को गांव वालों की एक आम सभा करनी चाहिये और

اُٹھایا اور بھرپور وار اُسی پر پڑا . یہی کارن ہے کہ آج تک میرا وہ ہاتھ کمزور ہے .

چاؤ—تو پھر آپ جھکے یا نہیں ؟

لیو—نہیں . تم وشواش کرو میں جھوٹ نہیں بول رہا ہوں . میرے ساتھ کام کرنے والے کسی بھی ویکتی سے پوچھ سکتے ہو .

چاؤ—ہاں، جب میرا لڑکا کرشی سدھار والی سبھا سے لوٹ رہا تھا تو اس نے مجھے بتلایا تھا کہ سن‌لن‌کو نے اپنے مزدوروں کو کٹائی کے سمے سزا دی تھی. تو یہ بات تھی!

لیو—تمہارے لڑکے نے سبھا میں سن کے خلاف کچھ نہیں کہا نہیں تو پھر سن تمہیں اُلو بنانے کی ہمت نہ کرتا .

چاؤ—تو پھر میں سن کے معاملے میں کیا کروں؟

لیو—غریب کسانوں کے لئے میرے پاس کچھ گاڑیاں ہیں. سن نے اُنہیں دینے کا وعدہ کیا تھا . یدی کوئی کام شروع کرنے کی ہمت کرے تو اِس پرکار سمسیا حل ہو سکتی ہے .

چاؤ—میری بستی میں تو کوئی بھی سن کو ناراض کرنے کی ہمت نہیں کریگا . لیکن جب ہم سب ساتھ بیٹھتے ہیں تو اُسے کوسنے کے علاوہ اور کوئی کام ہی نہیں ہوتا .

لیو—واستو میں یدی تم سب ایک ہو جاؤ تو پھر سبھی معاملے ٹھیک ہوجائیں .

چاؤ—ٹھیک ہے . لیکن اس نے تو اپنی گاڑیاں گاؤں کے باہر بھیج رکھی ہیں اور انہیں وہ منگائیگا ہی نہیں.

لیو—نہیں، اس نے انہیں بہت دور نہیں بھیجا ہے. اسکی دو گاڑیاں—ایک اچھی پہیوں والی اور دوسری سادھارن—اس کے تین خچر اور چار گھوڑے اور اس کا بچھیڑا سبھی اس کے بہنوئی کے یہاں ہیں . ان سب کو واپس لانے کے لئے ہم لوگوں کو اسے مجبور کرنا چاہئے . اسے تمہاری فصل کو تمہارے گھر تو پہونچانا ہی ہوگا ساتھ ہی اسے اپنے تین جانور بھی دینے پڑ جائینگے .

چاؤ—میں نے سن رکھا ہے کہ وہ ہم لوگوں کو دھوکے میں رکھنا چاہتا ہے . وہ اِس چکر میں ہے کہ نہ تو ہم لوگوں کو جانور ہی دے اور نہ زمین .

لیو—اس نے اب تک کیول 500 'ماؤ' زمین کے دستاویز دیئے ہیں لیکن 600 'ماؤ' ابھی تک رکھے ہوئے ہے . سیاؤ گاؤں میں کل میں کامریڈ چینگ سے ملا تھا . ان کا کہنا تھا کہ ہم لوگوں کو گاؤں والوں کی ایک عام سبھا کرنی چاہئے اور

चौकीदारों के साथ ज़मींदार के आने का मतलब ही दुर्दिन का आगमन है.

चाओ—सुन का काम ही था कि या तो हमें मारे, या गाली दे, या हमारी दौलत हड़प ले.

लियू—वह हम लोगों को आदमी समझता ही नहीं था. एक बार मैंने भी उसके यहां नौकरी की थी. जाड़ों में फ़सल कटने का समय था. अनाज को भूसे से अलग कर हम लोगों ने उसे ढेर बना कर रख दिया था. हम उसे फटक नहीं सकते थे क्योंकि हवा नहीं चल रही थी. सब मज़दूर और फ़ोरमैन भूसा और डंठल इकट्ठा कर रहे थे तभी सुन पुलिस अफ़सर बैंग के साथ आया...

चाओ—मैं उस भेड़िये बैंग को जानता हूं. वह भयानक आदमी था और आदमी को 'कैसे मारा जाय कि उठ न पाये' की कला से पूर्णतया परिचित था.

लियू—जैसे ही सुन वहां पहुंचा वह चिल्लाया—"अनाज फटकते क्यों नहीं हो ? बैठे बैठे मौज कर रहे हो !" फ़ोरमैन ने उत्तर दिया—"हवा तो चल ही नहीं रही है." जानते हो सुन ने क्या जवाब दिया ?

चाओ—कुछ कह नहीं सकता.

लियू—मैंने किसी से अभी तक कहने की हिम्मत नहीं की थी. तुम्हारे जैसा बुड्ढा भी मेरी बातें सुन कर चौंक उठेगा. सुन ने कहा—"तुम सब अपने घुटने के बल बैठ जाओ, पूरब की तरफ़ मुंह करो और ईश्वर से हवा के लिये प्रार्थना करो."

चाओ—हवा के लिये प्रार्थना करो ? वह शैतान आदमियों को हर तरह से इस्तेमाल करना जानता था.

लियू—पुलिस अफ़सर भी समीप आया और बोला—"झुको ! झुको ! लाइन लगा कर बैठो, नहीं तो मैं मारूंगा." जब फ़ोरमैन ने यह देखा कि पुलिस अफ़सर ज़बानी जमा ख़र्च ही नहीं कर रहा है बल्कि अपना कहा कर भी दिखायेगा तो वह सब से पहिले घुटनों के बल बैठ गया. दूसरों ने भी वैसा ही किया. केवल मैं नहीं बैठा था. पुलिस अफ़सर ने मुझ से प्रश्न किया कि मैं क्यों नहीं बैठता. मैंने कोई उत्तर नहीं दिया. उसने मुझे कस कर दो तमांचे मारे. दर्द के कारन दोनों हाथ से मैंने अपना गाल पकड़ लिया. पुलिस अफ़सर चिल्लाया, "हाथ सीधा कर के खड़े हो." जैसे ही मैंने हाथ नीचे किया दो चांटे और पड़ गये. वह चिल्लाता ही रहा—"झुकते हो या नहीं" और मारना बराबर जारी रक्खा.

मैंने मन में सोचा, 'झुकूंगा तो नहीं चाहे जान ही क्यों न चली जाय.' उसने अपनी तलवार खींच ली और मुठिया से मुझे मारा. अपने को बचाने के लिये मैंने हाथ

چوکیداروں کے ساتھ زمیندار کے آنے کا مطلب ہی دردن کا آگمن ہے۔

چاؤ—سن کا کام ہی تھا کہ یا تو ہمیں مارے' یا گالی دے' یا ہماری دولت ہڑپ لے۔

لیو—وہ ہم لوگوں کو آدمی سمجھتا ہی نہیں تھا۔ ایک بار میں نے بھی اس کے یہاں نوکری کی تھی۔ جاڑوں میں فصل کٹنے کا سمے تھا۔ اناج کو بھوسے سے الگ کر ہم لوگوں نے اسے ڈھیر بنا کر رکھ دیا تھا۔ ہم اسے پھٹک نہیں سکتے تھے کیونکہ ہوا نہیں چل رہی تھی۔ سب مزدور اور فورمین بھوسہ اور ڈنٹھل اکٹھا کر رہے تھے تبھی سن پولس افسر وینگ کے ساتھ آیا.....

چاؤ—میں اس بھیڑئے وینگ کو جانتا ہوں۔ وہ بھیانک آدمی تھا اور آدمی کو 'کیسے مارا جائے کہ اٹھ نہ پائے' کی کلا سے پورنتیا پریچت تھا۔

لیو—جیسے ہی سن وہاں پہونچا وہ چلایا—"اناج پھٹکتے کیوں نہیں ہو؟ بیٹھے بیٹھے موج کر رہے ہو!" فورمین نے اتر دیا—"ہوا تو چل ہی نہیں رہی ہے۔" جانتے ہو' سن نے کیا جواب دیا؟

چاؤ—کچھ کہہ نہیں سکتا۔

لیو—میں نے کسی سے ابھی تک کہنے کی ہمت نہیں کی تھی۔ تمہارے جیسا بڈھا بھی میری باتیں سن کر چونک اٹھیگا۔ سن نے کہا—"تم سب اپنے گھٹنے کے بل بیٹھ جاؤ' پورب کی طرف منھ کرو اور ایشور سے ہوا کے لئے پرارتھنا کرو۔"

چاؤ—ہوا کے لئے پرارتھنا کرو؟ وہ شیطان آدمیوں کو ہر طرح سے استعمال کرنا جانتا تھا۔

لیو—پولس افسر بھی سمیپ آیا اور بولا—"جھکو! جھکو! لائن لگا کر بیٹھو' نہیں تو میں مارونگا۔" جب فورمین نے یہ دیکھا کہ پولس افسر زبانی جمع خرچ ہی نہیں کر رہا ہے بلکہ اپنا کہا کر بھی دکھائیگا تو وہ سب سے پہلے گھٹنوں کے بل بیٹھ گیا۔ دوسروں نے بھی ویسا ہی کیا۔ کیول میں نہیں بیٹھا تھا۔ پولس افسر نے مجھ سے پرشن کیا کہ میں کیوں نہیں بیٹھتا۔ میں نے کوئی اتر نہیں دیا۔ اس نے مجھے کس کر دو طمانچے مارے۔ درد کے کارن دونوں ہاتھ سے میں نے اپنا گال پکڑ لیا۔ پولس افسر چلایا' "ہاتھ سیدھا کر کے کھڑے ہو۔" جیسے ہی میں نے ہاتھ نیچے کیا دو چانٹے اور پڑگئے۔ وہ چلاتا ہی رہا—"جھکتے ہو یا نہیں" اور مارنا برابر جاری رکھا۔

میں نے من میں سوچا' 'جھکونگا تو نہیں چاہے جان ہی کیوں نہ چلی جائے'۔ اس نے اپنی تلوار کھینچ لی اور مٹھیا سے مجھے مارا۔ اپنے کو بچانے کے لئے میں نے ہاتھ

हुआ था कि फ़सल आधी आधी बांटी जायेगी. उसने गाड़ियां और ढोर देने का भी वादा किया था. लेकिन अब जब फ़सल तैयार हो कर कट गई है तो वह मुकर रहा है.

लियू-चेन-सुंग—जल्दी क्या है. चलो, एक दिन उससे बातें कर लेंगे. उसको समझाने के बीस तरीक़े निकल सकते हैं. [दरवाज़ा खोलने की कोशिश करता है] ओह ! इसमें तो ताला लगा है. श्रीमती जी शायद कहीं बाहर गई हुई हैं. इतनी रात वह कहां गई होंगी ? अच्छा चलो, आज चांदनी रात में इसी प्रश्न पर बातें हो जायं, तब तक मेरी पत्नी भी वापस लौट आयेगी.

चाओ—आज चांद की चौदहवीं है, कल पन्द्रहवीं होगी और परसों 'फ़ाल आव होर फ़्रास्ट' होगा. यद्यपि अभी आकाश इतना साफ़ है पर जैसे ही उत्तर की हवाएं बहना शुरू होंगी मौसम तेज़ी से बदल जायेगा. यदि बरफ़ पड़ गई तो फिर मेरी फ़सल का क्या होगा ?

लियू—जब तुमने बात की थी तो उसने क्या कहा था ?

चाओ—उसकी बातों में रक्खा ही क्या था ? [सुन के स्वर की नक़ल करते हुये] "मेरी दो गाड़ियां प्रान्तीय राजधानी में हैं. मैं अपनी फ़सल अभी खुद नहीं लदवा पाया हूं. तुम अपनी फ़सल के बारे में इतने ज़ियादा परेशान क्यों हो ? यह नहीं सोचते कि इस छोटी सी बात के लिये मग़ज़पच्ची करने से क्या लाभ ?" क्यों, क्या वह ठीक कह रहा था ? क्या उसकी बातें न्याय संगत थीं ?

लियू—फिर तुमने क्या कहा ?

चाओ—मैं कहता क्या ? ग़ुस्सा हो कर लौट आया. मैं अकेला कर ही क्या सकता हूं ?

लियू—तुम भी क्या आदमी हो ! वह अब भी हम को धोखा दे लेता है. कृषि सुधार वाली सभा में जब पिछली बार राजनैतिक कार्यकर्ता मंडल आया हुआ था सभी लोगों ने चाऊ-वान-फ़ैंग के विरुद्ध न मालूम कितनी बातें कही थीं. लेकिन जब सुन-लिन-को की बारी आई तो दस आदमी से ज़्यादा नहीं बोले थे. यद्यपि उसने खुद बड़े बड़े वादे किये थे पर अभी तक हम लोग उस पर क़ाबू नहीं पा सके हैं.

चाओ—चाऊ परिवार के सभी लोग गांव छोड़ कर भाग चुके थे इसीलिये लोगों की उसके खिलाफ़ बोलने की हिम्मत हुई. लेकिन सुन की बात दूसरी थी. उस समय वह गांव में ही था. यह कहावत क्यों भूल जाते हैं—"चाहे शेर मर क्यों न जाय लोग पास फटकने की हिम्मत नहीं करते." सुन बड़ा ही निर्दयी और अत्याचारी था. मेरा बच्चा तो सुन की ख़ूंख़ार शकल और उसके चौकीदारों की तलवारों की झनझनाहट सुन कर ही रो पड़ता था.

लियू—छोटे छोटे बच्चे तक जानते थे कि अपने

ہوا تھا کہ فصل آدھی آدھی بانٹی جائیگی ۔ اس نے گاڑیاں اور ڈھور دینے کا بھی وعدہ کیا تھا ۔ لیکن اب جب فصل تیار ہوکر کٹ گئی ہے تو وہ مکر رہا ہے ۔

لیوچین‌سنگ—جلدی کیا ہے۔ چلو، ایک دن اس سے باتیں کرلینگے۔ اسکو سمجھانے کے بیس طریقے نکل سکتے ہیں ۔ [دروازہ کھولنے کی کوشش کرتا ہے ۔] اوہ ! اس میں تو تالا لگا ہے ۔ شریمتی جی شاید کہیں باہر گئی ہوئی ہیں۔ اتنی رات وہ کہاں گئی ہونگی؟ اچھا چلو، آج چاندنی رات میں اسی پرشن پر باتیں ہوجائیں تب تک میری پتنی بھی واپس لوٹ آئیگی ۔

چاؤ—آج چاند کی چودھویں ہے، کل پندرھویں ہوگی اور پرسوں 'فال آو ہور فراسٹ' ہوگا ۔ یدیپی ابھی آکاش اتنا صاف ہے پر جیسے ہی اتر کی ہوائیں بہنا شروع ہونگی موسم تیزی سے بدل جائیگا ۔ یدی برف پڑ گئی تو پھر میری فصل کا کیا ہوگا ؟

لیو—جب تم نے بات کی تھی تو اس نے کیا کہا تھا؟

چاؤ—اسکی باتوں میں رکھا ہی کیا تھا ؟ [سن کے سور کی نقل کرتے ہوئے] "میری دو گاڑیاں پرانتیہ راجدھانی میں ہیں ۔ میں اپنی فصل ابھی خود نہیں لدوا پایا ہوں ۔ تم اپنی فصل کے بارے میں اتنے پریشان کیوں ہو؟ یہ نہیں سوچتے کہ اس چھوٹی سی بات کے لئے مغز پچی کرنے سے کیا لابھ ؟" کیوں، کیا وہ ٹھیک کہ رہا تھا ؟ کیا اسکی باتیں نیائے سنگت تھیں ؟

لیو—پھر تم نے کیا کہا ؟

چاؤ—میں کہتا کیا ؟ غصہ ہوکر لوٹ آیا ۔ میں اکیلا کر ہی کیا سکتا ہوں ؟

لیو—تم بھی کیا آدمی ہو ! وہ اب بھی ہمکو دھوکا دے لیتا ہے ۔ کرشی سدھار والی سبھا میں جب پچھلی بار راجنیتک کاریہ‌کرتا منڈل آیا ہوا تھا سبھی لوگوں نے چاؤوان‌فینگ کے ورودھ نہ معلوم کتنی باتیں کہی تھیں۔ لیکن جب سن‌لن‌کو کی باری آئی تو دس آدمی سے زیادہ نہیں بولے تھے۔ یدیپی اس نے خود بڑے بڑے وعدے کئے تھے پر ابھی تک ہم لوگ اس پر قابو نہیں پاسکے ہیں ۔

چاؤ—چاؤ پریوار کے سبھی لوگ گاؤں چھوڑ کر بھاگ چکے تھے اسی لئے لوگوں کی اس کے خلاف بولنے کی ہمت ہوئی۔ لیکن سن کی بات دوسری تھی ۔ اس سمے وہ گاؤں میں ہی تھا ۔ یہ کہاوت کیوں بھول جاتے ہیں —"چاہے شیر مر کیوں نہ جائے لوگ پاس پھٹکنے کی ہمت نہیں کرتے۔" سن بڑا ہی نردئی اور اتیاچاری تھا۔ میرا بچہ تو سن کی خونخوار شکل اور اس کے چوکیداروں کی تلواروں کی جھنجھناہٹ سنکر ہی رو پڑتا تھا ۔

لیو—چھوٹے چھوٹے بچے تک جانتے تھے کہ اپنے

लियू-मा—नहीं, नहीं! यही काम तो मेरा पति नहीं करना चाहता. इसीलिये तो वह किसान सभा का अध्यक्ष है. जब मैंने उनसे कहा कि मैं वांग-चुन वाली गाड़ी इस्तेमाल करने जा रही हूं तो उन्हों ने रोक दिया और कहा कि पहिले और लोग उसे इस्तेमाल कर लें तब हम इस्तेमाल करेंगे.

सुन—छिटकी हुई चांदनी किसानी को प्रेरना देती है कि वह गल्ला घर में ले आयें. मेरी दो गाड़ियां तो प्रान्तीय राजधानी में गई हुई हैं. गाड़ीवान बड़े ही बदमाश हैं. जब बाहर जाते हैं तो लौटने का नाम ही नहीं लेते. यदि वह यहां होते तो उनसे तुम्हारी फ़सल पहुंचवा देने में मुझे बड़ा आनन्द होता. ख़ैर, यह तो मैं कभी भी कर सकता हूं. लेकिन अब तो कृषि सुधार के नियमों के लागू होने के बाद से तो मेरे अपने काम के लिये भी काफ़ी गाड़ियां नहीं हैं. मेरी ख़ुद की फ़सलें तक पड़ी रह जाती हैं. अभी तक मेरी कुल फ़सल खेत ही में है.

[वह, बोलते हुये दाहिनी ओर से बाहर जाता है]

लियू-मा—[गोभी को ज़मीन पर से उठा कर रस्सी में टांगते हुये, सुन को घूर कर बोलती है. सुन दूर चला जाने के कारन सुन नहीं पाता] तेरे ज़बानी जमा ख़र्च की कौन परवाह करता है. [वह जाने लगती है पर बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर लौट आती है और खिड़की पर हाथ रख कर बच्चे से बातें करने लगती है] ज़रा देर चुप रहो. लौट कर चूल्हे की राख में पके हुये आलू खिलाऊंगी. [लड़का चुप हो जाता है] यह लड़का भी कितना पाजी है!

[वह बाईं ओर बाहर जाती है]

सुन—[जिधर गया था उसी तरफ़ से वापस आता है. चिमनी के सहारे चढ़, वह झांक कर देखता है कि लियू-मां चली गई है. फिर अपने जेब से सफ़ेद कपड़े में लिपटी हुई कोई चीज़ निकालता है. घबराहट के कारन कुछ चीज़ें गिर पड़ती हैं. यह गोलियां हैं. आस पास किसी को खड़े न देख कर वह उन्हें उठा कर फिर लपेट लेता है. यकायक बच्चा फिर रोने लगता है और उसके रोने की आवाज़ सुन कर सुन डर जाता है. जल्दी में वह गोलियों को लकड़ी के ढेर में छुपा देता है. फिर दांत पीसते हुये] कुतिया के बच्चे! मैं तुझे अभी टुकड़े टुकड़े कर दूंगा.

[किसी के आने की आहट पा कर वह जल्दी जल्दी बाहर जाता है. बच्चा चिल्लाना बन्द कर देता है. लियू-च्येन-तुंग पीठ पर ख़ाली बोरा रक्खे दाहिनी ओर से आता है. चाओ-कुआंग मिंग उसके पीछे पीछे आता है.]

चाओ-कुआंग-मिंग—अध्यक्ष लियू, क्या आप समझते हैं कि सुन लिन को साधारन आदमियों जैसा व्योहार करता है? मैं उसकी ज़मीन जोत चुका हूं. हमारा समझौता यही

لیوما—نہیں، نہیں! یہی کام تو میرا پتی نہیں کرنا چاہتا۔ اسی لئے تو وہ کسان سبھا کا ادھیکش ہے۔ جب میں نے اُن سے کہا کہ میں وانگ-چن والی گاڑی استعمال کرنے جارہی ہوں تو انہوں نے روک دیا اور کہا پہلے اور لوگ اُسے استعمال کرلیں تب ہم استعمال کرینگے۔

سن—چھٹکی ہوئی چاندنی کسانوں کو پریرنا دیتی ہے کہ وے غلہ گھر میں لے آئیں۔ میری دو گاڑیاں تو پرانتیہ راجدھانی میں گئی ہوئی ہیں۔ گاڑی‌وان بڑے ہی بدمعاش ہیں۔ جب باہر جاتے ہیں تو لوٹنے کا نام ہی نہیں لیتے۔ یدی وہ یہاں ہوتے تو اُن سے تمہاری فصل پہونچوا دینے میں مجھے بڑا آنند ہوتا۔ خیر، یہ تو میں کبھی بھی کر سکتا ہوں۔ لیکن اب تو کرشی سدھار کے نیموں کے لاگو ہونے کے بعد سے تو میرے اپنے کام کے لئے بھی کافی گاڑیاں نہیں ہیں۔ میری خود کی فصلوں تک پڑی رہ جاتی ہیں، ابھی تک میری کل فصل کھیت ہی میں ہے۔

[وہ بولتے ہوئے داہنی اور سے باہر جاتا ہے]

لیوما—[گوبھی کو زمین پر سے اُٹھاکر رسی میں ٹانگتے ہوئے، سن کو گھور کر بولتی ہے۔ سن دور چلا جانے کے کارن سن نہیں پاتا] تیرے زبانی جمع خرچ کی کون پرواہ کرتا ہے۔ [وہ جانے لگتی ہے پر بچے کے رونے کی آواز سنکر لوٹ آتی ہے اور کھڑکی پر ہاتھ رکھکر بچے سے باتیں کرنے لگتی ہے] ذرا دیر چپ رہو۔ لوٹکر چولہے کی راکھ میں پکے ہوئے آلو کھلاؤں‌گی۔ [لڑکا چپ ہو جاتا ہے] یہ لڑکا بھی کتنا پاجی ہے!

[وہ بائیں اور باہر جاتی ہے]

سن—[جدھر گیا تھا اُسی طرف سے واپس آتا ہے۔ چمنی کے سہارے چڑھ، وہ جھانککر دیکھتا ہے کہ لیوما چلی گئی ہے۔ پھر اپنی جیب سے سفید کپڑے میں لپٹی ہوئی کوئی چیز نکالتا ہے۔ گھبراہٹ کے کارن کچھ چیزیں گر پڑتی ہیں۔ یہ گولیاں ہیں۔ آس پاس کسی کو کھڑے نہ دیکھکر وہ انہیں اُٹھاکر پھر لپیٹ لیتا ہے۔ یکایک بچہ پھر رونے لگتا ہے اور اُس کے رونے کی آواز سنکر سن ڈر جاتا ہے۔ جلدی میں وہ گولیوں کو لکڑی کے ڈھیر میں چھپا دیتا ہے۔ پھر دانت پیستے ہوئے] کتیا کے بچے! میں تجھے ابھی ٹکڑے ٹکڑے کردونگا۔

[کسی کے آنے کی آہٹ پاکر وہ جلدی جلدی باہر جاتا ہے۔ بچہ چلانا بند کر دیتا ہے۔ لیوچین‌تنگ پیٹھ پر خالی بورا رکھے داہنی اور سے آتا ہے۔ چاؤ کوانگ‌منگ اُس کے پیچھے پیچھے آتا ہے]

چاؤکوانگ‌منگ—ادھیکش لیو، کیا آپ سمجھتے ہیں کہ سن‌لن‌کو سادھارن آدمیوں جیسا ویوہار کرتا ہے؟ میں اُسکی زمین جوت چکا ہوں۔ ہمارا سمجھوتہ یہی

ओर से सुन-लिन-को आता है. चिमनी के पास पहुंच कर वह रुक जाता है और अन्दर की बात सुनने लगता है. यकायक कमरे की रोशनी बुझ जाती है और दरवाजा खुलता है. लियू-मा हाथ में सूप लिये हुये स्टेज पर आती है. वह मकान से अकस्मात बाहर निकलती है, अतः सुन अपने को छिपा नहीं पाता. घूमने का बहाना करता हुआ वह उसके पास आता है.]

❀ ❀ ❀

सुन-लिन-को—तुम कहां जा रही हो ?

लियू-मा—अभी अभी तो अनाज फटक-पछोर कर निकली हूं. [टूटी रस्सी को देख कर] यह रस्सी किसने तोड़ डाली ? [दरवाजा बन्द कर. सूप को जमीन पर डाल वह रस्सी बांधने लगती है.]

सुन—इस चांदनी रात में अनाज फटकना तो बड़ा अच्छा लगता होगा ? क्या तुम्हारे पति घर में हैं ?

लियू-मा—वह तो रोज ही बड़े सवेरे, जब तारे छिटके रहते हैं, तभी चले जाते हैं और रात में भी देर से आते हैं. इस तरह से घर में तो वह कभी रहते ही नहीं.

सुन—तो क्या गांव की किसान सभा के अध्यक्ष अपने घर तक की फ़िक्र नहीं रखते ?

लियू-मा—नहीं.

सुन—क्या तुम अपने इस्तेमाल के लिये अनाज फटकती हो ?

लियू-मा—हां. मुझे तो घर के अन्दर का और बाहर का सभी काम करना पड़ता है—पानी भरना, खाना बनाना, फ़सल कटवाना, अनाज साफ़ करना, कैंग❀ पर खेलते हुये बच्चे की देख भाल करना—सभी काम तो मुझी को करना पड़ता है. ज़ियादा अनाज फटकने के लिये समय ही कहां मिलता है ?

सुन—नुक्ताचीनी करने से यदि नाराज़ न हो तो मैं यही कहूंगा कि तुम जीवन के आनन्द उठाना जानती ही नहीं हो. तुम्हारा पति किसान सभा का अध्यक्ष है. किसी किसान से कह क्यों नहीं दिया करतीं कि तुम्हारा अनाज फटक दे, फ़सल काट दे. तुम किसी भी किसान की गाड़ी लेकर फ़सल ढुलवा सकती हो और जानवर मांग कर दाना भूसा से अलग करा सकती हो. तुम को तो बस मुंह खोलने भर की आवश्यकता है. बताओ कोई इन्कार कर सकता है, तुम्हारा काम करने से ? तुम सब काम खुद करने की जगह पर मुंह खोल कर किसी से कहती क्यों नहीं कि वह तुम्हारा काम कर दे ?

❀ ईंट का बना बिस्तर जो आग से गर्म रक्खा जाता है.

اور سے سن لن کو آتا ہے. چمنی کے پاس پہونچکر وہ رک جاتا ہے اور اندر کی بات سننے لگتا ہے ۔ یکایک کمرے کی روشنی بجھ جاتی ہے اور دروازہ کھلتا ہے ۔ لیوما ہاتھ میں سوپ لئے ہوئے اسٹیج پر آتی ہے ۔ وہ مکان سے اکسمات باہر نکلتی ہے، اتہ سن اپنے کو چھپا نہیں پاتا ۔ گھومنے کا بہانا کرتا ہوا اس کے پاس آتا ہے۔]

❀ ❀ ❀

سن لن کو—تم کہاں جارہی ہو ؟

لیوما—ابھی ابھی تو اناج پھٹک پچھوڑ کر نکلی ہوں۔ [ٹوٹی رسی کو دیکھکر] یہ رسی کس نے توڑ ڈالی ؟ [دروازہ بند کر سوپ کو زمین پر ڈال وہ رسی باندھنے لگتی ہے ۔]

سن—اس چاندنی رات میں اناج پھٹکنا تو بڑا اچھا لگتا ہوگا ؟ کیا تمہارے پتی گھر میں ہیں ؟

لیوما—وہ تو روز ہی بڑے سویرے جب تارے چھٹکے رہتے ہیں تبھی چلے جاتے ہیں اور رات میں بھی دیر سے آتے ہیں ۔ اس طرح سے گھر میں تو وہ کبھی رہتے ہی نہیں ۔

سن—تو کیا گاؤں کی کسان سبھا کے ادھیکش اپنے گھر تک کی فکر نہیں رکھتے ؟

لیوما—نہیں ۔

سن—کیا تم اپنے استعمال کے لئے اناج پھٹکتی ہو ؟

لیوما—ہاں. مجھے تو گھر کے اندر کا اور باہر کا سبھی کام کرنا پڑتا ہے—پانی بھرنا، کھانا بنانا، فصل کٹوانا، اناج صاف کرنا، کھانگ❀ پر کھیلتے ہوئے بچے کی دیکھ بھال کرنا—سبھی کام تو مجھی کو کرنا پڑتا ہے ۔ زیادہ اناج پھٹکنے کے لئے سمے ہی کہاں ملتا ہے ؟

سن—نکتہ چینی کرنے سے یدی ناراض نہ ہو تو میں یہی کہونگا کہ تم جیون کے آنند اٹھانا جانتی ہی نہیں ۔ تمہارا پتی کسان سبھا کا ادھیکش ہے. کسی کسان سے کیوں نہیں کہہ دیا کرتیں کہ وہ تمہارا اناج پھٹک دے، فصل کاٹ دے ۔ تم کسی بھی کسان کی گاڑی لیکر فصل ڈھلوا سکتی ہو اور جانور مانگ کر دانا بھسا سے الگ کرا سکتی ہو ۔ تمکو تو بس منھ کھولنے کی آوشیکتا ہے ۔ بتاؤ کوئی انکار کرسکتا ہے، تمہارا کام کرنے سے ؟ تم سب کام خود کرنے کی جگہ پر منھ کھولکر کسی سے کہتی کیوں نہیں کہ وہ تمہارا کام کردے ؟

❀ اینٹ کا بنا بستر جو آگ سے گرم رکھا جاتا ہے ۔

धरती के मालिक

(लेखक—ली-चिह-हुआ
अनुवादक—कामेश्वर अग्रवाल)

[यह नाटक कई खंडों में है. इस का पहला खंड नीचे दिया जा रहा है—ऐडीटर.]

पात्र—

सुन-लिन-को—देशद्रोही जमींदार, अवस्था 50 वर्ष
लियू-मा—लियू-चेन-तुंग की पत्नी, 26 वर्ष
लियू-चेन-तुंग—गांव की किसान सभा का सदर, 29 वर्ष
चाओ-कुआंग-मिंग—62 वर्ष
मा-वची-वू—गांव की किसान सभा का नायब सदर, जमींदार सुन का दलाल, 35 वर्ष
फान-यंग-हो—गांव की स्वयं सेवक टुकड़ी का कप्तान, 26 वर्ष

गांव में रहने वाले—
चेन-तेह-फू—59 वर्ष
वांग-चान-वची—32 वर्ष
यिन-कुआन—40 वर्ष
यांग-फू—30 वर्ष
चांग-फैंग-शान—26 वर्ष
कामरेड-फैंग—32 वर्ष
किसान

समय—सन् 1946 के जाड़े का मौसम, शाम का वक़्त
स्थान—उत्तर पूर्वी चीन के स्वतंत्र क्षेत्र के एक गांव में

दृश्य—

[बाईं ओर एक छोटा सा मकान है. दर्शकों को उसकी दो दीवारें दिखाई पड़ती हैं. एक दीवार में एक दरवाज़ा और खिड़की है. पीछे की ओर दाहिने किनारे पर एक चिमनी है. घर के सामने आग जलाने की लकड़ी रक्खी है. चिमनी से खिड़की तक बंधी हुई रस्सी में हरी तरकारियां बंधी हैं. दरवाज़े पर एक रस्सी में लाल मिर्चें बंधी हैं. साफ़ मालूम देता है कि जाड़े की फ़सल कटने के दिन हैं.

दाहिनी ओर सरपत की चहारदीवारी है जिसके पीछे दूसरा मकान है.

आकाश पानी की तरह साफ़ है और चांदनी छिटकी हुई है.

पर्दा उठने पर खिड़की से थोड़ा उजाला दिखाई पड़ता है. दूर से कुत्तों के भूंकने की आवाज़ भी आ रही है. बाईं

دھرتی کے مالک

(لیکھک—لی - چہ - ھوا
انوادک—کامیشور اگروال)

[یہ ناٹک کئی کھنڈوں میں ہے . اس کا پہلا کھنڈ نیچے دیا جارہا ہے—ایڈیٹر]

پاتر

سن-لن-کو—دیش دروہی زمیندار' اوستھا 50 ورش .
لیوما—لیو - چین - تنگ کی پتنی' 26 ورش .
لیو - چین - تنگ—گاؤں کی کسان سبھا کا صدر' 29 ورش .
چاؤ - کوآنگ - منگ—62 ورش .
ماوچی وو—گاؤں کی کسان سبھا کا نائب صدر' زمیندار سن کا دلال' 35 ورش .
فان ینگ ہو—گاؤں کی سویم سیوک ٹکڑی کا کپتان' 26 ورش .

گاؤں میں رہنے والے—
چین - تیہ - فو—59 ورش
وانگ-چان وچی—32 ورش
ین کوان—40 ورش
یانگ فو—30 ورش
چانگ فینگ شان—26 ورش
کامریڈ فینگ—32 ورش
کسان

سمے—سن 1946 کے جاڑے کا موسم' شام کا وقت .
استھان—اتر پوربی چین کے سوتنتر چھیتر کے ایک گاؤں میں.

درشیہ—

[بائیں اور ایک چھوٹا سا مکان ہے . درشکوں کو اسکی دو دیواریں دکھائی پڑتی ہیں . ایک دیوار میں ایک دروازہ اور کھڑکی ہے . پیچھے کی اور داہنے کنارے پر ایک چمنی ہے . گھر کے سامنے آگ جلانے کی لکڑی رکھی ہے. چمنی سے کھڑکی تک بندھی ہوئی رسی میں ہری ترکاریاں بندھی ہیں . دروازے پر ایک رسی میں لال مرچیں بندھی ہیں . صاف معلوم دیتا ہے کہ جاڑے کی فصل کٹنے کے دن ہیں .

داہنی اور سرپت کی چہاردیواری ہے جس کے پیچھے دوسرا مکان ہے .

آکاش پانی کی طرح صاف ہے اور چاندنی چھٹکی ہوئی ہے .

پردہ اٹھنے پر کھڑکی سے تھوڑا اجالا دکھائی پڑتا ہے . دور سے کتوں کے بھونکنے کی آواز بھی آ رہی ہے . بائیں

लिया. आज तंग होकर किसी दाम पर ही यह कुर्सियां बेचने निकला हूं……"

मेरा हृदय सहानुभूति से भर गया. मेरी आंखों में आंसू से आ गए. मैंने उस से कहा—"मुझे कुर्सी की जरूरत नहीं है, मैं कम दाम देकर तुम्हारा गला नहीं काटना चाहता. लेकिन यह दो रुपये मेरी तरफ से इनाम ले जाओ."

वह चुप खड़ा रहा. मैं उसे दो रुपये निकाल कर देने लगा. उसने लेने से इन्कार कर दिया और बोला—"मैंने आज तक भीक नहीं मांगी. मैं अपने हाथ पैर पर भरोसा रखता हूं. हराम का खाना नहीं चाहता."

मैंने कहा—"यह भीक थोड़े ही है. मैं तुम को इनाम दे रहा हूं."

"नाम कुछ दे दीजिये. यह भीक के सिवा कुछ नहीं है. मैं भीक हरगिज़ नहीं ले सकता."

"अच्छा यह दो रुपया उधार ले जाओ और जब तुम्हारे पास पैसे हों तो मुझे वापिस कर जाना"—मैंने उससे कहा.

वह इस बात पर राज़ी हो गया. मुझ से दो रुपया ले गया और ज़िद कर के अपना नाम और पता लिखा गया. चार पांच दिन ही हुए वह मेरे पास फिर गया था और रुपया लौटा आया था. मैंने बहुत कहा लेकिन वह नहीं माना.

"तो यह वह लोग हैं जो सुन्दर कुर्सियां बनाते हैं, जिन्हें उपहार देने के योग्य समझा जाता है, जिन से ड्राइंग रूम सजाया जाता है, जिनकी सुन्दरता की प्रशंसा की जाती है." निरूपमा ने आंसू पोंछते हुए कहा.

"हां, निरूपमा, यह वही लोग हैं."

मेरी आंखें उसके मुखड़े पर गड़ी थीं. उसकी बड़ी बड़ी आंखें मेरी तरफ घूमीं. उनमें मुझे रोष की चिंगारियां जलती दिखाई पड़ीं. कुछ करने का उत्साह उस में पैदा हो रहा था. उसने धीरे से कहा—

"मैं सब कुछ समझ गई."

पत्थरबाई मर गई, वास्तविक निरूपमा ने जन्म लिया.

—सुशील त्रिपाठी

ملا. آج تنگ ہوکر کسی دام پر ہی یہ کرسیاں بیچنے نکلا ہوں……"

میرا ہردے سہانوبھوتی سے بھر گیا. میری آنکھوں میں آنسو سے آ گئے. میں نے اُس سے کہا—"مجھے کرسی کی ضرورت نہیں ہے. میں کم دام دے کر تمہارا گلا نہیں کاٹنا چاہتا. لیکن یہ دو روپئے میری طرف سے انعام لے جاؤ."

وہ چپ کھڑا رہا. میں اسے دو روپئے نکال کر دینے لگا. اُس نے لینے سے اِنکار کر دیا اور بولا—"میں نے آج تک بھیک نہیں مانگی. میں اپنے ہاتھ پیر پر بھروسہ رکھتا ہوں. حرام کا کھانا نہیں چاہتا."

میں نے کہا—"یہ بھیک تھوڑے ہی ہے. میں تم کو انعام دے رہا ہوں."

"نام کچھ دے دیجئے. یہ بھیک کے سوا کچھ نہیں ہے. میں بھیک ہرگز نہیں لے سکتا."

"اچھا یہ دو روپیہ اُدھار لے جاؤ اور جب تمہارے پاس پیسے ہوں تو مجھے واپس کر جانا" میں نے اُس سے کہا.

وہ اس بات پر راضی ہو گیا. مجھ سے دو روپیہ لے گیا اور ضد کر کے اپنا نام اور پتہ لکھا گیا. چار پانچ دن ہی ہوئے یہ میرے پاس پھر گیا تھا اور روپیہ لوٹا آیا تھا. میں نے بہت کہا لیکن وہ نہیں مانا.

"تو یہ وہ لوگ ہیں جو سندر کرسیاں بناتے ہیں، جنہیں اُپہار دینے کے یوگیہ سمجھا جاتا ہے، جن سے ڈرائنگ روم سجایا جاتا ہے، جن کی سندرتا کی پرشنسا کی جاتی ہے." نروپما نے آنسو پونچھتے ہوئے کہا.

"ہاں، نروپما، یہ وہی لوگ ہیں."

میری آنکھیں اس کے مکھڑے پر گڑی تھیں. اسکی بڑی بڑی انکھیں میری طرف گھومیں. ان میں مجھے روش کی چنگاریاں جلتی دکھائی پڑیں. کچھ کرنے کا اُتساہ اُس میں پیدا ہو رہا تھا. اُس نے دھیرے سے کہا—

"میں سب کچھ سمجھ گئی."

پتھربائی مر گئی، واستوک نروپما نے جنم لیا.

—مجیب رضوی

निरूपमा मुझे साथ लेकर उसके घर में घुस गई. यह कोई घर नहीं था, कोई कैम्प भी नहीं था. बांस की कमांचियों को गाड़ गाड़ कर दीवार बनाई गई थी. ऊपर ताड़ के पत्तों की छत बना दी गई थी. बाहर से मिट्टी के लोंदों से कमांची को छुपा दिया गया था इस कमरे की लम्बाई शायद सात फ़िट और चौड़ाई चार फ़िट रही होगी. मेरे और निरूपमा के एक साथ घुसने के लिये वहां जगह नहीं थी किन्तु इसी घर में पूरा परिवार रहता है, इसी में तो इनका गुज़र होता है. एक कोने में एक मिट्टी की हंडियां किसी की ठोकर खा कर फूटी पड़ी थी. कुछ चने के दाने इधर उधर बिखर गए थे. लाश पर एक मैली फटी धोती पड़ी हुई थी. निरूपमा ने उस धोती को हटाया. उस का मुंह दिखाई पड़ गया. मैं चीख़ पड़ा—अरे! यह तो ननकू है. अरे यह बेचारा मर गया!

निरूपमा ने लाश बन्द कर दी और वह बाहर आ गई. बच्चा अभी तक रो रहा था. मरने वाली की बीबी रो रही थी. एक नए पैदा बच्चे को गोद में लिये एक नौजवान औरत रो रही थी. निरूपमा भी रो रही थी. शायद वातावरन भी रो रहा था. सब का रोना बेकार था. रोने से यह समस्या हल नहीं हो सकती थी. निरूपमा ने मुझ से पूछा—"क्या तुम इस आदमी को जानते हो?"

"हां, इस का नाम ननकू है. एक दिन मैं अपने कमरे में बैठा था. रात के दस बजे हुए थे. किसी ने मेरा दरवाज़ा खटखटाया. मैंने जब खोला तो देखा कि यह आदमी बेत की कुर्सियां लिये खड़ा है. इसने मुझे देखते ही कहा—"बाबू जी! बड़ी अच्छी कुर्सियां हैं, ले लीजिये."

मैंने कहा—"नहीं, मुझे कुर्सियां नहीं चाहिये."

कुर्सियां रख कर यह आदमी मेरे पैर पर गिर पड़ा और बोला—कौड़ी के मोल ले लीजिये बाबू जी! जो आप दे देंगे वही मैं लेकर चला जाऊंगा.

मुझे बड़ा गुस्सा आया और उसको अपने पैर से हटाते हुए मैंने कहा—"तुम्हें लज्जा नहीं आती? तुम अपनी चीज़ बेचते हो, कोई भीक तो मांगते नहीं हो. तुम्हें यह सब नहीं करना चाहिये."

"लेकिन बाबू जी, हमें तो बेचने के लिये भी भीक ही मांगना पड़ता है. समय को क्या किया जाय. हमारा भाग्य ही ऐसा है, क्या करें...बाबू जी......आप ले लीजिये."

मैंने सोचा इसने शराब पी रक्खी है. मैंने उसे झिड़का—"जाओ भी यहां से. शराब पी कर आ जाते हैं दिमाग़ ख़राब करने."

"नहीं बाबू जी! मैंने शराब नहीं पी......भूक सता रही है. मैं भूका हूं. दो रोज़ से घर में खाने को नहीं है. कोई ख़रीदने वाला नहीं

نروپما مجھے ساتھ لے کر اس کے گھر میں گھس گئی. یہ کوئی گھر نہیں تھا. کوئی کیمپ بھی نہیں تھا. بانس کی کمانچیوں کو گاڑ گاڑ کر دیوار بنائی گئی تھی. اوپر تاڑ کے پتوں کی چھت بنا دی گئی تھی. باہر سے مٹی کے لوندوں سے کمانچی کو چھپا دیا گیا تھا. اس کمرے کی لمبائی شاید سات فٹ اور چوڑائی چار فٹ رہی ہوگی. میرے اور نروپما کے ایک ساتھ گھسنے کے لئے وہاں جگہ نہیں تھی لیکن اسی گھر میں پورا پریوار رہتا ہے، اسی میں تو ان کا گذر ہوتا ہے - ایک کونے میں ایک مٹی کی ہنڈیا کسی کی ٹھوکر کھا کر پھوٹی پڑی تھی. کچھ چنے کے دانے ادھر بکھر گئے تھے. لاش پر ایک میلی پھٹی دھوتی پڑی ہوئی تھی. نروپما نے اس دھوتی کو ہٹایا، اس کا منہ دکھائی پڑ گیا. میں چیخ پڑا—ارے! یہ تو ننکو ہے، ارے یہ بیچارا مر گیا!

نروپما نے لاش بند کر دی اور وہ باہر آ گئی. بچہ ابھی تک رو رہا تھا. مرنے والی کی بی بی رو رہی تھی. ایک نئے پیدا بچے کو گود میں لئے ایک نوجوان عورت رو رہی تھی. نروپما بھی رو رہی تھی. شاید واتاورن بھی رو رہا تھا. سب کا رونا بیکار تھا. رونے سے یہ سمسیا حل نہیں ہو سکتی تھی. نروپما نے مجھ سے پوچھا—"کیا تم اس آدمی کو جانتے ہو؟"

"ہاں، اسکا نام ننکو ہے. ایک دن میں اپنے کمرے میں بیٹھا تھا. رات کے دس بجے ہوئے تھے. کسی نے میرا دروازہ کھٹکھٹایا. میں نے جب کھولا تو دیکھا کہ یہ آدمی بینت کی کرسیاں لئے کھڑا ہے. اس نے مجھے دیکھتے ہی کہا—" بابو جی! بڑی اچھی کرسیاں ہیں. لے لیجئے."

میں نے کہا—"نہیں، مجھے کرسیاں نہیں چاہئے."

کرسیاں رکھکر یہ آدمی میرے پیر پر گر پڑا اور بولا—"کوڑی کے مول لے لیجئے بابو جی! جو آپ دینگے وہی میں لے کر چلا جاؤنگا."

مجھے غصہ آیا اور اس کو اپنے پیر سے ہٹاتے ہوئے میں نے کہا—" تمہیں لجا نہیں آتی؟ تم اپنی چیز بیچتے ہو، کوئی بھیک تو مانگتے نہیں ہو. تمہیں یہ سب نہیں کرنا چاہئے."

" لیکن بابو جی، ہمیں تو بیچنے کے لئے بھی بھیک ہی مانگنا پڑتا ہے. سمے کو کیا کیا جائے. ہمارا بھاگیہ ہی ایسا ہے، کیا کریں......بابو جی......آپ لے لیجئے."

میں نے سوچا اس نے شراب پی رکھی ہے اور میں نے اسے جھڑکا—"جاؤ بھی یہاں سے. شراب پی کر آ جاتے ہیں دماغ خراب کرنے."

" نہیں بابو جی! میں نے شراب نہیں پی...... بھوک ستا رہی ہے. بھوکا ہوں دو روز سے. گھر میں کھانے کو نہیں ہے. کوئی خریدنے والا نہیں

रहते है. न इन के घर होता है, न इन को पेट भर खाने को मिलता है. फिर भी यह जिन्दा रहते हैं. मृत्यु भी कोई सुलभ वस्तु नहीं है. किन्तु मौत का बाज भूले भटके गुज़र यहां हो गया था. लोग रो रहे थे, ढाढ़ें मार रहे थे, औरतें सर पीट रहीं थीं और बच्चे हलक फाड़ रहे थे.

निरूपमा कुछ समय तक इस परिस्थिति को आंखें फाड़ फाड़ कर बेचैनी से देखती रही. उस से रहा न गया और बोल ही पड़ी—

"यह लोग कौन हैं? कौन इन का मर गया है? आओ इन के बीच में चलें" उसके स्वर में आंसू थे.

मैं जानता था यह कौन हैं, क्या करते हैं. मैं इनके बीच में आ चुका था, मैंने इन की बातें सुनीं थीं. परन्तु मैंने निरूपमा को कुछ बताना उचित नहीं समझा और बिना कुछ कहे उसके साथ हो लिया.

निरूपमा का मुंह अब इस तरह का बन गया था जैसे उसका कोई सगा मर गया हो. वह ढाल पर से मेरा हाथ पकड़े तेज़ी से उतरने लगी. उन लोगों के क़रीब पहुंच जाने पर सब से पहले एक रोता हुआ बच्चा उसके सामने पड़ा. वह नंगा था और गन्दा था. निरूपमा ने कोई परवाह नहीं की. बिना किसी झिझक के उसको गोद में उठा लिया. उसका दुपट्टा धूल धूसरित हो गया. आगे बढ़ कर उसने एक महिला से पूछा—"कौन आदमी मर गया है?"

महिला ने कहा—"यह मेरा बच्चा है. मेरा आदमी बहू जी गुज़र गया, अब कोई सहारा नहीं है. मेरा सब कुछ लुट गया......" कहते कहते उसने एक चीख मारी और अपने हाथ सर पर मारने लगी.

निरूपमा ने बच्चा मेरी तरफ़ बढ़ा दिया और खुद उस औरत को समझाने लगी. उसने पूछना आरम्भ किया "आखिर उसकी मौत कैसे हो गई?"

वह औरत बैठ गई थी. अपने सर को हाथ से थामे थी. निरूपमा भी उसी के साथ ओस से गीली मिट्टी पर बैठ गई. उस औरत ने कहा—"रात बड़ी सर्दी पड़ी थी...आप लोगों को का पता!......गरम कमरे में रहत हैं ना!... मोरे बिटिया की जोचर हुई है......जो कुछ पुवाल सुवाल पास था वह उस को दे दिये थे......उघरी ज़मीन पर रात को सोना पड़ा. ओढ़ना तो भाग्य में लिखा ही नहीं है. रात को सोए, सुबह अकड़े ही रह गए. सर्दी बतास ने उनकी जान ही ले ली" और वह फिर ढाढ़ें मार मार कर रोने लगी.

वह बच्चा मेरी गोद में सुबक कर रो पड़ा. मेरे भी आंसू छलक पड़े. मेरी नज़र निरूपमा के चेहरे पर गई, वह फूट फूट कर रो रही थी.

رہتے ہیں، نہ اِن کے گھر ہوتا ہے نہ اِن کو پیٹ بھر کھانے کو ملتا ہے۔ پھر بھی یہ زندہ رہتے ہیں۔ مرتیو بھی کوئی سلبھ وستو نہیں ہے ۔ کنتو موت کا آج بھولے بھٹکے گذر یہاں ہو گیا تھا ۔ لوگ رو رہے تھے' ڈھاڑیں مار رہے تھے' عورتیں سر پیٹ رہیں تھیں اور بچے حلق پھاڑ رہے تھے ۔

نیروپما کچھ سمے تک اُس پرستھتی کو آنکھیں پھاڑ پھاڑ کر بے چینی سے دیکھتی رہی ۔ اُس سے رہا نہ گیا اور بول ہی پڑی—

" یہ لوگ کون ہیں ؟ کون اِن کا مر گیا ہے ؟ آؤ اِن کے بیچ میں چلیں ." اُس کے سور میں آنسو تھے۔

میں جانتا تھا یہ کون ہیں' کیا کرتے ہیں ۔ میں اِن کے بیچ میں جا چکا تھا' میں نے اِن کی باتیں سنی تھیں ۔ پرنتو میں نے نیروپما کو کچھ بتانا اُچت نہیں سمجھا اور بنا کچھ کہے اُس کے ساتھ ہو لیا ۔

نیروپما کا منھ اب اِس طرح کا بن گیا تھا جیسے اُس کا کوئی سگا مر گیا ہو ۔ وہ ڈھال پر سے میرا ہاتھ پکڑے تیزی سے اُترنے لگی ۔ اُن لوگوں کے قریب پہنچ جانے پر سب سے پہلے ایک روتا ہوا بچہ اُس کے سامنے پڑا ۔ وہ ننگا تھا اور گندا تھا ۔ نیروپما نے کوئی پرواہ نہیں کی ۔ بنا کسی جھجھک کے اُس کو گود میں اُٹھا لیا ۔ اُس کا دوپٹہ دھول دھوسرت ہو گیا ۔ آگے بڑھ کر اُس نے ایک مہلا سے پوچھا—"کون آدمی مر گیا ہے ؟"

مہلا نے کہا—" یہ میرا بچہ ہے ۔ میرا آدمی بہو جی گذر گیا' اب کوئی سہارا نہیں ہے ۔ میرا سب کچھ لٹ گیا....." کہتے کہتے اُس نے ایک چیخ ماری اور ہاتھ سر پر مارنے لگی ۔

نیروپما نے بچہ میری طرف بڑھا دیا اور خود اُس عورت کو سمجھانے لگی ۔ اُس نے پوچھنا آرمبھ کیا— آخر اُسکی موت کیسے ہو گئی ؟"

وہ عورت بیٹھ گئی تھی ۔ اپنے سر کو ہاتھ سے تھامے تھی ۔ نیروپما بھی اُسی کے ساتھ اوس سے گیلی مٹی پر بیٹھ گئی ۔ اُس عورت نے کہا—" رات بڑی سردی پڑی تھی ... آپ لوگوں کو کا پتہ......گرم کمرہ میں رہت ہیں نا ! ... مورے بٹیا کی سوور ہوئی ہے......جو کچھ پوال سوال پاس تھا وہ اُس کو دے دیئے تھے......اُگھری زمین پر رات کو سونا پڑا ۔ اوڑھنا تو بھاگیہ میں لکھا ہی نہیں ہے ۔ رات کو سوئے' صبح اکڑے ہی رہ گئے ۔ سردی بتاس نے اُن کی جان ہی لے لی ." اور وہ پھر ڈھاڑیں مار مار کر رونے لگی ۔

وہ بچہ میری گود میں سسک کر رو پڑا ۔ میرے بھی آنسو چھلک پڑے ۔ میری نظر نیروپما کے چہرے پر گئی وہ پھوٹ پھوٹ کر رو رہی تھی ۔

मन के बाट से तौली जाती है. आप ही बताइये कला का मूल्य कोई आज तक आंक सका है......कलाकार को पेट के लिये आज सब कुछ सहना पड़ता है......"

"तुम कुछ भी कहो मेरी समझ में कुछ नहीं आता......"

मैंने बात काट कर कहा—"आप की समझ में आएगा ज़रूर लेकिन आप ही आप आएगा. मेरे बताने से नहीं आएगा......मुझे जल्दी भी नहीं है......"

अच्छा छोड़ो भी......चलो नाश्ता कर आएं" निरूपमा ने गम्भीर स्वर में कहा. उसके मुख के भाव से ऐसा लग रहा था जैसे उसके दिमाग़ में द्वंद हो रहा हो.

हम दोनों नाश्ता करते रहे. निरूपमा कहीं शून्यता में खोई हुई थी. वह चुप थी. मैं भी शान्त रहा. कुछ देर के पश्चात मैंने कहा—

"आप का उपहार तो मुझे मिल गया. बताइये मैं आप को क्या भेंट कर सकता हूं."

"जो आप का मन चाहे," उसका यह निर्जीव उत्तर था.

"मैं आप को कोई निराला उपहार दूंगा—तुम ही कह न उठो कि बस इस से अधिक अच्छा उपहार क्या हो सकता है तो मज़ा ही क्या है.... मैं सोचता हूं कि तुम्हें ऐसा उपहार दूं जो तुम से कभी अलग न हो सके."

मैं कहने को तो कह गया लेकिन मेरे दिमाग़ में भी नहीं था कि मैं इस तरह का कौन सा उपहार दे सकता हूं. मैं स्वयं विचारों में खो गया. किस तरह से हम दोनों ने नाश्ता समाप्त किया और किस तरह से वहां से उठ कर क्लास में चले गए मैं नहीं बता सकता.

समय बीतता गया. कालिज का भी रंग बदलता रहा. एक लड़की का मानीटर होना नई बात थी. तमाम इस की चर्चा थी. निरूपमा जब भी उदास होती मेरे पास आ जाती थी. कई बार उसने कहा था—"तुम से बात करके मुझे शान्ति मिलती है."

एक दिन सात बजे से पहले ही वह मेरे कमरे में आ गई और बोली—'मुझे नाव चाहिये, चल कर किसी मल्लाह से तय करा दो." मैं बिना नहाए धोए उसके साथ चल दिया. गऊघाट में श्यामलाल मल्लाह रहता था. मैं उसको अच्छी तरह जानता था. हम लोग श्यामलाल के घर पर पहुंचे. वहां वह मौजूद नहीं था. उसके भाई ने बताया कि पुल पर वह बैठा किसी से गप मार रहा है. मैं और निरूपमा लम्बे डग भरते हुए पुल पर पहुंच गए. श्यामलाल मिल गया. लेकिन वहां रोने पीटने की आवाज़ सुनाई देने लगी. रेलवे पुल के नीचे निचली ज़मीन है. बरसात में वहां खूब पानी भर जाता है, फिर भी मनुष्य को गुज़ारा करना ही पड़ता है. इन्हीं जगहों पर मनुष्य

دمن کے باٹ سے تولی جاتی ہے . آپ ہی بتائیے کلا کا مول کوئی آج تک آنک سکا ہے......کلاکار کو پیٹ کے لئے آج سب کچھ سہنا پڑتا ہے......"

"تم کچھ بھی کہو میری سمجھ میں کچھ نہیں آتا......"

میں نے بات کاٹ کر کہا—"آپکی سمجھ میں آئیگا ضرور لیکن آپ ہی آپ آئیگا. میرے بتانے سے نہیں آئیگا . ...مجھے جلدی بھی نہیں ہے......"

اچھا چھوڑو بھی......چلو ناشتہ کر آئیں . نروپما نے گمبھیر سور میں کہا. اس کے مکھ کے بھاو سے ایسا لگ رہا تھا جیسے اس کے دماغ میں دوند ہو رہا ہو .

ہم دونوں ناشتہ کرتے رہے . نروپما کہیں شونیتا میں کھوئی ہوئی تھی. وہ چپ تھی . میں بھی شانت رہا . کچھ دیر کے پشچات میں نے کہا—

"آپ کا اپہار تو مجھے مل گیا . بتایئے میں آپ کو کیا بھینٹ کر سکتا ہوں ."

"جو آپ کا من چاہے،" اسکا یہ نرجیو اتر تھا .

"میں آپکو کوئی نرالا اپہار دونگا—تم ہی کہہ نہ اٹھو کہ بس اس سے ادھک اچھا اپہار کیا ہو سکتا ہے تو مزہ ہی کیا ہے......میں سوچتا ہوں کہ تمہیں ایسا اپہار دوں جو تم سے کبھی الگ نہ ہوسکے ."

میں کہنے کو تو کہہ گیا لیکن میرے دماغ میں بھی نہیں تھا کہ میں اس طرح کا کون سا اپہار دے سکتا ہوں . میں سویم وچاروں میں کھو گیا . کس طرح سے ہم دونوں نے ناشتہ سماپت کیا اور کس طرح سے وہاں سے اٹھکر کلاس میں چلے گئے میں نہیں بتا سکتا .

سمے بیتتا گیا . کالج کا بھی رنگ بدلتا رہا . ایک لڑکی کا مانیٹر ہونا نئی بات تھی. تمام اسکی چرچا تھی. نروپما جب بھی اداس ہوتی میرے پاس آ جاتی تھی . کئی بار اس نے کہا تھا—" تم سے بات کر کے مجھے شانتی ملتی ہے ."

ایک دن سات بجے سے پہلے ہی وہ میرے کمرے میں آ گئی اور بولی—" مجھے ناؤ چاہئے' چل کر کسی ملاح سے طے کرا دو ." میں بنا نہائے دھوئے اس کے ساتھ چل دیا . گؤگھاٹ میں شیام لال ملاح رہتا تھا . میں اسکو اچھی طرح جانتا تھا. ہم لوگ شیام لال کے گھر پر پہونچے. وہاں وہ موجود نہیں تھا . اس کے بھائی نے بتایا کہ پل پر وہ بیٹھا کسی سے گپ مار رہا ہے . میں اور نروپما لمبے ڈگ بھرتے ہوئے پل پر پہونچ گئے. شیام لال مل گیا . لیکن وہاں رونے پیٹنے کی آواز سنائی دینے لگی . ریلوے پل کے نیچے نچلی زمین ہے . برسات میں یہاں خوب پانی بھر جاتا ہے . پھر بھی منوشیہ کو گزارا کرنا ہی پڑتا ہے . انہیں جگہوں پر منوشیہ

की जगह केवल सूअर बाड़े होते हैं. एक ही कमरे में उनके जीवन की धुरी घूमती है. उसी में मां बेटी, बहन भाई, बाप बेटे सब रह लेते हैं—कीड़े मकूड़े भी तो एक सूराख में रह लेते हैं. जिन क़ालीनों पर आप पैर पोंछती हैं उन्हें वह स्वप्न में भी कभी नहीं मिलते......आपके इस कलाकार की बीवी नंगी रहती है. आप रोज़ कपड़े बदलती हैं. आप पौडर लगाती हैं, वह धूल मलती है. आपकी सोसाइटी की लड़कियां छाती खोल कर रखना चाहती हैं क्योंकि यह भी एक फ़ैशन है, लेकिन कलाकार की पत्नी को इसलिये अर्धनग्न रहना पड़ता है क्योंकि उसके पास कपड़े नहीं हैं. इनके बच्चे भी पैदा होते हैं, लेकिन वैसे ही पैदा होते और जीते हैं जैसे गोबर से पैदा हुआ गोबरौड़ा ! समझीं आप, मिस निरूपमा.''

निरूपमा मेरी बात ध्यान पूर्वक सुन रही थी. उसका मुखड़ा गम्भीर से गम्भीरतर होता जा रहा था. एक बार तो मुझे ऐसा लगा था कि वह बस रोने ही वाली है. मेरी बातें उसे तड़पा रही थीं. मैंने उसका असली स्वभाव जाग्रत कर दिया था. मैं बोलते बोलते चुप हो गया. उसकी तरफ़ नज़र डाली. वह फ़र्श पर कुर्सी का पाया थामे बैठी थी. मेरी डायरी उसके हाथ में थी. सारे कमरे में कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा. फिर निरूपमा ने मुंह खोला. मुझे ऐसा लगा जैसे किसी सुनसान मन्दिर में पत्थर की मूर्ति अकस्मात बोलने लगी हो.

"जिसके हाथ में कोई कला हो वह कैसे भूकों मर सकता है, जो अपने हाथों से काम करता है उसकी यह दुर्दशा कैसे हो सकती है ? मेरी समझ में नहीं आता. एक आदमी दो दिन में एक कुर्सी ज़रूर बना सकता है. एक कुर्सी के दाम आठ रुपए होते हैं. यदि पांच रुपया बेत आदि का दाम निकाल दिया जाय तो भी बुनने वाले को डेढ़ रुपये की आमदनी हो सकती है" निरूपमा ने उसी उदास भाव से कहा.

"निरूपमा देवी ! आप बड़ी भोली मालूम होती हैं. कलाकार केवल अगर कला की रचना कर के छुट्टी पा जाए और पैसे उसको मिल जाएं तो फिर बात ही क्या है. इस युग में कला स्वतंत्र नहीं है. कला धन के अंकुश में है. यदि कलाकार के पास इतने पैसे न हों कि वह स्वयं कच्चा सामान ख़रीद सके तो उसको उधार लेना पड़ता है. इस क़र्ज़ का सूद वह हमेशा अदा करता है. उसका बेटा भुगतान भरता है. पीढ़ियों तक छुटकारा नहीं मिलता. फिर ख़रीदने वालों पर भी उसकी कला निर्भर है. यदि ख़रीदार कम दाम देने पर ही तुल जाएं तो वह बेचारा कैसे ज़िन्दा रह सकता है. आप उसकी कला का दाम केवल आठ रुपया आंकती हैं. इस युग में हर वस्तु

کی جگہ کیول سور باڑے ہوتے ہیں۔ ایک ہی کمرے میں ان کے جیون کی دھری گھومتی ہے۔ اسی میں ماں بیٹی، بہن بھائی، باپ بیٹے سب رہ لیتے ہیں—کیڑے مکوڑے بھی تو ایک سوراخ میں رہ لیتے ہیں۔ جن قالینوں پر آپ پیر پونچھتی ہیں انہیں وہ سوپن میں بھی کبھی نہیں ملتے......آپ کے اس کلاکار کی بی بی ننگی رہتی ہے۔ آپ روز کپڑے بدلتی ہیں۔ آپ پاؤڈر لگاتی ہیں، وہ دھول ملتی ہیں، آپکی سوسائٹی کی لڑکیاں چھاتی کھول کر رکھنا چاہتی ہیں کیونکہ یہ بھی ایک فیشن ہے لیکن کلاکار کی پتنی کو اس لئے اردھ ننگن رہنا پڑتا ہے کیونکہ اس کے پاس کپڑے نہیں ہیں۔ ان کے بچے بھی پیدا ہوتے ہیں لیکن ویسے ہی پیدا ہوتے اور جیتے ہیں جیسے گوبر سے پیدا ہوا گوبروڑا ! سمجھیں آپ، مس نروپما۔"

نروپما میری بات دھیان پوروک سن رہی تھی۔ اسکا مکھڑا گمبھیر سے گمبھیرتر ہوتا جا رہا تھا۔ ایک بار تو مجھے ایسا لگا تھا کہ وہ بس رونے ہی والی ہے۔ میری باتیں اسے تڑپا رہی تھیں۔ میں نے اسکا اصلی سوبھاؤ جاگرت کر دیا تھا۔ میں بولتے بولتے چپ ہو گیا۔ اسکی طرف نظر ڈالی وہ فرش پر کرسی کا پایہ تھامے بیٹھی تھی۔ میری ڈائری اس کے ہاتھ میں تھی۔ سارے کمرے میں کچھ دیر تک سناٹا چھایا رہا۔ پھر نروپما نے منہ کھولا۔ مجھے ایسا لگا جیسے کسی سنسان مندر میں پتھر کی مورتی اکسمات بولنے لگی ہو۔

"جس کے ہاتھ میں کوئی کلا ہو وہ کیسے بھوکوں مر سکتا ہے، جو اپنے ہاتھوں سے کام کرتا ہے اسکی یہ دردشا کیسے ہو سکتی ہے ؟ میری سمجھ میں نہیں آتا۔ ایک آدمی دو دن میں ایک کرسی ضرور بنا سکتا ہے۔ ایک کرسی کے دام آٹھ روپئے ہوتے ہیں۔ یدی پانچ روپیہ بیت آدی کا دام نکال دیا جائے تو بھی بننے والے کو ڈیڑھ روپیہ کی آمدنی ہو سکتی ہے" نروپما نے اسی اداس بھاؤ سے کہا۔

"نروپما دیوی ! آپ بڑی بھولی معلوم ہوتی ہیں۔ کلاکار کیول اگر کلا کی رچنا کر کے چھٹی پا جائے اور پیسے اسکو مل جائیں تو پھر بات ہی کیا ہے۔ اس یگ میں کلا سوتنتر نہیں ہے۔ کلا دھن کے انکش میں ہے۔ یدی کلاکار کے پاس اتنے پیسے نہ ہوں کہ وہ سویم کچا سامان خرید سکے تو اس کو ادھار لینا پڑتا ہے۔ اس قرض کا سود وہ ہمیشہ ادا کرتا ہے۔ اسکا بیٹا بھگتان بھرتا ہے۔ پیڑھیوں تک چھٹکارا نہیں ملتا۔ پھر خریدنے والوں پر بھی کلا نربھر ہے۔ یدی خریدار کم دام دینے پر ہی تل گئیں تو وہ بیچارا کیسے زندہ رہ سکتا ہے۔ آپ اسکی کلا کا دام کیول آٹھ روپیہ آنکتی ہیں۔ اس یگ میں ہر وستو

लिया. देखो, मुंह क्या बना रहे हो. मैंने सोचा तुम्हें जन्म दिन पर कोई उपहार नहीं देता, मैं ही दिल रख लूं. कहीं नन्हा सा दिल टूट जाएगा तो राज़ब ही हो जाएगा...... बहुत ही सुन्दर है. जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें दूं लेकिन अब दे देने के बाद वापिस लेने को भी मन नहीं चाहता......"

"जी, आप मेरी तरफ़ से धन्यवाद के पिटारे भी ले जा सकती हैं और यह उपहार भी. अगर आपको यह चीज़ें इतनी पसन्द हैं तो आप अपना दिल क्यों छोटा करती हैं? दिल कुढ़ाने से बहुत नुक़सान होता है......"

"देखो भी क्या ख़ूबसूरत बनावट है. किसी की चंचल उंगलियों ने कितना सुन्दर रूप दिया है. बस मन चाहता है कि बैठी इसी की तारीफ़ किया करूं......वह उंगलियां कितनी सुन्दर होंगी जिन्होंने इस कुर्सी को बनाया है. वह वातावरन कितना सुन्दर होगा जिसमें इस कला को जन्म दिया गया है......देखो भी, इसकी लकीर लकीर बोल उठी है......" निरूपमा की आंखों में भाव भर गए थे. उसकी आंखें चमक उठी थीं और मुंह से हंसी ग़ायब हो गई थी.

उसकी हालत देख कर मेरे दिल पर भी प्रभाव पड़ा. जीवन में पहली बार मैंने उस कुर्सी में छुपी सुन्दरता की तरफ़ ध्यान दिया. मैं उस पर सोचता रहा और निरूपमा कहती गई. लेकिन कुर्सी तक ही मैं नहीं रुका. कुर्सी बुनने वाले का जीवन मेरे सामने नाच गया. मैं इन कलाकारों की ग़रीबी का ध्यान करके बेचैन हो उठा. मैंने निरूपमा को उसके मौन तनमयता से झिंझोड़ते हुए कहा—

"मिस निरूपमा, यह लकीरें बोल तो ज़रूर रही हैं लेकिन इनकी कहानी हर व्यक्ति नहीं समझ सकता यह बता रही हैं कि इनमें जान डालने वाली उंगलियां बेहद भद्दी हैं, काली हैं और गन्दी हैं. जिन हाथों ने इस कुर्सी को सुन्दरता दी है उसने सुन्दरता का अनुभव कभी नहीं किया. जिस वातावरन में यह कुर्सियां बनी हैं वहां सुन्दरता दूर दूर तक निवास नहीं करती. जिन्होंने यह कुर्सियां बनाई हैं, सौन्दर्य की सृष्टि की है, वह भूके हैं, नंगे हैं, बेघर हैं, बेसहारा हैं!......"

"यह कभी नहीं हो सकता. जो सुन्दरता को जन्म दे सकता है वह सुन्दरता से दूर कैसे रह सकता है. मैं बिलकुल नहीं मान सकती कि उनका जीवन सुन्दर नहीं है" निरूपमा ने आवेश में कहा. उसकी मुद्रा से ऐसा मालूम हो रहा था जैसे कि मेरी बातों का उसे विश्वास न हो रहा हो.

"शायद आपने इन कलाकारों के घरों को कभी नहीं देखा. लेकिन मैंने देखा है. आप अपनी रंगीन दुनिया से बाहर नहीं गईं. आप के जीवन से परे भी एक जीवन है—मनुष्य रूपी जन्तुओं का! आपके ड्राइंग रूम को जिनकी बनाई और बुनी चीज़ें शोभा देती हैं उनके पास मकान

لیا۔ دیکھو، منہ کیا بنا رہے ہو۔ میں نے سوچا تمہیں جنم دن پر کوئی اپہار نہیں دیتا، میں ہی دل رکھ لوں۔ کہیں ننھا سا دل ٹوٹ جائیگا تو غضب ہی ہو جائیگا ......بہت ہی سندر ہے۔ جی تو نہیں چاہتا کہ تمہیں دوں لیکن اب دے دینے کے بعد واپس لینے کو بھی من نہیں چاہتا......"

"جی، آپ میری طرف سے دھنیہ واد کے پٹارے بھی لے جا سکتی ہیں اور یہ اپہار بھی۔ اگر آپکو یہ چیزیں اتنی پسند ہیں تو آپ اپنا دل کیوں چھوٹا کرتی ہیں؟ دل کڑھانے سے بہت نقصان ہوتا ہے......"

"دیکھو بھی کیا خوبصورت بناوٹ ہے۔ کسی کی چنچل انگلیوں نے کتنا سندر روپ دیا ہے۔ بس من چاہتا ہے کہ بیٹھی اسی کی تعریف کیا کروں...... وہ انگلیاں کتنی سندر ہوں گی جنہوں نے اس کرسی کو بنایا ہے۔ وہ واتاورن کتنا سندر ہوگا جس میں اس کلا کو جنم دیا گیا ہے...... دیکھو بھی، اس کی لکیر لکیر بول اٹھی ہے......" نروپما کی آنکھوں میں بھاو بھر گئے تھے۔ اسکی آنکھیں چمک اٹھی تھیں اور منہ سے ہنسی غائب ہو گئی تھی۔

اسکی حالت دیکھکر میرے دل پر بھی پربھاؤ پڑا۔ جیون میں پہلی بار میں نے اس کرسی میں چھپی سندرتا کی طرف دھیان دیا۔ میں اس پر سوچتا رہا اور نروپما کہتی گئی۔ لیکن کرسی تک ہی میں نہیں رکا۔ کرسی بننے والے کا جیون میرے سامنے ناچ گیا۔ میں ان کلاکاروں کی غریبی کا دھیان کرکے بےچین ہو اٹھا۔ میں نے نروپما کو اس کے مون تنمیتا سے جھنجھوڑتے ہوئے کہا—

"مس نروپما، یہ لکیریں بول تو ضرور رہی ہیں لیکن ان کی کہانی ہر ویکتی نہیں سمجھ سکتا۔ یہ بتا رہی ہیں کہ ان میں جان ڈالنے والی انگلیاں بے حد بھدی ہیں، کالی ہیں اور گندی ہیں۔ جن ہاتھوں نے اس کرسی کو سندرتا دی ہے اس نے سندرتا کا انوبھو کبھی نہیں کیا۔ جس واتاورن میں یہ کرسیاں بنی ہیں وہاں سندرتا دور دور تک نواس نہیں کرتی۔ جنہوں نے یہ کرسیاں بنائی ہیں، سوندریہ کی سرشٹی کی ہے، وہ بھوکے ہیں، ننگے ہیں، بےگھر ہیں، بے سہارا ہیں!......"

"یہ کبھی نہیں ہو سکتا۔ جو سندرتا کو جنم دے سکتا ہے وہ سندرتا سے دور کیسے رہ سکتا ہے۔ میں بالکل نہیں مان سکتی کہ ان کا جیون سندر نہیں ہے۔" نروپما نے آویش میں کہا۔ اس کی مدرا سے ایسا معلوم ہو رہا تھا جیسے کہ میری باتوں کا اسے وشواس نہ ہو رہا ہو۔

"شاید آپ نے ان کلاکاروں کے گھروں کو کبھی نہیں دیکھا۔ لیکن میں نے دیکھا ہے۔ آپ اپنی رنگین دنیا سے باہر نہیں گئیں۔ آپ کے جیون سے پرے بھی ایک جیون ہے—منشیہ روپی جنتوؤں کا! آپ کے ڈرائنگ روم کو جن کی بنائی اور بنی چیزیں شوبھا دیتی ہیں ان کے پاس مکان

का ढंग जल्द ही बदल दिया और बहुत खुशामदी ढंग में बोला—"आप मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकती हैं, मुझे पूरा विश्वास है."

"लोग मुझे बटरफ्लाई कहते हैं......और आप जानते हैं बटरफ्लाई किसी के साथ रिआयत नहीं करती" निरूपमा ने धीरे धीरे और गम्भीर स्वर में कहा.

"लोग कुछ भी कह सकते हैं. उनका मुंह कौन रोक सकता है. मैं तो आपको कुछ और ही देखता हूं. आपके होटों पर लिपस्टिक होती है, पाउडर आप खूब लगाती हैं, आपको रंगीन तड़क भड़क कपड़े भी पसन्द हैं. आप हर एक से हंसती बोलती भी हैं. बिल्कुल बटरफ्लाई दिखाई पड़ती हैं. लेकिन मुझे आपके चेहरे पर एक उदासी दिखाई पड़ती है. ऐसा लगता है जैसे आप किसी चीज़ की खोज में हों और वह आपको कहीं मिल न रही हो. आप दिखाई कुछ और पड़ती हैं और आपका स्वभाव कुछ और है......"

"तुम मुझे समझने की कोशिश तो करते हो......"

निरूपमा की हंसी ग़ायब थी. वह इस तरह गम्भीर थी जैसे वह निरूपमा ही बदल गई हो. हम दोनों उसी तरह गम्भीर मुद्रा में रेस्टोरेन्ट से निकल कर अपने अपने होस्टल चले गए.

यह आज से पन्द्रह रोज़ पहले की बात थी. मैं नहा चुका था. जल्दी भागता हुआ अपने कमरे में पहुंचा. लेकिन मेरे दिमाग़ में बराबर यह विचार घूम रहा था कि निरूपमा को यह कैसे मालूम हो गया कि आज मेरा जन्म दिन है. मैंने आते ही बिना किसी बात का ध्यान किये उतावलेपन से निरूपमा से पूछ ही लिया—"मिस निरूपमा आप को आखिर यह कैसे पता चल गया कि आज मेरा जन्म दिन है ?"

उसने बच्चों के समान सहज भाव से अपने हाथ में उठा कर एक किताब मुझ को दिखा दी. यह मेरी डायरी थी और अब भी निरूपमा उसे पढ़ रही थी. लेकिन इस साल की डायरी में यह बात तो लिखी नहीं है कि आज मेरा जन्म दिन है. मैंने फिर उत्सुकता से पूछा—"लेकिन इस डायरी से तो पता नहीं चल सकता ?"

"जी हां, इससे नहीं चल सकता, लेकिन एक साल पुरानी डायरी पढ़ने से तो पता चल सकता है." वह फिर ठहाका मार कर हंस पड़ी.

मैं भी मुस्कुरा दिया. जल्दी से कपड़े निकाल कर बग़ल के कमरे में मैं पहनने चला गया. वापिसी पर निरूपमा मुझे दरवाज़े पर खड़ी मिली और उसने कहा—

"देखो तुम्हारे लिये मैं एक उपहार लाई हूं. जब तुम नहाने गए थे, बेचने वाला इधर से गुज़रा. मैंने खरीद

ڈھنگ جلد ہی بدل دیا اور بہت خوشامدی ڈھنگ میں بولا—"آپ میرے ساتھ ایسا نہیں کرسکتی ہیں، مجھے پورا وشواس ہے."

"لوگ مجھے بٹرفلائی کہتے ہیں......اور آپ جانتے ہیں بٹرفلائی کسی کے ساتھ رعایت نہیں کرتی." نروپما نے دھیرے دھیرے اور گمبھیر سور میں کہا.

"لوگ کچھ بھی کہ سکتے ہیں. ان کا منہ کون روک سکتا ہے. میں تو آپکو کچھ اور ہی دیکھتا ہوں. آپ کے ہونٹوں پر لپسٹک ہوتی ہے، پاوڈر آپ خوب لگاتی ہیں، آپکو رنگین ترک بھڑک کپڑے بھی پسند ہیں. آپ ہر ایک سے ہنستی بولتی بھی ہیں. بالکل بٹرفلائی دکھائی پڑتی ہیں. لیکن مجھے آپ کے چہرے پر ایک اداسی دکھائی پڑتی ہے. ایسا لگتا ہے جیسے آپ کسی چیز کی کھوج میں ہوں اور وہ آپ کو کہیں مل نہ رہی ہو. آپ دکھائی کچھ اور پڑتی ہیں اور آپ کا سوبھاو کچھ اور ہے....."

"تم مجھے سمجھنے کی کوشش تو کرتے ہو......"

نروپما کی ہنسی غائب تھی. وہ اس طرح گمبھیر تھی جیسے وہ نروپما ہی بدل گئی ہو. ہم دونوں اسی طرح گمبھیر مدرا میں ریسٹورینٹ سے نکل کر اپنے اپنے ہوسٹل چلے گئے.

یہ آج سے پندرہ روز پہلے کی بات تھی. میں نہا چکا تھا. جلدی بھاگتا ہوا اپنے کمرے میں پہونچا. لیکن میرے دماغ میں برابر یہ وچار گھوم رہا تھا کہ نروپما کو یہ کیسے معلوم ہوگیا کہ آج میرا جنم دن ہے. میں نے جاتے ہی بنا کسی بات کا دھیان کئے اتاولےپن سے نروپما سے پوچھ ہی لیا—"مس نروپما آپ کو آخر یہ کیسے پتہ چل گیا کہ آج میرا جنم دن ہے؟"

اس نے بچوں کے سمان سہج بھاو سے اپنے ہاتھ میں اٹھا کر ایک کتاب مجھ کو دکھا دی. یہ میری ڈائری تھی اور اب بھی نروپما اسے پڑھ رہی تھی. لیکن اس سال کی ڈائری میں یہ بات تو لکھی نہیں ہے کہ آج میرا جنم دن ہے. میں نے پھر اتسکتا سے پوچھا—"لیکن اس ڈائری سے تو پتہ نہیں چل سکتا؟"

"جی ہاں، اس سے نہیں چل سکتا، لیکن ایک سال پرانی ڈائری پڑھنے سے تو پتہ چل سکتا ہے." وہ پھر ٹھہاکا مار کر ہنس پڑی.

میں بھی مسکرا دیا. جلدی سے کپڑے نکال کر بغل کے کمرے میں پہننے چلا گیا. واپسی پر نروپما مجھے دروازے پر کھڑی ملی اور اس نے کہا—

"دیکھو تمہارے لئے میں ایک اپہار لائی ہوں. جب تم نہانے گئے تھے، بیچنے والا ادھر سے گزرا. میں نے خرید

नामों की लिस्ट तो मैंने बना ली. सातवां कोई नाम दिमाग़ में नहीं आ रहा था. मैंने सोचते सोचते सोचा कि क्यों न अपने ज़माने में कोई नई बात की जाय. अभी तक कोई लड़की मानीटर नहीं बनी थी. इस विचार से मैं प्रसन्न हो उठा और मन ही मन कालिज की सारी लड़कियों का इन्टरव्यू मैंने कर डाला. कोई इतनी शरमीली कि उसका सीधा चलना मुश्किल. कोई इतनी बनावटी कि हर एक की छेड़ छाड़ करने की हिम्मत पड़ जाए. इस प्रतियोगिता में निरूपमा ही मुझे सब से अच्छी लगी. वह निडर है, उसको अपने पर विश्वास है, बनावटी नख़रे और नज़ाकत से वह परे है, ऐसा मुझे ज्ञान हुआ.

प्रिंसिपल साहब निरूपमा का नाम देख कर उछल पड़े और बोले—"यह लड़की कुछ नहीं कर सकती, बेकार मानीटरों की बदनामी होगी. बुरे बुरे क़िस्से इसके मशहूर हो रहे हैं. जानते हो, इससे कालिज की बदनामी होती है. वह मानीटर हो जायगी तो और भी खुल खेलेगी, तुम किसी लड़के को ही रक्खो......'

"प्रिंसिपल साहब एक लड़की को तो ज़रूर होना चाहिये. आख़िर कब तक इन को छुई मुई का फूल बना कर रक्खा जायगा काम करने दीजिये, इनको अपने पर भरोसा करना आजायगा और हमारी रोज़ की शिकायतों में आधी से ज़ियादा की कमी हो जायगी......निरूपमा को इसमें क्या ख़ता है. लोग जिसके बारे में जो चाहें उड़ा सकते हैं, किस का मुंह रोका जा सकता है. निरूपमा के सिवा मुझे कोई लड़की योग्य नहीं मालूम होती जो लड़कों को ठीक रख सके. ऐसे भी ज़िम्मेदारी आने पर ख़ुद निरूपमा को ध्यान रहेगा और वह बदनाम होने से अपने को बचाएगी."

प्रिंसिपल साहब ने बड़े ध्यान से मेरी बातों को सुना. उनके मुख के भाव से पता चलता था कि यह तर्क उनके गले के नीचे नहीं उतरता. लेकिन उन्होंने मेरा विरोध नहीं किया. उनके वाक्य में ठंढक थी. वह बोले—"अच्छा जाओ, रख लो उसको भी."

लिस्ट टंग गई. मानीटरों की लिस्ट में पहला नाम निरूपमा का था. उसी शाम वह मुझसे रेस्टोरेन्ट में मिली और कहने लगी—"आप को पूछे गछे बिना मेरा नाम लिस्ट में रखने को किसने कहा था?" "लोग आप से प्रेम करने लगे हैं. सब की मांग हुई कि ज़रूर आपको मानीटर बनाया जाय. मुझे झुकना ही पड़ा, क्या करता......"मैंने हंस कर कहा.

निरूपमा ने भोला चेहरा बना कर कहा—"अगर मैं मानीटर बनने से इनकार कर दूं तो?"

मुझे शंका हो उठी कि कहीं वह सचमुच ही ऐसा न कर जाए. बड़ी भद होगी. ग़लती हो ही गई. मैंने हंसी

ناموں کی لسٹ تو میں نے بنا لی. ساتواں کوئی نام دماغ میں نہیں آ رہا تھا. میں نے سوچتے سوچتے سوچا کہ کیوں نہ اپنے زمانے میں کوئی نئی بات کی جائے. ابھی تک کوئی لڑکی مانیٹر نہیں بنی تھی. اس وچار سے میں پرسن ہو اٹھا اور من ہی من کالج کی ساری لڑکیوں کا انٹرویو میں نے کر ڈالا. کوئی اتنی شرمیلی کہ اس کا سیدھا چلنا مشکل. کوئی اتنی بناوٹی کہ ہر ایک کی چھیڑ چھاڑ کرنے کی ہمت پڑ جائے. اس پرتی یوگتا میں نروپما ہی مجھے سب سے اچھی لگی. وہ نڈر ہے، اسکو اپنے پر وشواس ہے، بناوٹی نخرے اور نزاکت سے وہ پرے ہے، ایسا مجھے گیان ہوا.

پرنسپل صاحب نروپما کا نام دیکھکر اچھل پڑے اور بولے—"یہ لڑکی کچھ نہیں کرسکتی، بیکار مانیٹروں کی بدنامی ہوگی. برے برے قصے اس کے مشہور ہو رہے ہیں. جانتے ہو، اس سے کالج کی بدنامی ہوتی ہے. یہ مانیٹر ہو جائیگی تو اور بھی کھل کھیلے گی، تم کسی لڑکے کو ہی رکھو......"

"پرنسپل صاحب ایک لڑکی کو تو ضرور ہونا چاہئے. آخر کب تک ان کو چھوئی موئی کا پھول بناکر رکھا جائیگا. کام کرنے دیجئے، ان کو اپنے پر بھروسہ کرنا آجائیگا اور ہماری روز کی شکایتوں میں آدھی سے زیادہ کی کمی ہو جائگی......نروپما کی اس میں کیا خطا ہے. لوگ جس کے بارے میں جو چاہیں اڑا سکتے ہیں، کس کا منہ روکا جاسکتا ہے. نروپما کے سوا مجھے کوئی لڑکی یوگیہ نہیں معلوم ہوتی جو لڑکوں کو ٹھیک رکھ سکے. ایسے بھی ذمہ داری آنے پر خود نروپما کو دھیان رہیگا اور وہ بدنام ہونے سے اپنے کو بچائیگی."

پرنسپل صاحب نے بڑے دھیان سے میری باتوں کو سنا. ان کے مکھ کے بھاؤ سے پتہ چلتا تھا کہ یہ ترک ان کے گلے کے نیچے نہیں اترتا. لیکن انہوں نے میرا ورودھ نہیں کیا. ان کے واکیہ میں ٹھنڈک تھی، وہ بولے—"اچھا جاؤ، رکھ لو اسکو بھی."

لسٹ ٹنگ گئی. مانیٹروں کی لسٹ میں پہلا نام نروپما کا تھا. اسی شام وہ مجھ سے ریسٹورینٹ میں ملی اور کہنے لگی—"آپکو پوچھے گچھے بنا میرا نام لسٹ میں رکھنے کو کس نے کہا تھا؟" "لوگ آپ سے پریم کرنے لگے ہیں. سب کی مانگ ہوئی کہ ضرور آپکو مانیٹر بنایا جائے. مجھے جھکنا ہی پڑا، کیا کرتا......" میں نے ہنس کر کہا.

نروپما نے بھولا چہرا بناکر کہا—"اگر میں مانیٹر بننے سے انکار کردوں تو؟"

مجھے شنکا ہو اٹھی کہ کہیں وہ سچ مچ ہی ایسا نہ کر جائے. بڑی بھد ہوگی. غلطی ہو ہی گئی. میں نے ہنسی

निरूपमा ने एक ज़ोर का ठहाका लगाया और मस्ती में आ कर एक ज़ोर का हाथ मेरे कन्धे पर जमाया. अनजाने में इस तरह के थप्पड़ भी बहुत दर्द पहुंचाते हैं. मैं दर्द से नाच उठा. लेकिन क्या करता विवश हंसना ही पड़ रहा था. निरूपमा लम्बे डग भरती चली गई और कहती गई कि फिर मिलूंगी.

मैं अब तक सर में तेल मल चुका था और बदन भिगो रहा था. यह निराली बातचीत याद करके मुझे हंसी आ गई और मैं पानी के परदे के पीछे से मुस्कुरा दिया. वहां कौन था जो पूछता कि मैं क्यों हंस रहा हूं. दीवारों को क्या पड़ी थी, वह चुप रहीं. पानी शोर मचाता रहा. मैं बदन भिगो कर साबुन लगाने लगा. इधर हाथ काम करता रहा और उधर दिमाग़ के परदे पर निरूपमा से सम्बन्धित कहानियां नाचती रहीं—

रेस्टोरेन्ट की मुलाक़ात के बाद मैं कई दफ़ा निरूपमा से मिला, कभी जमुना किनारे, कभी फ़्राईडे क्लब में, कभी ड्रामा हाल में. क्लास में तो रोज़ ही मुलाक़ात हो जाती थी. निरूपमा के सम्बन्ध में दुराचार के तरह तरह के क़िस्से उड़ रहे थे. जांच पड़ताल भी होती रहती थी. मुझसे भी प्रिंसिपल साहब ने उसके चरित्र के बारे में पूछा था और मैंने उत्तर दिया था—"निरूपमा की ग़लती यह है कि वह नरम दिल, दयालु और चरित्रवान है. यही उसकी मुसीबत है." प्रिंसिपल साहब फिर बोले थे कि "तुम ख़ब्ती हो." न जाने मैं क्यों सोचता था कि निरूपमा वह नहीं है जो उसके बारे में लोग सोचते और कहते हैं. मैंने एक दफ़ा एक राजनैतिक दोस्त से कहा कि निरूपमा में देशभक्ति के कीटानु बड़ी मात्रा में मौजूद हैं और उसने कहा था—"तुम्हारा दिमाग़ चल गया है. कहीं कपड़े लत्ते और फ़ैशन की शौक़ीन लड़कियां देश भक्त हुआ करती हैं?" मेरा विचार फिर भी बदला नहीं था.

मैं ज़िम्मेदारी से घबराता नहीं हूं, लेकिन एक उलझन मेरे दिमाग़ में होने लगती है. प्रिंसिपल ने मुझे चीफ़ मानीटर बना दिया था और कहा था कि मैं जल्द ही दूसरे मानीटर भी अपनी इच्छानुसार नियुक्त कर लूं. मैंने दोस्तों से राय की. सब की बाछें खिल गईं, सब ने मुझे मुबारकबाद दी. अब लिस्ट बनाने का प्रश्न था. जितना यह सीधा सवाल था उतनी ही इसमें कठिनाइयां थीं. जिस मित्र का नाम न रक्खा जाय वह नाराज़ होगा और जिस मित्र का नाम रक्खा जाय वह मेरी स्कीमों को ख़ब्त का नाम देकर हंसी में उड़ा देगा. मैंने सोचा मित्रों का पक्ष करना ठीक नहीं है. फिर मैंने उन लोगों का नाम काग़ज़ पर लिखना आरम्भ कर दिया जिन की योग्यता का मुझे विश्वास था और जिन के सहयोग की मैं पूरी उम्मीद करता था. जो

نروپما نے ایک زور کا ٹھہاکا لگایا اور مستی میں آکر ایک زور کا ہاتھ میرے کندھے پر جمایا. انجانے میں اس طرح کے تھپڑ بہت درد پہنچاتے ہیں. میں درد سے ناچ اٹھا. لیکن کیا کرتا. وِوش ہنسنا ہی پڑ رہا تھا. نروپما لمبے ڈگ بھرتی چلی گئی اور کہتی گئی کہ پھر ملوں گی.

میں اب تک سر میں تیل مل چکا تھا اور بدن بھگو رہا تھا. یہ نرالی بات چیت یاد کرکے مجھے ہنسی آگئی اور میں پانی کے پردے کے پیچھے سے مسکرا دیا. وہاں کون تھا جو پوچھتا کہ میں کیوں ہنس رہا ہوں. دیواروں کو کیا پڑی تھی، وہ چپ رہیں. پانی شور مچاتا رہا. میں بدن بھگو کر صابن لگانے لگا. اِدھر ہاتھ کام کرتا رہا اور اُدھر دماغ کے پردے پر نروپما سے سمبندھت کہانیاں ناچتی رہیں—

ریسٹورینٹ کی ملاقات کے بعد میں کئی دفعہ نروپما سے ملا، کبھی جمنا کنارے، کبھی فرائیڈے کلب میں، کبھی ڈراما ہال میں. کلاس میں تو روز ہی ملاقات ہو جاتی تھی. نروپما کے سمبندھ میں دراچار کے طرح طرح کے قصے اڑ رہے تھے. جانچ پڑتال بھی ہوتی رہتی تھی. مجھ سے بھی پرنسپل صاحب نے اس کے چرتر کے بارے میں پوچھا تھا اور میں نے اتر دیا تھا—"نروپما کی غلطی یہ ہے کہ وہ نرم دل، دیالو اور چرتروان ہے. یہی اسکی مصیبت ہے." پرنسپل صاحب پھر بولے تھے کہ "تم خبطی ہو." نہ جانے میں کیوں سوچتا تھا کہ نروپما وہ نہیں ہے جو اس کے بارے میں لوگ سوچتے اور کہتے ہیں. میں نے ایک دفعہ ایک راجنیتک دوست سے کہا کہ نروپما میں دیش بھگتی کے کیٹانو بڑی ماترا میں موجود ہیں اور اس نے کہا تھا—"تمہارا دماغ چل گیا ہے. کہیں کپڑے لتے اور فیشن کی شوقین لڑکیاں دیش بھگت ہوا کرتی ہیں؟" میرا وچار پھر بھی بدلا نہیں تھا.

میں ذمہ داری سے گھبراتا نہیں ہوں، لیکن ایک الجھن میرے دماغ میں ہونے لگتی ہے. پرنسپل نے مجھے چیف مانیٹر بنا دیا تھا اور کہا تھا کہ میں جلد ہی دوسرے مانیٹر بھی اپنی اچھانوسار نیکت کرلوں. میں نے دوستوں سے رائے لی. سب کی باچھیں کھل گئیں، سب نے مجھے مبارکباد دی. اب لسٹ بنانے کا پرشن تھا. جتنا یہ سیدھا سوال تھا اتنی ہی اس میں کٹھنائیاں تھیں. جس متر کا نام نہ رکھا جائے وہ ناراض ہوگا اور جس متر کا نام رکھا جائے وہ میری اسکیموں کو خبط کا نام دیکر ہنسی میں اڑا دیگا. میں نے سوچا متروں کا پکش کرنا ٹھیک نہیں ہے. پھر میں نے ان لوگوں کا نام کاغذ پر لکھنا آرمبھ کر دیا جن کی یوگیتا کا مجھے وشواس تھا اور جن کے سہیوگ کی میں پوری امید کرتا تھا. جو

हो गई है. बिल्कुल बटरफ्लाई है. इसको नैतिकता से क्या लेना देना, इसको मानवता से क्या ग़रज़. यह तो बस अपनी रंगरलियों में मग्न रहती है.

एक दिन मैं सिन्हा और शेरवानी के साथ रेस्टोरेन्ट में बैठा चाय पी रहा था. अकस्मात निरूपमा भी आ गई. सिन्हा ने दूसरे लड़कों पर रोब जमाने के लिये जल्दी से सीट छोड़ दी और बोला—"आइये, मिस निरूपमा, चाय पीजिये........बॉय एक प्याली चाय और लाना."

निरूपमा बिना किसी झिझक के आकर मेरे और सिन्हा की बीचवाली सीट पर बैठ गई. हमारी क़रीब से यह पहली मुलाक़ात थी. बातूनी आदमी चुप रह ही नहीं सकता. उसने सिन्हा पर फबतियां कसनी शुरू कर दीं. किसी लड़की से इस तरह की फबतियां इससे पहले मैंने नहीं सुनी थीं. मैं चकित सा रह गया. बनावटी सच से मैं हंसी रोकना चाहता था लेकिन बिना हंसे रहा ही न जाता था कमरे में सभी लोग हंस रहे थे. एक दूसरे की देखा देखी भी लोग हंस रहे थे. सिंहा हंस तो ज़रूर रहा था लेकिन उस का मुंह सुर्ख़ हो गया था. निरूपमा ने बात करते करते मुझे सम्बोधित करके कहा—"ज़रा सिन्हा साहब को देखिये, यह भी बच्चों का सा मुंह ले कर लड़कियों से प्रेम जताते फिरते हैं." फिर उसने सिन्हा की तरफ़ बड़ी बड़ी आंखें घुमाईं और बोली—"सच कहती हूं सिन्हा, तुम्हें देख कर तो लड़कियों की ममता उमड़ पड़ती होगी."

मैं अपने को न रोक सका, ज़ोर से ठहाका निकल गया. सारा कमरा ज़ोर की हंसी से गंज उठा. काफ़ी देर तक लोग हंसते रहे. ऐसा लगता था जैसे निरूपमा ने हंसी की कोई गैस कमरे में बिखेर दी हो.

सब को हंसता छोड़ कर निरूपमा उठ कर चलने लगी. सिन्हा की गर्दन शर्म से न उठ सकी लेकिन मैंने निरूपमा से कहा—"मिस निरूपमा आप की बातों में बड़ा रस है. बैठिये न, और कुछ देर गप शप रहे."

निरूपमा ने ध्यान पूर्वक मेरी तरफ़ देखा और हंस कर बोली—"कहीं आप को भी तो मुझ से प्रेम विरेम नहीं होने लगा? कौन कहे, यहां तो प्रेम की जैसे बीमारी फैल गई है. आप की कौन कहे सिन्हा साहब तक प्रेम करने लगे हैं!"

एक कटीली मुस्कराहट उस के मुखड़े पर खेलने लगी. मैं उलझन में पड़ गया. मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि इस तीर का उत्तर कैसे दूं. उलझन में मुंह से निकल ही गया—"बिलकुल नहीं, आप इतमीनान रखिये, मुझे प्रेम के कीड़े बिल्कुल नहीं सताते. आप शायद नहीं जानतीं कि मैं प्रेममूक हूं."

ہو گئی ہے ۔ بالکل بٹرفلائی ہے ۔ اسکو نیتکتا سے کیا لینا دینا' اس کو مانوتا سے کیا غرض ۔ یہ تو بس اپنی رنگ رلیوں میں مگن رہتی ہے ۔

ایک دن میں سنہا اور شیروانی کے ساتھ ریسٹورینٹ میں بیٹھا چائے پی رہا تھا ۔ اکسمات نروپما بھی آ گئیں ۔ سنہا نے دوسرے لڑکوں پر رعب جمانے کے لئے جلدی سے سیٹ چھوڑ دی اور بولے— "آئیے' مس نروپما' چائے پیجئے......بوائے ایک پیالی چائے اور لانا ۔"

نروپما بنا کسی جھجھک کے آ کر میرے اور سنہا کی بیچ والی سیٹ پر بیٹھ گئی ۔ ہماری قریب سے یہ پہلی ملاقات تھی ۔ باتونی آدمی چپ رہ ہی نہیں سکتا ۔ اس نے سنہا پر پھبتیاں کسنی شروع کر دیں ۔ کسی لڑکی سے اس طرح کی پھبتیاں اس سے پہلے میں نے نہیں سنی تھیں ۔ میں چکت سا رہ گیا ۔ بناوٹی سچ سے میں ہنسی روکنا چاہتا تھا لیکن بنا ہنسے رہا ہی نہ جاتا تھا ۔ کمرے میں سبھی لوگ ہنس رہے تھے ۔ ایک دوسرے کی دیکھا دیکھی بھی لوگ ہنس رہے تھے ۔ سنہا ہنس تو ضرور رہا تھا لیکن اس کا منہ سرخ ہو گیا تھا ۔ نروپما نے بات کرتے کرتے مجھے سمبودھت کرکے کہا —"ذرا سنہا صاحب کو دیکھئے' یہ بھی بچوں سا کا منہ لیکر لڑکیوں سے پریم جتاتے پھرتے ہیں"—پھر اس نے سنہا کی طرف بڑی بڑی آنکھیں گھمائیں اور بولی—"سچ کہتی ہوں سنہا' تمہیں دیکھکر تو لڑکیوں کی ممتا امڈ پڑتی ہوگی ۔"

میں اپنے کو نہ روک سکا' زور سے ٹھہاکا نکل گیا ۔ سارا کمرا زور کی ہنسی سے گونج اٹھا ۔ کافی دیر تک لوگ ہنستے رہے ۔ ایسا لگتا تھا جیسے نروپما نے ہنسی کی کوئی گیس کمرے میں بکھیر دی ہو ۔

سب کو ہنستا چھوڑکر نروپما اٹھکر چلنے لگی ۔ سنہا کی گردن شرم سے نہ اٹھ سکی لیکن میں نے نروپما سے کہا—"مس نروپما آپ کی باتوں میں بڑا رس ہے ۔ بیٹھئے نہ' اور کچھ دیر گپ شپ رہے ۔"

نروپما نے دھیان پوروک میری طرف دیکھا اور ہنس کر بولی—"کہیں آپکو بھی تو مجھ سے پریم ویم نہیں ہونے لگا ۔ کون کہے' یہاں تو پریم کی جیسے بیماری پھیل گئی ہے ۔ آپکی کون کہے' سنہا صاحب تک پریم کرنے لگے ہیں !"

ایک کٹیلی مسکراہٹ اس کے مکھڑے پر کھیلنے لگی ۔ میں الجھن میں پڑ گیا ۔ میری سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ اس تیر کا اتر کیسے دوں ۔ الجھن میں منہ سے نکل ہی گیا—"بالکل نہیں' آپ اطمینان رکھئے' مجھے پریم کے کیڑے بالکل نہیں ستاتے ۔ آپ شاید نہیں جانتیں کہ میں پریم موک ہوں ۔"

निरूपमा ने बिना किसी झिझक और बनावटी लहजा अपना आँचल ठीक कर लिया और मेरी तरफ़ ज़रा तेज़ निगाहों से देखा और बोली—"अच्छा बकवास बन्द कीजिये. नाश्ता ठंडा हो जायगा. जल्दी अपना टोकरा ले चलिये. मुझे भी बकवास की लत है और आप का तो बस कहना ही क्या......"

"बस दो मिनट में मैं तैयार हुआ जा रहा हूं. आप कमरे में बैठिये, मैं फ़ौरन नहा कर आ रहा हूं. बस दो मिनट से ज़ियादा नहीं लगेंगे." मैंने जल्दी जल्दी में उसके सामने सुझाव रखा.

मैं नहा रहा था और सोच भी रहा था कि यह मेरा साथी मुझसे कभी भी अलग नहीं होता. मैं सोच रहा था कि आख़िर निरूपमा को कैसे मालूम हुआ कि मेरा आज जन्म दिन है. मैंने आज तक किसी को नहीं बताया, अपने सच्चे दोस्तों को भी नहीं बताया है. निरूपमा से मेरी मुलाक़ात तो थोड़े ही दिन की हुई है, उसे बताने का सवाल ही पैदा नहीं होता. मैं बेचैनी का आभास करने लगा, मेरी इच्छा मुझे परेशान करने लगी. मैं जल्दी ही इस भेद को जानना चाहता था. मुझे ऐसा लग रहा था कि इस भेद के पीछे बहुत बड़े बड़े भेद छिपे हैं. मैं इन भेदों को जानने के लिये उतावला हो रहा था. लेकिन बाथ रूम में निरूपमा मेरे पास नहीं थी कि ख़्याल आते ही मैं पूछ लूं.

मैं जल्दी जल्दी नहाने लगा. हाथ मेरे बदन पर तेज़ी से चल रहे थे. पानी बदन पर गिर कर झरने का सा शोर मचा रहा था. मैं कभी सर मलता और कभी पैर, कभी पीठ और कभी सीना. लेकिन दिमाग़ मेरे साथ बाथ रूम में नहीं था. मेरे मानस पटल पर निरूपमा से पहली मुलाक़ात का सीन घूमने लगा—

मैं जुलाई में कालिज आया लेकिन बीमार हो गया. पूरे दो महीने के बाद सितम्बर में फिर कालिज का मुंह देखने की नौबत आई.इस दफ़ा कालिज की रंगत कुछ बदली हुई थी. जो लड़का भी मिलता था वह निरूपमा, सरला, कमला, मिली की प्रशंसा के पुल ज़रूर बांधता था. यह लोग कालिज के जीवन पर छा सी गई थीं. निरूपमा के बारे में तरह तरह के क़िस्से मशहूर हो रहे थे. कोई कहता बड़ी चंचल है, कोई बोलता बड़ी बेशर्म है. कोई उसके कपड़ों की तारीफ़ करता. कोई उसके अंगों की व्याख्या ले बैठता.

निरूपमा सचमुच सुन्दर थी. चंचल भी थी. सुर्ख़ी पाउडर से हर समय लैस रहती थी. बेझिझक लड़कों से मिलना उसका स्वभाव था. आते जाते मैंने भी उसको देखा था. मुझे ऐसा लगता था कि यह लड़की आवारा

نروپما نے بنا کسی جھجھک اور بناوٹی لہجہ کے آنچل ٹھیک کر لیا اور میری طرف ذرا تیز نگاہوں سے دیکھا اور بولی—"اچھا بکواس بند کیجئے. ناشتہ ٹھنڈا ہو جائے گا. جلدی اپنا ٹوکرا لے چلئے. مجھے بھی بکواس کی لت ہے اور آپ کا تو بس کہنا ہی کیا......"

"بس دو منٹ میں میں تیار ہوا جا رہا ہوں. آپ کمرے میں بیٹھئے' میں فوراً نہا کر آ رہا ہوں. بس دو منٹ سے زیادہ نہیں لگیں گے." میں نے جلدی جلدی میں اس کے سامنے سجھاؤ رکھا.

میں نہا رہا تھا اور سوچ بھی رہا تھا کہ یہ میرا ساتھی مجھ سے کبھی بھی الگ نہیں ہوتا. میں سوچ رہا تھا کہ آخر نروپما کو کیسے معلوم ہوا کہ میرا آج جنم دن ہے. میں نے آج تک کسی کو نہیں بتایا' سچے دوستوں کو بھی نہیں بتایا ہے. نروپما سے میری ملاقات تو تھوڑے ہی دن کی ہوئی ہے' اسے بتانے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا. میں بے چینی کا آبھاس کرنے لگا' میری اچھا مجھے پریشان کرنے لگی. میں جلدی ہی اس بھید کو جاننا چاہتا تھا. مجھے ایسا لگ رہا تھا کہ اس بھید کے پیچھے بہت بڑے بڑے بھید چھپے ہیں. میں ان بھیدوں کو جاننے کے لئے اتاولا ہو رہا تھا. لیکن باتھ روم میں نروپما میرے پاس نہیں تھی کہ خیال آتے ہی میں پوچھ لوں.

میں جلدی جلدی نہانے لگا. ہاتھ میرے بدن پر تیزی سے چل رہے تھے. پانی بدن پر گر کر جھرنے کا سا شور مچا رہا تھا. میں کبھی سر ملتا اور کبھی پیر' کبھی پیٹھ اور کبھی سینہ. لیکن دماغ میرے ساتھ باتھ روم میں نہیں تھا. میرے مانس پٹل پر نروپما سے پہلی ملاقات کا سین گھومنے لگا—

میں جولائی میں کالج آیا لیکن بیمار ہو گیا. پورے دو مہینے کے بعد ستمبر میں پھر کالج کا منہ دیکھنے کی نوبت آئی. اس دفعہ کالج کی رنگت کچھ بدلی ہوئی تھی. جو لڑکا بھی ملتا تھا وہ نروپما' سرلا' کملا' ملی کی پرشنسا کے پل ضرور باندھتا تھا. یہ لوگ کالج کے جیون پر چھا سی گئیں تھیں. نروپما کے بارے میں طرح طرح کے قصے مشہور ہو رہے تھے. کوئی کہتا بڑی چنچل ہے' کوئی بولتا بڑی بے شرم ہے. کوئی اس کے کپڑوں کی تعریف کرتا. کوئی اس کے انگوں کی ویاکھیا لے بیٹھتا.

نروپما سچ مچ سندر تھی. چنچل بھی تھی. سرخی پاؤڈر سے ہر سمے لیس رہتی تھی. بے جھجھک لڑکوں سے ملنا اس کا سوبھاؤ تھا. آتے جاتے میں نے بھی اسکو دیکھا تھا. مجھے ایسا لگتا تھا کہ یہ لڑکی آوارہ

"निरूपमा जी आपने नाश्ता नहीं किया यह तो ठीक किया. खाने की बचत करना हम सबका राष्ट्रीय कर्तव्य है. चलिये एक आध छटांक दाना तो बच ही गया ..... लेकिन अगर आपने इसलिये नाश्ता न किया हो कि मैं आप को जन्म दिन की खुशी में नाश्ता कराऊंगा तो ज़रा सोचना पड़ेगा. आप अपने होस्टल में कुल दस मुर्गियां हैं और यहां की आबादी हिन्दुस्तान की आबादी की तरह बढ़ी हुई है. आप का मैस नाश्ता दे सकता है.......पर यहां रोज़ बस दस बजे खाना ही मिलता है......अपनी लोगों की यह दुर्दशा देख कर तो जी चाहता है कि मैं भी कोई श्रीमती, कुमारी या मिस हो जाऊं......"

"आप बिलकुल दुख और लज्जा से घुल घुल कर हाथी मत हूजिये. मैं पहले से जानती थी कि आप के अस्तबल में केवल दो वक़्त सानी ही मिलती है. मैं रेस्टोरेन्ट के मैनेजर को दो नाश्ते का आर्डर दे आई हूं. सोचा तुम्हारा जन्मदिन है, मुंह का मज़ा तो बदलवा ही देना चाहिये."

मैं बात काट कर कहने ही वाला था कि "निरूपमा देवी आप बहुत ही बुद्धिमान हैं. आप लोगों की ऊपरी मंज़िल ऐसे तो खाली होती है किन्तु आप न जाने क्यों बुद्धिमान हैं. जितनी आप की सराहना की जाए कम है." लेकिन निरूपमा ने मुझे बोलने का अवसर नहीं दिया और स्वयं ही कहती रही—"भई तुम्हें लड़की होने की इच्छा है और मैं चाहती हूं किसी तरह से लड़का बन जाऊं. याद रखना तुम्हारे पति देव बच्चे पैदा करते करते देवाला कर देंगे.. नहीं ......रोज़ झगड़ा, लड़ाई......सारी बुराई ख़राबी औरत की वजह से, जो पाप मर्द करे ज़िम्मेदारी...औरत पर. मैं ऐसे जीवन का विचार करके कांप जाती हूं.... सड़क पर चलना मुहाल...... जिस मर्द को देखो घूरने लगेगा. बदन का कोई हिस्सा खुला नहीं कि ललचाई आंखें घूरने लगेंगी. बिल्कुल भूखे कुत्ते की तरह मर्द की भी आंखें होती हैं. छी....छी...... छी......जहां कोई लड़की देखी हो गये पीछे लगे उस पर मरने, जो मिला उसी को लगे ठंडी सांस भर भर कर मनघड़ंत प्रेम कथा सुनाने..... मेरा बस नहीं चलता नहीं तो सब के मुंह पर तोबड़े बंधवा कर दूं और ठीक सामने लड़कियों को देखें उस पर कितना प्रेम का भूत ज़ोर करता है......"

मैं बीच में बोल पड़ा—"देखिये मुझे तो ... नहीं कीजियेगा. विश्वास कीजिये मैंने किसी लड़की को आज तक घूर कर नहीं देखा. उन्होंने दिखाने की भी कोशिश की है तो मैंने मुंह फेर लिया है... ..आप ही इतनी देर से खड़ी हैं, आप ही बता दीजिये मैंने कहीं आप पर नज़र भी डाली है हालांकि आपका आंचल सरका हुआ है और ब्लाउज़ का बटन खुला है......"

सकता, ...
की ज़िन्दगी का असल ...

" نروپما جی آپ نے ناشتہ نہیں کیا یہ تو ٹھیک کیا ۔ کھانے کی بچت کرنا ہم سب کا راشٹریہ کرتویہ ہے ۔ چلئے ایک آدھ چھٹانک دانہ تو بچ ہی گیا.....لیکن اگر آپ نے اس لئے ناشتہ نہ کیا ہو کہ میں آپ کو جنم دن کی خوشی میں ناشتہ کراؤنگا تو ذرا سوچنا پڑے گا ۔ آپ اپنے ہوسٹل میں کل دس مرغیاں ہیں اور یہاں کی آبادی ہندستان کی آبادی کی طرح بڑھی ہوئی ہے ۔ آپ کا میس ناشتہ دے سکتا ہے......پر یہاں روز بس دس بجے کھانا ہی ملتا ہے...... اپنی لوگوں کی یہ درگتی دیکھ کر تو جی چاہتا ہے کہ میں بھی کوئی شریمتی، کماری یا مس ہو جاؤں....."

" آپ بالکل دکھ اور لجا سے گھل کر ہاتھی مت ہوجئے ۔ میں پہلے سے جانتی تھی کہ آپ کے اصطبل میں کیول دو وقت سانی ہی ملتی ہے ۔ میں ریسٹوریٹ کے منیجر کو دو ناشتے کا آرڈر دے آئی ہوں ۔ سوچا تمہارا جنم دن ہے، منہ کا مزا تو بدلوا ہی دینا چاہئے ۔"

میں بات کاٹ کر کہنے ہی والا تھا کہ نروپما دیوی آپ بہت ہی بدھیمان ہیں ۔ آپ لوگوں کی اوپری منزل ایسے تو خالی ہوتی ہے لیکن آپ نہ جانے کیوں بدھیمان ہیں ۔ جتنی آپ کی سراہنا کی جائے کم ہے ۔" لیکن نروپما نے مجھے بولنے کا اوسر نہیں دیا اور سویم ہی کہتی رہی—" بھئی تمہیں لڑکی ہونے کی اچھا ہے اور میں چاہتی ہوں کسی طرح سے لڑکا بن جاؤں ۔ یاد رکھنا تمہارے پتی دیو بچے پیدا کرتے کرتے دیوالہ کر دینگے .....یہ بھی سہی......روز جھگڑا، لڑائی......ساری برائی عورت میں، ہر خرابی عورت کی وجہ سے، جو پاپ مرد کرے اسکی ذمہ داری عورت پر ۔ میں ایسے جیون کا وچار کر کے کانپ جاتی ہوں......سڑک پر چلنا محال... جس مرد کو دیکھو گھورنے لگے گا ۔ بدن کا کوئی حصہ کھلا نہیں کہ للچائی آنکھیں گھورنے لگیں گی ۔ بالکل بھوکے کتے کی طرح مرد کی بھی آنکھیں ہوتی ہیں ۔ چھی......چھی...... چھی......جہاں کوئی لڑکی دیکھی ہو لئے پیچھے لگے اس پر مرنے، جو ملا اسی کو لگے ٹھنڈی سانس بھر بھر کر منگھڑت پریم کتھا سنانے......میرا بس نہیں چلتا نہیں تو سب کے منہ پر توبڑے بندھوا کر چھوڑ دوں اور ٹھیک سامنے لڑکیوں کو بٹھا دوں ۔ پھر دیکھوں کتنا پریم کا بھوت زور کرتا ہے....."

میں بیچ میں بول پڑا—" دیکھئے مجھے تو ... نہ سمجھئے گا ۔ وشواس کیجئے میں نے آج تک کسی لڑکی کو گھور کر نہیں دیکھا ۔ انہوں نے دکھانے کی کوشش بھی کی ہے تو میں نے منہ پھیر لیا ہے ... آپ ہی اتنی دیر سے کھڑی ہیں، آپ ہی بتا دیجئے میں نے کہیں آپ پر نظر بھی ڈالی ہے حالانکہ آپ کا آنچل سرکا ہوا ہے اور بلاؤز کا بٹن کھلا ہے......"

उपहार

मैं शायद अभी चारपाई पर और पड़ा रहता कि किसी ने दरवाजा खटखटाया. दरवाजे पर टप टप तेज होती जा रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे दरवाजा खुलवाने के लिये कोई उतावला हो रहा है. मरता क्या न करता. मन ही मन कोसता हुआ चारपाई से उठा. एक बड़ी जमुहाई की और जा कर दरवाजा खोला. मुंह बाहर निकाला ही था कि "मुबारक हो, जन्म दिन मुबारक हो" का थप्पड़ पड़ा. मैं चौंधिया सा गया. कौन आदमी इस युग में पैदा हो गया है जिसे मेरे जन्म दिन की इतनी खुशी है. घर चढ़ कर बधाई देने आया है. मैंने बाहर खड़े व्यक्ति की शकल देख ली थी, उसे पहचान भी लिया था. किन्तु अजीब गुत्थी थी. मैं......वह . ...और मेरा जन्म दिन !

मैंने अपनी उलझन छिपाते हुए कहा—"आप भी क्या कुसमय आ गई हैं. यहां तो सारा मामला उलटा पलटा है. मैं ऐसे ही जंगखुश हूं लेकिन आज तो हर दिन से चोखा रंग है. ले देके एक ही कमरा है और वह भी गुदड़ी बाजार का गुदाम बना हुआ है......"

निरूपमा ने बड़े जोर का ठहाका लगाया और बोली--"तुम भी वही हो जिस पर दिया रखा जाता है. घबराने की क्या बात है ? आप घबराहट से पानी क्यों हुए जा रहे हैं ? मेरे पास दो अच्छी सी टांगें हैं, मैं उनके सहारे देर तक खड़ी रह सकती हूं......"

वह अभी अपनी बात समाप्त नहीं कर पाई थी कि मुसकराते हुए बहुत बेतकल्लुफी से मैंने प्रश्न किया—"कुमारी निरूपमा देवी एम. ए. सेकेण्ड ईयर आर्टस ने इधर पदार्पण कैसे किया ? कहिये तो मुझसे क्या खता हुई ? किस अपराध की सजा मुझे आज भुगतनी पड़ेगी ?"

निरूपमा ने अर्थपूर्ण नेत्रों से मुझे घूरा और फिर आप ही आप जोर से खिलखिला कर हंस पड़ी. वह जोर जोर से हंसती जाती थी और कहती जाती थी—"तुम भी खूब आदमी हो ! बहुत से अपाहिज देखे पर तुमने सबको मात कर दिया. नौ बज चुके, कालिज पहला घंटा बज चुका. लेकिन महाशय जी अभी आराम कर रहे हैं. तुम्हें कालिज जाना है या नहीं? जल्दी करो. कपड़े ठीक करो. अजीब वाहियात [illegible] कमरे में तक मैं भी सोती हूं लेकिन 9 [illegible] तक तुम्हें धो कर तैयार हो जाती [illegible] ही साथ कालिज मुबारकबाद भी दे दूंगी [illegible] पड़ी. नाश्ता भी वह भी करेंगे. बहुत [illegible] जल्दी......"

اُپہار

میں شاید ابھی چارپائی پر اور پڑا رہتا کہ کسی نے دروازہ کھٹکھٹایا ۔ دروازے پر ٹپ ٹپ تیز ہوتی جارہی تھی' ایسا لگ رہا تھا جیسے دروازہ کھلوانے کے لئے کوئی اُتاولا ہورہا ہے ۔ مرتا کیا نہ کرتا ۔ من ہی من کوستا ہوا چارپائی سے اُٹھا ۔ ایک بڑی جمھائی لی اور جا کر دروازہ کھولا ۔ منہ باہر نکلا ہی تھا کہ "مبارک ہو' جنم دن مبارک ہو" کا تھپڑ پڑا ۔ میں چوندھیا سا گیا ۔ کون آدمی اس یگ میں پیدا ہو گیا ہے جسے میرے جنم دن کی اِتنی خوشی ہے ۔ گھر چڑھ کر بدھائی دینے آیا ہے ۔ میں نے باہر کھڑے ویکتی کی شکل دیکھ لی تھی' اُسے پہچان بھی لیا تھا ۔ لیکن عجیب گتھی تھی ۔ میں ......وہ......اور میرا جنم دن !

میں نے اپنی اُلجھن چھپاتے ہوئے کہا..." آپ بھی کیا کسمے آ گئی ہیں. یہاں تو سارا معاملہ اُلٹا پلٹا ہے. میں ایسے ہی جنگلوش ہوں لیکن آج تو ہر دن سے [illegible] ہے . لے دے کے ایک ہی کمرہ ہے اور وہ بھی [illegible] کا گودام بنا ہوا ہے......"

[illegible] زور کا ٹھہاکا لگایا اور بولی---" تم بھی [illegible] رکھا جاتا ہے گھبرانے کی بات کیا ہے ؟ [illegible] کیوں ہوئے جا رہے ہیں ؟ میرے [illegible] ہیں' میں ان کے سہارے [illegible]"

مسکراتے [illegible] " کماری نروپما [illegible] اِدھر پدارپن کیسے کیا. [illegible] کس اپرادھ کی سزا مجھے آج بھگتنی پڑے گی ؟"

نروپما نے ارتھ پورن نیتروں سے مجھے گھورا [illegible] پڑی [illegible]—

آپ ہی آپ زور سے کھل کھلا کر ہنس پڑی . وہ زور زور سے ہنستی جاتی تھی اور کہتی جاتی تھی—"تم بھی خوب آدمی ہو ! بہت سے اپاہج دیکھے پر تم نے سب کو مات کر دیا . نو بج چکے' کالج کا پہلا گھنٹہ بج چکا . لیکن مہاشے جی ابھی تک آرام کر رہے ہیں . تمہیں کالج جانا ہے یا نہیں ؟ جلدی کرو . کپڑے ٹھیک کرو . عجیب واہیات آدمی ہو . دیر تک میں بھی سوتی ہوں لیکن 9 بجے تک تو میں ضرور نہا دھو کر تیار ہو جاتی ہوں......سوچا تمہیں کمرے میں مبارکباد بھی دے آؤنگی اور ساتھ ہی ساتھ کالج بھی چلیں گے . ناشتہ بھی چھوڑ کیا...... بہت جلدی تھی......"

ہے جلد سے
دیکھا تھا ۔ مجھے ایسا سے

हैं, ऊंची जगह बैठना पसन्द करते हैं, चाहते हैं कि लोग इन्हें सलामें करें और रब्बी रब्बी कह कर पुकारें पर लानत है इन पाखण्डियों पर जो बेवाओं का माल खा जाते हैं और टके लेकर पूजा करते फिरते हैं. यह लोग उन लिपी पुती क़बरों की तरह हैं जो ऊपर से साफ़ सुथरी लगती हैं और जिनके अन्दर सड़ा हुआ मांस और हड्डियां भरी हुई हैं. इसी तरह यह लोग ऊपर से सीधे और नेक लगते हैं और उनके अन्दर पाप और पाखंड भरा होता है."

इस तरह के बुरे पुरोहितों और बुरे हाकिमों को हटा कर लोगों को चाहिये कि उनकी जगह दूसरे नेक आदमियों को बैठायें. यह काम खुद लोगों को करना चाहिये. महाभारत के शान्ति पर्व में लिखा है :—

"निर्बलों के आंसू ज़ालिमों और पाखंडियों को जितनी जल्दी फूंक डालते हैं उतनी जल्दी तेज़ से तेज़ आग उन्हें नहीं फूंक सकती. राजा या हाकिम के हाथ में शक्ति जनता के भले के लिये दी जाती है. अगर वह उस शक्ति का ग़लत इस्तेमाल करे तो वह उसी के ख़िलाफ़ लौट पड़ती है और उसे मिटा डालती है. जो ब्राह्मन या पुरोहित ऐसे ज़ालिम राजा या हाकिम को ठीक करे बिना उस से दान लेता है वह उस राजा या हाकिम के साथ साथ नरक में गिरता है."

ऐसे पंडे, पुरोहितों या हाकिमों के ख़िलाफ़ बग़ावत करना धर्म ग्रंथों में जनता का फ़र्ज़ बताया गया है. दुनिया की तारीख़ में इस तरह की बग़ावतें बार बार होती रही हैं.

दुनिया के लोगों को इस तरह की दग़ा के जो कड़वे तजुर्बे होते हैं उस से एक बड़ा लाभ भी होता है. जिसके साथ दग़ा की जाती है उसकी आत्मा को एक बड़ा धक्का लगता है. उस धक्के से उसकी आत्मा जाग उठती है, चमक उठती है. उसे ख़ुद अपने अन्दर की कमज़ोरी और ख़ुदग़र्ज़ी दिखाई देने लगती है. उसे पता चलता है कि उसने ख़ुद सदाचार और नेकी के मुक़ाबिले में दुनिया के नफ़ा नुक़सान को ज़ियादा अहमियत दी थी. अब उसे अपने अन्दर नेकी और ईमानदारी को ऊंची जगह देनी पड़ती है. इस तरह जनता गहरे से गहरे और ऊंचे से ऊंचे जाती है यह सब गहराइयां और ऊंचाइयां जनता की आत्मा के अन्दर ही होती हैं. जनता में अब नम्रता आती है, हिम्मत पैदा होती है, एकता और प्रेम बढ़ता है. सब की आत्मा अपनी आत्मा दिखाई देने लगती है. यों भेद भाव मिटते हैं, ग़ैरियत के पर्दे टूटते हैं और आम लोगों के लिए दुनयवी आज़ादी और धार्मिक आज़ादी, रूहानी आज़ादी और आत्मा की आज़ादी दोनों की राहें खुलती हैं. इस तरह सच्ची, ज़रूरी और जाइज़ बग़ावतों के ज़रिये ही आदमी की ज़िन्दगी का असली मक़सद धीरे धीरे पूरा होता है.

ہیں' اونچی جگہ بیٹھنا پسند کرتے ہیں' چاہتے ہیں کہ لوگ انہیں سلامیں کریں اور ربی ربی کہکر پکاریں پر لعنت ہے ان پاکھنڈیوں پر جو بیواؤں کا مال کھاجاتے ہیں اور ٹکے لیکر پوجا کرتے پھرتے ہیں. یہ لوگ ان لپی پتی قبروں کی طرح ہیں جو اوپر سے صاف ستھری لگتی ہیں اور جن کے اندر سڑا ہوا مانس اور ہڈیاں بھری ہوئی ہیں. اسی طرح یہ لوگ اوپر سے سیدھے اور نیک لگتے ہیں اور ان کے اندر پاپ اور پاکھنڈ بھرا ہوتا ہے."

اس طرح کے برے پروہتوں اور برے حاکموں کو ہٹاکر لوگوں کو چاہئے کہ ان کی جگہ دوسرے نیک آدمیوں کو بیٹھائیں. یہ کام خود لوگوں کو کرنا چاہئے. مہابھارت کے شانتی پرو میں لکھا ہے :—

"نربلوں کے آنسو ظالموں اور پاکھنڈیوں کو جتنی جلدی پھونک ڈالتے ہیں اتنی جلدی تیز سے تیز آگ انہیں نہیں پھونک سکتی. راجا یا حاکم کے ہاتھ میں شکتی جنتا کے بھلے کے لئے دی جاتی ہے. اگر وہ اس شکتی کا غلط استعمال کرے تو وہ اسی کے خلاف لوٹ پڑتی ہے اور اسے مٹا ڈالتی ہے. جو براہمن یا پروہت ایسے ظالم راجا یا حاکم کو ٹھیک کرے بنا اس سے دان لیتا ہے وہ اس راجا یا حاکم کے ساتھ ساتھ نرک میں گرتا ہے."

ایسے پنڈے' پروہتوں یا حاکموں کے خلاف بغاوت کرنا دھرم گرنتھوں میں جنتا کا فرض بتایا گیا ہے. دنیا کی تاریخ میں اس طرح کی بغاوتیں بار بار ہوتی رہی ہیں.

دنیا کے لوگوں کو اس طرح کی دغا کے کڑوے تجربے ہوتے ہیں' اس سے ایک بڑا لابھ بھی ہوتا ہے. جس کے ساتھ دغا کی جاتی ہے اس کی آتما کو ایک بڑا دھکا لگتا ہے. اس دھکے سے اس کی آتما جاگ اٹھتی ہے' چمک اٹھتی ہے. اسے خود اپنے اندر کی کمزوری اور خود غرضی دکھائی دینے لگتی ہے. اسے پتہ چلتا ہے کہ اس نے خود سداچار اور نیکی کے مقابلے میں دنیا کے نفع نقصان کو زیادہ اہمیت دی تھی. اب اسے اپنے اندر نیکی اور ایمانداری کو اونچی جگہ دینی پڑتی ہے. اس طرح جنتا گہرے سے گہرے اور اونچے سے اونچے جاتی ہے. یہ سب گہرائیاں اور اونچائیاں جنتا کی آتما کے اندر ہی ہوتی ہیں. جنتا میں اب نمرتا آتی ہے' ہمت پیدا ہوتی ہے' ایکتا اور پریم بڑھتا ہے. سب کی آتما اپنی آتما دکھائی دینے لگتی ہے. یوں بھید بھاؤ مٹتے ہیں' غیریت کے پردے ٹوٹتے ہیں اور عام لوگوں کے لئے دنیوی آزادی اور دھارمک آزادی' روحانی آزادی اور آتما کی آزادی دونوں کی راہیں کھلتی ہیں. اس طرح سچی' ضروری اور جائز بغاوتوں کے ذریعہ ہی آدمی کی زندگی کا اصلی مقصد دھیرے دھیرے پورا ہوتا ہے.

सवाल होता है कि अगर दुनिया के मज़हबी रहनुमा और राजकाजी नेता ही लोगों के साथ दग़ा कर बैठें तो फिर लोगों को उन से कौन बचा सकता है ? इस सवाल का एक ही जवाब है और वह यह है कि लोग खुद अपने हृदय के अन्दर बैठे हुए ईश्वर की प्रेरना से अपने दुख को दूर कर सकते हैं . नये और अच्छे नेता उन्हें अपने आप मिल जायेंगे.

सूफ़ी कहता है :—

ऐ बसा इबलीस आदम रूए अस्त
पस बहर दस्ते न बायद दाद दस्त

यानी आदमी की शकल में बहुत से शैतान मिलते हैं. इस लिये हर किसी के हाथ में अपना हाथ देकर उस पर बैत नहीं करनी चाहिये.

गुरु गीता में लिखा है :—

गुरवो बहवस्सन्ति ! शिष्य वित्ताप हारकः
विरला गुरवस्ते ये शिष्य संताप हारकः

यानी ऐ भाई ! ऐसे गुरु बहुत मिलते हैं जो चेलों का धन हर लें, लेकिन ऐसे गुरु बहुत कम मिलते हैं जो चेले के दिल का दुख हर लें.

सब मज़हबों की किताबों में हमें झूटे पुरोहितों और झूटे नबियों से आगाह किया है. मनोस्मृति में लिखा है :—

"बुरे चलन वाले पाखन्डी पुरोहित जो बिल्ली की तरह अपने शिकार की ताक में रहें और उस पर झपट्टा मारने को सदा तैयार रहें और बहुत बहसें करें या जो बगुले की तरह नीची निगाह किये शिकार की तलाश में बैठे रहें काफ़ी मिलते हैं. उन से बचना चाहिये. जो आदमी धर्म को पहचानता है उसे चाहिये कि ऐसे पंडे, पुरोहितों से बात तक न करे और न उन्हें पानी तक दे."

क़ुरान में लोगों को झूटे पैग़म्बरों से आगाह करते हुए लिखा है कि :—

"यह लोग अपने हाथ से किताबें लिख कर लोगों से कहते हैं कि यह अल्लाह की लिखी हुई है. सचमुच वह अल्लाह से नहीं होती."

इन्जील में लिखा है :—

"झूटे नबियों से होशियार रहो. यह लोग भेड़ की खाल ओढ़ कर तुम्हारे सामने आते हैं, अन्दर से वह खूंख़ार भेड़िये होते हैं. इन्हें तुम उनके कामों के नतीजों से जान जाओगे."

"यहूदियों के पंडे पुरोहित हज़रत मूसा की गद्दी पर बैठते हैं. यह लोग जो कुछ करते हैं दिखावे के लिये करते हैं. गले में बड़े बड़े तावीज़ डालते हैं, उन में धर्म ग्रन्थों से निकाले वाक्य लिख के भर देते हैं, लम्बे चौड़े कपड़े पहनते

سوال ہوتا ہے اگر دنیا کے مذہبی رہنما اور راج کاجی نیتا ہی لوگوں کے ساتھ دغا کر بیٹھیں تو پھر لوگوں کو ان سے کون بچا سکتا ہے ؟ اس سوال کا ایک ہی جواب ہے اور وہ یہ ہے کہ لوگ خود اپنے ہردے کے اندر بیٹھے ہوئے ایشور کی پریرنا سے اپنے دکھ کو دور کرسکتے ہیں ۔ نئے اور اچھے نیتا انہیں اپنے آپ مل جاوینگے ۔

صوفی کہتا ہے :—

اے بسا ابلیس آدم روئے است
پس بہر دستے نہ باید داد دست

یعنی آدمی کی شکل میں بہت سے شیطان ملتے ہیں۔ اس لئے ہر کسی کے ہاتھ میں اپنا ہاتھ دیکر اس پر بیعت نہیں کرنی چاہئے ۔

گرو گیتا میں لکھا ہے :—

گُرو وہ وسنتی ! ششیہ وتاپ ہارکا
ورلا گور وستے یے ششیہ سنتاپ ہارکا

یعنی اے بھائی ! ایسے گرو بہت ملتے ہیں جو چیلوں کا دھن ہرلیں' لیکن ایسے گرو بہت کم ملتے ہیں جو چیلے کے دل کا دکھ ہرلیں ۔

سب مذہبوں کی کتابوں میں ہمیں جھوٹے پروہتوں اور جھوٹے نبیوں سے آگاہ کیا ہے۔ منوسمرتی میں لکھا ہے:—

"برے چلن والے پاکھنڈی پروہت جو بلی کی طرح اپنے شکار کی تاک میں رہیں اور اس پر جھپٹا مارنے کو سدا تیار رہیں اور بہت بحثیں کریں یا جو بگلے کی طرح نیچی نگاہ کئے شکار کی تلاش میں بیٹھے رہیں کافی ملتے ہیں ۔ ان سے بچنا چاہئے ۔ جو آدمی دھرم کو پہچانتا ہے اسے چاہئے کہ ایسے پنڈے' پروہتوں سے بات تک نہ کرے اور نہ انہیں پانی تک دے ۔"

قرآن میں لوگوں کو جھوٹے پیغمبروں سے آگاہ کرتے ہوئے لکھا ہے کہ :—

"یہ لوگ اپنے ہاتھ سے کتابیں لکھکر لوگوں سے کہتے ہیں کہ یہ اللہ کی لکھی ہوئی ہے ۔ سچ مچ وہ اللہ سے نہیں ہوتی ۔"

انجیل میں لکھا ہے :—

"جھوٹے نبیوں سے ہوشیار رہو یہ لوگ بھیڑ کی کھال اوڑھ کر تمہارے سامنے آتے ہیں' اندر سے وہ خونخوار بھیڑیئے ہوتے ہیں ۔ انہیں تم ان کے کاموں کے نتیجوں سے جان جاؤگے ۔"

"یہودیوں کے پنڈے پروہت حضرت موسیٰ کی گدی پر بیٹھتے ہیں ۔ یہ لوگ جو کچھ کرتے ہیں دکھاوے کے لئے کرتے ہیں ۔ گلے میں بڑے بڑے تعویذ ڈالتے ہیں' ان میں دھرم گرنتھوں سے ٹکڑے نقل کرکے بھر دیتے ہیں' لمبے چوڑے کپڑے پہنتے

में गुरु, पीर, मुर्शिद या आरिफ़े हक़ शनास ही मां बाप का काम दे सकता है. इस दुनिया में कभी कभी बाप या मां भी गुरु का काम दे देते हैं. यह होता तो अच्छा है पर है बहुत मुश्किल. सब मां बाप रूहानी रहबर का काम नहीं दे सकते. इसीलिये मज़हबों में मामूली लोगों के लिये पुरोहितों, पादरियों और मुल्लाओं की एक जमाअत बनाई गई है. इसमें काफ़ी एहत्यात रक्खी गई है. हिन्दू धर्म में ब्राह्मन पुरोहित के लिये विद्या और तप दोनों ज़रूरी हैं. इस्लाम में सच्चे मुल्ला के लिये इर्फ़ान और ज़ुहद ज़रूरी है. बौद्ध धर्म और जैन धर्मों में भिक्षु, श्रमन और यती होते है. इस्लाम में, इमाम और ख़लीफ़ा, ईसाई धर्म में पादरी और महन्त.

यह सब एक हद तक बहुत अच्छे होते हैं लेकिन उस हद को पार करते ही इन ही में से रक्षक भक्षक बन जाते हैं. गड़रिया ख़ुद अपनी भेड़ों को खाने लगता है. आदमी का इतिहास इस तरह के रक्षकों के हाथों उनकी प्यारी बेगुनाह भेड़ों की क़ुर्बानी और बरबादी से भरा पड़ा है. दुनिया को एक हद के बाद जो तजुर्बा राजाओं और हाकिमों से होता है वही मज़हबी पंडे पुरोहितों से होता है. ख़ासकर जब यह पंडे पुरोहित अपना एक गिरोह बना कर बैठ जाते हैं और पुरोहिताई इन्हें बाप दादा से विर्से में मिलने लगती है तब समाज को इनसे फ़ायदा गोबर का और नुक़सान भैंस का होने लगता है. समाज के लिये यह एक मुसीबत हो जाते हैं. इसलिये मज़हब की दुनिया में भी बार बार झाड़ू देने और सफ़ाई करते रहने की ज़रूरत होती है. पुरानी क़ीमती शराब को बार बार नई बोतलों में रखना होता है.

ग़लत क़िस्म के मज़हबी और राजकाजी लीडरों से दुनिया के लोगों को आगाह करते हुए महाभारत में कहा गया है :—

"जिसके घुटने पर सिर रखकर आदमी निडर हो कर सो जाता है वही अगर उस सिर को काटने लगे तो सिर रखने वाला किस से जा कर शिकायत करे."

बृहदारण्यक उपनिशद में लोगों की इस ग़लती का कारन और गहराई में जाकर समझाया गया है. लिखा है कि :—

"जिस किसी ने बिना देखे भाले अपनी आत्मा से बाहर किसी दूसरे पर पूरा भरोसा किया, फिर चाहे वह भरोसा किसी ब्राह्मन पर हो या क्षत्री पर या देवताओं पर या किसी भी प्रानी या प्रानियों पर, वह कभी न कभी उस से धोका खाये बिना नहीं रह सकता. भरोसा और सहारा सदा केवल अपनी आत्मा पर ही रखना चाहिये."

میں گرو، پیر، مرشد یا عارف حق‌شناس ہی ماں باپ کا کام دے سکتا ہے ۔ اس دنیا میں کبھی کبھی باپ یا ماں بھی گرو کا کام دے دیتے ہیں ۔ یہ ہوتا تو اچھا ہے پر ہے بہت مشکل ۔ سب ماں باپ روحانی رہبر کا کام نہیں دے سکتے۔ اسی لئے مذہبوں میں معمولی لوگوں کے لئے پروہتوں، پادریوں اور ملاؤں کی ایک جماعت بنائی گئی ہے ۔ اس میں کافی احتیاط رکھی گئی ہے ۔ ہندو دھرم میں براہمن پروہت کے لئے ودیا اور تپ دونوں ضروری ہیں ۔ اسلام میں سچے ملا کے لئے عرفان اور زہد ضروری ہے ۔ بودھ دھرم اور جین دھرموں میں بھکشو شرمن اور یتی ہوتے ہیں ۔ اسلام میں، امام اور خلیفہ، عیسائی دھرم میں، پادری اور مہنت ۔

یہ سب ایک حد تک بہت اچھے ہوتے ہیں لیکن اس حد کو پار کرتے ہی ان ہی میں سے رکشک بھکشک بن جاتے ہیں۔ گڈریا خود اپنی بھیڑوں کو کھانے لگتا ہے۔ آدمی کا اتہاس اس طرح کے رکشکوں کے ہاتھوں ان کی پیاری بےگناہ بھیڑوں کی قربانی اور بربادی سے بھرا پڑا ہے۔ دنیا کو ایک حد کے بعد جو تجربہ راجاؤں اور حاکموں سے ہوتا ہے وہی مذہبی پنڈے پروہتوں سے ہوتا ہے ۔ خاصکر جب یہ پنڈے پروہت اپنا ایک گروہ بناکر بیٹھ جاتے ہیں اور پروہتائی انہیں باپ دادا سے ورثے میں ملنے لگتی ہے تب سماج کو ان سے فائدہ گوبر کا اور نقصان بھینس کا ہونے لگتا ہے ۔ سماج کے لئے یہ ایک مصیبت ہو جاتے ہیں۔ اس لئے مذہب کی دنیا میں بھی بار بار جھاڑو دینے اور صفائی کرتے رہنے کی ضرورت ہوتی ہے ۔ پرانی قیمتی شراب کو بار بار نئی بوتلوں میں رکھنا ہوتا ہے ۔

غلط قسم کے مذہبی اور راج‌کاجی لیڈروں سے دنیا کے لوگوں کو آگاہ کرتے ہوئے مہابھارت میں کہا گیا ہے :—

"جس کے گھٹنے پر سر رکھکر آدمی نڈر ہوکر سو جاتا ہے وہی اگر اس سر کو کاٹنے لگے تو سر رکھنے والا کس سے جاکر شکایت کرے ۔"

برہدارنیک اپنشد میں لوگوں کی اس غلطی کا کارن اور گہرائی میں جاکر سمجھایا گیا ہے ۔ لکھا ہے کہ :—

"جس کسی نے بنا دیکھے بھالے اپنی آتما سے باہر کسی دوسرے پر پورا بھروسہ کیا، پھر چاہے وہ بھروسہ کسی برہمن پر ہو یا چھتری پر یا دیوتاؤں پر یا کسی بھی پرانی یا پرانیوں پر، وہ کبھی نہ کبھی اس سے دھوکا کھائے بنا نہیں رہ سکتا۔ بھروسہ اور سہارا سدا کیول اپنی آتما پر ہی رکھنا چاہئے ۔"

अच्छे और बुरे दोनों अर्थों में प्रेम से ही दुनिया पैदा है, प्रेम ही दुनिया है, प्रेम ही ईश्वर है, प्रेम ही से निया क़ायम है, प्रेम ही आत्मा है और प्रेम ही के ज़रिये ह अपने मालिक ईश्वर अल्लाह को जान कर फिर से समें समा सकती है. यह रास्ता कठिन और दुश्वार गुज़ार लेकिन रास्ते की इस सारी दुश्वार गुज़ारी में ही उस ा सारा आनन्द और उल्लास है. पग पग पर सावधानी, दम क़दम पर एहतियात ज़रूरी है. इस एहतियात का सही रीक़ा है कि हर वक़्त हर पल आदमी अपने को परखता हे, अपने को कसौटी पर कसता रहे, अपने मन को तोलता . इसी को हिन्दू योगियों ने स्वचित परीक्षा कहा है. सूफ़ी से ख़ुद हिसाबी कहते हैं.

हिन्दू भक्ति शास्त्र में इस चीज़ को तरह तरह से समझाया गया है—जैसे प्रेम के अलग अलग रूप, नौकर मालिक से प्रेम जैसे हनुमान का राम से, मित्र का मित्र प्रेम, जैसे अर्जुन का कृष्ण से, मां बाप का बच्चे से प्रेम, से दशरथ और कौशल्या का राम से, मरियम का ईसा से, तमा का हसन और हुसैन से और फिर बच्चों का मां र बाप से प्रेम. यह आख़िरी प्रेम सब से आसान है ईश्वर को मां या बाप के रूप में देखने वाले भी कभी भी अपने ऊपर भरोसा बहुत ज़ियादा खो बैठते हैं. ख़िर सब रास्ते एक ही मरकज़ पर जा कर मिल ते हैं.

एक आदमी के एक आदमी से प्रेम के भी बहुत से हैं. यह दर्जे जितने ऊपर चढ़ते जाते हैं उतना उतना शिक़ अपने माशूक़ से लेता कम है और उसे देता ज़ियादा आदमी बच्चे की शकल में पैदा होता है. बच्चे का मां से सोलह आना ख़ुदग़र्ज़ी का होता है. बच्चा मां ना ही लेना जानता है, देना नहीं जानता. बढ़ते बढ़ते ख़िर में आदमी मां या बाप बनता है तब बच्चे से का प्रेम बिलकुल बेलाग हो जाता है. ख़ासकर मां के प्रेम ब देना ही देना होता है, लेना नहीं होता. मां हर तरह स्ताख़ियों को माफ़ कर देती है. मां ईश्वर का जमाली नी करुना का) रूप है. बाप ईश्वर का जलाली रूप है. ा ऐश्वर्य है. बच्चों के लिये मा का प्रेम बेलाग और स होते हुए भी अक्सर अपने बच्चों तक ही महदूद है. पास पड़ोस तक के बच्चे इस से बाहर रहते हैं पर अल्लाह का कुम्बा सारी दुनिया है.

जो हालत एक कुम्बे की है वही सारी ज़िन्दगी की स ज़िन्दगी में मौत के बाद की ज़िन्दगी भी शामिल स सारे समाज की ज़िन्दगी, अपनी क़ौम की ज़िन्दगी, इन्सानी क़ौम की ज़िन्दगी यहां तक कि और सब वों और जानदारों की ज़िन्दगी भी इस में शामिल है. न सब हालतों में से गुज़रती है. इस बड़ी ज़िन्दगी

اچھے اور برے دونوں ارتھوں میں پریم سے ہی دنیا پیدا ہوئی ہے' پریم ہی دنیا ہے' پریم ہی ایشور ہے' پریم ہی سے دنیا قائم ہے' پریم ہی آتما ہے اور پریم ہی کے ذریعہ روح اپنے مالک ایشور اللہ کو جان کر پھر سے اس میں سما سکتی ہے. یہ راستہ کٹھن اور دشوارگذار ہے. لیکن راستے کی اس ساری دشوارگذاری میں ہی اس کا سارا آنند اور الاس ہے. پگ پگ پر ساودھانی' قدم قدم پر احتیاط ضروری ہے. اس احتیاط کا ہی طریقہ ہے کہ ہر وقت ہر پل آدمی اپنے کو پرکھتا رہے' اپنے کو کسوٹی پر کستا رہے' اپنے من کو تولتا رہے. اسی کو ہندو یوگیوں نے سوچت پریکشا کہا ہے. صوفی اسے خود حسابی کہتے ہیں.

ہندو بھکتی شاستر میں اس چیز کو طرح طرح سے سمجھایا گیا ہے—جیسے پریم کے الگ الگ روپ' نوکر کا مالک سے پریم جیسے ہنومان کا رام سے' مترا کا مترا پریم جیسے ارجن کا کرشن سے' ماں باپ کا بچے سے پریم جیسے دشرتھ اور کوشلیا کا رام سے' مریم کا عیسیٰ سے' فاطمہ کا حسن اور حسین سے اور پھر بچوں کا ماں اور باپ سے پریم. یہ آخری پریم سب سے آسان ہے پر ایشور کو ماں یا باپ کے روپ میں دیکھنے والے بھی کبھی کبھی اپنے اوپر بھروسہ بہت زیادہ کھو بیٹھتے ہیں. آخر سب راستے ایک ہی مرکز پر جا کر مل جاتے ہیں.

ایک آدمی کے ایک آدمی سے پریم کے بھی بہت سے درجے ہیں. یہ درجے جتنے اوپر چڑھتے جاتے ہیں اتنا اتنا عاشق اپنے معشوق سے لیتا کم ہے اور اسے دیتا زیادہ ہے. آدمی بچے کی شکل میں پیدا ہوتا ہے. بچے کا پریم ماں سے سولہ آنہ خود غرضی کا ہوتا ہے. بچہ ماں سے لینا ہی لینا جانتا ہے' دینا نہیں جانتا. بڑھتے بڑھتے آخر میں آدمی ماں یا باپ بنتا ہے تب بچے سے اس کا پریم بالکل بےلاگ ہو جاتا ہے. خاصکر ماں کے پریم میں سب دینا ہی دینا ہوتا ہے' لینا نہیں ہوتا. ماں ہر طرح کی گستاخیوں کو معاف کر دیتی ہے. ماں ایشور کا جمالی (یعنی کرونا کا) روپ ہے. باپ ایشور کا جلالی روپ ہے' اسکا ایشوریہ ہے. بچوں کے لئے ماں کا پریم بےلاگ اور بےلوث ہوتے ہوئے بھی اکثر اپنے بچوں تک ہی محدود رہتا ہے. پاس پڑوس تک کے بچے اس سے باہر رہ جاتے ہیں پر اللہ کا کنبہ ساری دنیا ہے.

جو حالت ایک کنبے کی ہے وہی ساری زندگی کی ہے. اس زندگی میں موت کے بعد کی زندگی بھی شامل ہے. اس سارے سماج کی زندگی' اپنی قوم کی زندگی' ساری انسانی قوم کی زندگی یہاں تک کہ اور سب پرانیوں اور جانداروں کی زندگی بھی اس میں شامل ہے. روح ان سب حالتوں میں سے گذرتی ہے. اس بڑی زندگی

लोग तो सीधे और भोले होते हैं जो दूसरों के जाल में फंस जाते हैं और कुछ जान बूझ कर दूसरों को जाल में फांसते हैं. धर्म या मजहब के नाम पर यह बुरा और खौफनाक व्यापार हमारे चारों तरफ़ बराबर चलता रहता है. खुदा और खुदी, भलाई और बुराई, हर एक के दिल के अन्दर मौजूद है. मौक़ा पाकर कभी एक तरह के बीज और कभी दूसरी तरह के बीज हमारे अन्दर से फूट निकलते हैं. इसी से कोई नेक बन जाता है और कोई बद, कोई संत और कोई डाकू. हमारे जिस्म के अन्दर भी हमारी रीढ़ की हड्डी से मिले हुए नीचे से ऊपर तक बहुत से चक्कर हैं जिनमें सब से ऊपर हमारे मस्तक का ब्रह्म रन्ध्र है और सब से नीचे हमारा जिन्सी चक्र. ऊपर को जाने वाली आत्मा ब्रह्म रन्ध्र की तरफ़ चढ़ती है और नीचे को जाने वाली आत्माएं नीचे की तरफ़ फिसलती हैं. इनकी बहुत सी शाखें दर शाखें हैं. कभी कभी आत्मा ऊपर को चढ़ने की कोशिश में खुद बखुद नीचे को फिसल पड़ती है और लोक भ्रष्ट हो कर नष्ट हो जाती है. ईसाइयों में 'ईसा की दुलहनों,' हिन्दुओं में 'कृष्ण की गोपियों' और इस्लाम में 'मुहम्मद के शैदाइयों' और इसी तरह बहुत से गुरुओं, पीरों और मुरशिदों के चेलों और मुरीदों में अकसर निहायत गंदी काम वासना यानी शहवत परस्ती की तरफ़ यह गिरावट देखने में आती है जिसे देख कर दुनिया शर्म से पानी पानी हो जाती है. यही हालत हिन्दुओं में वाम मार्ग और शक्ति पूजा की हुई है. प्रेम या इश्क़ जब जिस्मानी हालत से नूरी हालत तक चढ़ने की कोशिश करता है तो कभी कभी और ज़ोर के साथ नीचे गिरता है.

इश्क़े हक़ीक़ी में भी वह सब हालतें विरह और विसाल, तड़प, सोज़ और इन्तज़ार की पैदा होती हैं जो इश्क़े मजाज़ी में. इससे उस गिरावट का ख़तरा और भी बढ़ जाता है. इस गिरावट ही की वजह से कभी कभी एक ही गुरु के दो चेलों में या दो जमाअतों में, जो अपने को एक ही गुरु के चेले मानती हैं, वह आपसी लड़ाई झगड़े ईर्षा, द्वेष, मुक़दमाबाज़ी और ख़ूंरेज़ी तक देखने में आती है जिसे देख कर इन्सानियत शरमा जाती है. इसी से वह जलन, दुश्मनियां और रिक़ाबतें पैदा होती हैं जिनसे हर मुल्क की तारीख़ भरी पड़ी है. चन्दन की लकड़ी बड़ी अच्छी चीज़ है अगर उसे घिस कर माथे पर या बदन पर लगाया जाये. वही चन्दन की लकड़ी बड़ी बुरी चीज़ है अगर उसे जला कर उस से अपना या दूसरे का घर या बदन फूंका जाये. प्रेम के इन दोनों पहलुओं को निगाह में रखते हुए ही एक हिन्दुस्तानी संत ने कहा है :—

फ़क़ीरा फ़क़ीरी दूर है — जैसी कि ऊंची खजूर है
चढ़ जाये चूसे प्रेम रस — गिर जाये चकनाचूर है

لوگ تو سیدھے اور بھولے ہوتے ہیں جو دوسروں کے جال میں پھنس جاتے ہیں اور کچھ جان بوجھکر دوسروں کو جال میں پھانستے ہیں۔ دھرم یا مذہب کے نام پر یہ برا اور خوفناک بیوپار ہمارے چاروں طرف برابر چلتا رہتا ہے۔ خدا اور خودی، بھلائی اور برائی ہر ایک کے دل کے اندر موجود ہے۔ موقع پا کر کبھی ایک طرح کے بیج ہمارے اندر سے پھوٹ نکلتے ہیں۔ اسی سے کوئی نیک بن جاتا ہے اور کوئی بد، کوئی سنت اور کوئی ڈاکو۔ ہمارے جسم کے اندر بھی ہماری ریڑھ کی ہڈی سے ملے ہوئے نیچے سے اوپر تک بہت سے چکر ہیں جن میں سب سے اوپر ہمارے مستک کا برہمہ رندھر ہے اور سب سے نیچے ہمارا جنسی چکر۔ اوپر کو جانے والی آتما برہمہ رندھر کی طرف چڑھتی ہے اور نیچے کو جانے والی آتمائیں نیچے کی طرف پھسلتی ہیں۔ ان کی بہت سی شاخیں در شاخیں ہیں۔ کبھی کبھی آتما اوپر کو چڑھنے کی کوشش میں خود بخود نیچے کو پھسل پڑتی ہے اور لوک بھرشٹ ہو کر نشٹ ہو جاتی ہے۔ عیسائیوں میں 'عیسی کی دلہنوں' ہندوؤں میں 'کرشن کی گوپیوں' اور اسلام میں 'محمد کے شیدائیوں' اور اسی طرح بہت سے گروؤں، پیروں اور مرشدوں کے چیلوں اور مریدوں میں اکثر نہایت گندی کام واسنا یعنی شہوت پرستی کی طرف وہ گراوٹ دیکھنے میں آتی ہے جسے دیکھکر دنیا شرم سے پانی پانی ہو جاتی ہے۔ یہی حالت ہندوؤں میں وام مارگ اور شکتی پوجا کی ہوئی ہے۔ پریم یا عشق جب جسمانی حالت سے نوری حالت تک چڑھنے کی کوشش کرتا ہے تو کبھی کبھی اور زور کے ساتھ نیچے گرتا ہے۔

عشق حقیقی میں بھی وہ سب حالتیں ورہ اور وصال، تڑپ، سوز اور انتظار کی پیدا ہوتی ہیں جو عشق مجازی میں۔ اس سے گراوٹ کا خطرہ اور بھی بڑھ جاتا ہے۔ اس گراوٹ ہی کی وجہ سے کبھی کبھی ایک ہی گرو کے دو چیلوں میں یا دو جماعتوں میں، جو اپنے کو ایک ہی گرو کے چیلے مانتی ہیں، وہ آپسی لڑائی جھگڑے ایرشا، دویش، مقدمہ بازی اور خونریزی تک دیکھنے میں آتی ہے جسے دیکھکر انسانیت شرما جاتی ہے۔ اسی سے وہ جلن، دشمنیاں اور رقابتیں پیدا ہوتی ہیں جن سے ہر ملک کی تاریخ بھری پڑی ہے۔ چندن کی لکڑی بڑی اچھی چیز ہے اگر اسے گھس کر ماتھے پر یا بدن پر لگایا جائے۔ وہی چندن کی لکڑی بڑی بری چیز ہے اگر اسے جلا کر اس سے اپنا یا دوسرے کا گھر یا بدن پھونکا جائے۔ پریم کے ان دونوں پہلوؤں کو نگاہ میں رکھتے ہوئے ہی ایک ہندوستانی سنت نے کہا ہے :—

فقیرا فقیری دور ہے — جیسی کہ اونچی کھجور ہے
چڑھ جائے چوسے پریم رس — گر جائے چکنا چور ہے

जमा कर के रक्खा है. पहला क़र्ज़ा आदमी इन्सानी समाज की और सब प्राणियों की बेलाग सेवा करके अदा करता है. दूसरा क़र्ज़ा वह नेक औलाद पैदा करके अदा करता है और तीसरा क़र्ज़ा वह अब तक के दुनिया के ज्ञान को आगे की नसलों तक पहुंचा कर अदा करता है. मनुस्मृती के अनुसार जो आदमी इन तीन बड़े क़र्ज़ों को अदा किये बग़ैर मोक्ष यानी निजात की कोशिश करता है वह मोक्ष की इच्छा रखते हुए भी और अधिक बन्धनों में फंसता जाता है.

जिस आदमी ने अपनी ज़िन्दगी के पहले हिस्से में विद्या और ज्ञान हासिल नहीं किया, दूसरे हिस्से में जिस ने ईमान्दारी की रोज़ी नहीं कमाई और बाल बच्चों की सेवा नहीं की और तीसरे हिस्से में जिस ने सब के भले के लिये त्याग और क़ुर्बानी के काम नहीं किये वह चौथे हिस्से यानी बुढ़ापे में अपनी आत्मा या परमात्मा की खोज में लग ही नहीं सकता. मौत के बाद अमर जीवन को वही इन्सान हासिल कर सकता है और वही नूर की दुनिया में दाख़िल हो सकता है जिसने जीते जी इन तीनों क़र्ज़ों को ईमान्दारी के साथ अदा किया हो.

यह चढ़ाई पहाड़ की चढ़ाई की तरह है. इसमें एक एक क़दम संभाल कर रखना होता है. इसमें सब से बड़ी ज़रूरत दिल के अन्दर प्रेम यानी इश्क़ की है. प्रेम यानी इश्क़ दो तरह का होता है, एक ईश्वर प्रेम या इश्क़े हक़ीक़ी जिसमें बनी नूह यानी तमाम इन्सानी क़ौम बल्कि प्राणी मात्र से प्रेम शामिल है और दूसरा किसी एक ख़ास इन्सान से प्रेम जिसे सूफ़ियों की बोली में इश्क़े मजाज़ी कहते हैं. एक हद तक यह दोनों एक दूसरे के लिये ज़रूरी हैं. इश्क़े मजाज़ी से ही तरक़्क़ी करते करते आदमी इश्क़े हक़ीक़ी तक पहुंचता है. गुरु भक्ति या पीर भक्ति भी इश्क़े मजाज़ी है. लेकिन ईश्वर भक्ति तक पहुंचने के लिये गुरु भक्ति अकसर ज़रूरी होती है. इसी जगह एक बहुत बड़ा धोखा और बहुत बड़ा ख़तरा आदमी के सामने आता है. इस ख़तरे में फंस कर कभी कभी आदमी ऊपर चढ़ने की जगह और नीचे को फिसलने और गिरने लगता है. नीचे को फिसलना ऊपर को चढ़ने के मुक़ाबिले बहुत आसान होता है. ईश्वर भक्ति यानी इश्क़े हक़ीक़ी के बड़े बड़े सच्चे खोजी भी अकसर इस जाल में फंस जाते हैं.

पिछले ज़माने की बहुत सी धार्मिक सम्प्रदायों का इतिहास और आजकल के बहुत से मज़हबी गिरोहों का हाल इस गिरावट की मिसालों से भरा पड़ा है. हिन्दू भक्ति मार्ग की सम्प्रदायों और सूफ़ियों दोनों में इस तरह की मिसालें मिल सकती हैं. अब भी इस तरह के मज़हबी गिरोह दुनिया भर में आए दिन बनते रहते हैं. इन में कुछ

جمع کر کے رکھا ہے . پہلا قرضہ آدمی انسانی سماج کی اور سب پرانیوں کی بے لاگ سیوا کر کے ادا کرتا ہے . دوسرا قرضہ وہ نیک اولاد پیدا کر کے ادا کرتا ہے اور تیسرا قرضہ وہ اب تک کے دنیا کے گیان کو آگے کے نسلوں تک پہنچا کر ادا کرتا ہے . منو سمرتی کے انوسار جو آدمی ان تین بڑے قرضوں کو ادا کئے بغیر موکش یعنی نجات کی کوشش کرتا ہے وہ موکش کی اچھا رکھتے ہوئے بھی اور ادھک بندھنوں میں پھنستا جاتا ہے .

جس آدمی نے اپنی زندگی کے پہلے حصے میں ودیا اور گیان حاصل نہیں کیا، دوسرے حصے میں جس نے ایمانداری کی روزی نہیں کمائی اور بال بچوں کی سیوا نہیں کی، اور تیسرے حصے میں جس نے سب کے بھلے کے لئے تیاگ اور قربانی کے کام نہیں کئے وہ چوتھے حصے یعنی بڑھاپے میں اپنی آتما یا پرماتما کی کھوج میں لگ ہی نہیں سکتا . موت کے بعد امر جیون کو وہی انسان حاصل کر سکتا ہے اور وہی نور کی دنیا میں داخل ہو سکتا ہے جس نے جیتے جی ان تینوں قرضوں کو ایمانداری کے ساتھ ادا کیا ہو .

یہ چڑھائی پہاڑ کی چڑھائی کی طرح ہے . اس میں ایک ایک قدم سنبھال کر رکھنا ہوتا ہے . اس میں سب سے بڑی ضرورت دل کے اندر پریم یعنی عشق کی ہے . پریم یعنی عشق دو طرح کا ہوتا ہے ایک ایشور پریم یا عشق حقیقی جس میں بنی نوح یعنی تمام انسانی قوم بلکہ پرانی ماتر سے پریم شامل ہے اور دوسرا کسی ایک خاص انسان سے پریم جسے صوفیوں کی بولی میں عشق مجازی کہتے ہیں . ایک حد تک یہ دونوں ایک دوسرے کے لئے ضروری ہیں . عشق مجازی سے ہی ترقی کرتے کرتے آدمی عشق حقیقی تک پہنچتا ہے . گرو بھگتی یا پیر بھگتی بھی عشق مجازی ہے . لیکن ایشور بھگتی تک پہنچنے کے لئے گرو بھگتی اکثر ضروری ہوتی ہے . اس جگہ ایک بہت بڑا دھوکا اور بہت بڑا خطرہ آدمی کے سامنے آتا ہے . اس خطرے میں پھنس کر کبھی کبھی آدمی اوپر چڑھنے کی جگہ اور نیچے کو پھسلنے اور گرنے لگتا ہے . نیچے کو پھسلنا اوپر کو چڑھنے کے مقابلے بہت آسان ہوتا ہے . ایشور بھگتی یعنی عشق حقیقی کے بڑے بڑے سچے کھوجی بھی اکثر اس خیال میں پھنس جاتے ہیں .

پچھلے زمانے کی بہت سی دھارمک سمپردایوں کا اتہاس اور آج کل کے بہت سے مذہبی گروہوں کا حال اس گراوٹ کی مثالوں سے بھرا پڑا ہے . ہندو بھگتی مارگ کی سمپردایوں اور صوفیوں دونوں میں اس طرح کی مثالیں مل سکتی ہیں . اب بھی اس طرح کے مذہبی گروہ دنیا بھر میں آئے دن بنتے رہتے ہیں . ان میں کچھ

मज़हब में धोके से बचने की ज़रूरत

(डाक्टर भगवानदास)

हर आदमी का फ़र्ज़ है कि अपने जीवन में ईश्वर अल्लाह की मरज़ी को पूरा करे. यह मरज़ी आदमी की अपनी अन्दर की आत्मा की ही मरज़ी है. सब मज़हबों की किताबें हमें बताती हैं और अगर हम ध्यान से समझने की कोशिश करें तो यही तालीम साइन्स हमें देती है कि रूह पहले इस दुनिया की चार दिन की फ़ानी ज़िन्दगी में दाख़िल होती है और फिर इस जिस्म के मौत के दरवाज़े से निकल कर अमर ज़िन्दगी में दाख़िल होती है. उस अमर ज़िन्दगी का नाम ही अंगरेज़ी में सुम्मम बोनम यानी सब से बड़ी नेकी, और संस्कृत में प्रमम शिरये यस या निश शिरये यस है. इस्लाम में उसी को वाजिबुल्वजूद या ख़ैर महज़ या सरूरे जाविदानी कहा गया है. इस मंज़िल तक पहुंचने का रास्ता यह है कि हर आदमी अपनी ज़िन्दगी के चार क़ुदरती हिस्सों में ईमान्दारी के साथ हर हिस्से के अलग अलग फ़र्ज़ों को पूरा करे, और ज़िन्दगी के दूसरे हिस्से में उन चार तरह के पेशों या रोज़गारों में से किसी एक का ठीक ठीक पालन करे जो हर देश, हर धर्म और हर ज़माने के आदमियों के लिये क़ुदरती और ज़रूरी हैं. इन चार तरह के रोज़गारों में से हर एक की बहुत सी शाख़ें हैं. हर इन्सान को इनमें से निकलना पड़ता है. हिन्दू धर्म में इन चारों को अलग अलग बयान किया गया है. पेशों या रोज़गारों की इन चार क़ुदरती क़िस्मों से ही बाद के लोगों और पन्डे प्रोहितों ने सैकड़ों और हज़ारों जन्म की जातें बना डालीं. यह ग़लती असलियत को न समझ सकने से और हमारे अन्दर की ख़ुदी के कारन हुई है.

हिन्दू धर्म ग्रंथों के अनुसार हर इन्सान तीन क़र्ज़ें (यानी रिन) अपने साथ लेकर पैदा होता है. पहला क़र्ज़ा देव रिन कहलाता है, दूसरा पित्र रिन और तीसरा रिशी रिन. देव रिन आदमी के ज़िम्मे उन देवताओं या फ़रिश्तों का क़र्ज़ा है जिन्होंने ईश्वर के हुक्म से इस दुनिया को बनाया. पित्र रिन आदमी के ज़िम्मे उन पुरखों या पूर्वजों का क़र्ज़ा है जिन से आदमी को यह जिस्म मिला है. रिशी रिन उन रिशियों विद्वानों, ज्ञानियों आलिमों और आरिफ़ों का क़र्ज़ा है जिन्होंने हर हर ज़माने में आने वाली नसलों के लिये ज्ञान और इल्म का भंडार

مذہب میں دھوکے سے بچنے کی ضرورت

(ڈاکٹر بھگوان داس)

ہر آدمی کا فرض ہے کہ اپنے جیون میں ایشور اللہ کی مرضی کو پورا کرے ۔ یہ مرضی آدمی کی اپنی اندر کی آتما کی ہی مرضی ہے ۔ سب مذہبوں کی کتابیں ہمیں بتاتی ہیں اور اگر ہم دھیان سے سمجھنے کی کوشش کریں تو یہی تعلیم سائنس ہمیں دیتی ہے کہ روح پہلے اس دنیا کی چار دن کی فانی زندگی میں داخل ہوتی ہے اور پھر اس جسم کے موت کے دروازے سے نکل کر امر زندگی میں داخل ہوتی ہے ۔ اس امر زندگی کا نام ہی انگریزی میں سمم بونم یعنی سب سے بڑی نیکی اور سنسکرت میں پرمم شرے یس یا نش شرے یس ہے ۔ اسلام میں اسی کو واجب الوجود یا خیر محض یا سرورِ جاودانی کہا گیا ہے ۔ اس منزل تک پہنچنے کا راستہ یہ ہے کہ ہر آدمی اپنی زندگی کے چار قدرتی حصوں میں ایمانداری کے ساتھ ہر حصے کے الگ الگ فرضوں کو پورا کرے اور زندگی کے دوسرے حصے میں ان چار طرح کے پیشوں یا روزگاروں میں سے کسی ایک کا ٹھیک ٹھیک پالن کرے جو ہر دیش، ہر دھرم اور ہر زمانے کے آدمیوں کے لئے قدرتی اور ضروری ہیں ۔ ان چار طرح کے روزگاروں میں سے ہر ایک کی بہت سی شاخیں ہیں ۔ ہر انسان کو ان میں سے نکلنا پڑتا ہے ۔ ہندو دھرم میں ان چاروں کو الگ الگ بیان کیا گیا ہے ۔ پیشوں یا روزگاروں کی ان چار قدرتی قسموں سے ہی بعد کے لوگوں اور پنڈے پروہتوں نے سیکڑوں اور ہزاروں جنم کی جاتیں بنا ڈالیں ۔ یہ غلطی اصلیت کو نہ سمجھ سکنے سے اور ہمارے اندر کی خودی کے کارن ہوئی ہے ۔

ہندو دھرم گرنتھوں کے انوسار ہر انسان تین قرضے (یعنی رن) اپنے ساتھ لے کر پیدا ہوتا ہے ۔ پہلا قرضہ دیو رن کہلاتا ہے ۔ دوسرا پتری رن اور تیسرا رشی رن ۔ دیو رن آدمی کے ذمہ ان دیوتاؤں یا فرشتوں کا قرضہ ہے جنہوں نے ایشور کے حکم سے اس دنیا کو بنایا ۔ پتری رن آدمی کے ذمہ ان پرکھوں یا پوروجوں کا قرضہ ہے جن سے آدمی کو یہ جسم ملا ہے ۔ رشی رن ان رشیوں، ودوانوں، گیانیوں، عالموں اور عارفوں کا قرضہ ہے جنہوں نے ہر ہر زمانے میں آنے والی نسلوں کے لئے گیان اور علم کا بھنڈار

था कि आप कोई काले आदमी यानी नीगरो होंगे !' कोई भी गोरा आदमी नीगरो लोगों की सेवा ऐसी लगन के साथ कर सकता है, इसका गुमान भी बक्सटन साहब न कर सकते थे !”

अहिंसा के सच्चे पुजारी—

गैरिसन का जीवन एकांगी नहीं था. धर्म की आजादी के लिये, शराब बन्दी के लिये और स्त्रियों को बराबर के हक़ दिलाने के लिए भी उन्होंने बहुत काफ़ी काम किया. किसी भी तरह के अन्याय या अत्याचार के खिलाफ़ आवाज़ उठाने में उन्होंने कभी भी संकोच नहीं किया. मरने से तीन महीने पहले अमरीका में चीनी लोगों के आने को रोकने वाले बिल का ज़बरदस्त विरोध किया था और सब इनसानों के बराबर के हकों का ज़ोरों से एलान किया था. उनका आखिरी लेख, जो 24 अप्रैल 1879 को छपा था, दीन हीन काले मज़दूरों की तरफ़दारी में था. उसके एक महीने बाद 24 मई 1879 को उनका स्वर्गवास हो गया.

गैरिसन के जीवन चरित्र को पढ़ते हुए हमारे मन में बार बार एक भावना उठती है : क्या अमरीका के लोग गैरिसन को बिलकुल ही भूल गए ? सुना है कि अमरीका वाले करोड़ों रुपये प्रोपेगैन्डा पर खर्च करते हैं और अरबों डालर हथियारों पर ! एमर्सन, थोरो, ह्विटमैन और गैरिसन की मातृभूमि आत्मविस्मृति (खुद-फ़रामोशी) के इतने गहरे गड्ढे में जा गिरेगी इसकी कल्पना भला कौन कर सकता था ? हमारे देश को, जो चार बरस में ही महात्मा जी के उपदेशों को भुला बैठा, यह अधिकार नहीं है कि वह अमरीका पर फब्ती कसे; फिर भी दुख और लज्जा के साथ मानना ही पड़ेगा कि अमरीका वालों ने गैरिसन के असूलों की उसी तरह हत्या की है जैसे हम और हमारी सरकार गांधी जी के सिद्धान्तों की कर रहे हैं पर अहिंसा के वह सिद्धान्त अमर हैं, अमिट हैं और आगे चल कर उन्हीं से दुनिया का कल्याण होने वाला है.

गैरिसन के यह शब्द कि 'सारा संसार मेरा देश है और सारी मानव जाति मेरे देश वासी' युग युगान्तर तक आकाश में गूंजते रहेंगे. सचमुच गैरिसन धरती भर के नागर थे और अहिंसा के मानने वालों में अगुआ.

تھا کہ آپ کوئی کالے آدمی یعنی نیگرو ہونگے !' کوئی بھی گورا آدمی نیگرو لوگوں کی سیوا ایسی لگن کے ساتھ کرسکتا ہے اِس کا گمان بھی بکسٹن صاحب نہ کرسکتے تھے !"

اہنسا کے سچے پجاری—

گیریسن کا جیون ایکانگی نہیں تھا ۔ دھرم کی آزادی کے لئے' شراب بندی کے لئے اور استریوں کو برابر حق دلانے کے لئے بھی انہوں نے بہت کافی کام کیا ۔ کسی بھی طرح کے انیائے یا اتیاچار کے خلاف آواز اُٹھانے میں انہوں نے کبھی بھی سنکوچ نہیں کیا ۔ مرنے سے تین مہینے پہلے امریکہ میں چینی لوگوں کے آنے کو روکنے والے بل کا زبردست ورودھ کیا تھا اور سب انسانوں کے برابر کے حقوق کا زوروں سے اعلان کیا تھا ۔ اُن کا آخری لیکھ جو 24 اپریل 1879 کو چھپا تھا' دین ہین کالے مزدوروں کی طرفداری میں تھا ۔ اُس کے ایک مہینے بعد 24 مئی 1879 کو اُن کا سورگواس ہوگیا ۔

گیریسن کے جیون چرتر کو پڑھتے ہوئے ہمارے من میں بار بار ایک بھاونا اُٹھتی ہے : کیا امریکہ کے لوگ گیریسن کو بالکل ہی بھول گئے ؟ سنا ہے کہ امریکہ والے کروڑوں روپئے پروپیگنڈا پر خرچ کرتے ہیں اور اربوں ڈالر ہتھیاروں پر ! ایمرسن' تھورو' ہٹمین اور گیریسن کی ماتربھومی آتم وسمرت (خود فراموشی) کے اتنے گہرے گڈھے میں جاگریگی' اِس کی کلپنا بھلا کون کرسکتا تھا؟ ہمارے دیش کو' جو چار برس میں ہی مہاتما جی کے اُپدیشوں کو بھلا بیٹھا' یہ ادھیکار نہیں ہے کہ وہ امریکہ پر پھبتی کسے؛ پھر بھی دکھ اور لجا کے ساتھ یہ ماننا ہی پڑیگا کہ امریکہ والوں نے گیریسن کے اصولوں کی اُسی طرح ہتیا کی ہے' جیسے ہم اور ہماری سرکار گاندھی جی کے سدھانتوں کی کررہے ہیں پر اہنسا کے وہ سدھانت امر ہیں' امٹ ہیں اور آگے چلکر انہیں سے دنیا کا کلیان ہونے والا ہے ۔

گیریسن کے یہ شبد کہ 'سارا سنسار میرا دیش ہے اور ساری مانو جاتی میرے دیش واسی' یگ یوگانتر تک آکاش میں گونجتے رہینگے. سچ مچ گیریسن دھرتی بھر کے ناگر تھے اور اہنسا کے ماننے والوں میں اگوا ۔

हमें खून बहाना नहीं चाहिये, आज़ादी हमारा हक़ है, वह हमें जीवन से भी अधिक प्यारा है, हम उसे जीतेंगे या मर जायेंगे, लेकिन हम कोई ग़लत तरीक़ा अख़्तयार नहीं करेंगे. हम किसी को मारेंगे नहीं और न अपने ऊपर अत्याचार करने वालों को हम किसी तरह का भी नुक़सान पहुंचायेंगे, न हम उनसे नफ़रत करेंगे.

इस में शक नहीं कि गैरिसन की आत्मा महात्मा जी की रहबर थी. यह बात ध्यान देने की है कि महात्मा जी के भक्त श्री कैलेनबैक के पास गैरिसन के जीवन चरित की वह चार जिल्दें अफ़रीका में मौजूद थीं जिनके आधार पर आज हम यह लिख रहे हैं. खुद महात्मा जी ने हमें वह ग्रन्थ आज से 25 साल पहले भेजा था. उसके बाद उसकी नई कापी हमने अमरीका से मंगा ली.

गैरिसन को अपने आन्दोलन में अनोखी सफलता मिली. उनके अख़बार 'लिबरेटर' का असर इतना बढ़ गया कि अमरीका में ऐसी दो हज़ार समितियां क़ायम हो गयीं जिनका ख़ास मक़सद ग़ुलामी की प्रथा का विरोध करना था. उनके मेम्बरों की गिन्ती दो लाख तक पहुंच गई! यह बात तो ठीक नहीं कि ग़ुलामी के बन्द कराने का सारा यश गैरिसन को ही दिया जाय क्योंकि इस यज्ञ में उनके साथी संगी और भी थे और 'टाम काका की कुटिया' नाम की पुस्तक ने भी, जो श्रीमती स्टो की लिखी हुई थी, इस प्रथा को बन्द कराने में बहुत बड़ी मदद दी थी; फिर भी इतना तो मानना ही पड़ेगा कि इस काम में गैरिसन की सेवाएं बेजोड़ थीं. वैसे अब्राहम लिंकन अगर बरसों पहले से जनता का मत तैयार न कर देते तो लिंकन के लिए ग़ुलामों की आज़ादी का एलान करना नामुमकिन था. अपनी पैंतीस चालीस साल की साधना के बाद लिंकन को जब 1865 में महान सफलता मिली और वह अमरीका के लोगों में बेहद मशहूर हो गए तो उन्होंने बड़ी नम्रता के साथ उसे स्वीकार किया.

गैरिसन को अपने जीवन में बहुत यश मिला और बड़े से बड़े आदमियों ने उनकी तारीफ़ें कीं जिन्हें उन्होंने भुला दिया पर एक आदमी की तारीफ़ को वह कभी नहीं भूल सके. गैरिसन की लड़की फ़ैनी गैरिसन ने लिखा है—"लन्दन पहुंचने पर सर फ़ोवेल बक्सटन ने गैरिसन को अपने यहां दावत दी. गैरिसन ठीक समय पर उनके यहां पहुंचे. उन्हें देखकर बक्सटन साहब कुछ चकराये और बोले—'क्या मुझे बोस्टन नगर के निवासी मिस्टर गैरिसन से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है?' गैरिसन ने जवाब दिया—'हां जनाब, मैं ही हूं और आप का दावतनामा पाकर यहां हाज़िर हुआ हूं.' यह सुन कर बक्सटन साहब दंग रह गए. फिर बोले—'अच्छा, मैं तो यह समझे हुए

"ہمیں خون بہانا نہیں چاہئے' آزادی ہمارا حق ہے' وہ ہمیں جیون سے بھی ادھک پیارا ہے . ہم اُسے جیتینگے یا مر جائینگے لیکن ہم کوئی غلط طریقہ اختیار نہیں کرینگے ہم کسی کو مارینگے نہیں اور نہ اپنے اوپر اتیاچار کرنے والوں کو ہم کسی طرح کا بھی نقصان پہونچائینگے' نہ ہم اُن سے نفرت کرینگے ."

اِس میں شک نہیں کہ گیریسن کی آتما مہاتما جی کی رہبر تھی . یہ بات دھیان دینے کی ہے کہ مہاتما جی کے بھکت شری کیلینبیک کے پاس گیریسن کے جیون چرت کی وہ چار جلدیں افریکہ میں موجود تھیں جن کے آدھار پر آج ہم یہ لکھ رہے ہیں . خود مہاتما جی نے ہمیں وہ گرنتھ آج سے 25 سال پہلے بھیجا تھا . اُس کے بعد اُسکی نئی کاپی ہم نے امریکہ سے منگالی .

گیریسن کو اپنے آندولن میں انوکھی سپھلتا ملی . اُن کے اخبار 'لبریٹر' کا اثر اتنا بڑھ گیا کہ امریکہ میں ایسی دو ہزار سمتیاں قایم ہوگئیں جس کا خاص مقصد غلامی کی پرتھا کا ورودھ کرنا تھا. اُن کے ممبروں کی گنتی دو لاکھ تک پہونچ گئی! یہ بات تو ٹھیک نہیں کہ غلامی کے بند کرانے کا سارا یش گیریسن کو ہی دیا جائے کیونکہ اِس یگیہ میں اُن کے انیک ساتھی سنگی اور بھی تھے اور "ٹام کاکا کی کٹیا" نام کی پستک نے بھی' جو شریمتی اسٹو کی لکھی ہوئی تھی' اِس پرتھا کو بند کرانے میں بہت بڑی مدد دی تھی; پھر بھی اتنا تو ماننا ہی پڑیگا کہ اِس کام میں گیریسن کی سیوائیں بےجوڑ تھیں. ویسے ابراہم لنکن اگر برسوں پہلے سے جنتا کا مت تیار نہ کردیتے تو لنکن کے لئے غلاموں کی آزادی کا اعلان کرنا ناممکن تھا. اپنی پینتیس چالیس سال کی سادھنا کے بعد لنکن کو جب 1865 میں مہان سپھلتا ملی اور وہ امریکہ کے لوگوں میں بےحد مشہور ہوگئے تو انہوں نے بڑی نمرتا کے ساتھ اُسے سویکار کیا .

گیریسن کو اپنے جیون میں بہت یش ملا اور بڑے سے بڑے آدمیوں نے اُن کی تعریفیں کیں' جنہیں انہوں نے بھلا دیا پر ایک آدمی کی تعریف کو وہ کبھی نہیں بھول سکے . گیریسن کی لڑکی فینی گیریسن نے لکھا ہے— "لندن پہونچنے پر سر فوویل بکسٹن نے گیریسن کو اپنے یہاں دعوت دی . گیریسن ٹھیک سمے پر اُن کے یہاں پہونچے . انہیں دیکھکر بکسٹن صاحب کچھ چکرائے اور بولے—'کیا مجھے بوسٹن نگر کے نواسی مسٹر گیریسن سے ملنے کا سوبھاگیہ پراپت ہو رہا ہے؟' گیریسن نے جواب دیا —'ہاں جناب' میں ہی ہوں اور آپ کا دعوت نامہ پاکر یہاں حاضر ہوا ہوں .' یہ سنکر بکسٹن صاحب دنگ رہ گئے . پھر بولے—'اچھا' میں تو یہ سمجھے ہوئے

करता है......हैवानी ताक़त से काम लेकर लड़ने में हम अपनी आत्माओं को नीचे गिराते हैं. दुष्टों को इन्साफ़ घरों से सज़ा दिलवाना या कमज़ोरों के बचाव के लिए और उन पर अत्याचारों का बदला लेने के लिए सिपाहियों के गिरोह से काम लेना सुनने में तो बड़ा अच्छा लगता है पर मेरे कानों को तो उसकी आवाज़ खोखली ही लगती है."—यह अहिंसा के ज़बरदस्त समर्थक गैरिसन के शब्द हैं. हम पहले लिख चुके हैं कि गैरिसन के शब्दों को पढ़ते हुए कहीं कहीं तो ऐसा मालूम होता है कि हम महात्मा गांधी के ही शब्दों को पढ़ रहे हैं.

एक और नमूना देखिये : "मानव समाज के इतिहास से इस बात के बहुत से सबूत मिल सकते हैं कि आदमी के सदाचार को ऊपर उठाने के लिए हैवानी ताक़त का इस्तेमाल उचित नहीं है. आदमी का पाप की तरफ़ लगाव केवल प्रेम से ही वश में किया जा सकता है. संसार से बुराई को दूर करने का केवल एक ही रास्ता है—यानी भलाई करना.......जो तलवार का सहारा लेते हैं, जो हिंसक हैं, वह तलवार से ही मिटेंगे. इसीलिए हम अहिंसा के असूल को दिल से स्वीकार करते हैं क्योंकि हमारा यह विश्वास है कि सदाचारी निगाह से यह असूल बिलकुल पक्का है. ज़मीन जायदाद की रक्षा के लिये, जीवन और आज़ादी को रक्षा के लिए, जनता के अमन अमान के लिए और निजी सुख के लिए भी हम अहिंसा के असूल को कारगर समझते हैं......इस असूल में हर तरह की शक्ति है और यह अपने पर हमला करने वाली हर शक्ति पर अन्त में विजय हासिल करेगा. अगर हम अपने असूल के पक्के हों तो फिर यह नामुमकिन होगा कि हम कोई दगा करें, देशद्रोह के लिए कोई जाल रचें या किसी बुरे काम में हिस्सा लें. उन क़ानूनों को छोड़ कर, जो इन्साफ़ के खिलाफ़ हैं, हम सब सरकारी क़ानूनों को मानेंगे, क़ानून के रास्ते में रुकावट न होंगे, लेकिन धर्म विरोधी क़ानूनों को तोड़ कर हम तोड़ने की सज़ा नम्रता के साथ स्वीकार करेंगे."

सितम्बर 1838 में—आज से 114 साल पहले—गैरिसन ने यह शब्द कहे थे. गैरिसन के इन शब्दों में और महात्मा जी के नीचे लिखे शब्दों में, जो क़रीब सौ साल बाद कहे गए, कितनी समानता है :

"We must have no bloodshed. We have a right to our liberty; it is dearer to us than life. We will win it or we will die. But we will do no wrong. We will not kill, we will not harm our oppressors, we will not even hate them."

کرتا ہیں...حیوانی طاقت سے کام لیکر لڑنے میں ہم اپنی آتماؤں کو نیچے گراتے ہیں. دشٹوں کو انصاف گھروں سے سزا دلوانا یا کمزوروں کے بچاؤ کے لئے اور ان پر اتیاچاروں کا بدلہ لینے کے لئے سپاہیوں کے گروہ سے کام لینا سننے میں تو بڑا اچھا لگتا ہے پر میرے کانوں کو تو اُن کی آواز کھوکھلی ہی لگتی ہے."—یہ اہنسا کے زبردست سمرتھک گیریسن کے شبد ہیں. ہم پہلے لکھ چکے ہیں کہ گیریسن کے شبدوں کو پڑھتے ہوئے کہیں کہیں تو ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ہم مہاتما گاندھی کے ہی شبدوں کو پڑھ رہے ہیں.

ایک اور نمونہ دیکھئے : "مانو سماج کے اتہاس سے اِس بات کے بہت سے ثبوت مل سکتے ہیں کہ آدمی کے سداچار کو اوپر اٹھانے کے لئے حیوانی طاقت کا استعمال اُچت نہیں ہے. آدمی کا پاپ کی طرف لگاؤ کیول پریم سے ہی وش میں کیا جاسکتا ہے. سنسار سے برائی کو دور کرنے کا کیول ایک ہی راستہ ہے—یعنی بھلائی کرنا......جو تلوار کا سہارا لیتے ہیں، جو ہنسک ہیں، وہ تلوار سے ہی مٹیںگے. اِسی لئے ہم اہنسا کے اصول کو دل سے سویکار کرتے ہیں؛ کیونکہ ہمارا یہ وشواس ہے کہ سداچاری نگاہ سے یہ اصول بالکل پکا ہے. زمین جائداد کی رکھشا کے لئے، جیون اور آزادی کی رکھشا کے لئے، جنتا کے امن امان کے لئے اور نجی سکھ کے لئے بھی ہم اہنسا کے اصول کو کارگر سمجھتے ہیں......اِس اصول میں ہر طرح کی شکتی ہے اور یہ اپنے پر حملہ کرنے والی ہر شکتی پر انت میں وجے حاصل کریگا. اگر ہم اپنے اصول کے پکے ہوں تو پھر یہ ناممکن ہوگا کہ ہم کوئی دغا کریں، دیش دروہ کے لئے کوئی جال رچیں یا کسی برے کام میں حصہ لیں. اُن قانونوں کو چھوڑکر، جو انصاف یا دھرم کے خلاف ہیں، ہم سب سرکاری قانونوں کو مانیںگے، قانون کے راستے میں رکاوٹ نہ ہوںگے، لیکن دھرم وِرودھی قانونوں کو توڑ کر ہم توڑنے کی سزا نمرتا کے ساتھ سویکار کرینگے."

ستمبر 1838 میں—آج سے 114 سال پہلے—گیریسن نے یہ شبد کہے تھے. گیریسن کے اِن شبدوں میں اور مہاتماجی کے نیچے لکھے شبدوں میں، جو قریب سو سال بعد کہے گئے، کتنی سمانتا ہے :

"We must have no bloodshed. We have a right to our liberty; it is dearer to us than life. We will win it or we will die. But we will do no wrong. We will not kill, we will not harm our oppressors, we will not even hate them."

घबरा गए. उन्हें इस बात की चिन्ता से बड़ा दुख हुआ कि मेरी (गैरिसन की) जान अब कैसे बचेगी, साथ ही नगर के शासकों की लाचारी पर भी उन्हें गुस्सा आया. गुस्सा और 'दुख से भरे हुए वह बोले—'अब आज से मैं हिंसा का विरोध शान्ति से करने के असूल को छोड़ता हूं. जब शासक हमारी रक्षा करने के नाक़ाबिल दिखाई देते हैं, मेरे इनसानी हक़ कुचल कर धूल में मिलाए जाते हैं और गुंडों से मेरे दोस्तों के जीवन खतरे में पड़ जाते हैं, तो मेरा यह फ़र्ज़ है कि मैं, चाहे जिस तरह हो, हथियार लेकर बचाव के लिए खड़ा हो जाऊं. मैंने अपने मित्र के कन्धे पर हाथ रखकर कहा—'मेरे प्यारे भाई, खबरदार! तुम नहीं जानते कि तुम्हारी आत्मा में कितनी शक्ति है! यही संकट तो हमारे विश्वास और हमारे सब्र की कसौटी है. हमारे शान्ति और क्षमा के सिद्धान्त किस काम के अगर हम संकट और खतरे के वक़्त उनको छोड़ दें? क्या तुम भी इन हिंसात्मक और खून के प्यासे आदमियों के समान बनना चाहते हो, जो मेरी जान लेने के लिए बाहर जमा हैं? क्या हम घूंसे का जवाब घूंसे से देंगे और तलवार के मुक़ाबले में तलवार उठायेंगे? परमात्मा ऐसा न करे! मैं खुद मर जाना कहीं अधिक पसन्द करूंगा, बनिस्बत इसके कि अपना हाथ अपनी रक्षा के लिए भी किसी आदमी पर उठाऊं. मैं हरगिज़ नहीं चाहता कि कोई भी आदमी मुझे बचाने के लिए हिंसा का आसरा ले. अगर ये लोग मेरी जान ले भी लेंगे तो भी गुलामों की आज़ादी का काम रुकने वाला नहीं है. परमात्मा हम सब पर शासन करता है और इस तूफ़ान से उसका आसन डिग नहीं सकता. अन्त में उसी सर्व शक्तिमान के सिद्धान्त की जीत होगी.''

गैरिसन की रक्षा के लिए हथियारों का इस्तेमाल हुआ होता तो उनकी जान चली जाती. उन आदमियों ने जब अहिंसा के मानने वाले गैरिसन को पकड़ लिया तो फिर उनकी कमर में रस्सी बांध कर उनको बोस्टन की सड़कों पर खूब घसीटा. उनका इरादा अन्त में गैरिसन को मार डालने का था पर इतने में बोस्टन के मेयर पुलिस लेकर वहां जा पहुंचे और उन्होंने गैरिसन की जान बचा ली. जिन्होंने अपनी आंखों से उस घटना को देखा था उनका कहना है कि उस संकट के समय भी, जब वे घसीटे जा रहे थे, गैरिसन के चेहरे पर अशान्ति या घबराहट का नामोनिशान तक नहीं था.

"जो लोग हमारे साथ नफ़रत का बरताव करें उनके लिए हमें प्रार्थना करनी चाहिए. मुझे यह उपदेश बहुत ऊंचे दर्जे का मालूम होता है कि 'जो आदमी तेरे एक गाल पर तमांचा मारे उसके सामने तू दूसरा गाल भी कर दे' मैं इस असूल की अच्छाई और ऊंचाई दोनों को महसूस

گھبرا گئے . انہیں اس بات کی چنتا سے بڑا دکھ ہوا کہ میری (گیریسن کی) جان اب کیسے بچیگی' ساتھ ہی نگر کے شاسکوں کی لاچاری پر بھی انہیں غصہ آیا . غصے اور دکھ سے بھرے ہوئے وہ بولے—'اب آج سے میں ہنسا کا وِرودھ شانتی سے کرنے کے اصول کو چھوڑتا ہوں . جب شاسک ہماری رکشا کرنے کے ناقابل دکھائی دیتے ہیں' میرے انسانی حق کچل کر دھول میں ملائے جاتے ہیں اور غنڈوں سے میرے دوستوں کے جیون خطرے میں پڑ جاتے ہیں' تو میرا یہ فرض ہے کہ میں' چاہے جس طرح ہو' ہتھیار لیکر بچاؤ کے لئے کھڑا ہو جاؤں . میں نے اپنے مِتر کے کندھے پر ہاتھ رکھکر کہا—میرے پیارے بھائی' خبردار ! تم نہیں جانتے کہ تمہاری آتما میں کتنی شکتی ہے ! یہی سنکٹ تو ہمارے وشواس اور ہمارے صبر کی کسوٹی ہے . ہمارے شانتی اور کشما کے سدھانت کس کام کے اگر ہم سنکٹ اور خطرے کے وقت انکو چھوڑ دیں ؟ کیا تم بھی ان ہنسا اور خون کے پیاسے آدمیوں کے سمان بننا چاہتے ہو' جو میری جان لینے کے لئے باہر جمع ہیں ؟ کیا ہم گھونسے کا جواب گھونسے سے دینگے اور تلوار کے مقابلے میں تلوار اٹھائینگے ؟ پرماتما ایسا نہ کرے ! میں خود مر جانا کہیں ادھک پسند کرونگا' بنسبت اس کے کہ اپنا ہاتھ اپنی رکشا کے لئے بھی کسی آدمی پر اٹھاؤں . میں ہرگز نہیں چاہتا کہ کوئی بھی آدمی مجھے بچانے کے لئے ہنسا کا آسرا لے . اگر یہ لوگ میری جان لے بھی لینگے تو بھی غلاموں کی آزادی کا کام رکنے والا نہیں ہے . پرماتما ہم سب پر شاسن کرتا ہے اور اس طوفان سے اس کا آسن ڈگ نہیں سکتا . انت میں اسی سروشکتیمان کے سدھانت کی جیت ہوگی ."

گیریسن کی رکشا کے لئے ہتھیاروں کا استعمال ہوا ہوتا تو انکی جان چلی جاتی . ان آدمیوں نے جب اہنسا کے ماننے والے گیریسن کو پکڑ لیا تو پھر انکی کمر میں رسی باندھکر انکو بوسٹن کی سڑکوں پر خوب گھسیٹا . ان کا ارادہ انت میں گیریسن کو مار ڈالنے کا تھا' پر اتنے میں بوسٹن کے میئر پولس لیکر وہاں جا پہونچے اور انہوں نے گیریسن کی جان بچالی . جنہوں نے اپنی آنکھوں سے اس گھٹنا کو دیکھا تھا ان کا کہنا ہے کہ اس سنکٹ کے سمے بھی' جب وہ گھسیٹے جا رہے تھے' گیریسن کے چہرے پر اشانتی یا گھبراہٹ کا نام و نشان تک نہیں تھا .

"جو لوگ ہمارے ساتھ نفرت کا برتاؤ کریں ان کے لئے ہمیں پرارتھنا کرنی چاہئے . مجھے یہ اپدیش بہت اونچے درجے کا معلوم ہوتا ہے کہ جو آدمی تیرے ایک گال پر طمانچہ مارے اس کے سامنے تو دوسرا گال بھی کردے' میں اس اصول کی اچھائی اور اونچائی کو محسوس

मारके का एलान—

3 अक्तूबर, 1828 को 'जरनल आफ दी टाइम्स' के पहले नम्बर में उन्होंने अपने अखबार की पालिसी का जो ऐलान किया था, वह आज सवा सौ बरस बाद भी ज्यों का त्यों जानदार मौजूद है—"पहली बात, जो हमें कहनी है, वह यह है कि हमारा यह अखबार 'आज़ाद' होगा—आज़ादी के सबसे अधिक फैले हुए और असली मानी में—कोई अपना स्वार्थ उसके रास्ते में रुकावट न हो सकेगा, कोई मज़हब या सम्प्रदाय उसको अपना तरफ़दार न बना सकेगा और कोई भी शक्ति उस पर अपना रोब न गांठ सकेगी. इस धरती पर जो भी छोटे से छोटे प्राणी रेंगते नज़र आते हैं उनमें सबसे नीच है एडीटर या सम्पादक कहलाने वाला वह जीव जिसमें जनता की बुराइयों का विरोध करने की हिम्मत नहीं, किसी पार्टी के पागलपन का मुक़ाबिला करने का साहस नहीं, जिसमें सच कहने और सच पर अड़े रहने का दम नहीं (चाहे नतीजा कुछ भी क्यों न हो !), बड़े आदमियों की नालायक़ी पर हमला करने की शक्ति नहीं, ढोंगियों का भंडा फोड़ करने की ताक़त नहीं, जो दुश्मनों के भौं चढ़ा लेने पर अपनी प्रेम भरी मुस्कराहट से उनका सामना नहीं कर सकता और जो ख़तरों से डरता है. ऐसा सम्पादक ही सब से अधिक ज़लील, पतित और ज़मीन पर रेंगने वाला अवसरवादी जानवर है और उसे रगड़ देना चाहिये ताकि वह जनता के हितों के बारे में दस्तअन्दाज़ी न कर सके."

सच्चाई की सज़ा—

अपने लेखक जीवन के 55 साल में गैरिसन ने निडरता, आज़ादी और सच्चाई के उसी आदर्श को अपने सामने रखा और उसके लिये उन्हें बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा. गुलामी के रिवाज को बन्द कराने के लिये उन्हें जो घोर आन्दोलन करना पड़ा उससे कई बार उनकी जान तक ख़तरे में पड़ गई. एक बार तो गुलामी प्रथा के पक्षपाती पांच हज़ार आदमियों ने उन्हें क़रीब क़रीब नंगा करके और कमर में रस्सी डाल कर बोस्टन की सड़कों पर घसीटा. यह दुर्घटना 21 अक्तूबर 1835 की है. गैरिसन उस समय स्त्रियों की एक सभा में भाषण दे रहे थे. इन पांच हज़ार आदमियों ने उस जगह को घेर लिया. बाक़ी हाल गैरिसन के ही लफ़्ज़ों में सुन लीजिये—

"जब चारों तरफ़ से हल्ला हो रहा था, एक भाई, जो गुलामी प्रथा के ख़िलाफ़ थे, पर जिनके मन में अभी इस बात का ठीक ठीक फ़ैसला नहीं हो पाया था कि गुलामी की प्रथा को दूर करने के लिए शान्ति के उपायों से काम लेना चाहिए या हथियारों का भी इस्तेमाल करना चाहिए,

معرکے کا اعلان—

3 اکتوبر، 1828 کو 'جرنل آف دی ٹائمس' کے پہلے نمبر میں انہوں نے اپنے اخبار کی پالیسی کا جو اعلان کیا تھا، وہ آج سوا سو برس بعد بھی جیوں کا تیوں جاندار موجود ہے—" پہلی بات، جو ہمیں کہنی ہے، وہ یہ ہے کہ ہمارا یہ اخبار 'آزاد' ہوگا—آزادی کے سب سے ادھک پھیلے ہوئے اور اصلی معنی میں—کوئی اپنا سوارتھ اس کے راستے میں رکاوٹ نہ ہو سکے گا، کوئی مذہب یا سمپردائے اسکو اپنا طرفدار نہ بنا سکے گا اور کوئی بھی شکتی اس پر اپنا روب نہ گانٹھ سکے گی۔ اس دھرتی پر جو بھی چھوٹے سے چھوٹے پرانی رینگتے نظر آتے ہیں ان میں سب سے نیچ ہے ایڈیٹر یا سمپادک کہلانے والا وہ جیو جس میں جنتا کی برائیوں کا وِرودھ کرنے کی ہمت نہیں، کسی پارٹی کے پاگل پن کا مقابلہ کرنے کا ساہس نہیں، جس میں سچ کہنے اور سچ پر اڑے رہنے کا دم نہیں (چاہے نتیجہ کچھ بھی کیوں نہ ہو !)، بڑے آدمیوں کی نالائقی پر حملہ کرنے کی شکتی نہیں، ڈھونگیوں کا بھانڈا پھوڑ کرنے کی طاقت نہیں، جو دشمنوں کے بھوں چڑھا لینے پر اپنی پریم بھری مسکراہٹ سے ان کا سامنا نہیں کر سکتا اور جو خطروں سے ڈرتا ہے۔ ایسا سمپادک ہی سب سے ادھک ذلیل، پتت اور زمین پر رینگنے والا اوسروادی جانور ہے اور اسے رگڑ دینا چاہئے تاکہ وہ جنتا کے ہتوں کے بارے میں دست اندازی نہ کر سکے۔"

سچائی کی سزا—

اپنے لیکھک جیون کے 55 سال میں گیریسن نے نڈرتا، آزادی اور سچائی کے اسی آدرش کو اپنے سامنے رکھا اور اس کے لئے انہیں بڑی بڑی مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑا۔ غلامی کے رواج کو بند کرانے کے لئے انہیں جو گھنگھور آندولن کرنا پڑا اس سے کئی بار ان کی جان تک خطرے میں پڑ گئی۔ ایک بار تو غلامی پرتھا کے پکشپاتی پانچ ہزار آدمیوں نے انہیں قریب قریب ننگا کر کے اور کمر میں رسی ڈالکر بوسٹن کی سڑکوں پر گھسیٹا۔ یہ درگھٹنا 21 اکتوبر 1835 کی ہے۔ گیریسن اس سمے استریوں کی ایک سبھا میں بھاشن دے رہے تھے۔ ان پانچ ہزار آدمیوں نے اس جگہ کو گھیر لیا۔ باقی حال گیریسن کے ہی لفظوں میں سن لیجئے—

"جب چاروں طرف سے حملہ ہو رہا تھا، ایک بھائی، جو غلامی پرتھا کے خلاف تھے، پر جن کے من میں ابھی اس بات کا ٹھیک ٹھیک فیصلہ نہیں ہو پایا تھا کہ غلامی کی پرتھا کو دور کرنے کے لئے شانتی کے اپایوں سے کام لینا چاہئے یا ہتھیاروں کا بھی استعمال کرنا چاہئے،

पालना था जिनमें सब से बड़ा सात बरस का था और गैरिसन की उम्र तीन से भी कम थी. बड़ी मेहनत कर के उन्होंने इस घोर संकट में अपनी संतान के खाने कपड़े की व्यवस्था की. छुटपन से गैरिसन ने अपने पैरों पर खड़े होने का जो पाठ पढ़ा वह जीवन भर उनके बहुत काम आया. पहले वह एक चमार के यहां जूते बनाने का काम सीखने लगे. उसके बाद उन्होंने बढ़ईगीरी सीखी. इन दोनों कामों में उनका मन नहीं लगा, इसलिये तेरह बरस की उम्र में वह 'न्यूबरी पोर्ट हेराल्ड' के प्रेस में कम्पोज़ीटरी का काम सीखने लगे. पहले तो टाइपों को देख कर उनकी तबियत बड़ी घबराई और वह सोचने लगे कि यह काम तो मुझसे कभी न बन सकेगा पर धीरे धीरे वह ऐसे अच्छे कम्पोज़ीटर बन गए कि प्रेस वाले उनसे बहुत खुश रहने लगे. फिर तो उन्हें कम्पोज़ीटरी में रस आने लगा. कम्पोज़ीटरी का काम उन्होंने 1818 में शुरू किया था और उसके ठीक साठ बरस बाद 73 बरस की उम्र में उन्होंने उसी हेराल्ड अखबार में जा कर अपनी कम्पोज़ीटरी की गोल्डन जुबली मनाई और इससे भी अधिक बड़ी बात यह थी कि उस दिन उन्होंने जो कुछ कम्पोज़ किया उसमें एक भी ग़लती नहीं थी ! सम्पादक हो जाने के समय तक वह इतने बढ़िया कम्पोज़ीटर बन चुके थे कि अपने सम्पादकी लेखों को बिना लिखे हुए यों ही कम्पोज़ कर दिया करते थे !

लेखक—

एक बार उन्होंने बिना अपने दस्तखत के एक लेख 'हेराल्ड' को ही भेज दिया. उसके सम्पादक को वह लेख पसन्द आ गया और उन्होंने उसे गैरिसन को ही कम्पोज़ करने के लिये दे दिया. बहुत दिन बाद उन्हें पता लगा कि उस लेख का लेखक उन्हीं के अखबार का वही कम्पोज़ीटर था. सन 1826 में गैरिसन ने खुद अपना एक अखबार निकाला जिसका नाम 'फ़्री प्रेस' था. उसके बाद वह 'नेशनल फ़िलेनथ्राफ़िस्ट' के सम्पादक बने और फिर 'जरनल आफ़ दी टाइम्स' के. जनवरी 831 में 'लिबरेटर' अखबार निकलना शुरू हुआ और 29 दिसम्बर, 1865 तक वही उस का सम्पादन करते रहे. उनके पैंतीस बरस का यह एडीटरी का ज़माना अमरीका के इतिहास में तो सोने के हरफ़ों में लिखे जाने के क़ाबिल साबित हुआ ही, दुनिया की पत्रकार कला के इतिहास में भी उसकी एक खास जगह है. हिन्दुस्तान में तो. जहां तक हम जानते हैं, स्वर्गीय रामानन्द चट्टोपाध्याय ही गैरिसन की लाइन में रखे जा सकते हैं. जहां तक सच्चाई का और अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ के अनुसार लिखने का सवाल है, यह दोनों महापुरुष एक से थे.

پالنا تھا جن میں سب سے بڑا سات برس کا تھا اور گیریسن کی عمر تین سے بھی کم تھی . بڑی محنت کر کے انہوں نے اس گھور سنکٹ میں اپنی سنتان کے کھانے کپڑے کی ویوستھا کی . چھٹپن سے گیریسن نے اپنے پیروں پر کھڑے ہونے کا جو پاٹھ پڑھا وہ جیون بھر اُن کے بہت کام آیا . پہلے وہ ایک چمار کے یہاں جوتے بنانے کا کام سیکھنے لگے . اس کے بعد انہوں نے بڑھئی گیری سیکھی . ان دونوں کاموں میں ان کا من نہیں لگا' اس لئے تیرہ برس کی عمر میں وہ ' نیو بری پورٹ ہیرالڈ ' کے پریس میں کمپوزیٹری کا کام سیکھنے لگے . پہلے تو ٹائپوں کو دیکھ کر اُن کی طبیعت بڑی گھبرائی اور وہ سوچنے لگے کہ یہ کام تو مجھ سے کبھی نہ ہو سکے گا پر دھیرے دھیرے وہ ایسے اچھے کمپوزیٹر ہو گئے کہ پریس والے اُن سے بہت خوش رہنے لگے . پھر تو انہیں کمپوزیٹری میں رس آنے لگا . کمپوزیٹری کا کام انہوں نے 1818 میں شروع کیا تھا اور اس کے ٹھیک ساٹھ برس بعد 73 برس کی عمر میں انہوں نے اسی ہیرالڈ اخبار میں جاکر اپنی کمپوزیٹری کی گولڈن جوبلی منائی . اس سے بھی ادھک بڑی بات یہ تھی کہ اس دن انہوں نے جو کچھ کمپوز کیا اس میں ایک بھی غلطی نہیں تھی ! سمپادک ہو جانے کے سمے تک وہ اتنے بڑھیا کمپوزیٹر ہو چکے تھے کہ اپنے سمپادکی لیکھوں کو بنا لکھے ہوئے یونہی کمپوز کر دیا کرتے تھے !

لیکھک—

ایک بار انہوں نے بنا اپنے دستخط کے ایک لیکھ ' ہیرالڈ ' کو ہی بھیج دیا . اس کے سمپادک کو وہ لیکھ پسند آ گیا اور انہوں نے اسے گیریسن کو ہی کمپوز کرنے کے لئے دے دیا . بہت دن بعد انہیں پتہ لگا کہ اس لیکھ کا لیکھک انہیں کے اخبار کا وہی کمپوزیٹر تھا . سن 1826 میں گیریسن نے خود اپنا ایک اخبار نکالا جس کا نام 'فری پریس' تھا . اس کے بعد وہ 'نیشنل فلینتھراپسٹ' کے سمپادک بنے اور پھر 'جرنل آف دی ٹائمس' کے . جنوری 1831 میں ' لبریٹر ' اخبار نکلنا شروع ہوا اور 29 دسمبر' 1865 تک وہ ہی اس کا سمپادن کرتے رہے . اُن کے پینتیس برس کا یہ ایڈیٹری کا زمانہ امریکہ کے اتہاس میں تو سونے کے حرفوں میں لکھے جانے کے قابل ثابت ہوا ہی' دنیا کی پترکار کلا کے اتہاس میں اسکی ایک خاص جگہ ہے . ہندستان میں تو' جہاں تک ہم جانتے ہیں' سورگیہ رامانند چٹوپادھیائے ہی گیریسن کی لائن میں رکھے جا سکتے ہیں . جہاں تک سچائی کا اور اپنی انتر آتما کی آواز کے انوسار لکھنے کا سوال ہے' یہ دونوں مہا پرش ایک سے تھے .

बजाय अहिंसा से देने के असूल को बरतना चाहिये. इस वजह वह अहिंसा के उपायों से अमरीका के गुलामों का छुटकारा न कर सके, फिर भी उन्होंने हैवानी शक्ति के पंजे से इनसानों के छुटकारे का उपाय बतला दिया. इसलिये मानव समाज की सच्ची उन्नति करने वालों और सब से बड़े सुधारकों में उनकी गिनती सदा की जायगी."

टालस्टाय ने इस बात पर अचरज प्रकट किया कि गैरिसन ने अहिंसा का जो समर्थन अमली तौर से पचास बरस पहले किया था उसे लोगों ने इतना भुला दिया कि टालस्टाय को वह बात इस तरह कहनी पड़ी मानों वह कोई नया असूल हो! हम लोगों में से कितनों को इस बात का पता है कि गैरिसन ने जनवरी 1839 में 'नान-रेसिस्टेंट' (सत्याग्रही) नामक अखबार निकाला था, जो 29 जून 1842 तक जारी रहा? पैसे की कमी के कारन उस अखबार को बन्द कर देना पड़ा, फिर भी उससे अमरीकी जनता को साफ मालूम हो गया कि गैरिसन शुद्ध अहिंसावादी हैं. आज सौ सवा सौ बरस बाद भी गैरिसन के विचारों में वही ताजगी है जो उस समय थी और उनके कितने ही फिक़रे तो ऐसे हैं जिन्हें पढ़ कर यह शक हो जाता है कि यह गांधी जी के लिखे हुए हैं या गैरिसन के!

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 को हुआ और गैरिसन का स्वर्गवास 24 मई 1879 को, यानी गैरिसन के परलोक जाने के साढ़े नौ साल पहले उनके मिशन को पूरा करने के लिये गांधी जी का अवतार हो चुका था. कितनी समानता है इन दोनों महापुरुषों की विचार धाराओं में!

आज से 62 साल पहले गैरिसन के बेटों ने चार मोटी मोटी जिल्दों में अपने पूज्य पिता का जो साहित्यिक श्राद्ध किया था, वह तारीख़ी निगाह से एक बहुत बड़ा काम था. लगभग दो हज़ार पन्नों का वह पूरा पूरा जीवन चरित दुनिया की किसी भी भाषा के मान को बढ़ा सकता है. अहिंसा के मानने वालों को तो गैरिसन-टाल्सटाय-गांधी इस त्रिमूर्ति के ग्रन्थों का नियम से पाठ करना ही चाहिये.

शुरू का जीवन

विलियम लायड गैरिसन का जन्म 10 दिसम्बर 1805 ई० को न्यूबरी पोर्ट नाम के नगर में हुआ. उनके पिता एक जहाज पर कप्तानी का काम करते थे और उन्हें अधिकतर घर से बाहर रहना पड़ता था. उन्हें शराब की लत थी, वह अपनी पत्नी को छोड़ कर कहीं चले गए. उनकी मौत कहां हुई, इसका पता भी नहीं चल सका! गैरिसन की माता अकेली रह गयीं. उन्हें तीन बच्चों को

بجائے اہنسا سے دینے کے اصول کو برتنا چاہئے۔ اس سبب وہ اہنسا کے اپایوں سے امریکہ کے غلاموں کا چھٹکارا نہ کر سکے' پھر بھی انہوں نے حیوانی شکتی کے پنجے سے انسانوں کے چھٹکارے کا اپائے بتلا دیا۔ اس لئے مانو سماج کی سچی اُنتی کرنے والوں اور سب سے بڑے سدھارکوں میں ان کی گنتی سدا کی جائے گی۔"

ٹالسٹائے نے اس بات پر اچرج پرکٹ کیا کہ گیریسن نے اہنساواد کا جو سمرتھن عملی طور سے پچاس برس پہلے کیا تھا اسے لوگوں نے اتنا بھلا دیا کہ ٹالسٹائے کو یہ بات اس طرح کہنی پڑی' مانو وہ کوئی نیا اصول ہو! ہم لوگوں میں سے کتنوں کو اس بات کا پتہ ہے کہ گیریسن نے جنوری 1839 میں 'نان رزسٹینٹ' (ستیا گرہی) نام کا اخبار نکالا تھا جو 29 جون 1842 تک جاری رہا؟ پیسے کی کمی کے کارن اس اخبار کو بند کر دینا پڑا' پھر بھی اس سے امریکی جنتا کو صاف معلوم ہو گیا کہ گیریسن شدھ اہنساوادی ہیں۔ آج سو سوا سو برس بعد بھی گیریسن کے وچاروں میں وہی تازگی ہے جو اس سمے تھی اور ان کے کتنے ہی فقرے تو ایسے ہیں جنہیں پڑھکر یہ شک ہو جاتا ہے کہ یہ گاندھی جی کے لکھے ہوئے ہیں یا گیریسن کے!

مہاتما گاندھی کا جنم 2 اکتوبر 1869 کو ہوا اور گیریسن کا سورگواس 24 مئی 1879 کو' یعنی گیریسن کے پرلوک جانے کے ساڑھے نو سال پہلے اُن کے مشن کو پورا کرنے کے لئے گاندھی جی کا اوتار ہو چکا تھا۔ کتنی سمانتا ہے ان دونوں مہاپرشوں کی وچار دھاراؤں میں!

آج سے 62 سال پہلے گیریسن کے بیٹوں نے چار موٹی موٹی جلدوں میں اپنے پوجیہ پتا کا جو ساہتیک شرادھ کیا تھا وہ تاریخی نگاہ سے ایک بہت بڑا کام تھا۔ لگ بھگ دو ہزار پنّوں کا وہ پورا پورا جیون چرتر دنیا کی کسی بھی بھاشا کے مان کو بڑھا سکتا ہے۔ اہنسا کے ماننے والوں کو تو گیریسن-ٹالسٹائے-گاندھی اس تری مورتی کے گرنتھوں کا نیم سے پاٹھ کرنا ہی چاہئے۔

شروع کا جیون

گیریسن کا جنم 10 دسمبر 1805ء کو نیوبری پورٹ نام کے نگر میں ہوا۔ ان کے پتا ایک جہاز پر کپتانی کا کام کرتے تھے اور انہیں ادھکتر گھر سے باہر رہنا پڑتا تھا۔ انہیں شراب کی لت تھی۔ وہ اپنی پتنی کو چھوڑ کر کہیں چلے گئے۔ اُن کی موت کہاں ہوئی' اس کا پتہ بھی نہیں چل سکا! گیریسن کی ماتا اکیلی رہ گئیں۔ اُنہیں تین بچوں کو

ज्ञान इसी तरह बढ़ा है. वह स्वयं सिद्ध सा मालूम होता है क्योंकि हमें ऐसे मानने की तालीम दी गई है. मगर तर्क का कोई सिद्धांत चीजों की प्राकृतिक क्रिया से बेमेल मालूम हो तो अनेकांती माटीवादी को साफ मालूम होता है कि यह कमी संदेह पैदा करती है, चीज की प्रकृति पर नहीं तर्क के उस सिद्धांत पर जो उससे संबंध रखता है. संक्षेप में अभिज्ञान के नियम की बात करने से क्या फायदा अगर कोई चीज एक सी रहती ही नहीं, छन भर के लिये भी नहीं रहती और फिर अविरोधी नियम की बात क्यों कहनी जब हर चीज विरोधी तत्वों से बनी होती है और विरोधी अविरोधी और तीसरे नियम की बात क्यों करना जब हर चीज उस बीच की राह से गुजरती रहती है जो आ भी है और अनआ भी है. उसे हमेशा के लिये उस रास्ते से निकाल कर फेंका भी कैसे जा सकता है. ऐसे नियम स्वयं सिद्ध क्यों मान लिये जांय. सोचने की सच्ची रीति से वह बहुत फलदायक संबंध रख सकते हैं.

گیان اِسی طرح بڑھتا ہے . یہ سویم سدھ سا معلوم ہوتا ہے کیونکہ ہمیں ایسا ماننے کی تعلیم دی گئی ہے. مگر ترک کا کوئی سدھانت چیزوں کی پراکرتک کریا سے بےمیل معلوم ہو تو انیکانتی ماٹی‌وادی کو صاف معلوم ہوتا ہے کہ یہ کمی سندیہہ پیدا کرتی ہے، چیز کی پرکرتی پر نہیں ترک کے اُس سدھانت پر جو اُس سے سمبندھ رکھتا ہے . سنچھیپ میں ابھگیان کے نیم کی بات کرنے سے کیا فائدہ اگر کوئی چیز ایک سی رہتی ہی نہیں، چھن بھر کے لئے بھی نہیں رہتی اور پھر اوِرودھی نیم کی بات کیوں کہنی جب ہر چیز وِرودھی تتوں سے بنی ہوتی ہے اور وِرودھی اوِرودھی اور تیسرے نیم کی بات کیوں کرنا جب ہر چیز اُس بیچ کی راہ سے گزرتی رہتی ہے جو آ بھی ہے اور اَن آ بھی ہے . اُسے ہمیشہ کے لئے اُس راستے سے نکالکر پھینکا بھی کیسے جاسکتا ہے . ایسے نیم سویم سدھ کیوں مان لئے جائیں . سوچنے کی سچی ریتی سے وہ بہت پھلدایک سمبندھ رکھ سکتے ہیں .

विलियम लायड गैरिसन

(बनारसीदास चतुर्वेदी)

[अभी सौ बरस भी नहीं हुए कि अमरीका में काले नीगरो गुलामों को उसी तरह बेचा और खरीदा जाता था जिस तरह डंगरों को. जिन अमरीकी महापुरुषों ने इस बुरे रिवाज को अन्त कराने में हिस्सा लिया उनमें एक खास नाम विलियम लायड गैरिसन का है. भाई बनारसीदास चतुर्वेदी के इस लेख से पता चलता है कि श्री विलियम लायड गैरिसन अहिंसा के भी उतने ही जबरदस्त मानने वाले और प्रचारक थे जितने महात्मा गांधी और वह भी आज से सौ बरस पहले.—एडीटर]

My country is the world,
My countrymen are all mankind.
(सारा संसार मेरा देश है,
सारी मानव जाति मेरे देशवासी हैं.)

जनवरी 1904 में टाल्सटाय ने लिखा था—"गैरिसन की खूबी इसी में है कि उन्होंने सब से पहिले इस बात का एलान किया कि मनुष्य जाति के कामों में हिंसा का

ولیم لایڈ گیریسن

(بنارسی داس چترویدی)

[ابھی سو برس بھی نہیں ہوئے کہ امریکہ میں کالے نیگرو غلاموں کو اُسی طرح بیچا اور خریدا جاتا تھا جس طرح ڈنگروں کو. جن امریکی مہاپرشوں نے اِس برے رواج کو انت کرانے میں حصہ لیا اُن میں ایک خاص نام ولیم لایڈ گیریسن کا ہے. بھائی بنارسی داس چترویدی کے اس لیکھ سے پتہ چلتا ہے کہ شری ولیم لایڈ گیریسن اہنسا کے بھی اُتنے ہی زبردست ماننے والے اور پرچارک تھے جتنے مہاتما گاندھی اور وہ بھی آج سے سو برس پہلے.—ایڈیٹر]

My country is the world,
My countrymen are all mankind.
(سارا سنسار میرا دیش ہے،
ساری مانو جاتی میرے دیش واسی ہیں .)

جنوری 1904 میں ٹالسٹائے نے لکھا تھا—"گیریسن کی خوبی اِسی میں ہے کہ اُنھوں نے سب سے پہلے اس بات کا اعلان کیا کہ منشیہ جاتی کے کاموں میں ہنسا کا

और जिसके अ का जन्म हुआ है, निरंतर जारी है. साथ ही साथ उसकी क्षणिक एकता की बात भी इसमें आजाती है. जिस तरह दूसरे नियम यह बताते हैं कि अ के आगे के इतिहास में क्या क्या होता रहना ज़रूरी है.

दूसरे शब्दों में अनेकांती तारकिक यह मानने को तैयार है कि अ आ है, इस बता कर कहने में कुछ अर्थ ज़रूर है क्योंकि यह कहानी का एक छोटा सा हिस्सा ज़रूर है पर वह यह बताता है कि आज का फ़ारमल तारकिक यह मानने को तैयार नहीं है कि अ अनआ भी है. अनेकांती तारकिक स्थिरता और बदलाव दोनों का न्याय करना चाहता है, दोनों को तस्वीर में देखना चाहता है. ऐसा करने में वह उस तथ्य की तरफ़ इशारा कर रहा होता है जो तथ्य सब विज्ञान के क्षेत्रों से आज तक मिल पाया और वह यह है कि हर तथ्य निरंतर बदलता रहता है. बदलाव पहली चीज़ है और स्थिरता क्षणिक होने के कारन दूसरी चीज़ है. मुख्य को पहिले लेना चाहिये गौन को पीछे.

कोई यह सवाल कर सकता है कि वह वह है. इस अभिज्ञान नियम को आप क्यों रद्द करते हैं. अ आ है क्या यह सिद्धांत इस अर्थ में कि बदलता हुआ आ बदलता आ भी है, ठीक नहीं है, ज़रूर इस में अर्थ है. बदलता आ बदलता आ है (क्षन के लिये सही ऐसा कोई आ हमेशा रहता नहीं) और ठीक यही तो अर्थ है जो अनेकांती माटीवादी ख़ुशी से क़बूल करता है. वह भी तो यही कहता है, उसके पहले नियम के एक हिस्से में अ आ है लेकिन यह भी सत्य है कि बदलता आ एक बदलता आ है और बदलाव की रीति क्षनिक नहीं निरंतर है. इसलिये अनेकांती तारकिक इसी के साथ इतना और जोड़ता है कि आ अन आ भी है (चूंकि यह साफ़ है कि जो आ निरंतर बदल रहा है वह इतना ज़ियादा आ नहीं है जितना अन आ) ऐसा कथन विरोधी कथन सा मालूम होता है और इसमें शक नहीं कि वह विरोधी है, ख़ास तौर से उस निगाह से जो फ़ारमल लाजिक की है. अनेकांती माटीवादी का जो दावा है कि जो नियम फ़ारमल लाजिक ने बनाये हैं वह असंभव हैं, विरोधी हैं और विचार से परे हैं क्योंकि वह उन से मेल नहीं खाते जो हर क्षन होता रहता है. ऐसे विरोधों को संभव समझ कर मान लेना चाहिये. उन्हें अस्तित्व के जानदार पहलू समझ कर मानना चाहिये. इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि जो फ़ारमल लाजिक की निगाह से विरोधी मालूम हो वो सचमुच कहीं मौजूद है.

आख़िर यह नियम आ कहां से गया कि अ आ है और अनआ नहीं हो सकता. अनेकांती माटीवादी हमें यह याद दिलायेगा कि यह आदमी की गढ़त है, एक ख़ास रूप की पैदावार है (ज़रूरी सीमा लिये हुए है). आदमी का

اور جس سے آ پیدا ہوا ہے نرنتر جاری ہے . ساتھ ہی ساتھ اسکی چھنک ایکتا کی بات بھی اس میں آجاتی ہے . جس طرح دوسرے نیم یہ بتاتے ہیں کہ آ کے آگے کے اتہاس میں کیا کیا ہوتا رہنا ضروری ہے .

دوسرے شبدوں میں انیکانتی تارکک یہ ماننے کو تیار ہے کہ آ آ ہے. اس بتا کر کہنے میں کچھ ارتھ ضرور ہے کیونکہ یہ کہانی کا ایک چھوٹا سا حصہ ضرور ہے پر وہ یہ بتاتا ہے کہ آج کا فارمل تارکک یہ ماننے کو تیار نہیں ہے کہ آ اَن آ بھی ہے. انیکانتی تارکک استھرتا اور بدلاؤ دونوں کا نیائے کرنا چاہتا ہے' دونوں کو تصویر میں دیکھنا چاہتا ہے . ایسا کرنے میں وہ اُس تتھیہ کی طرف اشارہ کر رہا ہوتا ہے جو تتھیہ سب وگیان کے چھیتروں سے آج تک مل پایا اور وہ یہ ہے کہ ہر تتھیہ نرنتر بدلتا رہتا ہے. بدلاؤ پہلی چیز ہے اور استھرتا چھنک ہونے کے کارن دوسری چیز ہے. مکھ کو پہلے لینا چاہیے گون کو پیچھے.

کوئی یہ سوال کرسکتا ہے کہ وہ وہ ہے . اس ابھگیان نیم کو آپ کیوں رد کرتے ہیں . آ آ ہے کیا یہ سدھانت اس ارتھ میں کہ بدلتا ہوا آ بدلتا آ بھی ہے' ٹھیک نہیں ہے. ضرور اس میں ارتھ ہے بدلتا آ بدلتا آ ہے (چھن کے لئے سہی ایسا کوئی آ ہمیشہ رہتا نہیں) اور ٹھیک یہی تو ارتھ ہے جو انیکانتی ماٹی وادی خوشی سے قبول کرتا ہے. وہ بھی تو یہی کہتا ہے' اسکے پہلے نیم کے ایک اسٹیج میں آ آ ہے لیکن یہ بھی ستیہ ہے کہ بدلتا آ ایک بدلتا آ ہے اور بدلاؤ کی ریتی چھنک نہیں نرنتر ہے . اسلئے انیکانتی تارکک اسی کے ساتھ اتنا اور جوڑتا ہے کہ آ اَن آ بھی ہے (چونکہ یہ صاف ہے کہ جو آ نرنتر بدل رہا ہے وہ اتنا زیادہ آ نہیں ہے جتنا اَن آ) ایسا کتھن ورودھی کتھن سا معلوم ہوتا ہے اور اس میں شک نہیں کہ وہ ورودھی ہے' خاص طور سے اُس نگاہ سے جو فارمل لاجک کی ہے . انیکانتی ماٹی وادی کا جو دعوہ ہے کہ جو نیم فارمل لاجک نے بنائے ہیں وہ اسمبھو ہیں' ورودھی ہیں اور وچار سے پرے ہیں کیونکہ وہ اُن سے میل نہیں کھاتے جو ہر چھن ہوتا رہتا ہے. ایسے ورودھوں کو سمبھو سمجھ کر مان لینا چاہئے. انہیں استتو کے جاندار پہلو سمجھ کر ماننا چاہئے . اسکا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ جو فارمل لاجک کی نگاہ سے ورودھی معلوم ہو وہ سچ مچ کہیں موجود ہے .

آخر یہ نیم آ کہاں سے گیا کہ آ آ ہے اور اَن آ نہیں ہوسکتا . انیکانتی ماٹی وادی ہمیں یہ یاد دلائیگا کہ یہ آدمی کی گڑھنت ہے' ایک خاص روپ کی پیداوار ہے (ضروری سیما لئے ہوئے ہے). آدمی کا

गहरी और बड़े महत्व की है. और भी समकालीन हैं जो तर्क क्षेत्र में कूद कर पुराने नियमों से कुछ हटे हैं, उन्हें जाने दीजिये. यह समकालीन अनेकांत सिद्धांत के मुकाबिले में बहुत मामूली हेर फेर चाहते हैं, नियमों को चुनौती तो देते ही नहीं, उसके प्रान पर कोई आघात करते ही नहीं.

वो वही है यानी अभिज्ञान नियम इस तरह दर्शाया जाता है. आ आ है यानी हर चीज़ अपनी जैसी होती है. वह न वह नहीं है, यह इस तरह दर्शाया जाता है कि आ अन आ नहीं है, यानी हर चीज़ अपने से भिन्न नहीं होती. तीसरा नियम वह न आ है और न न आ है यानी तीसरा बदल या आ न आ के बीच की चीज़ अलग कर दी गई. एक ही चीज़ आ यानी अपने आप और न अनआ यानी अपने से अलग एक ही समय में नहीं हो सकती.

अनेकांती माटीवादी का यह कहना है कि इन नियमों ने अस्तित्व के गुन को हद से ज़ियादा सीधा सादा बना दिया है. आज वैज्ञानिक ज्ञान से जो हमने सीखा है उससे अस्तित्व का गुन इतना सीधा नहीं है. अनेकांती का कहना है कि तर्क के यह नियम झूटे हैं क्योंकि वह अस्तित्व के एक पहलू का वर्नन करते हैं और फिर यह भी नहीं कि सब से महत्व के पहलू का वर्नन करते हों. तीनों नियम चीज़ों की अलहदगी पर ज़ोर देते हैं, भिन्नता और अन्तर दिखाते हैं. हर एक अपने तरीक़े से भिन्नता पर ज़ोर देता है. पहला हां कह कर, दूसरा ना कह कर और तीसरा हां ना दोनों कह कर. वह जो कुछ कहते हैं यही तो कहते हैं कि एक ही समय में आ आ है अनआ नहीं है. यह साफ़ है कि हमारे सामने वही सवाल है जिसे हम पहले अध्याय में खोल कर बता चुके हैं. सवाल यह है कि क्या हम कहीं ऐसा आ पा सकते हैं जो बदलाव के चक्कर में न फंसा हो और बदलाव भी कैसा जो कभी कभी नहीं होता निरंतर होता रहता है, जो वस्तु के इस या उस भाग में नहीं होता, सब अंगों में और हर अंग के हर हिस्से में होता रहता है. कोई एक कारन भी ऐसा ढूंढ़ा हुआ न मिलेगा जिसमें कोई घटना न घट रही हो, जिसमें कोई बदलाव न हो रहा हो. हमारा मतलब जगत से है. हम समझ ही चुके कि कोई आ जो भी हमें मिलेगा वह बदलाव के चक्कर में फंसा मिलेगा. उसका हर हिस्सा हर छन बदलता मिलेगा. उसे एक ही साथ अनआ इतनी अच्छी तरह कहा जा सकता है जितनी अच्छी तरह आ आ है, ऐसा कहना आ के एक पहलू की बात कहना है. उसकी छनिक एकता या स्थिरता का हाल बताना है. हां ! यह कहना कि आ आ है और अनआ भी है (यही प्रयत्न नियम है, अन्तरप्रवेश है और असहमत संगम है) यह बताता है कि बदलाव का काम और रूपांतर होने की क्रिया जो आ के अन्दर सर्वत्र है

گہری اور بڑے مہتو کی ہے. اور بھی سمکالین ہیں جو ترک چھیتر میں کود کر پرانے نیموں سے کچھ ہٹے ہیں' انہیں جانے دیجئے . یہ سمکالین انیکانت سدھانت کے مقابلے میں بہت معمولی ہیر پھیر چاہتے ہیں' نیموں کو چنوتی تو دیتے ہی نہیں' اسکے پران پر کوئی آگھات کرتے ہی نہیں.

وہ وہی ہے یعنی ابھگیان نیم اسطرح درشایا جاتا ہے' آ آ ہے یعنی ہر چیز اپنی جیسی ہوتی ہے. وہ نہ وہ نہیں ہے' یہ اسطرح درشایا جاتا ہے کہ آ ان آ نہیں ہے' یعنی ہر چیز اپنے سے بھن نہیں ہوتی. تیسرا نیم وہ نہ آ ہے اور نہ آ ہے یعنی تیسرا بدل یا آ نہ آ کے بیچ کی چیز الگ کردی گئی . ایک ہی چیز آ یعنی اپنے آپ اور نہ ان آ یعنی اپنے سے الگ ایک ہی سمے میں نہیں ہو سکتی .

انیکانتی ماٹی وادی کا یہ کہنا ہے کہ ان نیموں نے استھتو کے گن کو حد سے زیادہ سیدھا سادھا بنا دیا ہے . آج ویگیانک گیان سے جو ہم نے سیکھا ہے اس سے استھتو کا گن اتنا سیدھا نہیں ہے. انیکانتی کا کہنا ہے کہ ترک کے یہ نیم جھوٹے ہیں کیونکہ وہ استھتو کے ایک پہلو کا ورنن کرتے ہیں اور پھر یہ بھی نہیں کہ سب سے مہتو کے پہلو کا ورنن کرتے ہوں . تینوں نیم چیزوں کی علیحدگی پر زور دیتے ہیں' بھنتا اور انتر دکھاتے ہیں . ہر ایک اپنے طریقے سے بھنتا پر زور دیتا ہے . پہلا ہاں کہکر' دوسرا نا کہکر اور تیسرا ہاں نا دونوں کہکر. وہ جو کچھ کہتے ہیں یہی تو کہتے ہیں کہ ایک ہی سمے میں آ آ ہے ان آ نہیں ہے . یہ صاف ہے کہ ہمارے سامنے وہی سوال ہے جسے ہم پہلے ادھیائے میں کھولکر بتا چکے ہیں . سوال یہ ہے کہ کیا ہم کہیں ایسا آ پاسکتے ہیں جو بدلاؤ کے چکر میں نہ پھنسا ہو اور بدلاؤ بھی کیسا جو کبھی کبھی نہیں ہوتا نرنتر ہوتا رہتا ہے' جو وستو کے اس یا اس بھاگ میں نہیں ہوتا' سب انگوں میں اور ہر انگ کے ہر حصے میں ہوتا رہتا ہے . کوئی ایک کارن بھی ایسا ڈھونڈھا ہوا نہ ملیگا جس میں کوئی گھٹنا نہ گھٹ رہی ہو' جس میں کوئی بدلاؤ نہ ہو رہا ہو . ہمارا مطلب جگت سے ہے. ہم سمجھ ہی چکے ہیں کہ کوئی آ جو بھی ہمیں ملیگا وہ بدلاؤ کے چکر میں پھنسا ملیگا . اسکا ہر حصہ ہر چھن بدلتا ملیگا . اسے ایک ہی ساتھ ان آ اتنی اچھی طرح کہا جاسکتا ہے جتنی اچھی طرح آ آ ہے' ایسا کہنا آ کے ایک پہلو کی بات کہنا ہے . اسکی چھنک ایکتا یا استھرتا کا حال بتانا ہے . ہاں ! یہ کہنا کہ آ آ ہے اور ان آ بھی ہے (یہی پریتن نیم ہے' انترپرویش ہے اور اسہمت سنگم ہے) یہ بتاتا ہے کہ بدلاؤ کا کام اور روپانتر ہونے کی کریا جو آ کے اندر سرودر ہے

इस पर कोई बात ही नहीं सुनना चाहते. पढ़े लिखे आदमियों से यह पूछना बड़े मजे का साबित होगा कि साधारण तर्क यानी फ़ारमल लाजिक में फ़ारमल शब्द का क्या अर्थ है. फ़ारमल लाजिक से हमारा मतलब सिर्फ़ यह है कि पढ़े लिखे फ़ारमल लाजिक को और लाजिक से अलग मानते हैं. आम तौर से वह फ़ारमल का कुछ अर्थ नहीं बताते. बस यह कह देते हैं कि जो तर्क चलन में है वह बाक़ायदा और दूसरा बेक़ायदा. न विद्यार्थियों के मन में और न शायद अध्यापकों के मन में यह बात कभी उठी कि वह यह सवाल उठायें तो कि फ़ारमल का अर्थ क्या है. फिर भी यह बात है मार्के की कि फ़ारमल शब्द जब लाजिक के साथ जोड़ा जाता है तो वह अपना बल रखता है, चाहे वह फ़ारमल को निगाह में रख कर न भी जोड़ा गया हो. शायद एक आदमी पूरी तरह यह समझता भी नहीं है कि फ़ारमल लाजिक है क्या चीज़. वह उसे इतिहास की असली निगाह से देखना ही नहीं चाहता. हम क्यों न यह आशा लेकर चलें कि जब हम फ़ारमल और डाईलेक्टिकल लाजिक के अन्तर की जांच करेंगे तो फ़ारमल का सवाल आप ही आप प्रकाश में आ जायेगा.

विचार का नियम

दोनों के अन्तर तक पहुंचने के लिये यह ढंग ठीक रहेगा कि विचार के पुराने तीन नियमों की एक दूसरे से तुलना की जाय. फ़ारमल लाजिक ने यही तीन नियम मान रखे हैं. साथ ही साथ हमें यह भी देखना चाहिये कि माटीवादी अनेकांत के नियम क्या हैं और उनका मतलब क्या है. माटीवादी अनेकांत के नियमों की चर्चा हम पहले कर चुके हैं. चलते चलते यह भी नोट कर लेना चाहिये कि हमारी पहुंच का यह मतलब नहीं है कि हम तकनीकी सवाल को लेकर खड़े हो जांय कि फ़ारमल लाजिक के यह तीन सिद्धांत ही दुनिया के सिद्धांत हैं, या यह कि यह उन चीज़ों से निकाले गये हैं जो विचारक की राह में बाधक होते हैं, या यह कि यह वाद विवाद के साधारन नियम हैं, या यह कि यह तीनों हैं. यह तीन नियम ये हैं :— (1) यह वही है यानी अभिज्ञान (2) वह नहीं वह नहीं है, या वह न वह नहीं है (3) वह न वह है न वह है. इस सब में जो बात ज़रूरी है वह यह है कि यह पुराने नियम किसी भी रूप में तर्क के फ़ारमल सिद्धांत के रूप में काम आते हैं या नहीं और उसके बुनियादी तत्वों को प्रकट करते हैं या नहीं.

हम इसी तर्क शास्त्र पर पले हैं, इसलिये ये नियम स्वयं सिद्ध से मालूम होते हैं. इनको चुनौती देना पागलपन की निशानी होगी, तो भी हम देखेंगे कि अनेकांत सिद्धांत इनकी चुनौती के साथ सामना करता है. उसकी चुनौती बड़ी

ہیں اُس پر کوئی بات ہی نہیں سننا چاہتے۔ پڑھے لکھے آدمیوں سے یہ پوچھنا بڑے مزے کا ثابت ہوگا کہ سادھارن ترک یعنی فارمل لاجک میں فارمل شبد کا کیا ارتھ ہے۔ فارمل لاجک سے ہمارا مطلب صرف یہ ہے کہ پڑھے لکھے فارمل لاجک کو اور لاجک سے الگ مانتے ہیں۔ عام طور سے وہ فارمل کا کچھ ارتھ نہیں بتاتے۔ بس یہ کہہ دیتے ہیں کہ جو ترک چلن میں ہے وہ باقاعدہ اور دوسرا بےقاعدہ۔ نہ ودیارتھیوں کے من میں اور نہ شاید ادھیاپکوں کے من میں یہ بات کبھی اُٹھی کہ وہ یہ سوال اُٹھائیں تو کہ فارمل کا ارتھ کیا ہے۔ پھر بھی یہ بات ہے معرکے کی کہ فارمل شبد جب لاجک کے ساتھ جوڑا جاتا ہے تو وہ اپنا بل رکھتا ہے' چاہے وہ اِن فارمل کو نگاہ میں رکھکر نہ بھی جوڑا گیا ہو۔ شاید ایک آدمی پوری طرح سے سمجھتا بھی نہیں ہے کہ فارمل لاجک ہے کیا چیز۔ وہ اُسے اتہاس کی اصلی نگاہ سے دیکھنا ہی نہیں چاہتا۔ ہم کیوں نہ یہ آشا لیکر چلیں کہ جب ہم فارمل اور ڈائلیکٹکل لاجک کے انتر کی جانچ کرینگے تو فارمل کا سوال آپ ہی آپ پرکاش میں آجائیگا۔

وچار کے نیم

دونوں کے انتر تک پہونچنے کے لئے یہ ڈھنگ ٹھیک رہیگا کہ وچار کے پرانے تین نیموں کی ایک دوسرے سے تولنا کی جائے۔ فارمل لاجک نے بھی تین نیم مان رکھے ہیں۔ ساتھ ہی ساتھ ہمیں یہ بھی دیکھنا چاہیئے کہ ماٹی وادی انیکانت کے نیم کیا ہیں اور اُنکا مطلب کیا ہے۔ ماٹی وادی انیکانت کے نیموں کی چرچا ہم پہلے کرچکے ہیں۔ چلتے چلتے یہ بھی نوٹ کرلینا چاہیئے کہ ہماری پہونچ کا یہ مطلب نہیں ہے کہ ہم تکنیکی سوال کو لیکر کھڑے ہو جائیں کہ فارمل لاجک کے یہ تین سدھانت ہی دنیا کے سدھانت ہیں یا یہ کہ یہ اُن چیزوں سے نکالے گئے ہیں جو وچارک کی راہ میں بادھک ہوتے ہیں' یا یہ کہ یہ واد وواد کے سادھارن نیم ہیں' یا یہ کہ یہ تینوں ہیں۔ وہ تین نیم یہ ہیں :— (1) یہ وہی ہے یعنی ابھگیان (2) وہ نہیں وہ نہیں ہے' یا وہ نہ وہ نہیں ہے (3) وہ نہ وہ ہے نہ وہ ہے۔ اِس سب میں جو بات ضروری ہے وہ یہ ہے کہ یہ پرانے نیم کسی بھی روپ میں ترک کے فارمل سدھانت کے روپ میں کام آتے ہیں یا نہیں اور اُس کے بنیادی تتوں کو پرکٹ کرتے ہیں یا نہیں۔

ہم اِسی ترک شاستر پر پلے ہیں' اسلئے یہ نیم سویم سدھ سے معلوم ہوتے ہیں۔ اِنکو چنوتی دینا پاگل پن کی نشانی ہوگی' تو بھی ہم دیکھینگے کہ انیکانت سدھانت اِنکا چنوتی کے ساتھ سامنا کرتا ہے۔ اُسکی چنوتی بڑی

तरीक़े से सोचता है, सिर्फ़ तफ़सील में ही नहीं किन्तु तर्क के मूल प्रश्नों में भी उसका भारी मतभेद है.

इसमें संदेह नहीं कि इस भिन्नता के कारन अनेक हैं जिनमें से कुछ का हम अपने वाद विवाद में नीचे वर्नन करेंगे. कारन कुछ भी रहें सब मिल कर नतीजा यह निकलता है कि हम सीधे न सीधे साधरन तर्क सिद्धान्तों पर पले और वैसे ही बन गये. सीधे सीधे हमें यह सिखाया जाता है मानो तर्क के नियमों का असली बुनियादी बदलाव कोई था ही नहीं और सीधे हम पर यह असर डाला जाता है कि वही विचार ठीक हैं जो साधारण तर्क शास्त्र ने बना रखे हैं. जो भाशा काम में लाई जाती है वह भी उन विचारों से मिलती जुलती है.

भाशा से एक उदाहरण लेकर हमें यह कहना है कि संज्ञा या सर्वनाम नहीं बदलते, क्रिया में भले ही बदलाव हो जाय. इस बात से विद्यार्थी के मन पर, यह असर जम जाता है कि मूल में कोई बदलाव नहीं होता, वह ज्यों का त्यों बना रहता है. भाशा हमें कहने के लिये मजबूर करती है कि मैं बाप हूं, मैं बेटा था, मैं वही का वही बना हुआ हूं.

सब आदमी चाहे वह तर्क शास्त्र पढ़ें हों या न पढ़े हों जाने अनजाने इन विचारों से प्रभावित होते रहते हैं जो साधारन तर्क शास्त्र ने बना रखे हैं और जो अरस्तू के ग्रंथों का एक पहलू लेकर बने. आगे चलकर हमें पता लगेगा कि साधारन तर्क और माटीवादी अनेकांत के बीच सिर्फ़ यही समस्या नहीं है कि दोनों पंडिताऊ सवाल हैं. यह समस्या भी है कि अनेकांत का रोज़ के विचारों पर क्रियात्मक असर पड़ता है, क्योंकि अनेकांत सामाजिक जीवन के ज़रूरी प्रश्नों पर प्रकाश डालता है और उनके साथ खेलता है. अनेकांती माटीवादी का एक और दावा है. वह यह है कि साधारन तर्क शास्त्र से चिपक जाने से विद्यार्थी की हिम्मत होती है कि वह तर्क के आभासों से हमेशा के लिये चिपक जाय और विचार की कमियों को सदा के लिये अपना ले और मानवी सवालों और सामाजिक सवालों में ख़ास तौर से उन्हीं आभासों यानी फ़ेलेसीज़ से काम ले.

किस तरह से साधारन तर्क की परिभाशाएँ और उसकी मान्यताएं हमारे विचार का अंग बन गई हैं और किस तरह हमारी संस्थाएं उसी के बल पर अपना काम कर रही हैं यह हमारी आज की सभ्यता का एक पहलू है और यह कितने मार्के की बात है कि इसे भुलाया जा रहा है. एक अर्थ में ऐसी हालत है जैसे लोग एक ख़ास तरह का चश्मा लगाने लगें और समझने लगें कि बस यही एक चश्मा है और फिर यह भी न सोच पाएं कि वह चश्मा लगा कर देख रहे हैं. यह तो है ही नहीं कि उनको ठीक ठीक दिखाई देता लेकिन वह तो जिस चश्मे को मुद्दत से लगाते आ रहे

طریقے سے سوچتا ھے' صرف تفصیل میں ہی نہیں کنتو ترک کے مول پرشنوں میں بھی اُسکا بھاری مت بھید ھے .

اِس میں سندیہ نہیں کہ اِس بھنتا کے کارن انیک ہیں جن میں سے کچھ کا ہم اپنے وادوواد میں نیچے ورنن کرینگے. کارن کچھ بھی رہیں سب ملکر نتیجہ یہ نکلتا ہے کہ ہم سیدھے نہ سیدھے سادھارن ترک سدھانتوں پر پلے اور ویسے ہی بن گئے. سیدھے سیدھے ہمیں یہ سکھایا جاتا ھے کہ مانو ترک کے نیموں کا اصلی بنیادی بدلاؤ کوئی تھا ہی نہیں اور نہ سیدھے ہم پر یہ اثر ڈالا جاتا ھے کہ وہی وچار ٹھیک ہیں جو سادھارن ترک شاستر نے بنا رکھے ہیں . جو بھاشا کام میں لائی جاتی ھے وہ بھی اِن وچاروں سے ملتی جلتی ھے .

بھاشا سے ایک اداہرن لیکر ہمیں یہ کہنا ھے کہ سنگیا یا سرونام نہیں بدلتے' کریا میں بھلے ہی بدلاؤ ہو جائے . اِس بات سے ودیارتھی کے من پر یہ اثر جم جاتا ھے کہ مول میں کوئی بدلاؤ نہیں ہوتا' وہ جیوں کا تیوں بنا رہتا ھے. بھاشا ہمیں کہنے کے لئے مجبور کرتی ھے کہ میں باپ ہوں' میں بیٹا تھا' میں وہی کا وہی بنا ہوا ہوں .

سب آدمی چاہے وہ ترک شاستر پڑھے ہوں یا نہ پڑھے ہوں جانے انجانے اِن وچاروں سے پربھاوت ہوتے رہتے ہیں جو سادھارن ترک شاستر نے بنا رکھے ہیں اور جو ارسطو کے گرنتھوں کا ایک پہلو لیکر بنے . آگے چلکر ہمیں پتہ لگیگا کہ سادھارن ترک اور ماٹی وادی انیکانت کے بیچ صرف یہی سمسیا نہیں ھے کہ دونوں پنڈتاؤ سوال ہیں یہ سمسیا بھی ھے کہ انیکانت روز کے وچاروں پر کریاتمک اثر پڑتا ھے کیونکہ انیکانت سماجک جیون کے ضروری پرشنوں پر پرکاش ڈالتا ھے اور اُن کے ساتھ کھیلتا ھے . انیکانتی ماٹی وادی کا ایک اور دعوی ھے . وہ یہ ھے کہ سادھارن ترک شاستر سے چپک جانے سے ودیارتھی کی ہمت ہوتی ھے کہ وہ ترک کے آبھاسوں سے ہمیشہ کے لئے چپک جائے اور وچار کی کمیوں کو سدا کے لئے اپنالے اور مانوی سوالوں اور سماجک سوالوں میں خاص طور سے انہیں آبھاسوں یعنی فیلیسیز سے کام لے .

کس طرح سے سادھارن ترک کی پریبھاشائیں اور اُنکی مانیتائیں ہمارے وچار کا انگ بن گئی ہیں اور کس طرح ہماری سنستھائیں اُسی کے بل پر اپنا کام کر رہی ہیں یہ ہماری آج کی سبھیتا کا ایک پہلو ھے اور یہ کتنے معرکے کی بات ھے کہ اسے بھلایا جا رہا ھے. ایک ارتھ میں ایسی حالت ھے جیسے لوگ ایک خاص طرح کا چشمہ لگانے لگیں اور سمجھنے لگیں کہ بس یہی ایک چشمہ ھے اور پھر یہ بھی نہ سوچ پائیں کہ وہ چشمہ لگاکر دیکھ رہے ہیں. یہ تو ھے ہی نہیں کہ اُنکو ٹھیک ٹھیک دکھائی دیتا لیکن وہ تو جس چشمے کو مدت سے لگاتے آرھے

शरीर अपनी सब क्रिया करता था, खाना हज़म करता था, शरीर रचना शास्त्र तो शरीर को देख कर और उसकी क्रियाओं का अध्ययन कर के हज़ारों लाखों बरस बाद लिखा गया. शब्द के दो अर्थ होने की बात फ़िज़िक्स शब्द बहुत साफ़ कर देता है, क्योंकि विशय पदार्थ छुआ देखा जा सकता है. इन्द्रियां उसको सीधे सीधे समझ लेती हैं, जान लेती हैं, जबकि नियम नियम की हैसियत से छुए देखे नहीं जा सकते. तर्क शास्त्र मानी न छुए जाने वाले विशय पदार्थ को और न छुए जाने वाले सिद्धांतों के विचारों पर विचार करना. विशय पदार्थ और नियमों के बीच भेद करना बेहद ज़रूरी है.

जिस विशय पर चर्चा चल रही है उस विशय में यह भेद बड़े मार्के का है. यह भेद नियमों की पूर्नता और उनकी सच्चाई के सवाल को चारों तरफ़ से घेरे हुए है. तर्क शास्त्र ऐसा अध्ययन है जो सोचने के बारे में सोचता है. इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि सोचने के बारे में हम जो कुछ भी सोचें वह ठीक ही होना चाहिये. दूसरे शब्दों में अरस्तू जैसा तर्क का कोई सिद्धांत उस विशय पदार्थ के समझाने की एक मुमकिन कोशिश यानी संभव प्रयत्न भर है. वह सच्चा ही हो यह ज़रूरी नहीं है. इसलिये इसमें अचरज नहीं मानना चाहिये अगर हम किसी विचारक के निकाले हुए नियमों में घटत बढ़त करें, क्योंकि विशय का क्षेत्र आज काफ़ी बड़ा हो चुका है. कोई वजह मालूम नहीं होती कि तर्क शास्त्र में की हुई घटत बढ़त लोगों के मन में खटके और प्रानी शास्त्र या ज्योतिष शास्त्र में की हुई घटत बढ़त न खटके. जो विद्यार्थी तर्क शास्त्र पढ़ चुके हैं उनके मन में शायद यह ख़्याल नहीं है कि नियम घट बढ़ सकते हैं और उनमें कुछ बदलाव हो सकते हैं और न उन सवालों का ख़्याल है जो एकदम विशय को बदल डालते हैं. शायद आजकल का विचार उस ख़्याल से ज़ियादा मिलता जुलता है कि जो नियम तर्क शास्त्र में गढ़े हैं वही खुद तर्क हैं और वह अटल हैं और सदा सत्य हैं. हां, तफ़सील की छोटी मोटी बातों पर वाद विवाद हो सकता है.

इस तरह सीखा हुआ तर्क सिद्धान्त साधारन तर्क समझा जाता है. विद्यार्थी को यह ऐतिहासिक तथ्य समझना मुश्किल हो जाता है कि विचार शास्त्र की और भी अनेक रीतियां हैं—जैसे डाइलेक्टिक्स या अनेकांत में हिगल के नाम से जुड़ी हुई हैं अपने आदर्श रूप में यानी आइडियलिस्टिक वर्शन में और एंगिल मार्क्स के नाम से जुड़ी हुई हैं, अपने व्यवहार रूप में यानी मैटीरियलिस्टिक वर्शन में. यह अनेकांत बिल्कुल अलग

شریر اپنی سب کریا کرتا تھا، کھانا ھضم کرتا تھا۔ شریر رچنا شاستر تو شریر کو دیکھکر اور اس کی کریاؤں کا ادھیون کر کے ھزاروں لاکھوں ورش بعد لکھا گیا۔ شبد کے دو ارتھ ہونے کی بات فزکس شبد بہت صاف کر دیتا ہے، کیونکہ وشے پدارتھ چھوا دیکھا جا سکتا ہے۔ اندریاں اس کو سیدھے سیدھے سمجھ لیتی ہیں، جان لیتی ہیں، جبکہ نیم نیم کی حیثیت سے چھوئے دیکھے نہیں جا سکتے۔ ترک شاستر معنی نہ چھوئے جانے والے وشے پدارتھ کو اور نہ چھوئے جانے والے سدھانت کے وچاروں پر وچار کرنا۔ وشے پدارتھ اور نیموں کے بیچ بھید کرنا بے حد ضروری ہے۔

جس وشے پر چرچا چل رہی ہے اس وشے میں یہ بھید بڑے معرکے کا ہے۔ یہ بھید نیموں کی پورنتا اور ان کی سچائی کے سوال کو چاروں طرف سے گھیرے ہوئے ہے۔ ترک شاستر ایسا ادھین ہے جو سوچنے کے بارے میں سوچتا ہے۔ اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ سوچنے کے بارے میں ہم جو کچھ بھی سوچیں وہ ٹھیک ہی ہونا چاہئے۔ دوسرے شبدوں میں ارسطو جیسا ترک کا کوئی سدھانت اس وشے پدارتھ کو سمجھانے کی ایک ممکن کوشش یعنی سمبھو پریتن بھر ہے۔ وہ سچا ہی ہو یہ ضروری نہیں ہے۔ اس لئے اس میں اچرج نہیں ماننا چاہئے اگر ہم کسی وچارک کے نکالے ہوئے نیموں میں گھٹت بڑھت کریں، کیونکہ وشے کا شیتر آج کافی بڑا ہو چکا ہے۔ کوئی وجہ معلوم نہیں ہوتی کہ ترک شاستر میں کی ہوئی گھٹت بڑھت لوگوں کے من میں کھٹکے اور پرانی شاستر یا جیوتش شاستر میں کی ہوئی گھٹت بڑھت نہ کھٹکے۔ جو ودیارتھی ترک شاستر پڑھ چکے ہیں اُن کے من میں شاید یہ خیال نہیں ہے کہ نیم گھٹ بڑھ سکتے ہیں اور ان میں کچھ بدلاؤ ہو سکتے ہیں اور نہ اُن سوالوں کا خیال ہے جو ایکدم وشے کو بدل ڈالتے ہیں۔ شاید آجکل کا وچار اُس خیال سے زیادہ ملتا جلتا ہے کہ جو نیم ترک شاستر میں گڑے ہیں وہی خود ترک ہیں اور وہ اٹل ہیں اور سدا ستیہ ہیں۔ ہاں تفصیل کی چھوٹی موٹی باتوں پر واد وواد ہو سکتا ہے۔

اس طرح سیکھا ہوا ترک سدھانت سادھارن ترک سمجھا جاتا ہے۔ ودیارتھی کو یہ اتیہاسک تتھیہ سمجھنا مشکل ہوجاتا ہے کہ وچار شاستر کی اور بھی انیک شکشائیں ہیں—جیسے ڈائلیکٹکل یا انیکانت میں ہیگل کے نام سے جڑی ہوئی ہیں اپنے آدرش روپ میں یعنی آئیڈیلسٹک ورژن میں اور اینجل مارکس کے نام سے جڑی ہوئی ہیں، اپنے ویوہار روپ میں یعنی میٹریلسٹک ورژن میں۔ یہ انیکانت بالکل الگ

करना आ जाय. शरीर रचना शास्त्र का अध्ययन असली शरीर रचना की क्रियाओं से जो सम्बन्ध रखता है वही तर्क शास्त्र ठीक ठीक तर्क की रीतियों से रखता है. इसका अर्थ है कि इन शास्त्रों का अध्ययन यह बता देता है कि उसमें क्या क्या बातें शामिल हैं और अगर वहां कुछ कमियां मिलती हैं तो वह किस तरह ठीक की जा सकती हैं. अगर आदमी का हाज़मा कमज़ोर है तो क्यों कमज़ोर है, क्या करने से कमज़ोरी दूर हो सकती है, अगर आदमी के विचारने का ढंग बड़ा ढीला ढाला है तो वह वैसा क्यों है? किस तरह उसका ढीलापन दूर किया जा सकता है, और उसे चुस्त बनाया जा सकता है. अब यह बात साफ़ हो जाती है कि रीतियों के अध्ययन करने से न रीतियां बनाने की कला आती है न अध्ययन करने के लिये नई रीतियां बन सकती हैं. रीतियां इससे पहले मौजूद रहती हैं. यह बात किसी को अनोखी लग सकती है लेकिन किया क्या जाय? मुद्दतों से लोग यह समझे हुए हैं कि तर्क शास्त्र नई नई रीतियां तैयार कर के देता है जबकि वह ऐसा कुछ नहीं करता, व्याकरन शास्त्र रूप बनाने के नियम गढ़ता नहीं, गढ़े गढ़ाये मौजूद होते हैं, उनको समझाता और बताता है. सत्रहवीं सदी में जोलाफ़ ने यह ज़रूरी समझा कि वह यूरोप वालों को बताये कि आदमी और जानवर ईश्वर ने नहीं बनाये और फिर उस दिन की बाट जोहे जब अरस्तू पैदा हो कर यूरोप वालों को यह सिखाए कि विचार किस तरह किया जाता है.

दूसरे शब्दों में विज्ञान के नियमों में और उस विषय में जो इन सिद्धान्तों से सम्बन्ध रखते हैं दोनों में बुनियादी अन्तर रहता है. नियम विषय के बुनियादी सत्य को बताने के लिये होते हैं. किसी क्षेत्र में हम इन दो अलग अलग बातों में क्यों गड़बड़ी कर बैठते हैं इसका एक कारन यह है कि हम दोनों के लिये एक ही शब्द से काम लेते हैं. उदाहरन के लिये हम "उसका तर्क कह कर बोलते हैं" जबकि हमारा मतलब होता है उस आदमी की सोचने की शक्ति से, फिर चाहे उसने तर्क शास्त्र पढ़ा हो या न पढ़ा हो और उस वक़्त भी हम "उसका तर्क" कह कर बोलते हैं, जब उसने तर्क के नियमों का विवेचन करने के लिये कोई तर्क शास्त्र लिखा. इसी तरह हम "उसका मनोविज्ञान" कह कर बोलते हैं जब हमारा मतलब होता है उसके मन की अवस्था और उस वक़्त भी "उसका मनोविज्ञान" कह कर बोलते हैं जब उसने उस विद्या पर कोई शास्त्र न लिखा होता. यही हाल शरीर रचना का है जिसे अंगरेज़ी में 'फ़िज़िक्स" कहते हैं. शरीर रचना शास्त्र से बहुत पहले शरीर मौजूद था,

کرنا آجائے ۔ شریر رچنا شاستر کا ادھیین اصلی شریر رچنا کریاؤں سے جو سمبندھ رکھتا ہے وہی ترک شاستر ٹھیک ٹھیک ترک کی ریتیوں سے رکھتا ہے ۔ اس کا ارتھ ہے کہ ان شاستروں کا ادھیین یہ بتا دیتا ہے کہ اس میں کیا کیا باتیں شامل ہیں اور اگر وہاں کچھ کمیاں ملتی ہیں تو وہ کس کس طرح ٹھیک کی جا سکتی ہیں۔ اگر آدمی کا ہاضمہ کمزور ہے تو کیوں ہے' کیا کرنے سے کمزوری دور ہو سکتی ہے' اگر آدمی کے وچارنے کا ڈھنگ بڑا ڈھیلا ڈھالا ہے تو وہ ویسا کیوں ہے ؟ کس طرح اس کا ڈھیلا پن دور کیا جا سکتا ہے اور اسے چست بنایا جا سکتا ہے ۔ اب یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ ریتیوں کے ادھیین کرنے سے نہ ریتیاں بنانے کی کلا آتی ہے نہ ادھیین کرنے کے لئے نئی ریتیاں بن سکتی ہیں ۔ ریتیاں اس سے پہلے موجود رہتی ہیں۔ یہ بات کسی کو انوکھی لگ سکتی ہے لیکن کیا کیا جائے ؟ مدتوں سے لوگ یہ سمجھے ہوئے ہیں کہ ترک شاستر نئی نئی ریتیاں تیار کرکے دیتا ہے جبکہ وہ ایسا کچھ نہیں کرتا' ویاکرن شاستر روپ بنانے کے نیم گھڑتا نہیں' گڑھے گڑھائے موجود ہوتے ہیں اُن کو سمجھاتا اور بتاتا ہے ۔ سترھویں صدی میں جولاف نے یہ ضروری سمجھا کہ وہ یورپ والوں کو بتائے کہ آدمی اور جانور ایشور نے نہیں بنائے اور پھر اس دن کی باٹ جوہے جب ارسطو پیدا ہو کر یورپ والوں کو یہ سکھائے کہ وچار کس طرح کیا جاتا ہے ۔

دوسرے شبدوں میں وگیان کے نیموں میں اور اس وشے میں جو ان سدھانتوں سے سمبندھ رکھتے ہیں دونوں میں بنیادی انتر رہتا ہے ۔ نیم وشے کے بنیادی ستیہ کو بتانے کے لئے ہوتے ہیں ۔ کسی چھیتر میں ہم ان دو الگ الگ باتوں میں کیوں گڑبڑی کر بیٹھتے ہیں اس کا ایک کارن یہ ہے کہ ہم دونوں کے لئے ایک ہی شبد سے کام لیتے ہیں ۔ اداہرن کے لئے ہم " اسکا ترک کہہ کر بولتے ہیں " جبکہ ہمارا مطلب ہوتا ہے اس آدمی کی سوچنے کی شکتی سے' پھر چاہے اس نے ترک شاستر پڑھا ہو یا نہ پڑھا ہو اور اس وقت بھی ہم " اس کا ترک " کہہ کر بولتے ہیں' جب اس نے ترک کے نیموں کا وویچن کرنے کے لئے کوئی ترک شاستر لکھا اسی طرح ہم "اس کا منو وگیان " کہہ کر بولتے ہیں جب ہمارا مطلب ہوتا ہے اس کے من کی اوستھا اور اس وقت بھی " اسکا منو وگیان" کہہ کر بولتے ہیں جب اس نے اس ودیا پر کوئی شاستر نہ لکھا ہوتا ۔ یہی حال شریر رچنا کا ہے جسے انگریزی میں " فزکس " کہتے ہیں ۔ شریر رچنا شاستر سے بہت پہلے شریر موجود تھا'

कह सकता है कि ठीक ठीक सोचने का साधारन तर्क के अलावा कोई और भी ढंग हो सकता है. कोई भी विपरीत सिद्धान्त ज़रूर भूल भरे होंगे अगर ठीक ठीक सोचने का ही नाम साधारन तर्क है.

ऐसी हालत में एक बात यह हो सकती है जो मामले को साफ़ करने में मदद दे कि हम तर्क को ठीक ठीक सोचने के सिद्धान्त की हैसियत पर और ठीक ठीक सोचने के ऊपर ज़ोर नहीं देना चाहते, न हम तर्क को विशय समझ कर और तर्क का विशय क्या है यह मान कर कुछ कहना चाहते हैं. अरस्तू जैसे दार्शनिक ने जो बुनियादी उसूल बनाये और जिन्होंने तर्क के सिद्धान्त को बहुत बड़ी देन दी, उनकी यह कोशिश थी कि वह यह साफ़ साफ़ समझा दे कि तर्क के क्षेत्र में कौन कौन बातें शामिल हैं. इसमें शक नहीं कि एक आदमी यह भी कह सकता है कि उन्होंने तर्क को वह रूप दिया कि तर्क सोचने समझने की चीज़ बन गई. यह ठीक है अरस्तू ने तर्क पर ग्रंथ लिख कर यह समझाने की बड़ी सिलसिलेवार कोशिश की कि ठीक ठीक सोचने की जड़ में क्या चीज़ है पर यह नहीं समझना चाहिये कि अरस्तू से पहले कोई ठीक ठीक समझता ही नहीं था. ठीक ठीक सोचने का ढंग अरस्तू के पैदा होने के पहले से चला आ रहा है, ठीक इसी तरह जिस तरह चांद तारे अरस्तू से पहले या किसी भी विचारक से पहले जगत में मौजूद थे, ज्योतिष ने पीछे जन्म लिया. यही हाल प्रानी विद्या का है. आदमी की देह प्रानी विद्या के सिद्धान्त से बहुत पहले मौजूद थी.

यहां यह बता देना ज़रूरी है कि सिद्धान्त शब्द से हम काम ज़रूर ले रहे हैं पर उन अर्थों में नहीं जिन गिरे हुए अर्थों में वह आजकल काम में आ रहा है. यानी यह कि वह सच्चाई की जगह लिये हुए है. हम तो सिद्धान्त शब्द को वैज्ञानिक अर्थ में ले रहे हैं. हम सिद्धान्त उसे मानते हैं जो सच्चाई की व्याख्या करे, ख़ुद सच्चाई बन बैठने का दावा न करे. गरमी या आकर्शन का नियम पूरा पूरा साबित हो जाने पर भी गरमी और आकर्शन सिद्धान्त ही रहेगा, सच्चाई का आसन न ले सकेगा. सिद्धान्तों के बग़ैर काम नहीं चलता. उनके बिना विज्ञान एक क़दम आगे नहीं बढ़ सकता. सिद्धान्त यही तो काम करता है कि तरह तरह कि सत्य घटनाओं के समूह में तरह तरह के रिश्तों की एकता क़ायम कर देता है. सिद्धान्त की मार्फ़त हम अलग अलग और बेजोड़ सत्य घटनाओं का हाल जान लेते हैं.

यह ठीक हो सकता है कि एक आदमी शरीर रचना शास्त्र को इसलिये पढ़े कि उसे ठीक ठीक खाना हज़म करना आ जाय. इसी तरह यह भी ठीक है कि कोई आदमी इसलिये तर्क शास्त्र पढ़े कि उसे ठीक ठीक विचार

آکھ سکتا ہے کہ ٹھیک ٹھیک سوچنے کا سادھارن ترک کے علاوہ کوئی اور بھی ڈھنگ ہو سکتا ہے۔ کوئی بھی وپریت سدھانت ضرور بھول بھرے ہونگے اگر ٹھیک ٹھیک سوچنے کا ہی نام سادھارن ترک ہے۔

ایسی حالت میں ایک بات یہ ہو سکتی ہے جو معاملے کو صاف کرنے میں مدد دے کہ ہم ترک کو ٹھیک ٹھیک سوچنے کے سدھانت کی حیثیت پر اور ٹھیک ٹھیک سوچنے کے اوپر زور نہیں دینا چاہتے، نہ ہم ترک کو وشے سمجھکر اور ترک کا وشے کیا ہے یہ مان کر کچھ کہنا چاہتے ہیں۔ ارسطو جیسے دارشنک نے جو بنیادی اصول بنائے اور جنہوں نے ترک کے سدھانت کو بہت بڑی دین دی، اُن کی یہ کوشش تھی کہ وہ یہ صاف صاف سمجھا دے کہ ترک کے چھیتر میں کون کون باتیں شامل ہیں۔ اس میں شک نہیں کہ ایک آدمی یہ بھی کہہ سکتا ہے کہ انہوں نے ترک کو وہ روپ دیا کہ ترک سوچنے سمجھنے کی چیز بن گئی۔ یہ ٹھیک ہے ارسطو نے ترک پر گرنتھ لکھکر یہ سمجھانے کی بڑی سلسلے وار کوشش کی کہ ٹھیک ٹھیک سوچنے کی جڑ میں کیا چیز ہے پر یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ ارسطو سے پہلے کوئی ٹھیک ٹھیک سمجھتا ہی نہیں تھا۔ ٹھیک ٹھیک سوچنے کا ڈھنگ ارسطو کے پیدا ہونے کے پہلے سے چلا آ رہا ہے، ٹھیک اسی طرح جس طرح چاند تارے ارسطو سے پہلے یا کسی بھی وچارک سے پہلے جگت میں موجود تھے۔ جیوتش نے پیچھے جنم لیا۔ یہی حال پرانی ودیا کا ہے۔ آدمی کی دیہہ پرانی ودیا کے سدھانت سے بہت پہلے موجود تھی۔

یہاں یہ بتا دینا ضروری ہے کہ سدھانت شبد سے ہم کام ضرور لے رہے ہیں پر اُن ارتھوں میں نہیں جن گرے ہوئے ارتھوں میں وہ آجکل کام میں آ رہا ہے۔ یعنی یہ کہ وہ سچائی کی جگہ لئے ہوئے ہے۔ ہم تو سدھانت شبد کو ویگیانک ارتھ میں لے رہے ہیں۔ ہم سدھانت اسے مانتے ہیں جو سچائی کی ویاکھیا کرے، خود سچائی بن بیٹھنے کا دعویٰ نہ کرے۔ گرمی یا اکرشن کا نیم پورا پورا ثابت ہو جانے پر بھی گرمی اور اکرشن سدھانت ہی رہے گا، سچائی کا آسن نہ لے سکے گا۔ سدھانت کے بغیر کام نہیں چلتا۔ ان کے بنا وگیان ایک قدم آگے نہیں بڑھ سکتا۔ سدھانت یہی تو کام کرتا ہے کہ طرح طرح کی ستیہ گھٹناؤں کے سموہ میں طرح طرح کے رشتوں کی ایکتا قائم کر دیتا ہے۔ سدھانت کی معرفت ہم الگ الگ اور بے جوڑ ستیہ گھٹناؤں کا حال جان لیتے ہیں۔

یہ ٹھیک ہو سکتا ہے کہ ایک آدمی شریر رچنا شاستر کو اس لئے پڑھے کہ اُسے ٹھیک ٹھیک کھانا ہضم کرنا آ جائے۔ اسی طرح یہ ٹھیک ہے کہ کوئی آدمی اس لئے ترک شاستر پڑھے کہ اُسے ٹھیک ٹھیک وچار

हमारी बहस का क्या मतलब है, हम किस बात पर ज़ोर देना चाहते हैं, इसे साफ़ कर देना ज़रूरी है. वह यह कि डाईलेक्टिक्स् के नियमों पर लोगों ने पूरा पूरा ध्यान नहीं दिया. इस विद्या का कलेवर क्या है इसको ध्यान से नहीं जांचा. इस नियम से किस तरह का काम लिया गया है यह भी जानने की कोशिश लोगों ने नहीं की है. इन्हें पूर्न सिद्ध सत्य की हैसियत से कभी किसी ने देखा ही नहीं. इतना भी नहीं किया कि उसको शुद्ध तर्क पूर्न निगमन की हैसियत से ही जांचते. यह निगमन किस तरह किया गया है इस तरफ़ भी किसी ने ध्यान नहीं दिया. जहां जहां इनसे काम लिया गया है वहां यह सवाल ज़रूर रखा गया है कि वह अनुभव की खोज से मेल खाते हैं या नहीं. फिर भी लोगों ने न जाने क्यों उन पर ध्यान देना ज़रूरी न समझा कुछ भी हो माटीवादी डाईलेक्टिक्स् के नियम ऐसे तो माने ही जाते हैं कि वह उस बुनियाद पर टिके हुए हैं जो विज्ञान की साखी के नाम से पुकारी जाती है और जो हर तरह वस्तुनिष्ठ है. पहलू यह लिया गया है कि जो कुछ पाया जाता है वह उन नियमों का समर्थन करता है और जो कुछ नहीं पाया जाता उसको वह नियम अमान्य है. हम उनको साधारन रूप में सिद्ध नियम मानते हैं. निगमन के आधार पर उनका ख़ास क्षेत्र में काम लिया जाना ऐसा सवाल है जिस पर कोई राय नहीं दी जा सकती. अब तक जो गवाहियां मिली हैं और जो उनका समर्थन करती हैं उनके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि वह ऐसे सिद्धान्त हैं कि आगे की खोज में इन्हें औज़ार मान कर इनसे खोजबीन का काम लिया जा सकता है. 'डाईलेक्टिक्स् का एक भी सिद्धान्त ऐसा नहीं है जिसके बारे में हम से यह कहा गया हो और ज़ोर के साथ कहा गया हो कि वह शुद्ध योजना का रूप ले सकता है. उन नियमों के आधार पर कोई ऐसी योजना नहीं बन सकती जो किसी ठोस सवाल का जवाब दे सके. यह सिद्धान्त विज्ञान की खोज और क्रिया शीलता में एक सहायक का काम दे सकते हैं. यह अटल सिद्धान्त नहीं हैं. इनमें बदलने की गुंजाइश है.

आदमी का मन कम सोचने की अनेक भ्रांतिक रीति "माटीवादी अनेकांत और साधारन तर्क के बीच ठीक ठीक सोचने के ढंग का सवाल"

बहुत आदमी और कुछ न्याय शास्त्र के सिद्धान्तों के अच्छे जानकार ऊपर का शीर्शक देख कर चौंक उठेंगे और समझ न पायेंगे कि इस शीर्शक से लेखक क्या लिखना चाहता है. उनके लिये साधारन न्याय या तर्क का मतलब होता है ठीक ठीक सोचने का ढंग. फिर कैसे कोई सवाल

ہماری بحث کا کیا مطلب ہے، ہم کس بات پر زور دینا چاہتے ہیں، اسے صاف کر دینا ضروری ہے۔ وہ یہ کہ ڈائی لیکٹکس کے نیموں پر لوگوں نے پورا پورا دھیان نہیں دیا۔ اس ودیا کا کلیور کیا ہے اسکو دھیان سے نہیں جانچا۔ اس نیم سے کس طرح کا کام لیا گیا ہے یہ بھی جاننے کی کوشش لوگوں نے نہیں کی ہے۔ انہیں پورن سدھ ستیہ کی حیثیت سے کبھی کسی نے دیکھا ہی نہیں۔ اتنا بھی نہیں کیا کہ اسکو شدھ ترک پورن نگمن کی حیثیت سے ہی جانچتے۔ یہ نگمن کس طرح کیا گیا ہے اس طرف بھی کسی نے دھیان نہیں دیا۔ جہاں جہاں ان سے کام لیا گیا ہے وہاں یہ سوال ضرور رکھا گیا ہے کہ وہ انوبھو کی کھوج سے میل کھاتے ہیں یا نہیں۔ پھر بھی لوگوں نے نہ جانے کیوں ان پر دھیان دینا ضروری نہ سمجھا۔ کچھ بھی ہو ماٹی واضی ڈائی لیکٹکس کے نیم ایسے تو مانے ہی جاتے ہیں کہ وہ اس بنیاد پر ٹکے ہوئے ہیں جو وگیان کی ساکھی کے نام سے پکاری جاتی ہے اور جو ہر طرح وستو نشٹھ ہے۔ پہلو یہ لیا گیا ہے کہ جو کچھ پایا جاتا ہے وہ ان نیموں کا سمرتھن کرتا ہے اور جو کچھ نہیں پایا جاتا اسکو وہ نیم امانیہ ہے۔ ہم ان کو سادھارن روپ میں سدھ نیم مانتے ہیں۔ نگمن کے آدھار پر ان کا خاص چھیتر میں کام لیا جانا ایسا سوال ہے جس پر کوئی رائے نہیں دی جا سکتی۔ اب تک جو گواہیاں ملی ہیں اور جو ان کا سمرتھن کرتی ہیں ان کے آدھار پر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ وہ ایسے سدھانت ہیں کہ آگے کی کھوج میں انہیں اوزار مانکر ان سے کھوج بین کا کام لیا جا سکتا ہے۔ 'ڈائی لیکٹکس' کا ایک بھی سدھانت ایسا نہیں ہے جس کے بارے میں ہم سے یہ کہا گیا ہو اور زور کے ساتھ کہا گیا ہو کہ وہ شدھ یوجنا کا روپ لے سکتا ہے۔ ان نیموں کے آدھار پر کوئی ایسی یوجنا نہیں بن سکتی جو کسی ٹھوس سوال کا جواب دے سکے۔ یہ سدھانت وگیان کی کھوج اور کریاشیلتا میں ایک سہایک کا کام دے سکتے ہیں۔ یہ اٹل سدھانت نہیں ہیں۔ ان میں بدلنے کی گنجائش ہے۔

آدمی کا من کم سوچنے کی انیک آنتک ریتی "ماٹی واضی انیکانت اور سادھارن ترک کے بیچ ٹھیک ٹھیک سوچنے کے ڈھنگ کا سوال"

بہت آدمی اور کچھ نیائے شاستر کے سدھانتوں کے اچھے جانکار اوپر کا شیرشک دیکھکر چونک اٹھیں گے اور سمجھ نہ پائینگے کہ اس شیرشک سے لیکھک کیا لکھنا چاہتا ہے۔ اس کے لئے نیائے یا ترک کا مطلب ہوتا ہے ٹھیک ٹھیک سوچنے کا ڈھنگ۔ پھر کیسے کوئی سوال

हमारा विकसता जगत

हमारा बदलावी जगत इस तरह का है कि इसमें हमेशा नये नये रूप खिलते रहते हैं. इसके अन्दर अनन्त शक्तियां छिपी रहती हैं. इतना ही नहीं, यह विकासवान भी है. माटीवादी डाईलेक्टिक्स् के तीन नियमों के बारे में यह कहा जा सकता है कि यह इस बात का बताने का प्रयत्न है कि विकास का वास्तविक महत्व क्या है और इस निरंतर बदलाव में क्या क्या बातें छिपी हुई हैं, इसके लिये क्या क्या शर्तें जरूरी हैं. वह शर्तें हैं गुन की और उसी तरह परिभाशा की. सोवियत विचारक अपने सिद्धांत को अध्यात्मवाद से नहीं जोड़ता. उसकी वजह यह है कि अध्यात्मवाद की जो प्रथा पुराने समय से चली आ रही है वह ऐसे सत्य का सिद्धान्त लिये हुए है जो सत्य ऐसे विचारों पर जोर देता है कि सत्य वस्तु अचल है. उसमें कोई बदलाव नहीं होता. वह अपदार्थ है, यानी जड़ नहीं है और प्रकृति से परे चीज़ है इसलिये मजबूर हो कर उसे अध्यात्मिक शब्द 'ऐंटि-डाईलेक्टिकल' यानी डाईलेक्टिक्स् का विरोधी जंचता है. आप चाहें तो डाई-लेक्टिकल को अध्यात्मक कह सकते हैं. उसको तत्वोज्ञान से विरोध नहीं क्योंकि इसके साथ पक्षपात का पुछल्ला नहीं है. यह सब को मालूम ही है. तत्वोज्ञान और अध्यात्म-ज्ञान एकार्थ वाची हैं. रूसी विचारक को इससे संतोश है कि वह सत्य या असलियत के सिद्धान्त को डाईलेक्टिक्स् माटीवाद का साधारन सिद्धान्त मानता है. वह उसको कई भागों में बांटता है और उससे काम लेता है. एक भाग है प्रकृति का डाईलेक्टिक्स्, दूसरा विचार का डाई-लेक्टिक्स् और तीसरा समाज का डाईलेक्टिक्स् पहले में प्राकृतिक विज्ञान शामिल है, दूसरे में तर्क और न्याय शामिल हैं, तीसरे में समाज दर्शन, समाज विज्ञान, निति और कला दर्शन शामिल हैं.

परिभाशा कुछ भी हो, तत्वोज्ञान से या अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाले सब बुनियादी सवालों पर बड़े विस्तार के साथ, ध्यान के साथ, विचार किया गया है. हमारे विश्लेशन में हमने खास खास बातें ली हैं. पर इस थोड़े से भी इस बात का पता लग जाता है कि सोवियत विचारक खोज के हर क्षेत्र में अपना सम्बन्ध बनाये हुए है. फिर चाहे वह अप्रानी क्षेत्र हो या प्रानी क्षेत्र हो. अगले अध्याय में हम यह बतावेंगे कि रूसी विचारक का विचार के 'डाईलेक्टिक्स्' से क्या मतलब है और ठीक ठीक सोचने के क्या तरीक़े हैं और उसकी क्या क्या खूबियां हैं.

ہمارا وکستا جگت

ہمارا بدلنالی جگت اِس طرح کا ہے کہ اِس میں ہمیشہ نئے نئے روپ کھلتے رہتے ہیں ۔ اس کے اندر اننت شکتیاں چھپی رہتی ہیں ۔ اتنا ہی نہیں، یہ وکاسوان بھی ہے ۔ ماٹی وادی ڈائی لیکٹکس کے تین نیموں کے بارے میں یہ کہا جا سکتا ہے کہ یہ اس بات کا بتانے کا پریتن ہے کہ وکاس کا واستوک مہتو کیا ہے اور اس نرنتر بدلاؤ میں کیا کیا باتیں چھپی ہوئی ہیں، اس کے لئے کیا کیا شرطیں ضروری ہیں ۔ وہ شرطیں ہیں گن کی اور اسی طرح پریبھاشا کی ۔ سوویت وچارک اپنے سدھانت کو ادھیاتم واد سے نہیں جوڑتا ۔ اسکی وجہ یہ ہے کہ ادھیاتم واد کی جو پرتھا پرانے سمے سے چلی آ رہی ہے وہ ایسے ستیہ کا سدھانت لئے ہوئے ہے جو ستیہ ایسے وچاروں پر زور دیتا ہے کہ ستیہ وستو اچل ہے ۔ اس میں کوئی بدلاؤ نہیں ہوتا ۔ وہ اپدارتھ ہے، یعنی جڑ نہیں ہے اور پرکرتی سے پرے چیز ہے اس لئے مجبور ہو کر اسے ادھیاتمک شبد اینٹی ڈائی لیکٹیکل، یعنی ڈائی لیکٹکس کا ورودھی جنچتا ہے ۔ آپ چاہیں تو ڈائی لیکٹیکل کو ادھیاتمک کہہ سکتے ہیں ۔ اسکو تتو گیان سے ورودھ نہیں کیونکہ اس کے ساتھ پکشپات کا پچھلا نہیں ہے ۔ یہ سب کو معلوم ہی ہے ۔ تتو گیان اور ادھیاتم گیان ایکارتھ واچی ہیں ۔ روسی وچارک کو اس سے سنتوش ہے کہ وہ ستیہ یا اصلیت کے سدھانت کو ڈائی لیکٹیکل ماٹی واد کا سادھارن سدھانت مانتا ہے ۔ وہ اس کو کئی بھاگوں میں بانٹتا ہے اور اس سے کام لیتا ہے ۔ ایک بھاگ ہے پرکرتی کا ڈائی لیکٹکس، دوسرا وچار کا ڈائی لیکٹکس اور تیسرا سماج کا ڈائی لیکٹکس ۔ پہلے میں پراکرتک وگیان شامل ہے، دوسرے میں ترک اور نیائے شامل ہیں، تیسرے میں سماج درشن، سماج وگیان، نیتی اور کلا درشن شامل ہیں ۔

پریبھاشا کچھ بھی ہو، تتو وگیان سے یا ادھیاتم سے سمبندھ رکھنے والا سب بنیادی سوالوں پر بڑے وستار کے ساتھ، دھیان کے ساتھ، وچار کیا گیا ہے ۔ ہمارے وشلیشن میں ہم نے خاص خاص باتیں لی ہیں ۔ پر اس تھوڑے سے بھی اس بات کا پتہ لگ جاتا ہے کہ سوویت وچارک کھوج کے ہر چھیتر میں اپنا سمبندھ بنائے ہوئے ہے ۔ پھر چاہے وہ اپرانی چھیتر ہو یا پرانی چھیتر ہو ۔ اگلے ادھیائے میں ہم یہ بتائینگے کہ روسی وچارک کا وچار کے ڈائی لیکٹکس سے کیا مطلب ہے اور ٹھیک ٹھیک سوچنے کے کیا طریقے ہیں اور اس کی کیا کیا خوبیاں ہیں ۔

दराज़ ज़ुल्फ़ों की बरहमी अम्न मांगती है मेरी ज़बां से
मैं अम्न की मांग कर रहा हूं घटाओं की तिशनगी की ख़ातिर
हसीं सितारों की रोशनी अम्न मांगती है मिरी ज़बां से
मैं अम्न की मांग कर रहा हूं फ़िज़ा की शायस्तगी की ख़ातिर

घरों की दीवारों पै लड़कपन लकीरें खींचा किया है अब तक
मैं घर की दीवारों की लकीरों के वास्ते अम्न चाहता हूं
मैं दिक़ की तल्ख़ी को जानता हूं कि ख़ून थूका है खांसियों में
मैं दिक़ के बीमारों की दवाओं के वास्ते अम्न चाहता हूं

मैं हर हसीं शह्र के तहफ़्फ़ुज़ के वास्ते अम्न चाहता हूं
ज़मीन अब तक सुना रही है लड़ाई का इक तवील क़िस्सा
सवाल करते हैं लोग मुझसे कि अम्न या जंग किस तरफ़ हूं
मैं जंग के साथ अगर रहूंगा तो अम्न के साथ कौन होगा ?

अज़मतों = बड़ाई; वीरानी = बरबादी; अमराज़ = रोग; शह-रग = गर्दन की नस; ग़िलाज़तों = गंदगी; इस्मतें = सतीत्व; हसीन = सुन्दर; ग़ार = गुफाएं; ख़राबे = उजाड़ स्थान; गर्मे जुस्तजू = जिज्ञासा में लीन; आरज़ू = आशा; फ़न = कला; ज़ुलमतों = अंधेरा; आफ़ताब = सूरज; सफ़ीर = दूत; इख़्तलाफ़ = विरोध; सुकून = शान्ति; जुस्तजू = खोज; गुफ़्तगू = बात चीत; सीनए बह्र = समुन्दर की छाती; ग़ुंचे = कलियां; जिन्स की भूक = काम वासना; ग़ुरूरे मरियम = मरियम का अभिमान; विक़ारे सीता = सीता का तेज; रफ़ीक़ो – साथियो; शगुफ़्तगी = ताज़गी; दरिन्दों – हिंसक जानवर; ब-बांगे दोहल = चिल्ला चिल्ला कर; शकिस्त आईना – शीशे का टूटना; गवारा = सहन; हयात = जीवन; दराज़ = लम्बी; बरहमी = बिखराव; तिशनगी = प्यास, फ़िज़ा = वातावरन; शायस्तगी = सुलझाना; तलख़ी = कटुता; तहफ़्फ़ुज़ = रक्षा; तवील = लम्बा.

دراز زلفوں کی برہمی امن مانگتی ہے مری زباں سے
میں امن کی مانگ کر رہا ہوں گھٹاؤں کی تشنگی کی خاطر
حسین ستاروں کی روشنی امن مانگتی ہے مری زباں سے
میں امن کی مانگ کر رہا ہوں فضا کی شایستگی کی خاطر

گھروں کی دیواروں پہ لڑکپن لکیر کھینچا کیا ہے اب تک
میں گھر کی دیواروں کی لکیروں کے واسطے امن چاہتا ہوں
میں دق کی تلخی کو جانتا ہوں کہ خون تھوکا ہے کھانسیوں میں
میں دق کے بیماروں کی دواؤں کے واسطے امن چاہتا ہوں

میں ہر حسین شہر کے تحفظ کے واسطے امن چاہتا ہوں
زمین اب تک سنا رہی ہے لڑائی کا اک طویل قصہ
سوال کرتے ہیں لوگ مجھ سے کہ امن یا جنگ کس طرف ہوں
میں جنگ کے ساتھ اگر رہوں گا تو امن کے ساتھ کون ہوگا؟

عظمتوں = بڑائی؛ ویرانی = بربادی؛ امراض = روگ؛ شہ رگ = گردن کی نس؛ غلاظتوں = گندگی؛ عصمتوں = ستیتو؛ حسین = سندر؛ غار = گپھائیں؛ خرابے = اُجاڑ استھان؛ گرم جستجو = جگیاسا میں لین؛ آرزو = آشا؛ فن = کلا؛ ظلمتوں = اندھیرا؛ آفتاب = سورج؛ سفیر = دوت؛ اختلاف = ورودھ؛ سکون = شانتی؛ جستجو = کھوج؛ گفتگو = بات چیت؛ سینۂ بحر = سمندر کی چھاتی؛ غنچے = کلیاں؛ جنس کی بھوک = کام واسنا؛ غرورِ مریم = مریم کا ابھیمان؛ وقارِ سیتا = سیتا کا تیج؛ رفیقو = ساتھیو؛ شگفتگی = تازگی؛ درندوں = ہنسک جانور؛ بابانگ دہل = چلا چلا کر؛ شکست آئینہ = شیشے کا ٹوٹنا؛ گوارا = سہن؛ حیات = جیون؛ دراز = لمبی؛ برہمی = بکھراؤ؛ تشنگی = پیاس؛ فضا = واتاورن؛ شایستگی = سلجھانا بناؤ؛ تلخی = کٹوتا؛ تحفظ = رکھشا؛ طویل = لمبا۔

मैं आज गुमनाम हूं यह सच है मगर मैं फ़नकार हूं रफ़ीक़ो
मैं 'राब्सन' 'फ़ास्ट' और 'चैप-लिन' के वास्ते अम्न चाहता हूं
मैं इक ख़राबे का रहने वाला तो हूं मगर बेख़बर नहीं हूं
मैं मास्को रोम और बर्लिन के वास्ते अम्न चाहता हूं

यह जूही के गुनगुनाते पौदे यह बेल के मुस्कराते गुंचे
गुलाब के खेतों की कहानी सुना न दें इस से डर रहा हूं
यह तीसरी जंग दूसरी जंग की ही मानिन्द जंग होगी
हवाई अड्डे कहीं इन्हें भी मिटा न दें इस से डर रहा हूं

लड़ाई होगी तो फ़ौज के साथ जिन्स की भूक भी बढ़ेगी
कहां रहेगा ग़ुरूरे मरयम कहां रहेगा विक़ारे सीता
बताओ सीनों पै और ज़ख़्मों के वास्ते अब जगह कहां है
नहीं, यह खेल अब से बन्द होगा यहां न होगा कहीं न होगा

नहीं, लड़ाई नहीं, लड़ाई ख़िज़ां का एक नाम है रफ़ीक़ो
गुलाब के उजड़े खेत अपनी शगुफ़्तगी मांगते हैं मुझसे
यह मदरसे जिनमें टाट के गन्दे फ़र्श पर इल्म ऊँघता है
यह मदरसे आज उदास बैठे हैं ज़िन्दगी मांगते हैं मुझसे

मैं इक ख़राबे का रहने वाला तो क्या दरिन्दों को भूल जाऊं
तो क्या भयानक लड़ाई की मैं ख़बर सुनूंगा तो चुप रहूंगा
सुनो! रफ़ीक़ो, सुनो! ब-बांगे दोहल मैं एलान कर रहा हूं
मैं अम्न के वास्ते जिऊंगा मैं अम्न के वास्ते मरूंगा

शिकस्त आईना किस को कहते हैं यह कोई मेरे दिल से पूछे
कुछ और शीशे भी टूट जायें मैं यह गवारा नहीं करूंगा
मैं टूटी सड़कों के दर्द को ख़ूब जानता हूं इसी लिये तो
कुछ और सड़कें भी टूट जायें मैं यह गवारा नहीं करूंगा

मैं जानता हूं कि दिक़ की आहट से नींद किस तरह टूटती है
मैं जानता हूं कि गाढ़ा बलग़म ज़मीं को किस तरह चूसता है
अंधेरे कमरे हयात से क्या सलूक करते हैं जानता हूं
मैं जानता हूं कि टूटे गमले में पौदा किस तरह सूखता है

तो क्या ज़मीं एक टूटा गमला बने तो मैं देखता रहूंगा?
जो एक पौदे के ग़म में रो दे चमन की बरबादी देख लेगा?
जो इक ख़राबे की नालियों की ग़िलाज़तों पर गवाह हो ख़ुद,
वह वादिये वालगा व गंगो-जमन की बरबादी देख लेगा?

میں آج گمنام ہوں یہ سچ ہے مگر میں فنکار ہوں رفیقو
میں 'رابسن' 'فاسٹ' اور 'چیپلن' کے واسطے امن چاہتا ہوں
میں اِک خرابے کا رہنے والا تو ہوں مگر بےخبر نہیں ہوں
میں ماسکو روم اور برلن کے واسطے امن چاہتا ہوں

یہ جوہی کے گنگناتے پودے یہ بیل کے مسکراتے غنچے
گلاب کے کھیتوں کی کہانی سنا نہ دیں اِس سے ڈر رہا ہوں
یہ تیسری جنگ دوسری جنگ کی ہی مانند جنگ ہوگی
ہوائی اڈے کہیں انہیں بھی مٹا نہ دیں اس سے ڈر رہا ہوں

لڑائی ہوگی تو فوج کے ساتھ جنس کی بھوک بھی بڑھے گی
کہاں رہے گا غرورِ مریم کہاں رہے گا وقارِ سیتا
بتاؤ سینوں پہ اور زخموں کے واسطے اب جگہ کہاں ہے
نہیں، یہ کھیل اب سے بند ہوگا یہاں نہ ہوگا کہیں نہ ہوگا

نہیں، لڑائی نہیں، لڑائی خزاں کا اک نام ہے رفیقو
گلاب کے اُجڑے کھیت اپنی شگفتگی مانگتے ہیں مجھ سے
یہ مدرسے جن میں ٹاٹ کے گندے فرش پر علم اونگھتا ہے
یہ مدرسے آج اُداس بیٹھے ہیں زندگی مانگتے ہیں مجھ سے

میں اک خرابے کا رہنے والا تو کیا درندوں کو بھول جاؤں
تو کیا بھیانک لڑائی کی میں خبر سنوں گا تو چپ رہوں گا
سنو! رفیقو، سنو! بہ بانگِ دہل میں اعلان کر رہا ہوں
میں امن کے واسطے جیوں گا میں امن کے واسطے مروں گا

شکستِ آئینہ کس کو کہتے ہیں یہ کوئی میرے دل سے پوچھے
کچھ اور شیشے بھی ٹوٹ جائیں میں یہ گوارا نہیں کروں گا
میں ٹوٹی سڑکوں کے درد کو خوب جانتا ہوں اسی لئے تو
کچھ اور سڑکیں بھی ٹوٹ جائیں میں یہ گوارا نہیں کروں گا

میں جانتا ہوں کہ دق کی آہٹ سے نیند کس طرح ٹوٹتی ہے
میں جانتا ہوں کہ گاڑھا بلغم زمیں کو کس طرح چوستا ہے
اندھیرے کمرے حیات سے کیا سلوک کرتے ہیں جانتا ہوں
میں جانتا ہوں کہ ٹوٹے گملے میں پودا کس طرح سوکھتا ہے

تو کیا زمیں ایک ٹوٹا گملا بنے تو میں دیکھتا رہوں گا؟
جو ایک پودے کے غم میں رو دے چمن کی بربادی دیکھ لے گا؟
جو اک خرابے کی نالیوں کی غلاظتوں پر گواہ ہو خود،
وہ وادیٔ والگا و گنگ و جمن کی بربادی دیکھ لے گا؟

लड़ाई की फ़िक्र दिल्लियों सारनाथों और काशियों को होगी
हसीन बारात अम्न चाहें हसीन बाज़ार अम्न चाहें
लड़ाई की फ़िक्र अगर करेंगे तो बुद्ध के बुत मुझे ग़रज़ क्या
अशोक की लाटें अम्न चाहें अजन्ता के ग़ार अम्न चाहें

मैं उस ख़राबे का रहने वाला कि क़हक़हा सुन के चौंक उट्ठे
हवा का जो रास्ता नहीं है ज़मीं का जो रास्ता नहीं है
यहां की मटयाली ज़िन्दगी पर किसी का ऐटम नहीं गिरेगा
यह टूटा फूटा सा शहर दिल्ली नहीं है हीरोशिमा नहीं है

तो साथियो अब सवाल यह है कि जंग के मैं ख़िलाफ़ क्यों हूं
तो साथियो अब सवाल यह है कि फ़िक्र क्यों गर्मे जुस्तजू है
तो साथियो अब सवाल यह है लड़ाई की मुझ को फ़िक्र क्यों है
तो साथियो अब सवाल यह है कि अम्न क्यों मेरी आर्ज़ू है

गवाह रहना कि मेरा फ़न इस ख़िज़ां में अब इक गुलाब देगा
गवाह रहना कि मेरा फ़न ज़ुल्मतों में इक आफ़ताब देगा
गवाह रहना कि इन सवालों को सुन के मैं चुप नहीं रहा हूं
गवाह रहना कि मेरा फ़न इन सवालों का अब जवाब देगा

उदासी बिखराये बाल जिन आंगनों में सदियों से खेलती है
गवाह रहना कि आया हूं मैं उन आंगनों का सलाम लेकर
गवाह रहना कि सैकड़ों मील चल के आया हूं मैं यहां पर
उजाड़ सड़कों ने मुझ को भेजा है आज अपना पयाम दे कर

गवाह रहना कि टूटी सड़कों का इक नुमाइन्दा कह रहा था
कि अम्न मेरी उजाड़ सड़कों की एक बेचैन आर्ज़ू है
गवाह रहना गुलाबों का इक सफ़ीर आया था कह रहा था
लड़ाई से इख़्तलाफ़ हम को सुकून की हम को जुस्तजू है

लड़ाई होगी किसान टामीगनों से खेलेंगे हल को रख के
सवाल यह है कि खेतियां गुफ़्तगू करेंगी अगर तो किस से ?
लड़ाई होगी तो सीनए बहर पै धमाकों का राज होगा
सवाल यह है कि नदियां गुफ़्तगू करेंगी अगर तो किस से ?

लड़ाई होगी तो शाहराहों पै टैन्क घूमेंगे शोर होगा
सवाल यह है कि ज़िन्दगी की निशानियां फिर कहां रहेंगी
लड़ाई होगी तो आंगनों के हर एक कोने में ख़ौफ़ होगा
सवाल यह है कि वादियों की कहानियां फिर कहां रहेंगी

لڑائی کی فکر دلیوں سارناتھوں اور کاشیوں کو ہوگی
حسین بارات امن چاہیں حسین بازار امن چاہیں
لڑائی کی فکر اگر کرینگے تو بدھ کے بت مجھے غرض کیا
اشوک کی لاٹیں امن چاہیں اجنتا کے غار امن چاہیں

میں اس خرابے کا رہنے والا کہ قہقہہ سن کے چونک اٹھے
ہوا کا جو راستہ نہیں ہے زمیں کا جو راستہ نہیں ہے
یہاں کی مٹیالی زندگی پر کسی کا ایٹم نہیں گریگا
یہ ٹوٹا پھوٹا سا شہر دلی نہیں ہے ہیروشیما نہیں ہے

تو ساتھیو اب سوال یہ ہے کہ جنگ کے میں خلاف کیوں ہوں
تو ساتھیو اب سوال یہ ہے کہ فکر کیوں گرم جستجو ہے
تو ساتھیو اب سوال یہ ہے لڑائی کی مجھکو فکر کیوں ہے
تو ساتھیو اب سوال یہ ہے کہ امن کیوں میری آرزو ہے

گواہ رہنا کہ میرا فن اس خزاں میں اب اک گلاب دیگا
گواہ رہنا کہ میرا فن ظلمتوں میں اک آفتاب دیگا
گواہ رہنا کہ ان سوالوں کو سن کے میں چپ نہیں رہا ہوں
گواہ رہنا کہ میرا فن ان سوالوں کا اب جواب دیگا

اداسی بکھرائے بال جن آنگنوں میں صدیوں سے کھیلتی ہے
گواہ رہنا کہ آیا ہوں میں ان آنگنوں کا سلام لیکر
گواہ رہنا کہ سیکڑوں میل چل کے آیا ہوں میں یہاں پر
اجاڑ سڑکوں نے مجھکو بھیجا ہے آج اپنا پیام دے کر

گواہ رہنا کہ ٹوٹی سڑکوں کا اک نمائندہ کہہ رہا تھا
کہ امن میری اجاڑ سڑکوں کی ایک بےچین آرزو ہے
گواہ رہنا گلابوں کا اک سفیر آیا تھا کہہ رہا تھا
لڑائی سے اختلاف ہم کو سکون کی ہم کو جستجو ہے

لڑائی ہوگی کسان ٹامی گنوں سے کھیلینگے ہل کو رکھ کے
سوال یہ ہے کہ کھیتیاں گفتگو کرینگی اگر تو کس سے ؟
لڑائی ہوگی تو سینۂ بحر پہ دھماکوں کا راج ہوگا
سوال یہ ہے کہ ندیاں گفتگو کرینگی اگر تو کس سے ؟

لڑائی ہوگی تو شاہراہوں پہ ٹینک گھومینگے شور ہوگا
سوال یہ ہے کہ زندگی کی نشانیاں پھر کہاں رہینگی
لڑائی ہوگی تو آنگنوں کے ہر ایک کونے میں خوف ہوگا
سوال یہ ہے کہ وادیوں کی کہانیاں پھر کہاں رہینگی

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 16 | मार्च, सन '54 | नम्बर 3

جلد 16 | مارچ، سن '54 | نمبر 3

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

सवाल यह है—जवाब यह है

(राही मासूम रज़ा)

सवाल यह है कि तीसरी जंग से क्यों भला मैं यों डर रहा हूं
सवाल यह है कि मेरी नज़्मों में अम्न की यह पुकार क्यों है
सवाल यह है कि जंग होगी तो हो मुझे क्या ग़रज़ है इससे
सवाल यह है कि मेरी नज़्मों को अम्न पर एतबार क्यों है

यह शहर शाहे जहां के दिल का अमीन होता तो फ़िक्र होती
यहां अजन्ता की अज़मतों के निशान मिलते तो सोचता भी
गुलाब के खेत अपनी वीरानी के क़फ़न में सिसक रहे हैं
हमेशा की तरह इस ज़मीं पर गुलाब खिलते तो सोचता भी

हवा में दिक़ के क़दम की आहट ज़मीं पै दिल के लहू की सीलन
कुछ और अमराज़ हों तो डर क्या ज़मीन फ़रियाद क्या करेगी
उजाड़ सड़कें उदास आंगन यह गिरती दीवारों का वतन है
लड़ाई होगी तो हो लड़ाई खंडर को बरबाद क्या करेगी

लड़ाई होगी तो ख़ून बरसेगा मौत लहराएगी फ़िज़ा में
हयात को आज मौत का इन्तज़ार है फ़िक्र क्या करूं मैं
लड़ाई होगी तो भूक शह-रग पै हाथ डालेगी बस यही न
यहां तो बेरोज़गारी ही रोज़गार है फ़िक्र क्या करूं मैं

लड़ाई होगी तो साफ़ो शफ़्फ़ाक ज़िन्दगी चीख़ने लगेगी
मगर सलामत अंधेरी गलियां फ़लाकतें अब भी उग रही हैं
लड़ाई होगी तो इस्मतें शाम की सजावट पै ख़र्च होंगी
मगर यहां [illegible] आंगनों में [illegible] अब भी उग रही हैं

سوال یہ ہے—جواب یہ ہے

(راہی معصوم رضا)

سوال یہ ہے کہ تیسری جنگ سے کیوں بھلا میں یوں ڈر رہا ہوں
سوال یہ ہے کہ میری نظموں میں امن کی یہ پکار کیوں ہے
سوال یہ ہے کہ جنگ ہوگی تو ہو مجھے کیا غرض ہے اِس سے
سوال یہ ہے کہ میری نظموں کو امن پر اعتبار کیوں ہے

یہ شہر شاہجہاں کے دل کا امین ہوتا تو فکر ہوتی
یہاں اجنتا کی عظمتوں کے نشان ملتے تو سوچتا بھی
گلاب کے کھیت اپنی ویرانی کے کفن میں سسک رہے ہیں
ہمیشہ کی طرح اس زمین پر گلاب کھلتے تو سوچتا بھی

ہوا میں دق کے قدم کی آہٹ زمیں پہ سل کے لہو کی سیلن
کچھ اور امراض ہوں تو ڈر کیا زمین فریاد کیا کریگی
اجاڑ سڑکیں اداس آنگن یہ گرتی دیواروں کا وطن ہے
لڑائی ہوگی تو ہو لڑائی کھنڈر کو برباد کیا کریگی

لڑائی ہوگی تو خون برسیگا موت لہرائیگی فضا میں
حیات کو آج موت کا انتظار ہے فکر کیا کروں میں
لڑائی ہوگی تو بھوک شہ رگ پہ ہاتھ ڈالیگی بس یہی نہ
یہاں تو بیروزگاری ہی روزگار ہے فکر کیا کروں میں

لڑائی ہوگی تو صاف و شفاف زندگی چیخنے لگے گی
مگر سلامت اندھیری گلیاں فلاکتیں اب بھی اُگ رہی ہیں
لڑائی ہوگی تو عصمتیں شام کی سجاوٹ پہ خرچ ہونگی
مگر یہاں کچھ آنگنوں میں طوائفیں اب بھی اُگ رہی ہیں

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

मार्च 1954

क्या किससे — सफा

"نیا ھند"

ھندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماھواری پرچا

مارچ 1954

کیا کس سے — صفحہ

मूल्य—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा—दस आने .

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال، ایک پرچہ—دس آنے .

مینیجر
'نیا ھند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد 3

नया   ہند

एडीटर— ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

ایڈیٹر— تاراچند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندرلال

नायब एडीटर— सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب ایڈیٹر— سریش رام بھائی، مجیب رضوی

इस नम्बर के ख़ास लेख

اس نمبر کے خاص لیکھ

हमारी राय

ہماری رائے

... सोसाइटी, इलाहाबाद

मार्च 1954 مارچ

क़ीमत दस आना   قیمت دس آنہ

Registered No. [illegible] - 21

नई किताब

کتاب

गंगा से गोमती तक

گنگا سے گومتی تک

[illegible] ... शैली में है। [illegible] लेखकों में सकता है।

[illegible] हुसैन हुसैन पेड़ से [illegible] कहानियाँ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]	"	1
[illegible]	"	1
[illegible]नातियाँ	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3
[illegible] शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट भगवानदास केला	2
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	
26. [illegible]	महात्मा भगवानदीन	
27. मारने की हिम्मत !	"	
28. [illegible]	"	
29. मेरे साथी	"	

मिलने का पता—

मैनेजर

145, मुट्ठीगंज, [illegible]

گنگا سے گومتی تک [illegible] میں 150 صفحے ہیں [illegible]

[illegible] نیا ہند ' 145 مٹھی گنج الہ آباد .

[illegible] Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

क़सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लकचरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़. गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद सुलैमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, पं० बिशम्भरनाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम चन्द रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री श्रीमप्रकाश पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी की फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" के जो गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया चन्दा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से मेम्बरी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई किताब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या इतना दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम दे सकेंगे.

ھندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(1) ایک ایسی ھندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ھندستانی شامل ھوں .

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا .

(3) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لیکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا .

—:٥:—

سوسائٹی کے پریذیڈنٹ—مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق . گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال .

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' ڈاکٹر تارا چند' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی. جی. کھیر' پنڈت بشمبھر ناتھ' مہاتما بھگوان دین' سیٹھ پونم چند رانکا' قاضی محمد عبدالغفار اور شری ..اه .کاش پالیوال .

ممبری کے قاعدوں کے ..

..ھی رام بھائی

..مندر میں ھر پیچھلوں پر ..رکستا

..سائٹی'

..اد .

..مبری کی

..ھند" کے

..پیے چندہ

..مبری کی

کتاب جو

زیادہ دام .

مارچ

قیمت میں ..

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें | ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोट—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं

نوٹ — یہ کتابیں صرف ہندی میں ہیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئیلی	1. شعر و شاعری
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. ہمارے آرادھیہ
5. संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5. سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو ہزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9. पंथ प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9 پنتھ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	5	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला	5	0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور ان کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	21. سرودے ارتھ ویوستھا
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	22. ہماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل . بی . گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जवानी	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانی
27. मारने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی ہمت
28. सलोना सच	,,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3.

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

145' مٹھی گنج' الہ آباد-3.

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुषों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

"उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور ان کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں. بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور ان کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اترتا چلا جاتا ہے. ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے. اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اٹھانے والے اپدیش بھی.

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

"انہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے. وہ اسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں. ان کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے..... مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے.

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اس کتاب میں آپ کو ملے گی. راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی.

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ.

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند'

145 مٹھی گنج، الہ آباد.

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आख़िरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ہیں ۔

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے ۔ 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے ۔

اہنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاہتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لایا جا سکتا ہے ۔

پینتیس پیج کی کتاب، دام صرف چار آنے ۔

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے ۔ قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے ۔

ملنے کا پتہ—

مینیجر، 'نیا ہند' 145، مٹھی گنج، الہ آباد ۔

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

पिछले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई कविताओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि उरदू कविता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ज़िन्दगी की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. आज की उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ तक ही सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में किसानों और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ग़ुलामी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी आवाज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"इन कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों झलकें मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव में हिन्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू साहित्य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

23-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

"जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर की हैं."

6. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के युग की समस्याओं से ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के. पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह का आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह निश्चत है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र के क़ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा अधिकतर सरल और बामहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ हिन्दी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा बिलकुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह आज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा छपाई. दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ख़रीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

मिलने का पता—
सेक्रेटरी 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے ' فراق '

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اُردو کویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے . آج کی اُردو شاعری گل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے' اب آپ کو اُردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی . غلامی' انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف اپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی .

" اِن کویتاؤں میں انترراشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں...سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اُردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاو کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں ."

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اُردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں ."

17-2-'52 —'نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور اُن سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے."

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوتر کے قائل ہیں . وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے . کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے ."

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار' کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے ."—' نیا سماج ' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اُردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا . سندر جلد' بڑھیا کاغذ . عمدہ چھپائی . دام صرف تین روپیہ . دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن .

ملنے کا پتہ—
سکریٹری ' نیا ہند ' 145' مٹھی گنج الہ آباد .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की किताबें

पचास रुपए से ज़ियादा दाम की किताबें ख़रीदने वालों को और बुकसेलरों को ख़ास रिआयत दी जायेगी. पूरी जानकारी के लिए लिखिये.

डाक या रेल ख़र्च हर हालत में गाहक के ज़िम्मे होगा.

भारत का विधान

पूरा हिन्दी अनुवाद

जो 26 जनवरी सन 1950 से सारे भारत में लागू हुआ.

'भारत में अंगरेज़ी राज' के लेखक पंडित सुन्दरलाल द्वारा मूल अंगरेज़ी से अनुवादित.

हर भारतवासी का फ़र्ज़ है कि जिस विधान के अधीन स्वाधीन भारत का शासन इस समय चल रहा है उसे अच्छी तरह समझे. भारत के हर घर में इस पुस्तक का रहना ज़रूरी है.

आसान बामहावरा भाशा. रायल अठपेजी बड़ा साइज़. लगभग चार सौ पन्ने. कपड़े की सुन्दर जिल्द. क़ीमत केवल साढ़े सात रुपए.

फ़िरक़ाबन्दी पर बापू

सम्पादक—श्री श्रीकृश्न दास

इस पुस्तक में 1921 से सन 1948 तक गांधी जी ने साम्प्रदायिता के सवाल पर जो कुछ कहा या लिखा वह सब आपको एक जगह मिलेगा.

भारत के आज़ाद होने पर यह और भी ज़रूरी हो गया है कि हर भारतवासी साम्प्रदायिकता के नुक़सानों को समझे और इस ज़हर को अपने अन्दर से साफ़ करे.

सुन्दर जिल्द. अच्छा काग़ज़. दो सौ सफ़े. क़ीमत दो रुपया.

विनोबा का सन्देश

लेखक—सुरेश रामभाई

एक शब्द—महात्मा भगवानदीन

विनोबाजी के भू-दान-यज्ञ से आज सारा देश वाक़िफ़ है. इस छोटी सी किताब में आपको मिलेगा कि यह भू-दान-यज्ञ कब और कैसे शुरू हुआ और इसका मक़सद क्या है.

पहला एडीशन हाथों हाथ निकल गया. यह दूसरा एडीशन है. सफ़े 25, दाम केवल दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کی کتابیں

پچاس روپئے سے زیادہ دام کی کتابیں خریدنے والوں کو اور بکسیلروں کو خاص رعائت دی جائیگی. پوری جانکاری کے لئے لکھئے.

ڈاک یا ریل خرچ ہر حالت میں گاہک کے ذمے ہوگا.

بھارت کا ودھان

پورا ہندی انوواد

جو 26 جنوری سن 1950 سے سارے بھارت میں لاگو ہوا.

'بھارت میں انگریزی راج' کے لیکھک پنڈت سندرلال دوارا مول انگریزی سے انووادت.

ہر بھارت واسی کا فرض ہے کہ جس ودھان کے ادھین سوادھین بھارت کا شاسن اس سمے چل رہا ہے اسے اچھی طرح سمجھے. بھارت کے ہر گھر میں اس پستک کا رہنا ضروری ہے.

آسان بامحاورہ بھاشا. رایل اٹھ پیجی بڑا سائز. لگ بھگ چار سو پنّے. کپڑے کی سندر جلد. قیمت کیول ساڑھے سات روپئے.

فرقہ بندی پر باپو

سمپادک—شری شریکرشن داس

اس پستک میں سن 1921 سے سن 1948 تک گاندھی جی نے سامپردایکتا کے سوال پر جو کچھ کہا یا لکھا وہ سب آپکو ایک جگہ ملیگا.

بھارت کے آزاد ہونے پر یہ اور بھی ضروری ہو گیا ہے کہ ہر بھارت واسی سامپردایکتا کے نقصان کو سمجھے اور اس زہر کو اپنے اندر سے صاف کرے.

سندر جلد. اچھا کاغذ. دو سو صفحے. قیمت دو روپیہ.

ونوبا کا سندیش

لیکھک—سریش رام بھائی

ایک شبد—مہاتما بھگوان دین

ونوبا جی کے بھودان یگیہ سے آج سارا دیش واقف ہے. اس چھوٹی سی کتاب میں آپکو ملیگا کہ یہ بھودان یگیہ کب اور کیسے شروع ہوا اور اس کا مقصد کیا ہے.

پہلا ایڈیشن ہاتھوں ہاتھ نکل گیا. یہ دوسرا ایڈیشن ہے. صفحے 35 دام کیول دو آنے.

ملنے کا پتہ—

ما[illegible] مٹھی گنج، الہ آباد.

सिक्के जारी कर रक्खे हैं जिन्हें टंक कहते हैं. इन में से हर एक का वज़न सरकारी तौल के मुताबिक़ तीन 'चेन' है. हर सिक्का सरकारी नाप में 1-1/5 इंच है. हर सिक्के के दोनों तरफ़ मुहरें हैं ....यहां चाय कहीं नहीं बिकती. महमानों को झाखियां दी जाती हैं. गलियों के दोनों तरफ़ तरह तरह की दूकानें, हम्माम, शराबखाने, मिठाई की दूकानें और इसी तरह की सब चीज़ों की दूकानें होती है......"

तीसरा लेखक 'फ़े शियन' है. वह भी 'चैंग हू' के साथ हिन्दुस्तान आया था. फ़े शियन कम से कम तीन बार हिन्दुस्तान आया. सन 1436 ई० में उसने अपना सफ़र-नामा लिखा जिस का नाम 'शिंग चा शैंग लान' है जिस के मानी होते हैं 'बज़ीर की हैसियत से जो यात्रा की गई उस के नज़ारे' उसने जो कुछ बंगाल में देखा उसे इस तरह बयान किया है :—

"यहां के लोग हद दर्जे के ईमानदार हैं. मर्द अपने सिरों पर सफ़ेद कपड़ा लपेटे रहते हैं और लम्बे सफ़ेद सूती गाउन यानी चुग़े पहनते हैं और भेड़ की खाल के जूते पहनते हैं जो पीले डोरों से सिले होते हैं.... औरतें कुर्ते पहनती हैं जो रंगीन सूती या घटिया रेशम के दुपट्टे ओढ़ती हैं. वह अपने मुंह पर बनावटी पाउडर या रंग नहीं लगातीं क्योंकि उनका रंग क़ुदरती तौर पर बालाई सा सफ़ेद होता है. कानों में वह बड़े बड़े सुन्दर बाले पहनती हैं, गले में मालाएं, उनके सिर के बाल पीछे जूड़े की शकल में बंधे रहते हैं, हाथों और पैरों में वह सोने के कड़े पहनती हैं, हाथों और पैरों की उंगलियों में अंगूठियां और छल्ले पहनती हैं. वह देखने में बड़ी सुन्दर लगती हैं."

इन के अलावा उन तीनों किताबों में बंगाल का और भी बहुत कुछ हाल मिलता है. लेकिन जो कुछ मैंने ऊपर दिया है उस से उस ज़माने के बंगाल की समाजी और माली हालत का खासा पता चलता है. यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि जिन तीन किताबों का मैंने ज़िक्र किया है उनमें बंगाल के अलावा हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों का भी काफ़ी हाल दिया गया है और इन तीन के अलावा और बहुत से चीनी यात्री उन दिनों हिन्दुस्तान आये. लेकिन मैं इस बयान को ज़ियादा बढ़ा कर आप को थकाना नहीं चाहता.

سکے جاری کر رکھے ہیں جنہیں ٹنک کہتے ہیں ۔ ان میں سے ہر ایک کا وزن سرکاری تول کے مطابق تین 'چین' ہے ۔ ہر سکہ سرکاری ناپ میں 1-1/5 انچ ہے. ہر سکے کے دونوں طرف مہریں ہیں...... یہاں چائے کہیں نہیں بکتی ۔ مہمانوں کو چھالیا دی جاتی ہیں. گلیوں کے دونوں طرف طرح طرح کی دوکانیں حمام' شراب خانے' مٹھائی کی دوکانیں اور اسی طرح کی سب چیزوں کی دوکانیں ہوتی ہیں۔....."

تیسرا لیکھک 'فے شین' ہے ۔ وہ بھی 'چینگ ہو' کے ساتھ ہندستان آیا تھا ، فے شین کم سے کم تین بار ہندستان آیا ۔ 1436ع میں اس نے اپنا سفر نامہ لکھا جس کا نام 'شانگ شینگ لن' ہے جس کے معنی ہوتے ہیں 'وزیر کی حیثیت سے جو یاترا کی گئی اسکے نظارے .' اس نے جو کچھ بنگال میں دیکھا اسے اسطرح بیان کیا ہے :—

"یہاں کے لوگ حد درجے کے ایماندار ہیں ۔ مرد اپنے سروں پر سفید کپڑا لپیٹے رہتے ہیں اور لمبے سفید سوتی گاؤن یعنی چوغے پہنتے ہیں اور بھیڑ کی کھال کے جوتے پہنتے ہیں جو پیلے ڈوروں سے سلے ہوتے ہیں..... عورتیں کرتے پہنتی ہیں اور رنگین سوتی یا گھٹیا ریشم کے دوپٹے اوڑھتی ہیں ۔ وہ اپنے منہ پر بناوٹی پاؤڈر یا رنگ نہیں لگاتیں کیونکہ ان کا رنگ قدرتی طور پر بالائی سا سفید ہوتا ہے ۔ کانوں میں وہ بڑے بڑے سندر بالے پہنتی ہیں' گلے میں مالائیں' انکے سر کے بال پیچھے جوڑے کی شکل میں بندھے رہتے ہیں' ہاتھوں اور پیروں میں وہ سونے کے کڑے پہنتی ہیں' ہاتھوں اور پیروں کی انگلیوں میں انگوٹھیاں اور چھلے پہنتی ہیں ۔ وہ دیکھنے میں بڑی ہی سندر لگتی ہیں ."

ان کے علاوہ ان تینوں کتابوں میں بنگال کا اور بھی بہت کچھ حال ملتا ہے ۔ لیکن جو کچھ میں نے اوپر دیا ہے اس سے اس زمانے کے بنگال کی سماجی اور مالی حالت کا خاصہ پتہ چلتا ہے—یہ کہنے کی ضرورت نہیں ہے کہ جن تین کتابوں کا میں ذکر کیا ہے ان میں بنگال کے علاوہ ہندستان کے دوسرے حصوں کا بھی کافی حال دیا گیا ہے اور ان تین کے علاوہ اور بھی بہت سے چینی یاتری ان دنوں ہندستان آئے ۔ لیکن میں اس بیان کو زیادہ بڑھاکر آپ کو تھکانا نہیں چاہتا ۔

तारीख़ी किताबें लिख कर छोड़ गये हैं. इन दोनों की किताबों का भी यूरोप की भाषाओं में अनुवाद हो चुका है.

मैं इस तरह की और ज्यादा किताबों की चरचा करना नहीं चाहता. अब मैं केवल कुछ और सफ़रनामों का ज़िक्र करूंगा. जिन सफ़रनामों का मैं ने ऊपर ज़िक्र किया है उनके अलावा तीन चीनी यात्री चौदहवीं सदी ई० के बीच में और पंद्रहवीं सदी ईस्वी के शुरू में बंगाल आये थे. उनमें पहला यू आन राजकुल का वांग ता यू आन था. वांग ता यू आन हिन्दुस्तान में बहुत जगह गया और जहां जहां गया वहां वहां का मुफ़स्सिल हाल लिख कर छोड़ गया है. सन 1349 ई० में चीन लौट कर उसने अपना सफ़रनामा लिखा जिस का नाम है 'ताऊ ई चि लुइया' जिस के मानी होते हैं दूसरे देशों के मुख़्तसिर हालात. इस किताब में उस ने बंगाल का हाल इस तरह बयान किया है :—

"वहां ऊंचे ऊंचे पहाड़ हैं और घने जंगल हैं जिन के चारों तरफ़ आदमियों की बस्तियां हैं. खेती का काम और दरख़्त लगाने का काम साल भर तक बराबर चलता रहता है. इसलिये कोई ज़मीन परती नहीं पड़ी रहती. यहां की ज़मीन हद दर्जे की उपजाऊ है. लोग आम तौर पर साल में तीन फ़सलें उगाते हैं. हर चीज़ सस्ती है...... आबो हवा ज्यादातर गरम रहती है. लोग अपने ब्यापार और रहन सहन में बहुत ही ईमानदार और नेक हैं. मर्द और औरतें दोनों बहुत नफ़ीस बारीक़ कपड़ा अपने सिरों पर लपेटे रहते हैं और लम्बेलम्बे गाउन यानी चुग़े पहनते हैं. सरकार पैदावार का बीस फ़ी सदी यानी पांचवां हिस्सा लेती है... लोग अमन के साथ रहते हैं और सारी क़ौम ख़ुशहाल है. इस सब की एक यह भी वजह है कि इन लोगों की सब से ज़ियादा कोशिशें और सब से ज़ियादा मेहनत खेती के काम में ख़र्च होती है ....."

दूसरे सफ़रनामे का लेखक मां ह्वान' था जो मिंग राज कुल के शाही ख़ोजे 'चंग हू' के साथ हिन्दुस्तान आया था. उसने सन 1451 ई० में एक किताब लिखी जिस का नाम 'यंग या शैंग लान' था जिस के मानी होते हैं 'दूर दूर के देशों के नज़ारे' इस किताब में उसने बंगाल का हाल यों लिखा है :—

"यहां के लोग बड़े सीधे, नेक और मेहरबान हैं. अमीर घराने के लोगों के पास अकसर उनकी अपनी किश्तियां हैं जो उन्होंने दूसरे मुल्कों के साथ जा कर तिजारत करने के लिये बनवा रक्खी हैं. बहुत बड़ी तादाद ऐसे लोगों की भी है जो मज़दूरी करने के लिये बाहर जाते हैं......जो भाषा यह लोग काम में लाते हैं वह बंगला भाषा ही से निकली है पर वह अलग पहचानी जाती है. कुछ लोग यहां ऐसे भी हैं जो फ़ारसी भाषा बोलते हैं. यहां के राजा ने चांदी के

تاریخی کتابیں لکھکر چھوڑ گئے ہیں۔ ان دونوں کی کتابوں کا بھی یورپ کی بھاشاؤں میں انوواد ہوچکا ہے ۔

میں اِس طرح کی اور زیادہ کتابوں کی چرچا کرنا نہیں چاہتا ۔ اب میں کیول کچھ اور سفرناموں کا ذکر کرونگا ۔ جن سفرناموں کا میں نے اوپر ذکر کیا ہے اُن کے علاوہ تین چینی یاتری چودھویں صدی عیسوی کے بیچ میں اور پندرھویں صدی عیسوی کے شروع میں بنگال آئے تھے ۔ اِن میں پہلا یوآن راجکل کا وانگ تا یوآن تھا ۔ وانگ تا یوآن ہندستان میں بہت جگہ گیا اور جہاں جہاں گیا وہاں وہاں کا مفصل حال لکھکر چھوڑ گیا ہے. سن1349ع میں چین لوٹ کر اس نے اپنا سفرنامہ لکھا جس کا نام ہے 'تاؤ ای چہ لوئہ' جس کے معنی ہوتے ہیں دوسرے دیشوں کے مختصر حالات ۔ اِس کتاب میں اُس نے بنگال کا حال اس طرح بیان کیا ہے :—

"وہاں اونچے اونچے پہاڑ ہیں اور گھنے جنگل ہیں جن کے چاروں طرف آدمیوں کی بستیاں ہیں ۔ کھیتی کا کام اور درخت لگانے کا کام سال بھر تک برابر چلتا رہتا ہے. اس لئے کوئی زمین پرتی نہیں پڑی رہتی ۔ یہاں کی زمین حد درجہ کی اپجاؤ ہے ۔ لوگ عام طور پر سال میں تین فصلیں اُگاتے ہیں ۔ ہر چیز سستی ہے ۔ ...... آب و ہوا زیادہتر گرم رہتی ہے ۔ لوگ اپنے بیوپار اور رہن سہن میں بہت ہی ایماندار اور نیک ہیں ۔ مرد اور عورتیں دونوں بہت نفیس باریک کپڑا اپنے سروں پر لپیٹے رہتے ہیں اور لمبے لمبے گاؤن یعنی چوغے پہنتے ہیں ۔ سرکار پیداوار کا بیس فیصدی یعنی پانچواں حصہ لیتی ہے ......لوگ امن کے ساتھ رہتے ہیں اور ساری قوم خوش حال ہے. اِس سب کی ایک یہ بھی وجہ ہے کہ اِن لوگوں کی سب سے زیادہ کوشش اور سب سے زیادہ محنت کھیتی کے کام میں خرچ ہوتی ہے ......"

دوسرے سفر نامے کا لیکھک ' ماں ہوان ' تھا جو منگ راج کل کے شاہی خوجے ' چنگ ہو ' کے ساتھ ہندستان آیا تھا ۔ اس نے 1451ع میں ایک کتاب لکھی جس کا نام ' ینگ یا شینگ لن ' تھا جس کے معنی ہوتے ہیں 'دور دور کے دیشوں کے نظارے.' اِس کتاب میں اس نے بنگال کا حال یوں لکھا ہے :—

" یہاں کے لوگ بڑے سیدھے' نیک اور مہربان ہیں۔ امیر گھرانے کے لوگوں کے پاس اکثر ان کی اپنی کشتیاں ہیں جو انھوں نے دوسرے ملکوں کے ساتھ جا کر تجارت کرنے کے لئے بنوا رکھی ہیں ۔ بہت بڑی تعداد ایسے لوگوں کی بھی ہے جو مزدوری کرنے کے لئے باہر جاتے ہیں ......جو بھاشا یہ لوگ کام میں لاتے ہیں وہ بنگلہ بھاشا ہی سے نکلی ہے پر وہ الگ پہچانی جاتی ہے ۔ کچھ لوگ یہاں ایسے بھی ہیں جو فارسی بھاشا بولتے ہیں ۔ یہاں کے راجا نے چاندی کے

चीन की इतिहास की किताबों में इसके पन्द्रह बरस बाद तक उसके जिन्दा रहने का बयान मिलता है. अगर भविष्य में कभी किसी हिंदुस्तानी इतिहासकार को ऐसा मालूम हो कि चन्द्रगुप्त की मौत का समय और देर का हो सकता है और इसके लिये कुछ कारन हैं तो चीन की इस किताब से भी अच्छी काम की मदद मिल सकती है.

यह वह ज़माना था जबकि चीन के लोग बौद्ध धर्म की जानकारी हासिल करने और बौद्ध किताबें पढ़ने के लिये काफ़ी तादाद में हिन्दुस्तान आते थे. इनमें सबसे मशहूर फ़ाशियन (फ़ाहियान) था जो सन् 399 ई० में चीन से भारत के लिये रवाना हुआ और पंद्रह साल बाद चीन वापिस लौटा. अपने सफ़र के जो हालात यह चीनी विद्वान लिख कर छोड़ गये हैं वह हिंदुस्तान की बाबत सब तरह की जानकारी का ख़ज़ाना बल्कि खान मालूम होते हैं. 'फ़ाशियन' की एक किताब का नाम 'फ़ू कू ची' है जिस के मानी होते हैं 'बौद्ध सल्तनतों का हाल.' यह किताब तब से अब तक हिंदुस्तान की तारीख़ पर एक मुस्तनद यानी प्रमानिक किताब मानी गई है. मुझे यहां इस किताब के मज़मूनों की तफ़सील में जाने की ज़रूरत नहीं है. योरप की बहुत सी भाषाओं में उसका अनुवाद हो चुका है.

'तांग' राज कुल के ज़माने में यानी सन 620 ई० से सन 906 ई० तक के ज़माने में हिन्दुस्तान और चीन के बीच आना जाना और भी अधिक बढ़ गया. इस से पहले की इतिहास की किताबों में हिन्दुस्तान का केवल जहां तहां बयान मिलता था. अब इसके बाद से हिन्दुस्तान के ऊपर हर किताब में अलग मज़मून या अलग अध्याय लिखे जाने लगे. इन मज़मूनों या अध्यायों में हिन्दुस्तान का सब हाल ख़ूब तफ़सील से लिखा जाने लगा. जिन यात्रियों ने अपनी भारत यात्रा के हालात लिखे हैं उन्होंने तो और भी तफ़सील के साथ सब हाल दिया है. इस तरह के सफ़रनामों में सब से बढ़ चढ़ कर किताब श्वान सांग (वान सांग) की है. श्वान सांग का नाम हिन्दुस्तान में सब जानते हैं. वह सन 629 ई० में चीन से चला था और सत्रह साल भारत रहा. इन सत्रह साल के अन्दर उसने इस सारे देश की अच्छी तरह यात्रा की. उसकी किताब "तातांग सी यू की" तारीख़ की एक अमर किताब है. इस के मानी होते हैं 'तांग राज कुल की शाखे की हुई पच्छिमी देशों की याददाश्त' इस किताब का भी यूरोप की बहुत सी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है. दुनिया भर के विद्वान इस किताब को बीच एशिया के देशों और हिन्दुस्तान की तारीख़ की जानकारी के लिये बिल्कुल ज़रूरी समझते हैं. और उनका यह समझना ठीक ही है. श्वान सांग ही के समय में दो और चीनी बौद्ध आचार्य थे—'ई चिंग' और 'हुई चाऊ'. यह दोनों भी हिन्दुस्तान के बारे में बड़ी क़ीमती

چین کی اتہاس کی کتابوں میں اس کے پندرہ برس بعد تک اُس کے زندہ رہنے کا بیان ملتا ہے ۔ اگر بھوشیہ میں کبھی کسی ہندستانی اتہاس کار کو ایسا معلوم ہو کہ چاندر گپت کی موت کا سمے اور دیر کا ہو سکتا ہے اور اِس کے لئے کچھ کارن ہیں تو چین کی اِس کتاب سے بھی اچھی کام کی مدد مل سکتی ہے ۔

یہ وہ زمانہ تھا جبکہ چین کے لوگ بودھ دھرم کی جانکاری حاصل کرنے اور بودھ کتابیں پڑھنے کے لئے کافی تعداد میں ہندستان آتے تھے ۔ ان میں سب سے مشہور فاشین (فاہیان) تھا جو سن 399ع میں چین سے بھارت کے لئے روانہ ہوا اور پندرہ سال بعد چین واپس لوٹا ۔ اپنے سفر کے جو حالات یہ چینی ودوان لکھکر چھوڑ گئے ہیں وہ ہندستان کی بابت سب طرح کی جانکاری کا خزانہ بلکہ کھان معلوم ہوتے ہیں ۔ 'فاشین' کی ایک کتاب کا نام 'فوکوچی' ہے جس کے معنی ہوتے ہیں 'بودھ سلطنتوں کا حال'. یہ کتاب تب سے اب تک ہندستان کی تاریخ پر اک مستند یعنی پرامانک کتاب مانی گئی ہے. مجھے یہاں اِس کتاب کے مضمونوں کی تفصیل میں جانے کی ضرورت نہیں ہے ۔ یورپ کی بہت سی بھاشاؤں میں اُس کا انوواد ہو چکا ہے ۔

'تانگ' راجکل کے زمانے میں یعنی سن 620ع سے سن 906ع تک کے زمانے میں ہندستان اور چین کے بیچ آنا جانا اور بھی ادھک بڑھ گیا ۔ اِس سے پہلے کی اتہاس کی کتابوں میں ہندستان کا کیول جہاں تہاں بیان ملتا تھا. اب اِس کے بعد سے ہندستان کے اُوپر ہر کتاب میں الگ مضمون یا الگ ادھیائے لکھے جانے لگے. ان مضمونوں یا ادھیایوں میں ہندستان کا سب حال خوب تفصیل سے لکھا جانے لگا ۔ جن یاتریوں نے اپنی بھارت یاترا کے حالات لکھے ہیں اُنہوں نے تو اور بھی تفصیل کے ساتھ سب حال دیا ہے ۔ اِس طرح کے سفرناموں میں سب سے بڑھ چڑھکر کتاب شوان سانگ (ہوان سانگ) کی ہے ۔ شوان سانگ کا نام ہندستان میں سب جانتے ہیں ۔ وہ سن 629ع میں چین سے چلا تھا اور سترہ سال بھارت رہا. ان سترہ سال کے اندر اُس نے اِس سارے دیش کی اچھی طرح یاترا کی ۔ اُسکی کتاب "تاتانگ سی یوکی" تاریخ کی ایک امر کتاب ہے. اِس کے معنی ہوتے ہیں 'تانگ راجکل کی شائع کی ہوئی پچھمی دیشوں کی یادداشت.' اِس کتاب کا بھی یورپ کی بہت سی بھاشاؤں میں انوواد ہو چکا ہے. دنیا بھر کے ودوان اِس کتاب کو بیچ ایشیا کے دیشوں اور ہندستان کی تاریخ کی جانکاری کے لئے بالکل ضروری سمجھتے ہیں. اور اُن کا یہ سمجھنا ٹھیک ہی ہے ۔ شوان سانگ ہی کے سمے میں دو اور چینی بودھ آچاریہ تھے— 'ای چنگ' اور 'ہوئی چاؤ.' یہ دونوں بھی ہندستان کے بارے میں بڑی قیمتی

है चीन की तारीख़ी किताबों में हिन्दुस्तान का यह सब से शुरू का बयान है.

दो सौ बरस बाद दूसरे मशहूर चीनी इतिहासकार 'पान कू' ने अपने 'पच्छिमी हान राज कुल' के इतिहास में हिन्दुस्तान का और ज़ियादा तफ़सील के साथ हाल लिखा है. उन दिनों 'चुंगन' चीन की राजधानी था. पान कू ने हिसाब लगा कर 'चुंगन' से हिन्दुस्तान का फ़ासिला दिया है. हिन्दुस्तान को उसने एक टापू नुमा बताया है. यहां के अलग अलग सूबों के नाम दिये हैं. यहां की आबो हवा, रीत रिवाज, पैदावार और यहां के सिक्कों का हाल लिखा है. यहां के लोगों की दस्तकारी और कला की बहुत ज़बरदस्त तारीफ़ की है. ख़ासकर उनकी पत्थर और धात की चित्रकला, दरी और क़ालीन बनाने की कला और कपड़े पर सोने चांदी और सुई के बारीक काम की उसने बहुत तारीफ़ की है.

इसके बाद सन 25 ई० से लेकर सन 419 ई० तक चीन के तीन राज कुलों का समय आता है. पूरबी 'हान राज कुल' 'तीन रियासतों' का राज कुल और 'सिन राज कुल'—इन तीनों राज कुलों के ज़माने की तारीख़ी किताबों में हिन्दुस्तान का बयान मिलता है. इस के बाद दक्खिनी राज कुल और उत्तरी राज कुल का ज़माना आता है. यह समय सन 420 ई० से सन 589 ई० तक का था. उस ज़माने की किताबों में और ख़ासकर अलग अलग विद्वानों की लिखी किताबों में हिन्दुस्तान का और भी ज़ियादा तफ़सील से बयान मिलता है. उनमें से एक किताब का नाम है "संग राज कुल" की किताब. इस किताब में सम्राट चन्द्रगुप्त का ज़िक्र आता है जो विक्रमादत्य के नाम से मशहूर है. वह कपिलवस्तु का राजा था. हिन्दुस्तान के इतिहास में वह गुप्त राज कुल से था. चन्द्रगुप्त ने सन 428 ई० में अपना एक वज़ीर चीन भेजा जो अपने साथ बतौर नज़राने के हीरे की अंगूठियां, दूसरी क़ीमती चीज़ें और दो तोते ले गया था जिनमें एक तोता सफ़ेद रंग का था और दूसरा लाल. सम्राट चन्द्रगुप्त ने चीनी सम्राट के नाम एक लम्बा ख़त भी लिख कर भेजा था. उस ख़त में उसने लिखा कि—"मुझे आशा है कि इन दोनों देशों के बीच राजदूतों का आना जाना इसी तरह बराबर जारी रहेगा." चीन के इतिहास पर सम्राट चन्द्रगुप्त का जो असर रह गया है वह कभी मिट नहीं सकता. उस से पता चलता है कि भारत का एक सम्राट चीन के साथ किस तरह की दोस्ती बनाये रखना चाहता था. इस बारे में एक और बात ध्यान देने के क़ाबिल है. हिंदुस्तान में जो इतिहास की किताबें हैं उनके अनुसार चीन का यह दोस्त और भारत का यह सम्राट सन 413 ई० में मरा. लेकिन

ہے چین کی تاریخی کتابوں میں ہندستان کا یہ سب سے شروع کا بیان ہے ۔

دو سو برس بعد دوسرے مشہور چینی اِتہاس کار 'پان‌کو' نے اپنے 'پچھمی ہان راج‌کل' کے اِتہاس میں ہندستان کا اور زیادہ تفصیل کے ساتھ حال لکھا ہے ۔ اُن دنوں 'چنگن' چین کی راجدھانی تھا ۔ پان‌کو نے حساب لگاکر 'چنگن' سے ہندستان کا فاصلہ دیا ہے ۔ ہندستان کو اُس نے ایک ٹاپو نما بتایا ہے ۔ یہاں کے الگ الگ صوبوں کے نام دئے ہیں۔ یہاں کی آب و ہوا' ریت‌رواج' پیداوار اور یہاں کے سکوں کا حال لکھا ہے' یہاں کے لوگوں کی دستکاری اور کلا کی بہت زبردست تعریف کی ہے' خاصکر انکی پتھر اور دھات کی چترکلا' دری اور قالین بنانے کی کلا اور کپڑے پر سونے چاندی اور سوئی کے باریک کام کی اس نے بہت تعریف کی ہے۔

اِس کے بعد سن 25ع سے لیکر سن 419ع تک چین کے تین راج کلوں کا سمے آتا ہے ۔ پوربی 'ہان راج کل' تین ریاستوں کا راج کل اور سن راج‌کل ۔ ان تینوں راج کلوں کے زمانے کی تاریخی کتابوں میں ہندستان کا بیان ملتا ہے ۔ اِس کے بعد دکھنی راج‌کل اور اتری راج‌کل کا زمانہ آتا ہے ۔ یہ سمے سن 420ع سے سن 589ع تک کا تھا ۔ اس زمانے کی کتابوں میں اور خاصکر الگ الگ ودوانوں کی لکھی کتابوں میں ہندستان کا اور بھی زیادہ تفصیل سے بیان ملتا ہے ۔ اِن میں ایک کتاب کا نام ہے "سنگ راج‌کل" کی کتاب. اِس کتاب میں سمراٹ چندر گپت کا ذکر آتا ہے جو وکرما دتیہ کے نام سے مشہور ہے ۔ وہ کپلوستو کا راجا تھا ۔ ہندستان کے اِتہاس میں وہ گپتا راج‌کل سے تھا ۔ چندر گپت نے سن 428ع میں اپنا ایک وزیر چین بھیجا جو اپنے ساتھ بطور نذرانہ کے ہیرے کی انگوٹھیاں' دوسری قیمتی چیزیں اور دو طوطے لے گیا تھا جن میں ایک طوطا سفید رنگ کا تھا اور دوسرا لال ۔ سمراٹ چندر گپت نے چینی سمراٹ کے نام ایک لمبا خط بھی لکھکر بھیجا تھا ۔ اُس خط میں اُس نے لکھا کہ—"مجھے آشا ہے کہ اِن دونوں دیشوں کے بیچ راج‌دوتوں کا آنا جانا اِسی طرح برابر جاری رہیگا ۔" چین کے اِتہاس پر سمراٹ چندر گپت کا جو اثر رہ گیا ہے وہ کبھی مٹ نہیں سکتا ۔ اُس سے پتہ چلتا ہے کہ بھارت کا ایک سمراٹ چین کے ساتھ کس طرح کی دوستی بنائے رکھنا چاہتا تھا ۔ اِس بارے میں ایک اور بات دھیان دینے کے قابل ہے ۔ ہندستان میں جو اِتہاس کی کتابیں ہیں اُن کے انوسار چین کا یہ دوست اور بھارت کا یہ سمراٹ سن 413ع میں مرا ۔ لیکن

शौक़ रहा है. हमारे यहां की तारीख़ की बहुत सी किताबें राज दरबारों की लिखाई हुई हैं. बहुत सी अलग अलग विद्वानों की लिखी हुई हैं. उनमें से कुछ किताबों में आम तौर पर पुराने ज़माने के हालात हैं. कुछ में ख़ास ख़ास राजघरानों के हालात हैं. कुछ में तारीख़ को सन वार बांट दी हुई हैं और कुछ में सीधी सादी कहानी की तरह उस ज़माने के हालात बयान किये गये हैं. सब लिखने वालों के सामने उद्देश एक ही रहता था और वह यह था कि पिछली तारीख़ के बारे में जो कुछ उनकी अपनी राय है और जिस तरह वह उसे देखते हैं उसे लिख कर आगे की नसलों के लिये छोड़ जायें. इन लेखकों में से जो इतने ख़ुश क़िस्मत थे कि बाहर के देशों की यात्रा कर सकें उन्होंने क़ुदरती तौर पर यह चाहा कि एक ऐसी किताब लिख कर छोड़ जायें जिस में जो कुछ उन्होंने दूसरे देशों में देखा और सुना उसे सच सच और साफ़ साफ़ लिख दें, उन्होंने ऐसा ही किया. इस तरह की बहुत सी किताबें इस अर्से में गुम भी हो चुकीं. लेकिन जो बच गई हैं वह भी इतनी हैं कि एक अच्छी लाइब्रेरी भर जावे. इसलिये बग़ैर किसी तरह बढ़ा कर बात करने के मैं यह कह सकता हूं कि ईसा से दो सौ बरस पहले हमारे यहां के 'हान' राज कुल से लेकर अब तक हर राज कुल के ज़माने में हिन्दुस्तान के ऊपर कुछ न कुछ नई किताबें ज़रूर लिखी गई हैं.

चीन की पुरानी तारीख़ी किताबों में तरह तरह के मज़मूनों और उनकी तरतीब दोनों के लिहाज़ से सब से बढ़ कर किताब "शिह ची" है. "शिह ची" के मानी हैं तारीख़ी याददाश्त. इस महान ग्रंथ का लिखने वाला ईसा से पहले की दूसरी सदी का एक चीनी इतिहासकार था जिस का नाम 'सूमा चियन था.' 'सूमा चियन' यूरुप के मशहूर इतिहासकार 'हीरो डूटस' की टक्कर का इतिहासकार था. अपनी किताब में उसने 'हान राज कुल' के सम्राट 'वूती' के एक वज़ीर 'चांग चियन' का ज़िक्र किया है जो ईसा से एक सौ अड़तालीस साल पहले बख़्तयरियों में गया हुआ था. वहां उसे कुछ बहुत ही सुन्दर कपड़ा और बांस की कुछ सुन्दर छड़ियां मिलीं, यह दोनों चीज़ें उस इलाक़े की बनी हुई थीं जिसे आजकल 'सोचुआन' सूबा कहते हैं. 'चांग चियन' ने जब खोज की तो उसे पता चला कि यह सब चीज़ें 'सिंधु' नाम के मुल्क से हो कर बख़्तयार पहुंची हैं. उस ज़माने के चीनी हिन्दुस्तान को "सिंधु" कहते थे. इस किताब में हिन्दुस्तान का और भी हाल दिया हुआ है. लिखा है कि यह मुल्क समुन्दर के किनारे है, वहां काफ़ी गर्मी पड़ती है, वहां के लोग हाथियों पर सवार हो कर लड़ाई में लड़ने जाते हैं. जहां तक पता चलता

بہت شوق رہا ہے۔ ہمارے یہاں کی تاریخ کی بہت سی کتابیں راج درباروں کی لکھائی ہوئی ہیں۔ بہت سی الگ الگ ودوانوں کی لکھی ہوئی ہیں۔ ان میں سے کچھ کتابوں میں عام طور پر پرانے زمانے کے حالات ہیں۔ کچھ میں خاص خاص راج گھرانوں کے حالات ہیں۔ کچھ میں تاریخ کو سن وار بانٹ دی ہوئی ہیں اور کچھ میں سیدھی سادی کہانی کی طرح اس زمانے کے حالات بیان کئے گئے ہیں۔ سب لکھنے والوں کے سامنے ادیش ایک ہی رہتا تھا اور وہ یہ تھا کہ پچھلی تاریخ کے بارے میں جو کچھ انکی اپنی رائے ہے اور جس طرح وہ اسے دیکھتے ہیں اسے لکھکر آگے کی نسلوں کے لئے چھوڑ جائیں۔ ان لیکھکوں میں سے جو اتنے خوش قسمت تھے کہ باہر کے دیشوں کی یاترا کر سکیں انہوں نے قدرتی طور پر یہ چاہا کہ ایک ایسی کتاب لکھکر چھوڑ جائیں جس میں جو کچھ انہوں نے دوسرے دیشوں میں دیکھا اور سنا اسے سچ سچ اور صاف صاف لکھ دیں۔ انہوں نے ایسا ہی کیا۔ اس طرح کی بہت سی کتابیں اس عرصے میں گم بھی ہو چکیں۔ لیکن جو بچ گئی ہیں وہ بھی اتنی ہیں کہ ایک اچھی لائبریری بھر جاوے۔ اس لئے بغیر کسی طرح بڑھا کر بات کرنے کے میں یہ کہہ سکتا ہوں کہ عیسیٰ سے دو سو برس پہلے کے ہمارے یہاں کے 'ہان' راج کل سے لیکر اب تک ہر راج کل کے زمانے میں ہندستان کے اوپر کچھ نہ کچھ نئی کتابیں ضرور لکھی گئی ہیں۔

چین کی پرانی تاریخی کتابوں میں طرح طرح کے مضمونوں اور انکی ترتیب دونوں کے لحاظ سے سب سے بڑھکر کتاب "شہ چی" ہے۔ "شہ چی" کے معنی ہیں تاریخی یادداشت۔ اس مہان گرنتھ کا لکھنے والا عیسیٰ سے پہلے کی دوسری صدی کا ایک چینی اتہاس کار تھا جس کا نام 'سوما چین' تھا۔ 'سوما چین' یورپ کے مشہور اتہاس کار 'ہیروڈوٹس' کی ٹکر کا اتہاس کار تھا۔ اپنی کتاب میں اس نے 'ہان راج کل' کے سمراٹ 'ووتی' کے ایک وزیر 'چانگ چین' کا ذکر کیا ہے جو عیسیٰ سے ایک سو اڑتالیس سال پہلے بختیاریوں میں گیا ہوا تھا۔ وہاں اسے کچھ بہت ہی سندر کپڑا اور بانس کی کچھ سندر چھڑیاں ملیں۔ یہ دونوں چیزیں اس علاقے کی بنی ہوئی تھیں جسے آجکل 'سوچوان' صوبہ کہتے ہیں۔ 'چانگ چین' نے جب کھوج کی تو اسے پتہ چلا کہ یہ سب چیزیں 'سندھو' نام کے ملک سے ہوکر بختیار پہنچی ہیں۔ اس زمانہ کے چینی ہندستان کو 'سندھو' کہتے تھے۔ اس کتاب میں ہندستان کا اور بھی حال دیا ہوا ہے۔ لکھا ہے کہ یہ ملک سمندر کے کنارے ہے، یہاں گرمی کافی پڑتی ہے، یہاں کے لوگ ہاتھیوں پر سوار ہوکر لڑائی میں لڑنے جاتے ہیں۔ جہاں تک پتہ چلتا

उन्होंने इस बात का ज़िक्र किया था कि समय समय पर चीनी विद्वानों ने संस्कृत की बहुत सी ऐसी किताबों का चीनी में तरजुमा किया है जो किताबें प्राचीन भारती कलचर का ख़ज़ाना थीं, क्योंकि वह चीनी विद्वान उस समय की शानदार भारती कलचर की बड़ी क़दर करते थे. उनमें से बहुत सी किताबों की असली संस्कृत लिखावटें अब हिन्दुस्तान में कहीं नहीं मिलतीं. लेकिन चीन में उनके चीनी तरजुमे अभी तक मौजूद हैं. डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने उम्मीद दिलाई थी कि किसी न किसी दिन इन क़ीमती ख़ज़ानों का फिर से चीनी से संस्कृत में अनुवाद किया जायगा. चीनी कलचरल डैलीगेशन के जितने मेम्बर उस समय हिन्दुस्तान आये थे सब ने डाक्टर प्रसाद की इस बात को पसन्द किया. हमारे जो हिन्दुस्तानी दोस्त वहां मौजूद थे उन्होंने भी इसे पसन्द किया. मुझे अफ़सोस है कि मुझे संस्कृत नहीं आती और मेरी अब सीखने की उम्र भी नहीं रही. लेकिन मुझे विश्वास है कि चीन और हिन्दुस्तान दोनों में संस्कृत के ऐसे अच्छे जानकार मिलेंगे जो इस बड़े और मुफ़ीद काम की तजवीज़ को हाथ में लेंगे. यह काम हमारे इन दोनों देशों के बीच कलचरी लेन देन में बहुत बड़ी मदद देगा.

संस्कृत की जिन पुरानी किताबों का डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने ज़िक्र किया है उनमें से अधिकतर बौद्ध सूत्र थीं. इन सूत्रों में से बहुत से आज से लगभग तेरह सौ बरस पहले चीन पहुंचे. जिन यात्रियों ने बड़े बड़े वीरान जंगलों, रेगिस्तानों और ऊंचे पहाड़ों को पार करके या विशाल समुद्रों के तूफ़ानों का सामना करते हुए तरह तरह की मुसीबतें झेल कर कभी भारत से चीन और चीन से भारत लम्बी लम्बी यात्राएं करके इन ग्रंथों को चीन पहुंचाया उन की कठिनाइयों का हम थोड़ा बहुत अन्दाज़ा कर सकते हैं. कोई अचरज नहीं कि केवल बौद्ध धर्म के मानने वाले ही नहीं बल्कि सब धर्मों के चीनी इन सूत्रों की बहुत बड़ी क़द्र करते हैं. चीन में भी इन सूत्रों के असल संस्कृत रूप अब नहीं रहे. लेकिन उनके चीनी अनुवाद हमारे मन्दिरों और हमारे पुस्तकालयों में बड़ी सावधानी के साथ आज तक रखे हुए हैं. बहुत से मन्दिरों में तो इन क़ीमती ख़ज़ानों को संभाल कर रखने की ग़रज़ से अलग इमारतें बनाई गई थीं जो "सूत्र इमारतें" कहलाती थीं.

चीन के लोगों ने हिन्दुस्तान की कलचर का सदा बहुत बड़ा आदर किया है. हिन्दुस्तान और यहां के लोगों की बाबत उनकी जानकारी पुराने ज़माने से चली आरही है. इसीलिये बौद्ध सूत्रों के अनुवाद और उनकी हिफ़ाज़त के अलावा चीनी तारीख़ की किताबों में भी हिन्दुस्तान का बार बार ज़िक्र मिलता है. चीनियों को तारीख़ का

انہوں نے اس بات کا ذکر کیا کہ سمے سمے پر چینی ودوانوں نے سنسکرت کی بہت سی ایسی کتابوں کا چینی میں ترجمہ کیا ہے جو کتابیں پراچین بھارتی کلچر کا خزانہ تھیں، کیونکہ وہ چینی ودوان اس سمے کی شاندار بھارتی کلچر کی بڑی قدر کرتے تھے۔ ان میں سے بہت سی کتابوں کی اصلی سنسکرت لکھاوٹیں اب ہندستان میں کہیں نہیں ملتیں۔ لیکن چین میں ان کے چینی ترجمے ابھی تک موجود ہیں۔ ڈاکٹر راجیندر پرساد نے امید دلائی تھی کہ کسی نہ کسی دن ان قیمتی خزانوں کا پھر سے چینی سے سنسکرت میں انواد کیا جائے گا۔ چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے جتنے ممبر اس سمے ہندستان آئے تھے سب نے ڈاکٹر پرساد کی اس بات کو پسند کیا۔ ہمارے جو ہندستانی دوست وہاں موجود تھے انہوں نے بھی اسے پسند کیا۔ مجھے افسوس ہے کہ مجھے سنسکرت نہیں آتی اور میری اب سیکھنے کی عمر بھی نہیں رہی لیکن مجھے وشواس ہے کہ چین اور ہندستان دونوں میں سنسکرت کے ایسے اچھے جانکار ملیں گے جو اس بڑے اور مفید کام کی تجویز کو ہاتھ میں لیں گے۔ یہ کام ہمارے ان دونوں دیشوں کے بیچ کلچری لین دین میں بہت بڑی مدد دیگا۔

سنسکرت کی جن پرانی کتابوں کا ڈاکٹر راجیندر پرساد نے ذکر کیا ہے ان میں سے ادھکتر بودھ سوتر تھیں۔ ان سوتروں میں سے بہت سے آج سے لگ بھگ تیرہ سو برس پہلے چین پہونچے۔ جن یاتریوں نے بڑے بڑے ویران جنگلوں، ریگستانوں اور اونچے پہاڑوں کو پار کر کے یا وشال سمندروں کے طوفانوں کا سامنا کرتے ہوئے طرح طرح کی مصیبتیں جھیل کر کبھی بھارت سے چین اور چین سے بھارت لمبی لمبی یاترائیں کر کے ان گرنتھوں کو چین پہونچایا انکی کٹھنائیوں کا ہم تھوڑا بہت اندازہ کر سکتے ہیں۔ کوئی اچرج نہیں کہ کیول بودھ دھرم کے ماننے والے ہی نہیں بلکہ سب دھرموں کے چینی ان سوتروں کی بہت بڑی قدر کرتے ہیں۔ چین میں بھی ان سوتروں کے اصل سنسکرت روپ اب نہیں رہے۔ لیکن ان کے چینی انواد ہمارے مندروں اور ہمارے پستکالیوں میں بڑی ساودھانی کے ساتھ آج تک رکھے ہوئے ہیں۔ بہت سے مندروں میں تو ان قیمتی خزانوں کو سنبھال کر رکھنے کی غرض سے الگ عمارتیں بنائی گئیں تھیں جو "سوتر عمارتیں" کہلاتی تھیں۔

چین کے لوگوں نے ہندستان کی کلچر کا سدا بہت بڑا ادر کیا ہے۔ ہندستان اور یہاں کے لوگوں کی بابت انکی جانکاری بہت ہی پرانے زمانے سے چلی آ رہی ہے۔ اسی لئے بودھ سوتروں کے انواد اور انکی حفاظت کے علاوہ چینی تاریخ کی کتابوں میں بھی ہندستان کا باربار ذکر ملتا ہے۔ چینیوں کو تاریخ کا

बचाई ? हमें पूरा यक़ीन है कि इस तरह के टीकों से नुक़सान ज़ियादा है. एक बड़ी तकलीफ़देह बात यह है कि इन टीकों के कारन हमारे डाक्टर भाईयों का ईमान तक गिर गया. कितनों ने तो रुपये ले लेकर बिना टीका लगाए टीकों के सार्टीफ़िकेट दे डाले. इस तरह लोगों ने जान बचाई. सरकार के दूसरे महकमों की तरह इसमें भी रिश्वत ख़ूब चली है.

V. I. P. नाम के अजीब ग़रीब डेरों का ज़िक्र हम ऊपर कर चुके हैं. नहीं मालूम सरकार का कितना रुपया इन डेरों और डेरे वालों की ख़ातिर में ख़र्च हुआ होगा. अंगरेज़ी अमल में भी लाट साहब वग़ैरा कुम्भ देखने आते थे पर बस आये और चले गये. यहां तो उलटे डेरा पड़ गया और जनता के मत्थे. मसल मशहूर है कि मियां की जूती मियां का सर. अगर हमारे गवर्नर, मिनिस्टर और दूसरे हुक्कामों को नहाने का पुन्य कमाना ही था तो शहर में सरकारी कोठी में या और कोठी में रहे होते और जनता की तरह जा कर नहाते. मेला में डेरा डाल कर जनता के ख़र्च पर जमे रहना हमारी क्या किसी की भी समझ में नहीं आयेगा. फिर लाट साहब जब एक दिन निकले तो सारे रास्ते बन्द कर दिये गये ! क्या ख़ूब है—यह जनता का राज और जनता का गवर्नर जब निकलता है तो जनता का चलना फिरना बन्द ! यह वह कमाल है जो अंगरेज़ी राज तक में देखने में नहीं आया था. आज के शासक जनता के हो कर भी जनता से दूर रहना चाहते हैं. उनका बस चलता तो अपनी ख़ातिर एक नया अलग संगम बनवा लेते. काश ! यह काम अमरीकी माहिरों और सलाहकारों के बूते का होता !

27. 1. '54. —सुरेश रामभाई

पुराने ज़माने के चीनियों की निगाह में हिन्दुस्तान

चीनी कलचरी डैलीगेशन के नेता श्री तिंग सी लिन का देहली का एक भाषन.

बहनो और भाइयो !

ठीक दो साल हुए मैं आप के इस महान देश में एक चीनी कलचरल डैलीगेशन के नेता की हैसियत से आया था. उस समय दिल्ली यूनिवर्सिटी में हमारा स्वागत हुआ था जो मेरे लिये बड़ी इज़्ज़त की चीज़ थी. उस मौक़े पर यूनिवर्सिटी के चान्सलर डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने हिन्दुस्तान के कलचरी सम्बन्धों पर दिल की गहराई से एक तक़रीर की थी. डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद उस वक्त भी आप के राष्ट्रपति थे और आज भी हैं. अपनी तक़रीर में

صفائی ؟ ہمیں پورا یقین ہے کہ اس طرح کے ٹیکوں سے نقصان زیادہ ہوتا ہے ۔ ایک بڑی تکلیف دہ بات یہ ہے کہ ان ٹیکوں کے کارن ہمارے ڈاکٹر بھائیوں کا ایمان تک گر گیا. کتنوں نے تو روپئے لے لے کر بنا ٹیکا لگائے ٹیکوں کے سارٹیفیکیٹ دے ڈالے ۔ اس طرح لوگوں نے جان بچائی سرکار کے دوسرے محکموں کی طرح اس میں بھی رشوت خوب چلی ہے ۔

V. I. P. نام کے عجیب غریب ڈیروں کا ذکر ہم اوپر کرچکے ہیں ۔ نہیں معلوم سرکار کا کتنا روپیہ ان ڈیروں اور ڈیرے والوں کی خاطر میں خرچ ہوا ہوگا ۔ انگریزی عمل میں بھی لاٹ صاحب وغیرہ کمبھ دیکھنے آتے تھے پر بس آئے اور چلے گئے ۔ یہاں تو الٹے ڈیرا پڑ گیا اور جنتا کے متھے. مثل مشہور ہے کہ میاں کی جوتی میاں کا سر. اگر ہمارے گورنر، منسٹر اور دوسرے حکاموں کو نہانے کا پن کمانا ہی تھا تو شہر میں سرکاری کوٹھی میں یا اور کوٹھی میں رہے ہوتے اور جنتا کی طرح جاکر نہاتے. میلہ میں ڈیرہ ڈالکر جنتا کے خرچ پر جمے رہنا ہماری تو کسی کی بھی سمجھ میں نہیں آئیگا. پھر لاٹ صاحب جب ایک دن نکلے تو سارے راستے بند کردئے گئے ! کیا خوب ہے—یہ جنتا کا راج اور جنتا کا گورنر جب نکلتا ہے تو جنتا کا چلنا پھرنا بند ! یہ وہ کمال ہے جو انگریزی راج تک میں دیکھنے میں نہیں آیا تھا ۔ آج کے شاسک جنتا کے ہوکر بھی جنتا سے دور رہنا چاہتے ہیں ۔ انکا بس چلتا تو اپنی خاطر ایک نیا الگ سنگم بنوالیتے ۔ کاش ! یہ کام امریکی ماہروں اور صلاحکاروں کے بوتے کا ہوتا !

27 . 1 . '54 —سریش رام بھائی

پرانے زمانے کے چینیوں کی نگاہ میں ہندستان

چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے نیتا شری تنگ سی لن کا دہلی کا ایک بھاشن

بہنو اور بھائیو !

ٹھیک دو سال ہوئے میں آپ کے اس مہان دیش میں ایک چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے نیتا کی حیثیت سے آیا تھا ۔ اس سمے دلی یونیورسٹی میں ہمارا سواگت ہوا تھا جو میرے لئے بڑی عزت کی چیز تھی ۔ اس موقع پر یونیورسٹی کے چانسلر ڈاکٹر راجیندر پرساد نے ہندستان اور چین کے کلچری سمبندھوں پر دل کی گہرائی سے ایک تقریر کی تھی ۔ ڈاکٹر راجیندر پرساد اسوقت بھی آپ کے راشٹر پتی تھے اور آج بھی ہیں ۔ اپنی تقریر میں

नहीं, जिन्हें देश की बढ़ती हुई ग़रीबी पर कोई ग़म नहीं और जो हर मौक़े की ताक में रहते हैं जिस पर वह आम जनता के अन्दर बदअमनी फैला सकें.

थोड़े में यह है नक़शा कुम्भ नगर का. खिचड़ी के दिन या पूस की पूनो के दिन, भीड़ जितनी उम्मीद या तैयारी थी उससे बहुत ही कम थी. इसकी कई वजह हो सकती हैं. मगर तीन ख़ास हैं. पहले तो लोगों की आप ग़रीबी. दूसरी वजह है सरकार के नये नये टैक्स और तीसरी है टीके की पाबन्दी. ग़रीबी बेहद है फिर भी अपना पेट काट कर आदमी ऐसे मौक़े पर पहुँचने की कोशिश करता है. लेकिन जब यह पता चला कि सरकार ने—और अपनी ही सरकार ने—कुम्भ के नहान पर टैक्स लगा दिया तो ग़रीब आदमी के घाव पर मानो नमक छिड़का गया.

हमने ऊपर कहा है कि उत्तर प्रदेश सरकार का पचास लाख रुपये के क़रीब इस मेले में ख़र्च हो रहा है. इस नये टैक्स से उसे मुश्किल से पंद्रह लाख रुपया मिलेगा. हमें यक़ीन है कि इतनी रक़म तो वह अगर हाथ खींच कर ख़र्च करती तो आसानी से बचा सकती थी. सरकार के हज़ारों मुलाज़िम कुम्भ नगर में हैं जिन पर पैसा पानी की तरह बहाया गया है. इसमें काफ़ी किफ़ायत हो सकती थी. फिर ग़ुलाम भारत के किसी भी कुम्भ में इतनी फ़ौज नहीं रही जितनी इस कुम्भ में. साथ ही साथ टैक्स लगाने के लिये राजपति की तरफ़ से आर्डीनेन्स होना बताता है कि यह बहुत बाद की सूझ है. वर्ना 15 दिसम्बर तक पार्लियामेन्ट चल रही थी तब इस चीज़ को नहीं लाया गया, उत्तर प्रदेश की असेम्बली व कौंसिल में नहीं लाया गया और अचानक आर्डीनेन्स जारी कर दिया गया. या तो उत्तर प्रदेश सरकार को ख़र्च का होश नहीं था जो यह चीज़ इतनी बाद में की गई या फिर यह डर रहा होगा कि असेम्बली व पार्लियामेन्ट में जाने से पास होने में तवालत पड़ेगी. इस तरह आर्डीनेन्स की पनाह लेना किसी लोकप्रिय सरकार को शोभा नहीं देता

टीके के बारे में जो न कहा जाये थोड़ा है. आज जब साइन्स व डाक्टरी की नई खोजों ने साबित कर दिया कि इस तरह के टीके बेकार की चीज़ें होती हैं, इनसे फ़ायदा कम और नुक़सान ज़ियादा होता है, तब हमारी सरकार इन पर लट्टू होती है. इन टीकों से फ़ायदा तो सिर्फ़ उन देशी विदेशी कम्पनियों का है जो सुईयां और दवायें सपलाई करती हैं. इसके अलावा हर कोई जानता है कि अगर सुई किसी के बदन में चुभोई गई है तो दूसरे के बदन में चुभोने के पहले उसे साफ़ कर लेना चाहिये. लेकिन जब हज़ारों और लाखों टीके लगाना हों तो कहां का धोना और कैसी

نہیں، جنہیں دیش کی بڑھتی ہوئی غریبی پر کوئی غم نہیں اور جو ہر موقع کی تاک میں رہتے ہیں جس پر وہ عام جنتا کے اندر بدامنی پھیلا سکیں۔

تھوڑے میں یہ ہے نقشہ کمبھ نگر کا۔ کھچڑی کے دن یا پوس کی پونو کے دن بھیڑ جتنی امید یا تیاری تھی اُس سے بہت ہی کم تھی۔ اسکی کئی وجہ ہوسکتی ہیں۔ مگر تین خاص ہیں۔ پہلے تو لوگوں کی آپ غریبی۔ دوسری وجہ ہے سرکار کے نئے نئے ٹیکس اور تیسری ہے ٹیکے کی پابندی۔ غریبی بےحد ہے پھر بھی اپنا پیٹ کاٹکر آدمی ایسے موقع پر پہونچنے کی کوشش کرتا ہے۔ لیکن جب یہ پتہ چلا کہ سرکار نے—اور اپنی ہی سرکار نے—کمبھ کے نہان پر ٹیکس لگا دیا تو غریب آدمی کے گھاؤ پر مانو نمک چھڑکا گیا۔

ہم نے اوپر کہا ہے کہ اُتر پردیش سرکار کا پچاس لاکھ روپئے کے قریب اس میلے میں خرچ ہو رہا ہے۔ اس نئے ٹیکس سے اُسے مشکل سے پندرہ لاکھ روپیہ ملیگا۔ ہمیں یقین ہے کہ اتنی رقم تو وہ اگر ہاتھ کھینچ کر خرچ کرتی تو آسانی سے بچاسکتی تھی۔ سرکار کے ہزاروں ملازم کمبھ نگر میں ہیں جن پر پیسہ پانی کی طرح بہایا گیا ہے۔ اس میں کافی کفایت ہوسکتی تھی۔ پھر غلام بھارت کے کسی بھی کمبھ میں اتنی فوج نہیں رہی جتنی اس کمبھ میں۔ ساتھ ہی ساتھ ٹیکس لگانے کے لئے راجپتی کی طرف سے آرڈیننس جاری ہونا بتاتا ہے کہ یہ بہت بعد کی سوجھ ہے۔ ورنہ 15 دسمبر تک پارلیامینٹ چل رہی تھی تب اس چیز کو نہیں لایا گیا، اُتر پردیش کی اسمبلی و کونسل میں نہیں لایا گیا اور اچانک آرڈیننس جاری کردیا گیا۔ یا تو اُتر پردیش سرکار کو خرچ کا ہوش نہیں تھا جو یہ چیز اتنی بعد میں کی گئی یا پھر یہ ڈر رہا ہوگا کہ اسمبلی و پارلیامنٹ میں لانے سے پاس ہونے میں طوالت پڑیگی۔ اس طرح آرڈیننس کی پناہ لینا کسی لوک پریہ سرکار کو شوبھا نہیں دیتا۔

ٹیکے کے بارے میں جو نہ کہا جائے تھوڑا ہے۔ آج جب سائنس و ڈاکٹری کی نئی کھوجوں نے ثابت کردیا کہ اس طرح کے ٹیکے بیکار کی چیزیں ہوتی ہیں، ان سے فائدہ کم اور نقصان زیادہ ہوتا ہے، تب ہماری سرکار ان پر لٹو ہوتی ہے۔ ان ٹیکوں سے فائدہ تو صرف اُن دیشی ودیشی کمپنیوں کا ہے جو سوئیاں اور دوائیں سپلائی کرتی ہیں۔ اس کے علاوہ ہر کوئی جانتا ہے کہ اگر سوئی کسی کے بدن میں چبھوئی گئی ہے تو دوسرے کے بدن میں چبھونے کے پہلے اسے صاف کرلینا چاہئے۔ لیکن جب ہزاروں اور لاکھوں ٹیکے لگانا ہوں تو کہاں کا دھونا اور کیسی

रोशनियों (Flood Lights) का इन्तज़ाम है. डाक तार के 9 दफ़्तर हैं, टेलीफ़ोन भी हैं जिसके मातहत 150 कनैक्शन हैं.

कुम्भ नगर की एक ख़ास चीज़ है वह इलाक़ा जिसमें डेरों के ऊपर अंगरेज़ी में लिखा है V. I. P. (मानी Very Important Person's Camp—बहुत बड़े बड़े लोगों के डेरे)! हिन्दुस्तान के कुम्भों के इतिहास में यह एक नई चीज़ है.

ऊपर हमने पुलिस का दल बल के साथ होना लिखा है. इस वर्दी वाली पुलिस के अलावा हज़ारों की तादाद में सफ़ेद पोश ख़ुफ़िया पुलिस है जो मेले में इधर से उधर तक बिखरी हुई है.

कहा जाता है कि इस मेले में सरकार की तरफ़ से कुल मिला कर क़रीब पौन करोड़ रुपया ख़र्च किया जा रहा है जिस में से पचास लाख का भार उत्तर प्रदेश की सरकार उठा रही है. इसी ख़र्च को कुछ पूरा करने के लिये राजपति के एक आर्डीनेन्स द्वारा हर यात्री पर टैक्स (कुम्भ-कर कहना चाहिये) लगाया गया. इस के अलावा किराये से चलने वाली मोटरों, बसों, तांगों, इक्कों, रिक्शाओं, साईकिलों वग़ैरा पर टैक्स अलग हैं. मेले में जो दुकानें लगी हैं उनको नीलाम किया गया है. इस बार पहले से कई गुने ऊंचे दामों पर दुकानें गईं. गंगा, जमुना या संगम में नाव ले जाने वाले मल्लाहों पर भी भारी टैक्स लगाया गया है. यहां तक कि ख़ोन्चा बेचने वालों और बाल बनाने वाले नाईयों के ऊपर भी टैक्स हैं.

मेला 1500 एकड़ में फैला हुआ है. इसलिये चंद घंटों में सारे को घूम डालना नामुमकिन था. मगर दो चीज़ों की चर्चा हम और करेंगे. मेला मानो जेबकाटों के लिये तो स्वर्ग क़ायम हो गया है. हज़ारों की तादाद में जेबकाट मेले भर पर छाये हुए हैं—देश के कोने कोने से यह आये हैं और ख़ूब खुल खेलते हैं. जेबकाटों के अलावा दूसरी नुमायां चीज़ उन लोगों की है जिन्हें हम धर्मकाट कह सकते हैं. यह लोग 'गोवध बंद हो' की आड़ में सभायें करते हैं, छुआछूत व जातपात और साम्प्रदायिकता का ज़हर फैलाते हैं और खुले आम गाली देते हैं सरकार को और ख़ासकर प्रधान मंत्री नेहरू को. इत्तफ़ाक़ की बात है कि कुम्भ नगर पंडित जवाहरलाल नेहरू के चुनाव हलक़े में पड़ता है. एक कट्टर साम्प्रदायिक उम्मीदवार को हरा कर वह पिछले चुनाव में पार्लियामेन्ट में पहुंचे थे. कुम्भ नगर में अब उन पर लानत भेजी जाती है और चुनौती दी जाती है. चुनौती देने वाले वही लोग हैं जो कट्टर सम्प्रदायवादी हैं, जिन्हें गाय या बैल या उनकी नसल की बेहतरी की कोई परवाह

روشنیوں (Flood Lights) کا انتظام ہے ۔ ڈاک تار کے 9 دفتر ہیں، ٹیلیفون بھی ہیں جس کے ماتحت 150 کنیکشن ہیں ۔

کمبھ نگر کی ایک خاص چیز ہے وہ علاقہ جس میں ڈیروں کے اوپر انگریزی میں لکھا ہے .V. I. P (یعنی Very Important Persons' Camp—بہت بڑے بڑے لوگوں کے ڈیرے) ! ہندستان کے کمبھوں کے اتہاس میں یہ ایک نئی چیز ہے ۔

اوپر ہم نے پولس کا دل بل کے ساتھ ہونا لکھا ہے ۔ اس وردی والی پولس کے علاوہ ہزاروں کی تعداد میں سفید پوش خفیہ پولس ہے جو میلے میں ادھر سے ادھر تک بکھری ہوئی ہے ۔

کہا جاتا ہے کہ اس میلے میں سرکار کی طرف سے کل ملاکر قریب پون کروڑ روپیہ خرچ کیا جارہا ہے جس میں سے پچاس لاکھ کا بھار اُتر پردیش کی سرکار اُٹھا رہی ہے ۔ اسی خرچ کو کچھ پورا کرنے کے لئے راج پتی کے ایک آرڈننس دوارا ہر یاتری پر ٹیکس (کمبھ کر کہنا چاہئے) لگایا گیا ۔ اس کے علاوہ کرائے سے چلنے والی موٹروں، بسوں، تانگوں، اکوں، رکشاؤں، سائیکلوں وغیرہ پر ٹیکس الگ ہیں ۔ میلے میں جو دوکانیں لگی ہیں اُنکو نیلام کیا گیا ہے ۔ اس بار پہلے سے کئی گنے اونچے داموں پر دوکانیں گئیں ۔ گنگا، جمنا یا سنگم میں ناؤ لے جانے والے ملاحوں پر بھی بھاری ٹیکس لگایا گیا ہے ۔ یہاں تک کہ خونچہ بیچنے اور بال بنانے والے نائیوں کے اُوپر بھی ٹیکس ہیں ۔

میلہ 1500 ایکڑ میں پھیلا ہوا ہے ۔ اس لئے چند گھنٹوں میں سارے کو گھوم ڈالنا ناممکن تھا ۔ مگر دو چیزوں کی چرچا ہم اور کرینگے ۔ میلہ مانو جیب کاٹوں کے لئے تو سورگ قایم ہوگیا ہے ۔ ہزاروں کی تعداد میں جیب کاٹ میلے بھر پر چھائے ہوئے ہیں—دیش کے کونے کونے سے یہ آئے ہیں اور خوب کھل کھیلتے ہیں ۔ جیب کاٹوں کے علاوہ دوسری نمایاں چیز اُن لوگوں کی ہے جنہیں ہم دھرم کاٹ کہہ سکتے ہیں ۔ یہ لوگ 'گئوبدھ بند ہو' کی آڑ میں سبھائیں کرتے ہیں، چھوا چھوت و جات پات اور سامپردائکتا کا زہر پھیلاتے ہیں اور کھلے عام گالی دیتے ہیں سرکار کو اور خاص کر پردھان منتری نہرو کو ۔ اتفاق کی بات ہے کہ کمبھ نگر پنڈت جواہر لال نہرو کے چناؤ حلقے میں پڑتا ہے ۔ ایک کٹر سامپردائک اُمیدوار کو ہرا کر وہ پچھلے چناؤ میں پارلیامنٹ میں پہونچے تھے ۔ کمبھ نگر میں اب اُن پر لعنت بھیجی جاتی ہے اور چنوتی دی جاتی ہے ۔ چنوتی دینے والے وہی لوگ ہیں جو کٹر سامپردائک وادی ہیں، جنہیں دھرم سے کوئی واسطہ نہیں، جنہیں گئو یا بیل یا اُنکی نسل کی بہتری کی کوئی پرواہ

3—सरकार पुलिस और फ़ौज के बल पर ही ज़िन्दा रहना चाहती है.

कुम्भ नगर की हालत देख कर तो यह विचार और पक्के से हो गये.

मेले के अन्दर जाने पर पता चला कि ज़ियादा मेला गंगा के उस पार-झूसी की तरफ़—है. हमेशा तो शहर की तरफ़ लगता था मगर अधिकारियों ने इस साल उस तरफ़ इन्तज़ाम करना ठीक समझा. इसकी वजह से ख़र्च बहुत बढ़ गये. गंगा पर जहां एक मामूली पुल से काम चल जाता था वहां इस बार छै पुलों की ज़रूरत पड़ी. साधुओं के अखाड़े, सन्यासी, उदासीन, बैरागी और नागा वग़ैरा—इसी तरफ़ हैं, बाज़ार दोनों तरफ़. एक नुमाइश भी है जो ग्रांड-ट्रंक रोड और केनिंग रोड के चौराहे के पास पूरब की तरफ़ है. नुमाइश का उस दिन उद्घाटन होने वाला था. नुमाइश के पास ही एक सिनेमाघर तैयार किया जा रहा था!

मालूम हुआ कि कुम्भ नगर को पुलिस महकमे का एक स्वतंत्र ज़िला क़रार दे दिया गया है. इसमें तीन रिज़र्व पुलिस लैन हैं. जगह जगह थाने हैं जिनमें बेतार के तार वाले सेट लगे हैं और तरह तरह के सामान हैं, टियर गैस तक मौजूद है. पुलिस के अलावा मिलिट्री भी पूरी ताक़त के साथ मौजूद है. मिलिट्री कितनी ज़बरदस्त तादाद में है इसका अन्दाज़ा इससे किया जा सकता है कि हिन्द सरकार के डिफ़ेन्स सेक्रट्री एक दिन ख़ुद तशरीफ़ लाये और सारे इन्तज़ाम को देख गये.

सबको हैज़े के टीके लगाने के लिये सरकार ने सवा तीन लाख रुपये से ऊपर की योजना बनाई है. यात्रियों की रोक थाम के लिये सोलह जगह टीका चौकियां हैं. 11 मेडिकल अफ़सर, 30 महिला टीका लगाने वाली, 86 मर्द टीके वाले, 100 सैनीटेरी इन्सपेक्टर और 500 के ऊपर टीका नवीस रखे गये हैं! दवा दारू के लिये कुम्भ नगर मे सात अंगरेज़ी ढंग के आरज़ी अस्पताल खोले गए हैं जिनमें 17 मेडिकल अफ़सर, तीन मेम डाक्टर और सैकड़ों नर्सें, कम्पाउंडर, पट्टी-पकड़ वग़ैरा हैं सफ़ाई के लिये नौ हैल्थ अफ़सरों के नीचे क़रीब छै हज़ार मर्द-औरतों को नौकर रखा गया है. अन्दाज़ा यह है कि इस सबमें क़रीब पौने अठारह लाख रुपया यू. पी. सरकार का ख़र्च होगा.

आग बुझाने के लिये आठ स्टेशन हैं जिनमें 13 मशीनें हैं, 200 फ़ायर हाइडरेन्ट्स हैं और आग को दूर से देखने के लिये 12 मीनार ख़ास तौर से बनाये गये हैं. जगह जगह 5 बिजलीघर हैं. कुल मिला कर बिजली के 20 मील लम्बे तार लगे हैं. ख़ास संगम पर 64 दूर फेंक

3—سرکار پولس اور فوج کے بل پر ہی زندہ رہنا چاہتی ہے۔

کمبھ نگر کی حالت دیکھکر تو یہ وچار اور بھی پکے سے ہوگئے۔

میلے کے اندر جانے پر پتہ چلا کہ زیادہ میلہ گنگا کے اس پار—جھوسی کی طرف—ہے۔ ہمیشہ تو شہر کی طرف لگتا تھا مگر ادھکاریوں نے اس سال اس طرف انتظام کرنا ٹھیک سمجھا۔ اسکی وجہ سے خرچ بہت بڑھ گئے۔ گنگا پر جہاں ایک معمولی پل سے کام چل جاتا تھا وہاں اس بار چھ پلوں کی ضرورت پڑی۔ سادھوؤں کے اکھاڑے، سنیاسی، اداسین، بیراگی اور ناگا وغیرہ—اسی طرف ہیں، بازار دونوں طرف۔ ایک نمائش بھی ہے جو گرانڈٹرنک روڈ اور کیننگ روڈ کے چوراہے کے پاس پورب کی طرف ہے۔ نمائش کا اس دن ادگھاٹن ہونے والا تھا۔ نمائش کے پاس ہی ایک سنیما گھر تیار کیا جا رہا تھا!

معلوم ہوا کہ کمبھ نگر کو پولس محکمہ کا ایک سوتنتر ضلع قرار دے دیا گیا ہے۔ اس میں تین رزرو پولس لین ہیں۔ جگہ جگہ تھانے ہیں جن میں بےتار کے تار والے سیٹ لگے ہیں اور طرح طرح کے سامان ہیں، ٹیر گیس تک موجود ہے۔ پولس کے علاوہ ملیٹری بھی پوری طاقت کے ساتھ موجود ہے۔ ملیٹری کتنی زبردست تعداد میں ہے اس کا اندازہ اس سے کیا جا سکتا ہے کہ ہند سرکار کے ڈفینس سکریٹری ایک دن خود تشریف لائے اور سارے انتظام کو دیکھ گئے۔

سب کو ہیضے کے ٹیکے لگانے کے لئے سرکار نے سوا تین لاکھ روپے سے اوپر کی یوجنا بنائی ہے۔ یاتریوں کی روک تھام کے لئے سولہ جگہ ٹیکا چوکیاں ہیں۔ 11 میڈیکل افسر، 30 مہلا ٹیکا لگانے والی، 86 مرد ٹیکے والے، 100 سینیٹری انسپکٹر اور 500 کے اوپر ٹیکا نویس رکھے گئے ہیں! دوا دارو کے لئے کمبھ نگر میں سات انگریزی ڈھنگ کے عارضی اسپتال کھولے گئے ہیں جن میں 17 میڈیکل افسر، تین میم ڈاکٹر اور سیکڑوں نرسیں، کمپاونڈر، پٹی پکڑ وغیرہ ہیں۔ صفائی کے لئے نو ہیلتھ افسروں کے نیچے قریب چھ ہزار مرد عورتوں کو نوکر رکھا گیا ہے۔ اندازہ یہ ہے کہ اس سب میں قریب پونے اٹھارہ لاکھ روپیہ یو۔ پی۔ سرکار کا خرچ ہوگا۔

آگ بجھانے کے لئے آٹھ اسٹیشن ہیں جن میں 13 مشینیں ہیں، 200 فائر ہائی ڈرینٹس ہیں اور آگ کو دور سے دیکھنے کے لئے 12 مینار خاص طور سے بنائے گئے ہیں! جگہ جگہ 5 بجلی گھر ہیں۔ کل ملا کر بجلی کے 20 میل لمبے تار لگے ہیں۔ خاص سنگم پر 64 دور پھینک

हमारी राय

शुरू में ही हमें एक मुसीबत का सामना करना पड़ा. 15 जनवरी को पटना स्टेशन पर हमने रेलवे के बाबू से इलाहाबाद का टिकट मांगा तो उन्होंने कहा कि जब तक हैज़े के टीके का सार्टीफ़िकेट आप न दिखायेंगे हम टिकट नहीं दे सकते. हमने जब जवाब दिया कि टीके में हमारा विश्वास नहीं और उसे नुक़सानदह मानते हैं तो उन्होंने भी अपनी मजबूरी ज़ाहिर की. स्टेशन मास्टर ने भी कहा कि रेलवे के आर्डर्स ही इस तरह के हैं. वक़्त कम था—कोई सूरत नज़र नहीं आती थी कि इलाहाबाद का टिकट मिल जाये. लिहाज़ा हमने भरवारी का टिकट लिया और जैसे तैसे गाड़ी पकड़ी. तीसरे पहर को गाड़ी इलाहाबाद पहुंची, हम दरवाज़े के बाबू को टिकट दे कर बाहर आये तो उन्होंने आवाज़ दी. हम घबराये कि क्या आफ़त आई. उन्होंने कहा, "आपका टिकट तो भरवारी का है." हमने चलते चलते कहा, "जी हां यहीं उतर गये हैं, अब आप इसे रख ही लीजिये."

दूसरी घटना 17 जनवरी की है. हम एक साथी के साथ कुम्भ नगर गये. रामबाग़ स्टेशन पर झूसी का टिकट लिया—सोचा कि झूसी से मेला देखते हुए लौट आयेंगे. टिकट तो मिल गया, गाड़ी सामने खड़ी थी, एक बज रहा था. जगह भी उसमें कुछ थोड़ी निकल ही आती. मगर प्लेटफ़ार्म पर पहरा था. सिपाही ने जाने से रोक दिया और कहा, "अब अगली गाड़ी से जाना." हम सिपाही से ज़ोर क्या करते? हमने फिर लौट कर दो प्लेटफ़ार्म टिकट लिये, प्लेटफ़ार्म पर आये और रेल में बैठे और इस तरह झूसी पहुंचे. झूसी स्टेशन पर उतर कर मेले की तरफ़ आने लगे तो रेल की पटरियों पर सिपाही पहरा दे रहे थे. एक सिपाही ने पूछा कि सार्टिफ़िकेट है, बिना उसके नहीं जा सकते. पास ही में डाक्टरों का डेरा था. उन्होंने कहा कि हुक्म यही है कि बिना सार्टिफ़िकेट के नहीं जा सकते, अगर सार्टिफ़िकेट न हो तो टीका लगवा लीजिये और तब अन्दर आइये. हमने बताया कि हम शहर में ही रहते हैं, शहर से ही आ रहे हैं. उन्हें इतमीनान न हुआ. उनमें से एक डाक्टर भाई हमें लिवा ले गये कैम्प इन्चार्ज के पास. उन्होंने भी एक न सुनी. तब हम पास के एक गांव से होते हुए—रेल की पटरी से दूर ही हट हट कर—मेले के ठीक बीच में पहुंच गये.

यह दोनों घटनायें हमने तफ़सील से इस वजह से दी क्योंकि उनसे साफ़ पता चलता है :—

1—हमारी सरकार को देश वासियों के ईमान पर एतबार नहीं है.

2—उसके राज में टका सेर भाजी, टका सेर खाजा जैसी हालत हो रही है.

ہماری رائے

شروع میں ہی ہمیں ایک مصیبت کا سامنا کرنا پڑا۔ 15 جنوری کو پٹنہ اسٹیشن پر ہم نے ریلوے کے بابو سے الٰہ آباد کا ٹکٹ مانگا تو انہوں نے کہا کہ جب تک ہیضے کے ٹیکے کا سارٹیفکیٹ آپ نہ دکھائیں گے ہم ٹکٹ نہیں دے سکتے۔ ہم نے جب جواب دیا کہ ٹیکے میں ہمارا وشواس نہیں اور اسے نقصان دہ مانتے ہیں تو انہوں نے بھی اپنی مجبوری ظاہر کی۔ اسٹیشن ماسٹر نے بھی کہا کہ ریلوے کے آرڈرس ہی اس طرح کے ہیں۔ وقت کم تھا—کوئی صورت نظر نہیں آتی تھی کہ الٰہ آباد کا ٹکٹ مل جائے۔ لہٰذا ہم نے بھرواری کا ٹکٹ لیا اور جیسے تیسے گاڑی پکڑی۔ تیسرے پہر کو گاڑی الٰہ آباد پہنچی، ہم دروازے کے بابو کو ٹکٹ دیکر باہر آئے تو انہوں نے آواز دی۔ ہم گھبرائے کہ کیا آفت آئی۔ انہوں نے کہا۔ "آپ کا ٹکٹ تو بھرواری کا ہے۔" ہم نے چلتے چلتے کہا "یہیں اتر گئے ہیں، اب آپ اسے رکھ ہی لیجئے۔"

دوسری گھٹنا 17 جنوری کی ہے۔ ہم ایک ساتھی کے ساتھ کمبھ نگر گئے۔ رام باغ اسٹیشن پر جھوسی کا ٹکٹ لیا—سوچا کہ جھوسی سے میلہ دیکھتے ہوئے لوٹ آئیں گے۔ ٹکٹ تو مل گیا، گاڑی سامنے کھڑی تھی۔ ایک بج رہا تھا، جگہ بھی اس میں کچھ تھوڑی نکل ہی آتی۔ مگر پلیٹ فارم پر پہرا تھا، سپاہی نے جانے سے روک دیا اور کہا "اگلی گاڑی سے جانا۔" ہم سپاہی سے زور کیا کرتے؟ ہم نے پھر لوٹ کر دو پلیٹ فارم ٹکٹ لئے، پلیٹ فارم پر آئے اور ریل میں بیٹھے اور اس طرح جھوسی پہونچے۔ جھوسی اسٹیشن پر اتر کر میلہ کی طرف آنے لگے تو ریل کی پٹریوں پر سپاہی پہرا دے رہے تھے۔ ایک سپاہی نے پوچھا کہ سارٹیفکیٹ ہے، بنا اس کے نہیں جا سکتے۔ پاس ہی میں ڈاکٹروں کا ڈیرا تھا۔ انہوں نے کہا کہ حکم یہی ہے کہ بنا سارٹیفکیٹ کے نہیں جا سکتے، اگر سارٹیفکیٹ نہ ہو تو ٹیکا لگوا لیجئے اور تب اندر جائیے۔ ہم نے بتایا کہ ہم شہر میں ہی رہتے ہیں، شہر سے ہی آ رہے ہیں۔ انہیں اطمینان نہ ہوا۔ ان میں سے ایک ڈاکٹر بھائی ہمیں لوا لے گئے کیمپ انچارج کے پاس۔ انہوں نے بھی ایک نہ سنی۔ تب ہم پاس کے ایک گاؤں سے ہوتے ہوئے—ریل کی پٹری سے ہٹ ہی ہٹ کر—میلے کے ٹھیک بیچ میں پہونچ گئے۔

یہ دونوں گھٹنائیں ہم نے اس وجہ سے بیان کیں کیونکہ ان سے صاف پتہ چلتا ہے:—

1—ہماری سرکار کو دیش واسیوں کے ایمان پر اعتبار نہیں ہے۔

2—اس کے راج میں ٹکا سیر بھاجی، ٹکا سیر کھاجا جیسی حالت ہو رہی ہے۔

किया जा सकता और वह पेट में जाकर कई बीमारियां पैदा कर सकता है और करता है.

2—हिन्दुस्तान में ही कुटे उसना चावल के मुक़ाबिले वह मंहगा पड़ेगा.

3—धान के मुक़ाबले उसकी हिफ़ाज़त करना ज़ियादा मुश्किल है और उसके बिगड़ जाने का बहुत अंदेशा है.

4—इससे अपने देश में धान कूटने वाले मज़दूरों को बेरोज़गार बनाया जाता है और देहात के बढ़ई आदि के धन्धों को भी आघात पहुंचाया जाता है.

इसलिये फ़ूड मिनिस्ट्री के इस क़दम पर हम उसे मुबारकबाद न देकर नासमझी का क़दम कहेंगे. आज अगर हमारी सरकार उसना चावल मंगाती है तो कल पिसा हुआ आटा या पकी रोटियां भी मांगा सकती है और फिर इन्डस्ट्री मिनिस्टर सिला सिलाया कपड़ा भी बाहर से मंगा सकते हैं वग़ैरा वग़ैरा. इस तरह धीरे धीरे क्या रसोइया, क्या पीसने वाला मज़दूर क्या दरज़ी, क्या धोबी और क्या कोई दूसरा, किसी की भी ज़रूरत इस देश को नहीं रहेगी! और बिना ऐसे 'छोटे-छोटे' काम किये ही जनता को 'बड़े-बड़े' आराम मिलने लग जायेंगे! देस के 'रहन-सहन' का दर्जा ऊपर उठ जायेगा! और 'शरीफ़' क़ौमों में हमारी गिन्ती होने लगेगी!

देश के धन्धों और देश की ग़रीब जनता के लिये यह रास्ता बरबादी का रास्ता है.

12. 1. 54. —सुरेश राम भाई

جا سکتا اور وہ پیٹ میں جا کر کئی بیماریاں پیدا کر سکتا ہے اور کرتا ہے۔

2—ہندستان میں ہی کُٹے اُسنا چاول کے مقابلے میں وہ مہنگا پڑیگا۔

3—دھان کے مقابلے اسکی حفاظت کرنا زیادہ مشکل ہے اور اُس کے بگڑ جانے کا بہت اندیشہ ہے۔

4—اِس سے اپنے دیش میں دھان کوٹنے والے مزدوروں کو بے روزگار بنایا جاتا ہے اور دیہات کے بڑھئی آدی کے دھندوں کو بھی آگھات پہونچایا جاتا ہے۔

اس لئے فوڈمنسٹری کے اس قدم پر ہم اُسے مبارکباد نہ دیکر ناسمجھی کا قدم کہیں گے۔ آج اگر ہماری سرکار اُسنا چاول منگاتی ہے تو کل پسا ہوا آٹا یا پکی روٹیاں بھی منگا سکتی ہے اور پھر انڈسٹری منسٹر سلا سلایا کپڑا بھی باہر سے منگا سکتے ہیں وغیرہ وغیرہ۔ اِسطرح دھیرے دھیرے کیا رسوئیا، کیا پیسنے والا مزدور، کیا درزی کیا دھوبی اور کیا کوئی دوسرا، کسی کی بھی ضرورت اِس دیش کو نہیں رہے گی! اور بنا ایسے 'چھوٹے چھوٹے' کام کئے ہی جنتا کو 'بڑے بڑے' آرام ملنے لگ جائیں گے! دیش کے 'رہن سہن کا درجہ' اوپر اُٹھ جائیگا! اور 'شریف' قوموں میں ہماری گنتی ہونے لگے گی!

دیش کے دھندوں اور دیش کی غریب جنتا کے لئے یہ راستہ بربادی کا راستہ ہے۔

—سریش رام بھائی 12.1.'54

कुम्भ नगर पर एक नज़र

दो बरस से हम सुन रहे थे कि 1954 के शुरू में इलाहाबाद में जो कुम्भ पड़ेगा उसके लिये सरकार ज़ोरदार तैयारियां कर रही है. सूबे की सरकार और नई दिल्ली की, दोनों इस कोशिश में थीं कि इस मौक़े पर यात्रियों को—चाहे वह इलाहाबाद के शहर व ज़िले के हों चाहे बाहर से आने वाले हों—ज़ियादा से ज़ियादा सहूलियत हो.

रेलवे का महकमा ख़ास तौर से कमरबस्ता हो गया था और पिछले कई महीनों से इलाहाबाद शहर के बड़ी व छोटी लाइन के स्टेशनों पर मज़दूरों की मदद लगाना शुरू हो गया था. जैसे जैसे कुम्भ का वक़्त क़रीब आता गया सरकारी तैयारियों में गर्मी आती गई और संक्रान्त 14 जनवरी वाले पहले नहान तक सब चीज़ें पूरी तरह फ़िट फ़ाट, ठीक ठाक होने की उम्मीद थी. मगर जब हमने अख़बार में पढ़ा कि राष्ट्रपति ने एक आर्डीनैन्स जारी कर यात्रा टैक्स के रूप में टाल टैक्स जारी किया है तो हमें बहुत अचम्भा हुआ. फिर जनवरी के तीसरे हफ़्ते में एक दिन हम कुम्भ नगर गये और मेले पर एक नज़र डाली.

کمبھ نگر پر ایک نظر

دو برس سے ہم سن رہے تھے کہ 1954 کے شروع میں الٰہ آباد میں جو کمبھ پڑیگا اُس کے لئے سرکار زوردار تیاریاں کر رہی ہے۔ صوبے کی سرکار اور نئی دلی کی، دونوں اِس کوشش میں تھیں کہ اس موقع پر یاتریوں کو—چاہے وہ الٰہ آباد کے شہر و ضلع کے ہوں چاہے باہر سے آنے والے ہوں—زیادہ سے زیادہ سہولیت ہو۔

ریلوے کا محکمہ خاص طور سے کمربستہ ہو گیا تھا اور پچھلے کئی مہینوں سے الٰہ آباد شہر کے بڑی و چھوٹی لائن کے اسٹیشنوں پر مزدوروں کی مدد لگانا شروع ہو گیا تھا۔ جیسے جیسے کمبھ کا وقت قریب آتا گیا سرکاری تیاریوں میں گرمی آتی گئی اور سنکرانت' 14 جنوری والے پہلے نہان تک سب چیزیں پوری طرح فٹ فاٹ' ٹھیک ٹھاک ہونے کی اُمید تھی۔ مگر جب ہم نے اخبار میں پڑھا کہ راشٹرپتی نے ایک آرڈیننس جاری کر یاترا ٹیکس کے روپ میں ٹال ٹیکس جاری کیا ہے تو ہمیں بہت اچنبھا ہوا۔ پھر جنوری کے تیسرے ہفتے میں ایک دن ہم کمبھ نگر گئے اور میلے پر ایک نظر ڈالی۔

पता चलता है कि उनका यह इन्तज़ाम निहायत ही ख़तरनाक, तबाहकुन और ग़रीब मोचू है.

ट्रावनकोर कोचीन की ज़िन्दगी, वहां के रहन सहन से हमारी काफ़ी जानकारी है. वहां पर उसना चावल ही खाया जाता है, अर्वा केवल नाम को. धान को ज़रा उबाल कर और कूट कर वहां घर घर में उसना चावल तैयार होता है. इसी को उसना चावल कहते हैं. उसके तैयार करने की कला मलयाली लोग अच्छी तरह जानते हैं. लेकिन जब से अंग्रेज़ों का झंडा हिन्दुस्तान से उठ ग या और नई दिल्ली की आज़ाद सरकार के साये में ट्रावनकोर कोचीन के राज आ गये तब से उसना चावल ट्रावनकोर कोचीन में बिजली या तेल इंजन से चलने वाली मिलों में कुटने लगा और हज़ारों की तादाद में इस घरेलू धन्दे के करने वाले लोग बेकार हो गए. यही नहीं, कुटा कुटाया उसना चावल दूसरे सूबों से भी वहां पहुंचने लगा जिसने और भी तबाही बरपा कर दी. इतने पर भी भारत सरकार को चैन नहीं पड़ा और अब परदेस से उसना चावल आने का इन्तज़ाम किया जा रहा है.

अंगरेज़ी राज के आख़री बरसों में ट्रावनकोर में दीवान के पद पर सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर थे जो अंगरेज़ी हकूमत, अंगरेज़ी विधान और अंगरेज़ी तहज़ीब के बड़े क़ायल हैं. हम यहां उस इतिहास में नहीं जायेंगे कि किस तरह सर सी. पी. ने कांग्रेस के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई और आशा प्रगट की कि अंगरेज़ चाहे चले जायें ट्रावनकोर का राज ख़ुदमुख़तार रहेगा. उनकी एक न चली. होनहार हो कर रहा. हम कहना यह चाहते हैं कि उनके ज़माने में भी ट्रावनकोर में धान कूटने का काम हाथ से ही होता था जिससे लाखों ग़रीबों का कुछ भला हो जाता था. लेकिन आज जब अपना राज है, क्या नई दिल्ली और क्या ट्रिवेन्ड्रम, हर जगह अपना तिरंगा फहरा रहा है, तब धान कूटने को बड़ी बड़ी मिलें चल रही हैं, जला हुआ अनाज, ख़राब अनाज, मंहगा अनाज लोगों को खाना पड़ रहा है और रहे-सहे घरेलू धन्दे पिट रहे हैं.

श्री क़िदवई एक तरफ़ से लंका से उसना चावल मंगाते हैं दूसरी तरफ़ यह भी कहते हैं कि हमारे यहां इसकी कमी नहीं थी. अगर अपने यहां कमी नहीं थी और लंका सरकार को हमारे देश के अर्वा चावल की ज़रूरत थी ही तो उसके नक़द दाम लंका सरकार से क्यों न लिये जायें ? लेकिन अगर दाम नहीं लेना है, लेन देन का ही सौदा करना है तो अर्वा चावल के बदले में ख़ालिस धान क्यों न मंगाया जाय. ? बाहर से उसना चावल मंगाने से बहुत नुक़सान हैं जिनमें से कुछ यह हैं :—

1—इसकी सफ़ाई या सच्चेपन का कोई ऐतबार नहीं

پتہ چلتا ہے کہ اُنکا یہ انتظام نہایت ہی خطرناک، تباہ کن اور غریب نوچو ہے ۔

ٹراونکور کوچین کی زندگی، وہاں کے رہن سہن سے ہماری کافی جانکاری ہے. وہاں اُسنا چاول ہی کھایا جاتا ہے، اروا کیول نام کو. دھان ذرا اُبال کر اور کوٹ کر وہاں گھر گھر میں اُسنا چاول تیار ہوتا ہے ۔ اِسی کو اُسنا چاول کہتے ہیں ۔ اُس کے تیار کرنے کی کلا ملیالی لوگ اچھی طرح جانتے ہیں ۔ لیکن جب سے انگریزوں کا جھنڈا ہندوستان سے اُٹھ گیا اور نئی دلی کی آزاد سرکار کے سایے میں ٹراونکور کوچین کے راج آگئے تب سے اُسنا چاول ٹراونکور کوچین میں بجلی یا تیل انجن سے چلنے والی ملوں میں کٹنے لگا اور ہزاروں کی تعداد میں اِس گھریلو دھندے کے کرنے والے لوگ بیکار ہوگئے ۔ یہی نہیں، کٹا کٹایا اُسنا چاول دوسرے صوبوں سے بھی وہاں پہونچنے لگا جس نے اور بھی تباہی برپا کردی. اتنے پر بھی بھارت سرکار کو چین نہیں پڑا اور اب پردیش سے اُسنا چاول آنے کا انتظام کیا جارہا ہے ۔

انگریزی راج کے آخری برسوں میں ٹراونکور میں دیوان کے پد پر سر سی. پی. رام سوامی ایئر تھے جو انگریزی حکومت، انگریزی ودھان اور انگریزی تہذیب کے بڑے قائل ہیں ۔ ہم یہاں اُس اتہاس میں نہیں جائینگے کہ کس طرح سر سی. پی. نے کانگریس کے خلاف آواز اُٹھائی اور آشا پرگٹ کی کہ انگریز چاہے چلے جائیں ٹراونکور کا راج خود مختار رہے گا ۔ اُن کی ایک نہ چلی ۔ ہونہار ہو کر رہا ۔ ہم کہنا یہ چاہتے ہیں کہ اُن کے زمانے میں بھی ٹراونکور میں دھان کوٹنے کا کام ہاتھ سے ہی ہوتا تھا جس سے لاکھوں غریبوں کا کچھ بھلا ہو جاتا تھا ۔ لیکن آج جب اپنا راج ہے، کیا نئی دلی اور کیا ٹریونڈرم، ہر جگہ اپنا ترنگا پھہرا رہا ہے، تب دھان کوٹنے کی بڑی بڑی ملیں چل رہی ہیں، جلا ہو اناج، خراب اناج، مہنگا اناج لوگوں کو کھانا پڑ رہا ہے اور رہے سہے گھریلو دھندے پٹ رہے ہیں ۔

شری قدوئی ایک طرف سے لنکا سے اُسنا چاول منگاتے ہیں دوسری طرف یہ بھی کہتے ہیں کہ ہمارے یہاں اِسکی کمی نہیں تھی ۔ اگر اپنے یہاں کمی نہیں تھی ۔ اور لنکا سرکار کو ہمارے دیش کے اروا چاول کی ضرورت تھی ہی تو اُس کے نقد دام لنکا سرکار سے کیوں نہ لئے جائیں ؟ لیکن اگر دام نہیں لینا ہے، لین دین کا ہی سودا کرنا ہے تو اروا چاول کے بدلے میں خالص دھان کیوں نہ منگایا جائے؟ باہر سے اُسنا چاول منگانے سے بہت سے نقصان ہیں جن میں سے کچھ یہ ہیں :—

1—اس کی صفائی یا سچے پن کا کوئی اعتبار نہیں

से सीखनी चाहिये वह यह है कि—

(5) हमें इस वहम को हमेशा के लिये दिल से निकाल देना चाहिये कि देश का शासन चलाने के लिये अंग्रेज़ी तालीम या विदेशी अख़बारों और किताबों को पढ़ सकना ज़रूरी है. हमारे पास के बड़े बड़े देशों में मोची मां बाप के लड़के और किसान मां बाप के लड़के जिन्हें कोई विदेशी भाशा नहीं आती, अपने देश के भाग्यविधाता बन चुके हैं, बने हुए हैं और हम से हज़ार गुना ज्यादा कामयाबी के साथ बने हुए हैं. हमें यह विश्वास अपने दिलों में जमाना होगा कि जब तक वकीलों, बैरिस्टरों, प्रोफ़ैसरों और अंग्रेज़ी पढ़े डाक्टरों की जगह हमारे पक्की उम्र के बिना अंग्रेज़ी पढ़े सीधे सादे, नेक और तजुर्बेकार किसान और बुनकर, मोची, मज़दूर और ठेलेवाले हमारे प्रेज़ीडैन्ट, गवर्नर और बड़े और छोटे मिनिस्टरों की जगहों पर जाकर नहीं बैठेंगे तब तक देश की जनता के दुख दूर नहीं हो सकते. कुम्भ की जिस तरह की शानदार तैयारियां दो बरस से जारी थीं उन्हें देख कर कोई भी जागरूक इनसान आसानी से पेशिनगोई कर सकता था कि यह सब तैयारियां नाकाम रहेंगी. यही आख़िरी और सब से ज़बरदस्त सबक़ है जो हमें इलाहाबाद के सैकड़ों बेगुनाहों की मौत से सीखना चाहिये.

13.2.54. —सुन्दर लाल

लंका से चावल

हैदराबाद में प्रेस को बयान देते हुए यूनियन फ़ूड मिनिस्टर श्री रफ़ी अहमद क़िदवई ने 28 दिसम्बर को कहा कि भारत सरकार ने लंका सरकार से तीस हज़ार टन उसना चावल की मांग की है और उसके बदले में सरकार लंका को उतना ही अर्वा चावल देगी. श्री क़िदवई ने यह भी कहा कि यह मांग इस वजह से नहीं की जा रही है कि इस देश में चावल की कमी है बल्कि इस वजह से कि कुछ इलाक़ों को उसना चावल की ज़रूरत रहती है उसे पूरा करने में सुभीता हो जाय दूसरे, लंका सरकार को कुछ अर्वा चावल की ज़रूरत थी श्री क़िदवई ने यह भी बताया कि उसना चावल की ज़रूरत बंगाल और ट्रावनकोर कोचीन को होती है. बंगाल के लिये यह इन्तज़ाम किया गया है कि धान उड़ीसा और मध्य प्रदेश से वहां पहुंचा कर, मिलों में कुटवा कर उसना चावल बना लिया जाय और ट्रावनकोर कोचीन के लिये उसना चावल आंध्र और मध्यप्रदेश से पहुंचाया जायेगा.

अनजान आदमी को श्री रफ़ी अहमद क़िदवई के इस इन्तज़ाम पर ख़ुशी होगी कि हिन्दुस्तान में उसना चावल आसानी से मिलने लगेगा. पर ज़रा सी गहराई में जाने पर

سے سیکھنی چاہئے وہ یہ ہے کہ—

(5) ہمیں اِس وہم کو ہمیشہ کے لئے دل سے نکال دینا چاہئے کہ دیش کا شاسن چلانے کے لئے انگریزی تعلیم یا ودیشی اخباروں اور کتابوں کو پڑھ سکنا ضروری ہے۔ ہمارے پاس کے بڑے بڑے دیشوں میں موچی ماں باپ کے لڑکے اور کسان ماں باپ کے لڑکے جنھیں کوئی ودیشی بھاشا نہیں آتی، اپنے دیش کے بھاگیہ ودھاتا بن چکے ہیں، بنے ہوئے ہیں اور ہم سے ہزار گنا زیادہ کامیابی کے ساتھ بنے ہوئے ہیں۔ ہمیں یہ وشواس اپنے دلوں میں جمانا ہوگا کہ جب تک وکیلوں، بیرسٹروں، پروفیسروں اور انگریزی پڑھے ڈاکٹروں کی جگہ ہمارے پکی عمر کے بنا انگریزی پڑھے سیدھے سادے، نیک اور تجربہ کار کسان اور بنکر، موچی، مزدور اور ٹھیلے والے ہمارے پریزیڈنٹ، گورنر اور بڑے اور چھوٹے منسٹروں کی جگہوں پر جا کر نہیں بیٹھیں گے تب تک دیش کی جنتا کے دکھ دور نہیں ہوسکتے۔ کمبھ کی جس طرح کی شاندار تیاریاں دو برس سے جاری تھیں اُنھیں دیکھکر کوئی بھی جاگروک اِنسان آسانی سے پیشین گوئی کر سکتا تھا کہ یہ سب تیاریاں ناکام رہیں گی۔ یہی آخری اور سب سے زبردست سبق ہے جو ہمیں اِلہ آباد کے سیکڑوں بے گناہوں کی موت سے سیکھنا چاہئے۔

13.2.54 —سندر لال

لنکا سے چاول

حیدرآباد میں پریس کو بیان دیتے ہوئے یونین فوڈ منسٹر شری رفیع احمد قدوئی نے 28 دسمبر کو کہا کہ بھارت سرکار نے لنکا سرکار سے تیس ہزار ٹن اُسنا چاول کی مانگ کی ہے اور اِس کے بدلے میں سرکار لنکا کو اتنا ہی اَروا چاول دیگی۔ شری قدوئی نے یہ بھی کہا کہ یہ مانگ اِس وجہ سے نہیں کی جا رہی ہے کہ اِس دیش میں چاول کی کمی ہے بلکہ اِس وجہ سے کہ کچھ علاقوں کو اُسنا چاول کی ضرورت رہتی ہے اُسے پورا کرنے میں سبھیتا ہوجائے۔ دوسرے لنکا سرکار کو کچھ اَروا چاول کی ضرورت تھی۔ شری قدوئی نے یہ بھی بتایا کہ اُسنا چاول کی ضرورت بنگال اور ٹراونکور کوچین کو ہوتی ہے۔ بنگال کے لئے یہ انتظام کیا گیا ہے کہ دھان اڑیسہ اور مدھ پردیش سے وہاں پہونچاکر، ملوں میں کٹواکر اُسنا چاول بنا لیا جائے اور ٹراونکور کوچین کے لئے اُسنا چاول آندھر اور مدھ پردیش سے پہونچایا جائیگا۔

انجان آدمی کو شری رفیع احمد قدوئی کے اِس انتظام پر خوشی ہوگی کہ ہندستان میں اُسنا چاول آسانی سے ملنے لگیگا۔ پر ذرا سی گہرائی میں جانے پر

न्यायपसन्दी, उन का एतदाल यानी मध्यम मार्ग अपने देश के अन्दर जहरीली साम्प्रदायिक ताक़तों जिस तरह उन्हों ने जान हथेली पर ले कर मुक़ाबिला है उसकी जितनी सराहना की जाये थोड़ी है. इन में उन्हों ने बड़ी हद तक गांधी जी की मर्यादा को या है. लेकिन जहां तक देश के अन्दर के प्रबंध और कर तिजारती, रोज़गारी और आर्थिक प्रबंध का सवाल सात बरस के अन्दर देश लगातार बर्बादी की तरफ़ ा चला जा रहा है. देश के उद्योग धन्दे एक एक करके जा रहे है. लाखों नहीं करोड़ों बुनकर, दस्तकार कारीगर जो सन 1947 तक भी पेट भर खाना खा थे आज फ़ाक़ों की ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं. उनके और धन्दों के औज़ार चूल्हे जलाने के काम आ रहे किसान की हालत देश के ज़्यादातर हिस्से में पहले हीं बदतर है. रिश्वतख़ोरी, बेरोज़गारी, भिकमंगापन, बहुत से हिस्सों में अराजकता तेज़ी से बढ़ रही है. लखनऊ जैसे शहर के अन्दर दिन दहाड़े जिस तरह के ों के हालात हमने अपने नज़दीकी दोस्तों और दारों के घरों में देखे और सुने वह अंग्रेज़ी राज में कभी ने में न आये थे. देहातों की हालत तो और भी बदतर और बदतर होती जा रही है. हमारे अच्छे अच्छे शासक यह कहते हैं कि इस तरह की बहुत सी क़ुरबानियां) मुल्क की असली तरक़्क़ी यानी लोगों के स्टैन्डर्ड फ़ लिविंग ऊंचा होने के लिये ज़रूरी हैं. इनमें जो सच्चे वह इस पागलपन की धुन में हैं कि अमरीका की तरह रत में भी बहत्तर बहत्तर मंजिले आसमान चूमने वाले कान दिखाई दें और ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के पास से कम दो दो मोटरें नज़र आवें. उनकी मुल्क को डुबो ने वाली नीति ज़ाहिर है मुल्क को डूबे भी न रहने गी. यह हालत उन की है जो सच्चे और नेक हैं लेकिन न्हें अपनी झूटी शान और ख़ुदग़र्ज़ियों ने लगभग अंधा र दिया है उनकी बात ही क्या. हमारे पतन और बेशर्मी ो यह हालत है कि पिछली मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट में खुले सुझाया गया है कि मुल्क की आबादी का बढ़ना देश की सारी आर्थिक कठिनाइयों और मुसीबतों का ारन है और अगर आबादी इस तेज़ी से बढ़ती गई तो छ दिनों बाद खाना और कपड़ा मिल सकना नामुमकिन ो जायगा इसलिये सरकार का फ़र्ज़ है कि साइन्सी तरीक़ों लोगों के ज़्यादा बच्चे पैदा होने को रोके! हमें इस वक़्त महात्मा गांधी का वह उपदेश याद आ रहा है कि जो शासक, गवर्नर या मिनिस्टर सीधी सादी, सस्ती और तपस्या की ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकते, जो जनता की तरह नहीं रह सकते वह जनता का भला नहीं कर सकते. लीजिये पांचवीं और आख़िरी चीज़ जो हमें इस दुर्घटना

کی انصاف پسندی' اُن کا اعتدال یعنی مدھیم مارگ اور اپنے دیش کے اندر زہریلی سامپردائک طاقتوں کا جس طرح اُنھوں نے جان ہتھیلی پر لے کر مقابلہ کیا ہے اسکی جتنی سراہنا کی جائے تھوڑی ہے۔ اِن باتوں میں اُنھوں نے بڑی حد تک گاندھی جی کی مریادا کو نبھایا ہے۔ لیکن جہاں تک دیش کے اندر کے پربندھ اور خاص کر تجارتی' روزگاری' اور آرتھک پربندھ کا سوال ہے اِن سات برس کے اندر دیش لگاتار بربادی کی طرف بڑھتا چلا جا رہا ہے۔ دیش کے اُدیوگ دھندے ایک ایک کر کے مٹتے جا رہے ہیں۔ لاکھوں نہیں کروڑوں بنکر' دستکار اور کاریگر جو سن 1947 تک بھی پیٹ بھر کھانا کھا لیتے تھے آج فاقوں کی زندگی بسر کر رہے ہیں۔ اُن کے کرگھے اور دھندوں کے اوزار چولھے جلانے کے کام آ رہے ہیں۔ کسان کی حالت دیش کے زیادہ تر حصے میں پہلے سے کہیں بدتر ہے۔ رشوت خوری' بیروزگاری' بھکمنگاپن' اور بہت سے حصوں میں اراجکتا تیزی سے بڑھ رہی ہے۔ خود لکھنؤ جیسے شہر کے اندر دن دھاڑے جس طرح کے ڈاکوں کے حالات ہم نے اپنے نزدیکی دوستوں اور رشتہ داروں کے گھروں میں دیکھے اور سنے وہ انگریزی راج میں کبھی سننے میں نہ آئے تھے۔ دیہاتوں کی حالت تو اور بھی بدتر ہے اور بدتر ہوتی جا رہی ہے۔ ہمارے اچھے اچھے شاسک کہتے یہ کہتے ہیں کہ اِسطرح کی بہت سی قربانیاں (1) ملک کی اصلی ترقی یعنی لوگوں کے اِسٹینڈرڈ آف لونگ اُونچا ہونے کے لئے ضروری ہیں۔ اِن میں جو سچے ہیں وہ اس پاگل پن کی دھن میں ہیں کہ امریکہ کی طرح بھارت میں بھی بہتر بہتر منزلے آسمان چومنے والے مکان دکھائی دیں اور زیادہ سے زیادہ لوگوں کے پاس کم سے کم دو دو موٹریں نظر آویں۔ اُن کی ملک کو ڈبونے والی نیتی ظاہر ہے ملک کو ڈوبے بھی نہ رہنے دے گی۔ یہ حالت اُن کی ہے جو سچے اور نیک ہیں لیکن جنھیں اپنی جھوٹی شان اور جھوٹی خود غرضیوں نے لگ بھگ اندھا کر دیا ہے اُن کی بات ہی کیا۔ ہمارے پتن اور بے شرمی کی یہ حالت ہے کہ پچھلی مردم شماری کی رپورٹ میں یہ کھلے سجھایا گیا ہے کہ ملک کی آبادی کا بڑھنا ہی دیش کی ساری آرتھک کٹھنائیوں اور مصیبتوں کا کارن ہے اور اگر آبادی اِسی تیزی سے بڑھتی گئی تو کچھ دنوں بعد کھانا اور کپڑا مل سکنا ناممکن ہو جائے گا اِس لئے سرکار کا فرض ہے کہ سائنسی طریقوں سے لوگوں کے زیادہ بچے پیدا ہونے کو روکے! ہمیں اِس وقت مہاتما گاندھی کا وہ اُپدیش یاد آ رہا ہے کہ جو شاسک' گورنر یا منسٹر سیدھی سادی سستی اور تپسیا کی زندگی بسر نہیں کر سکتے' جو جنتا کی طرح نہیں رہ سکتے وہ جنتا کا بھلا نہیں کر سکتے۔ اِس لئے پانچویں اور آخری چیز جو ہمیں اِس دُرگھٹنا

गांधी जी: तो मुझ से क्या पूछते हो. मैं तो यह कहने को तैयार हूं कि यह सब के सब नास्तिक हो जायें तो अच्छा. इनके न मानने से कोई ख़ुदा थोड़े ही मिट जायगा. पर यह आदमी तो बनें. पर मेरी कौन सुनता है. मर गये कबीर कहते कहते, मर गये नानक कहते कहते. दुनिया तो अपने ही रास्ते पर चलती है......

ज़ाहिर है हम में से कुछ अच्छे लोगों के दिमाग़ों पर अंग्रेज़ी कूटनीति की उस ग़लत नपज यानी धर्म की बिना पर अलग अलग क़ौमों के असूलों ने बहुत गहरा असर छोड़ दिया है. हमें यह अच्छी तरह समझना होगा कि न राष्ट्र या नेशन किसी धर्म या सम्प्रदाय की बिना पर रह सकते हैं और न रूढ़ियों और अंधविश्वासों के सहारे आजकल के ज़माने में कोई क़ौम ज़िन्दा रह सकती है या उन्नति कर सकती है.

पिछले कुम्भ के मौक़े पर एक तरफ़ हमारे बड़े बड़े मिनिस्टर चिल्ला चिल्ला कर फ़ख़्र के साथ कह रहे थे "यह है हिन्दू धर्म का असली प्रदर्शन" और दूसरी तरफ़ अमरीकी प्रेस रिपोर्टर उसी कुम्भ से नागों और तरह तरह की मूर्तियों वग़ैरह के सैकड़ों फ़ोटो लेकर अमरीका को और दुनिया भर को बता रहे थे "यह है भारत का धर्म और यह है भारत की कलचर !"

जो धर्म बुद्धि की कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता या जो साइन्स की कसौटी पर ख़ुद साइन्स से बढ़ कर दमक नहीं दिखा सकता वह न इस बीसवीं सदी में देर तक ज़िन्दा रहने का हक़दार है और न रह सकता है. उसके आधार पर राष्ट्रीयता की नींव डालने की कोशिश करना देश की जनता को सदा के लिये अंधकार में रखने की कोशिश करना और मुल्क को पीछे घसीटना है.

हमें इस बात का भी पूरा पूरा तजुर्बा है कि हिन्दू अंधविश्वास हों या मुस्लिम अंधविश्वास या किसी भी धर्म के अंधविश्वास आज इन अंधविश्वासों की पोशक और उन्हें ज़िन्दा रखने वाली दुनिया की जनता नहीं है बल्कि वह पढ़े लिखे लोग हैं जो अपनी राजकाजी और दूसरी गरज़ों के लिये इन अंधविश्वासों का समर्थन करते हैं.

(4) चौथी बात जो देश की जनता और जनता के बेचैन और दुखी सेवकों को इस इतनी बड़ी राष्ट्रीय दुर्घटना से सीखनी चाहिये यह है कि आजकल के शासकों के सत्ता में रहते हुये देश की करोड़ों जनता अपने दुखों के दूर होने की या अपनी भलाई, बहबूदी और उन्नति की आशा नहीं कर सकती. इस में कोई शक नहीं कि पंडित जवाहिर लाल नेहरू ने पिछले सात बरस के अन्दर बाहर के देशों में इस देश के नाम को बहुत दर्जे तक बढ़ाया है. उन की अन्तर्राष्ट्रीय नीति, इनकी अमन पसन्दी, उन

گاندھی جی : تو مجھ سے کیا پوچھتے ہو. میں تو یہ کہنے کو تیار ہوں کہ یہ سب کے سب ناستک ہوجائیں تو اچھا . اِن کے نہ ماننے سے کوئی خدا تھوڑے ہی مٹ جائیگا . پر یہ آدمی تو بنیں . پر میری کون سنتا ہے . مرگئے کبیر کہتے کہتے' مرگئے نانک کہتے کہتے . دنیا تو اپنے ہی راستے پر چلتی ہے.......

ظاہر ہے ہم میں سے کچھ اچھے سے اچھے لوگوں کے دماغوں پر انگریزی کوٹ نیتی کی اُس غلط اپج یعنی دھرم کی بِنا پر الگ الگ قوموں کے اصول نے بہت گہرا اثر چھوڑ دیا ہے. ہمیں یہ اچھی طرح سمجھنا ہوگا کہ نہ راشٹر یا نیشن کسی دھرم یا سمپردائے کی بِنا پر رہ سکتے ہیں اور نہ روڑھیوں اور اندھ وشواسوں کے سہارے آجکل کے زمانے میں کوئی قوم زندہ رہ سکتی ہے یا اُنتی کرسکتی ہے .

پچھلے کمبھ کے موقعے پر ایک طرف ہمارے بڑے بڑے منسٹر چلا چلا کر فخر کے ساتھ کہہ رہے تھے کہ "یہ ہے ہندو دھرم کا اصلی پردرشن" اور دوسری طرف امریکی پریس رپورٹر اُسی کمبھ سے ناگوں اور طرح طرح کی مورتیوں وغیرہ کے سیکڑوں فوٹو لیکر امریکہ کو اور دنیا بھر کو بتا رہے تھے "یہ ہے بھارت کا دھرم اور یہ ہے بھارت کی کلچر !"

جو دھرم بدھی کی کسوٹی پر کھرا نہیں اُتر سکتا یا جو سائنس کی کسوٹی پر خود سائنس سے بڑھکر دمک نہیں دکھا سکتا وہ نہ اِس بیسویں صدی میں دیر تک زندہ رہنے کا حقدار ہے اور نہ رہ سکتا ہے . اُس کے آدھار پر راشٹریتا کی نیو ڈالنے کی کوشش کرنا دیش کی جنتا کو سدا کے لئے اندھکار میں رکھنے کی کوشش کرنا اور ملک کو پیچھے گھسیٹنا ہے .

ہمیں اِس بات کا بھی پورا پورا تجربہ ہے کہ ہندو اندھ وشواس ہوں یا مسلم اندھ وشواس یا کسی بھی دھرم کے اندھ وشواس آج اِن اندھ وشواسوں کی پوشک اور انہیں زندہ رکھنے والی دنیا کی جنتا نہیں ہے بلکہ وہ پڑھے لکھے لوگ ہیں جو اپنی راج کاجی اور دوسری غرضوں کے لئے اِن اندھ وشواسوں کا سمرتھن کرتے ہیں .

(4) چوتھی بات جو دیش کی جنتا اور جنتا کے بے چین اور دکھی سیوکوں کو اس اِتنی بڑی راشٹریہ دُرگھٹنا سے سیکھنی چاہئے یہ ہے کہ آج کل کے شاسکوں کے ستا میں رہتے ہوئے دیش کی کروڑوں جنتا اپنے دکھوں کے دور ہونے کی یا اپنی بھلائی' بہبودی اور اُنتی کی آشا نہیں کر سکتی . اِس میں کوئی شک نہیں کہ پنڈت جواہر لال نہرو نے پچھلے سات برس کے اندر باہر کے دیشوں میں اِس دیش کے مان کو بہت درجے تک بڑھایا ہے . اُن کی انتر راشٹریہ نیتی' اُن کی امن پسندی' اُن

आगे बढ़ जाये जिस तरह गुलाम के साथ सरदार किया था. ऐसा ही किया गया. मोहम्मद साहब के स्लाम में सब बराबर थे, न कोई गुलाम न कोई सरदार.

महात्मा गांधी के दिखाये और जनता के त्याग से मिले हुये स्वराज में अगर हम ने इतना भी नहीं सीखा तो कुछ नहीं सीखा और खास कर तीर्थों और धार्मिक स्थानों में.

(3) हम ऊपर कह चुके हैं कि मज़हब के मामले में हम जनता को हर तरह की आज़ादी देने के हक़ में हैं. लेकिन हमारे पढ़े लिखे लोगों और खासकर नेताओं को यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि जनता को प्रेम और धीरज के साथ समझाना चाहिये कि क़ौमें रूढ़ियों और अंध विश्वासों के सहारे नहीं उभरा करतीं. स्वामी विवेकानन्द ने अपने एक व्याख्यान में देश के नौजवानों को मुख़ातिब करते हुए कहा था—

"Young men of India! I wish you were all rank atheists rather than superstitious fools."

यानी भारत के नौजवानो! मैं चाहता हूं कि अंध विश्वासी मूर्ख होने की निस्बत तुम सब अगर घोर नास्तिक हो तो ज़्यादा अच्छा है.

महात्मा गांधी के जीवन की सन 1924 की एक घटना भी इस मामले में काफ़ी शिक्षाप्रद है. दिल्ली में मौलाना मोहम्मद अली के मकान के एक कमरे में गांधी जी बैठे हुये थे. जगह जगह से हिन्दू मुस्लिम दंगों की खबरें आ चुकी थीं. गांधी जी की छाती में एक आग सी धधक रही थी. उनका चहरा एक एक मिनट के बाद रंग बदल रहा था. हम सामने बैठे देख रहे थे. हम ने बात शुरू की—

मैं : बापू! क्या आप समझते हैं आप हिन्दू और मुसलमानों को इस तरह मिला लेंगे?

गांधी जी : क्या मतलब तुम्हारा? मैं नहीं समझा तुम क्या कह रहे हो.

मैंने फिर वह फ़िक़रा दोहरा दिया—क्या आप समझते हैं आप हिन्दू और मुसलमानों को इस तरह मिला लेंगे?

गांधी जी : मैं नहीं समझा तुम क्या कहना चाह रहे हो.

मैंने फिर तीसरी बार वही फ़िक़रा दोहरा दिया.

गांधी जी : अच्छा. अब मैं समझा तुम क्या कहना चाह रहे हो. तुम्हारी मेरी तो जूहू में बात चीत हुई थी न. वही कहना चाहते हो?

मैं : जी हां.

کر کے آگے بڑھ جائے جس طرح غلام کے ساتھ سردار نے کیا تھا . ایسا ہی کیا گیا. محمد صاحب کے اسلام میں سب برابر تھے، نہ کوئی غلام نہ کوئی سردار .

مہاتما گاندھی کے دکھائے اور جنتا کے تیاگ سے ملے ہوئے سوراج میں اگر ہم نے اتنا بھی نہیں سیکھا تو کچھ بھی نہیں سیکھا اور خاص کر تیرتھوں اور دھارمک استھانوں میں .

(3) ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ مذہب کے معاملے میں ہم جنتا کو ہر طرح کی آزادی دینے کے حق میں ہیں . لیکن ہمارے پڑھے لکھے لوگوں اور خاصکر نیتاؤں کو یہ اچھی طرح سمجھ لینا چاہئے اور جنتا کو پریم اور دھیرج کے ساتھ سمجھانا چاہئے کہ قومیں روڑھیوں اور اندھ وشواسوں کے سہارے نہیں ابھرا کرتیں . سوامی وویکانند نے اپنے ایک ویاکھیان میں دیش کے نوجوانوں کو مخاطب کرتے ہوئے کہا تھا—

"Young men of India! I wish you were all rank atheists rather than superstitious fools."

یعنی بھارت کے نوجوانو! میں چاہتا ہوں کہ اندھ وشواسی مورکھ ہونے کی نسبت تم سب اگر گھور ناستک ہو تو زیادہ اچھا ہے .

مہاتما گاندھی کے جیون کی سن 1924 کی ایک گھٹنا بھی اس معاملہ میں کافی شکشاپرد ہے . دلی میں مولانا محمد علی کے مکان کے ایک کمرے میں گاندھی جی بیٹھے ہوئے تھے . جگہ جگہ سے ہندو مسلم دنگوں کی خبریں آ چکی تھیں . گاندھی جی کی چھاتی میں ایک آگ سی دھدھک رہی تھی . اُن کا چہرا ایک ایک منٹ کے بعد رنگ بدل رہا تھا . ہم سامنے بیٹھے دیکھ رہے تھے. ہم نے بات شروع کی—

میں : باپو ! کیا آپ سمجھتے ہیں آپ ہندو اور مسلمانوں کو اِس طرح ملا لینگے ؟

گاندھی جی : کیا مطلب تمہارا ؟ میں نہیں سمجھا تم کیا کہہ رہے ہو .

میں نے پھر وہ فقرا دوہرا دیا—کیا آپ سمجھتے ہیں آپ ہندو اور مسلمانوں کو اِس طرح ملا لینگے ؟

گاندھی جی : میں نہیں سمجھا تم کیا کہنا چاہ رہے ہو .

میں نے پھر تیسری بار وہی فقرا دوہرا دیا .

گاندھی جی : اچھا. اب میں سمجھا تم کیا کہنا چاہ رہے ہو . تمہاری میری تو جوہو میں بات چیت ہوئی تھی نہ . وہی کہنا چاہتے ہو ؟

میں : جی ہاں .

ने कागज़ पैंसिल से हिसाब लगाकर बताया था कि उस वक़्त मेले में साठ लाख आदमी मौजूद थे. साठ लाख ही उस साल का सरकारी अन्दाज़ा था. लेकिन एक बच्चे की भी भिच कर मौत नहीं हुई. सन 1930 या सन 1942 में भी अंग्रेज़ी इन्तज़ाम में जहां तक हमें याद है कोई इस तरह की दुर्घटना नहीं सुनी गई. न इन कुम्भों में से किसी में कोई वैरी इम्पार्टैन्ट परसन्स कहीं लाखों जनता की जगह घेरे हुए थे. यह सब कुम्भ देखने के बाद हमें बड़े दुख के साथ लेकिन पूरी ज़िम्मेदारी के साथ यह कहना पड़ता है कि जितना ख़राब इन्तज़ाम इस आज़ादी के कुम्भ में था उतना गुलामी के उन चारों कुम्भों में से किसी में नहीं था. शायद इस की एक वजह यह भी रही हो कि किसी अंग्रेज़ हाकिम को अपने को कट्टर हिन्दू साबित करने की ज़रूरत नहीं थी और इसी लिये वह ग़रीब जनता की सुविधा और आराम का ज़्यादा ख़याल रख सकते थे.

जो हो चुका वह हो चुका. अब सवाल यह है कि इलाहाबाद कुम्भ की इतनी बड़ी दुर्घटना से हम क्या सबक़ ले सकते हैं. हमारी राय में इस दुर्घटना से हमें नीचे लिखी बातें सीख लेनी चाहियें :—

(1) कोई भी बड़ा या छोटा सरकारी आदमी अगर किसी धर्म विशेश में या किसी ख़ास धार्मिक विश्वास या अनुश्ठान में ख़ास श्रद्धा दिखलावे तो उसके इस दिखलावे की क़दर किसी भी ग़ैर सरकारी छोटे से छोटे आदमी के इस तरह की श्रद्धा दिखलाने से ज़रा भी अधिक नहीं होनी चाहिये और इस तरह के दिखलावों को जनता को सदा शक की निगाह से देखना चाहिये.

(२) अगर कोई छोटा या बड़ा सरकारी आदमी अपनी धार्मिक भावना को सन्तुश्ट करने के लिये किसी तीर्थ या दूसरे धार्मिक स्थान पर जाना चाहे तो उसे इस काम के लिये ज़रा सी भी इस से ज़्यादा सहूलियत नहीं मिलनी चाहिये जितनी आम जनता को दी जाती है और अपनी धार्मिक भावना की तृप्ति हर सरकारी आदमी को अपने निजी ख़र्च पर करनी चाहिये, सरकारी यानी ग़रीब जनता के पैसे पर नहीं.

हमें यहां मोहम्मद साहब की जीवनी की एक छोटी सी घटना याद आरही है. कोई अरब सरदार जो हाल में मुसलमान हुआ था काबे की परिक्रमा को गया. इत्तफ़ाक़ से एक ग़रीब ग़ुलाम भी ठीक उसी समय काबे की परिक्रमा कर रहा था. सरदार अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ उस ग़रीब ग़ुलाम को कोहनी से एक तरफ़ करता हुआ आगे बढ़ गया. मोहम्मद साहब तक इसकी ख़बर पहुंची. उन्हों ने फ़ौरन हुकुम दिया कि वह सरदार फिर से काबे की परिक्रमा के लिये जाये और वह ग़ुलाम उसके पीछे जाये और ग़ुलाम उसी तरह अपनी कोहनी से सरदार को पीछे

نے کاغذ پینسل سے حساب لگا کر بتایا تھا کہ اس وقت میلے میں ساٹھ لاکھ آدمی موجود تھے۔ ساٹھ لاکھ ہی اس سال کا سرکاری اندازہ تھا۔ لیکن ایک بچے کی بھی بھنچ کر موت نہیں ہوئی۔ سن 1930 یا سن 1942 میں بھی انگریزی انتظام میں جہاں تک ہمیں یاد ہے کوئی اس طرح کی درگھٹنا نہیں سنی گئی۔ نہ ان کمبھوں میں سے کسی میں کوئی ویری امپارٹنٹ پرسنس کہیں لاکھوں جنتا کی جگہ گھیرے ہوئے تھے۔ یہ سب کمبھ دیکھنے کے بعد ہمیں بڑے دکھ کے ساتھ لیکن پوری ذمہ داری کے ساتھ یہ کہنا پڑتا ہے کہ جتنا خراب انتظام اس آزادی کے کمبھ میں تھا اتنا غلامی کے ان چاروں کمبھوں میں سے کسی میں نہیں تھا۔ شاید اسکی ایک وجہ یہ بھی رہی ہو کہ کسی انگریز حاکم کو اپنے کو کٹر ہندو ثابت کرنے کی ضرورت نہیں تھی اور اسی لئے وہ غریب جنتا کی سودھا اور آرام کا زیادہ خیال رکھ سکتے تھے۔

جو ہو چکا وہ ہو چکا۔ اب سوال یہ ہے کہ الہ آباد کمبھ کی اتنی بڑی درگھٹنا سے ہم کیا سبق لے سکتے ہیں۔ ہماری رائے میں اس درگھٹنا سے ہمیں نیچے لکھی باتیں سیکھ لینی چاہئیں :—

(1) کوئی بھی بڑا یا چھوٹا سرکاری آدمی اگر کسی دھرم وشیش میں یا کسی خاص دھارمک وشواس یا انوشٹھان میں خاص شردھا دکھلاوے تو اس کے اس دکھلاوے کی قدر کسی بھی غیر سرکاری چھوٹے سے چھوٹے آدمی کے اسی طرح کی شردھا دکھلانے سے ذرا بھی ادھک نہیں ہونی چاہئے۔ اور اس طرح کے دکھلاوؤں کو جنتا کو سدا شک کی نگاہ سے دیکھنا چاہئے۔

(2) اگر کوئی چھوٹا یا بڑا سرکاری آدمی اپنی دھارمک بھاونا کو سنتشٹ کرنے کے لئے کسی تیرتھ یا دوسرے دھارمک استھان پر جانا چاہے تو اسے اس کام کے لئے ذرا سی بھی اس سے زیادہ سہولیت نہیں ملنی چاہئے جتنی عام جنتا کو دی جاتی ہے۔ اور اپنی دھارمک بھاونا کی ترپتی ہر سرکاری آدمی کو اپنے نجی خرچ پر کرنی چاہئے، سرکاری یعنی غریب جنتا کے پیسے پر نہیں۔

ہمیں یہاں محمد صاحب کی جیونی کی ایک چھوٹی سی گھٹنا یاد آ رہی ہے۔ کوئی عرب سردار جو حال میں مسلمان ہوا تھا کعبہ کی پریکرما کو گیا۔ اتفاق سے ایک غریب غلام بھی ٹھیک اسی سمے کعبہ کی پریکرما کر رہا تھا۔ سردار اپنی پرانی عادت کے مطابق اس غریب غلام کو کہنی سے ایک طرف کرتا ہوا آگے بڑھ گیا۔ محمد صاحب تک اسکی خبر پہونچی۔ انہوں نے فوراً حکم دیا کہ وہ سردار پھر سے کعبہ کی پریکرما کے لئے جائے اور وہ غلام اس کے پیچھے جائے اور غلام اسی طرح اپنی کہنی سے سردار کو پیچھے

कम्बल और धोतियां उड़ जाने की शिकायतें गिन सकना नामुमकिन था. पुलिस की बाबत यह आम ख्याल था और हमें खुद इसका तजुर्बा है कि आम पुलिस का बर्ताव जनता के साथ इन सात बरस के अन्दर बजाय कुछ ऊपर को जाने के काफ़ी नीचे की तरफ़ गया है. हमें इसमें बेचारे पुलिस वालों का कोई दोश दिखाई नहीं देता. एक ऊंचे पुलिस अफ़सर ने हम से कहा था कि एक बड़े वज़ीर साहब जब अस्नान को जाने लगे तो बताया गया कि वह जनता के बीच में नहायेंगे पर हुक्म था कि जहां वह नहायें वहां कई सौ खुफ़िया सफ़ेद कपड़े पहने हुए उनके चारों तरफ़ इधर उधर मौजूद रहें और उसी वक़्त नहाते दिखाई दें ताकि कोई ऐरा ग़ैरा नज़दीक न आसके और जनता चारों तरफ़ नहाती हुई भी दिखाई दे जाये. कहीं के भी किसी मिनिस्टर की मोटर के पार करने के लिये पुल घन्टे दो घन्टे खाली रखा जाता था. उसी वक़्त के अन्दर एक पुल से एक नेता की मोटर जाये और दूसरे पुल से लाख दो लाख आदमी जायें! "वैरी इम्पार्टैन्ट परसन्स" का लज्जा जनक तमाशा कम से कम इलाहाबाद के तो एक एक बच्चे की ज़बान पर है. हमने ऊपर कहा है कि बेचारे पुलिस का कोई दोश नहीं था. वह इसलिये कि जिन पुलिस वालों को या उनके अफ़सरों को यह मालूम था कि उनके मालिक "वैरी इम्पार्टैन्ट परसन्स" किन बातों से खुश होते हैं वह उन बातों को छोड़ कर दूसरी तरफ़ काफ़ी ध्यान कैसे दे सकते थे. गवर्नर के यहां की शाम की दावत उस समय जब कि सैकड़ों लाशें मैदान में पड़ी थीं, हज़ारों ज़ख्मी हो चुके थे और हज़ारों ही बिलख रहे थे, जनता के गले से कैसे उतर सकती थी. अगर यह सच है कि दावत के वक़्त तक यानी दुर्घटना के सात घन्टे बाद तक गवर्नर को या चीफ़ मिनिस्टर को या और किसी इम्पार्टैन्ट परसन को जो सब दुर्घटना के आस पास ही ठैहरे हुए थे यह मालूम न था कि गंगा के किनारे इतनी बड़ी दुर्घटना होगई तो यह और भी शर्म की बात है और हमारी नाक़ाबलियत का सब से बड़ा सबूत है.

हमने खुद इलाहाबाद का सब से पहला कुम्भ सन 1906 का देखा था. उसके बाद हम चार कुम्भ देख चुके हैं. सन 1906 के कुम्भ में जब संगम ठीक क़िले के नीचे था और रास्ता बेहद तंग था सुबह पहले घन्टे के अन्दर कुछ आदमी पिच कर मर गये थे. उनकी तादाद साठ बताई गई थी. लेकिन उस पहले घन्टे के बाद ही फिर इतना अच्छा इन्तज़ाम रहा कि फिर एक भी इस तरह की शिकायत सुनने में न आई और जिन लोगों की ग़लती से सुबह मौतें हुई थीं उनसे सख़्त बाज़पुर्स हुई. सन् 1918 के कुम्भ में हमारे पास ठहरे हुए एक अमरीकन रिपोर्टर

کمبل اور دھوتیاں اُڑ جانے کی شکایتیں گن سکنا ناممکن تھا. پولیس کی بابت یہ عام خیال تھا اور ہمیں خود اس کا تجربہ ہے کہ عام پولیس کا برتاؤ جنتا کے ساتھ ان سات برس کے اندر بجائے کچھ اوپر کو جانے کے کافی نیچے کی طرف گیا ہے ۔ ہمیں اس میں بیچارے پولیس والوں کا کوئی دوش دکھائی نہیں دیتا ۔ ایک اونچے پولیس افسر نے ہم سے کہا تھا کہ ایک بڑے وزیر صاحب جب اسنان کو جانے لگے تو بتایا گیا کہ وہ جنتا کے بیچ میں نہائیں گے پر حکم تھا کہ جہاں وہ نہائیں وہاں کئی سو خفیہ سفید کپڑے پہنے ہوئے ان کے چاروں طرف اِدھر اُدھر موجود رہیں اور اسی وقت نہاتے دکھائی دیں تاکہ کوئی ایرا غیرا نزدیک نہ آ سکے اور جنتا چاروں طرف نہاتی ہوئی بھی دکھائی دے جائے ۔ کہیں کے بھی کسی منسٹر کی موٹر کے پار کرنے کے لئے پل گھنٹے دو گھنٹے خالی رکھا جاتا تھا ۔ اسی وقت کے اندر ایک پل سے ایک نیتا کی موٹر جائے اور دوسرے پل سے لاکھ دو لاکھ آدمی جائیں ! "ویری امپارٹنٹ پرسنس" کا لجاجنک تماشہ کم سے کم الہ آباد کے تو ایک ایک بچے کی زبان پر ہے ۔ ہم نے اوپر کہا ہے کہ بیچارے پولیس کا کوئی دوش نہیں تھا وہ اس لئے کہ جن پولیس والوں کو یا ان کے افسروں کو یہ معلوم تھا کہ ان کے مالک "ویری امپارٹنٹ پرسنس" ان باتوں سے خوش ہوتے ہیں وہ ان باتوں کو چھوڑ کر دوسری طرف کافی دھیان کیسے دے سکتے تھے ۔ گورنر کے یہاں کی شام کی دعوت اس سمے جب کہ سیکڑوں لاشیں میدان میں پڑی تھیں' ہزاروں زخمی ہو چکے تھے اور ہزاروں ہی بلکھ رہے تھے' جنتا کے گلے سے کیسے اتر سکتی تھی ۔ اگر یہ سچ ہے کہ دعوت کے وقت تک یعنی درگھٹنا کے سات گھنٹے بعد تک گورنر کو یا چیف منسٹر کو یا اور کسی خاص امپارٹنٹ پرسن کو جو سب درگھٹنا کے آس پاس ہی ٹھہرے ہوئے تھے یہ معلوم تک نہ تھا کہ گنگا کے کنارے اتنی بڑی درگھٹنا ہو گئی تو یہ اور بھی زیادہ شرم کی بات ہے اور ہماری نااہلیت کا سب سے بڑا ثبوت ہے ۔

ہم نے خود الہ آباد کا سب سے پہلا کمبھ سن 1906 کا دیکھا تھا ۔ اس کے بعد ہم چار کمبھ دیکھ چکے ہیں ۔ سن 1906 کے کمبھ میں جب سنگم ٹھیک قلعہ کے نیچے تھا اور راستہ بے حد تنگ تھا صبح پہلے گھنٹے کے اندر کچھ آدمی پچھ کر مر گئے تھے ۔ ان کی تعداد ساٹھ بتائی گئی تھی ۔ لیکن اس پہلے گھنٹے کے بعد ہی پھر اتنا اچھا انتظام رہا کہ پھر ایک بھی اس طرح کی شکایت سننے میں نہ آئی ۔ اور جن لوگوں کی غلطی سے صبح موتیں ہوئی تھیں ان سے سخت باز پرس ہوئی ۔ سن 1918 کے کمبھ میں ہمارے پاس ٹھہرے ہوئے ایک امریکن رپورٹر

अब रहा मेले का इन्तज़ाम. इसका बहुत कुछ शोर मचा. खूब खर्च भी हुआ. पौन करोड़ तो खास कुम्भ के नाम से खर्च बताया जाता है. इसके अलावा जो रेल और दूसरे अलग अलग मुहकमों में अलग अलग ऐसा खर्च हुआ जो कुम्भ के मद में पड़ने के बजाय दूसरे तरह तरह के मदों में पड़ गया वह अलग रहा. कहा जाता था कि पचास लाख यात्रियों के आने की उम्मेद है. यह भी कहा जाता था कि इन्तज़ाम इस से कहीं ज्यादा के लिये कर लिया गया है. अमावस्या के दिन जो यात्री आये उनकी कुल तादाद शायद तीस (30) लाख से ज्यादा न थी. हमें इन इन्तज़ामों की तफ़सील में जाने की ज़रूरत नहीं है. पर ऐन आज़माइश के वक़्त सब इन्तज़ाम थोथे साबित हुए. गंगा के नये पुल भी टूटे. कुम्भ नगर में पानी और बिजली ने बार बार धोका दिया. डाक और तार के मुहकमों में काम करने के लिये दूर दूर के प्रान्तों से लोग जमा किये गये थे. पर अमावस्या को दस दिन हो चुके और आज के दिन तक यह हालत है कि हमें खुद ऐक्सप्रेस तार इलाहाबाद तारघर में पहुंच जाने के अड़तालीस अड़तालीस घंटे बाद और ऐक्सप्रेस डिलिवरी खत पांच पांच दिन के बाद मिल रहे हैं और जो कभी नहीं मिलेंगे उनका ज़िक्र ही क्या. अंग्रेज़ी राज में कुम्भ के मौक़े पर रेल का किराया अकसर आधा कर दिया जाता था. इस से सरकार को आमदनी भी खूब होती थी और लोगों को भी आराम. आज़ाद हिन्द में किराये बढ़ाये गये और बढ़ाने के क़ायदे जब ज्यादा बेतुके हो गये तो उन्हें बदला गया. हैज़े के ज़बरदस्ती टीके के बेजा और ग़लत हुक्म को वापिस ले लिया गया तो उसके बाद भी 12 फ़रवरी तक का हमें मालूम है कि इलाहाबाद आने वाले लोगों के कहीं कहीं ज़बरदस्ती सुइयां भोंकी जाती रहीं. अमावस्या के दिन की दुर्घटना को याद करके तो हमारा दिल थर थर कांपने लगता है. सरकारी या नीम सरकारी लोगों का कहना है कि कुल पांच सौ से कम बेगुनाह कुचल कर मरे. लोगों का ख्याल है कई हज़ार मरे. जो भी हो इसमें शक नहीं सैकड़ों बेगुनाहों की जानें गईं और हज़ारों घायल हुए. सूबे की सरकार ने जो तहक़ीक़ाती कमेटी नियुक्त की है उस पर खुद इलाहाबाद के शहरी अपना अविश्वास प्रगट कर चुके हैं. जहां तक देश की जनता का सवाल है वह एक दुख भरी लेकिन सच्ची बात है कि जनता को आज़ाद हिन्द के सरकारी आंकड़ों और सरकारी तहक़ीक़ाती कमेटियों पर उतना ही कम विश्वास है जितना सात साल पहले अंग्रेज़ी राज के सरकारी आंकड़ों और सरकारी कमेटियों पर था. गिरहकटों और जेबकतरों की तादाद कुम्भ नगर में इतनी बढ़ी हुई थी कि अखबारों में भी इसकी काफ़ी चर्चा हुई. जेबें कतरी जाने, कंधों पर से

اب رہا میلے کا انتظام۔ اس کا بہت کچھ شور مچا۔ خوب خرچ بھی ہوا۔ پون کروڑ تو خاص کمبھ کے نام سے خرچ بتایا جاتا ہے۔ اس کے علاوہ جو ریل اور دوسرے الگ الگ محکموں میں الگ الگ ایسا خرچ ہوا جو کمبھ کے مد میں پڑنے کے بجائے دوسرے طرح طرح کے مدوں میں پڑ گیا وہ الگ رہا۔ کہا جاتا تھا کہ پچاس لاکھ یاتریوں کے آنے کی امید ہے۔ یہ بھی کہا جاتا تھا کہ انتظام اس سے کہیں زیادہ کے لئے کر لیا گیا ہے۔ اماوسیا کے دن جو یاتری آئے انکی کل تعداد شاید تیس (30) لاکھ سے زیادہ نہ تھی۔ ہمیں ان انتظاموں کی تفصیل میں جانے کی ضرورت نہیں ہے۔ پر عین آزمائش کے وقت سب انتظام تھوتھے ثابت ہوئے۔ گنگا کے نئے پل بھی ٹوٹے۔ کمبھ نگر میں پانی اور بجلی نے بار بار دھوکہ دیا۔ ڈاک اور تار کے محکموں میں کام کرنے کے لئے دور دور کے پرانتوں سے لوگ جمع کئے گئے تھے۔ پر اماوسیا کو دس دن ہوچکے اور آج کے دن تک یہ حالت ہے کہ ہمیں خود ایکسپریس تار الہ آباد تارگھر میں پہونچ جانے کے اڑتالیس اڑتالیس گھنٹے بعد اور ایکسپریس ڈلیوری خط پانچ پانچ دن کے بعد مل رہے ہیں اور جو کبھی نہیں ملینگے ان کا ذکر ہی کیا۔ انگریزی راج میں کمبھ کے موقع پر ریل کا کرایہ اکثر آدھا کردیا جاتا تھا۔ اس سے سرکار کو آمدنی بھی خوب ہوتی تھی اور لوگوں کو بھی آرام۔ آزاد ہند میں کرائے بڑھائے گئے اور بڑھانے کے قاعدے جب زیادہ بےتکے ہوگئے تو انہیں بدلا گیا۔ ہیضے کے زبردستی ٹیکے کے بیجا اور غلط حکم کو واپس لے لیا گیا تو اس کے بعد بھی 12 فروری تک کا ہمیں معلوم ہے کہ الہ آباد آنے والے لوگوں کے کہیں کہیں زبردستی سوئیاں بھونکی جاتی رہیں۔ اماوسیا کے دن کی درگھٹنا کو یاد کرکے تو ہمارا دل تھر تھر کانپنے لگتا ہے۔ سرکاری یا نیم سرکاری لوگوں کا کہنا ہے کہ کل پانچ سو سے کم بےگناہ کچل کر مرے۔ لوگوں کا خیال ہے کئی ہزار مرے۔ جو بھی ہو اس میں شک نہیں سیکڑوں بےگناہوں کی جانیں گئیں اور ہزاروں گھائل ہوئے۔ صوبے کی سرکار نے جو تحقیقاتی کمیٹی نیکت کی ہے اس پر خود الہ آباد کے شہری اپنا اوشواس پرکٹ کر چکے ہیں۔ جہاں تک دیش کی جنتا کا سوال ہے یہ ایک دکھ بھری لیکن سچی بات ہے کہ جنتا کو آزاد ہند کے سرکاری آنکڑوں اور سرکاری تحقیقاتی کمیٹیوں پر اتنا ہی کم وشواس ہے جتنا سات سال پہلے انگریزی راج کے سرکاری آنکڑوں اور سرکاری کمیٹیوں پر تھا۔ گرہ کٹوں اور جیب کتروں کی تعداد کمبھ نگر میں اتنی بڑھی ہوئی تھی کہ اخباروں میں بھی اسکی کافی چرچا ہوئی۔ جیبیں کتری جانے، کندھوں پر سے

पर जब किसी देश की सरकार या सरकार के कोई खास आदमी या देश का कोई राजकाजी दल किसी तरह का राजकाजी फ़ायदा उठाने या अपनी सत्ता को मज़बूत करने के लिये इस तरह के अंध विश्वासों का समर्थन करता है और उनमें हिस्सा लेता है तो हालत बहुत गम्भीर हो जाती है. अंध विश्वासों से चाहे वह हिन्दू हों या मुस्लिम या किसी भी सम्प्रदाय के फ़ौरी मतलब मुमकिन है निकाला जा सके लेकिन अंध विश्वासों के सहारे दुनिया की कोई क़ौम न जी सकती है और न तरक़्क़ी की राह पर क़दम बढ़ा सकती है. इसलिये किसी भी धार्मिक अंध विश्वास या रीत रिवाज से राजकाजी फ़ायदा उठाने की कोशिश देश और देशवासियों के लिये और भी ख़तरनाक हो जाती है.

हम यह नहीं कहते कि हमारे जितने शासक या मिनिस्टर इलाहाबाद के इस कुम्भ में जमा हुए थे वह सब केवल राजकाजी उद्देश से ही जमा हुए थे. हमें मालूम है उनमें कुछ ऐसे भी थे जो सचमुच कट्टर विश्वासी हैं और जो यह मानते हैं कि सचमुच आसमान में नक्षत्रों और राशियों का ख़ास योग होने के वक़्त गंगा जी में और ख़ासकर गंगा और जमना के संगम पर एक ख़ास तरह का अमृत कहीं आसमान से टपकता है जो ठीक उस घड़ी उस जगह नहाने वाले के लिये मुक्ति के मार्ग को सरल बना देता है. पर हमें इसमें भी शक नहीं कि उनमें ऐसे भी काफ़ी थे और अधिक तादाद में थे जो इस तरह की कोई चीज़ नहीं मानते और जिन का लक्ष मुख्यकर राजकाजी था. हम यह भी मानते हैं कि इस दूसरी श्रेणी के नेताओं के दिलों में केवल व्यक्तिगत स्वार्थ ही नहीं था. वह जो कुछ कर रहे थे वह अपनी समझ से देश के भले और राष्ट्र की मज़बूती के लिये ही कर रहे थे. फिर भी इस तरह के ढंग को हम सच्चाई के ख़िलाफ़, धर्म की विडम्बना और उस का अपमान और देश की आगे की उन्नति, ख़ुशहाली और बहबूदी के लिये बहुत ही हानिकर मानते हैं. हमें लज्जा आती थी और हमारे अन्दर की धार्मिक भावना को धक्का लगता था जब हम इन पढ़े लिखे लोगों को जिन के अन्दर कोई इस तरह का विश्वास नहीं है अमावस्या के असनान के महूरत के साथ साथ अमृत और मुक्ति की बात करते सुनते थे. किसी के किसी भी विश्वास का हम आदर कर सकते हैं पर सच्चाई का आदर हमें उस से कहीं अधिक करना चाहिये. हमारे सरकारी चिन्ह अशोक चक्र के नीचे लिखा हुआ "सत्य मेव जयते" यानी सदा सच्चाई ही की जीत होती है झूट की नहीं केवल एक फ़िक़रा ही नहीं है वह सोलह आने सच्चा असूल है और वही क़ौमों और सरकारों दोनों के लिये ज़िन्दगी और तरक़्क़ी की शाहराह है.

پر جب کسی دیش کی سرکار یا سرکار کے کوئی خاص آدمی یا دیش کا کوئی راجکاجی دل کسی طرح کا راجکاجی فائدہ اُٹھانے یا اپنی ستا کو مضبوط کرنے کے لئے اِس طرح کے اندھ وشواسوں کا سمرتھن کرتا ہے اور اُن میں حصہ لیتا ہے تو حالت بہت گمبھیر ہو جاتی ہے ۔ اندھ وشواسوں سے چاہے وہ ہندو ہوں یا مسلم یا کسی بھی سمپردائے کے فوری مطلب ممکن ہے نکالا جاسکے لیکن اندھ وشواسوں کے سہارے دنیا کی کوئی قوم نہ جی سکتی ہے اور نہ ترقی کی راہ پر قدم بڑھا سکتی ہے ۔ اِس لئے کسی بھی دھارمک اندھ وشواس یا ریت رواج سے راجکاجی فائدہ اُٹھانے کی کوشش دیش اور دیش واسیوں کے لئے اور بھی خطرناک ہو جاتی ہے ۔

ہم یہ نہیں کہتے کہ ہمارے جتنے شاسک یا منسٹر اِلہ آباد کے اِس کمبھ میں جمع ہوئے تھے وہ سب کیول راجکاجی اُدیش سے ہی جمع ہوئے تھے ۔ ہمیں معلوم ہے اُن میں کچھ ایسے بھی تھے جو سچ مچ کٹر وشواسی ہیں اور جو یہ مانتے ہیں کہ سچ مچ آسمان میں نکشتروں اور راشیوں کا خاص یوگ ہونے کے وقت گنگا جی میں اور خاصکر گنگا اور جمنا کے سنگم پر ایک خاص طرح کا امرت کہیں آسمان سے ٹپکتا ہے جو ٹھیک اُس گھڑی اُس جگہ نہانے والے کے لئے مکتی کے مارگ کو سرل بنا دیتا ہے. پر ہمیں اِس میں بھی شک نہیں کہ اُن میں ایسے بھی کافی تھے اور ادھک تعداد میں تھے جو اِس طرح کی کوئی چیز نہیں مانتے اور جن کا لکش مکھیہ کر راجکاجی تھا ۔ ہم یہ بھی مانتے ہیں کہ اِس دوسری شرینی کے نیتاؤں کے دلوں میں کیول ویکتی گت سوارتھ ہی نہیں تھا ۔ وہ جو کچھ کر رہے تھے وہ اپنی سمجھ سے دیش کے بھلے اور راشٹر کی مضبوطی کے لئے ہی کر رہے تھے ۔ پھر بھی اِس طرح کے ڈھنگ کو ہم سچائی کے خلاف' دھرم کی وڈمبنا اور اُس کا اپمان اور دیش کی آگے کی اُنتی' خوشحالی اور بہبودی کے لئے بہت ہی ہانیکر مانتے ہیں ۔ ہمیں لجا آتی تھی اور ہمارے اندر کی دھارمک بھاونا کو دھکا لگتا تھا جب ہم اُن پڑھے لکھے لوگوں کو جن کے اندر کوئی اِس طرح کا وشواس نہیں ہے اماوسیا کے اِسنان کے مہورت کے ساتھ ساتھ امرت اور مکتی کی بات کرتے سنتے تھے. کسی کے کسی بھی وشواس کا ہم آدر کرسکتے ہیں پر سچائی کا آدر ہمیں اُس سے کہیں ادھک کرنا چاہئے. ہمارے سرکاری چنہ اشوک چکر کے نیچے لکھا ہوا "ستیہ میو جیتے" یعنی سدا سچائی ہی کی جیت ہوتی ہے جھوٹ کی نہیں کیول ایک فقرہ ہی نہیں ہے وہ سولہ آنے سچا اصول ہے اور وہی قوموں اور سرکاروں دونوں کے لئے زندگی اور ترقی کی شاہراہ ہے ۔

हमारी राय — ہماری رائے

इलाहाबाद का कुम्भ

इलाहाबाद का कुम्भ दुनिया का सब से बड़ा मेला समझा जाता है. हिन्दुस्तान के हिन्दुओं का तो यह सब से बड़ा मेला है ही. इस साल का कुम्भ आज़ादी मिलने के बाद पहला कुम्भ था. अगला कुम्भ इस के बारह बरस बाद आने वाला था. इसलिये दिल्ली सरकार और लखनऊ सरकार के कुछ बड़े बड़े लोगों ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा. उससे पूरा पूरा फ़ायदा उठाने की तदबीरें की जाने लगीं. लगभग दो बरस से मेले की तैयारियां हो रही थीं और बहुत बड़े पैमाने पर हो रही थीं. नतीजा यह हुआ कि कई निगाहों से इस साल का कुम्भ पिछले सात बरस की सब से बड़ी घटना या दुर्घटना बन गया.

इन तैयारियों की दो ग़रज़ साफ़ दिखाई देती थीं. एक देश की भोली हिन्दू जनता पर यह असर डालना कि हमारी सरकारों के बड़े बड़े लोग हिन्दू धर्म के पक्के मानने वाले हैं और दूसरे लोगों को यह बताना कि आज़ाद भारत की कांग्रेस सरकार इस हिन्दू मेले का जितना अच्छा और बढ़िया इन्तज़ाम कर सकती है उतना विदेशी अंग्रेज़ सरकार ने कभी नहीं किया था.

अभी तक दुनिया की आम जनता शायद किसी देश में भी धार्मिक अंध विश्वासों से पूरी तरह ऊपर नहीं उठ पाई है. हम इस बात को भी मानते हैं कि इस तरह के मामलों में जनता को पूरी आज़ादी होना चाहिये. कम से कम उस हद तक जिस हद तक कि किसी एक गिरोह की इस तरह की आज़ादी दूसरे गिरोह की इसी तरह की आज़ादी से टक्कर न खावे. सरकार को या किसी को जनता के इस तरह के कामों में जहां तक हो सके किसी तरह का दख़ल नहीं देना चाहिये. हिन्दुओं का धार्मिक मेला हो या मुसलमानों की ताज़ियादारी, ईसाइयों का बड़ा दिन हो या जैनियों का उछाह हर सरकार का यह भी फ़र्ज़ है कि इस तरह के मेलों और त्योहारों का पूरा पूरा प्रबंध करदे और आम जनता को अपने विश्वास के अनुसार अपने रिवाज के पालन करने में हर तरह की सहूलियत दे. मज़हबी आज़ादी का यही मतलब है.

الہ‌آباد کا کمبھ

الہ‌آباد کا کمبھ دنیا کا سب سے بڑا میلہ سمجھا جاتا ہے . ہندستان کے ہندوؤں کا تو یہ سب سے بڑا میلہ ہے ہی. اس سال کا کمبھ آزادی ملنے کے بعد پہلا کمبھ تھا . اگلا کمبھ اس کے بارہ برس بعد آنے والا تھا . اس لئے دلی سرکار اور لکھنؤ سرکار کے کچھ بڑے بڑے لوگوں نے اس موقع کو غنیمت سمجھا. اس سے پورا پورا فائدہ اٹھانے کی تدبیریں کی جانے لگیں. لگ بھگ دو برس سے میلے کی تیاریاں ہو رہی تھیں اور بہت بڑے پیمانے پر ہو رہی تھیں. نتیجہ یہ ہوا کہ کئی نگاہوں سے اس سال کا کمبھ پچھلے سات برس کی سب سے بڑی گھٹنا یا درگھٹنا بن گیا .

ان تیاریوں کی دو غرض صاف دکھائی دیتی تھیں . ایک دیش کی بھولی ہندو جنتا پر یہ اثر ڈالنا کہ ہماری سرکاروں کے بڑے بڑے لوگ ہندو دھرم کے پکے ماننے والے ہیں اور دوسرے لوگوں کو یہ بتانا کہ آزاد بھارت کی کانگریس سرکار اس ہندو میلے کا جتنا اچھا اور بڑھیا انتظام کرسکتی ہے اتنا ودیشی انگریز سرکار نے کبھی نہیں کیا تھا .

ابھی تک دنیا کی عام جنتا شاید کسی دیش میں بھی دھارمک اندھ وشواسوں سے پوری طرح اوپر نہیں اٹھ پائی ہے . ہم اس بات کو بھی مانتے ہیں کہ اس طرح کے معاملوں میں جنتا کو پوری آزادی ہونی چاہئے. کم سے کم اس حد تک جس حد تک کہ کسی ایک گروہ کی اس طرح کی آزادی دوسرے گروہ کی اسی طرح کی آزادی سے ٹکر نہ کھاوے. سرکار کو یا کسی کو جنتا کے اس طرح کے کاموں میں جہاں تک ہوسکے کسی طرح کا دخل نہیں دینا چاہئے . ہندوؤں کا دھارمک میلہ ہو یا مسلمانوں کی تازیہ‌داری، عیسائیوں کا بڑا دن ہو یا جینیوں کا اچھاہ ہر سرکار کا یہ بھی فرض ہے کہ اس طرح کے میلوں اور تیوہاروں کا پورا پورا پربندھ کردے اور عام جنتا کو اپنے وشواس کے انوسار اپنے رواج کے پالن کرنے میں ہر طرح کی سہولیت دے. مذہبی آزادی کا یہی مطلب ہے .

कच्चा माल देहात में नहीं होता या देहात में पक्का नहीं किया जा सकता, जैसे घड़ी, फ़ाउन्टेन पेन, टार्च, बटन आदि. अगर ऐसा नहीं होता तो हमारे शहर देहातों को चूसेंगे, बड़े शहर छोटे शहरों को चूसेंगे और परदेश वाले हम सब को चूसेंगे और सारे देश की बाग बाहर वालों के हाथ में सहज ही आ जायेगी.

एक शब्द अमरीकी जानकारों की बाबत और. अमरीका चाहता है कि उसका पक्का माल विदेशों में पहुंचे और विदेशों का कच्चा माल उसे मिले. इसलिये कोई भी अमरीकी, अगर अपने मुल्क का सच्चा वफ़ादार है, यह नहीं चाहेगा कि विदेशों में लोग अपना अपना पक्का माल बना लें और अमरीका का पक्का माल इस्तेमाल न करें. इसलिये हर अमरीकी का फ़र्ज़ है कि विदेश जाकर अपने अमरीकी माल की बढ़ौती व प्रचार के लिये हर तरह कोशिश करे. हमें विश्वास है कि यह टोली हिन्दुस्तान की हालत की इस तरह छान बीन करेगी कि हिन्दुस्तान में अमरीका और स्वेडन का माल अधिक से अधिक खपे.

आख़िर में हमारा नम्र निवेदन है कि भारत सरकार ठंडे दिल से सोचे और सही रास्ते पर चले. एक तरफ़ तो वह नाराज़ होती है पाकिस्तान में अमरीकी फ़ौजी अड्डे बनने से, दूसरी तरफ़ वह ख़ुद नित नये मौक़े अमरीकी लोगों को देती जाती है ताकि भारत में अमरीकी आर्थिक अड्डे—जिन्हें हम निराकार फ़ौजी अड्डे कहते हैं—खुलें. फिर, जब एक खादी बोर्ड या ग्राम उद्योग बोर्ड सरकार बना चुकी है तो बाहर से किसी को इस काम के लिये क्यों बुलाया जाता है? क्या उस बोर्ड को देहाती धंधों से कोई वास्ता नहीं है? किस वास्ते है प्लानिंग कमीशन जो बाहर वालों से यह काम कराता है? क्या हिन्दुस्तान के देहाती धंधों या छोटे छोटे रोज़गारों की जानकारी हमारे अपने लोगों को न होकर विदेश वालों को अधिक है? क्या वह इनकी तरक़्क़ी के लिये हमसे बेहतर रास्ते खोज सकते हैं? अगर यह बात ठीक है कि बाहर वाले ही हमारे रोटी कपड़े, काम धाम अच्छी तरह समझ बूझ सकते हैं तो कोई वजह नहीं कि हमारे मिनिस्टर और शासक भी अमरीका या दूसरी विलायतों से क्यों न बुलाये जायं!

—सुरेश राम भाई

کچا مال دیہات میں نہیں ہوتا یا دیہات میں پکا نہیں کیا جاسکتا، جیسے گھڑی، فاؤنٹین پین، ٹارچ، بٹن آدی. اگر ایسا نہیں ہوتا تو ہمارے شہر دیہاتوں کو چوسینگے، بڑے شہر چھوٹے شہروں کو چوسینگے اور پردیس والے ہم سبکو چوسینگے اور سارے دیش کی باگ باہروالوں کے ہاتھ میں سہج ہی آجائیگی .

ایک شبد امریکی جانکاروں کی بابت اور . آج امریکہ چاہتا ہے کہ اسکا پکا مال ودیشوں میں پہونچے اور ودیشوں کا کچا مال اسے ملے . اس لئے کوئی بھی امریکی، اگر اپنے ملک کا سچا وفادار ہے، یہ نہیں چاہیگا کہ ودیشوں میں لوگ اپنا اپنا پکا مال بنالیں اور امریکہ کا پکا مال استعمال نہ کریں . اس لئے ہر امریکی کا فرض ہے کہ ودیش جاکر اپنے امریکی مال کی بڑھوتی و پرچار کے لئے ہرطرح کوشش کرے. ہمیں وشواس ہے کہ یہ ٹولی ہندستان کی حالت کی اس طرح چھان بین کریگی کہ ہندستان میں امریکہ اور سوئیڈن کا مال ادھک سے ادھک کھپے .

آخر میں ہمارا نمر نویدن ہے کہ بھارت سرکار ٹھنڈے دل سے سوچے اور صحیح راستے پر چلے . ایک طرف تو وہ ناراض ہوتی ہے پاکستان میں امریکی فوجی اڈے بننے سے، دوسری طرف وہ خود نت نئے موقعے امریکی لوگوں کو دیتی جاتی ہے تاکہ بھارت میں امریکی آرتھک اڈے — جنہیں ہم نراکار فوجی اڈے کہتے ہیں — کھلیں. پھر، جب ایک کھادی بورڈ یا گرام اُدیوگ بورڈ سرکار بنا چکی ہے تو باہر سے کسی کو اس کام کے لئے کیوں بلایا جاتا ہے؟ کیا اس بورڈ کو دیہاتی دھندوں سے کوئی واسطہ نہیں ہے؟ کس واسطے ہے پلاننگ کمیشن جو باہر والوں سے یہ کام کراتا ہے؟ کیا ہندستان کے دیہاتی دھندوں یا چھوٹے چھوٹے روزگاروں کی جانکاری ہمارے اپنے لوگوں کو نہ ہوکر ودیش والوں کو ادھک ہے؟ کیا وہ انکی ترقی کے لئے ہم سے بہتر راستے کھوج سکتے ہیں؟ اگر یہ بات ٹھیک ہے کہ باہر والے ہی ہمارے روٹی کپڑے، کام دھام اچھی طرح سمجھ بوجھ سکتے ہیں تو کوئی وجہ نہیں کہ ہمارے منسٹر اور شاسک بھی امریکہ یا دوسری ولایتوں سے کیوں نہ بلائے جائیں!

—سریش رام بھائی

रोज़ी पर भी असर पड़ा. एक गांव में हमने यहांतक देखा कि एक ग़रीब किसान धान का बढ़िया प्याल पूस के महीने में बेचने लाया लेकिन उसे कोई ख़रीदार नहीं मिला और वह दुखी हो कर घर लौट गया !

ऊपर की बातों से हम इस नतीजे पर पहुंचे बिना नहीं रह सकते कि इस टोली को असली देहाती धन्धों से कोई सरोकार नहीं है. उसका सम्बन्ध केवल उन शहराती धन्धों से है जो हिन्दुस्तान में अभी ज़ियादा बड़े पैमाने पर चालू नहीं हैं, जैसे आगरे में जूते की दस्तकारी, मेरठ में क़ैंची की दस्तकारी, अलीगढ़ में ताले की दस्तकारी, जालन्धर में खेल का सामान वग़ैरा. इसलिये इस टोली के कारनामों से कोई फ़ायदा देहात के धन्धा करने वालों को तो पहुंच ही नहीं सकता.

हम इतने पर सब्र कर लेते. अगर हमारे शहरों के छोटे छोटे धंदे ही बढ़ें तब भी ख़ुशी की बात है. लेकिन जब शहर के धंदे भी न बढ़ें और देहात के रहे सहे धंदे और भी बरबाद हो जायं तब किसे तकलीफ़ न होगी. मिसाल के लिये आगरे में जूते का काम. हम जानते हैं कि कुछ अर्से से यह काम गिर रहा है. लेकिन क्यों ? सिर्फ़ इस वजह से कि कानपुर में बड़ी बड़ी देशी और विदेशी मिलों में जूते बन रहे हैं, बाटा नाम की विदेशी कम्पनी की दुकानें बस्ती बस्ती में खुल रही हैं, कलकत्ते वग़ैरा के इसी तरह के जूते उत्तर प्रदेश में आ रहे हैं. इसकी वजह से इलाहाबाद, प्रतापगढ़, रायबरेली, उन्नाव, फ़ैज़ाबाद, बस्ती, गोरखपुर वग़ैरा के देहातों का मोची बेकार हो गया, उसका बनाया जूता बिकता नहीं और साथ ही साथ उसे जानवरों की खालें मिलना भी दिन दिन मुश्किल होता जा रहा है. पहले अकेले आगरे के धंदे ने मथुरा, एटा, मैनपुरी, अलीगढ़ वग़ैरा के मोचियों का काम छीन लिया और अब कानपुर की मिलों के या बाहर के माल ने आगरे का काम भी ठंडा कर दिया. अब हम फ़र्ज़ कर भी लें कि विदेशी जानकारों की टोली सचमुच आगरे के काम को जिलाने की कोशिश करेगी तो फिर देहातों के मोची का काम तो बैठ ही जायेगा. इस तरह देहात के चिराग़ बुझा बुझा कर शहरों में चिराग़ जलाने की कोशिश की जा रही है. इस से शहर गांव के बीच की खाई बढ़ेगी, सरकार जनता के बीच की खाई बढ़ेगी और अमीर ग़रीब के बीच की खाई बढ़ेगी.

हमारे कहने का मतलब यह है कि जो कचा माल देहातों में पैदा होता है उसमें से जितना देहातों में पक्का किया जा सकता है उतना अगर देहातों में पक्का न किया गया तो देहात तबाह हो जायेंगे. केवल कचा माल गांव में हो और उससे पक्का माल शहर में या परदेस में ही बने तो देहात नष्ट होंगे. शहरों में वही धंदे चलने चाहियें जिनका

روزی پر بھی اثر پڑا . ایک گاؤں میں ہم نے یہاں تک دیکھا کہ ایک غریب کسان دھان کا بڑھیا پیال پوس کے مہینے میں بیچنے لایا لیکن اُسے کوئی خریدار نہیں ملا اور وہ دکھی ہو کر گھر لوٹ گیا !

اُوپر کی باتوں سے ہم اِس نتیجے پر پہونچے بنا نہیں رہ سکتے کہ اِس ٹولی کو اصلی دیہاتی دھندوں سے کوئی سروکار نہیں ہے. اُس کا سمبندھ کیول اُن شہراتی دھندوں سے ہے جو ہندستان میں ابھی زیادہ بڑے پیمانے پر چالو نہیں ہیں، جیسے آگرہ میں جوتے کی دستکاری، میرٹھ میں قینچی کی دستکاری، علیگڈھ میں تالے کی دستکاری، جالندھر میں کھیل کا سامان وغیرہ . اِس لئے اِس ٹولی کے کارناموں سے کوئی فائدہ دیہات کے دھندا کرنے والوں کو تو پہونچ ہی نہیں سکتا .

ہم اتنے پر صبر کرلیتے . اگر ہمارے شہروں کے چھوٹے چھوٹے دھندے ہی بڑھیں تب بھی خوشی کی بات ہے . لیکن جب شہر کے دھندے بھی نہ بڑھیں اور دیہات کے رہے سہے دھندے اور بھی برباد ہوجائیں تب کسے تکلیف نہ ہوگی. مثال کے لئے آگرہ میں جوتے کا کام. ہم جانتے ہیں کہ کچھ عرصہ سے یہ کام گر رہا ہے . لیکن کیوں ؟ صرف اس وجہ سے کہ کانپور میں بڑی بڑی دیشی اور ودیشی ملوں میں جوتے بن رہے ہیں، باٹا نام کی ودیشی کمپنی کی دوکانیں بستی بستی میں کھل رہی ہیں، کلکتہ وغیرہ کے اسی طرح کے جوتے اتر پردیش میں آرہے ہیں . اِسکی وجہ سے الہ آباد، پرتاپگڈھ، رائے بریلی، اناؤ، فیض آباد، بستی، گورکھپور وغیرہ کے دیہاتوں کا موچی بیکار ہوگیا، اس کا بنایا جوتا بکتا نہیں اور ساتھ ہی ساتھ اُسے جانوروں کی کھالیں ملنا بھی دن دن مشکل ہوتا جا رہا ہے . پہلے اکیلے آگرے کے دھندے نے متھرا، ایٹہ، مینپوری، علیگڈھ وغیرہ کے موچیوں کا کام چھین لیا اور اب کانپور کی ملوں کے باہر کے مال نے آگرے کا کام بھی ٹھنڈا کردیا. اب ہم فرض کر بھی لیں کہ ودیشی جانکاروں کی ٹولی سچ مچ آگرہ کے کام کو جلانے کی کوشش کریگی تو پھر دیہاتوں کے موچی کا کام تو بیٹھ ہی جاویگا . اِس طرح دیہات کے چراغ بجھا بجھا کر شہروں میں چراغ جلانے کی کوشش کی جاری ہے . اس سے شہراور گاؤں کے بیچ کی کھائی بڑھیگی، سرکاراور جنتا کے بیچ کی کھائی بڑھیگی اور امیر اور غریب کے بیچ کی کھائی بڑھیگی .

ہمارے کہنے کا مطلب یہ ہے کہ جو کچا مال دیہاتوں میں پیدا ہوتا ہے اس میں سے جتنا دیہاتوں میں پکا کیا جاسکتا ہے اتنا اگر دیہاتوں میں پکا نہ کیا گیا تو دیہات تباہ ہوجائینگے. کیول کچا مال گاؤں میں ہو اور اس سے پکا مال شہر میں یا پردیس میں ہی بنے تو دیہات نشٹ ہونگے. شہروں میں وہی دھندے چلنے چاہئیں جنکا

2—यह बतावें की पालीटेकनिक संस्था खुलने से पहले इन सवालों के बारे में क्या किया जा सकता है.

3—संस्था कैसे काम करे, उसका तरीक़ा क्या हो, वग़ैरा बातों के लिये सुझाव दे.

एक खास बात यह है कि इस टोली को बुनकरों के *धन्धे यानी करघा उद्योग से कोई वास्ता नहीं रहेगा.*

कैसा कमाल है कि देश के आज़ाद होने के छै बरस बाद, हमारी सरकार को देहाती धन्धों और छोटे छोटे धन्धों को बढ़ाने का ख़याल अचानक पैदा हुआ. लेकिन मसल मशहूर है कि देर आयद दुरुस्त आयद. मगर हम नहीं समझे कि इस काम के लिये बाहर के लोगों को दावत क्यों दी गई, टोली के मेम्बरों का चुनाव अमरीका की ही एक मशहूर तिजारती कम्पनी से क्यों कराया गया और टोली कहने को तो अन्तरक़ौमी है पर उसमें पांच लोग अमरीका के क्यों है ? दुनिया की दो सौ करोड़ आबादी में अमरीकी मुश्किल से आठ फ़ी सदी होंगे, लेकिन इस अन्तरक़ौमी टोली में सत्तर फ़ीसदी से ऊपर अमरीकी हैं. सरकार की इस तंगनज़री पर किसे अफ़सोस व अचरज न होगा.

अब ज़रा इस टोली के सिपुर्द जो काम हैं उन्हें देखें.

हमारे देहातों में खेती के बाद सब से बड़ा धन्धा बुनाई है. देहाती धन्धों में इसका दर्जा सबसे ऊंचा है. बुनकर के अलावा दूसरे दस्तकार बढ़ई, लुहार, कुम्हार, तेली, चमार, वग़ैरा हैं जो गांव की दूसरी छोटी बड़ी ज़रूरतों को पूरा करते हैं. मगर हैरत की बात है कि इस टोली का वास्ता इन धन्धों में से किसी धन्धे से नहीं रखा गया. उसके सुपुर्द कुछ अजीब ग़रीब काम किये गये हैं, जैसे—

उत्तर प्रदेश में—मेरठ में उस्तरा, क़ैंची, और खेल के सामान की दस्तकारी, रुड़की में नक़्शे के समान की दस्तकारी, आगरे में जूते की दस्तकारी, फ़ीरोज़ाबाद में चूड़ियों की दस्तकारी, वग़ैरा.

पूर्वी पंजाब में— लुधियाना में साइकिल का सामान, जालन्धर में खेल का सामान और खेती के औज़ार वग़ैरा.

इसी तरह की दूसरे प्रदेशों की दस्तकारीयां इस टोली के सुपुर्द की गई हैं. इस टोली को इस बात से कोई मतलब नहीं कि गांव गांव में जो धन्धे आज आधे या पौनी शकल में चल रहे हैं उन्हें कैसे जीवित रखा जाय और बढ़ाया जाय. बुनकरों के धन्धे को इस टोली से अलग रखना खास बात है क्योंकि इस धन्धे के अनेक पहलुओं को समझे बिना इसे ज़िन्दा रखने की कोई कारगर सूरत पैदा नहीं हो सकती. हमने आज़मगढ़ ज़िले में देखा है कि बुनकरों का धन्धा चौपट हो जाने के कारन बढ़ई, कुम्हार, तेली वग़ैरा की

2—یہ بتاوے کہ پالیٹیکنک سنستھا کھلنے سے پہلے ان سوالوں کے بارے میں کیا کیا جا سکتا ہے ۔

3—سنستھا کیسے کام کرے، اُسکا طریقہ کیا ہو، وغیرہ باتوں کے لئے سجھاؤ دے ۔

ایک خاص بات یہ ہے کہ اس ٹولی کو بنکروں کے دھندے یعنی کرگھا اُدیوگ سے کوئی واسطہ نہیں رہیگا ۔

کیسا کمال ہے کہ دیش کے آزاد ہونے کے چھ برس بعد ہماری سرکار کو دیہاتی دھندوں اور چھوٹے چھوٹے دھندوں کو بڑھانے کا خیال اچانک پیدا ہوا ۔ لیکن مثل مشہور ہے کہ دیر آید درست آید ۔ مگر ہم نہیں سمجھے کہ اس کام کے لئے باہر کے لوگوں کو دعوت کیوں دی گئی، ٹولی کے ممبروں کا چناؤ امریکہ کی ہی ایک مشہور تجارتی کمپنی سے کیوں کرایا گیا اور وہ ٹولی کہنے کو تو انٹرقومی ہے پر اس میں پانچ لوگ امریکہ کے کیوں ہیں ؟ دنیا کی دو سو کروڑ آبادی میں امریکی مشکل سے آٹھ فی صدی ہیں گے، لیکن اس انٹرقومی ٹولی میں ستر فی صدی سے اوپر امریکی ہیں۔ سرکار کی اس تنگ نظری پر کسے افسوس و اچرج نہ ہوگا ۔

اب ذرا اس ٹولی کے سپرد جو کام ہیں اُنہیں دیکھیں۔

ہمارے دیہاتوں میں کھیتی کے بعد سب سے بڑا دھندا بنائی ہے ۔ دیہاتی دھندوں میں اس کا درجہ سب سے اونچا ہے ۔ بنکر کے علاوہ دوسرے دستکار بڑھئی، لوہار، کمہار، تیلی، چمار، وغیرہ ہیں جو گاؤں کی دوسری چھوٹی بڑی ضرورتوں کو پورا کرتے ہیں ۔ مگر حیرت کی بات ہے کہ اس ٹولی کا واسطہ اِن دھندوں میں سے کسی دھندے سے نہیں رکھا گیا ۔ اس کے سپرد کچھ عجیب غریب کام کئے گئے ہیں، جیسے—

اُتر پردیش میں—میرٹھ میں اُسترا، قینچی اور کھیل کے سامان کی دستکاری، رڑکی میں نقشے کے سامان کی دستکاری، آگرہ میں جوتے کی دستکاری، فیروزآباد میں چوڑیوں کی دستکاری، وغیرہ ۔

پوربی پنجاب میں—لدھیانہ میں سائیکل کا سامان، جالندھر میں کھیل کا سامان اور کھیتی کے اوزار وغیرہ ۔

اسی طرح کی دوسرے پردیشوں کی دستکاریاں اس ٹولی کے سپرد کی گئی ہیں ۔ اس ٹولی کو اس بات سے کوئی مطلب نہیں کہ گاؤں گاؤں میں جو دھندے آج آدھے یا پونی شکل میں چل رہے ہیں انہیں کیسے جیوت رکھا جائے اور بڑھایا جائے ۔ بنکروں کے دھندے کو اس ٹولی سے الگ رکھنا خاص بات ہے کیونکہ اس دھندے کے انیک پہلوؤں کو سمجھے بنا اسے زندہ رکھنے کی کوئی کارگر صورت پیدا نہیں ہوسکتی۔ ہم نے اعظم گڑھ ضلع میں دیکھا ہے کہ بنکروں کا دھندا چوپٹ ہوجانے کے کارن بڑھئی، کمہار، تیلی وغیرہ کی

महेन्द्र : हां, हां ! देखिये न, यह कमरा खुला........ यह खिड़की हवा में फटफटा रही है और यह ट्रंक का ताला ज़मीन पर पड़ा है. मुझे तो अब भी यक़ीन नहीं आता.

भाई जीः [स्थिति समझ कर कुछ खिसियाने होकर] हां भई क्या कहूं उस तार वाले की आवाज़ सुन कर मैं तो कुछ ऐसा घबरा गया कि फ़ौरन ही उठ कर चला गया. वाक़ई बड़ी भूल हो गई.

महेन्द्र : तो मानते हैं न भाई जी कि कभी कभी आप भी भूल कर सकते हैं. [ज़ोर से हंसता है जिसमें सीता ज़रा धीमे से और भाई जी कुछ खिसियाने से शामिल होते हैं]

सीता : [हंसते हुये] अच्छा अब चलिये, खाना खाइये और गिरीश के पास होने पर मुंह मीठा करिए.

—भगवानदीन

مہیندر : ہاں، ہاں ! دیکھئے نہ، یہ کمرہ کھلا......یہ کھڑکی ہوا میں پھٹپھٹا رہی ہے اور یہ ٹرنک کا تالا زمین پر پڑا ہے . مجھے تو اب بھی یقین نہیں آتا .

بھائی جی: [استھتی سمجھکر کچھ کھسیانے ہوکر] ہاں بھئی کیا کہوں اُس تار والے کی آواز سنکر میں تو کچھ ایسا گھبرا گیا کہ فوراً ہی اُٹھکر چلا گیا. واقعی بڑی بھول ہوگئی .

مہیندر : تو مانتے ہیں نہ بھائی جی کہ کبھی کبھی آپ بھی بھول کرسکتے ہیں. [زور سے ہنستا ہے جس میں سیتا ذرا دھیمے سے اور بھائی جی کچھ کھسیانے سے شامل ہوتے ہیں]

سیتا : [ہنستے ہوئے] اچھا اب چلئے، کھانا کھائیے اور گریش کے پاس ہونے پر منھ میٹھا کرئے .

—بھگوان دین

देश में अमरीकी जाल

आजकल हमारे देश में विलायती जानकारों की एक टोली हमारे यहां के देहाती धन्दों को बढ़ाने की फ़िक्र में घूम रही है ! अख़बारों में जो ख़बर छपी है उसका सार यह है :—

हिन्द सरकार की दावत पर सात विदेशी जानकारों की एक अन्तरक़ौमी टोली हिन्दुस्तान को समझने के लिये इस देश का दौरा कर रही है ताकि देहाती धन्दों और दूसरे छोटे छोटे धन्दों की एक योजना बनाने में हिन्द सरकार को मदद दे. यह टोली अमरीका की मशहूर मोटर कम्पनी फ़ोर्ड फ़ाउन्डेशन की चुनी हुई है. इसमें पांच लोग अमरीका के और दो स्वीडन के हैं. कहा जाता है कि छोटे छोटे धन्दों और उनके मसलों की इन सातों को अच्छी जानकारी है.

यह भी बताया गया है के देहाती धन्दों व छोटे छोटे धन्दों के लिये एक पालीटेक निक कालिज या संस्था खोलने की तजवीज़ है. इस विदेशी टोली के सुपुर्द नीचे लिखे काम किये गये हैं :—

1—यह देहाती धन्दों और छोटे-छोटे धन्दों से ताल्लुक़ रखने वाले सवालों की अच्छी ख़ासी और तफ़सीली जांच करे.

دیش میں امریکی جال

آجکل ہمارے دیش میں ولایتی 'جانکاروں' کی ایک ٹولی ہمارے یہاں کے دیہاتی دھندوں کو بڑھانے کی فکر میں گھوم رہی ہے ! اخباروں میں جو خبر چھپی ہے اُس کا سار یہ ہے :—

ہند سرکار کی دعوت پر سات ودیشی جانکاروں کی ایک انٹرقومی ٹولی ہندستان کو سمجھنے کے لئے اس دیش کا دورہ کر رہی ہے تاکہ دیہاتی دھندوں اور دوسرے چھوٹے چھوٹے دھندوں کی ایک یوجنا بنانے میں ہند سرکار کو مدد دے . یہ ٹولی امریکہ کی مشہور موٹر کمپنی فورڈ فاونڈیشن کی چنی ہوئی ہے . اس میں پانچ لوگ امریکہ کے اور دو سوئیڈن کے ہیں . کہا جاتا ہے کہ چھوٹے چھوٹے دھندوں اور اُن کے مسلوں کی ساتوں کو اچھی جانکاری ہے .

یہ بھی بتایا گیا ہے کہ دیہاتی دھندوں و چھوٹے چھوٹے دھندوں کے لئے ایک پالیٹیکنک کالج یا سنستھا کھولنے کی تجویز ہے . اس ودیشی ٹولی کے سپرد نیچے لکھے کام کئے گئے ہیں :—

1—یہ دیہاتی دھندوں اور چھوٹے چھوٹے دھندوں سے تعلق رکھنے والے سوالوں کی اچھی خاصی اور تفصیلی جانچ کرے .

[विराम 5 सैकिंड]

सीता : महेन्द्र बाबू ! इन्हें तो आने में बड़ी देर लग रही है, ज़रा बुला तो लाओ जल्दी से. कहना, खाना सब ठंडा हुआ जा रहा है.

महेन्द्र : अभी लाता हूं भाभी पकड़ कर. आखिर यह भी क्या मज़ाक़ है कि घर वाले बैठे सूखें और भाई जी को ताले लगाने से ही फ़ुर्सत नहीं.

[विराम 3 सैकिंड...फिर दूर से]

महेन्द्र : (हंसी के लहजे में) भाभी !........भाभी ! ज़रा यहां तो आना.

सीता : अरे ! अब इसे क्या हो गया ?

महेन्द्र : भाभी !......भाभी ! ज़रा देखो तो, भाई जी का कमरा खुला है, कमरे की एक खिड़की भी खुली, ट्रंक का ताला ज़मीन पर और भाई जी ग़ायब ! क्या मैं सपना तो नहीं देख रहा ! भाभी, क्या तुम्हें भी यहां भाई जी दिखाई नहीं देते ?

सीता : (उसी चकित लहजे में) हां भाई जी तो यहां वाक़ई नहीं हैं.

महेन्द्र : (ज़रा मज़ाक़ के लहजे में) नामुमकिन, सरासर नामुमकिन. भाई जी ने ज़रूर हमारी आंखों पर जादू कर दिया है, यह हो ही नहीं सकता. भाई जी ज़रूर यहीं हैं पर हमें दिखलाई नहीं देते. यही तो जादू है इनका. भाभी ! भाई जी जादूगर भी हैं क्या ?

सीता : [कुछ हंसी कुछ घबराहट से] चलो मज़ाक़ मत करो जी. भाई जी इस तरह अपनी चीज़ें छोड़ कर जा ही नहीं सकते. ज़रूर कोई ख़ास बात हो गई है.

भाई जी : [दूर से आते हुये] अरे भई ज़रा सुनो तो यह तार आया है गिरीश का. वह बी. ए. के इम्तहान में पहले दर्जे में पास हो गया है. मैं तो घबरा ही गया था कि न जाने यह यकायक तार कहां से आ गया.

सीता : [इतमीनान की सांस लेकर] अरे तो आप तार लेने चले गये थे ? मैं तो समझी न जाने क्या बात हो गई कि आप कमरा खुला छोड़ कर चले गये.

महेन्द्र : और मुझे तो पूरा यक़ीन हो गया था कि भाई जी ने जादू किया है. वरना यह कभी हो सकता है कि कमरा खुला हो, खिड़की खुली हो, ट्रंक खुला हो और भाई जी न हों !

भाई जी : (कुछ विस्मृत से हो कर) कमरा खुला ! खिड़की खुली !

[وِرام 5 سیکنڈ]

سیتا : مہیندر بابو ! انہیں تو آنے میں بڑی دیر لگ رہی ہے' ذرا بلا تو لاؤ جلدی سے . کہنا' کھانا سب ٹھنڈا ہوا جارہا ہے .

مہیندر : ابھی لاتا ہوں بھابھی پکڑ کر . آخر یہ بھی کیا مذاق ہے کہ گھر والے بیٹھے سوکھیں اور بھائی جی کو تالے لگانے سے ہی فرصت نہیں .

[وِرام 3 سیکنڈ....پھر دور سے]

مہیندر : [ہنسی کے لہجے میں] بھابھی ! ......بھابھی ! ذرا یہاں تو آنا .

سیتا : ارے اب اسے کیا ہوگیا ؟

مہیندر : بھابھی !......بھابھی ! ذرا دیکھو تو' بھائی جی کا کمرہ کھلا ہے' کمرے کی ایک کھڑکی بھی کھلی' ٹرنک کا تالا زمین پر اور بھائی جی غائب ! کیا میں سپنا تو نہیں دیکھ رہا ! بھابھی ! کیا تمہیں بھی یہاں بھائی جی دکھائی نہیں دیتے ؟

سیتا : [اسی چکیت لہجے میں] ہاں بھائی جی تو یہاں واقعی نہیں ہیں .

مہیندر : [ذرا مذاق کے لہجے میں] ناممکن' سراسر ناممکن . بھائی جی نے ضرور ہماری آنکھوں پر جادو کردیا ہے. یہ ہو ہی نہیں سکتا . بھائی جی ضرور یہیں ہیں' پر ہمیں دکھائی نہیں دیتے . یہی تو جادو ہے انکا . بھابھی ! بھائی جی جادوگر بھی ہیں کیا ؟

سیتا : [کچھ ہنسی کچھ گھبراہٹ سے] چلو مذاق مت کرو جی. بھائی جی اس طرح اپنی چیزیں چھوڑ کر جا ہی نہیں سکتے . ضرور کوئی خاص بات ہوگئی ہے .

بھائی جی : [دور سے آتے ہوئے] ارے بھئی' ذرا سنو تو . یہ تار آیا ہے گریش کا. وہ بی. اے. کے امتحان میں پہلے درجے میں پاس ہوگیا ہے . میں تو گھبرا ہی گیا تھا کہ نہ جانے یہ یکایک تار کہاں سے آگیا .

سیتا : [اطمینان کی سانس لیکر] ارے تو آپ تار لینے چلے گئے تھے ؟ میں تو سمجھی نہ جانے کیا بات ہوگئی کہ آپ کمرہ کھلا چھوڑکر چلے گئے.

مہیندر : اور مجھے تو پورا یقین ہوگیا تھا کہ بھائی جی نے جادو کیا ہے . ورنہ یہ کبھی ہوسکتا ہے کہ کمرہ کھلا ہو' کھڑکی کھلی ہو' ٹرنک کھلا ہو' اور بھائی جی نہ ہوں !

بھائی جی : [کچھ وسمرت سے ہوکر] کمرہ کھلا ! کھڑکی کھلی !

सीता : [कुछ हंसकर] आप अपनी आदत से बाज़ न आएंगे.

महेन्द्र : [प्रवेश कर के] भाभी नमस्कार ! भाई जी नमस्ते !

सीता : आओ महेन्द्र ! कहो तुम्हारी माता जी तो ठीक हैं ?

महेन्द्र : हां, आपकी दुआ से अब तो ठीक हैं. मैं आपका और भाई जी का किस तरह शुक्रिया अदा करूं. अगर आप की मदद न होती तो मैं कहां से उनका इलाज कराता. आप सचमुच देवता लोग हैं.

सीता : चलो, छोड़ो इन बातों को. आओ, चलो, आज हमारे साथ खाना खा लो. हम सब खाना खाने चल ही रहे हैं. क्यों जी ! अब चलिये भी.

भाई जी : हां हां, तुम चलो, मुझे अभी यह खिड़कियां और बन्द करनी हैं.

महेन्द्र : क्यों भाई जी, क्या बाहर जा रहे हैं कहीं ?

भाई जी : नहीं तो.

महेन्द्र : तो फिर आप यह खिड़की लड़की बन्द काहे को कर रहे हैं. इन में तो वैसे ही लोहे की सलाखें लगी हैं.

भाई जी : तुम नहीं समझ सकते इन बातों को. नई पीढ़ी के हो न !

महेन्द्र : अच्छा भाई जी यह बताइए कि अगर कभी भूल से आप दरवाज़ा बन्द करना भूल जाएं तो ?

भाई जी : यह कभी हो ही नहीं सकता. इन बातों में मैं कभी भूल नहीं करता.

महेन्द्र : कभी नहीं ?

भाई जी : कभी नहीं.

सीता : अच्छा आप लोग बहस बन्द करिए, चल के खाना खाइए.

भाई जी : तो मैं कब तुम्हें रोक रहा हूं ? कह तो रहा हूं कि तुम चलो मैं आता हूं.

महेन्द्र : चलो भाभी, भाई जी तो सब ताले कुन्डे ठोक बजा कर देखेंगे तब आएंगे.

सीता : [जाते हुए] अच्छा देखिये, जल्दी करिए.

भाई जी : [स्वगत] यह लड़के ! यह क्या जाने चीज़ किस तरह रखी जाती है.

[फिर दरवाजे बन्द और ट्रंक बन्द करने की खड़खड़......दरवाज़े पर दस्तक, फिर एक आवाज़...तार है साहब !]

भाई जी : अरे यह तार आया है ! न जाने किस का है ? ज़रा ले आऊं. [जाते हुए] हे ईश्वर ! तू ही मालिक है.

سیتا : [کچھ ہنسکر] آپ اپنی عادت سے باز نہ آئینگے۔

مہیندر : [پرویش کرکے] بھابھی نمسکار ! بھائی جی نمستے !

سیتا : آؤ مہیندر ! کہو تمہاری ماتا جی تو ٹھیک ہیں؟

مہیندر : ہاں، آپکی دعا سے اب تو ٹھیک ہیں . میں آپ کا اور بھائی جی کا کس طرح شکریہ ادا کروں۔ اگر آپکی مدد نہ ہوتی تو میں کہاں سے انکا علاج کرتا۔ آپ سچ مچ دیوتا لوگ ہیں .

سیتا : چلو، چھوڑ ان باتوں کو۔ آؤ، چلو، آج ہمارے ساتھ کھانا کھالو . ہم سب کھانا کھانے چل ہی رہے ہیں۔ کیوں جی ! اب چلئے بھی .

بھائی جی: ہاں ہاں، تم چلو، مجھے ابھی یہ کھڑکیاں اور بند کرنی ہیں .

مہیندر : کیوں بھائی جی، کیا باہر جارہے ہیں کہیں ؟

بھائی جی: نہیں تو .

مہیندر : تو پھر آپ یہ کھڑکی اڑکی بند کا ہے کو کررہے ہیں ؟ ان میں تو ویسے ہی لوہے کی سلاخیں لگی ہیں .

بھائی جی: تم نہیں سمجھ سکتے ان باتوں کو۔ نئی پیڑھی کے ہو نہ !

مہیندر : اچھا بھائی جی یہ بتائیے کہ اگر کبھی بھول سے آپ دروازہ بند کرنا بھول جائیں تو ؟

بھائی جی: یہ کبھی ہو ہی نہیں سکتا . ان باتوں میں میں کبھی بھول نہیں کرتا .

مہیندر : کبھی نہیں ؟

بھائی جی: کبھی نہیں .

سیتا : اچھا آپ لوگ بحث بند میں کرئیے، چل کے کھانا کھائیے .

بھائی جی: تو میں کب تمہیں روک رہا ہوں؟ کہہ تو رہا ہوں کہ تم چلو میں آتا ہوں .

مہیندر : چلو بھابھی، بھائی جی تو سب تالے کنڈے ٹھوک بجاکر دیکھینگے تب آئینگے .

سیتا : [جاتے ہوئے] اچھا دیکھئے، جلدی کرئے .

بھائی جی: [سوگت] یہ لڑکے ! یہ کیا جانیں چیز کس طرح رکھی جاتی ہے .

[پھر دروازہ بند کرنے اور ٹرنک بند کرنے کی کھڑ کھڑ... دروازے پر دستک، پھر ایک آواز......تار ہے صاحب!]

بھائی جی: ارے یہ تار آیا ہے ! نہ جانے کس کا ہے ؟ ذرا لے آؤں۔ [جاتے ہوئے] ہے ایشور ! تو ہی مالک ہے۔

भाई जी : [बिगड़ कर] फिर वही, और गलती से दो नोट आपस में चिपक गये हों तो ?

नरेश : [हंसता हुआ] तो फिर क्या हुआ. मुझे दो की जगह तीन रुपये मिल जाएंगे और आप को पता भी न चलेगा.

भाई जी : तुम लड़कों को कभी अक्ल न आएगी. चलो गिनो.

नरेश : अच्छा लीजिये गिनता हूं, यह देखिये एक...... दो......बिल्कुल इकहरे नोट हैं. कोई नोट चिपका हुआ नहीं है.

भाई जी : चल, जा, अब मज़ाक़ मत कर.

नरेश : [जाते हुये] अच्छा भाई जी मैं चला. भाभी नमस्कार !

सीता : आप भी कमाल करते हैं ! भला इतना भी वहम करने से क्या फ़ायदा ?

भाई जी : और नहीं तो क्या. इन लड़कों का राज हो तो जायदादें लुट जाएं.

सीता : और अभी कौन सी जायदाद बच रही है ! जब मैं ब्याह कर आई थी तो लाखों की सम्पत्ति थी ! और अब,......अब क्या है ?

भाई जी : वह और बात है. हमारे कोई औलाद नहीं, कोई नज़दीकी रिश्तेदार भी नहीं. इसलिये दान पुन में रुपया लगा देना कोई बुरी बात नहीं है. [कुछ रुक कर] मगर यह बताओ, तुम्हें तो कोई तकलीफ़ नहीं है मेरे इस दान पुन से, मेरे इस शक्कीपन से.

सीता : [पिघल कर] तकलीफ़ ! मुझे ! क्यों तकलीफ़ होने लगी मुझे ? जितना सुख यहां मिला है, मैं समझती हूं बहुत कम औरतों को नसीब होता होगा. मैं तो सिर्फ़ आपके लिये कह रही थी कि जब आप इस खुले दिल से अशर्फ़ियां लुटा रहे हैं तो फिर कोयलों पर मुहर लगाने के लिये आप इतना कष्ट क्यों करते हैं ?

भाई जी : यह कोयलों पर मुहर लगाना नहीं है. यह तो सलीक़ा है, चीज़ रखने का सलीक़ा. अगर हर चीज़ हर वक़्त सम्भाल कर न रखी जाए, उस की एक जगह मुक़र्रर न की जाए, और उसको हमेशा वहीं रखने के लिये बराबर कोशिश न की जाए, तो फिर किसी चीज़ का कभी पता ही न चले.

सीता : अच्छा यूं ही सही. चलो अब खाने का वक़्त हो चला है.

भाई जी : अच्छा, अच्छा, तुम चलो, मैं कमरा बन्द कर के आता हूं.

بھائی جی: [بگڑ کر] پھر وہی، اور غلطی سے دو نوٹ آپس میں چپک گئے ہوں تو ؟

نریش : [ہنستا ہوا] تو پھر کیا ہوا . مجھے دو کی جگہ تین روپئے مل جائیں گے اور آپ کو پتہ بھی نہ چلیگا .

بھائی جی: تم لڑکوں کو کبھی عقل نہ آئے گی . چلو گنو .

نریش : اچھا لیجئے گنتا ہوں، یہ دیکھئے ایک......دو ......بالکل اکہرے نوٹ ہیں . کوئی نوٹ چپکا ہوا نہیں ہے .

بھائی جی: چل، جا، اب مذاق مت کر .

نریش : [جاتے ہوئے] اچھا بھائی جی میں چلا . بھابی نمسکار !

سیتا : آپ بھی کمال کرتے ہیں ! بھلا اتنا بھی وہم کرنے سے کیا فائدہ ؟

بھائی جی: اور نہیں تو کیا . ان لڑکوں کا راج ہو تو جائدادیں لٹ جائیں .

سیتا : اور ابھی کون سی جائداد بچ رہی ہے ! جب میں بیاہ کر آئی تھی تو لاکھوں کی سمپتی تھی ! اور اب،......اب کیا ہے ؟

بھائی جی: وہ اور بات ہے . ہمارے کوئی اولاد نہیں، کوئی نزدیکی رشتہ دار بھی نہیں . اس لئے دان پن میں روپیہ لگا دینا کوئی بری بات نہیں ہے . [کچھ رک کر] مگر یہ تو بتاؤ، تمہیں تو کوئی تکلیف نہیں ہے میرے اس دان پن سے، میرے اس شکی پن سے .

سیتا : [پگھل کر] تکلیف ! مجھے ! کیوں تکلیف ہونے لگی مجھے ؟ جتنا سکھ یہاں ملا ہے، میں سمجھتی ہوں بہت کم عورتوں کو نصیب ہوتا ہوگا . میں تو صرف آپ کے لئے کہہ رہی تھی کہ جب آپ اس کھلے دل سے اشرفیاں لٹا رہے ہیں تو پھر کوئلوں پر مہر لگانے کے لئے آپ اتنا کشٹ کیوں کرتے ہیں ؟

بھائی جی : یہ کوئلوں پر مہر لگانا نہیں ہے . یہ تو سلیقہ ہے، چیز رکھنے کا سلیقہ. اگر ہر چیز کو ہر وقت سنبھال کر نہ رکھا جائے، اس کی ایک جگہ مقرر نہ کی جائے، اور اسکو ہمیشہ وہیں رکھنے کے لئے برابر کوشش نہ کی جائے، تو پھر کسی چیز کا کبھی پتہ ہی نہ چلے .

سیتا : اچھا یوں ہی سہی . چلو اب کھانے کا وقت ہو چلا ہے .

بھائی جی : اچھا، اچھا، تم چلو، میں کمرہ بند کر کے آتا ہوں.

जा रही है और उसके लिये दो दो रुपये चन्दा तय हुआ है.

भाई जी : हूं ! तो फिर मुझ से क्यों मांगते हो ? तुम्हारे रुपये क्या हुये ?

नरेश : जी, इधर ज़रा दो एक किताबें ख़रीदनी पड़ीं, रुपये ख़त्म हो गये.

भाई जी : बड़े फ़िज़ूल ख़र्च हो गये हो, देखो, पांच रुपये मैं उधार दे चुका हूं, वह तुम ने अभी तक नहीं लौटाए हैं, एक महीने का वादा था और दो महीने हो गये हैं, इस तरह काम नहीं चलेगा बरख़ुरदार !

नरेश : [आदत को जानते हुये] भाई जी अभी तो दे दीजिये, फिर घर से रुपये आने पर सब लौटा दूंगा.

भाई जी : मैं लेन देन के मामले में बड़ा सख़्त हूं, समझे. अगर अब के पहली तारीख़ को रुपये न लौटाए तो तुम्हारे बाप को ख़त लिखूंगा.

नरेश : [घबरा कर] अरे ! अरे ! कहीं ऐसा ग़ज़ब न कर देना भाई जी !

भाई जी : तो फिर करो वादा कि पहली तारीख़ तक ज़रूर नक़द सात रुपये लौटा दोगे.

सीता : [सीता का प्रवेश करके] अरे अब छोड़ो भी ! क्या दस्तावेज़ लिखाओगे बेचारे से ! दे भी दो जो मांगता है.

भाई जी : तुम्हीं इन लड़कों को ख़राब करती हो, पहले तो चलन से चलते नहीं और फिर जब जेब ख़ाली हो गई तो चले आए भाई जी के पास रुपये मांगने.

सीता : अच्छा, अब दे भी दो.

भाई जी : अब फिर ट्रंक खोलना पड़ेगा. बड़ी मुसीबत है.

[फिर खड़ खड़]

सीता : यह आप हर वक़्त हर चीज़ ट्रंक में क्यों रखते हैं और वह भी ताला बन्द करके ?

भाई जी : और नहीं तो खुला छोड़ जाऊं जो दूसरे दिन एक चीज़ का भी पता न रहे !

नरेश : ख़ैर भाई जी मुझे तो रुपया दे दीजिये, कालिज को देर हुई जा रही है.

भाई जी : [बिगड़ कर] तो फिर घंटा भर पहले होश क्यों न आया ? चीज़ तो निकालने से ही निकलेगी, लो यह दो रुपये, एक एक रुपये के दो नोट हैं. यह लो, एक......दो...... गिन लो अच्छी तरह.

नरेश : भाई जी, आप ने अभी तो गिने हैं.

جا رہی ہے اور اس کے لئے دو' دو روپئے چندہ طے ہوا ہے .

بھائی جی: ہوں ! تو پھر مجھ سے کیوں مانگتے ہو؟ تمہارے روپئے کیا ہوئے؟

نریش : جی' ادھر ذرا دو ایک کتابیں خریدنی پڑیں' روپئے ختم ہوگئے .

بھائی جی: بڑے فضول خرچ ہوگئے ہو . دیکھو' پانچ روپئے میں پہلے ادھار دے چکا ہوں . وہ تم نے ابھی تک نہیں لوٹائے ہیں. ایک مہینے کا وعدہ تھا اور دو مہینے ہوگئے. اس طرح کام نہیں چلے گا برخوردار !

نریش : [عادت کو جانتے ہوئے] بھائی جی ابھی تو دے دیجئے' پھر گھر سے روپئے آنے پر سب لوٹا دوں گا .

بھائی جی: میں لین دین کے معاملے میں بڑا سخت ہوں' سمجھے. اگر اب کے پہلی تاریخ کو روپئے نہ لوٹائے تو تمہارے باپ کو خط لکھوں گا .

نریش : [گھبرا کر] ارے ! ارے ! کہیں ایسا غضب نہ کر دینا بھائی جی !

بھائی جی: تو پھر کرو وعدہ کہ پہلی تاریخ تک ضرور نقد سات روپئے لوٹا دوں گا .

سیتا : [سیتا کا پرویش کرکے] ارے اب چھوڑو بھی ! کیا دستاویز لکھواؤگے بیچارے سے ! دے بھی دو جو مانگتا ہے .

بھائی جی: تمہیں ان لڑکوں کو خراب کرتی ہو . پہلے تو چلن سے چلتے نہیں اور پھر جب جیب خالی ہوگئی تو چلے آئے بھائی جی کے پاس روپئے مانگنے .

سیتا : اچھا' اب دے بھی دو .

بھائی جی: اب پھر ٹرنک کھولنا پڑیگا . بڑی مصیبت ہے .

[پھر کھڑ کھڑ]

سیتا : یہ آپ ہر وقت ہر چیز ٹرنک میں کیوں رکھتے ہیں اور وہ بھی تالا بند کرکے ؟

بھائی جی: اور نہیں تو کھلا چھوڑ جاؤں جو دوسرے دن ایک چیز کا بھی پتہ نہ رہے !

نریش : خیر بھائی جی مجھے تو روپیہ دے دیجئے' کالج کو دیر ہوئی جا رہی ہے .

بھائی جی: [بگڑ کر] تو پھر گھنٹہ بھر پہلے ہوش کیوں نہ آیا . چیز تو نکالنے سے ہی نکلے گی. لو یہ دو روپئے . ایک ایک روپئے کے دو نوٹ ہیں، یہ لو' ایک......دو......گن لو اچھی طرح ؟

نریش : بھائی جی آپ نے ابھی تو گنے ہیں .

शक्की

नौकर : [जल्दी में] भाई जी, भाई जी, ज़रा चार आने दे दीजिये.

भाई जी : [भारी रोबीली आवाज़ से] चार आने क्यों ?

नौकर : बाहर फेरी वाला आया है, माता जी कुछ ले रही हैं, चार आने मंगाए हैं.

भाई जी : अच्छा ज़रा ठैहर. अभी ट्रंक खोल कर देता हूं. [कुछ खड़खड़ की आवाज़] हूं ! कितने पैसे मांगे थे ?

नौकर : चार आने.

भाई जी : [स्वगत] हूं ! यह नोटों का खाना, हां, नोट तो पूरे हैं. यह रुपये भी गिन लूं...एक......दो.......तीन

नौकर : भाई जी जल्दी कीजिये, खोंचे वाला इतने में चल भी देगा.

भाई जी : अरे तो क्या पैसे मैंने यहां फ़र्श पर बिखेर रखे हैं कि जो आप बटोर कर ले जाए. ठैहर, गिन कर दूंगा [फिर] चार...पांच....छः, हां ठीक है. यह रेज़गारी का खाना......इसे भी गिन लूं...-..हां, ले यह चार आने और माता जी से कहियो कि अभी हिसाब में लिख लें, एक...दो......तीन...चार, देख चार इकन्नियां हैं, गिन ले फिर से.

नौकर : अभी तो आप ने गिनी हैं.

भाई जी : तो क्या हुआ, इन्सान से ग़लती भी हो सकती है, चल गिन... ..

नौकर : देखिये यह रहे, लो देखो......एक........दो......तीन......चार, यह चार इकन्नियां, अब तो ठीक !

भाई जी : हां ठीक है, चल अब जा, [स्वगत] यह आजकल के लड़के भी कितने लापरवाह होते जा रहे हैं. इन का राज होगा तो रोज़ घर लुटाया करेंगे, हूं !

नौकर : [जाते हुए] अरे भाई जी ! यह नरेश आप से मिलने आए हैं.

भाई जी : भेज दे, मैं ज़रा बटुआ रख लूं.

[फिर ट्रंक बन्द करने की खड़ खड़]

नरेश : [प्रवेश करके ज़रा हिचकिचाते हुये] भाई जी नमस्ते ! ज़रा दो रुपये चाहिये थे.

भाई जी : [ज़रा भारी रोबीली आवाज़ से] अब तुझे रुपये क्यों चाहिये ?

नरेश : कालिज में प्रोफ़ेसर वर्मा रिटायर हो रहे हैं, उन्हीं के सम्मान में लड़कों की तरफ़ से एक पार्टी दी

شکی

نوکر : [جلدی میں] بھائی' بھائی جی' ذرا چار آنے دے دیجئے .

بھائی جی: [بھاری رعبیلی آواز سے] چار آنے کیوں ؟

نوکر : باہر پھیری والا آیا ہے' ماتا جی کچھ لے رہی ہیں' چار آنے منگائے ہیں .

بھائی جی: اچھا ذرا ٹھہر . ابھی ٹرنک کھول کر دیتا ہوں. [کچھ کھڑ کھڑ کی آواز] ہوں ! کتنے پیسے مانگے تھے ؟

نوکر : چار آنے .

بھائی جی: [سوگت] ہوں ! یہ نوٹوں کا خانہ' ہاں' نوٹ تو پورے ہیں . یہ روپئے بھی گن لوں......ایک ......دو......تین......

نوکر : بھائی جی جلدی کیجئے' خونچے والا تو اتنے میں چل بھی دیگا .

بھائی جی: ارے تو کیا پیسے میں نے یہاں فرش پر بکھیر رکھے ہیں کہ جو آئے بٹور کر لے جائے . ٹھہر' گن کر دونگا [پھر] چار......پانچ......چھ' ہاں ٹھیک ہے . یہ ریزگاری کا خانہ......اسے بھی گن لوں......ہاں' لے یہ چار آنے . اور ماتا جی سے کہیو کہ ابھی حساب میں لکھ لیں. لے' ایک ......دو......تین......چار' دیکھ چار اکنیاں ہیں . گن لے پھر سے .

نوکر : ابھی تو آپ نے گنی ہیں .

بھائی جی: تو کیا ہوا' انسان سے غلطی بھی ہو سکتی ہے . چل گن......

نوکر : دیکھئے یہ رہے' لو دیکھو......ایک......دو تین......چار' یہ چار اکنیاں . اب تو ٹھیک !

بھائی جی: ہاں ٹھیک ہے' چل اب جا . [سوگت] یہ آج کل کے لڑکے بھی کتنے لاپرواہ ہوتے جا رہے ہیں. ان کا راج ہوگا تو روز گھر لٹایا کرینگے . ہوں !

نوکر : [جاتے ہوئے] ارے بھائی جی ! یہ نریش آپ سے ملنے آئے ہیں .

بھائی جی: بھیج دو . میں ذرا بٹوا رکھ لوں .

[پھر ٹرنک بند کرنے کی کھڑ کھڑ]

نریش : [پرویش کرکے ذرا ہچکچاتے ہوئے] بھائی جی' نمستے . ذرا دو روپئے چاہئے تھے .

بھائی جی: [ذرا بھاری رعبیلی آواز سے] اب تجھے روپئے کیوں چاہئے ؟

نریش : کالج میں پروفیسر ورما رٹائر ہو رہے ہیں' انہیں کے سمان میں لڑکوں کی طرف سے ایک پارٹی دی

है. इसी तरह "चोर" "शाह" और "शाह" "चोर" होते रहते हैं और खेल जब तक चाहे जारी रहता है.

14—"बूझ बुझव्वल" अता पता

इस लेख में पहेलियां या पूछने की कहानियां पूछी और बताई जाती हैं. पहेली जिस चीज़ की होती है उस का कुछ इशारा बताने को अता पता बताना कहते हैं.

15—"बदाली"

यह डन्डे खेलने का एक तरीक़ा है.

16—"बैत बाज़ी" या "अन्ताक्षरी"

यह एक मशहूर खेल है जिसमें एक लड़का कोई शेर कहता है और जिस हर्फ़ से वह शेर ख़त्म होता है उस हर्फ़ से शुरू होने वाला कोई शेर फ़ौरन पास से दूसरे लड़के को कहना पड़ता है. इसी तरह दो लड़कों में या कई कई लड़कों में चक्कर चलता रहता है. जिसने ज़रा देर की वह हार गया.

17—"पच्चीसी"

यह चौसर की क़िस्म का एक खेल है जो सात कौड़ियों से खेला जाता है.

18—"ताश बादला"

यह गंजीफ़ा की तरह का एक खेल होता है जिसके पत्ते रेशम के कपड़े के होते हैं.

19—टिली लिलि"

बच्चे बीच की उंगली नचाकर "टिली लिलि" कह कर किसी ख़ास बात पर एक दूसरे को चिढ़ाते हैं.

20—"टंगड़ी टंगड़ी"

इस खेल में बच्चे एक टांग पर दूर तक चलकर जाते हैं. जिस की टांग बीच में थक जाती है वह हार जाता है.

21—"चांईं मांईं"

एक क़िस्म का नाच है.

22—"चंदा मामूं"

बच्चे अक्सर चांद को चंदा मामूं कहते हैं. माएं अक्सर बच्चों को यह लोरी दे कर सुलाती हैं :—

चंदा मामूँ दूर के, बड़े पकावें बूर के
आप खावें थाली में, हमें देवें पाली में
पाली गई टूट, चंदा मामूँ गए रूठ
पाली आई और, चंदा मामूँ आए दौड़

23—"छिछली खिलाना"

हौज़ या तालाब के पानी में बच्चे इस तरह ढेले फेंकते हैं कि ढेला फ़ौरन डूब न जाये बल्कि कुछ दूर तक पानी पर गत्ते खाता चला जाये.

ہوتے رہتے ہیں اور کھیل جب تک چاہے جاری رہتا ہے ۔

14—" بوجھ بجھول " اتا پتا ۔

اس کھیل میں پہیلیاں یا پوچھنے کی کہانیاں پوچھی اور بتائی جاتی ہیں ۔ پہیلی جس چیز کی ہوتی ہے اس کا کچھ اشارہ بتانے کو اتاپتا بتانا کہتے ہیں۔

15—" بدلی "

یہ ڈنڈے کھیلنے کا ایک طریقہ ہے ۔

16—" بیت بازی یا انتاکچھری "

یہ ایک مشہور کھیل ہے جس میں ایک لڑکا کوئی شعر کہتا ہے اور جس حرف سے وہ شعر ختم ہوتا ہے اس حرف سے شروع ہونے والا کوئی شعر فوراً پاس کے دوسرے لڑکے کو کہنا پڑتا ہے۔ اسی طرح دو لڑکوں میں یا کئی کئی لڑکوں میں چکر چلتا رہتا ہے۔ جس نے ذرا دیر کی وہ ہار گیا ۔

17—" پچیسی "

یہ چوسر کی قسم کا ایک کھیل ہے ۔ جو سات کوڑیوں سے کھیلا جاتا ہے ۔

18—" تاش بادلا "

یہ گنجیفہ کی طرح کا ایک کھیل ہوتا ہے جس کے پتے گنجیفہ کی طرح کے ریشم کے کپڑے کے ہوتے ہیں ۔

19—" ٹلی لی لی "

بچے بیچ کی انگلی نچا کر " ٹلی لی لی " کہکر کسی خاص بات پر ایک دوسرے کو چڑھاتے ہیں ۔

20—" ٹنگڑی ٹنگڑی "

اس کھیل میں بچے ایک ٹانگ پر دور تک چل کر جاتے ہیں ۔ جس کی ٹانگ بیچ میں تھک جاتی ہے وہ ہار جاتا ہے ۔

21—" چائیں مائیں "

ایک قسم کا ناچ ہے ۔

22—" چندا ماموں "

بچے اکثر چاند کو چندا ماموں کہتے ہیں ۔ مائیں اکثر بچوں کو یہ لوری دے کر سلاتی ہیں ۔

چندا ماموں دور کے، بڑے پکاویں بور کے
آپ کھاویں تھالی میں، ہمیں دیویں پیالی میں
پیالی گئی ٹوٹ، چندا ماموں گئے روٹھ
پیالی آئی اور، چندا ماموں آئے دوڑ

23—" چھچھلی کھلانا "

حوض یا تالاب کے پانی میں بچے اس طرح ڈھیلے پھینکتے ہیں کہ ڈھیلا فوراً ڈوب نہ جائے بلکہ کچھ دور تک پانی پر گتے کھاتا چلا جائے ۔

लड़के इधर उधर छुप जाते हैं. फिर उसकी आंख खोल दी जाती है. वह और लड़कों को ढूंढता है. जिस लड़के को वह पहले ढूंढ ले और छू ले अब उसकी आंख बन्द की जाती है और दूसरे सब छुपते हैं. छुपने वाले लड़के अगर छुए जाने से पहले उसी जगह आजायें जहां एक लड़के की आंख बन्द की गयी थी तो फिर उनका छुआ जाना, छुआ जाना नहीं माना जाता.

11—"आंखमुची धप"

एक लड़के की आंखें बन्द करके दूसरे कई लड़के उसके धप यानी तड़ी लगाते हैं. फिर उसकी आंख खोल कर पूछते हैं कि बताओ किसने मारा. अगर उसने ठीक बता दिया तो फिर जिस लड़के को बता दिया वह "चोर" बनता है और इसकी आंखें बन्द की जाती हैं, नहीं तो फिर पहले लड़के की आंखें बन्द की जाती हैं.

12—"आंखों से उठाना"

अक्सर लड़के या लड़कियां गेंदे का एक फूल लेकर बारी बारी एक दूसरे की तरफ़ फेंकते हैं. जो ठीक बोच ले यानी ले ले वह फिर दूसरे की तरफ़ फेंकता है और जिस के हाथ से फूल गिर जाये इसे फिर फूल ज़मीन के ऊपर से आंखों से उठाना पड़ता है.

आंखों से उठाने के मानी किसी चीज़ को बहुत प्यार से उठाने के लिये होते हैं.

13—"बिल्ली रैया" "गोट बुझाइ"

यह खेल कई लड़के मिल कर खेलते हैं. एक लड़का दोनों हाथों को मिला कर उनमें एक गोट लेता है. फिर दोनों हाथों को अलग अलग करके मुट्ठियां बन्द कर लेता है. इसके बाद बाक़ी लड़कों में से एक एक से बारी बारी पूछता है बताओ गोट किस हाथ में है. जो लड़का ठीक बता देता है वह "शाह" गिना जाता है, जो नहीं बता सकता वह बाक़ी सब का "चोर" कहलाता है. फिर पहला लड़का अपने पांव के अंगूठे की घाई में वही गोट या एक ठीकरी या कहीं कहीं एक गन्ने का टुकड़ा रख कर ज़ोर से दूर फेंकता है. "चोर" लड़का एक पांव पर चलकर जाता है और एक सांस में "बिल्ली रैया" कहता हुआ गोट को पांव से उठा कर लाकर फेंकने वाले तक पहुंचाता है. अगर वह एक सांस में यह काम करले तो फिर "चोर" नहीं रहता "शाह" हो जाता है और जब तक न कर पावे "चोर" बना रहता है और बार बार यही होता रहता है. वही लड़का बार बार इसी तरह फेंकता रहता है और वही "चोर" उसे बार बार लाने की कोशिश करता रहता है. जब वह "चोर" लड़का एक के मुक़ाबिले में 'शाह' हो जाता है तो दूसरा "शाह" लड़का इसी तरह ठीकरी फेंक कर उससे मंगवाता

لڑکے اِدھر اُدھر چھپ جاتے ہیں۔ پھر اُس کی آنکھ کھول دی جاتی ہے۔ وہ اور لڑکوں کو ڈھونڈھتا ہے۔ جس لڑکے کو وہ پہلے ڈھونڈھ لے اور چھو لے اب اُسکی آنکھ بند کی جاتی ہے اور دوسرے سب چھپتے ہیں۔ چھپنے والے لڑکے اگر چھوئے جانے سے پہلے اُسی جگہ آ جائیں جہاں ایک لڑکے کی آنکھ بند کی گئی تھی تو پھر اُن کا چھوا جانا' چھوا جانا نہیں مانا جاتا۔

11—" آنکھ موچی دھپ "

ایک لڑکے کی آنکھیں بند کر کے دوسرے کئی لڑکے دھپ یعنی تڑی لگاتے ہیں۔ پھر اُسکی آنکھ کھولکر پوچھتے ہیں کہ بتاؤ کسی نے پہلے مارا۔ اگر اس نے ٹھیک بتا دیا تو پھر جس لڑکے کو بتا دیا وہ ' چور ' بنتا ہے اور اُسکی آنکھیں بند کی جاتی ہیں' نہیں تو پھر پہلے لڑکے کی آنکھیں بند کی جاتی ہیں۔

12—" آنکھوں سے اُٹھانا ."

اکثر لڑکے یا لڑکیاں گیندے کا ایک پھول لے کر باری باری ایک دوسرے کی طرف پھینکتے ہیں۔ جو ٹھیک بوچ لے یعنی لے لے وہ پھر دوسرے کی طرف پھینکتا ہے اور جس کے ہاتھ سے پھول گر جائے اُسے پھر پھول زمین کے اوپر سے آنکھوں سے اُٹھانا پڑتا ہے۔

آنکھوں سے اُٹھانے کے معنی کسی چیز کو بہت پیار سے اُٹھانے کے لئے ہوتے ہیں۔

13—"بلی ریا" " گوٹ بجھائی"

یہ کھیل کئی لڑکے مل کر کھیلتے ہیں۔ ایک لڑکا دونوں ہاتھوں کو ملا کر اُن میں ایک گوٹ لیتا ہے۔ پھر دونوں ہاتھوں کو الگ الگ کر کے مٹھیاں بند کر لیتا ہے۔ اِس کے بعد باقی لڑکوں میں سے ایک ایک سے باری باری پوچھتا ہے بتاؤ گوٹ کس ہاتھ میں ہے۔ جو لڑکا ٹھیک بتا دیتا ہے وہ " شاہ " گنا جاتا ہے' جو نہیں بتا سکتا وہ باقی سب کا " چور " کہلاتا ہے۔ پھر پہلا لڑکا اپنے پاؤں کے انگوٹھے کی گھائی میں وہی گوٹ یا ایک گول ٹھیکری یا کہیں کہیں ایک گنے کا ٹکڑا رکھکر زور سے دور پھینکتا ہے۔ " چور " لڑکا ایک پاؤں پر چلکر جاتا ہے اور ایک سانس میں " بلی ریا بلی ریا " کہتا ہوا گوٹ کو پاؤں سے اُٹھا کر لا کر پھینکنے والے تک پہنچاتا ہے۔ اگر وہ ایک سانس میں یہ کام کر لے تو پھر وہ "چور" نہیں رہتا " شاہ " ہو جاتا ہے اور جب تک نہ کر پاوے " چور " بنا رہتا ہے اور بار بار یہی ہوتا رہتا ہے۔ وہی لڑکا بار بار اُسی طرح پھینکتا رہتا ہے اور وہی " چور " اُسے بار بار لانے کی کوشش کرتا رہتا ہے۔ جب وہ " چور " لڑکا ایک کے مقابلے میں " شاہ " ہو جاتا ہے تو دوسرا " شاہ " لڑکا اِسی طرح ٹھیکری پھینک کر اُس سے منگواتا ہے۔ اِسی طرح " چور " " شاہ " اور " شاہ " " چور "

"वकिंग या एकिंग" एक खेल का नाम है जो पटे की तरह खेला जाता है और जिस में ढाल नहीं होती. हर खेलने वाले के हाथ में केवल एक लकड़ी होती है, जिसे डंडा कहते हैं, खेलते जाते हैं और कहते जाते हैं:—"यक रंग, यक दिल, यक जान."

7—"अंटा"

"अंटा" एक खेल का नाम है जो हाथी दांत की गोलियों से एक मेज़ पर खेलते हैं. उस मेज़ को "अंटा" मेज़ कहते हैं.

अफ़यून की बड़ी गोली को भी "अंटा" कहते हैं—जैसे वह आदमी अफ़यून का "अंटा" खाता है.

8—"अनमिली"

यह पढ़े लिखे लड़कों का खेल है. कई लड़के मिल कर बैठ जाते हैं. एक लड़का कोई एक शब्द कहता है जो उसकी निगाह में किसी फ़िक्रे या शेर का पहला शब्द होता है. दूसरा लड़का कोई दूसरा शब्द कहता है. तीसरा कोई और शब्द कहता है. इस तरह वह फ़िक़्रा या शेर कुछ का कुछ हो जाता है. आख़ीर में एक लड़के को फ़िक़्रा या शेर पूरा करना होता है. यह हर एक को फटाफट कहना होता है, वक़्त नहीं दिया जाता. जिसे ज़रा भी देर लगी वह समझा जाता है हार गया.

कभी कभी कुछ ऐसे शब्द ढूंढे जाते हैं जिनमें ज़ाहिरा देखने से कोई सम्बन्ध दिखाई न दे और फिर देखा जाता है कि कौन झट से कोई ऐसा शेर या वाक्य सुना दे जिस में वह सब शब्द आते हों, वही जीत जाता है.

9—"आंख झपकना या आंख लड़ाना"

छोटे छोटे बच्चे आपस में शर्त लगा कर आंख लड़ाते हैं. जिस की आंख पहले झपक गई वह समझा जाता है हार गया.

"आंख झपकना" नींद आने के मानी में भी आता है और दब जाने, शरमिन्दा होने, झेंपने या डर जाने के मानी में भी आता है.

दुश्मन से लड़ाई के वक़्त आंख मिलाये रखने को भी आंख लड़ाना कहते हैं. जिस की नज़र चूक जाती है वह चोट खा जाता है.

आंख के पचासों मुहावरे हैं जैसे—आंख आना, आंख मारना, आंख बचाना, आंख लड़ाना, आंख जाना, आंख फेरना, आंख पलटना, आंख मिलाना, आंख चुराना, आंख उठाना, आंख लगाना वग़ैरा वग़ैरा.

10—"आंख मिचोली"

"इसे आंख मिचोली" या "आंख मुचव्वल" भी कहते हैं. बहुत से लड़के मिलकर खेलते हैं. पहले उनमें से एक किसी एक की आंखें अपने हाथों से बन्द कर देता है. सब

"پھکنگ یا ایکنگ" ایک کھیل کا نام ہے جو پٹے کی طرح کھیلا جاتا ہے اور جس میں ڈھال نہیں ہوتی. ہر کھیلنے والے کے ہاتھ میں کیول ایک لکڑی ہوتی ہے' جسے ڈنڈا کہتے ہیں' کھیلتے جاتے ہیں اور کہتے جاتے ہیں—"یک رنگ' یک دل' یک جان."

7—"انٹا"

"انٹا" ایک کھیل کا نام ہے جو ہاتھی دانت کی گولیوں سے ایک میز پر کھیلتے ہیں . اس میز کو "انٹا" میز کہتے ہیں .

افیون کی بڑی گولی کو بھی "انٹا" کہتے ہیں . —جیسے وہ آدمی افیون کا "انٹا" کھاتا ہے.

8—"ان ملی"

یہ پڑھے لکھے لڑکوں کا کھیل ہے . کئی لڑکے ملکر بیٹھ جاتے ہیں . ایک لڑکا کوئی ایک شبد کہتا ہے جو اسکی نگاہ میں کسی فقرے یا شعر کا پہلا شبد ہوتا ہے . دوسرا لڑکا کوئی دوسرا شبد کہتا ہے . تیسرا کوئی اور شبد کہتا ہے . اس طرح وہ فقرہ یا شعر کچھ کا کچھ ہوجاتا ہے . آخیر میں ایک لڑکے کو فقرہ یا شعر پورا کرنا ہوتا ہے . یہ ہر ایک کو پھٹاپھٹ کہنا ہوتا ہے' وقت نہیں دیا جاتا. جسے ذراسی بھی دیر لگی وہ سمجھا جاتا ہے ہار گیا .

کبھی کبھی کچھ ایسے شبد ڈھونڈھے جاتے ہیں جن میں ظاہرہ دیکھنے سے کوئی سمبندھ دکھائی نہ دے اور پھر دیکھا جاتا ہے کہ کون جھٹ سے کوئی ایسا شعر یا واکیہ سنادے جس میں وہ سب شبد آتے ہوں' وہی جیت جاتا ہے .

9—" آنکھ جھپکنا یا آنکھ لڑانا "

چھوٹے چھوٹے بچے آپس میں شرط لگاکر آنکھ لڑاتے ہیں . جس کی آنکھ پہلے جھپک گئی وہ سمجھا جاتا ہے ہار گیا .

" آنکھ جھپکنا " نیند آنے کے معنی میں بھی آتا ہے اور دب جانے' شرمندہ ہونے' جھینپنے یا ڈر جانے کے معنی میں بھی آتا ہے .

دشمن سے لڑائی کے وقت آنکھ ملائے رکھنے کو بھی آنکھ لڑانا کہتے ہیں . جس کی نظر چوک جاتی ہے وہ چوٹ کھا جاتا ہے .

آنکھ کے پچاسوں محاورے ہیں جیسے—آنکھ آنا' آنکھ مارنا' آنکھ بچانا' آنکھ لڑانا' آنکھ جانا' آنکھ پھیرنا' آنکھ پلٹنا' آنکھ. جھپکنا' آنکھ ملانا' آنکھ چرانا' آنکھ اٹھانا' آنکھ لگانا وغیرہ وغیرہ .

10—" آنکھ مچولی."

اسے " آنکھ مچولی " یا " آنکھ مچول " بھی کہتے ہیں . بہت سے لڑکے ملکر کھیلتے ہیں. پہلے ان میں سے ایک کسی ایک کی آنکھیں اپنے ہاتھوں سے بند کر دیتا ہے. سب

कुछ बच्चे अगर एक जगह बैठे हों और इत्तफ़ाक़ से किसी तरफ़ से हवा निकलने की आवाज़ आये या कुछ बू आये और यह पता न चले कि किस लड़के से आयी है तो सब लड़के यह कह उठते हैं :—

"अदन पदन नोन चबदन. जब तक हम न बोलें कानी चिड़िया न बोले."

इस के बाद सब एक दम चुप हो जाते हैं. इस चुप हो जाने को कहते हैं "अदन पदन किये बैठे हैं" या "अदन पदन हो गयी है कोई बोलता ही नहीं."

इस के बाद अगर कोई लड़का बोल दिया तो समझा जाता है कि वही क़सूरवार है और सब लड़के मिलके कहने लगते हैं—"छाती खोल दे ! छाती खोल दे !"

3—"अद्धा"

यह केवल दो लड़कों के बीच होता है. कोई दो लड़के आपस में यह समझौता कर लेते हैं कि अगर हम में से कोई एक दूसरे को कोई चीज़ खाते देखे या कोई खास चीज़ खरीदते देखले तो देखने वाला फ़ौरन कहेगा "अद्धा" और खाने वाले लड़के को या खरीदने वाले लड़के को जो चीज़ भी वह खाता हो या खरीदता हो उसका आधा फ़ौरन "अद्धा" कह देने वाले लड़के को दे देना पड़ेगा. इस तरह दोनों उस चीज़ को बांट कर खा लेते हैं. इस समझौते को दोनों लड़के हमेशा प्रेम के साथ निभाते हैं.

"अद्धा" हर चीज़ के आधे को कहते हैं—खासकर शराब, तेल वग़ैरा की आधी बोतल को. कनकव्वे या पतंग को भी "अद्धा" कहते हैं. एक तरह की छोटी सी घोड़ागाड़ी को भी 'अद्धा" कहते हैं. तबले की जोड़ी में से भी एक को "अद्धा" कहते हैं. तबले और पखावज की एक ताल का भी नाम अद्धा है. इसीलिये साढ़े बारह ताल मशहूर हैं. जाम्दानी, मलमल वग़ैरा का थान भी 'अद्धा' कहलाता है.

4—"घरौं घरौं घी की चरौं"

कई लड़के पांव फैला कर बैठ जाते हैं. सब के पांव बीच में मिले होते हैं. फिर एक एक लड़का बारी बारी सब के पैरों पर हाथ फेर कर कहता है 'घरौं घरौं घी की चरौं". एक एक लड़का कई कई बार यह शब्द मुंह से निकालता है.

5—"अक्कन, बक्कन"

जब कोई लड़का कोई बेतुकी या बेमानी बात कहता है या बे सिर पैर की गप चलाता है तो बाक़ी लड़के कहते हैं :—

"अक्कन, बक्कन, तीती तक्कन, तीती न छोड़ी डोर, मेरा बाबा मैं तेरा चोर, चोरा मारूं पंजा तोड़."

6—"इलिंगा"

کچھ بچے اگر ایک جگہ بیٹھے ہوں اور اتفاق سے کسی طرف سے ہوا نکلنے کی آواز آئے یا کچھ بو آئے اور یہ پتہ نہ چلے کہ کس لڑکے سے آئی ہے تو سب لڑکے یہ کہہ اٹھتے ہیں :—

"ادن پدن نون چبدن . جب تک ہم نہ بولیں کانی چڑیا نہ بولے."

اس کے بعد سب ایک دم چپ ہو جاتے ہیں . اس چپ ہوجانے کو کہتے ہیں "ادن پدن کئے بیٹھے ہیں" یا "ادن پدن ہوگئی ہے کوئی بولتا ہی نہیں".

اس کے بعد اگر کوئی لڑکا بول دیا تو سمجھا جاتا ہے کہ وہی قصوروار ہے اور سب لڑکے ملکے کہنے لگتے ہیں —"چھاتی کھول دے ! چھاتی کھول دے !"

3—"آدھا"

یہ کھیل دو لڑکوں کے بیچ ہوتا ہے . کوئی دو لڑکے آپس میں یہ سمجھوتہ کرلیتے ہیں کہ اگر ہم میں سے کوئی ایک دوسرے کو کوئی چیز کھاتے دیکھے یا کوئی خاص چیز خریدتے دیکھ لے تو دیکھنے والا فوراً کہیگا "آدھا" اور کھانے والے لڑکے کو یا خریدنے والے لڑکے کو جو چیز بھی وہ کھاتا ہو یا خریدتا ہو اس کا آدھا فوراً "آدھا" کہدینے والے لڑکے کو دے دینا پڑیگا . اس طرح دونوں اس چیز کو بانٹ کرکھا لیتے ہیں. اس سمجھوتے کو دونوں لڑکے ہمیشہ پریم کے ساتھ نبھاتے ہیں .

"آدھا" ہر چیز کے آدھے کو کہتے ہیں—خاصکر شراب' تیل وغیرہ کی آدھی بوتل کو. کنکوے یا پتنگ کو بھی "آدھا" کہتے ہیں . ایک طرح کی چھوٹی سی گھوڑا گاڑی کو بھی "آدھا" کہتے ہیں . تبلے کی جوڑی میں سے بھی ایک کو "آدھا" کہتے ہیں . تبلے اور پکھاوج کی ایک تال کا بھی نام "آدھا" ہے . اسی لئے ساڑھے بارہ تال مشہور ہیں. جامدانی' ململ وغیرہ کا تھان بھی "آدھا" کہلاتا ہے.

4—"گھروں گھروں گھی کی چروں"

کئی لڑکے پاؤں پھیلا کر بیٹھ جاتے ہیں . سب کے پاؤں بیچ میں ملے ہوتے ہیں . پھر ایک ایک لڑکا باری باری سب کے پیروں پر ہاتھ پھیر کر کہتا ہے "گھروں گھروں گھی کی چروں ." ایک ایک لڑکا کئی کئی بار یہ شبد منھ سے نکالتا ہے .

5—"اکن بکن"

جب کوئی لڑکا کوئی بے تکی یا بے معنی بات کہتا ہے یا بے سر پیر کی گپ چلاتا ہے تو باقی لڑکے کہتے ہیں:—

"اکن' بکن' تیتی' تکن' تیتی نہ چھوڑی ڈور' تو میرا بابا میں تیرا چور' چورا ماروں پنجا توڑ."

6—"اِلنگ"

है कि वह अपने दिमाग़ की थकन और दिल के मुर्झायेपन को दूर करने और दिल और दिमाग़ दोनों को आराम पहुंचा कर फिर से ताज़ा करने के लिये कोई न कोई खेल अपने लिये चुन लें. खेल सैकड़ों तरह के होते हैं. बचपन खेलों का ज़माना होता है. लेकिन बड़े होकर भी, यहां तक कि बुढ़ापे में भी, खेल खेलना और सैर व मनोरंजन करना शरीर, दिल और दिमाग़ तीनों की सेहत के लिये ज़रूरी है.

इस लेख में मैं थोड़े से खेलों का ज़िक्र करना चाहता हूं जो भारत के हिन्दू, मुसलमान, सिख और सब बच्चे मोहल्लों में, सड़कों पर, घरों में और बाज़ारों में खेला करते हैं. इन खेलों की भाषा एक अनोखे ढंग की सुन्दर भाषा होती है. बच्चों के वह बोल ऐसे सुहावने, मीठे और रसीले होते हैं कि बड़े से बड़े साहित्यकार के लिये भी इन बेमानी जुमलों में देश की भाषा और समाजी ज़िन्दगी की जानकारी के लिये काफ़ी सामान मिल सकता है.

नीचे लिखे खेलों में साहित्य यानी अदबी रंग कहां तक है इसका अंदाज़ा हर एक अपनी तबियत और अपनी रुचि के अनुसार लगा सकता है. जिस तरह मुल्कों की अलग अलग आबो हवा, रीत रिवाज और लोगों की अलग अलग तबियतों के अनुसार लोगों के खाने अलग अलग होते हैं उसी तरह अपनी अपनी तबियतों और हालात के अनुसार लोगों की साहित्यिक पसन्द भी अलग अलग होती है.

1.—"अटकन मटकन"

छोटे बच्चे एक खेल खेलते हैं जिनमें सब अपनी उंगलियां ज़मीन पर टिका देते हैं. फिर एक लड़का अपनी एक उंगली सब के हाथों पर बारी बारी रखता है और कहता है :—

"अटकन मटकन दही चटाखन, अगला झूले, बगला झूले, सावन मास करेला फूले, फूल फूल की डाली, बाबा गये दिल्ली, लाये सात कटोरी, एक कटोरी फूट गई, न्योले की टांग टूट गई, कन्हा लोगे कि छुरी."

दूसरा लड़का जवाब देता है :—"कुन्हा."

फिर पहला लड़का कहता है :—"तेरी मां का पेट ठंडा."

उसके बाद दोनों हाथ उठा कर एक एक लड़का दूसरे लड़के का कान पकड़ कर कहता है :—

"कोई ऐसा सखी है जो चिड़िया के बन्द छुड़ादे ?"

अटकन मटकन औरतों की ज़बान में बेकारी के शग़ल को कहते हैं.

2.—"अदन पदन"

ہے کہ وہ اپنے دماغ کی تھکن اور دل کے مرجھائےپن کو دور کرنے اور دل اور دماغ دونوں کو آرام پہنچا کر پھر سے تازہ کرنے کے لئے کوئی نہ کوئی کھیل اپنے لئے چن لیں. کھیل سیکڑوں طرح کے ہوتے ہیں. بچپن کھیلوں کا زمانہ ہوتا ہے. لیکن بڑے ہوکر بھی، یہاں تک کہ بڑھاپے میں بھی، کھیل کھیلنا اور سیر و منورنجن کرنا شریر، دل اور دماغ تینوں کی صحت کے لئے ضروری ہے.

اس لیکھ میں میں تھوڑے سے ایسے کھیلوں کا ذکر کرنا چاہتا ہوں جو بھارت کے ہندو، مسلمان، سکھ اور سب بچے محلوں میں، سڑکوں پر، گھروں میں اور بازاروں میں کھیلا کرتے ہیں. ان کھیلوں کی بھاشا ایک انوکھے ڈھنگ کی سندر بھاشا ہوتی ہے. بچوں کے یہ بول ایسے سہاونے، میٹھے اور رسیلے ہوتے ہیں کہ بڑے سے بڑے ساہتیہ کار کے لئے بھی ان بےمعنی جملوں میں دیش کی بھاشا اور سماجی زندگی کی جانکاری کے لئے کافی سامان مل سکتا ہے.

نیچے لکھے کھیلوں میں ساہتیک یعنی ادبی رنگ کہاں تک ہے اس کا اندازہ ہر ایک اپنی طبیعت اور اپنی رچی کے انوسار لگا سکتا ہے. جس طرح ملکوں کی الگ الگ آب و ہوا، ریت رواج اور لوگوں کی الگ الگ طبیعتوں کے انوسار لوگوں کے کھانے الگ الگ ہوتے ہیں اسی طرح اپنی اپنی طبیعتوں اور حالات کے انوسار لوگوں کی ساہتیک پسند بھی الگ الگ ہوتی ہے.

1—"اٹکن مٹکن"

چھوٹے بچے ایک کھیل کھیلتے ہیں جس میں سب اپنی انگلیاں زمین پر ٹکا دیتے ہیں. پھر ایک لڑکا اپنی ایک انگلی سب کے ہاتھوں پر باری باری رکھتا ہے اور کہتا ہے :—

"اٹکن مٹکن دہی چٹاخن، اگلا جھولے، بگلا جھولے، ساون ماس کریلا پھولے، پھول پھول کی ڈالی، بابا گئے دلی، لائے سات کٹوری، ایک کٹوری پھوٹ گئی، نیولے کی ٹانگ ٹوٹ گئی، کنڈا لوگے کہ چھری."

دوسرا لڑکا جواب دیتا ہے :—"کنڈا!"

پھر پہلا لڑکا کہتا ہے :—"تیری ماں کا پیٹ ٹھنڈا."

اس کے بعد دونوں ہاتھ اٹھاکر ایک ایک لڑکا دوسرے لڑکے کا کان پکڑ کر کہتا ہے :—

"کوئی ایسا سکھی ہے جو چڑیا کے بند چھڑا دے؟"

اٹکن مٹکن عورتوں کی زبان میں بیکاری کے شغل کو کہتے ہیں.

2—"ادن پدن"

तीसरा क़ानून है नहीं को नहीं करना. इस का मतलब परिमाण के बदलावे में से नये गुनों का निकलना. यह भी निरंतर चलता रहता है. जब भी गुनों का बदलाव होता है तब परिमाणु का बदलाव होता ही है. नई गुन वाली सरकार पुरानी सरकार के लिहाज़ से 'नहीं' नाम वाली समझी जाती है और वही अन्तर प्रवेश और भिन्न तत्वों का प्रयत्न जो निरंतर बदलाव में काम आते हैं यहां भी वही काम करते हैं. इसलिये यहां 'नहीं' एकदम नष्ट हो जाता है. बढ़ती का हर नया रूप क्षणिक, होता है. उस में अगली बढ़ती के बीज छिपे रहते हैं. इसी से यह कहा जाता है कि 'नहीं' का 'नहीं' करना पड़ता है यानी जिस को मिटाया था उसे अमिटाया करना पड़ता है.

تیسرا قانون ہے نہیں کو نہیں کرنا ۔ اسکا مطلب ہے پریمان کے بدلاوے میں سے نئے گنوں کا نکلنا ۔ یہ بھی نرنتر چلتا رہتا ہے ۔ جب بھی گنوں کا بدلاو ہوتا ہے تب پرپمانو کا بدلاو ہوتا ہی ہے ۔ نئی گن والی سرکار پرانی سرکار کے لحاظ سے 'نہیں' نام والی سمجھی جاتی ہے اور وہی انتر پرویش اور بھن تتوں کا پریتن جو نرنتر بدلاو میں کام آتے ہیں یہاں بھی وہی کام کرتے ہیں ۔ اسلئے یہاں 'نہیں' ایکدم نشٹ ہو جاتا ہے ۔ بڑھتی کا ہر نیا روپ چھنک ہوتا ہے ۔ اس میں اگلی بڑھتی کے بیج چھپے رہتے ہیں ۔ اسی سے یہ کہا جاتا ہے کہ 'نہیں' کا 'نہیں' کرنا پڑتا ہے یعنی جس کو مٹایا تھا اُسے امٹایا کرنا پڑتا ہے ۔

बच्चों के खेल और भाषा

(सैयद मोहम्मद अली शाह रहमानी)

खेल भी एक तरह का व्यायाम हैं. खेलों से शरीर की कसरत होती है और बदन के अलग अलग अंगों को जैसे हाथ, पांव, गर्दन, सीना वग़ैरा को बल मिलता है. खेलों से बदन संभला और लचीला रहता है. खेलना हर आदमी के लिये ज़रूरी है.

इमाम ग़ज़ाली अस्सलाम एक बहुत बड़े आलिम और मशहूर सूफ़ी हुए हैं. उनकी किताब "अहयाउलउलूम" तसव्वुफ़ यानी वेदान्त की बड़ी ऊंची और मशहूर किताब है. इस किताब में उन्होंने लिखा है :—

"मैं कहता हूं कि खेल कूद दिल को फ़रहत (ताज़गी) देते हैं. खेल कूद से फ़िक्र (चिन्ता) की थकान कम हो जाती है. दिल का यह हाल है कि जब वह किसी चीज़ से घबराता है तो अंधा हो जाता है. इसलिये उसको आराम देना इस बात के लिये तैयार करना है कि वह फिर काम के क़ाबिल हो जावे. जो आदमी रात दिन नमाज़ पढ़ा करता है उसे भी चाहिये कि कभी कभी ख़ाली बैठा रहे, क्योंकि ख़ाली बैठना आदमी को काम करने के लिये तैयार कर देता है और खेल कूद आदमी को संजीदा (गम्भीर) कामों के करने के लिये तैयार कर देता है."

दिल के मुर्झायेपन, हिम्मत की कमी और सुस्ती दूर करने का सब से अच्छा साधन खेल कूद और सैर तमाशे हैं. ख़ासकर दिमाग़ी काम करने वालों के लिये बेहद ज़रूरी

بچوں کے کھیل اور بھاشا

(سید محمد علی شاہ رحمانی)

کھیل بھی ایک طرح کا ویایام ہیں ۔ کھیلوں سے شریر کی کسرت ہوتی ہے اور بدن کے الگ الگ انگوں کو جیسے ہاتھ، پاؤں، گردن، سینہ وغیرہ کو بل ملتا ہے ۔ کھیلوں سے بدن سنبھلا اور لچیلا رہتا ہے ۔ کھیلنا ہر آدمی کے لئے ضروری ہے ۔

امام غزالی اسلام ایک بہت بڑے عالم اور مشہور صوفی ہوئے ہیں۔ انکی کتاب "احیاءالعلوم" تصوف یعنی ویدانت کی بڑی اونچی اور مشہور کتاب ہے ۔ اس کتاب میں انہوں نے لکھا ہے :—

"میں کہتا ہوں کہ کھیل کود دل کو فرحت (تازگی) دیتے ہیں ۔ کھیل کود سے فکر (چنتا) کی تکان کم ہو جاتی ہے ۔ دل کا یہ حال ہے کہ جب وہ کسی چیز سے گھبراتا ہے تو اندھا ہوجاتا ہے ۔ اس لئے اس کو آرام دینا اس بات کے لئے تیار کرنا ہے کہ وہ پھر کام کے قابل ہوجائے۔ جو آدمی رات دن نماز پڑھا کرتا ہے اسے بھی چاہئے کہ کبھی کبھی خالی بیٹھا رہے، کیونکہ خالی بیٹھنا آدمی کو کام کرنے کے لئے تیار کردیتا ہے اور کھیل کود آدمی کو سنجیدہ (گمبھیر) کاموں کے کرنے کے لئے تیار کردیتا ہے ۔"

دل کے مرجھاۓپن، ہمت کی کمی اور سستی دور کرنے کا سب سے اچھا سادھن کھیل کود اور سیر تماشے ہیں۔ خاصکر دماغی کام کرنے والوں کے لئے بیحد ضروری

आज के व्योपारी संघों की गुत्थियां मामूली कलाकारों के संघ जैसी नहीं हैं. समाज का इतिहास सिर्फ़ इतना ही उलझा हुआ नहीं है जैसा चीज़ों, पौधों, और पशुओं का हुआ करता है. यह बहुत ज़ियादा उलझा हुआ है. इसलिये इस में गुनों की बढ़ती बेहद समाई है.

हम यह जान ही चुके कि विचार, कला और नीति सब अपना अपना इतिहास रखते हैं. क्या उनका इतिहास मामूली है ? क्या इन में जो बदलाव होते हैं वह सिर्फ़ परिमान के ही क्षेत्र में होते हैं. अगर ऐसा होता तो उनकी गुत्थियां इतनी उलझी और कठिन न होतीं जितनी वह पाई जाती हैं. हर मामलों में बड़ा विकास देखने को मिलता है. वह बढ़ती के कई तल में हो कर गुज़र चुकी हैं. उनका उठान कई पड़ाव पार कर चुका है. उन में साफ़ साफ़ गुन भेद दिखाई देता है. कहीं कहीं वह सब के सब गुन में बदल गये हैं और कहीं कहीं ऐसी इकाइयां भी हैं जिन का गुन पहले जैसा नहीं रहा.

दूसरे शब्दों में इसे यों समझिये कि जो कुछ हमें दिखाई देता है, यह कोरा बदलता हुआ जगत नहीं है, यह विकसता हुआ जगत है. एक रूप से दूसरा रूप लेता हुआ जगत है. इस बदलते हुए जगत में हमें मोटे रूप से यह देखने को मिलेगा कि सिर्फ़ रूप बदल रहा है यानी एक आकार दूसरे आकार का रूप ले लेता है, एक रंग दूसरा रंग बन जाता है, एक गंध दूसरी गंध बन जाती है, एक आवाज़ दूसरी आवाज़ बन जाती है और वह भी इतने धीरे धीरे बदलती है कि हमें बदलाव का पता ही नहीं चलता. फिर भी इस बदलाव के पीछे बड़ी तेज़ी से चलने वाली क्रांति रहती है जो साफ़ बता देती है कि जो चीज़ें आकार में बदल रही थीं वह अब गुन में बदल गईं यानी उनकी अब वह ख़ासियत नहीं रही जो पहले थी. सोवियत विचारक ऐसे बदलाव को 'छलांग' के नाम से पुकारता है. क्योंकि यह एक दम परिमान से गुन का रूप ले लेता है. उसका यह भी कहना है कि ज़ोर के विकास में ऐसी 'छलांग' छिपी ही रहती है. जिस बदलाव में छलांगें नहीं होंगी वह परिमान का बदलाव होगा, गुनों का नहीं. ऐसे बदलाव में विकास नहीं होता. छलांग मारने में समय लगता है, इस समय में बढ़ती नये रूप लेती रहती हैं. एक समय ऐसा आ जाता है जब यह कहना मुश्किल हो जाता है कि पानी पानी है या भाप, लड़का लड़का है या जवान, बीज बीज है या पौधा. क्रांति जैसी छलांग लेने में समाज को बर्षों लग सकते हैं. इन बीच के बर्षों में समाज गुनों की डुबकियां लेता रहता है यानी पूंजीवादी से समाजवादी बनता रहता है. बदलाव निरंतर होते रहते हैं. पर उनकी चाल एक सी नहीं होती.

آج کے بیوپاری سنگھوں کی گتھیاں معمولی کلاکاروں کے سنگھ جیسی نہیں ہیں. سماج کا اتہاس صرف اتنا ہی الجھا ہوا نہیں ہے جیسا چیزوں، پودھوں اور پشوؤں کا ہوا کرتا ہے ۔ یہ بہت زیادہ الجھا ہوا ہے ۔ اس لئے اس میں گنوں کی بڑھتی کی بے حد سمائی ہے ۔

ہم یہ جان ہی چکے ہیں کہ وچار، کلا اور نیتی سب اپنا اپنا اتہاس رکھتے ہیں ۔ کیا اُن کا اتہاس معمولی ہے ؟ کیا ان میں جو بدلاؤ ہوتے ہیں وہ صرف پریمان کے ہی چھیتر میں ہوتے ہیں ۔ اگر ایسا ہوتا تو اُن کی گتھیاں اتنی الجھی اور کٹھن نہ ہوتیں جتنی وہ پائی جاتی ہیں ۔ ہر معاملوں میں ہمیں بڑا وکاس دیکھنے کو ملتا ہے ۔ وہ بڑھتی کے کئی تل میں ہو کر گذر چکی ہیں ۔ اُن کا اُٹھان کئی پڑاؤ پار کر چکا ہے ۔ ان میں صاف صاف گن بھید دکھائی دیتا ہے ۔ کہیں کہیں وہ سب کے سب گن میں بدل گئے ہیں اور کہیں کہیں ایسی اکائیاں بھی ہیں جن کا گن پہلے جیسا نہیں رہتا.

دوسرے شبدوں میں اسے یوں سمجھئے کہ جو کچھ ہمیں دکھائی دیتا ہے' یہ کورا بدلتا ہوا جگت نہیں ہے' یہ وکستا ہوا جگت ہے ۔ ایک روپ سے دوسرا روپ لیتا ہوا جگت ہے ۔ اس بدلتے ہوئے جگت میں ہمیں موٹے روپ سے یہ دیکھنے کو ملیگا کہ صرف روپ بدل رہا ہے یعنی ایک آکار دوسرے آکار کا روپ لے لیتا ہے' ایک رنگ دوسرا رنگ بن جاتا ہے' ایک گندھ دوسری گندھ بن جاتی ہے' ایک آواز دوسری آواز بن جاتی ہے اور وہ بھی اتنے دھیرے دھیرے بدلتی ہے کہ ہمیں بدلاؤ کا پتہ ہی نہیں چلتا ۔ پھر بھی اس بدلاؤ کے پیچھے بڑی تیزی سے چلنے والی کرانتی رہتی ہے جو صاف بتا دیتی ہے کہ جو چیزیں آکار میں بدل رہی تھیں وہ اب گن میں بدل گئیں یعنی اُن کی اب وہ خاصیت نہیں رہی جو پہلے تھی ۔ سوویت وچارک ایسے بدلاؤ کو 'چھلانگ' کے نام سے پکارتا ہے. کیونکہ یہ ایک دم پریمان سے گن کا روپ لے لیتا ہے ۔ اُسکا یہ بھی کہنا ہے کہ زور کے وکاس میں ایسی ' چھلانگ ' چھپی ہی رہتی ہے ۔ جس بدلاؤ میں چھلانگیں نہیں ہونگی وہ پریمان کا بدلاؤ ہوگا' گنوں کا نہیں ۔ ایسے بدلاؤ میں وکاس نہیں ہوتا ۔ چھلانگ مارنے میں سمے لگتا ہے' اس سمے میں بڑھتی نئے روپ لیتی رہتی ہیں ۔ ایک سمے ایسا آ جاتا ہے جب یہ کہنا مشکل ہو جاتا ہے کہ پانی پانی ہے یا بھاپ' لڑکا لڑکا ہے یا جوان' بیج بیج ہے یا پودھا ۔ کرانتی جیسی چھلانگ لینے میں سماج کو ورشوں لگ سکتے ہیں ۔ ان بیچ کے ورشوں میں سے سماج گنوں کی ڈبکیاں لیتا رہتا ہے یعنی پونجی وادی سے سماج وادی بنتا رہتا ہے ۔ بدلاؤ نرنتر ہوتے رہتے ہیں ۔ ان کی چال ایک سی نہیں ہوتی ۔

हर बदलाव पहले पहल यह बताता है कि किसी गुन के निखार से जो वस्तु में पहले ही से मौजूद थे परिमान में घटत बढ़त होती है. उदाहरन के लिये अगर पानी गरम किया जाय तो कुछ हद तक वह गरम होता रहेगा, और पानी की तरह पतला बना रहेगा. यानी गरम होने के सिवाय और कुछ नहीं होगा लेकिन अगर इससे ज़ियादा फैलाव में बढ़ा तो उसका गुन बदला जायगा. पानी का पतलापन हवा का रूप ले लेगा और पानी भाप बन जायेगा. यह बदलाव गुन का बदलाव कहलायेगा. क्योंकि भाप गरम पानी का सिर्फ बढ़ा हुआ गुन ही नहीं है, साथ ही साथ यह भी बात है कि नई गुन वाली अवस्था पुराने गुनों से न बिलकुल अलग है न उससे कटी हुई. यह ऐसी चीज़ है कि पुराने गुन ही, चीज़ का परिमान बढ़ते बढ़ते, या घटते घटते, नये गुन बन गये हैं. अगर पानी की गरमी कम कर दी जाय तो नतीजा यह होगा कि पानी ठंडा हो जायगा और बहुत ठंडा हो कर बर्फ़ का रूप ले लेगा. यानी पतलेपन का गुन ठोसपने का गुन बन जायगा. ठोस की अलग ख़ासियतें होती हैं. वह द्रव में नहीं होती. ठोस के टुकड़े किये जा सकते हैं, उससे सहारे का काम लिया जा सकता. पतले से यह काम नहीं लिया जा सकता. पानी में बर्फ़ का एक टुकड़ा भी नहीं मिलेगा जब तक पानी ठंडा हो कर जम न जाय. बर्फ़ अलग मिलता ही नहीं. बीज पेड़ नहीं होता अपने गुनों को लेकर परिमान बढ़ाता है और पेड़ बन जाता है. बीज में न पीड़ होती है न शाखाएं, न पत्ते, छोटे से छोटे रूप में भी नहीं होते. बीज में यह रहते ही नहीं. यह उसी वक़्त आते हैं जब वह बढ़ती के एक तल पर पहुंच जाता है. एक न दो है न दो हो सकता है, लेकिन एक और एक दो होते हैं. परिमान में बढ़ने पर गुन बदल गये. नये गुन ऐसे ही सत्य हैं जैसे पुराने गुन. वह पुराने गुन में ही से तो निकले हैं. परिमान के बदलाव अबेर सबेर नये गुन पैदा करते ही हैं. यह बिलकुल सत्य है कि नये गुनों को बढ़ाने के लिये जो परिमान मौजूद हैं उन परिमानों को बढ़ाना ही चाहिये.

यह नियम सिर्फ भौतिक, रासायनिक और प्रानी क्षेत्र में काम आता हो ऐसा नहीं है. क्या सामाजिक क्षेत्र परिमान का बदलाव दिखा कर ही रह जावेगा? हरगिज़ नहीं. आज का समाज पुराने वक़्तों की तरह इस तरह नहीं बढ़ेगा जिस तरह से बच्चा बढ़कर बड़ा हो जाता है या जैसे पहले क़बीले बहुत बड़े बड़े हो जाते थे. ख़ास ख़ास सामाजिक रूप और ख़ास ख़ास सामाजिक गुत्थियां समाज में उसी वक़्त पैदा हुआ करती हैं जब समाज बढ़ती के किसी ख़ास पड़ाव पर पहुंच जाता है. आज का नया पूंजीवादी कारख़ानेदार कोरा कारीगर नहीं रह जाता.

ہر بدلاؤ پہلے پہل یہ بتاتا ہے کسی گن کے لحاظ سے جو وستو میں پہلے ہی سے موجود تھے پریمان میں گھٹت بڑھت ہوتی ہے ۔ اداہرن کے لئے اگر پانی گرم کیا جائے تو کچھ حد تک وہ گرم ہوتا رہے گا اور پانی کی طرح پتلا بنا رہے گا ۔ یعنی گرم ہونے کے سوائے اور کچھ نہیں ہوگا لیکن اگر اس سے زیادہ پھیلاؤ میں بڑھا تو اس کا گن بدل جائے گا ۔ پانی کا پتلا پن ہوا کا روپ لے لیگا اور پانی بھاپ بن جائے گا ۔ یہ بدلاؤ گن کا بدلاؤ کہلائے گا ۔ کیونکہ بھاپ گرم پانی کا صرف بڑھا ہوا گن ہی نہیں ہے، ساتھ ہی ساتھ یہ بھی بات ہے کہ نئی گن والی اوستھا پرانے گنوں سے نہ بالکل الگ ہے نہ اس سے کٹی ہوئی ۔ یہ ایسی چیز ہے کہ پرانے گن ہی، چیز کا پریمان بڑھتے بڑھتے، نئے گن بن گئے ہیں ۔ اگر پانی کی گرمی کم کر دی جائے تو نتیجہ یہ ہوگا کہ پانی ٹھنڈا ہو جائے گا اور بہت ٹھنڈا ہو کر برف کا روپ لے لیگا ۔ یعنی پتلے پن کا گن ٹھوس پن کا گن بن جائیگا ۔ ٹھوس کی الگ خاصیتیں ہوتی ہیں ۔ وہ درو میں نہیں ہوتی ۔ ٹھوس کے ٹکڑے کئے جا سکتے ہیں، اس سے سہارے کا کام لیا جا سکتا ہے ۔ پتلے سے یہ کام نہیں لیا جا سکتا ۔ پانی میں برف کا ایک ٹکڑا بھی نہیں ملیگا جب تک پانی ٹھنڈا ہو کر جم نہ جائے ۔ برف الگ ملتا ہی نہیں ۔ بیج پیڑ نہیں ہوتا اپنے گنوں کو لے کر پریمان بڑھاتا ہے اور پیڑ بن جاتا ہے ۔ بیج میں نہ پیڑ ہوتی ہے نہ شاخائیں، نہ پتے، چھوٹے سے چھوٹے روپ میں بھی نہیں ہوتے ۔ بیج میں یہ رہتے ہی نہیں ۔ یہ اسی وقت آتے ہیں جب وہ بڑھتی کے ایک تل پر پہونچ جاتا ہے ۔ ایک نہ دو ہے نہ دو ہو سکتا ہے لیکن ایک اور ایک دو ہوتے ہیں ، پریمان میں بڑھنے پر گن بدل گئے ۔ نئے گن ایسے ہی ستیہ ہیں جیسے پرانے گن ۔ وہ پرانے گن میں ہی سے تو نکلے ہیں ۔ پریمان کے بدلاؤ اوبیر سویر نئے گن پیدا کرتے ہی ہیں ۔ یہ بالکل ستیہ ہے کہ نئے گنوں کو بڑھانے کے لئے جو پریمان موجود ہیں ان پریمانوں کو بڑھانا ہی چاہئے ۔

یہ نیم صرف بھوتک، راسائنک اور پرانی چھیتر میں کام آتا ہو ایسا نہیں ہے ۔ کیا سماجک چھیتر پریمان کا بدلاؤ دکھا کر ہی رہ جاویگا ؟ ہرگز نہیں ۔ آج کا سماج پرانے وقتوں کی طرح اس طرح نہیں بڑھیگا جس طرح سے بچہ بڑھکر بڑا ہو جاتا ہے یا جیسے پہلے قبیلے بہت بڑے بڑے ہو جاتے ہیں ۔ خاص خاص سماجک روپ اور خاص خاص سماجک گتھیاں سماج میں اسی وقت پیدا ہوا کرتی ہیں جب سماج بڑھتی کے کسی خاص پڑاؤ پر پہونچ جاتا ہے ۔ آج کا نیا پونجی وادی کارخانےدار کورا کاریگر نہیں رہ جاتا ۔

बहुत कम बात करते हैं, या बिल्कुल बात ही नहीं करते. उनका तो यह बिश्वास है कि यह शायद बेमतलब का विचार है. आज का मनोविज्ञानी मस्तक के बारे में न विश्वास रखता है और न उसी का विस्तार के साथ वर्नन करता है. वह अच्छी तरह जानता है कि हर जानवर के मस्तक होता है और हर जानवर बुद्धि से अपने देह का शासन करता है और उससे काम लेता है. यह केवल आदमी की ही बपौती नहीं है. और यह मस्तक बेमतलब के मन की पैदावार भी नहीं है. इस बात से जानवर ऊंचे उठे हैं या आदमी नीचे गिरा है उसमें भले ही दो राय हों पर इस विचार की वजह से जानवरपने और समझदारी के विचारों में और इसलिये आदमी में भी बड़ा अन्तर आ गया है. दूसरे शब्दों में आदमीपन का विचार बदल गया है, ज़ियादा बड़ा हो गया है. क्योंकि वह तर्क पूर्न तत्व जिनसे यह विचार बना हुआ है बदलते रहते हैं और बढ़ते रहते हैं. विचारों का अपना इतिहास होता है. पुरानों में से नये नये निकलते रहते हैं. ठीक इसी तरह दुनिया की दूसरी चीज़ें बदलती और बढ़ती हैं.

मूल्य के क्षेत्र में भी यही हाल है. कला के काम और नीति के आदर्श ऐसे तत्वों के बने हैं जो आपस में अलग अलग हैं, अलग अलग प्रभाव रखते हैं, अलग अलग अन्तर-क्रिया वाले हैं. यहां भी कोई चीज़ रुकने वाली नहीं हैं. मूल्य के तल पर भी प्रतिवादी तत्व काम करते रहते हैं. उन तत्वों के बिना मूल्य क्षेत्र क़ायम नहीं रह सकता. यह बताना कि प्रयत्न कहां से शुरू हुआ, किस क़िस्म का है, उसका नैतिक कामों पर क्या असर होता है, सुन्दरता की रुचि पर क्या प्रभाव डालता है, इसके लिये मूल्य क्षेत्र की क्रिया की आ-ई समझना चाहिये. ऊपर जो कुछ कहा जा चुका है, इस क्षेत्र में इससे ज़ियादा विचार करना ज़रूरी नहीं.

मार्क्सीवादी डाईलेकटिक्स का पहला नियम यह बताता है कि हम बदलाव की दुनियां में रहते हैं. बदलाव भी ऐसा जो सब चीज़ों पर निरंतर बिना भूल किये हुए अपना असर डालता रहता है. बदलाव के बारे में यह कहना ही सब कुछ नहीं है. इस पर बहुत कहा जा सकता है. दूसरा क़ानून है परिमान (मिक़दार) का गुन (ख़ासियत) में बदल जाना और गुन का परिभाषा में बदल जाना. यह नियम बताता है कि बदलाव परिमान में नहीं होता. इस में गुनों की बढ़ोतरी भी रहती है. पहला नियम अगर इतिहास की रक्षा करता है तो दूसरा नियम इस बात की ज़िम्मेदारी लेता है कि इतिहास कोरा परिमान, अंशों का पुंज (मिक़दार हिस्सों का मजमूआ) नहीं है किन्तु वह गुनों की बढ़ती भी है यानी उसमें ऐसे ऐसे गुन आ गये हैं जो पहले थे ही नहीं.

بہت کم بات کرتے ہیں' یا بالکل بات ہی نہیں کرتے. انکا تو یہ وشواس ہے کہ یہ شاید بےمطلب کا وچار ہے . آج کا منووگیانی مستک کے بارے میں نہ وشواس رکھتا ہے اور نہ اسی کا وستار کے ساتھ ورنن کرتا ہے . وہ اچھی طرح جانتا ہے کہ ہر جانور کے مستک ہوتا ہے اور ہر جانور بدھی سے اپنے دیہ کا شاسن کرتا ہے اور اس سے کام لیتا ہے . یہ کیول آدمی کی ہی بپوتی نہیں ہے اور یہ مستک بےمطلب کے من کی پیداوار بھی نہیں ہے . اس بات سے جانور اونچے اٹھے ہیں یا آدمی گرا ہے اس میں بھلے ہی دو رائے ہوں پر اس وچار کی وجہ سے جانورپنے اور سمجھداری کے وچاروں میں اور اس لئے آدمی میں بھی بڑا انتر آگیا ہے. دوسرے شبدوں میں آدمی‌پن کا وچار بدل گیا ہے' زیادہ بڑا ہوگیا ہے کیونکہ وہ صرف پورن تتو جن سے یہ وچار بنا ہوا ہے بدلتے رہتے ہیں . وچاروں کا اپنا اتہاس ہوتا ہے . پرانوں میں سے نئے نئے نکلتے رہتے ہیں . ٹھیک اسی طرح دنیا کی دوسری چیزیں بدلتی اور بڑھتی ہیں .

مولیہ کے چھیتر میں بھی یہی حال ہے. کلا کے کام اور نیتی کے آدرش ایسے تتوں کے بنے ہیں جو آپس میں الگ الگ ہیں' الگ الگ پربھاؤ رکھتے ہیں الگ الگ انتر کریا والے ہیں. یہاں بھی کوئی چیز رکنے والی نہیں ہے. مولیہ کے تل پر بھی پرتیوادی تتو کام کرتے رہتے ہیں. ان تتوں کے بنا مولیہ کا چھیتر قائم نہیں رہ سکتا . یہ بتانا کہ پریتن کہاں سے شروع ہوا' کس قسم کا ہے' اس کا نیتک کاموں پر کیا اثر ہوتا ہے' سندرتا کی روچی پر کیا پربھاؤ ڈالتا ہے' اسکےلئے مولیہ چھیتر کی کریا کی آ. ای سمجھنا چاہئے . اوپر جو کچھ کہا جا چکا ہے' اس چھیتر میں اس سے زیادہ وچار کرنا ضروری نہیں .

مارکسی وادی ڈائی لیکٹکس کا پہلا نیم یہ بتاتا ہے کہ ہم بدلاؤ کی دنیا میں رہتے ہیں . بدلاؤ بھی ایسا جو سب چیزوں پر نرنتر بنا بھول کئے ہوئے اپنا اثر ڈالتا رہتا ہے . بدلاؤ کے بارے میں یہ کہنا ہی سب کچھ نہیں ہے . اس پر بہت کہا جا سکتا ہے . دوسرا قانون ہے' پریمان (مقدار) کا گن (خاصیت) میں بدل جانا اور گن کا پریبھاشا میں بدل جانا. یہ نیم بتاتا ہے کہ بدلاؤ پریمان میں ہی نہیں ہوتا. اس میں گنوں کی بڑھوتری بھی رہتی ہے . پہلا نیم اگر اتہاس کی رکشا کرتا ہے تو دوسرا نیم اس بات کی ذمہ داری لیتا ہے کہ اتہاس کورا پریمان' انشوں کا پنج (مقدار حصوں کا مجموعہ) نہیں ہے. کنتو وہ گنوں کی بڑھتی بھی ہے یعنی اس میں ایسے ایسے گن آ گئے ہیں جو پہلے تھے ہی نہیں .

हैं. विचार की एकता को बनाए रखते हैं. विचार की यह एकता उस वक़्त तक बनी रहती है जब तक उसके अन्दर काम करने वाले तत्व ऐसा रूप बनाए रखते हैं जो आस पास की दुनिया से मेल खाता हो. विचार की यह दुनिया वही होती है जिसे हम वाद विवाद या बहस कहते हैं यानी ज्ञान के आन्दोलन के नाम से पुकारते हैं. इसी बात को यों भी कहा जा सकता है कि यह दुनिया उस वक़्त तक वही एक रूप लिये रहती है जब तक विज्ञान ऐसी जगह न पहुंच जाय जहां से आगे वह बढ़ ही न सके या उसकी बढ़वारी हो ही न सके.

आदमी समझदार प्रानी है. अरस्तू ने आदमी की ऐसी ही परिभाषा की है. इस उदाहरन में विचार का कलेवर आदमी है और दो विचारों से उसका मेल मिलाया गया, एक समझदारी और दूसरा प्रानीपन. समझदारी इस जोड़ में गुन का काम करती है और दूसरे प्रानियों से अलग करती है. प्रानीपन में सब प्रानी समाए हुए हैं. थोड़े से में हमारे विश्लेशन से यह साफ़ होता है कि उसमें दो भिन्न काम करने वाले तत्व एक दूसरे से लड़ रहे हैं और एक दूसरे में समाए जा रहे हैं. उन में स्थायी एकता भी है और अपना अस्तित्व लिये हुए भिन्नता भी है. तर्क पूर्न अन्तर क्रिया की या विचार की गति की बात कहना अलंकार नहीं है जब तक तर्क और विचार अपने आप ही अलंकार न हों. तर्क पूर्न कलेवर की इकाईयां जिन से विचार बना हुआ होता है जानदार जोड़ के बग़ैर बेमतलब जुड़ी हुई नहीं होतीं. यदि ऐसा होता तो वह सदा अलग रहतीं. कभी मिल कर पूरी न हो पातीं. एक ऐसी इकाई न हो पाती कि अपना अस्तित्व लिये हुए खड़ी रह सकती.

हां, उनको हमेशा एक बनाए रखना भी उनसे ऐसी आशा करना है जो कभी पूरी नहीं हो सकती. उदाहरन के लिये अरस्तू ने आदमी को जो समझदार जानवर कहा उसको आज वह महत्व नहीं हासिल जो पहले था. आज-कल के प्रानीशास्त्र और मनोविज्ञान का जो झुकाव है वह समझदारी के विचार से कुछ आगे बढ़ गया है. वह यह नहीं मानता कि समझदारी अलग आदमी का भी गुन है. पंडितों का ख़ास तौर से यह ख़्याल है कि समझदारी का सम्बन्ध मन से है. मन देह से अलग है. वह उससे उल्टा है, वह उसके ऊपर शासन करता है. मनोविज्ञानियों की वह मंडली जो इससे सहमत है कि आदमी के पास किस तरह का मन है जो समझदारी और बुद्धि का स्रोत है, जानवरों के पास सिर्फ़ देह ही देह है, मन है ही नहीं और इसलिये न उनके पास समझदारी है न बुद्धि है, ऐसे मनो-विज्ञानियों की मंडली बहुत छोटी रह गई है. सैकड़ों बरस पहले वह बहुत बड़ी थी. आज के मनोविज्ञानी मन की

ہیں۔ وچار کی ایکتا کو بنائے رکھتے ہیں۔ وچار کی یہ ایکتا اُس وقت تک بنی رہتی ہے جب تک اُس کے اندر کام کرنے والے تتو ایسا روپ بنائے رکھتے ہیں جو آس پاس کی دنیا سے میل کھاتا ہو۔ وچار کی یہ دنیا وہی ہوتی ہے جسے ہم وادوواد یا بحث کہتے ہیں یعنی گیان کے آندولن کے نام سے پکارتے ہیں۔ اسی بات کو یوں بھی کہا جاسکتا ہے کہ یہ دنیا اس وقت تک وہی ایک روپ لئے رہتی ہے جب تک وگیان ایسی جگہ نہ پہونچ جائے جہاں سے آگے وہ بڑھ ہی نہ سکے یا اُسکی بڑھواری ہو ہی نہ سکے۔

آدمی سمجھدار پرانی ہے۔ ارسطو نے آدمی کی ایسی ہی پریبھاشا کی ہے۔ اِس اداہرن میں وچار کا کلیور آدمی ہے اور دو وچاروں سے اُسکا میل ملایا گیا، ایک سمجھداری اور دوسرا پرانی پن۔ سمجھداری اِس جوڑ میں گن کا کام کرتی ہے اور دوسرے پرانیوں سے الگ کرتی ہے۔ پرانی پن میں سب پرانی سمائے ہوئے ہیں۔ تھوڑے سے میں ہمارے وشلیشن سے یہ صاف ہو جاتا ہے کہ اِس میں دو بھن کام کرنے والے تتو ایک دوسرے سے لڑ رہے ہیں اور ایک دوسرے میں سمائے جا رہے ہیں۔ اُن میں استھائی ایکتا بھی ہے اور اپنا استتو لئے ہوئے بھنتا بھی ہے۔ ترک پورن انتر کریا کی یا وچار کی گتی کی بات کہنا النکار نہیں ہے جب تک ترک اور وچار اپنے آپ ہی النکار نہ ہوں۔ ترک پورن کلیور کی اکائیاں جن سے وچار بنا ہوا ہوتا ہے جاندار جوڑ کے بغیر بے مطلب جڑی ہوئی نہیں ہوتیں۔ یدی ایسا ہوتا تو وہ سدا الگ رہتیں۔ کبھی ملکر پوری نہ ہو پاتیں۔ ایک ایسی اکائی نہ ہو پاتی کہ اپنا استتو لئے ہوئے کھڑی رہ سکتی۔

ہاں، انکو ہمیشہ ایک بنائے رکھنا بھی اُن سے ایسی آشا کرنا ہے جو کبھی پوری نہیں ہوسکتی۔ اداہرن کے لئے ارسطو نے آدمی کو جو سمجھدار جانور کہا اُسکو آج وہ مہتو نہیں حاصل جو پہلے تھا۔ آجکل کے پرانی شاستر اور منووگیان کا جو جھکاؤ ہے وہ سمجھداری کے وچار سے کچھ آگے بڑھ گیا ہے۔ وہ یہ نہیں مانتا کہ سمجھداری الگ آدمی کا بھی گن ہے۔ پنڈتوں کا خاص طور سے یہ خیال ہے کہ سمجھداری کا سمبندھ من سے ہے۔ من دیہ سے الگ ہے۔ وہ اس سے الٹا ہے۔ وہ اُس کے اوپر شاسن کرتا ہے۔ منووگیانیوں کی وہ منڈلی جو اِس سے سہمت ہے کہ آدمی کے پاس کس طرح کا من ہے جو سمجھداری اور بدھی کا سروت ہے، جانوروں کے پاس صرف دیہ ہی دیہ ہے، من ہے ہی نہیں اور اِس لئے نہ اُن کے پاس سمجھداری ہے نہ بدھی ہے، ایسے منووگیانیوں کی منڈلی بہت چھوٹی رہ گئی ہے۔ سیکڑوں برس پہلے وہ بہت بڑی تھی۔ آج کے منووگیانی من کی

रखती हैं. विचार गुन कहलाते हैं. 'विचार' शब्द साहित्यिक महत्व प्रकट करता है यानी विचार ऐसी चीज़ है जो किसी चीज़ से निकाला गया हो.

डाईलेक्टिकल माटीवादी की यह स्थापना है कि विचार चीज़ों से अलग या चीज़ों से पहले कोई वजूद नहीं रखते लेकिन वह आदमी के मन में चीज़ों से गुन खींच कर तैयार हुए हैं और कभी कभी उनको बड़ा अनोखा रूप दे डाला है. मगर उसका कहना है कि जब एक दफ़ा निकालने की क्रिया पूरी हो चुकी तो जो विचार निकला वह तर्क पूर्न या विचार पूर्न तल पर अपना अस्तित्व बनाये मौजूद रहता है. उसे फूल या बीज की तरह यह नहीं समझा जा सकता कि वह मरा हुआ बीज है या सूखा हुआ फूल है. विचार कभी मुरझाते नहीं और न बेदम होते हैं. विचार का अपना अस्तित्व होता है. हां उसका बिलकुल स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता. किसी चीज़ का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता. अस्तित्व के दूसरे तल पर विचार चीज़ों से सिर्फ मिल कर ही नहीं रहता, तर्क पूर्न क्रिया से भी वह जुड़ा रहता है और दूसरे विचारों और अर्थों से भी उसका सम्बन्ध रहता है. विचार का अर्थ और उसका तर्क पूर्न कलेवर दूसरे विचारों और अर्थों के अपेक्षा में ही टिक पाता है. उनके साथ सम्बन्ध रखने के अर्थों में ही विचार का कलेवर रहता है. नागरिकता के विचार को लीजिये और दूसरे विचारों और सुझावों से अलग कर के उसके कलेवर को समझाने की कोशिश कीजिये. ऐसे विचार का जनता, रियासत, कसम, जन्म के बग़ैर क्या अर्थ रह जायगा. नागरिकता का विचार इन्हीं सब बातों का तो निचोड़ है.

किसी भी विचार का भीतरी तर्क पूर्न कलेवर आपस में झगड़ने वाले तत्वों का बना होता है. तत्व एक दूसरे से अलग होते हैं. उनका स्वभाव है अलग अलग दिशाओं में काम करना. उनका आपस में यही नाता है कि वह अलग अलग काम करें. फिर भी इन तत्वों का एक नमूने में रह कर काम करना एक तर्क पूर्न एकता का रूप ले लेता है और उस वक़्त तक वह एकता बनी रहती है जब तक वह ख़ास नमूना बाक़ी जगत से मेल खाता हो. हर एक विचार में हर एक तत्व होते हैं. सब एक दूसरे से अलग अलग रूप वाले होते हैं, उनमें आपस में रगड़ होती ही है. तत्वों के रगड़ झगड़ से बना हुआ विचार भी तर्क पूर्न होता है, बेतुका नहीं होता. जो तत्व एक विचार में काम करते हैं वह स्वभाव से अलग होते हैं, इतने अलग कि एक पूरब को जाता है तो एक पश्चिम, यहां तक कि किसी तत्व की खोज की जाये तो वह दूसरे से इतना अलग निकलेगा मानो उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं रखता हो. वह ज़मीन का है तो दूसरा आसमान का. फिर भी यह दोनों तत्व विचार के अन्दर मिल कर रह लेते हैं और काम कर लेते

رکھتی ہیں. وچار گن کہلاتے ہیں. 'وچار' شبد ساہتیک مہتو پرکٹ کرتا ہے یعنی وچار ایسی چیز ہے جو کسی چیز سے نکالا گیا ہو.

ڈائی لیکٹیکل ماٹی‌وادی کی یہ استھاپنا ہے کہ وچار چیزوں سے الگ یا چیزوں سے پہلے کوئی وجود نہیں رکھتے لیکن وہ آدمی کے من میں چیزوں سے گن کھینچ کر تیار ہوئے ہیں اور کبھی کبھی انکو بڑا انوکھا روپ دے ڈالا ہے. مگر اسکا کہنا ہے کہ جب ایک دفعہ نکالنے کی کریا پوری ہو چکی تو جو وچار نکلا وہ ترک پورن یا وچار پورن تل پر اپنا استتو بنائے موجود رہتا ہے. اسے پھول یا بیج کی طرح یہ نہیں سمجھا جاسکتا کہ وہ مرا ہوا بیج ہے یا سوکھا ہوا پھول ہے. وچار کبھی مرجھاتے نہیں اور نہ بے دم ہوتے ہیں. وچار کا اپنا استتو ہوتا ہے. ہاں اسکا بالکل سوتنتر استتو نہیں ہوتا. کسی چیز کا سوتنتر استتو نہیں ہوتا. استتو کے دوسرے تل پر وچار چیزوں سے صرف ملکر ہی نہیں رہتا، ترک پورن کریا سے بھی وہ جڑا رہتا ہے اور دوسرے وچاروں اور ارتھوں سے بھی اسکا سمبندھ رہتا ہے. وچار کا ارتھ اور اسکا ترک پورن کلیور دوسرے وچاروں اور ارتھوں کے اپیکشا میں ہی ٹک پاتا ہے. ان کے ساتھ سمبندھ رکھنے کے ارتھوں میں ہی وچار کا کلیور رہتا ہے. ناگرکتا کے وچار کو لیجئے اور دوسرے وچاروں اور سجھاؤں سے الگ کرکے اس کے کلیور کو سمجھانے کی کوشش کیجئے. ایسے وچار کا جنتا، ریاست، قسم، جنم کے بغیر کیا ارتھ رہ جائیگا. ناگرکتا کا وچار انہیں سب باتوں کا تو نچوڑ ہے.

کسی بھی وچار کا بھیتری ترک پورن کلیور آپس میں جھگڑنے والے تتوں کا بنا ہوتا ہے. تتو ایک دوسرے سے الگ ہوتے ہیں. ان کا سبھاؤ ہے الگ الگ دشاؤں میں کام کرنا. ان کا آپس میں یہی ناتا ہے کہ وہ الگ الگ کام کریں. پھر بھی ان تتوں کا ایک نمونے میں رہ کر کام کرنا ایک ترک پورن ایکتا کا روپ لے لیتا ہے اور اس وقت تک وہ ایکتا بنی رہتی ہے جب تک وہ خاص نمونہ باقی جگت سے میل کھاتا ہو. ہر ایک وچار میں ہر ایک تتو ہوتے ہیں. سب ایک دوسرے سے الگ الگ روپ والے ہوتے ہیں، ان میں آپس میں رگڑ ہوتی ہے. تتو کے رگڑ جھگڑ سے بنا ہوا وچار بھی ترک پورن ہوتا ہے، بے تکا نہیں ہوتا. جو تتو ایک وچار میں کام کرتے ہیں وہ سبھاؤ سے الگ ہوتے ہیں، اتنے الگ کہ ایک پورب کو جاتا ہے تو ایک پچھم، یہاں تک کہ کسی تتو کی کھوج کی جائے تو وہ دوسرے سے اتنا الگ نکلیگا مانو اس سے کوئی سمبندھ ہی نہیں رکھتا ہو. وہ زمین کا ہے تو دوسرا آسمان کا. پھر بھی یہ دونوں تتو وچار کے اندر ملکر رہ لیتے ہیں اور کام کرلیتے

मी एक से नहीं होते, न सब उनके एक से होते हैं. : आदमी तरह तरह की आदतों और इच्छाओं को लिये ता है.

सामाजिक प्रानी अलग अलग सामाजिक शक्तियों से ही खिंचता रहता है जिस तरह रासायनिक और तिक शक्तियों से बेजान चीज़ें खिंचती रहती हैं. कोई माजिक संगठन इसी तरह एक रूप नहीं मिलेगा जिस रह कोई बेजान द्रव्य एक रूप नहीं पाया जाता. समाज सा क्रियाशील मिलेगा, चलता फिरता मिलेगा, बदलता ता मिलेगा. वह ऐसी चीज़ है जिसका अपना इतिहास और जब तक वह है अपना नया इतिहास बनाता रहेगा. दोलन, बदलाव और इतिहास जिनमें हो कर समाज कल चुका है, बाहर से उस पर नहीं लादे गए. सबके उसी में से पैदा होते हैं. जिन चीज़ों से समाज बना ता है उन सब में वह शक्ति रहती ही है जो एक दूसरे मिलती है और जिसकी वजह से आन्दोलन की गति र दिशा मिलती है. दूसरे शब्दों में यहां जो दृश्य देखने मिलते हैं वह सब नये तल पर होते हैं. जो बात पहिले जा चुकी है वही प्रयत्न और वही अन्तरद्वंद्व समाज चलता रहता है. समाज में भी टिकाऊ और अटिकाऊ ता देखने को मिलेगी.

किसी सभ्यता, रियासत, संस्था या रिवाज का लंबा, टा इतिहास हो सकता है, पर इतिहास होगा ज़रूर. सका शुरू भी होगा. यानी वह किसी अपने से पहिले से कला होगा और उसका अन्त भी होगा. यानी वह अपने अगले में किसी से मिल गया होगा. जिस तरह एक दमी छन छन बदलता है वैसे ही समाज भी छन छन दलता है. समाजी इकाई भी बदलती इकाई होती है. यहां र अन्तरद्वंद्वी प्रयत्न अबेर सबेर समाज का रूप बदलते ते हैं. समाज ध्रुव सत्य की तरह अटल रहता है, पर सापेक्ष और अटिकाव के रूप में रहने देता है.

अगले अध्याय में माटीवादी डाईलेक्टिक्स के महत्व नियमों का विस्तार से हाल बतायेंगे कि वह किस तरह चारों पर अपना प्रभाव डालते हैं. ज्ञान के प्रश्न और का क्षेत्र भी इन नियमों के प्रभाव से नहीं बच पाता. तो हम बुनियादी हालत की खासियत का ही ज़िक्र गे.

विचार, तर्क पूर्ण सुझाव समझे जाते हैं. वह अपना पना अर्थ रखते हैं और आदमी के मन में अपनी जगह रखते हैं. पर उनकी स्थिति ऐसी नहीं होती जैसी ड़ी और पत्थर की, या पौधे और प्रानी की. विचार यों से परे रहते हैं. इंद्रियों के पकड़ में नहीं आ सकते. न उन चीज़ों से ज़रूर जुड़े रहते हैं जो अपना अस्तित्व

آدمی ایک سے نہیں ہوتے، نہ سب جگہ ایک سے ہوتے ہیں. ہر آدمی طرح طرح کی عادتوں اور اچھاؤں کے لئے ہوتا ہے ۔

سماجک پرانی الگ الگ سماجک شکتیوں سے ایسے ہی کھنچتا رہتا ہے جس طرح راسائنک اور بھوتک شکتیوں سے بےجان چیزیں کھنچتی رہتی ہیں ۔ کوئی سماجک سنگٹھن اسی طرح ایک روپ نہیں ملے گا جس طرح کوئی بےجان درشیہ ایک روپ نہیں پایا جاتا. سماج ہمیشہ کریا شیل ملے گا، چلتا پھرتا ملے گا، بدلتا ہوا ملے گا . یہ ایسی چیز ہے جس کا اپنا اتہاس ہے اور جب تک یہ ہے اپنا نیا اتہاس بناتا رہے گا . آندولن، بدلاؤ اور اتہاس جن میں ہوکر سماج نکل چکا ہے، باہر سے اس پر نہیں لادے گئے . سب کے سب اسی میں سے پیدا ہوتے ہیں . جن چیزوں سے سماج بنا ہوتا ہے ان سب میں وہ شکتی رہتی ہی ہے جو ایک دوسرے سے ملتی ہے اور جس کی وجہ سے آندولن کی گتی اور دشا ملتی ہے. دوسرے شبدوں میں یہاں جو درشیہ دیکھنے کو ملتے ہیں وہ سب نئے تل پر ہوتے ہیں . جو بات پہلے کہی جا چکی ہے وہی پریتن اور وہی انتر دوند سماج میں چلتا رہتا ہے. سماج میں بھی ٹکاؤ اور اٹکاؤ ایکتا دیکھنے کو ملیگی ۔

کسی سبھیتا، ریاست، سنستھا یا رواج کا لمبا، چھوٹا اتہاس ہو سکتا ہے، پر اتہاس ہوگا ضرور . اسکا شروع بھی ہوگا . یعنی وہ کسی اپنے سے پہلے سے نکلا ہوگا اور اس کا انت بھی ہوگا . یعنی وہ اپنے سے اگلے میں کسی سے مل گیا ہوگا . جس طرح ایک آدمی چھن چھن بدلتا ہے ویسے ہی سماج بھی چھن چھن بدلتا ہے . سماجی اکائی بھی بدلتی اکائی ہوتی ہے . یہاں پھر انتر دوندی پریتن اوبیر سویر سماج کا روپ بدلتے رہتے ہیں . سماج خود سکھ کی طرح اٹل رہتا ہے، اسکو ساپیکش اور اٹکاؤ کے روپ میں رہنے دیتا ہے ۔

اگلے ادھیائے میں ماٹی وادی ڈائی لیکٹکس کے مہتو کے نیموں کا وستار سے حال بتائینگے کہ وہ کس طرح وچاروں پر اپنا پربھاؤ ڈالتے ہیں. گیان کے پرشن اور ترک کا چھیتر بھی ان نیموں کے پربھاؤ سے نہیں بچ پاتا . یہاں تو ہم بنیادی حالت کی خاصیت کا ہی ذکر کرینگے ۔

وچار ترک پورن سجھاؤ سمجھے جاتے ہیں . وہ اپنا اپنا ارتھ رکھتے ہیں اور آدمی کے من میں اپنی جگہ بنا رکھتے ہیں. پر ان کی استھتی ایسی نہیں ہوتی جیسی لکڑی اور پتھر کی، یا پودھے اور پرانی کی . وچار اندریوں سے پرے رہتے ہیں . اندریوں کے پکڑ میں نہیں آسکتے . لیکن ان چیزوں سے ضرور جڑے رہتے ہیں جو اپنا استھتو

यह क्रिया कभी होती ही नहीं. जो मेज़ का हाल है वही आदमी का हाल है और वही चांद और सूरज का हाल है. इस बात को शब्द शब्द ठीक समझिये कि एक वाक्य बोलने के बाद आप वह नहीं रह जाते जो आप वाक्य बोलने से पहले थे. यह जान कर आप सोचना शुरू कर दीजिये कि आप किस तरह हर समय बदलते रहते हैं.

ऐसा कोई छन ही नहीं बीतता जब यह जगत बदल नहीं जाता. बदलाव कभी रुकता ही नहीं. 'हैराक्लिटरस' ने जब इस Dilectical सिद्धान्त का हाल बताया था तब उसने कहा था कि एक नदी में वही आदमी या एक आदमी उसी नदी में दो बार पांव नहीं रख सकता. इस पर उसका एक चेला टीका के रूप में कह बैठा था, "किस की दो बार, एक बार भी नहीं."

ज़ोरदार जगत का यह हाल है. इधर बदलाव निरंतर चलता है उधर सापेक्ष स्थिरता भी है. शक्तियों के भिड़ जाने से कुछ देर की एकता स्थापित हो जाती है. यही हाल तत्वों की भिड़न्त का है. हर चीज़ चल ही रही है. फिर भी कुछ समय के लिये खड़ी सी दीख पड़ती है. स्थिरता न टिकने वाली है. बदलाव निरंतर रहने वाला है. दूसरे शब्दों में प्रयत्न और अन्तरप्रवेश जिनकी बात हमने पहले नियम में कही दोनों टिकाऊ और निरपेक्ष हैं. एकी अटिकाऊ और सापेक्ष है. जगत कहते ही उसे हैं जहां हर चीज़ बदलती है. जगत का संसार नाम शायद इसी वजह से पड़ा. इस संसार में बदलाव के सिवाय कोई ऐसी चीज़ नहीं जो बदलती न हो.

बेजान और जानदार द्रव्यों को ले कर तो सब कुछ कह दिया गया. पर जो न बेजान है न जानदार, क्या उनके लिये भी यह क़ानून लागू होता है ? क्या इस बदलाव का असर विचारों पर भी पड़ता है. नैतिक और 'रुचिशास्त्र' जगत में भी क्या यह अपना काम करता है ? जो जगह नियम ने ली है उससे तो यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि माटीवाद डाईलेक्टिक्स के सब नियम सब जगह लागू होते हैं. फिर चाहे वह भौतिक हों, रासायनिक हों या प्रानी तल पर हों. हां ! उनके रूप अलग अलग ज़रूर होते हैं. सोवियत दार्शनिक उदाहरन के लिये यह घटना पेश करता है. उसका कहना है जब हम सामाजिक द्रव्यों का विश्लेषन करते हैं, फिर चाहे वह पूरे समाज का हो, किसी ख़ास सभ्यता का हो, किसी समय या देश का हो, किसी संस्था या संगठन का हो, चाहे एक नीति, रिवाज या क्रिया का हो. हमें फिर वही चीज़ मिली कि वहां भी दो तत्व या दो शक्तियां पूरे ज़ोर से काम कर रही हैं. समाज आदमियों और जत्थों का बना होता है. स्वभाव से, आदतों से, आशाओं से, इच्छाओं से बहैरयों से, सब

یہ کریا کبھی ہوتی ہی نہیں ۔ جو میز کا حال ہے وہی آدمی کا حال ہے اور وہی چاند اور سورج کا حال ہے۔ اس بات کو شبد شبد ٹھیک سمجھئے کہ ایک واکیہ بولنے کے بعد آپ وہ نہیں رہ جاتے جو آپ واکیہ بولنے سے پہلے تھے ۔ یہ جان کر آپ سوچنا شروع کر دیجئے کہ آپ کس طرح ہر سمے بدلتے رہتے ہیں ۔

ایسا کوئی چھن ہی نہیں بیتتا جب یہ جگت بدل نہیں جاتا ۔ بدلاؤ کبھی رکتا ہی نہیں ۔ 'ھیرا کلٹرس' نے جب اس Dialectical سدھانت کا حال بتایا تھا تب اس نے کہا تھا کہ ایک ندی میں وہی آدمی یا ایک آدمی اسی ندی میں دو بار پاؤں نہیں رکھ سکتا ۔ اس پر اسکا ایک چیلا ٹیکا کے روپ میں کہہ بیٹھا تھا' "کسکی دو بار' ایک بار بھی نہیں ۔"

زوردار جگت کا یہ حال ہے ۔ ادھر بدلاؤ نرنتر چلتا ہے ادھر ساپیکش استھرتا بھی ہے ۔ شکتیوں کے بھڑ جانے سے کچھ دیر کی ایکتا استھاپت ہو جاتی ہے ۔ یہی حال تتوں کی بھڑنت کا ہے ۔ ہر چیز چل ہی رہی ہے ۔ پھر بھی کچھ سمے کے لئے کھڑی سی دیکھ پڑتی ہے ۔ استھرتا نہ ٹکنے والی ہے ۔ بدلاؤ نرنتر رہنے والا ہے۔ دوسرے شبدوں میں پریتن اور انتر پرویش جن کی بات ہم نے پہلے نیم میں کہی' دونوں ٹکاؤ اور نرپیکش ہیں ۔ ایکی اٹکاؤ اور ساپیکش ہے ۔ جگت کہتے ہی اسے ہیں جہاں ہر چیز بدلتی ہے ۔ جگت کا سنسار نام شاید اسی وجہ سے پڑا ۔ اس سنسار میں بدلاؤ کے سوائے کوئی ایسی چیز نہیں جو بدلتی نہ ہو ۔

بے جان اور جان دار دربوں کو لے کر تو سب کچھ کہہ دیا گیا ۔ پر جو بے جان ہے نہ جان دار' کیا اُن کے لئے بھی یہ قانون لاگو ہوتا ہے ؟ کیا اِس بدلاؤ کا اثر وچاروں پر بھی پڑتا ہے ۔ نیتک اور ' رچی شاستر ' جگت میں بھی کیا یہ اپنا کام کرتا ہے ؟ جو جگہ نیم نے لی ہے اس سے تو یہ صاف ظاہر ہوتا ہے کہ ماٹی وادی ڈائی لیکٹکس کے سب نیم سب جگہ لاگو ہوتے ہیں پھر چاہے وہ بھوتک ہوں' راسائنک ہوں یا پرانی تل پر ہوں ۔ ہاں ! ان کے روپ الگ الگ ضرور ہوتے ہیں ۔ سوویت دارشنک اوداہرن کے لئے یہ گھٹنا پیش کرتا ہے ۔ اس کا کہنا ہے جب ہم سماجک دربیہ کا وشلیشن کرتے ہیں' پھر چاہے وہ پورے سماج کا ہو' کسی خاص سبھیتا کا ہو' کسی سمے یا دیش کا ہو' کسی سنستھا یا سنگٹھن کا ہو' چاہے ایک نیتی' رواج' یا کریا کا ہو ۔ ہمیں پھر وہی چیز ملی کہ وہاں بھی دو تتو یا دو شکتیاں پورے زور سے کام کر رہی ہیں ۔ سماج آدمیوں اور جتھوں کا بنا ہوتا ہے ۔ سبھاؤ سے' عادتوں سے' آشاؤں سے' اچھاؤں سے' ادیشوں سے' سب

रासायनिक क्रिया होती रहती हैं. हां, जानदारों में दूसरी और क्रियायें भी चलती हैं जिस में ऐसे तत्व शामिल होते हैं जिन की प्रकृति और भी ज़ियादा उलझी हुई होती हैं. जानदार प्रानी रसायनिक या प्रानी विद्या के तल पर काम करते हैं इसलिये हम इस नियम को जानदारों पर लागू नहीं करेंगे. और अगर करेंगे तो इतनी ही हद तक जितनी हद तक वह ज़रूरी हैं क्योंकि कोई भी प्रानी निरा जान ही नहीं है बेजान भी है.

पहले नियम के बारे में अभी थोड़ा जानना बाक़ी है और वह यह कि उसका प्रयोग उनके साथ किस तरह होगा जो न जानदार हैं न बेजान. हमने पहले नियम की कुछ हिस्से की बात इसलिये कही क्योंकि अभी तक हमने यह नहीं बताया कि दोनों मिल कर एक कैसे हो जाते हैं. पहले नियम को हमने 'प्रयत्न', 'अन्तरप्रवेश' और 'एकी' इन तीन गुणों वाला बताया था. एकी की बात रह गई. उसी को अब बताते हैं.

असल में होता यह है कि जब दो तत्व या दो शक्तियां आपस में भिड़ती हैं तो मिल कर एक नया रूप ले लेती हैं, इसी को हम 'एकी' कहते हैं. यह भी हर चीज़ में होता रहता है. जब भी हम किसी दिखाई देने वाली चीज़ की बात कहते हैं तब हमें उस एकी की बात कहनी होती है. जितनी देर तक वह एक हालत में है उतनी देर तक उसमें एकी है. टंगे कपड़े में एकी न हो तो वह टंगा कैसे रहेगा और सब चीज़ों से अलग कैसा समझा जाय. यह तो साफ़ ही है कि उसकी एकी टिकाऊ नहीं है. दिन दिन वह एकी ढीली होती जायेगी. अगर एकी टिकाऊ होती तो बदलाव न हो पाता. Dilectical माटीवादी हर एक चीज़ में इस ज़ोरदार प्रकृति का खेल देखता है और उसका कारन जानता है. वह यह भी जानता है कि हर चीज़ की उसके पास की चीज़ों पर प्रतिक्रिया होती रहती है और उस चीज़ पर ख़ुद भी बाहरी शक्तियां काम करती रहती हैं. नतीजा यह होता है कि एकी होती रहती है पर वह सदा रहने वाली नहीं होती. हर चीज़ में एक ज़ोरदार संतुलन होता है, जो सवेर सवेर टूट जाता है या बिगड़ जाता है और सिर्फ़ इसलिये कि वह ज़ोरदार होता है.

कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो बहुत धीरे बदलती हैं पर बदलती ज़रूर हैं. बदलाव बराबर चलता रहता है, देखने के लिये वह कितना ही धीमा क्यों न हो. जिस तरह से हमारे पास ऐसी कोई गवाही नहीं है जो यह बताती हो कि कोई चीज़ ऐसी है जिसमें बदलाव नहीं होता वैसे ही ऐसी भी कोई गवाही नहीं है जो यह बताती हो कि किसी चीज़ में किस वक़्त बदलाव हो जाता है. असल में

راسائنک کریا ہوتی رہتی ہیں ۔ ہاں، جاندار وں میں دوسری اور کریائیں بھی چلتی ہیں جس میں ایسے تتو شامل ہوتے ہیں جنکی پرکرتی اور بھی زیادہ الجھی ہوئی ہوتی ہیں. جاندار پرانی رسائنک یا پرانی ودیا کے تل پر کام کرتے ہیں اس لئے ہم اِس نیم کو جانداروں پر لاگو نہیں کرینگے ۔ اور اگر کرینگے تو اُتنی ہی حد تک جتنی حد تک وہ ضروری ہیں کیونکہ کوئی بھی پرانی نرا جان ہی نہیں ہے بے جان بھی ہے ۔

پہلے نیم کے بارے میں ابھی تھوڑا جاننا باقی ہے اور وہ یہ کہ اُس کا پریوگ اُن کے ساتھ کس طرح ہوگا جو نہ جاندار ہے نہ بے جان ۔ ہم نے پہلے نیم کی کچھ حصے کی بات اس لئے کہی کیونکہ ابھی تک ہم نے یہ نہیں بتایا کہ دونوں مل کر ایک کیسے ہو جاتے ہیں ۔ پہلے نیم کو ہم نے ' پریتن ' ' انتر پرویش ' اور ' ایکی ' اِن تین گنوں والا بتایا تھا ۔ ایکی کی بات رہ گئی ۔ اُسی کو اب بتاتے ہیں ۔

اصل میں ہوتا یہ ہے کہ جب دو تتو یا دو شکتیاں آپس میں بھڑتی ہیں تو مل کر ایک نیا روپ لے لیتی ہیں، اُسی کو ہم ' ایکی ' کہتے ہیں ۔ یہ بھی ہر چیز میں ہوتا رہتا ہے ۔ جب بھی ہم کسی دکھائی دینے والی چیز کی بات کہتے ہیں تب ہمیں اس ایکی کی بات کہنی ہوتی ہے ۔ جتنی دیر تک وہ ایک حالت میں ہے اُتنی دیر تک اس میں ایکی ہے ۔ ٹنگے کپڑے میں ایکی نہ ہو تو وہ ٹنگا کیسے رہے گا اور سب چیزوں سے الگ کیسا سمجھا جائے ۔ یہ تو صاف ہی ہے کہ اُسکی ایکی ٹکاؤ نہیں ہے ۔ دن دن وہ ایکی ڈھیلی ہوتی جائے گی ۔ اگر ایکی ٹکاؤ ہوتی تو بدلاؤ نہ ہو پاتا ۔ Dialectical ماٹی وادی ہر ایک چیز میں اس زوردار پرکرتی کا کھیل دیکھتا ہے اور اُس کا کارن جانتا ہے ۔ وہ یہ بھی جانتا ہے کہ ہر چیز کی اُس کے پاس کی چیزوں پر پرتی کریا ہوتی رہتی ہے اور اس چیز پر خود بھی باہری شکتیاں کام کرتی رہتی ہیں ۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ ایکی ہوتی رہتی ہے پر وہ سدا رہنے والی نہیں ہوتی ۔ ہر چیز میں ایک زوردار سنتولن ہوتا ہے، جو اویر سویر ٹوٹ جاتا ہے یا بگڑ جاتا ہے اور صرف اس لئے کہ وہ زوردار ہوتا ہے ۔

کچھ چیزیں ایسی ہیں جو بہت دھیرے بدلتی ہیں پر بدلتی ضرور ہیں ۔ بدلاؤ برابر چلتا رہتا ہے ۔ دیکھنے کے لئے وہ کتنا بھی دھیما کیوں نہو ۔ جس طرح سے ہمارے پاس ایسی کوئی گواہی نہیں ہے جو یہ بتاتی ہو کہ کوئی چیز ایسی ہے جس میں بدلاؤ نہیں ہوتا ویسے ہی ایسی بھی کوئی گواہی نہیں ہے جو یہ بتاتی ہو کہ کسی چیز میں کس وقت بدلاؤ ہو جاتا ہے. اصل میں

है. किसी चीज़ का हर हिस्सा एक ही काम नहीं करता. कोई कुछ करता है, कोई कुछ. जितनी शक्तियां उस चीज़ में हैं वह एक सी नहीं हैं. कोई किधर ही को घूम रही है कोई किधर को. अगर ऐसा होता और उन को कोई रोकने वाला न होता तो वह अपना रास्ता साफ़ कर के चल दी होतीं, और ज़रा देर के लिये भी कोई चीज़ न टिक पाती, कोई रूप न टिक पाता. Dilectical मादीवादी इन अलग अलग शक्तियों को इन्हीं अर्थों में कहता है. वह यही कहता है कि एक ही क्षेत्र में दो शक्तियां आपस में भिड़ जाती हैं और तभी वह कुछ देर के लिये टिक पाती हैं.

इस बात को समझने के लिये हमें विज्ञानी बनने की ज़रूरत नहीं क्योंकि मामूली सी भौतिक, रासायनिक या प्रानी सम्बन्धी विश्लेशन यह बता देता है कि कोई भी बेजान या जानदार चीज़ ऐसे तत्वों और शक्तियों से बनी हुई हैं जो एक दूमरे के विरोध में काम कर रहे हैं. मामूली मेज़ को ले लीजिये. ज़मीन की आकर्शन शक्ति उसे अपनी तरफ़ खींच रही है और दूसरी शक्ति उसे खिंच जाने से रोक रही है. हम मेज़ को बनाते ही ऐसी हैं कि वह उस खिंचाव का मुक़ाबिला कर सके. नहीं तो क्या एक छन के लिये भी मेज़ खड़ी रह सकती है. दूसरी तरफ़ उसी मेज़ में जगह जगह पुराने होने या जल कर राख होने का काम हो रहा है. रगड़ अलग अपना काम कर रही है. असल में सारे भौतिक और रासायनिक अमल उसे दबाये हुए हैं. उसकी ताक़त कम कर रहे हैं. उसकी शक्ति घटा रहे हैं. उसको ढीला कर रहे हैं. उसकी उमर बढ़ा रहे हैं. मतलब यह कि पूरी तरह जन्म लेने से पहले ही वह इस आफ़त में पड़ गई है. मेज के इंच इंच पर स्कंध, परमानु, अनु, सब के सब पूरा ज़ोर लगा रहे हैं. हम देखने वालों को यह दिखाई देता है कि वह खड़ी है, कुछ नहीं कर रही है, और ज्यों की त्यों ठोस बनी हुई है. आज विज्ञान के नाते हम यह जानते हैं कि मेज़ अन्दर से पोली है और उसमें अनु चक्कर काट रहे हैं. हर अनु बेहद शक्ति का भंडार है और हर अनु तरह तरह की क्रिया और प्रतिक्रिया में फंसा हुआ है. और कुछ हो या न हो एक शक्ति दूसरी शक्ति में, एक तत्व दूसरे तत्व में, प्रवेश होता रहता है. वह लड़ भिड़कर एक रूप बनता रहता है. अब रह गया पारिभाशिक शब्द. अगर हम उसे ज़ोरदार क्रिया प्रतिक्रिया के नाम से कहें तब भी मतलब यही होगा कि हम प्रयत्न और अन्तरप्रवेश या अन्तर द्वंद की बात ही कह रहे हैं. प्रयत्न से हमारा मतलब है दो भिन्न शक्तियों को बताना. अन्तरप्रवेश से हमारा मतलब है एक दूसरे के मिल जाने की क्रिया को बताना.

अभी तक हमने बेजान चीज़ की बात बताई. जानदार चीज़ों का भी यही हाल है. जानदारों में भी भौतिक और

کرتا ہے کوئی کچھ. جتنی شکتیاں اس چیز میں ہیں وہ ایک سی نہیں ہیں ۔ کوئی کدھر ہی کو گھوم رہی ہے کوئی کدھر کو ۔ اگر ایسا ہوتا اور انکو کوئی روکنے والا نہ ہوتا تو وہ اپنا راستہ صاف کرکے چل دی ہوتیں' اور ذرا دیر کے لئے بھی کوئی چیز نہ ٹک پاتی' کوئی روپ نہ ٹک پاتا ۔ Dilectical ماتیوادی ان الگ الگ شکتیوں کو انہیں ارتھوں میں کہتا ہے ۔ وہ یہی کہتا ہے کہ ایک ہی چھیتر میں دو شکتیاں آپس میں بھڑ جاتی ہیں اور تبھی وہ کچھ دیر کے لئے ٹک پاتی ہیں ۔

اس بات کو سمجھنے کے لئے ہمیں وگیانی بننے کی ضرورت نہیں کیونکہ معمولی سی بھوتک راسائنک یا پرانی سمبندھی وشلیشن یہ بتا دیتا ہے کہ کوئی بھی بے جان یا جاندار چیز ایسے تتوں اور شکتیوں سے بنی ہوئی ہیں جو ایک دوسرے کے وررودھ میں کام کر رہے ہیں. معمولی میز کو لے لیجئے ۔ زمین کی آکرشن شکتی اسے اپنی طرف کھینچ رہی ہے اور دوسری شکتی اسے کھنچ جانے سے روک رہی ہے. ہم میز کو بناتے ہی ایسی ہیں کہ وہ اس کھنچاؤ کا مقابلہ کرسکے ۔ نہیں تو کیا ایک چھن کے لئے بھی میز کھڑی رہ سکتی ہے ۔ دوسری طرف اس میز میں جگہ جگہ پرانے ہونے یا جل کر راکھ ہونے کا کام ہو رہا ہے. رگڑ الگ اپنا کام کر رہی ہے ۔ اصل میں سارے بھوتک اور راسائنک عمل اسے دبائے ہوئے ہیں ۔ اسکی طاقت کم کر رہے ہیں. اسکی شکتی گھٹا رہے ہیں ۔ اسکو ڈھیلا کر رہے ہیں ۔ اسکی عمر بڑھا رہے ہیں ۔ مطلب یہ کہ پوری طرح سے جنم لینے سے پہلے ہی وہ اس آفت میں پڑگئی ہے ۔ میز کے انچ انچ پر اسکندھ' پرمانو' انو' سبھی سب پورا زور لگا رہے ہیں ۔ ہم دیکھنے والوں کو یہ دکھائی دیتا ہے کہ وہ کھڑی ہے' کچھ نہیں کر رہی ہے' اور جیوں کی تیوں ٹھوس بنی ہوئی ہے ۔ آج وگیان کے ناتے ہم یہ جانتے ہیں کہ میز اندر سے پولی ہے اور اس میں انو چکر کاٹ رہے ہیں ۔ ہر انو بےحد شکتی کا بھنڈار ہے اور ہر انو طرح طرح کی کریا اور پرتی کریا میں پھنسا ہوا ہے. اور کچھ ہو یا نہ ہو ایک شکتی دوسری شکتی میں' ایک تتو دوسرے تتو میں' پرویش ہوتا رہتا ہے' وہ لڑ بھڑ کر ایک روپ بنتا رہتا ہے ۔ اب رہ گیا پاریبھاشک شبد ۔ اگر ہم اسے زوردار کریا پرتی کریا کے نام سے کہیں تب بھی مطلب یہی ہوگا کہ ہم پریتن اور انتر پرویش یا انتر دوند کی بات ہی کہہ رہے ہیں. پریتن سے ہمارا مطلب ہے دو بھنّ شکتیوں کو بتانا ۔ انتر پرویش سے ہمارا مطلب ہے —ایک دوسرے کے مل جانے کی کریا کو بتانا ۔

ابھی تک ہم نے بے جان چیز کی بات بتائی ۔ جاندار چیزوں کا بھی یہی حال ہے. جانداروں میں بھی بھوتک اور

तीन बुनियादी नियम

अब यह बदलता और चलता फिरता जगत पानी की तरह बहने वाली चीज़ बन जाता है. इसके बारे में इससे ज़ियादा क्या कहा जाय कि यह स्थिर नहीं है. कोई बुनियादी चीज़ ले लीजिये. आप को यह जान कर कोई मुश्किल नहीं होगी कि उसमें बदलाव हो रहा है, उस के अन्दर गति, बढ़ती, और विकास सब के सब ऐसे ही मौजूद हैं जैसे हमारी दुनिया है. Dialectical माटीवादी ठीक समझता है कि 'हिगल' ने सत्य को ठीक ही समझा कि सत्य बहुत ज़ोरदार है, वह स्थिर नहीं बैठता. यह ठीक है हिगल ने उस को आदर्शवाद के रूप में समझा. अभी उसके सत्य के नियम माटीवादी बुनियाद पर थे. पर उसने उस सब को ज़ोर के शब्दों में कहा. उसने कहा जगत सदा बदलाव वाला है. आईये! अब इस बात को साफ़ करने की कोशिश करें कि शब्द में वह अर्थ हैं या नहीं जिस बात को बताने के लिये वह शब्द काम में लाये जावें. वह तीन नियम हैं और 'इस्ट्राईफ़' (Strife) यानी "प्रयत्न नियम" के नाम से मशहूर हैं. पहला है प्रयत्न नियम जिस का अर्थ होता है दो अलग चीज़ों का एक दूसरे में प्रवेश हो कर एक मेल हो जाना. दूसरा नियम है वस्तु का गुन में और गुन का वस्तु में बदल जाना. तीसरा नियम है नहीं को नहीं मानना, यानी नहीं के होने से इंकार करना.

पहले नियम का क्या अर्थ है और उसके ठीक होने की क्या गवाही है, मामूली भाषा में यह बहुत कुछ बता जाता है. अव्वल तो यह यह बताता है कि जो कुछ भी दुनिया में है वह लड़ भिड़ कर बना है, यानी कई तत्व या बल आपस में अपना अपना ज़ोर दूसरे के ख़िलाफ़ लगा कर मिल गये हैं और एक चीज़ का रूप ले बैठे हैं. साफ़ साफ़ यों समझिये कि जब भी हम किसी चीज़ के अन्दर का हाल जानते हैं तो कभी ऐसा न मिला कि वह ऐसी चीज़ निकले कि जिस के हम लखन न कर सके. कोई चीज़ स्थिर न मिली. ऐसी भी न मिली जो सब तरह एक हो, जहां हमें मिली वहां कई तत्व मिले हुए मिले. और हर चीज़ में दो शक्तियां काम करती हुई मिलीं और दोनों ऐसी मिलीं कि एक एक तरफ़ को खींच रही है और दूसरी दूसरी तरफ़ को. मामूली भाषा में जब हम यह कहते हैं कि यह चीज़ इस लिये वह चीज़ है कि वह इस तरह ही बनी हुई है, इस का ऐसा संगठन है कि उस संगठन का हर भाग अपने अपने काम में लगा है, तब हमारे मन में वही बात रहती है जो डाईलेक्टिकल माटीवादी के मन में रहती

تین بنیادی نیم

اب یہ بدلتا اور چلتا پھرتا جگت پانی کی طرح بہنے والی چیز بن جاتا ہے. اس کے بارے میں اس سے زیادہ کیا کہا جائے کہ یہ استھر نہیں ہے. کوئی بنیادی چیز لے لیجئے. آپ کو یہ جان کر کوئی مشکل نہیں ہوگی کہ اس میں بدلاؤ ہو رہا ہے، اس کے اندر گتی، بڑھتی، اور وکاس سب کے سب ایسے ہی موجود ہیں جیسے ہماری دنیا ہے. Dialectical ماٹی وادی ٹھیک سمجھتا ہے کہ 'ہگل' نے ستیہ کو ٹھیک ہی سمجھا کہ ستیہ بہت زوردار ہے، وہ استھر نہیں بیٹھتا. یہ ٹھیک ہے ہگل نے اس کو آدرش واد کے روپ میں سمجھا. ابھی اس کے ستیہ کے نیم ماٹی وادی بنیاد پر تھے. پر اس نے اس سب کو زور کے شبدوں میں کہا. اس نے کہا جگت سدا بدلاؤ والا ہے. آئیے! اب اس بات کو صاف کرنے کی کوشش کریں کہ شبد میں وہ ارتھ ہیں یا نہیں جس بات کو بتانے کے لئے وہ شبد کام میں لائے جائیں. وہ تین نیم ہیں اور اسٹرائف (Strife) یعنی "پریتن نیم" کے نام سے مشہور ہیں. پہلا ہے پریتن نیم جسکا ارتھ ہوتا ہے دو الگ چیزوں کا ایک دوسرے میں پرویش ہوکر ایک میل ہو جانا. دوسرا نیم ہے وستو کا گن میں اور گن کا وستو میں بدل جانا. تیسرا نیم ہے نہیں کو نہیں ماننا، یعنی نہیں کے ہونے سے انکار کرنا.

پہلے نیم کا کیا ارتھ ہے اور اس کے ٹھیک ہونے کی کیا گواہی ہے، معمولی بھاشا میں یہ بہت کچھ بتا جاتا ہے. اول تو یہ بتاتا ہے کہ جو کچھ بھی دنیا میں ہے وہ لڑ بھڑ کر بنا ہے، یعنی کئی تتو یا بل آپس میں اپنا زور دوسرے کے خلاف لگا کر مل گئے ہیں اور ایک چیز کا روپ لے بیٹھے ہیں. صاف صاف یوں سمجھئے کہ جب بھی ہم کسی چیز کے اندر کا حال جانتے ہیں تو کبھی ایسا نہ ملا کہ وہ ایسی چیز نکلے کہ جس کے ہم لکھن نہ کرسکے. کوئی چیز استھر نہ ملی. ایسی بھی نہ ملی جو سب طرح ایک ہو، جہاں ہمیں ملی وہاں کئی تتو ملے ہوئے ملے. اور ہر چیز میں دو شکتیاں کام کرتی ہوئی ملیں اور دونوں ایسی ملیں کہ ایک ایک طرف کو کھینچ رہی ہے اور دوسری دوسری طرف کو. معمولی بھاشا میں جب ہم یہ کہتے ہیں کہ یہ چیز اس لئے یہ چیز ہے کہ یہ اس طرح کی بنی ہوئی ہے، اس کا ایسا سنگھٹن ہے کہ اس سنگھٹن کا ہر بھاگ اپنے اپنے کام میں لگا ہے، تب ہمارے من میں وہی بات رہتی ہے جو ڈائی لیکٹیکل ماٹی وادی کے من میں رہتی ہے. کسی چیز کا ہر حصہ ایک ہی کام نہیں کرتا. کوئی کچھ

—कैसी बदक़िस्मत और कैसी ख़ुशक़िस्मत हालत थी !—

मैं चल दिया, कोई मुझे देखने वाला न था,
रात के वक़्त, सब आंखों से ओझल,
छिपी हुई सीढ़ियों से, भेस बदले हुए,
राह दिखाने के लिये कोई दिया न था,
सिवाय उस रोशनी के जो मेरे दिल में, मेरे पहलू में
जल रही थी.
वही रोशनी मुझे अपने पीछे ले चली,
भरी दोपहरी भी इतना पक्का रास्ता न दिखाती,
किधर ! मैं जानता था कि उधर ही मेरा प्रीतम,
मेरे आने की छिप कर इन्तज़ार कर रहा था,
मैंने अपनी फूलों जैसी छाती के ऊपर
जो केवल उसी के लिये थी, किसी दूसरे को उस पर
अधिकार न था,
वहां मैंने उसे प्यार से आराम कराया,
अपने प्रीतम को.
देवदार के दरख़्तों की ठंडी हवा पंखा झल रही थी
उस समय मैं और सब चीज़ें भूल गया.
मेरा गाल उसके गाल पर, मेरे बुलाने से वह आया.
सब चीज़ें गुम हो गईं, मैं भी खो गया,
मेरी सब चिन्ताएं और शर्म जाती रही,
जंगल के फूलों में और उनकी भी याद न रही थी.

हिन्दू मुस्लिम और सब धर्म मज़हबों के भगतों, फ़क़ीरों और अल्लाह वालों की बानी इस तरह के गानों से भरी पड़ी है.

कला प्रकृति की नक़ल नहीं करती, बल्कि प्रकृति के अध्ययन को अपना आधार बनाती है—वह प्रकृति में से चुन चुन कर वे चीज़ें लेती है जो कि उसकी अपनी मंशा के अनुकूल हैं, और तब उनको वह बख़्शती है जो कि प्रकृति के पास नहीं है, यानी आदमी का मन और आत्मा.

— बलवर

—کیسی بدقسمت اور کیسی خوش قسمت حالت تھی !—

میں چل دیا' کوئی مجھے دیکھنے والا نہ تھا'
رات کے وقت' سب آنکھوں سے اوجھل'
چھپی ہوئی سیڑھیوں سے' بھیس بدلے ہوئے'
راہ دکھانے کے لئے کوئی دیا نہ تھا'
سوائے اس روشنی کے جو میرے دل میں' میرے پہلو
میں جل رہی تھی .
وہی روشنی مجھے اپنے پیچھے لے چلی'
بھری دوپہری بھی اتنا پکا راستہ نہ دکھاتی'
کدھر ! میں جانتا تھا کہ ادھر ہی میرا پریتم'
میرے آنے کی چھپ کر انتظار کر رہا تھا'
میں نے اپنی پھولوں جیسی چھاتی کے اوپر
جو کیول اسی کے لئے تھی' کسی دوسرے کو اس پر
ادھیکار نہ تھا'
وہاں میں نے اسے پیار سے آرام کرایا'
اپنے پیارے پریتم کو .
دیودار کے درختوں کی ٹھنڈی ہوا پنکھا جھل رہی تھی
اس سمے میں اور سب چیزیں بھول گیا .
میرا گال اس کے گال پر' میرے بلانے سے وہ آیا .
سب چیزیں گم ہوگئیں' میں بھی کھو گیا'
میری سب چنتائیں اور شرم جاتی رہی'
جنگل کے پھولوں میں اور ان کی بھی یاد نہ رہی تھی .

ہندو مسلم اور سب دھرم مذہبوں کے بھگتوں' فقیروں اور اللہ والوں کی بانی اس طرح کے گانوں سے بھری پڑی ہے .

کلا پرکرتی کی نقل نہیں کرتی' بلکہ پرکرتی کے ادھین کو اپنا آدھار بناتی ہے—وہ پرکرتی میں سے چن چن کر وہ چیزیں لیتی ہے جو کہ اسکی اپنی منشا کے انوکول ہوں' اور تب ان کو وہ بخشتی ہے جو کہ پرکرتی کے پاس نہیں ہے' یعنی آدمی کا من اور آتما .

—بلور

सूफ़ी कहता है कि :—

"एक अल्लाह के वजूद के सिवा और सब चीज़ें फ़ानी हैं, अगर अल्लाह के वजूद में तू भी शामिल है तो फिर अपने अलग वजूद को मत ढूंढ और अगर अल्लाह के वजूद में तू शामिल नहीं है तो अपने इस अलग वजूद को ढूंढना बेमानी है."

इस तरह फ़ना फ़िल्लाह हो कर यानी ईश्वर में लीन हो कर दुनिया के सब दुख ख़त्म हो जाते हैं. जाने अनजाने सब उसी तरफ़ को जा रहे हैं. सब की वही एक मंज़िल है.

सूफ़ी कहता है :—

"टूट जाये वह हाथ जो यार की गर्दन के चारों तरफ़ मुड़ा न हो और वह आंख अंधी अच्छी जिसे यार का दीदार नसीब न हुआ हो."

एक सन्त का कहना है :—

अबहूं का सो और करौं
कहत पुकारत प्रभु निज मुख ते घट घट हूं बहरौं
आप समान सबै जग लेख्यो, भगत न अधिक डरौं

सच्चे प्रेमी के लिये ईश्वर बन्दों से कोई अलग चीज़ नहीं है :—

"शक्ले इन्सां में ख़ुदा था मुझे मालूम न था
चांद बादल में छिपा था मुझे मालूम न था"

ईश्वर और बंदे के प्रेम की मिसाल अक्सर पुरुश और स्त्री के प्रेम से भी दी जाती है.

कार्डिनेल न्यूमैन ने लिखा है :—

"अगर आत्मा को ऊंची रूहानी बरकतों की तरफ़ बढ़ना है तो उसे औरत बनना होगा—हां! चाहे आदमियों में तुम कितने भी मर्द क्यों न हो."

इंजील के 'सांग आफ़ सांग्स' में ईश्वर को मुख़ातिब करके लिखा है :—

"आओ और अपने मुंह के बोसों से मुझे बोसा दो! क्योंकि तुम्हारा प्रेम शराब से बढ़ कर है! देखो ऐ मेरे प्रीतम! तुम कितने सुन्दर हो! हां कितने प्यारे हो! और हमारा बिछौना हरा है. प्रीतम का बांया हाथ मेरे सिर के नीचे है और उसका दाहिना हाथ मुझे लिपटाए हुए है."

मीरा के प्रभु गहर गम्भीरा
आधी रात प्रभु दर्शन देंगे
प्रेम नदी के तीरा
हृदय राखो धीरा

मशहूर ईसाई सन्त सैन्ट जान का एक सुन्दर गीत है :—

एक अंधेरी रात को,
वियोग की आग में जलता हुआ,

صوفی کہتا ہے کہ :—

" ایک اللہ کے وجود کے سوا اور سب چیزیں فانی ہیں، اگر اللہ کے وجود میں تو بھی شامل ہے تو پھر اپنے الگ وجود کو مت ڈھونڈھ، اور اگر اللہ کے وجود میں تو شامل نہیں ہے تو اپنے اس الگ وجود کو ڈھونڈھنا بے معنی ہے ."

اسطرح فنا فی اللہ ہو کر یعنی ایشور میں لین ہو کر دنیا کے سب دکھ ختم ہو جاتے ہیں . جانے انجانے سب اسی طرف کو جا رہے ہیں . سب کی وہی ایک منزل ہے .

صوفی کہتا ہے :—

" ٹوٹ جائے وہ ہاتھ جو یار کی گردن کے چاروں طرف مڑا نہ ہو اور وہ آنکھ اندھی اچھی جسے یار کا دیدار نصیب نہ ہوا ہو ."

ایک سنت کا کہنا ہے : —

" اب ہوں کا سوں بیر کروں
کہت پکارت پربھو نج مکھ تے گھٹ گھٹ ہوں وہروں
آپ سمان سب جگ لیکھیو، بھگت نہ ادھک ڈروں"

سچے پریمی کے لئے ایشور بندوں سے کوئی الگ چیز نہیں ہے :—

" شکل انساں میں خدا تھا مجھے معلوم نہ تھا
چاند بادل میں چھپا تھا مجھے معلوم نہ تھا "

ایشور اور بندے کے پریم کی مثال اکثر پرش اور استری کے پریم سے بھی دی جاتی ہے .

کارڈنل نیومین نے لکھا ہے :—

" اگر آتما کو اونچی روحانی برکتوں کی طرف بڑھنا ہے تو اسے عورت بننا ہوگا—ہاں! چاہے آدمیوں میں تم کتنے بھی مرد کیوں نہ ہو ."

انجیل کے ' سانگ آف سانگس ' میں ایشور کو مخاطب کر کے لکھا ہے :—

" آو اور اپنے منہ کے بوسوں سے مجھے بوسہ دو! کیونکہ تمہارا پریم شراب سے بڑھکر ہے! دیکھو اے میرے پریتم! تم کتنے سندر ہو! ہاں کتنے پیارے ہو! اور ہمارا بچھونا ہرا ہے. پریتم کا بایاں ہاتھ میرے سر کے نیچے ہے اور اس کا داہنا ہاتھ مجھے لپٹائے ہوئے ہے ."

میرا کے پربھو گہر گمبھیرا
آدھی رات پربھو درشن دینگے
پریم ندی کے تیرا
ہردیہ راکھو دھیرا

مشہور عیسائی سنت سینٹ جان کا ایک سندر گیت ہے :—

ایک اندھیری رات کو،
ویوگ کی آگ میں جلتا ہوا،

जिस्म ख़त्म हो जाता है तो दीनवी दौलत सब उसके साथ साथ ख़त्म हो जाती है. आत्मा यानी रूह अमरत्व यानी अबदी ज़िन्दगी चाहती है, दौलत नहीं चाहती.''

लेकिन ख़्वाहिश और बेख़्वाहिशी दोनों का अलग अलग वक़्त होता है. उपनिषद में लिखा है :—

"श्रेय और प्रेय यानी आदमी का वह फ़र्ज़ जिस से उसकी रूह का भला हो और उसकी वह ग़रज़ जिस के पूरा होने से उसके जिस्म को सुख मिले दोनों आदमी को अपनी अपनी तरफ़ खींचते हैं. धीर और समझदार आदमी दोनों का अच्छी तरह मुक़ाबिला कर के उनमें से फ़र्ज़ को अपनाता है, ग़रज़ या ख़ुदग़र्ज़ी को नहीं, और कम समझ आदमी थोड़ी देर का फ़ायदा देख कर बच्चे की तरह ग़रज़ की तरफ़ दौड़ता है.''

"श्रेय एक चीज़ है प्रेय दूसरी चीज़ है. आत्मा दोनों के अन्दर और दोनों को लिये हुए है. अधिक से अधिक भला, सबका भला—यही सनातन धर्म है और यही असली श्रेय और यही असली प्रेय है. धन दौलत, बाल बच्चों और राज पाट से यह ज़ियादा क़ीमती है. जो आत्मा के लिये क़ीमती है वही सचमुच क़ीमती है.''

बौध धर्म का कहना है :—

"दीनवी लाभ का एक रास्ता है और निर्वान यानी परम सुख का दूसरा रास्ता है.''

आदमी का कब क्या फ़र्ज़ है यह सवाल हर एक के सामने बार बार उठता रहता है. आदमी पहले पास की एक ग़रज़ अपने सामने रखता है. फिर उसकी निगाह कुछ दूर जाती है, वहां उसे दूसरी ग़रज़ दिखाई देती है. अब पास की ग़रज़ दूर की ग़रज़ के सामने मिट जाती है या उसके अधीन हो जाती है. यह सिलसिला बराबर जारी रहता है जब तक कि आदमी अपने वजूद की असली और आख़िरी ग़रज़ तक न पहुंच जावे. यह आख़िरी ग़रज़ सब धर्मों में आत्मा का परमात्मा को यानी रूह का रूहेकुल को पाना और उसमें फ़ना हो जाना है. इस तरह एक सवाल के बाद दूसरा सवाल आदमी के सामने आता रहता है, यहां तक कि आख़िरी सवाल यह आता है कि मैं कौन हूं और यह सब क्या है और मेरा और इन सब का क्या नाता है ? इस सवाल के जवाब में सब सवालों का जवाब आजाता है. श्रेय और प्रेय का झगड़ा फिर ख़त्म हो जाता है. अपनी आत्मा यानी अपने आपे को समझना, यह समझ लेना कि मेरा आपा और सब के आपे एक ही आपा है, सब का भला मेरा भला है—इस चीज़ को दिल में जमा लेने में ही सब दुखों का अन्त और परम आनन्द की शुरूआत है भक्ति मार्ग यानी मज़हबे इश्क़ का यही असल मक़सद है.

جسم ختم ہوجاتا ہے تو دینوی دولت سب اس کے ساتھ ساتھ ختم ہو جاتی ہے ۔ آتما یعنی روح امرتو یعنی ابدی زندگی چاہتی ہے' دولت نہیں چاہتی۔"

لیکن خواہش اور بے خواہشی دونوں کا الگ الگ وقت ہوتا ہے ۔ اپنشد میں لکھا ہے :—

" شریہ اور پریہ یعنی آدمی کا وہ فرض جس سے اسکی روح کا بھلا ہو اور اسکی وہ غرض جس کے پورا ہونے سے اس کے جسم کو سکھ ملے دونوں آدمی کو اپنی اپنی طرف کھینچتے ہیں ۔ دھیر اور سمجھدار آدمی دونوں کا اچھی طرح مقابلہ کر کے ان میں سے فرض کو اپناتا ہے' غرض یا خود غرضی کو نہیں' اور کم سمجھ آدمی تھوڑی دیر کا فائدہ دیکھکر بچے کی طرح غرض کی طرف دوڑتا ہے ۔"

" شریہ ایک چیز ہے پریہ دوسری چیز ہے۔ آتما دونوں کے اندر اور دونوں کو لئے ہوئے ہے ۔ ادھک سے ادھک بھلا' سب کا بھلا—یہی سناتن دھرم ہے اور یہی اصلی شریہ اور یہی اصلی پریہ ہے ۔ دھن دولت' بال بچوں اور راج پاٹ سے یہ زیادہ قیمتی ہے ۔ جو آتما کے لئے قیمتی ہے وہی سچ مچ قیمتی ہے ۔"

بودھ دھرم کا کہنا ہے :—

" دینوی لابھ کا ایک راستہ ہے اور نروان یعنی پرم سکھ کا دوسرا راستہ ہے ۔"

آدمی کا کب کیا فرض ہے یہ سوال ہر ایک کے سامنے بار بار اٹھتا رہتا ہے ۔ آدمی پہلے پاس کی ایک غرض اپنے سامنے رکھتا ہے ۔ پھر اسکی نگاہ کچھ دور جاتی ہے' وہاں اسے دوسری غرض دکھائی دیتی ہے۔ اب پاس کی غرض دور کی غرض کے سامنے مٹ جاتی ہے یا اس کے ادھین ہو جاتی ہے ۔ یہ سلسلہ برابر جاری رہتا ہے جب تک کہ آدمی اپنے وجود کی اصلی اور آخری غرض تک نہ پہنچ جاوے ۔ یہ آخری غرض سب دھرموں میں آتما کا پرماتما کو یعنی روح کا روح کل کو پانا اور اس میں فنا ہو جانا ہے۔ اس طرح ایک سوال کے بعد دوسرا سوال آدمی کے سامنے آتا رہتا ہے' یہاں تک کہ آخری سوال یہ آتا ہے کہ میں کون ہوں' اور یہ سب کیا ہے اور میرا اور ان سب کا کیا ناتا ہے؟ اس سوال کے جواب میں سب سوالوں کا جواب آجاتا ہے ۔ شریہ اور پریہ کا جھگڑا پھر ختم ہو جاتا ہے۔ اپنی آتما یعنی اپنے آپے کو سمجھنا' یہ سمجھ لینا کہ میرا آپا اور سب کے آپے ایک ہی آپا ہے' سب کا بھلا میرا بھلا ہے— اس چیز کو دل میں جما لینے میں ہی سب دکھوں کا انت اور پرم آنند کی شروعات ہے ۔ بھکتی مارگ یعنی مذہب عشق کا یہی اصل مقصد ہے ۔

वक़्त ख़त्म होती है जब हमारा छोटा आपा और हमारा बड़ा आपा, अपना और पराया, मेरा आपा और सब का आपा एक हो जाता है. मैं सब हूं और सब मैं ही हूं. सब मेरे ही रूप हैं. तब भोग और त्याग, सुख और फ़र्ज़ दोनों एक हो जाते हैं. सुख फ़र्ज़ हो जाता है और फ़र्ज़ सुख, धर्म प्रेम हो जाता है और प्रेम धर्म. मां अपने बच्चे में और बच्चे के लिये जीती है. बच्चे की देख रेख में उसे अपने सुख दुख का ध्यान भी नहीं रहता. उसके लिये सुख और फ़र्ज़ एक हो जाते हैं. इसी में उसके जीवन का सब से बड़ा आनन्द होता है. प्रेम की यही पहेली है, यही इसकी ऊंच नीच है. मां का प्यार! ईश्वर का प्यार! जो रूह अभी तक प्रवृत्ति यानी नज़ूल के रास्ते पर अटकी हुई है वह क़ुदरती तौर पर अपने छोटे आपे से चिपटती है और जो रूह प्रवृत्ति और निवृत्ति यानी नज़ूल और उरूज के जंक्शन से ऊपर को मुड़ चुकी है वह क़ुदरती तौर पर अपने बड़े आपे यानी अनन्त आपे को चिपटती है.

यूनान में ऐपीक्योरस एक मशहूर फ़लास्फ़र हुआ है. अकसर लोग यह समझते हैं कि उसने दुनिया को 'खाओ, पिओ और खुश रहो' की तालीम दी है. लेकिन ऐपीक्योरस ने एक जगह कहा है :—

"अगर तुम किसी आदमी को सुखी बनाना चाहते हो तो उसकी दौलत को मत बढ़ाओ बल्कि उसकी ख़्वाहिशों को कम करो. हम तब तक सुख की ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकते जब तक समझदारी, सम्मान और इन्साफ़ की ज़िन्दगी बसर न करें, और हम तब तक समझदारी, सम्मान और इन्साफ़ की ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकते जब तक वह ज़िन्दगी हमारे लिये सुख की ज़िन्दगी भी न हो."

यही असल वेदान्त है. यही वैदिक धर्म है.

उपनिशद में लिखा है :—

"अमृत यानी आबेहयात को वही आदमी चख सकता है जो शरीर के सुखों को त्याग सकता हो."

भागवत में लिखा है : —

"दुनियवी ख़्वाहिशों के पूरा होने से जो सुख मिलता है वह उस ज़बरदस्त सुख का सोलहवां हिस्सा भी नहीं होता जो ख़्वाहिशों के ख़त्म हो जाने से आदमी को हासिल होता है."

कठ उपनिशद में लिखा है :—

"आदमी केवल दुनियवी दौलत से संतोश हासिल नहीं कर सकता और न दौलत उसे ज़िन्दा रख सकती है. बड़ी से बड़ी दौलत आत्मा को तसल्ली नहीं दे सकती. जब तक हम जीते हैं तब तक हम मौत को नहीं देख पाते. जब यह

وقت ختم ہوتی ہے جب ہمارا چھوٹا آپا اور ہمارا بڑا آپا' اپنا اور پرایا' میرا آپا اور سب کا آپا ایک ہو جاتا ہے. میں سب ہوں اور سب میں ہی ہوں. سب میرے ہی روپ ہیں. تب بھوگ اور تیاگ' سکھ اور فرض دونوں ایک ہو جاتے ہیں. سکھ فرض ہو جاتا ہے اور فرض سکھ' دھرم پریم ہو جاتا ہے اور پریم دھرم . ماں اپنے بچے میں اور بچے کے لئے جیتی ہے. بچے کے دیکھ ریکھ میں اسے اپنے سکھ دکھ کا دھیان بھی نہیں رہتا . اس کے لئے سکھ اور فرض ایک ہو جاتے ہیں. اسی میں اس کے جیون کا سب سے بڑا آنند ہوتا ہے پریم کی یہی پہیلی ہے' یہی اس کی اونچ نیچ ہے . ماں کا پیار ! ایشور کا پیار ! جو روح ابھی تک پرورتی یعنی نزول کے راستے پر اٹکی ہوئی ہے وہ قدرتی طور پر اپنے چھوٹے آپے سے چپٹتی ہے اور جو روح پرورتی اور نورتی یعنی نزول اور عروج کے جنکشن سے اوپر کو مڑ چکی ہے وہ قدرتی طور پر اپنے بڑے آپے یعنی اننت آپے کو چپٹتی ہے.

یونان میں ایپی کیورس ایک مشہور فلاسفر ہوا ہے. اکثر لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ اس نے دنیا کو 'کھاؤ پیئو' اور خوش رہو' کی تعلیم دی ہے . لیکن ایپی کیورس نے ایک جگہ کہا ہے :—

" اگر تم کسی آدمی کو سکھی بنانا چاہتے ہو تو اس کی دولت کو مت بڑھاؤ بلکہ اس کی خواہشوں کو کم کرو . ہم تب تک سکھ کی زندگی بسر نہیں کر سکتے جب تک سمجھداری' سمان اور انصاف کی زندگی بسر نہ کریں' اور ہم تب تک سمجھداری' سمان اور انصاف کی زندگی بسر نہیں کر سکتے جب تک وہ زندگی ہمارے لئے سکھ کی زندگی بھی نہ ہو ."

یہی اصل ویدانت ہے . یہی ویدک دھرم ہے .

اپنشد میں لکھا ہے :—

" امرت یعنی آب حیات کو وہی آدمی چکھ سکتا ہے جو شریر کے سکھوں کو تیاگ سکتا ہو ."

بھاگوت میں لکھا ہے :—

" دنیوی خواہشوں کے پورا ہونے سے جو سکھ ملتا ہے وہ اس زبردست سکھ کا سولہواں حصہ بھی نہیں ہوتا جو خواہشوں کے ختم ہوجانے سے آدمی کو حاصل ہوتا ہے ."

کٹھ اپنشد میں لکھا ہے :—

" آدمی کیول دنیوی دولت سے سنتوش حاصل نہیں کر سکتا اور نہ دولت اسے زندہ رکھ سکتی ہے . بڑی سے بڑی دولت آتما کو تسلی نہیں دے سکتی. جب تک ہم جیتے ہیں تب تک ہم موت کو نہیں دیکھ پاتے. جب یہ

सूफ़ी कहता है :—

"कोई दिल ऐसा नहीं होना चाहिये जिस में इश्क़ न हो, फिर चाहे वह इश्क़ हक़ीक़ी (ईश्वरी) हो या मजाज़ी (मानव). इश्क़े मजाज़ी शीशे की तरह इश्क़े हक़ीक़ी का चहरा अपने अन्दर दिखाता रहता है. इश्क़े मजाज़ी की रोशनी आदमी को अल्लाह की गली तक पहुंचा देती है."

एक अंगरेज़ शायर कहता है :—

"प्यार करना और खो देना ज़ियादा अच्छा है बजाय इसके कि कभी प्यार किया ही न हो."

"अच्छा यह है कि आदमी अक़्लमन्दी यानी समझदारी के साथ प्यार करे, क्योंकि ऐसा करना ईश्वर की सब जानदार चीज़ों से प्यार करना है, और हर एक को प्यार भरे इन्साफ़ के साथ उसका हक़ पहुंचाना है लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो बेवक़ूफ़ी और नासमझी के साथ ही प्यार करो, क्योंकि प्यार न करने की निस्बत नासमझी से प्यार करना कहीं ज़ियादा अच्छा है."

यूरप के एक लेखक ने बहुत अच्छा कहा है :—

"ईश्वर 'प्रेम' का खिंचा हुआ इत्र है और प्रेम वह मसाला या ख़ूराक है जिस में वह इत्र घुला हुआ है. जिस दर्जे तक हम प्यार करते हैं उस दर्जे तक हम ईश्वर में हैं और ईश्वर हम में है. और जिस दर्जे तक हम प्यार नहीं करते उस दर्जे तक हम इस दुनिया में या किसी भी दूसरी दुनिया में बिना ईश्वर के हैं. सब धर्म मज़हबों और तरह तरह की फ़लासफ़ियों की आदर्श चर्च, जमाअत या सम्प्रदाय एक ही है. यह चर्च या जमाअत या सम्प्रदाय उन सब लोगों का मेल या संगम है जो प्यार करते हैं और जो उन सब की सेवा में लगे हुए हैं जो दुखी हैं."

हम सब की दो आत्माएं या दो आपे होते हैं, एक हमारा छोटा निचला आत्मा हमारी ख़ुदी हमारा अहंकार, और दूसरा हमारा बड़ा ऊंचा आपा जिस में सबके आपे शामिल होते हैं. हमारा पहला यानी छोटा आपा जब प्यार करता है तो कुछ लेना चाहता है. हमारा बड़ा आपा जब प्यार करता है तो देना चाहता है. यह कशमकश बराबर जारी रहती है. वैदिक धर्म में इस कशमकश को प्रेय और श्रेय यानी स्वार्थ और प्रमार्थ के बीच की कशमकश कहते हैं. बौध धर्म में इसे लाभ और निब्बान के बीच की कशमकश कहते हैं. पार्सी धर्म में इसे दुरुज और आशा के बीच की कशमकश कहते हैं और सूफ़ी इस्तलाह में इसे ग़रज़ और फ़र्ज़ के बीच की कशमकश कहा जाता है. यही दिल और दिमाग़, ख़ुदग़र्ज़ी और ख़ुद-निसारी, परपीड़न और परोपकार, अपना भला और सब का भला के बीच की कशमकश है. यह कशमकश उस

صوفی کہتا ہے :—

" کوئی دل ایسا نہیں ہونا چاہئے جس میں عشق نہ ہو، پھر چاہے وہ عشق حقیقی (ایشوری) ہو یا مجازی (مانو) . عشق مجازی شیشے کی طرح عشق حقیقی کا چہرہ اپنے اندر دکھاتا رہتا ہے . عشق مجازی کی روشنی آدمی کو اللہ کی گلی تک پہنچا دیتی ہے."

ایک انگریز شاعر کہتا ہے :—

" پیار کرنا اور کھو دینا زیادہ اچھا ہے بجائے اس کے کہ کبھی پیار کیا ہی نہ ہو."

" اچھا یہ ہے کہ آدمی عقلمندی یعنی سمجھداری کے ساتھ پیار کرے، کیونکہ ایسا کرنا ایشور کی سب جاندار چیزوں سے پیار کرنا ہے، اور ہر ایک کو پیار بھرے انصاف کے ساتھ اس کا حق پہنچانا ہے . لیکن اگر تم ایسا نہیں کر سکتے تو بیوقوفی اور ناسمجھی کے ساتھ ہی پیار کرو، کیونکہ پیار نہ کرنے کی نسبت ناسمجھی سے پیار کرنا کہیں زیادہ اچھا ہے."

یورپ کے ایک لیکھک نے بہت اچھا کہا ہے :—

" ایشور پریم کا کھنچا ہوا عطر ہے اور پریم وہ مسالہ یا خوراک ہے جس میں وہ عطر گھلا ہوا ہے . جس درجہ تک ہم پیار کرتے ہیں اس درجہ تک ہم ایشور میں ہیں اور ایشور ہم میں ہے . اور جس درجہ تک ہم پیار نہیں کرتے اس درجہ تک ہم اس دنیا میں یا کسی بھی دوسری دنیا میں بنا ایشور کے ہیں . سب دھرم مذہبوں اور طرح طرح کی فلسفیوں کی آدرش چرچ، جماعت یا سمپردائے ایک ہی ہے . یہ چرچ یا جماعت یا سمپردائے ان سب لوگوں کا میل یا سنگم ہے جو پیار کرتے ہیں اور جو ان سب کی سیوا میں لگے ہوئے ہیں جو دکھی ہیں."

ہم سب کی دو آتمائیں یا دو آپے ہوتے ہیں، ایک ہمارا چھوٹا نچلا آتما ہماری خودی ہمارا اہنکار، اور دوسرا ہمارا بڑا اونچا آپا جس میں سب کے آپے شامل ہوتے ہیں . ہمارا پہلا یعنی چھوٹا آپا جب پیار کرتا ہے تو کچھ لینا چاہتا ہے . ہمارا بڑا آپا جب پیار کرتا ہے تو دینا چاہتا ہے . یہ کشمکش برابر جاری رہتی ہے . ویدک دھرم میں اس کشمکش کو پریہ اور شریہ یعنی سوارتھ اور پرمارتھ کے بیچ کی کشمکش کہتے ہیں . بودھ دھرم میں اسے لابھ اور نبان کے بیچ کی کشمکش کہتے ہیں . پارسی دھرم میں اسے دروج اور آشا کے بیچ کی کشمکش کہتے ہیں . اور صوفی اصطلاح میں اسے غرض اور فرض کے بیچ کی کشمکش کہا جاتا ہے . یہی دل اور دماغ، خود غرضی اور خودنثاری، پرپیڑن اور پروپکار، اپنا بھلا اور سب کا بھلا کے بیچ کی کشمکش ہے . یہ کشمکش اس

त ख़त्म होती है जब हमारा छोटा आपा और हमारा ा आपा, अपना और पराया, मेरा आपा और सब का ापा एक हो जाता है. मैं सब हूं और सब मैं ही हूं. सब ी ही रूप हैं. तब भोग और त्याग, सुख और फ़र्ज़ ानों एक हो जाते हैं. सुख फ़र्ज़ हो जाता है और फ़र्ज़ ुख, धर्म प्रेम हो जाता है और प्रेम धर्म. मां अपने बच्चे और बच्चे के लिये जीती है. बच्चे की देख रेख में से अपने सुख दुख का ध्यान भी नहीं रहता. उसके लिये ुख और फ़र्ज़ एक हो जाते हैं. उसी में उसके जीवन का ब से बड़ा आनन्द होता है. प्रेम की यही पहेली है, यही सकी ऊंच नीच है. मां का प्यार ! ईश्वर का प्यार ! जो ह अभी तक प्रवृत्ति यानी नज़ूल के रास्ते पर अटकी है वह क़ुदरती तौर पर अपने छोटे आपे से चिपटती और जो रूह प्रवृत्ति और निवृत्ति यानी नज़ूल और रूज के जंक्शन से ऊपर को मुड़ चुकी है वह क़ुदरती ोर पर अपने बड़े आपे यानी अनन्त आपे को चिपटती है.

यूनान में ऐपीक्योरस एक मशहूर फ़लास्फ़र हुआ . अकसर लोग यह समझते हैं कि उसने दुनिया को खाओ, पिओ और ख़ुश रहो' की तालीम दी है. लेकिन ऐपीक्योरस ने एक जगह कहा है :—

"अगर तुम किसी आदमी को सुखी बनाना चाहते ो तो उसकी दौलत को मत बढ़ाओ बल्कि उसकी वाहिशों को कम करो. हम तब तक सुख की ज़िन्दगी सर नहीं कर सकते जब तक समझदारी, सम्मान और न्साफ़ की ज़िन्दगी बसर न करें, और हम तब तक समझदारी, सम्मान और इन्साफ़ की ज़िन्दगी बसर नहीं कर सकते जब तक वह ज़िन्दगी हमारे लिये सुख की ज़िन्दगी भी न हो."

यही असल वेदान्त है. यही वैदिक धर्म है.

उपनिशद में लिखा है :—

"अमृत यानी आबेहयात को वही आदमी चख सकता है जो शरीर के सुखों को त्याग सकता हो."

भागवत में लिखा है : —

"दुनियवी ख़्वाहिशों के पूरा होने से जो सुख मिलता है वह उस ज़बरदस्त सुख का सोलहवां हिस्सा भी नहीं होता जो ख़्वाहिशों के ख़त्म हो जाने से आदमी को हासिल होता है."

कठ उपनिशद में लिखा है :—

"आदमी केवल दुनियवी दौलत से संतोश हासिल नहीं कर सकता और न दौलत उसे ज़िन्दा रख सकती है. बड़ी से बड़ी दौलत आत्मा को तसल्ली नहीं दे सकती. जब तक हम जीते हैं तब तक हम मौत को नहीं देख पाते. जब वह

وقت ختم ہوتی ہے جب ہمارا چھوٹا آپا اور ہمارا بڑا آپا، اپنا اور پرایا، میرا آپا اور سب کا آپا ایک ہو جاتا ہے. میں سب ہوں اور سب میں ہی ہوں. سب میرے ہی روپ ہیں. تب بھوگ اور تیاگ، سکھ اور فرض دونوں ایک ہو جاتے ہیں. سکھ فرض ہو جاتا ہے اور فرض سکھ، دھرم پریم ہو جاتا ہے اور پریم دھرم. ماں اپنے بچے میں اور بچے کے لئے جیتی ہے. بچے کے دیکھ ریکھ میں اسے اپنے سکھ دکھ کا دھیان بھی نہیں رہتا. اس کے لئے سکھ اور فرض ایک ہو جاتے ہیں. اسی میں اس کے جیون کا سب سے بڑا آنند ہوتا ہے. پریم کی یہی پہیلی ہے، یہی اس کی اونچ نیچ ہے. ماں کا پیار ! ایشور کا پیار ! جو روح ابھی تک پرورتی یعنی نزول کے راستے پر اٹکی ہوئی ہے وہ قدرتی طور پر اپنے چھوٹے آپے سے چپٹتی ہے اور جو روح پرورتی اور نورتی یعنی نزول اور عروج کے جنکشن سے اوپر کو مڑ چکی ہے وہ قدرتی طور پر اپنے بڑے آپے یعنی اننت آپے کو چپٹتی ہے.

یونان میں ایپی کیورس ایک مشہور فلاسفر ہوا ہے. اکثر لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ اس نے دنیا کو 'کھاؤ، پیو اور خوش رہو' کی تعلیم دی ہے. لیکن ایپی کیورس نے ایک جگہ کہا ہے :—

"اگر تم کسی آدمی کو سکھی بنانا چاہتے ہو تو اس کی دولت کو مت بڑھاؤ بلکہ اسکی خواہشوں کو کم کرو. ہم تب تک سکھ کی زندگی بسر نہیں کر سکتے جب تک سمجھداری، سمان اور انصاف کی زندگی بسر نہ کریں، اور ہم تب تک سمجھداری، سمان اور انصاف کی زندگی بسر نہیں کر سکتے جب تک وہ زندگی ہمارے لئے سکھ کی زندگی بھی نہ ہو."

یہی اصل ویدانت ہے. یہی ویدک دھرم ہے.

اپنشد میں لکھا ہے :—

"امرت یعنی آب حیات کو وہی آدمی چکھ سکتا ہے جو شریر کے سکھوں کو تیاگ سکتا ہو."

بھاگوت میں لکھا ہے :—

"دنیوی خواہشوں کے پورا ہونے سے جو سکھ ملتا ہے وہ اس زبردست سکھ کا سولہواں حصہ بھی نہیں ہوتا جو خواہشوں کے ختم ہو جانے سے آدمی کو حاصل ہوتا ہے."

کٹھ اپنشد میں لکھا ہے :—

"آدمی کیول دنیوی دولت سے سنتوش حاصل نہیں کر سکتا اور نہ دولت اسے زندہ رکھ سکتی ہے. بڑی سے بڑی دولت آتما کو تسلی نہیں دے سکتی. جب تک ہم جیتے ہیں تب تک ہم موت کو نہیں دیکھ پاتے. جب یہ

सूफ़ी कहता है :—

"कोई दिल ऐसा नहीं होना चाहिये जिस में इश्क़ न हो, फिर चाहे वह इश्क़ हक़ीक़ी (ईश्वरी) हो या मजाज़ी (मानव). इश्क़े मजाज़ी शीशे की तरह इश्क़े हक़ीक़ी का चहरा अपने अन्दर दिखाता रहता है. इश्क़े मजाज़ी की रोशनी आदमी को अल्लाह की गली तक पहुंचा देती है."

एक अंगरेज़ शायर कहता है :—

"प्यार करना और खो देना ज़ियादा अच्छा है बजाय इसके कि कभी प्यार किया ही न हो."

"अच्छा यह है कि आदमी अक़्लमन्दी यानी समझदारी के साथ प्यार करे, क्योंकि ऐसा करना ईश्वर की सब जानदार चीज़ों से प्यार करना है, और हर एक को प्यार भरे इन्साफ़ के साथ उसका हक़ पहुंचाना है लेकिन अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो बेवक़ूफ़ी और नासमझी के साथ ही प्यार करो, क्योंकि प्यार न करने की निस्बत नासमझी से प्यार करना कहीं ज़ियादा अच्छा है."

यूरुप के एक लेखक ने बहुत अच्छा कहा है :—

"ईश्वर 'प्रेम' का खिंचा हुआ इत्र है और प्रेम वह मसाला या ख़ूराक है जिस में वह इत्र घुला हुआ है. जिस दर्जे तक हम प्यार करते हैं उस दर्जे तक हम ईश्वर में हैं और ईश्वर हम में है. और जिस दर्जे तक हम प्यार नहीं करते उस दर्जे तक हम इस दुनिया में या किसी भी दूसरी दुनिया में बिना ईश्वर के हैं. सब धर्म मज़हबों और तरह तरह की फ़िलासफ़ियों की आदर्श चर्च, जमाअत या सम्प्रदाय एक ही है. यह चर्च या जमाअत या सम्प्रदाय उन सब लोगों का मेल या संगम है जो प्यार करते हैं और जो उन सब की सेवा में लगे हुए हैं जो दुखी हैं."

हम सब की दो आत्माएं या दो आपे होते हैं, एक हमारा छोटा निचला आत्मा हमारी ख़ुदी हमारा अहंकार, और दूसरा हमारा बड़ा ऊंचा आपा जिस में सबके आपे शामिल होते हैं. हमारा पहला यानी छोटा आपा जब प्यार करता है तो कुछ लेना चाहता है. हमारा बड़ा आपा जब प्यार करता है तो देना चाहता है. यह कशमकश बराबर जारी रहती है. वैदिक धर्म में इस कशमकश को प्रेय और श्रेय यानी स्वार्थ और प्रमार्थ के बीच की कशमकश कहते हैं. बौध धर्म में इसे लाभ और निर्बान के बीच की कशमकश कहते हैं. पारसी धर्म में इसे दुरुज और आशा के बीच की कशमकश कहते हैं और सूफ़ी इस्तलाह में इसे ग़रज़ और फ़र्ज़ के बीच की कशमकश कहा जाता है. यही दिल और दिमाग़, ख़ुदग़र्ज़ी और ख़ुद-निसारी, परपीड़न और परोपकार, अपना भला और सब का भला के बीच की कशमकश है. यह कशमकश उस

صوفی کہتا ہے :—

" کوئی دل ایسا نہیں ہونا چاہئے جس میں عشق نہ ہو، پھر چاہے وہ عشق حقیقی (ایشوری) ہو یا مجازی (مانو). عشق مجازی شیشے کی طرح عشق حقیقی کا چہرہ اپنے اندر دکھاتا رہتا ہے. عشق مجازی کی روشنی آدمی کو اللہ کی گلی تک پہنچا دیتی ہے."

ایک انگریز شاعر کہتا ہے :—

" پیار کرنا اور کھو دینا زیادہ اچھا ہے بجائے اس کے کہ کبھی پیار کیا ہی نہ ہو."

" اچھا یہ ہے کہ آدمی عقلمندی یعنی سمجھداری کے ساتھ پیار کرے، کیونکہ ایسا کرنا ایشور کی سب جاندار چیزوں سے پیار کرنا ہے، اور ہر ایک کو پیار بھرے انصاف کے ساتھ اس کا حق پہنچانا ہے. لیکن اگر تم ایسا نہیں کر سکتے تو بیوقوفی اور ناسمجھی کے ساتھ ہی پیار کرو، کیونکہ پیار نہ کرنے کی نسبت نا سمجھی سے پیار کرنا کہیں زیادہ اچھا ہے."

یورپ کے ایک لیکھک نے بہت اچھا کہا ہے :—

" ایشور پریم کا کھنچا ہوا عطر ہے اور پریم وہ مسالہ یا خوراک ہے جس میں وہ عطر گھلا ہوا ہے. جس درجہ تک ہم پیار کرتے ہیں اس درجہ تک ہم ایشور میں ہیں اور ایشور ہم میں ہے. اور جس درجہ تک ہم پیار نہیں کرتے اس درجہ تک ہم اس دنیا میں یا کسی بھی دوسری دنیا میں بنا ایشور کے ہیں. سب دھرم مذہبوں اور طرح طرح کی فلاسفیوں کی آدرش چرچ، جماعت یا سمپردائے ایک ہی ہے. یہ چرچ یا جماعت یا سمپردائے ان سب لوگوں کا میل یا سنگم ہے جو پیار کرتے ہیں اور جو ان سب کی سیوا میں لگے ہوئے ہیں جو دکھی ہیں."

ہم سب کی دو آتمائیں یا دو آپے ہوتے ہیں، ایک ہمارا چھوٹا نچلا آتما ہماری خودی ہمارا اہنکار، اور دوسرا ہمارا بڑا اونچا آپا جس میں سب کے آپے شامل ہوتے ہیں. ہمارا پہلا یعنی چھوٹا آپا جب پیار کرتا ہے تو کچھ لینا چاہتا ہے. ہمارا بڑا آپا جب پیار کرتا ہے تو دینا چاہتا ہے. یہ کشمکش برابر جاری رہتی ہے. ویدک دھرم میں اس کشمکش کو پریہ اور شریہ یعنی سوارتھ اور پرمارتھ کے بیچ کی کشمکش کہتے ہیں. بودھ دھرم میں اسے لابھ اور نربان کے بیچ کی کشمکش کہتے ہیں. پارسی دھرم میں اسے دروج اور آشا کے بیچ کی کشمکش کہتے ہیں. اور صوفی اصطلاح میں اسے غرض اور فرض کے بیچ کی کشمکش کہا جاتا ہے. یہی دل اور دماغ، خود غرضی اور خودنثاری، پرپیڑن اور پروپکار، اپنا بھلا اور سب کا بھلا کے بیچ کی کشمکش ہے. یہ کشمکش اس

गुना बढ़ जाती है और जीवन में वह आनन्द मिलता है जो किसी दूसरी चीज़ से नहीं मिल सकता. फिर अगर छोटा सा इन्सान अपनी मर्ज़ी को सब की मर्ज़ी में यानी समाज की मर्ज़ी में मिला सके और वह समझ सके कि सब के अन्दर वही एक रूहेकुल है जो उसके अन्दर है और सब रूप उसी के रूप हैं, तो काम करने और दुनिया की ख़िदमत करने की जो ताक़त उसके अन्दर पैदा होगी उसका अन्दाज़ा हर कोई नहीं लगा सकता. जो आनन्द इस तरह इन्सान को नसीब होता है, जो बरकत उसके कामों में मिलती है वह अन्दाज़े से बाहर है. दुनिया के पैग़म्बरों और महात्माओं की कामयाबी का यही एक राज़ है. उस शक्ति और उस आनन्द को पा कर ही आदमी चिल्ला उठता है, "ईश्वर प्रेम है! इश्क़ के सिवा और कोई ख़ुदा नहीं!" एक का अपने को अनेक के लिये यानी सब के लिये क़ुर्बान कर देना ही भक्ति मार्ग यानी मज़हबे इश्क़ की आख़िरी मंज़िल है. इस मंज़िल पर पहुंच कर ही आदमी समझता है कि मैं ही सब हूं. मेरा अलग वजूद कोई चीज़ नहीं.

उपनिषद में लिखा है कि :—

"जो आदमी सब रूपों और रसों में उसी एक ब्रह्म को देखता है जो सब रसों का रस है वही पूर्नानन्द को हासिल करता है. वही सब का प्यारा होता है. फिर उसे किसी से कोई डर नहीं, क्योंकि उसके लिये कोई ग़ैर नहीं."

इंजील में लिखा है :—

"तुम ही ईश्वर का मंदिर हो. तुम ही इस धरती का नमक हो. अगर नमक अपना मज़ा खो बैठे तो फिर स्वाद उस में किस चीज़ से पैदा किया जा सकता है? उस आदमी को क्या फ़ायदा जो सारी दुनिया हासिल कर ले लेकिन अपनी आत्मा को खो दे.''

नार्विच की मदर जूलियन ने अपनी किताब 'रिविलेशन आफ़ डिवाइन लव' में लिखा है :—

"ईश्वर कहता है कि 'ऐ बन्दे मैं ही तेरी सारी खोज का मैदान हूं, क्या तुम इस बात में अपने ईश्वर का मतलब जानना चाहते हो? तो अच्छी तरह जानो. उसका मतलब 'प्रेम' है. तुम्हें यह किस ने दिखाया? प्रेम ने. उसने तुम्हें क्या दिखाया? प्रेम. किस के लिये? प्रेम के लिये."

इंजील में लिखा है :—

"ऐ प्यारो! आओ! हम सब एक दूसरे से प्रेम करें, क्योंकि प्रेम ईश्वर है, और जो कोई प्रेम करता है वह ईश्वर से पैदा हुआ है और ईश्वर को जानता है. जो प्रेम नहीं करता वह ईश्वर को नहीं जानता क्योंकि ईश्वर प्रेम है."

گنا بڑھ جاتی ہے اور جیون میں وہ آنند ملتا ہے جو کسی دوسری چیز سے نہیں مل سکتا۔ پھر اگر چھوٹا سا انسان اپنی مرضی کو سب کی مرضی میں یعنی سماج کی مرضی میں ملا سکے اور یہ سمجھ سکے کہ سب کے اندر وہی ایک روح کل ہے جو اس کے اندر ہے اور سب روپ اسی کے روپ ہیں، تو کام کرنے اور دنیا کی خدمت کرنے کی جو طاقت اس کے اندر پیدا ہوگی اس کا اندازہ ہر کوئی نہیں لگا سکتا۔ جو آنند اس طرح انسان کو نصیب ہوتا ہے، جو برکت اس کے کاموں میں ملتی ہے وہ اندازہ سے باہر ہے۔ دنیا کے پیغمبروں اور مہاتماؤں کی کامیابیوں کا یہی ایک راز ہے۔ اس شکتی اور اس آنند کو پاکر ہی آدمی چلا اٹھتا ہے، "ایشور پریم ہے! عشق کے سوا اور کوئی خدا نہیں!" ایک کا اپنے کو انیک کے لئے یعنی سب کے لئے قربان کردینا ہی بھکتی مارگ یعنی مذہب عشق کی آخری منزل ہے۔ اس منزل پر پہونچ کر ہی آدمی سمجھتا ہے کہ میں ہی سب ہوں۔ میرا الگ وجود کوئی چیز نہیں۔

اپنشد میں لکھا ہے کہ :—

"جو آدمی سب روپوں اور رسوں میں اسی ایک برہم کو دیکھتا ہے جو سب رسوں کا رس ہے وہی پورنانند کو حاصل کرتا ہے۔ وہی سب کا پیارا ہوتا ہے۔ پھر اسے کسی سے کوئی ڈر نہیں، کیونکہ اس کے لئے کوئی غیر نہیں۔"

انجیل میں لکھا ہے :—

"تم ہی ایشور کا مندر ہو۔ تم ہی اس دھرتی کا نمک ہو۔ اگر نمک اپنا مزا کھو بیٹھے تو پھر سواد اس میں کس چیز سے پیدا کیا جاسکتا ہے؟ اس آدمی کو کیا فائدہ جو ساری دنیا حاصل کرلے لیکن اپنی آتما کو کھو دے۔"

ناروچ کی مدر جولین نے اپنی کتاب 'ریویلیشن آف ڈوائن لو' میں لکھا ہے :—

"ایشور کہتا ہے کہ 'اے بندے میں ہی تیری ساری کھوج کا میدان ہوں، کیا تم اس بات میں اپنے ایشور کا مطلب جاننا چاہتے ہو؟ تو اچھی طرح جانو۔ اس کا مطلب 'پریم' ہے۔ تمہیں یہ کس نے دکھایا؟ پریم نے۔ اس نے تمہیں کیا دکھایا؟ 'پریم'۔ کس کے لئے؟ پریم کے لئے۔"

انجیل میں لکھا ہے :—

"اے پیارو! آؤ! ہم سب ایک دوسرے سے پریم کریں، کیونکہ پریم ایشور ہے اور جو کوئی پریم کرتا ہے وہ ایشور سے پیدا ہوا ہے اور ایشور کو جانتا ہے۔ جو پریم نہیں کرتا وہ ایشور کو نہیں جانتا کیونکہ ایشور پریم ہے۔"

नहीं. इसलिये तुम काम करने में न फल की इच्छा को सामने रक्खो और न अपना कर्त्तव्य पूरा करते रहने से चूको. वह नेक लोग जो दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ों को यज्ञ समझ कर पूरा करते रहते हैं और उस यज्ञ से अपने लिये जो कुछ बच जावे उसे खा कर अपना काम चला लेते हैं वह सब पापों से छूट जाते हैं, और जो केवल अपने लिये खाते कमाते हैं वह पापी हैं और पाप खाते हैं.''

मोहम्मद साहब की एक मशहूर कहावत है :—

''अल का सबब हबीब अल्लाह'' यानी हाथ से काम करने वाला अल्लाह को प्यारा है.'' इस पर एक सूफ़ी ने कहा है :—

''रसूल की इस कहावत के मतलब को अच्छी तरह समझो. अपने कामों के नतीजे को अल्लाह पर छोड़ दो. इसी का नाम तवक्कुल है. लेकिन इस तवक्कुल की वजह से तुम नतीजों के सबब पैदा करने में ग़फ़लत मत करो. जाओ अल्लाह पर तवक्कुल करो और अपना काम यानी फ़र्ज़ भी पूरा करो, अंधे मत बनो, कोशिश करो, मेहनत करो और अपना फ़र्ज़ पूरा करने में बाल भर इधर उधर मत हो.''

क़ुरान, हदीसों और सूफ़ियों के कलाम में बार बार आता है कि अल्लाह पर सच्चे ईमान का सबूत अल्लाह के बन्दों की तरफ़ अपने सब फ़र्ज़ों को मेहनत और सच्चाई के साथ पूरा करने में ही है.

इन्सान काम करने में कहां तक आज़ाद है और कहां तक उसकी क़िस्मत अल्लाह के हाथों में है इस पर आलिमों और विद्वानों ने बड़ी बड़ी बहसें की हैं. यह बहसें अधिकतर बेमानी और नासमझी का नतीजा हैं. एक तरफ़ ईश्वर की अनन्त शक्ति और दूसरी तरफ़ आदमी के फ़र्ज़ों में कोई विरोध नहीं है. अनन्त अनन्त की जगह है. आदमी का काम पूरी मेहनत के साथ अपने फ़र्ज़ों को पूरा करना है. इसमें ग़फ़लत, कोताही या सुस्ती माफ़ नहीं की जा सकती. ख़ल्क़ की ख़िदमत ही अल्लाह की इबादत है. सच यह है कि ख़ल्क़ की तरफ़ या दूसरों की तरफ़ आदमी अपने फ़र्ज़ों को तभी अच्छी तरह निभा सकता है जब वह अपनी मर्ज़ी को कुल की मर्ज़ी में यानी समाज की मर्ज़ी में यानी अल्लाह की मर्ज़ी में मिला दे.

अपनी मर्ज़ी को इस तरह सब की मर्ज़ी में मिला देने से बढ़ कर आनन्द या बरकत दुनिया में दूसरी नहीं हो सकती.

हमारी इस छोटी सी ज़िन्दगी में भी जब कभी दो साथी, दो दोस्त, दो भाई या मर्द और औरत अपनी अपनी मर्ज़ी को दूसरों की मर्ज़ी में मिला देते हैं या फ़ना कर देते हैं तो आदमी की काम करने की ताक़त सैकड़ों

نہیں ۔ اس لئے تم کام کرنے میں نہ پھل کی اچھا کو سامنے رکھو اور نہ اپنا کرتویہ پورا کرتے رہنے سے چوکو۔ وہ نیک لوگ جو دوسروں کی طرف اپنے فرضوں کو یگیہ سمجھ کر پورا کرتے رہتے ہیں اور اس یگیہ سے اپنے لئے جو کچھ بچ جاوے اسے کھاکر اپنا کام چلا لیتے ہیں وہ سب پاپوں سے چھوٹ جاتے ہیں' اور جو کیول اپنے لئے کھاتے کماتے ہیں وہ پاپی ہیں اور پاپ کھاتے ہیں۔''

محمد صاحب کی ایک مشہور کہاوت ہے :—

''آل کا سبب حبیب اللہ'' یعنی ہاتھ سے کام کرنے والا اللہ کو پیارا ہے۔'' اس پر ایک صوفی نے کہا ہے :—

''رسول کی اس کہاوت کے مطلب کو اچھی طرح سمجھو۔ اپنے کاموں کے نتیجوں کو اللہ پر چھوڑ دو ۔ اسی کا نام توکل ہے ۔ لیکن اس توکل کی وجہ سے تم نتیجوں کے سبب پیدا کرنے میں غفلت مت کرو۔ جاؤ اللہ پر توکل کرو اور اپنا کام یعنی فرض بھی پورا کرو' اندھے مت بنو' کوشش کرو' محنت کرو اور اپنا فرض پورا کرنے میں بال بھر بھی ادھر ادھر مت ہو ۔''

قرآن' حدیثوں اور صوفیوں کے کلام میں بار بار آتا ہے کہ اللہ پر سچے ایمان کا ثبوت اللہ کے بندوں کی طرف اپنے سب فرضوں کو محنت اور سچائی کے ساتھ پورا کرنے میں ہی ہے ۔

انسان کام کرنے میں کہاں تک آزاد ہے اور کہاں تک اس کی قسمت اللہ کے ہاتھوں میں ہے اس پر عالموں اور ودوانوں نے بڑی بڑی بحثیں کی ہیں ۔ یہ بحثیں ادھکتر بے معنی اور ناسمجھی کا نتیجہ ہیں۔ ایک طرف ایشور کی اننت شکتی اور دوسری طرف آدمی کے فرضوں میں کوئی ورودھ نہیں ہے ۔ اننت اننت کی جگہ ہے ۔ آدمی کا کام پوری محنت کے ساتھ اپنے فرضوں کو پورا کرنا ہے ۔ اس میں غفلت' کوتاہی یا سستی معاف نہیں کی جاسکتی ۔ خلق کی خدمت ہی اللہ کی عبادت ہے ۔ سچ یہ ہے کہ خلق کی طرف یا دوسروں کی طرف آدمی اپنے فرضوں کو تبھی اچھی طرح نبھا سکتا ہے جب وہ اپنی مرضی کو کل کی مرضی میں یعنی سماج کی مرضی میں یعنی اللہ کی مرضی میں ملا دے ۔

اپنی مرضی کو اس طرح سب کی مرضی میں ملا دینے سے بڑھکر آنند یا برکت دنیا میں دوسری نہیں ہوسکتی ۔

ہماری اس چھوٹی سی زندگی میں بھی جب کبھی دو ساتھی' دو دوست' دو بھائی یا مرد اور عورت اپنی اپنی مرضی کو دوسرے کی مرضی میں ملا دیتے ہیں یا فنا کردیتے ہیں تو آدمی کی کام کرنے کی طاقت سیکڑوں

ही ज़रूरी और नाज़ुक चीज़ है जितनी जिस्म की ख़ुराक. शासक का काम है कि कुन्बे के बाप की तरह सब के साथ इन्साफ़ करे, सब की रक्षा करे. ब्योपारी का काम है कि सगे भाई की तरह सब की अपने धन से मदद करे. मज़दूर का काम है कि प्रेम और नम्रता के साथ समाज की सेवा करे.

असूल फिर यही निकला कि हर आदमी दूसरे सब आदमियों को निगाह में रख कर उन की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को पूरा करे. इसमें हद दर्जे की बराबरी और उदारता की ज़रूरत है. हर आदमी सब का एक बराबर भला चेते और सब का भला करना अपना फ़र्ज़ और धर्म समझे. ग़रीब हो या अमीर, तन्दुरुस्त हो या बीमार, हर हाल में निस्वार्थ भाव से बिना सुस्ती, शक या डर मन में लाए, अपने ऊपर कष्टों की परवाह न करते हुए, इस यज्ञ यानी क़ुर्बानी से जो कुछ बचे, उस से अपना गुज़ारा करते हुए और अगर कुछ न बचे तो उसी में संतोष और सुख मानते हुए श्रद्धा और विश्वास के साथ ईश्वरार्पन, फ़ी सबीलिल्लाह, समाज यानी इन्सानी क़ौम के लिये काम करे और अपने फ़र्ज़ को और पूरा करे. यही सब धर्मों और मज़हबों का निचोड़ है.

चीन के मशहूर महात्मा मैनशियस ने कहा है :—

"ताऊ (ईश्वर, अल्लाह) हमारे पास है लोग उसे दूर दूर ढूंढते फिरते हैं. आदमी का फ़र्ज़ छोटे और आसान कामों में है, लोग उसे मुशकिल और बड़े बड़े कामों में ढूंढते फिरते हैं. हर आदमी अपने मां बाप से प्रेम करे, बड़ों की इज़्ज़त करे, सब की सेवा करे, सब का भला करे, तब ही दुनिया में शान्ति रह सकती है."

कबीर ने कहा हैं :—

मोकू कहां खोजे बन्दे, मैं तो तेरे पास में
न मैं मन्दिर न मैं मस्जिद न काबे कैलाश में
खोजी होय तुर्त ही मिलिहौं पल भर की तालाश में
कहें कबीर सुनो हो साधो ! सब स्वांसों की स्वांस में

इंजील में लिखा है कि :—

"कल की चिन्ता मत करो......लेकिन तुम्हारा जो भी फ़र्ज़ तुम्हारे हाथ के सामने है उसे अपनी पूरी शक्ति से करो."

गीता में अर्जुन को उपदेश दिया गया है कि :—

"ऐ अर्जुन ! ईश्वर सब प्रानियों के दिलों के अन्दर बैठा हुआ है, वही अपनी अनन्त शक्ति से सब प्रानियों को इस तरह चला रहा है मानो वह सब किसी मशीन पर चढ़े हुए हों. इसलिये हमेशा बेलाग भाव से अपने फ़र्ज़ों को ठीक ठीक पूरा करते रहो. बेलाग हो कर काम करने वाला ही उस परम पुरुष ईश्वर को प्राप्त करता है. तुम्हारा अधिकार अपना कर्तव्य पूरा करने तक ही है. उसके नतीजे पर तुम्हारा कोई अधिकार

ہی ضروری اور نازک چیز ہے جتنی جسم کی خوراک ۔ شاسک کا کام ہے کہ کنبے کے باپ کی طرح سب کے ساتھ انصاف کرے، سب کی رکشا کرے ۔ بیوپاری کا کام ہے کہ سگے بھائی کی طرح سب کی اپنے دھن سے مدد کرے ۔ مزدور کا کام ہے کہ پریم اور نمرتا کے ساتھ سماج کی سیوا کرے ۔

اصول پھر یہی نکلا کہ ہر آدمی دوسرے سب آدمیوں کو نگاہ میں رکھ کر اُن کی طرف اپنے فرض کو پورا کرے ۔ اِس میں حد درجے کی برابری اور اُدارتا کی ضرورت ہے ۔ ہر آدمی سب کا ایک برابر بھلا چیتے اور سب کا بھلا کرنا اپنا فرض اور دھرم سمجھے ۔ غریب ہو یا امیر، تندرست ہو یا بیمار، ہر حال میں نسوارتھ بھاؤ سے بنا سستی، شک یا ڈر من میں لائے، اپنے اوپر کشٹوں کی پرواہ نہ کرتے ہوئے، اِس یگیہ یعنی قربانی سے جو کچھ بچے، اُس سے اپنا گذارہ کرتے ہوئے اور اگر کچھ نہ بچے تو اِسی میں سنتوش اور سکھ مانتے ہوئے شردھا اور وشواس کے ساتھ ایشورارپن، فی سبیل اللہ، سماج یعنی انسانی قوم کے لئے کام کرے اور اپنے فرض کو پورا کرے ۔ یہی سب دھرموں اور مذہبوں کا نچوڑ ہے ۔

چین کے مشہور مہاتما مین شیس نے کہا ہے : —

"تاؤ (ایشور، اللہ) ہمارے پاس ہے ۔ لوگ اُسے دور دور ڈھونڈھتے پھرتے ہیں ۔ آدمی کا فرض چھوٹے اور آسان کاموں میں ہے، لوگ اُسے مشکل اور بڑے بڑے کاموں میں ڈھونڈھتے پھرتے ہیں ۔ ہر آدمی اپنے ماں باپ سے پریم کرے، بڑوں کی عزت کرے، سب کی سیوا کرے، سب کا بھلا کرے، تب ہی دنیا میں شانتی رہ سکتی ہے ۔"

کبیر نے کہا ہے :—

مو کو کہاں کھوجے بندے، میں تو تیرے پاس میں
نہ میں مندر نہ میں مسجد نہ کعبے کیلاش میں
کھوجی ہوئے ترت ہی ملی ہوں پل بھر کی تلاش میں
کہیں کبیر سنو ہو سادھوا سب سوانسوں کی سوانس میں

انجیل میں لکھا ہے کہ :—

"کل کی چنتا مت کرو......لیکن تمہارا جو بھی فرض تمہارے ہاتھ کے سامنے ہے اُسے اپنی پوری شکتی سے کرو ۔"

گیتا میں ارجن کو اُپدیش دیا گیا ہے کہ :—

"اے ارجن ! ایشور سب پرانیوں کے دلوں کے اندر بیٹھا ہوا ہے، وہی اپنی اننت شکتی سے سب پرانیوں کو اِس طرح چلا رہا ہے مانو وہ سب کسی مشین پر چڑھے ہوئے ہوں ۔ اِس لئے ہمیشہ بےلاگ بھاؤ سے اپنے فرضوں کو ٹھیک ٹھیک پورا کرتے رہو ۔ بےلاگ ہو کر کام کرنے والا ہی اُس پرم پرش ایشور کو پراپت کرتا ہے ۔ تمہارا ادھیکار اپنا کرتویہ پورا کرنے تک ہی ہے ۔ اُس کے نتیجے پر تمہارا کوئی ادھیکار

गीता में बहुत अच्छा और साफ़ कहा गया है कि :—

"जिस का मन दुखों के अन्दर परेशान न हो और सुखों के लिये जिसे चाह न हो, जो मोह, डर और क्रोध तीनों से ऊपर उठ चुका हो वह ही सच्चा मुनि और स्थित प्रज्ञ यानी सलीमुलअक़्ल है."

पुरानों में लिखा है :—

"आदमी दुख में अपने से अधिक दुखी को देखे और सुख में अपने से अधिक सुखी को देखे. यह जीवन सुख और दुख का संगम है. इस बात को जान कर ही आदमी ताप यानी अपने अन्दर की तकलीफ़ से आज़ाद हो कर शान्ति पा सकता है."

अपनी रूह को रूहे कुल में यानी ख़ुदी को ख़ुदा में और अपने छोटे छोटे आपों को इन्सानी समाज के बड़े आपे में लीन कर देने का यही रास्ता है. यही रूहानी कम्युनिज़्म और रूहानी सोशलिज़्म है.

हर आदमी को अपनी ड्यूटी, अपना कर्तव्य या अपना फ़र्ज़ पूरा करना चाहिये. पर अपना फ़र्ज़ पूरा करने के लिये यह ज़रूरी है कि पहले हर आदमी यह जाने और समझे कि उस का फ़र्ज़ है क्या. पारसियों के धर्म ग्रंथ गाथा में लिखा है : —

"हर आदमी को बड़ी सावधानी और अहतयात के साथ यह तै करना चाहिये कि जीवन में उसे क्या करना है. उस का क्या फ़र्ज़ है, उसके लिये क्या करना ठीक और अच्छा है."

अब ज़रा देखें कि यह कैसे किया जाये.

अंगरेज़ी शब्द ड्यूटी ड्यु शब्द से निकला है जिसके मानी हैं किसी का क़र्ज़ा या किसी का देना. वही मानी संस्कृत शब्द देय, फ़ार्सी दाद और पुराने पार्सी शब्द दाथ के हैं, 'किसी का कुछ देना.' यही संस्कृत उचित और पार्सी उश्ता के मानी हैं. इस से पता चला कि हमारी ड्यूटी या फ़र्ज़ जो कुछ भी हो दूसरों की तरफ़ और दूसरों के नाते से है. यह भी ज़ाहिर है कि हर आदमी का फ़र्ज़ देश, काल और हालात के अनुसार बदलता रहेगा. बच्चे का फ़र्ज़ अलग, जवान का अलग, बूढ़े का अलग, विद्यार्थी का अलग, ग्रस्थ का अलग, पढ़ाने वाले का अलग, पबलिक नेता और सम्पादक का अलग, शासक का अलग, सौदागर का अलग, मज़दूर का अलग, तन्दरुस्त का अलग, बीमार का अलग, सब के अपने अलग अलग फ़र्ज़ या कर्तव्य होते हैं. जिस आदमी के सुपुर्द देश के बच्चों और नौजवानों को तालीम देना है उस का काम है कि सारे समाज को एक कुटुम्ब मान कर मां की तरह अपना फ़र्ज़ पूरा करे, बच्चों और नौजवानों के दिलों और दिमाग़ों को ठीक ठीक ख़ूराक पहुंचावे. दिल और दिमाग़ की ख़ूराक उतनी

گیتا میں بہت اچھا اور صاف کہا گیا ہے کہ :—

"جس کا من دکھوں کے اندر پریشان نہ ہو اور سکھوں کے لئے جسے چاہ نہ ہو، جو موہ، ڈر اور کرودھ تینوں سے اوپر اٹھ چکا ہو وہ ہی سچا منی اور استھت پرگیہ یعنی سلیم العقل ہے."

پرانوں میں لکھا ہے :—

"آدمی دکھ میں اپنے سے ادھک دکھی کو دیکھے اور سکھ میں اپنے سے ادھک سکھی کو دیکھے. یہ جیون سکھ اور دکھ کا سنگم ہے. اس بات کو جان کر ہی آدمی تاپ یعنی اپنے اندر کی تکلیف سے آزاد ہوکر شانتی پاسکتا ہے."

اپنی روح کو روح کل میں یعنی خودی کو خدا میں اور اپنے چھوٹے چھوٹے آپوں کو انسانی سماج کے بڑے آپے میں لین کر دینے کا یہی راستہ ہے. یہی روحانی کمیونزم اور روحانی سوشلزم ہے.

ہر آدمی کو اپنی ڈیوٹی، اپنا کرتویہ یا اپنا فرض پورا کرنا چاہئے. پر اپنا فرض پورا کرنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ پہلے ہر آدمی یہ جانے اور سمجھے کہ اس کا فرض ہے کیا. پارسیوں کے دھرم گرنتھ گاتھا میں لکھا ہے :—

"ہر آدمی کو بڑی ساودھانی اور احتیاط کے ساتھ یہ طے کرنا چاہئے کہ جیون میں اسے کیا کرنا ہے. اس کا کیا فرض ہے، اس کے لئے کیا کرنا ٹھیک اور اچھا ہے."

اب ذرا دیکھیں کہ یہ کیسے کیا جائے.

انگریزی شبد ڈیوٹی ڈیو شبد سے نکلا ہے جس کے معنی ہیں کسی کا قرضہ یا کسی کا دینا. وہی معنی سنسکرت شبد دیے، فارسی داد اور پرانے پارسی شبد داتھ کے ہیں، 'کسی کا کچھ دینا.' یہی سنسکرت اچت اور پارسی اشتا کے معنی ہیں. اس سے پتہ چلا کہ ہماری ڈیوٹی یا فرض جو کچھ بھی ہو دوسروں کی طرف اور دوسروں کے ناتے سے ہے. یہ بھی ظاہر ہے کہ ہر آدمی کا فرض دیش، کال اور حالات کے انوسار بدلتا رہےگا. بچے کا فرض الگ، جوان کا الگ، بوڑھے کا الگ، ودیارتھی کا الگ، گرہستھ کا الگ، پڑھانے والے کا الگ، پبلک نیتا اور سمپادک کا الگ، شاسک کا الگ، سوداگر کا الگ، مزدور کا الگ، تندرست کا الگ، بیمار کا الگ، سب کے اپنے الگ الگ فرض یا کرتویہ ہوتے ہیں. جس آدمی کے سپرد دیش کے بچوں اور نوجوانوں کو تعلیم دینا ہے اس کا کام ہے کہ سارے سماج کو ایک کٹمب مان کر ماں کی طرح اپنا فرض پورا کرے، بچوں اور نوجوانوں کے دلوں اور دماغوں کو ٹھیک ٹھیک خوراک پہونچاوے. دل اور دماغ کی خوراک اتنی

सुख, दुख और फ़र्ज़

(डाक्टर भगवान दास)

दुनिया के लोग आम तौर पर दुख से बचना और
ख भोगना चाहते हैं. यही सब जानदार चाहते हैं. यह
च्छा क़ुदरती है. पर दुनिया न केवल सुखों की दुनिया हो
कती है और न केवल दुखों की. सुख और दुख, भलाई
ौर बुराई, इन जुड़वां चीज़ों, द्वन्दों, जोड़े या जोजेन में
हैं जिन में से कोई एक दूसरे के बिना नहीं रह सकती.
ानियत में फ़लसफ़े और साइंस में यहां तक कि हिसाब
ौर अर्थशास्त्र में भी यह एक अटल क़ानून है कि ज़िन्दगी,
ौर इन दो दो के जोड़ों के, क़ायम नहीं रह सकती. हर
ोज़ की अपनी जगह और अपनी क़ीमत है. यह सच है
 आदमी आदमी के ऊपर बड़े से बड़े ज़ुल्म करता
 जिन्हें देख कर और सुन कर आदमी का दिल कांप
ठता है. पर जब इन घोर से घोर ज़ुल्मों को कोई आदमी
सी सच्चाई या असूल के लिये ख़ुशी ख़ुशी बरदाश्त
रने में अपना बड़प्पन समझता है तो उन्हीं नज़ारों को
ख कर दुनिया फूली नहीं समाती और इन्सान के ऊंचे
ऊंचे जीवन और उसकी पाक से पाक उमंगों को चार
ांद लग जाते हैं. झूठ और सच, ज़ुल्म और बहादुरी,
ी और नेकी, नफ़रत और मोहब्बत, बदला और सब्र
 ही तसवीर के दो पहलू हैं. बुराई नेकी के चमकने के
ये ज़रूरी है. इसी का नाम दुनिया है. यही रूहानी
क़्क़ी का भेद है. आज का मज़लूम शायद कभी पहले
ालिम रह चुका है. आज के ज़ालिम को भी शायद कभी
कभी मज़लूम बनना होगा. दोनों की आत्माओं के लिये
 कड़ुआ तजुर्बा ज़रूरी है. दोनों की मुक्ति या नजात का
ी रास्ता है, और दोनों को नजात मिलना लाज़िमी है.
ृति की आंधियां, तूफ़ान, बाढ़ें, भूचाल, क़ुदरती आगें और
फ़नाक जानवर रोज़ इन्सानों और जानवरों दोनों को
ी से बड़ी तकलीफ़ें पहुंचाते रहते हैं. इन सब से आदमी
 सीखना यह है कि वह केवल सुख की तरफ़ दौड़ने की
गह सुख दुख दोनों में अपने मन को एक सा रख सके.
 ज़िन्दगी आज़माइश की ज़िन्दगी है. इस में मीठा मीठा
 और कड़ुआ कड़ुआ थूकने का हमें कोई हक़ नहीं. सुख
ौर दुख दोनों से ऊपर उठ जाना ही असली नजात है.

भागवत में लिखा है :—

"हमारे अन्दर ही स्वर्ग है और हमारे अन्दर ही
रक है."

यही बात सूफ़ियों ने भी बार बार कही है.

سکھ، دکھ اور فرض

(ڈاکٹر بھگوان داس)

دنیا کے لوگ عام طور پر دکھ سے بچنا اور سکھ بھوگنا چاہتے ہیں۔ یہی سب جاندار چاہتے ہیں۔ یہ اِچھا قدرتی ہے۔ پر دنیا نہ کیول سکھوں کی دنیا ہوسکتی ہے اور نہ کیول دکھوں کی۔ سکھ اور دکھ، بھلائی اور برائی اُن جوڑواں چیزوں، دوندوں، جوڑوں یا زوجوں میں سے ہیں جن میں سے کوئی ایک دوسرے کے بنا نہیں رہ سکتی۔ روحانیت میں فلسفے اور سائنس میں یہاں تک کہ حساب اور ارتھ شاستر میں بھی یہ ایک اٹل قانون ہے کہ زندگی، بغیر اِن دو دو کے جوڑوں کے قائم نہیں رہ سکتی۔ ہر چیز کی اپنی جگہ اور اپنی قیمت ہے۔ یہ سچ ہے کہ آدمی آدمی کے اوپر وہ بڑے سے بڑے ظلم کرتا ہے جنہیں دیکھکر اور سنکر آدمی کا دل کانپ اٹھتا ہے۔ پر جب اِن گھور سے گھور ظلموں کو کوئی آدمی کسی سچائی یا اصول کے لئے خوشی خوشی برداشت کرتا ہے اور برداشت کرنے میں اپنا بڑپن سمجھتا ہے تو اُنہیں نظاروں کو دیکھکر دنیا پھولی نہیں سماتی اور اِنسان کے اونچے سے اونچے جیون اور اسکی پاک سے پاک امنگوں کو چار چاند لگ جاتے ہیں۔ جھوٹ اور سچ، ظلم اور بہادری، بدی اور نیکی، نفرت اور محبت، بدلہ اور صبر ایک ہی تصویر کے دو پہلو ہیں۔ برائی نیکی کے چمکنے کے لئے ضروری ہے۔ اِسی کا نام دنیا ہے۔ یہی روحانی ترقی کا بھید ہے۔ آج کا مظلوم شائد کبھی پہلے ظالم رہ چکا ہے۔ آج کے ظالم کو بھی شائد کبھی نہ کبھی مظلوم بننا ہوگا۔ دونوں کی آتماؤں کے لئے یہ کڑوا تجربہ ضروری ہے۔ دونوں کی مکتی یا نجات کا یہی راستہ ہے، اور دونوں کو نجات ملنا لازمی ہے۔ پرکرتی کی آندھیاں، طوفان، باڑھیں، بھونچال، قدرتی آگیں اور خوفناک جانور روز اِنسانوں اور جانوروں دونوں کو بڑی سے بڑی تکلیفیں پہونچاتے رہتے ہیں۔ اِن سب سے آدمی کو سیکھنا یہ ہے کہ وہ کیول سکھ کی طرف دوڑنے کی جگہ سکھ دکھ دونوں میں اپنے من کو ایک سا رکھ سکے۔ یہ زندگی آزمائش کی زندگی ہے۔ اس میں میٹھا میٹھا گپ اور کڑوا کڑوا تھوکنے کا ہمیں کوئی حق نہیں۔ سکھ اور دکھ دونوں سے اوپر اٹھ جانا ہی اصلی نجات ہے۔

بھاگوت میں لکھا ہے :—

"ہمارے اندر ہی سورگ ہے اور ہمارے اندر ہی نرک ہے۔"

یہی بات صوفیوں نے بھی بار بار کہی ہے۔

जीवन की कोमलता पर अब, रेंग रहे हैं कोढ़ के धब्बे
खेतों की हरियाली में अब, होते हैं ऐटम के चरचे
युद्ध से दूकानों में हलचल, मिल को इक पल नींद न आये
युद्ध आकाश के ज्ञान का दुश्मन, युद्ध से सागर का दिल धड़के
धरती की यह आस न टूटे, रस्ते में है फूलों का मौसम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

युद्ध यानी हर रात अमावस, युद्ध यानी हर दिन गहनाया
दीवाली भी दीप को ढूंढे, युद्ध से चारों ओर अंधेरा
युद्ध यानी दीवारें बैठें, युद्ध यानी शमशान हो दुनिया
युद्ध यानी सड़कें ये बिगड़ें, सारा रंग रचाव कला का
युद्ध यानी हर घुंघरू रोये, युद्ध यानी रोये हर परछम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

युद्ध यानी कलियां जल जायें, धूप पड़े और लाशें चटकें
घुंघरू संगीनों पर उछलें, मौत के ताल पे लाशें नाचें
बालों की खुशबू मर जाये, सड़ती गलती लाशें महकें
युद्ध यानी सड़कों पर लाशें, घर और स्कूलों में लाशें
धरती ज़ख्मों से बेदम है, आओ लगायें अम्न का मरहम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

धरती के सूखे होंठों पर, अम्न का ठंडा रस टपकाओ
जीवन के मंदिर में जा कर, अम्न के सुन्दर दीप जलाओ
दुनिया भर के साज़ मिला कर, जीवन का संगीत बनाओ
जीवन के सपने नाच उट्ठें, अम्न का वह पैग़ाम सुनाओ
जीवन की बीना पर छेड़ो, अम्न की धुन, पर मद्धिम मद्धिम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

جیون کی کوملتا پر اب رینگ رہے ہیں کوڑھ کے دھبے
کھیتوں کی ہریالی میں اب، ہوتے ہیں ایٹم کے چرچے
یدھ سے دوکانوں میں ہلچل، مل کو اک پل نیند نہ آئے
یدھ آکاش کے گیان کا دشمن، یدھ سے ساگر کا دل دھڑکے
دھرتی کی یہ آس نہ ٹوٹے، رستے میں ہے پھولوں کا موسم
کھولو نیلا پرچم ساتھی، کھولو اپنا نیلا پرچم

یدھ یعنی ہر رات اماوس، یدھ یعنی ہر دن گہنایا
دیوالی بھی دیپ کو ڈھونڈھے، یدھ سے چاروں اور اندھیرا
یدھ یعنی دیواریں بیٹھیں، یدھ یعنی شمشان ہو دنیا
یدھ یعنی سڑکیں یہ بگڑے، سارا رنگ رچاؤ کلا کا
یدھ یعنی ہر گھنگھرو روئے، یدھ یعنی روئے ہر پرچم
کھولو نیلا پرچم ساتھی، کھولو اپنا نیلا پرچم

یدھ یعنی کلیاں جل جائیں، دھوپ پڑے اور لاشیں چٹکیں
گھنگھرو سنگینوں پر اچھلیں، موت کے تال پر لاشیں ناچیں
بالوں کی خوشبو مرجائے، سڑتی گلتی لاشیں مہکیں
یدھ یعنی سڑکوں پر لاشیں، گھر اور سکولوں میں لاشیں
دھرتی زخموں سے بیدم ہے، آؤ لگائیں امن کا مرہم
کھولو نیلا پرچم ساتھی، کھولو اپنا نیلا پرچم

دھرتی کے سوکھے ہونٹھوں پر، امن کا ٹھنڈا رس ٹپکاؤ
جیون کے مندر میں جا کر، امن کے سندر دیپ جلاؤ
دنیا بھر کے ساز ملا کر، جیون کا سنگیت بناؤ
جیون کے سپنے ناچ اٹھیں، امن کا وہ پیغام سناؤ
جیون کی بینا پر چھیڑو، امن کی دھن، پر مدھم مدھم
کھولو نیلا پرچم ساتھی، کھولو اپنا نیلا پرچم

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 16 फ़रवरी, सन '54 नम्बर 2

جلد 16 فروری، سن '54 نمبر 2

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुंचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لیے پریم کی جھولی۔

खोलो नीला परचम

(राही मासूम रज़ा)

युद्ध की अग्नी की लपटों से, जीवन की जूही कुम्हलाये
लय की डोरी टूट रही है, गाये तो भौंरा कैसे गाये
शबनम अंगारों की क़ैदी, कौन कली की प्यास बुझाये
काजल की कविता मिटती है, नयन कंवल में नीर भर आये
जीवन की बीना पर कोई, छेड़ रहा है मौत का सरगम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

आंगन से लिपटा है अंधेरा, डालर सारे दीप बुझाये
बाप की लाठी टूट रही है, कौन उसे गिरने से बचाये
लोरी का झूला टूटा है, मां कैसे बच्चे को सुलाये
मौत खिलौनों में बैठी है, बचपन को यह कौन बताये
देर हुई तो करना होगा, जीवन के सपनों का मातम
खोलो नीला परचम साथी, खोलो अपना नीला परचम

کھولو نیلا پرچم

(راہی معصوم رضا)

یدھ کی اگنی کی لپٹوں سے، جیون کی جوہی کمھلائے
لے کی ڈوری ٹوٹ رہی ہے، گائے تو بھونرا کیسے گائے
شبنم انگاروں کی قیدی، کون کلی کی پیاس بجھائے
کاجل کی کویتا مٹتی ہے، نین کنول میں نیر بھر آئے
جیون کی بینا پر کوئی، چھیڑ رہا ہے موت کا سرگم
کھولو نیلا پرچم ساتھی، کھولو اپنا نیلا پرچم

آنگن سے لپٹا ہے اندھیرا، ڈالر سارے دیپ بجھائے
باپ کی لاٹھی ٹوٹ رہی ہے، کون اسے گرنے سے بچائے
لوری کا جھولا ٹوٹا ہے، ماں کیسے بچے کو سلائے
موت کھلونوں میں بیٹھی ہے، بچپن کو یہ کون بتائے
دیر ہوئی تو کرنا ہوگا، جیون کے سپنوں کا ماتم
کھولو نیلا پرچم ساتھی، کھولو اپنا نیلا پرچم

"नया हिन्द"

"نیا ہند"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

ہندستانی کلچر سوسائٹی

का

کا

माहवारी परचा

ماہواری پرچا

फ़रवरी 1954 فروری

क्या किससे	सफ़ा صفحہ	کیا کس سے
1—खोलो नीला परचम (कविता)—राही मासूम रज़ा	75	1—کھولو نیلا پرچم (کویتا)—راہی معصوم رضا
2—सुख, दुख और फ़र्ज़—डाक्टर भगवानदास	77	2—سکھ، دکھ اور فرض—ڈاکٹر بھگوان داس
3—तीन बुनियादी नियम—भगवानदीन	87	3—تین بنیادی نیم—بھگوان دین
4—बच्चों के खेल और भाषा—सैय्यद मुहम्मद अली शाह रहमानी	97	4—بچوں کے کھیل اور بھاشا—سید محمد علی شاہ رحمانی
5—शक्की—भगवानदीन	103	5—شکی—بھگوان دین
6—देश में अमरीकी जाल—सुरेश रामभाई	108	6—دیش میں امریکی جال—سریش رام بھائی
7—हमारी राय—	112	7—ہماری رائے—

इलाहाबाद का कुम्भ—सुन्दरलाल; लंका से चावल—सुरेश रामभाई; कुम्भ पर एक नज़र—सुरेश रामभाई; पुराने ज़माने के चीनियों की निगाह में हिन्दुस्तान—चीनी कलचरी डेलीगेशन के नेता श्री तिंग सी. लिन. का दिल्ली का एक भाषन.

إلہ آباد کا کمبھ—سندر لال؛ لنکا سے چاول—سریش رام بھائی؛ کمبھ پر ایک نظر—سریش رام بھائی؛ پرانے زمانے کے چینیوں کی نگاہ میں ہندستان—چینی کلچری ڈیلیگیشن کے نیتا شری تنگ سی. لن. کا دلی کا ایک بھاشن.

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल. एक परचा दस आने.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد

...या हिंद   ...ہند

[illegible]

...स नम्बर के ख़ास लेख

- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]

...मारी ...—
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]

اس نمبر کے خاص لیکھ

- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]

- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]
- ★ [illegible]

...ी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद   ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

फ़रवरी 1954 فروری

क़ीमत दस आना   قیمت دس آنہ

नई किताब

हज़रत मुहम्मद और इस्लाम

लेखक—सुन्दरलाल

इस किताब का पहला एडीशन 1941 में निकला था. देश ने उसका स्वागत किया और जल्दी वह ख़त्म हो गया. दूसरे एडीशन की मांग अर्से से हो रही थी. पर वह अब ही मुमकिन हो सका है,

इस एडीशन को पंडित सुन्दरलाल जी एहतियात के साथ देख गये हैं. बहुत बुज़ुर्गों और साथियों की क़ीमती राय और सुझावों से इस में फ़ायदा उठाया गया है. नये एडीशन की ख़ास बात यह है कि इस किताब के शुरू में पंडित बिशम्भरनाथ ने दस सफ़े का एक गम्भीर और वज़नदार नोट यानी आमुख लिखा है

इस किताब से इस्लाम की असली तालीम और उसके बुनियादी उसूलों की जानकारी हासिल होने के साथ साथ हज़रत मुहम्मद की सीधी सच्ची और बेमिसाल ज़िन्दगी—एक ऐसी ज़िन्दगी जिसने सदियों से लाखों करोड़ों के जीवन को रौशन किया है—की झलक मिलती है इससे पता चलेगा कि किस तरह हज़रत मुहम्मद ने न सिर्फ़ अरब जैसे दक़ियानूसी और फ़िरक़ा परस्त देश की काया पलट दी बल्कि एक नये धर्म, एक नये राज और एक नई तहज़ीब को जन्म दिया

हमें यक़ीन है कि पहले एडीशन की तरह इसकी भी काफ़ी मांग होगी और पढ़ने वाले इससे फ़ायदा उठायेंगे.

सुन्दर जिल्द, बढ़िया डबल डिमाई काग़ज़ पर छपी. 160 सफ़े, कई तसवीरों और नक़्शों के साथ किताब का दाम सिर्फ़ तीन रुपया.

मिलने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

نئی کتاب

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—سندر لال

اِس کتاب کا پہلا ایڈیشن سن 1941 میں نکلا تھا. دیش نے اُس کا سواگت کیا اور جلدی وہ ختم ہوگیا. دوسرے ایڈیشن کی مانگ عرصے سے ہو رہی تھی. پر وہ اب ہی ممکن ہوسکا ہے.

اِس ایڈیشن کو پنڈت سندر لال جی احتیاط کے ساتھ دیکھ گئے ہیں. بہت سے بزرگوں اور ساتھیوں کی قیمتی رائے اور سمجھاوؤں سے اِس میں فائدہ اُٹھایا گیا ہے. نئے ایڈیشن کی خاص بات یہ ہے کہ اِس کتاب کے شروع میں پنڈت بشمبھر ناتھ نے دس صفحے کا ایک گمبھیر اور وزندار نوٹ یعنی آمکھ لکھا ہے.

اِس کتاب سے اِسلام کی اصلی تعلیم اور اس کے بنیادی اُصولوں کی جانکاری ہونے کے ساتھ ساتھ حضرت محمد کی سیدھی سچی اور بےمثال زندگی—ایک ایسی زندگی جس نے صدیوں سے لاکھوں کروڑوں کے جیون کو روشن کیا ہے—کی جھلک ملتی ہے. اِس سے پتہ چلیگا کہ کس طرح حضرت محمد نے نہ صرف عرب جیسے دقیانوسی اور فرقہ پرست دیش کی کایا پلٹ دی بلکہ ایک نئے دھرم، ایک نئے راج اور ایک نئی تہذیب کو جنم دیا.

ہمیں یقین ہے کہ پہلے ایڈیشن کی طرح اس کی بھی کافی مانگ ہوگی اور پڑھنے والے اِس سے فائدہ اُٹھائینگے.

سندر جلد، بڑھیا ڈبل ڈمائی کاغذ پر چھپی 160 صفحے، کئی تصویروں اور نقشوں کے ساتھ کتاب کا دام صرف تین روپیہ.

ملنے کا پتہ—
مینیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد.

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

सद

(1) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना र प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(2) एकता फैलाने के लिये कताबों, अख़बारों, रिसालों रा का छापना.

(3) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में पस का मेल बढ़ाना.

—:०:—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा; स प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल . गवरनिंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; टरी—पं० सुन्दरलाल.

गवरनिंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सैयद महमूद, डा० ताराचन्द, मौलवी सैयद मान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० , पं० विशम्भर नाथ, महात्मा भगवानदीन, सेठ पूनम र रांका, क़ाज़ी मोहम्मद अब्दुल ग़फ़्फ़ार और श्री ओम श पालीवाल.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिये—

सुन्दरलाल

सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के नए क़ायदे के अनुसार मेम्बरी फ़ीस सिर्फ़ एक रुपया कर दी गई है. "नया हिन्द" ने गाहक मेम्बर बनना चाहें उनको सिर्फ़ छै रुपया ा देने पर ही मेम्बर बना लिया जायेगा. अलग से ारी की फ़ीस देने वाले सोसाइटी की निकली हुई कोई ाब जो एक रुपया दाम की होगी मुफ़्त ले सकेंगे या ा दाम की किताबें लेने पर एक बार एक रुपया कम सकेंगे.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد:

(1) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(2) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(3) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لیکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:٥:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — مسٹر عبدالمجید خواجہ؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق۔ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندرلال۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، ڈاکٹر تارا چند، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی۔ جی۔ کھیر، پنڈت بشمبھر ناتھ، مہاتما بھگوان دین، سیٹھ پونم چند رانکا، قاضی محمد عبدالغفار اور شری اوم پرکاش پالیوال۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے —

سندر لال

سکریٹری، ہندستانی کلچر سوسائٹی،

145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

نوٹ — سوسائٹی کے نئے قاعدے کے انوسار ممبری کی فیس صرف ایک روپیہ کردی گئی ہے۔ "نیا ہند" کے جو گاہک ممبر بننا چاہیں اُن کو صرف چھ روپیہ چندہ دینے پر ہی ممبر بنا لیا جائیگا۔ الگ سے ممبری کی فیس دینے والے سوسائٹی کی نکلی ہوئی کوئی کتاب جو ایک روپیہ دام کی ہوگی مفت لے سکیں گے یا زیادہ دام کی کتابیں لینے پر ایک بار ایک روپیہ کم کرا سکیں گے۔

महात्मा गांधी की वसीयत

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

अपने देहान्त से कुछ घन्टे पहले महात्मा गांधी ने कांगरेस को लोक सेवा संघ में बदल देने के लिए अपनी तजवीज़ लिखी थी. यह देश के नाम उनकी आखिरी वसीयत है और इसकी व्याख्या गांधी जी के परम भक्त श्री मंज़र अली सोख्ता ने की है जो गांधीवाद को समझने और अपनाने वाले देश के इने गिने लोगों में से एक हैं.

गांधीवाद को समझने के लिए इसका पढ़ना बहुत ज़रूरी है. 225 सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ दो रुपए.

अहिंसात्मक इन्क़लाब का रास्ता

लेखक—श्री मंज़र अली सोख्ता

इस छोटी सी किताब को पढ़ कर आपको पता चलेगा कि महात्मा गांधी क्या चाहते थे और किस तरह उनके रास्ते पर चल कर अहिंसात्मक ढंग से देश में इन्क़लाब लाया जा सकता है.

पैंतीस पन्ने की किताब, दाम सिर्फ़ चार आने.

आज के शहीद

सम्पादक—श्री रतन लाल बंसल

उन बहादुरों की कहानियां जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इनसानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने की कोशिश में अपनी जान क़ुरबान कर दी. दाम सिर्फ़ ढाई रुपया.

मुस्लिम देश भक्त

लेखक—श्री रतन लाल बंसल

उन मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल जिन्होंने अपनी जान हथेली पर रखकर हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भारत माता को ग़ुलामी की ज़ंजीरों से आज़ाद करने की कोशिश की. किताब बड़े दिलचस्प ढंग से लिखी गई है. क़ीमत सिर्फ़ एक रुपया बारह आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

مہاتما گاندھی کی وصیت

لیکھک—شری منظر علی سوختہ

اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما گاندھی نے کانگریس کو لوک سیوا سنگھ میں بدل دینے کے لئے اپنی تجویز لکھی تھی. یہ دیش کے نام اُنکی آخری وصیت ہے اور اسکی ویاکھیا گاندھی جی کے پرم بھکت شری منظر علی سوختہ نے کی ہے جو گاندھی واد کو سمجھنے اور اپنانے والے دیش کے اِنے گنے لوگوں میں سے ایک ھیں .

گاندھی واد کو سمجھنے کے لئے اِسکا پڑھنا بہت ضروری ہے . 225 صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف دو روپئے .

اهنساتمک اِنقلاب کا راستہ

لیکھک--شری منظر علی سوختہ

اِس چھوٹی سی کتاب کو پڑھکر آپ کو پتہ چلے گا کہ مہاتما گاندھی کیا چاھتے تھے اور کسطرح اُن کے راستے پر چل کر اہنساتمک ڈھنگ سے دیش میں اِنقلاب لیا جا سکتا ہے .

پینتیس پنے کی کتاب، دام صرف چار آنے .

آج کے شہید

سمپادک—شری رتن لال بنسل

اُن بہادروں کی کہانیاں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں اِنسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اُسے بجھانے کی کوشش میں اپنی جان قربان کر دی. دام صرف ڈھائی روپیہ.

مسلم دیش بھکت

لیکھک—شری رتن لال بنسل

اُن مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال جنھوں نے اپنی جان ہتھیلی پر رکھکر ھندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھارت ماتا کو غلامی کی زنجیروں سے آزاد کرنے کی کوشش کی. کتاب بڑے دلچسپ ڈھنگ سے لکھی گئی ہے .

قیمت صرف ایک روپیہ بارہ آنے .

ملنے کا پتہ—

منیجر' نیا ھند' 145' مٹھی گنج' الہ آباد .

गांधी बाबा

लेखक—क़ुदसिया ज़ैदी

दो शब्द—जवाहरलाल नेहरू

यह अनमोल किताब जन्म से बलिदान तक की गांधी जी की पूरी और सच्ची जीवनी भी है और कहानी भी. हमारे देश में यह पुराना रिवाज रहा है कि माएं अपने बच्चों को महापुरुशों के जीवन चरित कहानी के रूप में सुनाती हैं. इस तरह की कहानियां आम तौर पर वीर राजाओं और उनके युद्धों की कहानियां होती हैं. बेगम क़ुदसिया ज़ैदी ने, जो महात्मा गांधी की परम भक्त हैं, अपनी इस किताब में गांधीजी की जीवनी और उनका सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग का उपदेश बच्चों को ऐसी प्यारी, सीधी सादी बोली में और ऐसे ढंग से सुनाया है कि बच्चों के दिल में उतरता चला जाता है. हिन्दी में गांधीजी के ऊपर बच्चों के लिये इससे बढ़कर किताब नहीं है. इसमें कहानी का रस भी है और बच्चों को ऊंचा उठाने वाले उपदेश भी.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने 'दो शब्द' में लिखा है—

> "उन्होंने (क़ुदसिया ज़ैदी ने) यह छोटी सी किताब सच्चे दिल से लिखी है. वह इसे सिर्फ़ एक किताब नहीं समझतीं. उनके लिये गांधीजी की कहानी एक बहुत ही महत्त्व की और प्यारी चीज़ है...मुझे ख़ुशी है कि यह किताब लिखी गई है."

मोटे काग़ज़ पर, मोटे टाइप में, बहुत सी रंगीन तसवीरें, आर्ट पेपर पर सुन्दर रंगीन कवर और दफ़्ती की मज़बूत जिल्द—दाम केवल दो रुपए.

भाषा

लेखक—लाला मदन गोपाल

हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी की तकरार पर एक बे लाग राय इस किताब में आपको मिलेगी. राष्ट्र भाषा के सवाल में दिलचस्पी रखने वाले हर भाई-बहन को इस किताब के पढ़ने से फ़ायदा होगा—सोचने की राहें सूझेंगी, जानकारी बढ़ेगी और तरह तरह की तंग नज़रियां मिटेंगी.

क़रीब सवा सौ सफ़े की सुन्दर किताब, दाम डेढ़ रुपया

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द'

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گاندھی بابا

لیکھک—قدسیہ زیدی

دو شبد—جواہر لال نہرو

یہ انمول کتاب جنم سے بلیدان تک کی گاندھی جی کی پوری اور سچی جیونی بھی ہے اور کہانی بھی. ہمارے دیش میں یہ پرانا رواج رہا ہے کہ مائیں اپنے بچوں کو مہاپرشوں کے جیون چرت کہانی کے روپ میں سناتی ہیں. اِس طرح کی کہانیاں عام طور پر ویر راجاؤں اور اُن کے یدھوں کی کہانیاں ہوتی ہیں . بیگم قدسیہ زیدی نے، جو مہاتما گاندھی کی پرم بھکت ہیں، اپنی اِس کتاب میں گاندھی جی کی جیونی اور اُن کا ستیہ، اہنسا، پریم اور تیاگ کا اُپدیش بچوں کو ایسی پیاری، سیدھی سادی بولی میں اور ایسے ڈھنگ سے سنایا ہے کہ بچوں کے دل میں اُترتا چلا جاتا ہے . ہندی میں گاندھی جی کے اوپر بچوں کے لئے اس سے بڑھ کر کتاب نہیں ہے . اس میں کہانی کا رس بھی ہے اور بچوں کو اونچا اُٹھانے والے اُپدیش بھی .

پنڈت جواہر لال نہرو نے اپنے 'دو شبد' میں لکھا ہے—

> "اُنہوں نے (قدسیہ زیدی نے) یہ چھوٹی سی کتاب سچے دل سے لکھی ہے . وہ اِسے صرف ایک کتاب نہیں سمجھتیں . اُن کے لئے گاندھی جی کی کہانی ایک بہت ہی مہتو کی اور پیاری چیز ہے...مجھے خوشی ہے کہ یہ کتاب لکھی گئی ہے ."

موٹے کاغذ پر، موٹے ٹائپ میں، بہت سی رنگین تصویریں، آرٹ پیپر پر سندر رنگین کور اور دفتی کی مضبوط جلد—دام کیول دو روپئے .

بھاشا

لیکھک—لالہ مدن گوپال

ہندی اُردو اور ہندستانی کی تکرار پر ایک بے لاگ رائے اِس کتاب میں آپ کو ملے گی . راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھنے والے ہر بھائی بہن کو اِس کتاب کے پڑھنے سے فائدہ ہوگا—سوچنے کی راہیں سوجھیں گی، جانکاری بڑھے گی اور طرح طرح کی تنگ نظریاں مٹیں گی .

قریب سوا سو صفحے کی سندر کتاب، دام ڈیڑھ روپیہ .

ملنے کا پتہ—

مینیجر 'نیا ہند'

145 مٹھی گنج، الہ آباد .

झंकार

सम्पादक—श्री रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

ले पन्द्रह बरस से आज तक की उरदू की चुनी हुई ओं का यह संग्रह पढ़ कर आप को मालूम होगा कि विता ने किस तरह ख़याली दुनिया को छोड़ कर ो की सचाइयों से अपना नाता जोड़ लिया है. ी उरदू शायरी गुल व बुलबुल और वस्ल व फ़िराक़ ो सीमित नहीं है, अब आप को उरदू कविता में और मज़दूरों के दिलों की धड़कनें सुनाई देंगी. ी, अन्याय और लूट खसोट के ख़िलाफ़ आप एक ऐसी ज़ सुनेंगे जो आपके दिल की गहराइयों को छुएगी.

"...न कविताओं में अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय दोनों मिलती हैं......सजीव तथा साकार ......वास्तव न्दी संसार में यह प्रयास अनोखा है और उरदू य के आधुनिक दौर में अद्वितीय..."

.3-2-'52 —रोज़ाना 'लोकवाणी' जयपुर

'जहां तक भाव का सम्बन्ध है कविताएं उच्च स्तर ."

. 3. '52 —'विशाल भारत' कलकत्ता

"झंकार में प्रकाशित 72 उरदू की कविताएं आज ही के ी समस्याओं स ओत प्रोत हैं."

17-2-'52 —'नव भारत टाइम्स' दिल्ली

"हिन्दी के पाठक स्नेह और चाव से इस संग्रह आनन्द लेंगे और उनसे प्रेरणा ग्रहण करेंगे, यह चत है."

13-1-'52 —'अमृत पत्रिका' इलाहाबाद

'हम उन की (कविताओं की) शक्ति, ताज़गी और सूत्र ायल हैं वह एक नए युग का सन्देश देती हैं...भाषा धकतर सरल और बामुहावरा है. कहीं कहीं तो ठेठ ी है."

8-5-'52 —'जीवन साहित्य' दिल्ली

"झंकार की रचनाओं में युग की पुकार है और भाषा कुल बोल चाल के निकट है"—'नया समाज' कलकत्ता

नागरी लिखावट में ऐसा भरपूर उरदू कविता संग्रह ज तक नहीं निकला. सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़. उम्दा ाई, दाम सिर्फ़ तीन रुपया. दस किताबों की एक साथ ीदारी पर पचास फ़ी सदी कमीशन.

ने का पता—
मैनेजर 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

جھنکار

سمپادک—شری رگھوپتی سہائے 'فراق'

پچھلے پندرہ برس سے آج تک کی اُردو کی چنی ہوئی کویتاؤں کا یہ سنگرہ پڑھکر آپکو معلوم ہوگا کہ اردو ویتا نے کس طرح خیالی دنیا کو چھوڑ کر زندگی کی سچائیوں سے اپنا ناتا جوڑ لیا ہے۔ آج کی اردو شاعری ل و بلبل اور وصل و فراق تک ہی سیمت نہیں ہے، ب آپ کو اردو کویتا میں کسانوں اور مزدوروں کے دلوں کی دھڑکنیں سنائی دینگی۔ غلامی، انیائے اور لوٹ کھسوٹ کے خلاف آپ ایک ایسی آواز سنینگے جو آپ کے دل کی گہرائیوں کو چھوئیگی۔

" اِن کویتاؤں میں انتر راشٹری تتھا راشٹری دونوں جھلکیں ملتی ہیں... سجیو تتھا ساکار ہیں... واستو میں ہندی سنسار میں یہ پریاس انوکھا ہے اور اردو ساہتیہ کے آدھنک دور میں ادویتیہ ہے..."

23-2-'52 —روزانہ 'لوک وانی' جے پور

" جہاں تک بھاو کا سمبندھ ہے کویتائیں اُچ استر کی ہیں۔"

6-3-'52 —'وشال بھارت' کلکتہ

" جھنکار میں پرکاشت 72 اردو کی کویتائیں آج ہی کے یگ کی سمسیاؤں سے اوت پروت ہیں۔"

17-2-'52 —نو بھارت ٹائمس' دلی

" ہندی کے پاٹھک اِسنیہ اور چاؤ سے اِس سنگرہ کا آنند لینگے اور ان سے پریرنا گرہن کرینگے' یہ نشچت ہے۔"

13-1-'52 —'امرت پتریکا' الٰہ آباد

" ہم اُن کی (کویتاؤں کی) شکتی' تازگی اور سوتر کے قائل ہیں۔ وہ ایک نئے یگ کا سندیش دیتی ہیں... بھاشا ادھک تر سرل اور بامحاورہ ہے۔ کہیں کہیں تو ٹھیٹھ ہندی ہے۔"

8-5-'52 —'جیون ساہتیہ' دلی

" جھنکار کی رچناؤں میں یگ کی پکار ہے اور بھاشا بالکل بول چال کے نکٹ ہے۔"—'نیا سماج' کلکتہ

ناگری لکھاوٹ میں ایسا بھرپور اردو کویتا سنگرہ آج تک نہیں نکلا۔ سندر جلد' بڑھیا کاغذ۔ عمدہ چھپائی۔ دام صرف تین روپیہ۔ دس کتابوں کی ایک ساتھ خریداری پر پچاس فیصدی کمیشن۔

ملنے کا پتہ—
منیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الٰہ آباد۔

गीता और क़ुरान

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब में हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के मेल की बातें हैं. गीता का बड़प्पन गीता के एक एक अध्याय का निचोड़, क़ुरान का बड़प्पन, लगभग 15 ख़ास ख़ास मज़मूनों पर क़ुरान की क़रीब 500 आयतों का लफ़्ज़ी तर्जुमा वग़ैरा दिया गया है.

जो लोग सब धर्मों की बुनियादी एकता को जानना और समझना चाहें उनके लिये यह किताब अनमोल है.

पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपया, डाक ख़र्च अलग.

हिन्दू मुसलिम एकता

इस किताब में वह चार लेक्चर जमा किये गए हैं जो पंडित जी ने कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर की दावत पर ग्वालियर में दिये थे.

सौ सफ़े की किताब. क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ापरस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज. इसी ने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया.

क़ीमत बारह आने.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

अक्तूबर सन् 1947 में पच्छिमी और पूरबी पंजाब के बटवारे के बाद वहां की भयंकर बरबादी और आपसी मार काट के कारन लोगों पर जो जो मुसीबतें आइं उन का दर्दनाक आंखों देखा बयान. इस छोटी सी किताब में आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिए कुछ सुझाव भी पेश किये गए हैं. क़ीमत चार आने.

बंगाल और उससे सबक़

इस छोटी सी किताब में 1949-50 में पूरबी और पच्छिमी बंगाल के फ़िरक़ेवाराना झगड़ों पर रोशनी डाली गई है और ऐसे झगड़ों को हमेशा के लिए ख़त्म करने की तरकीब भी सुझाई गई है. क़ीमत सिर्फ़ दो आने.

मिलने का पता—

मैनेजर, 'नया हिन्द' 145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

گیتا اور قران

لیکھک—پنڈت سندر لال

اِس کتاب میں ہندو دھرم اور اِسلام دونوں کے میل کی باتیں ہیں. گیتا کا بڑپن' گیتا کے ایک ایک ادھیاے کا نچوڑ' قرآن کا بڑپن' لگ بھگ 15 خاص خاص مضمونوں پر قرآن کی قریب 500 آیتوں کا لفظی ترجمہ وغیرہ دیا گیا ہے .

جو لوگ سب دھرموں کی بنیادی ایکتا کو جاننا اور سمجھنا چاہیں اُن کے لئے یہ کتاب انمول ہے .

پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ' ڈاک خرچ الگ .

ہندو مسلم ایکتا

اِس کتاب میں وہ چار لیکچر جمع کئے گئے ہیں جو پنڈت جی نے کنسیلیٹری بورڈ گوالیار کی دعوت پر گوالیار میں دئے تھے .

سو صفحے کی کتاب . قیمت صرف بارہ آنے .

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

سامپردایکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی' مذہبی اور اِتہاسی پہلو سے وچار اور اسکا علاج. اِسی نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا .

قیمت بارہ آنے .

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

اکتوبر سن 1947 میں پچھمی اور پوربی پنجاب کے بٹوارے کے بعد وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مار کاٹ کے کارن لوگوں پر جو جو مصیبتیں آئیں اُن کا دردناک آنکھوں دیکھا ورنن . اِس چھوٹی سی کتاب میں آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے گئے ہیں . قیمت چار آنے .

بنگال اور اُس سے سبق

اِس چھوٹی سی کتاب میں 1949-50 میں پوربی اور پچھمی بنگال کے فرقہ وارانہ جھگڑوں پر روشنی ڈالی گئی ہے اور ایسے جھگڑوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کرنے کی ترکیب بھی سجھائی گئی ہے . قیمت صرف دو آنے .

ملنے کا پتہ—

منیجر 'نیا ہند' 145 مٹھی گنج الہ آباد

व्यापार या कारखाने वालों को उनके माल की बिक्री में खूब मदद कर रहा है. साथ ही साथ रेडियो का महकमा पैसा भी कमाता होगा.

अब जब टायर इस्तेमाल होंगे बैलगाड़ी में, तो एक तरफ़ से गांव का बढ़ई ठंठा हुआ और दूसरी तरफ़ से बैल के दिन लदना शुरू हो गये. जब हमारी बहनें बाहर के क्रीम इस्तेमाल करेंगी तो फिर शृंगार के लिये बाहर की हर दूसरी चीज़ इस्तेमाल करने से कैसे रुकेंगी? तब कहां है गुंजाइश हिन्दुस्तान के तेल साबुन खपने की और तेली के सही सलामत ज़िन्दा रहने की? जब हम लोग या हमारे बच्चे बिस्कुट खायेंगे, जो बड़ी बड़ी कम्पनियों में बनते हैं, जिनके लिये आटा या मैदा और चीनी बड़ी मिलों में तैयार होती है, तो कैसे जियेगी गांव की पिसनहारी या गुड़ बनाने वाला अदना किसान? इस तरह बहुत से ख़्याल पैदा होते हैं. ज़ाहिर है कि अगर सरकार इसी तरह विदेशी या मिल के माल को—जो ग़ैर ज़रूरी हैं और जो हमारे ज़िन्दगी की बुनियादी ज़रूरत का पूरा नहीं करते—बढ़ावा देती रहेगी तो हमारे देहात के धन्धे बैठते जायेंगे. अंगरेज़ों ने तो इन्हें नेस्त नाबूद करने की कोशिश की ही थी, आज आज़ाद सरकार भी जले पर नमक छिड़कने का काम कर रही है?

लिहाज़ा लाखों घरों का रोज़गार तबाह होगा और करोड़ों को फ़ाक़े करना पड़ेंगे.

इस सूरत में कैसे पनपेगी कलचर और कहां जायेगा समाज? नीचे से ही जब कलचर के सोते सूख जायेंगे तो ऊपर का दिखावा कब तक चलेगा? जड़ सूखने के ज़ियादा दिन बाद तक ऊपर के फूल पत्ती नहीं चलते.

इसलिये आल इंडिया रेडियो के हुक्कामों से हमारी आरज़ू है कि वह देखें तो कि क्या कर रहे हैं. माना कि उनको इस इश्तिहारबाज़ी से आमदनी होती है लेकिन यह आमदनी पाक है या नापाक, उन्हें सोचना होगा. यह ज़रूर है कि देहात का बुनकर, तेली, कुम्हार, बढ़ई, लुहार वग़ैरा रेडियो से अपने माल का इश्तिहार नहीं करा सकते और सरकार को उनकी ज़ात से आमदनी नहीं हो सकती, लेकिन क्या हमारी सरकार पैसा बनाने का ही पेशा इख़्तियार करेगी? क्या उसे लोक लाज का लिहाज़ न होगा? क्या वह जनता के हितों को ठुकरायेगी? अगर वह ऐसा करती है तो इस के माने हैं कि रेडियो को अपनी मिलकियत समझ कर मनमाने ढंग से इस्तेमाल करती है. अगर उसे आज प्रजा की भलाई का ख़्याल है तो उसे अपना रवैया बदलना चाहिये और सरकार का रेडियो न बन कर सब का रेडियो बनना चाहिये. इसी में रेडियो की शान व आबरू है.

14. 1. '54 —सुरेश रामभाई

بیوپار یا کارخانے والوں کو ان کے مال کی بکری میں خوب مدد کر رہا ہے. ساتھ ہی ساتھ ریڈیو کا محکمہ پیسہ بھی کماتا ہوگا.

اب جب ٹائر استعمال ہوں گے بیل گاڑی میں، تو ایک طرف سے گاؤں کا بڑھئی ٹھنڈا ہوا اور دوسری طرف سے بیل کے دن لدنا شروع ہوگئے. جب ہماری بہنیں باہر کے کریم استعمال کریں گی تو پھر سنگار کے لئے باہر کی ہر دوسری چیز استعمال کرنے سے کیسے رکیں گی؟ تب کہاں ہے گنجائش ہندوستان کے تیل صابن کھپنے کی اور تیلی کے سہی سلامت زندہ رہنے کی؟ جب ہم لوگ یا ہمارے بچے بسکٹ کھائیں گے جو بڑی بڑی کمپنیوں میں بنتے ہیں، جن کے لئے آٹا یا میدہ اور چینی بڑی ملوں میں تیار ہوتی ہے، تو کیسے جئے گی گاؤں کی پسنہاری یا گڑ بنانے والا ادنیٰ کسان؟ اس طرح بہت سے خیال پیدا ہوتے ہیں. ظاہر ہے کہ اگر سرکار اسی طرح ودیشی یا مل کے مال کو—جو غیر ضروری ہیں اور جو ہماری زندگی کی بنیادی ضرورت کو پورا نہیں کرتے—بڑھاوا دیتی رہے گی تو ہمارے دیہات کے دھندے بیٹھتے جائیں گے. انگریزوں نے تو انہیں نیست نابود کرنے کی کوشش کی ہی تھی، اب آزاد سرکار بھی جلے پر نمک چھڑکنے کا کام کر رہی ہے؟

لہذا لاکھوں گھروں کا روزگار تباہ ہوگا اور کروڑوں کو فاقے کرنا پڑیں گے.

اس صورت میں کیسے پنپے گی کلچر اور کہاں جائے گا سماج؟ نیچے سے ہی جب کلچر کے سوتے سوکھ جائیں گے تو اوپر کا دکھاوا کب تک چلے گا؟ جڑ سوکھنے کے زیادہ دن بعد تک اوپر کے پھول پتی نہیں چلتے.

اس لئے آل انڈیا ریڈیو کے حکام سے ہماری آرزو ہے کہ وہ دیکھیں تو کیا کر رہے ہیں. مانا کہ ان کو اس اشتہار بازی سے آمدنی ہوتی ہے لیکن یہ آمدنی پاک ہے یا ناپاک، انہیں سوچنا ہوگا. یہ ضرور ہے کہ دیہات کا بنکر، تیلی، کمہار، بڑھئی، لہار وغیرہ ریڈیو سے اپنے مال کا اشتہار نہیں کرا سکتے اور سرکار کو ان کی ذات سے آمدنی نہیں ہو سکتی، لیکن کیا ہماری سرکار پیسہ بنانے کا ہی پیشہ اختیار کرے گی؟ کیا اسے لوک لاج کا لحاظ نہ ہوگا؟ کیا وہ جنتا کے ہتوں کو ٹھکرائے گی؟ اگر وہ ایسا کرتی ہے تو اس کے معنی ہیں کہ ریڈیو کو اپنی ملکیت سمجھ کر من مانے ڈھنگ سے استعمال کرتی ہے. اگر اسے آج پرجا کی بھلائی کا خیال ہے تو اپنا رویہ بدلنا چاہئے اور سرکار کا ریڈیو نہ بن کر سب کا ریڈیو بننا چاہئے. اسی میں ریڈیو کی شان و آبرو ہے.

—سریش رام بھائی 14. 1. 54

अमन और सारी दुनिया के अमन की सलामती के लिये इस दोस्ती को और भी अधिक मजबूत करें !

भारत की जनता सदा सुखी और समृद्ध रहे !

चीन भारत दोस्ती जिन्दा बाद !

(कलकत्ता) भारत — लिंग सी. लिन,

12 जनवरी 1954 — चीन इंडिया फ्रेंडशिप ऐसोसियेशन के डेलीगेशन के लीडर.

आल इन्डिया रेडियो किधर

दिसम्बर के आखरी हफ्ते में हिन्द सरकार के सूचना और रेडियो मिनिस्टर डाक्टर केसकर पटना आये थे. वहां उनका स्वागत किया गया. स्वागत का जवाब देते समय उन्होंने कहा कि यह नहीं समझना चाहिये कि रेडियो नई दिल्ली सरकार की जायदाद या मिलकियत है. उन्होंने बताया कि रेडियो तो देश की जनता के कलचरी जीवन के इज़हार का एक ज़बरदस्त ज़रिया है जिसमें केन्द्रीय और सूबे की सरकारों को बराबर की दिलचस्पी है.

क़ुदरती तौर पर मानना चाहिये कि जनता से डाक्टर केसकर का मतलब उन लोगों से, लाखों करोड़ों से होगा जो देहातों में बसे हैं और जिन की कमाई के बल पर देश का सारा जीवन, क्या आर्थिक, क्या सामाजिक और क्या कलचरी जीवन, मुनहसिर है. इसलिये सरकार का फ़र्ज़ हो जाता है कि इन देहातों में बने माल को बढ़ावा दे, इनके ज़ियादा से ज़ियादा इस्तेमाल की कोशिश करे और प्रेस व रेडियो से उनका अच्छी तरह प्रचार करे.

लेकिन चन्द रोज़ की बात है कि हम बिहार के छपरा ज़िले के एक देहात में घूम रहे थे. रात को एक नेक और सुखी काश्तकार के यहां ठहरे हुए थे. उन्होंने रेडियो बजाना शुरू किया तो जो चीज़ कान में पड़ी उसे सुन कर हम दंग रह गए. पता नहीं यह प्रोग्राम पटने का था, कलकत्ते का या दिल्ली का. लेकिन उसमें सिफ़ारिश की गई कि फ़लाँ मार्के का टायर इस्तेमाल कीजिये, फ़लां नाम का एक क्रीम बदन पर लगाइये और फ़लां कम्पनी का बिस्कुट खाइये. इन तीन चीज़ों में दो—टायर और क्रीम—विदेशी थे और एक बिस्कुट स्वदेशी.

रेडियो पर चीज़ों के इश्तहार सुनने का यह हमारा पहला इत्तफ़ाक़ था. हमने अपने मेज़बान से पूछा कि यह कैसा प्रोग्राम है, उन्होंने कहा कि इसमें ताज्जुब की क्या बात है, ऐसा तो अकसर ही होता है.

यह सुन कर हम ख़ामोश हो गए, लेकिन इस नतीजे पर पहुंचे कि देश के बड़े व्यापारी या दूकानदार आल इन्डिया रेडियो को अपने मतलब के लिये इस्तेमाल कर रहे हैं. दूसरे शब्दों में, आल इन्डिया रेडियो बड़े

امن اور ساری دنیا کے امن کی سلامتی کے لئے اس دوستی کو اور بھی ادھک مضبوط کریں !

بھارت کی جنتا سدا سکھی اور اسمردھ رہے !

چین بھارت دوستی زندہ باد !

کلکتہ (بھارت) — لنگ. سی. لن،

12 جنوری 1954 — چین انڈیا فرینڈشپ ایسوسیئیشن کے ڈیلیگیشن کے لیڈر.

آل انڈیا ریڈیو کدھر

دسمبر کے آخری ہفتے میں ہند سرکار کے سوچنا اور ریڈیو منسٹر ڈاکٹر کیسکر پٹنہ آئے تھے. وہاں ان کا سواگت کیا گیا. سواگت کا جواب دیتے سمے انہوں نے کہا کہ یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ ریڈیو نئی دلی سرکار کی جائداد یا ملکیت ہے. انہوں نے بتایا کہ ریڈیو تو دیش کی جنتا کے کلچری جیون کے اظہار کا ایک زبردست ذریعہ ہے جس میں کیندریہ اور صوبے کی سرکاروں کو برابر کی دلچسپی ہے.

قدرتی طور پر ماننا چاہئے کہ جنتا سے ڈاکٹر کیسکر کا مطلب ان لوگوں سے، لاکھوں کروڑوں سے ہوگا جو دیہاتوں میں بسے ہیں اور جن کی کمائی کے بل پر دیش کا سارا جیون، کیا آرتھک، کیا سماجک اور کیا کلچری جیون، منحصر ہے. اس لئے سرکار کا فرض ہو جاتا ہے کہ ان دیہاتوں میں بنے مال کو بڑھاوا دے، ان کے زیادہ سے زیادہ استعمال کی کوشش کرے اور پریس و ریڈیو سے ان کا اچھی طرح پرچار کرے.

لیکن چند روز کی بات ہے کہ ہم بہار کے چھپرا ضلع کے ایک دیہات میں گھوم رہے تھے. رات کو ایک نیک اور سکھی کاشتکار کے یہاں ٹھہرے ہوئے تھے. انہوں نے ریڈیو بجانا شروع کیا تو جو چیز کان میں پڑی اسے سنکر ہم دنگ رہ گئے. پتہ نہیں یہ پروگرام پٹنہ کا تھا، کلکتہ کا یا دلی کا. لیکن اس میں سفارش کی گئی کہ فلاں مارکے کا ٹائر استعمال کیجئے، فلاں نام کا ایک کریم بدن پر لگائیے اور فلاں کمپنی کا بسکٹ کھائیے. ان تین چیزوں میں دو—ٹائر اور کریم—ودیشی تھے اور ایک بسکٹ سودیشی.

ریڈیو پر چیزوں کے اشتہار سننے کا یہ ہمارا پہلا اتفاق تھا. ہم نے اپنے میزبان سے پوچھا کہ یہ کیسا پروگرام ہے. انہوں نے کہا کہ اس میں تعجب کی کیا بات ہے، ایسا تو اکثر ہی ہوتا ہے.

یہ سنکر ہم خاموش ہوگئے، لیکن اس نتیجے پر پہونچے کہ دیش کے بڑے بیوپاری یا دوکاندار آل انڈیا ریڈیو کو اپنے مطلب کے لئے استعمال کر رہے ہیں. دوسرے شبدوں میں، آل انڈیا ریڈیو بڑے

हम भारत में बहुत कम दिन ठहरे. लेकिन इन थोड़े से दिनों को हम भूल नहीं सकते. उमंग भरे स्वागत, फूल मालाएं, प्यार भरी मुलाक़ातें और दिल में खुप जाने वाले आंसू ऐसी चीज़ें हैं जो हमें सदा याद रहेंगी. हिन्दुस्तान के लोगों के शान्दार कलचरी कारनामे, अजन्ता की तसवीरें, एलोरा और एलीफ़ेन्टा की पत्थर की चित्रकला और ताज महल की शान्दार इमारत देख कर हमारे दिल ख़ुशी और तारीफ़ से भर गए. कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तान के लोगों को हमेशा हमेशा तक इन चीज़ों का अभिमान रहेगा. चतुर भारतीय कलावन्तों ने हमें भारत का प्राचीन शास्त्रीय गाना और आजकल का गाना, बजाना और नाचना सब दिखलाया जिसे देख कर हमारा दिल बहुत ख़ुश हुआ. यह सब देख कर भारत की क़ौमी परम्परा का बड़ा सुन्दर चित्र हमारी आंखों के सामने खिंच गया. इस सबसे बढ़ कर हमें इस बार आम भारतीय जनता से मिलने के अवसर मिले. हमने देखा कि भारत की जनता के दिल चीन की जनता के साथ दोस्ती के भावों से लबालब हैं. जिन अनगिनत दोस्तों से हम मिले उन में से कुछ को हम पहले से जानते थे और कुछ को नहीं. उन सब की प्यारी प्यारी आवाज़ें, मुसकराते हुए चेहरे, भाव भरी मुलाक़ातें, प्रेम के साथ गले मिलना, हज़ारों हज़ार आंखों का जोश और उमंग के साथ हमारी तरफ़ लगे रहना और नये चीन की बाबत और अधिक बातें जानने के लिये बेताब रहना, उन भारतीय मज़दूर और किसान भाइयों के उमड़ते हुए दिल जो सरदी की रातों में रेल के स्टेशनों पर हमें केवल एक अमरूद देने के लिये या कुछ पूरियां देने के लिये घंटों बेचैन खड़े रहते थे—यह सब चीज़ें हम कैसे भूल सकते हैं! प्यारे दोस्तो! हमें मानना पड़ता है कि ऐसे मौक़ों पर हम अपने को रोक नहीं पाते थे. हमारे दिलों से निकले हुए और शुकरिये से भरे हुए आंसू जगह जगह आंखों से टपक ही पड़ते थे.

जो घटनाएं और दृश्य हमने इन पांच हफ़्तों के अन्दर देखे उनसे साबित है कि शान्ति के दुशमन कितनी भी चालें क्यों न चलें और हमारे बीच फूट डालने के लिये कितनी भी कोशिशें क्यों न करें वह हमारी दोस्ती को डिगाने में हरगिज़ कामयाब नहीं हो सकते, क्योंकि हमारी यह नई दोस्ती केवल हमारे पुराने सम्बन्ध के आधार पर ही क़ायम नहीं है, इस दोस्ती की जड़ें इस मज़बूत बुनियाद के अन्दर भी गहरी गई हुई हैं कि हम दोनों दुनिया में अमन के प्रेमी हैं. भारत और चीन दोनों महान देशों की जनता के बीच अटूट और बेलाग दोस्ती हमेशा के लिये क़ायम रहे! हममें से हर एक का यह पवित्र कर्त्तव्य है कि एशिया के

ہم بھارت میں بہت کم دن ٹھہرے۔ لیکن ان تھوڑے سے دنوں کو ہم بھول نہیں سکتے۔ امنگ بھرے سواگت' پھول مالائیں' پیار بھری ملاقاتیں اور دل میں چھپ جانے والے آنسو ایسی چیزیں ہیں جو ہمیں سدا یاد رہیں گی۔ ہندستان کے لوگوں کے شاندار کلچری کارنامے' اجنتا کی تصویریں' ایلورا اور ایلیفینٹا کی پتھر کی چتر کلا اور تاج محل کی شاندار عمارت دیکھکر ہمارے دل خوشی اور تعریف سے بھر گئے۔ کوئی شک نہیں کہ ہندستان کے لوگوں کو ہمیشہ ہمیشہ تک ان چیزوں کا ابھیمان رہے گا۔ چتر بھارتیہ کلاونتوں نے ہمیں بھارت کا پراچین شاستریہ گانا اور آج کل کا گانا' بجانا اور ناچنا سب دکھلایا جسے دیکھکر ہمارا دل بہت خوش ہوا۔ یہ سب دیکھکر بھارت کی قومی پرمپرا کا بڑا سندر چتر ہماری آنکھوں کے سامنے کھنچ گیا۔ اس سب سے بڑھکر ہمیں اس بار عام بھارتیہ جنتا سے ملنے کے اوسر ملے۔ ہم نے دیکھا کہ بھارت کی جنتا کے دل چین کی جنتا کے ساتھ دوستی کے بھاؤں سے لبالب ہیں۔ جن ان گنت دوستوں سے ہم ملے ان میں سے کچھ کو ہم پہلے سے جانتے تھے اور کچھ کو نہیں۔ ان سب کی پیاری پیاری آوازیں' مسکراتے ہوئے چہرے' بھاؤ بھری ملاقاتیں' پریم کے ساتھ گلے ملنا' ہزاروں ہزار آنکھوں کا جوش اور امنگ کے ساتھ ہماری طرف لگے رہنا' اور نئے چین بابت اور ادھک باتیں جاننے کے لئے بیتاب رہنا ان بھارتیہ مزدور اور کسان بھائیوں کے امڈتے ہوئے دل جو سردی کی راتوں میں ریل کے اسٹیشنوں پر ہمیں کیول ایک امرود دینے کے لئے یا کچھ پوریاں دینے کے لئے گھنٹوں بیچین کھڑے رہتے تھے—یہ سب چیزیں ہم کیسے بھول سکتے ہیں! پیارے دوستو! ہمیں ماننا پڑتا ہے کہ ایسے موقعوں پر ہم اپنے کو روک نہیں پاتے تھے۔ ہمارے دلوں سے نکلے ہوئے اور شکریے سے بھرے ہوئے آنسو جگہ جگہ آنکھوں سے ٹپک ہی پڑتے تھے۔

جو گھٹنائیں اور درشیہ ہم نے ان پانچ ہفتوں کے اندر دیکھے ان سے ثابت ہے کہ شانتی کے دشمن کتنی بھی چالیں کیوں نہ چلیں اور ہمارے بیچ پھوٹ ڈالنے کے لئے کتنی بھی کوششیں کیوں نہ کریں وہ ہماری دوستی کو ڈگانے میں ہرگز کامیاب نہیں ہو سکتے' کیونکہ ہماری یہ نئی دوستی کیول ہمارے پرانے سمبندھ کے آدھار پر ہی قائم نہیں ہے' اس دوستی کی جڑیں اس مضبوط بنیاد کے اندر بھی گہری گئی ہوئی ہیں کہ ہم دونوں دنیا میں امن کے پریمی ہیں۔ بھارت اور چین دونوں مہان دیشوں کی جنتا کے بیچ اٹوٹ اور بے لاگ دوستی ہمیشہ کے لئے قائم رہے! ہم میں سے ہر ایک کا یہ پوتر کرتویہ ہے کہ ایشیا کے

यह देश वीरों का देश है !
सैकड़ों सैकड़ों बरस तक वीर योद्धा, अपने ख़ून से
इसे सींचते रहे हैं !
यहां के लोग बड़े वीर और धीर हैं !
ठीक वैसे ही जैसे मेरी पितृभूमि के लोग हैं !

इसके जवाब में भारत के अदीबों की तरफ़ से बम्बई के मशहूर शायर सरदार जाफ़री ने नीचे लिखी नज़्म उसी समय बना कर पढ़ी—

एशिया तेरे गुलिस्तां को जगाने के लिये,
चीन के बाग़ से सरमस्त हवा आती है !
दश्तोदर जिस्से शफ़क़ सुर्ख़ हुए जाते हैं,
वह बहार आती है और लाला क़बा आती है !
आज हर नग़मए बेदारिए जमहूर के साथ,
माओ के दिल के धड़कने की सदा आती है !
दोस्तो ! चीन के फूलों को यह मुज़दा देना,
हिन्द के फूलों से ख़ुशबूए वफ़ा आती है !

चीनी कलचरल डेलीगेशन के नेता श्री तिंग सी लिन का आख़री बयान

प्यारे दोस्तो,

हमारा डेलीगेशन नये चीनी लोकराज के चीन हिन्द दोस्ती संघ की तरफ़ से भारत आया था. अब यह डेलीगेशन पांच सप्ताह तक भारत में दौरा करने के बाद इस महान देश को छोड़ कर अपने देश वापिस जा रहा है. इस बिदाई के समय चीन के चीन हिन्द दोस्ती संघ की तरफ़ से और अपने डेलीगेशन की तरफ़ से मैं हिन्द चीन दोस्ती संघ की नैशनल कमेटी का और इस देश में जगह जगह के मुक़ामी संघों का, उनके इस एहसान के लिये कि उन्होंने हमें इस दौरे का मौक़ा दिया और उस दौरे के लिये इतने अच्छे ढंग से हमारा प्रोग्राम बनाया, दिल से शुकरिया अदा करता हूं. भारत की जनता, भारत की सरकार और ख़ुद प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने जिस प्रेम के साथ हमारा स्वागत किया और जितनी अच्छी हमारी ख़ातिरदारी की उसके लिये मैं, चीनी जनता की तरफ़ से, इन सबका शुकरिया अदा करता हूं.

गुलिस्तां = बाग़; सरमस्त = मस्त करने वाली; दश्तोदर = जंगल और आबादी; शफ़क़ = बादलों की लाली; लाला = लाल रंग का एक फूल; क़बा = चोग़ा; नग़मा = गीत; बेदारी = जागृति; जमहूर = जनता; सदा = आवाज़; मुज़दा = ख़ुशख़बरी; वफ़ा = वचन पालन.

یہ دیش ویروں کا دیش ہے !
سیکڑوں سیکڑوں برس تک ویر یودھا، اپنے خون سے
اسے سینچتے رہے ہیں !
یہاں کے لوگ بڑے ویر اور دھیر ہیں !
ٹھیک ویسے ہی جیسے میری پتر بھومی کے لوگ ہیں !

اس کے جواب میں بھارت کے ادیبوں کی طرف سے بمبئی کے مشہور شاعر سردار جعفری نے نیچے لکھی نظم اسی سمے بناکر پڑھی—

ایشیا تیرے گلستاں کو جگانے کے لئے،
چین کے باغ سے سرمست ہوا آتی ہے !
دشت و در مثل شفق سرخ ہوئے جاتے ہیں،
وہ بہار آتی ہے اور لالہ قبا آتی ہے !
آج ہر نغمۂ بیداریٔ جمہور کے ساتھ،
ماؤ کے دل کے دھڑکنے کی صدا آتی ہے !
دوستو ! چین کے پھولوں کو یہ مژدہ دینا
ہند کے پھولوں سے خوشبوئے وفا آتی ہے !

چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے نیتا شری تنگ سی لن کا آخری بیان

پیارے دوستو،

ہمارا ڈیلیگیشن نئے چینی لوک راج کے چین ہند دوستی سنگھ کی طرف سے بھارت آیا تھا. اب یہ ڈیلیگیشن پانچ سپتاہ تک بھارت میں دورہ کرنے کے بعد اس مہان دیش کو چھوڑ کر اپنے دیش واپس جا رہا ہے . اس بدائی کے سمے چین کے چین ہند دوستی سنگھ کی طرف سے اور اپنے ڈیلیگیشن کی طرف سے میں ہند چین دوستی سنگھ کی نیشنل کمیٹی کا اور اس دیش میں جگہ جگہ کے مقامی سنگھوں کا، ان کے اس احسان کے لئے کہ انہوں نے ہمیں اس دورے کا موقع دیا اور اس دورے کے لئے اتنے اچھے ڈھنگ سے ہمارا پروگرام بنایا، دل سے شکریہ ادا کرتا ہوں . بھارت کی جنتا، بھارت کی سرکار اور خود پردھان منتری شری نہرو نے جس پریم کے ساتھ ہمارا سواگت کیا اور جتنی اچھی ہماری خاطرداری کی اس کے لئے میں، چینی جنتا کی طرف سے، ان سب کا شکریہ ادا کرتا ہوں.

گلستاں = باغ؛ سرمست = مست کرنے والی؛ دشت و در = جنگل اور آبادی؛ شفق = بادلوں کی لالی؛ لالہ = لال رنگ کا ایک پھول؛ قبا = چغہ؛ نغمہ = گیت؛ بیداری = جاگرتی؛ جمہور = جنتا؛ صدا = آواز؛ مژدہ = خوشخبری؛ وفا = بچن پالن .

ज़िन्दगी वह बसर करते चले आ रहे थे, न पेट को खाना था न तन ढकने को कपड़ा, वह दिन अब हमेशा के लिये ख़त्म हो गये. हमारे यहां के पढ़े लिखे लोगों को अब ज़रा सा भी बेकारी का डर नहीं रहा. अब वह अपनी पूरी योग्यता क़ौमी रचनात्मक कामों में ख़र्च कर सकते हैं.

हमारे बहुत से हिन्दुस्तानी दोस्त जो चीन हो आए हैं अकसर यह कहा करते हैं कि चीन ने चमत्कार कर दिखाया. यह इतना बड़ा चमत्कार हम कैसे कर सके ? इसके पीछे सिवाय इस के और कोई बात नहीं कि हमारी करोड़ों जनता ने एक दिल हो कर और निस्वार्थ लगन के के साथ देश को. ऊपर ले जाने की कोशिश की. हमें सदा जनता पर विश्वास रहा है, जनता पर ही हमारा पूरा भरोसा है. जनता ही की इच्छा और शक्ति के सहारे हम सब तरह की कठिनाइयों को पार कर सकते हैं और वह चमत्कार कर सकते हैं जो केवल कहानियों में सुनने में आता है.

इयो और बहिनों, भारत की सभ्यता पांच हज़ार बरस की शानदार सभ्यता है. यहां ३६ करोड़ आदमी रहते हैं. यहां की ज़मीन में काफ़ी धन दौलत छिपी हुई है. आप के उद्योग धन्धों की बुनियाद काफ़ी मज़बूत है. भारतीय जनता की शक्ति अपार है. इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि भारत की जनता भी चमत्कार करके दिखलाएगी. जब तक हमारे दोनों देशों के लोग मिल कर कोशिश करेंगे और कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहेंगे तब तक मुझे पक्का विश्वास है कि ९० करोड़ इन्सानों का संकल्प और उनकी शक्ति एशिया में और सारी दुनियां में अमन की सबसे ज़बरदस्त और कारगर गारंटी होगी.

हिन्द चीन दोस्ती ज़िन्दा बाद !

दुनियां की शांति ज़िन्दा बाद !

चीनी कलचरल डेलीगेशन के सम्बन्ध में दो कविताएं

उस चीनी कविता का हिन्दी अनुवाद जो श्रीमती महादेवी वर्मा की सदारत में इलाहाबाद के अदीबों और साहित्यकारों के जलसे में चीनी कलचरल डेलीगेशन के मेम्बर चीनी कवि श्री यूआन ने उसी समय बना कर पढ़ी—

यह कैसा सुन्दर देश है !
जगह जगह दरख़्त ज़मीन पर छतरियां लगाए खड़े हैं !
गुलाब के फूल बड़े बड़े प्यालों जैसे हैं !
जंगल में मोर के हरे हरे पंख चांदनी में चमकते हैं !
बसन्त ऋतु इस देश को अपना घर बनाए हुए है !

زندگی وہ بسر کرتے چلے آرہے تھے' نہ پیٹ کو کھانا تھا نہ تن ڈھکنے کو کپڑا' وہ دن اب ہمیشہ کے لئے ختم ہوگئے. ہمارے یہاں کے پڑھے لکھے لوگوں کو اب ذرا سا بھی بیکاری کا ڈر نہیں رہا. اب وہ اپنی پوری یوگیتا قومی رچناتمک کاموں میں خرچ کر سکتے ہیں.

ہمارے بہت سے ہندستانی دوست جو چین ہو آئے ہیں اکثر یہ کہا کرتے ہیں کہ چین نے چمتکار کر دکھایا. یہ اتنا بڑا چمتکار ہم کیسے کر سکے؟ اس کے پیچھے سوائے اس کے اور کوئی بات نہیں کہ ہماری کروڑوں جنتا نے ایک دل ہو کر اور نسوارتھ لگن کے ساتھ دیش کو اوپر لے جانے کی کوشش کی. ہمیں سدا جنتا پر وشواس رہا ہے' جنتا پر ہی ہمارا پورا بھروسہ ہے. جنتا ہی کی اچھا اور شکتی کے سہارے ہم سب طرح کی کٹھنائیوں کو پار کر سکتے ہیں اور وہ چمتکار کر سکتے ہیں جو کیول کہانیوں میں سننے میں آتا ہے.

بھائیو اور بہنو' بھارت کی سبھیتا پانچ ہزار برس کی شاندار سبھیتا ہے. یہاں 36 کروڑ آدمی رہتے ہیں. یہاں کی زمین میں کافی دھن دولت چھپی ہوئی ہے. آپ کے ادیوگ دھندوں کی بنیاد کافی مضبوط ہے. بھارتیہ جنتا کی شکتی اپار ہے. اس میں کوئی سندیہ نہیں ہو سکتا کہ بھارت کی جنتا بھی چمتکار کر کے دکھلائے گی. جب تک ہمارے دونوں دیشوں کے لوگ مل کر کوشش کریں گے اور کندھے سے کندھا ملا کر کھڑے رہیں گے تب تک مجھے پکا وشواس ہے کہ 90 کروڑ انسانوں کا سنکلپ اور ان کی شکتی ایشیا میں اور ساری دنیا میں امن کی سب سے زبردست اور کارگر گارنٹی ہوگی.

ہند چین دوستی زندہ باد!

دنیا کی شانتی زندہ باد!

چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے سمبندھ میں دو کویتائیں

اس چینی کویتا کا ہندی انواد جو شریمتی مہادیوی ورما کی صدارت میں الہ آباد کے ادیبوں اور ساہتیہ کاروں کے جلسے میں چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے ممبر چینی کوی شری یو آن نے اسی سمے بنا کر پڑھی—

یہ کیسا سندر دیش ہے!
جگہ جگہ درخت زمین پر چھتریاں لگائے کھڑے ہیں!
گلاب کے پھول بڑے بڑے پیالوں جیسے ہیں!
جنگل میں مور کے ہرے ہرے پنکھ چاندنی میں چمکتے ہیں!
بسنت رتو اس دیش کو اپنا گھر بنائے ہوئے ہے!

इसलिये हम ऐसी पाक और दिली दोस्ती की ओर भी अधिक क़दर करते हैं जो एक दूसरे के मान और एक दूसरे की मदद पर क़ायम हो. आज चीन और भारत की दोस्ती इसी तरह की दोस्ती है. हमारे दोनों मुल्कों के सब लोग अमन चाहते हैं. पिछले ज़माने में हम दोनों को एक बराबर कड़ुए तजुर्बे हुए हैं. हमारी मित्रता सच्चाई और नेकी पर क़ायम है. इस तरह की मित्रता केवल रिवाजी बातों की या दिखावे की नहीं होती. इसकी जड़ें चीन और हिन्दुस्तान के मिलाकर १० करोड़ लोगों के दिलों में गहरी गई हुई हैं. हम दोनों में एक दूसरे से बदगुमानी पैदा करने की किसी तरह की चाल, कोई झूठी अफ़वाहें या एक को दूसरे की निगाह में गिराने की कोशिश हमारी मित्रता को नुक़सान नहीं पहुंचा सकती.

चीन की जनता दिल से शांति के पक्ष में है. वह युद्ध के खिलाफ़ है. वह अपनी मातृभूमि के जीवन की शांति के साथ फिर से रचना करना चाहती है. यह सब उस के दिल की बातें हैं, मुझे विश्वास है कि भारत की जनता भी यही चाहती है. इसलिये हम दोनो के दिल मिले हुए हैं.

प्यारे दोस्तो, इस तरह हमारे दोनों के एक से आदर्श हैं, हमारी एक सी इच्छाएं हैं और इन्हीं के ऊपर हमारी दोस्ती और हमारा सहयोग क़ायम है.

मेरे प्यारे हिन्दुस्तानी भाइयो और बहिनो, अमन और आज़ादी की क़ीमत ठीक ठीक वही समझ सकता है जो जंग के और अपने ऊपर दूसरों के अन्याय के कड़ुवे नतीजे भुगत चुका हो। पिछले लगभग एक सौ बरस के अन्दर बाहर के हमला करने वालों ने चीनी जनता पर क़ाफ़ी ज़ुल्म ढाए हैं. हमें बड़ी बड़ी सख़्त जंगों में से निकलना पड़ा है. इसलिये इन सब मुसीबतों के तजुर्बे के बाद आज जो हमें अमन और शान्ति के साथ ज़िन्दगी बसर करने का सुअवसर मिला है उसकी हमारे दिल में बहुत बड़ी क़दर है. देश के करोड़ों आदमियों ने ज़बरदस्त संग्राम करके और अपनी जान लड़ा कर देश में अमन क़ायम किया है. अब हम इस अमन की ज़िन्दगी को फिर से खोने के लिये तैयार नहीं हैं. पिछले चार बरस के अन्दर जब से हमारा देश सचमुच आज़ाद हुआ है, चीनी जनता अपनी पूरी शक्ति इस बात के लिये खर्च कर रही है कि देश की पैदावार फिर से बढ़े, लोगों की ज़रूरतें पूरी हों और उनके रहन सहन के ढंग में धीरे धीरे उन्नति हो. इस समय हमारे देश की अगुवाई यानी देश के जीवन की बाग उनके हाथों में है जो मेहनत करके अपना पेट पालते हैं. हमारे किसान अब अपनी अपनी ज़मीन के मालिक हैं. नतीजा यह कि सदियों से जो मुसीबतों की

اس لئے ہم ایسی پاک اور دلی دوستی کی اور بھی ادھک قدر کرتے ھیں جو ایک دوسرے کے مان اور ایک دوسرے کی مدد پر قائم ہو۔ آج چین اور بھارت کی دوستی اسی طرح کی دوستی ہے۔ ھمارے دونوں ملکوں کے سب لوگ امن چاھتے ھیں۔ پچھلے زمانے میں ہم دونوں کو ایک برابر کڑوے تجربے ہوئے ھیں۔ ھماری متر تا سچائی اور نیکی پر قائم ہے۔ اسطرح کی متر تا کیول رواجی باتوں کی یا دکھاوے کی نہیں ہوتی۔ اسکی جڑیں چین اور ھندستان کے ملا کر 90 کروڑ لوگوں کے دلوں میں گہری گئی ہوئی ھیں۔ ہم دونوں میں ایک دوسرے سے بدگمانی پیدا کرنے کی کسی طرح کی چال، کوئی جھوٹی افواھیں یا ایک کو دوسرے کی نگاہ میں گرانے کی کوشش ھماری متر تا کو نقصان نہیں پہونچا سکتی۔

چین کی جنتا دل سے شانتی کے پکش میں ہے۔ وہ یدھ کے خلاف ہے۔ وہ اپنی ماتر بھومی کے جیون کی شانتی کے ساتھ پھر سے رچنا کرنا چاھتی ہے۔ یہ سب اس کے دل کی باتیں ھیں۔ مجھے وشواس ہے کہ بھارت کی جنتا بھی یہی چاھتی ہے۔ اس لئے ہم دونوں کے دل ملے ہوئے ھیں۔

پیارے دوستو، اس طرح ھمارے دونوں کے ایک سے آدرش ھیں۔ ھماری ایک سی اچھائیں ھیں اور انہیں کے اوپر ھماری دوستی اور ھمارا سہیوگ قائم ہے۔

میرے پیارے ھندستانی بھائیو، اور بہنو، امن اور آزادی کی قیمت ٹھیک ٹھیک وہی سمجھ سکتا ہے جو جنگ کے اور اپنے اوپر دوسروں کے انیائے کے کڑوے نتیجے بھگت چکا ہو۔ پچھلے لگ بھگ ایک سو برس کے اندر باہر کے حملہ کرنے والوں نے چینی جنتا پر کافی ظلم ڈھائے ھیں۔ ھمیں بڑی بڑی سخت جنگوں میں سے نکلنا پڑا ہے۔ اس لئے ان سب مصیبتوں کے تجربے کے بعد آج جو ھمیں امن اور شانتی کے ساتھ زندگی بسر کرنے کا سواوسر ملا ہے اسکی ھمارے دل میں بہت بڑی قدر ہے۔ دیش کے کروڑوں آدمیوں نے زبردست سنگرام کر کے اور اپنی جان لڑا کر دیش میں امن قائم کیا ہے۔ اب ہم اس امن کی زندگی کو پھر سے کھونے کے لئے تیار نہیں ھیں۔ پچھلے چار برس کے اندر جب سے ھمارا دیش سچ مچ آزاد ہوا ہے چینی جنتا اپنی پوری شکتی اس بات کے لئے خرچ کر رہی ہے کہ دیش کی پیداوار پھر سے بڑھے، لوگوں کی ضرورتیں پوری ہوں اور ان کے رھن سہن کے ڈھنگ میں دھیرے دھیرے انتی ہو۔ اس سمے ھمارے دیش کی اگوائی یعنی دیش کے جیون کی باگ ان کے ہاتھوں میں ہے جو محنت کر کے اپنا پیٹ پالتے ھیں۔ ھمارے کسان اب اپنی اپنی زمین کے مالک ھیں۔ نتیجہ یہ کہ صدیوں سے جو مصیبتوں کی

शहरों में से है. हमें खुशी है कि इस शुभ अवसर पर हम इतने अधिक दोस्तों से मिल सके. चीनी जनता की तरफ़ से भाईचारे का शुभ सन्देश हम आपके पास ले कर आए हैं, और अपने डैलीगेशन की तरफ़ से और चीनी जनता की तरफ़ से मैं वह सन्देश आप तक पहुंचाना चाहता हूं. जिस जोश के साथ आपने हमारा स्वागत किया है, जो प्रेम आपने दरशाया है और जो ख़ातिरदारी आपने हमारी की है उसके लिये मैं भरे दिल से आपका शुक्रिया अदा करता हूं.

हमें इस बात की भी खुशी है और हम इसमें अपनी बड़ी इज़्ज़त समझते हैं कि हमें महात्मा गांधी के क़ायम किये हुए सेवाग्राम आश्रम जाने का मौक़ा मिला. महात्मा गांधी के नाम से चीनी जनता अच्छी तरह परिचित है. वह भारत के महान नेता थे. उन्हें अपने देश से भी प्रेम था, देशवासियों से भी प्रेम था और सब देशों की आज़ादी और स्वाधीनता से भी प्रेम था. अमन और शांति के वह सच्चे पुजारी थे, उसी तरह जिस तरह चीन और हिन्दुस्तान दोनों की सारी जनता अमन और शान्ति की पुजारी हैं.

मैं समझता हूं मुझे यहां इस समय इस बात के दुहराने की आवश्यकता नहीं है कि चीन और भारत में सैकड़ों और हज़ारों बरस से मित्रता का सम्बन्ध रहा है. और अब जबकि हम दोनों एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं हमारी इस पुरानी दोस्ती की परम्परा और भी तेज़ी के साथ आगे को बढ़ेगी. यह सब बातें अब चीन और हिन्दुस्तान दोनों देशों की जनता अच्छी तरह जान गई है. दोनों की यह इच्छा है कि हमारे मित्रता के सम्बन्ध दिन पर दिन गहरे होते जाएं. दोनों देशों की जनता अब अच्छी तरह समझती है कि पिछले ज़माने में हमारे धार्मिक, कल्चरी और आर्थिक या तिजारती सम्बन्ध कितने गहरे थे. हम चीनियों ने भारत से बहुत कुछ सीखा. भारत पर भी चीन का गहरा असर पड़ा. कुछ सदियों के लिये हम एक दूसरे से अलग हो गये. उस समय हम दोनों अपनी अपनी मुसीबतों में थे. अब इस नये युग में हम फिर से मिले हैं. बहुत दिनों के बिछुड़े हुए भाई जब फिर से मिलते हैं तो दोनों के दिलों का खुशी से भर जाना क़ुदरती है.

यहां मैं यह बात भी साफ़ कर देना चाहता हूं कि हम दोनों को और हम सब को उस झूठी दोस्ती से नफ़रत है जिसमें बराबरी का सम्बन्ध न हो और जिसकी ग़रज़ एक दूसरे को धोका देना हो. हम ऐसे राष्ट्रों के बीच संधि के भी सख़्त ख़िलाफ़ हैं जो दुनिया की दूसरी क़ौमों का बुरा चेतते हों.

شہروں میں سے ہے. ہمیں خوشی ہے کہ اس شبھ اوسر پر ہم اتنے ادھک دوستوں سے مل سکے. چینی جنتا کی طرف سے بھائی چارے کا شبھ سندیش ہم آپ کے پاس لےکر آئے ہیں، اور اپنے ڈیلی گیشن کی طرف سے اور چینی جنتا کی طرف سے میں وہ سندیش آپ تک پہونچانا چاہتا ہوں. جس جوش کے ساتھ آپ نے ہمارا سواگت کیا ہے، جو پریم آپ نے درشایا ہے اور جو خاطرداری آپ نے ہماری کی ہے اس کے لئے میں بھرے دل سے آپ کا شکریہ ادا کرتا ہوں.

ہمیں اس بات کی بھی خوشی ہے اور ہم اس میں اپنی بڑی عزت سمجھتے ہیں کہ ہمیں مہاتما گاندھی کے قائم کئے ہوئے سیواگرام آشرم جانے کا موقع ملا. مہاتما گاندھی کے نام سے چینی جنتا اچھی طرح پریچت ہے. وہ بھارت کے مہان نیتا تھے. انہیں اپنے دیش سے بھی پریم تھا، دیش واسیوں سے بھی پریم تھا اور سب دیشوں کی آزادی اور سوادھینتا سے بھی پریم تھا. امن اور شانتی کے وہ سچے پجاری تھے، اسی طرح جس طرح چین اور ہندستان دونوں کی ساری جنتا امن اور شانتی کی پجاری ہے.

میں سمجھتا ہوں مجھے یہاں اس سمے اس بات کے دہرانے کی آوشیکتا نہیں ہے کہ چین اور بھارت میں سیکڑوں اور ہزاروں برس سے مترتا کا سمبندھ رہا ہے. اور اب جب کہ ہم دونوں ایک نئے یگ میں پرویش کر رہے ہیں ہماری اس پرانی دوستی کی پرمپرا اور بھی تیزی کے ساتھ آگے کو بڑھیگی. یہ سب باتیں اب چین اور ہندستان دونوں دیشوں کی جنتا اچھی طرح جان گئی ہے. دونوں کی یہ اچھا ہے کہ ہمارے مترتا کے سمبندھ دن پر دن گہرے ہوتے جائیں. دونوں دیشوں کی جنتا اب اچھی طرح سمجھتی ہے کہ پچھلے زمانے میں ہمارے 'دھارمک' کلچری اور آرتھک یا تجارتی سمبندھ کتنے گہرے تھے. ہم چینیوں نے بھارت سے بہت کچھ سیکھا. بھارت پر بھی چین کا گہرا اثر پڑا. کچھ صدیوں کے لئے ہم ایک دوسرے سے الگ ہو گئے. اس سمے ہم دونوں اپنی اپنی مصیبتوں میں تھے. اب اس نئے یگ میں ہم پھر سے ملے ہیں. بہت دنوں کے بچھڑے ہوئے بھائی جب پھر سے ملتے ہیں تو دونوں کے دلوں کا خوشی سے بھر جانا قدرتی ہے.

یہاں میں یہ بات بھی صاف کر دینا چاہتا ہوں کہ ہم دونوں کو اور ہم سب کو اس جھوٹی دوستی سے نفرت ہے جس میں برابری کا سمبندھ نہ ہو اور جس کی غرض ایک دوسرے کو دھوکہ دینا ہو. ہم ایسے راشٹروں کے بیچ سندھی کے بھی سخت خلاف ہیں جو دنیا کی دوسری قوموں کا برا چیتتے ہیں.

जब आप हमारे यहां पहुंचे आपका स्वागत करने में हमारी सरकार ने हमारे साथ हिस्सा लिया. आप अपने मुल्क में आजाद, हम अपने मुल्क में आजाद.

आप यह खूब समझ लें हम जब आपको गले लगाते हैं, आप से हाथ मिलाते हैं, हिन्दी चीनी भाई भाई के नारे से आपका स्वागत करते हैं तो ऐसा करते देख कर हमारी सरकार की भी बाछें खिल जाती हैं. हम चाहे कितने ही कम क्यों न दिखाई दें, हम सब आपके स्वागत में दिल से शामिल हैं.

हमारे यहां के डाक्टर कोटनीस के साथ जो डाक्टर चोलकर चीन गए थे वह इसी नागपुर के रहने वाले थे. उस वक्त चीन में कोई सरकार रही हो, हम चीनी जनता के वह अहसान नहीं भूल सकते जो उन्होंने हमारे यहां के डाक्टरी मिशन के साथ किये. डाक्टर कोटनीस को तो चीनी जनता ने ऐसा अपनाया कि उन्होंने अपनी मिटटी चीन की मिट्टी में मिला दी. डाक्टर चोलकर जीवित हैं. आज के दिन वह पांडुचेरी में हैं. अगर यहां होते तो उन्हें हम आप से मिलाते, उनके घर ले चलते और यह बताते कि जब वह चीन से लौटे थे तो किस शान के साथ उस खातिर दारी और व्यौहार का जिक्र करते थे जो आप ने उनके साथ की.

हमारे पास कहने के लिये बेहद है. थोड़े में हमें आपसे यही कहना है कि हमें दुनिया को यह बताना है कि दुनिया हमें गले मिलते देख कर दुख न माने, खुशी मनाए, अपना शक दूर कर दे. हम दोनों के मिल जाने के बाद दुनिया चैन की बंसी बजायेगी, सुख की नींद सोवेगी, आनन्द के राग अलापेगी, खुशी का नाच नाचेगी, मुसर्रत के शामयाने के नीचे मुहब्बत के तराने गाएगी.

जय चीन, जय हिन्द !
इंदु शुंको यू-हवान, वान स्वे !

4. 1. '54. —भगवानदीन

جب آپ ہمارے یہاں پہونچے آپ کا سواگت کرنے میں ہماری سرکار نے ہمارے ساتھ حصہ لیا . آپ اپنے ملک میں آزاد' ہم اپنے ملک میں آزاد .

آپ یہ خوب سمجھ لیں ہم جب آپ کو گلے لگاتے ہیں' آپ سے ہاتھ ملاتے ہیں' ہندی چینی بھائی بھائی کے نعرے سے آپ کا سواگت کرتے ہیں تو ایسا کرتے دیکھکر ہماری سرکار کی بھی باچھیں کھل جاتی ہیں . ہم چاہے کتنے ہی کم کیوں نہ دکھائی دیں' ہم سب آپ کے سواگت میں دل سے شامل ہیں .

ہمارے یہاں کے ڈاکٹر کوٹنیس کے ساتھ جو ڈاکٹر چولکر چین گئے تھے وہ اسی ناگپور کے رہنے والے تھے . اس وقت چین میں کوئی سرکار رہی ہو' ہم چینی جنتا کے وہ احسان نہیں بھول سکتے جو انہوں نے ہمارے یہاں کے ڈاکٹری مشن کے ساتھ کئے . ڈاکٹر کوٹنیس کو تو چینی جنتا نے ایسا اپنایا کہ انہوں نے اپنی مٹی چین کی مٹی میں ملا دی . ڈاکٹر چولکر جیوت ہیں . آج کے دن وہ پانڈوچیری میں ہیں . اگر یہاں ہوتے تو انہیں ہم آپ سے ملاتے' ان کے گھر لے چلتے اور یہ بتاتے کہ جب وہ چین سے لوٹے تھے تو کس شان کے ساتھ اس خاطرداری اور بیوہار کا ذکر کرتے تھے جو آپ نے ان کے ساتھ کی .

ہمارے کہنے کے لئے بے حد ہے . تھوڑے میں ہمیں آپ سے یہی کہنا ہے کہ ہمیں دنیا کو یہ بتانا ہے کہ دنیا ہمیں گلے ملتے دیکھکر دکھ نہ مانے' خوشی منائے' اپنا شک دور کر دے . ہم دونوں کے مل جانے کے بعد دنیا چین کی بنسی بجائے گی' سکھ کی نیند سوئے گی' آنند کے راگ الاپے گی' خوشی کا ناچ ناچے گی' مسرت کے شامیانے کے نیچے محبت کے ترانے گائے گی .

جے چین جے ہند !
اندو شنکو یوہوان' وان شوے !

4. 1. '54. —بھگوان دین

4 जनवरी 1954 को नागपुर के आम जलसे में चीनी कलचरल डेलीगेशन के नेता श्री तिंग सी लिन का भाशन

सदर साहब और प्यारे मित्रो,

हम लोग पीकिंग के चीन हिन्द मित्रता संघ के प्रतिनिधि बन कर यहां आए हैं. हमें इस बात की बेहद खुशी है और हम इसमें अपना बड़ा मान अनुभव करते हैं कि हमें आपके शहर नागपुर में आने का शुभ अवसर मिला. आप का शहर हिन्दुस्तान के मशहूर से मशहूर

4 جنوری 1954 کو ناگپور کے عام جلسے میں چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے نیتا شری تنگ سی لن کا بھاشن

صدر صاحب اور پیارے مترو'

ہم لوگ پیکنگ کے چین ہند مترتا سنگھ کے پرتی ندھی بنکر یہاں آئے ہیں . ہمیں اس بات کی بے حد خوشی ہے اور ہم اس میں اپنا بڑا مان انوبھو کرتے ہیں کہ ہمیں آپ کے شہر ناگپور میں آنے کا شبھ اوسر ملا . آپ کا شہر ہندستان کے مشہور سے مشہور

आपका स्वागत करते हुए हम दुनिया को यह विश्वास लाना चाहते हैं कि हम जिस दिन एक दिल हो जायेंगे दिन दुनिया से युद्ध नेस्त नाबूद हो जायगा, पासपोर्ट बला उठ जायगी, दुनिया की नागरिकता जन्म लेगी, बाज़ारों की आपाधापी ख़तम हो जायगी, मुल्क क की हदें इस तरह मिट जायेंगी कि यह पता लगाना किल हो जायगा कि चीन कहां तक है और हिन्द कहां क, रूस कहां तक है और ईरान कहां तक. काले, गोरे, ल, पीले का भेद इस तरह मिट जायगा जिस तरह चीन एक कुटुम्ब में कई धर्म मिल कर रहते हैं और पहचाने ीं पड़ते. दुनिया के हर घर में सब रंग हिलमिल कर सकेंगे. हर घर गुलदस्ता बन जायगा.

हममें दोस्ती न हो तब दुनिया को हम पर उंगली ाने का हक़ है क्योंकि प्रकृति ने हमको एक दूसरे से लग रहने के लिये नहीं बनाया. नक़्शे को उठा कर खिये साफ़ दिखाई देगा चीन और भारत दो जुड़वां नें हैं. कन्धे से कूल्हे तक मिली खड़ी हैं. 2000 मील क हमारी हद मिलती है फिर यह सवाल ही नहीं पैदा ता कि हममें से कोई दोस्ती के लिये हाथ बढ़ाए. मिले थों के लिये हाथ बढ़ाने की बात कैसी ?

दुनिया का कोई इतिहासज्ञ हमें यह तो बताये कि क्या म कभी एक दूसरे से लड़े हैं ? कभी किसी ने एक दूसरे र चढ़ाई की है ? हां, कहते हैं एक बार हिन्दुस्तान के एक ध बादशाह को चीन पर चढ़ाई की सूझी थी. उसे मुंह की कर लौटना पड़ा था. हिमालय पहाड़ ने उसे वह सीख ी कि फिर किसी ने कभी वैसी भूल न की. जब यहां देशियों का राज था तब उन विदेशियों ने भी इस तरह ी भूल की थी. पर जैसे ही हमारे देश की बागडोर हमारे ाथों में आई हमने एक क़लम से उस भूल को सुधार ाया. दुनिया के कुछ मुल्कों ने हमारे प्रधानमंत्री को, सके लिये ग़लत समझा पर आज सारी दुनिया उनको ीक समझती है और उनकी विदेशी नीति का लोहा ानती है.

तिब्बत और चीन और हिन्दुस्तान के बीच की हद को ेकर आए दिन कुछ मनचले मुल्क और मनचले पत्रकार नये नये गुल खिलाते रहते हैं. पर हुकूमत की नाव की तवार जिसके हाथ में है वह उन गुल खिलाने वालों की रफ़ देख देख कर हंसता रहता है और अपना चप्पू चलाता रहता है.

चीनी भाइयो, आप चीन से चीनी जनता के भेजे आए , हिन्दुस्तानी जनता के बुलाए आए हैं. चीन की हुकूमत आपकी, हिन्दुस्तान की हमारी. आप जब चीन से चले चीन की सरकार ने आपको सब तरह का सुभीता दिया.

آپ کا سواگت کرتے ہم دنیا کو یہ وشواس دلانا چاہتے ہیں کہ ہم جس دن ایک دل ہو جائینگے اُس دن دنیا سے یدھ نیست و نابود ہو جائیگا' پاسپورٹ کی بلا اُٹھ جائیگی' دنیا کی ناگرکتا جنم لے لے گی' بازاروں کی اپادھاپی ختم ہو جائے گی' ملک ملک کی حدیں اِس طرح مٹ جاوینگی کہ یہ پتہ لگانا مشکل ہو جائے گا کہ چین کہاں تک ہے اور ہند کہاں تک' روس کہاں تک ہے اور ایران کہاں تک. کالے' گورے' لال' پیلے کا بھید اِس طرح مٹ جائے گا جس طرح چین میں ایک کٹمب میں کئی دھرم ملکر رہتے ہیں اور پہچانے نہیں پڑتے. دنیا کے ہر گھر میں سب رنگ ہل مل کر رہ سکینگے. ہر گھر گلدستہ بن جائے گا.

ہم میں دوستی نہ ہو تب دنیا کو ہم پر اُنگلی اُٹھانے کا حق ہے کیونکہ پرکرتی نے ہم کو ایک دوسرے سے الگ رہنے کے لئے نہیں بنایا. نقشے کو اُٹھا کر دیکھئے صاف دکھائی دے گا چین اور بھارت دو جڑواں بہنیں ہیں. کندھے سے کولہے تک ملی کھڑی ہیں. 2000 میل تک ہماری حد ملتی ہے پھر یہ سوال ہی نہیں پیدا ہوتا کہ ہم میں سے کوئی دوستی کے لئے ہاتھ بڑھائے. ملے ہاتھوں کے لئے ہاتھ بڑھانے کی بات کیسی ؟

دنیا کا کوئی اِتہاسگیہ ہمیں یہ تو بتائے کہ کیا ہم کبھی ایک دوسرے سے لڑے ہیں ؟ کبھی کسی نے ایک دوسرے پر چڑھائی کی ہے ؟ ہاں' کہتے ہیں ایک بار ہندستان کے ایک نئے بادشاہ کو چین پر چڑھائی کی سوجھی تھی. اسے منہ کی کھا کر لوٹنا پڑا تھا. ہمالیہ پہاڑ نے اسے وہ سیکھ دی کہ پھر کسی نے ویسی بھول نہ کی. جب یہاں ودیشیوں کا راج تھا تب اُن ودیشیوں نے بھی اسطرح کی بھول کی تھی. پر جیسے ہی ہمارے دیش کی باگ ڈور ہمارے ہاتھوں میں آئی ہم نے ایک قلم سے اُس بھول کو سدھار لیا. دنیا کے کچھ ملکوں نے ہمارے پردھان منتری کو اِس کے لئے غلط سمجھا. پر آج ساری دنیا اُن کو ٹھیک سمجھتی ہے اور اُن کی ودیشی نیتی کا لوہا مانتی ہے.

تبت اور چین اور ہندستان کے بیچ کی حد کو لے کر آئے دن کچھ من چلے ملک اور کچھ منچلے پترکار نئے نئے گل کھلاتے رہتے ہیں. پر حکومت کی ناؤ کی پتوار جس کے ہاتھ میں ہے وہ اُن گل کھلانے والوں کی طرف دیکھ دیکھ کر ہنستا رہتا ہے اور اپنا چپو چلاتا رہتا ہے.

چینی بھائیو' آپ چین سے چینی جنتا کے بھیجے آئے ہیں' ہندستانی جنتا کے بلائے آئے ہیں. چین کی حکومت آپ کی' ہندستان کی ہماری. آپ جب چین سے چلے چین کی سرکار نے آپ کو سب طرح کا سوبھیتا دیا.

भेज कर हम पर किया था. उन्होंने हमारे उस इतिहास को जीवित रखा जिसको जानकर हम आज दुनिया के सामने अपनी गरदन ऊंची किये हैं. आपके देश ने हमारा वह युग आंखों देखा है जब यहां सोना बरसता था, कोई भी सोना उछालता खुश खुश निकल सकता था. हमारा वह युग भी आपने देखा है जब यहां दूध की प्याऊ थी और गोरस की गंगा बहती थी.

हम अपनी पुरानी दोस्ती ताजा कर रहे हैं. कोई हमारी दोस्ती को शक की निगाह से क्यों देखे ? हम केवल राजनीतिक आधार पर दोस्त नहीं बन रहे हैं. उस आधार को हम जियादा मजबूत नहीं समझते. वह जियादा टिकाऊ नहीं होती. जो जरमनी, दूसरी लड़ाई शुरू होते होते, रूस के साथ था वह दूसरी लड़ाई का निपटारा होने से पहले रूस से लड़ रहा था, अपनी दुर्गत करा रहा था. यही हाल जापान का था.

हम नैतिक दोस्ती में विश्वास रखते हैं. हम सांस्कृतिक आदान प्रदान में विश्वास रखते हैं. इसी आधार पर हम दोनों मिल रहे हैं. यह दोस्ती टिकाऊ होती है. इसमें यह होगा—आप हमारे यहां की कला सीख रहे हैं, हम आपके यहां की कला. आप हमारी भाषा सीख रहे हैं, हम आपकी भाषा. आप हमारे यहां का नाच गाना देख रहे हैं, हम आपके यहां का. न आपके जहाजों में गोला बारूद भर कर हमारे यहां आ रहा है, न हमारे यहां से लड़ाई का सामान लद कर आपके यहां जा रहा है.

आपके देश की ईमानदारी, सादगी और जनसेवा, और हमारे यहां के सत्य, अहिंसा इत्यादि हम दोनों से यह चाहते हैं कि हम दुनिया से गोला बारूद को इस तरह मिटा दें कि अगली सन्तान जब इन शब्दों को सुने तो वह इनके मानी न समझ पाए. वह अपने बड़े बूढ़ों और गुरुओं से पूछे कि गोला बारूद क्या चीज हुआ करती थी.

हम दोनों का धर्म हमें यह नहीं सिखाता कि हम दुनिया से अपने दुश्मनों को मिटा दें या एक भी दुश्मन को, अपना दिल दुखाये बिना, जान लें. हम दोनों अच्छी तरह समझते हैं, दुश्मनों को काटना पेड़ के पत्ते काटना है, जड़ काटना नहीं. पत्ते काटने से पेड़ बढ़ता है. एक दुश्मन कट कर सौ दुश्मन छोड़ जाता है. किसे नहीं मालूम एक दाना दफ्न हो कर सैकड़ों दानों में बदल जाता है. हम दोनों इस लिये दोस्त बन रहे हैं कि उस जड़ को नेस्त नाबूद कर दें. जिसके पेड़ का फल दुश्मन है, वह जड़ है, दुश्मनी. हम दुश्मनी मिटाना चाहते हैं, दुश्मन नहीं.

بھیج کر ہم پر کیا تھا. انہوں نے ہمارے اس اتہاس کو جیوت رکھا جس کو جان کر ہم آج دنیا کے سامنے اپنی گردن اونچی کئے ہیں. آپ کے دیش نے ہمارا وہ یگ آنکھوں دیکھا ہے جب یہاں سونا برستا تھا، کوئی بھی سونا اچھالتا خوش خوش نکل سکتا تھا. ہمارا وہ یگ بھی آپ نے دیکھا ہے جب یہاں دودھ کی پیاؤ تھی اور گورس کی گنگا بہتی تھی.

ہم اپنی پرانی دوستی تازہ کر رہے ہیں. کوئی ہماری دوستی کو شک کی نگاہ سے کیوں دیکھے؟ ہم کیول راج نیتک آدھار پر دوست نہیں بن رہے ہیں. اس آدھار کو ہم زیادہ مضبوط نہیں سمجھتے. وہ زیادہ ٹکاؤ نہیں ہوتی. جو جرمنی، دوسری لڑائی شروع ہوتے ہوتے، روس کے ساتھ تھا وہ دوسری لڑائی کا نپٹارا ہونے سے پہلے روس سے لڑ رہا تھا، اپنی درگت کرا رہا تھا. یہی حال جاپان کا تھا.

ہم نیتک دوستی میں وشواس رکھتے ہیں. ہم سانسکرتک آدان پردان میں وشواس رکھتے ہیں. اسی آدھار پر ہم دونوں مل رہے ہیں. یہ دوستی ٹکاؤ ہوتی ہے. اس میں یہ ہوگا—آپ ہمارے یہاں کی کلا سیکھ رہے ہیں، ہم آپ کے یہاں کی کلا. آپ ہماری بھاشا سیکھ رہے ہیں، ہم آپ کی بھاشا. آپ ہمارے یہاں کا ناچ گانا دیکھ رہے ہیں، ہم آپ کے یہاں کا. نہ آپ کے جہازوں میں گولہ بارود بھر کر ہمارے یہاں آ رہا ہے، نہ ہمارے یہاں سے لڑائی کا سامان لد کر آپ کے یہاں جا رہا ہے.

آپ کے دیش کی ایمانداری، سادگی اور جن سیوا اور ہمارے یہاں کے ستیہ، اہنسا اتیادی ہم دونوں سے یہ چاہتے ہیں کہ ہم دنیا سے گولہ بارود کو اس طرح مٹا دیں کہ اگلی سنتان جب ان شبدوں کو سنے تو وہ ان کے معنی نہ سمجھ پائے. وہ اپنے بڑے بوڑھوں اور گوروؤں سے پوچھے کہ گولہ بارود کیا چیز ہوا کرتی تھی.

ہم دونوں کا دھرم ہمیں یہ نہیں سکھاتا کہ ہم دنیا سے اپنے دشمنوں کو مٹا دیں یا ایک بھی دشمن کی، اپنا دل دکھائے بنا، جان لیں. ہم دونوں اچھی طرح سمجھتے ہیں، دشمنوں کو کاٹنا پیڑ کے پتے کاٹنا ہے، جڑ کاٹنا نہیں. پتے کاٹنے سے پیڑ بڑھتا ہے. ایک دشمن کٹ کر سو دشمن چھوڑ جاتا ہے. کسے نہیں معلوم ایک دانہ دفن ہو کر سیکڑوں دانوں میں بدل جاتا ہے. ہم دونوں اس لئے دوست بن رہے ہیں کہ اس جڑ کو نیست نابود کر دیں جس کے پیڑ کا پھل دشمن ہے، وہ جڑ ہے دشمنی. ہم دشمنی مٹانا چاہتے ہیں، دشمن نہیں.

वह जगह न मिल जाय जिस के आप हक़दार शुरू से हैं. आप का स्वागत करते हम दुनिया के सामने यह ऐलान करना चाहते हैं कि हम लड़ाई खड़ी करने के लिये नहीं मिल रहे हैं. आपने हमने मिल कर या अलग अलग कभी किसी दूसरे देश पर चढ़ाई की ही कब ? दूसरों को नुक़सान पहुंचाने के लिये अपनी बस्तियां बसाई ही कब ? फिर हम दोनों मिलने के बाद दुनिया में शान्ती फैलाने के सिवाय और सोच ही क्या सकते हैं.

हम मकड़ी की तरह दुनिया के कोने कोने में लड़ाई के अड्डों का जाल पूरने की बात नहीं सोच रहे हैं, हम तो जगह जगह दोस्ती और शान्ती के मन्दिर खड़े करना चाहते हैं.

आपका स्वागत कर के हम पच्छिमी देशों को यह बता देना चाहते हैं कि उन्होंने जो 'पीले भय' (Yellow Peril) का भूत अपने लिये खड़ा कर रक्खा है, वह कहीं है ही नहीं. पीली बला अब पीली सद्भावना है. पीला भय अब पीला प्यार है. क्या दुनिया के देश यह नहीं देखते कि चीन अभी अभी बड़ी बड़ी तकलीफ़ों में से सुर्खरु हो कर निकला है. तमतमाते चहरे से उभरा है, अब वह पीला है कहां ? वह अब सुर्ख़ है ! डरने की ज़रूरत नहीं !

हम विश्वास के साथ कह सकते हैं जिस चीन ने हमारे बुद्ध भगवान को अपनाया, वह महात्मा गांधी को न अपनाये यह हो ही नहीं सकता.

हमें तो आप गांधी के अनुयायी जंचते हैं, भले ही नई सरकार के बनते वक़्त चीन की कुछ ज़मीन ख़ून से रंग गई हो, जहां तक हमें पता है जो ज़मीन चीन की लाल हुई उसके लिये आप ख़ुश नहीं, दुख मानते हैं आपका बस चलता तो आप एक बूंद ख़ून न गिरने देते, पर वैसा न हो सका.

चीन के राष्ट्रपिता माओत्से तुंग के तीन सिद्धांत— 'ईमानदारी, सादगी, और जन सेवा' में 'सत्य और अहिंसा' समाई है. हिंद के राष्ट्रपिता गांधी के यही दो मूल सिद्धांत थे. उनके बाक़ी नो व्रत भी इन तीनों में समा जाते हैं. फिर हम क्यों न कहें कि आपने हमारी तरह हमारे राष्ट्रपिता के सिद्धांतों को अपना लिया.

हमें विश्वास है आनेवाली दुनिया माओत्से तुंग को जितना चीन के मुक्तिदाता के नाते याद रखेगी, उससे कहीं ज़ियादा एशिया के एक महान विचारक के नाते याद रखेगी.

हम मुद्दतों आपस में मिलते जुलते रहे हैं, सीखते सिखाते रहे हैं. हम चीन का वह ऐहसान कभी नहीं भूल सकते जो उसने सैकड़ों बरस तक अपने यात्री हिन्दुस्तान

وہ جگہ نہ مل جائے جس کے آپ حقدار شروع سے ہیں. آپ کا سواگت کرتے ہم دنیا کے سامنے یہ اعلان کرنا چاہتے ہیں کہ ہم لڑائی کھڑی کرنے کے لئے نہیں مل رہے ہیں. آپ نے ہم نے ملکر یا الگ الگ کبھی کسی دوسرے دیش پر چڑھائی کی ہی کب ؟ دوسروں کو نقصان پہونچانے کے لئے اپنی بستیاں بسائیں ہی کب ؟ پھر ہم دونوں ملنے کے بعد دنیا میں شانتی پھیلانے کے سوائے اور سوچ ہی کیا سکتے ہیں ۔

ہم مکڑی کی طرح دنیا کے کونے کونے میں لڑائی کے اڈوں کا جال پورنے کی بات نہیں سوچ رہے ہیں' ہم تو جگہ جگہ دوستی اور شانتی کے مندر کھڑے کرنا چاہتے ہیں ۔

آپکا سواگت کرکے ہم پچھمی دیشوں کو یہ بتا دینا چاہتے ہیں کہ انہوں نے جو 'پیلے بھئے' (Yellow Peril) کا بھوت اپنے لئے کھڑا کر رکھا ہے' وہ کہیں ہے ہی نہیں. پیلی بلا اب پیلی سدبھاونا ہے ۔ پیلا بھئے اب پیلا پیار ہے ۔ کیا دنیا کے دیش یہ نہیں دیکھتے کہ چین ابھی ابھی بڑی بڑی تکلیفوں میں سے سرخرو ہوکر نکلا ہے ۔ تمتماتے چہرے سے اُبھرا ہے ۔ اب وہ پیلا ہے کہاں ؟ وہ اب سرخ ہے ! ڈرنے کی ضرورت نہیں !

ہم وشواس کے ساتھ کہہ سکتے ہیں جس چین نے ہمارے بدھ بھگوان کو اپنایا' وہ مہاتما گاندھی کو نہ اپنائے یہ ہو ہی نہیں سکتا ۔

ہمیں تو آپ گاندھی کے انویائی جنچتے ہیں' بھلے ہی نئی سرکار کے بنتے وقت چین کی کچھ زمین خون سے رنگ گئی ہو' جہاں تک ہمیں پتہ ہے جو زمین چین کی لال ہوئی اس کے لئے آپ خوش نہیں' دکھ مانتے ہیں. آپکا بس چلتا تو آپ ایک بوند خون نہ گرنے دیتے' پر ویسا نہ ہوسکا ۔

چین کے راشٹر پتا ماؤتسے تنگ کے تین سدھانت— 'ایمانداری' سادگی' اور جن سیوا' میں 'ستیہ اور اہنسا' سمائی ہے ۔ ہند کے راشٹر پتا گاندھی کے یہی دو مول سدھانت تھے ۔ اُن کے باقی نو ورت بھی اِن تینوں میں سما جاتے ہیں ۔ پھر ہم کیوں نہ کہیں کہ آپ نے ہماری طرح ہمارے راشٹر پتا کے سدھانتوں کو اپنا لیا ۔

ہمیں وشواس ہے آنے والی دنیا ماؤتسے تنگ کو جتنا چین کے مکتی داتا کے ناتے یاد رکھے گی' اس سے کہیں زیادہ ایشیا کے ایک مہان وچارک کے ناتے یاد رکھے گی.

ہم مدتوں آپس میں ملتے جلتے رہے ہیں' سیکھتے سکھاتے رہے ہیں. ہم چین کا وہ احسان کبھی نہیں بھول سکتے جو اس نے سیکڑوں برس تک اپنے یاتری ہندستان

रोकता है आपकी बोली का हमारा अज्ञान और रोकती है सात समंदर पार की भाषा, अंगरेज़ी. हम अंगरेज़ी जानते हैं, पर पड़ोसी चीन की बोली न समझ सकते हैं, न बोल सकते हैं ! तसल्ली इतनी है, कि आप भी हमारी बोली नहीं जानते.

"हिन्दी चीनी भाई भाई" "हिन्द चीन मित्रता ज़िन्दाबाद" के नारे नये हैं, पर बिल्कुल नये नहीं हैं. वह नई बोतल में पुरानी शराब हैं.

हम दोस्त थे, भाई थे, हैं और रहेंगे. क्या हुआ अगर समय के उलट फेर ने कुछ दिनों के लिये हमें यह भुला दिया कि हम भाई हैं और दोस्त हैं.

समय का यह उलट फेर न हुआ होता तो आज नागपुर चीनी बोली में आपका स्वागत करता, और आप हिन्दी में उसका जवाब देते. न सही आज यह सुभीता, वह दिन दूर नहीं जब यही हो कर रहेगा जिसे हम दोनों चाहते हैं.

आप हमारे पड़ोसी देश चीन से आ रहे हैं. बताइये, हमारे काका माओत्से तुंग किस तरह हैं ? भाई चाऊ एन लाई की तबियत कैसी है ? हमारे चीनी भाई बहन किस तरह हैं ? कोरिया युद्ध का बोझ जो उनके सिर पर था और जो अभी पूरा पूरा तो नहीं पर कुछ हलका हुआ है इसका अनुभव हमारे चीनी भाइयों को कैसा रहा, और अब कैसा है ?

आपसे मिल कर हमारी खुशी वह रूप ले लेती है जो बच्चे की खुशी उस वक़्त लेती है जब वह मां से बिछुड़कर फिर मिलता है. शायद इसकी वजह यह है कि हम पुराने दोस्त और भाई हैं. बीच में विदेशी हकूमत के कारन अलग अलग पड़ गये थे. आज बिछुड़े फिर मिल रहे हैं.

हम आप से कुछ पहले आज़ाद हुए. आज़ाद होते ही हमारी नज़र आप पर गई. आपके देश में जल्दी ही ऐसी हकूमत बन गई जो हर तरह आपकी अपनी है. उसे सबसे पहले बरमा ने क़बूल किया. बरमा बरसों हिन्दुस्तान का हिस्सा रहा है. उसका क़बूलना हमारा क़बूलना था. हमने ख़ुद भी आपकी सरकार को माना. उसके बाद दुनिया में हवा चल पड़ी. मुल्क के बाद मुल्क जल्दी जल्दी आपको मानने लगे. ठीक है कुछ मुल्क आज भी आपकी सरकार को मान्यता नहीं देते पर हमें भी चैन कहां ? जब तक दुनिया के सब देश आपकी सरकार को मान्यता न दें, हिन्दुस्तान जी जान से उस के लिये कोशिश करता रहेगा.

इस में शक नहीं, हमें यू. एन. ओ. में जगह मिली हुई है, उसकी जनरल असेम्बली की गद्दी भी हमें हासिल है. वह गद्दी हमें गुदगुदी नहीं मालूम होती, चुभती है, उस वक़्त तक चुभती रहेगी जब तक यू. एन. ओ. में आपको

روکتا ہے آپ کی بولی کا ہمارا اگیان اور روکتی ہے سات سمندر پار کی بھاشا، انگریزی ۔ ہم انگریزی جانتے ہیں، پر پڑوسی چین کی بولی نہ سمجھ سکتے ہیں، نہ بول سکتے ہیں ! تسلی اِتنی ہے، کہ آپ بھی ہماری بولی نہیں جانتے ۔

"ہندی چینی بھائی بھائی" "ہند چین متر تا زندہ باد" کے نعرے نئے ہیں، پر بالکل نئے نہیں ہیں ۔ وہ نئی بوتل میں پرانی شراب ہیں ۔

ہم دوست تھے بھائی تھے، ہیں اور رہیں گے ۔ کیا ہوا اگر سمے کے اُلٹ پھیر نے کچھ دنوں کے لئے ہمیں یہ بھلا دیا کہ ہم بھائی ہیں اور دوست ہیں ۔

سمے کا یہ اُلٹ پھیر نہ ہوا ہوتا تو آج ناگپور چینی بولی میں آپ کا سواگت کرتا، اور آپ ہندی میں اُس کا جواب دیتے ۔ نہ سہی آج یہ سوبھیتا، وہ دن دور نہیں جب یہی ہوکر رہے گا جسے ہم دونوں چاہتے ہیں ۔

آپ ہمارے پڑوسی دیش چین سے آرہے ہیں ۔ بتائیے ہمارے کاکا ماؤتسے تنگ کس طرح ہیں ؟ بھائی چاؤ این لائی کی طبیعت کیسی ہے ؟ ہمارے چینی بھائی بہن کس طرح ہیں؟ کوریا یدھ کا بوجھا جو اُن کے سر پر تھا اور جو ابھی پورا پورا تو نہیں پر کچھ ہلکا ہوا ہے اِس کا انوبھو ہمارے چینی بھائیوں کو کیسا رہا، اور اب کیسا ہے ؟

آپ سے ملکر ہماری خوشی وہ روپ لے لیتی ہے جو بچے کی خوشی اُس وقت لیتی ہے جب وہ ماں سے بچھڑکر پھر ملتا ہے ۔ شاید اُسکی وجہ یہ ہے کہ ہم پرانے دوست اور بھائی ہیں ۔ بیچ میں ودیشی حکومت کے کارن الگ الگ پڑگئے تھے. آج بچھڑے پھر مل رہے ہیں ۔

ہم آپ سے کچھ پہلے آزاد ہوئے ۔ آزاد ہوتے ہی ہماری نظر آپ پر گئی ۔ آپ کے دیش میں جلدی ہی ایسی حکومت بن گئی جو ہر طرح آپکی اپنی ہے ۔ اسے سب سے پہلے برما نے قبول کیا. برما برسوں ہندستان کا حصہ رہا ہے ۔ اُس کا قبولنا ہمارا قبولنا تھا. ہم نے خود بھی آپکی سرکار کو مانا ۔ اُس کے بعد دنیا میں ہوا چل پڑی ۔ ملک کے بعد ملک جلدی جلدی آپکو ماننے لگے ۔ ٹھیک ہے کچھ ملک آج بھی آپ کے سرکار کو مانیتا نہیں دیتے پر ہمیں بھی چین کہاں ؟ جب تک دنیا کے سب دیش آپکی سرکار کو مانیتا نہ دیں، ہندستان جی جان سے اُس کے لئے کوشش کرتا رہیگا ۔

اِس میں شک نہیں، ہمیں یو. این. او. میں جگہ ملی ہوئی ہے، اُسکی جنرل اسمبلی کی گدی بھی ہمیں حاصل ہے. وہ گدی ہمیں گدگدی نہیں معلوم ہوتی، چبھتی ہے، اُس وقت تک چبھتی رہیگی جب تک یو. این. او. میں آپکو

कलकत्ता (हिन्दुस्तान)
12 जनवरी '54

प्रेज़ीडैन्ट चायना इंडिया फ्रेन्डशिप ऐसोसिएशन पीकिंग—से
प्रेज़ीडैन्ट इंडिया चायना फ्रेन्डशिप ऐसोसिएशन नई दिल्ली—के नाम

मेरे प्यारे पंडित सुन्दरलाल,

पांच सप्ताह तक भारत में दौरा करने के बाद अब हम लोग इस महान देश को छोड़ कर अपने देश वापिस जा रहे हैं. आपने जिस प्रेम के साथ हमें बुलाया, जिस सुन्दरता के साथ हमारे दौरे का प्रोग्राम बनाया और जिस मोहब्बत के साथ हमारी ख़ातिरदारी की उस सब के लिये इस बिदाई के वक़्त में अपने डैलीगेशन की तरफ़ से इंडिया चायना फ्रेन्डशिप ऐसोसियेशन की नेशनल कमेटी का और निजी तौर पर आप का तहे दिल से शुक्रिया अदा करता हूं.

ऐसा लगता है हम भारत में बहुत कम ठहरे. इस वजह से हमें इसका सचमुच बड़ा दुख है कि जहां जहां से हमें बुलावा आया हम उन सब जगह नहीं जा सके. फिर भी आपकी ऐसोसिएशन की नेशनल कमैटी की कोशिशों और जगह जगह मुक़ामी ऐसोसिएशनों की कोशिशों के कारन और बहुत से हिन्दुस्तानी दोस्तों ने इस दौरे में जिस जोश के साथ मदद दी उस सब की बदौलत हमारे इस दौरे को बहुत शानदार कामयाबी मिली. इस में कोई शक नहीं कि चीन और हिन्दुस्तान दोनों मुल्कों में चीन हिन्द दोस्ती की तहरीक को इस से बहुत ज़बरदस्त बढ़ावा मिलेगा.

जहां तक हमारे डैलीगेशन के मैम्बरों की बात है वहां तक यह पांच हफ़्ते का समय, फूलों की मालाएं, ज़िन्दाबाद के नारे, प्यार भरी मुलाक़ातें, गले मिलना और आंसुओं का टपकना, कभी भुलाया नहीं जासकता. हमारे दिलों से इन चीज़ों की याद कभी फीकी नहीं पड़ सकती.

मुझे अब यह ख़त बन्द करना पड़ता है. बहुत बहुत शुक्रिया और बहुत बहुत प्यार !

हमेशा आपका,
तिंग सी लिन.

नागपुर में चीनी कलचरी डेलीगेशन

[वह भाशन जो नागपुर निवासियों की ओर से चीनी कलचरी डेलीगेशन का स्वागत करते हुए 4. 1. '54 को नागपुर में दिया गया.]

चीनी दोस्तो,

आपका स्वागत करते हुए हम सब का दिल अंदर से उमड़ता है. उस उमड़न को शब्दों में नहीं कहा जा सकता. हां, यह कहा जा सकता है कि उसको रोकता कौन है. उसे

کلکتہ (ہندستان)
12 جنوری '54

پریزیڈنٹ چائنا انڈیا فرینڈشپ ایسوسی ایشن پیکنگ—سے
پریزیڈنٹ انڈیا چائنا فرینڈشپ ایسوسی ایشن نئی دلی—کے نام

میرے پیارے پنڈت سندر لال'

پانچ سپتاہ تک بھارت میں دورہ کرنے کے بعد اب ہم لوگ اس مہان دیش کو چھوڑ کر اپنے دیش واپس جا رہے ہیں . آپ نے جس پریم کے ساتھ ہمیں بلایا' جس سندرتا کے ساتھ ہمارے دورہ کا پروگرام بنایا اور جس محبت کے ساتھ ہماری خاطرداری کی اس سب کے لئے اس بدائی کے وقت میں اپنے ڈیلی گیشن کی طرف سے انڈیا چائنا فرینڈشپ ایسوسی ایشن کی نیشنل کمیٹی کا اور نجی طور پر آپ کا تہہ دل سے شکریہ ادا کرتا ہوں .

ایسا لگتا ہے ہم بھارت میں بہت کم ٹھہرے. اس وجہ سے ہمیں اس کا سچ مچ بڑا دکھ ہے کہ جہاں جہاں سے ہمیں بلاوا آیا ہم ان سب جگہ نہیں جاسکے. پھر بھی آپ کی ایسوسی ایشن کی نیشنل کمیٹی کی کوششوں اور جگہ جگہ مقامی ایسوسی ایشنوں کی کوششوں کے کارن اور بہت سے ہندستانی دوستوں نے اس دورہ میں جس جوش کے ساتھ مدد دی اس سب کی بدولت ہمارے اس دورہ کو بہت شاندار کامیابی ملی . اس میں کوئی شک نہیں کہ چین اور ہندستان دونوں ملکوں میں چین ہند دوستی کی تحریک کو اس سے بہت زبردست بڑھاوا ملے گا .

جہاں تک ہمارے ڈیلی گیشن کے ممبروں کی بات ہے وہاں تک یہ پانچ ہفتے کا سمے' پھولوں کی مالائیں' زندہ باد کے نارے' پیار بھری ملاقاتیں' گلے ملنا اور آنسوؤں کا ٹپکنا' کبھی بھلایا نہیں جاسکتا. ہمارے دلوں سے ان چیزوں کی یاد کبھی پھیکی نہیں پڑسکتی .

مجھے یہ خط اب بند کرنا پڑتا ہے . بہت بہت شکریہ اور بہت بہت پیار !

ہمیشہ آپ کا'
تنگ سی لن .

ناگپور میں چینی کلچری ڈیلیگیشن

[وہ بھاشن جو ناگپور نواسیوں کی اور سے چینی کلچری ڈیلیگیشن کا سواگت کرتے ہوئے 4 . 1 . '54 کو ناگپور میں دیا گیا .]

چینی دوستو'

آپ کا سواگت کرتے ہوئے ہم سب کا دل اندر سے اومڑتا ہے . اس امڑن کو شبدوں میں نہیں کہا جاسکتا . ہاں' یہ کہا جاسکتا ہے کہ اس کو روکتا کون ہے . اسے

हमारी राय | ہماری رائے

चीनी कलचरी डैलीगेशन के सम्बन्ध के दो खत

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.
4 जनवरी '54.

प्रेज़ीडैन्ट इंडिया चायना फ्रैन्डशिप ऐसोसिएशन, नई दिल्ली—से.

प्रेज़ीडैन्ट चायना इंडिया फ्रैन्ड शिप ऐसोसिएशन पीकिंग—के नाम

मेरे प्यारे भाई तिंग सी लिन,

इस देश से चीन के लिये बिदा होते समय मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं स्वीकार कीजिये. भारत और चीन के आपसी सम्बन्ध के इतिहास में और दुनिया में अमन बनाये रखने की कोशिशों में आप के प्रतिनिधि मंडल का इस देश में आना अपनी खास जगह और खास अहमियत रखता है. आपके आने ने हमारे दोनों देशों के बीच मित्रता के बन्धनों को बहुत अधिक मज़बूत कर दिया है. लाखों भारतीय नर नारियों के दिलों में आपका आना बहुत प्यारी और मीठी यादगारें छोड़ जायेगा. मेहरबानी कर के चीन की जनता तक भारत की जनता का दिली और प्यार भरा संदेशा पहुंचा दीजिये. भारत की जनता चीन की जनता के साथ हमेशा के लिये मित्रता निभाने का वचन देती है, और इस बात के लिये अपनी ज़बर्दस्त इच्छा प्रगट करती है कि इन दोनों प्राचीन देशों का सम्बन्ध कलचरी, समाजी, आर्थिक और राजनैतिक चारों तरह के मामलों में दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता और गहरा होता जाये, क्योंकि दुनिया की आजकल की संकट की हालत में भारत के लोगों को इस बात का पूरा विश्वास है कि न केवल उनकी अपनी ख़ैरियत, सलामती और आज़ादी ही बल्कि दुनिया की सारी जनता का अमन, उनकी तरक़्क़ी और उनकी ख़ुशहाली बहुत बड़े दर्जे तक भारत और चीन के बीच सच्ची दोस्ती और सच्चे भाईचारे पर निर्भर हैं.

संस्कृत की एक पुरानी कहावत है—'गीताम पुनर्दर्शनाये' यानी जाइये और फिर आइये.

हिन्द चीन दोस्ती ज़िन्दा बाद!
हिन्दी चीनी भाई भाई!

आपका प्यारा,
सुन्दरलाल.

چینی کلچرل ڈیلیگیشن کے سمبندھ کے دو خط

145 مٹھی گنج، الہ آباد.
4 جنوری '54

پریذیڈنٹ انڈیا چائنا فرینڈشپ ایسوسی ایشن، نئی دلی—سے.

پریذیڈنٹ چائنا انڈیا فرینڈشپ ایسوسی ایشن، پیکنگ—کے نام.

میرے پیارے بھائی تنگ سی لن،

اس دیش سے چین کے لئے بدا ہوتے سمے میری ہاردک شبھ کامنائیں سویکار کیجئے. بھارت اور چین کے آپسی سمبندھ کے اتہاس میں اور دنیا میں امن بنائے رکھنے کی کوششوں میں آپ کے پرتی ندھی منڈل کا اس دیش میں آنا اپنی خاص جگہ اور خاص اہمیت رکھتا ہے. آپ کے آنے نے ہمارے دونوں دیشوں کے بیچ مترتا کے بندھنوں کو بہت ادھک مضبوط کر دیا ہے. لاکھوں بھارتیہ نرناریوں کے دلوں میں آپ کا آنا بہت پیاری اور میٹھی یادگاریں چھوڑ جائیگا. مہربانی کرکے چین کی جنتا تک بھارت کی جنتا کا دلی اور پیار بھرا سندیشہ پہونچا دیجئے. بھارت کی جنتا چین کی جنتا کے ساتھ ہمیشہ کے لئے مترتا نبھانے کا بچن دیتی ہے، اور اس بات کے لئے اپنی زبردست اچھا پرگٹ کرتی ہے کہ ان دونوں پراچین دیشوں کا سمبندھ کلچری، سماجی، آرتھک اور راج نیتک چاروں طرح کے معاملوں میں دن دونا اور رات چوگنا بڑھتا اور گہرا ہوتا جائے، کیونکہ دنیا کی آجکل کی سنکٹ کی حالت میں بھارت کے لوگوں کو اس بات کا پورا وشواس ہے کہ نہ کیول ان کی اپنی خیریت، سلامتی اور آزادی ہی بلکہ دنیا کی ساری جنتا کا امن، ان کی ترقی اور ان کی خوشحالی بہت بڑے درجے تک بھارت اور چین کے بیچ سچی دوستی اور سچے بھائی چارے پر نربھر ہے.

سنسکرت کی ایک پرانی کہاوت ہے—'گیتام پنردرشنائے' یعنی جائیے اور پھر آئیے.

ہند چین دوستی زندہ باد!
ہندی چینی بھائی بھائی!

آپ کا پیارا،
سندر لال.

"पर मैं ऐसे चातुर्य से घृना करता हूं, देवि! मैं अपना मस्तक कभी नहीं झुका सकता, कभी नहीं. मैं मर सकता हूं पर किसी की दया का भिकारी नहीं बन सकता."

एक देश प्रेम में डूबे हुए नवयुवक के यह विचार पाठकों के हृदय को ज़रूर छुयेंगे :—

"देवि संघमित्रा! मैं तुमसे प्रेम करता हूं, अपने जीवन से बढ़ कर प्रेम करता हूं. तुम से भी अधिक अपने देश से प्रेम करता हूं. उससे भी अधिक मैं मनुश्य से प्रेम करता हूं. पर मनुश्य तो आज सोया हुआ है. उसे जगाने के लिये अभी और भी बलिदान की आवश्यकता है."

'संघर्श के बाद' की सभी कहानियों में मानव मन की गहराई में घुमने की विश्नु जी ने कामयाब कोशिश की है. यह उनकी विशेशता है. भाशा सरल और मुहावरेदार है. भारतीय ज्ञान पीठ काशी की हिन्दी जगत को यह एक अच्छी देन है.

—चेतन कुमार शर्मा

हिन्दुस्तानी कहानियां (भाग दूसरा)

प्रकाशक—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा. सफ़े 104, क़ीमत—चौदह आना; भाशा हिन्दी.

यह किताब हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की ओर से ली जाने वाली परीक्षाओं के तीसरे दरजे के विद्यार्थियों के लिए तैयार की गई है. फिर भी सभा की ओर से यह ख़ास ख़्याल रखा गया है कि आम पढ़ने वालों को भी यह किताब दिलचस्प मालूम हो.

इस किताब में आठ कहानियां हैं. कहानियां सभी ऊंचे दरजे के लेखकों की हैं और बच्चों के लिये हर पहलू से सबक़ आमेज़ हैं. 'मन की माया' उसने कहा था' 'ग़रीबों का स्वर्ग' और 'मिलाप' वग़ैरा कहानियां बहुत अच्छी हैं.

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा का हिन्दुस्तानी के प्रचार में यह एक और क़दम है जिसमें कि उसे ज़रूरत से ज़ियादा सुफलता मिल रही है राश्ट्र भाशा प्रचार में उसका बहुत बड़ा हाथ है. किताब की भाशा सरल है जो कि बच्चों की समझ में आसानी से आ सकती है और इस से फ़ायदा उठा सकते हैं. इस के अलावा कहीं कहीं जो कठिन शब्द किताब में आये हैं बच्चों की सहूलियत के लिये उनका अर्थ किताब के आख़िर में लिख दिया है.

—मुन्ने भाई

"پر میں ایسے چاتریہ سے گھرنا کرتا ہوں" دیوی! میں اپنا مستک کبھی نہیں جھکا سکتا، کبھی نہیں۔ میں مر سکتا ہوں پر کسی کی دیا کا بھکاری نہیں بن سکتا۔"

ایک دیش پریم میں ڈوبے ہوئے نویوک کے یہ وچار پاٹھکوں کے ہردے کو ضرور چھوئیں گے :—

"دیوی سنگھمترا! میں تم سے پریم کرتا ہوں، اپنے جیون سے بڑھ کر پریم کرتا ہوں۔ تم سے بھی ادھک اپنے دیش سے پریم کرتا ہوں۔ اس سے بھی ادھک میں منش سے پریم کرتا ہوں، پر منش تو آج سویا ہوا ہے۔ اسے جگانے کے لئے ابھی اور بھی بلیدان کی آوشکتا ہے۔"

سنگھرش کے بعد کی سبھی کہانیوں میں مانو من کی گہرائی میں گھسنے کی وشنو جی نے کامیاب کوشش کی ہے۔ یہ ان کی وشیشتا ہے۔ بھاشا سرل اور محاورہ دار ہے۔ بھارتیہ گیان پیٹھ کاشی کی ہندی جگت کو یہ ایک اچھی دین ہے۔

—چیتن کمار شرما

ہندستانی کہانیاں (بھاگ دوسرا)

پرکاشک—ہندستانی پرچار سبھا وردھا؛ صفحے 104، قیمت—چودہ آنہ؛

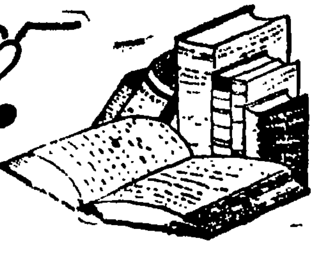
یہ کتاب ہندستانی پرچار سبھا کی اور سے لی جانے والی پریکشاؤں کے تیسرے درجے کے ودیارتھیوں کے لئے تیار کی گئی ہے۔ پھر بھی سبھا کی اور سے یہ خاص خیال رکھا گیا ہے کہ عام طور سے پڑھنے والوں کو بھی یہ کتاب دلچسپ معلوم ہو۔

اس کتاب میں آٹھ کہانیاں ہیں۔ کہانیاں سبھی اونچے درجے کے لیکھکوں کی ہیں اور بچوں کے لئے ہر پہلو سے سبق آموز ہیں۔ 'من کی مایا' 'اس نے کہا تھا' 'غریبوں کا سورگ' اور 'ملاپ' وغیرہ کہانیاں بہت ہی اچھی ہیں۔

ہندستانی پرچار سبھا وردھا کا ہندستانی کے پرچار میں یہ ایک اور قدم ہے جس میں کہ اسے ضرورت سے زیادہ سپھلتا مل رہی ہے اور راشٹر بھاشا پرچار میں اس کا بہت بڑا ہاتھ ہے۔ کتاب کی بھاشا سرل ہے جو کہ بچوں کی سمجھ میں آسانی سے آ سکتی ہے اور اس سے فائدہ اٹھا سکتے ہیں۔ اس کے علاوہ کہیں کہیں جو کٹھن شبد کتاب میں آئے ہیں بچوں کی سہولیت کے لئے ان کا ارتھ کتاب کے آخر میں لکھ دیا گیا ہے۔

—منے بھائی

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

संघर्ष के बाद

लेखक—श्री विष्णु प्रभाकर; प्रकाशक—भारतीय ज्ञान पीठ काशी; सफे—248; क़ीमत—तीन रुपये; भाषा—हिंदी.

श्री विष्णु प्रभाकर की 21 कहानियों का यह संग्रह है. हमारे समाज की आजकल की दशा, उसकी दिन ब दिन गिरती हुई हालत की ओर लेखक ने इस संग्रह में इशारा किया है. हमें इन कहानियों में बनावट और ऊल जलूल की बातें कहीं नहीं मिलतीं बल्कि हृदय को छूती हुई एक दर्द की लकीर और अपने व अपने समाज और देश के प्रति कर्त्तव्य पालन की भावना मिलती है. इस संग्रह में, हम किस ज़हरीले वातावरण में पले हैं, किन किन परिस्थितियों का हमें सामना करना पड़ा है, और अब हम किन परिस्थितियों से गुज़र रहे हैं, इन सब का इस संग्रह में एक सच्चा चित्र पाठकों को मिलेगा. इस चीज़ के साथ ही साथ पाठक यह भी अच्छी तरह से जान जायेंगे कि इन परिस्थितियों में हमारा क्या कर्त्तव्य था और क्या हमने किया. इस संग्रह की कहानियों में समाज की सच्ची तसवीर के साथ साथ दर्द है, दुख है, और हृदय को छूने वाली कसक है.

लेखक ने 'जीवन दीप' नामक कहानी में कितना ऊंचा आदर्श रखा है.

"प्रनय यदि प्रनय है तो उसे संसार की कोई भी शक्ति विमुख नहीं कर सकती. नारी जिसे एक बार प्यार करती है उसके हाथों अपना रक्त उलीचा जाने पर भी उसे प्यार करती रहती है, पर वह प्यार होना चाहिये, प्रनय होना चाहिये."

लेखक ने देश प्रेम की भावना की भी बहुत अच्छी परिभाषा की है:—

"चंडगिरि के पदचाप मिटते मिटते कुमार ने चूना से कहा, संघमित्रा स्वार्थ के लिये इतना झुकती है ?"

"लक्ष्य प्राप्त करने के लिये कुछ भी करना चातुर्य कहलाता है कुमार."

سنگھرش کے بعد

لیکھک—شری وشنو پربھاکر؛ پرکاشک—بھارتیہ گیان پیٹھ کاشی؛ صفحے—248؛ قیمت—تین روپئے؛ بھاشا—ہندی۔

شری وشنو پربھاکر کی 21 کہانیوں کا یہ سنگرہ ہے۔ ہمارے سماج کی آجکل کی دشا، اور اسکی دن بدن گرتی ہوئی حالت کی اور لیکھک نے اس سنگرہ میں اشارہ کیا ہے۔ ہمیں ان کہانیوں میں بناوٹ اور اول جلول کی باتیں کہیں نہیں ملتیں بلکہ ہردے کو چھوتی ہوئی ایک درد کی لکیر اور اپنے و اپنے سماج اور دیش کے پرتی کرتویہ پالن کی بھاونا ملتی ہے۔ اس سنگرہ میں ہم، کس زہریلے واتاورن میں پلے ہیں، کن کن پرستھتیوں کا ہمیں سامنا کرنا پڑا ہے اور اب ہم کن پرستھتیوں سے گذر رہے ہیں، ان سب کا اس سنگرہ میں ایک سچا چتر پاٹھکوں کو ملیگا۔ اس چیز کے ساتھ ہی ساتھ پاٹھک یہ بھی اچھی طرح سے جان جائینگے کہ ان پرستھتیوں میں ہمارا کیا کرتویہ تھا اور کیا ہم نے کیا۔ اس سنگرہ کی کہانیوں میں سماج کی سچی تصویر کے ساتھ ساتھ درد ہے، دکھ ہے، اور ہردے کو چھونے والی کسک ہے۔

لیکھک نے 'جیون دیپ' نامک کہانی میں ناری کے پریم کا کتنا اونچا آدرش رکھا ہے :—

"پرنے یدی پرنے ہے تو اسے سنسار کی کوئی بھی شکتی ومکھ نہیں کرسکتی۔ ناری جسے ایک بار پیار کرتی ہے اس کے ہاتھوں اپنا رکت الیچا جانے پر بھی اسے پیار کرتی رہتی ہے، پر وہ پیار ہونا چاہئے، پرنے ہونا چاہئے۔"

لیکھک نے دیش پریم کی بھاونا کی بہت اچھی پریبھاشا کی ہے :—

"چانڈ گری کے پدچاپ مٹتے مٹتے کمار نے چونا سے کہا، سنگھمترا سوارتھ کے لئے اتنا جھکتی ہے؟"

"لکش پراپت کرنے کے لئے کچھ بھی کرنا چاتریہ کہلاتا ہے کمار۔"

रास्ता बन्द कर देना और उनके भाग्य का फ़ैसला चंद कारख़ाने वालों या ब्योपारियों के हाथ में सौंप देना. इन कारख़ानेवालों और ब्योपारियों की दिलचस्पी आम जनता की हिफ़ाज़त करने में नहीं है बल्कि अपने निजी स्वार्थों की हिफ़ाज़त में. और इन स्वार्थों की हिफ़ाज़त में वह अपने देश की आज़ादी तक बेच डालने में नहीं चूकेंगे. इसलिये भारत सरकार को ख़बरदार होकर अभी से अमली क़दम उठाना चाहिये. इस सिलसिले में पहली चीज़ होनी चाहिये विदेशी पूंजी, ब्योपार और कम्पनियों को देश से बिदा करना और फिर अपने गांव गांव को—या कम से कम ज़िले ज़िले को—स्वावलम्बी बनाना. ग़ैर सरकारी दायरे में, संत विनोबा का भूदान यज्ञ आन्दोलन इसी तरफ़ बढ़ रहा है—उसकी कोशिश है सारी ज़मीन दोबारा बांटना, भूमिहीनता का रोग मिटा देना, भूमि और सम्पति या ज़मीन और जायदाद की मालिकी जनता के हाथों में सौंपना, गांवों को अपने पैरों पर खड़े करना, ग्राम राज क़ायम करना और जनता के अन्दर सत्याग्रह की ताक़त पैदा करना. यह आन्दोलन दिन दिन तेज़ी पकड़ रहा है और जनता का ध्यान अपनी तरफ़ खींच रहा है. हम यह शब्द दरभंगा ज़िला के एक गांव में बैठे लिख रहे हैं. हम इतना ही कहेंगे कि भारत सरकार को मुस्तैदी के साथ जनता पर विश्वास कर अपनी दौलत व हक़ व हकूमत में जनता के साथ शिरकत कर लेनी चाहिये. तभी देश मज़बूत बनेगा और तभी हम दुनिया की एक से एक मज़बूत फ़ौजों, दलों या टुकड़ियों का सामना कर सकेंगे.

इसलिये पाकिस्तान और अमरीका में जो फ़ौजी राज़ी नामा हुआ है उसे हम अपने लिये एक बरकत समझें. हम सबको, ख़ासकर हुक्कामों, ब्योपारियों, विद्वानों और नेताओं को चाहिये कि बहुत गहराई के साथ मामले पर विचार करें और सही रास्ता अपनायें. हमें अहिंसात्मक असहयोग के लासानी हथियार को पकड़ना चाहिये. फिर इसी अनोखे और अनूठे हथियार के मुताबिक़ अपने देश की आर्थिक राजनैतिक और समाजिक रचना करने में—और हिन्दुस्तान बनाने में—जुट जाना चाहिये.

4. 1. '54 —सुरेश रामभाई

راستہ بند کر دینا اور اُن کے بھاگیہ کا فیصلہ چند کارخانے والوں یا بیوپاریوں کے ہاتھ میں سونپ دینا ۔ ان کارخانےوالوں اور بیوپاریوں کی دلچسپی عام جنتا کی حفاظت کرنے میں نہیں ہے بلکہ اپنے نجی سوارتھوں کی حفاظت میں۔ اور ان سوارتھوں کی حفاظت میں وہ اپنے دیش کی آزادی تک بیچ ڈالنے میں نہیں چوکینگے۔ اس لئے بھارت سرکار کو خبردار ہو کر ابھی سے عملی قدم اُٹھانا چاہئے۔ اس سلسلے میں پہلی چیز ہونی چاہئے ودیشی پونجی' بیوپار اور کمپنیوں کو دیش سے بدا کرنا۔ اور پھر اپنے گاؤں گاؤں کو—یا کم سے کم ضلع ضلع کو—سواولمبی بنانا۔ غیر سرکاری دائرے میں' سنت ونوبا کا بھودان یگیہ آندولن اس طرف بڑھ رہا ہے—اسکی کوشش ہے ساری زمین دوبارہ بانٹنا' بھومی ہینتا کا روگ مٹا دینا' بھومی اور سمپتی یا زمین اور جائداد کی مالکی جنتا کے ہاتھوں میں سونپنا' گاؤں کو اپنے پیروں پر کھڑے کرنا' گرام راج قائم کرنا اور جنتا کے اندر ستیاگرہ کی طاقت پیدا کرنا ۔ یہ آندولن دن دن تیزی پکڑ رہا ہے اور جنتا کا دھیان اپنی طرف کھینچ رہا ہے ۔ ہم یہ شبد دربھنگا ضلع کے ایک گاؤں میں بیٹھے لکھ رہے ہیں ۔ ہم اتنا ہی کہینگے کہ بھارت سرکار کو مستعدی کے ساتھ جنتا پر وشواس کر اپنی دولت و حق و حکومت میں جنتا کے ساتھ شرکت کرلینی چاہئے۔ تبھی دیش مضبوط بنیگا اور تبھی ہم دنیا کی ایک سے ایک مضبوط فوجوں' دلوں یا ٹکڑیوں کا سامنا کرسکینگے ۔

اس لئے پاکستان اور امریکہ میں جو فوجی راضی نامہ ہوا ہے اُسے ہم اپنے لئے ایک برکت سمجھیں۔ ہم سب کو' خاصکر حکاموں' بیوپاریوں' ودوانوں اور نیتاؤں کو چاہئے کہ بہت گہرائی کے ساتھ معاملے پر وچار کریں اور صحیح راستہ اپنائیں ۔ ہمیں اہنساتمک اسہیوگ کے لاثانی ہتھیار کو پکڑنا چاہئے۔ پھر اسی انوکھے اور انوٹھے ہتھیار کے مطابق اپنے دیش کی آرتھک' راجنیتک اور ساماجک رچنا کرنے میں—اور ہندستان بنانے میں جٹ جانا چاہئے ۔

—سریش رام بھائی 4.1.'54.

आसानी से और कामयाबी के साथ इस हथियार का इस्तेमाल कर सकती है. ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि हम अपनी अर्थ नीति, निगाह और ढंग बदल दें. हमको बुनियादी स्वावलम्बन लाना होगा यानी ज़िन्दगी की ज़रूरत की बुनियादी चीज़ें जैसे खाना, कपड़ा और मकान में अपने पैरों पर खड़ा होना होगा. और खड़े होना होगा अपनी छोटी सी छोटी इकाई यानी गांव पर. इस इकाई को राजकाजी और आर्थिक सत्ता का अधिकार देना होगा. लेकिन आज तो हालत एकदम उलटी है जब कि सारी सत्ता नई दिल्ली में है.

हमारे प्रधानमंत्री ने सुझाव पेश किया है कि एक तीसरा दल या इलाक़ा' क़ायम किया जाये जो लड़ाई टंटे से अलग हो. सहज में यह नहीं समझ में आता कि अगर जग व्यापी लड़ाई छिड़ जाये तो कोई देश आज उस से अछूता कैसे रह सकेगा. ज़रा देर के लिये मान भी लें कि यह हो सकता है, तब सवाल यह है कि वह इलाक़ा क्योंकर बन सकेगा. इस में इतनी आर्थिक ताक़त होनी चाहिये कि बाहर के सहयोग के बिना टिक सके. इसके लिये उसे कुछ ताक़त या बल की ज़रूरत पड़ेगी ही. किसी भी तीसरे इलाक़े का बिला किसी बल के ज़िन्दा रहना उसी तरह नामुमकिन है जैसे सूरज मंडल का बिला सूरज के. 'ख़ुशक़िस्मती से वह ताक़त आज मौजूद है, वही अहिंसात्मक असहयोग की ताक़त जिसका ज़िकर ऊपर किया जा चुका है. हिन्दुस्तान इस पर अमल कर सकता है. हिन्दुस्तान इस के लिये तैयार है. सिर्फ़ हमारे शासकों को क़दम बढ़ाने की ज़रूरत है ताकि देश के आर्थिक व व्यापारी हितों को इस तरफ़ मोड़ सकें और आज हमारे यहां बड़ी बड़ी मशीनों की और पूंजी और अधिकार को थोड़े से हाथों में जमा कर देने की जो धारा बह रही है उसका रास्ता बदल कर उसे विकेन्द्रित स्वावलम्बन यानी जनता में सब अधिकारों को बांट देने और जनता को अपने पैरों पर खड़ा कर देने की राह पर लगा सकें. लेकिन अगर हम ऐटम बम, बड़ी मशीनरी और लम्बे चौड़े व्योपार पर आसरा रख कर तीसरा इलाक़ा खड़ा करने की कोशिश करेंगे तो फ़ेल होंगे. वह उसी तरह बेकार है जैसे नमक की खान से चांदी पैदा करने की कोशिश करना.

जिहाजा जैसे व्योपारी के लिये ईमानदारी की नीति फ़ायदे की नीति है वैसे ही आज हम हिन्दुस्तान वालों के लिये सब से फ़ायदे की नीति है अहिंसात्मक असहयोग और आर्थिक स्वावलम्बन. इस के ख़िलाफ़, अगर हम ज़ियादा हथियार, ज़ियादा केन्द्रित बन्दोबस्त और ज़ियादा मिल माल अपनाते हैं तो इसका मतलब होगा करोड़ों लोगों को कमज़ोर बनाना, उनकी हिफ़ाज़त का

آسانی سے اور کامیابی کے ساتھ اس ہتھیار کا استعمال کر سکتی ہے۔ ضرورت صرف اس بات کی ہے کہ ہم اپنی ارتھ نیتی، نگاہ اور ڈھنگ بدل دیں۔ ہم کو بنیادی سواولمبن لانا ہوگا یعنی زندگی کی ضرورت کی بنیادی چیزیں جیسے کھانا، کپڑا اور مکان میں اپنے پیروں پر کھڑا ہونا ہوگا۔ اور کھڑے ہونا ہوگا اپنی چھوٹی سے چھوٹی اکائی یعنی گاؤں پر۔ اس اکائی کو راجکاجی اور آرتھک ستا کا ادھیکار دینا ہوگا۔ لیکن آج تو حالت ایک دم الٹی ہے جبکہ ساری ستا نئی دلی میں ہے۔

ہمارے پردھان منتری نے سجھاؤ پیش کیا ہے کہ ایک 'تیسرا دل یا علاقہ' قائم کیا جائے جو لڑائی ٹنٹے سے الگ ہو۔ سہج میں یہ نہیں سمجھ میں آتا کہ اگر جگ ویاپی لڑائی چھڑ جائے تو کوئی دیش آج اس سے اچھوتا کیسے رہ سکے گا۔ ذرا دیر کے لئے مان بھی لیں کہ یہ ہو سکتا ہے، تب سوال یہ ہے کہ وہ علاقہ کیونکر بن سکے گا۔ اس میں اتنی آرتھک طاقت ہونی چاہئے تاکہ باہر کے سہیوگ کے بنا ٹک سکے۔ اس کے لئے اسے کچھ طاقت یا بل کی ضرورت پڑے گی ہی۔ کسی بھی تیسرے علاقے کا بلا کسی بل کے زندہ رہنا اسی طرح ناممکن ہے جیسے سورج منڈل کا بلا سورج کے۔ خوش قسمتی سے وہ طاقت آج موجود ہے، وہی اہنساتمک اسہیوگ کی طاقت جس کا ذکر اوپر کیا جا چکا ہے۔ ہندستان اس پر عمل کر سکتا ہے۔ ہندستان اس کے لئے تیار ہے۔ صرف ہمارے شاسکوں کو قدم بڑھانے کی ضرورت ہے تاکہ دیش کے آرتھک و بیوپاری ہتوں کو اس طرف موڑ سکیں۔ اور آج ہمارے یہاں بڑی بڑی مشینوں کی اور پونجی اور ادھیکار کو تھوڑے سے ہاتھوں میں جما کر دینے کی جو دھارا بہہ رہی ہے اس کا راستہ بدل کر اسے وکیندرت سواولمبن یعنی جنتا میں سب ادھیکاروں کو بانٹ دینے اور جنتا کو اپنے پیروں پر کھڑا کر دینے کی راہ پر لگا سکیں۔ لیکن اگر ہم ایٹم بم، بڑی مشینری اور لمبے چوڑے بیوپار پر آسرا رکھ کر تیسرا علاقہ کھڑا کرنے کی کوشش کریں گے تو فیل ہوں گے۔ وہ اسی طرح بیکار ہے جیسے نمک کی کھان سے چاندی پیدا کرنے کی کوشش کرنا۔

لہٰذا جیسے بیوپاری کے لئے ایمانداری کی نیتی فائدے کی نیتی ہے ویسے ہی آج ہم ہندستان والوں کے لئے سب سے فائدے کی نیتی ہے اہنساتمک اسہیوگ اور آرتھک سواولمبن۔ اس کے خلاف، اگر ہم زیادہ ہتھیار، زیادہ کیندرت بندوبست اور زیادہ مل مال اپناتے ہیں تو اس کا مطلب ہوگا کروڑوں لوگوں کو کمزور بنانا، ان کی حفاظت کا

रोक सकेगा अमरीका वालों को मनमानी राजकाजी या समाजी विचारों का प्रचार करने से और देश में फूट डालने से ?"

सीधी सी बात है कि किसी भी फ़ौजी घेरे या जमाव के मुक़ाबले ज़ियादा ख़तरनाक और तबाहकुन है हिन्दुस्तान के अन्दर अमरीका का आर्थिक दख़ल. अमरीकी हो या अंगरेज़ी, विदेशी असर हमारे देश में तेज़ी से पड़ रहा है क्योंकि विदेशी माल वही शिद्दत के साथ हमारे बाज़ारों और घरों में घुस रहा है जिस के कारन हमारी आर्थिक आज़ादी तमाशा बन रही है. अगर हम लाज़मी फ़ौजी भरती या इस रंग की दूसरी चीज़ें चालू करते हैं तो विदेशी आर्थिक हितों की जड़ें और भी मज़बूत हो जायेंगी. इसलिये फ़ौजी तरक़्क़ी या मिलिट्री ट्रेनिंग आदि के बेसोचे समझे बात करना हमें बन्द करना चाहिये. हमारे लिये उससे ज़ियादा हानिकारक कोई दूसरी चीज़ नहीं हो सकती.

इसलिये गहरी और बेलाग निगाह से देखने पर पता चलता है कि हिन्दुस्तान की हिफ़ाज़त के लिये हम को फ़ौज या हथियारों से ज़ियादा आस नहीं लगानी चाहिये. तब फिर हिफ़ाज़त की सूरत क्या होगी ? बस एक ही रास्ता है—आर्थिक स्वावलम्बन यानी माली मामलों में अपने पैरों पर खड़े होना, और अमन के दुश्मनों के साथ अहिंसात्मक असहयोग. आजकल के ज़माने में सारी जंगें बुनियादी तौर पर आर्थिक होती हैं और ब्योपारी स्वार्थों की कशमकश का नतीजा होती हैं. वैसे जंग व्यापी जंग की ख़बर किसी को नहीं होती. वह भूकम्प की तरह अचानक ही आती है. फिर भी इस से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अगर कोई विदेशी सरकार हम पर चढ़ाई करेगी तो हमारा कच्चा माल लेने के लिये और अपना पक्का माल हमारे गले में ठूंसने के लिये. अगर हम अपनी ज़रूरत का सामान ख़ुद बना कर स्वावलम्बी हो जायें, बाहर का तैयार माल ठुकरा सकें और अपने कच्चे माल को आप ही ठिकाने लगा सकें तो कोई भी दुश्मन हमारे यहां पैर नहीं जमा सकता. हो सकता है कि कुछ बम गिरा कर वह हमारे कुछ गांव ख़त्म कर दे. लेकिन अगर हम इस बात पर तैयार हैं कि विदेशी माल को हाथ नहीं लगायेंगे और बाहर वाले से कोई आर्थिक नाता नहीं रखेंगे तो उसका पैर जम ही नहीं सकता, उसे उल्टे पांव भागना पड़ेगा. आर्थिक बाईकाट और सिविल असहयोग के ज़रिये किसी भी ताक़त का या सभी ताक़तों का मुक़ाबला किया जा सकता है. इसका कुछ तजुरबा तो हमारे देश ने तब किया जब अंगरेज़ी राज के ख़िलाफ़ इस हथियार का, चाहे अधूरे ढंग से ही, इस्तेमाल किया. हिन्दुस्तान की आम जनता

روک سکے گا امریکہ والوں کو من مانی راجکاجی یا سماجی وچاروں کا پرچار کرنے سے اور دیش میں پھوٹ ڈالنے سے؟"

سیدھی سی بات ہے کہ کسی بھی فوجی گھیرے یا جماؤ کے مقابلے زیادہ خطرناک اور تباہ کن ہے ہندستان کے اندر امریکہ کا آرتھک دخل ۔ امریکی ہو یا انگریزی' ودیشی اثر ہمارے دیش میں تیزی سے پڑ رہا ہے کیونکہ ودیشی مال وہی شدت کے ساتھ ہمارے بازاروں اور گھروں میں گھس رہا ہے، جس کے کارن ہماری آرتھک آزادی تماشہ بن رہی ہے ۔ اگر ہم لازمی فوجی بھرتی یا اس رنگ کی دوسری چیزیں چالو کرتے ہیں تو ودیشی آرتھک ہتوں کی جڑیں اور بھی مضبوط ہو جائیں گی ۔ اس لئے فوجی ترقی یا ملٹری ٹریننگ آدی کے بے سوچے سمجھے بات کرنا ہمیں بند کرنا چاہئے ۔ ہمارے لئے اس سے زیادہ ہانی کارک کوئی دوسری چیز نہیں ہو سکتی ۔

اس لئے گہری اور بے لاگ نگاہ سے دیکھنے پر پتہ چلتا ہے کہ ہندستان کی حفاظت کے لئے ہم کو فوج یا ہتھیاروں سے زیادہ آس نہیں لگانی چاہئے ۔ تب پھر حفاظت کی صورت کیا ہوگی؟ بس ایک ہی راستہ ہے— آرتھک سواولمبن یعنی مالی معاملوں میں اپنے پیروں پر کھڑے ہونا' اور امن کے دشمنوں کے ساتھ اہنساتمک اسہیوگ ۔ آج کل کے زمانے میں ساری جنگیں بنیادی طور پر آرتھک ہوتی ہیں اور بیوپاری سوارتھوں کی کشمکش کا نتیجہ ہوتی ہیں ۔ ویسے جگ ویاپی جنگ کی خبر کسی کو نہیں ہوتی ۔ وہ بھونچال کی طرح اچانک ہی آتی ہے ۔ پھر بھی اس سے انکار نہیں کیا جا سکتا کہ اگر کوئی ودیشی سرکار ہم پر چڑھائی کرے گی تو ہمارا کچا مال لینے کے لئے اور اپنا پکا مال ہمارے گلے میں ٹھونسنے کے لئے ۔ اگر ہم اپنی ضرورت کا سامان خود بنا کر سواولمبی ہو جائیں' باہر کا تیار مال ٹھکرا سکیں اور اپنے کچے مال کو آپ ہی ٹھکانے لگا سکیں تو کوئی بھی دشمن ہمارے یہاں پیر نہیں جما سکتا ۔ ہو سکتا ہے کہ کچھ بم گرا کر وہ ہمارے کچھ گاؤں ختم کر دے ۔ لیکن اگر ہم اس بات پر تیار ہیں کہ ودیشی مال کو ہاتھ نہیں لگائیں گے اور باہر والے سے کوئی آرتھک ناتا نہیں رکھیں گے تو اس کا پیر جم ہی نہیں سکتا' اسے الٹے پاؤں بھاگنا پڑے گا ۔ آرتھک بائیکاٹ اور سول اسہیوگ کے ذریعہ کسی بھی طاقت کا یا سبھی طاقتوں کا مقابلہ کیا جا سکتا ہے ۔ اس کا کچھ تجربہ تو ہمارے دیش نے تب کیا جب انگریزی راج کے خلاف اس ہتھیار کا" چاہے ادھورے ڈھنگ سے ہی' استعمال کیا ۔ ہندستان کی عام جنتا

के बीच बन्दर का न्याय वाली बात होगी. हो सकता है कि रूस या चीन से हथियार मंगाये जायें. ऐसा करना शायद हमारी विदेश नीति के खिलाफ़ होगा और हो सकता है यह उसी जग व्यापी युद्ध के लिये ज़मीन तैयार करना हो. इस तरह हथियारों के बल से, चाहे बाहर के फ़ौज वाले हों चाहे घर के हों, हमारे देश का भला नहीं होने वाला है.

हमारे देश के अन्दर काफ़ी अमरीकी हैं जो देश भर में बिखरे हुए हैं और अमरीकी पूंजी भी लाखों करोड़ों रुपयों की तादाद में हिन्दुस्तान में आ गई है. सच पूछा जाये तो हम उन्हें अमरीका के आर्थिक अड्डों का मरकज़ कहेंगे. आखिर वह विकास योजनायें क्या हैं जो 'कम्यूनिटी प्रोजेक्ट' के नाम से देश में चल रही हैं, वह कल कारखाने क्या हैं जो हैं तो हिन्दुस्तानी पर जिनका इन्तज़ाम अमरीका के हाथ में है, वह कारोबार कम्पनियां क्या हैं जिनमें पाई पाई अमरीका की लगी है? क्या हम इनको व्योपार की शकल में फ़ौजी अड्डे नहीं कह सकते जिनसे छुटकारा पाना हमारे लिये सहल नहीं होगा. यह बात 'हिन्द अमरीकी तकनीकी समझौते, के मज़मून की दो क़लमों से साफ़ ज़ाहिर हो जाती है:—

1. अमरीकी सरकार की तरफ़ से जो प्रतिनिधि होगा वह और उसके कर्मचारी अमरीकी राजदूतों और उनके आदमियों की तरह समझे जायेंगे और जो हक़, सहूलियतें और छूट राजदूतों को है वही इनको रहेगा.

2. दोनों सरकारें इस तरह का दस्तूर जारी करेंगी कि अमरीकी सरकार जो प्रोग्राम चलाये उससे जो पैसा निकले उस पर हिन्दुस्तान की कोई जमाअत या सरकार किसी तरह की कार्रवाई, ज़ब्ती की या क़ानूनी नहीं कर सकेगी.

इस तरह की सुविधायें देकर जो अमरीकी असर हमारे देश में फैलता जा रहा है उससे बहुत दुख व चोट देश के समझदार लोगों को पहुंची है. उसका अन्दाज़ा स्वर्गीय किशोरलाल घनश्यामलाल मशरूवाला के इन शब्दों से लगाया जा सकता है:—

"यह समझौता दर असल एक परवाना है जिस के ज़रिये से हिन्दुस्तान के अन्दर अमरीका अपने को जमा सकता है, पहले एक व्योपारी के रूप में और बाद में हिन्दुस्तान के राजनीतिक मालिक के रूप में. अपना सारा शासनतंत्र भारत सरकार ने अमरीका के हवाले कर देने की हामी भर दी और उसकी इश्तहारबाज़ी करने को (या उसका ढोल पीटने को) राज़ी हो गई.......कौन

بیچ بندر کا نیائے والی بات ہوگی۔ ہوسکتا ہے کہ روس یا ین سے ہتھیار منگائے جائیں ۔ ایسا کرنا شاید ہماری یشی نیتی کے خلاف ہوگا اور ہوسکتا ہے یہ اسی ب ویاپی یدھ کے لئے زمین تیار کرنا ہو۔ اس طرح تھیاروں کے بل سے' چاہے باہر کے فوجی والے چاہے گھر کے ں' ہمارے دیش کا بھلا نہیں ہونے والا ہے۔

ہمارے دیش کے اندر امریکی ہیں جو دیش بھر ں بکھرے ہوئے ہیں اور امریکی پونجی بھی لاکھوں وڑوں روپیوں کی تعداد میں ہندستان میں آگئی ۔ سچ پوچھا جائے تو ہم انہیں امریکہ کے آرتھک اڈوں مرکز کہینگے ۔ آخر وہ وکاس یوجنائیں کیا ہیں ' کمیونٹی پروجیکٹ' کے نام سے دیش میں چل رہی ں' یہ کل کارخانے کیا ہیں جو ہیں تو ہندستانی جنکا انتظام امریکہ کے ہاتھ میں ہے' وہ کاروبار کمپنیاں ہیں جن میں پائی پائی امریکہ کی لگی ہے؟ کیا ہم نو بیوپار کی شکل میں فوجی اڈے نہیں کہ سکتے جن چھٹکارا پانا ہمارے لئے سہل نہیں ہوگا ۔ یہ بات 'ہند ریکی تکنیکی سمجھوتے' کے مضمون کی دو قلموں سے ف ظاہر ہو جاتی ہے :—

1. امریکی سرکار کی طرف سے جو پرتینیدھی ہوگا اور اس کے کرمچاری امریکی راج دوتوں اور ان کے آدمیوں طرح سمجھے جائینگے اور جو حق' سہولیتیں اور چھوٹ دوتوں کو ہے وہی انکو رہیگا ۔

2. دونوں سرکاریں اس طرح کا دستور جاری کرینگی امریکی سرکار جو پروگرام چلائے اس سے جو پیسہ نکلے ں پر ہندستان کی کوئی جماعت یا سرکار کسی طرح کی روائی' ضبطی کی یا قانونی نہیں کر سکیگی ۔

اس طرح کی سودھائیں دے کر جو امریکی اثر ہمارے یش میں پھیلتا جارہا ہے اس سے بہت دکھ و چوٹ دیش سمجھدار لوگوں کو پہونچی ہے ۔ اس کا اندازہ سورگیہ ور لال گھنشیام لال مشرو والا کے ان شبدوں سے لگایا جا کتا ہے :—

"یہ سمجھوتہ دراصل ایک پروانہ ہے جس کے ذریعہ سے ندستان کے اندر امریکہ اپنے کو جما سکتا ہے' پہلے ایک بیوپاری روپ میں اور بعد میں ہندستان کے راجنیتک مالک روپ میں ۔ اپنا سارا شاسن تنتر بھارت سرکار نے امریکہ حوالے کر دینے کی حامی بھر لی اور اس کی اشتہار ازی کرنے کو (یا اس کا ڈھول پیٹنے کو) راضی ہوگئی...کون

कि न मालूम किस समय भारत सरकार क्या रुख ले ले और किधर चली जाये. इसलिये उसे हिन्दुस्तान पर सोलह आने भरोसा नहीं हुआ और वह एक ऐसे देश की तलाश में रहा जो उसका हमेशा साथ दे, जब अमरीका दिन कहे तो वह भी दिन कहे और जब अमरीका रात कहे तो रात. क़ुदरती तौर पर हिन्दुस्तान के बाद अमरीका की निगाह पाकिस्तान पर गई और यहां उसका निशाना लग गया. पच्छिम में तुर्की, पूरब में जापान और बीच में पाकिस्तान को अपने चंगुल में रख कर अमरीका अब सारे एशिया पर जो चाहे करने की अपनी मुराद पूरी कर सकता है.

ज़ाहिर है कि इस फ़ौजी समझौते का सबसे ज़बरदस्त असर हिन्दुस्तान पर पड़ सकता है क्योंकि हिन्दुस्तान पूर्वी पाकिस्तान और पच्छिमी पाकिस्तान के बीच फंसा है. हिन्दुस्तान को छोड़कर दुनिया का शायद ही कोई देश ऐसा हो जिसके अगल बगल में एक ही विदेशी सरकार हो. पाकिस्तान के दोनों हिस्सों में अमरीकी फ़ौजी अड्डों के माने हैं हिन्दुस्तान की छाती पर फ़ौजी अड्डे क़ायम करना. यही कारन है कि इस समझौते से हालत संगीन और चिन्ताजनक बन गई है. अब सवाल यह है कि ऐसी हालत में हम लोग क्या करें. क्या हमारा यह फ़र्ज़ नहीं कि किसी भी मुमकिन हमले का मुक़ाबला करने के लिये मज़बूत बनें? ज़रूर है. लेकिन कैसे बनें? इस पर हमको ठंडे दिल से ग़ौर करना चाहिये और किसी भावना या जज़्बे के फेर में न आ कर सही रास्ता ढूंढना चाहिये. सीधी सी बात है कि हमारे सामने तीन सूरतें हैं:—
(1) हथियारों को अपनायें और अपने मुल्क में ज़ोरों से हथियार तैयार करें, (2) हथियार परदेश से मंगायें, (3) कोई तीसरा रास्ता निकालें.

इन तीन सूरतों में पहली—कि हम हथियार अपने देश में ही बनालें—इस वक़्त मुमकिन नहीं दीखती क्योंकि लड़ाई का बहुत कम सामान हमारे यहां बनता है. कुछ गोले बारूद ज़रूर बनते हैं मगर उनके नक़्शे वग़ैरा इंगलैण्ड से ही तैयार हो कर आते हैं बड़े बड़े जहाज़, टैन्कों और कलों की बात ही अलग है. सच्ची बात यह है कि हम ज़रूरत के लायक़ जंगी सरंजाम नहीं तैयार कर सकते. दूसरी सूरत है बाहर से मंगाने की—जैसा आज भी होता है. हमारी फ़ौज की ज़रूरतों का ज़ियादातर सामान और हथियार इंग्लैण्ड (या अमरीका) से आता है. कौन नहीं जानता कि आर्थिक और फ़ौजी मामलों में आज इंग्लैण्ड आज़ाद नहीं अमरीका का मोहताज है. इसलिये इंग्लैण्ड से हथियार ख़रीदने के मानी हैं अमरीका से ख़रीदना. इस तरह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों ही अमरीका से हथियार लेंगे तो दो बिल्लियों

کہ نہ معلوم کس سمے بھارت سرکار کیا رخ لے لے اور کدھر چلی جائے ۔ اس لئے اسے ہندستان پر سولہ آنے بھروسہ نہیں ہوا اور وہ ایک ایسے دیش کی تلاش میں رہا جو اس کا ہمیشہ ساتھ دے، جب امریکہ دن کہے تو وہ بھی دن کہے اور جب امریکہ رات کہے تو رات ۔ قدرتی طور پر ہندستان کے بعد امریکہ کی نگاہ پاکستان پر لگی اور یہاں اس کا نشانہ لگ گیا۔ پچھم میں ترکی، پورب میں جاپان اور بیچ میں پاکستان کو اپنے چنگل میں رکھکر امریکہ اب سارے ایشیا پر جو چاہے کرنے کی اپنی مراد پوری کرسکتا ہے ۔

ظاہر ہے کہ اس فوجی سمجھوتے کا سب میں زبردست اثر ہندستان پر پڑسکتا ہے کیونکہ ہندستان پوربی پاکستان اور پچھمی پاکستان کے بیچ پھنسا ہے ۔ ہندستان کو چھوڑ کر دنیا کا شاید ہی کوئی دیش ایسا ہو جس کے اگل بگل میں ایک ہی ودیشی سرکار ہو۔ پاکستان کے دونوں حصوں میں امریکی فوجی اڈوں کے معنی ہیں ہندستان کی چھاتی پر فوجی اڈے قایم کرنا۔ یہی کارن ہے کہ اس سمجھوتے سے حالت سنگین اور چنتاجنک بن گئی ہے ۔ اب سوال یہ ہے کہ ایسی حالت میں ہم لوگ کیا کریں ۔ کیا ہمارا یہ فرض نہیں کہ کسی بھی ممکن حملے کا مقابلہ کرنے کے لئے مضبوط بنیں ؟ ضرور ہے ۔ لیکن کیسے بنیں ؟ اس پر ہمکو ٹھنڈے دل سے غور کرنا چاہئے اور کسی بھاونا یا جذبے کے پھیر میں نہ آکر سہی راستہ ڈھونڈھنا چاہئے۔ سیدھی سی بات ہے کہ ہمارے سامنے تین صورتیں ہیں:—
(1) ہتھیاروں کو اپنائیں اور اپنے ملک میں زوروں سے ہتھیار تیار کریں، (2) ہتھیار پردیش سے منگائیں، (3) کوئی تیسرا راستہ نکالیں ۔

ان تین صورتوں میں پہلی—کہ ہم ضروری ہتھیار اپنے دیش میں ہی بنالیں—اس وقت ممکن نہیں دیکھتی کیونکہ لڑائی—بہت کم سامان ہمارے یہاں بنتا ہے ۔ کچھ گولے بارود ضرور بنتے ہیں مگر ان کے نقشے وغیرہ انگلینڈ سے ہی تیار ہوکر آتے ہیں۔ بڑے بڑے جہاز ٹینکوں اور کلوں کی تو بات ہی الگ ہے ۔ سچی بات یہ ہے کہ ہم ضرورت کے لائق جنگی سرانجام نہیں تیار کرسکتے ۔ دوسری صورت ہے باہر سے منگانے کی—جیسا آج بھی ہوتا ہے ۔ ہماری فوج کی ضرورتوں کا زیادہتر سامان اور ہتھیار انگلینڈ (یا امریکہ) سے آتا ہے ۔ کون نہیں جانتا کہ آرتھک اور فوجی معاملوں میں آج انگلینڈ آزاد نہیں، امریکہ کا محتاج ہے۔ اس لئے انگلینڈ سے ہتھیار خریدنے کے معنی ہیں امریکہ سے خریدنا۔ اس طرح ہندستان اور پاکستان دونوں ہی امریکہ سے ہتھیار لینگے تو دو بلیوں

पाक-अमरीकी फ़ौजी समझौता

पाकिस्तान और अमरीका के बीच जो फ़ौजी समझौता हुआ है उसने दुनिया के सभी आज़ादी-पसंद लोगों को सोच में डाल दिया है और ख़ासकर एशिया और अफ़्रीक़ा की आम जनता को. लेकिन यह समझौता या सुलहनामा कोई ऐसी अचानक घटना नहीं है. पिछले चार बरस से दोनों देशों की सरकारों के बीच जो बात चीत और लेना देना चल रहा है उसका यह नतीजा है. लेकिन अब जब यह दुनिया के सामने आ गया तो इसके मुख़तलिफ़ पहलुओं की गहराई में जाना ज़रूरी है.

इस समझौते से पैदा होने वाली दुनिया की हालत पर बहुत से अख़बारों ने रोशनी डाली है. उनमें सब में बेलाग और सही राय हमें मालूम पड़ी बग़दाद के अख़बार 'अल अहली' की. उसका कहना है :—

"इधर दुनिया के देश किसी गुट में शरीक न हो कर अलग रह रहे हैं. इस चीज़ ने अमरीका को काफ़ी परेशान कर रखा है क्योंकि उसके मनसूबों के पूरा होने में दिक़्क़त पैदा हो गई है......लेकिन अब अमरीका हिन्दुस्तान और पच्छिम एशिया के सामने यह समझौता पेश कर के यह देखना चाहता है कि हिन्दुस्तान अलग रहने की नीति पर कहां तक अमल कर सकता है."

हाल की ही बात है कि अमरीका ने चीन में अपना पैसा पानी की तरह बहाया और इन्तहाई कोशिश चीन को हथियाने की की. मगर उसकी उम्मीदों पर पानी फिर गया और केवल फ़ार्मूसा पर उसे सब्र करना पड़ा. गोकि जापान, फ़ार्मूसा और फ़िलीपाइन को ले कर अमरीका को काफ़ी लम्बा इलाक़ा अपनी मनमानी करने के लिये मिल जाता है लेकिन रूस और चीन की मोटी दीवार सामने खड़ी रहने से वह बहुत कुछ मजबूर हो गया. इसलिये अमरीका ने दूसरी तरफ़ बढ़ने की ठानी. इन्डो-चीन में कोशिश की लेकिन वहां पर जो फ़्रांसीसी भाई है वह नादान दोस्त जैसा साबित हो रहा है. आगे बढ़ने पर अंगरेज़ी रियासतें मिलती हैं जिनमें अमरीका अपनी मनमानी कर ही सकता है. इसके बाद नम्बर आया हिन्दुस्तान का. यहां पर अमरीका की तबियत के मुताबिक़ कुछ काम हुआ—एक 'तकनीकी समझौता' हुआ, 'कम्यूनिटी प्रोजेक्ट' खोले गए और अमरीकी पूंजी व माहिरों को पूरी छूट दे दी गई. लेकिन अमरीका को पूरा सन्तोष नहीं मिला क्योंकि राजनीतिक मामलों में भारत सरकार की राय कभी अमरीका से पटती थी, कभी नहीं और अमरीका को हमेशा ही खटका बना रहता

پاک امریکی فوجی سمجھوتہ

پاکستان اور امریکہ کے بیچ جو فوجی سمجھوتہ ہوا ہے اس نے دنیا کے سبھی آزادی پسند لوگوں کو سوچ میں ڈال دیا ہے اور خاصکر ایشیا اور افریقہ کی عام جنتا کو. لیکن یہ سمجھوتہ یا صلح‌نامہ کوئی ایسی اچانک گھٹنا نہیں ہے. پچھلے چار برس سے دونوں دیشوں کی سرکاروں کے بیچ جو بات چیت اور لینا دینا چل رہا ہے اس کا یہ نتیجہ ہے. لیکن اب جب یہ دنیا کے سامنے آگیا تو اس کے مختلف پہلوؤں کی گہرائی میں جانا ضروری ہے.

اس سمجھوتے سے پیدا ہونے والی دنیا کی حالت پر بہت سے اخباروں نے روشنی ڈالی ہے. ان میں سب میں بےلاگ اور سہی رائے ہمیں معلوم پڑی بغداد کے اخبار 'ال اہلی' کی. اس کا کہنا ہے :—

"ادھر دنیا کے دیش کسی گٹ میں شریک نہ ہوکر الگ رہ رہے ہیں. اس چیز نے امریکہ کو کافی پریشان کر رکھا ہے کیونکہ اس کے منصوبوں کے پورا ہونے میں دقت پیدا ہوگئی ہے......لیکن اب امریکہ ہندستان اور پچھم ایشیا کے سامنے یہ سمجھوتہ پیش کرکے یہ دیکھنا چاہتا ہے کہ ہندستان الگ رہنے کی نیتی پر کہاں تک عمل کرسکتا ہے."

حال ہی کی بات ہے کہ امریکہ نے چین میں اپنا پیسہ پانی کی طرح بہایا اور انتہائی کوشش چین کو ہتھیانے کی کی. مگر اسکی امیدوں پر پانی پھر گیا اور کیول فارموسا پر اسے صبر کرنا پڑا. گو کہ جاپان' فارموسا اور فلی پائن کو لےکر امریکہ کو کافی لمبا علاقہ اپنی من‌مانی کرنے کے لئے مل جاتا ہے لیکن روس اور چین کی موٹی دیوار سامنے کھڑی رہنے سے وہ بہت کچھ مجبور ہوگیا. اس لئے امریکہ نے دوسری طرف بڑھنے کی ٹھانی. انڈو چین میں کوشش کی لیکن وہاں پر جو فرانسیسی بھائی ہے وہ نادان دوست جیسا ثابت ہو رہا ہے. آگے بڑھنے پر انگریزی ریاستیں ملتی ہیں جن میں امریکہ اپنی من‌مانی کر ہی سکتا ہے. اس کے بعد نمبر آیا ہندستان کا. یہاں پر امریکہ کی طبیعت کے مطابق کچھ کام ہوا—ایک 'تکنیکی سمجھوتہ' ہوا' 'کمیونٹی پروجیکٹ' کھولے گئے اور امریکی پونجی و ماہروں کو پوری چھوٹ دے دی گئی' لیکن امریکہ کو پورا سنتوش نہیں ملا کیونکہ راجنیتک معاملوں میں بھارت سرکار کی رائے کبھی امریکہ سے پٹتی تھی' کبھی نہیں اور امریکہ کو ہمیشہ ہی کھٹکا بنا رہتا

भी नहीं रह गया है. ट्रेनिंग पाए हुए अध्यापकों की सब जगह मांग है. अकेले प्राइमरी स्कूलों की तादाद चीन में पांच लाख से ऊपर है जिनमें लगभग चार करोड़ बच्चे शिक्षा पाते हैं. इन के अलावा साढ़े तीन करोड़ बालिग़, जिनमें अधिकतर किसान हैं, थोड़े थोड़े दिनों के स्कूलों में पढ़ते हैं. बालिग़ों की तालीम का यह काम बराबर फैलता जा रहा है. सारे राष्ट्र का जीवन एक नये जाग्रति की उमंगों से भरा हुआ है. जहां लोग इस तरह काम पर जुट जायें वहां बेरोज़गारी कैसे रह सकती है. नये चीन के स्कूलों में यह बात देखते ही समझ में आ जाती है.

जब तक किसी राष्ट्र के नौजवानों को इतनी सावधानी से रक्खा और सिखाया पढ़ाया जाता रहे तब तक उस राष्ट्र का भविष्य उज्जवल ही उज्जवल है चाहे उसकी राह में कितनी भी मुसीबतें, कठिनाइयां या रुकावटें क्यों न आवें. हम सब की यह इच्छा और भगवान से प्रार्थना है कि नया चीन मानव समाज की सेवा और उन्नति में पूरा पूरा हिस्सा ले सके.

[आल इंडिया रेडियो की कृपा से.]

हिन्दी की नई किताब

गंगा से गोमती तक

(मुजीब रिज़वी)

इस किताब में मुजीब रिज़वी की तेरह कहानियां शामिल हैं. इन में से बहुत सी कहानियां 'नया हिन्द' के पाठक पढ़ चुके हैं और उन कहानियों के रस से अच्छी तरह परिचित हैं.

★ इन कहानियों में आजकल की समाजी उलझनों को बेनक़ाब किया गया है.

★ इन कहानियों में घटनाओं के साथ-साथ उस हाथ की झलक दिखाई गई है जो इन घटनाओं के पीछे काम करता है.

★ इन कहानियों में जीवन है, सत्य है, चेतना है, इसीलिये मन मोहक असर है.

★ इस संग्रह में किसान, मज़दूर, मध्यमवर्ग सब के जीवन को चित्रित करने वाली कहानियां शामिल हैं.

★ इस संग्रह पर हिन्दी के बड़े-बड़े लेखकों ने अपनी राय दी है. वह रायें भी इस संग्रह के साथ पढ़िये.

190 सफ़े की किताब, सुन्दर जिल्द, दाम केवल दो रुपया.

मिलने का पता— मैनेजर, 'नया हिन्द'
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

بھی نہیں رہ گیا ہے. ٹریننگ پائے ہوئے ادھیاپکوں کی سب جگہ مانگ ہے . اکیلے پرائمری اسکولوں کی تعداد چین میں پانچ لاکھ سے اوپر ہے جن میں لگ بھگ چار کروڑ بچے شکشا پاتے ہیں . ان کے علاوہ ساڑھے تین کروڑ بالغ' جن میں ادھکتر کسان ہیں' تھوڑے تھوڑے دنوں کے اسکولوں میں پڑھتے ہیں . بالغوں کی تعلیم کا یہ کام برابر پھیلتا جا رہا ہے . سارے راشٹر کا جیون ایک نئی جاگرتی کی امنگوں سے بھرا ہوا ہے . جہاں لوگ اس طرح کام پر جٹ جائیں وہاں بےروزگاری کیسے رہ سکتی ہے . نئے چین کے اسکولوں میں یہ بات دیکھتے ہی سمجھ میں آجاتی ہے .

جب تک کسی راشٹر کے نوجوانوں کو اتنی ساودھانی سے رکھا اور سکھایا پڑھایا جاتا رہے تب تک اس راشٹر کا بھوشیہ اجول ہی اجول ہے چاہے اسکی راہ میں کتنی ہی مصیبتیں' کٹھنائیاں یا رکاوٹیں کیوں نہ آویں . ہم سب کی یہ اچھا اور بھگوان سے پرارتھنا ہے کہ نیا چین مانو سماج کی سیوا اور انتی میں پورا پورا حصہ لے سکے .

[آل انڈیا ریڈیو کی کرپا سے.]

ہندی کی نئی کتاب

گنگا سے گومتی تک

(مجیب رضوی)

اس کتاب میں مجیب رضوی کی تیرہ کہانیاں شامل ہیں . ان میں سے بہت سی کہانیاں ' نیا ہند ' کے پاٹھک پڑھ چکے ہیں اور ان کہانیوں کے رس سے اچھی طرح پریچت ہیں .

★ ان کہانیوں میں آج کل کی سماجی الجھنوں کو بے نقاب کیا گیا ہے .

★ ان کہانیوں میں گھٹناؤں کے ساتھ ساتھ اس ہاتھ کی جھلک دکھائی گئی ہے جو ان گھٹناؤں کے پیچھے کام کرتا ہے .

★ ان کہانیوں میں جیون ہے' ستیہ ہے' چیتنا ہے' اسی لئے من موہک اثر ہے .

★ اس سنگرہ میں کسان' مزدور' مدھیم ورگ سب کے جیون کو چترت کرنے والی کہانیاں شامل ہیں.

★ اس سنگرہ پر ہندی کے بڑے بڑے لیکھکوں نے اپنی رائے دی ہے. وہ رائیں بھی اس سنگرہ کے ساتھ پڑھئے.

190 صفحے کی کتاب' سندر جلد' دام کیول دو روپیہ.

ملنے کا پتہ— منیجر' 'نیا ہند'
145 مٹھی گنج' الہ آباد

हिस्सा हैं. राजधानी-तरीक़ों और संस्थाओं का उन्हें पूरा पूरा तजुरबा कराया जाता है. नये चीन के विद्यार्थियों के इन सब कामों को देख कर मुझे सत्याग्रह आन्दोलन के दिनों के अपने देश के राष्ट्रीय विद्यापीठों के विद्यार्थियों की उस ज़माने की दिनचर्या की बात याद आ जाती थी, वही क़ौमी जोश, वही लगन, वही सेवा का भाव और वही तरह तरह के रचनात्मक काम.

नये चीन में विद्यार्थियों के माता पिता या संरक्षकों की भी अलग सभाएं हैं. यह सभाएं अपने बच्चों या लड़के लड़कियों की उन्नति और भलाई की तरफ़ बराबर निगाह रखती हैं. विद्यार्थियों के संरक्षक और स्कूल कालिजों के अध्यापक बराबर एक दूसरे से मिलते रहते हैं, और साथ बैठ कर सलाहें करते रहते हैं. इसी से लोगों को अपने लड़के और लड़कियों की तालीम और तरबियत का बराबर पता चलता रहता

नर्सरी स्कूलों और किंडर गार्टन स्कूलों में तरह तरह के खिलौने, तस्वीरों की किताबें, आराम करने के कमरे और बच्चों के खेल कूद, नाच रंग का सब सामान भरा रहता है. बच्चों को गाना, बजाना, नाचना और लय से पढ़ना सिखाया जाता है. उन्हें गमलों या ज़मीन में फूलदार दरख़्त लगाने का शौक़ दिलाया जाता है. तस्वीरें बनाने का पूरा सामान भी हर बच्चे के पास अलग रहता है और हर बच्चा इसे ख़ूब काम में लाता है.

सब प्राइमरी स्कूलों में बड़ी अच्छी लाइब्रेरियां होती हैं. इन लाइब्रेरियों में बड़ी सीधी सादी किताबें होती हैं. हर प्राइमरी स्कूल में खेल के काफ़ी मैदान होते हैं. फूल फुलवाड़ी लगाने के लिये ज़मीनें होती हैं, और बच्चों को दरख़्तों की पौध लगाना और रुपा लगाना भी सिखाया जाता है. बच्चों को अपनी अपनी क़ौमी पोशाकें पहन कर सीधे सादे नाटक और ड्रामा करना भी सिखाया जाता है. इस सम्बन्ध में चीन की एक संस्था जिसका नाम 'आल चायना फ़ैडरेशन आफ़ लिटरेचर ऐन्ड आर्ट सरकिल्स' है बहुत मदद करती है. यह संस्था देश भर के लोगों में शुरू बचपन से ही सुख, ख़ुशी, कला और कल्चर पैदा करने की ख़ूब कोशिश करती है. बच्चों की एक और संस्था होती है जिसे 'यंग पायनियर्स' (कुछ कुछ हमारे स्काउट से मिलती हुई) कहते हैं. इस संस्था में सधाये हुए देश भक्त लोग बच्चों को मिल कर काम करना और अच्छे अच्छे समाज सेवा के काम करना सिखाते हैं. नये चीन के यह "यंग पायनियर्स" देखने की चीज़ हैं.

नये चीन में तालीम का मैदान इतना बढ़ गया है कि आज वहां के पढ़े लिखों में बेकारी या बेरोज़गारी का नाम

حصہ لیں ۔ راج کاجی طریقوں اور سنستھاؤں کا انہیں پورا پورا تجربہ کرایا جاتا ہے ۔ نئے چین کے ودیارتھیوں کے ان سب کاموں کو دیکھکر مجھے ستیاگرہ آندولن کے دنوں کے اپنے دیش کے راشٹریہ ودیا پیٹھوں کے ودیارتھیوں کی اس زمانے کی دن چریا کی بات یاد آ جاتی تھی' وہی قومی جوش' وہی لگن' وہی سیوا کا بھاؤ اور وہی طرح طرح کے رچناتمک کام ۔

نئے چین میں ودیارتھیوں کے ماتا پتا یا سنرکشکوں کی بھی الگ سبھائیں ہیں ۔ یہ سبھائیں اپنے بچوں یا لڑکے لڑکیوں کی اُنّتی اور بھلائی کی طرف برابر نگاہ رکھتی ہیں ۔ ودیارتھیوں کے سنرکشک اور اسکول کالجوں کے ادھیاپک برابر ایک دوسرے سے ملتے رہتے ہیں' اور ساتھ بیٹھکر صلاحیں کرتے رہتے ہیں ۔ اس سے لوگوں کو اپنے لڑکے اور لڑکیوں کی تعلیم اور تربیت کا برابر پتہ چلتا رہتا ہے ۔

نرسری اسکولوں اور کنڈر گارٹن اسکولوں میں طرح طرح کے کھلونے' تصویروں کی کتابیں' آرام کرنے کے کمرے اور بچوں کے کھیل کود' ناچ رنگ کا سب سامان بھرا رہتا ہے ۔ بچوں کو گانا' بجانا' ناچنا اور لے سے پڑھنا سکھایا جاتا ہے ۔ انہیں گملوں یا زمین میں پھولدار درخت لگانے کا شوق دلایا جاتا ہے ۔ تصویریں بنانے کا پورا سامان بھی ہر بچے کے پاس الگ الگ رہتا ہے اور ہر بچہ اسے خوب کام میں لاتا ہے ۔

سب پرائمری اسکولوں میں بڑی اچھی لائبریریاں ہوتی ہیں۔ ان لائبریریوں میں بڑی سیدھی سادی کتابیں ہوتی ہیں۔ ہر پرائمری اسکول میں کھیل کے کافی میدان ہوتے ہیں۔ پھول پھلواری لگانے کے لئے زمینیں ہوتی ہیں' اور بچوں کو درختوں کی پودہ لگانا اور روپا لگانا بھی سکھایا جاتا ہے ۔ بچوں کو اپنی اپنی قومی پوشاکیں پہن کر سیدھے سادے ناٹک اور ڈراما کرنا بھی سکھایا جاتا ہے ۔ اس سمبندھ میں چین کی ایک سنستھا جس کا نام 'آل چائنا فیڈریشن آف لٹریچر اینڈ آرٹ سرکلس' ہے بہت مدد کرتی ہے۔ یہ سنستھا دیش بھر کے لوگوں میں شروع بچپن سے ہی سکھ' خوشی' کلا اور کلچر پیدا کرنے کی خوب کوشش کرتی ہے۔ بچوں کی ایک اور سنستھا ہوتی ہے جسے "ینگ پائنیرس" (کچھ کچھ ہمارے اسکاوٹ سے ملتی ہوئی) کہتے ہیں ۔ اس سنستھا میں سدھائے ہوئے دیش بھگت لوگ بچوں کو مل کر کام کرنا اور اچھے اچھے سماج سیوا کے کام کرنا سکھاتے ہیں ۔ نئے چین کے یہ "ینگ پائنیرس" دیکھنے کی ہی چیز ہیں۔

نئے چین میں تعلیم کا میدان اتنا بڑھ گیا ہے کہ آج وہاں کے پڑھے لکھوں میں بیکاری یا بیروزگاری کا نام

अखबारों, सिनेमा और थेटरों से भी इस नई तालीम में पूरी मदद ली जाती है. सिनेमा और थेटरों में देश की पुरानी अच्छी अच्छी परम्पराओं को भी सामने रखा जाता है ताकि सारी जनता उन से फ़ायदा उठा सके और ऊपर उठ सके.

नये चीन का आदर्श यह है कि हर दस विद्यार्थियों पीछे एक अध्यापक या प्रोफ़ैसर होना चाहिये. पर अभी तक वह सब जगह यह कर नहीं पाए हैं. वह इस तरह की नई संस्थाएं भी खोल रहे हैं जहां लड़के और लड़कियों को साथ साथ तालीम दे सकें.

स्कूलों और कालिजों की पुरानी किताबों को वह इस तरह से दोहरा और सुधार रहे हैं जिस से नये आदर्श देश में फैल सकें और पढ़ाई की किताबों में वह ही बातें हों जो नये आदर्शों से मिलती हों. नये चीन के विद्यार्थियों में इस बात के लिये बेहद जोश है कि वह नये सिरे से अपने देश की रचना करें. उनके जोश और उत्साह की कोई हद नहीं. अपने नेताओं में उनके अन्दर गहरी और अटूट श्रद्धा है. उनकी वह श्रद्धा बारबार और तरह तरह से ज़ाहिर होती थी. विद्यार्थी अपने अध्यापकों की बड़ी इज़्ज़त करते हैं. और उनसे बड़ी बड़ी आशाएं रखते हैं. साफ़ मालूम होता था कि विद्यार्थियों और अध्यापकों में कितना गहरा प्रेम और मिलाप है.

अधिकतर विद्यार्थी बोर्डिंग हाउसों में एक साथ रहते हैं. इन नई इमारतों में विद्यार्थियों के सोने की जगह एक दूसरे के ऊपर इस तरह बनी होती है जिस तरह फ़ौजी रेलगाड़ियों में एक दूसरे के ऊपर मुसाफ़िरों की सोने की जगहें बनी होती हैं. बोर्डिंग हाउसों की जितनी मांग है उतनी इमारतें अभी नहीं बन पाई हैं. इसलिये हर इमारत में भीड़ काफ़ी रहती है. यह इमारतें बड़ी सादा होती हैं, लेकिन बड़ी साफ़ सुथरी और हर जगह सब सामान बहुत तरतीब से रखा हुआ और सब ज़रूरी सामान मौजूद.

पढ़ाई की फ़ीस इतने सेर चावल के रूप में ली जाती है. मोटे तौर पर जूनियर मिडिल स्कूल के विद्यार्थी छै महीने के पूरे टर्म को पढ़ाई के लिये लगभग आठ या नौ रुपया फ़ीस देते हैं, और सीनियर मिडिल स्कूल के विद्यार्थी इसी पूरी छमाही के लिये दस या बारह रुपये. इस तरह फ़ीस क़रीब क़रीब नाम के लिये होती है. बहुत से विद्यार्थियों की यानी क़रीब तीस फ़ी सदी को फ़ीस बिलकुल माफ़ रहती है.

अपनी मामूली पढ़ाई के अलावा विद्यार्थियों को इस बात का भी खूब मौक़ा दिया जाता है कि वह देश के ख़ास ख़ास कामों, यहां तक कि राजकाजी कामों में भी, खूब

اخباروں، سنیما اور تھیٹروں سے بھی اس نئی تعلیم میں پوری مدد لی جاتی ہے. سنیما اور تھیٹروں میں دیش کی پرانی اچھی اچھی پرمپراؤں کو بھی سامنے رکھا جاتا ہے تاکہ ساری جنتا اُن سے فائدہ اُٹھا سکے اور اوپر اُٹھ سکے.

نئے چین کا آدرش یہ ہے کہ ہر دس ودیارتھیوں پیچھے ایک ادھیاپک یا پروفیسر ہونا چاہئے. پر ابھی تک وہ سب جگہ یہ کر نہیں پائے ہیں. وہ اسطرح کی نئی سنستھائیں بھی کھول رہے ہیں جہاں لڑکے اور لڑکیوں کو ساتھ ساتھ تعلیم دے سکیں.

اسکولوں اور کالجوں کی پرانی کتابوں کو وہ اسطرح سے دوہرا اور سدھار رہے ہیں جس سے نئے آدرش دیش میں پھیل سکیں اور پڑھائی کی کتابوں میں وہ ہی باتیں ہوں جو نئے آدرشوں سے ملتی ہوں. نئے چین کے ودیارتھیوں میں اس بات کے لئے بے حد جوش ہے کہ وہ نئے سرے سے اپنے دیش کی رچنا کریں. اُن کے جوش اور اتساہ کی کوئی حد نہیں. اپنے نیتاؤں میں اُن کے اندر گہری اور اٹوٹ شردھا ہے. انکی وہ شردھا بار بار اور طرح طرح سے ظاہر ہوتی تھی. ودیارتھی اپنے ادھیاپکوں کی بڑی عزت کرتے ہیں اور اُن سے بڑی بڑی آشائیں رکھتے ہیں. صاف معلوم ہوتا تھا کہ ودیارتھیوں اور ادھیاپکوں میں کتنا گہرا پریم اور میل ملاپ ہے.

ادھکتر ودیارتھی بورڈنگ ہاؤسوں میں ایک ساتھ رہتے ہیں. ان نئی عمارتوں میں ودیارتھیوں کے سونے کی جگہ ایک دوسرے کے اوپر اس طرح بنی ہوتی ہیں جس طرح فوجی ریل گاڑیوں میں ایک دوسرے کے اوپر مسافروں کی سونے کی جگہیں بنی ہوتی ہیں. بورڈنگ ہاؤسوں کی جتنی مانگ ہے اُتنی عمارتیں ابھی نہیں بن پائی ہیں. اس لئے ہر عمارت میں بھیڑ کافی رہتی ہے. یہ عمارتیں بڑی سادہ ہوتی ہیں، لیکن بڑی صاف ستھری اور ہر جگہ سب سامان بہت ترتیب سے رکھا ہوا اور سب ضروری سامان موجود.

پڑھائی کی فیس اتنے سیر چاول کے روپ میں لی جاتی ہے. موٹے طور پر جونیر مڈل اسکول کے ودیارتھی چھ مہینے کے پورے ٹرم کی پڑھائی کے لئے لگ بھگ آٹھ یا نو روپیہ فیس دیتے ہیں، اور سینیر مڈل اسکول کے ودیارتھی اسی پوری چھ ماہی کے لئے دس یا بارہ روپئے. اس طرح فیس قریب قریب نام کے لئے ہوتی ہے. بہت سے ودیارتھیوں کو یعنی قریب تیس فی صدی کو فیس بالکل معاف رہتی ہے.

اپنی معمولی پڑھائی کے علاوہ ودیارتھیوں کو اس بات کا خوب موقع دیا جاتا ہے کہ وہ دیش کے خاص خاص کاموں، یہاں تک کہ راج کاجی کاموں میں بھی، خوب

हिस्सा हैं. राजनैतिक तरीक़ों और संस्थाओं का उन्हें पूरा पूरा तजुरबा कराया जाता है. नये चीन के विद्यार्थियों के इन सब कामों को देख कर मुझे सत्याग्रह आन्दोलन के दिनों के अपने देश के राष्ट्रीय विद्यापीठों के विद्यार्थियों की उस ज़माने की दिनचर्या की बात याद आ जाती थी, वही क़ौमी जोश, वही लगन, वही सेवा का भाव और वही तरह तरह के रचनात्मक काम.

नये चीन में विद्यार्थियों के माता पिता या संरक्षकों की भी अलग सभाएं हैं. यह सभाएं अपने बच्चों या लड़के लड़कियों की उन्नति और भलाई की तरफ़ बराबर निगाह रखती हैं. विद्यार्थियों के संरक्षक और स्कूल कालिजों के अध्यापक बराबर एक दूसरे से मिलते रहते हैं, और साथ बैठ कर सलाहें करते रहते हैं. इसी से लोगों को अपने लड़के और लड़कियों की तालीम और तरबियत का बराबर पता चलता रहता

नर्सरी स्कूलों और किंडर गार्टन स्कूलों में तरह तरह के खिलौने, तस्वीरों की किताबें, आराम करने के कमरे और बच्चों के खेल कूद, नाच रंग का सब सामान भरा रहता है. बच्चों को गाना, बजाना, नाचना और लय से पढ़ना सिखाया जाता है. उन्हें गमलों या ज़मीन में फूलदार दरख़्त लगाने का शौक़ दिलाया जाता है. तस्वीरें बनाने का पूरा सामान भी हर बच्चे के पास अलग रहता है और हर बच्चा इसे ख़ूब काम में लाता है.

सब प्राइमरी स्कूलों में बड़ी अच्छी लाइब्रेरियां होती हैं. इन लाइब्रेरियों में बड़ी सीधी सादी किताबें होती हैं. हर प्राइमरी स्कूल में खेल के काफ़ी मैदान होते हैं. फूल फुलवाड़ी लगाने के लिये ज़मीनें होती हैं, और बच्चों को दरख़्तों की पौध लगाना और रूपा लगाना भी सिखाया जाता है. बच्चों को अपनी अपनी क़ौमी पोशाकें पहन कर सीधे सादे नाटक और ड्रामा करना भी सिखाया जाता है. इस सम्बन्ध में चीन की एक संस्था जिसका नाम 'आल चायना फ़ेडरेशन आफ़ लिटरेचर ऐन्ड आर्ट सरकिल्स' है बहुत मदद करती है. यह संस्था देश भर के लोगों में शुरू बचपन से ही सुख, ख़ुशी, कला और कलचर पैदा करने की ख़ूब कोशिश करती है. बच्चों की एक और संस्था होती है जिसे 'यंग पायनियर्स' (कुछ कुछ हमारे स्काउट से मिलती हुई) कहते हैं. इस संस्था में सधाये हुए देश भक्त लोग बच्चों को मिल कर काम करना और अच्छे अच्छे समाज सेवा के काम करना सिखाते हैं. नये चीन के यह "यंग पायनियर्स" देखने की चीज़ हैं.

नये चीन में तालीम का मैदान इतना बढ़ गया है कि आज वहां के पढ़े लिखों में बेकारी या बेरोज़गारी का नाम

حصہ ہیں ۔ راج کاجی طریقوں اور سنستھاؤں کا انہیں پورا پورا تجربہ کرایا جاتا ہے ۔ نئے چین کے ودیارتھیوں کے ان سب کاموں کو دیکھکر مجھے ستیاگرہ آندولن کے دنوں کے اپنے دیش کے راشٹریہ ودیا پیٹھوں کے ودیارتھیوں کی اس زمانے کی دن چریا کی بات یاد آ جاتی تھی، وہی قومی جوش، وہی لگن، وہی سیوا کا بھاؤ اور وہی طرح طرح کے رچناتمک کام ۔

نئے چین میں ودیارتھیوں کے ماتا پتا یا سنرکشکوں کی بھی الگ سبھائیں ہیں ۔ یہ سبھائیں اپنے بچوں یا لڑکے لڑکیوں کی اُنتی اور بھلائی کی طرف برابر نگاہ رکھتی ہیں ۔ ودیارتھیوں کے سنرکشک اور اسکول کالجوں کے ادھیاپک برابر ایک دوسرے سے ملتے رہتے ہیں، اور ساتھ بیٹھکر صلاحیں کرتے رہتے ہیں ۔ اس سے لوگوں کو اپنے لڑکے اور لڑکیوں کی تعلیم اور تربیت کا برابر پتہ چلتا رہتا ہے ۔

نرسری اسکولوں اور کنڈر گارٹن اسکولوں میں طرح طرح کے کھلونے، تصویروں کی کتابیں، آرام کرنے کے کمرے اور بچوں کے کھیل کود، ناچ رنگ کا سب سامان بھرا رہتا ہے ۔ بچوں کو گانا، بجانا، ناچنا اور لے سے پڑھنا سکھایا جاتا ہے ۔ انہیں گملوں یا زمین میں پھولدار درخت لگانے کا شوق دلایا جاتا ہے ۔ تصویریں بنانے کا پورا سامان بھی ہر بچے کے پاس الگ الگ رہتا ہے اور ہر بچہ اسے خوب کام میں لاتا ہے ۔

سب پرائمری اسکولوں میں بڑی اچھی لائبریریاں ہوتی ہیں۔ ان لائبریریوں میں بڑی سیدھی سادی کتابیں ہوتی ہیں۔ ہر پرائمری اسکول میں کھیل کے کافی میدان ہوتے ہیں۔ پھول پھلواری لگانے کے لئے زمینیں ہوتی ہیں، اور بچوں کو درختوں کی پودھ لگانا اور روپا لگانا بھی سکھایا جاتا ہے ۔ بچوں کو اپنی اپنی قومی پوشاکیں پہن کر سیدھے سادے ناٹک اور ڈراما کرنا بھی سکھایا جاتا ہے ۔ اس سمبندھ میں چین کی ایک سنستھا جس کا نام 'آل چائنا فیڈریشن آف لٹریچر اینڈ آرٹ سرکلس' ہے بہت مدد کرتی ہے۔ یہ سنستھا دیش بھر کے لوگوں میں شروع بچپن سے ہی سکھ، خوشی، کلا اور کلچر پیدا کرنے کی خوب کوشش کرتی ہے۔ بچوں کی ایک اور سنستھا ہوتی ہے جسے "ینگ پائنیرس" (کچھ کچھ ہمارے اسکاؤٹ سے ملتی ہوئی) کہتے ہیں ۔ اس سنستھا میں سدھائے ہوئے دیش بھگت لوگ بچوں کو مل کر کام کرنا اور اچھے اچھے سماج سیوا کے کام کرنا سکھاتے ہیں ۔ نئے چین کے یہ "ینگ پائنیرس" دیکھنے کی ہی چیز ہیں۔

نئے چین میں تعلیم کا میدان اتنا بڑھ گیا ہے کہ آج وہاں کے پڑھے لکھوں میں بیکاری یا بیروزگاری کا نام

अखबारों, सिनेमा और थेटरों से भी इस नई तालीम में पूरी मदद ली जाती है. सिनेमा और थेटरों में देश की पुरानी अच्छी अच्छी परम्पराओं को भी सामने रखा जाता है ताकि सारी जनता उन से फ़ायदा उठा सके और ऊपर उठ सके.

नये चीन का आदर्श यह है कि हर दस विद्यार्थियों पीछे एक अध्यापक या प्रोफ़ेसर होना चाहिये. पर अभी तक वह सब जगह यह कर नहीं पाए हैं. वह इस तरह की नई संस्थाएं भी खोल रहे हैं जहां लड़के और लड़कियों को साथ साथ तालीम दे सकें.

स्कूलों और कालिजों की पुरानी किताबों को वह इस तरह से दोहरा और सुधार रहे हैं जिस से नये आदर्श देश में फैल सकें और पढ़ाई की किताबों में वह ही बातें हों जो नये आदर्शों से मिलती हों. नये चीन के विद्यार्थियों में इस बात के लिये बेहद जोश है कि वह नये सिरे से अपने देश की रचना करें. उनके जोश और उत्साह की कोई हद नहीं. अपने नेताओं में उनके अन्दर गहरी और अटूट श्रद्धा है. उनकी यह श्रद्धा बारबार और तरह तरह से जाहिर होती थी. विद्यार्थी अपने अध्यापकों की बड़ी इज्ज़त करते हैं. और उनसे बड़ी बड़ी आशाएं रखते हैं. साफ़ मालूम होता था कि विद्यार्थियों और अध्यापकों में कितना गहरा प्रेम और मिलाप है.

अधिकतर विद्यार्थी बोर्डिंग हाउसों में एक साथ रहते हैं. इन नई इमारतों में विद्यार्थियों के सोने की जगह एक दूसरे के ऊपर इस तरह बनी होती है जिस तरह फ़ौजी रेलगाड़ियों में एक दूसरे के ऊपर मुसाफ़िरों की सोने की जगहें बनी होती हैं. बोर्डिंग हाउसों की जितनी मांग है उतनी इमारतें अभी नहीं बन पाई हैं. इसलिये हर इमारत में भीड़ काफ़ी रहती है. यह इमारतें बड़ी सादा होती हैं, लेकिन बड़ी साफ़ सुथरी और हर जगह सब सामान बहुत तरतीब से रखा हुआ और सब ज़रूरी सामान मौजूद.

पढ़ाई की फ़ीस इतने सेर चावल के रूप में ली जाती है. मोटे तौर पर जूनियर मिडिल स्कूल के विद्यार्थी छै महीने के पूरे टर्म की पढ़ाई के लिये लगभग आठ या नौ रुपया फ़ीस देते हैं, और सीनियर मिडिल स्कूल के विद्यार्थी इसी पूरी छमाही के लिये दस या बारह रुपये. इस तरह फ़ीस क़रीब क़रीब नाम के लिये होती है. बहुत से विद्यार्थियों की यानी क़रीब तीस फ़ी सदी की फ़ीस बिलकुल माफ़ रहती है.

अपनी मामूली पढ़ाई के अलावा विद्यार्थियों को इस बात का भी खूब मौक़ा दिया जाता है कि वह देश के खास खास कामों, यहां तक कि राजकाजी कामों में भी, खूब

اخباروں، سنیما اور تھیٹروں سے بھی اس نئی تعلیم میں پوری مدد لی جاتی ہے۔ سنیما اور تھیٹروں میں دیش کی پرانی اچھی اچھی پرمپراؤں کو بھی سامنے رکھا جاتا ہے تاکہ ساری جنتا اُن سے فائدہ اُٹھا سکے اور اوپر اُٹھ سکے۔

نئے چین کا آدرش یہ ہے کہ ہر دس ودیارتھیوں پیچھے ایک ادھیاپک یا پروفیسر ہونا چاہئے۔ پر ابھی تک وہ سب جگہ یہ کر نہیں پائے ہیں۔ وہ اِسطرح کی نئی سنستھائیں بھی کھول رہے ہیں جہاں لڑکے اور لڑکیوں کو ساتھ ساتھ تعلیم دے سکیں۔

اِسکولوں اور کالجوں کی پرانی کتابوں کو وہ اِسطرح سے دوہرا اور سدھار رہے ہیں جس سے نئے آدرش دیش میں پھیل سکیں اور پڑھائی کی کتابوں میں وہ ہی باتیں ہوں جو نئے آدرشوں سے ملتی ہوں۔ نئے چین کے ودیارتھیوں میں اِس بات کے لئے بے حد جوش ہے کہ وہ نئے سرے سے اپنے دیش کی رچنا کریں۔ اُن کے جوش اور اُتساہ کی کوئی حد نہیں۔ اپنے نیتاؤں میں اُن کے اندر گہری اور اٹوٹ شردھا ہے۔ اُنکی وہ شردھا بار بار اور طرح طرح سے ظاہر ہوتی تھی۔ ودیارتھی اپنے ادھیاپکوں کی بڑی عزت کرتے ہیں اور اُن سے بڑی بڑی آشائیں رکھتے ہیں۔ صاف معلوم ہوتا تھا کہ ودیارتھیوں اور ادھیاپکوں میں کتنا گہرا پریم اور میل ملاپ ہے۔

ادھکتر ودیارتھی بورڈنگ ہاؤسوں میں ایک ساتھ رہتے ہیں۔ اِن نئی عمارتوں میں ودیارتھیوں کے سونے کی جگہ ایک دوسرے کے اوپر اِس طرح بنی ہوتی ہیں جس طرح فوجی ریل گاڑیوں میں ایک دوسرے کے اوپر مسافروں کی سونے کی جگہیں بنی ہوتی ہیں۔ بورڈنگ ہاؤسوں کی جتنی مانگ ہے اُتنی عمارتیں ابھی نہیں بن پائی ہیں۔ اِس لئے ہر عمارت میں بھیڑ کافی رہتی ہے۔ یہ عمارتیں بڑی سادہ ہوتی ہیں، لیکن بڑی صاف ستھری اور ہر جگہ سب سامان بہت ترتیب سے رکھا ہوا اور سب ضروری سامان موجود۔

پڑھائی کی فیس اِتنے سیر چاول کے روپ میں لی جاتی ہے۔ موٹے طور پر جونیر مڈل اِسکول کے ودیارتھی چھ مہینے کے پورے ٹرم کی پڑھائی کے لئے لگ بھگ آٹھ یا نو روپیہ فیس دیتے ہیں، اور سینیر مڈل اِسکول کے ودیارتھی اِسی پوری چھ ماہی کے لئے دس یا بارہ روپئے۔ اِس طرح فیس قریب قریب نام کے لئے ہوتی ہے۔ بہت سے ودیارتھیوں کو یعنی قریب تیس فی صدی کو فیس بالکل معاف رہتی ہے۔

اپنی معمولی پڑھائی کے علاوہ ودیارتھیوں کو اِس بات کا خوب موقع دیا جاتا ہے کہ وہ دیش کے خاص خاص کاموں، یہاں تک کہ راج کاجی کاموں میں بھی، خوب

का फ़र्क़ होता है. प्रिंसिपल को ज़ियादा से ज़ियादा सौ रुपया माहवार के क़रीब मिल सकते हैं. छोटे और बड़े सब एक ही तरह का ख़ाकी नीला कपड़ा पहनते हैं, तक बटन लगे हुए कोट और एक से पाजामे. नये चीन तालीमगाहों में नीचे से ऊपर तक साफ़ तपस्या की र अलामतें दिखाई देती हैं.

यह इतना बड़ा इन्क़लाब एक ऐसी शिक्षा प्रनाली के ये अमल में आया है जो बहुत सोच समझ कर देश जारी की गई है. इस शिक्षा प्रनाली में सब से नीचे री स्कूल हैं जिन में सब से छोटे बच्चे पढ़ते हैं. उन ऊपर किन्डर गार्टन स्कूल हैं, उन के ऊपर प्राइमरी ल, फिर जूनियर मिडिल स्कूल, फिर सीनियर मिडिल ल. तीन बरस से लेकर सात बरस तक की उम्र के बच्चे री और किन्डर गार्टन स्कूलों में तालीम पाते हैं. उसके पांच बरस प्राइमरी स्कूल में ख़र्च होते हैं. उसके द तीन साल जूनियर मिडिल स्कूल में और तीन साल नियर मिडिल स्कूल में. इस सब के बाद यूनिवर्सिटियों र हायर टिकनालोजीकल इन्सटीटयूशस यानी चे दर्जे की साइंसी और तिकनीकी तालीमगाहों की बारी ती है. यह सब तो लड़कों और लड़कियों के लिये है. नके अलावा यह अपने यहां के बालिग़ों यानी बड़ी उम्र मर्दों और औरतों को भी तालीम देने की कोशिश करते उन्होंने मज़दूरों और किसानों के लिये थोड़े थोड़े दिनों पढ़ाई के अलग स्कूल खोल रखे हैं जिन में चीन के ह लोग जो अब तक दबे रहे हैं नये आज़ाद चीनी जन ाज के शहरियों की हैसियत से देश की समृद्धि में और श को ऊपर ले जाने में सब के बराबर हिस्सा ले सकें.

यह तो नये चीन की मामूली शिक्षा संस्थायें हैं. इनके लावा वहां इस तरह के मिडिल स्कूल भी हैं जिन में लग अलग पेशों और धन्दों की तालीम दी जाती है. न मिडिल स्कूलों से पास करके विद्यार्थी वैदिक या डाक्टरी ा पेशा कर सकते हैं, उस्ताद या अध्यापक बन सकते हैं ीर तरह तरह के और धन्दे या दस्तकारियां कर सकते . इनके अलावा नये चीन में जगह जगह नुमाइशें भी ख़ूब ोती हैं जहां बड़े बड़े होशियार जानकार बच्चों को तफ़सील के साथ तरह तरह की चीज़ें, धन्दे और साइंसी ारीगरियां इस तरह समझाते हैं कि बच्चों के दिलों पर नक़्श हो जाय.

नये चीन में तालीम का ख़ात्मा परीक्षाओं में नहीं होता. बच्चे जब स्कूल में होते हैं तो उन्हें पूरी आज़ादी के साथ हर बात पर अपनी राय ज़ाहिर करने और ख़ूब बहस करने का मौक़ा दिया जाता है. तालीम नीचे से ऊपर तक चीनी भाषा में दी जाती है. इस तरह अपनी तालीम से वह अच्छे चीनी शहरी पैदा करने की कोशिश करते हैं.

تین کا فرق ہوتا ہے۔ پرنسپل کو زیادہ سے زیادہ چار سو روپیہ ماہوار کے قریب مل سکتے ہیں۔ چھوٹے اور بڑے سب ایک ہی طرح کا خاکی نیلا کپڑا پہنتے ہیں، اوپر تک بٹن لگے ہوئے کوٹ اور ایک سے پاجامے۔ نئے چین کی تعلیم گاہوں میں نیچے سے اوپر تک صاف تپسیا کی سندر علامتیں دکھائی دیتی ہیں۔

یہ اتنا بڑا انقلاب ایک ایسی شکشا پرنالی کے ذریعے عمل میں آیا ہے جو بہت سوچ سمجھ کر دیش میں جاری کی گئی ہے۔ اس شکشا پرنالی میں سب سے نیچے نرسری اسکول ہیں جن میں سب سے چھوٹے بچے پڑھتے ہیں۔ ان کے اوپر کنڈر گارٹن اسکول ہیں، ان کے اوپر پرائمری اسکول، پھر جونیئر مڈل اسکول، پھر سینیئر مڈل اسکول۔ تین برس سے لے کر سات برس تک کی عمر کے بچے نرسری اور کنڈرگارٹن اسکولوں میں تعلیم پاتے ہیں۔ اس کے بعد پانچ برس پرائمری اسکول میں خرچ ہوتے ہیں۔ اس کے بعد تین سال جونیئر مڈل اسکول میں اور تین سال سینیئر مڈل اسکول میں۔ اس سب کے بعد یونیورسٹیوں اور ہائر ٹیکنالوجیکل انسٹی ٹیوشنس یعنی اونچے درجے کی سائنسی اور تکنیکی تعلیم گاہوں کی باری آتی ہے۔ یہ سب تو لڑکوں اور لڑکیوں کے لئے ہے۔ ان کے علاوہ وہ اپنے یہاں کے بالغوں یعنی بڑی عمر کے مردوں اور عورتوں کو بھی تعلیم دینے کی کوشش کرتے ہیں۔ انہوں نے مزدوروں اور کسانوں کے لئے تھوڑے تھوڑے دنوں کی پڑھائی کے الگ اسکول کھول رکھے ہیں جن میں چین کے وہ لوگ جو اب تک دبے رہے ہیں نئے آزاد چینی جن راج شہریوں کی حیثیت سے دیش کی سمردھی میں اور دیش کو اوپر لے جانے میں سب کے برابر حصہ لے سکیں۔

یہ تو نئے چین کی معمولی شکشا سنستھائیں ہیں۔ ان کے علاوہ وہاں اس طرح کے مڈل اسکول بھی ہیں جن میں الگ الگ پیشوں اور دھندوں کی تعلیم دی جاتی ہے۔ ان مڈل اسکولوں سے پاس کر کے ودیارتھی ویدک یا ڈاکٹری کا پیشہ کر سکتے ہیں، استاد یا ادھیاپک بن سکتے ہیں اور طرح طرح کے اور دھندے یا دستکاریاں کر سکتے ہیں۔ ان کے علاوہ نئے چین میں جگہ جگہ نمائشیں بھی خوب ہوتی ہیں جہاں بڑے بڑے ہوشیار جانکار بچوں کو تفصیل کے ساتھ طرح طرح کی چیزیں، دھندے اور سائنسی ترکیبیں اس طرح سمجھاتے ہیں کہ بچوں کے دلوں پر نقش ہو جائیں۔

نئے چین میں تعلیم کا خاتمہ پریکشاؤں میں نہیں ہوتا۔ بچے جب اسکول میں ہوتے ہیں تو انہیں پوری آزادی کے ساتھ ہر بات پر اپنی رائے ظاہر کرنے اور خوب بحث کرنے کا موقع دیا جاتا ہے۔ تعلیم نیچے سے اوپر تک چینی بھاشا میں دی جاتی ہے۔ اس طرح اپنی تعلیم سے وہ اچھے چینی شہری پیدا کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔

गया कि हर आदमी को उसके अधिकार भी समझाए जाएं और उसके फ़र्ज़ भी बताए जाएं. नए चीन की क़ौमी ज़िन्दगी के शुरू में ही तालीम को इस तरह से ढाला गया कि जिस से मुल्क तरक़्क़ी की राह पर ठीक ठीक क़दम बढ़ा सके.

इस से कई नई नई समस्याएं पैदा हो गईं. चीन एक बहुत बड़ा देश है. वहां के सब रहने वाले एक ही जात या एक ही नसल के नहीं हैं. चीन में क़रीब एक दरजन अलग अलग नसलों के लोग हैं, जैसे मुग़ल, मियाओ, तुरकी, मुसलमान, तिब्बती वग़ैरा. यह सब लोग अलग अलग बड़े बड़े इलाक़ों में बसे हुए हैं. अपनी अपनी ज़बानें बोलते हैं. उनकी अपनी अपनी कलचरी यानी रहन सहन के ढंग और अपनी अपनी परंपराएं हैं. सभ्यता की ऊंच नीच की निगाह से भी उन में बड़ा फ़र्क़ है. किसी की सभ्यता ख़ासी ऊंची दिखाई पड़ती है और किसी की काफ़ी नीची. इसलिये ज़रूरी हो गया कि उन में तालीम के इस तरह के ढंग जारी किये जावें कि यह सब अलग अलग गिरोह प्रेम के साथ मिल कर एक 'संगठित राष्ट्र' यानी एक मुत्तहदा क़ौम की तरह तरक़्क़ी की राह पर आगे बढ़ सकें और देश की उन्नति में सब अपनी शक्ति भर पूरा पूरा भाग ले सकें.

इस के अलावा नये चीन के लोगों के लिये यह भी ज़रूरी था कि पुरानी साम्राजी यानी शाही शान शौकत और तड़क भड़क को फेंक कर सब मुल्क वालों के लिये एक तरह का और बराबरी का रहन सहन क़ायम करें. इस से पहले उन के देश के करोड़ों आदमी ग़ुलामों की सी ज़िन्दगी बसर करने के आदी हो गये थे. ऊपर के लोगों के लिये अब ज़रूरी था कि वह पहले अपने रहन सहन के तरीक़ों को सादे से सादा बनावें और फिर अपने करोड़ों दबे हुए देशवासियों में अपने साथ बराबरी का भाव पैदा करें. इन करोड़ों लोगों में ख़ुद्दारी और आत्म अभिमान को जगाने की ज़रूरत थी. यह सब काम नई तालीम के उस्तादों और प्रोफ़ैसरों के सुपुर्द किया गया. इस से ज़ाहिर है कि नये तालीमी प्रोग्राम का मतलब केवल यही नहीं था कि नीचे से ऊपर तक कोर्स की किताबें बदल दी जावें बल्कि तालीम के सारे ढांचे को ही जड़ से बदलना था, और पढ़ाने वालों को नया ढंग सिखाना था. यह पिछला काम सब से ज़बर्दस्त और मुश्किल काम था. पिछले तीन या चार बरस के अन्दर नये चीन ने अपने स्कूलों, कालिजों और यूनिवर्सिटी में तालीम देने वालों की इस तरह काया पलट दी है कि किसी भी स्कूल या कालिज के प्रिंसिपल और स्कूल के चपरासी या झाड़ू देने वाले में फ़रक़ कर सकना और यह बता सकना कि कौन क्या है वहां अब बहुत मुश्किल है. उनकी तनख़्वाहों में अब सिर्फ़ एक और

گیا کہ ہر آدمی کو اُس کے ادھیکار بھی سمجھائے جائیں اور اُس کے فرض بھی بتائے جائیں. نئے چین کی قومی زندگی کے شروع میں ہی تعلیم کو اس طرح سے ڈھالا گیا کہ جس سے ملک ترقی کی راہ پر ٹھیک ٹھیک قدم بڑھا سکے.

اِس سے کئی نئی نئی سمسیائیں پیدا ہو گئیں. چین ایک بہت بڑا دیش ہے. وہاں کے سب رہنے والے ایک ہی جات یا ایک ہی نسل کے نہیں ہیں. چین میں قریب ایک درجن الگ الگ نسلوں کے لوگ ہیں' جیسے مغل' میاؤ' ترکی' مسلمان' تبتی وغیرہ. یہ سب لوگ الگ الگ بڑے بڑے علاقوں میں بسے ہوئے ہیں. اپنی اپنی زبانیں بولتے ہیں. اِن کی اپنی اپنی کلچری یعنی رہن سہن کے ڈھنگ اور اپنی اپنی پرمپرائیں ہیں. سبھیتا کی اونچ نیچ کی نگاہ سے بھی اِن میں بڑا فرق ہے. کسی کی سبھیتا خاصی اونچی دکھائی پڑتی ہے اور کسی کی کافی نیچی. اِس لئے ضروری ہو گیا کہ اِن میں تعلیم کے اِس طرح کے ڈھنگ جاری کئے جاویں کہ یہ سب الگ الگ گروہ پریم کے ساتھ مل کر ایک 'سنگٹھت راشٹر' یعنی ایک متحدہ قوم کی طرح ترقی کی راہ پر آگے بڑھ سکیں اور دیش کی اُنتی میں سب اپنی شکتی بھر پورا پورا بھاگ لے سکیں.

اِس کے علاوہ نئے چین کے لوگوں کے لئے یہ بھی ضروری تھا کہ پرانی سامراجی یعنی شاہی شان شوکت اور ترک بھڑک کو پھینک کر سب ملک والوں کے لئے ایک طرح کا اور برابری کا رہن سہن قائم کریں. اس سے پہلے اُن کے دیش کے کروڑوں آدمی غلاموں کی سی زندگی بسر کرنے کے عادی ہو گئے تھے. اوپر کے لوگوں کے لئے اب ضروری تھا کہ وہ پہلے اپنے رہن سہن کے طریقوں کو سادے سے سادہ بناویں اور پھر اپنے کروڑوں دبے ہوئے دیش واسیوں میں اپنے ساتھ برابری کا بھاؤ پیدا کریں. اِن کروڑوں لوگوں میں خودداری اور آتم ابھیمان کو جگانے کی ضرورت تھی. یہ سب کام نئی تعلیم کے استادوں اور پروفیسروں کے سپرد کیا گیا. اِس سے ظاہر ہے کہ نئے تعلیمی پروگرام کا مطلب کیول یہی نہیں تھا کہ نیچے سے اوپر تک کورس کی کتابیں بدل دی جاویں بلکہ تعلیم کے سارے ڈھانچے کو ہی جڑ سے بدلنا تھا' اور پڑھانے والوں کو نیا ڈھنگ سکھانا تھا. یہ پچھلا کام سب سے زبردست اور مشکل کام تھا. پچھلے تین یا چار برس کے اندر نئے چین نے اپنے اسکولوں' کالجوں اور یونیورسٹی میں تعلیم دینے والوں کی اِس طرح کایا پلٹ کر دی ہے کہ کسی بھی اسکول کے پرنسپل اور اسکول کے چپراسی یا جھاڑو دینے والے میں فرق کر سکنا اور یہ بتا سکنا کہ کون کیا ہے وہاں اب بہت مشکل ہے. اُن کی تنخواہوں میں اب صرف ایک اور

नये चीन के स्कूल

(डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा)

चन्द साल पहले तक चीन में तालीम का काम अधिकतर अमरीका वालों के हाथ में था. अमरीका वालों ने ही वहां के स्कूलों, कालिजों, यूनिवर्सिटियों को रूप दिया, नया चीन इस बारे में उनका अहसानमंद है. चीनी नौजवानों के गिरोह के गिरोह ऊंची तालीम पाने के लिये अमरीका जाते थे, और फिर अपने देश लौट कर जो कुछ सीख कर आते थे उससे चीन की उन्नति में हाथ बटाते थे. चीन की 1949 की राजक्रांती तक बराबर यही होता रहा. उस राजक्रांती के बाद से चीनियों के तरीक़े बदल गये, अगरचे शिक्षा संस्थाओं के नाम वग़ैरा अभी तक बहुत कुछ वही चले आते हैं. नये चीन के लोगों ने बहुत जल्दी इस बात को अनुभव कर लिया कि कोई क़ौम उस वक़्त तक दुनिया की तरक़्क़ी में पूरा पूरा हिस्सा नहीं ले सकती जब तक कि उसकी सारी शिक्षा प्रनाली उस की अपनी क़ौमी ज़रूरतों के अनुसार नये सिरे से न ढाली जा सके. इस उद्देश्य को सामने रख कर देश की हकूमत अपने हाथ में लेने के बाद उन्होंने यह तय किया कि उनके बच्चों को किस तरह की तालीम और किस ढंग से दी जावे.

चीनी लोग अपनी *1949 की क्रांती* को "लिबरेशन" यानी मुक्ति या निजात के नाम से पुकारते हैं. इस लिबरेशन के बाद जो नई सरकार बनी उसने पहले देश के सब अध्यापकों, उस्तादों, प्रोफैसरों और तालीम देने वालों को नये सिरे से तालीम दी जिसका उद्देश्य था "उनके राजकाजी और समाजी आदर्शों को नया रूप देना." अब चीन में तालीम का यह मतलब नहीं रहा कि केवल बहुत सी नई नई बातों का ज्ञान विद्यार्थी के दिमाग़ों में इस तरह से भर दिया जावे जिस तरह किसी चीज़ में पम्प से हवा भरी जाती है. लड़के लड़कियों को तालीम देना उस देश में अब एक गहरी ज़िम्मेवारी है, एक 'पाक मिशन' है जिस के सामने एक ही लक्ष्य है और वह है 'सारी क़ौम को ऊंचा ले जाना.' तालीम को अब वहां देश की सब राजकाजी और आर्थिक योजनाओं के साथ मिला कर चलाया जाता है, ताकि देश के सब रहने वाले और सब पेशों और धन्धों के लोग अपने घरेलू जीवन में और राष्ट्रीय जीवन में दोनों में ख़ुददारी और आत्म सम्मान के साथ रह सकें. कोशिश यह है कि देश का हर आदमी केवल अपने ही लिये नहीं बल्कि पूरे समाज के लिये और उस समाज के एक मेम्बर की हैसियत से जीवन निर्वाह कर सके. इसलिये यह ज़रूरी हो

نئے چین کے اِسکول

(ڈاکٹر جے . سی . کمارپپا)

چند سال پہلے تک چین میں تعلیم کا کام ادھک‌تر امریکہ والوں کے ہاتھ میں تھا ۔ امریکہ والوں نے ہی وہاں کے اِسکولوں‘ کالجوں اور یونیورسٹیوں کو روپ دیا ۔ نیا چین اِس بارے میں اُن کا احسان‌مند ہے ۔ چینی نوجوانوں کے گروہ کے گروہ اُونچی تعلیم پانے کے لئے امریکہ جاتے تھے ۔ اور پھر اپنے دیش لوٹ کر جو کچھ سیکھ کر آتے تھے اس سے چین کی اُنتی میں ہاتھ بٹاتے تھے ۔ چین کی 1949 کی راج کرانتی تک برابر یہی ہوتا رہا ۔ اس راج کرانتی کے بعد سے چینیوں کے طریقے بدل گئے‘ اگرچہ شکشا سنستھاؤں کے نام وغیرہ ابھی تک بہت کچھ وہی چلے آتے ہیں ۔ نئے چین کے لوگوں نے جلدی اِس بات کو انوبھو کر لیا کہ کوئی قوم اُس وقت تک دنیا کی ترقی میں پورا پورا حصہ نہیں لے سکتی جب تک کہ اُسکی ساری شکشا پرنالی اُسکی اپنی قومی ضرورتوں کے انوسار نئے سرے سے نہ ڈھالی جا سکے ۔ اِس اُدیش کو سامنے رکھکر دیش کی حکومت اپنے ہاتھ میں لینے کے بعد اُنہوں نے یہ طے کیا کہ اُن کے بچوں کو کس طرح کی تعلیم اور کس ڈھنگ سے دی جاوے ۔

چینی لوگ اپنی 1949 کی کرانتی کو ”لبریشن“ یعنی مکتی یا نجات کے نام سے پکارتے ہیں ۔ اِس لبریشن کے بعد جو نئی سرکار بنی اس نے پہلے دیش کے سب ادھیاپکوں‘ استادوں‘ پروفیسروں اور تعلیم دینے والوں کو نئے سرے سے تعلیم دی جس کا اُدیش تھا ”اُن کے راج کاجی اور سماجی آدرشوں کو نیا روپ دینا .“ اب چین میں تعلیم کا یہ مطلب نہیں رہا کہ کیول بہت سی نئی نئی باتوں کا گیان ودیارتھی کے دماغوں میں اس طرح سے بھر دیا جاوے جس طرح کسی چیز میں پمپ سے ہوا بھری جاتی ہے ۔ لڑکے لڑکیوں کو تعلیم دینا اُس دیش میں اب ایک گہری ذمہ‌واری ہے‘ ایک پاک مشن ہے جس کے سامنے ایک ہی لکش ہے اور وہ ہے ’ساری قوم کو اُونچا لے جانا‘ . تعلیم کو اب وہاں دیش کی سب راج کاجی اور آرتھک یوجناؤں کے ساتھ ملا کر چلایا جاتا ہے‘ تاکہ دیش کے سب رہنے والے اور سب پیشوں اور دھندوں کے لوگ اپنے گھریلو جیون میں اور راشٹریہ جیون میں دونوں میں خود داری اور آتم سمان کے ساتھ رہ سکیں. کوشش یہ ہے کہ دیش کا ہر آدمی کیول اپنے ہی لئے نہیں بلکہ پورے سماج کے لئے اور اُس سماج کے ایک ممبر کی حیثیت سے جیون نرواہ کر سکے ۔ اِس کے لئے یہ ضروری ہو

तो लिखा होता है पर यह अंतर कोई नहीं बताता. कोश लिखने वाले शब्दों के कोई एक साधारन अर्थ लिख कर बस कर देते हैं.

अरबी, फ़ार्सी, तुर्की, अंगरेज़ी, संस्कृत, प्राकृत और दूसरे देशी और विदेशी शब्दों के पीढ़ी दर पीढ़ी मेल मिलाप और संगम का पता आजकल के शब्द कोशों से नहीं चलता, जिस से मेल और प्रेम की भी ख़ुशबू उड़े और हमारी राष्ट्र भाशा को भी चार चांद लगें. इन कोशों से हिन्दी शब्दों के ऐसे ठीक ठीक उच्चारन का भी जो हिन्दी महावरे और हिन्दी बोल चाल के अनुसार हों पता नहीं चलता. हिन्दी की कोश कला अभी बहुत दर्जे तक दिशाहीन है. जिन लोगों की यह कोशिश है कि वर्तमान हिन्दी साहित्य में किसी दूसरी भाशा का कोई शब्द रहने या शामिल होने न पावे और जो हिन्दी साहित्य को प्राचीन संस्कृत में ढाल कर उन्नत करना चाहते हैं वह राष्ट्र भाशा हिन्दी को भी साम्प्रदायक विचारों का शिकार बना कर भाशा को भ्रष्ट बना देना, उस के बहाव को रोकना और उसकी असली उन्नति को बन्द कर देना चाहते हैं. भाशा समाज की उन्नति का भी एक बहुत बड़ा साधन होती है. भाशा की उदारता और उस में बड़े दिल से काम लेना समाज को ज़िन्दा और जानदार बनाता है. उर्दू और हिन्दी में चोली दामन का साथ रहा है. भारत के हिन्दू मुसलमानों और सब धर्म वालों की एकता तभी कामयाब और पक्की हो सकती है जब सब एक दूसरे के रहन सहन, बोल चाल, रीत रिवाज, परमपराओं और जीवन के दूसरे पहलुओं से जानकारी रखते हों, इन्सानियत और देश प्रेम के नाते एक दूसरे के भावों को समझते और उनकी क़दर करते हों. हिन्दी भाशा और हिन्दी साहित्य अपने फैलाव, अपनी उदारता, अपनी मिठास, अपनी लोच और अपनी घुलावट से इस मेल मिलाप के काम को बड़ी सुन्दरता के साथ पूरा कर सकते हैं.

विद्वानों ने विद्या का अपमान किया और उसके सुन्दर स्वरूप को लालच से कुरूप कर दिया; यहां तक कि विद्या की सूरत भोंडी सी हो गई.

—एक कवि

मायदास जिस चीज़ को छूता था सोने की हो जाती थी. इन दिनों आदमी को सोने से छू दीजिये, बस वह चाहे जिस चीज़ में बदल जायेगा.

—अज्ञात

تو لکھا ہوتا ہے پر یہ انتر کوئی نہیں بتاتا ۔ کوش لکھنے والے شبدوں کے کوئی ایک سادھارن ارتھ لکھ کر بس کر دیتے ہیں ۔

عربی، فارسی، ترکی، انگریزی، سنسکرت، پراکرت اور دوسرے دیشی اور ودیشی شبدوں کے پیڑھی در پیڑھی میل ملاپ اور سنگم کا پتہ آجکل کے شبد کوشوں سے نہیں چلتا، جس سے میل اور پریم کی بھی خوشبو اڑے اور ہماری راشٹر بھاشا کو بھی چار چاند لگیں۔ ان کوشوں سے ہندی شبدوں کے ایسے ٹھیک ٹھیک اچارن کا بھی جو ہندی محاورے اور ہندی بول چال کے انوسار ہو پتہ نہیں چلتا۔ ہندی کی کوش کلا ابھی بہت درجے تک دشاہین ہے ۔ جن لوگوں کی یہ کوشش ہے کہ ورتمان ہندی ساہتیہ میں کسی دوسری بھاشا کا کوئی شبد رہنے یا شامل ہونے نہ پاوے اور جو ہندی ساہتیہ کو پراچین سنسکرت میں ڈھال کر انت کرنا چاہتے ہیں وہ راشٹر بھاشا ہندی کو بھی سامپردائک وچاروں کا شکار بنا کر بھاشا کو بھرشٹ بنا دینا، اس کے بہاؤ کو روکنا اور اس کی اصلی اونتی کو بند کر دینا چاہتے ہیں ۔ بھاشا سماج کی اونتی کا بھی ایک بہت بڑا سادھن ہوتی ہے ۔ بھاشا کی اُدارتا اور اس میں بڑے دل سے کام لینا سماج کو زندہ اور جاندار بناتا ہے ۔ اُردو اور ہندی میں چولی دامن کا ساتھ رہا ہے ۔ بھارت کے ہندو مسلمانوں اور سب دھرم والوں کی ایکتا تبھی کامیاب اور پکی ہو سکتی ہے جب سب ایک دوسرے کے رہن سہن، بول چال، ریت رواج، پرمپراؤں اور جیون کے دوسرے پہلوؤں سے جانکاری رکھتے ہوں، انسانیت اور دیش پریم کے ناتے ایک دوسرے کے بھاؤں کو سمجھتے اور ان کی قدر کرتے ہوں ۔ ہندی بھاشا اور ہندی ساہتیہ اپنے پھیلاؤ، اپنی اُدارتا، اپنی مٹھاس، اپنی لوچ اور اپنی گھلاوٹ سے اس میل ملاپ کے کام کو بڑی سندرتا کے ساتھ پورا کر سکتے ہیں ۔

ودوانوں نے ودیا کا اپمان کیا اور اس کے سندر سروپ کو لالچ سے کروپ کر دیا؛ یہاں تک کہ ودیا کی صورت بھونڈی سی ہوگئی ۔

—ایک کوی

مایداس جس چیز کو چھوتا تھا سونے کی ہو جاتی تھی ۔ ان دنوں آدمی کو سونے سے چھو دیجئے، بس وہ چاہے جس چیز میں بدل جائے گا ۔

—اگیات ۔

बहुत से शब्द शामिल हैं. और जिसे सब भारतवासी, चाहे वह हिन्दू हों या मुसलमान, सिख हों या ईसाई अपने कारबार, तिजारत, ब्योहार, बाज़ार, घर, दूकान, हाट यहां तक कि अदब और साहित्य में भी रोज़ बोलते और बरतते हैं. यही हमारे मुल्क की ज़बान है. यही हमारी राष्ट्र भाषा है. इसी को महात्मा गांधी 'हिन्दुस्तानी' कहते थे.

कुछ मुसलमान जिस अरबी फ़ार्सी मिली भाषा को बोलते हैं वह अधिकतर फ़ार्सी लिपि में है, और कुछ हिन्दू जिस संस्कृत प्रधान भाषा को बोलते हैं वह देवनागरी लिपि में लिखी जाती है. पर हम सब भारतवासियों की सच्ची मातृ भाषा वह ही है जो रोज़ सब जगह बोली और समझी जाती है जिस में "नया हिन्द" प्रेम धर्म की झोली लिये हुए निकलता है. इस में लिपि के फ़र्क़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता. वह हिन्दी भी है और उर्दू भी.

इस समय हिन्दी भाषा का सीखना हर भारतवासी के लिये बिलकुल आवश्यक है. किसी भी भाषा को सीखने के लिये दो बातें ज़रूरी हैं :—

एक यह कि उस भाषा का शब्द भंडार इतना बड़ा हो और हमारे मस्तक में इस तरह मौजूद हो कि हम अपने हर विचार और हर मतलब को हर समय आसानी से उस में प्रगट कर सकें. शब्दों के ढूंढने और सोचने की ज़रूरत न हो. यह काम स्कूली किताबों से किया जा सकता है और भाषा के कोश इस बारे में देशवासियों की बड़ी मदद कर सकते हैं.

दूसरे यह कि शब्दों के उस भंडार को वाक्यों और जुम्लों में सही सही और ठीक ठीक बरता जा सके. यह काम भाषा के नियमों यानी व्याकरन का है. ठीक ठीक व्याकरन के बिना भाषा का ठीक ठीक प्रयोग कठिन है.

शब्द भंडार और व्याकरन जान लेने पर ही भाषा ठीक ठीक लिखी पढ़ी और बोली जा सकती है.

हिन्दी कोश के लिखने वाले आम तौर पर केवल शब्दों का अर्थ लिख देते हैं. भाषा की इस सारी बनावट और उसकी आत्मा की तरफ़ जैसा ऊपर लिखा गया है उनका ध्यान नहीं जाता.

शब्दों का अलग अलग प्रयोग किस तरह होता है इस की एक मिसाल हम यहां देते हैं. एक शब्द "यह" को ही लीजिये और नीचे के दो वाक्यों में 'यह' का उपयोग देखिये :—

(1) यह मेज़ है.

(2) मेज़ के नीचे से यह बड़ा सांप निकला.

इन दोनों वाक्यों में 'यह' शब्द बिलकुल अलग अलग अर्थों में आया है. दोनों में धरती आसमान का अंतर है. कोश और व्याकरन में 'यह' को "निश्चय वाचक सर्वनाम"

بہت سے شبد شامل ہیں. اور جسے سب بھارت واسی' چاہے وہ ہندو ہوں یا مسلمان' سکھ ہوں یا عیسائی اپنے کاربار' تجارت' بیوہار' بازار' گھر' دوکان' ہاٹ یہاں تک کہ ادب اور ساہتیہ میں بھی روز بولتے اور برتتے ہیں یہی ہمارے ملک کی زبان ہے. یہی ہماری راشٹر بھاشا ہے. اسی کو مہاتما گاندھی ' ہندستانی ' کہتے تھے.

کچھ مسلمان جس عربی فارسی ملی بھاشا کو بولتے ہیں وہ ادھک تر فارسی لپی میں' اور کچھ ہندو جس سنسکرت پردھان بھاشا کو بولتے ہیں وہ دیوناگری لپی میں لکھی جاتی ہے. پر ہم سب بھارت واسیوں کی سچی ماتر بھاشا وہ ہی ہے جو روز سب جگہ بولی اور سمجھی جاتی ہے جس میں " نیا ہند " پریم دھرم کی جھولی لئے ہوئے نکلتا ہے. اس میں لپی کے فرق سے کوئی فرق نہیں پڑتا. وہ ہندی بھی ہے اور اردو بھی.

اس سمے ہندی بھاشا کا سیکھنا ہر بھارت واسی کے لئے بالکل آوشیک ہے. کسی بھی بھاشا کو سیکھنے کے لئے دو باتیں ضروری ہیں :—

ایک یہ کہ اس بھاشا کا شبد بھنڈار اتنا بڑا ہو اور ہمارے مستک میں اس طرح موجود ہو کہ ہم اپنے وچار اور ہر مطلب کو ہر سمے آسانی سے اس میں پرگٹ کرسکیں. شبدوں کے ڈھونڈنے اور سوچنے کی ضرورت نہ ہو. یہ کام اسکولی کتابوں سے کیا جا سکتا ہے اور بھاشا کے کوش اس بارے میں دیش واسیوں کی بڑی مدد کر سکتے ہیں.

دوسرے یہ کہ شبدوں کے اس بھنڈار کو واکیوں اور جملوں میں سہی سہی اور ٹھیک ٹھیک برتا جا سکے. یہ کام بھاشا کے نیموں یعنی ویاکرن کا ہے. ٹھیک ٹھیک ویاکرن کے بنا بھاشا کا ٹھیک ٹھیک پریوگ کٹھن ہے.

شبد بھنڈار اور ویاکرن جان لینے پر ہی بھاشا ٹھیک ٹھیک لکھی پڑھی اور بولی جا سکتی ہے.

ہندی کوش کے لکھنے والے عام طور پر کیول شبدوں کا ارتھ لکھ دیتے ہیں. بھاشا کی اس ساری بناوٹ اور اس کی آتما کی طرف جیسا اوپر لکھا گیا ہے ان کا دھیان نہیں جاتا.

شبدوں کا الگ الگ پریوگ کس طرح ہوتا ہے اس کی ایک مثال ہم یہاں دیتے ہیں. ایک معمولی شبد " یہ " کو ہی لیجئے اور نیچے کے دو واکیوں میں ' یہ ' کا اپیوگ دیکھئے :—

(1) یہ میز ہے.

(2) میز کے نیچے سے یہ بڑا سانپ نکلا.

ان دونوں واکیوں میں ' یہ ' شبد بالکل الگ الگ ارتھوں میں آیا ہے. دونوں میں دھرتی آسمان کا انتر ہے. کوش اور ویاکرن میں ' یہ ' کو "نشچے واچک سروناम"

में वह किन किन नियमों से बना है और इस तरह के बाहर के शब्द हिन्दी में कितने हैं, हमारी पहली पूंजी क्या थी और अब क्या है, शब्दों के पहले रूप क्या थे और अब क्या हैं, और यह फ़रक़ हमारी भाषा के किन किन नियमों के अनुसार पड़ा है, तो हमें किसी अच्छे भाषा कोश और अच्छे व्याकरन की तरफ़ जाना पड़ता है. उदार और प्रेमी व्याकरन लिखने वालों और कोशकारों का काम है कि वह इस काम में सच्चे खोजियों की मदद दें.

उर्दू की तरह हिन्दी भी हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई और भारत के सब नर नारियों की आम भाषा है. इस देश के 99 फ़ी सदी मुसलमान सदा से यहीं के पुराने निवासी हैं. जो मुट्ठी भर मुसलमान हज़ार बरस पहले बाहर से आये थे उन को भी यहां की मिट्टी ने अपना लिया. बाहर से वह अपनी अलग अलग बोलियां बोलते हुए आये थे. पर भारत को अपना देश बना लेने के बाद वह यहां की सब चीज़ों में बराबर के हक़दार हो गये. और यहां की हर चीज़ को तरक़्क़ी देना उन का फ़र्ज़ हो गया. इसी तरह मुसलमानों ने हिन्दी को भी अपनाया. केवल हिन्दी ही नहीं मुसलमानों ने यहां की हर बोली जैसे बंगला, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल वग़ैरा सब को अपने देश की भाषा होने के नाते पूरी तरह अपनाया. आज यह सब भाषाएं हिन्दू मुसलमान और सब धर्मों के भारत वासियों की एक समान बपौती हैं. इन सब पर सब का बराबर का हक़ है और इन सब भाषाओं को बढ़ाना और उन्नति देना सब का एक बराबर फ़र्ज़ है.

हिन्दी हिन्दुओं की धर्म भाषा नहीं है न कभी थी. न उर्दू मुसलमानों की कभी धर्म भाषा थी. हिन्दुओं की धर्म भाषा अगर कोई है तो संस्कृत. और मुसलमानों की धर्म भाषा अगर कोई हो सकती है तो अरबी, क्योंकि क़ुरान अरबी में है. न फ़ारसी या तुर्की मुसलमानों की धर्म भाषाएं हैं. यह दूसरी बात है कि मुसलमानों की कुछ धार्मिक किताबें उर्दू या फ़ारसी में भी हैं और हिन्दुओं की कुछ धार्मिक किताबें हिन्दी में भी हैं.

भारत में आम तौर पर और ख़ास कर उत्तर भारत में तीन तरह की मिलती जुलती बोलियां बोली जाती हैं. एक वह जिसे अधिकतर मुसलमान अपने रोज़ ब्यौहार और बोलचाल में बरतते हैं. इस में अरबी फ़ारसी के शब्द और मुहावरे अधिक होते हैं. यह उर्दू कहलाती है. लाखों हिन्दू भी यही बोलते हैं. दूसरे वह जिसे ख़ास तौर से बहुत से हिन्दू बोलते हैं. इस में संस्कृत और प्राकृत के शब्द अधिक होते हैं. यह हिन्दी कहलाती है. पर इन दोनों के अलावा एक आम भाषा है जिसमें अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंगरेज़ी, संस्कृत, प्राकृत और दूसरी देशी और विदेशी भाषाओं के

سے بنا ہے اور اس طرح کے باہر کے شبد ہندی میں کتنے ہیں، ہماری پہلی پونجی کیا تھی اور اب کیا ہے، شبدوں کے پہلے روپ کیا تھے اور اب کیا ہیں، اور یہ فرق ہماری بھاشا کے کن کن نیموں کے انوسار پڑا ہے، تو ہمیں کسی اچھے بھاشا کوش اور اچھے ویاکرن کی طرف جانا پڑتا ہے۔ اُدار اور پریمی ویاکرن لکھنے والوں اور کوش کاروں کا کام ہے کہ وہ اس کام میں سچے کھوجیوں کو مدد کریں۔

اُردو کی طرح ہندی بھی ہندو، مسلمان، سکھ، عیسائی اور بھارت کے سب نرناریوں کی عام بھاشا ہے۔ اِس دیش کے 99 فی صدی مسلمان سدا سے یہیں کے پرانے نواسی ہیں۔ جو مٹھی بھر مسلمان ہزار برس پہلے باہر سے آئے تھے اُن کو بھی یہاں کی مٹی نے اپنا لیا۔ باہر سے وہ اپنی الگ الگ بولیاں بولتے ہوئے آئے تھے۔ پر بھارت کو اپنا دیش بنا لینے کے بعد وہ یہاں کی سب چیزوں میں برابر کے حقدار ہوگئے۔ اور یہاں کی ہر چیز کو ترقی دینا اُن کا فرض ہوگیا۔ اِسی طرح مسلمانوں نے ہندی کو بھی اپنایا۔ کیول ہندی ہی نہیں مسلمانوں نے یہاں کی ہر بولی جیسے بنگلہ، پنجابی، گجراتی، مراٹھی، تمل وغیرہ سب کو اپنے دیش کی بھاشا ہونے کے ناتے پوری طرح اپنایا۔ آج یہ سب بھاشائیں ہندو مسلمان اور سب دھرموں کے بھارت واسیوں کی ایک سمان بپوتی ہیں۔ اِن سب پر سب کا برابر کا حق ہے اور اِن سب بھاشاؤں کو بڑھانا اور اُنتی دینا سب کا ایک برابر فرض ہے۔

ہندی ہندوؤں کی دھرم بھاشا نہیں ہے نہ کبھی تھی۔ نہ اُردو مسلمانوں کی کبھی دھرم بھاشا تھی۔ ہندوؤں کی دھرم بھاشا اگر کوئی ہے تو سنسکرت۔ اور مسلمانوں کی دھرم بھاشا اگر کوئی ہو سکتی ہے تو عربی، کیونکہ قرآن عربی میں ہے۔ نہ فارسی یا ترکی مسلمانوں کی دھرم بھاشائیں ہیں۔ یہ دوسری بات ہے کہ مسلمانوں کی کچھ دھارمک کتابیں اُردو یا فارسی میں بھی ہیں اور ہندوؤں کی کچھ دھارمک کتابیں ہندی میں بھی ہیں۔

بھارت میں عام طور پر اور خاص کر اُتر بھارت میں تین طرح کی ملتی جلتی بولیاں بولی جاتی ہیں۔ ایک وہ جسے ادھک تر مسلمان اپنے روز ویوہار اور بول چال میں برتتے ہیں۔ اِس میں عربی فارسی کے شبد اور محاورے ہوتے ہیں۔ یہ اُردو کہلاتی ہے۔ لاکھوں ہندو بھی یہی بولتے ہیں۔ دوسرے وہ جسے خاص طور سے بہت سے ہندو بولتے ہیں۔ اِس میں سنسکرت اور پراکرت کے شبد ادھک ہوتے ہیں۔ یہ ہندی کہلاتی ہے۔ پر اِن دونوں کے علاوہ ایک عام بھاشا ہے جس میں عربی، فارسی، ترکی، انگریزی، سنسکرت، پراکرت اور دوسری دیشی اور ودیشی بھاشاؤں کے

और 'गाड़ी घोड़ा' का मतलब है गाड़ी और घोड़ा दोनों चीज़ें. इसी तरह बैल गाड़ी और गाड़ी बैल का फ़र्क़ है.

कभी कभी मिले हुए शब्दों के दोनों टुकड़ों में से पहला टुकड़ा छोटा या कम हो जाता है जैसे—पांच सेरी का पसेरी, चार राहा का चौराहा, तीन कोना का तिकोना.

कभी कभी बोलते बोलते मिले हुए शब्दों का एक हिस्सा गिर जाता है और दूसरे हिस्से से पूरे शब्द का काम लिया जाता है—जैसे 'गऊ दुहनी' की जगह दुहनी रह गया यानी दूध दुहने का बर्तन.

कभी कभी मिले हुए शब्दों का असली रूप छोटा हो जाता है जैसे—गेहूं चने की जगह 'गोचनी'.

कभी कभी मिले हुए शब्दों में जब पहले शब्द का आख़ीर अक्षर और दूसरे शब्द का पहला अक्षर एक ही होते हैं तो उन दोनों में से एक अक्षर गिर जाता है—जैसे नाक कटा का नकटा, नाक कील का नकेल.

हिन्दी में बहुत से शब्द पुराने हिन्दी शब्दों और नये दूसरी भाषाओं के शब्दों से भी मिल कर बने हुए हैं—जैसे समझदार में समझ हिन्दी है और दार फ़ार्सी, रुएंदार में रुएं हिन्दी है और दार फ़ार्सी, ऐसे ही दुमंज़ला, तिमंज़ला, चौमंज़ला वग़ैरा.

कहीं कहीं फ़ार्सी शब्द पहले और हिन्दी पीछे जोड़ा जाता है—जैसे सेपहर, सब्ज़ी मंडी.

ढिलमुल यक़ीन में ढिलमुल हिन्दी है और यक़ीन अरबी.

किताबघर, तमाशाघर, अहमक़पन, इन में शुरू के शब्द अरबी के हैं और बाद के हिन्दी.

अगनिबोट में अगनि हिन्दी है बोट अंगरेज़ी.

रेलगाड़ी में रेल अंगरेज़ी है गाड़ी हिन्दी. ऐसे ही गोल कमरा, किताबघर, डाकघर वग़ैरा.

भाषा की सब से बड़ी ग़रज़ तो यह होती है कि आदमी उसकी मदद से अपने विचार और अपने दिल की बातें दूसरों तक पहुंचा सके और दूसरों के विचार और दूसरों के दिल की बातें ख़ुद समझ सके. भाषा की एक दूसरी ग़रज़ यह भी होती है कि हम उसके ज़रिये अदब, साहित्य, शायरी और कविता का आनन्द ले सकें. एक बड़ी ग़रज़ यह भी है कि हम भाषा की बनावट और उस में दूसरी भाषाओं के लेन देन और मेल मिलाप पर ध्यान देकर दुनिया के दूसरे देशों और दूसरे इन्सानों के साथ अपनी एकता को अनुभव कर सकें.

जब हम हिन्दी भाषा का इस तरह पर अध्यन करना चाहते हैं कि उसके किस शब्द की बनावट क्या है, वह किन भाषाओं से मिलता जुलता है या किन भाषाओं से लिया गया है और व्याकरन और शब्द बनाने के नियमों

اور گاڑی گھوڑا کا مطلب ہے گاڑی اور گھوڑا دونوں چیزیں ۔ اسی طرح بیل گاڑی اور گاڑی بیل کا فرق ہے ۔

کبھی کبھی ملے ہوئے شبدوں کے دونوں ٹکڑوں میں سے پہلا ٹکڑا چھوٹا یا کم ہوجاتا ہے جیسے—پانچ سیری کا پسیری، چارراہا کا چوراہا، تین کونہ کا تکونہ ۔

کبھی کبھی بولتے بولتے ملے ہوئے شبدوں کا ایک حصہ گرجاتا ہے اور دوسرے حصے سے پورے شبد کا کام لیا جاتا ہے ۔ جیسے گئو دوہنی کی جگہ دوہنی رہ گیا یعنی دودھ دوہنے کا برتن ۔

کبھی کبھی ملے ہوئے شبدوں کا اصلی روپ چھوٹا ہو جاتا ہے جیسے—گیہوں چنے کی جگہ 'گوچنی' ۔

کبھی کبھی ملے ہوئے شبدوں میں جب پہلے شبد کا آخیر اکشر اور دوسرے شبد کا پہلا اکشر ایک ہی ہوتے ہیں تو اُن دونوں میں سے ایک اکشر گر جاتا ہے—جیسے ناک کٹا کا نکٹا، ناک کیل کا نکیل ۔

ہندی میں بہت سے شبد پرانے ہندی شبدوں اور نئے دوسری بھاشاؤں کے شبدوں سے بھی مل کر بنے ہوئے ہیں ۔ جیسے سمجھدار میں سمجھ ہندی ہے اور دار فارسی، روئیں دار میں روئیں ہندی ہے اور دار فارسی، ایسے ہی دومنزلہ، تمنزلہ، چومنزلہ وغیرہ ۔

کہیں کہیں فارسی شبد پہلے اور ہندی پیچھے جوڑا جاتا ہے جیسے—سہ پہر، سبزی منڈی ۔

ڈھل مل یقین میں ڈھل مل ہندی ہے اور یقین عربی ۔

کتاب گھر، تماشہ گھر، احمق پن، اِن میں شروع کے شبد عربی کے ہیں اور بعد کے ہندی ۔

اگن بوٹ میں اگن ہندی ہے بوٹ انگریزی ۔

ریل گاڑی میں ریل انگریزی ہے گاڑی ہندی ۔ ایسے ہی گول کمرہ، کتاب گھر، ڈاک گھر وغیرہ ۔

بھاشا کی سب سے بڑی غرض تو یہ ہوتی ہے کہ آدمی اُس کی مدد سے اپنے وچار اور اپنے دل کی باتیں دوسروں تک پہونچا سکے، اور دوسروں کے وچار اور دوسروں کے دل کی باتیں خود سمجھ سکے، بھاشا کی ایک دوسری غرض یہ بھی ہوتی ہے کہ ہم اس کے ذریعے ادب، ساہتیہ، شاعری اور کویتا کا آنند لے سکیں ۔ ایک بڑی غرض یہ بھی ہے کہ ہم بھاشا کی بناوٹ اور اس میں دوسری بھاشاؤں کے لین دین اور میل ملاپ پر دھیان دے کر دنیا کے دوسرے دیشوں اور دوسرے انسانوں کے ساتھ اپنی ایکتا کو انوبھو کر سکیں ۔

جب ہم ہندی بھاشا کا اس طرح پر ادھین کرنا چاہتے ہیں کہ اس کے کس شبد کی بناوٹ کیا ہے، وہ کن بھاشاؤں سے ملتا جلتا ہے یا کن بھاشاؤں سے لیا گیا ہے اور ویاکرن اور شبد بنانے کے نیموں میں وہ کن کن نیموں

कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनके असली मानी बुरे थे और अब वह अच्छे मानी में भी बोले जाने लगे हैं जैसे—आफ़त. यह शब्द अरबी से हिन्दी में आया. इसका असली अर्थ है बला या हादिसा. लेकिन अब इसे अच्छे मानी में ला कर भी कहते हैं जैसे—वह लड़का पढ़ने में आफ़त है.

कुछ ऐसे शब्द भी हैं जिनका अधिक उपयोग होते हुए उनका असली रूप कहीं से कहीं चला गया. कुछ मिसालें यह हैं :—

सिड़बिल्ला यानी अहमक़—यह शब्द असल में सिड़ी और बावला दोनों शब्दों को मिला कर जल्दी जल्दी बोलने से एक शब्द बन गया.

निराला—यह शब्द असल में ना रला था यानी जिसमें कुछ मिला हुआ न हो.

अनोखा—यह शब्द असल में अनवेखा है. पंजाबी में वेखा का मतलब है देखा यानी जिसे देखा न हो.

मकड़ी—असल में 'मक्खी पकड़ी' है.

पधारना—असल में 'पद धारना' है

अनाप शनाप—असल में 'अनाप सहनाप' है यानी बेनाप का और नाप वाला.

शाबाश—असल में 'शाद बाश' है.

खटिक—है खाल ठीक करने वाला.

कसौटी—'कस वटी' है यानी धात कस कर देखने का काला पत्थर.

खीसा—कीसा यानी थैली है.

अंगरेज़ी के बहुत से शब्दों का उच्चारन हिन्दी और उर्दू में जिन्हें मिला कर महात्मा गांधी हिन्दुस्तानी कहते थे बिलकुल बदल गया है, जैसे :—

स्टैम्प का स्टाम्प
कौर्क का काग
लाइन का लैन
लैम्प का लम्प
लैनटर्न का लालटैन
जैनूएरी का जनवरी
फ़ैबरूएरी का फ़रवरी
आक्टूबर का अक्तूबर
सैपटैम्बर का सितम्बर
डिसैम्बर का दिसम्बर
हास्पिटल का स्पताल वग़ैरा वग़ैरा.

कभी कभी मिले हुए शब्दों में से शब्दों को आगे पीछे कर देने से भी शब्द का अर्थ बदल जाता है जैसे—'घोड़ा गाड़ी' का मतलब है वह गाड़ी जिस में घोड़ा जोता जाय

کچھ ایسے شبد بھی ہیں جنکے اصلی معنی برے تھے اور اب وہ اچھے معنی میں بھی بولے جانے لگے ہیں . جیسے—آفت . یہ شبد عربی سے ہندی میں آیا . اس کا اصلی ارتھ ہے بلا یا حادثہ. لیکن اب اسے اچھے معنی میں لا کر بھی کہتے ہیں—جیسے وہ لڑکا پڑھنے میں آفت ہے .

کچھ ایسے شبد بھی ہیں جن کا ادھک اپیوگ ہوتے ہوئے اُن کا اصلی روپ کہیں سے کہیں چلا گیا . کچھ مثالیں یہ ہیں :—

سڑبلا یعنی احمق—یہ شبد اصل میں سڑی اور باؤلا دونوں شبدوں کو ملاکر جلدی جلدی بولنے سے ایک شبد بن گیا .

نرالا—یہ شبد اصل میں نارلا تھا یعنی جس میں کچھ ملا ہوا نہ ہو .

انوکھا—یہ شبد اصل میں ان ویکھا ہے . پنجابی میں ویکھا کا مطلب ہے دیکھا یعنی جسے دیکھا نہ ہو .

مکڑی—اصل میں 'مکھی پکڑی' ہے .

پدھارنا—اصل میں 'پددھارنا' ہے .

اناپ شناپ—اصل میں 'اناپ سہ ناپ' ہے یعنی بےناپ کا اور ناپ والا .

شاباش—اصل میں 'شادباش' ہے .

کھٹک—ہے کھال ٹھیک کرنے والا .

کسوٹی—'کس وٹی' ہے یعنی دھات کس کر دیکھنے کا کالا پتھر .

کھیسا—کیسا یعنی تھیلی ہے .

انگریزی کے بہت سے شبدوں کا اُچارن ہندی اور اُردو میں جنھیں ملاکر مہاتما گاندھی ہندستانی کہتے تھے بالکل بدل گیا ہے' جیسے :—

اِسٹیمپ کا اِسٹامپ
کورک کا کاگ
لائن کا لین
لیمپ کا لمپ
لینٹرن کا لالٹین
جینوایری کا جنوری
فیبروایری کا فروری
آکٹوبر کا اکتوبر
سیپٹمبر کا ستمبر
ڈیسمبر کا دسمبر
ہاسپٹل کا اسپتال وغیرہ وغیرہ .

کبھی کبھی ملے ہوئے شبدوں میں سے شبدوں کو آگے پیچھے کرنے سے بھی شبد کا ارتھ بدل جاتا ہے . جیسے 'گھوڑا گاڑی' کا مطلب ہے وہ گاڑی جس میں گھوڑا جوتا جائے

वेदतापूर्न लेख लिखा है जिसमें उन्होंने लिखा है ोश का उपयोग शब्दों का ठीक ठीक अर्थ जानने ये भी होता है और शब्दों के ठीक ठीक रूप जानने ये भी होता है. उनका कहना है कि कोश का शरीर ोते हैं और अर्थ या व्याख्या कोश का प्रान यानी ा आत्मा होते हैं.

ब्द और उसके अर्थ में क्या सम्बन्ध होता है इस वेद्वानों में बड़ी बड़ी बहसें हो चुकी हैं और होती . सवाल यह है कि शब्द और उसके असली अर्थ ोई क़ुदरती सम्बन्ध है या नहीं. इस सवाल का जवाब भी है और 'नहीं' भी. सब विद्वान मानते हैं कि दुनिया सब चीज़ों का माद्दा यानी जड़ एक ही है. इसीलिये ', शकल और असर का फ़रक़ होते हुए भी सब में तरह की एकता पाई जाती है. आदमी के शरीर, पिंड ा आलमे सग़ीर में यह एकता बिल्कुल प्रगट दिखाई । है. ध्यान से देखने पर ब्रह्मांड यानी आलमे कबीर में यही बात दिखाई देती है. इसी असूल को शब्द और र्थ के सवाल पर लगाना चाहिये. पंडित रामचन्द्र ने ने निबंध में इसकी एक अच्छी मिसाल दी है. वह खते हैं कि :—"मान लीजिये कि आप कोश में 'भार्या' द का अर्थ देखना चाहते हैं. यदि उसमें आपको उसका र्थ मिले 'औरत या स्त्री' तो क्या यह अर्थ ठीक है? कदापि हीं. उसका ठीक अर्थ होगा 'जोरू या पत्नी' औरत या ी तो साधारनतया (आम तौर पर) जातिवाचक संज्ञा रूप में ही प्रचलित है. पर 'भार्या' शब्द पति की अपेक्षा एक विशिश्ठ प्रकार के सम्बन्ध का सूचक है. इस म्बन्ध का ध्यान रखते हुए 'भार्या' का ठीक अर्थ होगा ोरू' न कि औरत या स्त्री."

इसी तरह लगभग हर शब्द के बारे में कहा जा सकता है.

कोश लिखने वाले के लिये यह भी ज़रूरी है कि ब्दों की पूरी व्याख्या करते समय वह इस बात को भी ता दे कि यह शब्द किस भाशा से आया है और अब सका क्या अर्थ है. मिसाल के तौर पर हम यहां कुछ ऐसे ब्द देते हैं जो हिन्दी में चालू हैं लेकिन चालू कोशों में उनके ठीक ठीक अर्थ की तरफ़ ध्यान नहीं दिया जाता जैसे :—

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द भी हैं जो अपने असली अच्छे अर्थों से हटा कर कुछ बुरे अर्थों में लिये जाने लगे हैं जैसे—'चालाकी'. चालाकी के असली मानी हैं तेज़ी, होशयारी. पर अब यह शब्द धोकेबाज़ी और मक्कारी के मानी में बोला जाता है. कहते हैं हमें आपकी चालाकी पसन्द नहीं.

پوا وِدوتاپورن لیکھ لکھا ھے جس میں انہوں نے لکھا ھے کہ کوش کا اُپیوگ شبدوں کا ٹھیک ٹھیک ارتھ جاننے کے لئے بھی ہوتا ھے اور شبدوں کے ٹھیک ٹھیک روپ جاننے کے لئے بھی ہوتا ھے ۔ اُن کا کہنا ھے کہ کوش کا شریر شبد ہوتے ہیں اور ارتھ یا ویاکھیا کوش کا پران یعنی اُسکی آتما ہوتے ہیں ۔

شبد اور اُس کے ارتھ میں کیا سمبندھ ہوتا ھے اِس پر وِدوانوں میں بڑی بڑی بحثیں ہو چکی ہیں اور ہوتی رہتی ہیں ۔ سوال یہ ھے کہ شبد اور اُس کے اصلی ارتھ میں کوئی قدرتی سمبندھ ھے یا نہیں ۔ اِس سوال کا جواب 'ہاں' بھی ھے اور 'نہیں' بھی ۔ سب وِدوان مانتے ہیں کہ دنیا کی سب چیزوں کا مادہ یعنی جڑ ایک ہی ھے ۔ اِسی لئے صورت، شکل اور اثر کا فرق ہوتے ہوئے بھی سب میں ایک طرح کی ایکتا پائی جاتی ھے ۔ آدمی کے شریر، پنڈ یعنی عالم صغیر میں یہ ایکتا بالکل پرکٹ دکھائی دیتی ھے ۔ دھیان سے دیکھنے پر برہمانڈ یعنی عالم کبیر میں بھی یہی بات دکھائی دیتی ھے ۔ اِسی اصول کو شبد اور ارتھ کے سوال پر لگانا چاہئے ۔ پنڈت رام چندر نے اپنے نبندھ میں اِس کی ایک اچھی مثال دی ھے ۔ وہ لکھتے ہیں کہ :—"مان لیجئے کہ آپ کوش میں 'بھاریا' شبد کا ارتھ دیکھنا چاہتے ہیں ۔ یدی اُس میں آپ کو اُس کا ارتھ ملے 'عورت یا اِستری' تو کیا یہ ارتھ ٹھیک ھے ؟ کداپی نہیں ۔ اُس کا ٹھیک ارتھ ہوگا 'جورو یا پتنی' عورت یا اِستری تو سادھارنتیا (عام طور پر) جاتی واچک سنگیا کے روپ میں ہی پرچلت ھے ۔ پر 'بھاریا' شبد پتی کی اپیکشا سے ایک وششٹھ پرکار کے سمبندھ کا سوچک ھے ۔ اُس سمبندھ کا دھیان رکھتے ہوئے 'بھاریا' کا ٹھیک ارتھ ہوگا 'جورو' نہ کہ عورت یا اِستری ۔"

اِسی طرح لگ بھگ ہر شبد کے بارے میں کہا جاسکتا ھے ۔

کوش لکھنے والے کے لئے یہ بھی ضروری ھے کہ شبدوں کی پوری ویاکھیا کرتے سمے وہ اِس بات کو بھی بتا دے کہ یہ شبد کس بھاشا سے آیا ھے اور اب اِس کا کیا ارتھ ھے ۔ مثال کے طور ہم یہاں کچھ ایسے شبد دیتے ہیں جو ہندی میں چالو ہیں لیکن چالو کوشوں میں اُن کے ٹھیک ارتھ کی طرف دھیان نہیں دیا جاتا جیسے :—

ہندی میں کچھ ایسے شبد بھی ہیں جو اپنے اصلی اچھے ارتھوں سے ہٹا کر کچھ برے ارتھوں میں لئے جانے لگے ہیں—جیسے 'چالاکی'. چالاکی کے اصلی معنی ہیں تیزی، ہوشیاری ۔ پر اب یہ شبد دھوکے بازی اور مکاری کے معنی میں بولا جاتا ھے ۔ کہتے ہیں ہمیں آپکی چالاکی پسند نہیں ۔

संतोष, सुख, दुख वगैरा, प्राकृत के राव, राना, पक्की बोली के जोबन, सैयां, सजीला, पंजाबी के चंगा, खब्बा, माड़ा, चिट्टा, मरहटी का बाई, गुजराती का नन्हा, बंगला का बाबू, चाबी, बंगला, मारवाड़ी का पोखर, ताल, पूरबी का भात, भत्ता, तमिल का उड़द, तुर्की का अन्ना, आक़ा, कुली, फ़ार्सी का बेगम, बेगाना, खान, खुद, पुल, दूकान, आरा, कोशिश वग़ैरा, अरबी के साहब, मालूम, क़ौम, शौक़, बखाष, राज़ब, संदूक़, दर्जा, क़लम, तरक़्क़ी, ईरानी के मूसा, ईसा, यूनानी के कीमिया, फ़लसफ़ा, जुग़राफ़िया, इतालियन का कमरा, मलायन का गुदाम, अमरीकी का तम्बाकू, फ्रैंच का डीपो और अंगरेज़ी के डाक्टर, अस्पताल, स्कूल, इंसपैक्टर, मिल, मशीन, रेल, बटन, कोट, लैम्प, स्लीपर, कार्ड, बोर्ड, टिकट वग़ैरा वग़ैरा. इन शब्दों को हिन्दी के सब बोलने वाले पढ़े और बेपढ़े अच्छी तरह बोलते और समझते हैं.

जब तक किसी भाषा में दूसरी भाषाओं के शब्द नहीं आते तब तक वह भाषा अपनी शुरू की हालत में सुकड़ी हुई सी रहती है. और जब इस में कसरत के साथ दूसरी भाषाओं के शब्द मिलने शुरू हो जाते हैं तब वह भाषा पूरी तरह बढ़ती, फलती और फूलती है. दुनिया की भाषाओं में शब्दों का यह लेना देना और अदल बदल बराबर होता रहा है. संस्कृत में भी यह होता रहा है. भाषाएं सब बदलती रहती हैं. रिगवेद की शुरू की रिचाओं के अर्थ तक आजकल के साधारन संस्कृत व्याकरन से कर सकना असम्भव है, ज़माने की हर चीज़ बदलती है और बदलती रहेगी. यही जीवन की पहचान है.

हिन्दी भाषा भी इस बारे में दुनिया की और भाषाओं ही की तरह जीती जागती भाषा है. पंजाब यूनीवर्सिटी के हिन्दी के विद्वान रीडर डाक्टर बनार्सी दास ने फ़रवरी सन '47 के लाहौर से निकलने वाले 'ओरियेन्टल मैगज़ीन' में लिखा था कि "हिन्दुस्तान की आर्य भाषाएं इतिहासी काल में बारी बारी तीन तरफ़ को झुकती रही हैं. एक संस्कृत की तरफ़, दूसरे प्राकृत की तरफ़ और तीसरे आजकल की हिन्दुस्तानी भाषाओं हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी और पंजाबी वग़ैरा की तरफ़. प्राकृत का ज़माना ईसा से छै सौ बरस पहले शुरू हो चुका था और बारहवीं सदी ईस्वी तक रहा. इस चक्कर में प्राकृत भाषा ही बदलते बदलते आजकल की हिन्दुस्तानी बोलियों के रूप में आ गई."

शब्दों के अर्थ ठीक ठीक समझने के लिये कोश की सहायता लेना आवश्यक हो जाता है. हिन्दी भाषा के मशहूर विद्वान पंडित रामचन्द्र वर्मा ने जनवरी सन '53 के "आजकल" में "अर्थ और व्याख्या" नाम से एक

سنتوش، سکھ دکھ وغیرہ، پراکرت کے راؤ، رانا، پکی بولی کے جوبن، سیاں، سجیلا، پنجابی کے چنگا، کھبا، ماڑا، چٹا، مرہٹی کا بائی، گجراتی کا ننھا، بنگلا کا بابو، چابی، بنگلا، مارواڑی کا پوکھر، تال، پوربی کا بھات، بھتہ، تمل کا اُڑد، ترکی کا انا، آقا، قلی، فارسی کا بیگم، بیگانہ، خان، خود، پل، دوکان، آرا، کوشش وغیرہ، عربی کے صاحب، معلوم، قوم، شوق، بزاز، غضب، صندوق، درجہ، قلم، ترقی، ایرانی کے موسا، عیسا، یونانی کے کیمیا، فلسفہ، جغرافیہ، اٹالین کا کمرہ، ملائن کا گودام، امریکی کا تمباکو، فرینچ کا ڈیپو اور انگریزی کے ڈاکٹر، اسپتال، اسکول، انسپکٹر، مل، مشین، ریل، بٹن، کوٹ، لیمپ، سلیپر، کارڈ، بورڈ، ٹکٹ وغیرہ وغیرہ۔ ان شبدوں کو ہندی کے سب بولنے والے پڑھے اور بے پڑھے اچھی طرح بولتے اور سمجھتے ہیں۔

جب تک کسی بھاشا میں دوسری بھاشاؤں کے شبد نہیں آتے تب تک وہ بھاشا اپنی شروع کی حالت میں سکڑی ہوئی سی رہتی ہے۔ اور جب اس میں کثرت کے ساتھ دوسری بھاشاؤں کے شبد ملنے شروع ہو جاتے ہیں تب وہ بھاشا پوری طرح بڑھتی، پھلتی اور پھولتی ہے۔ دنیا کی بھاشاؤں میں شبدوں کا یہ لینا دینا اور ادل بدل برابر ہوتا رہا ہے۔ سنسکرت میں بھی یہ ہوتا رہا ہے۔ بھاشائیں سب بدلتی رہتی ہیں۔ رگ وید کی شروع کی رچاؤں کے ارتھ تک آج کل کے سادھارن سنسکرت ویاکرن سے کرسکنا اسمبھو ہے۔ زمانہ کی ہر چیز بدلتی ہے اور بدلتی رہیگی۔ یہی جیون کی پہچان ہے۔

ہندی بھاشا بھی اس بارے میں دنیا کی اور بھاشاؤں ہی کی طرح جیتی جاگتی بھاشا ہے۔ پنجاب یونیورسٹی کے ہندی کے ودوان ریڈر ڈاکٹر بنارسی داس نے فروری سن '47 کے لاہور سے نکلنے والے 'اوریئنٹل میگزین' میں لکھا تھا کہ "ہندستان کی آریہ بھاشا میں اتہاسی کال میں باری باری تین طرف کو جھکتی رہی ہیں۔ ایک سنسکرت کی طرف، دوسرے پراکرت کی طرف اور تیسرے آج کل کی ہندستانی بھاشاؤں ہندی، بنگلا، گجراتی، مراٹھی اور پنجابی وغیرہ کی طرف۔ پراکرت کا زمانہ عیسیٰ سے چھ سو برس پہلے شروع ہو چکا تھا اور بارھویں صدی عیسوی تک رہا۔ اس چکر میں پراکرت بھاشا ہی بدلتے بدلتے آجکل کی ہندستانی بولیوں کے روپ میں آگئی۔"

شبدوں کے ارتھ ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے کوش کی سہائتا لینا آوشیک ہو جاتا ہے۔ ہندی بھاشا کے مشہور ودوان پنڈت رام چندر ورما نے جنوری سن '53 کے "آجکل" میں "ارتھ اور ویاکھیا" نام سے ایک

राष्ट्र भाषा हिन्दी

(सैयद मोहम्मद अली शाह रहमानी)

हिन्दी आज हमारे देश की राज भाषा और राष्ट्र भाषा है. उसकी बढ़ोती और तरक्क़ी की कोशिश करना हम सब का फ़र्ज़ है.

भाषा चालू शब्दों के संग्रह का सागर होती है. मोटे तौर पर हर भाषा में तीन प्रकार के शब्द होते हैं. एक संज्ञा और उपनाम यानी इस्म—जैसे घोड़ा, मैं, तू. दूसरे क्रिया यानी फ़ेल—जैसे खाना, जाना और तीसरे वह शब्द जो अपना अलग कुछ ख़ास अर्थ नहीं रखते बल्कि दूसरे शब्दों के साथ मिल कर अर्थ देने लगते हैं-- जैसे अन्दर, बाहर, मैं, पे, पर और किन्तु वग़ैरा. इस तीसरी तरह के शब्दों को व्याकरन में सम्बन्ध बोधक, अव्यय या अवव्यय वग़ैरा कहते हैं. उरदू में इन्हें 'हर्फ़' कहते हैं. दुनिया की हर भाषा इन तीन तरह के शब्दों के दायरे में ही घूमती रहती है.

एक दूसरी तरह से देखा जाय तो हिन्दी भाषा में चार तरह के शब्द आम तौर पर पाए जाते हैं :— (1) तत्सम यानी संस्कृत के वह शब्द जो ज्यों के त्यों हिन्दी में बोले जाते हैं जैसे—माता, पिता, जल, मन्दिर वग़ैरा. (2) तद्भव यानी संस्कृत के वह शब्द जिनका रूप कुछ बदल कर हिन्दी में काम में आता है जैसे—क्षेत्र के जगह खेत, दधि की जगह दही, गौ की जगह गाय, स्तन की जगह थन वग़ैरा. (3) देशज यानी वह शब्द जो हमारे इस देश की हवा में ही बने हैं—जैसे खोटा, लोटा, पेट वग़ैरा. इनमें वह शब्द भी शामिल हैं जो भारत की दूसरी भाषाओं से हिन्दी में आ गए हैं और आते रहे हैं. (4) विदेशी यानी वह शब्द जो भारत से बाहर के दूसरे देशों की भाषाओं से आ कर हिन्दी में घुल मिल गए हैं. इन में लगभग दुनिया भर की भाषाओं के शब्द शामिल हैं और ज्यों ज्यों दूसरे देशों से हमारा संबन्ध बढ़ता जायेगा और ज्यों ज्यों हमारी हिन्दी भाषा और अधिक उन्नति करती जायेगी त्यों त्यों इस तरह के शब्दों का भंडार भी बढ़ता चला जायेगा. इस बारे में यही हाल हिन्दी की सगी बहन उरदू का है. हर भाषा की बढ़ोती के लिये इस तरह के शब्दों का बढ़ते रहना क़ुदरती और ज़रूरी है.

देशी और विदेशी भाषाओं के जो शब्द हिन्दी भाषा में पूरी तरह घुल मिल गये हैं उनकी कुछ मिसालें हम यहां देते हैं. जैसे संस्कृत के राजा, पंडित, दर्शन,

راشٹر بھاشا ہندی

(سید محمد علی شاہ رحمانی)

ہندی آج ہمارے دیش کی راج بھاشا اور راشٹر بھاشا ہے. اسکی بڑھوتی اور ترقی کی کوشش کرنا ہم سب کا فرض ہے۔

بھاشا چالو شبدوں کے سنگرہ کا ساگر ہوتی ہے۔ موٹے طور پر ہر بھاشا میں تین پرکار کے شبد ہوتے ہیں۔ ایک سنگیا اور اپ نام یعنی اسم—جیسے گھوڑا' میں' تو۔ دوسرے کریا یعنی فعل—جیسے کھانا' جانا اور تیسرے وہ شبد جو اپنا الگ کچھ خاص ارتھ نہیں رکھتے بلکہ دوسرے شبدوں کے ساتھ مل کر ارتھ دینے لگتے ہیں۔ جیسے اندر' باہر' میں' پے' پر اور کنتو وغیرہ. اس تیسری طرح کے شبدوں کو ویاکرن میں سمبندھ بودھک' اویے یا اویہ وغیرہ کہتے ہیں۔ اردو میں انہیں' حرف' بھی کہتے ہیں. دنیا کی ہر بھاشا ان تین طرح کے شبدوں کے دائرے میں ہی گھومتی رہتی ہے۔

ایک دوسری طرح سے دیکھا جائے تو ہندی بھاشا میں چار طرح کے شبد عام طور پر پائے جاتے ہیں :— (1) تتسم یعنی سنسکرت کے وہ شبد جو جوں کے توں ہندی میں بولے جاتے ہیں جیسے—ماتا' پتا' جل' مندر وغیرہ. (2) تدبھو یعنی سنسکرت کے وہ شبد جن کا روپ کچھ بدل کر ہندی میں کام میں آتا ہے جیسے— کھیتر کی جگہ کھیت' ددھی کی جگہ دہی' گو کی جگہ گائے' استن کی جگہ تھن وغیرہ۔ (3) دیشج یعنی وہ شبد جو ہمارے اس دیش کی ہوا میں ہی بنے ہیں جیسے—سوٹا' لوٹا' پیٹ وغیرہ۔ ان میں وہ شبد بھی شامل ہیں جو بھارت کی دوسری بھاشاؤں سے ہندی میں آگئے ہیں اور آتے رہتے ہیں۔ (4) ودیشی یعنی وہ شبد جو بھارت سے باہر کے دوسرے دیشوں کی بھاشاؤں سے آکر ہندی میں گھل مل گئے ہیں۔ ان میں لگ بھگ دنیا بھر کی بھاشاؤں کے شبد شامل ہیں اور جوں جوں دوسرے دیشوں سے ہمارا سمبندھ بڑھتا جائیگا اور جوں جوں ہماری ہندی بھاشا اور ادھک انتی کرتی جائیگی. توں توں اس طرح کے شبدوں کا بھنڈار بھی بڑھتا چلا جائیگا. اس بارے میں یہی حال ہندی کی سگی بہن اردو کا ہے۔ ہر بھاشا کی بڑھوتی کے لئے اس طرح کے شبدوں کا بڑھتے رہنا قدرتی اور ضروری ہے۔

دیشی اور ودیشی بھاشاؤں کے جو شبد ہندی بھاشا میں پوری طرح گھل مل گئے ہیں ان کی کچھ مثالیں ہم یہاں دیتے ہیں. جیسے سنسکرت کے راجا' پنڈت' درشن'

को अपना इतिहास और अपना ही भूगोल पढ़ाया जाय, साथ ही टेकनिकल शिक्षा की भी व्यवस्था की जाय. लेकिन सरकार की इस योजना को भी 'कम्युनिस्ट तानाशाही की स्थापना की कोशिश' कह कर प्रचार किया गया.

आज दुनिया इसे अच्छी तरह जानती है कि डाक्टर जगन और उनके साथियों को किस तरह रहस्यमय ढंग से अलग किया गया है और इन पर ब्रिटिश सरकार ने आगजनी और हिंसात्मक कार्य करने के आरोप लगाये हैं.

ब्रिटिश गायना की यह उथल पुथल दुनिया के राजनैतिक मसलों में अपना एक विशेश महत्व रखती है. डाक्टर जगन और डाक्टर बर्नहम ब्रिटिश गायना की जनता के लिये स्वतंत्रता की मशाल ले कर निकल पड़े हैं और वह चाहते हैं कि उनकी यह मशाल उस वक़्त तक जलती रहे जब तक कि उनके ध्येय की पूर्ति न हो जाये. डाक्टर जगन और बर्नहम ने हिन्दुस्तान का दौरा कर के अपनी समस्याओं को हमारे सामने रक्खा है. उन्होंने हमसे यह भी अपील की है कि हिन्दुस्तान ने अंगरेज़ी हुकूमत के दिनों को देखा है और वह जानता है कि गुलामी से छुटकारा पाने की कोशिश करने वालों के सामने क्या क्या बाधायें आती हैं और कैसे उनका मुक़ाबिला किया जाता हिन्दुस्तान है. को इन सभी समस्याओं से, जो आज हमारे सामने हैं, गुज़रना पड़ा है. इसलिये आज हम चाहते हैं कि हिन्दुस्तान हमारी इस स्वतंत्रता की लड़ाई में हमारा रहबर बने और हमें हर तरह से प्रोत्साहन देता रहे.

इसलिये आज हिन्दुस्तान ही क्या बल्कि वह सभी राष्ट्र जो स्वतंत्रता के हामी हैं और जो चाहते हैं कि दुनिया में शान्ति और स्वतंत्रता का राज क़ायम हो वह ब्रिटिश गायना की इस उथल पुथल की ओर अपना ध्यान दें.

कूटनीति क़ुदरती इन्सानी गुनों के खिलाफ़ एक ऐसा दुर्गुन है जिसने दुनिया के बड़े हिस्से को गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ रखा है और जो मानवता के विकास में सब से बड़ी रुकावट है.

—रोम्या रोलां

کو اپنا اِتہاس اَور اپنا ہی بھوگول پڑھایا جائے . ساتھ ہی ٹکنیکل شکشا کی بھی ویوستھا کی جائے . لیکن سرکار کی اِس یوجنا کو بھی 'کمیونسٹ تاناشاہی کی استھاپنا' کی کوشش کہکر پرچار کیا گیا .

آج دنیا اسے اچھی طرح جانتی ہے کہ ڈاکٹر جگن اور ان کے ساتھیوں کو کس طرح رہسیہ مے ڈھنگ سے الگ کیا گیا ہے اور ان پر برٹش سرکار نے آگ زنی اور ہنساتمک کاریہ کرنے کے آروپ لگائے ہیں .

برٹش گاینا کی یہ اُتھل پتھل دنیا کے راجنیتک مسلوں میں اپنا ایک وشیش مہتو رکھتی ہے . ڈاکٹر جگن اور ڈاکٹر برنہم برٹش گاینا کی جنتا کے لئے سوتنترتا کی مشعل لیکر نکل پڑے ہیں اور وہ چاہتے ہیں کہ اُنکی یہ مشعل اس وقت تک جلتی رہے جب تک کہ ان کے دھیہ کی پورتی نہ ہوجائے . ڈاکٹر جگن اور برنہم نے ہندستان کا دورہ کرکے اپنی سمسیاؤں کو ہمارے سامنے رکھا ہے . انہوں نے ہم سے یہ بھی اپیل کی ہے کہ ہندستان نے انگریزی حکومت کے دنوں کو دیکھا ہے اور وہ جانتا ہے کہ غلامی سے چھٹکارا پانے کی کوشش کرنےوالوں کے سامنے کیا کیا بادھائیں سامنے آتی ہیں اور کیسے ان کا مقابلہ کیا جاتا ہے. ہندستان کو اِن سبھی سمسیاؤں سے جو آج ہمارے سامنے ہیں گزرنا پڑا ہے. اس لئے آج ہم چاہتے ہیں کہ ہندستان ہماری اس سوتنترتا کی لڑائی میں ہمارا رہبر بنے اور ہمیں ہر طرح سے پروتساہن دیتا رہے .

اس لئے آج ہندستان ہی کیا بلکہ وہ سبھی راشٹر جو سوتنترتا کے حامی ہیں اور جو چاہتے ہیں کہ دنیا میں شانتی اور سوتنترتا کا راجیہ قایم ہو وہ برٹش گاینا کی اِس اُتھل پتھل کی اور اپنا دھیان دیں .

.کوٹ نیتی قدرتی انسانی گنوں کے خلاف ایک ایسا درگن ہے جس نے دنیا کے بڑے حصہ کو غلامی کی زنجیروں میں جکڑ رکھا ہے اور مانوتا کے وکاس میں سب سے بڑی رکاوٹ ہے .

—روميا رولاں

ख़ास स्थान रखता है. कनाडा की एक बोक्साइड कम्पनी को इसका ठेका दिया गया है. यह कम्पनी हर साल 25 लाख टन बोक्साइड निकाल कर वहां से कनाडा ले जाती है, जिसकी क़ीमत ढाई करोड़ डालर होती है, और इस ढाई करोड़ डालर के बदले में सिर्फ़ 15 लाख डालर टैक्स के रूप में मिलता है. इसके अलावा और भी दूसरी अमरीकी कम्पनियां वहां से करोड़ों रुपयों के हीरे, सोना, कोलम्बाइट, रेन्टेलाइट, लकड़ी वग़ैरा निकाल कर ले जाती हैं. इन सभी विदेशी कम्पनियों को वहां की अंगरेज़ी सरकार द्वारा हर तरह की मदद दी जाती रही है. डाक्टर जगन की सरकार को यह सब कब मंज़ूर था कि उनके ही देश की पूंजी का इस तरह से विदेशियों के हाथों में बटवारा हो और ब्रिटिश गायना निवासी उससे अलग रहें.

डाक्टर जगन की सरकार इस तरह के चुप्पी चुप्पा होने वाले खनिज सम्पत्ति के व्योपार को रोक देना चाहती थी और वह दूसरी खनिज सम्पत्ति जैसे बोक्साइड, सोना, हीरा, रेन्टेलाइट आदि के ठेके अपने ही देश के व्योपारियों को देना चाहती थी. ज़ाहिर बात है कि करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति इस तरह से बाहर जाने से बच जाती और इसका एक अच्छा असर ब्रिटिश गायना की जनता पर पड़ता. लेकिन इन अंगरेज़ी कूटनीतिज्ञों और अमरीकी पूंजीपतियों को यह कब मंज़ूर था.

ब्रिटिश गायना में चीनी उद्योग पर ब्रिटेन का अधिकार है. वह वहां की जनता का शोषण कर के धन कमा रहा है और उसे वहां से बाहर भेज रहा है. इस तरह ब्रिटिश गायना के अफ़्रीक़ी और भारतीय मज़दूरों की ख़ून पसीने की कमाई का मज़ा अंगरेज़ी उद्योगपति उठा रहे हैं और जो बेचारे ख़ून पसीना बहा कर काम करते हैं वह भूखों रहते हैं !

यहां की शिक्षा नीति का संचालन धार्मिक संस्थाएं करती थीं. इस तरीक़े से सबसे बड़ा नुक़सान यह था कि वहां की आबादी में 40 प्रतिशत भारतीय हिन्दू और मुसलमान हैं मगर उनमें से कोई मास्टर नहीं बनाया जा सकता. ब्रिटिश गायना के बच्चों को ब्रिटिश इतिहास और इंगलैंड का भूगोल पढ़ाया जाता है. बच्चे 'हेल ब्रिटेनिया' गाते हैं. डाक्टर बर्नहम ने, जो कि इस सरकार के शिक्षा मंत्री थे, इस तरह की शिक्षा प्रनाली को बदलना चाहा. वह चाहते थे कि शिक्षा का संचालन धार्मिक संस्थाओं के हाथों से हटा दिया जाय और सबको शिक्षा के काम में हाथ बटाने दिया जाय जिससे भारतीय हिन्दू और मुसलमान सभी को अध्यापक बनने का मौक़ा मिल सके.

पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी का अंतिम उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति था. इसलिये यह पार्टी चाहती थी कि बच्चों

خاص اسثھان رکھتا ہے. کناڈا کی ایک بوکسائڈ کمپنی کو اِس کا ٹھیکہ دیا گیا ہے . یہ کمپنی ہر سال 25 لاکھ ٹن بوکسائڈ نکال‌کر وہاں سے کناڈا لے جاتی ہے' جسکی قیمت ڈھائی کروڑ ڈالر ہوتی ہے' اور اس ڈھائی کروڑ ڈالر کے بدلے میں صرف 15 لاکھ ڈالر ٹیکس کے روپ میں ملتا ہے. اس کے علاوہ اور بھی دوسری امریکی کمپنیاں یہاں سے کروڑوں روپیوں کے ہیرے' سونا' کولمبائٹ' ریٹنٹیلائٹ' لکڑی وغیرہ نکال‌کر لے جاتی ہیں . ان سبھی ودیشی کمپنیوں کو وہاں کی انگریزی سرکار دوارا ہر طرح کی مدد دی جاتی رہی ہے . ڈاکٹر جگن کی سرکار کو یہ سب کب منظور تھا کہ ان کے ہی دیش کی پونجی کا اس طرح سے ودیشیوں کے ہاتھوں میں بٹوارہ ہو اور برٹش گیانا نواسی اس سے الگ رہیں .

ڈاکٹر جگن کی سرکار اس طرح کے چھپی چھپا ہونے والے کھنج‌سمپتی کے بیوپار کو روک دینا چاہتی تھی اور وہ دوسری‌کھنج‌سمپتی جیسے بوکسائڈ' سونا' ہیرا' ریٹنٹیلائٹ آدی کے ٹھیکے اپنے ہی دیش‌کے بیوپاریوں کو دینا چاہتی تھی . ظاہر بات ہے کہ کروڑوں روپیوں کی سمپتی اِس طرح سے باہر جانے سے بچ جاتی اور اُس کا ایک اچھا خاصہ اثر برٹش گیانا کی جنتا پر پڑتا . لیکن اِن انگریزی کوٹ نیتگیوں‌اور امریکی پونجی پتیوں‌کو یہ کب منظور تھا.

برٹش گیانا میں چینی اُدیوگ پر برٹین کا ادھیکار ہے . وہ وہاں کی جنتا کا شوشن کرکے دھن کما رہا ہے اور اسے وہاں سے باہر بھیج رہا ہے . اِس طرح برٹش گیانا کے افریقی اور بھارتیہ مزدوروں کی خون پسینے کی کمائی کا مزا انگریز اُدیوگ پتی اُٹھا رہے ہیں اور جو بیچارے خون پسینہ بہاکر کام کرتے ہیں وہ بھوکوں رہتے ہیں !

یہاں کی شکشا نیتی کا سنچالن دھارمک‌سنستھائیں کرتی تھیں. اس طریقہ سے سب سے بڑا نقصان یہ تھا کہ وہاں کی آبادی میں 40 پرتی‌شت بھارتیہ ہندو اور مسلمان ہیں مگر ان میں سے کوئی ماسٹر نہیں بنایا جاسکتا . برٹش گیانا کے بچوں کو برٹش اِتہاس اور اِنگلینڈ کا بھوگول‌پڑھایا جاتا ہے. بچے 'ھیل برٹینیا' گاتے ہیں . ڈاکٹر برنہم نے' جو کہ اِس‌سرکار کے شکشا منتری تھے' اس طرح کی شکشا پرنالی کو بدلنا چاہا . وہ چاہتے تھے کہ شکشا کا سنچالن دھارمک سنستھاؤں کے ہاتھوں سے ھٹا دیا جائے اور سب کو شکشا کے کام میں ہاتھ بٹانے دیا جائے جس سے بھارتیہ ہندو اور مسلمان سبھی کو ادھیاپک بننے کا موقع مل سکے .

پیپلس پروگریسو پارٹی کا انتم اُدیش سوتنترتا پراپتی تھا . اس لئے یہ پارٹی چاہتی تھی کہ بچوں

में से 50 प्रतिशत से अधिक ज़मीन परती रक्खी जाती है. यह ज़मीन उन किसानों और बेरोज़गारों को इस डर से नहीं दी जाती कि वह माली रूप में अपने पैरों पर खड़े हो जायेंगे या इस वजह से नहीं दी जाती कि उन मालिकों को फिर इतने सस्ते मज़दूर कहां मिल सकेंगे.

इस सरकार ने ईख की खेती के अलावा ब्रिटिश गायना की ओर भी दूसरे क़िस्म की फ़सलों की ओर ध्यान देना चाहा लेकिन उस ओर भी इन मालिकों द्वारा इसलिये विरोध किया गया कि अधिकांश ज़मीन उन के हाथ में थी और वह सिवाय गन्ने के दूसरी फ़सलें पैदा करके नुक़सान नहीं उठाना चाहते थे.

पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी की सरकार ने अपने देश की दशा को सुधारने के लिये एक यह भी महत्वपूर्न क़दम उठाया कि भूमि का पूरा बटवारा किया जाय और उसे अधिक से अधिक काम के लायक़ बनाया जाये. इस के अलावा इस सरकार ने कृशि भूमि पर लिये जाने वाले लगान और खानों से लिये जाने वाले टेक्सों की भी एक योजना बनाई थी. सिंचाई और पानी के निकास की अधिक से अधिक सुविधायें देने के बारे में भी इस सरकार के सामने एक महत्वपूर्न प्रश्न था. इसके अलावा ज़मीन के पट्टों को किसानों के लिये ज़ियादा से ज़ियादा आसान करने और उन्हें हर पहलू से सुरक्षित रखने का प्रश्न भी इस सरकार के सामने था. इस सरकार की योजना थी कि उन कम्पनियों के मालिकों से जिनके पास कि ज़मीनें बेजुती पड़ी रहती हैं उनसे उन बेजुती ज़मीन का लगान अधिक लिया जाय ताकि उनमें खेती होने लगे.

डाक्टर छेदी जगन, जो कि इस सरकार के प्रधान मंत्री थे उन्होंने इन योजनाओं को सदन के सामने पेश किया. लेकिन विधान परिशद के सदस्यों ने गवर्नर के एक इशारे पर इन योजनाओं को नामंज़ूर कर दिया और इन्हें स्वतंत्रवादी योजनायें कह कर टाल दिया और संयुक्त अधिवेशन, यानी दोनों सदनों के मेम्बरों के सामने यह योजनायें आने के समय से पहले ही संविधान को रद्द कर दिया गया. इस सरकार की इन योजनाओं को 'कम्युनिस्ट कुचक्र' व 'एक तंत्रवादी' कह कर प्रचार किया गया.

ब्रिटिश गायना में किसी भी प्रकार के खनिज पदार्थों के उत्पादन उद्योग की इजाज़त नहीं दी जाती, क्योंकि यह लाखों रुपयों की खनिज सम्पत्ति धीरे से निकाल कर बाहर भेज दी जाती है और जिसका किसी भी प्रकार का फ़ायदा ब्रिटिश गायना की जनता नहीं उठा पाती.

ब्रिटिश गायना में बोक्साइड काफी मात्रा में पाया जाता है. वहां की खनिज सम्पत्तियों में बोक्साइड एक

میں سے 50 پرتی شت سے ادھک زمین پرتی رکھی جاتی ہے ۔ یہ زمین اُن کسانوں اور بے روزگاروں کو اِس ڈر سے نہیں دی جاتی کہ وہ مالی روپ میں اپنے پیروں پر کھڑے ہو جائینگے یا اس وجہ سے نہیں دی جاتی کہ اُن ملکوں کو پھر اتنے سستے مزدور کہاں مل سکیں گے ۔

اس سرکار نے ایکھ کی کھیتی کے علاوہ برٹش گیانا کی اور بھی دوسرے قسم کی فصلوں کی اور دھیان دینا چاہا لیکن اُس اور بھی اِن مالکوں دوارا اس لئے ورودھ کیا گیا کہ ادھیکانش زمین ان کے ہاتھ میں تھی اور وہ سوائے گنّے کے دوسری فصلیں پیدا کر کے نقصان نہیں اُٹھانا چاہتے تھے ۔

پیپلس پروگریسو پارٹی کی سرکار نے اپنے دیش کی دشا کو سدھارنے کے لئے ایک یہ بھی مہتوپورن کام اُٹھایا کہ بھومی کا پورا بٹوارہ کیا جائے اور اسے ادھک سے ادھک کام کے لایق بنایا جائے ۔ اس کے علاوہ اِس سرکار نے کرشی بھومی پر لئے جانے والے لگان اور کھانوں سے لئے جانے والے ٹیکسوں کی بھی ایک یوجنا بنائی تھی ۔ سنچائی اور پانی کے نکاس کی ادھک سے ادھک سودھائیں دینے کے بارے میں بھی اس سرکار کے سامنے ایک مہتوپورن پرشن تھا ۔ اِس کے علاوہ زمین کے پٹّوں کو کسانوں کے لئے زیادہ سے زیادہ آسان کرنے اور انہیں ہر پہلو سے سورکشت رکھنے کا پرشن بھی اس سرکار کے سامنے تھا ۔ اِس سرکار کی یوجنا تھی کہ اُن کمپنیوں کے مالکوں سے جن کے پاس کہ زمین بے جوتی پڑی رہتی ہیں اُن سے اُن بے جوتی زمین کا لگان ادھک لیا جائے تاکہ ان میں کھیتی ہونے لگے ۔

ڈاکٹر چھیدی جگن، جو کہ اس سرکار کے پردھان منتری تھے، انہوں نے اِن یوجناؤں کو سدن کے سامنے پیش کیا ۔ لیکن ودھان پریشد کے سدسیوں نے گورنر کے ایک اشارے پر ان یوجناؤں کو نامنظور کردیا اور انہیں سوتنتروادی یوجنائیں کہہ کے ٹال دیا اور سنیکت ادھیویشن' یعنی دونوں سدنوں کے ممبروں کے سامنے یہ یوجنائیں آنے کے سمے سے پہلے ہی سمودھان کو رد کردیا گیا ۔ اس سرکار کی اِن یوجناؤں کو 'کمیونسٹ کوچکر' و 'ایک تنتروادی' کہہ کر پرچار کیا گیا ۔

برٹش گیانا میں کسی بھی پرکار کے کھنج پدارتھوں کے اُتپادن اُدیوگ کی اجازت نہیں دی جاتی' کیونکہ یہ لاکھوں روپیوں کی کھنج سمپتی دھیرے سے نکال کر باہر بھیج دی جاتی ہے اور جس کا کسی بھی پرکار کا فائدہ برٹش گیانا کی جنتا نہیں اُٹھا پاتی ۔

برٹش گیانا میں بوکسائٹ کافی ماترا میں پایا جاتا ہے ۔ وہاں کی کھنج سمپتیوں میں بوکسائٹ ایک

सरकारी अधिकारी होते हैं. प्रथम सदन में 9 होते हैं जिन में से 6 को गवर्नर खुद चुनता है और मंत्रियों की सिफ़ारिश पर चुना जाता है. इस के एक सदस्य को गवर्नर प्रतिनिधि सभा (दूसरा के अल्प संख्यक दल के सदस्यों से मशविरा करके

ां के मंत्रीमंडल में 6 सदस्य होते हैं जिनको धि सभा के सदस्य चुनते हैं. ये मंत्रीमंडल ब्रिटिश की लोकप्रिय पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी के सदस्यों इस के अलावा इस मंत्रीमंडल में तीन सरकारी री और एक प्रथम सदन के प्रतिनिधि भी थे. इन तीनों अधिकारियों के पास विदेश विभाग, , क़ानून, अर्थ और नागरिक शासन विभाग थे.

स लोकप्रिय सरकार के प्रधान मंत्री डाक्टर छेदी जगन दी जगन की सरकार ने, जो कि चुनाव के दौरान में जनता से उसकी भलाई के लिये बड़े बड़े वायदे यहां तक पहुंची थी, ऐसे कामों में हाथ बटाना किया.

स सरकार ने सब से पहिले अपने देश में होने वाली की पैदावार करने वालों और दूसरे खेती का काम वालों की दशा की ओर अपना ध्यान दिया. यह ार चाहती थी कि वह ज़मीनें जो कि अंगरेज़ी नियों के पास ज़रूरत से ज़ियादा हैं जिन्हें वह जोत बो भी नहीं सकतीं, उन ग़रीब किसानों को दे दी जिन के पास बिलकुल ज़मीन नहीं है और जो ना पालन पोषन सिर्फ़ हफ़्ते में तीन या चार दिन कम्पनियों द्वारा मिलने वाली मज़दूरी कर के ही करते बाक़ी दिन हफ़्ते में बेकार रहते हैं. इन कम्पनियों ने कार के इस क़दम का घोर विरोध किया. मलिकों इन ग़रीबों को इसलिये ज़मीनें नहीं मिलने दीं कि गर इन को ज़मीनें दे दी गईं तो फिर हमें सस्ते मज़दूर ां से मिल पायेंगे ? और ये ईख का धंधा हमारे हाथ से नकल जायेगा.

श्री हुटकिंसन, जो कि भारत में आकर सिंचाई के ाम का एक अच्छा ख़ासा तजुरबा लेकर ब्रिटिश गायना ाये थे, इन्होंने वहां की जनता की आर्थिक दशा को ऊंचा उठाने के लिये ईख की खेती की सिंचाई के लिये एक बहुत अच्छी योजना बनाई. मगर इन की इस योजना का इन ब्रिटिश कम्पनियों द्वारा इसलिये घोर विरोध किया गया कि वहां के किसान और मज़दूर सिंचाई की बढ़ी हुई सुविधाओं को पा कर खेती करना शुरू कर देंगे.

रायल कमीशन की रिपोर्ट के मुताबिक़ इन अंगरेज़ी कम्पनियों के अधिकार में 17 लाख एकड़ ज़मीन है जिस

اور 3 سرکاری ادھیکاری ہوتے ہیں ۔ پرتھم سدن میں 9 سدسیہ ہوتے ہیں جن میں سے 6 کو گورنر خود چنتا ہے اور 2 کو منتریوں کی سفارش پر چنا جاتا ہے ۔ اس کے علاوہ ایک سدسیہ کو گورنر پرتینیدھی سبھا (دوسرا سدن) کے الپ سنکھیک دل کے سدسیوں سے مشورا کر کے چنتا ہے ۔

یہاں کے منتری منڈل میں 6 سدسیہ ہوتے ہیں جن کو پرتینیدھی سبھا کے سدسیہ چنتے ہیں ۔ یہ منتری منڈل برٹش گیانا کی لوک پریہ پیپلس پروگریسو پارٹی کے سدسیوں کا تھا ۔ اس کے علاوہ منتری منڈل میں تین سرکاری ادھیکاری اور ایک پرتھم سدن کے پرتینیدھی بھی شامل تھے ۔ ان تینوں ادھیکاریوں کے پاس ودیش وبھاگ، پولس، قانون ۔ ارتھ اور ناگرک شاسن وبھاگ تھے ۔

اس لوک پریہ سرکار کے پردھان منتری ڈاکٹر چھیدی جگن تھے ۔ چھیدی جگن کی سرکار نے، جو کہ چناؤ کے دوران میں اپنی جنتا سے اس کی بھلائی کے لئے بڑے بڑے وعدے کر کے یہاں تک پہونچی تھی، ایسے کاموں میں ہاتھ بٹانا شروع کیا ۔

اس سرکار نے سب سے پہلے اپنے دیش میں ہونے والی ایکھ کی پیداوار کرنے والوں اور دوسرے کھیتی کا کام کرنے والوں کی دشا کی اور اپنا دھیان دیا ۔ یہ سرکار چاہتی تھی کہ وہ زمینیں جو کہ انگریزی کمپنیوں کے پاس ضرورت سے زیادہ ہیں، جنہیں وہ جوت اور بو بھی نہیں سکتیں، ان غریب کسانوں کو دے دی جائیں جن کے پاس بالکل زمین نہیں ہے اور جو اپنا پالن پوشن صرف ہفتے میں تین یا چار دن ان کمپنیوں دوارا ملنے والی مزدوری کر کے ہی کرتے ہیں ۔ باقی دن ہفتے میں بیکار رہتے ہیں ۔ ان کمپنیوں نے سرکار کے اس قدم کا گھور ورودھ کیا ۔ مالکوں نے ان غریبوں کو اس لئے زمینیں نہیں ملنے دیں کہ اگر ان کو زمینیں دے دی گئیں تو پھر ہمیں سستے مزدور کہاں سے مل پائینگے ؟ اور یہ ایکھ کا دھندا ہمارے ہاتھ سے نکل جائے گا ۔

شری ہٹکنسن، جو کہ بھارت میں آکر سنچائی کے کام کا ایک اچھا خاصہ تجربہ لے کر برٹش گیانا گئے تھے، انہوں نے وہاں کی جنتا کی آرتھک دشا کو اونچا اٹھانے کے لئے اچھی یوجنا بنائی ۔ مگر ان کی اس یوجنا کا ان برٹش کمپنیوں دوارا اس لئے گھور ورودھ کیا گیا کہ وہاں کے کسان اور مزدور سنچائی کی بڑھی ہوئی سودھاؤں کو پا کر کھیتی کرنا شروع کر دینگے ۔

رائل کمیشن کی رپورٹ کے مطابق ان انگریزی کمپنیوں کے ادھیکار میں 17 لاکھ ایکڑ زمین ہے جس

मिली ही नहीं जो स्थिर हो या जिस में बदलाव न हो रहा हो. हम समझा करते थे कि जानदार चीजें हमेशा रहने वाली होती हैं. लेकिन अब प्रानी विद्या से सम्बन्ध रखने वाला विकास साफ़ बता रहा है कि ऐसा नहीं होता. शायद पूरा पूरा अनुभव किये बिना आज का विज्ञान हमें उस जगह से जहां जगत बिलकुल स्थिर था लेकिन ऊपरी परिवर्तन वाला था उस जगह ले गया है जहां जगत खूब ज़ोर से घूम रहा है लेकिन देखने में स्थिर सा लगता है.

ब्रिटिश गायना में उथल पुथल

(चेतन कुमार शर्मा)

ब्रिटिश गायना ब्रिटिश राज्य का एक छोटा सा उपनिवेश है. इस की आबादी लगभग 5 लाख और उसका क्षेत्रफल 8५ हज़ार वर्ग मील है. इस उपनिवेश में पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी की सरकार बनने से पहले ब्रिटिश सरकार क़ायम थी. यह सरकार इस उपनिवेश को हर तरह से दबाए हुए थी, जनता दिन ब दिन दुखी और दीन होती चली जा रही थी. आख़िर यह दुख की आंधियां जनता कब तक बर्दाश्त करती. आम चुनाव हुए और पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी ने चुनाव लड़ कर ब्रिटिश गायना में अपनी सरकार क़ायम की. पीपुल्स प्रोग्रेसिव पार्टी जनता की अपनी पार्टी थी. इस में ग़रीब भोली भाली जनता के अपने प्रतिनिधि थे. वह जानते थे कि हम अपनी जनता का रहन सहन किस तरह ऊंचा उठा सकते हैं, वह जानते थे कि हमारी जनता को किस चीज़ की आवश्यकता है, वह यह भी जानते थे कि ब्रिटिश गायना के निवासी अपनी इस दासता से कैसे जल्द से जल्द छुटकारा पा सकेंगे और उन्होंने यही किया भी. लेकिन अंगरेज़ी हुकूमत को यह कब मंज़ूर था. उसने षडयंत्र रच कर इस लोकप्रिय सरकार को हटाया जिस का वहां की जनता को कानों कान पता न चलने दिया और आठ घंटे के अंदर ही अंदर जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों से स्तीफ़े ले लिये गये.

यहां यह बता देना आवश्यक है कि ब्रिटिश गायना का विधान एक उपनिवेशी विधान है. यहां की प्रतिनिधि सभा में केवल 27 सदस्य होते हैं जिनमें से 24 निर्वाचित

ملی ھی نہیں جو استھر ھو یا جس میں بدلاؤ نہ ھو رھا ھو. ھم سمجھا کرتے تھے کہ جاندار چیزیں ھمیشہ رھنے والی ھوتی ھیں . لیکن اب پرانی ودیا سے سمبندھ رکھنے والا وکاس صاف بتا رھا ھے کہ ایسا نہیں ھوتا شاید پورا پورا انوبھو کئے بنا آج کا وگیان ھمیں اس جگہ سے جہاں جگت بالکل استھر تھا لیکن اوپری پریورتن والا تھا اس جگہ لے گیا ھے جہاں جگت خوب زور سے گھوم رھا ھے . لیکن دیکھنے میں استھر سا لگتا ھے .

برٹش گاینا میں اتھل پتھل

(چیتن کمار شرما)

برٹش گاینا برٹش راجیہ کا ایک چھوٹا سا اپنیویش ھے . اسکی آبادی لگ بھگ 5 لاکھ اور اس کا چھیتر پھل 85 ھزار ورگ میل ھے . اس اپنیویش میں پیپلس پروگریسو پارٹی کی سرکار بننے سے پہلے برٹش سرکار قائم تھی. یہ سرکار اس اپنیویش کو ھر طرح سے دبائے ھوئے تھی' جنتا دن بہ دن دکھی اور دین ھوتی چلی جا رھی تھی. آخر یہ دکھ کی آندھیاں جنتا کب تک برداشت کرتی . عام چناؤ ھوئے اور پیپلس پروگریسو پارٹی نے چناؤ لڑ کر برٹش گاینا میں اپنی سرکار قایم کی . پیپلس پروگریسو پارٹی جنتا کی اپنی پارٹی تھی. اس میں غریب بھولی بھالی جنتا کے اپنے پرتیندھی تھے . وہ جانتے تھے کہ ھم اپنی جنتا کا رھن سھن کس طرح اونچا اٹھا سکتے ھیں' وہ جانتے تھے کہ ھماری جنتا کو کس چیز کی آوشیکتا ھے' وہ یہ بھی جانتے تھے کہ برٹش گاینا کے نواسی اپنی اس داستا سے کیسے جلد سے جلد چھٹکارا پاسکیں گے . اور انھوں نے یہی کیا بھی . لیکن انگریزی حکومت کو یہ کب منظور تھا . اس نے شڑینتر رچ کر اس لوک پریہ سرکار کو ھٹایا جس کا وھاں کی جنتا کو کانوں کان پتہ نہ چلنے دیا اور آٹھ گھنٹے کے اندر ھی اندر جنتا کے چنے ھوئے پرتیندھیوں سے استعفے لے لئے گئے .

یہاں یہ بتا دینا آوشیک ھے کہ برٹش گاینا کا ودھان ایک اپنیویشی ودھان ھے . یہاں کی پرتیندھی سبھا میں کیول 27 سدسیہ ھوتے ھیں جن میں سے 24 نرواچت

समझना होगा कि वह वस्तु से अवस्तु की ओर . जहां तक परिभाषा का सवाल है, वह सवाल खड़ा ता है कि क्या कोई ऐसा विशेषण है जो Dialec- ध्द की जगह ले सके ? हां, है, जैसे 'Evolu- y' या 'Dynamic'. लेकिन ये दोनों भी ctical शब्द के पूरे पूरे अर्थ नहीं देते. क्यों नहीं से हम नीचे समझाने की कोशिश करेंगे.

ctical भौतिकवाद की साक्षी

ialectical भौतिकवादी पारिभाषिक अवस्था की ारी किसी तरह नहीं ले सकता है. अगर उसकी ा उलझन लिये हुए है तो वह मजबूर है क्योंकि ख़ुद उसको बहुत उलझा हुआ मालूम हो रहा है. अब मामले को उस पहलू से लें जिधर से वह बहुत और फ़ैसलाकुन दिखाई देता है.

सी कौन सी साक्षी है जिस से मजबूर हो कर ectical भौतिकवादी को इस तरह की परिभाषा नी पड़ी ? विज्ञान के हर क्षेत्र से फिर चाहे वह प्राकृतिक सामाजी, उसे ऐसी साक्षी मिली. जीवन के हर स्तर स को ये ही देखने को मिला. बेजान, जानदार, ी, मस्तकी, विचारी, और नैतिक सभी जगह उसे वाही मिली. हर चीज़ उसे घूमती हुई मिली, बदलती, , उगती, नये नये रूप लेती मिली. हर तरफ़ से इसी ी का शोर सुना गया. दर्शन के जन्म दिन से क्या क्लटस और क्या दूसरे विचारक सब यही आवाज़ चले आते हैं. आज की भी खोज इसी गवाही के से भरी पड़ी है. ज्योतिष, भौतिक शास्त्र, रसायन , प्रानी शास्त्र, और इन से लगे हुए दूसरे शास्त्र सब के यही कहते हैं कि उन्हें कोई चीज़ ऐसी न मिली जो ाव से ख़ाली हो. जिसे स्थिर और न हिलने वाली ा गया वह भी एक जगह से दूसरी जगह भागती हुई ी. अगर वह कहीं स्थिर मिली तो सिर्फ़ कल्पना की या में एक समय था जब हम यह समझते थे कि त्रों की दूरी अटल है, वह कभी कम ज़ियादा नहीं होती. बात भी ग़लत निकली. अब हम जान गये हैं कि जिन ं को हम स्थिर समझे थे और आज तक समझे हुए हैं स्थिर नहीं हैं. भाषा में यह कमी है कि वह बहुत धीरे ती है और कभी विचारों को नहीं पकड़ पाती. हम ये दिन भौतिक और रासायनिक जगत में नये नये नयादी तत्व खोजते रहते हैं पर जितनी जितनी हमारी नयादी खोजें होती जाती हैं उतनी उतनी ही हमें ऐसी ें मिलती जाती हैं जिनकी गति इतनी तेज़ है कि उस विश्वास करते हुए डर मालूम होता है. कोई ऐसी चीज़

سے سمجھنا ہوگا کہ یہ وستو سے اوستو کی اور جاتا ہے ۔ جہاں تک پریبھاشا کا سوال ہے، یہ سوال کھڑا ہو سکتا ہے کہ کیا کوئی ایسا وشیشن ہے جو Dialectical شبد کی جگہ لے سکے ؟ ہاں، ہے، جیسے rolutionary یا 'Dynamic'. لیکن یہ دونوں بھی Dialectical شبد کے پورے پورے ارتھ نہیں دیتے ۔ کیوں نہیں دیتے — اسے ہم نیچے سمجھانے کی کوشش کریں گے ۔

Dialectical مادی واد کی ساکشی ۔

Dialectical مادی وادی پریبھاشک اوستھا کی ذمہ داری کسی طرح نہیں لے سکتا ۔ اگر اس کی پریبھاشا الجھن لئے ہوئی ہے تو وہ مجبور ہے کیونکہ سچ خود اس کو بہت الجھا ہوا معلوم ہو رہا ہے ۔ آیئے معاملے کو اس پہلو سے لیں جدھر سے وہ بہت صاف اور فیصلہ کن دکھائی دیتا ہے ۔

ایسی کون سی ساکشی ہے جس سے مجبور ہو کر Dialectical مادی وادی کو اس طرح کی پریبھاشا اپنانی پڑی ؟ وگیان کے ہر شیتر سے پھر چاہے وہ پراکرتک ہو یا سماجی، اسے ایسی ساکشی ملی ۔ جیون کے ہر استر پر اس کو یہ ہی دیکھنے کو ملا ۔ بےجان، جاندار، سماجی، مستکی، وچاری اور نیتک سبھی جگہ اسے یہ گواہی ملی ۔ ہر چیز اسے گھومتی ہوئی ملی، بدلتی، بڑھتی، اگتی، نئے نئے روپ لیتی ملی ۔ ہر طرف سے اسی گواہی کا شور سنا گیا ۔ درشن کے جنم دن سے کیا ھیراکلٹس اور کیا دوسرے وچارک سب یہی آواز اٹھاتے چلے آتے ہیں ۔ آج کی بھی کھوج اسی گواہی کے پنّوں سے بھری پڑی ہے ۔ جیوتش، بھوتک شاستر، رسائن شاستر، پرانی شاستر اور ان سے لگے ہوئے دوسرے شاستر سب کے سب یہی کہتے ہیں کہ انہیں کوئی چیز ایسی نہ ملی جو بدلاؤ سے خالی ہو ۔ جسے استھر اور نہ ہلنےوالی سمجھا گیا وہ بھی ایک جگہ سے دوسری جگہ بھاگتی ہوئی ملی ۔ اگر وہ کہیں استھر ملی تو صرف کلپنا کی دنیا میں ۔ ایک سمے تھا جب ہم یہ سمجھتے تھے کہ نچھتروں کی دوری اٹل ہے، وہ کبھی کم زیادہ نہیں ہوتی ۔ یہ بات بھی غلط نکلی ۔ اب ہم جان گئے ہیں کہ جن تاروں کو ہم استھر سمجھے تھے اور آج تک سمجھے ہوئے ہیں وہ استھر نہیں ہیں ۔ بھاشا میں یہ کمی ہے کہ وہ بہت دھیرے چلتی ہے اور کبھی وچاروں کو نہیں پکڑ پاتی ۔ ہم آئے دن بھوتک اور راسائنک جگت میں نئے نئے بنیادی تتو کھوجتے رہتے ہیں ۔ پر جتنی جتنی ہماری بنیادی کھوجیں ہوتی جاتی ہیں اتنی اتنی ہی ہمیں ایسی چیزیں ملتی جاتی ہیں جن کی گتی اتنی تیز ہے کہ اس پر وشواس کرتے ہوئے ڈر معلوم ہوتا ہے ۔ کوئی ایسی چیز

इसका मतलब है कि इस शब्द के पीछे एक इतिहास है लेकिन हर चीज़ के पीछे एक सूत्र रहता है जो उसके साथ साथ चला आता है. और इस 'Dialectical' शब्द के साथ वह सूत्र है 'गति के विचार' का यानी हर समय में और हर जगह Dialectical शब्द का अर्थ गति को बताने वाला ज़रूर रहा. पहले पहल शायद इसका अर्थ उस विवाद की गति से रहा होगा जो दो वादियों में होती है और जो वादी प्रतिवादी के नाम से अलग अलग विचार लिये हुए होते हैं. आजकल यह शब्द विचार की उलझी हुई गति बताने के अर्थ में काम में आता है. उलझे और गूढ़ विचारों को लोग 'Dialcetical' कह देते हैं. अफ़लातून ने अपनी "रिपब्लिक" किताब में Dialectics' को ऊंचे से ऊंची सूझ बूझ के लिये काम में लिया है. उसकी राय में Dialectics वह कला है जो बुनियादी विचारों के आपसी रिश्तों का हाल बताती है यह बुनियादी विचार ही उसके लिये अन्तिम सत्य थे. बस यों समझिये अफ़लातून का 'Dialectics' आदर्शवाद था.

कार्लमार्क्स और उसके अनुयाइयों को जो 'डाइलेक-टिक्स' का विचार सूझा वह हिगल वाला 'Dialectics' था. 'हिगल' को Dialectical आदर्शवादी कहा गया है. नए युग का 'हिगल' सब से बड़ा Dialectical आदर्शवादी था. हिगल का कहना है कि सत्य विचार है और उसका गुन यह है कि आप गती की बढ़ती में, रूपान्तर होने में अपने आप को प्रगट करता है. अब Dialectical शब्द माटीवादी के साथ मिल कर यह बताता है कि सत्य इतना ही नहीं कि वह 'Material' यानी जड़ है लेकिन यह भी कि 'जड़ प्रकृति' या मिट्टी हमेशा गतिमान है यानी इस में हमेशा हलचलें होती रहती हैं.

इस में और भी अनेकों बारीकियां हैं. 'Dilectical' एक ही तरह की गति का ज़िक्र नहीं करता. वह ऐसी गति की भी बात कहता है जो बेहद उलझी हुई है और साथ ही साथ वह बुनियादी नमूने की है, जिस गति को युक्ति युक्त सिद्धांत के नाम से भी पुकारा जा सकता है इस से भी आगे उसका कहना है कि उलझन गति के और बदलाव के नमूने के लिये काफ़ी कड़ी होती है. ऐसा न होता तो वह कैसे चलती फिरती और बदलती दुनियां को नये नये रूप दे सकती ? यह टेढ़ी मेढ़ी और उलझी हुई गति का ही काम है कि वह विकास और बढ़ती में हो कर नये नये गुनों में तबदील होती रहती हैं. तर्क के शब्दों में वस्तु का उल्टा रूप समझा जाता है. इस Dialectical को, जो उलट-फेर और प्रतियोगता की ख़ासियत रखने वाले डायलेक्टिक्स को तर्क के शब्दों में वस्तु का उल्टा रूप समझा जाता है.

اِس کا مطلب ہے کہ اِس شبد کے پیچھے ایک اتہاس ہے لیکن ہر چیز کے پیچھے ایک سوتر رہتا ہے جو اُس کے ساتھ ساتھ چلا آتا ہے. اور اِس 'Dialectical' شبد کے ساتھ وہ سوتر ہے 'گتی کے وچار' یعنی ہر سمے میں اور ہر جگہ 'Dialectical' شبد کا ارتھ گتی کو بتانے والا ضرور رہا . پہلے پہل شاید اِس کا ارتھ اُس وواد کی گتی سے رہا ہوگا جو دو وادیوں میں ہوتی ہے اور جو وادی پرتی وادی کے نام سے الگ الگ وچار لئے ہوئے ہوتے ہیں . آجکل یہ شبد وچار کی اُلجھی ہوئی گتی بتانے کے ارتھ میں کام میں آتا ہے . اُلجھے اور گوڑھ وچاروں کو لوگ 'Dialectical' کہہ دیتے ہیں . افلاطون نے اپنی "ریپبلک" کتاب میں 'Dialectics' کو اونچے سے اونچی سوجھ بوجھ کے لئے کام میں لیا ہے . اسکی رائے میں 'Dialectics' وہ کلا ہے جو بنیادی وچاروں کے آپسی رشتوں کا حال بتاتی ہے . یہ بنیادی وچار ہی اُس کے لئے انتم ستیہ تھے . بس یوں سمجھئے افلاطون کا 'Dialectics' آدرشواد تھا .

کارل مارکس اور اُس کے انویائیوں کو جو 'ڈائیلیکٹکس' کا وچار سوجھا وہ ہیگل والا 'Dialectics' تھا . 'ہیگل' کو Dialectical آدرشوادی کہا گیا ہے . نئے یگ کا 'ہیگل' سب سے بڑا Dialectical آدرشوادی تھا . ہیگل کا کہنا ہے کہ ستیہ وچار ہے اور اُس کا گن یہ ہے کہ وہ گتی کی بڑھتی میں' روپانتر ہونے میں اپنے آپ کو پرگٹ کرتا ہے . اب Dialectical شبد ماٹی واد کے ساتھ ملکر یہ بتاتا ہے کہ ستیہ اتنا ہی نہیں کہ وہ 'Material' یعنی جڑ ہے لیکن یہ بھی کہ 'جڑ پرکرتی' یا مٹی ہمیشہ گتیمان ہے یعنی اِس میں ہمیشہ ہلچلیں ہوتی رہتی ہیں .

اِس میں اور بھی انیکوں باریکیاں ہیں. 'Dialec-tical' ایک ہی طرح کی گتی کا ذکر نہیں کرتا . وہ ایسی گتی کی بھی بات کہتا ہے جو بیحد الجھی ہوئی ہے اور ساتھ ہی ساتھ وہ بنیادی نمونے کی ہے' جس گتی کو یکتی یکت سدھانت کے نام سے بھی پکارا جا سکتا ہے . اِس سے بھی آگے اُس کا کہنا ہے کہ اُلجھن گتی ہے اور بدلاؤ کے نمونے کے لئے کافی کڑی ہوتی ہے . ایسا نہ ہوتا تو وہ کیسے چلتی پھرتی اور بدلتی دنیا کو نئے نئے روپ دے سکتی ؟ یہ ٹیڑھی میڑھی اور اُلجھی ہوئی گتی کا ہی کام ہے کہ وہ وکاس اور بڑھتی میں ہو کر نئے نئے گنوں میں تبدیل ہوتی رہتی ہیں . رک کے شبدوں میں ستو کا اُلٹا روپ سمجھا جاتا ہے . اس Dialectial کو جو اُلٹ پھیر اور پرتیوگتا کی خاصیت رکھنے والے ڈائیلیکٹکس و ترک کے شبدوں میں وستو کا الٹا روپ سمجھا جاتا ہے.

ता. इसलिये यह सिद्ध होता है कि आदमी के मन बनने से पहले जगत मौजूद था. यहां मिट्टी उसी को नाम दिया गया है जहां से सब चीज़ों का निकास है और जिस में सब चीज़ें बीज रूप से मौजूद हैं.

"Dialectical का अर्थ"

सब देशों और सब समय के माटीवादियों में अगर बिल्कुल नहीं तो बहुत ज़ियादा एक मत मिलेगा—उन मामलों में जो मामूली हैं. पर हम जिस माटीवादी का ज़िक्र कर रहे हैं वह अपने ढंग का अलग है. वह है 'Dialectical' यानी ज़ोरदार, जानदार, नई नई सूझों वाला, हमेशा रूप बदलने वाला और आगे से आगे की तरफ़ चलने वाला. अब अगर आज की हालतों में अकेला माटीवाद ही बहुतों को डरावना मालूम होता है, तब उसके साथ दूसरा शब्द 'Dialectical' तो और भी डरावना सा बना देगा. माना हम इश्तिहारी दुनिया में रहते हैं जहां भड़कीले बिल्ले बड़े काम आते हैं, और शायद दर्शन के नाम के पीछे भी अगर कोई भड़कीला बिल्ला लगा दिया जाय तो शायद वह बहुतों को अपनी तरफ़ खींच ले, फिर चाहे वह बिल्ला भले ही दर्शन के गुनों से कोई भी संबन्ध न रखता हो. लेकिन शायद कोई इश्तिहारी शब्दों का बिल्कुल ध्यान न दे क्योंकि इश्तिहारी बिल्ले चलताऊ चीज़ रहते हैं. वह तो सिर्फ़ यह देखें कि उसमें काम की चीज़ कितनी है. जीवन दर्शन के साथ तो एक आदमी बुनियादी बातों पर ध्यान देगा न कि बाहरी दिखावट पर. और फिर माटीवाद तो अन्तरक़ौमी दर्शन है. वह तो उस वक़्त से क़ायम है जब इश्तिहारबाज़ी ने जन्म भी नहीं लिया था. और शायद उस दिन तक क़ायम रहेगा जब इश्तिहारबाज़ी ख़त्म हो चुकी होगी. ऐसे दर्शन का नाम बदलना तो उससे ऐतिहासिक तत्व का छीन लेना है और यह दर्शन न जाने कितनी पीढ़ियां और कितने देश देख चुका है. उसे इश्तिहारी बिल्ले की अब ज़रूरत नहीं. हर हालत में उसे बिल्ले की ज़रूरत हो या न हो पर इस बात की ज़रूरत ज़रूर है कि पंडित लोग दर्शन की उस खाई को पाट दें जो भूत और वर्तमान के बीच बन गई है या जो भाषाओं और संस्कृतियों के बीच बढ़ती जा रही है. उन्हें चाहिये कि वह इस शब्द का ऐसा अर्थ करें जिसमें सब ज़रूरी बातें समा जायं और बाज़ारू देवता और बोलचाल के मुहावरे खड़े के खड़े देखते रह जायं.

'Dialectical' शब्द दर्शन में बहुत पुराना है और इस क्षेत्र में और शब्दों की तरह समय समय पर इस शब्द के अलग अलग अर्थ होते रहे हैं. अलग अलग दर्शनकारों ने अलग अलग अर्थ में इसका प्रयोग किया है.

تھا ۔ اس لئے یہ سدھ ہوتا ہے کہ آدمی کے من بننے کے پہلے جگت موجود تھا ۔ یہاں مٹی اُسی کو نام دیا گیا ہے جہاں سے سب چیزوں کا نکاس ہے اور جس میں سب چیزیں بیج روپ سے موجود ہیں ۔

"Dialectical کا ارتھ"

سب دیشوں اور سب سمے کے ماٹی وادیوں میں اگر بالکل نہیں تو بہت زیادہ ایک مت ملیگا—اُن معاملوں میں جو معمولی ہیں پر ہم جس ماٹی وادی کا ذکر کر رہے ہیں وہ اپنے ڈھنگ کا الگ ہے ۔ وہ ہے 'Dialectical' یعنی زوردار، جاندار، نئی نئی سوجھوں والا، ہمیشہ روپ بدلنے والا اور آگے سے آگے کی طرف چلنے والا ۔ اب اگر آج کی حالتوں میں اکیلا ماٹی واد ہی بہتوں کو ڈراونا معلوم ہوتا ہے، تب اس کے ساتھ دوسرا شبد 'Dialectical' تو اور بھی ڈراونا سا بنا دیگا ۔ مانا ہم اشتہاری دنیا میں رہتے ہیں جہاں بھڑکیلے بلے بڑے کام آتے ہیں، اور شاید درشن کے نام کے پیچھے بھی اگر کوئی بھڑکیلا بلا لگا دیا جائے تو شاید وہ بہتوں کو اپنی طرف کھینچ لے، پھر چاہے وہ بلا بھلے ہی درشن کے گنوں سے کوئی بھی سمبندھ نہ رکھتا ہو ۔ لیکن شاید کوئی اشتہاری شبدوں کو بالکل دھیان نہ دے کیونکہ اشتہاری بلے چلتاؤ چیز رہتے ہیں ۔ وہ تو صرف یہ دیکھیں کہ اس میں کام کی چیز کتنی ہے ۔ جیون درشن کے ساتھ تو ایک آدمی بنیادی باتوں پر دھیان دیگا نہ کہ باہری دکھاوٹ پر ۔ اور پھر ماٹی واد تو انترقومی درشن ہے ۔ یہ تو اس وقت سے قائم ہے جب اشتہار بازی نے جنم بھی نہیں لیا تھا ۔ اور شاید اس دن تک قائم رہیگا جب اشتہار بازی ختم ہو چکی ہوگی ۔ ایسے درشن کا نام بدلنا تو اس سے اتہاسک تتو کو چھین لینا ہے اور یہ درشن نہ جانے کتنی پیڑھیاں اور کتنے دیش دیکھ چکا ہے ۔ اسے اشتہاری بلے کی اب ضرورت نہیں ۔ ہر حالت میں اسے بلے کی ضرورت ہو یا نہ ہو پر اس بات کی ضرورت ضرور ہے کہ پنڈت لوگ درشن کی اس کھائی کو پاٹ دیں جو بھوت اور ورتمان کے بیچ بن گئی ہے یا جو بھاشاؤں اور سنسکرتیوں کے بیچ بڑھتی جا رہی ہے ۔ انہیں چاہئے کہ وہ اس شبد کا ایسا ارتھ کریں جس میں سب ضروری باتیں سما جائیں اور بازارو دیوتا اور بول چال کے محاورے کھڑے کے کھڑے دیکھتے رہ جائیں ۔

'Dialectical' شبد درشن میں بہت پرانا ہے اور اس چھیتر میں اور شبدوں کی طرح سمے سمے پر اس شبد کے الگ الگ ارتھ ہوتے رہے ہیں ۔ الگ الگ درشن کاروں نے الگ الگ ارتھ میں اس کا پریوگ کیا ہے ۔

माटीवादी जब मिट्टी को ही असलियत मानता है तब वह यह कहना चाहता है कि जो कुछ भी असलियत है यानी जो तत्त्व है वह सब प्रकृति से ही निकला है. प्रकृति यानी पदार्थों का वह क्रम जिसकी जड़ मिट्टी में है और जिस मिट्टी का ही नाम जड़, प्रकृति, मैटर या पदार्थ है. यह मिट्टी आदमी के ज्ञान से परे की चीज़ नहीं. इसे आदमी जानता आया है, जान रहा है और जानता रहेगा. यदि यह प्राकृतिक या जड़मय जगत अपने रूपों में, अपनी पर्यायों में बेहद मालदार और बुरी तरह से उलझा हुआ है जिस के बारे में आज तक की खोज भी यही बताती है वह असलियत या सत्य के सिवा और क्या हो सकता है ? जिस जगत में सब कुछ शामिल है उससे अलग सत्य या असलियत कहां टिकेगी ? जानदार जड़वादी के लिए यह सवाल बड़े महत्त्व के हैं क्योंकि उसे यह साफ दिखाई देता है कि अनन्त के परे या उसके ऊपर कोई चीज़ मानना विचारक के लिए आफत बन बैठेगा. दूसरे शब्दों में अगर प्राकृतिक जगत अनन्त है तो वह हर चीज़ को अपने में समा लेने के लिए काफी होना चाहिये. हर एक चीज़ उसी का हिस्सा होना चाहिये, किसी दूसरी चीज़ का हिस्सा नहीं हो सकती.

यह तो हुआ, पर मिट्टी, मैटर, जड़ या प्रकृति यह असल में है क्या ? असल में यह बात ही ऐसी है, यह सवाल ही ऐसा है जिस का इस समय ठीक ठीक जवाब नहीं दिया जा सकता. आदमी का ज्ञान अब तक इतना बढ़ ही नहीं पाया. इस सवाल के जवाब दे देने का तो यह मतलब होगा कि आदमी ने सब कुछ जान लिया. जो अब तक हो चुका उसका अब तक आदमी को पूरा पूरा ज्ञान नहीं. आदमी कितना ही क्यों न जान ले फिर भी जानने के लिए कुछ बच ही रहेगा. एक ही चीज़ है जिस पर जानदार माटीवाद बहुत ज़ोर देता है और वह यह कि हम मिट्टी पैदा नहीं कर सकते. हम मिट्टी को कितना ही क्यों न जान लें तब भी जानी हुई सारी मिट्टी को हम सत्य का रूप नहीं दे सकते. दूसरे शब्दों में जानदार माटीवादी जिस बात पर ज़ोर देता है कि वह जगत से घिरा हुआ है और वह खुद उस जगत का हिस्सा है. वह मन की बड़ी इज्ज़त करता है लेकिन इस बात में वह कोई समझदारी नहीं देखता कि मन को मिट्टी से पहले मान लिया जाय फिर चाहे वह तर्क के खातिर माना गया हो या दुनियादारी के खातिर. अगर यह प्रश्न रहस्य का रूप न ले तो फिर उसके लिये यह साफ है कि यह बात उस सच्चाई से तय की जाय जिसे विज्ञान ने खोज निकाली है. आज विज्ञान इस हालत में नहीं है कि वह इस बात को ठीक मान ले कि आदमी का मन मिट्टी से पहले पैदा हुआ. उसका तो यही कहना है कि मिट्टी पहले थी और उस के बहुत बाद आदमी का मन

مٹی وادی جب مٹی کو ہی اصلیت مانتا ہے تب وہ یہ کہنا چاہتا ہے کہ جو کچھ بھی اصلیت ہے یعنی جو تتو ہے وہ سب پرکرتی سے ہی نکلا ہے۔ پرکرتی یعنی پدارتھوں کا وہ کرم جس کی جڑ مٹی میں ہے اور جس مٹی کا ہی نام جڑ پرکرتی، میٹر یا پدارتھ ہے۔ یہ مٹی آدمی کے گیان سے پرے کی چیز نہیں۔ اسے آدمی جانتا آیا ہے، جان رہا ہے اور جانتا رہے گا۔ یدی یہ پراکرتک یا جڑ مے جگت اپنے روپوں میں، اپنی پریایوں میں بے حد مالدار اور بری طرح سے الجھا ہوا ہے جس کے بارے میں آج تک کی کھوج بھی یہی بتاتی ہے وہ اصلیت یا ستیہ کے سوا اور کیا ہو سکتا ہے؟ جس جگت میں سب کچھ شامل ہے اس سے الگ ستیہ یا اصلیت کہاں ٹکے گی؟ جاندار جڑوادی کے لئے یہ سوال بڑے مہتو کے ہیں کیونکہ اسے یہ صاف دکھائی دیتا ہے کہ اننت کے پرے یا اس سے اوپر کوئی چیز ماننا وچارک کے لئے آفت بن بیٹھے گا۔ دوسرے شبدوں میں اگر پراکرتک جگت اننت ہے تو وہ ہر چیز کو اپنے میں سما لینے کے لئے کافی ہونا چاہئے۔ ہر ایک چیز اسی کا حصہ ہونا چاہئے، کسی دوسری چیز کا حصہ نہیں ہو سکتی۔

یہ تو ہوا، پر مٹی، میٹر، جڑ یا پرکرتی یہ اصل میں ہے کیا؟ اصل میں یہ بات ہی ایسی ہے، یہ سوال ہی ایسا ہے جس کا اس سمے ٹھیک ٹھیک جواب نہیں دیا جا سکتا۔ آدمی کا گیان اب تک اتنا بڑھ ہی نہیں پایا۔ اس سوال کے جواب دے دینے کا تو یہ مطلب ہوگا کہ آدمی نے سب کچھ جان لیا۔ جو اب تک ہو چکا اس کا اب تک آدمی کو پورا پورا گیان نہیں۔ آدمی کتنا ہی کیوں نہ جان لے پھر بھی جاننے کے لئے کچھ بچ ہی رہے گا۔ ایک ہی چیز ہے جس پر جاندار ماٹی وادی بہت زور دیتا ہے اور وہ یہ کہ ہم مٹی پیدا نہیں کر سکتے۔ ہم مٹی کو کتنا ہی کیوں نہ جان لیں تب بھی جانی ہوئی ساری مٹی کو ہم ستیہ کا روپ نہیں دے سکتے۔ دوسرے شبدوں میں جاندار ماٹی وادی اس بات پر زور دیتا ہے کہ وہ جگت سے گھرا ہوا ہے اور وہ خود اس جگت کا حصہ ہے۔ وہ من کی بڑی عزت کرتا ہے لیکن اس بات میں وہ کوئی سمجھداری نہیں دیکھتا کہ من کو مٹی سے پہلے مان لیا جائے پھر چاہے وہ ترک کے خاطر مانا گیا ہو یا دنیاداری کے خاطر۔ اگر یہ پرشن رہسیہ کا روپ نہ لے تو پھر اس کے لئے یہ صاف ہے کہ یہ بات اس سچائی سے طے کی جائے جسے وگیان نے کھوج نکالی ہے۔ آج وگیان اس حالت میں نہیں ہے کہ وہ اس بات کو ٹھیک ٹھیک مان لے کہ آدمی کا من مٹی سے پہلے پیدا ہوا۔ اس کا تو یہی کہنا ہے کہ مٹی پہلے تھی اور اس کے بہت بعد آدمی کا من

सकता है कि माटीवाद को निर्लज्ज माटीवाद क्यों न कहा जाय ?

माटीवाद आज की चीज़ नहीं. इसका अपना इतिहास है. यह बताना मुश्किल है कि यह कितना पुराना है. यह जानकर तो और भी अचरज होगा कि लोकशाही प्रथा की अमूल्य देन इसी माटीवाद की देन है. भारत के पुराने समय में यह मौजूद था और पुराने यूनान में भी मौजूद था. इतिहास यह कहता ही है कि फ्रांस की क्रांति की जड़ में माटीवाद और माटीवादी था.

माटीवाद को जिन अर्थों में यहां दिया गया है वह असल में है क्या चीज़ ? यह तो हम देख ही चुके कि माटीवाद राजकाजी और समाजी क्षेत्र में क्या क्या गुल खिलाता है, नीति को क्या रंग देता है और कला दर्शन को किस रूप में खड़ा करता है. अब तो सिर्फ़ यह देखना है कि वह तत्वज्ञान के बारे में क्या राय रखता है. तत्वज्ञान यानी ऑन्टोलॉजी का यही तो विषय है कि असलियत क्या है और यह जगत क्या है ? दर्शन का मूलभाग भी यही है. वह भी असलियत और जगत के भीतर प्रवेश करता है, उसी का हाल बताता है, महासत्ता का भेद बताता है, उस कुल का पता लगाता है जिस के हम भाग हैं. जानदार माटीवादी को यानी डाइलेक्टिकल मेटेरियेलिस्ट को जगत कैसा दिखाई देता है यह बात पहले कही जा चुकी है. यह भी कहा जा चुका है कि जगत का एक बुनियादी गुन है जिसको अभी शब्दों में नहीं रखा जा सकता. इससे ज़ियादा जानदार माटीवादी और क्या कहेगा ? अपने विचार को वह और किस तरह तेज़ करे ? और इस से गहरा क्या कहा जाय ? यह कहना कि माटीवाद माने माटी को ही तत्व कहना है, यह है तो ठीक पर इससे मतलब बराबरी नहीं होती यानी कुछ भेद नहीं खुल पाता. मिट्टी को तत्व कहने का यह मतलब भी निकल सकता है कि उसको तत्व कहने से इन्कार है जो छुआ नहीं जा सकता यानी जो इन्द्रियों की पकड़ में नहीं आता. जानदार माटीवादी किसी चीज़ के होने से इन्कार नहीं करता सिर्फ़ इसलिये कि वह निरपेक्ष है या नीतिगुन वाली है. उसको इस में भी दिलचस्पी नहीं है कि वह जगत को सीधी सादी चीज़ बना दे. हां इस में शक नहीं, वह यह ज़रूर चाहता है कि बुद्धि की राह की वह सब रुकावटें दूर हो जायं जिन्हें वह कोरी ख़याली समझता है क्योंकि वह सब सत्य की अनन्तता को हद से ज़ियादा सीधा सादा बना देती हैं और उन मांगों को पूरा नहीं करना चाहती जो जगत की उलझन में से पैदा होते हैं. जगत उलझा हुआ है. उस को बिना सुलझाए सुलझा हुआ कह डालना माटावादी को नहीं सुहाता.

سکتا ہے کہ ماٹی واد کو نرلج ماٹی واد کیوں نہ کہا جائے ؟

ماٹی واد آج کی چیز نہیں . اس کا اپنا اتہاس ہے . یہ بتانا مشکل ہے کہ یہ کتنا پرانا ہے . یہ جان کر تو اور بھی اچرج ہوگا کہ لوک شاہی پرتھا کی امولیہ دین اسی ماٹی واد کی دین ہے . بھارت کے پرانے سمے میں یہ موجود تھا . اتہاس یہ کہتا ہی ہے کہ فرانس کی کرانتی کی جڑ میں ماٹی واد اور ماٹی وادی تھا .

ماٹی واد کو جن ارتھوں میں یہاں دیا گیا ہے وہ اصل میں ہے کیا چیز ؟ یہ تو ہم دیکھ ہی چکے کہ ماٹی واد راج کاجی اور سماجی چھیتر میں کیا کیا گل کھلاتا ہے' نیتی کو کیا رنگ دیتا ہے اور کلا—درشن کو کس روپ میں کھڑا کرتا ہے. اب تو صرف یہ دیکھنا ہے کہ وہ تتوگیان کے بارے میں کیا رائے رکھتا ہے . تتوگیان یعنی آنٹولوجی کا یہی تو وشے ہے کہ اصلیت کیا ہے اور یہ جگت کیا ہے ؟ درشن کا مول بھاگ بھی یہی ہے . وہ بھی اصلیت اور جگت کے بھیتر پرویش کرتا ہے' اسی کا حال بتاتا ہے' مہاستّا کا بھید بتاتا ہے' اس کل کا پتہ لگاتا ہے جس کے ہم بھاگ ہیں . جاندار ماٹی وادی کو یعنی ڈائلیکٹکل میٹیریلسٹ کو جگت کیسا دکھائی دیتا ہے یہ بات پہلے کہی جا چکی ہے . یہ بھی کہا جا چکا ہے کہ جگت کا ایک بنیادی گن ہے جس کو ابھی شبدوں میں نہیں رکھا جا سکتا . اس سے زیادہ جاندار ماٹی وادی اور کیا کہے گا ؟ اپنے وچار کو وہ اور کس طرح تیز کرے ؟ اور اس سے گہرا کیا کہا جائے ؟ یہ کہنا کہ ماٹی واد یعنی ماٹی کو ہی تتو کہنا ہے' یہ ہے تو ٹھیک پر اس سے مطلب برآمد نہیں ہوتی یعنی کچھ بھید کھل نہیں پاتا . مٹی کو تتو کہنے کا یہ مطلب بھی نکل سکتا ہے کہ اس کو تتو کہنے سے انکار ہے جو چھوا نہیں جا سکتا یعنی جو اندریوں کی پکڑ میں نہیں آتا . جاندار ماٹی وادی کسی چیز کے ہونے سے انکار نہیں کرتا صرف اس لئے کہ وہ نرپیکش ہے یا نیتی گن والی ہے . اس کو اس میں بھی دلچسپی نہیں ہے کہ وہ جگت کو سیدھی سادی چیز بنا دے . ہاں اس میں شک نہیں' وہ یہ ضرور چاہتا ہے کہ بدھی کی راہ کی وہ سب رکاوٹیں دور ہو جائیں جنہیں وہ کوری خیالی سمجھتا ہے کیونکہ وہ سب ستیہ کی اننتتا کو حد سے زیادہ سیدھا سادہ بنا دیتی ہے اور ان مانگوں کو پورا نہیں کرنا چاہتی جو جگت کی الجھن میں سے پیدا ہوتے ہیں . جگت الجھا ہوا ہے . اس کو بنا سلجھائے سلجھا ہوا کہ ڈالنا ماٹی وادی کو نہیں سہاتا .

का शायद ही कोई बारह बरस की उमर का ऐसा बच्चा हो जो यह न जानता हो कि सबसे ज़ियादा मूल्यवान है वह जो न छूआ जा सकता है, न देखा जा सकता है, न सुना जा सकता है न सूंघा जा सकता है यानी जो अजड़ या अमाटी है; और बिल्कुल निकम्मी है वह चीज़—जो छुई जा सकती है, देखी जा सकती है, सुनी और सूंघी जा सकती है यानी जो अजड़ या अमाटी नहीं है यानी कुछ है. जो बालक अपने तन को जितना निकम्मा समझे और जितनी उसे गाली दे उतनी ही उसकी तारीफ़ होगी. बड़े बूढ़े और गुरुजन सब उसकी पीठ ठोकेंगे, उसे गले लगायेंगे. अब इस बात के समझने में कहां दिक़्क़त होती है कि जड़ और विचारों में यानी जड़ और चेतन में एक दुश्मनी खड़ी हो गई है. जड़ पदार्थ और आदर्श एक दूसरे के ख़िलाफ़ डंडा लिये खड़े हैं. हमको किसी एक तरफ़ मिलना ही होगा. बस माटीवादी वह जो विचार और चेतन को गालियां सुनाए और जड़ पदार्थ के गीत गाये और नीति अनीति की बिल्कुल परवाह न करे.

इतिहास के पन्ने पलट जाइये। कहीं एक भी माटीवादी न मिलेगा जो इन विचारों पर पूरा उतर सके. फिर भी न जाने क्यों माटीवादियों के ख़िलाफ़ एक हवा फैली हुई है. वह हवा रुकती ही नहीं. न रुके न सही, वह तो कभी कभी आंधी और तूफ़ान का रूप ले लेती है. जो दर्शनकार अपने आप को माटीवादी कहते हैं वह न तो मन से इन्कार करते हैं, न आदर्शों से इन्कार करते हैं, न विचारों से. वह कला के गुन गाते हैं, विज्ञान की उन्नति करते हैं, दूसरे लोगों के जीवन को अच्छा बनाकर ऊंचा उठाते हैं. हां, उन्हें इन्कार है तो एक चीज़ से, सुपरनैचुरलिज़्म से यानी अदृशवाद से. एक माटीवादी ही नहीं, दूसरे और दार्शनिक भी हैं जो अदृशवाद से इन्कार करते हैं. अदृशवाद में कर्तावाद और ईश्वरवाद भी शामिल हैं. जड़वादी चेतन को जड़ से कम प्यार नहीं करता, माटीवादी मत और विचार दोनों का आदर करता है. उसका तो कहना है कि जड़ चेतन एक मेक हैं. मिट्टी और विचार अलग अलग नहीं. जड़ में ही वह चीज़ मिलेगी जो बड़ी मोल वाली है. मिट्टी में ही वह चीज़ समाई हुई है जिसका मोल आंका नहीं जा सकता. माटीवादी को तो सिर्फ़ अलहदगी से इन्कार है. वह मैटर और इनर्जी को यानी पदार्थ और शक्ति को अलग अलग नहीं देख पाता, अलग अलग समझ नहीं सकता.

लोगों ने यह भी कोशिश की कि माटीवाद का बदनाम बिल्ला दर्शन पर से उतार फेंका जाय और कोई दूसरा बिल्ला लगाया जाय जैसे, मानवी, प्राकृतिक, नास्तिक, अनुभवी, साक्षाती वग़ैरह. कोई चिढ़कर यह भी कह

کا شاید ہی کوئی بارہ برس کی عمر کا ایسا بچہ ہو جو یہ نہ جانتا ہو کہ سب سے زیادہ مولیہ‌وان ہے وہ—جو نہ چھوا جاسکتا ہے' نہ دیکھا جاسکتا ہے' نہ سنا جاسکتا ہے' نہ سونگھا جاسکتا ہے' یعنی جو اجڑ یا اماٹی ہے' اور بالکل نکمی ہے. وہ چیز—جو چھوئی جاسکتی ہے' سنی اور سونگھی جاسکتی ہے یعنی جو اجڑ یا اماٹی نہیں ہے یعنی کچھ ہے. جو بالک اپنے تن کو جتنا نکما سمجھے اور جتنی اسے گالی دے اتنی ہی اسکی تعریف ہوگی. بڑے بوڑھے اور گروجن سب اسکی پیٹھ ٹھونکینگے' اسے گلے لگائینگے. اب اس بات کے سمجھنے میں کہاں دقت ہوتی ہے کہ جڑ اور وچاروں میں یعنی جڑ اور چیتن میں ایک دشمنی کھڑی ہوگئی ہے. جڑ پدارتھ اور آدرش ایک دوسرے کے خلاف ڈنڈا لئے کھڑے ہیں. ہم کو کسی ایک طرف ملنا ہی ہوگا. بس ماٹی‌وادی وہ جو وچار اور چیتن کو گالیاں سنائے اور جڑ پدارتھ کے گیت گائے اور نیت انیت کی پرواہ نہ کرے.

اتہاس کے پنے پلٹ جائیے. کہیں ایک بھی ماٹی‌وادی نہیں ملیگا جو ان وچاروں پر پورا اتر سکے. پھر بھی نہ جانے کیوں ماٹی‌وادیوں کے خلاف ایک ہوا پھیلی ہوئی ہے. وہ ہوا رکتی ہی نہیں. نہ رکے نہ سہی' وہ تو کبھی کبھی آندھی اور طوفان کا روپ لے لیتی ہے. جو درشن کار اپنے آپ کو ماٹی وادی کہتے ہیں وہ نہ تو من سے انکار کرتے ہیں' نہ آدرشوں سے انکار کرتے ہیں' نہ وچاروں سے. وہ کلا کے گن گاتے ہیں' وگیان کی انتی کرتے ہیں' دوسرے لوگوں کے جیون کو اچھا بنا کر اونچا اٹھاتے ہیں. ہاں' انہیں انکار ہے تو ایک چیز سے' سپرنیچرلزم سے یعنی ادرشواد سے. ایک ماٹی وادی ہی نہیں' دوسرے اور دارشنک بھی ہیں جو ادرشواد سے انکار کرتے ہیں. ادرشواد میں کرتاواد اور ایشور واد بھی شامل ہیں. جڑوادی چیتن کو جڑ سے کم پیار نہیں کرتا' ماٹی وادی من اور وچار دونوں کا آدر کرتا ہے. اس کا تو کہنا ہے کہ ایک میک ہیں. مٹی اور وچار الگ الگ نہیں. جڑ میں ہی وہ چیز ملے گی جو بڑی مول والی ہے. مٹی میں ہی وہ چیز سمائی ہوئی ہے جس کا مول آنکا نہیں جا سکتا. ماٹی وادی کو تو صرف علیحدگی سے انکار ہے. وہ میٹر اور انرجی کو یعنی پدارتھ اور شکتی کو الگ الگ نہیں دیکھ پاتا' الگ الگ سمجھ نہیں سکتا.

لوگوں نے یہ بھی کوشش کی کہ ماٹی واد کا بدنام بلا درشن پر سے اتار پھینکا جائے اور کوئی دوسرا بلا لگایا جائے جیسے مانوی' پراکرتک' ناستک' انبھوی' ساکشاتی وغیرہ. کوئی چڑھکر یہ بھی کہ

के यह कसम खा ली है कि माटीवाद को पढ़ना ही नहीं, सिर्फ गाली सुनाए जाना. बस अब यह हाल हो गया है कि जो माटीवाद को गाली दे वही भला आदमी और जो तारीफ करे वह बुरा.

जान स्टुअर्ट मिल के ज़माने में यूटीलिटेरियेनिज़्म यानी उपयोगितावाद इसी तरह बदनाम हुआ था. हिन्दुस्तानी दार्शनिकों ने तो उपयोगितावाद के लिये पेट दर्शन नाम दिया था. नाम बुरा नहीं, पर बुरी नियत से नाम दिया था, उपयोगितावाद की खिल्ली उड़ाई थी. जान स्टुअर्ट मिल के उपयोगितावाद को कोसने वालों को यह शब्द कहने पड़े थे—"It may not be superfluous to notice a few of the more common mis-apprehensions ... even those which are so obvious and gross that it might appear impossible for any person of candour and intelligence to fall into them; since persons, even of considerable mental endowments, often give themselves so little trouble to understand the bearings of any opinion against which they entertain a prejudice, and men are in general so little conscious of this voluntary ignorance as a defect, that the vulgarest misunderstandings of ethical doctrines are continually met with in the deliberate writings of persons of the greatest pretensions both to high principle and to philosophy."

नतीजा यह हुआ है कि विद्यार्थी अनजाने ही माटीवाद के खिलाफ अपने अन्दर एक पक्ष खड़ा कर लेता है और जा बेजा उससे काम लेता रहता है. उसने अपनी उमर भर में चाहे कभी भी किसी माटीवादी को न देखा हो फिर भी अगर उससे किसी माटीवादी का परिचय कराया जाय तो वह शायद शमशर्मी उससे हाथ भी मिला ले पर समझता यही रहेगा कि उसने ऐसा कर के बहुत बड़ा पाप किया. उसका मन यही मानता रहेगा कि उसने किसी बहुत बुरे आदमी से हाथ मिलाया जिसे दुनिया पापी कहे उसे वह क्यों न पापी समझे ? यह आजकल का फ़ैशन ही हो गया है कि मिट्टी, जड़ या देह से नफ़रत दिखाना. इसी सिलसिले में यह दुनिया और यह लोक भी आ जाता है.

जहां माटीवाद से इतनी नफ़रत है वहां अनजाने ही आदर्शवाद से मुहब्बत भी मिलती है. जड़ को गाली दे कर विचार या चेतन की तारीफ करना ही पड़ेगी. हिन्दुस्तान

کے یہ قسم کھالی ہے کہ ماٹی واد کو پڑھنا ہی نہیں' صرف گالی سنائے جانا. بس اب یہ حال ہوگیا ہے کہ جو ماٹی واد کو گالی دے وہی بھلا آدمی اور جو تعریف کرے وہ برا.

جان اسٹورٹ مل کے زمانے میں یوٹیلیٹیریینزم یعنی اپیوگتاواد اسی طرح بدنام ہوا تھا. ہندستانی دارشنکوں نے تو اپیوگتاواد کے لئے پیٹ درشن نام دیا تھا. نام برا نہیں' پر بری نیت سے نام دیا تھا' اپیوگتاواد کی کھلی اڑائی تھی. جان اسٹورٹ مل کے اپیوگتاواد کو کوسنے والوں کو یہ شبد کہنے پڑے تھے- "It may not be superfluous to notice a few of the more common mis-apprehensions...even those which are so obvious and gross that it might appear impossible for any person of candour and intelligence to fall into them; since persons, even of considerable mental endowments, often give themselves so little troubles to understand the bearings of any opinion against which they entertain a prejudice, and men are in general so little conscious of this voluntary ingnorance as a defect, that the vulgarest misunderstandings of ethical doctrines are continually met with in the deliberate writings of persons of the greatest pretensions both to high principle and to philosophy."

نتیجہ یہ ہوا کہ ودیارتھی انجانے ہی ماٹی واد کے خلاف اپنے اندر ایک پکش کھڑا کرلیتا ہے اور جابےجا اس سے کام لیتا رہتا ہے. اس نے اپنی عمر بھر میں چاہے کبھی بھی کسی ماٹی وادی کو نہ دیکھا ہو پھر بھی اگر اس سے کسی ماٹی وادی سے پریچے کرایا جائے تو وہ شاید شرماشرمی ہاتھ بھی ملا لے پر سمجھتا یہی رہیگا کہ اس نے ایسا کرکے بہت بڑا پاپ کیا.

اس کا من یہی مانتا رہیگا کہ اس نے کسی بہت برے آدمی سے ہاتھ ملایا. جسے دنیا پاپی کہے اسے وہ کیوں نہ پاپی سمجھے؟ یہ آجکل کا فیشن ہی ہوگیا ہے کہ مٹی' جڑ یا دیہ سے نفرت دکھانا. اسی سلسلہ میں یہ دنیا اور یہ لوک بھی آجاتا ہے.

جہاں ماٹی واد سے اتنی نفرت ہے وہاں انجانے ہی آدرش واد سے محبت بھی ملتی ہے. جڑ کو گالی دیکر وچار یا چیتنی کی تعریف کرنا ہی پڑیگی. ہندستان

माटीवाद का मतलब क्या ?

मेटेरियेलिज़्म और डाइलेक्टिकल यानी माटीवाद और जानदार इन शब्दों का अर्थ क्या है इसे खोल कर बताना ही होगा क्योंकि यह दर्शन के नाम का हिस्सा है. दर्शन की बहुत कुछ खासियत इन शब्दों में मौजूद है. यह दोनों बदनाम भी बहुत हैं.

हम में से थोड़े ही ऐसे निकलेंगे जो माटीवाद का नाम सुन कर नाक भौं न सिकोड़ें. आज की सभ्यता की आबोहवा में माटीवाद पर कीचड़ न उलीची जाय तो अचरज ही होगा. आज की सभ्यता का माटीवाद को गाली देना स्वभाव हो गया है. पंडितों तक का यह हाल है कि वह बिना सोचे समझे माटीवाद पर ऐसे ही फ़िक़रे कस बैठते हैं जैसे नास्तिकता पर. कुछ की निगाह में नास्तिकता और माटीवाद एक अर्थ वाले शब्द हैं. जिस तरह नये ढंग का कपड़ा आंखों को खटकता है वैसे ही पढ़े लिखे जगत में यह माटीवाद खटकता है. पढ़े लिखों को ऐसा मालूम होता है मानो माटीवाद उन्हें मिट्टी में मिला देगा. आज या कल यों तो वह माटीवाद के बिना भी मिट्टी में मिल जाते पर न जाने क्यों उस माटीवाद से डरते हैं जिसकी उन्हें एक न एक दिन शरन लेनी ही होगी. कोई रिवाज कितना ही बेतुका क्यों न हो पर यह ज़रूरी नहीं कि उससे कुछ फ़ायदा न हो. किसी भी बुरे से बुरे रिवाज को अपनाकर उससे फ़ायदा उठाया जा सकता है. आदमी का लालच रिवाजों में हमेशगी की जान फूंक देता है.

कारन कुछ भी हो, हमने जड़वाद या माटीवाद के बारे में जो राय बना रखी है वह ऊपर ऊपर की ज़रूर है क्योंकि हमने कभी अपने को यह तकलीफ़ देने की ज़रूरत नहीं समझी कि माटीवाद को सिर से पैर तक पढ़ तो जांय. बहुत से इल्ज़ाम हमने माटीवाद पर ऐसे लगा रखे हैं जो उस दर्शन में नाम के लिये नहीं हैं. यह दर्शनकार के प्रति अन्याय है या नहीं ? आर्य समाजी और राधास्वामी धर्म वाले बहुत दिनों तक ऐसे कामों के लिये बदनाम रहे जो उनमें नाम को नहीं थे. जितनी भद्दी से भद्दी बातें हैं, जितने जंगली काम हैं वह सबके सब जड़वाद या माटीवाद के सिर मढ़ दिये गये हैं और मढ़े हैं उन्होंने जिन्होंने किसी माटीवादी की कोई किताब नहीं पढ़ी. माटीवाद की किताबों का यह हाल है कि बड़ी आसानी से मिल जाती हैं और बहुत साफ़ साफ़ इबारत में लिखी हुई हैं. फिर भी लोग उन्हें पढ़ते नहीं, उन पर टीका कर बैठते हैं. कुछ ऐसा मालूम होता है कि सब भलेमानुसों ने एक कान्फ़्रेन्स कर

ماٹی‌واد کا مطلب کیا

میٹیریلزم اور ڈائی لیکٹیکل یعنی ماٹی‌واد اور جاندار ان شبدوں کا ارتھ کیا ہے اسے کھولکر بتانا ہی ہوگا کیونکہ یہ درشن کے نام کا حصہ ہے. درشن کی بہت کچھ خاصیت ان شبدوں میں موجود ہے یہ دونوں بدنام بھی بہت ہیں.

ہم میں سے تھوڑے ہی ایسے نکلینگے جو ماٹی‌واد کا نام سنکر ناک بھوں نہ سکوڑیں. آجکی سبھیتا کی اب و ہوا میں ماٹی‌واد پر کیچڑ نہ اُلیچی جائے تو اچرج ہی ہوگا. آجکی سبھیتا کا ماٹی‌واد کو گالی دینا سوبھاؤ ہوگیا ہے. پنڈتوں تک کا یہ حال ہے کہ وہ بنا سوچے سمجھے ماٹی‌واد پر ایسے ہی فقرے کس بیٹھتے ہیں جیسے ناستکتا پر. کچھ کی نگاہ میں ناستکتا اور ماٹی‌واد ایک ارتھ والے شبد ہیں. جس طرح نئے ڈھنگ کا کپڑا آنکھوں کو کھٹکتا ہے ویسے ہی پڑھے لکھے جگت میں یہ ماٹی‌واد کھٹکتا ہے. پڑھے لکھوں کو ایسا معلوم ہوتا ہے مانو ماٹی‌واد انہیں مٹی میں ملا دیگا. آج یا کل یوں تو وہ ماٹی‌واد کے بنا بھی مٹی میں مل جاتے پر یہ نہ جانے کیوں اس ماٹی‌واد سے ڈرتے ہیں جسکی انہیں ایک نہ ایک دن شرن لینی ہوگی. کوئی رواج کتنا ہی بیتکا کیوں نہ ہو پر یہ ضروری نہیں کہ اس سے کچھ فائدہ نہ ہو. کسی بھی برے سے برے رواج کو اپناکر اس سے فائدہ اٹھایا جا سکتا ہے. آدمی کا لالچ رواجوں میں ہمیشگی کی جان پھونک دیتا ہے.

کارن کچھ بھی ہو، ہم نے جڑواد یا ماٹی‌واد کے بارے میں جو رائے بنا رکھی ہے وہ اوپر اوپر کی ضرور ہے کیونکہ ہم نے کبھی اپنے کو یہ تکلیف دینے کی ضرورت نہیں سمجھی کہ ماٹی‌واد کو سر سے پیر تک پڑھ تو جائیں. بہت سے الزام ہم نے ماٹی‌واد پر ایسے لگا رکھے ہیں جو اس درشن میں نام کے لئے نہیں ہیں. یہ درشنکار کے پرتی انیائے ہے یا نہیں؟ آریہ سماجی یا رادھا سوامی دھرم والے بہت دنوں تک ایسے کاموں کے لئے بدنام رہے جو ان میں نام کو نہیں تھے. جتنی بھدی سے بھدی باتیں ہیں، جتنے جنگلی کام ہیں وہ سب کے سب جڑواد یا ماٹی‌واد کے سر مڑھ دئے گئے ہیں اور مڑھے ہیں انہوں نے جنہوں نے کسی ماٹی‌وادی کی کوئی کتاب نہیں پڑھی. ماٹی‌واد کی کتابوں کا یہ حال ہے کہ بڑی آسانی سے مل جاتی ہیں اور بہت صاف صاف عبارت میں لکھی ہوئی ہیں پھر بھی لوگ انہیں پڑھتے نہیں، ان پر ٹیکا کر بیٹھتے ہیں. کچھ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ سب بھلے مانسوں نے ایک کانفرنس کر

य और पीली टोपी और सफ़ेद टोपी वालों में तनिक । फ़रक़ न रहने पाये मेरा विश्वास भी यही है कि यह ीन गिरोह ठीक कहता है. यहां मैं अपनी योरप की भ्यता को धन्यवाद देता हूं कि उस के प्रभाव से काली पी वाले नौजवान अपने आप को फ़िरंगी दोस्त समझने गे हैं और अपने को फ़िरंगी ज्ञान विज्ञान का जनने वाला ताते हैं. उन्होंने इन्सानी बराबरी के भाव को ले लिया और चाहते हैं अपने देश में इस के फलदायक बीज ोयें. पते की बात यह है कि यह जो एस्पांटो भाशा है जिस कितनी ही भाशाओं के शब्द हैं और जिसे अन्तरराश्ट्री भाशा होना चाहियं और जिस के फैलाने और रिवाज देने लिये बड़े बड़े कश्ट उठाए जा रहे हैं ईरान में अभी से चलित है. शौक़ीनों का गिरोह इस भाशा के सिवाय और कोई बोली नहीं बोलता. इन की भाशा का समझना जो योरपी भाशाओं के शब्दों से बनी है और जिस में कभी कभी कुछ फ़ारसी, अरबी और तुर्की के शब्द आ जाते हैं हमारे लिये ज़रा भी कठिन नहीं है.

यह है मेरी सारी देख भाल, सारे सोच विचारों का निचोड़ जो कुछ मैंने ईरान के पुरुषों, स्त्रियों, ईरानी क़ौम और सरकार के बारे में देखा और विचारा.

इस्लाम के ख़लीफ़ा जी ने जो पुस्तक लिखी है उसके तीसरे अध्याय के यह अंतिम वाक्य थे उस पुस्तक को पढ़ कर मुझे बड़ा आनन्द मिला. मैंने उस के अन्त में नीचे के जुमले फ़ारसी लिपि में लिख कर पुस्तक को मालिक के पास डाक द्वारा लौटा दिया :—

यह पुरुष यह स्त्री—जैसी देग वैसे चुकन्दर ।
यह क़ौम यह सरकार—जैसी देग वैसे चुकन्दर ।
यह महकमे यह सलाहकार—जैसी देग वैसे चुकन्दर ॥

एक भारतीय दार्शनिक से यह पूछे जाने पर कि उस की राय में, विश्व में सब से सुन्दर दो चीज़ें कौन सी हैं उसने जवाब दिया, हमारे सिरों के ऊपर सितारों का प्रकाश, और हमारे दिलों के अन्दर कर्तव्य की भावना.

—बॅसेंट

جائے اور پیلی ٹوپی اور سفید ٹوپی والوں میں تنک بھر فرق نہ رہنے پائے میرا وشواس بھی یہی ہے کہ یہ شوقین گروہ ٹھیک کہتا ہے . یہاں میں اہلِ یورپ کی سبھیتا کو دھنیہ‌واد دیتا ہوں کہ اس کے پربھاؤ سے کالی ٹوپی والے نوجوان اپنے آپ کو فرنگی دوست سمجھنے لگے ہیں اور اپنے کو فرنگی گیان وگیان کا جاننے والا بتاتے ہیں . انہوں نے انسانی برابری کے بھاؤ کو لے لیا ہے اور چاہتے ہیں اپنے دیش میں اس کے پھلدایک بیج بوئیں . پتے کی بات یہ ہے کہ یہ جو اسپرانٹو بھاشا ہے جس میں کتنی ہی بھاشاؤں کے شبد ہیں اور جسے انتر راشٹری بھاشا ہونا چاہئے اور جس کے پھیلانے اور رواج دینے کے لئے بڑے بڑے کشٹ اٹھائے جا رہے ہیں ایران میں ابھی سے پرچلت ہے . ان شوقینوں کا گروہ اس بھاشا کے سوائے اور کوئی بولی نہیں بولتا . ان کی بھاشا کا سمجھنا جو یورپی بھاشاؤں کے شبدوں سے بنی ہے اور جس میں کبھی کبھی کچھ فارسی، عربی اور ترکی کے شبد آ جاتے ہیں ہمارے لئے ذرا بھی کٹھن نہیں ہے .

یہ ہے میری ساری دیکھ بھال اور سوچ وچاروں کا نچوڑ جو کچھ میں نے ایران کے پرشوں، استریوں، ایرانی قوم اور سرکار کے بارے میں دیکھا اور وچارا .

اسلام کے خلیفہ جی نے جو پستک لکھی ہے اس کے تیسرے ادھیائے کے یہ انتم واکیہ تھے . اس پستک کو پڑھ کر مجھے بڑا آنند ملا . میں نے اس کے انت میں نیچے کے جملے فارسی لپی میں لکھ کر پستک کو مالک کے پاس ڈاک دوارا لوٹا دیا :—

یہ پرش یہ استری—جیسی دیگ ویسے چقندر
یہ قوم یہ سرکار—جیسی دیگ ویسے چقندر
یہ محکمے یہ صلاحکار—جیسی دیگ ویسے چقندر

ایک بھارتیہ دارشنک سے یہ پوچھے جانے پر کہ اسکی رائے میں، وشو میں سب سے سندر دو چیزیں کون سی ہیں، اس نے جواب دیا، ہمارے سروں کے اوپر ستاروں کا آکاش، اور ہمارے دلوں کے اندر کرتویہ کی بھاونا .

—باسینٹ

(यहां यह बात बता देनी चाहिये कि हम्मामी मियां मालूम होता है अरबी शब्दों के बारे में बड़े पंडित नहीं हैं, क्योंकि "कल्ब" (कुत्ता) का अनुवाद उन्होंने "सियार" किया है. पर एक मुहावरा है "सगे ज़र्द बिरादरे शग़ाल" जिस का अर्थ है "पीला कुत्ता सियार का भैया" और इस कहावत के अनुसार कुछ बहुत अन्तर नहीं पड़ता)

काली टोपी वालों की सभा का एक क़ानून है. उसकी रू से उन के लिये आवश्यक है कि जो काम भी करें और जो बात भी बोलें उस की ग़रज़ अपना स्वार्थ होना चाहिये. योरप में मैंने सुना था कि स्वकीय लाभ का सिद्धांत एक अंगरेज़ दार्शनिक की (सेल्फ इंटरेस्ट) ईजाद है. पर जानना चाहिये कि उस अंगरेज़ दार्शनिक के दादा ने भी संसार में पग नहीं रखा होगा जब ईरान में यह सिद्धांत उन्नति की प्रकाष्ठा को पहुंच चुका था. इस से यह भी मालूम होता है कि योरप का सारा ज्ञान और संस्कृति पूरबी देशों की देन है.

इन काली टोपी वालों को पूरी कोशिश है कि ईरान के सारे देश में शान्ति और अमन क़ायम रहे. वह जानते हैं कि सारे झगड़े टंटे, विरोध और दुर्भाग्य पैसे से उपजते हैं. इसीलिये वह सदा इसी उधेड़बुन, खींचतान में लगे रहते हैं कि किसी के हाथ में पैसा न रहने पाए. जहां रुपये का सुराग़ मिलता है हथिया लेते हैं. इस ग़रज़ को पूरा करने के लिये ईरानी अफ़सरों को हमेशा देश के सब प्रान्तों, प्रदेशों में भेजते रहते हैं और जिस वसीले से हो किसी के पास पैसा नहीं जमा होने देते. इस चतुर तरकीब के सहारे वह सैकड़ों आफ़तों से बचे रहते हैं. साथ ही ईरान का पैसा ईरान ही में रहता है और परदेस नहीं जाता, या जाता है मोहन की जेब से सोहन की जेब में. सच तो यह है कि योरप के सरकारी अफ़सरों को चाहिये इन से शिक्षा लें और अपने ग़रीब देश वासियों को आपत्तियों के इन साधनों यानी रुपए पैसे के जमा होने से बचाएं.

इन काली टोपी वालों का एक गिरोह दाढ़ियों को मुंडवाता है और मूछों को चमकाता है. टोपियों को छोटा करके सिर पर टेढ़ा पहनता है. इन को "फोकोली" अर्थात् "शौक़ीन" कहते हैं.

यह गिरोह दीवान के विधान में सुधार का पक्षपाती है. मिसाल के लिये कहते हैं अभी तक सफ़ेद टोपी वाले यानी मुल्लाओं पर विधान की सारी धाराएं पूरी तरह नहीं लगाई गईं. कभी कभी उन की सम्पत्ति के इन्तज़ाम में बड़ी गोलमाल होती है. ज़रूरत इस बात की है कि भविष्य में सब के साथ पूरी बराबरी का व्योहार किया

یہاں یہ بات بتا دینی چاہئے کہ حمامی میاں معلوم ہوتا ہے عربی شبدوں کے بارے میں بڑے پنڈت نہیں ہیں کیونکہ "کلب" (کتا) کا انواد انہوں نے "سیار" کیا ہے. پر ایک محاورہ ہے "سگ زرد برادر شغال" جس کا ارتھ ہے "پیلا کتا سیار کا بھیا" اور اس کہاوت کے انوسار کچھ بہت انتر نہیں پڑتا.)

کالی ٹوپی والوں کی سبھا کا ایک قانون ہے. اسکی رو سے ان کے لئے آوشیک ہے کہ جو کام بھی کریں اور جو بات بھی بولیں اسکی غرض اپنا سوارتھ ہونا چاہئے. یورپ میں میں نے سنا تھا سوکیہ لابھ (سیلف انٹریسٹ) کا سدھانت ایک انگریز دارشنک کی ایجاد ہے. پر جاننا چاہئے کہ اس انگریز دارشنک کے دادا نے بھی سنسار میں پگ نہیں رکھا ہوگا جب ایران میں یہ سدھانت انتی کی پراکاشٹا کو پہونچ چکا تھا. اس سے یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ یورپ کا سارا گیان اور سنسکرتی پوربی دیشوں کی دین ہے.

اس کالی ٹوپی والوں کی پوری کوشش ہے کہ ایران کے سارے دیش میں شانتی اور امن قائم رہے. وہ جانتے ہیں سارے جھگڑے ٹنٹے، ورودھ اور دربھاگیہ پیسے سے اپجتے ہیں. اسی لئے وہ سدا اسی ادھیڑ بن، کھینچ تان میں لگے رہتے ہیں کہ کسی کے ہاتھ میں پیسہ نہ رہنے پائے. جہاں روپیہ کا سراغ ملتا ہے ہتھیا لیتے ہیں. اس غرض کو پورا کرنے کے لئے ایرانی افسروں کو ہمیشہ دیش کے سب پرانتوں، پردیشوں میں بھیجتے رہتے ہیں اور جس وسیلے سے ہو کسی کے پاس پیسہ نہیں جمع ہونے دیتے. اس چتر ترکیب کے سہارے وہ سیکڑوں آفتوں سے بچے رہتے ہیں. ساتھ ہی ایران کا پیسہ ایران ہی میں رہتا ہے اور پردیس نہیں جاتا، یا جاتا ہے موہن کی جیب سے سوہن کی جیب میں. سچ تو یہ ہے کہ یورپ کے سرکاری افسروں کو چاہئے ان سے شکشا لیں اور اپنے غریب دیشواسیوں کو آپتیوں کے ان سادھنوں یعنی روپے پیسے کے جمع ہونے سے بچائیں.

ان کالی ٹوپی والوں کا ایک گروہ داڑھیوں کو منڈواتا ہے اور مونچھوں کو چمکاتا ہے. ٹوپیوں کو چھوٹا کر کے سر پر ٹیڑھا پہنتا ہے. ان کو "فوکولی" ارتھات "شوقین" کہتے ہیں.

یہ گروہ دیوان کے ودھان میں سدھار کا پکشپاتی ہے. مثال کے لئے کہتے ہیں ابھی تک سفید ٹوپی والے یعنی ملاؤں پر ودھان کی ساری دھارائیں پوری طرح نہیں لگائی گئیں. کبھی کبھی ان کی سمپتی کے انتظام میں بڑی گول مال ہوتی ہے. ضرورت اس بات کی ہے کہ بھوشیہ میں سب کے ساتھ پوری برابری کا بیوہار کیا

ाम करते हैं पर ठीक नहीं मालूम वह क्या है." कहने गा—"अद्भुत कला है. सारा ईरान का राज इसी कला की त्र छाया में जीवन व्यतीत करता है और चल रहा है. गर यह कला न होती तो राजकाज का चक्र रुक जाता ौर समाज के बंधन टूट जाते." मैंने पूछा—"इस कला का नाम क्या है." उत्तर दिया—"रिश्वत." मैं ाजया गया. कहना चाहा इस शब्द का अर्थ नहीं जानता र चुप रह गया. अब भी ठीक ठीक नहीं मालूम अर्थ क्या . यह भी सम्भव है कि मेरे मित्र ने मुझे भुलावा दिया क्योंकि इसी बातचीत में मैंने कहा—"हां मैंने देखा इन सफेद टोपी वालों के हाथ आम तौर पर लाल होते और निश्चय ही यह उसी दस्तकारी के काम का ासर है." कहने लगा—"नहीं, यह खाली आदमियों के ाख का लहू है." पर यह उसकी भूल थी. क्योंकि उन हाथों की लाली मेंहदी की थी. इसी से उस की और ातों में भी मेरी श्रद्धा कम हो गई. जो कुछ भी हो इस स्तकारी में अंगूठा और तर्जनी (अंगूठे के पास की ाली) तो अवश्य ही पूरा दखल रखती हैं क्यों . यह लोग निरंतर यत्न करते रहते हैं कि इन दोनों को रजिश और अभ्यास कराते रहें. इसी उद्देश से गोल गोल ानों में सूराख कर के और उन में धागा पिरो कर रात न वह अंगूठे और तर्जनी से घुमाते रहते हैं ताकि इन गलियों की ताकत बढ़ जाय.

अब तीसरी श्रेणी यानी काली टोपी वालों की सुनिये. ान वाले स्वयं इन को "खान" कहते हैं. सरकार के भाग चाहे केन्द्र में हों चाहे सूबों और प्रांतों में इन्हीं के ाथों में है. इन की एक बड़ी सभा है जो फ्रीमेसनों की साइटी के समान है. खासकर यह इस श्रेणी के लोगों के ये ही है. जो आदमी इस में प्रवेश कर ले उसके मुंह में ी घुसकर. उस सोसाइटी का नाम है "दीवान". यह शब्द देव" से निकला है जो ईरानी अफसानों में बहुत मशहूर . कहते हैं कि देवों के सारे काम उलटे होते हैं. मिसाल े लिये अगर किसी देव के साथ नेकी करोगे तो उस का ा मास बनोगे. अगर उससे सच बात कहोगे तो वह ुम्हारा शत्रु बन जायगा, झूठ बोलोगे तो मित्रता करेगा. काली टोपी वाले भी देवों के समान है. उन के सारे ाम उलटे है. इसी कारन उन्होंने अपनी सोसाइटी का ाम रखा है "दीवान."

अगर इस दीवान का मेम्बर बनना हो तो पहले पना नाम बदलो. नए नामों में जो इन को दिये ाते हैं जानवरों के और लड़ाई के हथियारों के नाम त होते हैं, जैसे "कम्मुद्दौला" यानी सरकारी ार "मिक़राज़ुस्सल्तनत" अर्थात् "राज की कैंची".

کام کرتے ہیں پر ٹھیک نہیں معلوم وہ کیا ہے ." کہنے لگا—" بڑی ادبھت کلا ہے . سارا ایران کا راج اسی کلا کی چھتر چھایا میں جیون ویتیت کرتا ہے اور چل رہا ہے . اگر یہ کلا نہ ہوتی تو راجکاج کا چکر رک جاتا اور سماج کے بندھن ٹوٹ جاتے ." میں نے پوچھا—" اس انوکھی کلا کا نام کیا ہے ؟" اتر دیا—" رشوت ." میں لوجھا گیا . کہنا چاہا اس شبد کا ارتھ نہیں جانتا پر چپ رہ گیا . اب بھی ٹھیک ٹھیک نہیں معلوم ارتھ کیا ہے . یہ بھی سمبھو ہے کہ میرے متر نے مجھے بھلاوا دیا ہو کیونکہ اسی بات چیت میں میں نے کہا—" ہاں' میں نے دیکھا ہے ان سفید ٹوپی والوں کے ہاتھ عام طور پر لال ہوتے ہیں اور نشچے ہی یہ اسی دستکاری کے کام کا اثر ہے." کہنے لگا—" نہیں' یہ خالی آدمیوں کے دل کا لہو ہے." پر یہ اسکی بھول تھی . کیونکہ ان کے ہاتھوں کی لالی مہندی کی تھی . اس سے اسکی اور باتوں میں بھی میری شردھا کم ہوگئی . جو کچھ بھی ہو اس دستکاری میں انگوٹھا اور ترجنی (انگوٹھے کے پاس کی انگلی) تو اوشیہ ہی پورا دخل رکھتی ہیں کیونکہ وہ لوگ نرنتر یتن کرتے رہتے ہیں کہ ان دونوں کو ورزش اور ابھیاس کراتے رہیں . اسی ادیش سے گول گول دانوں میں سوراخ کر کے اور ان میں دھاگا پرو کر رات دن وہ انگوٹھے اور ترجنی سے گھماتے رہتے ہیں تاکہ ان انگلیوں کی طاقت بڑھ جائے .

اب تیسری شرینی یعنی کالی ٹوپی والوں کی سنئے . ایران والے سویم ان کو " خان " کہتے ہیں . سرکار کے سارے وبھاگ چاہے کیندر میں ہوں چاہے صوبوں اور پرانتوں میں انہیں کے ہاتھوں میں ہیں . ان کی ایک بڑی سبھا ہے جو فریمیسنوں کی سوسائٹی کے سمان ہے . خاص کر یہ اس شرینی کے لوگوں کے لئے ہی ہے . جو آدمی اس میں پرویش کر لے اس کے منہ میں گھی شکر . اس سوسائٹی کا نام ہے " دیوان ." یہ شبد " دیو " سے نکلا ہے جو ایرانی افسانوں میں بہت مشہور ہے . کہتے ہیں دیوں کے سارے کام الٹے ہوتے ہیں . مثال کے لئے اگر کسی دیو کے ساتھ نیکی کرو گے تو اس کا پہلا گراس بنو گے . اگر اس سے سچ بات کہو گے تو وہ تمہارا دشمن بن جائے گا' جھوٹ بولو گے تو مترتا کریگا . یہ کالی ٹوپی والے بھی دیوں کے سمان ہیں . اسی کارن انہوں نے اپنی سوسائٹی کا نام رکھا ہے " دیوان ."

اگر اس دیوان کا ممبر بننا ہو تو پہلے اپنا نام بدلو . نئے ناموں میں جو ان کو دئے جاتے ہیں جانوروں کے اور لڑائی کے ہتھیاروں کے نام بہت ہوتے ہیں' جیسے— " دمدولہ " یعنی سرکاری سہارا " مقراض السلطنت " یعنی " راج کی قینچی " .

इन का बड़ा मान है. यह अपनी सफ़ेद टोपी से पहचाने जाते हैं और इसी कारन जो कपड़ा मिलता है उसे अपने सिर के चारों तरफ़ लपेट लेते हैं और टोपी की बुरजी बना लेते हैं. ऐसा जान पड़ता है कि इन का सिर लक़लक़ का घोंसला है. एक दिन मैंने एक ईरानी से पूछा यह अपने सिर को इस तरह क्यों ढांपते हैं ? कहने लगा "तुम ने नहीं देखा कि जब उंगली में ऐब आ जाता है तो उस के ऊपर लोग पुराना कपड़ा बांध लेते हैं. शायद इन के मग़ज़ में भी ऐब है और यह इसे बाहर की खुली हवा नहीं लगने देना चाहते.

सफ़ेद टोपी वाले बड़े गौरव और प्रतिशठा वाले होते हैं. उन्हें इस का बड़ा ख़याल रहता है कि उन का भारी भरकम अम्मामा पीछे को न सरक जाय. इसीलिये वज़न और तौल बराबर रखने की ख़ातिर बड़ा जतन करते हैं कि उनकी दाढ़ी भी जितनी हो सके लम्बी और संगीन हो. फिर यह सफ़ेद अम्मामा एक सिरे पर और लम्बी बालों वाली दाढ़ी दूसरे पर उन की सूरत को लकड़ी के हावन दस्ते का नमूना बना देती है, जो एक तरफ़ सफ़ेद और दूसरी तरफ़ काला होता है और इसकी मूठ में आंख और भौं बनी होती हैं.

सफ़ेद टोपी वालों का इतना आदर सत्कार होता है कि जब वह गलियों में से निकलते हैं तो आदमी सलाम करने पर मजबूर हो जाता है. पर हर साल में एक दो महीने ऐसे भी होते हैं कि जब इन के सिर पर जनून सवार हो जाता है और घोड़े, गधे और खच्चरों पर बैठ, रात दिन आठों पहर रकाब में पैर डाले, यह बाज़ारों और कूचों में चक्कर लगाते फिरते हैं और इतनी दाद फ़रियाद करते हैं कि उनका हाल देख कर आदमियों को रोना आने लगता है. धीरे धीरे सब तरफ़ों से रोने और चिल्ल पुकार की आवाज़ उठती है और फिर पीली टोपी वाले जो सदा दो ऊंची श्रेनी वालों की सेवा और उन पर जान और माल न्योछावर करने के लिये तैयार रहते हैं, गरदनों में कफ़न डाले छोटी कटारों से जिन्हें "क़मा" कहते हैं अपने चेहरे मोहरे में घाव करते हैं और कूचों और बाज़ारों को अपने ख़ून से रंग देते हैं.

मैंने ईरान में रहने के समय कोशिश की कि पता लगाऊं आख़िर इन सफ़ेद टोपी वालों का काम क्या है. पर कुछ मालूम न कर सका. पर जहां तक मैं समझता हूं जो कुछ भी काम हो वह गुप्त रीति का है जिसे वह आदमियों से छिपा कर करते हैं और जिस का सम्बन्ध किसी दस्तकारी से है, क्योंकि आम तौर पर आदमी उन के हाथ बहुत कम चूमते हैं.

एक दिन मैंने एक परिचित ईरानी से पूछा—"यह तो मैं जानता हूं कि सफ़ेद टोपी वाले किसी दस्तकारी का

انکا بڑا مان ہے. یہ اپنی سفید ٹوپی سے پہچانے جاتے ہیں اور اس کارن جو کپڑا ملتا ہے اپنے سر کے چاروں طرف لپیٹ لیتے ہیں اور ٹوپی کی برجی بنا لیتے ہیں . ایسا جان پڑتا ہے کہ ان کا سر لق لق کا گھونسلا ہے . ایک دن میں نے ایک ایرانی سے پوچھا یہ اپنے سر کو اس طرح کیوں ڈھانپتے ہیں ؟ کہنے لگا—"تم نے نہیں دیکھا کہ جب انگلی میں عیب آ جاتا ہے تو اس کے اوپر لوگ پرانا کپڑا باندھ لیتے ہیں. شاید ان کے مغز میں بھی عیب ہے اور یہ اسے باہر کی کھلی ہوا نہیں لگنے دینا چاہتے ."

سفید ٹوپی والے بڑے گورو اور پرتشٹھا والے ہوتے ہیں . انہیں اس کا بڑا خیال رہتا ہے کہ ان کا بھاری بھرکم عمامہ پیچھے کو نہ سرک جائے . اسی لئے وزن اور تول برابر رکھنے کی خاطر بڑا جتن کرتے ہیں کہ انکی داڑھی بھی جتنی ہوسکے لمبی اور سنگین ہو . پھر یہ سفید عمامہ ایک سرے پر اور لمبی بالوں والی داڑھی دوسرے سرے پر ان کی صورت کو لکڑی کے ہاون دستہ کا نمونہ بنا دیتی ہے! جو ایک طرف سفید اور دوسری طرف کالا ہوتا ہے اور اسکی موٹھ میں آنکھ اور بھوں بنی ہوتی ہیں.

سفید ٹوپی والوں کا اتنا آدر ستکار ہوتا ہے کہ جب وہ گلیوں میں سے نکلتے ہیں تو آدمی سلام کرنے پر مجبور ہوجاتا ہے . پر ہر سال میں ایک دو مہینے ایسے بھی ہوتے ہیں کہ جب ان کے سر پر جنون سوار ہوجاتا ہے اور گھوڑے، گدھے اور خچروں پر بیٹھ، رات دن آٹھوں پہر رکاب میں پیر ڈالے، یہ بازاروں اور کوچوں میں چکر لگاتے پھرتے ہیں اور اتنی داد فریاد کرتے ہیں کہ ان کا حال دیکھکر آدمیوں کو رونا آنے لگتا ہے . دھیرے دھیرے سب طرفوں سے رونے اور چل پکار کی آواز اٹھتی ہے اور پھر پیلی ٹوپی والے جو سدا دو اونچی شریڻی والوں کی سیوا اور جان اور مال نیوچھاور کرنے کے لئے تیار رہتے ہیں گردنوں میں کفن ڈالے چھوٹی کٹاروں سے جنہیں "قمہ" کہتے ہیں اپنے چہرے مہرے میں گھاؤ کرتے ہیں اور کوچوں اور بازاروں کو اپنے خون سے رنگ دیتے ہیں .

میں نے ایران میں رہنے کے سمے کوشش کی کہ پتہ لگاؤں آخر ان سفید ٹوپی والوں کا کام کیا ہے . پر کچھ نہ کرسکا. پر جہاں تک میں سمجھتا ہوں جو کچھ بھی کام ہو وہ گپت ریت کا ہے جسے وہ آدمیوں سے چھپا کر کرتے ہیں اور جس کا سمبندھ کسی دستکاری سے ہے کیونکہ عام طور پر آدمی ان کے ہاتھ بہت کم چومتے ہیں .

ایک دن میں نے ایک پرچت ایرانی سے پوچھا—"یہ تو میں جانتا ہوں کہ سفید ٹوپی والے کسی دستکاری کا

जाने देंगे और कफ़न लपेट कर ज़मीन में गाड़ देंगे पर काली और सफ़ेद टोपी वालों को अपनी गाढ़ी कमाई से इतना धनी बना देंगे कि उन्हें इस रुपए को खर्च करना भी दूभर हो जाय. अरबों से रिश्ता जोड़ने के लिये, अरबी बहू लाने के लिये, रुपया अरब देश भेजेंगे, अपने घरों में डेरे लगाएंगे और उन में आने वालों के लिये चेहरों को टेढ़ा मेढ़ा कर उन के मरे हुए लोगों के लिये ईश्वर से दुआएं करेंगे, चाय और शरबत पिलाएंगे और कभी कभी खिचड़ी पुलाव खिलाएंगे.

दूसरी ओर सफ़ेद और काली टोपी वाले सदा इसी फ़िक्र में रहते हैं कि जितना अधिक से अधिक हो सके अपनी जायदाद को बढ़ाएं. ये हमेशा ज़मीनों को बेचने और ख़रीदने में लगे रहते हैं. जायदाद यहां इतनी सस्ती है कि मैंने अपने ठहरने के सारे समय में कभी यह नहीं देखा कि किसी ने अपनी जायदाद के टुकड़े कर के बेचे हों या ख़रीदे हों, बल्कि जिस तरह योरप में शहद की मक्खी और छत्ते को साथ साथ बेचते हैं वैसे ही पीली टोपी वाले अपना घर बार, गांव गोट समेत एक चक बना कर मामला करते हैं. मिसाल के तौर पर कहते हैं आज अमुक आदमी ने अमुक गांव का पीली टोपी वाले सौ घरानों समेत अमुक दाम पर क़ब्बाला लिखवाया है.

पीली टोपी वाले लोगों के लिये न आज़ादी है, न बराबरी और न भाई चारा. योरप में यह सब चीज़ें, कम से कम, बात करने के लिये तो हैं ही, असलीयत में हों या न हों.

मिसाल के लिये उनकी आज़ादी इस हद तक है कि वह काली और सफ़ेद टोपी वालों की ख़ातिर अपने धन दौलत, इज़्ज़त आबरू, यहां तक कि अपनी और अपने कुटुम्बियों की जान भी न्योछावर कर देते हैं और कोई उन्हें इस से मना करने वाला नहीं है. उन में बराबरी भी इसी तरह की है. सचमुच अगर उन के हज़ारों घरों को फिर कर देखें तो एक भी ऐसा नहीं मिलेगा जिस में किसी दूसरे घर से एक चीज़ भी अधिक हो. सब नादारी और दरिद्रता की नेमतों से बराबर बराबर सम्पन्न हैं. जब उन में से कोई मरता है तो उस बराबरी को निबाहने के लिये उसकी क़ब्र पर न पत्थर लगाते हैं, न ईंट और न कोई निशान. कुछ ही दिनों में पानी और हवा के असर से क़ब्र भी मिट जाती है और सब ज़मीन बराबर हो जाती है. पर भाई चारे का इन लोगों में बड़ा विचार रहता है. यह यहां तक पहुंचा है कि वह एक दूसरे को "दाश" कह कर पुकारते हैं जिस का अर्थ है "भैया".

अब कुछ सफ़ेद टोपी वालों का हाल सुनिये. इन्हें शेख़ और आख़ुन्द (गुरू) के नामों से पुकारा जाता है. लोगों में

جانے دینگے اور کفن لپیٹ کر زمین میں گاڑ دینگے پر کالی اور سفید ٹوپی والوں کو اپنی گاڑھی کمائی سے اتنا دھنی بنا دینگے کہ انہیں اس روپئے کو خرچ کرنا بھی دوبھر ہو جائے۔ عربوں سے رشتہ جوڑنے کے لئے، عربی بہو لانے کے لئے روپیہ عرب دیش میں بھیجینگے، اپنے گھروں میں ڈیرے لگائینگے اور ان میں آنے والوں کے لئے چہروں کو ٹیڑھا میڑھا کر ان کے مرے ہوئے لوگوں کے لئے ایشور سے دعائیں کرینگے، چائے اور شربت پلائینگے اور کبھی کبھی کھچڑی پلاؤ کھلائینگے۔

دوسری اور سفید اور کالی ٹوپی والے سدا اسی فکر میں رہتے ہیں کہ جتنا ادھک سے ادھک ہوسکے اپنی جائداد کو بڑھائیں۔ یہ ہمیشہ زمینوں کے بیچنے اور خریدنے میں لگے رہتے ہیں۔ جائداد یہاں اتنی سستی ہے کہ میں نے اپنے ٹھہرنے کے سارے سمے میں کبھی یہ نہیں دیکھا کہ کسی نے اپنی جائداد کے ٹکڑے کرکے بیچے ہوں یا خریدے ہوں، بلکہ جس طرح یورپ میں شہد کی مکھی اور چھتے کو ساتھ ساتھ بیچتے ہیں ویسے ہی پیلی ٹوپی والے اپنا گھربار، گاؤں گوٹ سمیت ایک چک بناکر معاملہ کرتے ہیں۔ مثال کے طور پر کہتے ہیں آج ایک آدمی نے ایک گاؤں کا پیلی ٹوپی والے سو گھرانوں سمیت ایک دام پر قبالہ لکھوایا ہے۔

پیلی ٹوپی والے لوگوں کے لئے نہ آزادی ہے، نہ برابری اور نہ بھائی چارا۔ یورپ میں یہ سب چیزیں کم سے کم بات کرنے کے لئے تو ہیں ہی، اصلیت میں ہوں یا نہ ہوں۔

مثال کے لئے ان کی آزادی اس حد تک ہے کہ وہ کالی اور سفید ٹوپی والوں کی خاطر اپنے دھن دولت، عزت آبرو یہاں تک کہ اپنی اور اپنے کٹمبیوں کی جان بھی نچھاور کر دیتے ہیں اور کوئی انہیں اس سے منع کرنے والا نہیں ہے۔ ان میں برابری بھی اسی طرح کی ہے۔ سچ مچ اگر ان کے ہزاروں گھروں کو پھر کر دیکھیں تو ایک بھی ایسا نہیں ملیگا جس میں کسی دوسرے گھر سے ایک چیز بھی ادھک ہو۔ سب ناداری اور دردرتا کی نعمتوں سے برابر برابر سمپن ہیں۔ جب ان میں سے کوئی مرتا ہے تو اس برابری کو نباہنے کے لئے اسکی قبر پر نہ پتھر لگاتے ہیں، نہ اینٹ اور نہ کوئی نشان۔ کچھ ہی دنوں میں پانی اور ہوا کے اثر سے قبر بھی مٹ جاتی ہے اور سب زمین برابر ہو جاتی ہے۔ پر بھائی چارے کا ان لوگوں میں بڑا وچار ہوتا ہے۔ یہ یہاں تک پہونچا ہے کہ وہ ایک دوسرے کو "داش" کہکر پکارتے ہیں جس کا ارتھ ہے "بھیا"۔

اب کچھ سفید ٹوپی والوں کا حال سنیئے۔ انہیں شیخ اور آخوند (گرو) کے ناموں سے پکارا جاتا ہے۔ لوگوں میں

हैं. योरप में थेटर के अन्दर जाने के लिये टिकट ज़रूरी है ईरान में गवैया आदमियों को एक हरा पत्ता देता है. इसकी क़ीमत भी सस्ती होती है. असल में मजबूरी नहीं कि गवैये को कोई कुछ दे ही. दिया दिया न दिया न दिया.

एक दिन एक ईरानी सज्जन से जो मेरा बड़ा मित्र था और जिसके कई बच्चे थे मैंने पूछा—"भई! तुम्हारी स्त्री कहां है?" मैंने देखा तुरंत उसका चेहरा लाल हो गया और आंखें पागलों जैसी पपोटों के बाहर निकल आईं. उसकी दशा बिलकुल पलट गई. मैंने समझ लिया मुझ से बहुत बड़ी ख़ता हुई है. क्षमा मांगी और उस दिन से जान लिया कि इस देश में यही नहीं कि स्त्री का अस्तित्व नहीं है बल्कि कोई स्त्री का नाम भी ज़बान पर नहीं लाता है.

एक और चीज़ जो बड़ी अचरज भरी है यह है कि इस देश के निवासियों का एक बड़ा हिस्सा जिस में देश के आधे रहने वाले होंगे अपने आप को सिर से पांव तक काली चादर में ढांप लेता है यहां तक कि सांस लेने को भी सूराख़ नहीं छोड़ता. इसी काली चादर में लिपटे हुए वह गली कूचों में घूमता है. इन लोगों की न तो कोई आदमी आवाज़ सुन सकता है, न इन को अधिकार है कि किसी क़हवेख़ाने में दाख़िल हो सकें. उन के हम्माममघर अलग हैं और जल्सों में जैसे रौज़ेख़ानी या मुहर्रम में इन के बैठने की जगह अलग होती है. ये लोग जब अलग अलग रहते हैं तो इन की आवाज़, स्वर कुछ सुनाई नहीं देता है. लेकिन जब यह इकट्ठे होते हैं तो अजीब शोर मचाते हैं. मुझे ऐसा लगता है कि यह भी एक तरह के ईरानी पादरी हैं. इस तरह के विचित्र पादरी योरप में भी होते हैं. पर अगर यह पादरी हैं तो यह क्या ढंग है कि लोग इनका सम्मान अधिक नहीं करते, यहां तक कि इन का नाम रखा है "ज़ईफ़ा" जिस के अर्थ बताए जाते हैं—'निबल' या 'अबला.'

अब कुछ बाक़ी पुरुषों के बारे में बताता हूं. ईरान के पुरुष अपनी टोपी से पहचाने जाते हैं. उन की तीन श्रेनियां हैं और हर श्रेनी की अलग टोपी, जैसे:—पीली टोपी वाले, सफ़ेद टोपी वाले और काली टोपी वाले. पहली श्रेनी के लोग आम तौर से 'मशहदी" या "करबलाई" भी कहलाते हैं. उन में अधिकतर किसान मज़दूर हैं या मालिकों के नौकर. मेरी समझ में यह नहीं आया कि किस कारन उन्होंने यह प्रतिज्ञा कर रखी है कि जहां तक हो सके अधिक से अधिक काम करें और अपने काम और मेहनत का जो फल हो वह सब का सब बाक़ी दो श्रेनियों यानी सफ़ेद और काली टोपी वालों को भेंट कर दें. इस मामले में वह ऐसे कट्टर हैं कि बहुतेरी बार आप और अपने सम्बन्धियों को भूक और जाड़े से मर

ں۔ یورپ میں تھیٹر کے اندر جانے کے لئے ٹکٹ ضروری ہے۔
ن میں گویا آدمیوں کو ایک ہرا پتا دیتا ہے۔ اس
قیمت بھی سستی ہوتی ہے۔ اصل میں مجبوری
ں کہ گویے کو کوئی کچھ دے ہی۔ دیا دیا نہ دیا نہ دیا۔

ایک دن ایک ایرانی سجن سے جو میرا بڑا مِتر تھا
جس کے کئی بچے تھے میں نے پوچھا—"بھئی!
اری اِستری کہاں ہے؟" میں نے دیکھا ترنت اُس کا
رہ لال ہوگیا اور آنکھیں پاگلوں جیسی پپوٹوں کے باہر
آئیں۔ اسکی دشا بالکل پلٹ گئی۔ میں نے سمجھ
مجھ سے بہت بڑی خطا ہوئی ہے۔ شما مانگی اور اُس
سے جان لیا کہ اُس دیش میں یہی نہیں کہ اِستریوں
ستّو نہیں ہے، کوئی اِستریوں کا نام بھی زبان پر
ں لاتا ہے۔

ایک اور چیز جو بڑی اچرج بھری ہے یہ ہے کہ اس
ں کے نواسیوں کا ایک بڑا حصہ جس میں دیش کے
رہنے والے ہونگے اپنے آپ کو سر سے پاؤں تک کالی
ر میں ڈھانپ لیتا ہے، یہاں تک کہ سانس لینے کو
سوراخ نہیں چھوڑتا۔ اِسی کالی چادر میں لپٹے
وہ گلی کوچوں میں گھومتا ہے۔ اِن لوگوں کی نہ تو
آواز سن سکتا ہے نہ اِن کو ادھیکار ہے کہ کسی قہوہ
ہ میں داخل ہوسکیں۔ ان کے حمام گھر الگ ہیں
جلسوں میں جیسے روزہ خوانی یا محرم میں اُن کے
ٹھنے کی جگہ الگ ہوتی ہے۔ یہ لوگ جب الگ الگ
ہیں تو اِن کی آواز سور، کچھ سنائی نہیں دیتا
لیکن جب یہ اکٹھے ہوتے ہیں تو عجیب شور مچاتے
۔ مجھے ایسا لگتا ہے کہ یہ بھی ایک طرح کے ایرانی
ری ہیں۔ اس طرح کے وچتر پادری یورپ میں بھی
ہیں اگر یہ پادری ہیں تو یہ کیا ڈھنگ ہے کہ لوگ
کا سمان ادھک نہیں کرتے، یہاں تک کہ اِن کا نام رکھا
"ضعیفہ" جس کے ارتھ بتائے جاتے ہیں—نربل یا
"۔

اب کچھ باقی پُرشوں کے بارے میں بتاتا ہوں۔ ایران
رش اپنی ٹوپی سے پہچانے جاتے ہیں۔ اُن کی تین
لیاں ہیں اور ہر شرینی کی الگ ٹوپی، جیسے—
ی ٹوپی والے، سفید ٹوپی والے اور کالی ٹوپی والے۔
ن شرینی کے لوگ عام طور سے "مشہدی" یا "کربلائی"
کہلاتے ہیں۔ ان میں ادھکتر کسان مزدور ہیں یا
کوں کے نوکر۔ میری سمجھ میں یہ نہیں آیا کہ کس کارن
ں نے یہ پرتگیاں کر رکھی ہے کہ جہاں تک ہوسکے ادھک
ادھک کام کریں اور اپنے کام اور محنت کا جو پھل ہو وہ
ب کا سب باقی دو شرینیوں یعنی سفید اور کالی ٹوپی والوں
بھینٹ کریں۔ اس معاملہ میں وہ ایسے کٹر ہیں کہ
بہت بار آپ اور اپنے سمبندھیوں کو بھوک اور جاڑے سے مر

ज हाथ में लिये मेरे पास आ रहे हैं. कहने लगे—"जब ईरान में था मैंने अपनी समझ से कुछ बातें ईरान देश-सियों, उनके नैतिक विचारों और अनोखे आचार व्यवहारों के सम्बन्ध में लिखी थीं. शायद तबियत को ागवार न हो तो एक निगाह डाल लेना और चाहता हूं दुबारा जब हम्माम में आओ तो लेते आना." जुज़ लिये हुए उसी दशा में मैं उस चैन का अनुभव करते ए जो हम्माम में नहाने और मलने दलने से पैदा होता घर की ओर चल दिया. घर पहुंच कर पुस्तक के जुज़ ो पढ़ना शुरू किया.

देखा बड़े मियां ने बातें पते की लिखी हैं. बड़ा मज़ा आया. हज़रत सलाहकार अनपढ़ तो थे ही पृथ्वी के सभी शों को योरप समझते थे. जब ईरान पहुंचे तो यह नई निया उनकी आंखों में अनोखी जान पड़ी. अचरज और चम्भे के बस बड़ी सादगी के साथ जो कुछ देखने में आया उसका हाल लिखा. पुस्तक सौ सफ़े की होगी और कई अध्यायों में बंटी थी. नीचे नमूने के तौर पर मैं उस किताब का एक अध्याय नक़ल करता हूं.

❀ ❀ ❀

तीसरा अध्याय

ईरानी क़ौम और वहां की सरकार

आम तौर से ईरानी मंझले क़द के होते हैं. उनका रंग गेहुआं होता है. बातें बहुत करते हैं और काम थोड़ा. बड़े मीठे मिज़ाज के और हंसमुख हैं, पर रुआंसु बहुत हैं. उनकी भाषा ऐसी सुरीली है कि आदमी को अन्दर से खींचती है. बच्चे गंजे होते हैं. मर्द सिर मुंडाते हैं और दाढ़ी बनवाते हैं. पर एक अजीब बात यह है कि इस देश में स्त्रियां नहीं हैं. कूचों में छोटी छोटी चार पांच बरस की लड़कियां तो दिखाई देती हैं. पर उन में स्त्री एक भी नहीं. इस मामले में बहुतेरा सोचता हूं पर अक़्ल काम नहीं करती. मैंने सुन रखा था कि दुनिया में कोई "स्त्रियों का नगर" है जिसमें पुरुष एक भी नहीं. पर सारी उम्र में कभी "पुरुषों का नगर" का नाम नहीं सुना था. योरप वाले कहते हैं कि हर ईरानी के घर में एक 'हरम' रहता है जिसमें औरतें भरी रहती हैं. ईश्वर झूठ न बुलवाए. एक दिन बाज़ार में देखा लोग किसी एक को चारों तरफ़ से घेरे हुए थे. उसके बाल लम्बे थे और चेहरा साफ़ था. कपड़े लम्बे, सफ़ेद और रेशम का कमरबन्द बंधा था. मैंने कहा अवश्य ही यह एक स्त्री है. बड़े शौक़ से दौड़ा, कम से कम एक ईरानी स्त्री के तो दर्शन हो जाएं! पर नहीं, पता चला यह दरवेश था, दरवेश यानी गवैया! ईरान में कोमल वेश्या तो होते नहीं हैं, गवैये गलियों में गाते फिरते

جز ہاتھ میں لئے میرے پاس آ رہے ہیں۔ کہنے لگے—"جب میں ایران میں تھا میں نے اپنی سمجھ سے کچھ باتیں ایران کے دیش واسیوں، ان کے نیتک وچاروں اور انوکھے آچار ویوہاروں کے سمبندھ میں لکھی تھیں۔ شاید طبیعت کو ناگوار نہ ہو تو ایک نگاہ ڈال لینا اور چاہتا ہوں کہ دوبارہ جب حمام میں آؤ تو لیتے آنا۔" جز کو لئے ہوئے اسی دشا میں اس چین کا انوبھو کرتے ہوئے جو حمام میں نہانے اور ملنے دلنے سے پیدا ہوتا ہے گھر کی اور چل دیا۔ گھر پہونچ کر پستک کے جز کو پڑھنا شروع کیا۔

دیکھا بڑے میاں نے باتیں پتے کی لکھی ہیں۔ بڑا مزا آیا۔ حضرت صلاحکار انپڑھ تو ہے ہی پرتھوی کے سبھی دیشوں کو یورپ سمجھتے تھے۔ جب ایران پہونچے تو یہ نئی دنیا اُن کی آنکھوں میں انوکھی جان پڑی۔ اچرج اور اچنبھے کے بس بڑی سادگی کے ساتھ جو کچھ دیکھنے میں آیا اس کا حال لکھا۔ پستک سو صفحے کی ہوگی اور کئی ادھیاؤں میں بٹی تھی۔ نیچے نمونے کے طور پر میں اس کتاب کا ایک ادھیائے نقل کرتا ہوں۔

❀ ❀ ❀

تیسرا ادھیائے

ایرانی قوم اور وہاں کی سرکار

عام طور سے ایرانی منجھلے قد کے ہوتے ہیں۔ انکا رنگ گیہواں ہوتا ہے۔ باتیں بہت کرتے ہیں اور کام تھوڑا۔ بڑے میٹھے مزاج کے اور ہنس مکھ ہیں، پر روانسو بہت ہیں۔ ان کی بھاشا ایسی سریلی ہے کہ آدمی کو اندر سے کھینچتی ہے۔ بچے گنجے ہوتے ہیں۔ مرد سر منڈاتے ہیں اور داڑھی بنواتے ہیں۔ پر ایک عجیب بات یہ ہے کہ اس دیش میں استریاں نہیں ہیں۔ کوچوں میں چھوٹی چھوٹی چار پانچ برس کی لڑکیاں تو دکھائی دیتی ہیں پر ان میں استری ایک بھی نہیں۔ اس معاملے میں بہتیرا سوچتا ہوں پر عقل کام نہیں کرتی۔ میں نے سن رکھا تھا کہ دنیا میں کوئی "استریوں کا نگر" ہے جس میں پرش ایک بھی نہیں۔ پر ساری عمر میں کبھی "پرشوں کا نگر" کا نام نہیں سنا تھا۔ یورپ والے کہتے ہیں کہ ہر ایرانی کے گھر میں ایک 'حرم' رہتا ہے جس میں عورتیں بھری رہتی ہیں۔ ایشور جھوٹ نہ بلوائے۔ ایک دن بازار میں دیکھا کسی ایک کو چاروں طرف سے گھیرے ہوئے تھے۔ اس کے بال لمبے تھے اور چہرہ صاف تھا۔ کپڑے لمبے، سفید اور ریشم کا کمربند بندھا تھا۔ میں نے کہا اوشیہ ہی یہ ایک استری ہے۔ بڑے شوق سے دوڑا کم سے کم ایک ایرانی استری کے تو درشن ہو جائیں! پر نہیں، پتہ چلا درویش تھا، درویش یعنی گویا۔ ایران میں ویشیا تو ہوتے نہیں ہیں، گوئیے گلیوں میں گاتے پھرتے

हो सके अपने माल असबाब को उठा अपने देश को लौट चलूं. ईरान में और अधिक रहना खतरों का सामना करना था. थोड़ा बहुत उनके चरित्र से भी परिचय हो चुका था और डरता था कहीं ऐसा न हो चौकस यार धोखे धड़ी में पगड़ी उछाल दें.

"खुलासा यह कि मैंने अपनी सारी पूंजी बेच, नक़द सोने के सिक्कों में बदलवा ली. फिर इस बहाने कि मैं बीमार हूं और इलाज के लिये योरप जाना आवश्यक है, सफ़र का सामान बांधा. ईरान की सैर की इच्छा थी. इस विचार से क़ुम, काशान, इस्फ़हान, शीराज़ और बूशहर के रास्ते से योरप लौटने का इरादा किया. जिस दिन तेहरान से चला वह दिन भी इतिहास में यादगार है. सारे शहर के लोग छोटे और बड़े अपना चूल्हा अंगीठी, टाट टप्पर, भांडे बरतन, डेरे डंडे ले मुझे छोड़ने आए और कई मन्ज़िल तक साथ रहे. सड़कों पर उन्होंने दरवाज़े बनाए, फूल बरसाए, भेड़ बकरियों की क़ुरबानी की, क़सीदे पढ़े, आंसु बहाए पर अभी क़ुम नहीं ही पहुंचा था कि चोर बटमारों का एक झुंड मेरे ऊपर टूट पड़ा और मेरी सारी पूंजी ले कर चलता बना. अब मैं था और मियां टूं टूं. ख़ैर हज़ार मुसीबतों से क़र्ज़ क़ौल कर के किसी तरह योरप पहुंचा. अब पंद्रह बरस होते हैं. फ़्रांसीसी अफ़सर ईरानी सरकार से रात दिन तक़ाज़े में लगे हैं कि चोरों को पकड़ो और सामान को भेजो. ईरानी सैकड़ों बार बचन दे चुके हैं, हज़ारों दफ़ा वादे कर चुके हैं. पर आज तक बन्दे के हाथ में फूटी कौड़ी भी नहीं पहुंची.

"योरप में असहाय, भूका क्या करता. मजबूरन फिर अपने पुराने धन्धे को शुरु किया और वह तो तुम्हारे सामने है ही."

कहानी यहां तक पहुंची थी कि ख़लीफ़ा जी ने दो डोंगे पानी मेरे सिर पर डाले, एक आह भरी और कुछ फ़िक्र में डूब गए. मुझे भी कुछ कुछ याद आने लगी कि बचपन में इसी तरह का एक क़िस्सा सुना था. ईरान और ईरानियों के काम काज पर अचम्भा हुआ और सोचा सचमुच ऐसी क़ौम ऐसे ही सलाहकार के योग्य है. मुसकरा कर मैंने कहा,—"जैसे को तैसा, जितनी बड़ी देग उतना बड़ा चुक़न्दर." ख़लीफ़ा जी मालूम पड़ा चुक़न्दर के शब्द को समझ गए. कहने लगे—"चुक़न्दर और इस कथा का क्या जोड़?" मैंने उत्तर दिया—"यह तो फ़ारसी की एक मसल है." उन्होंने कहा—"इस का अर्थ समझाने की कृपा कीजिये." मैंने कहा—"अच्छा." पर बहुतेरा यत्न किया ठीक ठीक अर्थ न समझा सका. हम्माम का समय एक घंटा था और वह भी समाप्त हो गया. मैंने कपड़े पहने और बाहर निकला. देखा वही बड़े मियां एक किताब का

ہو سکے اپنے مال اسباب کو اٹھا اپنے دیس کو لوٹ چلوں ۔ ایران میں اور ادھک رہنا خطروں کا سامنا کرنا تھا ۔ تھوڑا بہت اُن کے چرتر سے بھی پریچے ہو چکا تھا اور ڈرتا تھا کہیں ایسا نہ ہو چوکس یار دھوکے دھڑی میں پگڑی اچھال دیں ۔

"خلاصہ یہ کہ میں نے اپنی ساری پونجی نقد سونے کے سکوں میں بدلوالی ۔ پھر اس بہانے کہ میں بیمار ہوں اور علاج کے لئے یورپ جانا آوشیک ہے سفر کا سامان باندھا ۔ ایران کی سیر کی اچھا تھی' اس وچار سے قم' کاشان' اصفہان' شیراز' اور بوشہر کے راستے سے یورپ لوٹنے کا ارادہ کیا ۔ جس دن طہران سے چلا وہ دن بھی اتہاس میں یادگار ہے ۔ سارے شہر کے لوگ چھوٹے اور بڑے اپنا چولہا انگیٹھی' ٹاٹ ٹپر' بھانڈے برتن' ڈیرے ڈنڈے لے مجھے چھوڑنے آئے اور کئی منزل تک ساتھ رہے ۔ سڑکوں پر انہوں نے دروازے بنائے' پھول برسائے' بھیڑ بکریوں کی قربانی کی' قصیدے پڑھے' آنسو بہائے' پر ابھی قم نہیں ہی پہونچا تھا کہ چور بٹماروں کا جھنڈ میرے اوپر ٹوٹ پڑا اور میری ساری پونجی لیکر چلتا بنا ۔ اب میں تھا اور میاں ٹوں ٹوں ۔ خیر ہزار مصیبتوں سے قرض قول کرکے کسی طرح یورپ پہونچا ۔ اب پندرہ برس ہوتے ہیں ۔ فرانسیسی افسر ایرانی سرکار سے رات دن تقاضے میں لگے ہیں کہ چوروں کو پکڑو اور سامان کو بھیجو ۔ ایرانی سینکڑوں بار بچن دے چکے ہیں' ہزاروں دفعہ وعدے کرچکے ہیں' پر آج تک بندے کے ہاتھ میں پھوٹی کوڑی بھی نہیں پہونچی ۔

"یورپ میں اسہائے' بھوکا کیا کرتا ۔ مجبوراً پھر اپنے پرانے دھندے کو شروع کیا اور وہ تو تمہارے سامنے ہے ہی ۔"

کہانی یہاں تک پہونچی تھی کہ خلیفہ جی نے دو ڈونگے پانی میرے سر پر ڈالے' ایک آہ بھری اور کچھ فکر میں ڈوب گئے ۔ مجھے بھی کچھ کچھ یاد آنے لگی کہ بچپن میں اسی طرح کا ایک قصہ سنا تھا ۔ ایران اور ایرانیوں کے کام کاج پر اچنبھا ہوا اور سوچا سچ مچ ایسی قوم ایسے ہی صلاحکار کے یوگیہ ہے ۔ مسکرا کر میں نے کہا —"جیسے کو تیسا' جتنی بڑی دیگ اتنا بڑا چقندر ۔" خلیفہ جی معلوم ہوا چقندر کے شبد کو سمجھ گئے ۔ کہنے لگے —"چقندر اور اس کتھا کا کیا جوڑ؟" میں نے اتر دیا —"یہ تو فارسی کی ایک مثل ہے ۔" انہوں نے کہا —"اس کا ارتھ سمجھانے کی کرپا کیجئے ۔" میں نے کہا —"اچھا ۔" پر بہتیرا یتن کیا ٹھیک ٹھیک ارتھ نہ سمجھا سکا ۔ حمام کا سمے ایک گھنٹہ تھا اور وہ بھی سماپت ہوگیا ۔ میں نے کپڑے پہنے اور باہر نکلا ۔ دیکھا وہی بڑے میاں ایک کتاب کا

ाह की ओर से मुझे निशान और पदवी मिली. अख़बारों . मेरी प्रशंसा में लेख लिखे, कवियों ने कविताएं बनाईं. वैयों ने गाने रचे और थोड़े ही समय में सब छोटे बड़ों ी ज़बान मेरा नाम रटने लगी. मजलिस ने मेरे अधिकार ढ़ा दिये और धीरे धीरे कई मंत्रियों ने अपने विभाग रे अधीन कर दिए. मैंने भी सुधारों की वर्षा कर दी और मजलिस, सरकार और दरबार के पास सुझाव के ाद सुझाव भेजने शुरू कर दिये. ऐसी धमाधम होने लगी के मुहर्रम में ताज़िए वाले भी क्या करेंगे.

"पर साहब की भलाई से छुटकारा पाना संभव नहीं था. मैं जानता था कि आख़िर काम तो सब उन्हीं के हाथ में है और वह चाहें तो मेरा बेड़ा पानी में ग़र्क़ कर सकते हैं. मजबूर था हर रोज़ सवेरे जिस समय मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं अपने साहब के हम्मामघर के दरवाज़े पर हाज़िर होता और रुतबे में उनसे कहीं ऊंचा होते हुए भी अपने सारे शाही तमग़ों और रंग बिरंगे निशानों को छाती पर लटकाए खीसा रगड़ने और उनके बदन की मालिश करने में लग जाता. हमारे साहब भी सदा सिर हिलाते थे, मुस्कराते थे, पर अपने बड़प्पन का हाथ से जाने न देते थे. मैं भी अपनी जगह पर क़ायम था.

"बहुत समय नहीं बीता कि मैं काफ़ी धन दौलत का मालिक बन गया. तब मुझे हाजी बाबा इस्फ़हानी की मशहूर किताब के कुछ वाक्य याद आए. उन्होंने लिखा है, "मित्रो! ईरानियों से दिल मत लगाओ, क्योंकि उन में वफ़ा नहीं है. उन के लड़ाई के हथियार और दोस्ती के साधन दोनों झूठे और दिखावे के हैं. वह आदमी को हर तरह धोखे धड़ी से अपने जाल में फंसाने की कोशिश करते हैं. तुम उनके भले के चाहे जितने जतन करो वह तुम्हारे बिगाड़ने में सदा लगे रहेंगे. झूठ उनका राष्ट्रीय रोग और उन की प्रकृति में शामिल है. उनका क़समें खाना इसका गवाह है. उनकी क़समों को देखिये कैसी अनोखी हैं. पर बात सच्ची हो तो क़समों की क्या आवश्यकता है? तुम्हारी जान की क़सम, अपनी जान की क़सम, मेरी औलाद, मेरे मां बाप की रूह की क़सम, बादशाह के सिर की, बादशाह के ताज की, तुम्हारी मौत की, तुम्हारी दाढ़ी की, सलाम अलेक की, नान नमक की, पैग़म्बर की, पैग़म्बर के पाक बाप दादा की, क़िबले की, क़ुरान की, हसन की, हुसैन की, चौदह मासूमों की, बारह इमामों की, पंचतनों (आल अबा) की. यह सब सौगन्धें उनकी भाषा का हिस्सा हैं. जीने और मरे के बीच और आत्मा से लेकर अपने प्रेमी के सिर और आंख. दाढ़ी और मूंछ, टूटे दांतों और कटी बाहों, यहां तक कि आग, दीवा, हम्माम का पानी, वह सभी की शपथ खाते हैं और इस प्रकार झूठ को कुर्सी पर बिठाते हैं." यही कारन था मैंने सोचा जितनी जल्दी

شاہ کی اور سے مجھے نشان اور پدوی ملی۔ اخباروں نے میری پرشنسا میں لیکھ لکھے۔ کویوں نے کویتائیں بنائیں، گویوں نے گانے رچے اور تھوڑے ہی سمے میں سب چھوٹے بڑوں کی زبان میرا نام رٹنے لگی۔ مجلس نے میرے ادھیکار بڑھا دئیے اور دھیرے دھیرے کئی منتریوں نے اپنے وبھاگ میرے ادھین کر دئیے۔ میں نے بھی سدھاروں کی ورشا کر دی اور مجلس، سرکار اور دربار کے پاس سجھاؤ کے بعد سجھاؤ بھیجنے شروع کر دئیے۔ ایسی دھما دھم ہونے لگی کہ محرم میں تازیے والے بھی کیا کریں گے۔

" پر صاحب کی بھلائی سے چھٹکارا پانا سمبھو نہیں تھا۔ میں جانتا تھا کہ آخر کام تو سب انہیں کے ہاتھ میں ہے اور وہ چاہیں تو میرا بیڑا پانی میں غرق کر سکتے ہیں۔ مجبور تھا ہر روز سویرے جس سمے مسلمان نماز پڑھتے ہیں اپنے صاحب کے حمام گھر کے دروازے پر حاضر ہوتا اور رتبہ میں ان سے کہیں اونچا ہوتے ہوئے بھی اپنے سارے شاہی تمغوں اور رنگ برنگے نشانوں کو چھاتی پر لٹکائے کھیسہ رگڑنے اور ان کے بدن کی مالش کرنے میں لگ جاتا۔ ہمارے صاحب بھی سدا سر ہلاتے تھے، مسکراتے تھے، پر اپنے بڑپن کو ہاتھ سے جانے نہ دیتے تھے۔ میں بھی اپنی جگہ پر قائم تھا۔

" بہت سمے نہیں بیتا کہ میں کافی دھن دولت کا مالک بن گیا۔ تب مجھے حاجی بابا اصفہانی کی مشہور کتاب کے کچھ واکیہ یاد آئے۔ انہوں نے لکھا ہے، " مترو! ایرانیوں سے دل مت لگاؤ کیونکہ ان میں وفا نہیں ہے۔ ان کے لڑائی کے ہتھیار اور دوستی کے سادھن دونوں جھوٹے اور دکھاوے کے ہیں۔ وہ آدمی کو ہر طرح دھوکے دھڑی سے اپنے جال میں پھنسانے کی کوشش کرتے ہیں۔ تم ان کے بھلے کے چاہے جتنے جتن کرو وہ تمہارے بگاڑنے میں سدا لگے رہیں گے۔ جھوٹ ان کا راشٹریہ روگ اور ان کی پرکرتی میں شامل ہے۔ ان کا قسمیں کھانا اس کا گواہ ہے۔ ان کی قسموں کو دیکھئے کیسی انوکھی ہیں۔ پر بات سچی ہو تو قسموں کی کیا آوشیکتا ہے؟ تمہاری جان کی قسم، اپنی جان کی قسم، میری اولاد، میرے ماں باپ کی روح کی قسم، بادشاہ کے سر کی، بادشاہ کے تاج کی، تمہاری موت کی، تمہاری داڑھی کی، سلام علیک کی، نان نمک کی، پیغمبر کی، پیغمبر کے پاک باپ دادا کی، قبلے کی، قرآن کی، حسن کی، حسین کی، چودہ معصوموں کی، بارہ اماموں کی، پنجتنوں (آل عبا) کی۔ یہ سب سوگندھیں ان کی بھاشا کا حصہ ہیں۔ جینے اور مرے کے جیو اور آتما سے لے کر پریمی کے سر اور آنکھ، داڑھی اور مونچھ، ٹوٹے دانتوں اور کٹی باہوں، یہاں تک کہ آگ، دیوا، حمام کا پانی، سبھی کی شپتھ کھاتے ہیں اور اس پرکار جھوٹ کو کرسی پر بٹھاتے ہیں۔" یہی کارن تھا میں نے سوچا جتنی جلدی

बोले—"मेरा बाप इसी शहर में नाई था और हम्मामी का काम करता था. मैंने भी बचपन से सिवाय हम्माम, खीसे, साबुन और मलाई दलाई के और कुछ नहीं सीखा. बीस साल की बात है यहां के एक मशहूर बड़े आदमी बीमार पड़े. योरप में जितने अच्छे अच्छे नामी हकीम थे सब बुलाए गए पर फ़ायदा न हुआ. एक दिन वह संयोगवश हमारे हम्माम में आ पहुंचे. मैंने काम आरम्भ किया और इनाम के लालच में मलने रगड़ने में खूब चतुराई दिखलाई. दूसरे दिन देखा वह फिर आए और कहने लगे कि 'छै साल बाद कल पहला मौक़ा था कि रात को ज़रा चैन से नींद आई. मालूम होता है तुम्हारी मलाई का असर है. आज फिर आया हूं, क्या होता है देखूं.'

"ख़ुलासा यह कि उस दिन से वह बराबर आने लगे. पता चला कि मेरी मलाई का ऐसा अच्छा असर रहा कि मुझे भी ख़ुद उस का अन्दाज़ा नहीं था. फिर क्या था, हलवा और माठा. इन सज्जन का दिन दिन मेरे ऊपर विश्वास बढ़ता गया. वह किसी भाव मुझे छोड़ने को तैयार न थे. अंत में उन्होंने अपने घर में एक छोटा सा हम्माम बनवाया और मुझे नौकर रख लिया. अपने घर में ही रहने को एक कोठरी दे दी. धीरे धीरे मैं भी उनके घर का एक आदमी बन गया. फिर ऐसा हुआ कि ईरान की सरकार को एक फ़िरंगी सलाहकार की आवश्यकता हुई. यह सज्जन इस काम के लिये चुने गए और ठहरा यह कि यह अपने साथ कुछ और लोगों को भी ले जाएं जो ईरान में उनकी मातहती में काम करें और ईरानी महकमों का सुधार करें.

"पहले तो विचार था कि मुझे छोड़ दें, फिर न जाने क्या हुआ, शैतान ने क्या सुझाया कि मुझे भी अपने तुफ़ैलियों में ले जाने का फ़ैसला किया. इस ख़्याल से कि अपनी जेब से पैसा ख़र्च न हो उन्होंने मुझे सरकारी टोली में भरती कर लिया. मैंने भी दिखावे के लिये रख रखाव को हाथ से न जाने दिया.

"जब ईरान पहुंचे तो रोज़ सवेरे आवश्यक था कि छिपे छिपे "मालिक" की मलाई दलाई करूं, पर ज्यों ही हम्माम के दरवाज़े से बाहर पैर निकालता ईरान में मैं भी "मिस्टर" और "साहब" कहलाता था और मेरी गिन्ती ऊंचे दरजे के अफ़सरों में होती थी.

"पहले पहल मुझे डाक के महकमे में रखा. योरप में सभी जानते हैं कि डाकख़ाने में क्या क्या होता है. डाकिये की एक ख़ास वर्दी होती है, हर मुहल्ले में डाक-घर होता है और हर कूचे के नुक्कड़ पर डाक का बम्बा लगा रहता है. मैंने भी तेहरान में ऐसा ही कुछ बन्दोबस्त कर दिया. इस से ऐसी धाक जमी कि कहने के बाहर है.

بولے—" میرا باپ اِسی شہر میں نائی تھا اور حمامی کا کام کرتا تھا. میں نے بھی بچپن کے سوائے حمام' کھیسے' صابن اور ملائی دلائی کے اور کچھ نہیں سیکھا. بیس سال کی بات ہے یہاں کے ایک مشہور بڑے آدمی بیمار پڑے. یورپ میں جتنے اچھے اچھے نامی حکیم تھے سب بلائے گئے پر فائدہ نہ ہوا. ایک دن وہ سنجوگ وش ہمارے حمام میں آ پہونچے. میں نے کام آرمبھ کیا اور انعام کے لالچ میں ملنے رگڑنے میں خوب چترائی دکھلائی. دوسرے دن دیکھا وہ پھر آئے اور کہنے لگے کہ ' چھ سال بعد پہلا موقع تھا کہ رات کو ذرا چین سے نیند آئی. معلوم ہوتا ہے تمہاری ملائی کا اثر ہے. آج پھر آیا ہوں' کیا ہوتا ہے دیکھوں'.

" خلاصہ یہ کہ اُس دن سے وہ برابر آنے لگے. پتہ چلا کہ میری ملائی کا ایسا اچھا اثر رہا کہ مجھے بھی خود اس کا اندازہ نہیں تھا. پھر کیا تھا' حلوہ اور ماٹھا. اِن سجن کا دن دن میرے اوپر وشواس بڑھتا گیا. وہ کسی بھاؤ مجھے چھوڑنے کو تیار نہ تھے. انت میں انہوں نے اپنے گھر میں ایک چھوٹا سا حمام بنوایا اور مجھے نوکر رکھ لیا. اپنے گھر میں ہی رہنے کو ایک کوٹھری دے دی. دھیرے دھیرے میں بھی اُن کے گھر کا ایک آدمی بن گیا. پھر ایسا ہوا کہ ایران کی سرکار کو ایک فرنگی صلاحکار کی آوشیکتا ہوئی. یہ سجن اِس کام کے لئے چنے گئے اور ٹھہرا یہ کہ یہ اپنے ساتھ کچھ اور لوگوں کو بھی لے جائیں جو ایران میں اُن کی ماتحتی میں کام کریں اور ایرانی محکموں کا سدھار کریں.

" پہلے تو وچار تھا کہ مجھے چھوڑ دیں' پھر نہ جانے کیا ہوا' شیطان نے کیا سمجھایا کہ مجھے بھی اپنے طفیلیوں میں لے جانے کا فیصلہ کیا. اِس خیال سے کہ اپنی جیب سے پیسہ خرچ نہ ہو اُنہوں نے مجھے سرکاری ٹولی میں بھرتی کر لیا. میں نے بھی دکھاوے کے لئے رکھ رکھاؤ کو ہاتھ سے نہ جانے دیا.

" جب ایران پہونچے تو روز سویرے آوشیک تھا کہ چھپے چھپے " مالک " کی ملائی دلائی کروں' پر جیوں ہی حمام کے دروازے کے باہر پیر نکالتا ایران میں میں بھی " مسٹر " اور " صاحب " کہلاتا تھا اور میری گنتی اونچے درجے کے افسروں میں ہوتی تھی.

" پہلے پہل مجھے ڈاک کے محکمے میں رکھا. یورپ میں سبھی جانتے ہیں کہ ڈاکخانے میں کیا ہوتا ہے. ڈاکیے کی ایک خاص وردی ہوتی ہے' ہر محلے میں ڈاک گھر ہوتا ہے اور ہر کوچے کے نکڑ پر ڈاک کا بمبا لگا رہتا ہے. میں نے بھی طہران میں ایسا ہی کچھ بندوبست کر دیا. اِس سے ایسی دھاک جمی کہ کہنے کے باہر ہے.

"नहीं." मैंने कहा—"मेरी अक्ल तो इस से आगे जाती नहीं, अब तुम खुद ही बताओ ईरान कैसे गए थे." जवाब दिया—"भई! क्या पूछते हो, बड़ा आदमी था, सरकार का सलाहकार बन कर गया था."[1]

मेरा मुंह हम्माम के खज़ाने की तरह अचरज से खुला का खुला रह गया और मेरी आंखें हम्माम के कमरे के गुम्बद के शीशों के समान गोल हो गईं. मैंने कहा—"सलाहकार थे तुम?" उत्तर दिया—"हां, ईरानी सरकार का सलाहकार था, क्यों इस में अचरज क्या है?" मैंने पूछा—"किस महकमे के सलाहकार थे?" बोला—"देश, विदेश, अर्थ, न्याय, रक्षा, शिक्षा, दाय दान, जन कौशल, डाक, तार, चुंगी, व्योपार वग़ैरा वग़ैरा महकमों का सलाहकार था." मैं चाहता था खूब ज़ोर से हंसूं पर खलीफ़ा जी के लिये यह ठठोल ठीक न जंचा और बात भी यह थी कि उनकी बातें बे सिर पैर की नहीं मालूम होती थीं. मैंने कहा—"तुम्हारे जैसा आदमी जो कुछ भी कहे सच ही होगा, पर तुम खुद ही इन्साफ़ कर के देखोगे तो यह मान लेना कि तुम ईरान में सरकार के सलाहकार थे आसान नहीं है."[2]

वह हंसा और कहने लगा—"जान पड़ता है ईरान अपनों को नहीं पहचानता. कुछ पता है योरप में कारनीवाल किस तरह का मेला है?" मैंने कहा—"क्यों नहीं जानता, कारनीवाल के मेले में लोग रंग बिरंगे कपड़े पहन कर और भांत भांत के चेहरे लगा कर आते हैं, एक दूसरे को छाती से लगाते हैं, ठठोल करते हैं और धमा चौकड़ी मचाते हैं. पर इस मेले से और तुम्हारे ईरान जाने से क्या सम्बन्ध है?" वह बोले—"यह ठीक है कि मैंने अठारह महीने से अधिक ईरान में नहीं बिताए, पर इतने दिनों में यह अवश्य समझ लिया कि समूचा ईरान एक कारनीवाल है, जो चाहे जैसे कपड़े पहने और किसी को इस से कोई सरोकार नहीं." मैंने जवाब दिया—"यह सब कुछ ठीक है, पर यह तुम्हारा सलाहकार बनना……" बोले—"सुनो, मैं तुम्हें सारी कथा सुनाता हूं. मैंने सारी कहानी अपनी रोप की यात्रा की एक पुस्तक में लिख रखी है. अगर जी चाहे मैं तुम्हें दे दूं, पढ़ लेना." मैंने कहा—"बहुत बहुत धन्यवाद! पर इस घड़ी तो अच्छा अवसर है कि तुम्हारी पुस्तक का एक हिस्सा तुम्हारे ही मुंह से सुनूं. आखिर जानूं तो यह कैसे हुआ कि वह हज़रत जो इस समय पलथी मारे मेरे बदन के मैल को कीसे से निकाल रहे हैं ईरान के आठ वज़ीरों और कितने ही बड़े महकमों के सलाहकार रह चुके हैं." कीसे की नोक से मैल की बत्तियों को, जो छाती पर जमा हो गई थीं, फेंक कर और एक बाल्टी पानी मेरे बदन पर डाल, खलीफ़ा जी

نہیں ." میں نے کہا—" میری عقل تو اس سے
جاتی نہیں، اب تم خود ہی بتاؤ ایران کیسے گئے تھے "
جواب دیا—" بھئی ! کیا پوچھتے ہو، بڑا آدمی تھا، سرکار
صلاحکار بن کر گیا تھا ."

میرا منھ حمام کے خزانے کی طرح اچرج سے کھلا کا
رہ گیا اور میری آنکھیں حمام کے کمرے کے گمبد کے
شیشوں کے سمان گول ہوگئیں . میں نے کہا—" صلاحکار
تھے تم ؟" اتر دیا—" ہاں، ایرانی سرکار کا صلاحکار تھا،
میں اس میں اچرج کیا ہے ؟" میں نے پوچھا—" کس
محکمے کے صلاحکار تھے ؟" بولا—" دیش، ودیش، ارتھ،
نیائے، رکھشا، شکشا، دائے دان، جن کوشل، ڈاک، تار،
چنگی، بیوپار، وغیرہ وغیرہ محکموں کا صلاحکار تھا ."
میں چاہتا تھا خوب زور سے ہنسوں پر خلیفہ جی کے
لئے یہ ٹھٹھول ٹھیک نہ جنچا اور بات بھی یہ تھی کہ
ان کی باتیں بے سر پیر کی نہیں معلوم ہوتی تھیں . میں
نے کہا—" تمہارے جیسا آدمی جو کچھ بھی کہے سچ
ہی ہوگا پر تم خود ہی انصاف کر کے دیکھو گے تو یہ مان
لینا کہ تم ایران کے صلاحکار تھے آسان نہیں ہے ."

وہ ہنسا اور کہنے لگا—" جان پڑتا ہے ایران اپنوں کو
نہیں پہچانتا . کچھ پتہ ہے یورپ میں کارنیوال کسطرح
کا میلہ ہے ؟ میں نے کہا—" کیوں نہیں جانتا، کارنیوال
کے میلے میں لوگ رنگ برنگے کپڑے پہن کر اور بھانت
بھانت کے چہرے لگا کر آتے ہیں، ایک دوسرے کو چھاتی
سے لگاتے ہیں، ٹھٹھول کرتے ہیں اور دھما چوکڑی مچاتے
ہیں . پر اس میلے سے اور تمہارے ایران جانے سے کیا
سمبندھ ہے ؟" وہ بولے—" یہ ٹھیک ہے کہ میں نے اٹھارہ
مہینے سے ادھک ایران میں نہیں بتائے پر اتنے دنوں
میں یہ اوشیہ سمجھ لیا کہ سموچا ایران ایک کارنیوال
ہے . جو چاہے جیسے کپڑے پہنے اور کسی کو اس سے کوئی
سروکار نہیں ." میں نے جواب دیا—" یہ سب کچھ
ٹھیک ہے، پر یہ تمہارا صلاحکار بننا......" بولے—" سنو،
میں تمہیں ساری کتھا سناتا ہوں، میں نے ساری کہانی
اپنی روز کی یاترا کی ایک پستک میں لکھ رکھی ہے،
اگر جی چاہے میں تمہیں دے دوں پڑھ لینا ." میں نے
کہا—" بہت بہت دھنیہ واد ! پر اس گھڑی تو اچھا اوسر
ہے کہ تمہاری پستک کا ایک حصہ تمہارے ہی منھ سے
سنوں . آخر جانوں تو یہ کیسے ہوا کہ وہ حضرت جو اس
سمے پلتھی مارے میرے بدن کے میل کو کیسے سے نکال
رہے ہیں ایران کے آٹھ وزیروں اور کتنے ہی بڑے محکموں
کے صلاحکار رہ چکے ہیں ." کیسے کی نوک سے میل کی
بتیوں کو جو چھاتی پر جما ہوگئی تھیں پھینک کر اور
ایک بالٹی پانی میرے بدن پر ڈال، خلیفہ جی

पर नहीं, फ़िरंगी हम्माम में यह सब सामान कहां ! यहां न भाबू भुखारे हैं न मिस्री का शरबत, न हसदाली तम्बाकू का नैचा. हां, यह ज़रूर हुआ कि मुझ से हज़रत ने उजरत के पैसे पेशगी ले लिये और एक टिकट मेरे हाथ में थमा दिया. फिर मुझे एक कमरे में नंगा उघाड़ा धकेल दिया. कमरे की सारी सजावट थी एक लोहे की ज़ंग लगी टोंटी जो दीवार की छाती से बाहर निकली हुई थी, एक फ़व्वारा जिस का नलका ताक़ में से लटक रहा था और एक खूंटी जैसी क़साई की दुकान में होती है. यह कपड़े टांगने के लिए किवाड़ में गड़ी थी और बाक़ी अल्ला अल्ला खैर सल्ला ! भाड़ में पड़े यह जिस का नाम है हम्माम !

इतने में दरवाज़ा खुला और बिना हां हूं के मियां दल्लाक (हम्मामी) का मुखड़ा नमूदार हुआ. मैंने चाहा कि अपने नंगेपन को ढांप लूं, पर देखा कि बाबा आदम के दादा भी यहां अपना नंगा बदन छिपाने की परवाह नहीं करते. मैंने भी सोचा छोड़ो इसे ! पर जैसे ही बड़े मियां की आंख मेरे ऊपर पड़ी वैसे ही मेरे बालों की सियाही और सिर और बदन की टेढ़ मेढ़ से उन्होंने भांप लिया कि मैं एशिया का रहने वाला हूं. वह ज़ोर से हंसे. जब पता चला कि मैं सचमुच ईरानी हूं तब तो उनकी बाछें खिल गईं और मूछों की नोकें कानों को छूने लगीं.

झट से मेरे सिर और बदन पर पानी डाल वह बाहर गए और लौटे. क्या देखता हूं कि जाजिम का एक खीसा लिए हुए हैं. ऐसा लगा जैसे पूरे गांव की मिलकियत मुझे मिल गई हो. खुलासा यह कि उन्होंने उसी ईरानी ढंग से (पर बिना तकिये और लुंगी के) मुझे लिटा दिया और खीसा रगड़ना शुरू कर दिया. कैसा मज़ा आया, क्या कहूं. और फिर हलवे का नाम लेने से मुंह थोड़े ही मीठा हो जाता है. बात यह है कि ज्यों ज्यों मैंने देखा कि खलीफ़ा जी सचमुच उस्ताद हैं और मलाई दलाई के हुनर के पूरे जानकार हैं तो मैं चैन के नशे में डूब गया. केवल प्रेम दिखाने के लिये मैंने पूछा—"उस्ताद ! सुना है तुम ईरान में भी थे ?" खीसे को जिसे दस्ताने की तरह उन्होंने हाथ में ले रखा था दिखा कर बोले—"यह रही निशानी !" मैंने कहा—"ईरान किस काम से गए थे ?" हंस कर उत्तर दिया—"आप ही अन्दाज़ा लगाएं." मैं बोला—"शायद किसी ईरानी बादशाह के साथ जो योरप की सैर करने आए होंगे तुम ईरान गए होगे." कहा—"नहीं !" मैंने पूछा—"फिर क्या किसी सैलानी के नौकर हो कर गए थे ?" कहा "नहीं." फिर मैंने कहा—"अवश्य चोरी की होगी, भागे होगे किसी ऐसी जगह की तलाश में जहां पुलिस के हाथ न आ सको." कहा "नहीं." मैं बोला—"तो फिर कोई ईरानी अमीर अपने साथ ले गया होगा." कहा

پر نہیں، فرنگی حمام میں یہ سب سامان کہاں! یہاں نہ آلو بخارے ہیں نہ مصری کا شربت نہ ہمدانی تمباکو کا نیچہ. ہاں، یہ ضرور ہوا کہ مجھ سے حضرت نے اُجرت کے پیسے پیشگی لے لئے اور ایک ٹکٹ میرے ہاتھ میں تھما دیا. پھر مجھے ایک کمرے میں ننگا اُگھاڑا دھکیل دیا. کمرے کی ساری سجاوٹ تھی ایک لوہے کی زنگ لگی ٹونٹی جو دیوار کی چھاتی سے باہر نکلی ہوئی تھی، ایک فوارہ جسکا نلکا طاق میں سے لٹک رہا تھا اور ایک کھونٹی جیسی قصائی کی دوکان میں ہوتی ہے. یہ کپڑے ٹانگنے کے لئے کواڑ میں گڑی تھی اور باقی اللہ اللہ خیر صلا! بھاڑ میں پڑے یہ جسکا نام ہے حمام!

اتنے میں دروازہ کھلا اور بنا ہاں ہوں کے میاں دلاک (حمامی) کا مکھڑا نمودار ہوا. میں نے چاہا کہ اپنے ننگے پن کو ڈھانپ لوں، پر دیکھا کہ بابا آدم کے دادا بھی یہاں اپنا ننگا بدن چھپانے کی پرواہ نہیں کرتے. میں نے بھی سوچا چھوڑو اسے! پر جیسے ہی بڑے میاں کی آنکھ میرے اوپر پڑی ویسے ہی میرے بالوں کی سیاہی اور سر اور بدن کی ٹیڑھ میڑھ سے انہوں نے بھانپ لیا کہ میں ایشیا کا رہنے والا ہوں. وہ زور سے ہنسے. جب پتہ چلا کہ میں سچ مچ ایرانی ہوں تب تو اُن کی باچھیں کھل گئیں اور مونچھوں کی نوکیں کانوں کو چھونے لگیں.

جھٹ سے میرے سر اور بدن پر پانی ڈال وہ باہر گئے اور لوٹے. کیا دیکھتا ہوں کہ جازم کا ایک کھیسہ لئے ہوئے ہیں. ایسا لگا کہ پورے گاؤں کی ملکیت مجھے مل گئی ہو. خلاصہ یہ کہ انہوں نے اُسی ایرانی ڈھنگ سے (پر بنا تکیے اور لنگی کے) مجھے لٹا دیا اور کھیسہ رگڑنا شروع کر دیا. کیسا مزا آیا، کیا کہوں. اور پھر حلوے کا نام لینے سے منہ تھوڑے ہی میٹھا ہو جاتا ہے. بات یہ ہے کہ جوں جوں میں نے دیکھا کہ خلیفہ جی سچ مچ استاد ہیں اور ملائی دلائی کے ہنر کے پورے جانکار ہیں تو میں چین کے نشہ میں ڈوب گیا. کیول پریم دکھانے کے لئے میں نے پوچھا—"استاد! سنا ہے تم ایران میں بھی تھے؟" کھیسے کو جسے دستانے کی طرح انہوں نے ہاتھ میں لے رکھا تھا دکھا کر بولے—"یہ رہی نشانی!" میں نے کہا—"ایران کس کام سے گئے تھے؟" ہنس کر اتر دیا—"آپ ہی اندازہ لگائیں." میں بولا—"شاید کسی ایرانی بادشاہ کے ساتھ جو یورپ کی سیر کرنے آئے ہونگے تم ایران گئے ہوگے." کہا "نہیں." میں نے پوچھا—"پھر کیا کسی سیلانی کے نوکر ہو کر گئے تھے؟" کہا—"نہیں." پھر میں نے کہا—"اوشیہ چوری کی ہوگی، بھاگے ہوگے کسی ایسی جگہ کی تلاش میں جہاں پولس کے ہاتھ نہ آسکو." کہا—"نہیں." میں بولا—"تو پھر کوئی ایرانی امیر اپنے ساتھ لے گیا ہوگا." کہا

कुछ ही दिनों की बात है मैं फिरंगिस्तान (फ्रांस) [में था]. एक दिन न जाने कैसे गरम नरम ईरानी हम्माम याद आई, उस माज़न्दरानी ढंग के हम्माम की जो जुमेरात को खुलता है और जिस में करबलाई अपने खीसे से बदन को मलता है और नहाने वालों को ठगता है. सचमुच नौबत यहां तक पहुंची कि मैं पूरे महीने भर की तनख्वाह देने पर तैयार हो गया, इस शर्त पर कि किसी तरह ख्वाजा ख़िज़र (एक मशहूर पैग़म्बर जो समझा जाता है अमर हैं. यहां लेखक का इशारा हम्माम के मालिश करने वाले से है) दर्शन दे देते और मेरे सिर पर पानी का लोटा उंडेल देते. आंख खुलती तो यही दिखाई देता कि तेहरान में अपने मुहल्ले के हम्माम के कमरे के एकान्त में मौजूद हूं, गोल तकिया सिर के नीचे है और संगमरमर के गरम पत्थरों पर एक लुंगी जिसके नीचे दूसरी लुंगी बिछी है और मैं लम्बा लेटा हूं, जुमेराती करबलाई खुरखुरे बालों वाले खीसे को हाथ में लिये है. उसकी दो उंगलियां जिनमें मेंहदी रची है खीसे के सूराख से बाहर निकली हुई हैं, घुटने टेके मेरे पहलू में बैठा है और धीरे धीरे हलके हलके अपने भारी हाथों से मेरे सारे बदन पर खीसा रगड़ रहा है. जब से यह धुन सिर में समाई ऐसा जान पड़ा कि किसी गहरे जंजाल या किसी भंवर में फंस गया हूं. अमन चैन सपना हो गया और आंखों से नींद दूर हो गई. पर काफ़ी भटकने और पूछ गच्छ करने पर अन्त में मैंने उस परदेस में एक हम्माम का पता लगा ही लिया. लोगों ने बताया कि इस हम्माम का चलाने वाला कभी ईरान में भी था और खीसा मलने के हुनर में अच्छा होशियार है. मैंने कहा यह तो ऐसा शुभ समाचार मिला कि इस पर जान भी न्योछावर कर दी जाय तो अनुचित नहीं. सब काम काज छोड़ अपने इस नए मक्के की खोज में चल पड़ा. सारे रास्ते अपने तेहरान के मुहल्ले वाले हम्माम के चित्र मन में बनाता रहा. उसकी बोसीदा सीढ़ियां जिनमें पानी भर जाता था, कपड़े बदलने का कुहना कमरा जिसके एक ताक़ में एक तसवीर बनी थी, इस में रुस्तम की दाढ़ी की दो नोकें एक सफ़ेद देव के पेट को फाड़ रही थीं, और ख़ास बात यह कि जिस जगह सफ़ेद देव का पेट था वहीं से ताक़ का चूना गिर गया था, और एक काला धब्बा नमूदार हो गया था जो हर हफ़्ते जब मैं हम्माम जाता बढ़ा हुआ दिखाई देता था. हम्माम में पहुंचता तो देखता कि उस्ताद की दाढ़ी रुस्तम की दाढ़ी का मुक़ाबला करती है. पैसों की लकड़ी की संदूक़ची जो रोज़ के इस्तेमाल से काली पड़ गई थी सामने रखी है. पल पल पर "सुखी रहो" की रटन है. हुक़्क़े पर काठ की चिलम है और दम लगा रहा है.

کچھ ہی دنوں کی بات ہے میں فرنگستان (فرانس) میں تھا۔ ایک دن نہ جانے کیسے گرم نرم ایرانی حمام کی یاد آئی، اس مازندرانی ڈھنگ کے حمام کی جو ہر جمعرات کو کھلتا ہے اور جس میں کربلائی اپنے کھیسے سے بدن کو ملتا ہے اور نہانے والوں کو ٹھگتا ہے۔ سچ مچ نوبت یہاں تک پہونچی کہ میں پورے مہینے بھر کی تنخواہ دینے پر تیار ہوگیا اس شرط پر کہ کسی طرح خواجہ خضر (ایک مشہور پیغمبر جو سمجھا جاتا ہے امر ہیں۔ یہاں لیکھک کا اشارہ حمام کے مالش کرنے والے سے ہے) درشن دے دیتے اور میرے سر پر پانی کا لوٹا انڈیل دیتے۔ آنکھ کھلتی تو یہی دکھائی دیتا کہ طہران میں اپنے محلے کے حمام کے کمرے کے ایکانت میں موجود ہوں، گول تکیہ سر کے نیچے ہے اور سنگ مرمر کے گرم پتھروں پر ایک لنگی جس کے نیچے دوسری لنگی بچھی ہے اور میں لمبا لیٹا ہوں، جمعراتی کربلائی کھرکھرے بالوں والے کھیسے کو ہاتھ میں لئے ہے۔ اسکی دو انگلیاں جن میں مہندی رچی ہے کھیسے کے سوراخ سے باہر نکلی ہوئی ہیں، گھٹنے ٹیکے میرے پہلو میں بیٹھا ہے اور دھیرے دھیرے ہلکے ہلکے اپنے بھاری ہاتھوں سے میرے سارے بدن پر کھیسا رگڑ رہا ہے۔ جب سے یہ دھن سر میں سمائی ایسا جان پڑا کہ کسی گہرے جنجال یا کسی بھنور میں پھنس گیا ہوں۔ امن چین سپنا ہوگیا اور آنکھوں سے نیند حرام ہوگئی۔ پر کافی بھٹکنے اور پوچھ گچھ کرنے پر انت میں میں نے اس پردیس میں ایک حمام کا پتہ لگا ہی لیا۔ لوگوں نے بتایا کہ اس حمام کا چلانے والا کبھی ایران میں بھی تھا اور کھیسا ملنے کے ہنر میں اچھا ہوشیار ہے۔ میں نے کہا یہ تو ایسا شبھ سماچار ملا کہ اس پر جان بھی نیوچھاور کردی جائے تو انوچت نہیں۔ سب کام کاج چھوڑ اپنے اس نئے مکہ کی کھوج میں چل پڑا۔ سارے راستے اپنے طہران کے محلے والے حمام کے چتر من میں بناتا رہا۔ اسکی بوسیدہ سیڑھیاں جن میں پانی بھر جاتا تھا، کپڑے بدلنے کا کہنہ کمرہ جس کے ایک طاق میں ایک تصویر بنی تھی، اس میں رستم کی داڑھی کی دو نوکیں ایک سفید دیو کے پیٹ کو پھاڑ رہی تھیں، اور خاص بات یہ کہ جس جگہ دیو کا پیٹ تھا وہیں سے طاق کا چونا گر گیا تھا، اور ایک کالا دھبہ نمودار ہوگیا تھا جو ہر ہفتہ میں جب میں حمام جاتا بڑھا ہوا دکھائی دیتا تھا۔ حمام میں پہونچتا تو دیکھتا کہ استاد کی داڑھی رستم کی داڑھی کا مقابلہ کرتی ہے۔ پیسوں کی لکڑی کی صندوقچی جو روز کے استعمال سے کالی پڑگئی تھی سامنے رکھی ہے۔ پل پل پر "سکھی رہو" کی رٹن ہے۔ حقہ پر کاٹھ کی چلم ہے اور دم لگ رہا ہے۔

जैसी देग वैसे चुक़न्दर

(सैयद महमूद अली जमालज़ादा)

[सैयद महमूद अली जमालज़ादा ईरान की सरकार के नौकर रह चुके हैं. पन्द्रह बरस तक वह बरलिन (जरमनी) के ईरानी राजदूत के दफ़्तर में काम करते थे. सन 19:1 से वह कुछ ऐसे दफ़्तरों में काम करते रहे हैं जिनका सम्बन्ध अब यू. एन. ओ. से हो गया है. लेखक के रूप में सब से पहले वह अपनी कहानी "यके बूद व यके न बूद" (एक था और एक नहीं था) के शाया होने के साथ चमके. यह कहानी पहले बरलिन में छपी थी. उसके बाद तेहरान में उसके कई एडीशन निकल चुके हैं. उसके बाद से उन्होंने बहुत सी छोटी छोटी कहानियां लिखी हैं. इस तरह के साहित्य के ईरान में वह जन्मदाताओं में गिने जाते हैं. अपने ज़माने के ईरान के दूसरे लेखकों की तरह उन पर भी पच्छिमी साहित्य का बहुत बड़ा असर पड़ा है. दूसरे ईरानी लेखकों की तरह ही उन्होंने भी आज के ईरानी समाज की कमज़ोरियों की तरफ़ अपने देशवासियों का ध्यान दिलाने में अपनी क़ाबलियत ख़र्च की है ताकि उस समाज का सुधार हो सके. इस तरह के ईरानी लेखक देश के मामूली आदमी की तरफ़ ख़ास ध्यान देते हैं. एक मामूली ईरानी का धन्दा, उसकी अच्छाइयां और उसकी बुराइयां और उसका जीवन, इन सब को वह अपनी भाशा में चित्रित करने की कोशिश करते हैं. सैयद महमूद अली जमालज़ादा की जो कहानी मैं अनुवाद कर के नीचे दे रहा हूं वह उनकी कला का एक ख़ास नमूना है—ताराचन्द]

हमारी आदतें भी एक अजूबा हैं. ठीक वही दशा है जैसे किसी ढीठ भिखारी की, पालतू बिल्ली की, उधार उगाहने वाले पठान की, या झाड़ू देने वाले मेहतर (तेहरानियों की भाशा में "कन्नास") की. हज़ार दफ़ा एक दरवाज़े से बाहर निकालिये दूसरे से फिर घर में घुस आते हैं. किसी ईरानी की फ़िरंगिस्तान में उम्र कट जाय फिर भी दिल कभी कभी बहाने बनाता ही है. कैसे कैसे विचार उठते हैं, किन किन चीज़ों की ओर दिल झुकता है. परदेस में घर की कोई एक बात भी ध्यान में आई और फ़ौरन इच्छाओं का एक तूफ़ान उबल पड़ता है. समझ बूझ रखने वाला पूरा सूरमा भी गर्भवती स्त्री की तरह अनोखी भावनाओं का शिकार हो जाता है. न दिन को दिन समझता है न रात को रात.

جیسی دیگ ویسے چقندر

(سید محمود علی جمال‌زادہ)

[سید محمود علی جمال‌زادہ ایران کی سرکار کے نوکر رہ چکے ہیں۔ پندرہ برس تک وہ برلن (جرمنی) کے ایرانی راجدوت کے دفتر میں کام کرتے تھے۔ سن 1931 سے وہ کچھ ایسے دفتروں میں کام کرتے رہے ہیں جنکا سمبندھ اب یو. این. او. سے ہوگیا ہے۔ لیکھک کے روپ میں سب سے پہلے وہ اپنی کہانی "یکے بود و یکے نہ بود" (ایک تھا اور ایک نہیں تھا) کے شائع ہونے کے ساتھ چمکے۔ یہ کہانی پہلے برلن میں چھپی تھی۔ اس کے بعد طہران میں اسکے کئی ایڈیشن نکل چکے ہیں۔ اس کے بعد سے انہوں نے بہت سی چھوٹی چھوٹی کہانیاں لکھی ہیں۔ اس طرح کے ساہتیہ کے ایران میں وہ جنم داتاؤں میں گنے جاتے ہیں۔ اپنے زمانے کے ایران کے دوسرے لیکھکوں کی طرح ان پر بھی پچھمی ساہتیہ کا بہت بڑا اثر پڑا ہے۔ دوسرے ایرانی لیکھکوں کی طرح ہی انہوں نے بھی آج کے ایرانی سماج کی کمزوریوں کی طرف اپنے دیش واسیوں کا دھیان دلانے میں اپنی قابلیت خرچ کی ہے تاکہ اس زمانے کا سدھار ہوسکے۔ اس طرح کے ایرانی لیکھک دیش کے معمولی آدمی کی طرف خاص دھیان دیتے ہیں۔ ایک معمولی ایرانی کا دھندا، اسکی اچھائیاں اور اسکی برائیاں اور اسکا جیون، ان سب کو وہ اپنی بھاشا میں چترت کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔ سید محمود جمال‌زادہ کی جو کہانی میں انوواد کرکے نیچے دے رہا ہوں وہ ان کی کلا کا ایک خاص نمونہ ہے—تارا چند]

ہماری عادتیں بھی ایک عجوبہ ہیں۔ ٹھیک وہی دشا ہے جیسی کسی ڈھیٹھ بھکاری کی، پالتو بلی کی، ادھار اگاہنے والے پٹھان کی، یا جھاڑو دینے والے مہتر (طہرانیوں کی بھاشا میں "کناس") کی۔ ہزار دفعہ ایک دروازے سے باہر نکالئے دوسرے سے پھر گھر میں گھس آتے ہیں۔ کسی ایرانی کی فرنگستان میں عمر کٹ جائے پھر بھی دل کبھی کبھی بہانے بناتا ہی ہے۔ کیسے کیسے وچار اٹھتے ہیں۔ کن کن چیزوں کی اور دل جھکتا ہے۔ پردیس میں گھر کی کوئی ایک بات بھی دھیان میں آئی اور فوراً اچھاؤں کا ایک طوفان ابل پڑتا ہے۔ سمجھ بوجھ رکھنے والا پورا سورما بھی گربھوتی استری کی طرح انوکھی بھاوناؤں کا شکار ہو جاتا ہے۔ نہ دن کو دن سمجھتا ہے نہ رات کو رات۔

एक ही जान सब की जान है

अहिंसा यानी किसी को तकलीफ़ मत दो, सत्य यानी सच बोलो, अस्तेय यानी चोरी न करो, ब्रह्मचर्य यानी नेकचलन रहो और अपरिग्रह यानी ज़रूरत से ज़ियादा माल अपने पास न रखो—क्या यह पांचों नेकियां इसी दुनिया में हमारे लिये सब से ज़ियादा अमली, सबसे ज़ियादा ज़रूरी, सबसे ज़ियादा काम की और सबसे ज़ियादा मुफ़ीद नहीं हैं? दुनिया को बचाने का इस समय यही एक तरीक़ा है. यह बात अलग है कि इन पांचों नेकियों की असली जड़ और इनकी असली वजह उसी एक रूहानी सच्चाई में है कि सब के अन्दर एक ही आत्मा रमी हुई है, एक ही जान सब की जान है.

महाभारत में लिखा है :—

"अर्थ और काम यानी धन और सुख सब धर्म ही से मिलते हैं. इसलिये आदमी धर्म का पालन क्यों न करे."

सूफ़ी ने अपने ढंग से कहा है :—

"ख़ुदा को पाया तो क्या न पाया
ख़ुदा मिला तो सब ही मिला है."

इंजील में लिखा है :—

"धर्म यानी नेकी पर चलो तो बाक़ी सब चीज़ें तुम्हें अपने आप मिल जावेंगी."

ایک ہی جان سب کی جان ہے

اہنسا یعنی کسی کو تکلیف مت دو' ستیہ یعنی سچ بولو' استیہ یعنی چوری نہ کرو' برہمچریہ یعنی نیک چلن رہو اور اپری گرہ یعنی ضرورت سے زیادہ مال اپنے پاس نہ رکھو—کیا یہ پانچوں نیکیاں اسی دنیا میں ہمارے لئے سب سے زیادہ عملی' سب سے زیادہ ضروری' سب سے زیادہ کام کی اور سب سے زیادہ مفید نہیں ہیں؟ دنیا کو بچانے کا اس سمے یہی ایک طریقہ ہے. یہ بات الگ ہے کہ ان پانچوں نیکیوں کی اصلی جڑ اور ان کی اصلی وجہ اسی ایک روحانی سچائی میں ہے کہ سب کے اندر ایک ہی آتما رمی ہوئی ہے' ایک جان ہی سب کی جان ہے.

مہابھارت میں لکھا ہے کہ :—

"ارتھ اور کام یعنی دھن اور سکھ سب دھرم ہی سے ملتے ہیں. اس لئے آدمی دھرم کا پالن کیوں نہ کرے."

صوفی نے اپنے ڈھنگ سے کہا ہے :—

"خدا کو پایا تو کیا نہ پایا
خدا ملا تو سب ہی ملا ہے."

انجیل میں لکھا ہے :—

"دھرم یعنی نیکی پر چلو تو باقی سب چیزیں تمہیں اپنے آپ مل جاوینگی."

तमाम फ़िलासफ़ी की ऊंचाई आत्मा को जानना है, और इस ज्ञान का अंत परमात्मा को जानना है: आत्मा को जान ताकि तू परमात्मा को जान सके; और परमात्मा को जान ताकि तू उससे प्रेम कर सके और उसके समान हो सके.

—क्वालर्स

अध्यात्म यानी रूहानियत में दिल को लगाए हुए, आशा और ममता से ऊपर उठ कर, आदमी 'ईश्वर के लिये' अपने सब फ़र्ज़ों को पूरा करे.

—गीता

تمام فلاسفی کی اونچائی آتما کو جاننا ہے' اور اس گیان کا انت پرماتما کو جاننا ہے. آتما کو جان تاکہ تو پرماتما کو جان سکے; اور پرماتما کو جان تاکہ تو اس سے پریم کر سکے اور اس کے سمان ہو سکے.

—کوالرس

ادھیاتم یعنی روحانیت میں دل کو لگائے ہوئے' آشا اور ممتا سے اوپر اٹھکر' آدمی 'ایشور کے لئے' اپنے سب فرضوں کو پورا کرے.

—گیتا

दीन धर्म का सारी निचोड़ लोगों के सामने रख दें जिस पर लोग आसानी से अमल कर सकें. इसी से वह "सुनहरा असूल" बना है जो सब धर्मों और सब पुस्तकों में मिलता है.—"दूसरों के साथ वैसा ही सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें. किसी के साथ कोई ऐसी बात न करो जो तुम नहीं चाहते कि वह तुम्हारे साथ करे."

दीनता दिखाने के मामले में भी हमें इस असूल को ध्यान में रखना चाहिये.

हम पहले एक लेख में बता चुके हैं कि मनु, मूसा, बुद्ध, ईसा और मोहम्मद सबने आदमी के फ़र्ज़ों में पांच बातों पर ज़ियादा ज़ोर दिया है. यह पांचों अच्छी बातें केवल दूसरी दुनिया के लिये नहीं हैं. यह सब इस दुनिया में हमारे भले के लिये सब से ज़ियादा ज़रूरी हैं. यह इस ज़िन्दगी के लिये और दुनिया के लिये अमली चीज़ें हैं. यही वह मसाले हैं जो इन्सानी समाज को मिलाए रखता है. इन्हीं पर अमल करने से समाज बनता है और समाज रह सकता है. जब कभी किसी समाज में इन पांच चीज़ों की कमी होने लगती है तब वह समाज गिरने और बर्बाद होने लगता है. यह बात बिल्कुल ज़ाहिर है कि जब कभी "अहिंसा" के असूल के ख़िलाफ़ लोग अपने स्वार्थ और अपनी ख़ुदगर्ज़ियों के लिये दूसरों को तकलीफ़ें पहुंचाने लगते हैं और उसके लिये नफ़रतें फैलाते हैं, जब कभी लोग "सत्य" के असूल के ख़िलाफ़ जान बूझ कर झूट बोलते हैं, लोगों को धोका देते हैं, झूटा प्रोपैगेन्डा करते हैं, बड़े बड़े पैमाने पर झूटे इश्तहार निकालते हैं और दुनिया में डर और बेएतबारी बढ़ाते हैं, जब कभी 'अस्तेय (चोरी न करना)" के असूल के ख़िलाफ़ लोग हलाल हराम का ख़याल न कर के दूसरों का हक़ छीन कर अपना पेट भरने लगते हैं, जब कभी लोग "ब्रह्मचर्य' के असूल को तोड़ कर ऐयाशियों और बदचलनियों में डूब जाते हैं, और जब जब लोग "अप्रीग्रह" के सिद्धांत के ख़िलाफ़ लोभ, लालच में पड़ कर दुनिया भर को लूट खसोट कर अपने घर भरने लगते हैं और कमज़ोरों को चूसना, उनकी मेहनत से फ़ायदा उठाना अपने लिये जाइज़ समझते हैं तब तब इनसानी समाज में फूट और गिरावट बढ़ती है. दुनिया की सब ख़ानाजंगियों, आर्थिक लड़ाईयों, महा युद्धों और उन सब आफ़तों की यही जड़ें हैं जिनमें आदमी दरिन्दों से बदतर हो जाता है और सारी मानव सभ्यता ख़तरे में पड़ जाती है. यह बात हमें आज दुनिया में हमारी आंखों के सामने दिखाई दे रही है. तो क्या समय नहीं आया कि हम रुक कर ज़रा सोचें ? क्या दुनिया के दीन धर्म का यह पहलू, सब धर्मों का यह निचोड़, यह पांच नेकियां—

دین دھرم کا سار نچوڑ لوگوں کے سامنے رکھ دیں جس پر لوگ آسانی سے عمل کرسکیں. اسی سے وہ "سنہرا اصول" بنا ہے جو سب دھرموں اور سب پستکوں میں ملتا ہے —"دوسروں کے ساتھ ویسا ہی سلوک کرو جیسا تم چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ کریں. کسی کے ساتھ کوئی ایسی بات نہ کرو جو تم نہیں چاہتے کہ وہ تمہارے ساتھ کرے."

دینتا دکھانے کے معاملے میں بھی ہمیں اس اصول کو دھیان میں رکھنا چاہئے.

ہم پہلے ایک لیکھ میں بتا چکے ہیں کہ منو، موسیٰ، بدھ، عیسیٰ اور محمد سب نے آدمی کے فرضوں میں پانچ باتوں پر زیادہ زور دیا ہے. یہ پانچوں اچھی باتیں کیول دوسری دنیا کے لئے نہیں ہیں. یہ سب اس دنیا میں ہمارے بھلے کے لئے سب سے زیادہ ضروری ہیں. یہ اس زندگی کے لئے اور دنیا کے لئے عملی چیزیں ہیں. یہی وہ مسالے ہیں جو انسانی سماج کو ملائے رکھتا ہے. انہیں پر عمل کرنے سے سماج بنتا ہے اور سماج رہ سکتا ہے. جب کبھی سماج میں ان پانچ چیزوں کی کمی ہونے لگتی ہے تب وہ سماج گرنے اور برباد ہونے لگتا ہے. یہ بات بالکل ظاہر ہے کہ جب کبھی "اہنسا" کے اصول کے خلاف لوگ اپنے سوارتھ اور اپنی خود غرضیوں کے لئے دوسروں کو تکلیفیں پہنچانے لگتے ہیں اور اس کے لئے نفرتیں پھیلاتے ہیں، جب کبھی لوگ "ستیہ" کے اصول کے خلاف جان بوجھ کر جھوٹ بولتے ہیں، لوگوں کو دھوکہ دیتے ہیں، جھوٹا پروپیگنڈا کرتے ہیں، بڑے بڑے پیمانے پر جھوٹے اشتہار نکالتے ہیں اور دنیا میں ڈر اور بے اعتباری بڑھاتے ہیں، جب کبھی "استے (چوری نہ کرنا)" کے اصول کے خلاف لوگ حلال حرام کا خیال نہ کرکے دوسروں کا حق چھین کر اپنا پیٹ بھرنے لگتے ہیں، جب کبھی لوگ 'برہمچریہ' کے اصول کو توڑ کر عیاشیوں اور بدچلنیوں میں ڈوب جاتے ہیں، اور جب جب لوگ "اپری گرہ" کے سدھانت کے خلاف لوبھ لالچ میں پڑکر دنیا بھر کو لوٹ کھسوٹ کر اپنے گھر بھرنے لگتے ہیں اور کمزوروں کو چوسنا، انکی محنت سے فائدہ اٹھانا اپنے لئے جائز سمجھتے ہیں تب تب انسانی سماج میں پھوٹ اور گراوٹ بڑھتی ہے. دنیا کی سب خانہ جنگیوں، آرتھک لڑائیوں، مہایدھوں اور ان سب آفتوں کی یہی جڑیں ہیں جن میں آدمی درندوں سے بدتر ہو جاتا ہے اور ساری مانو سبھیتا خطرے میں پڑ جاتی ہے. یہ بات ہمیں آج دنیا میں ہماری آنکھوں کے سامنے دکھائی دے رہی ہے. تو کیا سمے نہیں آیا کہ ہم رک کر ذرا سوچیں؟ کیا دنیا کے دین دھرم کا یہ پہلو، سب دھرموں کا یہ نچوڑ، یہ پانچ نیکیاں—

खुदी के मिटने से ही और सब गुन पैदा होते हैं जिन में सब से बड़ा गुन ईश्वर प्रनिधान यानी तवक्कुल है. इसी से दीनता आती है. सब्र और दीनता सब नेकियों की जड़ है. इसी से आदमी अपने को दूसरों से अलग और दूसरों को ग़ैर समझना बंद कर देता है और मंझते मंझते सब के साथ और ईश्वर के साथ अपनी एकता को महसूस करता है.

खुदी को मारना और दीनता दोनों एक ही चीज़ के दो नाम हैं. यह बात सत्य यानी हक़ से पैदा होती है. सत्य का मतलब केवल सच बोलना ही नहीं बल्कि इस सब सच्चाइयों की एक सच्चाई को समझना है कि सब के अन्दर एक ही आत्मा है और वही परम आत्मा है. इस एक बात को समझ लेने से आदमी में सब अच्छाइयां खिल बैठती हैं, जिस तरह लोकिषना यानी दुनिया की हिर्स, क्रोध, दूसरों से नफ़रत, शहवत और धन दौलत का लोभ जैसी बुराइयां एक एक कर पैदा होती हैं उसी तरह दीनता से अहिंसा, नफ़्स पर क़ाबू, ब्रह्मचर्य, पाकदामनी, अप्रीग्रह, त्याग, फ़ुक़्र और सकून पैदा होते हैं. इस तरह सचाई सब नेकियों की जड़ है और दीनता उन सब का मुकुट है.

आख़ीर में दीनता के संबन्ध में लोगों को एक और चेतावनी देने की ज़रूरत है. आदमी का धर्म या फ़र्ज़ देश, काल और मौक़ा के अनुसार बदलता रहता है. यों तो अपने दिल से सब ही को दीन रहना चाहिये. प्रमात्मा के सामने भी सब को दीनता का व्योहार करना चाहिये. पर हर भले बुरे आदमी के सामने मौक़ा बे मौक़ा दीनता दिखाने से नुक़सान भी बहुत हो सकता है. आदमी की उन्नति इसी में है कि वह जब जो करे सोच समझ कर, मौक़े को देख कर और अपने विवेक से पूरा काम लेकर करे.

सीधे सादे आदमी क़ुदरती तौर पर यह भी चाहते हैं कि उन्हें कोई एक सीधा सा असूल बता दिया जावे. मोहम्मद साहब से उनके साथी ने एक बार पूछा था कि मुझे कोई एक ऐसी बात बता दीजिये जिसे मैं आसानी से कर सकूं और जिसमें सब कुछ आ जावे. मोहम्मद साहब ने उसे जवाब दिया था कि--"केवल सच बोला करो और बस." इसी तरह का सवाल चीनी महात्मा कन्फ़ूशियस से उनके किसी चेले ने किया था. यही सवाल गीता में एक जगह अर्जुन ने कृष्ण से भी किया है. भागवत में भी शौनिक ने रूमशिर्वा से इसी तरह का सवाल बहुत तफ़सील के साथ किया है.

दुनिया के बड़े बड़े महापुरुषों ने भी सब ने इस बात की आवश्यकता अनुभव की है कि कुछ थोड़े से शब्दों में

خودی کے مٹنے سے ہی اور سب گن پیدا ہوتے ہیں جن میں سب سے بڑا گن ایشور پرندھان یعنی توکل ہے . اسی سے دینتا آتی ہے . صبر اور دینتا سب نیکیوں کی جڑ ہے . اسی سے آدمی اپنے کو دوسروں سے الگ اور دوسروں کو غیر سمجھنا بند کردیتا ہے اور منجھتے منجھتے سب کے ساتھ اور ایشور کے ساتھ اپنی ایکتا کو محسوس کرتا ہے .

خودی کو مارنا اور دینتا دونوں ایک ہی چیز کے دو نام ہیں . یہ بات ستیہ یعنی حق سے پیدا ہوتی ہے . ستیہ کا مطلب کیول سچ بولنا ہی نہیں بلکہ اس سب سچائیوں کی ایک سچائی کو سمجھنا ہے کہ سب کے اندر ایک ہی آتما ہے . اس ایک بات کو سمجھ لینے سے آدمی میں سب اچھائیاں کھل بیٹھتی ہیں' جس طرح لوکیشنا یعنی دنیا کی حرص' کرودھ' دوسروں سے نفرت' شہوت اور دھن دولت کا لوبھ جیسی برائیاں ایک ایک کر پیدا ہوتی ہیں اسی طرح دینتا سے اہنسا' نفس پر قابو' برہمچریہ' پاکدامنی' اپری گرہ' تیاگ' فقر اور سکون پیدا ہوتے ہیں . اس طرح سچائی سب نیکیوں کی جڑ ہے اور دینتا اُن سب کا مکٹ ہے.

آخیر میں دینتا کے سمبندھ میں لوگوں کو ایک اور چیتاونی دینے کی ضرورت ہے . آدمی کا دھرم یا فرض دیش' کال اور موقع کے انوسار بدلتا رہتا ہے . یوں تو اپنے دل سے سب ہی کو دین رہنا چاہئے. پرماتما کے سامنے بھی سبکو دینتا کا ویوہار کرنا چاہئے . پر ہر بھلے برے آدمی کے سامنے موقع بے موقع دینتا دکھانے سے نقصان بھی بہت ہوسکتا ہے. آدمی کی اننتی اسی میں ہے کہ وہ جب جو کرے سوچ سمجھکر' موقع کو دیکھکر اور اپنے وویک سے پورا کام لیکر کرے .

سیدھے سادے آدمی قدرتی طور پر یہ بھی چاہتے ہیں کہ انہیں کوئی ایک سیدھا سا اصول بتا دیا جاوے . محمد صاحب سے اُن کے ایک ساتھی نے ایک بار پوچھا تھا کہ مجھے کوئی ایک ایسی بات بتا دیجئے جسے میں آسانی سے کرسکوں اور جس میں سب کچھ آجاوے . محمد صاحب نے اُسے جواب دیا تھا کہ—"کیول سچ بولا کرو اور بس." اسی طرح کا سوال چینی مہاتما کنفیوشس سے ان کے کسی چیلے نے کیا تھا . یہی سوال گیتا میں ایک جگہ ارجن نے کرشن سے بھی کیا ہے. بھاگوت میں بھی شونک نے … سے اسی طرح کا سوال بہت تفصیل کے ساتھ کیا ہے .

دنیا کے بڑے بڑے مہاپرشوں نے بھی سب نے اس بات کی آوشکتا انوبھو کی ہے کہ کچھ تھوڑے سے شبدوں میں

इसीलिये भागवत महात्म में कहा है कि :—

"कलियुग में व्रत, तीर्थ, योग, शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना, रतजगे, यग्य, हवन, कथा और ज्ञान विज्ञान की बातें सब बेकार हैं. इसी युग में आदमी अगर मुक्ति चाहता है तो केवल एक भक्ति ही मुक्ति की देने वाली है यानी यह कि आदमी अपना सब कुछ ईश्वर के अर्पन कर दे. इसी तरह आदमी सच्चे मानों में बेख़ौफ़ हो सकता है और सब के साथ अपनी एकता को अनुभव कर सकता है"

सूफ़ी ने कहा है कि :—

सद किताबो सद वरक़ दर नार कुन
जानो दिल रा जानिबे दिल्दार कुन

यानी किताबों के ढेर को और इन सैकड़ों वरक़ों को आग में डाल दे और अपनी जान और अपने दिल को अपने प्रीतिम यानी ईश्वर की तरफ़ लगा दे.

कलियुग के इस ज़माने में जब चारों तरफ़ ख़ुदी, अहंकार, लड़ाई झगड़ों और लूट खसोट का ज़ोर है, जब बलवान निर्बलों पर अत्याचार करते हैं और आदमी की शक्लों में भेड़िये और चीते निहत्थे बेगुनाह लोगों को तरह तरह के कष्ट पहुंचाते हैं तो कमज़ोर और नाज़ुकदिल आदमी क़ुदरती तौर पर इस सब से घबरा कर दुनिया से भाग कर मठों और ख़ानक़ाहों में बैठ कर अपने को ईश्वर की मर्ज़ी पर छोड़ देना अधिक आसान और अच्छा समझते हैं. पर दुनिया और दुनिया की कमज़ोरियां उनका पीछा वहां भी नहीं छोड़तीं. ख़ुदा के इन घरों में जो बदमाशियां, बदचलनियां, बाल हत्यायें और तरह तरह के पाप होते हैं वह आज की दुनिया से छिपे नहीं हैं. धर्म के नाम पर योरूप में क्या और एशिया में क्या लोगों ने अत्याचार एक दूसरे पर किये हैं मार काट, ज़िन्दा जला देना, औरतों और बच्चों पर तरह तरह के ज़ुल्म, उन्हें पढ़ कर और सुन कर दिल कांप उठता है. भगवान इन अत्याचारों को क्यों होने देते हैं ! अन्दर से जवाब यही मिलता है कि शायद मज़लूमों और पीड़ितों के रूप में भगवान यह सब आफ़तें ख़ुद अपने ऊपर लेते हैं. मालूम होता है कि बेगुनाहों और शहीदों का ख़ून ही धर्म और नेकी की सच्ची बुनियाद होता है. उनकी मिसालें लोगों में सच्चाई और बहादुरी पैदा करती हैं. इसी तरह मनुष्य जाति के पाप धुलते हैं. भगवान पर उनका भरोसा ताज़ा होता है. भगवान उन्हें और अधिक अपनी छाती से चिपटाते हैं. इसी तरह धीरे धीरे ज़ालिमों और अत्याचारियों का दिल बदलता है. इसी तरह मुसीबतों की आग में से निकल कर लोग सत्य, अहिंसा, त्याग, ब्रह्मचर्य और निरहंकारता यानी ख़ुदी को मिटाने का सबक़ सीखते हैं.

اسی لئے بھاگوت مہاتم میں کہا ہے کہ :—

"کلیگ میں برت، تیرتھ، یوگ، شاستروں کا پڑھنا پڑھانا، رتجگے، یگیہ، ہون، کتھا اور گیان وگیان کی باتیں سب بیکار ہیں. اس یگ میں آدمی اگر مکتی چاہتا ہے تو کیول ایک بھکتی ہی مکتی کی دینے والی ہے یعنی یہ کہ آدمی اپنا سب کچھ ایشور کے ارپن کر دے. اسی طرح آدمی سچے معنوں میں بے خوف ہوسکتا ہے اور سب کے ساتھ اپنی ایکتا کو انوبھو کر سکتا ہے."

صوفی نے کہا ہے کہ :—

صد کتاب و صد ورق در نار کن
جان و دل را جانب دلدار کن

یعنی کتابوں کے ڈھیر کو اور ان سینکڑوں ورقوں کو آگ میں ڈال دے اور اپنی جان اور اپنے دل کو اپنے پریتم یعنی ایشور کی طرف لگا دے.

کلیگ کے اس زمانے میں جب چاروں طرف خودی، اہنکار، لڑائی جھگڑوں اور لوٹ کھسوٹ کا زور ہے، جب بلوان نربلوں پر اتیاچار کرتے ہیں اور آدمی کی شکلوں میں بھیڑیئے اور چیتے نہتے بے گناہ لوگوں کو طرح طرح کے کشٹ پہونچاتے ہیں تو کمزور اور نازک دل آدمی قدرتی طور پر اس سب سے گھبرا کر دنیا سے بھاگ کر مٹھوں اور خانقاہوں میں بیٹھ کر اپنے کو ایشور کی مرضی پر چھوڑ دینا ادھک آسان اور اچھا سمجھتے ہیں. پر دنیا اور دنیا کی کمزوریاں اُن کا پیچھا وہاں بھی نہیں چھوڑتیں. 'خدا کے ان گھروں میں جو بدمعاشیاں' بدچلنیاں' بال ہتھیائیں اور طرح طرح کے پاپ ہوتے ہیں وہ آج کی دنیا سے چھپے نہیں ہیں. دھرم کے نام پر یورپ میں کیا اور ایشیا میں کیا لوگوں نے اتیاچار ایک دوسرے پر کئے ہیں. مار کاٹ، زندہ جلا دینا، عورتوں اور بچوں پر طرح طرح کے ظلم، انہیں پڑھکر اور سن کر دل کانپ اٹھتا ہے. بھگوان ان اتیاچاروں کو کیوں ہونے دیتے ہیں! اندر سے جواب یہی ملتا ہے کہ شاید مظلوموں اور پیڑتوں کے روپ میں بھگوان یہ سب آفتیں خود اپنے اوپر لیتے ہیں. معلوم ہوتا ہے کہ بے گناہوں اور شہیدوں کا خون ہی دھرم اور نیکی کی سچی بنیاد ہوتا ہے. اُن کی مثالیں لوگوں میں سچائی اور بہادری پیدا کرتی ہیں. اسی طرح منشیہ جاتی کے پاپ دھلتے ہیں. بھگوان پر ان کا بھروسہ تازہ ہوتا ہے. بھگوان انہیں اور ادھک اپنی چھاتی سے چپٹاتے ہیں. اسی طرح دھیرے دھیرے ظالموں اور اتیاچاریوں کا دل بدلتا ہے. اسی طرح مصیبتوں کی آگ میں سے نکل کر لوگ ستیہ، اہنسا، تیاگ، برہمچریہ اور نراہنکرتا یعنی خودی کو مٹانے کا سبق سیکھتے ہیں.

जानकार हो और जिसकी लौ ब्रह्म में लगी हो. फिर खोजी अपने दिल का ईंधन बना कर उसे गुरु के चरनों में रखदे ताकि गुरु उस ईंधन को रोशन कर के खोजी के अन्दर वह जोत जगा सके जिस के उजाले में खोजी फिर से अपने भूले हुए आपे को पेहचान ले और यह देख ले कि उसकी आत्मा और पर्मात्मा दोनों एक ही हैं."

पारसी धर्म की किताब यसना में लिखा है :—

"ऐ मरदो और औरतो जिस्मानी लज़्ज़तों की इच्छा तुम में क़ुदरती जड़ किये हुए है. जब यह इच्छा ढीली पड़ जायेगी और ख़त्म हो जायेगी और पाप के ख़्याल दिल से जाते रहेंगे तब तुम्हें वह बहुत बड़ी सफलता इनाम में मिलेगी. इसलिये इस ऊंचे काम के लिये अभी से कमर कसे रखो नहीं तो अन्त में तुम्हें अफ़सोस होगा."

इंजील में हज़रत ईसा को सन आफ़ मैन और सन आफ़ गाड दोनों नामों से पुकारा गया है. सन आफ़ मैन के मानी हैं आदमी का बेटा और सन आफ़ गाड के मानी हैं ख़ुदा का बेटा. सच यह है कि आदमी जब हर तरह के परीग्रह को छोड़ कर किसी तरह के माल असबाब को अपनी सम्पत्ति न मानते हुए अहंकार और ख़ुदी से ऊपर उठ कर दरिद्रता, ग़रीबी, फ़क़्र और सुक्र के साथ अपना नाता जोड़ लेता है तब वह आदमी के बेटे से ख़ुदा का बेटा बन जाता है. जो आत्मा किसी ख़ास चीज़ से अपना संबन्ध नहीं रखती उसका संबन्ध सचमुच फिर सारी दुनिया के साथ जुड़ जाता है. सब उसके और वह सब का.

कबीर साहब ने इसी ख़्याल को यों ज़ाहिर किया है :-

"साहब को महीन होय सो पावे
शक्कर बिखरी रेत में संतो ! कुंजर (हाथी) मुख नहीं आवे
मान बड़ाई छोड़ दे बन्दे ! च्यूंटी हो बिनी खावे
साहब को महीन होय सो पावे."

हिन्दी की मशहूर कहावत—"निर्बल के बल राम" का भी यही मतलब है. नजात यानी मोक्ष का केवल यही रास्ता है कि आदमी में पहले अपनी ग़ल्तियों के लिये पछतावा हो, दीनता हो, फिर वह ग़ल्तियों से मुंह मोड़े और पूरे विश्वास यानी सच्चे ईमान के साथ ईश्वर अल्लाह की मर्ज़ी पर अपने को छोड़ दे. हर आदमी का ईश्वर शुरू में साकार होता है यानी कुछ ख़ास ख़ास सिफ़तों से मुसूफ़ होता है. इसी को सगुन कहते हैं. फिर वह निराकार और निर्गुन यानी सब सिफ़तों से बालातर हो जाता है और फिर सगुन और निर्गुन दोनों से ऊपर उठ कर सब कुछ अपने अंदर लिये हुए केवल वही वह रह जाता है. इस मुक़ाम पर पहुंच कर भगत या आबिद की अपनी हस्ती भी ईश्वर ही के अन्दर फ़ना हो जाती है.

جانکار ہو اور جس کی لو برہم میں لگی ہو۔ پھر کھوجی اپنے دل کا ایندھن بناکر اسے گرو کے چرنوں میں رکھ دے، تاکہ گرو اس ایندھن کو روشن کرکے کھوجی کے اندر وہ جوت جگا سکے جس کے اجالے میں کھوجی پھر سے اپنے بھولے ہوئے آپے کو پہچان لے اور یہ دیکھ لے کہ اسکی آتما اور پرم آتما دونوں ایک ہی ہیں۔"

پارسی دھرم کی کتاب یسنا میں لکھا ہے :—

"اے مردو اور عورتو جسمانی لذتوں کی اچھا تم میں قدرتی جڑ کئے ہوئے ہے۔ جب یہ اچھا ڈھیلی پڑ جائیگی اور ختم ہو جائیگی اور پاپ کے خیال دل سے جاتے رہینگے تب تمہیں وہ بہت بڑی سپھلتا انعام میں ملیگی۔ اس لئے اس اونچے کام کے لئے ابھی سے کمر کسے رکھو نہیں تو انت میں تمہیں افسوس ہوگا۔"

انجیل میں حضرت عیسیٰ کو سن آف مین اور سن آف گاڈ دونوں ناموں سے پکارا گیا ہے۔ سن آف مین کے معنی ہیں آدمی کا بیٹا اور سن آف گاڈ کے معنی ہیں خدا کا بیٹا۔ سچ یہ ہے کہ آدمی جب ہر طرح کے پری گرہ کو چھوڑ کر کسی طرح کے مال اسباب کو اپنی سمپتی نہ مانتے ہوئے اہنکار اور خودی سے اوپر اٹھکر دردرتا، غریبی، فقر اور سکر کے ساتھ اپنا ناتا جوڑ لیتا ہے تب وہ آدمی کے بیٹے سے خدا کا بیٹا بن جاتا ہے۔ جو آتما کسی خاص چیز سے اپنا سمبندھ نہیں رکھتی اس کا سمبندھ سچ مچ پھر ساری دنیا کے ساتھ جڑ جاتا ہے۔ سب اس کے اور وہ سب کا۔

کبیر صاحب نے اسی خیال کو یوں ظاہر کیا ہے:—

"صاحب کو مہین ہوئے سو پاوے
شکر بکھری ریت میں سنتو! کنجر (ہاتھی) مکھ نہیں آوے
مان بڑائی چھوڑ دے بندے! چیونٹی ہو بنی کھاوے
صاحب کو مہین ہوئے سو پاوے۔"

ہندی کی مشہور کہاوت :—"نربل کے بل رام" کا بھی یہی مطلب ہے۔ نجات یعنی موکش کا کیول یہی راستہ ہے کہ آدمی میں پہلے اپنی غلطیوں کے لئے پچھتاوا ہو، دینتا ہو، پھر وہ غلطیوں سے منہ موڑے اور پورے وشواس یعنی سچے ایمان کے ساتھ ایشور اللہ کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ دے۔ ہر آدمی کا ایشور شروع میں ساکار ہوتا ہے یعنی کچھ خاص خاص صفتوں سے موصوف ہوتا ہے۔ اسی سگن کہتے ہیں۔ پھر وہ نراکار اور نرگن یعنی سب صفتوں سے بالاتر ہو جاتا ہے اور پھر سگن اور نرگن دونوں سے اوپر اٹھ کر سب کچھ اپنے اندر لئے ہوئے کیول وہی وہ رہ جاتا ہے۔ اس مقام پر پہنچ کر بھگت یا عابد کی اپنی ہستی بھی ایشور ہی کے اندر فنا ہو جاتی ہے۔

सकता है पर मां कुछ भी करती रहे उसका दिल और ध्यान बराबर बच्चे में लगा रहता है. जब भी बच्चा लड़खड़ाता है मां उसकी तरफ़ दौड़ पड़ती है. इसी तरह ईश्वर यानी हमारे घट के अन्दर बैठी हुई रूह कुल यानी हमारी ही अपनी असल आत्मा हमेशा हमारे छोटे आपे को देखती रहती है और उसे गिरने से बचाने की कोशिश करती रहती है. इसी को ईश्वर प्रसाद या तवज्जहे इलाही कहते हैं. इसी को गुरुकृपा या मेहरेशेख़ भी कहते हैं. यह ठीक है कि खोजी को खुद अपने पैरों से चलना और अपनी आंखों से देखना पड़ता है. लेकिन यह भी उतना ही सच है कि रास्ते को रोशन करने के लिये एक सच्चे राह दिखाने वाले गुरु या शेख़ की जरूरत होती है. गुरु या शेख़ की मदद खुले तौर पर हासिल करने के लिये खोजी का काम है कि उसे खुद खोजे. आदमी को अपना मुंह दूसरी तरफ़ यानी अन्दर की तरफ़ मोड़ने की ज़रूरत होती है.

सूफ़ी कहता है कि :—

"तू खुदा को भी चाहता है और इस दुनिया को भी. यह बात नामुमकिन है और यह इच्छा पागलपन है. जिस किसी ने अपना मुंह दुनिया से फेरा वह फिर खोया नहीं जा सकता. वही खुदा को पा सकता है और अपने खोए हुए आपे को फिर से हासिल कर सकता है."

इंजील में भी लिखा है कि :—

"तुम खुदा को और दुनिया की दौलत दोनों को एक साथ पाने की आशा नहीं कर सकते."

एक सूफ़ी कहता है कि :—

काबा काबा है, सनमख़ाना (बुतख़ाना) सनमख़ाना
लेक (लेकिन) टूटा दिल भी असली मंज़िल जाना है.

इंजील में लिखा है कि :—

"दुनिया से प्रेम न करो और न दुनिया की चीज़ों से. जो कोई दुनिया से प्रेम करता है वह पिता ईश्वर से प्रेम नहीं करता. दुनिया में जो कुछ है, जैसे शरीर का मोह, आंखों का सुख और अपनी इस जिन्दगी का घमंड यह सब दुनिया की बदलती तस्वीरें हैं, यह ईश्वर की तरफ़ ले जाने वाली नहीं हैं. दुनिया एक दिन मिट जायेगी. दुनिया के सुख भी मिट जायेंगे. लेकिन वह जो ईश्वर की इच्छा पूरी करेगा हमेशा के लिये जिन्दा रहेगा."

उपनिषद में लिखा है कि :—

"जब आदमी दुनिया के सुख दुखों को पूरी तरह परख चुके, मीठा और कड़ुवा सब देख चुके, उसका जी भर जाये, उन कड़वी मिठाइयों से अपना मुंह जला लेने की उसे और अधिक इच्छा न हो, और उसे शान्ति न मिल सके तब उसे चाहिये कि दीनता और नम्रता के साथ ऐसे गुरु की खोज में लगे जो आगे के रास्ते का

سکتا ہے پر ماں کچھ بھی کرتی رہے اُس کا دل اور دھیان برابر بچے میں لگا رہتا ہے. جب بھی بچہ لڑکھڑاتا ہے ماں اُسکی طرف دوڑ پڑتی ہے. اِسی طرح ایشور یعنی ہمارے گھٹ کے اندر بیٹھی ہوئی روح کل یعنی ہماری ہی اپنی اصل آتما ہمیشہ ہمارے چھوٹے آپے کو دیکھتی رہتی ہے اور اُسے گرنے سے بچانے کی کوشش کرتی رہتی ہے . اِسی کو ایشور پرساد یا توجہ اِلٰہی کہتے ہیں . اِسی کو گرو کرپا یا مہر شیخ بھی کہتے ہیں. یہ ٹھیک ہے کہ کھوجی کو خود اپنے پیروں سے چلنا اور اپنی آنکھوں سے دیکھنا پڑتا ہے . لیکن یہ بھی اُتنا ہی سچ ہے کہ راستے کو روشن کرنے کے لئے ایک سچے راہ دکھانے والے گرو یا شیخ کی ضرورت ہوتی ہے . گرو یا شیخ کی مدد کھلے طور پر حاصل کرنے کے لئے کھوجی کا کام ہے کہ اُسے خود کھوجے . آدمی کو اپنا منھ دوسری طرف یعنی اندر کی طرف موڑنے کی ضرورت ہوتی ہے .

صوفی کہتا ہے کہ :—

"تو خدا کو بھی چاہتا ہے اور اِس دنیا کو بھی . یہ بات ناممکن ہے اور یہ اِچھا پاگل پن ہے . جس کسی نے اپنا منھ دنیا سے پھیرا وہ پھر کھویا نہیں جاسکتا . وہی خدا کو پاسکتا ہے اور اپنے کھوئے ہوئے آپے کو پھر سے حاصل کرسکتا ہے ."

اِنجیل میں بھی لکھا ہے کہ :—

"تم خدا کو اور دنیا کی دولت کو دونوں کو ایک ساتھ پانے کی آشا نہیں کرسکتے ."

ایک صوفی کہتا ہے کہ :—

کعبہ کعبہ ہے صنم خانہ (بت خانہ) صنم خانہ
لیک (لیکن) ٹوٹا دل ہی اصلی منزل جانا ہے .

اِنجیل میں لکھا ہے :—

"دنیا سے پریم نہ کرو اور نہ دنیا کی چیزوں سے . جو کوئی دنیا سے پریم کرتا ہے وہ پتا ایشور سے پریم نہیں کرتا . دنیا میں جو کچھ ہے' جیسے شریر کا موہ' آنکھوں کا سکھ اور اپنی اِس زندگی کا گھمنڈ یہ سب دنیا کی بدلتی تصویریں ہیں' یہ ایشور کی طرف لے جانے والی نہیں ہیں. دنیا ایک دن مٹ جائیگی. دنیا کے سکھ بھی مٹ جائینگے . لیکن وہ جو ایشور کی اِچھا پوری کریگا ہمیشہ کے لئے زندہ رہیگا ."

اپنشد میں لکھا ہے کہ :—

"جب آدمی دنیا کے سکھ دکھوں کو پوری طرح پرکھ چکے' میٹھا اور کڑوا سب دیکھ چکے' اُس کا جی بھر جائے' اُن کڑوی مٹھائیوں سے اپنا منھ جلا لینے کی اُسے اور ادھک اِچھا نہ ہو' اور اُسے شانتی نہ مل سکے تب اُسے چاہئے کہ دینتا اور نمرتا کے ساتھ ایسے گرو کی کھوج میں لگے جو آگے کے راستے کا

इंजील में लिखा है कि ईश्वर अक़्ल की तलाश से नहीं मिलता बल्कि दिल की बेताबी और उसके उमड़ने से मिलता है.

जब आदमी आत्मा को पा लेता है तब वह मिट्टी की दुनिया उसकी निगाह में ठीक जगह ले लेती है और जो मेहनत और रियाज़त उसे आत्मा की खोज में करनी पड़ती थी उसके सफल हो जाने पर वह अपने नए नए फ़र्ज़ों को समझने लगता है. तब वह इस दुनिया और उस दुनिया दोनों को ठीक ठीक समझ जाता है और दोनों के फ़र्ज़ ठीक ठीक अदा करने लगता है.

उपनिषद में लिखा है :—

वह आत्मा बहुत अच्छी अच्छी बातें करने से नहीं मिलता, न बहुत पढ़ने लिखने से और न अक़्ल की तेज़ी से. पर जो कोई भी सच्चे दिल से आत्मा से लौ लगाता है उससे आत्मा को भी प्रेम पैदा होता है और उसे आत्मा के सुन्दर रूप के दर्शन होते हैं. जब तक आदमी बुरे कामों से मुंह नहीं मोड़ता, जब तक वह अपने अन्दर शान्ति पैदा नहीं करता, जब तक कि दुनिया की चीज़ों का लोभ उसमें से नहीं जाता, उसका मन शान्त नहीं होता और उसमें आत्मा को पाने की लगन नहीं जागती तब तक वह आत्मा को नहीं पा सकता."

गीता में लिखा है कि :—

"जब आदमी हमेशा आत्मा की तरफ़ ध्यान लगाये रहता है, काम और क्रोध से ऊपर उठ कर अपने अन्दर देखने की कोशिश करता है तब उसे ब्रह्म के दर्शन होते हैं. और तब वह सारी दुनिया को ठीक ठीक समझ कर ख़ुद ब्रह्म हो जाता है."

क़ुरान में लिखा है कि :—

"अल्लाह जिस रूह से प्यार करता है उसे अपनी तरफ़ खींचता है."

कन्फ़ूशियस धर्म की किताब में लिखा है कि :—

'दुनिया में बहुत कम आदमी हैं जो जिस से प्यार करते हैं उसके दोषों को भी जानते हैं, या जो जिससे नफ़रत करते हैं उसके गुनों को भी समझते हैं, लेकिन ईश्वर सब के गुनों और दोषों को अच्छी तरह जानता है और सब को प्रेम के साथ बराबर ठीक रास्ता बताता रहता है."

ईश्वर अनन्त यानी लामहदूद है. आदमी का वजूद शान्त यानी महदूद है. इसीलिये आदमी का ईश्वर के लिये प्रेम, आदमी के लिये ईश्वर के प्रेम का कभी मुक़ाबिला नहीं कर सकता. लेकिन दुनियावी मां बाप का प्रेम अपने बच्चों के लिये अंधा होता है. ईश्वर का प्रेम अपने बन्दों के लिये अंधा नहीं होता. बच्चा खेल में मां को भूल

انجیل میں لکھا ہے کہ ایشور عقل کی تلاش سے نہیں ملتا بلکہ دل کی بیتابی اور اس کے امڑنے سے ملتا ھ۔

جب آدمی آتما کو پالیتا ھ تب یہ مٹی کی دنیا اسکی نگاہ میں ٹھیک جگہ لے لیتی ھ اور جو محنت اور ریاضت اسے آتما کی کھوج میں کرنی پڑی تھی اس کے سپھل ہو جانے پر وہ اپنے نئے نئے فرضوں کو سمجھنے لگتا ھ۔ تب وہ اس دنیا اور اس دنیا دونوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھ جاتا ھ اور دونوں کے فرض ٹھیک ٹھیک ادا کرنے لگتا ھ۔

اپنشد میں لکھا ھ :—

"یہ آتما بہت اچھی اچھی باتیں کرنے سے نہیں ملتی' نہ بہت پڑھنے لکھنے سے اور نہ عقل کی تیزی سے۔ پر جو کوئی بھی سچے دل سے آتما سے لو لگاتا ھ اس سے آتما کو بھی پریم پیدا ہوتا ھ اور اسے آتما کے سندر روپ کے درشن ہوتے ہیں۔ جب تک آدمی برے کاموں سے منھ نہیں موڑتا' جب تک وہ اپنے اندر شانتی پیدا نہیں کرتا' جب تک کہ دنیا کی چیزوں کا لوبھ اس میں سے نہیں جاتا' اس کا من شانت نہیں ہوتا اور اس میں آتما کو پانے کی لگن نہیں جاگتی تب تک وہ آتما کو نہیں پاسکتا۔"

گیتا میں لکھا ھ کہ :—

"جب آدمی ہمیشہ آتما کی طرف دھیان لگائے رہتا ھ' کام اور کرودھ سے اوپر اٹھکر اپنے اندر دیکھنے کی کوشش کرتا ھ تب اسے برھم کے درشن ہوتے ہیں۔ اور تب وہ ساری دنیا کو ٹھیک ٹھیک سمجھکر خود برھم ہوجاتاھ۔"

قرآن میں لکھا ھ کہ :—

"اللہ جس روح سے پیار کرتا ھ اسے اپنی طرف کھینچتا ھ۔"

کنفوشیس دھرم کی کتاب میں لکھا ہے کہ :—

"دنیا میں بہت کم آدمی ہیں جو جس سے پیار کرتے ہیں اس کے دوشوں کو بھی جانتے ہیں' یا جو جس سے نفرت کرتے ہیں اس کے گنوں کو بھی سمجھتے ہیں' لیکن ایشور سب کے گنوں اور دوشوں کو اچھی طرح جانتا ھ اور سب کو پریم کے ساتھ برابر ٹھیک راستہ بتاتا رہتا ھ۔

ایشور اننت یعنی لامحدود ھ۔ آدمی کا وجود شانت یعنی محدود ھ۔ اس لئے آدمی کا ایشور کے لئے پریم آدمی کے لئے ایشور کے پریم کا کبھی بھی مقابلہ نہیں کرسکتا۔ لیکن دنیوی ماں باپ کا پریم اپنے بچوں کے لئے اندھا ہوتا ھ۔ ایشور کا پریم اپنے بندوں کے لئے اندھا نہیں ہوتا۔ بچہ کھیل میں ماں کو بھول

है राजा ऐसे आदमी जो हमेशा मीठी मीठी बातें कहते रहें बहुत मिल सकते हैं लेकिन कड़वी और फ़ायदे की बात के कहने वाले और सुनने वाले मुश्किल से मिलते हैं."

मशहूर ईसाई संत सैन्ट फ्रांसिस पेलीसी ने एक जगह कहा है :—

अगर हम सारी दुनिया के अन्दर पवित्रता और ईश्वर भक्ति की अच्छी से अच्छी मिसालें सब के सामने रखें तब भी उससे हमें परम आनन्द नहीं मिल सकता. अगर हम दुनिया की सब भाषाएं बोल सकें, सारा ज्ञान हासिल कर लें, सब धर्म ग्रंथों को पढ़ लें और भविष्य की बातें और लोगों के दिलों में छुपी हुई बातें बता सकें, अगर हम फ़रिश्तों की बोलियां बोल सकें और ताराओं की गति और सब जड़ी बूटियों की ख़ासियतें जान जायें, और अगर ज़मीन के सारे ख़ज़ाने भी हमें मालूम हो जायें, और परिन्दों, दरिन्दों और मछलियों के सब गुन और उनकी शक्तियां हम जान जायें, और मनुष्य जाति, दरख़्तों, पत्थरों, जड़ों और जल की सब ख़ासियतें हम जान लें, तब भी इस सब से भी हमें परम आनन्द नहीं मिल सकता. पर जब हम लोगों की गालियों और अपने साथ उनके बुरे से बुरे सलूक को बर्दाश्त कर लें और हमें ग़ुस्सा न आये, और ग़ुस्सा आने के बजाय हम दीनता के साथ यह सोचें कि हम सचमुच उन सब गालियों और बदसुलूकियों के हक़दार हैं, तब इस में हमें परम आनन्द मिल सकता है. अगर हम भूक और सर्दी और मार और सब तरह के कष्टों, अनन्याय, नफ़रत और सख़्ती को सब्र के साथ बर्दाश्त कर लें और इन्हें अपने लिये कसौटी और आज़माइश समझें और यह सोचें कि हमें अभी कितना और कष्ट भोगना चाहिये—तो इस में परम आनन्द है."

इंजील में लिखा है कि :—

"क़हक़हा मार कर हंसने से रंज करना ज़ियादा अच्छा है क्योंकि रंज से दिल पाक होता है बुद्धिमान आदमी का दिल हमेशा रंज या मातम के घर में रहता है, और मूर्खों का दिल ख़ुशी और ठठोलबाज़ी के महल में रहता है."

जिस बच्चे के चोट लग जाती है उसे मां सबसे अधिक अपनी छाती से चिपटाती है.

अभ्यास को सूफ़ी लोग मुनाजिलत कहते हैं और वैराग्य को मुजानिबत कहते हैं. अभ्यास यानी मुनाजिलत के लिये वैराग्य यानी मुजानिबत ज़रूरी है. अभ्यास का मतलब है आत्मा की तरफ़ मुड़ना. वैराग्य का मतलब है दुनिया की लज़्ज़तों से मुँह मोड़ना और दुनिया में जितने लोग दुख और मुसीबत में हैं उनके लिये दिल का दया, प्रेम और सेवा की इच्छा से लबरेज़ रहना."

ہے راجہ ایسے آدمی جو ہمیشہ میٹھی میٹھی باتیں کہتے رہیں بہت مل سکتے ہیں لیکن کڑوی اور فائدہ کی بات کے کہنے والے اور سننے والے دونوں مشکل سے ملتے ہیں۔"

مشہور عیسائی سنت سینٹ فرانسس آف ایلی سی نے ایک جگہ کہا ہے :—

"اگر ہم ساری دنیا کے اندر پوترتا اور ایشور بھکتی کی اچھی سے اچھی مثالیں سب کے سامنے رکھیں تب بھی اس سے ہمیں پرم آنند نہیں مل سکتا۔ اگر ہم دنیا کی سب بھاشائیں بول سکیں، سارا گیان حاصل کر لیں، سب دھرم گرنتھوں کو پڑھ لیں اور بھوشیہ کی باتیں اور لوگوں کے دلوں میں چھپی ہوئی باتیں بتا سکیں، اگر ہم فرشتوں کی بولیاں بول سکیں اور تاروں کی گتی اور سب جڑی بوٹیوں کی خاصیتیں جان جائیں، اور اگر زمین کے سارے خزانے بھی ہمیں معلوم ہو جائیں، اور پرندوں، درندوں اور مچھلیوں کے سب گن اور ان کی شکتیاں ہم جان جائیں، اور منشیہ جاتی، درختوں، پتھروں، جڑوں اور جل کی سب خاصیتیں ہم جان لیں، تب بھی اس سے بھی ہمیں پرم آنند نہیں مل سکتا۔ پر جب ہم لوگوں کی گالیوں اور اپنے ساتھ ان کے برے سے برے سلوک کو برداشت کر لیں اور ہمیں غصہ نہ آئے، اور غصہ آنے کے بجائے ہم دینتا کے ساتھ یہ سوچیں کہ ہم سچ مچ ان سب گالیوں اور بدسلوکیوں کے حقدار ہیں، تب اس میں ہمیں پرم آنند مل سکتا ہے۔ اگر ہم بھوک اور سردی اور مار اور سب طرح کے کشٹوں، انیائے، نفرت اور سختی کو صبر کے ساتھ برداشت کر لیں اور انہیں اپنے لئے کسوٹی اور آزمائش سمجھیں اور یہ سوچیں کہ ہمیں ابھی کتنا اور کشٹ بھوگنا چاہئے— تو اسی میں پرم آنند ہے۔"

انجیل میں لکھا ہے کہ :—

"قہقہہ مار کر ہنسنے سے رنج کرنا زیادہ اچھا ہے کیونکہ رنج سے دل پاک ہوتا ہے۔ بدھیمان آدمی کا دل ہمیشہ رنج یا ماتم کے گھر میں رہتا ہے، اور مورکھوں کا دل خوشی اور ٹھٹھول بازی کے محل میں رہتا ہے۔"

جس بچے کے چوٹ لگ جاتی ہے اسے ماں سب سے اَدھک اپنی چھاتی سے چپٹاتی ہے۔

ابھیاس کو صوفی لوگ منازلت کہتے ہیں اور ویراگیہ کو مجانبت کہتے ہیں۔ ابھیاس یعنی منازلت کے لئے ویراگیہ یعنی مجانبت ضروری ہے۔ ابھیاس کا مطلب ہے آتما کی طرف مڑنا۔ ویراگیہ کا مطلب ہے دنیا کی لذتوں سے منہ موڑنا اور دنیا میں جتنے لوگ دکھ اور مصیبت میں ہیں ان کے لئے دل کا دیا، پریم اور سیوا کی اچھا سے لبریز رہنا۔

चीनी कन्फ़ूशियस धर्म की किताब शीकिंग में लिखा है कि :—

"ईश्वर आदमी के विश्वास को कड़ाई के साथ परखता है."

एक दूसरे चीनी धर्म ताऊइज़्म में कहा गया है कि :—

"हीनता मान की जड़ है. अपने को छोटा समझना ऊंचा जाने की बुनियाद है. दुनिया के सब से कमज़ोर लोग दुनिया के सब से सख़्त लोगों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं."

इन्जील में लिखा है :—

"घमन्ड नाश का पेशख़ेमा होता है और ग़ुरूर करने वाला गिरता है......ईश्वर का डर ज्ञान की शुरूआत है."

इन्जील में एक दूसरी जगह लिखा है :—

"जो आदमी लोभ को क़ाबू में कर लेता है वह मुबारक है, क्योंकि जब वह परखा जाएगा तो उसे जीवन का वह मुकुट मिलेगा जिसका वादा ईश्वर ने उन लोगों के साथ किया है जो ईश्वर से प्यार करते हैं."

वेद के शत पथ ब्राह्मण में लिखा है :—

"जो बहुत घमंड करते थे वही अपने घमंड के कारन गिरे, इसलिये किसी को बहुत घमंड नहीं करना चाहिये. घमंड ही हार का दरवाज़ा है."

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है :—

"ऐ मज़दा यानी ईश्वर मुझे आज़मा और परख, तू मुझ पर जो भी मुसीबतें डालेगा मैं उन सब को तेरा अनुग्रह और तेरी बरकतें समझूंगा."

इन्जील में लिखा है :—

"मुबारक हैं वह जो अपनी आत्मा से ग़रीब हैं क्योंकि स्वर्ग का राज उन्हीं को मिलेगा. मुबारक हैं वह लोग जो दीन हैं क्योंकि यह धरती उन्हीं को विर्से में मिलेगी. मुबारक हैं वह लोग जिन के दिल पाक साफ़ हैं क्योंकि उन्हें ही ईश्वर का दीदार देखने को मिलेगा. मुबारक हो तुम जब लोग तुम्हारी बुराई करें और तुम्हें कष्ट पहुंचाएं क्योंकि स्वर्ग में तुम्हें इसका बड़ा इनाम मिलेगा."

इन्जील में यह भी लिखा है :—

"ईश्वर का राज बाहर ढूंढने से नहीं मिलेगा न कोई यह कह सकेगा कि लो यहां ईश्वर का राज है! लो वहां ईश्वर का राज है! क्योंकि देखो ईश्वर का राज सचमुच तुम्हारे अन्दर है."

एक और जगह इन्जील में लिखा है :—

"मूर्खों से तारीफ़ के राग सुनने की निस्बत बुद्धिमान आदमी की फटकार सुनना ज़ियादा अच्छा है."

बाल्मीकी रामायन में लिखा है :—

"जिस आदमी की जुआरी लोग, भाट और बदचलन औरतें तारीफ़ करती हैं वह आदमी जीते हुए भी मुर्दा है.

چینی کنفیوشیس دھرم کی کتاب شی کنگ میں لکھا ہے کہ :—

" ایشور آدمی کے وشواس کو کڑائی کے ساتھ پرکھتا ہے "

ایک دوسرے چینی دھرم تاؤازم میں کہا گیا ہے کہ :—

" ہینتا مان کی جڑ ہے . اپنے کو چھوٹا سمجھنا اونچا جانے کی بنیاد ہے . دنیا کے سب سے کمزور لوگ دنیا کے سب سے سخت لوگوں پر وجے پراپت کر لیتے ہیں."

انجیل میں لکھا ہے :—

" گھمنڈ ناش کا پیش خیمہ ہوتا ہے اور غرور کرنے والا گرتا ہے..... ایشور کا ڈر گیان کی شروعات ہے ."

انجیل میں ایک دوسری جگہ لکھا ہے :—

" جو آدمی لوبھ کو قابو میں کر لیتا ہے وہ مبارک ہے، کیونکہ جب وہ پرکھا جائے گا تو اسے جیون کا وہ مکٹ ملے گا جس کا وعدہ ایشور نے ان لوگوں کے ساتھ کیا ہے جو ایشور سے پیار کرتے ہیں ."

وید کے شت پتھ براہمن میں لکھا ہے :—

" جو بہت گھمنڈ کرتے تھے وہی اپنے گھمنڈ کے کارن گرے، اس لئے کسی کو بہت گھمنڈ نہیں کرنا چاہئے . گھمنڈ ہی ہار کا دروازہ ہے ."

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ہے :—

" اے مزدا یعنی ایشور مجھے آزما اور پرکھ، تو مجھ پر جو بھی مصیبتیں ڈالے گا میں ان سب کو تیرا انوگرہ اور تیری برکتیں سمجھوں گا ."

انجیل میں لکھا ہے :—

" مبارک ہیں وہ جو اپنی آتما سے غریب ہیں کیونکہ سورگ کا راج انہیں کو ملے گا . مبارک ہیں وہ لوگ جو دین ہیں کیونکہ یہ دھرتی انہیں کو ورثے میں ملے گی . مبارک ہیں وہ لوگ جن کے دل پاک صاف ہیں کیونکہ انہیں ہی ایشور کا دیدار دیکھنے کو ملے گا . مبارک ہو تم جب لوگ تمہاری برائی کریں اور تمہیں کشٹ پہنچائیں کیونکہ سورگ میں تمہیں اس کا بڑا انعام ملے گا ."

انجیل میں یہ بھی لکھا ہے :—

" ایشور کا راج باہر ڈھونڈنے سے نہیں ملے گا . نہ کوئی یہ کہہ سکے گا کہ لو یہاں ایشور کا راج ہے ! لو وہاں ایشور کا راج ہے ! کیونکہ دیکھو ایشور کا راج سچ مچ تمہارے اندر ہے ."

ایک اور جگہ انجیل میں لکھا ہے :—

" مورکھوں سے تعریف کے راگ سننے کی نسبت بدھیمان آدمی کی پھٹکار سننا زیادہ اچھا ہے .

والمیکی رامائن میں لکھا ہے :—

" جس آدمی کی جواری لوگ، بھاٹ اور بدچلن عورتیں تعریف کرتی ہیں وہ آدمی جیتے ہوئے بھی مردہ ہے،

एक ही जान सब की जान है

(डाक्टर भगवानदास)

दीनता यानी इनकिसार को सब मज़हबों ने ऊंची जगह दी है. मज़हब हमें सिखाता है कि अनायास हम पर जो मुसीबतें पड़ें या आफ़तें आवें उनका हमें यह समझ कर स्वागत करना चाहिये कि वह हमें भगवान की देन हैं. भगवान कोई हम से अलग चीज़ नहीं. वह हमारे अन्दर से अन्दर की आत्मा हैं. इन मुसीबतों के ज़रिये वह हमें और हमारे मन को पाक साफ़ करना चाहते हैं ताकि हम हलके फुलके हो कर अधोगति यानी क़ौसे नज़ूल के रास्ते से हट कर अर्धोगति यानी क़ौसे उरूज के रास्ते पर तेज़ी से बढ़ सकें.

इन्जील में लिखा है :—"ईश्वर जिसे प्यार करते हैं उसे वह रगड़ कर साफ़ करते हैं."

भागवत में लिखा है कि भगवान कहते हैं :—"जिस किसी पर मैं अनुग्रह यानी मेहर करना चाहता हूं उसका एक बार मैं सब कुछ छीन लेता हूं."

मोहम्मद साहब की एक हदीस है :—"अल्लाह जब किसी बन्दे से मोहब्बत करता है तो उसे आज़माने के लिये उस पर चारों तरफ़ से बलाएं भेजता है."

क़ुरान में लिखा है :—

"ऐ ईमान वालो सब्र और दुआ के साथ अल्लाह की मदद चाहो, सचमुच अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जायें उन्हें मरा हुआ मत कहो. नहीं नहीं, वह ज़िन्दा हैं अगरचे तुम उन्हें देखते. और इसमें शक नहीं कि अल्लाह तुम्हें ख़ौफ़ यानी डर और भूक और माल और जान और फलों के नुक़सान के ज़रिये आज़माएगा. और जो लोग सब्र करने वाले हैं उन्हें ख़ुशख़बरी दो. उन लोगों को ख़ुशख़बरी दो जिन पर जब कभी कोई मुसीबत आती है तो वह कहते हैं सचमुच हम अल्लाह ही से हैं और हम अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जायेंगे. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह की दया और उसकी बरकतें उतरती हैं और उन्हीं का रास्ता ठीक रास्ता है."

एक सूफ़ी लिखता है :—

"ख़ुदी और अक़्ल को तेज़ करने से अल्लाह नहीं मिलता. अल्लाह की मेहर सिवाय टूटे हुए दिल वाले यानी दीन और आजिज़ के दूसरे को नहीं मिलती."

शंकराचार्य ने लिखा है कि :—

"बच्चे खेल कूद में मां को भूल जाते हैं. भूक और प्यास में उन्हें मां याद आती है."

ایک ھی جان سب کی جان ھے

(ڈوکٹر بھگوان داس)

دینتا یعنی اِنکسار کو سب مذھبوں نے اُونچی جگہ دی ھے . مذھب ھمیں سکھاتا ھے کہ اناپاس ھم پر جو مصیبتیں پڑیں یا آفتیں آویں اُن کا ھمیں یہ سمجھکر سواگت کرنا چاھئے کہ وہ ھمیں بھگوان کی دین ھیں . بھگوان کوئی ھم سے الگ چیز نہیں . وہ ھمارے اندر سے اندر کی آتما ھیں . اِن مصیبتوں کے ذریعہ وہ ھمیں اور ھمارے من کو پاک صاف کرنا چاھتے ھیں تاکہ ھم ھلکے پھلکے ھو کر ادھوگتی یعنی قوس‌نزول کے راستے سے ھٹ کر اردھوگتی یعنی قوس عروج کے راستے پر تیزی سے بڑھ سکیں.

اِنجیل میں لکھا ھے :—" ایشور جسے پیار کرتے ھیں اُسے وہ رگڑ کر صاف کرتے ھیں ."

بھاگوت میں لکھا ھے کہ بھگوان کہتے ھیں :—"جس کسی پر میں انوگرہ یعنی مہر کرنا چاھتا ھوں اُس کا ایک بار میں سب کچھ چھین لیتا ھوں ."

محمد صاحب کی ایک حدیث ھے :—" اللہ جب کسی بندے سے محبت کرتا ھے تو اُسے آزمانے کے لئے اُس پر چاروں طرف سے بلائیں بھیجتا ھے ."

قرآن میں لکھا ھے :—

" اے ایمان والو صبر اور دعا کے ساتھ اللہ کی مدد چاھو' سچ مچ اللہ صبر کرنے والوں کے ساتھ ھے اور جو لوگ اللہ کی راہ میں مارے جائیں انھیں مرا ھوا مت کہو . نہیں' وہ زندہ ھیں اگرچہ تم اُنھیں نہیں دیکھتے . اور اِس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ تمھیں خوف یعنی ڈر اور بھوک اور مال اور جان اور پھلوں کے نقصان کے ذریعہ آزمائے گا . اور جو لوگ صبر کرنے والے ھیں انھیں خوشخبری دو . اُن لوگوں کو خوشخبری دو جن پر جب کبھی کوئی مصیبت آتی ھے تو وہ کہتے ھیں سچ مچ ھم اللہ ھی سے ھیں اور ھم اللہ ھی کی طرف لوٹ کر جائینگے . یہی وہ لوگ ھیں جن پر اللہ کی دیا اور اُس کی برکتیں اُترتی ھیں اور اُنھیں کا راستہ ٹھیک راستہ ھے ."

ایک صوفی لکھتا ھے :—

" خودی اور عقل کو تیز کرنے سے اللہ نہیں ملتا . اللہ کی مہر سوائے ٹوٹے ھوئے دل والے یعنی دین اور عاجز کے دوسرے کو نہیں ملتی ."

شنکراچاریہ نے لکھا ھے کہ :—

بچے کھیل کود میں ماں کو بھول جاتے ھیں . بھوک اور پیاس میں اُنھیں ماں یاد آتی ھے."

16 जनवरी, सन '54 नम्बर 1

نمبر 1 '54 جنوری، سن 16

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर-घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

पुकार

(सैयदा फ़रहत)

के लोभी लोभ में धन के चलते हैं फिर चाल
हैं मक्कार शिकारी फिर फैलाए जाल
ने को है बिपता भारी आएगा भूचाल
धरती पर फिर लग जाएँगे लाशों के अम्बार
होगी फिर आकाश से साथी गोलों की बौछार
के पुजारी भेंट में देंगे इन्सानों की जानें
की देवी धन से भरेगी फिर उनकी दूकानें
ल पटेंगी सोने से फिर उनकी सारी कानें
काल मगर दुनिया में पड़ेगा तड़पेंगे सब भूके
झुलसेंगे फिर तन मन सारा पेट से उठके लूके
पर फिर मंडराने लगे हैं जंग के काले बादल
अ गरज से ऐटम बम की धरती होगी बेकल
जाएँगे खून से साथी सारे जग में जल थल
सारे जग में छा जाएगा साथी घोर अन्धेरा
कोने कोने में दुनिया के होगा मौत का डेरा
देंगी अपने हाथों से फिर लाल हज़ारों माएँ
गे फिर अनाथ हज़ारों और लाखों बेवाएँ
न के सागर में डूबेंगी फिर लाखों आशाएँ
भूक और भीक का होगा साथी सारे जग में राज
मौजें खूब उड़ाएंगे फिर धन वाले महराज
आ साथी हम जान लड़ा कर आई बलाएं टालें
आ साथी मिल जुल कर उलट दें सब शैतानी चालें
चलते फिरते फ़ितनों के हम पैर में बेड़ी डालें
डगमग करती नैया को आ साथी पार लगाएं
जीवन को जो रोग लगे हैं उनको खोज मिटाएं
अफ़रंगी या अमरीकी हो जर्मन या जापानी
मिस्र और अरब के बासी हों वो तुर्क हों या ईरानी
भारत के हों बसने वाले या हों पाकिस्तानी
जो भी जीवन में विष घोले इंसां को कलपाए
साथी ऐसा सारे जग में कोई न रहने पाए

پکار

(سیدہ فرحت)

دھن کے لوبھی لوبھ میں دھن کے چلتے ہیں پھر چال
بیٹھے ہیں مکار شکاری پھر پھیلائے جال
پڑنے کو ہے وپتا بھاری آئے گا بھونچال
دھرتی پر پھر لگ جائیں گے لاشوں کے انبار
ہوگی پھر آکاش سے ساتھی گولوں کی بوچھار
دھن کے پجاری بھینٹ میں دینگے انسانوں کی جانیں
دھن کی دیوی دھن سے بھریگی پھر ان کی دوکانیں
اُبل پڑیں گی سونے سے پھر ان کی ساری کانیں
کال مگر دنیا میں پڑے گا تڑپینگے سب بھوکے
جھلسینگے پھر تن من سارا پیٹ سے اُٹھ کے لوکے
سر پر پھر منڈرانے لگے ہیں جنگ کے کالے بادل
گونج گرج سے ایٹم بم کی دھرتی ہوگی بیکل
بھر جائینگے خون سے ساتھی سارے جگ میں جل تھل
سارے جگ میں چھا جائیگا ساتھی گھور اندھیرا
کونے کونے میں دنیا کے ہوگا موت کا ڈیرا
کھوئینگی اپنے ہاتھوں سے پھر لال ہزاروں مائیں
ہوں گے پھر اناتھ ہزاروں اور لاکھوں بیوائیں
خون کے ساگر میں ڈوبینگی پھر لاکھوں آشائیں
بھوک اور بھیک کا ہوگا ساتھی سارے جگ میں راج
موجیں خوب اُڑائینگے پھر دھن والے مہراج
آ ساتھی ہم جان لڑا کر آئی بلائیں ٹالیں
آ ساتھی مل جل کر اُلٹ دیں سب شیطانی چالیں
چلتے پھرتے فتنوں کے ہم پیر میں بیڑی ڈالیں
ڈگ مگ کرتی نیا کو آ ساتھی پار لگائیں
جیون کو جو روگ لگے ہیں ان کو کھوج مٹائیں
افرنگی یا امریکی ہوں جرمن یا جاپانی
مصر اور عرب کے واسی ہوں وہ ترک ہوں یا ایرانی
بھارت کے ہوں بسنے والے یا ہوں پاکستانی
جو بھی جیون میں بس گھولے انساں کو کلپائے
ساتھی ایسا سارے جگ میں کوئی نہ رہنے پائے

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

का

माहवारी परचा

ہندستانی کلچر سوسائٹی

کا

ماہواری پرچا

जनवरी 1954 جنوری

क्या किससे — सफ़ा

کیا کس سے — صفحہ

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल, एक परचा दस आने.

मैनेजर
'नया हिन्द'
145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال، ایک پرچہ دس آنے۔

مینیجر
'نیا ہند'
145، مٹھی گنج، الہ آباد۔

नया हिन्द نیا ہند

एडीटर—ताराचंद, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, बिशम्भर नाथ, सुन्दरलाल

اڈیٹر—تاراچند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندرلال

नायब एडीटर—सुरेश रामभाई, मुजीब रिज़वी

نائب اڈیٹر—سریش رام بھائی' مجیب رضوی

27-4/13

* * * * *

जनवरी 1954 جنوری